Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

महाभारत
भाषा

१९१३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

श्रीः

महाभारत

भाषा

सचित्र

आदि, सभा, बन, बिराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक स्त्री, शान्ति, अश्वमेध, आश्रमबास, मूसल, स्वर्गारोहण, इन अठारहो पर्वों से युक्त।

जिसको

बाबू बैजनाथप्रसाद बुक्सेलर ने

मुम्बई

अक्षरेण मुद्रयित्वा

काशी नागेश्वर यन्त्रालये जे. एन. राव द्वारा प्रकाशितः।

प्रथमवार १५००] सन् १९१९ [मूल्य २॥)

नारायण दास दया राम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारतभाषाआदिपर्व ॥

दो० गजमुख मुखकर दुखहरण, तोहिकहौं शिरनाय।
कीजै यश लीजै विनय, दीजै ग्रन्थ बनाय॥
जगदीश्वर को धन्य जिन, उपजायो संसार।
क्षिति जल नभ पावक पवन. करि इनकोविस्तार॥
नृपहिदास दासहिंनृपति. पावितृण तृणहिंपखान।
जलधि अल्पसर लघुसराहिं,उदधिकरै क्षणमान॥

ग्रथपहिं आदिपुरुष को ध्यावौं ❋ जो प्रसाद शिक्षा सब पावौं ॥
परमपुरुष आखण्डित रूपा ❋ है सर्वात्म रूप अद्भुता ॥
अक्षर कृष्ण अक्षर मंझारा ❋ जानै देखत सब संसारा ॥
अक्षर भये है कृष्ण अंभगा ❋ परमपुरुष कर रूप अनंगा ॥
जो सर्वज्ञ लेप निर्लेपा ❋ ता महिमा को कह संक्षेपा ॥
जाके नाम तरत सँसारा ❋ जाहिनाम दुखशोक सँहारा ॥
एक ब्रह्म ते अगणित रंगा ❋ बरण बरण संसारप अंगा ॥
तेहि माया सब देवता भयऊ ❋ त्रिगुण एकते गुण निर्मयऊ ॥
पुरुषकबीज मूल पुनि खाराहि ❋ मूलरूप बरणौं निरकाराहि ॥
हरिहर कृष्ण तौ शाषा भयऊ ❋ जन्म बौध संहारण लयऊ ॥

दो० एक ब्रह्म बहुरूप है. जानि जात नहिं भेद।
नाना रुप ताही बिषे, महिमा भाषत बेद॥

बरणौं निरंजन पुरुष प्रधाना ❋ पुनः ब्यासमुनिगुणकेनिधाना ॥
हरिचरित्र कोउ भेद न पावहिं ❋ कै भाष संक्षेप कछुगावहिं ॥
महा मुनी जो ब्यास बखाना ❋ श्रीभगवन्तचरितजिन जाना ॥
जनमेजय राजा आवतारा ❋ धर्म रूप ऋष्मता कुमारा ॥
एक समय व्यासमुनि आये ❋ राज सभाके माहिं सिधाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पूजार्चा तब राजा कीन्हो ❋ हर्ष गात कछु पूछै लीन्हो ॥
सबही देख्यो तुम महभारत ❋ कौरव पाण्डवकर पुरुषारथ ॥
कौन प्रकार चरित अपारा ❋ मारे कौरव पांण्डू कुमारा ॥
दो० औरौ वंश चरित जो, सुनिये तोहिं प्रसाद ।
जाहि सुनत जो महामुनि, नाशत चित्त विषाद ॥
सुनि के व्यास कहै नृप पाहीं ❋ यह अब कहैकअवसरनाहीं ॥
बैशम्पायन शिष्य हमारा ❋ सो तो कहै चरित अपारा ॥
यहकहि व्यास मुनि बनहिं सिधाये ❋ बैशम्पायन कथा सुनाये ॥
प्रथमहि कहौ बंश बिस्तारा ❋ जामेंभये नृप अमित प्रकारा ॥
कृष्णपुत्र मारीच सु भयऊ ❋ मारिच सूर सभा निर मयऊ ॥
सूर सभा पुत्र सुर्यावतारा ❋ सूर्य पुत्र स्वायम्भु भुवारा ॥
स्वयम्भु पुत्र नक्षत्र पति भयऊ ❋ बुद्धनाम सुत सो निर्मयऊ ॥
ताके पुत्र अनूपम आही ❋ वेद पुराण प्रशंसत जाही ॥
अनुपम पुत्र नहस भुवारा ❋ नहंस पुत्र संजति संसारा ॥
संजाति पुत्र मरे जन माहीं ❋ संजति पुत्र अनूपम आही ॥
दो० संजातिपुत्र है प्रहजमा, जगत महा संचार ।
तस्य पुत्र जो भोज भे, सुनो जो बचन भुवार ॥
भोजपुत्र भयो संन्त अवतारा ❋ भरत नाम भयो तासु कुमारा ॥
मज्जमीठ ताके सुत भयऊ ❋ तासु पुत्र ब्रह्मा निर्मयऊ ॥
बिष्णुसुता सत्य सुवन के माहीं ❋ तासुपुत्र शन्तनु नृपआंही ॥
बिचित्रबीर्य्य है तासु कुमारा ❋ लीन्हों जासु पाण्डु अवतारा ॥
भये पाण्डुसुत अर्जुन नामा ❋ अर्जुन सुतअभिमन्यु गुणधामा ॥
अभिमन्युपुत्र परीक्षित रह्यऊ ❋ जनमेजय तिनके सुत भयऊ ॥
यहि प्रकार भा बंस विस्तारा ❋ सोमबंस शंतनु है भुवारा ॥
महाबली जानत संसारी ❋ करै राज्य नित नीति बिचारी ॥
अधमा नाम रहै पटरानी ❋ रूपबन्त ना जाई बखानी ॥
गौरी रति जब देखि लजाहीं ❋ तीनिलोक तासम है नाहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० ब्रह्मा को मन मोह कै, हरण भयो तब ज्ञान।
तासु रूप देखे बिना, भूलि जात सब ज्ञान॥

शन्तनु राजा गये शिकारा ❋ ब्रह्मा शन्तनु गेह सिधारा॥
ब्रह्मा रानी के ढिग गयऊ ❋ करि बहुमतनकामसुचलयऊ॥
करिके भोग ब्रह्मलोक सिधाये ❋ शन्तनु राजा गृह तब आये॥
जानी कथा सब बिस्तारा ❋ शन्तनु लज्जित क्रोध अपारा॥
स्त्री जानि बधन नहि करेऊ ❋ तब राजा संगति परिहरेऊ॥
सो रानी बहु लज्जा पाई ❋ गंगाजी में प्राण गँवाई॥
आगे सुनु राजा मन जानी ❋ शन्तनु के घर नहिं है रानी॥
पूर्व वशिष्ट है सुरपुर माहीं ❋ अष्टावसु है तहां जो आहीं॥
गौ बशिष्ट की चोरी कीन्हो ❋ क्रोधित ऋषै श्राप तब दीन्हो॥
आपन गए चोर भा आपा ❋ मानुष जन्म मृत्यु परितापा॥

दो० मानुष जन्म होउगे, भुगतौ लोक मंझार।
श्राप दीन्ह वशिष्ठ तब, अतिक्रोधित संचार॥

सबदेवन मिलि कीन्ह बिचारा ❋ अष्टावसु जन्महिं संसारा॥
तब देवन गंगा हँकराई ❋ शाप हेतु तब कह समुझाई॥
तुम्हरे गर्भ जन्म पर भावै ❋ अष्टावसु मुक्त तन पावैं॥
मानुष रुप धरौ अवतारा ❋ जन्म बर्ष लौ गर्भ मँझारा॥
गङ्गा जाना पर उपकारी ❋ मानुष रूप मध्य कै धारी॥
खोजा सबहिं जगत संसारा ❋ कहां जाउँ को पुरुष हमारा॥
करै बिचार कहै तब बाता ❋ शन्तनु भूप सबै जग ज्ञाता॥
राजा तबै अखेटक गयऊ ❋ बन महँ गङ्गा दर्शन दयऊ॥
शन्तनु मोहे देखत नारी ❋ तब गङ्गासन कह्यो बिचारी॥
कौन रुप बन हेतु हौ काहीं ❋ कहौ सत्य सो हमहीं पाहीं॥

दो० गंगा कह्यो बात असि, देवांगना हम जान।
बाचा बँध सोई पुरुष, कन्या कहा बखान॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

राजा हर्षित बाचा कीन्ही ❋ तब गंगा यह बोलै लीन्ही ॥
कौनौ कर्म करत जब राऊ ❋ तामहँ भंग देव जनि पाउ ॥
तादिन हमहिं न पैहो राजा ❋ यहिबाचा सो बंध है काजा ॥
तब राजा घर को लै आये ❋ हर्षवन्त बाच बंधाये ॥
राजा रहै हर्ष मन माहीं ❋ परम हर्ष सो बासर जाहीं ॥
बहुतक दिन बीते यहि भांती ❋ बालक एक गर्भ जन्माती ॥
राजा हर्ष बहुत मन कीन्हा ❋ बहुत दान बिप्रन कहँ दीन्हा ॥
गंगा कर्म अचरजा सारा ❋ बालक लैकै जल महँ डारा ॥
अन्त प्राण बालक के गयउ ❋ विस्मय मनमहँ राजा भयउ ॥
कहत नहीं कछु बाचा बांधे ❋ रहा दुःख हिरदय महँ साधे ॥

दो० यहि प्रकार सो गंग तब, सात पुत्र जल डार ।
बाचाँबध हित राजा, महा दुखित खम्भार ॥

अष्टम गर्भहि भा सञ्चारा ❋ तब शन्तनु विनती अनुसारा ॥
सात पुत्र के नाशे प्राना ❋ याहि पुत्र हमको देउ दाना ॥
हँसिकै गंगा तब यह कही ❋ इतने दिन तुम्हरे सँग रही ॥
बाचा छल आजुइ भा आनी ❋ हम है गंगा कहत बखानी ॥
अष्टम राजा आप बचाया ❋ यह कनिष्ठ जो अष्टमआया ॥
यह बृत्तान्त कहौं तोहि पाहीं ❋ राजा सुनो कथा मन मांही ॥
कामधेनु बशिश्ठ की आही ❋ अष्टाबसु हरण कर ताही ॥
याही पाप शाप उन दीन्हो ❋ मानुष कर्म चोर इन कीन्हो ॥
ताते शाप लेउ समुदाई ❋ यह कनिष्ठ हरण कर गाई ॥

दो० यहै हेतु हम मनुष तन, गंगा कहत बिचार ।
परमउपकार के कारणौ, मेरोहि साथ तुम्हार ॥

गंगापुत्र गोद कर लीन्हा ❋ स्वर्गहिलोकगमन तबकीन्हा ॥
इंद्र बरुण यम पावक पाहीं ❋ औ दिग्पाल मिलायो ताहीं ॥
सब ते कहा पुत्र यह मोरा ❋ ताते दरश करौं जो तोरा ॥
सबहिं कृपा कीजै यह काजा ❋ गंगा भाष्यो देव समाजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रण में अजय होहु बरदेवा ❋ पुत्र हमार जानु यह भेवा ॥
सबहिं देवता कहि तब बाता ❋ रणमे अजय होई कहमाता ॥
जबलग अस्त्र रहै करमाहीं ❋ तीनलोक कोउजीतहि नाही ॥
सौंपा शन्तनु को तब जाई ❋ और कहा बहुतक समझाई ॥
और एक कंकण तब दीन्हा ❋ हर्षि गात राजा लैलीन्हा ॥
जाके हाथ बराबर होइ ❋ ताकर ब्याह करव नृप सोई ॥

दो० यह कहिके तबजान्हवी, भई जोअन्तर्ध्यान ।
राजा पुत्रहिं पालही, सबलासिंह चौहान ॥

पांच सात बर्ष कर भयऊ ❋ परशुराम पहँ पढ़ने गयऊ ॥
परशुराम किरपा बहु कीन्हा ❋ बिद्या राजनीति सब दीन्हा ॥
अस्त्र शस्त्र बहु सिखे अपारा ❋ आपु समान कीन्ह संचारा ॥
भृगुपति बहुत दया तब कीन्हा ❋ आपु समान धनुर्द्धर कीन्हा ॥
पढ़ि जो बिद्या भीषम आये ❋ वैशम्पायन कथा सुनाये ॥
यहि प्रकार तब भीषम भयऊ ❋ महा हर्ष शंतनु मन ठयऊ ॥
आगे कही कथा बिस्तारा ❋ सावधान होई सुनौ भुवारा ॥
जैसे व्यासमुनी को अवतारा ❋ सत्यवती के गर्भ मँझारा ॥
जैसे सत्यवती अवतारा ❋ तासुपुत्र मुनि ध्यासकुमारा ॥
सुनत कथा पाप कर नासा ❋ पावत अंत परमपद बासा ॥

दो० भारत कथा पुण्यफल, राजा सुनु० बिस्तार ।
सबलसिंह चौहान कह, गुण गोबिन्द अपार॥

इति श्री महाभारते सबलसिंह चौहान भाषाकृते आदिपर्व-वर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

वेशम्पयन करत बखाना ❋ जन्मेजय राजा सुनि ध्याना ॥
वस्वरूपचर राजा बलवन्ता ❋ महाशील बीर गुणवन्ता ॥
गिरि कर नाम तासु यह रानी ❋ रूप शील नहिं जाई बखानी ॥
रजस्वला सो रानी भयऊ ❋ तादिन राउ अखेटक गयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मारे साउज मृगा अपारा ❋ जल आश्रम राजा पगुधारा ॥
सरवर एक अनूप सुहावा ❋ नानाजन्तु कमल बहुछावा ॥
कंज महा भँवरा इक आही ❋ केलि करत भँवरी के पाही ॥
राजा देखि कामबश भयऊ ❋ भूलिज्ञान राजा कर गयऊ ॥
रानी रूप हृदय धरि राऊ ❋ बीर्य्यपात भयो तेहिं ठांऊ ॥
राजा कही वीर्य्य दे आही ❋ तासुको तेज पताकहि जाहीं ॥

मन बिंचार कर राजा, पक्षी शुकाहिं बुलाई ।
पद्मपत्र दोना कियो, ताहि वीर्य्य सौंपाई ॥

भाष्यउ राज पक्षि सो बानी ❋ देहु बीर्य्य यह जहँ है रानी ॥
कहि संदेश तुरत सो आवहु ❋ तब पक्षी तुम बात सुनावहु ॥
पक्षी बीर्य्य चलेउ लै तबहीं ❋ आधे मारग पहुँचो जबहीं ॥
नदी एक के ऊपर आयो ❋ पक्षी सकल देखन तब धायो ॥
तिन्है देखि गहजाति अहारा ❋ दूनो पक्षिन युद्ध सचारा ॥
एक बुंद जल महँ परसोई ❋ महा युद्ध पक्षिन महँ होई ॥
जौन बुंद जलमाहीं डारा ❋ एक मच्छी तब कीन्हअहारा ॥
दोनों पक्षी लरत सो जाहीं ❋ दोना कतहूँ गयो उड़ाहीं ॥
जौनिमच्छ सो कीन्ह अहारा ❋ गर्भवन्त भै जल मंझारा ॥

दो० बहुत दिना तब बीत गे, बिधि पर पञ्चउपाई ।
धीमर एक अखेट कहँ. माच्छि हेतु तहँ जाई।

ओही मच्छि जाल महँपरी ❋ दीरघ मच्छि देखि सुखकरी ॥
दासा राम तहांकर राऊ ❋ धीमर मीन लाइ तेहि दयऊ ॥
राजा मच्छि देखि बिस्तारा ❋ तब मच्छीकर उदर बिदारा ॥
तासु उदर में देखि भुवारी ❋ कन्या एक अनूप कुमारी ॥
मच्छ राज मन हर्ष अपारा ❋ बोल्यउबचन समय अनुसारा ॥
मच्छ देशपति राजा सोई ❋ निश्चय राजा जानहु होई ॥
कन्या नृप केवट को दीन्हा ❋ मच्छोदरी नाम त्येहिकीन्हा ॥
बहुत प्रीति केवट सो राऊ ❋ कन्या पालत अपने ठांऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सात वर्ष की कन्या भयऊ ❋ नदीमाहिं सो कन्या गयऊ ॥
केवट ब्याधी तनमों गही ❋ नाव घाट में कन्या रही ॥

दो० याहि प्रकारते राजा, सुनौ और बिस्तार ।
त्यहि मारग पाराशर, आयो जो पगुधार ॥

नदी घाट पर शर जाई ❋ मच्छोदरि को देख्यउआई ॥
कन्यादेखि मोहि मुनि गयऊ ❋ कामातुर पराशर कहेऊ ॥
लगन देखि ऐसा मुनि ताही ❋ जन्महि पुत्र सो पंडितआही ॥
कन्यापाहिं कहा मुनिबाता ❋ नदीघाटकर मत सख्याता ॥
काम जो अनी पंचशर मारा ❋ स्त्री मानहु तुम बचन हमारा ॥
रति दान दै हमको नारी ❋ सुनि कन्या लज्जाभइभारी ॥
कन्या कहा बाल तन मोरा ❋ जानों काह कामगति तोरा ॥
दिवस माहिं देखहिं नरनाना ❋ कैसे तुमभाषौ रति दाना ॥
ऋषि जो कहत न बचन बिचारी ❋ योजनगंधा नाम तुम्हारी ॥
यौवनवन्त होहु क्षण माही ❋ अन्ध कुहिर होवै पुनि ताही ॥

दो० यौवनवन्त भई सुता, औ सुगन्ध तनु सार ।
दशौ दिशा अँधियार भा, कन्यादिय रतिदान ॥

रति रस पराशर तब कीन्हा ❋ व्यासदेव जन्महिं तबलीन्हा ॥
जन्मेउ बालक गर्भ मँझारा ❋ पिता संग तब बन पगु धारा ॥
पुत्रहेतु रोवत सो रानी ❋ तब व्यासअस कह्यउबखानी ॥
बिष्णू माया जन्म हमारा ❋ कौन काज दुख करो अपारा ॥
तप के काज पिता सँग जैहौं ❋ सुमिरत मन्त्र तुरतही ऐहौं ॥
कन्या कह मम भयो कलंका ❋ लोकलाज कर्महु भौबंका ॥
पाराशर भाष्यो बिस्तारी ❋ आशिष मोर होहु सुकुमारी ॥
पाराशर बन तबहीं गयऊ ❋ व्यासदेव पुत्रहिं सँग लयऊ ॥
कन्या तब अपने गृह आई ❋ यह वृत्तांत सुनौहो राई ॥
ऐसो व्यासदेव अवतारा ❋ भाष्यो मुनिबर सुनोमुवारा ॥

दो० व्यास जन्म की कथायह, सुनु राजा धरिध्यान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पुण्य कथा श्री भारत, जा सुनि पाप नशान ॥
शंतनु राजा कैतिक काला ❀ उपजा चित्तहेतु सो बाला ॥
पुरवै गंगा कंकण दीन्हा ❀ जगत सकलउपमानसोकीन्हा ॥
काहू के कर होतं सो नाहीं ❀ खोज्यों सकलजगतके माहीं ॥
मत्स्योदरि केवट कै बारी ❀ ताके करमहँ भयो विचारी ॥
राजा कहै सुन्यो तब बाता ❀ ब्याहब सो कन्या बिख्याता ॥
भीषम कहै जाति की हीना ❀ कौन बुद्धि यहिविधि ने दीना ॥
शंतनुहूं कीन्ह्यो यह कामना ❀ भीषम कहो ब्याह अनबना ॥
भीषम केवट सन कह जाई ❀ राजा ब्याह करत तब आई ॥
केवट कह बाचा करि लेऊं ❀ तब कन्या राजा कहँ देऊं ॥
मोरि कन्या के गर्भ अवतारा ❀ सोई राज्य करब संसारा ॥

दो० भीषम तब कीन्हो सोइ, बचन बन्ध परमाण ।
हमको राज्य न चाहिये, पिता होइ कल्याण ॥

भीषम प्रण कीन्हों ता पाहा ❀ जगतमाहं ना करौं बिवाहा ॥
योग रूप रहौं सेवकाई ❀ कन्या देउँ पिता को जाई ॥
बाचाबंध जब भीषम कीन्हा ❀ केवट राजहिं कन्या दीन्हा ॥
ऐसे शंतनु ब्याही जाई ❀ सत्यावती नाम सो पाई ॥
सत्यावती पटरानी भयऊ ❀ राज्यभोग तब शंतनु कियऊ ॥
चित्रांगद भयो एक कुमारा ❀ विचित्रवीर्य्य दूसर अवतारा ॥
दूनौं पुत्र भये नृप बारा ❀ महाबली गुण रूप अपारा ॥
चित्रांगदहिं राज्य तब दीन्हा ❀ कछुकहिदिवसराज्यउनकीन्हा ॥
अंतकाल शंतनु को भयऊ ❀ स्वर्गलोक राजा तब गयऊ ॥

दो० क्रिया कर्म शन्तनु कर, कीन्हो तीनि कुमार ।
सत्यवती मन शोक है, तरुण अवस्था भार ॥

देशराज्य भीषम रखवारा ❀ चित्रांगद भो राजभुवारा ॥
महायशी राजा यह भयऊ ❀ बैशम्पायन राजहिं कह्यऊ ॥
भीषम जो प्रतिपालहिं राजहिं ❀ धर्मशास्त्र काहत हरिकाजहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यहि प्रकार भारत बिस्तारा ❋ आदि पर्व संक्षेप पसारा ॥
कहत होत बहु कथा अपारा ❋ राजा सुनु यह बहु बिस्तारा ॥

दो० भारथ कथा पुण्य फल, कहतहि पाप बिनाश ।
सबलसिंह चौहानकह, सुनतहि भक्ति प्रकाश ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदिपर्व-
वर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा बिस्तारा ❋ काशी राजा बीर अगारा ॥
कन्या तीनि तासु घर रहईं ❋ तिनके नाम सुनौं तौं कहईं ॥
अम्बे जेठि अम्बिका नामा ❋ सबते छोटि अँबलिकाजाना ॥
बरषैं दश बीते जब तासू ❋ तबहिं स्वयम्बर करेउप्रकासू ॥
देश देशके राजा आये ❋ सत्यावती कतहुँ सुनिपाये ॥
भीषम पाहिं कहा तब रानी ❋ बन्धु बिबाहौ कन्या आनी ॥
जीति स्वयम्बर कन्या लीजै ❋ दूनो बन्धु ब्याह कर दीजै ॥
यह सुनिकै भीषम रथ साजा ❋ काशी गये जहां सब राजा ॥
तीनों कन्या रूप अपारा ❋ पटभूषण युत यज्ञ सँभारा ॥
मन बांछित बर चाहत सोई ❋ हाथे माल उपस्थित होई ॥

दो० तीनों कन्या एक सँग, जयमाला लिये हाथ ।
मन बांछित वर चाहती, आये बहु नरनाथ ॥

तीनों कन्या एकहि साथा ❋ भीषम जाइगह्यो त्यहिहाथा ॥
तीनो कन्या रथहि चढ़ाई ❋ हांका रथ तब चला उड़ाई ॥
कन्या आरत नाद पुकारा ❋ रण ठाढ़े तब सबै अगारा ॥
भयो युद्ध तहँ बरणि न जाई ❋ भीषम जीते सबै जगराई ॥
राजन अस्त्र अनेक प्रहारे ❋ भीषम बीर काटि सब डारे ॥
देवन को बर भीषम पांही ❋ को जीते सन्मुख रणमाहीं ॥
हारे सब राजा बलधारी ❋ भीषम लैगयो तीनिउक्वांरी ॥
तीनों कन्या गहि लै आये ❋ सत्यावती मातु सुख पाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चित्रांगद अम्बिका बिबाही ❋ बिचित्रवीर्य आम्बे उरताही ॥
दोउ बन्धु दुई कन्या व्याही ❋ अम्बालिका कह भीषम पांहीं ॥
दो० हमको हरण कीन तुम. गह्यो बाह सों बांह ।
जो अपनो सुख चहोतुम, हमसनकरो बिवाह ॥
भीषम कह प्रणहवै हमारा ❋ स्त्री भोग तजा संसारा ॥
स्त्री भोग पुत्र जो होई ❋ राज बंश दुइ होई सोई ॥
हम तजि राज्य तात के कारन ❋ स्त्री भोग तजा संसारन ॥
कन्या सुनतहि भई निरासा ❋ रोवतिचलि भृगुपति के पासा ॥
भीषम कर गुरु उन जाना ❋ ताकारण तहं कीन्ह पयाना ॥
जाई दुःख भृगुपति सो कहै ❋ भीषम पाप करत जो अहै ॥
हरि लायो मम कारण व्याहा ❋ ताते कहौं बात भृगुनाहा ॥
परशुराम क्रोधित मन भयऊ ❋ कन्या लै भीषम पहं गयऊ ॥
भीषम पाहिं कह्यो भृगुनाथा ❋ तुम हरिलायो पकरयो हाथा ॥
दो० स्त्री भोग राज्य सुख, तजा पिता के काज ?
अब जोब्याहकीजिये, होत्त जन्मकुललाज ॥
परशुराम तबही अस भाषहि ❋ जीतौ युद्ध हमारे साथहि ॥
बचन हमार करौ परमाना ❋ नातरु रण ठानहु मैदाना ॥
तोहि जीतिहौ कन्या देउ ❋ भृगुनंदन कहै यह भेउ ॥
भीषम प्रण करिके रण ठाना ❋ गुरुशिष्य कीन्हकाठिन संधाना ॥
सात दिना लौं भा रण भारी ❋ दोउ बीर महा धनु धारी ॥
सुखबरदानिक भीषम आही ❋ जगत माहि को जीतै ताही ॥
अतिहि मारु कीन्ह भृगुनाथा ❋ जय नहिं पायो भीषमसाथा ॥
सात दिना लौ भो रण भारी ❋ भीषम युद्ध भयो अनुहारी ॥
बहुतक शर मारे भृगुनाथा ❋ जय नहि पायो भीषमसाथा ॥
भृगुपति अस्त्र भये सब हीना ❋ तब अकुलाय श्राप यह दीना ॥
दो० गुरु अपमान कीन तुम, क्षत्री है संसार ।
अस्त्रहीन है मृत्यु तव, सन्मुख रणमंझार ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कीन्ह्यो क्षत्री गुरु अपमाना ❀ तब अपमान तजौंरणप्राना ॥
औरँ प्रतिज्ञा यहै हमारा ❀ जेतक क्षत्री जगत मझारा ॥
इन्है अस्त्र देव अब नाहीं ❀ यही प्रतिज्ञा अब मन माही ॥
परशुराम तो यह कहि जाई ❀ मैं निरास कन्या वहि ठांई ॥
पक्ष करत हारे भृगुनाथा ❀ हमकों विधनाकीन्ह अनाथा ॥
धिक है जीवन जन्म हमारा ❀ अबधिक रहो जगत मंझारा ॥
तब भीषम पहँ कहे रिसाई ❀ बो कहं भीषम मारब जाई ॥
मोरे पाप तोर शिर भारा ❀ मो दरशन ते रण संहारा ॥
यहै श्राप भीषम कहँ दीन्हा ❀ तब कन्याहिं सरारचि लीन्हा ॥
महा दुखित पावक तनु जारा ❀ सोई कन्या भई जरि छारा ॥

दो० याहि प्रकार ते कन्या, तजि पावक मैं प्रान ।
सोई जन्मी द्रुपदघर, जाहि शिखण्डीनाम ॥

राजा सुनो कथा परवेशा ❀ बिदर्भदेश मह एक नरेशा ॥
शुद्रा नाम तब कन्या अहई ❀ ताहि स्वयम्बर कीन्हा चहई ॥
सो कन्या हरि भीषम लीन्हा ❀ विचित्रवीर्य्यकी दासी कीन्हा ॥
वैशम्पयान कहत बखानी ❀ सुनु राजा तुा बंश कहानी ॥
भीषम महाबीर जग जाना ❀ बानावरिनहि बीर समाना ॥
देश राज प्रतिपालन करई ❀ राजा काज सदा मन धरई ॥
भारत कथा पाप नहिं रहई ❀ तृण समान अघ पावक जरई ॥

दो० महभारत भाष्यउ यह, कीन्हो अल्पबखान ।
सबलसिह चौहान कह , सबै पाप क्षय जान ॥

इति श्री महाभारत सबलसिहचौहानभाषाकृते आदिपर्व-
बर्णनो नाम तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा सवधाना ❀ वेशम्पायन करत बखाना ॥
चित्राङ्गद राजा पुर माही ❀ प्रेमअरु हर्ष सदा मन माही ॥
इक दिन राजा गये शिकारा ❀ महा अगम कानन मंझारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तहं चित्राङ्गद गन्धर्व रहई ❀ राजा देखि क्रोध सो करई ॥
मानुष ह्वै कै गन्धर्व नामा ❀ अब निश्चय करितजिहैंमाना ॥
बन में गन्धर्व तबै प्रचारा ❀ चित्राङ्गद सो रण बिस्तारा ॥
गन्धर्व बीर बाण सौं मारे ❀ पैदल हय दल सब संहारे ॥
गन्धर्व गये स्वर्ग अस्थाना ❀ देश राज सब व्याकुल नाना ॥

दो० भीषम चित चिन्ता भई, कह गये बन्धु नरेश ।
बहु प्रकारतेखोजही कतहु न मिल्यो अंदेश ॥

क्रिया कर्म ताही कर कीन्हा ❀ बिचित्र वीर्य्य कोराज्यहिदीन्हा ॥
सत्यवती सो व्याकुल होई ❀ पुत्र के हेतु मरत सो रोई ॥
भीषम ज्ञान बुझावै ताही ❀ करि बिचार या मनके माही ॥
युवारुप कन्त का शोगा ❀ ताके उमर भयो वियोगा ॥
रात्रिकाल गंगासुत जाई ❀ रात्रि दिवस बहु कथा सुनाई ॥
जाते मन शान्ति दृढ आवै ❀ नीति कर्म सो कथा सुनावै ॥
दिन कातिक तो ऐसो गयउ ❀ बिचित्र वीर्य्य चरचैलयउ ॥
सर्व रात्रि माता के पाही ❀ भीषम कहा करैं निशि माही ॥
पर चित्त कै राजा जाई ❀ देखि पराक्रम जाई दुराइ ॥
भीषम उत्तम अशन बनाये ❀ माता को तह लै बैठाये ॥

दो० आप ज्ञान उपदेश ते, भाष्यउ तहां पुरान ।
जाते माता थीर मन, प्रगट होइमन ज्ञान ॥

यहै कर्म देख्यउ तब राई ❀ त्राहि त्राहि कर चलेउ पराई ॥
तब मनमें नृप करै बिचारा ❀ मनसों पाप न मिटै हमारा ॥
प्रात काल नृप रचेउ उपाई ❀ तब पूछेउ भीषम सो आई ॥
सुनौ बंध आसा कर मोहीं ❀ पुराय अर्थ पूछ्यो मैं तोहीं ॥
मनसा पाप जो चित में करै ❀ कौन प्रकार जगतमे तरै ॥
गुरूजन पर जो पाप सँचारा ❀ कैसे बन्धु होइ निस्तारा ॥
भीषम भाष्यो अर्थ पुराना ❀ पूछिसहज मनमें असजाना ॥
मनदोषहि जो दोष लगावै ❀ तौ गुरुजनको जगतसतावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

काशी माहँ जो करै प्रवेशा ❀ पावक महँ तनु दहै नरेशा ॥
ताको पाप हरण तब होई ❀ अर्थ पुराण बँधो है सोई ॥
दो० रंच रंच शर शर सबै, दाह करत जो आप ।
तब बंधव सो भाष्यउ, उग्र होत सो पाप ॥
सुनिकै राजा विस्मय माना ❀ कहा न काहुहि कीन्ह पयाना ॥
याहि भेद तौ काहु न पाई ❀ तब राजा बाराणसिं जाई ॥
तहां जाइकै दहेउ शरीरा ❀ येही रूप तजा नृप वीरा ॥
पाछे भीषम जानै पायो ❀ महा शोक तब मनमें आयो ॥
सत्यवती बहु रोदन कर्ई ❀ बंश नाश भो धीरज धरई ॥
महाशोक तब भीषम पायो ❀ बंशनाश भो पाप बढ़ायो ॥
सत्यवती तब करै बिचारा ❀ पूर्व पुत्र तो ब्यास हमारा ॥
पितु के संग तपस्या जाई ❀ ताहि ध्यानधरि लेहुँबुलाई ॥
सत्यावती ध्यान तब धारा ❀ आये ब्यास तहां मंझारा ॥
सत्यावती कहेउ तब बाता ❀ करो उपाय बंश भो पाता ॥
दो० देखत हृदय दया भई, कहा वचन बिस्तार ।
धीर्य्य धरो तुम मातजू, होय बंश अवतार ॥
तुव बधूनके गृह महं जाई ❀ दृष्टि भोग करबै हम माँई ॥
नागिनिहोई बस्तरतजिआवहिं ❀ पुत्रदान बिधानसो पावहिं ॥
बधू जेष्ठि अम्बे जेहि नामहिं ❀ सत्यवती तबताहिबखानहिं ॥
बस्त्र डारि के नग्न सरीरा ❀ रहियोगृह सन्ध्यामहँधीरा ॥
सत्यवती तब असकहि आई ❀ सन्ध्यासमय ब्यास तब जाई ॥
बिकट रूप भयानक होई ❀ अम्बे पाहि गये मुनि सोई ॥
अम्बे कहँ तब लज्जा आई ❀ और हृदय महँ परम उपाई ॥
जाते मूदि नयन जो आई ❀ ताते व्यास बचनअसकहई ॥
होय पुत्र अम्बा अवतारा ❀ महाबीर जन्महि संसारा ॥
सत्यवती ते भाष्यउ जाई ❀ नयन मूदि के हमपर आई ॥
दो० ताते अन्धा पुत्र होई, जन्महि गर्भ तुम्हार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बँशहोय तुव जगत महँ,नहीं राज्य अधिकार ॥
तबहिं अम्बिका के गृह जाई ❋ अंबिका केर चरित्र उपाई ॥
राजा कुल लज्जा उन पाई ❋ अष्टोगात पिंडोर लगाई ॥
गये मुनीस तासु गृह जबहीं ❋ बिकटरुप देखा मुनितबहीं ॥
अष्टोगात श्वेत सब अहही ❋ श्वेत बरण देखतभे सबहीं ॥
श्वेत रूप देखा तब चीन्हा ❋ तहां व्यास असचोलें लीन्हा ॥
जन्महि पुत्र गर्भ मंझारा ❋ पंडु होय तव पुत्र अुवारा ॥
विचित्रवीर्य्यके दूसरि नारी ❋ शुद्रसोहागिनि रही सोभारी ॥
दासि समान रही सो ताहीं ❋ व्यास गये ताके गृह माहीं ॥
शुद्रा सुनत अनंद तब पाई ❋ बिहसत बदन सोमुनिपहँ आई ॥
देखत मुनि तव हर्षित भयऊ ❋ तबहिं महा मुनि असबर दयऊ ॥

दो० तोरे पुत्र जन्महि जगत, महा भक्ति भगवान ।
अन्तर्ध्यान भये मुनि, कीन्हा तुरत पयान ॥

पूरब कथा सुनो अब राऊ ❋ तीनो बधू गर्भ उपजाउ ॥
ऋषि मांडव्य तब तज्यो शरीरा ❋ गये तुरत यम राज के तीरा ॥
यमराजा बहु आदर कीन्हा ❋ बल दोष मुनि कहि दीन्हा ॥
शिशुतापन में टीड़ी मारेउ ❋ तोहिअपराध इहां पगुधारेउ ॥
तब मुनीश प्रति उत्तर दयऊ ❋ शिशुतापनको दोष न लयउ ॥
नयन मूदि यम रहे चुपाई ❋ क्रोधित मुनि तब बचन सुनाई ॥
श्राप हमार लेउ अब राई ❋ मनुषरूप जन्महु जगजाई ॥
श्राप देई मुनि तेहिक्षण जाई ❋ यम के मनहि अँदेशा आई ॥
जाना व्यास केर उपकारा ❋ शूद्रा गर्भहि जाय मंझारा ॥
बिदुर भये तब तासु कुमारा ❋ शूद्रा गर्भ लीन्ह अवतारा ॥
अंबिका गर्भ पाण्डू अवतारा ❋ सब शरीर पाण्डव बिस्तारा ॥

दो० अम्बे गर्भ धृतराष्ट्र भे, महाबीर बलवान !
यहि प्रकारते बंशभो, सबलासिंह चौहान ॥

इति श्री महाभारते सबलासिंहचौहानकृतें आदिपर्व-
वर्णनो नाम चतुर्थो-ध्यायः ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा परकाशा ❀ जाते होई पाप को नाशा ॥
यजाति पुत्र कुम्भज बखाना ❀ कुन्ती भोजराज अनुमाना ॥
दूसर पुत्र सिंहासन माहीं ❀ नृप गन्धार देश इक आहीं ॥
गन्धा नाम जो राजा अहई ❀ गन्धारी कन्या घर रहई ॥
सो तौ शङ्कर भक्ति अराधै ❀ इकशत सुत इककन्या साधैं ॥
तबहीं बर यह शङ्कर दीन्हो ❀ भीषम यहै सुता तब लीन्हो ॥
सोई सुता स्वयम्बर माहीं ❀ भीषम हरि लाये तब ताहीं ॥
भाष्यो मन में अन्धकुमारा ❀ होन पुत्र ता शत अवतारा ॥
धृतराष्ट्र का कीन्ह बिवाहा ❀ महा हर्ष भीषम मन माहा ॥
गान्धारी तब कन्त निरीखै ❀ दूनों नयन अन्ध करिदीखै ॥

दो० पिय देखा गन्धारि जब, अन्ध जन्म अवतारा।
बांधीपट्टी नयन महँ, विधि यहलिखा लिलार ॥

धृतराष्ट्रक की आज्ञा लीन्हा ❀ भीषमराज्य पाण्डु कहँदीन्हा ॥
राजा पाण्डु सबै जग जाना ❀ आगे राजा सुनौ बखना ॥
जो श्रीकृष्ण पितामह अहैं ❀ शूरसेन राजा त्यहि कहै ॥
कन्या पुत्र जो दश हैं ताही ❀ ज्येष्ठ पुत्र बसुदेव जो आही ॥
कुंतीभोज मित्र तौ आही ❀ शूरसेन की कन्या ताही ॥
प्रथमहिं नाम तासु को अहै ❀ कुंतिभोज प्रतिपालन चहैं ॥
शूरसेन सो कन्या दीन्हा ❀ पुत्रीकहि प्रतिपालन कीन्हा ॥
कुंन्ती नाम दीन पुनि ताहीं ❀ कन्या रहि राजा गृह महिं ॥
बहुत प्रीति कन्या पर करई ❀ मनसा वचन कर्म ना धराई ॥

दो० प्रेमहर्ष सों कन्या, राजा गृह सो आह।
वैशम्पायन भाष्यउ, सुनु राजा नरनाह।

एक समय तब ऋषि दुर्बासा ❀ आये कुंतिभोज नृप पासा ॥
भाष्यउआइ करब अवसासा ❀ चारिमास रहिबे तुम पासा ॥
पै जो मानहु वचन हमारा ❀ इच्छा भोजन देव अहारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जबहीं इच्छा होय हमारी ❀ तबहीं भोजन देहु बिचारी ॥
तपत अन्न तत्क्षणही पाऊं ❀ जबहीं भोजन चाहब खाऊं ॥
राजा सुनि अंतःपुर गयउ ❀ सबके पहँ पूछत तब भयउ ॥
सब रानी तब कह बुझाई ❀ कोउ न कहत करब सेवकाई ॥
कुँन्ती तब भाष्यउ नृप पासा ❀ राखहु तात मुनिहिं चौमासा ॥
मैं तो सेवा करिहौं ताही ❀ भोजनदेउ जो मनमें आही ॥
राजा राख्यउ मुनि कह जाई ❀ कुंन्ती मुनिसेवा को आई ॥

दो० जो जो चाहत मुनि मनाहि, सो सो कुन्ती देई ।
प्रेम हर्ष सो महामुनि, बासि कुन्ती के सेई ॥

ऐसो हम महामुनि कहे ❀ बर्षा चारि मास तह रहे ॥
कुंती भक्ति तुष्ट मुनि भयउ ❀ मूल मंत्र दुर्बासा दयउ ॥
मूल मंत्र जाको तुम ध्यावो ❀ तौन देव को दरशन पावो ॥
ऐसे मूल मंत्र तौ दयऊ ❀ मुनिवर बिदाभूप सों भयऊ ॥
दुर्बासा तब बनमहं जाई ❀ कुंन्ती मनमें रच्यो उपाई ॥
मंत्र परीक्षा कुंन्ती करई ❀ सूरज देखि मंत्र उच्चरई ॥
सूर्य चन्द्र प्रत्यक्ष देवा ❀ मंत्र परीक्षा कीन्होसि भेवा ॥
हीन बुद्धि नारी अज्ञाना ❀ माला जपै सूर्य कर ध्याना ॥

दो० धरत ध्यान देव करे, तत्क्षण तब तहं आउ ।
वर प्रसाद तब दीन्ही, पुत्र हेत तुव जाउ

सुनत लाज तब कुंन्ती भयउ ❀ दिनकर तब बोले यहलयऊ ॥
भो नहि ब्याह रही मैं क्वारी ❀ भो बरदान जन्म भरिगारी ॥
भो कंलक तुम्हरे परसादा ❀ कुन्ती करति महा बिसमाता ॥
होई प्रसन्न तबकह दिनमाना ❀ कर्ण मार्ग जन्महि परवाना ॥
महाबीर दानी जग जाना ❀ विद्यावान बीर बलवाना ॥
यह कहि अन्तर्गत रबि भयऊ ❀ सूर्यप्रताप पुत्र सो ठयउ ॥
कर्ण मार्ग कर भो अवतारा ❀ कुंन्ती ताहि नीर में डारा ॥
शूद्र अधीरथ धीमर नामहिं ❀ सोतो गयो गंग अस्थानहि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

देखा सुन्दर बालक आहीं ❋ सो लै गो अपने गृहमाहीं ॥
राधा नाम तासु कै नारी ❋ प्रतिपालनकीन्होत्यहि भारीं ॥
दो० यहिपूकारते कर्ण भे, कुन्ती प्रथम कुमार ।
करि संक्षेप बखानेऊं, कीन नहीं विस्तार ॥
पांचै सात वर्ष के भयऊ ❋ बालक सँगखेलन तब गयऊ ॥
सब मिलि देहिं कर्णको गारी ❋ तेरो कहां पिता महतारी ॥
केवट लै प्रतिपाला तोहीं ❋ जानत मातपिता नहि ओहीं ॥
कर्ण सुन्यो लज्जा तब होई ❋ संकरवर्ण कहत सब कोई ॥
गंगातीर कर्ण तब जाई ❋ तन त्यागै का रच्योउ पाई ॥
जबहीं तन त्यागै को चहे ❋ दिनकर हर्षि हाथ तब गहे ॥
काहे तन त्यागो तुम बाग ❋ मैं जगज्योतिहुं पिता तुम्हारा ॥
सुनतै हर्ष कर्ण तब माना ❋ बोल्यउकर्ण धन्य जगजाना ॥
पिता हमार सूर्य परमाना ❋ मोसम भाग्य न दूसर आना ॥
बिनती एक हमारी ताता ❋ तुम तौ पिता कौन है माता ॥
दो० काके गर्भहिजन्म मम, कहुकृपाल दिनमान ।
तौ चित मोरा होइ थिर, कीन्हो कर्ण बखान ॥
तबहीं सूर्य परीक्षा कीन्हा ❋ बस्तर एक कर्ण को दीन्हा ॥
अग्नि चीर जानै संसारी ❋ जो पहिरै सो मातु तुम्हारी ॥
कै कै छल पहिरे जो कोई ❋ मोर प्रताप भस्म सो होई ॥
यहि प्रकार तब कर्ण बुझाई ❋ अंध्यर्तान भयो दिनराई ॥
कर्ण बीर बहुते सुख पायो ❋ बस्तर लै तब गृहकोआयो ॥
दो० बस्तर लै गृहराख्यऊ, चितदे सुनहु भुवार ।
बिद्याकेहितकर्णतब, कीन्हो हृदय विचार ॥
परशुराम पहँ छलसो जाई ❋ बिप्ररूप करिगे वहि ठांई ॥
परशुराम तब विद्या दीन्हा ❋ निजसमान धनुधारि कीन्हा ॥
पैक चतुर्दशि चले अन्हाई ❋ परशुराम तब आगे जाई ॥
पत्र कदम्ब पुहुप हैं नाना ❋ आधे हने तजे अभिमाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri: Funding by IKS.

खरी तेल तौ हाथहि लाई ❋ पाछे परशुराम तब जाई ॥
देखेउ सब खण्डित हैं फूला ❋ यहि प्रकार देखेसब तूला ॥
भूमिपै धरौं तौं होई पापा ❋ उछलै तपै कटोरा आपा ॥
मारेउ बाण बाट सब सोई ❋ लीन्हा रोकि कटोरा ओई ॥
कै अस्नान चले तब राई ❋ वही वृक्षतर पहुँचे आई ॥
परशुराम भाष्यो तब बाता ❋ आधे हनै कौन सख्याता ॥

दो० कर्णकहा हम काटेऊ, सुनत हर्ष भृगुनन्द !
भयो शिष्य अति दक्षतब, मनमें भये अनन्द ॥

शयन करेउ दिनको भृगुनाथा ❋ धरा कर्ण जंघापर माथा ॥
वज्र कीट कीड़ा तो राही ❋ कर्ण जंघ छेदत कर ताही ॥
तातें रक्त जो तन महं लागे ❋ परशुराम चौंके तब जागे ॥
क्रोधित परशुराम तब कहई ❋ कहुरे शिष्य जाति को अहई ॥
है क्षत्री मोसो छल कीन्हा ❋ पांचबाण तब भृगुपतिदीन्हा ॥
कर्ण पांही तब कह परकाशा ❋ विद्या दै का करौं बिनाशा ॥
यही बाण ते मृत्यु तुम्हारा ❋ बर औ शाप है दोउ हमारा ॥
जबलगि बाणजो तोपहँरहई ❋ तबलगिजगतअजयत्वहिंकहई ॥
रिपु के हाथ बाण जब जाई ❋ मरिहौ कर्ण कहा समुझाई ॥
कर्णबाण पांचौ तबलीन्हा ❋ अपनेभवनगमन तबकीन्हा ॥
कर्णबाणलै त्रोणहिं राखा ❋ अतिआनंद बढ़ीअभिलाषा ॥

दो० सदा रहहि हर्षित मन, कर्णबीर गृह जाइ !
भारत कथापुनीति अति, सुनतहि पापनशाइ ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदिपर्व-
वर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः । ५ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

जन्मे जय अब होउ सुध्याना ❋ वेशम्पायन करत बखाना ॥
कुन्ती भोज राय परमना ❋ कुन्ती केर स्वयम्वर ठाना ॥
देश देश के राजा आये ❋ कुन्त देश सब भूप सिधाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुन्ती देखा अगणित भूपा ❋ देखे राजा अगणित रूपा ॥
कर्म्मलिखा को मेटनहारा ❋ पाण्डु राउ को कीन्ह बिचारा ॥
जयमाला पाण्डव कहँ दीन्हा ❋ याही भाँति स्वयम्बरकीन्हा ॥
कुन्ती पाण्डु भयो तब ब्याहा ❋ देश देश के गे नरनाहा ॥
दायजु दीन बहुत तब राजा ❋ पाण्डव हर्ष परम सुख साजा ॥
दायजु कन्या गृह लै आये ❋ प्रेम हर्ष तब भीषम पाये ॥
ऐसे कुंती पाण्डु बिवाहा ❋ सो सब कथा सुनो नरनाहा ॥

दो० यहगाथा जन्मेजय, सुनो बचन परमान ।
सुनत पापसब नाशहीं, वैशम्पयन बखान ॥

राजा पाण्डु सबै जग जाना ❋ परजा लोग हर्ष अति माना ॥
पुरी हस्तिना उत्तम साजा ❋ भीषम प्रतिपालत है राजा ॥
मद्र सुदेश मद्रपति राऊ ❋ कन्या इक ता गृह जन्माऊ ॥
माद्री नाम जगत जग जाना ❋ समय संयोग स्वयम्बर ठाना ॥
तब भीषम वह जीति लै आये ❋ पाण्डुराउ को ब्याह कराये ॥
ऐसी भई माद्री रानी ❋ पटरानी दोनों जग जानी ॥
पाण्डवराज भयो रजधानी ❋ कुंन्ती और माद्री रानी ॥
देवराज के कन्या रहै ❋ पाराशरी नाम त्यहि कहै ॥
भीष्म बीर तब कीन बिचारा ❋ बिदुरहिब्याह तासु अनुसारा ॥
बिदुरौ कहँ सो दीन बिवाही ❋ प्रेम हर्ष सत्यावति आही ॥
प्रति पालक तौं भीषम अहैं ❋ राज्य देश की रक्षा चहैं ॥
यहि प्रकार जन्मेजय राजा ❋ तोरे बंश चरित के काजा ॥

दो० बिदुर पाण्डु धृतराष्ट्रका, तीनों बन्धु प्रमान ।
यह चरित्र तुव बंश के, सुनु राजा दै कान ॥

शंकर बर अनुकम्पा ब्यासा ❋ गंधारी के गर्भ प्रकासा ॥
उदर गर्भ तब भो परकासा ❋ बारह बर्ष गर्भ यह बासा ॥
महा कष्ट तब भई गंधारी ❋ भेषज कहेउ उदर तब फारी ॥
उदर माहिं तब नाहिं उबारा ❋ ब्यास तहां तब मंत्र सँचारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मंत्रराज गंधारि बचाई ❀ महा दुःख गंधारी पाई ॥
मांस पिण्ड देखा गंधारी ❀ करते आप लिलारहि मारी ॥
शतपुत्रन हित शंकर ध्याये ❀ एक पुत्र नहिं जगमें आये ॥
तब मुनि व्यास कहैं समुझाई ❀ शत पुत्रहु होइहैं तुव पाई ॥
बचन एक मैं कहौं उपाई ❀ सोई मंत्र करौ मनलाई ॥
चिंता तजि मानहु बच मोरे ❀ शत आत्मज होइहैं अबतोरे ॥

दो० इकशत कुण्ड खनाइकै, घृत भरिये तामाहिं ।
शत खण्डन करु मांस यह, डारो लैलै ताहिं ॥

शीतल जलसों करौ पखारा ❀ कुण्डहि प्रतिही होइ कुमारा ॥
सुनि गन्धारी कुण्ड खनाये ❀ शतकुण्डनमहँ घृतहिं भराये ॥
शीतल जल सों पिण्ड पखारा ❀ एकोत्तर तब भागे सञ्चारा ॥
यक यकभाग कुण्ड महँ डारी ❀ दोई भाग एक महँ धारी ॥
भये तहाँ दुर्योधन बारा ❀ प्रगट भये तहँ सकल कुमारा ॥
दूसर अंश इक कन्या जाना ❀ और पुत्रसब भे बलवाना ॥
अंगुष्ठ प्रमाण पुत्र अवतारा ❀ तब प्रतिपालहिं सबै कुमारा ॥
दुःशासन अरु विबिसुत भयऊ ❀ चित्रसेन बिक्रम निर्भयऊ ॥
परभृत्यू दुर्मुख इकबारा ❀ वत्सासुर योधन अवतारा ॥
औरौ नाम अनेकन जाना ❀ जन्मे बीर अन्ध हर्षाना ॥

दो० शत पुत्रन प्रतिपालही, गन्धारी मन लाय ।
परमहर्ष तब भीषम, देखा बंश उपाय ॥

यकदिन राजा पाण्डु नरेशा ❀ मृग बिहार कर बन परवेशा ॥
दैवीगति कछु जानि न जाहीं ❀ ऋषि यक भोग करै दिन माहीं ॥
मृगस्वरूप सो लै सञ्चारा ❀ तेहि अवसर राजा शर मारा ॥
स्त्री पुरुष के भेद्यहु बाणा ❀ दीन स्राप तब मुनि परमाणा ॥
श्राप देइ मुनि तजा शरीरा ❀ महा शोचबश भा नृपवीरा ॥
शोच करै अपुत्रा भयऊ ❀ मम शाप मुनिवर तब दयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ताही बनमें ऋषि बहु अहैं ❋ तिन्ह जाय पाण्डव नृप कहैं ॥
भीषम पाहि कहेउ तिन जाई ❋ ऐसो शाप मुनीश कराई ॥
ताते बन में तप अब करिहौं ❋ जा कारण ते जग में तरिहौं ॥
दो० बन अखण्ड के माहँ तब, रहिहैं पाण्डु नरेश ।
ऐसे श्राप यह पायऊ, कहा राउ आदेश ॥
आये मुनि सब भीषम पासा ❋ सब बृत्तान्त जाय परकासा ॥
भीषम सुनिके पूछहिं गाथा ❋ कहां अहैं पाण्डव नरनाथा ॥
मैं उनको लै आवत जाई ❋ बनोबास जहँ कर हैं राई ॥
भीषम चलेउ पाण्डु के पाहां ❋ दूनो रानि चलीं पुनि ताहां ॥
कुन्ती और माद्री नारी ❋ कंत के पास चलीं अनुसारी ॥
आखण्डित बन पहुंचे जाहां ❋ भीषम गये तुरतही ताहां ॥
बहु बिधि ते भीषम तब कहै ❋ पण्डिव के मनमें नहिं अहै ॥
पाण्डव करत इहां बनबासा ❋ रहिबे तात तजो तुम आसा ॥
बहु प्रकार गङ्गज समुझायो ❋ पै पाण्डव के मन नहिंआयो ॥
याही बन मैं रहेउ भुवारा ❋ तब भीषम रणको पगुधारा ॥
बन में राजा हर्षित रहिहै ❋ कुन्ती हमरी सेवा करिहै ।
महा शोक ते राजा रहई ❋ पुत्र हेत चिंता मन गहई ॥
तबै सकल मुनि भाषैं बाता ❋ तजौ शोक पाण्डव नरनाथा ॥
तोरे पुत्र होइहै बलधारी ❋ यह आशिषहै पाण्डु हमारी ॥
ऐसे रहै तब बनही राजा ❋ होत शोच पुत्रन के काजा ॥
बिना पुत्र के कुल अँधियारा ❋ कैसे पितृ होंय उद्धारा ॥
तब कुन्ती बोली पिय बासा ❋ मंत्र एक है हमरे पासा ॥
यह जो माला मंत्र मम पाहीं ❋ ध्यावों जाहि देव सों आही ॥
जौन देव आराधहि कुन्ती ❋ तौन देव बर देइ तुरंती ॥
ताते होय पुत्र अवतारा ❋ कन्त तजौ मन केर खम्भारा ॥
दो० यहि प्रकार ते कुन्ती, कन्थाहिं धीरज दीन।
माला मंत्र हाथ लै, देव अराधन कीन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

माला मंत्र कीन परमाना ❋ प्रथमहिं धर्म्म केर धरि ध्याना ॥
ताते धर्म्म युधिष्ठिर भयऊ ❋ महाहर्ष पांडव मन ठयऊ ॥
दूजे पवन केर धरि ध्याना ❋ ताते भीम भयो बलवाना ॥
दोनो पुत्र भये तब भारी ❋ तबफिरि मनमाहि बिचारेउनारी ॥
अब काको मन धरिये ध्याना ❋ कै बिचार इंद्रहि कहँ आना ॥
अर्जुन नाम सो भयउ कुमारा ❋ इन्द्र तेज तब भयो संसारा ॥
माता हर्षवंत तब भाषै ❋ अर्जुन नाम पुत्र कर राखै ॥
पांडवराय देखि सुख पाये ❋ श्यामस्वरूप देखि मनभाये ॥
नयन बिशाल श्याम है देहा ❋ पांडवराय करत बहु नेहा ॥
श्यामल रूप देखि पितु भाषै ❋ कृष्णसुनाम पिता तब राखै ॥

दो० दुई नाम तब प्रथमही, मात पिता धरिताहिं ।
प्रेम हर्ष तन बन महँ, राज रहै सुखमाहिं ॥

माद्रीपुत्र हेत मन मनलाई ❋ कुन्ती बहिनी बन सुनाई ॥
तब कुन्ती माला वहि दीन्हा ❋ औपुनिनाम मंत्रकहिदीन्हा ॥
माद्री माला मंत्र तब पाये ❋ आश्विनिकुमारहि तब तेहि ध्याये॥
ताते पुत्र भयो अवतारा ❋ नकुलनाम जानत संसारा ॥
तब माला कर तेजहि जाई ❋ अन्तर्ध्यान भयो वहि ठाँई ॥
मंत्र को तेज शक्ति जब गयऊ ❋ कुन्ती महादुःख तब करेऊ ॥
पुत्रन को प्रतिपालहिं माई ❋ प्रेम हर्ष राजा तब पाई ॥
चारि पुत्र हैं दुई हैं माता ❋ प्रेम हर्ष पांडव नरनाथा ॥
इहां पांडव बन में रहई ❋ उतहीं भीष्म देश में रहई ॥
राज दिया दुर्योधन राऊ ❋ प्रतिपालैं भीषम सो भाऊ ॥

दो० राजा भये अंध सुत, पाडु रह्यो बनवास ।
अब राजा सुनु आगे, कहत कथा तवपास ॥

सूरज बरतहिं पांडु भुवारा ❋ पांडुराउ तब गयो शिकारा ॥
भानु अस्त होई बिस्तारा ❋ रानी मनमा करै बिचारा ॥
तादिन माद्रि रजस्वल भयऊ ❋ पूरणदिन नहान तबकरेऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

माद्री कह कुन्ती के पाहीं ❋ जबलग पतिआवै घरमाहीं ॥
सुन्दरि रथ राखो अटकाई ❋ जाते कंत तौ भोजन खाई ॥
सन्मुख रबि बैठी सो रानी ❋ सूरज रथ तहँ जो ठहरानी ॥
पांडव राइ तबै गृह आये ❋ दिवसजानिकै अन्नहि खाये ॥
पाछे माद्री उठि गृह जाई ❋ रात्रा भई तुरतै गृह आई ॥
तब राजा आश्चर्य्यहि कियऊ ❋ कुन्ती सकल भेद तबकहेऊ ॥

दो० माद्रीरूपहि देखिकै, अस्थिर भये जो भान ।
सुनत पांडु राजा तबै, लगे मैन के बान ॥

माद्री पहँ राजा तब जाई ❋ करि रतिकेलि ज्ञानभुलवाई ॥
ऋषिहि शापतबआइ तुलाना ❋ अंतकाल भे पांडव प्राना ॥
गर्भवती माद्री तब भई ❋ पांडव नृपति देह तजिदई ॥
देखा पांडु भयो तन नाशा ❋ द्वउ रानी तब रुदनप्रकाशा ॥
दाह कर्म राजा कर कीना ❋ गर्भ हेत माद्री रहंहीना ॥
कछु दिन गये पुत्र अवतारा ❋ माद्री तनहिं तजा संसारा ॥
कंतके शोक माद्री गयऊ ❋ सुतप्रतिपालन कुंतीकियऊ ॥
सहदेव नकुल माद्री नंदा ❋ तीनि पुत्र कुंती के बंदा ॥
पांच पुत्र कुन्ती तब पाला ❋ माद्री केर भयो जब काला ॥
ऋषि ब्राह्मण सब करत उपाई ❋ भीषम पाहिं कहातब जाई ॥

दो० पांडव नृपतिरु माद्री, बनमें तजा शरीर ।
पांचपुत्र प्रतिपालने, कुन्ती करत गँभीर ॥

ऋषिबर ते भये पंच कुमारा ❋ पांडव नृपति बश अवतारा ॥
कुंती पांच पुत्र लै रहई ❋ शतबालक गंधरिके अहई ॥
भीषम सुन्यो तुरंत सिधाये ❋ कुंती कहँ घरही लै आये ॥
पांच सात बय के तब भयऊ ❋ प्रतिपालन भीषमतब ठयऊ ॥
खेलन को जब जात समाजा ❋ कौरव पांडव एकहि साजा ॥
पाच पुत्र कुंती के आहीं ❋ ताहि समान एकामौ नाही ॥
खेलि भीम सों सकेउ न कोई ❋ दुर्योधन तब चिंता होई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दिन दिन बालक पांचौ ऐसे ❋ केहरि के समान हैं जैसे ॥

दो० दुर्योधन को चित होइ, पांच देखि बरियार ।
रिपु बिचारदेखे तहां, कुरुपति मन खम्भार ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदि-
पर्ववर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनौ जो कुंती अहईं ❋ पांचपुत्र याहि ऐसे कहईं ॥
तुम्हरे पिता करै यह राजु ❋ कर्म दोष ते भयो अकाजु ॥
सुनिकै पाचौं चिंत करहीं ❋ पिताराज याहै संचरहीं ॥
खेलन करन जात सब साथा ❋ पाचौ बांधत औ कुरुनाथा ॥
हमरे पिता केर यह देशा ❋ बिधिबशभां कुरुनाथा नरेशा ॥
खेलत भीम और सौ भाई ❋ भीमकहै सौ जीति न जाई ॥
एक बृक्ष पर है सब भाई ❋ चढ़े जाईं तब भीम हराई ॥
धाईं बृक्ष तब भीम हलायो ❋ गिरे सब तौ हाथ न पायो ॥
पेड़ हलाय दीन तो हांका ❋ परेभूमि जिमिसबफल पाका ॥

दो० भीमसेनकी करिहँसी, हर्षत हैं सौभाइ ।
बहु प्रकार दुर्योधन, मन में करै उपाइ ॥

एकहिं बार गहैं दश भाई ❋ पटकि भीमतबचरणघुमाई ॥
सदां बिवाद भीम सो होई ❋ शत भाई जीता नहिं कोई ॥
जहँ वे खेलन करहिं पयाना ❋ शतबांधव तहँ करैअपमाना ॥
चिन्ता करि दुयोधन राई ❋ मरन भीमको रच्योउपाई ॥
महाबाली सो मरत न मारा ❋ देकै गरल करौ संहारा ॥
एकदिनप्रीतिं बहुततबकीन्हा ❋ छल करिगरलभीमकोदीन्हा ॥
खातै गरल चेत ना रहई ❋ हर्षि गात दुर्योधन कहई ॥
तब गंगा में दीन बहाई ❋ बूड़ भीम पतालहिं जाई ॥
भोगवती गंगा है जहां ❋ बहत भीम पहुंचे गे तहां ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तहां बीर तब पहुच्यो जाई ❀ गंगा धार रह्यो अटकाई ॥
दो० नागसुता अस्नान को, आई सुनो सो राउ ।
देखिकलेवर भीमको, सुता हर्ष तब पाउ ॥
शंकर श्राप देखिके बारी ❀ ता कहँ कन्या बरै विचारी ॥
शंकर श्राप हेतु सुनु राई ❀ प्रतिदिन हर पूजै सो जाई ॥
नाग कि कन्या पुजै महेशा ❀ पुष्पहु बेलपत्र धर वेशा ॥
यकादिन फूल और नहि पाये ❀ बासी पुष्प तो जाई चढाये ॥
ताते हरहि क्रोध बहु कीना ❀ दीन श्राप तब यह परवीना ॥
मृतक पुष्प लैं पूजेउ मोहीं ❀ मृतकै पुरुष प्रीति होइतोही ॥
तब कन्या यह बिनती लाई ❀ मोक्ष शाप कबहोई गोसांइ ॥
हरभाष्येउ मृतकै बर पाई ❀ पाछे अमृत पान जियाई ॥
दो० सोई श्राप हित कन्या, भीमहि दीन जियाय !
अति सुन्दर पति देखिकै, हृदय बहुत हर्षाय ॥
खबरि हेत सो जाई सुबारा ❀ नाग सुता यह प्रीति बिचारा ॥
तबही बर कीन्हेउ मन लाई ❀ पाछे तबही शेष पह जाई ॥
अमृत दैके भीम बचाये ❀ पुर पाताल भीम सुख पाये ॥
चारि बधु कुन्ती महतारी ❀ महाशोक कीन्हो तब भारी ॥
भीमकेर उपदेश न पावा ❀ महाशोक कुंती मनआवा ॥
कुंती कह हम जन्म दुखारी ❀ कहां गये सुतभीम हमारी ॥
महा शोच भे चारिउ भाई ❀ कहूं न खोज भीम कर पाई ॥
दो० चारि बन्धु अरु कुन्ती, पावत शोक अपार ।
यहि प्रकार राजा तहां, रहे भीम पत्तार ॥
यकादिन भीम गये चलि तहां ❀ अमृत सात कुण्ड है जहां ॥
सातौ कुण्ड कीन्ह तब पाना ❀ भागे रक्षक नाग पराना ॥
शंकर सुन्यउ सकल ब्योहारा ❀ मनमें कीन्हेव क्रोध अपारा ॥
खायउ अमृत उदर अघाई ❀ मृत्युलोकको सुमिरेउ भाई ॥
चलेउ सुभीम मृत्युपुर जबही ❀ महादेव घेरा पुनि तबही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

महा मारु कीन्हेउ संहारा ❋ शंकर भीम तौ पुरीपतारा ॥
महादेव को क्रोध अपारा ❋ तब त्रिशूल लें उदरजो फारा ॥
अमृत सातौ कुण्ड निकारी ❋ हर्षित गात महेश पुरारी ॥
मृतक भीम भवानी जानी ❋ महादेव सो कहा बखानी ॥
धन्य धन्य तुम बीर अपारा ❋ खाये अमृत पुरी पतारा ॥

दो० धन्य वीरबल साहसी, गौरी कहत बिचारि ।
कृपा करौ तुम स्वामी, देहु जीव संचारि ॥

जीव दान शंकर तब दीन्हा ❋ उठ्यो भीम तबरिस बहु कीन्हा ॥
रहु रहु कहि तौ उठा जुझार ❋ महादेव तब हर्ष अपारा ॥
केहरिनाद तहां तब कीन्हा ❋ तुरतहि नाम बृकोदर दीन्हा ॥
हर्षित गात भीम बलवाना ❋ महादेव तब कीन्ह पयाना ॥
बासुकी महा हर्ष तब भयउ ❋ नाना मणी भीम कंह दयउ ॥
बिदा मांगि तब भीम सुवारा ❋ तब चलनेको हृदय बिचारा ॥
हर्षितभीम बिदा सो भयउ ❋ अहिलमतीशोकहित्यहि ठयउ ॥
बिबिध भांति समझायो ताहीं ❋ कछुदिन में ऐहौं तुम पाहीं ॥
चले हर्ष नरपुर को आये ❋ मात बन्धु तब दर्शन पाये ॥
मिल्यउ पुत्र हर्षित महतारी ❋ दुर्योधन अचरज भा भारी ॥
दीन्हों बिषपुनिं मरा जिआयो ❋ बर्ष दिना बीते पुनि आयो ॥

दो०—कुन्ती माता हर्ष तब, हर्षितधर्म भुआर ।
कै सै.क्षेप बखानेउँ, भारत कथा अपार ॥

धर्मराज कह यह तब बाता ❋ भीमआदि सुनियो ममभ्राता ॥
सावधान तैं रहब सँभारा ❋ दुर्योधन है शत्रु हमारा ॥
एकहि संग रहब सवधाना ❋ याहै मंत्र धर्म सुत ठाना ॥
यह बिचार करि पांचौं भाई ❋ बिस्मय रहैं सचेत सदाई ॥
यहि प्रकार ते रहैं सवधाना ❋ वैर के बीज प्रथम तिहठाना ॥
यहि प्रकार पांडव रह ताहां ❋ पांचो बन्धु सचेतन माहां ॥
महावीर बृकओदर अहै ❋ कौरव सब मन शंका रहै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आपै आप रहै सवधाना ❋ वैशम्पायन करत बखाना ॥
यहि बिधिते तौं भौ अवतारा ❋ कुरु पांडव दोउबंश भुवारा ॥

दो०—सुनु राजा जनमेजय, भारत कथा अनूप ।
याहिं प्रकार ते उत्पति, कुरु पांडव दुइभूप ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदिपर्व-
वर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा अनुसारा ❋ कुंन्ती हर पूजा बिस्तारा ॥
सोइ लिंग को यह परभावै ❋ राजा स्त्री पूजन पावै ॥
कुन्ती पूजे प्रतिदिन जाई ❋ औ गंधारी पूजन आई ॥
कुंती भेद न जान गँधारी ❋ नहिं कुंती गंधारी नारी ॥
याहि प्रकार ते पूजा ठावहिं ❋ एक एक को देख न पावहिं ॥
प्रतिदिन तौ यहपुजा करहीं ❋ दूनोत्रिय हरभक्ति सँचरहीं ॥
राजेश्वर महीश जग जाना ❋ प्रतिदिन तब पूजतपरमाना ॥

दो०—सुनुराजा जनमेजय, भारत कथा बखान ।
भारत कथा सुपुण्य फल, जाते पाप नशान ॥

भीषम कीन्हेउ हृदय बिचारा ❋ विद्यावन्त न एक कुमारा ॥
कुरु पांडव दोऊ सो अहहीं ❋ विद्यावन्त न एकौ रहहीं ॥
द्रोणाचार्य कि चिन्ता करहीं ❋ जो आवैं विद्या संचरहीं ॥
भृगुपति केर शिष्य जो अहै ❋ विद्या शास्त्र ज्ञान तौ रहै ॥
यह तौ चिन्ता भीषम पाई ❋ खेलनको सब बांधव जाई ॥
सबबांधव अरु कुरुपाती साथा ❋ खेलत गेंदहि कुँअरन हाथा ॥
बिधि बश गेंद कूप में परई ❋ सबमिलि सोच तहां सब करई ॥
कंदुक परेउ कूप महँ जाहीं ❋ कोऊ काढ़ि न सकतो ताहीं ॥
कुरुपति गेंद लेन को चहही ❋ काढ़ो हठकरि राजा कहहीं ॥
बालक रूप कहैं सब कोई ❋ काढ़ैं गेंद समर्थ न होई ॥

दो० यहि प्रकार ते बाल सब, करते युक्ति उपाइ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहुत प्रकार विचारत, गेंद काढि नहिं जाइ ॥
ताही समय द्रोण गुरु आये ❋ द्रुपद माहँ जो मान गवांये ॥
द्रुपद समीप जान जो चाहा ❋ द्वारपाल तब रोकेउ ताहा ॥
राजा पास जाननहिं दीनो ❋ भयो उदास द्रोण मनहीनो ॥
यहि अंतर हस्तिनपुर आये ❋ बालक सब सो देखन पाये ॥
युक्ति करत तौ गेंद के काजा ❋ दुर्योधन सौ बन्धु समाजा ॥
देखि द्रोण तब कहेउ सुनाई ❋ गेंद काढ़ि देहौं मै भाई ।
धनुषमाहिं तृण शर संचारा ❋ पढ़िकै मंत्र गेंदको मारा॥
गेंद उठाइ सो ऊपर आयो ❋ दुर्योधन तब आनँद पायो ॥
गेंद उठाइ के लीन भुवारा ❋ भीषम के पासहि पगुधारा ॥
भीषम पाहि कहत समुझाई ❋ कंदुक परेउ कूप भेंजाई ॥

दो० बहुत युक्ति हम कीन्ही, गेंदकाढ़ि नहिं जाइ ।
यहि अन्तर यकब्राह्मण,तहां सो पहुँचेउआइ॥

देखत बिप्र कहा तब बाता ❋ कंदुक काढ़ि दीन सख्याता ॥
सींकको शर सायक संधाना ❋ कूप मध्य मारेउ तब बाना ॥
गेंद कूप ते बाहर आई ❋ भीषम ते कह कुरु सुनाई ॥
तबभीषम मन करत बिचारा ❋ दूजो बिप्र नहीं संसारा ॥
परशुराम कर शिष्य सुजाना ❋ द्रोणाचार्य तासुको नामा ॥
करि आदर तब वेगि बुलाये ❋ चरण धोइ आसन बैठाये ॥
भीषम बचन कहा उन पाहीं ❋ आपु रहा हस्तिनपुर माहीं ॥
बालक सबै तो अहैं हमारा ❋ विद्यावन्त करहु अवसारा ॥
यही बात कहन तब लीन्हा ❋ पाँच गाँउ सामर्पण कीन्हा ॥
हर्षित द्रोण रहे पुनि ताहीं ❋ स्त्री पुरुष हर्ष मनमाहीं ॥

दो० द्रोणाचार्य रहे तहां, पुरी हस्तिना मांह ।
यहि प्रकार ते गुरु भये, सुनो वचन नरनाह ॥

कुरु सौ बान्धव एक समाजा ❋ पांच बन्धु पाण्डव तहँसाजा ॥
भीषम सौंप द्रोण के पाहां ❋ और हर्ष सों बातै काहा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इन सबहिन को क्षत्री करिये ❋ विद्या अस्त्र ज्ञान सञ्चरिये ॥
अस्त्र शस्त्र सिखवो मन जानी ❋ हर्षित भीषम कहत बखानी ॥
सुनतहि द्रोण बहुतसुख माना ❋ जो तुम कहा सोई परमाना ॥
विद्या शाला एक बनावा ❋ उत्तम स्थान सो देखि सुहावा ॥
कुरु पाण्डव एकहि सब साथा ❋ विद्या पढ़त दोउ एक साथा ॥
अग्निबाण जल बाण कहाये ❋ पवनबाण गुरु जानिसिखाये ॥
अहिकर बाण नाग शर साधा ❋ केकी बाण मोर बहु बाधा ॥
खग शायक पिप्पील प्रमाणा ❋ अन्धकारऔरहु रवि बाणा ॥

दो० युद्ध केरि जो विद्या, सिखत सो गुरु के पास ॥
बाणाबारी अस्त्र सब, सिखे क्षत्रियन आस ॥

पारथ को बाणावरि मांहा ❋ पावत नहिं कोई जग माहां ॥
सबै लोग तौ देत बड़ाई ❋ धन्य धन्य पारथ की माई ॥
स्वर्ग पताल मृत्यु असमाना ❋ कम्पमान पारथ के बाना ॥
सदा कर्ण आवहि पुनि ताहां ❋ बैठत आनि द्रोण के पाहां ॥
परशुराम को शिष्य तौ अहै ❋ अतिहि प्रीति द्रोण पर रहै ॥
राज नीति औ शस्त्र बिधाना ❋ द्रोणचार्य तौ सिखवै नाना ॥
प्रतिबासर नाना ब्यवहार ❋ पढ़तरु सुनत अनेक प्रकारा ॥

दो०यहिप्रकारते राजा, विद्या सिखवत ताहि ।
सौबांधव कुरुनाथजो, पांडव पांचो आहि ॥

इति श्रीमहाभारत सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदिपर्व-
वर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः । ८ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा परवेशा ❋ कौतुकइक बड़ भयो नरेशा ॥
कुन्ती शिवपूजन को जाई ❋ यहि अन्तर गन्धारी आई ॥
दासी सब लै संग गंधारी ❋ हर के मण्डप तब यगधारी ॥
गन्धारी कुन्ती कह देखी ❋ पूछे बात तौ कहा विसेखी ॥
कारण कौन इहां को आई ❋ ताकर भेद कहौ समुझाई ॥
कुन्ती करत शम्भु की सेवा ❋ दूनो कह तब एकहि भेवा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहत गन्धारी तू कत आई ❀ राज स्त्री तौ पूजन जाई ॥
इहां सदा हम पूजत अहई ❀ तू कत आई गन्धारी कहई ॥
येतो गर्भ तोरे भी आई ❀ राजेश्वर हर पूजन आई ॥

दो० कुन्ती कह हम पूजती, प्रथमहिं राज्य हमार ।
आदिहु ते हम पूजती, कुन्ती कह सञ्चार ॥

दूनो महा द्वन्द्व तब कीन्हा ❀ एक एक कह गारी दीन्हा ॥
महा देव तब भाष्यउ बानी ❀ काहेको दोउ भयो अयानी ॥
जो पूजा कर भक्त हमारा ❀ ताकरहम कहँ सुनो विचारा ॥
शैलसुता अर्द्धगी आही ❀ तहू केर बश्य हम नाही ॥
पूजत श्रद्धा भक्ति जो कोई ❀ ताके बश्य जगत हम होई ॥
तजौ द्वन्द्व मानो मैं कहऊं ❀ जो मोभक्त तासु मै कहऊ ॥
वचन एक भाषत मै नारी ❀ तजहुकलह तुम छन्हबिचारी ॥
कनक फूल अरु सुगंधउपाई ❀ जो कोउ पूजत अतिचढ़ाई ॥
औ ताही कर सुनहु विचारा ❀ तासु पुत्र तौ होई भुवारा ॥
ऐसा कहि हर अन्तर्ध्याना ❀ परम हर्ष गन्धारी माना ॥

दो० कहत गन्धारीं कंथसे, महा हर्ष परिहास ।
कहौजाई सबसुतन ते, करौं पुष्प परकास ॥

कहि गंधारी गृहको जाई ❀ पुत्रनते कहि तबहिं बुझाई ॥
कनक के फूल सहस बनवाई ❀ दीजै पुत्रतौ हम को ल्याई ॥
राजा सुनताहि कनक मगायो ❀ चम्पा पुष्य अनेकगढ़ायो ॥
गढत सुनत तौ पुष्य उपाई ❀ तबकुन्ती गृह विस्मयजाई ॥
बैठीजाय शोच के भवनहि ❀ भोजन अन्न तौकीन्होकछुनाहि ॥
महादुःख मनमें उपजाये ❀ बिद्यापढि आत्मज सबआये ॥
क्षुधावन्त भीमहि तब जाई ❀ क्षुधालागि भोजनदे माई ॥
कुन्ती तब उत्तरनहिं दीन्हा ❀ महाक्रोध भीमहिं तबकीन्हा ॥
तीनिबार तौ बोलि कुमारा ❀ उतर न दीन मातुसिसकारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रांधन केरि समा सब ग्है ❋ सोतो भीम मातासन कहै ॥
दो० दोय पहरमें पठन करि, आये घरके माहिं ।
अजहूंभोजन है नही, माता बोलत नाहिं ।
गुरुके पाहिं दुःख सहिआवै ❋ घरमें कछुभोजन नहिंपावै ॥
माता बोल न उत्तर देई ❋ कहु बंधव काकरिये सोई ॥
आज्ञा देहु समा सब अहै ❋ खाऊं जाइ बृकोदर कहै ॥
धर्मराज कह एसी बाता ❋ भीमसन कारे सख्याता ॥
माता क्षुधावन्त जो आही ❋ कैसे के सुनु भोजन खाही ॥
माता कह तौ पूंछौ जाइ ❋ मोरे कहे न बोलत माई ॥
राजा कह अर्जुन तुम जाहू ❋ पूंछौ जाइ कौन दुखआहू ॥
पारथ गे माता के पासा ❋ हाथजोरिकै बचन प्रकासा ॥
विदा पढी क्षुधा तौ पाई ❋ भोजन का तौ आयों माई ॥
दो० अजहूं रांधनकौन नहि, कौन दुःख मनमाहिं।
सत्यसत्य जो माता, सो भाषहु हम पाहिं ॥
माताकही होब कह पूता ❋ ऐसी बात भई अजगूता ॥
पारथ कहा कहौं तुम माई ❋ करब सत्य जो कीन्हो जाई ॥
तब कुन्ती भाषै यह बाता ❋ गन्धारि को द्वन्द्व सख्याता ॥
कनक पुष्य पूजै जोकोई ❋ तासु पुत्र महिराजा होई ॥
उन सुवर्ण दीन्हो सो नाना ❋ पुष्पाहिगढ़त अनेक विधाना ॥
अर्जुन कहा सुनो हो माता ❋ यह तुम कहा कौनिबड़िबाता ॥
प्रातहिकाल देब हम माता ❋ रांधनकरहु आपु सख्याता ॥
सुनि कुन्ती आनन्दित भई ❋ रांधनकरन तबहिं चलिगई ॥
भोजन पान करे सब कोई ❋ रात्रीकाल प्रकट तब होई ॥
दो० कुन्ती कहत अर्जुन सो, आनों पुष्पतुरन्त ।
प्रातकाल पूजन चहौं, शंकर हेतु दुरन्त ॥
प्रातकाल की बेरा भयऊ ❋ घरीदोइ निशि बाकी रहेऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुन्ती कहत देउ अब आई ❀ पारथ कहौ देउ अबमाई ॥
धनुष बाण तब अर्जुन गहई ❀ माता धीर धरौ असकहई ॥
जहां कुबेर केर बगवाना ❀ तहां सो अर्जुन मारे बाना ॥
काटे तरुवर पुष्प उड़ाये ❀ बाणके तेज पुष्प बहुआये ॥
शिवकेमण्डप पुष्प जो आये ❀ भीतर बाहर पुष्प जु छाये ॥
शिवमंडप फूलन सो पाटे ❀ औरौ बाण जो अर्जुनछांटे ॥
कनक पुष्प चम्पा अनुहारा ❀ शोभा बहुत सुगन्ध अपारा ॥
शिवमंडप पुष्पन सों छाये ❀ अर्ज्जुन पाहि बाणतबआये ॥

दो० अर्जुन कहा सुनु माता, पूजौ शंकरजाइ ।
जेतेफूल मनमानैं, मण्डपमा लैं उजाइ ॥

कुन्ती सुनत हर्ष मन भई ❀ करि अस्नान मण्डपहि गई ॥
देखा पुष्प अनेक प्रकारा ❀ पूजत कुन्ती हर्ष अपारा ॥
तुष्टवंसन्त गिरिजापति भयऊ ❀ आशिर्वाद तबकुन्तिहि दयऊ ॥
तोरपुत्र होइहै महि राजा ❀ पुरी हस्तिना नगर समाजा ॥
यहबर दीन्हो तब त्रिपुरारी ❀ कुन्ती तब गृहकौ पगुधारी ॥
तेहि अवसर गंधारी आई ❀ कनकपत्र बहु पुष्प भराई ॥
बाहर भीतर पुष्प सोहाये ❀ तब कुन्ती कह देखन पाये ॥
पूंछे बात कुतिं के पाहीं ❀ कहौ पुष्प तुम पाये काहीं ॥
कुतिं कह हम भेद न पायो ❀ अर्जुन पुष्प कहांते ल्यायो ॥

दो० तुष्टवन्त गिरिजापतिहि, मोहिदीन्हो वरदान ।
असकाहि तवहि शंकर, भये जो अन्तर्ध्यान ॥

उर्द्ध श्वास गंधारी लीन्हा ❀ अपने गेंह गमनतब कीन्हा ॥
भाष्यो जाय पुत्र के पाही ❀ कुतिं धन्य जगत में आही ॥
कहापुत्र सौं कहा पंचासा ❀ अकिले अर्जुन पुरई आसा ॥
कहापुत्र हमरे सौं भयऊ ❀ अर्जुन जो पुरुषारथ कियऊ ॥
महा दुःख मे भई गन्धारी ❀ कहा राज्य धन बृथा हमारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सकल राज्य धन महिकरहोई ❀ अर्जुन पुत्र धनंजय सोई ॥
यहि प्रकार दुःखित गन्धारी ❀ कुंती तब गृहको प्रगुधारी ॥
अर्जुनपाहि कहै तब बानी ❀ मस्तक चूमि अशीश रानी
तुमहिं धनञ्जय पुत्र हमारा ❀ आश हमारा पुरवनहारा ॥
बहु प्रकार ते दीन अशीशा ❀ बार बार तब चूमति शीशा ॥

दो० यह इतिहास पुनीत अति, सुनत पापउद्धार ।
कुरु पाण्डव सब एकही, विद्यापढि चटसार ॥

इति श्री महाभारत सबलासिंह चौहान भाषाकृते आदिपर्व-वर्णनो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

गुरुके पहँ बैठे सब ताहा ❀ नाना अस्त्र शस्त्र अवगाहा ॥
एकबार चटशालै माहां ❀ कर्ण आदि सब बैठ ताहां ॥
यहि अन्तर भीषम चलिआये ❀ तहां जायके वचन सुनाये ॥
को कस विद्या लह्यो कुमारे ❀ करौं परीक्षा अग्र हमारे ॥
आपुइ आपु दिखावौं सोई ❀ काके विद्या केतिक होई ॥
सबे वीर अस्त्रतौ करहीं ❀ भीषम पाहि सबै अनुसरहीं ॥
दुर्योधन शतबन्धव धाये ❀ पाछे पांच पाण्डवा आये ॥
करत अस्त्र अर्जुन सब ताहा ❀ सन्मुख तौ भीषम के पाहा ॥
जबहिं अस्त्र अर्जुन ने कीन्हा ❀ धन्य धन्य सब बोलै लीन्हा ॥
भीषम कह्यउ धनञ्जय पाहीं ❀ त्वहिं समानकोउ जगमे नाहीं॥

दो० तोर अस्त्र अस देख्यउं, बहुत मोर मनमान ।
तव समान कोऊनहीं, भीषम कहत बखान ॥

सुनि के कर्ण कहन अस लागे ❀ सभा मांझ भीषम के आगे ॥
अर्जुन के तुम कीन बड़ाई ❀ हीन कौन कौरव शतभाई ॥
मोर अस्त्र जौं देखन पावहु ❀ तौ अर्जुनको ज्ञान भुलावहु ॥
कर्ण वीर अस्त्र तब कई ❀ मानहु वज्र भूमि में परई ॥
कम्पमान अवनी तौं होई ❀ ऐसा अस्त्र कर्ण कर सोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कर्ण केर पुरुषार्थ देखी ❀ दुर्योधन मन हर्ष बिशेखी ॥
आलिङ्गन तब कर्णहिं दीन्हों ❀ मित्र बोलिसत्या तबकीन्हों ॥
राजाकर्ण दोउ शत लीन्हों ❀ पुहुमी माहिं मन्त्र तो कीन्हों ॥

दो० कर्ण और दुर्योधन, तत्क्षण भये संघात ।
हर्ष गात दूनो भये. भीषम के सख्यात ॥

कहा कर्ण दुर्योधन पाहीं ❀ आशा एक ोर मन माहीं ॥
मल्ल युद्ध देखो तुम राऊ ❀ हारत कौन कौन से दाँऊ ॥
सुनि कै अर्जुन सह्यो न भारा ❀ क्रोधवन्त कर्णहि परचारा ॥
द्रोण गुरू अर्जुन ते कहै ❀ तोरे सन्मुख शत्रु न रहै ॥
महाबीर धनञ्जय जाना ❀ मल्ल युद्ध करिबे को ठाना ॥
पुत्र सनेह इन्द्र नभ छाये ❀ पुत्र हेतु सूरज चलि आये ॥
युद्ध हेतु सब सजे हैं दाऊ ❀ चकित भये देखत सबकोऊ ॥
कृपाचार्य कहै तब बाता ❀ पाछें युध करौ सख्याता ॥
सोम वंश अर्जुन तव जाना ❀ आपन वंशको करो बखाना ॥

दो० शूद्रपुत्र तुम कर्ण हो, मात पिता नहिजान ।
कौने सुख कीन्हो चहो, अर्जुन सो मैदान ॥

कर्ण तब सुनि लज्जा पाई ❀ तब दुर्योधन कहा सुनाई ॥
राजा जौन छत्र बिधि भाई ❀ साहसी क्षत्री उत्तम साई ॥
बरणी बिक्रम राजा सोई ❀ अर्जुन कर्ण तुल्य जो होई ॥
आधो आसन राज हमारा ❀ राजा कहै सो कर्ण तुम्हारा ॥
अधिरथ तब यह सुनि जो पाई ❀ अर्जुन कर्ण जहँहोइ लड़ाई ॥
पुत्र के हेतु तुरतही धाये ❀ सभा माँझ तत्क्षणहीआये ॥
कहते पुत्र द्वन्द्व नहिं काजा ❀ होइसो देख्यो राजहि राजा ॥
सभामाहिं यह बचन सुनायो ❀ कर्ण लजाय के माथ नवायो ॥
भीमसेन बोले यह बानी ❀ सुनो कर्णतुम अति अज्ञानी ॥
क्षत्री सभा में बैठ्यउ जाई ❀ नेकन लाज चित्त तुवआई ॥

दो० क्षत्रि सभा के योग्य नहिं, अरे हीन अज्ञान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनत कर्ण तब कोपेउ, सबलसिंह चौहान ॥
क्रोधित कर्णहिं सूर्य निहारा ❀ प्रकटि सूर्य्य तबसभामँझारा ॥
भाषै रवि यह पुत्र हमारा ❀ कर्णबाण तब करो सम्भारा ॥
यह कहि सूरज अन्तर्द्धाना ❀ सभा सबै तब अचरजमाना ॥
सूर्य्य को पुत्र सभा सब जाना ❀ दुर्योधन तब करत बखाना ॥
मूढ़ वृकोदर रे अज्ञाना ❀ बचन हमार सुनो दै काना ॥
कुम्भजजन्म अगस्त्य तब भयऊ ❀ भृङ्गी गर्भ शृंगीऋषि भयऊ ॥
द्रोण गुरू सकल अवतारा ❀ जानौ तौ सर्वज्ञ संसारा ॥
दो० दुर्योधन की बात यह, सुनो सकल दै कान ।
सभा के लोग उठे तब, सन्ध्या भो परमान ॥
कछुदिनतौं यहिविधि ते गयऊ ❀ विद्या पढ़ि सम्पूरण भयऊ ॥
गुरू दक्षिणासबहिं तब दीन्हों ❀ हर्षिद्रोणगुरू भाष्यो लीन्हों ॥
अर्जुन सो तब भाषेउ बाता ❀ स्वारथ मोर करो सख्याता ॥
द्रोपद राजा मित्र हमारा ❀ मारि किरीटहि राज्य बैठारा ॥
अर्द्ध राज्य वे हमही दीन्हा ❀ शपथकीन्हतबही हम लीन्हा ॥
थाती राजै दै बन गयऊ ❀ पूरणतप मैं पुनितहं कन्यऊं ॥
द्वारपाल जाने नहिं दीन्हा ❀ मेरो तौ अपमानहि कीन्हों ॥
ता कारण मैं मांगत येहू ❀ द्रुपदहिं बांधि चरण तर देहू ॥
अर्जुनसुनतहि तुरत सिधाये ❀ द्रुपद पाहिं सो युद्ध लगाये ॥
नाग बाण तब अर्जुन साधे ❀ द्रुपदराज को तुरतहिं बांधे ॥
दो० नाग फांस सो बांधेउ, लै आयो गुरुपास ।
द्रुपदबहुतलज्जितभयो, विनयकीन्ह परगास ॥
कह्यो मित्र मैं तौ नहि जाना ❀ मेरो कीन्हों है अपमाना ॥
गुरू द्रोण किरपा तब कियऊ ❀ अबनहिं ऐसे भ्रम में पन्यऊ ॥
बन्धन खोलि के बिदा कराये ❀ महा हर्ष द्रोणा गुरु पाये ॥
आशीर्ब्बाद तुरतही दीन्हा ❀ धन्यधन्य अर्जुनको कीन्हा ॥
कीन्ह उचित तुम स्वार्थहमारा ❀ अबते पारथ नाम तुम्हारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri; Funding by IKS.

तुम्हरे सन्मुख सत्रु बिनाशा ❀ गुरू हर्ष होइ बचन प्रकाशा ॥
यही प्रकार शस्त्र ब्यौहारा ❀ भयो सभा सो सुनहु अुवारा ॥
अपने गृह पारथ जब जाई ❀ परम हर्ष भो देखत माई ॥
पाण्डव यो बिधि सुनो कहानी ❀ जाते होय पाप सब हानी ॥
सुनिमन बांछितसोफल पावहि ❀ अन्तकाल बैकुण्ठ सिधावहि ॥

दो० पाण्डवकथा बिजय यह राजा सुनो दै कान ।
बिजयहोय सबजगतमे शत्रु होयक्षयजान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदिपर्व-
वर्णनो नाम दशमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

दुर्योधन तब रचा उपाई ❀ पाण्डु के पुत्र प्रबलभेआई ॥
भीम महा दुष्ट तब अहई ❀ सदा बिबाद सो हमसे करई ॥
भाखा जाय तात के पासा ❀ भीषम राजा होत उदासा ॥
पांचौ कण्टकराज्य हमारा ❀ राज्य हमारि तौ कहै बिचारा ॥
दिन दिन होत सबै बरियारा ❀ तात करो कछु मंत्र बिचारा ॥
तिनहिंन देखिकोंध हम पावहिं ❀ सदा दुष्ट भीषम परभावहिं ॥
तात करो कछु मंत्र बिचारा ❀ होइ निकण्टक राज्य हमारा ॥
जानौ तात सत्य मन माही ❀ राज्य दुष्ट तौ पांचो आही ॥
येनौ सांच होंत मन माहा ❀ शत्रु हमारा निकासै आहा ॥

दो० ताकारण सुनु तात अब, भला न होइ सोंइ ।
शत्ररहतहै निकठही, ममकस भला जो होइ ।

धृतराष्ट्र मंत्री हकारें ❀ बैठि एकांतहि मंत्र बिचारें ॥
मन्त्रिन तैं राजा तब कहइ ❀ मोर पुत्र तौ राजा अहइ ॥
पाण्डव पुत्र राज्य मनलावैं ❀ पिता राज्यके सबहि सुनावैं ॥
कहौ मंत्र मंत्री अनुसारा ❀ होइ निकण्ठक पुत्र हमारा ॥
धृतराष्ट्र की बात सब सुनी ❀ मंत्री मंत्र करत हैं पुनी ॥
मंत्री कहैं सब मंत्र बिचारा ❀ सबधान होइ सुनौ अुवारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi. eGangotri. Funding by IKS.

दुर्लभ शत्रु जानि कै, राई ❀ निश्चिंतहि ह्वै रहौ न भाई ॥
बुद्धि कर्म्म औ यत्न प्रकासा ❀ जाते शत्रु होई तब नाशा ॥
व्याधिहिसे सबहोई सवधाना ❀ जाते व्याधि न होतनिदाना ॥
शत्रू दुर्बल अग्नि समाना ❀ क्षणमा भस्मकरे जगजाना ॥
दो० व्याधि शत्रु अरु नदी जल, स्त्री पावक अरुनारि ।
इनविश्वास न मानिये, सुनो मन्त्र सो धारि ॥
करिये यहै मंत्र ठहराई ❀ ताते कालहि जाई नशाई ॥
धीरज कीन्ह सिद्धि तौ होई ❀ करै उतायल भुलवै सोई ॥
यह कहि के मंत्री सब आये ❀ मंत्र बिचारन को मन लाये ॥
काली नाम जो मंत्री अहई ❀ दुर्योधन राजा सो कहई ॥
मंत्र हमार सुनौ जो राऊ ❀ करौ एक परपंच उपाऊ ॥
लाख भवन करिये निर्माना ❀ तामह जारहु शत्रु निदाना ॥
यहै मंत्र सबही ठहराई ❀ यत्न करहु जो होय सहाई ॥
दो० सौबान्धव मिलि मन्त्रकरि, गये पिता क पास ।
प्रेम हर्ष मन में बहुत, करत बचन परकास ॥
दुर्योधन दुश्शासन अहै ❀ धृतराष्टक पिता सो कहै ॥
लाक्षा भवन करो निर्माणा ❀ जामै पांचो तजिहै प्राणा ॥
सुनिकै मंत्र भवन मन भावा ❀ वरुण नगर में महल बनावा ॥
लाक्ष भवन की आज्ञा पाये ❀ वरुण नगर में महल बनाये ॥
पठये बिदुर देखबे काजा ❀ कीन्होलक्षकार सब साजा ॥
देखे बिदुर चकृत तब भयउ ❀ यह दुष्टन के रचना ठयउ ॥
विश्वकर्म्मा ते बिदुर सुनायो ❀ तहा सुरग एक बनवायो ॥
ताके उपर खम्भ लगावा ❀ याहि प्रकार बिदुर बनावा ॥
रत्न मुद्रिका करसो लीन्हा ❀ वढई बोलि हाथ तबदीन्हा ॥
दुर्योधन जानै नहि जैसे ❀ भाई सुनौ मंत्र यह ऐसे ॥
दो० याहि प्रकारते विदुर कार, गे दुर्योधन पास ।
उत्तम ठांव भुवन भो, कहिन बात परगास ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लक्ष भवन यहि रूप बनाये ❀ कुन्ती को धृतराष्ट्र बुलाये ॥
भीमरु दुर्योधन इकसांउ ❀ बनतनाहि असबोलत राउ ॥
बरुण नगर में महल बनाये ❀ तहँ तुम रहो परम सुखपाये ॥
सुनिके कुंती सच करि माना ❀ करि प्रणाम तब कीनपयाना ॥
पांचो पुत्र संग लै लीन्हा ❀ बरुण नगर तुरत शुभ कीन्हा ॥
देखा उत्तम महल बनाये ❀ परम हर्ष तब कुंती पाये ॥
ब्राह्मण भोज प्रतिष्ठा कीन्हा ❀ विविधदान विप्रन कह दीन्हा ॥
ब्याधी एक त्रिया तब आई ❀ तासु पती भीरउ बनराई ॥
पांचों पुत्र लै तब ह्यां आई ❀ कुंती के गृह उपस्थी भाई ॥
भोजन पान करेउ परवाना ❀ रात्री काल रही पुनि थाना ॥
निशापाय तब अग्नि लगायो ❀ प्रकटी अनल धुम्र गृहछायो ॥
गलिगलि लाख परततनमाही ❀ पाण्डव विकल भये गृह माहीं ॥
धर्मज विकल कृष्ण को टेर्‍यो ❀ हे यदुनाथ अग्नि से घेर्‍यो ॥
रक्षा करहु नाथ दुख हारी ❀ हम अनाथ हे शरण तुम्हारी ॥
कीन्हो कृपा भक्त भयहारी ❀ धर्मराज भरोष भयो भारी ॥
धर्मपुत्र बोलै तब बानी ❀ भ्राता गणित करो सज्ञानी ॥
तब सहदेव गणित करि भासा ❀ ज्योतिस भेद करै परकासा ॥
भीमसेन यह खभ उखारे ❀ तौ प्रभु याह दुख शीघ्र उबारे ॥
मार्‍यो गदा बृकोदर तबही ❀ टूट्यो खंभ सुरंग भयो जबही ॥

दो० पावकसन विनती करी, गदा लीन्ह तबवीर ।
पांचो पुत्र मातासहित वनहि चले मतिधीर ॥

सुरँग मार्ग तब कीन पयाना ❀ पहुचे नदी तीर परमाना ॥
कियो स्नान तब चले चलाई ❀ बनबन चले तौ पांचौ भाई ॥
कुन्ती माता को संग लीन्हा ❀ यही प्रकार गमन तब कीन्हा ॥
लाक्षा गृह पावक तब जारा ❀ लागी जाई स्वर्ग सो धारा ॥
नगर लोक सब रोदन करई ❀ पांडव बिना धीर नहि धरई ॥
हाय युधिष्ठिर वृकोदर वीर ❀ हा कुन्ती लक्ष्मणा शरीरा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हा माद्री के सुत बलधारी ❋ नगर लोग रोदन कर भारी ॥
पांच पुत्र लै रहती ताही ❋ व्याधी केरि त्रियाजो आही ॥
धृतराष्ट्रक राजा के पाहां ❋ दूतन बात कही सब ताहां ॥
रोदन महा भयो भयकारा ❋ धृतराष्टक रोदन बिस्तारा ॥

दो० बिदुर आदि रोदनकरैं, नगरलोग बिस्तार !
कपट रूप धृतराष्ट्रक, रोदन करत अपार ॥

क्रियाकर्म तब तिनका कीन्हा ❋ बिप्र बुलाय दान बहुदीन्हा ॥
यहि प्रकार दुष्टमन राजा ❋ दुर्योधन कीन्हो पुर साजा ॥
यहिबिधि लाक्षाभवन जरावा ❋ जरत पांडवन कृष्णबचावा ॥
श्रीहरि सदां भक्त रखवारा ❋ नाशहिं पाप उतारहिं पारा ॥
सुनु राजा जन्मजये बाता ❋ याहि प्रकार वंश विख्याता ॥

दो० आदिपर्व गाथा सुनौ, कहौ भाषि संक्षेप ।
श्रवण पानते राजन, रहत पाप नहिं लेप ॥

इति श्रीमहाभारत बलसिंहचौहानभाषाकृत आदिपर्व-
वर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः । ८ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

सुनुराजा अब कहौ बखाना ❋ कुन्ती बनमें कीन पयाना ॥
पांचौ पुत्र संग करि लीन्हा ❋ तबहिं प्रवेश महावनकीन्हा ॥
थकित भई तब कुन्ती माता ❋ क्षुधातृषा ते भयोतनु गाता ॥
भीमै कुन्तीहि कान्ध चढ़ाई ❋ सहदेव नकुल गोद लै जाई ॥
धर्म्मराज अर्जुन द्वउ भाई ❋ एक गोद में दोउ चढ़ाई ॥
महाबली है भीम भयंकर ❋ प्रलय काल में जैसे शंकर ॥
यहि प्रकार ते बन पगु धारी ❋ चले जात सुमिन्त गिरिधारी ॥
चले जात मानहु अति रंका ❋ महाबली है भीम अशंका ॥
सन्ध्याकाल में उतरै जाई ❋ क्षुधा तृषा लागी बहुताई ॥
कुन्ती देखि दुख सहे न भारी ❋ क्षुधातृषा ते तनु बिकरारा ॥
बट के तरु तर राखिन जाई ❋ भीम करत जल हेतु उपाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० जलके हेतु बृकोदर, बहुवन खोजत जाइ ।
चारिबन्धु औ कुन्ती, तृष्णानद्रा बहुआइ ॥

बन के मध्य मिला जलनाई ❀ करत बिलाप भीम बहुताई ॥
माता देखि भीम दुख नाना ❀ बिधिचरित्र नहिंजातबखाना ॥
बिचित्रवीर्य्य केरि बधुआहे ❀ शूरसेन नृप कन्या आहै ॥
पाण्डव आनी जननि हमारी ❀ क्षुधा तृषा ते दुःखित भारी ॥
राज्य देश सब छूट हमारा ❀ सहे दुःख बन मांझ अपारा ॥
जासु तेज जहँ बीर भुआरा ❀ तासु दुःख अस सहैकोपारा ॥
धृतराष्ट्रक दुर्बुधि बिचारा ❀ जन्मेउ बंशहि धर्म्म बिसारा ॥
दुर्योधन पाये मति भारा ❀ कर्णआदि सबहै अविचारा ॥

दो० करत बिचार भीमतहँ, चारिबन्धु हैं सैन ।
कुंतीजननी सहितसब,रोइ भीम कह बैन ॥

ताही समय हिडम्बक दानो ❀ वहिवनरहै सो कालसमानो ॥
मानुष गन्धै पाय बिशेखा ❀ उच्च बृक्ष चढ़िकै तब देखा ॥
देखेउ मानुष छः जन अहै ❀ बहिनहि अम्बि बयन तबकहै ॥
छः मानुष को धरि लै आवहु ❀ परमानन्द ते भोजन पावहु ॥
सुनत हिडम्बिनि आई ताहां ❀ भीम आदिबान्धव सबजाहां ॥
देखि हिडम्बिनि भीमहि कैसा ❀ महा दिव्य पर्वतसम जैसा ॥
बन्धव मोर हिडम्बहि नामा ❀ हमकोतिन पठयो यहिकामा ॥
सहित तुम्है छः बन्धव कारण ❀ यह देखा आई हति मरण ॥
रूप तुम्हार मोर मन लागा ❀ कामबाणहिंदय में लागा ॥

दो० जारिदेह तुम आपनी. कहदेउ नाम विशेश ।
परमसुन्दरी कौन सो, कतवन कौन प्रवेश ॥

तुमहि बरण चाहत हौ आपहि ❀ पे हिडम्ब शङ्का मन आवहि ॥
सुनत बृकोदर भाषउ बाता ❀ यह सुन्दरी अहै मम माता ॥
औ मम बन्धव है ये चारी ❀ ता कन्या ते बृहत बिचारी ॥
जो तुम आइउ पास हमारा ❀ कहहुविडम्ब का करै तुम्हारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

देव दैत्य गन्धर्व का करिहैं ❀ काहू के डर हम नहिं डरिहैं ॥
सुनत हिडम्बिनि हर्षित भयऊ ❀ जबहिं बृकोदर बातैं कह्यऊ ॥
भगिनी गही देखि जब जानौं ❀ क्रोधित ह्वै चलोपावकमानौं ॥
देखि भगिनी मानुष तनधारी ❀ काम भाव से देखिसि नारी ॥
देखत महा क्रोध सो भयऊ ❀ भगिनीकहँ मारन तब ठयऊ ॥
मोर अहार बिघ्न तैं कीन्हा ❀ पठवों यमपुर मोलै लीन्हा ॥

दो० यह कहि मारनचलो तहँ, दीनभीम तब हांक ।
अरे दैत्य अति अधम तू, वचन बृकोदर भाक ॥

मोर पियारी भै यह नारी ❀ तैं मति हीन चहत है मारी ॥
जेतक बल तन अहै तुम्हारा ❀ देखब तेज आज परचारा ॥
सुनत हिडम्ब क्रोध सो कहै ❀ आजुकाल जाना तौ गहै ॥
धावा क्रोधबन्त इकबारा ❀ गहिकर दैत्यहिं फटकारा ॥
पराजाय दश धनुष के पारा ❀ तुरतहि उठिधावा बिकरारा ॥
भीमहिं दानव धरि फटकारा ❀ आपु तेज ते भीम सँभारा ॥
बृक्ष उखारि दैत्य लै धावा ❀ भीम बृक्ष तब एक चलावा ॥
बृक्षहिं बृक्ष निवारण भयऊ ❀ बृक्ष युद्ध तबनिरफलगयऊ ॥
दूनौं महाबीर बल योद्धा ❀ दूनौ सरस आपने क्रोधा ॥
कुन्ती सहित जो बन्धव चारी ❀ छूटी निद्रा खेत सँभारी ॥

दो०- देखा तहां हिडम्बि को, रूप अनूप तरंग ।
देखत कुंती देबि तब, पूंछत ताके संग ॥

कहा कहौ तुम अपनौ नामा ❀ कौन हेत कीन्हों बन ग्रामा ॥
की तुम देव दैत्य की नारी ❀ आपन अर्थ कहो विस्तारी ॥
करि प्रणाम हीडम्बिनि कहई ❀ हमनौ जाति राक्षसिनअहई ॥
भाई मोर हिडम्बक नामा ❀ तिन हमहीं पठयेयाहिकामा ॥
पुत्रसहित मारण तुव हैता ❀ यहि कारण हमआइसचेता ॥
पुत्र तुम्हार देखि हम पावा ❀ मोहितभई मोह मन आवा ॥
हम तौ वरे पुत्र तुमकारण ❀ बन्धु मोर तौ आयो मारण॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुम्हरे सुतन सो तेहि रणठाना ❀ संगर महा होत मैदाना ॥
सुनत बात तब चारों भाई ❀ तुरतहि देखि भीम तेहिं ठांई ॥
महा युद्ध दानव के साथा ❀ अर्जुन कहा भीम सो गाथा ॥

दो० भर्मकरी जनि बांधव, दुइ जन मारब आई ।
नातर तुम बैठो इहां, हम यहि मारन जाई ॥

पारथ बचन सुनत भे क्रोधा ❀ पारथदैंत्यको अतिबलयोधा ॥
तब दानव को भीम पछारा ❀ मुष्टिक घाउ उदरपर मारा ॥
लागतघाव शब्द घहराना ❀ परा भूमि में छांड़ेउ प्राना ॥
दैत्यकोबधा हर्ष तब कीन्हा ❀ दुष्टदैत्यको यमपुर दीन्हा ॥
कन्या सो मानुष तनुधारि ❀ भीमके संग करत सुखभारी ॥
नाना गिरि बन पर्बत देखा ❀ पांचो बन्धु अरु कुंती पेखा ॥
संग हिडम्बिनि पिय के पासा ❀ दीप दीप देखा परगासा ॥
हिडम्बिनि गर्भ पुत्र अवतारा ❀ नाम घरूका बीर अपारा ॥
घटोत कच्छ नाम बिस्तारा ❀ अस्त्र शस्त्र सिखये विस्तारा ॥
तबहिं हिडम्बी कहत बुझाई ❀ जाउँ देश तौ आज्ञा पाई ॥

दो० मम सुमिरण जबहींकरौ, देखाबचन तुम्हार ।
जो आज्ञा तुम पावऊं, जाऊ देश अनुहार ॥

पुत्र कहै तौं याहै बांनी ❀ सुनत भीम हर्ष तौ मानी ॥
कुंती पाहिं भीम तौ कहई ❀ आपनेदेशको जानअब चहई ॥
यह आज्ञा तब कुन्ती दीन्हा ❀ लैसंग पुत्र गवनबनकीन्हा ॥
पांचौ बन्धव बन में रहे ❀ राजा आगे मुनिवर कहैं ॥
देश देश भरमतही राई ❀ माता संग लै पांचौ भाई ॥
कुन्तीको दिन बनमहँ गयऊ ❀ इकादिन व्यासके दरशनभयऊ ॥
कुन्ती कीन्हो सबहिं प्रणामा ❀ पांचौ बन्धु चरण पर जाना ॥
दुखी देखि पाण्डव बन माहीं ❀ करुणा कीन व्यास मुनिताहीं ॥
आशिर्बाद व्यास तब दीन्हो ❀ औ कुन्ती सो बोलै लीन्हो ॥
सुत तुम्हार होई नृप संसारा ❀ दुष्टन केरो बल संहारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० एक चक्रको नगर यह, तहां रहो तुम जाई ।
यहकहि ब्यास सिधारेउ, कुंतीकोसमुझाई ॥
कुंती पुत्र संग सब लीन्हा ❋ तब यकचक्र नगर शुभकीन्हा ॥
रहे जाई यक द्विज के गेहा ❋ भीख मांगि के पालत देहा ॥
पांचौं बंधु मांगि लै आवैं ❋ जननी को लैके पहुंचावैं ॥
माता रांधत करत सुसारा ❋ आधा भीमको देत अहारा ॥
आधा चारि बन्धु औ माता ❋ भोजन करैं प्रेम सुख गाता ॥
बहुत दिना बीते याहि देशा ❋ माता सहित जो धर्मनरेशा ॥
ब्राह्मणगृहमें रुदन जो करई ❋ महा बिलाप चित्तमहँ धरई ॥
रोदन सुनेउ बिप्रगृह माहीं ❋ कुंतीमन चिंता तब आहीं ॥
पुत्री पुत्र नारि लै साथा ❋ रोदनकरत बहुत द्विजनाथा ॥
कौन दुःखतोहिं भा द्विजराई ❋ भीम के पाहँ कहत समुझाई ॥
दो० येते दिन द्विजगृहे, कहा दुःखद्विजपाव ।
भीमसेन के आगे, कुंती कहत सुभाव ॥
जाते द्विज कि आपदा हरई ❋ सोई भीम करौ तुम अहई ॥
यह तौहै निज धर्म हमारा ❋ कुंती तब यहकहयो बिचारा ॥
ब्राह्मणदुःख जो क्षत्री देखहि ❋ टारै दुःख सो क्षत्री लेखहि ॥
इनके घरमें वास हमारा ❋ अबचाहिये इनको दुखटारा ॥
यहै धर्म है पुत्र हमारा ❋ यही धर्म ते उतरब पारा ॥
धर्म करत जो पै दुख होई ❋ तबहुँ धर्मनहिं छांड़ै कोई ॥
धर्महिते होई धन राजा ❋ धर्महिते होई शुभकाजा ॥
ताते भीम कहत समुझाई ❋ जाते द्विज को दुःख नशाई ॥
सुनत बृकोदर करै बिचारा ❋ कौन दुःख जोहै करतार ॥
जो माता की आज्ञा होई ❋ अवशिबिचार करब हम सोई ॥
दो० मात पिता के आज्ञा, पुत्र करत प्रणाम ।
धन्यजन्म ताको जगत, पावै पद निर्बाण ॥
भीमसेन माता समुझाई ❋ कौन दुःखद्विज पूंछहुजाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

टारौं दुःख भ्रातही यहै ❀ भीमसेन माता सो कहै ॥
मारौं दुष्ट दैत्य संहारो ❀ जो संकट द्विज के सो टारौं ॥
अब माता पूंछौ तुम जाई ❀ कौन हेत रोवत द्विजराई ॥
माता ताको धीर धरायो ❀ जो कुछकष्ट पूंछिसो आयो ॥
कुंती तबै हर्ष मन भई ❀ तब द्विजपह सो पूछन गई ॥
रोवै ब्राह्मण करै बिलापा ❀ रोवत पुत्र एक पुनि आपा ॥
कन्या रोवात आगू पुकारी ❀ बिकलवंत तबबहुद्विजनारी ॥
ब्राह्मणकहत जबै लग ताहीं ❀ तुम तीनो रहिहौ गृहमाही ॥
पुत्र कहा जो मैं चलिजाऊं ❀ पिताके ऋण उबारतौ पाऊं ॥

दो० स्त्री अरु कन्या कहै, हम जैहे चालि ताह ।
तुमरहिहौ जौ जगत में,बहुत कहोइ विवाह॥

रोवत है चारों बिलखाई ❀ तब कुंती पूछन को आई ॥
कौन दुःख रोदन करु भारी ❀ सोतुम हमसे कहौ बिचारी ॥
हमहैं तुम्हरे गृह मंझारा ❀ तुम दुख छूटै धर्म हमारा ॥
सोई दुःख कहो द्विज मोहीं ❀ सत्यकहौ दुखका द्विजतोहीं ॥
मैं तो करब दुःख परित्राना ❀ ममआगे तुम करो बखाना ॥
हम तौं दुःख छुटाउब भाई ❀ तवआशिष हमार दुखजाई ॥
अशिष तार यहै कल्याना ❀ रोदन तार्जिकै करो बखाना ॥
तूव रोदन देख्यो अतुराई ❀ कारण हम पूछन को आइ ॥

दो० कौन दुःख कोहित्रासते. रोदन विस्मय अहिं ।
ब्राह्मणपै कुन्ती तव, पूछै हित गहि बाहिं ॥

तब ब्राह्मणी कहै बिचारी ❀ आपद मोरि सकै को टारी ॥
नामबकासुर दैत्य जो आहै ❀ प्रतिदिनसोमानुष बलि चाहैं ॥
एक चक्र नगरी कर राजा ❀ मानुष एकखातनित साजा ॥
बर्ष पांचमा यक घर परै ❀ ता घरको नर भक्षण करै ॥
एक मनुष्य को चहै अहारा ❀ सो आपद है आजु हमारा ॥
मंल लेहँ तो शक्ति हैं नाहीं ❀ यह चरित्र होवे गृह माहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

स्त्री पुत्र पुत्री घर अहै ❀ काहि देऊँ रोवत द्विज कहै ॥
जो सब जाई नगर भुवारा ❀ चारिउ जनको करहि अहारा ॥
भागे तीनलोक नहिं जाऊँ ❀ यहि बिचारमहँ दुःखहिंपाऊँ ॥

दो० कुन्ती कहा विप्र सुनु, अमृत बचन सुधार ।
नगर तुम्हारे रहत हौं, है तौ धर्म्म हमार ॥

एक पुत्र घर कन्या एका ❀ तुम दोउ प्राणी कहेविवेका ॥
पांच पुत्र बल अहै हमारा ❀ यह तो करों तोर उपकारा ॥
भीम नाम जो पुत्र है मोरा ❀ देखो नयनन ताकर जोरा ॥
मारेउ दैत्य एक बलधारी ❀ सोई पुत्र मोर बल भारी ॥
कुंती धीर विप्र कहँ दीन्हा ❀ आइ भीम ते वैसे लीन्हा ॥
सुनत भीम भा काल समाना ❀ अबहि बकासुर तजिहैं प्राना ॥
ब्राह्मणिआनि अन्न कछु दीन्हा ❀ भीमसेन तब भोजन कीन्हा ॥
मारि हँकारि जहाँ बकराई ❀ सुनतहि क्रोध बकासुर धाई ॥
चला बकासुर क्रोधित अयना ❀ देख्यो भीमको अपने नयना ॥

दो० भोजन करत ठाढ़ तहँ, देखा दैत्य प्रकाश ।
क्रोधवंत तब भाष्यो, रूप वरणि नहि जाश ॥

दूनौं हाथ दौरि कर मारा ❀ करेउ न शंका पवन कुमारा ॥
खातहि अन्न बृकोदर बीरा ❀ बकासुरहि तब धरेउ शरीरा ॥
करिके अचमन भीम सुजाना ❀ बाम हस्त ते गह्यो निदाना ॥
बृक्ष उखारि एक कर लयऊ ❀ दैत्यके मस्तकसो पुनिदयऊ ॥
तबहि बकासुर बृक्ष उखारा ❀ महा क्रोध करि भीमको मारा ॥
बृक्ष बृक्ष ते निरफल जाई ❀ महायुद्ध प्रकटत भो आई ॥
तब फिरि मल्लयुद्ध दोउ ठाना ❀ उठ्यो गर्द लोपितभे भाना ॥
पीठि उपरी जंघा दियो मारा ❀ धरिग्रीवा तब भूमि पछारा ॥
मुखते रुधिर धार बहिराना ❀ परा भूमि में छांड़ेउ प्राना ॥
मारि बकासुर भीम भुवारा ❀ सो द्विजकर आपदा उधारा ॥

दो० मारा भीम बकासुर, द्विज हरष्यो मनमहा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुंती परमानद भै सुनौ बात नरनाह ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृत आदिपर्व-
वणनो नाम द्वादशोऽध्यायः । १२ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

हर्षिगात द्विज आशिष दीन्हा ❀ पूजेउ भुजा हर्ष मन कीन्हा ॥
मारि बकासुर भेट्य भाई ❀ कुंती चरण भीम परे जाई ॥
रहे तहां पुनि हर्षित गाता ❀ सुनुजन्मेजय कलिकी बाता ॥
तबै व्यास मुनि आये तहां ❀ चक्र नगर पाण्डव जहां ॥
पाण्डव सबै कीन्ह परनामा ❀ मुनि सों कह पूरे मनकामा ॥
आसन दीन्ह कीन्ह बिश्रामा ❀ तबहिंव्यास मुनिकह्योबखाना ॥
पांचौ बंधु ते कहउ बुझाई ❀ कन्या एक अहै सुनु राई ॥
बड़ तपकरि शंकर आराधे ❀ नृपन विजयबर इच्छा बांधे ॥
महादेव सेवा मन लाये ❀ तुष्ठवंत गिरिजापांति आये ॥
मांगु मांगु बोलत गंगाधर ❀ हर्षित कन्या मांग्यो तब बर ॥

दो० पति पति देहु बचन कहि, मांगे पाँचौ वार ।
भुवन बिजय बर शंकर, पूरए आग हमार ॥

तुष्ठवंत शंकर तब कहहीं ❀ जोतुम्हरे मनइच्छा अहहीं ॥
पांचौ पति शुभ होई तुम्हारा ❀ भुवन बिजय जीतहि संसारा ॥
सुनिकै बिलखि बदन भै बारी ❀ तब शंकर ने कहा बिचारी ॥
पति नहिं दीन कलंक लगाये ❀ भल शंकर पूजा बर पाये ॥
पुर्व श्राप के फल पाये ❀ पाछे शंकर बचन सुनाये ॥
तुव पति कौरव बंस सँहारा ❀ एकबर शंकर दीन्ह उदारा ॥
द्रौपद राज केर सो बारी ❀ व्यासकँहै यह भेद बिचारी ॥
दोय बन्धु तासु के अहै ❀ ताको व्यासमुनि कहैं ॥
धृष्टद्युम्न द्रोण को मारै ❀ शीखराडी भीषम संहार ॥
यहि प्रकारते व्यास बुझाई ❀ सुनत चले तहँ पाचौ भाई ॥

दो० तापस रूप पाण्डव चले, कुंती माता संग ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अमितदेश वन उपवन, देखत चलेहैं रंग ॥
चलत फिरत आये पुनितहां ❀ मणिपुर ग्राम एक है जहां ॥
तहँ गन्धर्व केर अस्थाना ❀ चित्रांरथहिं बिश्रामहिं जाना ॥
तहँ रहस्य कथा सुनु राई ❀ चित्रांगद तेहि कन्या आई ॥
ताल भंग हमही दुख भारी ❀ गृह होई तो कारण बारी ॥
पाच बन्धु कुंती महतारी ❀ रहत तहां सरवर मंझारी ॥
चारो बन्धव इत उतजाही ❀ तासु नगर पहुंचे अनुसारी ॥
चारो बन्धव इतउतजाही ❀ इच्छा हेतु नगर के माहीं ॥
पारथ गे स्नान के काजा ❀ ग्राह रहै सो सरयुत राजा ॥
पारथ सरवर प्रविशे जाई ❀ सोई ग्रम चरण गह्यो आई ॥
दो० पूर्व शाप तवदीन्हा, पुच्छ कहै तब ताहि ।
पारथके पग पशत, शापसिंधु तरिजाहि ॥
ताते पारथ पद गह्यो आई ❀ तुरताहि मुक्ति शाप सों पाई ॥
पूरुब श्राप पिता की पाई ❀ भा उधार तुम परसि गुसांई ॥
ताते हमहुँ सत्य करि जाना ❀ तुम पारथ जानत परनमा ॥
मैं तुव पद छोड़ो अब नाहीं ❀ चलौ हमारे पिताके पाहीं ॥
मैं तुव दासी पारथ जानौ ❀ कपटहेतु तुमजानि भयमानौ ॥
परथम कहै सुनो बर नारी ❀ जो तुम आशा करो हमारी ॥
यहीं नग्र मे रहा बर नारी ❀ तौ पुनि पैहौ दरश हमारी ॥
यहि प्रकार धीरज तब दन्हि ❀ मानिबचनउठिकै शरलीन्हा ॥
दो० करि स्नान तव पारथ, गये तुरत निजवास ।
पाँचौ बधव तहरहैं, प्रात चले परगास ॥
चित्रांगद तब भई उधारा ❀ पांच पडवा तब पगुधारा ॥
ब्राह्मण रूप चले तौ आई ❀ नाना देश देखत जाई ॥
मांगत खात तौ ताहां ❀ पांचालदेश उदीशन माहां ॥
चलततहिंदेश निकट तब गयऊ ❀ महाहुलास चित्तमँह भयऊ ॥
कृष्णदेव द्वारका में अहै ❀ मन में बहुत बिचारत रहै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

द्रोपद राजा केरि कुमारी ❀ शंकर पूजि पाया बरभारी ॥
इच्छा बर जो मांगहि लीन्हा ❀ पांच पतिन बरशंकर दीन्हा ॥
ता कारण हरि करै बिचारा ❀ पांच बंधु है पांड कुमारा ॥
कुन्ती संग कहां धौ अहै ❀ मनहीं मन श्रीपति तौं कहैं ॥
कन्याका शंकर बर अहै ❀ ता कारण हरि सोचत रहै ॥
ई कन्या को पति जो होई ❀ सकल कौरवा मारे सोई ॥
पूरब शाप भवानी पाई ❀ ताते पांच पतिहि निरमाई ॥

दो० पारथ धर्मराज जो, भीम सेन बलवीर ।
नकुल सहदेव कुन्तिका, कौने वन कोहि तीर ॥

सब जानत है अन्तर्य्यामी ❀ भक्त हेतु जन्मे जगस्वामी ॥
यहि प्रकार शोचत भगवाना ❀ कुरुदलपाप पहाड़ बखाना ॥
दुष्ट मनुष्य जन्म जो पावै ❀ साधुन कष्ट सदा मनभावै ॥
एसै श्रीपति करै बिचारा ❀ मारत दुष्ट संत प्रतिपारा ॥
मोर भक्त जन संकट पावै ❀ ताते मन उद्वेग जनावै ॥
श्रीपति तब गरुड़ हंकारा ❀ तासो कहतहै नन्द दुलारा ॥
भक्त मोर है पांचो भाई ❀ कौने बन देखहु जाई ॥
भेट होइ तौं कहि सब वाता ❀ द्रौपदकन्या चरितसख्याता ॥
पंचल देश रहौ तुम जाई ❀ तहां स्वयम्बर होई भाई ॥
कोई स्वयम्बर जीतहि नाहीं ❀ तब पारथजीतिहि वहताहीं ॥

दो० कन्या तासु अनूप है, सबसो मंगलदाय ।
कहौ जाय विनती सुत पांच बन्धुके ठांय ॥

गरुड कीन बेगिय परनामा ❀ आज्ञापाय करेउ तब आमा ॥
बनबन सबसों खोजत जाई ❀ नानादेश बन ऊपबन आई ॥
पांचौं पांडव कहुं नहि पाये ❀ खोजत गरुड अनेकन ठाये ॥
इतही धर्महि राजा बखाना ❀ चारहु बन्धु हैं अग्र समाना ॥
पुर्व ब्यास जो कहा विचारी ❀ पंचल देशको करहुतयारी ॥
ब्राह्मण रूप रहत हैं ताहां ❀ पंचाल देश नगर के माहां ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हमरे श्रीपति हैं जो सहाई ❋ कारण कौन शोचिये भाई ॥
सबै जगत के तारण हारा ❋ संत तारि दानव संहारा ॥
धर्मराज की बात यह सुनी ❋ चारो बन्धुन मनमहँ गुनी ॥
पांच बन्धु माता संग लीन्हे ❋ जहँ मन चहैं तहांशुभकीन्हे ॥
गरुड़ मिले यहि अन्तरआई ❋ पाण्डव पाहि कहतसमुझाई ॥

दो० श्रीपति कहेउ बिहारि के, सुनो धर्म्म के राज।
पंचालदेश नृप कन्या, तासु स्वयम्बर काज ॥

द्रुपदराज घर द्रौपद बारी ❋ तहां स्वयम्बर होइहै भारी ॥
ताते श्रीपति हमहिं पठावा ❋ सो सबबात मैं तुन्हैं सुनावा ॥
सो कन्या पारथ को बरै ❋ कर्म्म लिखा सो कैसे टरै ॥
ताते तुम अब चलिये ताहां ❋ पांचल देश द्रौपदी जाहां ॥
यह कहि गरुड़ तुरतहिगयऊ ❋ धर्म्मराज हर्षित मनभयऊ ॥
सुनि सँदेश चले अतुराई ❋ कुन्ती सह वे पांचौभाई ॥
पांचल देश पाण्डवा जाहां ❋ देना दीश नगरके माहां ॥
तापस रूप रहे तहँजाई ❋ भीख मांगि कैदिवस गवाँई ॥

दो० तहांरहे सब पाण्डवा, तप स्वरूप धरि भेश।
यहि प्रकार से पाण्डवा, रहे हैं पञ्चल देश ॥

जैसा उपजा यादव नाऊं ❋ ते दूनौं नृप द्रौपद ठाऊं ॥
पूर्व यज्ञ राजा तप कीन्हा ❋ ते दोऊमुनि आहुति दीन्हा ॥
अग्निकुण्ड में भयो कुमारा ❋ धृष्टद्युम्न नाम संचारा ॥
नाम द्रौपदी सो निर्मयऊ ❋ जन्म जन्म कन्याको भयउ ॥
बद बचन ते कन्या भयउ ❋ देवन स्वर्गबाणि तौ कियउ ॥
यह कन्या ते कुरुबल नाशा ❋ नभ बाणी देवन परकाशा ॥
यहिके भर्त्ता अर्जुनहोई ❋ जाते कुरुवंशहि नाशि सोई ।
सुर बाणी जब यह सब सुनी ❋ पुत्र ते मृत्यु होइ है सुनी ॥
द्रोणाचार्य है जाकर नाऊं ❋ द्रुष्टद्युम्न तोहि प्राण नशाऊं ॥
यहै बात पूरब तौ सुनी ❋ द्रुपद राज तब मन में गुनी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० लषा भवन में दाहसुनि, मन में करै बिचार ।
देव वाक्य मिथ्या नहीं, पाण्डव हैं संसार ॥

कैसेहुकै परचै नहिं पाये ❋ तब स्वयम्बर भूप उपाये ॥
देश देश तब खबरि पठाये ❋ क्षत्री बीर भूप सब आये ॥
धनुषयज्ञ जब रच्यउ भुवारा ❋ जाको मानुष चढ़ेउ न पारा ॥
अतिबिस्तारिकि कुण्ड खनाये ❋ तेल कड़ाहै बीच भराये ॥
ताके तरे हुताशन लागी ❋ जाको देखि बीरता भागी ॥
गाड़ा खम्भ बज्र कर ताहा ❋ ऊपर खम्भ मच्छकर आहा ॥
हीराकनी के नयन बनाये ❋ ताके तरे सो चक्रभ्रमाये ॥
निशिदिनसो फिरतो बिकरारा ❋ देखत तजा भर्म संसारा ॥
जो कोऊ यह धनुष चढ़ाई ❋ बेधत राहु बाण ते आई ॥
मीन नयन में बेधहि बाणा ❋ सो कन्या पावहि परमाणा ॥

दो० यहै यंत्र निर्माण करि, पठवा जगत सँदेश ।
जहा जौन नरनाह हैं, क्षत्री जो जेहि देश ॥

दुर्योधन बंधव शत भाई ❋ देशहि देश जहां जो राई ॥
राज सभा बैठे हैं जाहां ❋ तापसरूप पांडु हैं ताहां ॥
बैठि सभा सब साज बनाई ❋ नानारूप बरणि नहिंजाई ॥
कन्या नव शृंगार तब कीन्हा ❋ हाथमाहिं जैमाला लीन्हा ॥
सब राजन को कन्यहिं देखा ❋ भूप अनूप जात नहिं लेखा ॥
सब कहँ दीख द्रौपदी नयना ❋ धृष्टद्युम्न बोलेउतब बयना ॥
राहु बेध जाके बल होई ❋ बीरहै द्रौपदि कन्या सोई ॥
यह कहिकै द्रौपादिहि बुझाई ❋ चीन्हों सब राजागण जाई ॥
कुरुपति कर्ण दुशासनअहई ❋ बिक्रमबर कुबेर तौ कहई ॥
जहां सूशर्मा भूपति भारी ❋ चित्रसेन बीरहु बलधारी ॥

दो० एक एक सब राजन, देखा कन्या ताहिं ।
महाबीर पुरुषारथी, बैठ सभा के माहिं ॥

कन्या रूपते मोह भुवारा ❋ आप आपुको करैं शिंगारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुर आये सब चढ़े बिमाना ❋ यदुबंशीतहँ कीन्ह पयाना ॥
हलधर और प्रद्युमन बीरा ❋ श्रकृष्ण अनिरुद्ध गँभीरा ॥
देव दुन्दुभी बाजत बाजा ❋ अंतरिक्ष देवन कर साजा ॥
महाबीर राजा है जेते ❋ क्षत्री बीर पराक्रम तेते ॥
तब कुरुनाथ शल्य अनुसारा ❋ अश्वत्थमा आदि भुवरा ॥
अलिंग कलिंगके देश भुवारा ❋ भोज बंश बीरन पगुधारा ॥
पुत्र पउत्र बीर यदुबंशी ❋ एकै एक करत परहंसी ॥
धनुष माँह गुण देन के काजा ❋ भये समर्थ न एकौ राजा ॥
चक्र सुदर्शन कृष्ण पवांरा ❋ मायालोप लखैं को पारा ॥

दो० चक्रराय प्रतच्छक, फिरता है दिन सोई ।
राहु बेध भूपति करै, नहिं समर्थ जगकोई ॥

तब भीषम बोले कहँ लागे ❋ धृष्टद्युम्न कुँवर के आगे ॥
हम तो ब्याह करब नहिं भाई ❋ पूरब शपथ कीन्ह हमराई ॥
हमहिं जो लखि के छेदन करई ❋ कुरुपति को कन्यासो बरई ॥
यह कहिकै तब शारँग लीन्हो ❋ चरण भारते गुण बहुदीन्हों ॥
तबहि शिखण्डी दर्शन दीन्हो ❋ महाखेद भीषम मन कीन्हो ॥
जबहीं लखो शिखंडि कुमारा ❋ तबहीं धनुष हाथ ते डारा ॥
गुण उतारि तुरतहिं सो डारा ❋ देखि शिखण्डी भीषम हारा ॥
द्रोणाचार्य कोपि उठि जगहीं ❋ भीषम वीर हारिगे तबहीं ॥
करि प्राक्रम तब धनुष चढ़ाये ❋ बाणहाथ तब तुरत चलाये ॥
चल्यो सुबाण तेज गति धाई ❋ लाग चक्रमों परो भुआई ॥

दो० लज्जित भे तब द्रोण कुरु, हारे सबभुवार ।
तब राजा लज्जितभये, द्रौपद मन खभार ॥

परथ तपो रूप तहँ रहे ❋ देखा हारि भूप सब गहे ॥
द्विज समान ते पारथ आये ❋ सबद्विजतौ परिहास मचायो ॥
यक द्विज कहा जातही कोहा ❋ हारे बीर महाबल मोहा ॥
महाबीर नृप क्षत्री हारे ❋ कन्यालाभ बिप्र पगु धारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS..

सुता देखि द्विज बाउर भयऊ ❀ यह कहिद्विज बैठारन लयऊ ॥
गहिकै भुज बिप्रन बैठारा ❀ वीर महावल बैठ न पारा ॥
पारथ उठे फेरि द्विज गह्यऊ ❀ धर्मपुत्र तब द्विजसन कह्यऊ ॥
जानि पराक्रम जात हैं ताहां ❀ बेधी राहु अपनबल माहां ॥
आपन तेज आप सब जाना ❀ कारण कौन करो परमाना ॥
सुनि के बिप्र छांड़ि तब दीना ❀ पंहुंच्यो जहां यंत्र है मीना ॥

दो० कहत बीर सब राजा, यों गुण शाँरग लाव ।
हानिलाभ जानत नहीं, द्विजकर यही स्वभाव॥

राजा करैं सब उपहासा ❀ असम्भावकह बिप्र प्रकासा ॥
पारथ दीख श्री भगवाना ❀ चक्रक तेज हरण कर जाना ॥
पारथ तब भुज धनुष चढ़ाये ❀ अलख पंचशर गुरुते पाये ॥
मारा बाण क्रोध तब होई ❀ मीन नयन में बेधेउ सोई ॥
राहु बेध पारथ तब कीन्हा ❀ हर्षित इंद्र दुन्दभी दीन्हा ॥
देखि-विप्र-हर्षित मुख पाये ❀ वेदध्वनि आनँद ते लाये ॥
सबै भुवार देखि कहैं बाता ❀ सबकोमानमथ्यो द्विजज्ञाता ॥
द्विजकी बिधि क्षत्री अपमाना ❀ एक मते भे भूप अयाना ॥
द्रुदपहि मारौं नगर उजारौं ❀ कन्या पावक माहीं डारौं ॥
राज्य देश तौ देहु बहाई ❀ पै इक बिप्र बधौ नहिंजाई ॥

दो० यह बिचारि के भूप सब,द्रुपद गुरू पर धाव ।
पार्थ राहु के बेधेउ, क्षत्री लज्जा पाव ॥

तब राजा शरणै द्विज आवा ❀ पारथ धनुष हाथ पर भावा ॥
अस्त्र गहे राजा पर धारा ❀ अभयकीन्हतहँ मनमंझारा ॥
कर्ण बीर धनुष लै धाये ❀ दुर्योधन चक्राहि ते आये ॥
अर्जुन कर्णहि पूर्व बिरोधा ❀ कर्णबीर बल अर्जुन योधा ॥
तपके तेज बिप्र रण ठाना ❀ चेते सूर्य्यसुततबपछिताना ॥
जब देखा यह तौ कुरु राजन ❀ लज्जा भई बीरके काजन ॥
दुश्शासन भगदत्त भुवारा ❀ जयद्रथ सोमदत्त बरियारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जरासंध और शिशुपाला ❋ शल्यावधि जेतक भूपाला ॥
भूरिश्रवा सुशर्म्म बीरा ❋ अलिंग कलिंगके हैं रणधीरा ॥
शैल्याशल्य और चित करना ❋ काशीराज विराटपुर बरना ॥
दो० अंशुमान अरु कीचक, बलिअरु जितक भुवार ।
सकल बीर तब कोपेउ, यह द्विजकर संहार ॥
शैल शक्ति बाणकी धीरा ❋ मुद्गर खड्ग अस्त्र परिहारा ॥
असंख्य अस्त्र द्विज परसब बर्षे ❋ महाराज दुर्योधन हर्षे ॥
घेरि बीर पारथ सब पेखी ❋ बाणहिं बाण परत सब देखी ॥
बरषैं बाण असंख्य अपारा ❋ माया कीन्हेउ देव भुवारा ॥
अलखित दुइगुण ताहां आये ❋ सो पारथ सारंग मनलाये ॥
परम हर्ष भे पाण्डव नंदन ❋ बरषत बाण बाणते खण्डन ॥
बरषत बाणन भो अँधियारा ❋ प्रलय काल प्रकटेउ संसारा ॥
पारथ बाण छिपानेउ भाना ❋ गज अनेक के मस्तक बाना ॥
रथअरु अश्व पैदल बहुमारा ❋ अर्जुन एक अनेक भुवारा ॥
मारे बहु पैदल असवारा ❋ महा युद्ध परकट संचारा ॥
दो० बहुत अस्त्र तब बरषत, मानो सावन धार ।
अर्जुन बीर अकेलो, क्षत्री बहुत भुवार ॥
पवन के पुत्र बृक्ष लै धाये ❋ नकुल और सहदेव जो आये ॥
दोउ पुत्र सँग द्रौपद राजा ❋ महायुद्ध खेतन महँ साजा ॥
भीम तो युद्ध शल्य ते ठाना ❋ रथते शल्य परा मैदाना ॥
परावश्य शल्य कह जाना ❋ छांड़े ताहि बधे नहिं प्राना ॥
हाहा करि सब ब्राह्मण धाये ❋ दशौ दिशा में शोर मचाये ॥
कर्णबीर तब बोल्यो बाता ❋ तपके हेतु द्विजन के ताता ॥
सुनि सब राजा भये सक्रोधा ❋ दशौ दिशा तब करैं बिरोधा ॥
महा मारु कीन्ही प्रभुताई ❋ दशौ दिशा ते छेड़ा जाई ॥
दशौ दिशा ते वर्षत बाना ❋ महायुद्ध नहिंजात बखाना ॥
जौन दिशा को पारथ ताके ❋ क्रोध वन्त बीरन रण हांके ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० जौनी दिशि राजा सबै, क्षत्री बीर अपार ।
भारहोतजाहिदिशिसबै, तेहिदिशिपरतपुकार ॥

क्षत्री छेकि लगे शरमारन ❋ सौते सहस सहस्र हजारन ॥
बरषत बाण बुन्द गण घोरा ❋ पारथ बाण हाथ तब जोरा ॥
पारथ बाण चहूं दिशि मारे ❋ युत्थ युत्थ क्षत्री संहारे ॥
जौनि दिशा पारथ शर मारै ❋ भागैं बीर न कोउ संभारै ॥
जौनि दिशा हेरै जहँ जोई ❋ सम्मुख रणमहँ रहै न कोई ॥
बिप्र मुनीश हते जहँ जेते ❋ करत बिचार कहैं सब तेते ॥
जयजय शब्द बिप्र सब कीन्हा ❋ दिशनि बिजयसबबोलैलीन्हा ॥
दशौ दिशा पारथ के बाना ❋ क्षत्री नृपैति सबै भहराना ॥
भागेउ दल पैदल असवारा ❋ पारथ बिजय कीन तेहिबारा ॥

दो० जीतिभई द्विजकहत तब, बिस्मय सबैभुवार ।
बिप्र नाहिं यह क्षत्रि है, नृपसब करत बिचार ॥

राजा सब तब करत बिचारा ❋ नहीं बिप्र क्षत्री अवतारा ॥
दुर्योधन तब करै बिचारा ❋ क्षत्री जानन येही बारा ॥
शकुनी पाहिं कहत असबाता ❋ कहियो जाइ बिप्र सख्याता ॥
ब्राह्मण कुल तुम करौ बिवाहा ❋ क्षत्री कुल हेतु केहि चाहा ॥
धन सम्पति मन मानो लीजै ❋ यह कन्या कुरुपति को दीजै ॥
शकुनी गयो तब हाथ उठाई ❋ पारथ पाहिं कहा समुझाई ॥
पारथ सुनी बात यह काना ❋ क्रोध भयो तब काल समाना ॥
भीमसेन तब मारण धाये ❋ पारथ क्रोधित बात सुनाये ॥
राजा पाहिं कहौ तुम जाई ❋ बात कहत लज्जा नहिंआई ॥
राहु बंधे समरथ नहिं भयऊ ❋ क्षत्री धर्म्म कहौ तब ख्यऊ ॥

दो०भानुमती जो रानी, सोइ आनि मोहिंदेहु ।
धन कुबेर को भवनसम, जो चाहौ सो लेहु ॥

सो सुनि क्रुद्ध भयो कुरु राऊ ❋ महामारु करने मन लाऊ ॥
कर्ण द्रोण दुश्शासन धाये ❋ पै पारथ पै जीति न पाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

महा मारु तिनहिंन सो होई ❋ बीच परै ब्राह्मण सब कोई ॥
राजा सबै परम भय पाये ❋ हारि बीर सब अस्त्र गवांये ॥
अस्त्र हि हीन भये सब राऊ ❋ अपने अपने देश सिधाऊ ॥
राजा सबहि देश तौ गयऊ ❋ परमहर्ष सब पाण्डव भयऊ ॥
द्विज स्वरूप है पांचौ भाई ❋ जीत हर्ष स्वयम्बर आई ॥

दो० जीति स्यम्बर पांडवा, तब कन्या लै जाइँ ।
परम हर्ष पगुधारे, जहां रहति है माइ ॥

कुम्भक नामक द्विज जो अहई ❋ ताके गृह मैं कुंती रहई ॥
द्रौपद राजा करत उपाई ❋ भेद लेन कहं पुत्र पठाई ॥
पाँचौ बन्धु गये तब तहाँ ❋ कुन्ती मातु बैठि है जहाँ ॥
माता पाहिं कहा तब जाई ❋ तब प्रसाद हम भिक्षा पाई ॥
माता कह्यो भली भो काजा ❋ पांचो बंधु भोग कर राजा ॥
पाछे पारथ भेद बताई ❋ विजयनाम अरु कन्या पाई ॥
बिजयनाम सब द्विजन धराई ❋ कुंती सुनत लाज तब आई ॥
पुनि कुंती तौ करत बखाना ❋ कर्मको लीखा होत नहीं आना॥
बचन हमार न मिथ्या होई ❋ पांचौ बन्धु भोगकर सोई ॥

दो० यहिंविधि पुत्री गोद करि, कुन्तीदेवी ताह ।
पांच पती यहिकारण, सुनो बचन नरनाह ॥

धृष्टद्युम्न यह देखा ताहां ❋ वह चरित्र सब कुन्ती पाहां ॥
गुप्त भये देखा मन लाई ❋ यहि अन्तरहिकृष्ण तब आई ॥
बहुत प्रकार हर्ष तब माना ❋ पूजेउ चरण हर्ष भगवाना ॥
बहु प्रकार ते कृष्ण बुझाये ❋ धीरजदे यदुपतिहु सिधाये ॥
द्रौपद सुत देखेउ प्राकर्मा ❋ जाई पितासों भाष्यउ मर्मा ॥
राजा सुनो हर्ष सब पाये ❋ रथचढ़ि तहंवां आपुसिधाये ॥
सुत संग लै राजा तहँ जाई ❋ पाण्डव कहँ सब देतबड़ाई ॥
प्रोहित सहित घरहि लै आयो ❋ परमहर्ष राजा तब पायो ॥
राजा साज बहुत विस्तारा ❋ दिये पाण्डुको द्रुपददुवारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रनिवासे कुन्ती तब गई ❋ बन्धुन संग परम सुख लई ॥
दो० प्रेम हर्ष ते रहेउ तहँ, पाण्डव पांचौ भाइ ।
राजा परम अनन्द सो, मङ्गल बात चलाइ ॥
परिचै दीन्ह युधिष्ठिर राऊ ❋ परम हर्ष तब दौपद पाऊ ॥
पाण्डव नाम सुनै पुरवासी ❋ देखन धाये प्रेम हुलासी ॥
द्रौपद राजा कहत बुझाई ❋ तब बिवाह की बात चलाई ॥
तुम हौ जेठे धर्मकुमारा ❋ उचितबरौ तुम कह्यो भुवारा ॥
धर्मराज बोले तब बाता ❋ बचन एक भाष्योमम माता ॥
पांचौ बन्धव बरहि कुमारी ❋ सुनतद्रुपद विस्मयभो भारी ॥
माता आज्ञा मेटि न जाई ❋ धर्मराज बोले समुझाई ॥
द्रुपद कहा तुम धर्म कुमारा ❋ कौन शास्त्र में कहहुबिचारा ॥
एक पुरुष के तिय बहु जाना ❋ नारिकेर पति होत न आना ॥
धर्मराज बोले तब बाता ❋ शास्त्र सर्व जो आज्ञा माता ॥
दो० यहै बात कहतहि सुनत, कथा प्रसंग उपाय।
त्यहि अन्तर वा ठौरमें, व्यास मुनाशहिआये ॥
पूर्व कथा तब व्यास सुनाई ❋ व्यास बचन द्रौपद सुनिपाई ॥
शंकर बचन सुना जब काना ❋ छूटेउभ्रम तब द्रुपदसुजाना ॥
लग्न धराइ ब्याह सञ्चारा ❋ पांच बन्धु को ब्याह बिचारा ॥
भो विवाह दायज बहु लायो ❋ रज घोड़ा गज बहुतक पायो ॥
पाण्डव कहँ पूजन तब कीन्हा ❋ कन्या धनहि दान बहुदीन्हा ॥
द्रौपद कहा उचित यह काजा ❋ अब तुम होब महीपति राजा ॥
यहि प्रकार ते पांचौ भाई ❋ द्रौपद के घर रहे तब जाई ॥
प्रेमहि हर्ष रहे सुख पावै ❋ हर्ष अनन्दित दिवसगँवावैं ॥
दो० यहि प्रकार जनमेजय, भयो द्रौपदीब्याह ।
सबलसिंह चौहानकहि, सुनतहि परम उछाह ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदिपर्व-
वर्णनो नाम त्रयोदशोऽध्याय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

सुनु राजा रहैं पांचौ भाई ❋ तौ सब अर्थ सुयोधन पाई ॥
शकुनी कर्ण दुशासन आये ❋ सबसों राजा बचन सुनाये ॥
मंत्रिन सहित गये सब तहाँ ❋ अन्धराय को मन्दिर जहाँ ॥
धृतराष्ट्रक जान्यो ब्यवहारा ❋ करौमंत्र जयहोई तुम्हारा ॥
विदुर न पावें भेद बखाना ❋ तैसे मंत्र करौ परमाना ॥
दुर्योधन बोले तब बाता ❋ द्रुपद केर बल है बिख्याता ॥
द्रुपद पाहिं पठवौं समुझाई ❋ राज्यपाट धन लीजै भाई ॥
पाण्डव कहँ तुम देव निकारी ❋ तुम हमरे हो प्रीतम भारी ॥
नाहिंत पठवो दूती तहाँ ❋ रानी द्रौपदी पास है जहाँ ॥

दो० करि उपहास सुजाइके, अति आदर व्है ताह।
तब लज्जित व्है द्रौपदी, त्यागब पांडव चाह ॥

नातर गुप्त बीर कोउ जाई ❋ मारै भीमसेन को भाई ॥
भीम मरै तौ पाण्डव मरई ❋ जो कोऊ सहसा यह करई ॥
नाहिं त आनौ ताहि बुलाई ❋ समय बूझि कै मारब भाई ॥
यह तो बात सुनत सख्याता ❋ कर्ण कहै राजा सों बाता ॥
जेतक मन्त्र कहा तुम धीरा ❋ एकहु मंत्र होब नहिं बीरा ॥
सजग रहैं वे पांचौ भाई ❋ मारिन सकिहौं कोउ उपाई ॥
सुनतहिं धृतराष्ट्रकअसकहई ❋ कर्ण बात नीकी तैं कहई ॥
भीषम द्रोण बिदुर बुलवाई ❋ मंत्र करो कछु आनउपाई ॥
ऐसे सबै मंत्र तब करहीं ❋ एकै एक बचन अनुसरहीं ॥
भीष्म कहेउ यह मंत्र हमारा ❋ जोमानो मम बचन अुवारा ॥

दो० जस धृतराष्ट्रक तुम अहौ, तैसे पाण्डु हमार।
गन्धारी अरु कुन्तिइक, सो मैं कहौं बिचार ॥

औ जैसे कुरुराज भुवारा ❋ तैस युधिष्ठिर धर्मकुमारा ॥
अपन पुत्र औ पांडुकुमारा ❋ इक समान ते जानुभुवारा ॥
जौ राखौ मम बचन सनेहू ❋ बाँटि राज्य दूनौ कहँ देहू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उनके क्रम सब राजा साँचे ❀ महा महा आपद सों बाँचे ॥
केतिक जीवन है गजमाहा ❀ अयश जाइ लीजै नरनाहा ॥
याहै मंत्र द्रोण मन माना ❀ कपट रूप धृतराष्ट्रक जाना ॥
दुर्योधन कपटी परमाना ❀ भीषम केर मंत्र तब माना ॥
धृतराष्ट्रक भाषै परमाना ❀ आपु विदुर तुम करो पयाना ॥
आनौ जाइ कुन्ति कहँ साथा ❀ बन्धुन सहित धर्म्मनरनाथा ॥
पाँचौ बन्धु साथ लै आवौ ❀ हमरे बचन सो जाइ सुनावौ ॥

दो० होकर हर्षित बिदुरतब, तुरतहि कीन पयान ।
जहाँ द्रुपद राजा अहैं, पहुँचे ताही थान ॥

द्रुपदराज सों जाइ बखानो ❀ धृतराष्ट्रक पठवा मोहिं आनो ॥
अर्द्धराज्य देवै निज सोई ❀ तब पांडवको अतिसुख होई ॥
सत्यबात तो बिदुर बखाना ❀ सो सुनि धर्म्मपुत्र सुखमाना ॥
द्रौपद बहुत बड़ाई कीन्हा ❀ द्रुपदराजने आज्ञा दीन्हा ॥
कुन्ती सहित द्रोपदी लीन्हा ❀ अहोभाग्य पांडवको चीन्हा ॥
पहुँचे जब निज देशहि जाई ❀ धृतराष्ट्रक तब कीन उपाई ॥
भीषम द्रोण कर्ण बल वीरा ❀ आगे पठये हर्ष शरीरा ॥
आगे होइ लेनको आये ❀ नगर लोग सब देखन धाये ॥
कुन्ती अन्वहि कीन प्रणामा ❀ सब बन्धव पहुचे निजधामा ॥

दो० मिले धर्म्मसुत बन्धु शत, बैठे सभा मँझार ।
प्रेम हर्ष भीषम तहाँ, कीन्ही प्रीति अपार ॥

तब धृतराष्ट्र कहा असिबाता ❀ कुन्ती सहित सुनो सबभ्राता ॥
आधाराज देव हम राजा ❀ इन्द्रप्रस्थ जहाँ लग साजा ॥
सो सुख भोग करौ तुम जाई ❀ धृतराष्ट्रक तब कहेउ बुझाई ॥
राजा कहँ कीन्हों परणामा ❀ परम हर्ष कीन्हों तब ग्रामा ॥
कुन्ती सहित द्रौपदी साथा ❀ प्रेमहिं हर्ष चले नरनाथा ॥
इन्द्रप्रस्थ में कीन्हों थाना ❀ रजधानी आपनि करिजाना ॥
सुभग शकुन करिभे तब राजा ❀ आज्ञा भइतब बाजहिं बाजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

प्रेम हर्ष मन राजा भयऊ ❋ सर्व्व कलेश नाश दुखगयऊ ॥
कृष्ण कृपा तें दुखभे नासा ❋ पाई राज्य भक्ति विश्वासा ॥
दो० यहि प्रकार तब धर्म्मसुत, राजा तहँवां आई ।
वैशम्पायन महामुनि, तिनसों कहत बुझाई ॥
केतक दिवसराज्य तब कियऊ ❋ एक दिना नारदमुनि गयऊ ॥
राज अग्र तब कहा बखानी ❋ मंत्र एक तुम सुनु नृपज्ञानी ॥
तोहिं हेतु हम मंत्र बखाना ❋ सुनो करो हिरदयमहँ ज्ञाना ॥
सुंदर रूप हते दुईभाई ❋ महाबीरा बल विक्रम राई ॥
एक स्त्री तिन दुई ते भाई ❋ स्त्री हेतु विरोध उपजाई ॥
यहि कारण तब दोउ जुझारा ❋ आपु आपु मैं भे संहारा ॥
इकपत्नी तुम पांचौ भाई ❋ ताकारण हम कहत बुझाई ॥
जासु विरोध होई नहिं राऊ ❋ सो राजा तुम करौ उपाऊ ॥
द्रौपदि का प्रतिपाल दुराऊ ❋ ताते होइ सबहि सुख भाऊ ॥
ऐसा कहि नारद परिमाणा ❋ दीन्हों सबै बांधि निर्माणा ॥
दो०नेमबांधि मुनि दीन्हेउ, कहा राउ सन बात ।
जो कोई यह लंघन करै, सुनो वचन नरनाथ ।
नेम उलंघन करै जु कोई ❋ बारह वर्ष बासबन होई ॥
यह काहिकै तब नारद जाई ❋ पांचौ बन्धु रहे तब राई ॥
नेम समय द्रौपदि के साथा ❋ आप अक्षत मैं करै बिलासा ॥
इक दिन राउ युधिष्ठर ठाऊ ❋ द्रुपदसुता आई सतिभाऊ ॥
तहां अस्त्र सब पारथ केरा ❋ उच्चस्वर इक ब्राह्मण टेरा ॥
पारथ पारथ करै पुकारा ❋ पारथ सब है काज तुम्हारा ॥
तस्कर एक मोर धन लीन्हों ❋ जातचला सो मैं कहिदीन्हों ॥
सुनि पारथ तब आतुर भयऊ ❋ अस्त्र कार्य तुरताहि तब गयऊ॥
नारद बचनकि सुधि नहिंराहा ❋ गये द्रौपदी राजा जहां ॥
आतुर भे वहि मन्दिर जाई ❋ देखत पारथ लज्जा पाई ॥
दो० लज्जा पाई अस्त्र गहि, पारथ आयो धाय ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हतेउ तुरततस्करतहां, द्विजधनलीन्हछुड़ाय ॥
द्विजहिं धीर दै पारथ आये ❀ धर्म्मराज कहँ बात सुनाये ॥
हम तो जाब तीर्थ के काजा ❀ बिस्मय भयउसुनेउ तबराजा ॥
पारथ कहेउ मुनिहि जो भाखा ❀ बारह बर्ष बनहि अवशाखा ॥
यह कहिकै पारथ तब जाई ❀ देश देश चलि वेष बनाई ॥
सन्यासी कर रूप बनाई ❀ पारथ बनोवास तब जाई ॥
नाना तीरथ देख्यो ताहाँ ❀ नाना वन उपवन के माहाँ ॥
तब पारथ के मनसा आई ❀ अनन्त नागको देखहुँ जाई ॥
भोगवती गंगा है जहाँ ❀ तहँ अस्नान करौं असकहाँ ॥
यह विचारि पालात सिधाये ❀ शेषनाग को दर्शन पाये ॥
भोगवती महँ करि अस्नाना ❀ शेषनाग परम सुख माना ॥
प्रेमक भक्त प्रबल धनुधारी ❀ इन्द्रकुमार अमित गुणभारी ॥
अजयन मृत्युलोक मा आही ❀ कन्या मोरि उन्हीं पै आही ॥
नाम उलूपी कन्या रहै ❀ सो पारथ को देनो चहै ॥
यह विचारि के पारथ पाही ❀ कन्या सोतो दीन्हयों ब्याही ॥
प्रेम हर्ष तब पारथ भयऊ ❀ शेषनाग कन्या को दयऊ ॥

दो० संग कन्या लै पारथ, मृत्युलोक तब आय ।
सोइ उलूपी नारि है, प्रेम हर्ष मन पाय ॥

शेष दई तब उलुपी नामा ❀ संगलै आये मणिपुर ग्रामा ॥
पूर्व समय चित्रागंद नारी ❀ मणिपुर मांह अहै सो नारी ॥
संग उलूपी आये तहाँ ❀ चित्रागंद युवती है जहाँ ॥
चित्रागंद विवाह तब कीन्हा ❀ गजरथदान बहुत तब दीन्हा ॥
रहैं तहां पारथ सुख पाई ❀ चित्रागंद उलुपी संग लाई ॥
केतिक वर्ष उलूपी साथा ❀ उपवनमा तब हर्षित गाता ॥
नागराज को उपवन रहे ❀ तामें वृक्ष दाड़िमा अहै ॥
पांचौ पेड़ दिखाये जाई ❀ उलुपी पाहिं कहा समुझाई ॥
जबहीं लगि हरि अन्तर रहैं ❀ पारथ मर्म्म जगत में कहैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मृत्यु समय पांचौं तरु जरै ❋ मृत्युलोक जो पारथ मरै ॥
दो० यहै रहस्य परीक्षा, कहेउ उलूपी पाहिं ।
प्रेम हर्ष मन पारथ, रहता मणिपुर माहिं ॥
कछु दिन बीते यहि परकारा ❋ चित्राङ्गद दुइ गर्भ सञ्चारा ॥
गर्भ के मांह बास जब लयऊ ❋ बिंदुबहन उदरमें भयऊ ॥
गर्भ वास नारी भय सोई ❋ मन उदास पारथ तब होई ॥
बारह वर्ष कहा बनवासा ❋ सोतौ कीन्हेउँ भोग विलासा ॥
यह बिचार पारथ मन लाये ❋ मन को भेद न काहू पाये ॥
बिना कहे तो पारथ गयउ ❋ पाछे त्रिया महादुख लयऊ ॥
रोदन करैं दुवौ तहँ नारी ❋ पारथगे बन हमहिं बिसारि ॥
पारथ बनोबास कहँ गयउ ❋ चित्रांगदहिं पुत्र तब भयउ ॥
दो० बभ्रुवाहन नाम तोहि, प्रतिपालै मन लाइ ।
बभ्रुवाहन राज भये, मणिपुर नगर उपाइ ॥
पारथ गमन तीर्थ उपदेशा ❋ नाना बन उपबन परवेशा ॥
गौतम औ गोदावरि परशे ❋ गंगासागर हर्षित दरशे ॥
गया प्राग तौ परशे जाई ❋ नैमिष दर्शन करेउजु आई ॥
मथुरा बृन्दाबन तब देखा ❋ यमुना नदितबेपरशिविशेखा ॥
चारौं दिशा भर्म्मना कियऊ ❋ प्रदक्षिणा धरतीको दयऊ ॥
पारथ सब भरमें संसारा ❋ सन्यासी के रूप मंझारा ॥
जहँ लग तीरथ जगमें अहैं ❋ देखा सब पारथ मुनि कहैं ॥
परगट कीन्हेंउ तब संसारा ❋ नारद बचन के हेत बिचारा ॥
दो० तीरथ भर्म्म गमन किय, देखा अगणित देश ।
नारद बचन के हेत कहँ, पारथ सहेउ कलेश ॥

इति श्री महाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदिपर्व-वर्णनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

धर्मराज अंदेशा करई ❋ पारथ हेतु तौ विस्मय धरई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कौन देश कहँ पारथ गयऊ ❋ यहि चिन्तामें राजा भयऊ ॥
पारथ देखा बन २ नाना ❋ नारद बचन हेतु परमाना ॥
पारथ तहां तो हर्षित जाही ❋ जहाँ मुनी कोउ नहिंआही ॥
पारथ कहँ तब मुनिजो देखा ❋ पूंछत रूप संन्यासी वेखा ॥
कौन हेतु बनको पगु धास ❋ तब पारथ यहबचन उचारा ॥
पांच बंधु औ द्रुपदी रानी ❋ नारद नेमकरि दीन्होआनी ॥
नेम उलंघन करै प्रकासा ❋ बारह मास जाई बनबासा ॥
एक दिना तौ धर्म्म भुवारा ❋ द्रुपदी हेतु संग सुखनारा ॥
आरत नाद विप्र इककरई ❋ मोरा धन तस्कर सब हरई ॥
नारदबचन बिसरि तौ गयऊ ❋ अस्त्र हेतु तब गृह में गयऊ ॥
राजा देखत लज्जा पाये ❋ राजा आपुतो लाज लजाये ॥
नारद बचन समुझि मनमाहा ❋ तौ हम तीरथ भर्मन चाहा ॥
यहिकारण तब मुनिहिं बुझाई ❋ पारथ तीरथ भर्मन जाई ॥
रैवा पर्वत देखा जाई ❋ तहँवां दर्श कृष्ण कर पाई ॥
कृष्ण पार्थ के लाये ताहाँ ❋ द्वारावती नाम के पाहां ॥

दो० पारथ कहँ लै राखेऊ, प्रेमरु हर्ष अपार ।
घरघरप्रातियदुवांशि हित,नितानित देत अहार ॥

इक दिन तबै सुभद्रा देखी ❋ बलदाऊ सन कहा विशेखी ॥
कहती बात सुभद्रा ताहा ❋ यहंतो बीर तपी नहिं आहा ॥
काम स्वरूप तेज तनु तासू ❋ प्रेम सदा हिरदय परकासू ॥
कहत शेष ना जानहुँ ताहीं ❋ प्रेमै सदा रहै मन माहीं ॥
एकबार जो कौतुक होई ❋ क्रीड़ा करहिं सखी सबकोई ॥
चितै सभद्रा तौ पारथही ❋ प्रेम मदा रहै मन मनहीं ॥
तब सुभद्रा पारथ पहिचाना ❋ और भेद जानहिं भगवाना ॥
और न जानत यादव कोई ❋ पारथ हेतु सुभद्रा सोई ॥
एक बार सुभद्रा ताहाँ ❋ चली स्नान चढ़िके रथ माहाँ ॥
जौन द्वार पारथ यदुराई ❋ तौने द्वार सुभद्रा जाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पारथवीर विलँबजनि लाऊ ❋ वेगि आपने धाम सिधाऊ ॥
पारथ धाइ चढ़्यो रथ जाई ❋ लै सुभद्रा चल्यो तब राई ॥
कृष्ण आदि औरौ यदु जेते ❋ सजे युद्ध को क्रोधित तेते ॥
पारथ रथ रोका तब ताहाँ ❋ मार्‌योबाणतो यदुदल माहाँ ॥
तबै सुभद्रा कहत विचारी ❋ मैं रथ हाँकों तुम करु मारी ॥
तबहिं सुभद्रा रथहिं चलाये ❋ पारथ बुंद बाण बरषाये ॥
वामे हाथ गहे धनु जाना ❋ गहे चाप औ धनु संधाना ॥
बायें हाथ चलावै बामा ❋ महाबीर नाहिं जात बखाना ॥

दो० यक समान शर द्वै करे, देखा तब बलदेव ।
हल मूशल तब हाथलै, कोपि चले सुनुभेव ॥

नारायण सेना तब साजा ❋ यदुकुल मतो बाजने बाजा ॥
क्रोधवन्त वलदेव भे जबहीं ❋ आये कृष्ण बुझाये तबहीं ॥
तपी रूप पारथ है भाई ❋ मम आज्ञा कन्या लै जाई ॥
कहि बलदेव तो बातबुझाई ❋ मोहिं काहे नहिंबात जनाई ॥
अबै बुलावो पारथ भाई ❋ करि विवाह तब सौंपहु सोई ॥
तव श्रीपति पारथहिं बोलाये ❋ कन्या लै पारथ तब आये ॥
वेदके मतसे भयो बिबाहा ❋ हर्ष होइँ बलदेव तौ काहा ॥
वडावीर पारथ हम जाना ❋ दोऊ हाथ चलावत बाना ॥
दोउकर सायक एक समाना ❋ अति धनुधारीसब जगजाना ॥
यह प्रकार पारथकी करनी ❋ बारह मास अंत भौ भरनी ॥

दो० बारह महिने बास बन, ऐसे गये सिराइ ।
लैके सुभद्रा पारथ, अपने गृह तब आइ ॥

तौ पुनि निजदेशहि सो आये ❋ नारि सुभद्रा संगहि लाये ॥
कृष्ण समेत राज्य को आये ❋ प्रेम हर्ष आनँद तब पाये ॥
एक समय कृष्ण हैं साथा ❋ पारथआदि सभा नरनाथा ॥
विप्र रूप पावक सख्याता ❋ कही जो आइ सभामें बाता ॥
सुनियो बात हमार बिचारा ❋ मयसुत नामजो तहाँभुवारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बारह वर्ष यज्ञ तब कीन्हा ❀ ताकारण व्याधा तनु दीन्हा ॥
द्वापर होई कृष्ण अवतारा ❀ पारथ सन तुम्हार उद्धारा ॥
ात कारण हम आये याही ❀ हमरो नाथ निबेडा चाही ॥

दो० बाचा करौ तौ माँगौं, कहा बचन परमान ।
तब हरि पारथ भाषहीं, कीजै सत्य बखान ॥

कैसे होई व्याध तनु नाशा ❀ सोई बचन करो परकासा ॥
पारथ कहि यह बात बखाना ❀ इन्द्र केर आहै बगवाना ॥
पशु पक्ष्यावनार बहु जाना ❀ ताहि देह ते व्याधि नशाना ॥
वह बन देहै पाव जो सोई ❀ तौ हमरी तनु व्याधि नशाई ॥
मन्दानल है हम संसारा ❀ करौ हमार यहै उपकारा ॥
सुनियो कृष्ण धनंजय सोई ❀ करि परतिज्ञा भाषत दोई ॥
चलौ जाई सो वनहिं जरैये ❀ जातै आपु परमसुख पैये ॥
गहिके अस्त्र चलेपुनि ताहीं ❀ नर नारायण दूनौ आहीं ॥
सो बन देखा नयनन जाई ❀ मारे बाण बुँदसम आई ॥
शर पंजर बन ऊपर भयऊ ❀ बन भीतर पावक निर्मयऊ ॥

दो० पावक बनमाहीं लगी, सुरपति क्रोध अपार ।
प्रलय कालके मेघ सब, आयउ वैर सँभार ॥

बर्षेसि नीर सबै वल तहाँ ❀ पावकजरै खण्डि बन जहाँ ॥
अंधकार मेघन घनसाजा ❀ अतिहि क्रोधवन्त सुरराजा ॥
एकौ बुँद जल भेदत नाहीं ❀ भे निशंक पावक वनखाहीं ॥
पशु पक्षी अरु तरुवर जेते ❀ पावक सकल जराये तेते ॥
जीव जन्तु सब करैं पुकारा ❀ दानव दैत्य भये सवक्षारा ॥
मयदानव था इक सुनु राई ❀ सो पारथपहँ बिनती लाई ॥
तुम्हरी शरण राखु नृपमोहीं ❀ कबहुंककरब काज हमतोहीं ॥
पारथ सुनेउ हर्ष मनभारी ❀ देहु छाड़ि भाषत बनवारी ॥
पावक पाहिं धनंजय भाखा ❀ सो दानव जारतही राखा ॥
पारथ की अस्तुति बहुठाना ❀ तुमपारथ दीन्हों जिउदाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० पारथ हर्षित प्रेममन, पुलकित सबै शरीर ।
खंडित वनदाहन करै, पावकप्रकट गँभीर ॥
धूमिनाम यक नागिनि रहै ❋ सोई सदा खंडिबन अहै ॥
पावक जरै भागि सो जाई ❋ तेज पुंज आकाश उड़ाई ॥
पारथ देखि बाण परिहारा ❋ पंखकाढि पावक महँ डारा ॥
सो जरि भस्मभई पलमाहीं ❋ पावक सब खाण्डव बनदाहीं ॥
परसन भे पावक परमाना ❋ दीन्हेउ श्वेत बाहिनी नाना ॥
महादेव आराधेउ जबहीं ❋ बाहनश्वेत दिव्यरथ तबहीं ॥
सर्वदेवता परसन होई ❋ यकयक बर दीन्हेउ सब कोई ॥
यह कहिकै वैश्वानर जाई ❋ गृह आये पारथ यदुराई ॥
कछुदिन तहाँ रहे भगवाना ❋ पुनि द्वारावति कीन्ह पयाना ॥
गये द्वारिका श्री यदुबीरा ❋ पाण्डु रहे सब हर्ष शरीरा ॥
दो० यहिप्रकार जन्मेजय, तोरबंश गुणमान ।
प्रेमकथा अद्भुत सुनहु, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदिपर्व-
वर्णनो नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

देवपुहुप तौ नारद आना ❋ ले दीन्हों तब श्रीभगवाना ॥
कृष्ण तो दीन रुक्मिणी पाहाँ ❋ सतभामा क्रोधित भइ ताहाँ ॥
पारिजात एहौ भगवाना ❋ सतभामा लायै भगवाना ॥
तब रुक्मिणि बहुतै दुखपाई ❋ यहिते सरस फूल मनलाई ॥
तब श्रीपति गे पारथ पासा ❋ जाय बचन कीन्हें परकासा ॥
कदली बनहिं तुरतही जैसे ❋ सुगँधराज पुष्पन लै ऐसे ॥
पारथ गये धनुष शर लयऊ ❋ कदलीबनमें प्रविशन भयऊ ॥
तोरत फूल रक्ष रह तहा ❋ जाइ अर्थ हनुमत से कहा ॥
सो सुनि हनू क्रोध तब भयऊ ❋ पारथ पाहिं कहन तब लगऊ ॥
यहै पुहुप पूजत रघुराई ❋ चोरी करत चोर अन्याई ॥
दो० पारथकह तब रामकी, करत बड़ाई कीश ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जान्योसबपुरुषार्थ हम, जौनरामअवधीश ॥
मोहिं समान कौन धनुधारी ❋ क्रोधी पारथ कह्यो बिचारी ॥
शारँग हाथ गहे रघुनाथा ❋ ढोये कस पर्बत कपिनाथा ॥
कहौं न प्रभुता सुनु हनुमाना ❋ बाँधौ सिन्धु पलकमहँ जाना ॥
झूँठ बचन कस कहत अयाना ❋ बाँधौ सिन्धु न होतहौं आना ॥
सुनुरे कीश महा अज्ञाना ❋ क्रोध कियो पारथ बलवाना ॥
पारथ हनू सिंधुतट आये ❋ बाण बृष्टि पारथ तब लाये ॥
सौ योजन शरबाँधि सवारा ❋ हनूमान बिस्मय अतिभारी ॥
देखि कहैं हनुमत यह बाता ❋ सेतुपार हम जाब सक्याता ॥
यद्यपि बाँधरहै दृढ़ होई ❋ मानहुँ सत्य धनुर्द्धर सोई ॥

दो० पारथकही बातयह, भरे गर्व अहँकार ।
केतक बार तुम्हारही, करौं पारसंसार ॥

तब हनुमान क्रोध अति पायो ❋ उत्तरदिशा क्रोध करि धायो ॥
योजन सहस बदन बिस्तारा ❋ औलीन्हेउ पुनि बहुत पहारा ॥
देखि रूप बिस्मय संसारा ❋ रोम रोम प्रति बँध पहारा ॥
आये तुरत समुद्रहि तीरा ❋ आपुहिआप लखतदोउ बीरा ॥
पारथ देखत भूलेउ ज्ञाना ❋ सुमिरेउतबहिंचरण भगवाना ॥
अपने मनमें श्रीपति जाना ❋ भयो बिवाद पार्थ हनुमाना ॥
हनूभार को जगमें सहै ❋ तीनि लोक को उलटनचहै ॥
यहै बिचार करैं यदुबीरा ❋ कमठ रूप तब धरेउ शरीरा ॥
शरको बाँधि पार्थ पुल कीन्हा ❋ तेहिमधिजाइ पीठिहारिदीन्हा ॥
हनू भार पीठी पर धारा ❋ रक्त बहायो बदन सो फारा ॥

दो० रक्त वर्ण तब देखेऊ, करि बिचार हनुमान ॥
मोर भार संभार को, को है जग में आन ॥

धरे ध्यान श्रीकृष्ण को पाये ❋ कूदि हनू तट ऊपर आये ॥
निज शरीर देखेउ बनवारी ❋ पारथ हनु तो अस्तुतिसारी ॥
श्रीपति कह दोउ एक समाना ❋ पारथ बीर और हनुमाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

याहि प्रकार प्रीति परमाना ❋ श्रीपति तब भे अन्तर्द्धाना ॥
पारथ सखा भये हनुमाना ❋ यहिप्रकारते ऋषिहिबखाना ॥
पाछे पुहुप लै पारथ गयऊ ❋ श्रीपतिपुहुप रुक्मिणीदयऊ ॥
द्वारावती रहत बनवारी ❋ पारथ धन्य कहत गिरिधारी ॥
यहै रहस्य कथा सुनु राऊ ❋ तोरे बंश चरित्र उपाऊ ॥
इन्द्रप्रस्थ तब पाण्डव रहहीं ❋ कौरवदल हस्तिनपुर बसहीं ॥
प्रेम अनन्वित सकल रजाई ❋ वैशम्पायन कथा सुनाई ॥

दो० पाण्डव विजय कथा यहै, सुनत पापको नाश ।
बड बिस्तार न कीन्हेउँ, करउँ संक्षेप प्रकाश ॥

कहैं बात तब श्री यदुराई ❋ पारथ धन्य धन्य भक्ताई ॥
तोहिं समान भक्त नहिं कोई ❋ और जगतमें है नहिं होई ॥
पारथ कहै सुनो जगतारण ❋ मिथ्याकहौ आपकेहि कारण ॥
मोहिं समान जगत बहुतेरे ❋ तीनि लोकमें अहै घनेरे ॥
मैं पतिको कौन भंभारा ❋ नाथ जो तुमहिं सहाय हमारा ॥
कहैं कृष्ण ऐसा ना कहहू ❋ तुम्हैंसमानजगत नहिं कतहू ॥
और अहै तौ आनि देखाऊ ❋ झूठि बात केहि हेत सुनाऊ ॥
पारथ कहै जो आज्ञा पाऊँ ❋ नाथ आनिअगणितदिखराऊँ ॥
तब श्रीपति यह आज्ञा दीन्हा ❋ पारथ गमन ततक्षण कीन्हा ॥
खोजेउ पारथ सब संसारा ❋ माया हरि जानै को पारा ॥

दो० कोई न पायो आपु सम, मनमें करै बिचार ।
सब जगकर्त्ता हरि अहै, माया जेहि संसार ॥

तब पारथ मन कीन्हे बिचारा ❋ हीन बस्तु देखा संसारा ॥
विष्ठा देखा पारथ तहँवाँ ❋ बाँधि अस्त्र ले आये जहँवाँ ॥
श्री हरि अग्र कहैं तब बाता ❋ खोजा सबहिं जगतसख्याता ॥
मोहिं समान जगत नहिं कोई ❋ पायो नहीं कहा प्रभु सोई ॥
सर्व जगत के अन्तर्यामी ❋ गूढ़ागूढ़ जान तुम स्वामी ॥
एक कहहिं तौ हमहि समाना ❋ सुनौ देवपति तुम भगवाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आपै अग्र दिखाइन जाई ❋ हृदय प्रेम जानहु यदुराई ॥
महा प्रफुल्लित श्री भगवाना ❋ धन्य धन्य पारथ बलवाना ॥
हरि देव मैं तो सब जाना ❋ मोरा अर्द्ध अंग तुम माना ॥
मोर तोर है एक शरीरा ❋ काहे दीन होत हो बीरा ॥

दो० मनुष्य रुप तुम पार्थ हो, भाषै श्री भगवान ।
नारायनजानोहमहिं, सुनियो बचन प्रमान ॥

विष्णु नाम मोरा परमाना ❋ बेवस्तानाम तोर जगजाना ॥
बेवस्ता नाम पार्थ को दयउ ❋ सुनत हर्ष तब पारथ भयउ ॥
तब बिष्ठा को दीन्हों डारी ❋ करि अस्नानपरे पगु भारी ॥
परे कृष्ण के चरणन जाई ❋ प्रेमहिं हर्ष भये यदुराई ॥
कछु दिन रहे पार्थ पुनि ताहीं ❋ बिदाहोय आये घर माहीं ॥
अपने गृह पारथ तब गयऊ ❋ प्रेम हर्ष जगतपति भयऊ ॥
पाण्डव जय भारतहिं बखाना ❋ जनमेजयसुनिकर सुखमाना ॥

दो० भारत कथा पुनीत अति, जाते पाप बिनस ।
श्रवणपान के करतही, यमपुर छूटै त्रास ॥

जो फल व्रत एकादशिकीन्हे ❋ जो फल होई भूमिके दीन्हे ॥
जो फल कोटिक कन्या दीन्हे ❋ जो फल सवतीरथके कीन्हे ॥
जो फल होय शरणके राखे ❋ जो फल होय सत्य के भाखे ॥
जो फल यज्ञ धर्म करवावै ❋ सो फल या भारतसुनि पावै ॥
भारत कथा सुनै अरु गावै ❋ ताके पाप निकट नहिंआवै ॥
जो फल रणमें प्राण गँवाये ❋ सो फल श्रीभारत सुनिपाये ॥
भारत कथा पुण्य उपदेशा ❋ सावधान होई सुनो नरेशा ॥
जेहि धर्म पाप क्षय जाई ❋ आयुबल होवै अधिकाई ॥

दो० सुनी सुनत सुमारग, मानुष ज्ञान प्रकास ।
सबलसिंह चौहान कहि, होई परमपदबास ॥

इति श्री महाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आदिपर्व-
वर्णनो नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

॥ इति आदिपर्व समाप्तः ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

सभापर्व ॥ २ ॥

दो० सुमिरि व्यासगणपतिचरण, गिरिजाहरभगवान ।
सभापर्व भाषा भनत, सबलसिंह चौहान ॥
सत्रह सौ सत्ताइसै, संवत् शुभ मधु मास ।
नवमी अरु गुरु पक्षसित, भै यह कथा प्रकास ॥

अब नृप सुनहु कथा भै जोई ❋ तब हित हेतु कहत है सोई ॥
कुरु पाण्डव सोहैं द्वौ आछे ❋ जस समाज बरणौं मैं पाछे ॥
इन्द्रप्रस्थ द्वौ बसैं सुखारी ❋ मतिहृग अंधराज्यअधिकारी ॥
धन माहि सेन सौंपि सब दीन्हा ❋ बुद्धिचक्षुनिज सुतनृप कीन्हा ॥
कानि राज्यपदकी अतिभारी ❋ भीष्म द्रोण भे आज्ञाकारी ॥
सोहत दुर्योधन नृप गादी ❋ भूमि पाण्डुनन्दन के सादी ॥
इन्द्रप्रस्थ महँ पूरब ओरा ❋ कुरुसमाज सहित घन घोरा ॥
बसत तहाँ सब भूप समाजा ❋ भीषम बाह्लीक महराजा ॥
बिदुरकृपा गुणनिधि सुखधामा ❋ रविनन्दन अरु अश्वत्थामा ॥

दो० भरद्वाज सुत आदि भट, दुर्योधन रुख देखि ।
करतकाजकुरुनाथसँग, निशिदिनरहत विशेषि ॥

चित्र रम्य सोहहिं बहुभाँती ❋ त्रिदशपुरी देखत सकुचाती ॥
तेहियलते गत पश्चिम आसा ❋ योजन नव कुंती सुत बासा ॥
तहाँ युधिष्ठिर राजहिं राजा ❋ बिपुलसम्पदा सहित समाजा ॥
मतिहृग दीन्हे नगर पचीशा ❋ धर्मनन्द लीन्हें धरि शीशा ॥
दुर्योधनहिं राज्य सब दीन्हा ❋ धर्मराज कछु मर्ष न कीन्हा ॥
भूमि अनेक नरेशन केरी ❋ जीति धर्मसुत लीन्ह घनेरी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्जुन भीमसेन बलदाई ❋ जीतिलिये जहँ तहँ भुवराई ॥
ते सब दंड देहिं नृप धर्म्महिं ❋ नहिं डरपहिंकुरुराजकुकर्महिं ॥

सो० आवहिं विपुल नरेश, जीते प्रथमहिं पाँडुजे ।
करहिंविनयउपदेश, देहिंदराडमतिदृगसुतहिं ॥

देनदराडकुरुपति गृह आवहिं ❋ करिबिनती अनेकसमुझावहिं ॥
पाराडुसुतनकी अति भयमानी ❋ दण्ड पठाइ देइँ रजधानी ॥
दुर्योधनभयमिलन न जावहिं ❋ गुप्तरूप धन दण्ड पठावहिं ॥
इन्द्र समान राज्य नृप करई ❋ चलै सुमार्ग सत्य नहिं टरई ॥
नीति निपुणता जगमहँ छाई ❋ प्रजालोग सुखलहहिं अघाई ॥
सम्पति गृह कुबेर ते भारी ❋ राज बन्धु सब आज्ञाकारी ॥
भयकी सभा बनाई जोहै ❋ रचना अद्भुत लखि मनमोहै ॥
महल अनेक बन शीशाके ❋ लखि मनमोहै सुर ईशाके ॥
जलअगाधथलनहिं लखिपरई ❋ जहँ थलदृगजलमनहुँघुमरई ॥
लखिविचित्रथल चितभ्रमि जाई ❋ फिरसँभरतनहिं कोटि उपाई ॥

दो० भीमसेन अर्जुन नकुल, लघुभ्राता सहदेव ।
महावीर बहुभुज वली, करहिं नृपतिकी सेव ॥

नृप पदवी शिर कौरव केरी ❋ तिनते अधिक धर्मनृप केरी ॥
इकदिन धर्मराज मनभ्राजा ❋ राजसूय करि होई काजा ॥
निजमंत्री अरु बंधु बुलाये ❋ करिमतटीक व्यासपहँ आये ॥
भाइनसहित चरण शिरनावा ❋ कुशलपूछि ऋषिकंठलगावा ॥
ऋषि रुखपाई धर्म्ममहिपाला ❋ कहेउ मनोरथ सकलभुवाला ॥
जाइ पार तौ करौं उपाई ❋ नत चुप साधि रहौं ऋषिराई ॥
कह ऋषिकुशल मनोरथतोरा ❋ करहिं भूप वसुदेव किशोरा ॥
सुनत नरेश बिदा पुनि मांगी ❋ ऋषिपदपरशि चलेअनुरागी ॥
निज मन्दिर नृप आतुर आये ❋ देश देश कहँ पत्र पठाये ॥
लिखिअनेक बिधिबिनय बड़ाई ❋ दीन्ह पत्र हरि नगर पठाई ॥

दो० प्रियपरिजनपरिवारअरु, हलधर सहितकृपालु ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सबइ आई करुणायतन, कीजै मोहिं दयालु ॥
वासुदेव द्वारका बिराजत ❋ बलयुत यदुवंशी सब राजत ॥
यकदिन माधव के मन आई ❋ नहिं कछु गजपुरकैसुधिपाई ॥
ऊधो हलधर सभा घनेरी ❋ चरचा करत पाण्डवन केरी ॥
बहुबिधि करत विचार खरारी ❋ तेहि अवसर आये चरचारी ॥
वेत्रपाणि तब खबरि जनाये ❋ सुनियदुनन्दन तुरत बुलाये ॥
जाय सबन नायो तहँ माथा ❋ उठिकै पत्रलीन यदुनाथा ॥
बाँचि सभा महँ सबन सुनाई ❋ दूतन दीन्हेउ वास देवाई ॥
तेहिअवसर ऋषिनारद आये ❋ हरि गुण गावत बीण बजाये ॥

दो० ऋषिहिंदेखिकरुणायतन, कीन्हेउ दडप्रणाम।
सहितसभाउठि मुनिचरण,धन्योशीशनिजराम॥

दीन सुआसन अति अनुरागा ❋ प्रभु करजोरि रजायसु माँगा ॥
हम सनाथ आगमन तुम्हारे ❋ निजजनजानी नाथ पगुधारे ॥
अब कृपालु करि मोपर दाया ❋ आगहेतु कहौ ऋषिराया ॥
तब बोले ऋषि सहित सनेहू ❋ तुमाहिंनउचित बचलप्रभुयेहू ॥
तुव दर्शन त्रिभुमन महराजा ❋ यहितेअधिक कवनबड़काजा ॥
यह हरि केवल हेतु हमारा ❋ शक्र कहेउकछु चलती बारा ॥
भयऊ कृपालु भुप शिशुपाला ❋ देत सुरनदुखकठिन कराला ॥
अति बल देवांगन बिलासा ❋ करत दशाननादिकै हांसी ॥
सबन कहत मैं आप बिधाता ❋ संहरता करता अरु त्राता ॥
तेहि की नाथ पंथ कर बासी ❋ करहुकृपालु सहजसुखरासी ॥
श्रुतिमारग यहि निपट उलंघा ❋ पठइय शीश सुदर्शन संघा ॥

दो० सुनेश्रवणाऋषिमुखवचन. कृपासिन्धु भगवान।
भृकुटिभंग कीन्हेउमनहुं.उदयकेतुप्रस्थान ॥

रिसबशयुगल बिलोचन लाला ❋ कहेउनऋषिबचिहै शिशुपाला ॥
काटौं शीश चक्र गहि हाथा ❋ करौं नाथ सुरनाथ सनाथा ॥
सुनिअसदै अशीश ऋषि नारद ❋ ब्रह्मसभा गे ज्ञान बिशारद ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कह हरि उद्धव हलधर तेरे ❀ तात परम असमंजस मेरे ॥
धर्म नरेश निमंत्रण दीन्हा ❀ ऋषि नारदयह आय सुकीन्हा ॥
युगल कर्म कर्त्तव्य हमारे ❀ कलनाबिना शिशुपालहिंमारे ॥
अतिबल धर्मराज के भाई ❀ जीते जिन नरेश समुदाई ॥
हम बिन यज्ञ युधिष्ठिर करि हैं ❀ गयेबिना शिशुपाल उबरिहैं ॥
कहहु युगल तुम मंत्र बिचारी ❀ पितु समहो हमरे हितकारी ॥
जो कछु करत मोर अपराधा ❀ सोनहिसकत नेकुकरिबाधा ॥
दाहत लोकपाल शिशुपाला ❀ सोयहहोत हृदयमम शाला ॥

दो० सुनतशत्रु बध सुरतिकरि: नैनतरेरे राम ।
फरकत अधर सरोष अति, बोलेवाणीबाम ॥

राखहिं भुलि रिपुहि जे जीती ❀ उदयन होतकहत असनीती ॥
यहि प्रकार रिपुमूल उखारी ❀ उदितयथातन नाशि तमारी ॥
कीन्हे बिना शत्रु पद नाशा ❀ करियप्रतिष्ठाकी जनिआशा ॥
जलबिन रजाहि पंक करिदीन्हे ❀ थिरनाहिंहतयतन बहुकीन्हें ॥
तबलगिसुखन बिदिततनधरको ❀ जीवनजबलगएको अरिको ॥
जिमिरवि शशिहिराहुदुखदेता ❀ सबसुर तब सहाय कृतकेता ॥
अहिजिमि सत्य शत्रुहरि सोई ❀ दोस ठाढ़ि रसावलि होई ॥
हमन डरत सपनेहु रणकालहि ❀ भारोमांचसुनत शिशुपालहि ॥
ताते अब न नागपुर जाहू ❀ रिपु जग जीवत कलनहिंकाहू ॥
महिषमती पुर लीजै घेरी ❀ सजहुबाजिगज सैन्यघनेरी ॥
गत दिन यदुकुल कै तलवारी ❀ लही नदामिनिकै छबिभारी ॥
अब उडुगण तरवारि तरंगा ❀ लहैं सुछ बि रबि करणन संगा ॥
चलि शिशुपाल प्राणहतकीजै ❀ करैं धर्म मख आयसु दीजै ॥
असकहि करनलगे मदपाना ❀ उगिलतबमत बचनकरिजाना ॥
सुनि उद्धव ते सैन बुझाई ❀ तुम कछुकहहु कहेउ यदुराई ॥

सो० सत्य सत्य यह बात, भाषे मूशलपाणि जा ।
सुनत मन्त्रमम तात,उद्धवयदुनन्दन कहेउ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri, Funding by IKS.

सहज जीति शिशुपाल न जैहैं ❀ भूप समूह सहायक ह्वैहैं ॥
रोग समूह राजयक्ष्मा जिमि ❀ नृपसमूहशिशुपालप्रबलअति ॥
समय परे प्रभु मारिय ताहीं ❀ सहसा कर्म उचित असनाहीं ॥
अपर न हितदायक जग तोसे ❀ करत धर्म मख नाथ भरोसे ॥
तुम बिहीन करिहै मख नासा ❀ होइहै धर्म्म नरेश उदासा ॥
अइहैं विपुल भूप मख माहीं ❀ बाँधिबाँधि तब मारिय ताहीं ॥
कारज युगल बनत अस कीन्हें ❀ प्रथम ताहि तुमहीं बर दीन्हें ॥
सहि शतअधिक एक अपराधा ❀ करिहौं तव प्राणन की बाधा ॥
इन्द्रप्रस्थ अइहैं सब राजा ❀ खुलिजइहैं रिपु मित्रसमाजा ॥
उठे सुनत हरि उद्धव बानी ❀ भे पुनि शक्रप्रस्थ प्रस्थानी ॥
हने निशान साजि बहु सेना ❀ उठी धूरि जनु अर्क रहै ना ॥

दो० हलधर ऊधो सात्यकी, अपर लोग सब साथ ।
निज नरेशके द्वारपर, जात भये यदुनाथ ॥

उग्रसेन ते माँगि रजाई ❀ इन्द्रप्रस्थ कहँ चले गोसांई ॥
हरिपुर ते दल चले समूहा ❀ चतुरानन मखजिमि श्रुतिजूहा ॥
आवत सुन्यउ धर्म महराजा ❀ मिलनचले सँगसुभटसमाजा ॥
आवत देखि कृष्ण रथ त्यागा ❀ हलधरसहित उमाँगे अनुरागा ॥
मिलत न प्रीतिहृदय कहिजाती ❀ पुनिपुनि भेंटि जुड़ावतछाती ॥
रविनंदिनि तट दल समुदाई ❀ दीननृपति विश्राम कराई ॥
हरि बलदेव लोग कछु साथा ❀ चले अवास धर्म नरनाथा ॥
सकल बंधु तेहिंअवसर आये ❀ हरिहिविलोकि नयनजलछाये ॥

दो० मिले वृकोदर विजयनर, युगलबन्धु हरषाय ।
पूछी कुशल कृपालु तब, कहो युधिष्ठिरराय ॥

कुशल देखि तव चरण मुरारे ❀ जो तुम दीन जानि पगुधारे ॥
हलधर कीन्ह कृपा सब भांती ❀ अरु सात्यकि ऊधो संघाती ॥
आये प्रभु मोहिं कीन सनाथा ❀ प्रणतारतभंजन यदुनाथा ॥
सभा मध्य हरि हलधर गये ❀ शुभ सिंहासन बैठत भये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by MKS.

धर्म महीप कहत मृदुबाणी ❋ गे अन्तरःपुर सारँगपाणी ॥
मिलिसानिनकहँ साहितहुलासा ❋ बहुरि गये कुंती के पासा ॥
वंदत चरण देखि अनुरागी ❋ पुनिपुनि कंठ लगावनलागी ॥
द्रुपदसुता पूछत कुशलाता ❋ परमानंद प्रफुल्लित गाता ॥
कछुक मधुर पकवान मिठाई ❋ द्वारे हलधर दीन पठाई ॥
राम सहित नृप भोजनकीन्हा ❋ उद्धवसहित सात्यकीदीन्हा ॥
राम बहुरि अंतःपुर आये ❋ उद्धव सात्यकि संग लगाये ॥
कुन्ती रामहिं आवत जाना ❋ आगेचलि कीन्हेउ सनमाना ॥
चरणन परे मात उर लाये ❋ भूप सहित पुनि द्वार सिधाये ॥

दो० वहाँ द्रोपदी हर्षयुत, करत बिबिध सनमान ।
भोजन करवायो हरिहि, बहुरि खवायो पान ॥

यदुपति कछुक घरी तहँ रहिकै ❋ चलत भये सानिनते कहिकै ॥
आये धर्म्म महापति पासा ❋ बिछी प्रयंकसेज शुभवासा ॥
तहाँ प्रौढ़ि प्रभु सोवन लागे ❋ रहा यामदिन यदुपति जागे ॥
जुरी सभा बहु गायन आये ❋ सकलकलामहँ कुशलसोहाये ॥
जागि धर्म्मसुत राम जगाये ❋ परम सुखद आसन बैठाये ॥
आसव पान राम तब कीन्हा ❋ होयनृत्यअसआयसु दीन्हा ॥
राम बचन सुनि गायन गाये ❋ बहुप्रकार करि नृत्यरिझाये ॥
यहिविधिदिन प्रतिसहितसनेहा ❋ कछु दिन कृष्ण रहे नृपगेहा ॥
अद्भुत यज्ञ दिवस नियराना ❋ आवत तहां महीपति नाना ॥
जरासन्धसुत प्रबल भुवारा ❋ आइ तहां दल कीन्ह जोहारा ॥
भेंट देई क्रतु शिविर भुवाला ❋ तेहिअवसरआये शिशुपाला ॥
धर्मराज तब नकुल बुलाये ❋ मन भावत शुभवास देवाय ॥
देश देश के भूपति आये ❋ धर्मराज पद शीश नबाये ॥
भेंट अनेक भूप तब लावहिं ❋ करहिं प्रणाम बासशुभपावहिं ॥
परहिं ते चरण कृष्ण के आई ❋ पुनि २ धर्म्म सुतहिं शिरनाई ॥
वीर वृकोदर आदिक मिलिकै ❋ बैठहिं भूप सभइ सबहिलिकै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भई भीर पाण्डव दरबारा ❋ कोउ न पावत ओर दवारा ॥
तब बोले हँसि शाँरगधारी ❋ कुरुपतिकहँ अबलेहुहँकारी ॥
दो० चरवर बोलि नरेशतब, दीन्हो तिनहिं रजाइ।
लहुआवकुरुनाथकहँ, करहिं सभा मम आइ ॥
बहुरि बुलाये एक चर लीन्हा ❋ गंगासुतहि निमंत्रण दीन्हा ॥
बाहुलीक गृह एक पठावा ❋ करिबहु भाँति विनयसमुझावा ॥
द्रोण कृपा गृह मंत्र पठाई ❋ लिखिअनेकबिधिविनय बड़ाई ॥
विपुल दूत नरनाह बुलाई ❋ दै पूगीफल नृप समुझाई ॥
जे सब विपुल नागपुर बासी ❋ सचिव महाजन जे गुणरासी ॥
पृथक २ कहि नाम नरेशा ❋ पठये चर बहु करि उपदेशा ॥
सुनत निदेश प्रजाजन आये ❋ नैमंत्रित अरु बिनहिंबुलाये ॥
आवहिं चले प्रजा बहुतेरे ❋ ग्राम ग्राम प्रति यूथ घनेरे ॥
उचित अवास दीन सब काहू ❋ मखदरशनहित अतिउत्साहू ॥
चरवर वहाँ नागपुर गये ❋ सबकहँ देत निमंत्रण भये ॥
गयो दूत कुरुपति दरबारा ❋ दीनपत्र बहुवार जोहारा ॥
तब कुरुपति शकुनी हँकराये ❋ बाँचिपत्र सब भेद सुनाये ॥
पूंछिमंत्र आज्ञा नृप कीन्ही ❋ सजि निजसैनदुन्दभी दीन्ही ॥
भीषम द्रोण कर्ण सजि आये ❋ कृपाचार्य सब साज बनाये ॥
सजिदल चलत भयो कुरुराई ❋ बाजत पटह भेरि सहनाई ॥
गज अरूढ़ कुरुपति छबिपाई ❋ चहुँदिशि तरँग रहे ठहनाई ॥
चरवर कहेउ कि कुरुपति आये ❋ धर्म्मनरेश सुनत सुखपाये ॥
बन्धु बुलाय सकल तिन्हलीन्हे ❋ मिलहु जायनृप आयसुदीन्हे ॥
बन्धुसकल अरु सुभट समाजू ❋ चले भीम भेटन कुरुराजू ॥
तब उठि साथ चले यदुनन्दन ❋ जेहिमग आवत कौरव नंदन ॥
प्रथमहि मिले पिता मह आगे ❋ हरिहिदेखि रथतजि अनुरागे ॥
कृपाचार्य अरु द्रोणकुमारा ❋ बाहु लीक बिकरण सरदारा ॥
दो० अतिआदरामीलिसबनकहँ, भीमसहितयदुराय।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri: Funding by IKS.

कियो नकुल सहदेव सँग, बास करावहु जाय ॥
नाना भाँति करहु सेवकाई ❀ असकहि अग्र चले यदुराई ॥
मिलहिं वरूथ सुभट मगमाहीं ❀ करत जोहार चलेसब जाहीं ॥
बिदुर देखि यदुनन्दन आये ❀ द्रोणसमेत त्यागि रथ धाये ॥
पुनपुनि कृपासिन्धु भगवाना ❀ मिले बहुत बिधि करि सन्माना ॥
तब पारथहि कहेउ यदुराई ❀ सुथल शिबिर करवावहु जाई ॥
बिदुर समेत रम्य अस्थाना ❀ पारथ गुरुसँग कीन पयाना ॥
भीम समेत चले यदुराई ❀ आगे आवत लखि कुरुराई ॥
बिबिध भाँति बाजत बहुबाजा ❀ हयहींसत गर्जत गजराजा ॥
कुरुपति भीमहिं आवत देखा ❀ सहित रमापति सुन्दर भेखा ॥
शकुनी कर्ण सहित अनुरागे ❀ तब कौरवपति कुंजर त्यागे ॥
तब कुरुपतिहि मिले यदुराई ❀ बिबिध भाँति पूछी कुशलाई ॥
आये भीमसेन अनुरागे ❀ कीन जोहार भेंट धरि आगे ॥
अतिहित मिलत भये कुरुराई ❀ चले समेत समाज लिवाई ॥
जहँ यमुनातट निपट सुपासा ❀ दीन तहां कुरु नायक बासा ॥
पटल बितान गड़े बहुतेरे ❀ डेरा परे कुरुपतिही केरे ॥
यदुपति बहुरि सभा महँ आये ❀ समाचार सब नृपहि सुनाये ॥
सुनि नरेश उर अतिसुखलहेऊ ❀ तुरत बोलि मंत्रिन सनकहेऊ ॥
मख समाज सब साजहु जाई ❀ हय गज रथ दल द्रव्य बनाई ॥
धर्म्मराज कर आयसु पाये ❀ निजनिजकारज सकलसिधाये ॥

दो० इहाँ कर्ण शकुनी सहित, नृपभये प्रातःकाल ।
शिबिरशिबिरमिलभूपतिन, गयेजहांशिशुपाल ॥

ते कुरुनाथहि आवत जाना ❀ आगेमिले त्यागि अभिमाना ॥
तहँ कुरुनाथहि रहे कछु काला ❀ भयेबिदा केहि सकल हवाला ॥
देखत धर्म्म प्रताप महाना ❀ जातचले मनकृत अनुमाना ॥
राजत जहां पांडु कुलदीपा ❀ उतरे चहुँदिशि विपुल महीपा ॥
लै लै भेंट धरन ते आये ❀ कुञ्जरपुर नरेश बहु छाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहुत भेंट पाण्डव के आवत ❋ हम राजा बिन हेत कहावत ॥
कुरुपति यह देखत निज नैनन ❋ शोचत मनमहँ कहिकहिबैनन ॥
एक नगर महँ दुइ अधिकारी ❋ भायो बड़ो यह अनरथ भारी ॥
अबलग जगत विदित लघु भाई ❋ ते अब भये तुल्य बलदाई ॥
जगती बहु पदवी थल थोरे ❋ ते अब भये बरोबरि मोरे ॥
गजपुर चलिहि न एक दुहाई ❋ करि हैं आज्ञा भंग प्रजाई ॥
होत अवज्ञा जे नृप केरे ❋ मरण नीक तेहि जीवन तेरे ॥

दो० हम कहँ दण्ड न देहिंते, देहिं धर्मजहि जाइ।
छलबलकरिवशकीजिये, असकछुहोयउपाइ॥

याहिबिधि गे कुरुनाथ विताना ❋ नित्यनिमित्त करत अस्नाना ॥
इहाँ धर्म्मसुत सँग सब भाई ❋ हलधर उद्धव अरु यदुराई ॥
सुभट सकल दिशिं शोभा पाये ❋ प्रथमहिं बहुलीक गृहआये ॥
करि नरनाह विनय करजोरी ❋ गये पिता मह भवन बहोरी ॥
दूरिहि ते अभिवादन कीन्हा ❋ उठि गांगेय लाय उरलीन्हा ॥
मिलि हलधरहि प्रेमयुत हीते ❋ कुशलप्रश्न पूछी सब हीते ॥
माँगि बिदा सुतधर्म सिधाये ❋ द्रोणभवन अति आतुर आये ॥
कृपा चार्य अरु द्रोणकुमारा ❋ बिदुर ज्ञाननिधि परमउदारा ॥
सबहि यथोचितामिलि नरपालू ❋ विनय सप्रेम कहेउ निजहालू ॥
मांगि बिदा चले नर नाथा ❋ द्रोणकुमार भयो तब साथा ॥
बैद्य भवन कुरुनाथ चले जब ❋ फिरेसहित हरि हलधर उद्धव ॥
भूपति कहेउ हेतु अस्नाना ❋ है कछु भेद धर्मसुत जाना ॥
लखि हलधरकी भौंह तिरीछी ❋ फैलि रही यह बात सुतीछी ॥
कहहिं परस्पर सब बिलखाहीं ❋ विग्रह देखि परत भल नाहीं ॥

दो० सकलबन्धु अरुद्रोणसुत, सुभटसमाजविशाल।
आवत देखे धर्म सुत, सपदि उठे शिशुपाल॥

पुनिपुनि भेंटेउ नृप शिशुपाला ❋ पूँछिकुशलकहि सकल हवाला ॥
सब मिलकर मोरहिं मखकीजै ❋ बेगि जाव मैं आयसु दीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जरासंध सुत गृह नृप आये ❀ याहि प्रकार सब भूप मँगाये ॥
आये बहुरि सभा महँ राजा ❀ बोलिलीनसब सचिव समाजा ॥

॥ युधिष्ठिर उवाच ॥

मखशाला कहँ अब तुम जाहू ❀ अद्भुतरचहु कहेउ सबकाहू ॥
तिन पुनि शकट अनेक पठाये ❀ कदलीखम्भविपुल भरिआये ॥
षोड़श सहस खम्भ कञ्चन के ❀ चहुँदिशि सोहत हैं मंचन के ॥
हरित मणिन के पंच मँगाये ❀ पद्मराग के पुष्प सोहाये ॥
सोहत मध्य अनुप चँदोवा ❀ कहिन जाय जानैं जिनजोवा ॥
गजमुक्ता झालरि चहुँ पासा ❀ रंग रंग रत्नन की भासा ॥
षोड़श सहस खम्भ कदली के ❀ रचि दीन्हें अस्तम्भन नीके ॥
मखशाला अति चित्र बनाई ❀ देख विश्वकर्म्मा सकुचाई ॥
बुधजन विपुल देखि अनुरागे ❀ बहु बिधि चक्र बनावन लागे ॥
आये धौम्य धटज ऋषिव्यासा ❀ शौनक नारद शुकदुर्वासा ॥
शुक्राचार्य बृहसपति आये ❀ कश्यप विश्वामित्र सोहाये ॥

दो० याहि बिधि अड्डासीसहस, आयगयेऋषिजानि।
नृपप्रमाणकीन्हेउसबाहिं, जोरिजोरियुगपानि॥

सो० मखमण्डल महँ वास, दानमहीपतिमहिसुरन।
जहँ सब भांति सुपास, थल बैठेआहुति चले॥

बहुरि नरेश सभा महँ आये ❀ दुर्योधन पहँ दूत पठाये ॥
लावहु सहित समाज लेवाई ❀ चलेदूत नृप आयसु पाई ॥
जाय देखि कुरुपति दरबारा ❀ आवहिं मिलन महीप अपारा ॥
कीन्ह जोहारनृपहिं तेहिकाला ❀ कहेउ बोलावत धर्म भुवाला ॥
सुनि माँगेउ नरनाह तुरंगा ❀ शकुनी करण दुशासन संगा ॥
तजि हय द्वार तहाँ पशु धारा ❀ जहँ नृप धर्मराज दरबारा ॥
अर्जुन भीमसेन दरबानी ❀ लैं आवहिं राजन सनमानी ॥
सभा भेद नहिं जान महीशा ❀ थलतजिजलहिं चले अवनीशा ॥
भीम कहा कुरुपतिहि सुनाई ❀ दहिने पंथ न आवहु भाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कपटी भूप क्रोध करि साना ❋ पवनतनयकर कहा न माना ॥
जानेउ तर्क करत यहि बीचू ❋ जल मगमोहिं बतावत नीचू ॥
चले सरोष अग्र नरनाहा ❋ लागे बूड़न वारि अथाहा ॥
हाहाकार भीम करि धाये ❋ चहुँदिशि लोग दौरिसब आये ॥
गहिकर धाय दुशासन लीन्हा ❋ नृपहिं वारिते बाहर कीन्हा ॥

दो० करि अस्नान नरेश तब, पहिरे वसन नवीन ।
चहतचलन तेहिमग सँभरि, जहँअर्जुनआसीन॥

ऊपर महल सुता पंचाला ❋ तेहि देखे यह सकल हवाला ॥
बिहँसिकहेउ सब सुनहु सहेली ❋ जानत हौ कुलरीति पछेली ॥
अंधसुवन जिमि प्रगठभयेरे ❋ मनहुँ शृंग करशायल केरे ॥
असकहि वचन द्रुपदकी जाता ❋ हँसी ठठाइ सुनी नृप बाता ॥
भीम दुशासन अरु कुरुराई ❋ अपर न काहू सो सुनि पाई ॥
भा नरेश मन क्रोध अपारा ❋ कहेउ न कछु आगे पगुधारा ॥
परन पाँवड़े बहुपट लागे ❋ चलत नरेश भये पुनि आगे ॥
बिहँसि भीम कुरुनाथहि कहेउ ❋ कपट सनेह सदा तुम रहेउ ॥
जो मग तुम कहँ दीन बताई ❋ तहाँ न गयो कपटवश भाई ॥
असकहि भीम ठाढ ह्वै रहउ ❋ कहत बचन आपुसि महँ भयउ ॥

भीम उवाच

पिता अन्ध क्यों सूझी पूता ❋ हँसे भीम करि तर्क बहूता ॥
कौरवनाथ सुनी सो बाता ❋ क्रोध कृशानु जरे सब गाता ॥
तब नरेश अस मन अनुमाना ❋ हमहिं बुलाय कियो अपमाना ॥
तेहिते अधिक पाण्डवन केरा ❋ होय सफल तब जीवन मेरा ॥
येहिविधिनृपनिजमनअनुमानी ❋ गये जहाँ पारथ दरबानी ॥

दो० आवत नृपहिं बिलोकितब, उठे पार्थ हरषाइ ।
करिजोहार पुनिपाणिगहि, लैगय संभा लेवाइ॥

बहुलज्जा कछु कोधिक ज्वाला ❋ गयो नरेश सभाकी शाला ॥
उठे धर्म्म नृप आवत देखी ❋ कृष्णसहित सबसभा विशेखी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लखिहलधर कँह कुरुकुलदीपा ❀ कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा ॥
मन वांछित वर आशिष पाई ❀ मिले बहुरि धर्मज कुरुराई ॥
लीन नरेश निकट बैठाई ❀ नीके रहेउ सुयोधन भाई ॥
रुक्ष बचन तब कुरुपति कहेऊ ❀ हम नीके तुम नीके रहेऊ ॥
धर्म सुवन कह मधुरी भासा ❀ कुशल हमारे सोहत पासा ॥
बैठे कमल नयन यदुराई ❀ अपर कुशल हमकौनि बताई ॥
मनमहँ रोषविवश कुरुनाथा ❀ भौंहमरोरि मुच्छ धारिहाथा ॥
राते नयन करत चहुंओरा ❀ तब बोले बसुदेव किशोरा ॥

दो० कुरुपतिके गर्मी अधिक, देखि परत मुखभूर।
असकहिंबिहसेमधुरहरि, सहितसभाभरिपूर॥

व्यंग्य वचन सुनि यदुपति केरे ❀ अरुण नयन कुरुनाथ तेरे ॥
हरि मुसुकानि बारि सुधि केके ❀ रहेकुरुपतिहि अहित चितैके ॥
देखि भूप रुख बचन खरारी ❀ लागे किंकर करन बयारी ॥
नाना भांति सुगंध सिंचावा ❀ अतर गुलाबसकल छिड़कावा ॥
कहनृप तात सुनहु नरनाहा ❀ आये पिता न कारण काहा ॥
हमसमस्त रनिवास बुलावा ❀ कोऊएक भूलि नहिं आवा ॥
जिनकरकाजसकलबिधि भारी ❀ आई कस न मातु गंधारी ॥
बोले कुरुपति वचन सोहाये ❀ हम नरेश सबकी बदि आये ॥
कहेउ धर्म सुत तुम्हरे आये ❀ हम नरनाह बहुत सुखपाये ॥
आये भीष्मादिक सरदारा ❀ सबप्रकार भल भयो हमारा ॥
अबतुम मम आयसु उरधरहू ❀ यज्ञकाज सब निजकर करहू ॥
तब बोले कुरुनाथ महीशा ❀ आयसु होइ करौं धरि शीशा ॥
कहेऊ धर्मसुत सकल खजाना ❀ कंचन रौप्य रत्नमणि नाना ॥
धातु लोह आदिक जेते ❀ अनुचर राखिदेहु निज तेते ॥
तुम्हरी सनद बिना कोउ आवै ❀ अपर कहा हमहू नहिं पावै ॥
जँहलागै जेहिभांति बिधाना ❀ करहु तातहँ निजमनमाना ॥

दो० धर्मायसु कुरुनाथ सुनि, बोलिसकलजनलीन।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कंचन कोषविशालपर, राखिशकुनिकहँदीन ॥
पुनि कुरुपति गुरुसुताहि हँकारा ❀ सौंपि रत्नमणि गण भंडारा ॥
मम परतीति बिना जनि कोई ❀ पावै धनद सुरेश कि सोई ॥
पुनि सौबल तरनाह बुलाये ❀ रौप्य ताम्रके कोष सुहाये ॥
सकल सापि करुनाथहिं दीन्हा ❀ पुनि उल्का बुलाई नृपलीन्हा ॥
रहेउ जो धातु लोह सब झारी ❀ कुरुपतिकीनताहि अधिकारी ॥
देखि धर्मसुत सकल बनावा ❀ दुश्शासनहिं बहोरि बुलावा ॥
ममहित तुमहिं परिश्रम भाई ❀ कहेउ दुशासन होइ रजाई ॥
सुनि असबचन भूप सुखमाना ❀ सौंपि दीन सब मोदीखानां ॥
मोदी भवन दुशासन आये ❀ थलप्रतिशतशतवैश्य टिकाये ॥
चिट्ठा सकल नरेशन केरे ❀ आवहिं चले दुशासन नेरे ॥
सनदपाइ पुनि मोदी खाना ❀ जाइतुलावहिं बिबिधबिधाना ॥

दो० इहां धर्म नरनाह तब, विकरण लीन बुलाइ ।
बसन कोष सौंपे सकल, कहिमृदुबचन बनाइ ॥

बहुरि नरेश दुमंत बुलाये ❀ सौंपि महिषि गोबृन्द सोहाये ॥
द्विरदहि बहुरि बोलाइ नरेशा ❀ सौंपि गयंद यूथ उपदेशा ॥
दुर्दर्शनहिं सो बहुरि बुलवा ❀ सौंपि तुरगंम साज सोहावा ॥
सहदेवहिं बोले नरनाहू ❀ भाजन भवन तात तुम जाहू ॥
ईंधन धन गृह सकल जे भाई ❀ राखिहेहु तुम अनुचर जाई ॥
शिबिर शिबिर प्रति शकट भराई ❀ पठवहु जाइ नृपन कहँ भाई ॥
असकहि बहुरि धर्मधुर धीरा ❀ जात भये रविनन्दन तीरा ॥
कहेउ भ्रात यहकाज तुम्हारा ❀ कीजै कछु श्रम अंगीकारा ॥
कह रविसुत ममकारज होई ❀ माथेमानि करब हम सोई ॥

दो० धर्मनन्द कहँ यज्ञमहँ, दानकर्म बहु होइ ।
तुम सबपर शिरताज है करिय कृपाकरि सोइ ॥

दुर्योधन आदिक जे करता ❀ सबन बोलिकहपाण्डवभ्राता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ युधिष्ठिर उवाच ॥

आयसुकर्ण करहिं जस जाहीं ❀ फेरहु पत्र न करहु न नाहीं ॥
मांगहिं जो जब रबिकुल केता ❀ करब सकोच न सो तब देता ॥
रबिसुत कहेउ करन यहकाजू ❀ मखगृह गये धर्म महराजू ॥
जो यह बनी वस्तु बिधिनाना ❀ मेवा मधुर विपुल पकवाना ॥
नकुलहिं भूप कीन अधिकारी ❀ लागे करन अनेक तयारी ॥
लिये चतुर बिद्वान बुलाई ❀ जिन देखे मखबिपुल कराई ॥
जो संकल्प ऋषिन के आगे ❀ धरहिं ते बोलहिं चतुर सभागे ॥
आये मख ऋषि सहसअठासी ❀ अपर विप्र जे गुणगणरासी ॥
तिनकर भोजनादि सेवकाई ❀ सौंपि पर्थ कहँ धर्मज राई ॥
इहां कुरुपतिहि सबहिं हँकारा ❀ करण दुशासनादि सरदारा ॥

दो० कहे दुबचन भीम बहु, द्रुपदसुता मम संग ।
कहनृप कीजै अवशि सोई, यज्ञ जेहि भंग ॥

तातें कर्ण अवशि शिरधरहू ❀ दान प्रमाण त्यागि तुम करहू ॥
दुश्शासनहि कहेउ नरनाहू ❀ बिपुल सीध पठवहु सब काहू ॥
चिट्ठी द्विगुण त्रिगुण करि दीजै ❀ यश लीजै मखभंग करीजै ॥
रहहि न देशकोष जब सोई ❀ मखविध्वंश हँसी तब होई ॥
कहहि न तब कोइ धर्महिं राजा ❀ चलहिं नछत्र न बाजहिंबाजा ॥
यहिबिधि भूपति आयसु दीन्हा ❀ सादर सबनमानिशिर लीन्हा ॥
बिकरण कहेउ युगल करजोरी ❀ सुनिय बिनयकृपानिधि मोरी ॥
भीम द्रौपदी कृत अपराधा ❀ नाहिं न धर्मसुवन कृत बाधा ॥
यह अनर्थ शिर तासु बिसाई ❀ नाथलोक परलोक नसाई ॥
बिहँसि नरेश कही सुनु भ्राता ❀ भीम समेत द्रुपदकी जाता ॥
कीन्हेउ स्वल्प बचन अपराधा ❀ धर्म नरेश प्रबल कृत बाधा ॥
चाहत होन युधिष्ठिर राजा ❀ होत भंग ममपद पतिलाजा ॥
बंधु नीति अस कहति पुकारे ❀ नहिं कल्याण शत्रु बिन मारे
नीति अधर्म न नेक विचारिय ❀ जेहिविधितेहि बिधिशत्रुहिमारिय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जहँलगि चाहिये करिये हानी ❋ कहत पुकारिनीतिअसिबानी ॥
दो०सुनि भ्राता मुख बचन अस, विकारण रहे चुपाय ।
नृप आयसु सब शीशधरि, चलत भये सिरनाय ॥
होत प्रात याचकगण जागे ❋ जहँ तहँ वंश प्रशंसन लागे ॥
आवहिं विप्र बृन्द बहुतेरे ❋ चहुँदिशि करत वितान घनेरे ॥
सुनि अस शोर उठे तब जागे ❋ देन दान रविनंदन लागे ॥
लेखक मंत्री करण बुलाये ❋ पत्र याचकन विप्रन पाये ॥
कोउ तुरंग गज कोउ निधिपावा ❋ कोउमणि हाटकभार सोहावा ॥
भाजन वसन लहैं पुनि कोई ❋ कोउ अतिरंक धनद समहोई ॥
जहँ रविनन्दन चारि देवावहिं ❋ याचकजाहिंबीस तहँ पावहिं ॥
सबन दुशासन दीजै आना ❋ वस्तु पठावत बिन अनुमाना ॥
चिट्ठा द्वियुण त्रियुण करि दीन्हें ❋ देत किवार वीसगुण कीन्हें ॥
यहि विधि करहिं अधर्म अनेका ❋ छूटन हेत धर्म्मसुत टेका ॥
दो०लखि अनरथ अति सत्यकी, हृदयपरमदुखपाय ।
सकलकथा विस्तारते, भीमहिं कह्यो बुझाय ॥
भीम हृदय पुनि भो दुख भारी ❋ आये देखि सकल व्यवहारा ॥
भयो रोष उर अति दुखपाये ❋ सात्यकिसहित कृष्ण पहँआये ॥
कहेउ भीम हरि परम अकाजू ❋ भयो नाश युगलोक समाजू ॥
निपट यज्ञ यह अनरथ मूला ❋ हम पर भयो ईश प्रतिकूला ॥
असकहि कहेउ सकल इतिहासा ❋ चलत न गद्गद विक्रमभासा ॥
प्रभु यहि कृत्य योग जगमाही ❋ सकत सुरेश धनद रहिनाहा ॥
सुनिअस भीमहिं गहबर जानी ❋ धरहु धीर कह शारँगपानी ॥
कहत वृथा तुम हमहिं संदेशा ❋ कहहु जाइ जहँ धर्म नरेश ॥
अब कीजै हम कौन उपाऊ ❋ कीन्ह भूप कर्ता करुराऊ ॥
कछु न होय अब कौन हमारा ❋ करै भाग्य सब जो करतारा ॥
अब तुम कहेहु नरेशहि जाई ❋ मन भावत तस करैं उपाई ॥
दो०बंधु सकल अरु सचिवगण, बालि भीमसबबात ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहत भयो गद्गद गिरा, सुनत गये जरि गात ॥
धर्म सुतहि सब दूषण देहीं ❀ कीन कुसाज साज बिनजेहीं ॥
उठे भीम सँग सकल समाजा ❀ चले जहाँ कुन्तीसुत राजा ॥
धर्मनृपहि कृत सकल प्रणामा ❀ बहुरि एकान्त गये लै धामा ॥
लागे कहन धाम करजोरी ❀ सुनहुनाथ बिनती इक मोरी ॥
कहेउ सात्य की लज्ञि असरंगा ❀ बहुरिकहेउनिजगमन प्रसंगा ॥
अनुचित सकल देखिजिमिआये ❀ सबप्रसंग कहि सकल सुनाये ॥
पुनि जस बचन कहेउभगवाना ❀ कुरुपति केर कुकर्म बखाना ॥
सुनि अस सहमि भूमि नृप परेऊ ❀ धीर धुरीण धीर पुनि धरेऊ ॥
उठि बैठे नृप मंच विशाला ❀ बोले भीम नाइ पद भाला ॥
अब नरेश मोहिं देहु रजाई ❀ कुरु अनुचर सब देउँ उठाई ॥
जिनकै कीरति जकत प्रशंशी ❀ करिहैं काज सकल यदुबंशी ॥

सो० सांबसहित अनिरुद्ध, प्रद्युम्नादि कुमार जे ।
ते सब विगतबिरुद्ध, करिहैं कारज नाथ तब ॥

जानि बिचार कीजै नृप आना ❀ इनकर उचिनकरब अपमाना ॥
जो कदापि कर आयुध धरिहैं ❀ तौ पुनिकठिन गपमम मरिहैं ॥
मतिदृग बंश वीर अस कोहै ❀ रहे ठाढ़ मम सन्मुख जोहै ॥
तुम नृप यज्ञ करो सजि साजा ❀ मैं मदनाश करो कुरुराजा ॥
बोगि भूप मो देहु रजाई ❀ देहु भगाई कुरुपतिहि राई ॥
यदुवंशिन प्रतिथल पुनि राखी ❀ कीजै दूरि पाप अभिलाखी ॥
सबबिधि मूढ़ चहत उपहासा ❀ मति दृगबंश करो सब नासा ॥

॥ युधिष्ठिर उवाच ॥

कहेउ धर्मसुत बुपकरि रहऊ ❀ भूलिन बात बंधु असकहेऊ ॥
जन्म प्रयंत सदा निज जाना ❀ करिय न काहूकर अपमाना ॥
निज कृत कर्म मूढ़ फल पैहैं ❀ हमहिं न स्मारमण बिसरैहैं ॥
कहेउ भीम अबहीं लग राजा ❀ नहिंभारीकछु भयऊ अकाजा ॥
बड़ अकाज होई अब आगे ❀ यह कुरुनाथ धर्मपथ त्यागे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS.

आयसु देहु युधिष्ठिर राई ❋ करौं बाद कुरुपतिसन जाई ॥
दो० कहेउ भूप अनुचित न अब,बोलहु वशअज्ञान।
हम समेत कुरुनाथ कर,होत तात अपमान ॥
निज मन मापहिं कौरवराजू ❋ ताते हम सौंपेउ सब काजू ॥
कहेउ न कछु यदुवंशिन पाहीं ❋ गृहतजिअनतउचितअसनाहीं ॥
यहिविधि प्रिययदुवंशिन त्यागी ❋ कौनआजु सो ममशिरलागी ॥
अब अपमान किये बड़ि हानी ❋ रहहु चुपाइ तात असजानी ॥
परहित लागि होई अपराधा ❋ नहिं जग बुध करिहैंउपबाधा ॥
पर अपमान बेच निज होई ❋ दोष न धरहि विबुधगण कोई॥
होइहि तात न हँसी हमारी ❋ सदा सहायक गिरिवरधारी ॥
यह निश्चय आवत मन मोरे ❋ तात तजहु परतीति न भोरे ॥
जे खल चहत आन अपमाना ❋ तिनकर सदा करत भगवाना ॥
अस जिय जानि शोक परिहरहू ❋ यज्ञकाज सब प्रमुदित करहू ॥
होइहि सो जु करहिं भगवाना ❋ तुमहिंहमारिशपथपितुआना ॥
अब नहिं प्रकट बात यह होई ❋ राखहु सकल हृदय निजगोई ॥
धर्मराज के बचन सुहाये ❋ निजनिजकारजसकलसिधाये ॥
दो० लखिअनरथ यदुवंशमणि,निजबिचारमनकीन।
आठौ सिद्धी निधि नव, बोलिसु आयसु दीन॥
जे सब धर्म्मराज भण्डारा ❋ होई तहाँ अब वास हमारा ॥
निकसे कोटिन मग किन कोई ❋ घटै न सो परिपूरण होई ॥
होई भक्त मम काज न भंगा ❋ करहिंनजगजेहिंअयशप्रशंगा ॥
ताते तुमहिं कहहुं सिख एहू ❋ धर्मज बास कोष अवलेहू ॥
करिहैं कुरुपति अति सेवकाई ❋ निज यश हेतु द्रव्य परजाई ॥
नहिं सनमानि सकै करिजासू ❋ करेहु बिविध तुम आदर तासू॥
सो हमहूँ तुमहूँ मिलि कीजै ❋ लेश कलेश न भक्तहि दीजैं ॥
कीन्ही बिदा सीख दै भूरी ❋ सब भंडार भयो भरि पूरी ॥
निकसत सकलवस्तु विधिकोटी ❋ कोषप्रमाण होत नहिं छोटी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यह चरित्र कीन्हें भगवाना ❀ मर्म न दूसर जानत आना ॥
दो० धर्मज भट निज यूथसँग, गये देखिसब कोस।
सुमिरतयदुनन्दन चरण, पुनिपुनिकरतभरोस॥
आयो दिन शुभ यज्ञकर,गहगह हने निशान।
मखमण्डलमहँधर्मसुत, प्रातहि करिअसनान॥
प्रथम बिभूति सुखद सब काला ❀ तापर डारि नागरिपु छाला ॥
कुश आसन मृगचर्म सोहावा ❀ चित्रगलीचाअति सुखपावा ॥
द्रुपदसुता अरु पति जगतीके ❀ पहिरे यज्ञ विभूषण नीके ॥
वेद मंत्र द्विजकराहिं उचारा ❀ आसन धर्मराज पशु धारा ॥
जहँ तहँ विपुल बाजने बाजैं ❀ आसन धर्म्मनरेश बिराजे ॥
प्रथम भुप पूजे गणनायक ❀ सहित साथ आपु कुरुनायक ॥
जहँ लागत मणि कंचन काजू ❀ तहँ हर्षत बहु कोरव राजू ॥
ऋषिगण देव पुजावन लागे ❀ चक्र नवग्रह अति अनुरागे ॥
यज्ञ क्रिया जस मदन वरणी ❀ धर्म्मनरेश करत तस करणी ॥
श्रुति मारग जसपूजन कह्यऊ ❀ यामचारि गत वासर भयऊ ॥
हवनसमय अब अति नियराना ❀ आवन लगे महीपति नाना ॥
मख मंडल देखन तेहिकाला ❀ आये सहदेवहि शिशुपाला ॥
यातुधान लखि सहित समाजा ❀ कर गहि बैठारत कुरुराजा ॥
बहु सलमान करत महिपाला ❀ बैठारे जह मंच विशाला ॥
दो० तेहि अवसर आवत भये, नरनाहनके बृन्द।
बैठारत शकुनी करण, कुरुपति सहितअनन्द॥
भीषम द्रोण विदुर तब आये ❀ कर गहि दुश्शासन बैठाये ॥
मगधराजके बांधव आये ❀ आसन परम सुहावन लागे ॥
जिनकी कीरति जगत प्रशंशी ❀ तेहि अवसर आये यदुवंशी ॥
आसव पिय हल आयुध हाथा ❀ तेहि पाछे आवत यदुनाथा ॥
उद्धव सात्यकि सहित कुमारा ❀ कर गहि भीम पार्थ बैठारा ॥
लागेउ होन हुताशन काजा ❀ ग्रंथि निबंधनकर महराजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कृपाचार्य कुरुपतिंहि बखाना ❋ अब नृप समय आइ नियराना ॥
नृप शिर तिलक करै अबकोई ❋ राजसूय करता तब होई ॥
तासु पखारि चरण नरनाहू ❋ करै बहोरि बरण सब काहू ॥
सकल तिलक भूपति शिरनाई ❋ तब नरनाह श्रुवा अनुसरई ॥

दो० कुरुपति बालमीकिसन, कहेउ बचन शिरनाई ।
नाथ तिलक करि यज्ञाहित, लीजै चरण धुवाइ ॥
कहेउआदिकविकश्यपहि,तिनघटसुताहिसुनाइ।
यहिबिधिसबसबसोंकहत,उठतनकोउऋषिराय॥

कहेउव्यास सब ऋषिअसकहहीं ❋ सकलभुवनपति सोहतअहहीं ॥
तिनाहि बिलोकत उठत न कोई ❋ आवै जो सब बिधि बड़होई ॥
प्रथमहि उठै रमापति आछे ❋ सब ऋषिवृन्द आइहै पाछे ॥
कहै भीम अब वेगि खरारी ❋ उठत न होत अकारज भारी ॥
सुनि अस धर्मराज रुख पाई ❋ ठाढ़ भये उठि सहज सुहाई ॥
त्यागि मंच मन अति हर्षाई ❋ मृगपति ठवनि चले यदुराई ॥
लखिशिशुपालक्रोध अतिकीन्हा ❋ चर्म कृपाण हाथ गहि लीन्हा ॥
गरजि जलदइव गिरी गंभीरा ❋ कहेउ नीच सुनरे यदुवीरा ॥
नहिं जानत निजजति प्रभावा ❋ सकल सभा मह उठि सोधावा ॥

दो० अबजनिपग आगेधरहु. नतुमम चलत कृपान ।
तासु बचन अबलोकि तब , ठाढरहे भगवान ॥

कुरुपति आदिकुटिल मन हरषे ❋ मानभंग लखि हलधर मरषे ॥
चहत ताहि मूशल गहि मारन ❋ पुनिपुनि उद्धव करत निवारन ॥
फरकत यदुबंसिन के बाहू ❋ जहँ तहँ सब बरजैं सब काहू ॥
करत कोप शिशुपाल समाजा ❋ बरजि बरजि राकेत ऋषि राजा ॥
थर नर काँपत सब नर नारी ❋ कहहिं होत यह अनरथ भारी ॥
बिकल होत अति धर्मज राजा ❋ सबबिधि आपनजानि अकाजा ॥
भीम कहेउ मृदुबचन सुनाई ❋ दमघोषक सुतरहो चुपाई ॥
जनि दुबचन कहिय अब भारी ❋ होई अनरथ निपट पछारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो भीम बचन दमघोषसुत, सुनि कछुकाननकीन्ह ।
कहेउदुर्बचन बहुहरिहि, प्रभुकछुउतरनदीन्ह ॥
रे शठ निपट जति कर हीना ❀ नाग नगरके भये कुलीना ॥
सनकादिक ऋषिवृन्दन आगे ❀ रंचक कानि नकीनि अभागे ॥
हम बैठे सब बिपुल भुवारा ❀ ज्यबंधु कहँ लघु करि डारा ॥
बड़ आश्चर्य्य द्विजन के आगे ❀ चरण अहीर धुवावन लागे ॥
अब द्विजबृन्द भये पुनि कैसे ❀ शूद्र न मानत गुरुकहँ जैसे ॥
प्रथम ग्वालगृह प्रकट अभागा ❀ पुनि यदुवंश कहावन लागा ॥
भयो वर्णशंकर जग जाना ❀ सब कर मूढ़ करत अपमाना ॥
सुनि कटुबचन उठे यदुवंशी ❀ राखहिं उद्धव आदि प्रशंशी ॥
पारथ भीम आदि सब योधा ❀ कहतन कछुकजरत उरक्रोधा ॥
दो० निजमन्दिरलखिआगमन,कछुनकहततेहिपास।
शोचविवश नृपधर्मसुत. लखि यदुनन्द उदास॥
हर्ष विवश कुरुनायक आदी ❀ विस्मयवश सब ऋषिसनकादी ॥
सुनहु तात कह नृप मृदुबानी ❀ रहहु चुपाइ काजनिज जानी ॥
मख विध्वंस होई मम ताता ❀ तुमकहँलाभ कवनिबड़िबाता ॥
वचन न मानत धर्मज केरे ❀ कहत हरिहि बहु बचन कठोरे ॥
धूमि बैठु निज आसन जाई ❀ नत है है मखभंग लराई ॥
धर्म्म नरेश बन्धु युत नीचू ❀ धोवत ग्वालचरण मख बीचू ॥
हरि उदास सुनि बचन तिरोछे ❀ आग चलत न घूमत पाछे ॥
सहिन सकत गहि उद्धव राखत ❀ पुनिशिशुपालबचन असभाषत ॥
दो० विप्रबृन्द की कानि तजि,चरण धुवावन जात।
वीरहीनजानै अवनि, मूढ न मन खिसियात ॥
यहिविधि कहत विपुल दुवादा ❀ बिन घन होत गगनमहँ नादा ॥
मा दिग्दाह उल्कक पुकोर ❀ महि डगमगत उदितभे तारे ॥
यातुधान कटु कहत अनेका ❀ कृतअपराध अधिकशतएका ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बोलन चहत अपर कटुबानी ❋ कहेउ सरुष तब शारँगपानी ॥
अब रसना जनि चाल चलाई ❋ तन जैहै शिरसहित उड़ाई ॥
कहि अस बचन नयन रतनारे ❋ काल रूपकर चक्र सँभारे ॥
लागेउ घूमन चक्र कराला ❋ कहेउ बचन गम्भीर कृपाला ॥
अब न बचन निकसे मुख तेरे ❋ नत जैहौ यमसदन बसेरे ॥
सुनि कर गहेउ चर्मकर बाला ❋ कहि दुर्वचन उठे शिशुपाला ॥
यातुधान भट उठेउ सरोषा ❋ यदुजन अस्त्र गहहिं करिरोषा ॥
पारथ झपटि धनुष गुण दीन्हा ❋ गदा उठांई पवनसुत लीन्हा ॥
मख दीक्षित नृप रक्षण हेतू ❋ गये युगल भट पहुँचि सचेतू ॥
झपटि झपटिभट आयुध गहहीं ❋ धरुधरु मारु मारु धरु कहहीं ॥

दो० भीष्म द्रोण शकुनी करण, दुर्योधन नरनाह ।
ठाढ सजग दहँ धर्म सुत, जासु भंग उत्साह ॥

बिकल धर्मसुत धरै न धीरा ❋ उमहे यातुधान यदुवीरा ॥
रक्षण मख समाव ऋषि धीरन ❋ कुरुपति ठाढ़किये निजबीरन ॥
भीम दुशासनादि भट भारी ❋ रक्षहि यज्ञ समाज सुखारी ॥
अस मन चाहत कौरव गजू ❋ होई महामख भंग समाजू ॥
गजपुर भयो कोलाहल भारी ❋ मनहुँ प्रवेश कीन यमधारी ॥
बिमल शोकबश शत्रु अजारा ❋ मोहिं दारुण दुख दीन बिधाता ॥
कुन्ती आदि सकल नर नारी ❋ बिकल होहिं निजकर उसारी ॥
व्यासआदि सब धर्म नरेशहि ❋ समुझावत करिबहुउप देशहि ॥
इहां होत बहु हाहाकारा ❋ दामिनि समदमकहि असराधा ॥
विपुल सहायक जे भट भारी ❋ आई गये शिशुपाल पछारी ॥
बहु यदुबंश सहायक राजा ❋ आये साजि बजावत बाजा ॥

सो० हल मूशल निजपानि, गहेउ रेवतीरमण जब ।
परम रोषवश जानि, उद्धव करत प्रबोध बहु ॥

केवल एक छाँड़ि शिशुपाला ❋ अपर न होइ जीव बशकाला ॥
जब लगि तुमनहिं करौ प्रहारा ❋ चलीन अपर मनुजहथियारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हौ सशेष भय देहु देखाई ❋ यातुधान जेहिं जाय पराई ॥
जहि बिधि धर्म जाइ मख भङ्गा ❋ होइनात सोइ तजिये प्रसङ्गा ॥
परम चतुर उद्धव मुख बानी ❋ हलधर लीन्ह सकल शिरमानी ॥
उत शिशुपाल प्रचारत आवा ❋ बार बार हरि चक्र फिरावा ॥
पाणि सुदर्शन वेष कराला ❋ डरतन कटुककहत शिशुपाला ॥
प्रलय समय जिमि शङ्कर केरे ❋ तेहि प्रकार हरि नयन तेरे ॥
त्यागेउ हरि बहुवार भ्रमाई ❋ कण्ठ समापति शंभु दोहाई ॥
रवि सम तपत सुदर्शन धाये ❋ दनुजन देखि महा भयपाये ॥

दो० ताके कण्ठ सुदर्शन, घूमेउ बार हजार ।
शीशकाटिप्रभुरुखनिराखि, गयेविष्णु आगार ॥

शीश विहीन रुण्ड महि परेऊ ❋ देवन देखि सुमन झरि करेऊ ॥
यदुबंशिन असि चर्म उठाये ❋ दनुजन देखि महा भयपाये ॥
मूशल पाणि गहेउ हलधारी ❋ दनुजन देखि भयो भयभारी ॥
अति भयभीत निशाचर भागे ❋ पीछे यदुवंशी गण लागे ॥
चपरि संभारि समर समुहाहीं ❋ चलतन अस्त्रभाजि जेहिजाहीं ॥
यहिबिधि निशिचर निकरपराने ❋ जहँतहँ गये जात नहिं जाने ॥
धावन धर्महि खबर जनाई ❋ नाथ विजय यदुनन्दन पाई ॥
चक्र पाणि गहि रूप कराला ❋ काटेउ दमघोषक सुत भाला ॥
भयबश देखि अमित प्रभुताई ❋ गये निशाचर सकल पराई ॥
खण्डित शीश परेउ शिशुपाला ❋ महाराज भूतल यह काला ॥

दो० सुनतमर्षि कह धर्मसुत, हार यह कीन नकीन ।
अपर कहहु केते सुभट, यमपुर शासन दीन्ह ॥

एक चैद्य बिन कह हलकारा ❋ अपरनगयो युगल दिशिमारा ॥
सुनि सशेष भय कुरु नरपाला ❋ भृकुटी कुटिल बिलोचन लाला ॥
फरकत अधर कहन असलागे ❋ द्रोणी द्रोण धर्मसुत आगे ॥
उचित न मख मण्डल महँ ऐसी ❋ भई पितामह बात अनैसी ॥
मखहित प्रथम निमन्त्रण दीन्हा ❋ भवन बुलाई तासु बध कीन्हा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यज्ञादिक कारज यश हेतू ❋ अपयश पूरि रह्यो भरि खेतू ॥
मख विध्वंस भयो सब भाँती ❋ निपट बंधु ये वंश कुजाती ॥
तात यत्न कीजै अब सोई ❋ अपयश भंग जौन बिधि होई ॥
करिय साज सचि समर बहोरी ❋ जेहि संसार धरे नहिं खोरी ॥
नतु महि हीन होइँ यदुबंशी ❋ की जग रहैं न कुरु कुलबंशी ॥

दो० द्रोण पितामह सजगव्है, गहहु हाथहथियार ।
होइनाश यदुकुल सकल, नतु अबबंशहमार ॥

सन्मुख समर यदुन सन लेहू ❋ जियत न जान द्वारकहिं देहू ॥
महारथिन निज धनुष चढ़ाये ❋ सजग भय नृप आयसु पाये ॥
निज दल नृप संदेश पठावा ❋ करहुसमर हित सकल बनावा ॥
धर्मराज रुख लखि सब भाई ❋ सजग ठढ़भे धनुष चढ़ाई ॥
दीख बिदुरभा अनरथ भारी ❋ आयो धर्म नरेश पछारी ॥
कहेउ गुप्त यह अनुचित ताता ❋ उचित तुमहिनहिं शत्रुअजाता ॥
बिन शिशुपाल हेतु मखरच्छा ❋ अपर बीरहरि बधै न इच्छा ॥
यदुपति सदा करत हित तोरा ❋ करत शत्रुवत अन्ध किशोरा ॥
सब बिधि चहत तुम्हार अकाजू ❋ ताते सजत समर हित भाजू ॥
हरि तव यज्ञ सफल करवैहैं ❋ नृप निज चलत बिगार करैहैं ॥
सुनि असबचन भीम मनमाना ❋ भूप बिदुर सब सत्य बखाना ॥
दुष्ट रुप कुरुनाथ स्वभाऊ ❋ है हमरे सब कछु यदुराऊ ॥
पठे सँदेश द्रोपदी रानी ❋ हरि सन समर किये बड़हानी ॥

दो० धर्मराज सुनिसुनिवचन, निजमन करतबिचार ।
हरिवियोगइत अयशउत, उरदुख दुसहअपार ॥

पुनि धीरज धरि धर्म नरेशा ❋ कह्यउ बिदुरमत भल उपदेशा ॥
कह त धर्म पितामह मासा ❋ नाथ तुम्हार सदा हम दासा ॥
अब बारे यतन करहु प्रभु सोई ❋ मख रक्षा अबते कछु होई ॥
तुम कुरुपतिहि देउ समुझाई ❋ जिहे न होइ हरिसंग लड़ाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ भीष्म उवाच ॥

कहेउ बात भलि जस मन मोरा ❀ मैं समुझावो अंध किशोरा ॥
अस कहि भीष्म तहां पगुधारा ❀ जह कोपत कुरुनाथ भुवारा ॥
नृपहि पितामह बहु समुझाये ❀ सहित समाज धर्मपहँ आये ॥
कहत काह पूछत कुरुनायक ❀ कहउ नरेश होइ जेहि लायक ॥
अब यह विमल पितामह बानी ❀ हमतुम सकलकरियशिरमानी ॥
कह कुरुनाथ उचित मत एहा ❀ समर सरोष त्यागि संदेहा ॥
जिन नहिं नेकु कानिममानी ❀ दीन उतारि क्षणक मैं पानी ॥

दो० नीच होत तौ बधउचित, तुल्यसभरअबयोग्य ।
अपरतनय करिअयशते, कबहुनहोबअरोग्य ॥

बाहुलीक कह सुनु नृप बानी ❀ सत्य विवेक धर्म नयसानी ॥
जेहिसब बधेउ दनुज कुलटीका ❀ करबतासु असकहबन नीका ॥
जबते भा हरि जन्म पुनीता ❀ बधत बलीं दुष्टन कह बीता ॥
को जगमिलहि तुमहिसमयोधा ❀ करत समर यदुपतिहि प्रबोधा ॥
हरिसन जे भट रणकृत भारे ❀ मानहुँ भट प्रथम के मारे ॥
तात समुझि परिहरहु कुमतिही ❀ सोहन समर तुम्हैं यदुपतिहीं ॥
चलहि न चक्रन सहित सहाई ❀ नाहक प्राण गवैहो जाई ॥
चालहि चक्र हल मूशल नाना ❀ हरि हलधर करिहैं घमसाना ॥

दो० तब काहि हौपछिताइहम, काहकुमारगकीन्ह ।
तेहिअवसरहलधरसहित,यदुपतिदशनदीन्ह ॥

गहे राम हल मूशल हाथा ❀ आगे तेहि पीछे यदुनाथा ॥
चर्म कृपाण गहे कर माही ❀ उग्ररूप छूटत सिर नाही ॥
यादवसात्यकि दुहुदिशि आवत ❀ अस्त्रगहे बहु यदुपति धावत ॥

॥ कृष्ण उवाच ॥

कहेउ कृपालु धर्म्मसुत पाही ❀ हमशिशुपाल बधे मख माही ॥
यदपि भई यह बात अयोगू ❀ दोष तुम्हार न देहे लोगू ॥
अब तुम साजिसाजि मखकरहू ❀ जनि विस्मयमन रञ्चकधरहू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नत कीजै हमहूँ तुम सोई ❋ कहहिं बचन कुरुनायक जोई ॥
जो दमघोष सुवन करै अंगू ❋ होइ जो प्रकट करे रण रंगू ॥
मृतक परेउ जो महि शिशुपाला ❋ ताहि पठावहु भवन भुवाला ॥
संग करहु सेनापति जाई ❋ आवहिं दराड बांधि बारआई ॥
जे नृप दण्ड चैद्य कह देता ❋ पठवहु निजचर सेन समेता ॥
आवहिं दंड सबन प्रति बाँधी ❋ भूप भई महि बिगत उपाधी ॥

दो०धर्मराज सुनिहरिबचन, कह असउचितननाथ ।
बधबुलाइकरि दराडहित, पठइयनिजजनसाथ ॥

तासु तनय बध समुझि दुखारी ❋ पुनियहदराडविपति बड़िभारी ॥
कह प्रभु उचित नीति कहबाता ❋ नृपकहँ दराड बिचारन ताता ॥
निज सेनापति भूप बुलावा ❋ कहेउ यथा हरि आयसु पावा ॥
आवहु दंड बाँधि सब तेरे ❋ नहिं शिशपाल सुतन के नेरे ॥
गुप्त कहेउ यह हरि नहिंजाना ❋ चैद्य राखि रथ कीन पयाना ॥
माहिष्मती नगर पहुँचाई ❋ लीन्हें डांड़ि अपर भुवराई ॥
कह शिशुपाल सुतन ते एहू ❋ हौं अदण्ड तुम दण्ड न देहू ॥
अपर नरेश करै कोउ भीरा ❋ बेगि जनावउ धर्म्मज तीरा ॥
हम सब करब सहाय तुम्हारी ❋ धर्म दुहाई नगर तब झारी ॥
असकहि बहुबिधि धीरजदीन्हा ❋ आपु गमन हस्तीपुर कीन्हा ॥

दो०इहाँतुरत यदुवंश मणि, आयसु दीन कराय ।
बाजे बिविध निशान घन, सब न दीन बैठाय ॥

याम निशगत यह सब भयऊ ❋ पुनि यदुनाथ महामख ठयऊ ॥
जस मख मारग वदन वरणा ❋ कीन धर्म्मसुत सब आचरणा ॥
भयो तिलक पूर्णाहुति कीन्हा ❋ छत्र धराय राज्यपद दीन्हा ॥
बाजे बिपुल शंख घरियारा ❋ भेरि धेनुमुख पवँरि दुवारा ॥
विपुल दान द्विजवृन्दन पाये ❋ ऋषियन अशनपान करवाये ॥
भै बकशीश याचकन भारी ❋ शतयोजननहि रह्यउ भिखारी ॥
जहँ तहँ वारमुखी बहु नाची ❋ नगर नगारे की ध्वनि माची ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कछु दिन सबहिं राखि नरनाहा ❀ करि सतकार समेत उछाहा ॥
नृपन बिदा हित आयसु माँगे ❀ चलती बार निपट अनुरागे ॥
साजि बाजि गज वाहन नाना ❀ दुर्योधन दल कीन पयाना ॥
फिरे पांडुनन्दन पहुँचाई ❀ उद्धव राम सहित यदुराई ॥
बाह्लीक पद पुनि शिरनावा ❀ गंगसुतन ते आशिष पावा ॥
विदुरहि मिलत नाथ जगतीके ❀ भेंटत राम कृष्ण अति नीके ॥
कर्न्हविदा अति पुलक शरीरा ❀ गै सुतधर्म द्रोण गुरु तीरा ॥

दो०गुरुहिनायशिरभेंटिपुनि, अतिहितद्रोणकुमार ।
मगमहँ मिलि रविनन्दनहिं, जात भये आगार ॥

यदुवंशिन मिलि धर्म भुवाग ❀ कीन्हेउ अशन अनेकप्रकारा ॥
सकल बहोरि सभा महँ आये ❀ कोउ बिश्राम करत सुख पाये ॥
कोउ खेलत बहु पंसासारी ❀ खेलत कौतुक की बलिहारी ॥
देखत नृत्य गान सुन कोऊ ❀ कोउमृगया हितसजतसजोऊ ॥
हरि हलधर युत धर्मनरेशा ❀ लखि मन सकुचत कोटि सुरेशा ॥
जेहिमारग निकसत कुरुचन्दा ❀ देखि परत बहु याचकबृन्दा ॥
आवत लखि कुरुनाथ सवागी ❀ कहहिं प्रशंसि प्रचारि प्रचारी ॥
दुर्योधन आदिकन सुनाई ❀ करे धर्म्मसुत करि बड़ाई ॥
केहि न होंहि धर्मसुत भारि ❀ जिनके तुम समान भण्डारी ॥
दान कृष्ण निपुण सब भाँती ❀ भूप दशा कैसे कहि जाती ॥
जासु किंकरन के मन ऐसे ❀ आपु नरेश हाहिं धौं कैसे ॥

दो०रहे न जगमहँ रंककोउ, सब नर धन पदपाव ।
तासुकोषकीरतिविमल, कहहुमनुजकिमिगाव ॥

कुरुपति धर्मसुयश सुनिकानन ❀ बिहरतहृदय मनहुँपविबानन ॥
अति सकुचत जनु अवनिसमाई ❀ यहिविधिकुरुपतिमन्दिर जाई ॥
करत बनैं नहिं काज नशाना ❀ पुनिपुनिधिगनिजजीवनजाना ॥
विभव बिलोकि युधिष्ठिर केरा ❀ कुरुपति उर संशयकृत डेरा ॥
प्रातहि उठे धर्मसुत गजा ❀ हलधर कृष्ण समेत समाजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi. eGangotri. Funding by IKS.

बैठ सभा मन्दिर महँ जाई ❋ दूतन कही खबरि असि आई ॥
प्रभु अब नागनगर भल बसई ❋ अमरावता जानि लघु हँसई ॥
अबकोउ इन्द्र न अस याहे ग्रामा ❋ तुमते हीन जासु गृह सामा ॥
सबके गृह मणि कञ्चन रासी ❋ दास अनेक अनेकन दासी ॥
गज रथ चपल तुरङ्गम छाये ❋ गृहगृह जनु हरि धनद बसाये ॥

दो० प्रथमजयतितवजयकरणा, जयकुरुनाथभुवाल ।
कहाहिं परस्पर रङ्क ते, जिन कीन्हो धनपाल ॥

धम्मराज तव दान पताका ❋ विदित रसातल भूतल नाका ॥
दूतबचन सुनि अतिसुख माना ❋ बहुरि नरेश करत अनुमाना ॥
कहत दूत सब जो निधि मेरे ❋ भे तस रङ्क नागपुर केरे ॥
यहि मन्दिर ते जिमि मैं एका ❋ प्रगट तथा धनवान अनेका ॥
नेक कोश मम भयो न खाली ❋ दानदशा सुनि भूतल हाली ॥
सो यह द्रव्य कहां ते आई ❋ पूछ्हुँ भीमहि भूप बोलाई ॥
सुनि नृपबचन पवन सुतहाला ❋ कहेउ भयो यदुनाथ दयाला
सत्य तुम्हारि समुझि मनमाही ❋ त्राता अपर देखि कोउ नाही ॥
देखि अनाथ दया प्रभु कीन्ही ❋ राखिलाजकरुणा निधि लीन्ही ॥
कुरुपति चहत भंगमख कीन्हा ❋ कृपासिन्धु सोई कैर न दीन्हा ॥

सो० रहीप्रीति उर छाइ, यदुपति की करणी समुझि ।
दशा न सो कहिजाइ, जोरिपाणिबिनवतहरिहि ॥

जय राधामर हलधर सोदर ❋ जयतिदयानिधि जयदामोदर ॥
जय जय जय बृन्दाबन बाँसी ❋ लक्ष्मीपति वैकुण्ठ निवासी ॥
निज जन हेतु सदा तुम त्राता ❋ मम पति रखिलीन तुमजाता ॥
हलधर सहित जयति जयजोरी ❋ राखेउ लाज दयानिधि मोरी ॥
सुनत वचन कह दीनदयाला ❋ रही तुम्हरि लाज सब काला ॥
तुम सरीख जे भूतल राजा ❋ नहि तिनकानृप होतअकाजा ॥
कह नप नाथ सुना गिरिधारी ❋ एक हृदय मम संशय भारी ॥
वैद्य जाहि निज धाम पठावा ❋ रोष मोहि केहि कारण आवा ॥
बिदुर बुझाई कहेउ मम पाही ❋ तब संतोष भयो मनमाही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

दो० हँसि बोले यदुवंशमणि, तुमहिं उचित यहभाव ॥
नीति धर्म उर बसत हैं, कस न रोष उर आव ।

जो नृप होत अज्ञ अविचारी ❀ करत नरोष सभय लखि रारी ॥
आवत जहां निमन्त्रण दीन्हे ❀ शत्रुमित्र तहँ उचित न चीन्हे ॥
अनुचित खोरि धरत सब लोगू ❀ समता तासु कहत बधयोगू ॥
यश हित भूप यज्ञ तुम ठयऊ ❀ अयशविलोकि क्रोधउरभयऊ ॥
तदपि नीच अस जिहि थलपैये ❀ करिय विनाश बिचार न लैये ॥
कीन क्षमा तुमअस जिय जानी ❀ यह बधयोग अमङ्गल खानी ॥
सुनि नृप धर्म परम सुख पाये ❀ हलधर कृष्ण समेत नहाये ॥
उद्धव सात्याकि राम सुहाये ❀ प्रथम कृष्ण कुन्ती गृह आये ॥
अशन पान करि सहित समूहा ❀ मांगी विदा चल दल यूहा ॥

दो० बहुप्रकार रानीन मिलि, कुन्ती पद शिरनाय ।
प्रद्यम्नादि कुमार जे, माँगत सबहिं रजाय ॥
चढ़ेसकल निज निज रथन, चलेनिशानवजाय ॥
पुरबाहर लग धर्म्ममुत, फिरतभये पहुँचाय ॥

गये द्वारकहि जब यदुराई ❀ बैठे सभा धर्मसुत आई ॥
करहि धर्मयुत राज्य सुखारी ❀ मुखरुख जोगवत बांधवचारी ॥
अभिमनु आदि विलोकिकुमारा ❀ लहत मोदमन धर्म भुवारा ॥
यक दिन वाजि चढ़े नरनाथा ❀ सुभट समाज चले बहुसाथा ॥
अश्वारूढ़ बन्धु बर चारी ❀ धाये बन्दी बिरद पुकारी ॥
अभिमनुआदिक बिलोकिकुमारा ❀ महिषमती नगरी पगुधारा ॥
अभय बांहकरि ताहि बसाये ❀ कहिअदण्डनृपनिजपुरआये ॥
धर्म नरेश जालि सब लायक ❀ दण्डपठाई देहि नरनायक ॥

दो० यहिविधि विपुलप्रतापनृप, बसत नागपुर माहिं ।
सबलसिंहलखिजासुगति, धनदशक्र सकुचाहि ॥

इति श्री महाभारतेसभापर्वणिसबलसिंहचौहानभासाकृते
शिशपालयथ युधिष्ठिरयज्ञनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० जनमेजयकह ऋषिकहहु,सकलकथाविस्तारि।
परमप्रीति कुरु पाण्डवन,नाथभई किमि रारि॥
कह ऋषि सुनु नृप गजपुरवासी ❋ कुरु पाण्डव चरित्र सुखरासी॥
सुनत होइ नर बिनहिं प्रयासा ❋ सिद्धि कामना सुरपुर बासा॥
आयो देखि धर्म मख जबते ❋ निशिननींदकुरुनाथहितबते॥
बन्धु विभव लखि परम उदासा ❋ यतनविचारतकेहिविधिनासा॥
गजपुर दूसरि फिरत दोहाई ❋ सुनि जरिजात गात कुरुराई॥
इक दिन कुरुपति सचिव बुलाये ❋ शकुनी करण दुशासन आये॥
पूँछत सबही कुरुपति दीपा ❋ होइ नाश जेहि धर्म महीपा॥
कीन्ह सबनमिलि यहमत ठीका ❋ जोरिसमूह समर अवनीका॥
लीजै सकल बन्धु अब घेरी ❋ चहुदिशि धर्मज भवन गरेरी॥
दो० पितहिपूँछिअनुचितउचित,तसकीजै तबकाज।
उचित मंत्र शकुनी कह्यो, सबकेमनभलभ्राज।
करण दुशासन नृप मन माना ❋ बुद्धिचक्षु पहँ कीन्ह पयाना॥
संजय दीख किं कुरुपति आये ❋ करि सतकार विविध बैठाये॥
मति दृगचरण धरैं सब शीशा ❋ पावहि मनभावती अशीशा॥
शकुनी कह्यो. सुनो महराजा ❋ तुम्हरे सुतहि रोष बड़े लाजा॥
पाण्डव सभा प्रबल इन देखी ❋ अति विस्मयवशरूप विशेखी॥
तहँ कछु भूप भयो अपमाना ❋ ताते दुर्योधन दुख माना॥
होत अवज्ञा गजपुर माहीं ❋ भीमकानि मानत कछु नाहीं॥
एक राज्य महँ भे दुइ राजा ❋ कीनं मंत्रयह जानि अकाजा॥
दल बटोरि कीजै रण रीती ❋ लाजै धर्म्म नरेशहि जीती॥
दो० बंधु मित्र अरु पुत्र सब,थल गरेरि करि नास।
देश कोष लीजै सकल,धर्म्महिं यमपुर बास॥
सुनि मतिदृग शकुनी सुखबानी ❋ बोले वचन दोखि बड़ि हानी॥
मंत्र तुम्हार हमहिं नहिं भावत ❋ ईश बाम अस बचन कहावत॥
समर दक्ष जिनके मन ऐसे ❋ जीते जाहिं पाण्डुसुत कैसे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जिनके साथ सदा बनवारी ❀ लरिनसकहिं रणशक्र प्रचारी ॥
लरिकाई खेलत नहिं हारे ❀ तासु न बिगरहि बात बिगारे ॥
जीति सकहि को धर्मकुमारा ❀ जहँ जगदीश आपु रखवारा ॥
उनते समर न पैहौ पारा ❀ अबसुतजनियहकरहु विचारा ॥
धर्मराज समर अपराध विहीना ❀ करत तात तुम मंत्र अलीना ॥

दो० सुनि शकुनी बोले बहुरि,भूप कही भलि बात ।
हारि जीति कीन्हे समर.कुरुपति जानिजात ॥

॥ शकुनि उवाच ॥

द्यूतकर्म हम निपुण है कुरुपति ❀ पंसासार ख्याल अद्भुत गति ॥
कपट अक्ष भावै मन जोई ❀ सुनहु नरेश पर तब सोई ॥
कपट भेंट पाण्डवन बुलाई ❀ जीति लेव सब अक्ष खेलाई ॥
एहै धर्म्म महीपति आछे ❀ युद्ध जुवा पग धरे न पाछे ॥
देश कोश नृप सकल लगाइहि ❀ जीति लेव सबराहिनहिंजाइहि ॥
युद्ध किये पांडव नहि हरिहैं ❀ उन कर पक्ष कृष्ण तब धरिहैं ॥
जीते ख्याल न बढ़हि विरोधू ❀ कहीनकोउअनुचित करिक्रोधू ॥
भूप हमारि मानि शिख लीजै ❀ अपर बात जानि चित्त धरीजै ॥

दो० कपटभेद करि पाण्डवन. जीतहु देहु निकार ।
एक छत्र महि भोग वहु.रहै न कण्टकधारि ॥

सुनि कुरुपति मनभयो अनन्दा ❀ जनु चकोर पायो निशि चन्दा ॥
पुनि पुनि शकुनी केरि बड़ाई ❀ करे लाग कुरुपति हर्षाई ॥
भले गुण तात गुप्त करि राख्यो ❀ ममहितहेततात सोइ भाष्यो ॥
नीक लाग मन अन्धनरेशहि ❀ पुनिपुनिशकुनीकहउपदेशहि ॥
पूँछहु तात विदुर पहँ जाई ❀ परमभक्त गुणनिधि मम भाई ॥
यादवकुल जिमि उद्धव ज्ञानी ❀ तिमि कुरुवंश विदुर सज्ञानी ॥
तब कुरुनाथ विदुर गृह आय ❀ शकुनिदुशासन संग सोहाये ॥
देखि विदुर मन अति अनुरागा ❀ आसन दीन रजायसु मांगा ॥
शकुनी वरणि कहेउ सब साजा ❀ तुमहिं मन्त्र पूँछत कुरुराजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो॰ उनकहँदीन्हेउविभवविधि.तुमजानिकरहुसँभार।
निज सेवा ते कीन वश. केशव जो करतार॥

विदुर बचन कुरुपतिहि न भाये ❋ तुरत पितामह के गृह आये॥
करत प्रणाम धरणि धरि शीशा ❋ देखि गंगसुत दीन्ह अशीश॥
सत्यव्रत के बैठ समीपा ❋ कही कथा कौरव कुलदीपा॥

॥ भीष्म उवाच ॥

जो तुम सुत पूछहुँ मम हीका ❋ करब रहा अस कहब न नीका॥
नृपसुखवचन चहिये नय लीन्हे ❋ राज्यनरहत ताहितजि दीन्हें॥
भल न रिझाउब इन बातन ते ❋ जीतन उनके उतपातन ते॥
जस उन सुभट समर महिजीते ❋ मख कारज कीन्हे मन चीते॥
असमखयहिकुल काहुन कीन्हा ❋ जगउठिगयो याचकन चीन्हा॥
मैरउ न हरि हलकर के मारे ❋ युग करि जरासंध ते फारे॥
को अस सुभट भयो यहि बंशा ❋ जासु करिय बहु बार प्रशंशा॥

दो॰ जे नर मानत जीतिनिज, हारि मानि तिमिलेत।
विदितकरहिंजयअजयतजि.तेहियमभलिशिखदेत॥

तुम अब तात रहेउ चुप साधी ❋ जनिकीजै करि यतन उपाधी॥
यह मत नृप तुम अस ठहरायो ❋ करिसोवत जिमिसिंहजगायो॥
भीष्मवचन कुरुपतिसुनि लीन्हा ❋ नाहिंन कछु प्रतिउत्तर दीन्हा॥
उठि पुनि शकुनी सहित नरेशा ❋ विष सम लगि अमी उपदेशा॥
कीन्ह द्रोण कहँ दण्ड प्रणामा ❋ लहेउ अशीश होइ मन कामा॥
कहि शकुनी सब हेतु सुनावा ❋ द्रोणद्रोण सुत मनहिं न आवा॥

॥ द्रोण उवाच ॥

भरद्वाज सुत कह सुनु राजा ❋ हम तुम्हार वांछितशुभकाजा॥
आयसु जासु स्मापति करई ❋ तासु पराजय समुझि न परई॥
करहु न सो दुर्योधन राजा ❋ जेहि पीछे बड़ होय अकाजा॥

दो॰ गुरुमुख वचन नरेश सुनि, जानी जनकी बात।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शीश नाइ माँगी बिदा, गये जहाँ रविजात ॥
आदर बहुत तरणिसुत कीन्हा ❀ रत्न सिंहासन आसन दीन्हा ॥

॥ कर्ण उवाच ॥

कहेउ रजायसु होइ नरेशा ❀ प्रभु आगमन मोहि अन्देशा ॥
तेहि अवसर कुरुपति रुखपाई ❀ शकुनी विधिवत कथा सुनाई ॥
कह रविसुत नृप सुनु मत मोरा ❀ बोलि लेहु सबपभु किशोरा ॥
यम घट कालनिशा नियराई ❀ कार्त्तिकमास शरद ऋतु पाई ॥
खेलत द्यूत सकल संसारा ❀ तबहि बोलाइहि पांडुकुमारा ॥
लखि नहिं परहि कपट चतुराई ❀ यह सलाह रविसुत मनभाई ॥
दुर्योधन सुनि अति सुखमाना ❀ पुनिपुनि भेंटत करत बखाना ॥

दो० आतुर उठि शकुनी करण, मगकृत वाकबिलास ।
सबलसिंह कह तब गये, गांधारी के पास ॥

इति श्री महाभरते सबलसिंहचौहानभाषाकृते दुर्योधन मंत्रप्रश्नबर्णनंनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

कीन्ह प्रणाम मातुपर भूपति ❀ दैअशीशआसनप्रमुदितअति ॥
कहेउ मनोरथ निज नरनायक ❀ करिय न तात बात बेलायक ॥
दीन्ही ईश तुमहिं ठकुराई ❀ बैठि रहहु निज भवन चुपाई ॥
सुत जगजन्म सफल करिलीजै ❀ बन्धु बिरोध कदापि न कीजै ॥
मातु वचन नृप मनहिं न आये ❀ भानुमती गृह आप सिधाये ॥
शकुनी आदि भवन निज गये ❀ भूप सेज पर शोभित भाये ॥
भानुमंती ते सकल हवाला ❀ कहि पूछेउ कौरवकुल पाला ॥
जोरि युगलकर कौरव रानी ❀ कहेउ नाथ सुनिये मम बानी ॥
करिय न बंधु विरोध बलीते ❀ सजगभये पुनि जाहिंन जीते ॥

दो० नहिं भाये रानी वचन, निजबल कहेउ भुवार ।
होत प्रात आये सभा, हने निशान अपार ॥

आये कुरुपति निज मखशाला ❀ बैठ चित्रसारी नरपाला ॥
चारि बहु कुरुनाथ पठाये ❀ बोलि बोलि सबभाइन लाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आये शकुनी कर्ण दुश्शासन ❀ करि जोहार बैठ निज आसन ॥
सकल बंधु आये तिहिं तीरा ❀ लषण कुँवर अदिकभै भीरा ॥
नाइ नाइ शिर नृपहिं जोहारी ❀ जहँ तहँ सोहत है भट भारी ॥
प्रति पवँरिन दरवानि समाजा ❀ विपुल विभव राजत कुरुराजा ॥
पूछेहु सबहिं भरत कुलकेतू ❀ कहि बिस्तार कहेउ सब हेतू ॥
निज निज मंत्र न राखहु गोई ❀ सब मिलिकरहु करबहममोई ॥
प्रथम मंत्र जो शकुनि बखाना ❀ ठीक नीक सबके मन माना ॥

दो० एकछत्र कीजिये धरणि; दै पाण्डव बनवास ।
सबनकह्योमतठीकयह, कुरुपतिहृदयहुलास ॥

॥ विकर्ण उवाच ॥

विकरण कह्यउ जोरि कर दोऊ ❀ नाथ अयश भोजन जनिहोऊ ॥
जिन कीन्हेउ वश त्रिभुवननाहा ❀ जग दुर्लभ प्रभुताकहँ काहा ॥
रक्षक जासु रमापति राजै ❀ तासुकहिय किहिभांति पराजै ॥
कौरवनाथ कही असि बानी ❀ सुनु मम बचन बंधु सज्ञानी ॥
पाण्डव जीति सकै किन कोई ❀ कहहु शेष कीजै वश सोई ॥
जाके शीश धरी सब धरणी ❀ पाण्डवकी केतिक है करणी ॥
शेष दिनेश जाहि किन जीते ❀ विजय न एक धर्म सुतहीते ॥
सकल कहहि सो वचन प्रमाना ❀ एक कहहि कीजै जनिकाना ॥
अस कुरुनाथ कहेउ मुसक्याई ❀ दुश्शासन बोल्यो शिरनाई ॥

दो० नाथ कीजिये बात यह, सत्य सत्य मत मोर ।
मैं अनुचर करिहौं सकल कुरुपति आयसु तोर ॥

बंधु बचन सुनि नृप सुखपाये ❀ शिल्पकार बहु तुरत बोलाये ॥
जाय सजहु तुम सदसि सुहाई ❀ देखत जाहि चकित सुरराई ॥
तब लगि रचना रचहु सँवारी ❀ द्यूत दिवस जब आव दिवारी ॥
सब थवई नर नाह पठाये ❀ अनुचर साथ विपुल तिनपाये ॥
लोक काष्ठकर सुनिसुनि आवहिं ❀ रचहिं सभानृप आयसु पावहिं ॥
सात मास महँ करि निपुणाई ❀ दीन्ही मनहुँ नवीन बनाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

दुर्योधन नृप सभा निहारी ❋ बैठहिं दिनप्रति होहिं सुखारी ॥
सुन्दर मास दमोदर आवा ❋ कालनिशाथल अति नियरावा ॥
शकुनी करणहिं पूछि नरेशा ❋ पत्र पठाइ दिये प्रति देशा ॥

दो० कालनिशा जागरण हित, आवहु सब भुवराइ।
द्यूत खेल खेलहु इहाँ, करहु सभाभम आइ ॥

खेलब हम अरु धर्म कुमारा ❋ देखहु आय सकल सरदार ॥
दुर्योधन कर आयसु पाई ❋ गजपुर सब आये भुवराई ॥
सुखद शिबिर पाये सब काहू ❋ बहु सत्कार करत नर नाहू ॥
कुरुनन्दन तब विदुर बुलाये ❋ जाहु धर्मपहँ कहि पठवाये ॥
धर्मराज गृह विदुर सिधाये ❋ तुरंत सवार साथ शत धाये ॥
चपल तुरंगम विदुर सवारा ❋ जात चले पाण्डव दरवारा ॥
विदुर आगमन सुनि सुखपाये ❋ आगे बिलन धर्मसुत आये ॥
बहुरि सभा लैगयो भुवारा ❋ सादर सिंहासन बैठारा ॥
पुनि पुनि भूप रजायसु माँगत ❋ प्रीति विलोकि विदुरअनुरागत ॥

॥ विदुर वाच ॥

दो० हृदय बिचारत नखलिखत, कौरवकी मतिपोच।
हाथी हर हटमदगलित,नाहिन शील सँकोच॥

सुनहुतात मम आगम काजा ❋ तुमहिं बोलावत हैं कुरुराजा ॥
अभिवादन करि कहेउ सँदेशा ❋ आये ममगृह विपुल नरेशा ॥
द्यूत हेतु हम साजि उछाहू ❋ सो तुमहूँ आवहु नरनाहू ॥
इहै कालनीशि जागह आई ❋ देखहु मम समाज ममुदाई ॥
अपर नरेश गुप्त सुनु बाता ❋ कुरुपतिके मनहै छल ताता ॥
शकुनी करणहि सहित दुशासन ❋ चाहत तुमकहं देशनिकासन ॥
यहै मनोरथ जीतब द्यूपा ❋ कहूं कहेउ यह भेद न भूपा ॥
तुमहिं परम प्रिय जानि सुनावा ❋ करहु भूप जो बनहि बनावा ॥
कहत भये अस धर्मज राई ❋ सुनहु सचिव भीमादिकभाई ॥
कुरुपति के ईर्षा भै भारी ❋ हमकहं जीतन कहत हंकारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० युद्ध जुवावश होतनाहिं, भ्राता करहु विचार ।
होत तासुजय तात सुनु, जेहि सहायकरतार ॥

यह कुरुपति भलिबात बिचारी ❋ मानत जीति न जानत हारी ॥
बिदुर बिचारि कहो मोहिं पाहीं ❋ कासमुझत कुरुपतिमनमाहीं ॥
बोले विदुर कही भलिबाता ❋ हम यह भेद न जानत ताता ॥
कह्यउ भीम मतिभ्रम कुलराऊ ❋ सो किमिजानहिं भावकुभाऊ ॥
चलहु भूप अब करहु तयारी ❋ खेलिय नृप गृह पंसासारी ॥
उन श्रमकरि सब भूप बुलाये ❋ कौतुक देखन ते नृप आये ॥
जोन नरेश चलौ तुम काली ❋ कुरुपतिहोइ मनोरथ खाली ॥
भीम वचन सबके मन भाये ❋ भूप प्रात गजबाजि सजाये ॥
गये बितान पटल लदि आगे ❋ पटह धेनुमुख बाजन लागे ॥

सो० निकर नगारे बाज, बोले बिरद पयान के ।
गराजि उठे गजराज, हयहींसत घहरात रथ ॥

बिदुर समेत चढ़े नृप हाथी ❋ चलत भये भीमादिक साथी ॥
उठे निशान चले नरनायक ❋ धाये विपुल चहूँदिशि पायक ॥
तुरँगारूढ़ नागिनि करबालहि ❋ गहिकर घेरि चले नरपालहि ॥
कुरुपति सुन्यो धर्मसुत आये ❋ आतुर लषण कुमार पठाये ॥
उलका द्विरद दुशासन साथा ❋ नायो धर्मराज पद माथा ॥
दै अशीश नृप धर्म समोदा ❋ बैठारेउ कुरुपतिसुत गोदा ॥
मुक्तामाल दीन्ह पहिराई ❋ दियो विविध पकवान मिठाई ॥
कीन्ह बिदा कुरुनाथ कुमारा ❋ आप बितान बीच पगुधारा ॥

दो० तेहिअवसर आवत भयो, धर्मराज रनिवास ।
त्यागि त्यागि पटपालकी, भीतरगई अवास ॥

लषण समेत विदुर इत आई ❋ सकलकथा कुरुपतिहि सुनाई ॥
कुरु रनिवास सबन सुधि पाई ❋ मिलन द्रुपदतनया कहँआई ॥
सुनि आवत दुर्योधन रानी ❋ चलींमिलनहितसकलसयानी ॥
ताज नरवाहन सब रनिवासा ❋ मिलीं द्रोपदी सहितहुलासा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करिसबविधि सब कहँ सतकारा ❀ भाति अनेक भई जेवनारा ॥
कुरुपति बन्धुन की सब नारी ❀ निजनिजभवनगवनकृतभारी ॥
चलन चहेउ दुर्योधन रानी ❀ द्रुपदसुता राखेउ गहिपानी ॥
करन धर्मसुत के पहुनाई ❀ भूरि वस्तु कुरुनाथ पठाई ॥
अशन पान करि धर्मज राजा ❀ लीनबोलिद्विज साधुसमाजा ॥
बैठ युधिष्ठिर भाइन लैके ❀ बिप्रन सहित सुआसन दैके ॥
द्रुपदसुता अरु पाण्डवरानी ❀ सोहहिं पटल कपाट सयानी ॥
लग्यो पुराण सुनन तब भूपा ❀ हरिकी कथा रसाल अनूपा

सो० हरिकी कथा रसाल, कहनलगे द्विज विदुषबर ।
सुनत धर्म महिपाल, जहँ तहँ दरवानी खड़े ॥

इहाँ राय दुर्योधन निरयस ❀ संजय ते तब लहतभयो अस ॥
अब तुम जाहु पाण्डवसुत ठाँई ❀ भा शकुनीकि मन्त्र सहाई ॥
कहेउ धर्मसुत ते समुझाई ❀ प्रात द्यूत खेलहि हित जाई ॥
सुनि संजय उठि तुरत सिधाये ❀ आतुर धर्मराय पहँ आये ॥
भूप समीप लीन बैठाई ❀ तब संजय बोलेउ रुखपाई ॥
तुमहि प्रात कुरुनाथ बोलावा ❀ द्यूतकर्म हित साज सजावा ॥
कहेउ भूप संजय सुनु बानी ❀ मिलब प्रातसबकहँहमआनी ॥
सुनि संजय उठि आतुर आये ❀ धर्मबचन कुरुपतिहि सुनाये ॥

दो० सुनहु भूप संजय कह्यो, यह कहँ धर्मज राइ ।
स्वजनसहित कुरुपतिहिमै, प्रात भेंटिहौ आई ॥
सबलसिंह संजय बचन, सुनि कौरवकुलनाथ ।
जात भयो विश्रामथल, युवतीवृन्दन साथ ॥

इति श्रीमहाभारते सभापर्वभाषाकृते तृतीयो ध्यायः ॥ ३ ॥

तेहिं रात्रिकर भया बिहान ❀ पाण्डव गये द्रोण अस्थाना ॥
संग भूमि सुर साधु समाजा ❀ नमत द्रोणपद पाण्डवराजा ॥
परत दण्डवत धर्मज चीन्हा ❀ द्रोण उठाय लाइ उरलीन्हा ॥
पाइ अशीष भेंटि सब भाई ❀ मिले द्रोणनंदन पुनि आई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पूँछी कुशलप्रश्न नृप आछे ❋ तब कुरुकही कुशलसबपाछे ॥
कहहु कुशल सब धर्मकुमारा ❋ बोले बचन भूप श्रुतिसारा ॥
नाथ कुशल सब विधि अनुगामी ❋ तब अशीश मोरे शिर जामी ॥
माँगी बिदा भूप शिर नायो ❋ तुरत पितामह के गृह आयो ॥
परशि चरण नृप द्वै कर जोरा ❋ लखि हरषे मन गंग किशोरा ॥

॥ भीष्म उवाच ॥

दो० पुत्र युधिष्ठिर भद्र तब, होइ सो आशिष दीन्ह ।
करणीकुरुपतिकीसमुझि,सजलनयनकछुकीन्ह ॥

बहेउ युगल तन प्रेमप्रवाहा ❋ आयसु माँगि चले नरनाहा ॥
बुद्धिचक्षु के मन्दिर आये ❋ पितुभ्राता पद शीश नवाये ॥
धर्म आगमन सुनि सुख पाये ❋ परम प्रीति मतिदृग उरलाये ॥
परत चरण लखि पांचों भाई ❋ बरबस भूप लिये उर लाई ॥
रहे भूप तेहिं थल घरि चारी ❋ करत प्रीति मतिदृग बैठारी ॥
उठि धर्मज नाये पद शीशा ❋ विदाकीन नृप दिये अशीशा ॥
चले समाज समेत भुवारा ❋ कुरुपति के मंदिर पगु धारा ॥
आवत देखि धर्म नरनाथा ❋ उठे भूप भट यूथप साथा ॥
मिलि अनेकविधिकरि सतकारा ❋ कुशल पूँछि आसन बैठारा ॥

दो० भेंटि भलीविधि युगलनृप, बहुआदर बहुभाइ ।
धर्मराज देखेउ बहुरि, रविनन्दन गृह आइ ॥

रविसुत सुनेउ धर्मसुत आये ❋ बिप्रसेन कहँ तुरत पठाये ॥
आगे मिलत चरण गहि रहेऊ ❋ चिरंजीव अधरमअरि कहेऊ ॥
सुत समत रविसुत पहँ आये ❋ मिलत परस्पर चक्षु जलछाये ॥
कुशलप्रश्न पूँछत मृदु बानी ❋ गये अँगारमती जहँ रानी ॥
धर्महिं देखि रानि सुख भरेउ ❋ भीमादिक भ्रातन आदरेऊ ॥
लखि सतकार विपुल सुख पाये ❋ आतुर भूप विदुर गृह आये ॥
मिल कृपहिं नृपअतिहितरेरे ❋ आवत भये बहुरि नृप डेरे ॥
खान पान करि पति जगतीके ❋ पुनि सोहैं सिंहासन नीके ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रही तँबूरन की ध्वनि माची ❀ बारबधू बहु वृन्दन नाची ॥
दो० करतहास्यभीमादि सब, लखि अप्सरा ललाम ।
यहिप्रकार आनंदते, बिगत भई निशि याम ॥
तेहि अवसर संजय तहँ आये ❀ लै संदेश कुरुनाथ पठाये ॥
खेलन अक्ष चलहु नृप आजू ❀ तुमहिं बुलावत कौरव राजू ॥
संजय बचन भूप सुनि लीन्हा ❀ नहिं ताकर प्रतिउत्तर दीन्हा ॥
विप्रवृन्द तेहि अवसर आये ❀ प्रथम भूप उठि शीश नवाये ॥
दीन्हें सबन यथोचित आसन ❀ बहुरि आप बैठे सिंहासन ॥
गायक नर्त्तक बदन दुराई ❀ रहे चुपाइ भूप रुख पाई ॥
वेद ऋचा द्विज वृन्दन गाये ❀ सुनि वशप्रेम सभा मनभाये ॥
गावहिं विदुष सकल गुण पूरे ❀ विविध प्रकार बजाइ तँबूरे ॥
होतहि प्रात धर्म के जाये ❀ गंधारी गृह आतुर आये ॥
कीन्ह प्रणाम भूप सब भाई ❀ दीन्ह अशीश मातु सुखदाई ॥
सो० दासी वृंद विशाल, दीन्हे मंच अनेक धरि ।
बैठे धर्मनृपाल, सचिव सखा भाइन सहित ॥
कनक प्रयंक विराजत रानी ❀ जनु सोहत कैलास भवानी ॥
उठि नरनाह रजायसु मांगा ❀ बंदि मातृपद अति अनुरागा ॥
अति बल कुरुनंदन के भाई ❀ सबके भवन धर्मसुत जाई ॥
भेंटत सबहिं गये दिन चारी ❀ आई कालनिशा भयकारी ॥
दीपक श्राद्ध धर्म्मसुत कीन्हा ❀ विपुल द्रव्य महिदेवन दीन्हा ॥
कीन्हेउ श्राद्ध बुद्धिदृग एका ❀ धरि दीन्हें मणिदीप अनेका ॥
गजपुर प्रकटि रही उजियारी ❀ भयो विनाश निशातम भारी ॥
दो० जात भयो ताही समय, सभा भवन कुरुनाथ ।
बिकरण दुश्शासन करण, सौबलशकुनी साथ ॥
दियो किंकरन डारि गलीचा ❀ अद्भुत बसन पर बिचबीचा ॥
बैठि गयो कुरुनायक जाई ❀ आवन लगे नृपति समुदाई ॥
बाह्लीक गंगासुत आये ❀ भूरिश्रवा वृषसेन सुहाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

युद्धामन्यु अलम्बु उलूका ❋ मगहय बंधु चतुर अहिमूका ॥
सोमदत्त शशिबिन्दु सुवेशा ❋ सैंधवपति अरु शल्य नरेशा ॥
आइ गये नृप तीस हजारा ❋ रहत सदा जे कुरु दरबारा ॥
करहिं वकीलति निज महि हेतू ❋ अचल करहिं कौरब कुलकेतू ॥
आये सभा वकील घनेरे ❋ जे हित करत नरेशन केरे ॥
कौरव नायक के शत भाई ❋ आये साथ सुभट समुदाई ॥

सो० तेहि अवसर गे आइ, वेतपाणिगण गुणनिपुण ।
दीन्हि सबन बैठाइ, यथा उचित आसन सबन ॥

दो० द्रोण कृपा भीषम करण आवत लखि कुरुनाथ ।
सहित सभा संभ्रम उठे, बैठारे गहि हाथ ॥

आये बहु मतंग पुरवासी ❋ सचिव महाजन जे गुणरासी ॥
सबहिं नरेश कीन्ह सतकारा ❋ आवत देखे द्रोण कुमारा ॥
करि आदर अनेक नरनाहू ❋ कहेउ धर्मसुत पहँ तुम जाहू ॥
वेतपाणि तब खबरि जतावत ❋ सहित समाज युधिष्ठिर आवत ॥
तब लग धर्म्मराज पगुधारा ❋ जहँ तहँ नृप बहु करत जोहारा ॥
मिले अग्र आतुर दुर्योधन ❋ बैठारे करि विविध प्रबोधन ॥
अति प्रताप कुन्ती के बालक ❋ सोहत सभा प्रजा प्रतिपालक ॥
तेहि अवसर कुरुपति रुखपाये ❋ पंसासारि दुशासन लाये ॥
दीन्ही धरि अजातरिपु आगे ❋ करगहि भीम बिलोकन लागे ॥
सो कुरुपति निज हाथ डसाई ❋ लिये धर्मसुत अक्ष उठाई ॥
फरकेउ अशुभ नयन भुज बांयें ❋ उर थरहरेउ छींक भई बांयें ॥

सो० दिये धर्मसुत डारि, परेउ न पांसा जो कहेउ ।
शकुनीलीन सँभारि, फेंकेउ कहि नहिं पवपरेउ॥

धर्म्मराज पांसा महि मोरे ❋ बोले बचन नयन रतनारे ॥
खेल हमार अहै कुरुपति ते ❋ शकुनीते खेलहिं केहि मतिते ॥
कहहु कुमंत्र लागि श्रुति माहीं ❋ युद्ध जुवां लायक तुम नाहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शकुनी लज्जित निपट सभामा ❀ कुरुपति हृदय रोपतरु जामा ॥
हृदय रोष ऊपर छल कीन्हा ❀ विहँसि राइ प्रतिउत्तर दीन्हा ॥
हम शकुनी कह नृप बैठारा ❀ यामें कछु न अकाज तुम्हारा ॥
शकुनी हारहिं सो हम देहीं ❀ अंगीकार जीति करि लेंही ॥
हम हारे शकुनी के हारे ❀ बड़ि अनुचित नृपज्ञानबिचारे ॥
जो निज हानि भूप तुम जानो ❀ निजाकिंकरतुमहूँ कोउ आनो ॥

सो० हम खेलब तब साथ, होइ नीच सब भाँति जो ।
कह्यो बचन कुरुनाथ, शकुनी तो शिर मोर मम ॥
धरहु भार निज शीश, बैठारहु किन साहनी ॥
हमहिं न ओछि महीश, मैं खेलब नृप सदासिम ॥

दो० धर्मराज सन भीम तब, कहन लगे कर जोरि ।
छल है जुवां न खेलिये, सुनिये बिनती मोरि ॥

चलि नरेश कीजै निज राजू ❀ शकुनी ते खेलिये केहि काजू ॥
अति हित भीमसेन के बानी ❀ युगल बंधु पारथ मनमानी ॥
बर्जत सकल धर्म महाराजहि ❀ भीष्मादिकसब सहितसमाजहि ॥
जनि पाँसा अब धर्म चलावहि ❀ वाम विधाताकछुनहिं भावहि ॥
होनहार को सकत मिटाई ❀ बोलै धर्मराज सुनु भाई ॥
जो यह बोलत कुरुपति बाता ❀ छल बिंहीनलागत मोहिंताता ॥
क्षत्री धर्म काँछ हम काछे ❀ युद्ध जुवाँ पगपर्इ न पाछे ॥
इक दिशि काल प्रचारहि जबहूँ ❀ क्षत्रिय धर्मधरि मुरिय न तबहूँ ॥
तिहि मा फिरि आपुसिकर बीचू ❀ पाछे पाँव धरै सो नीचू ॥

दो० अस कहि धर्म नरेश तब. पांसा लीन उठाय ।
दशा संकटा कठिन है. निपट रही नियराय ॥

मंद वर्ष पतिगन बल भयऊ ❀ रवि कुदृष्टि मूरति थल गयऊ ॥
सब ग्रह अशुभ परे थलही थल ❀ वर्षत वर्ष त्रयोदश निर्बल ॥
कहहिं विदुषजन नृपहिं शरिष्टा ❀ महाराज दिन तुमहिं अरिष्टा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जबअसबचन सुनाहिंकुरुनायक ❋ लागहिंहृदय कठिनजनुसायक ॥
भावीवश नृप मनहिं न भाये ❋ भाषि दाँव निजअक्ष चलाये ॥
पुनि शकुनी कर लीन उठाई ❋ कहेउ करण कुरुपति रुखपाई ॥
धर्मज वृथा बड़ श्रम कीजै ❋ पांसामें कछु होढ बदीजै ॥
काढि कण्ठते गजमणि माला ❋ सो धरि दीन धर्म महिपाला ॥
हरित माल मणि कुरुपति राखी ❋ पाँसा चलन लगे बलभाखी ॥
कपट अक्ष शकुनी सम्भारे ❋ कहत परन सोइबिनहिं बिचारे ॥
होत जीत कुरुनायक केरी ❋ हारे धर्मज वस्तु घनेरी ॥

दो० ताही समय बुलाइयो, निज कुरुनाथ दीवान ।
आयो आयसु मानि सोइ, परम प्रपंच निधान ॥

हारि जीति जो होइ हमारी ❋ सो तुम सकल लिख्योसम्भारी ॥
आयसु दीन्हेउ कुरुपति जोई ❋ लागेउ करन शूद्रपति सोई ॥
रहे जे धर्मकोष गम्भीरा ❋ जीतिलिये मुक्ता मणि हीरा ॥
मोती रतन जवाहिर जेता ❋ मूँगा कंचज कोष समेता ॥
शकुनी कपट अक्ष बल जीते ❋ चित भ्रम धर्मज भे मुखबीते ॥
जीति वस्तु धर्मज गृह राखी ❋ बोलहिं बिकल भूमिपतिसाखी ॥
शकुनी पुनि पुनि अक्ष चलाये ❋ जीत देखि कुरुगण सुखपाये ॥
परहिं न धर्मराज के पांसे ❋ चकित लोग सब देखितमासे ॥
आदि बरादि लोह अरु चांदी ❋ रहेउ न शेष ताम्र कोषादी ॥
द्रव्य जो होती धातु षट् दोई ❋ रहेउ न धर्मज गृह कोई ॥

दो० शकुनी अक्ष सँभारिकै, फिरिलीन्हेउनिजहाथ ।
कपट भेदमहँ दक्षअति, पक्ष धरे कुरुनाथ ॥

अष्टधातु आयुध भयकारे ❋ क्षण महँ सकल धर्मसुत हारे ॥
तरकस कवच धनुष दस्ताना ❋ चर्म त्रिशूल कटार कृपाना ॥
शक्ति कराल अस्त्र सब चीन्हें ❋ पृथक पृथक धरि धर्मज दीन्हें ॥
तजे अक्ष शकुनी छलकारी ❋ यहि बिधि गये धर्म सुत हारी ॥
बाढेउ रोष धर्मसुत अंगा ❋ धरेउ सकल दल नृप चतुरंगा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब शकुनी छल अक्ष चलाये ❋ कोरे काग़ज़ जीति लिखाये ॥
धरेउ धर्म महिषीगण गाई ❋ जीते शकुनी अक्ष चलाई ॥
व्याघ्र कुरंग शृगाल शशादी ❋ कानन नर वानर चित्तादी ॥
पक्षी बहु बिचित्र बहु भाती ❋ रंग रंगके अगणिब जाती ॥
कनक पिंजरा सोहहिं पांती ❋ लखि शोभा भारती भुलाती ॥

दो० नृपआयसु अनुचर सकल, सेवाहिंखगमृगवृन्द ।
प्रथम नामकहि धर्म्मसुत,धरे विगत आनन्द ॥

करते शकुनि अक्ष जब डारै ❋ धर्म हारि सब लोग पुकारे ॥
बाहन रथ छिबिका सुखपाला ❋ उष्ट्र महिषी शकट बिशाला ॥
यक यक भिन्न भिन्न धरिदीन्हें ❋ शकुनी जीति कपट बल लीन्हें ॥
धरेउ नरेश तुरंगम सामा ❋ कहेउ पृथक शाला प्रतिनामा ॥
यहि प्रकार धरि धर्मज बाजी ❋ हारे सकल तुरंगम ताजी ॥
लखि आपन सब भांति बनाऊ ❋ रोम रोम हरषे कुरुराऊ ॥
धर्मज नयन वाम भुज फरके ❋ भयवश अंग धकाधक धरके ॥
रहेउ न चेत भयो मति भंगा ❋ धरेउ धर्मसुत यूथ मतंगा ॥
देश देश जहँ मत्त समाजा ❋ धरेउ दाँव प्रति धर्मज राजा ॥

दो० पांसा शकुनी पाणि गहि, देत भूमि जब डारि ।
करतकुलाहललोगसब, निजनिजदांव पुकारि ॥

हारे धर्मराज गज सर्वा ❋ शकुनी अक्ष लेइ सहगर्वा ॥
रहत सदा जे भूपति संगा ❋ शेष रहे ते सकल मतंगा ॥
पृथक पृथक कहि भुपति नामा ❋ धरेउ नरेश जिनहिं विधिवामा ॥
छूट अक्ष शकुनी कर तेरे ❋ भइ शिर हारि धर्मसुत केरे ॥
चकित लोग सब देखि तमासा ❋ कहैं न परत धर्मसुत पांसा ॥
पुनि पुनि परत दांव कुरुपतिको ❋ को जानै परमेश्वर गतिको ॥
सुनि कर सरुष धर्मसुत पाहीं ❋ बाहुलीक आदिक पछिताहीं ॥
शकुनी पाण्डव सुतहि प्रचारा ❋ लीन जीति भाजन भंडारा ॥
कंचन आदि बड़ित मणिभाजन ❋ हारे सकल धर्म महराजन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सो० बसनकोष गये हारि, रंगरंगके अति सुभग।
दीन्हे पाँसा डारि, शकुनी सांचे कपटके॥
दो० देश देश पाण्डवन, देत भूप अवनीश।
सकलपत्रधरिदांव पर, दीन्हेउधर्म्म महीश॥
शकुनी पाँसा तमाकि चलाये ❋ कुरुपति जयति निशानदिवाये॥
बोलि लिये तब धावन चारी ❋ दिरज दुमत्त दुमुख दुर्द्धारी॥
कहेउ कि हम जात नृप हारी ❋ जे नहिं मानत आनि हमारी॥
एक बिहीन धर्म महिपालहि ❋ जे नडरत सपनेहुं रणकालहि॥
ते अब सहज जीति हम पाये ❋ बिन प्रयास बिधिताप बुझाये॥
पठवहु बोलि सकल नरनाहू ❋ आवहिं नहिं सेनासाजि जाहू॥
देहिं दंड नत आनहु बाँधी ❋ देश देश प्रति करहु उपाधी॥
दंड चतुरगुण दशगुण लेहू ❋ मिलहिं न तेहि ममशासन देहू॥
दुर्योधन कर आयसु पाये ❋ निजनिजकारज सकलसिधाये॥
अश्वारूढ़ अनेक बुलाये ❋ देश देश लिखि पत्र पठाये॥
दो० मिलहु आइ आतूर निपट, त्यागि सकलसँदेह।
देहु दण्ड कूरुभूपतिहि, नत जैहौं यम गेह॥
जहँ कहुँ वीर धीर नृप जाना ❋ साजि विकट दल कीन्हपयाना॥
जिनते वैर भाव अधिकाई ❋ करि उपाय तहँ करैं लराई॥
सुपनेहुँ पांडुसुवन बल पाई ❋ कीन अवज्ञा जेहि सुधि आई॥
करहिं उपाधि तासु सँग नाना ❋ जेहि बिधिहोय तासुअपमाना॥
दण्ड चतुरगण शतगुण लेहीं ❋ लखि बलहीन त्यागि तब देहीं॥
काहुहि बांधि लेहि करि संगा ❋ काहुहि करहिं समरमहँ भंगा॥
यह कुरुपति अतिशय सुखपावा ❋ दुर्दर्शनहिं बहोरि बुलावा॥
तात सजहु तुम दल चतुरंगा ❋ लेहु धीर भट यूथप संगा॥
महिषमती नगरी कहँ जाई ❋ धरि आनहुनिशिचरसमुदाई॥
जहँ शिशुपाल सुवन विख्याता ❋ किये दंडविन शत्रुअजाता॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० दंड बांधि लजिं उचित, कीजै अवसि पयान।
साजि दल दुर्दर्शन चले, बाजन लगे निसान॥
देखि युधिष्ठिर अति दुख पावा ❋ दुर्योधन ते वचन सुनावा॥
नीति नरेशन के असि होई ❋ जो जसदण्ड उचित सो देई॥
हम असदण्डकृत सुत शिशुपाला ❋ तुम पठयेदलअति विकराला॥
जो ह्वै है माहि दीन हमारी ❋ तुम ते ना पाई भिखियारी॥
मखमहँ गयो तासु पितुमारा ❋ किये दण्डबिनुयुगलकुमारा॥
तुमहिं उचितहै यह मतिमंता ❋ लेहु दण्ड जनि वर्ष प्रयंता॥
यह प्रतिपालहु बात हमारी ❋ मनभावहि तसकरहु अगारी॥
तुमहिं नरेश उचित यह बाता ❋ बार बार कह शत्रुअजाता॥
सो० धर्म्मराज के वैन. सुनि बोले कुरुनाथ तब।
हमैं उतियह हैन. करिय दण्डविनचैद्यसुत॥
अवनी प्रति अदण्ड करि देहीं ❋ हम तजि राज्य कमंडलु लेहीं॥
तव मुख कहत बनत यह ❋ अपर न काहू हि सुनत सुहाता॥
धर्मराज सुनि कुरुपति बनी ❋ गे जरि गात तेज बल हानी॥
भीमसेन फरके भुज दण्डा ❋ अधर फरहरत रोष प्रचण्डा॥
पार्थ भयो विलोचन लाला ❋ लखि अनर्थक धर्म भुवाला॥
नाहिं न समय रोष कर भ्राता ❋ किमि समुझै मूरख अज्ञाता॥
परम सुजान चतुर जे वीरा ❋ समय विचारि धरै मन धीरा॥
जाहि अभय हम दीन बसाई ❋ अब तापर दारुण भय भाई॥
सकल हारि कर मोंहि न शोचूं ❋ जस यह परेउ परम संकोचू॥
सो० निजनयननलखिमोहिं;होतदुसहदुखनिपटलखि
तातनतेहिविधिसोहिं,समयजानि धीरज धरहु॥
शपथ हमारहजार,आयशु बिनजानिकरियय्ह।
त्यागहु सकल विचार, तात भये अपमानकर॥
तब बोले सहदेव सभागे ❋ का देखो देखिहो अब आगे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अब ते भूप ख्याल तजि दीजे ❀ रक्षत प्राण भवन मग लीजै ॥
नत दुर्योधन नृप अति नीचू ❀ मारहि सबहिं बुलाय कुमीचू ॥
नहिं सहदेव बचन मन भाये ❀ धर्मराज कर अक्ष उठाये ॥
भीम बहोरि कहेउ सुनु भ्राता ❀ चारियाम यामिनि रहिजाता ॥
याम सपाद दिवस चढ़ि जाई ❀ अब अवसरनृपचालियनहाई ॥
भीम बचन सुनि कह कुरुराजा ❀ शकुनी ते भागे बाड़ि लाजा ॥
प्रथम हीन करि चहत न खेले ❀ तासु संग बड़ि हांस पछेले ॥
कुन्तीसुत सुनि अति दुख पाये ❀ राखि दाँव बड़ अक्ष चलाये ॥

सो० परे न धर्मज अक्ष, शकुनी लीन उठाय कर ।
कपट भेद महँ दक्ष, पुनि पाँसा फेंको चहत ॥

दो० धर्म्मराज निज राज्य सब, धरि दीन्हें यकदाँय ।
जीतिलीन्हशकुनीसकल,विनश्रमकपटउपाय ॥

सो० धरन लगे नरदेव, राज्य सकल चितभ्रम बसी ।
काहि दीन्हेउ सहदेव, चारिवर्ण ब्राह्मण बिना ॥

ब्राह्मण कहहु जाहिं किमि हारे ❀ सब प्रकार शिर मौर हमारे ॥
लखि सहदेव केरि चतुराई ❀ विहँसि रहे कुरुनाथ बुपाई ॥
राज्य जीति कुरुनायक लीन्ही ❀ गहगह जयति दुंदुभी दीन्हीं ॥
कपट वितान शेष जे रहेऊ ❀ सो धरि बहुरि धर्मसुत कहेऊ ॥
सहित समाज धरे सहदेऊ ❀ शकुनी जीते छल बल तेऊ ॥
देश कोष समेत धरि दीन्हा ❀ नकुलजीति कुरुनायकलीन्हा ॥
पारथ धरेउ सहित सब सामा ❀ हय गज वसन कोषधन ग्रामा ॥
कुरुपति जीति धनञ्जय पाये ❀ परमानन्द निशान दिवाये ॥
धरेउ दाँव नहिं रहेउ सँभारा ❀ हारे भूप सकल परिवारा ॥
बहुरि भूप युत सहन भँडारा ❀ हारे भीम सहित परिवारा ॥
हारि गये कुरुनायक जीते ❀ गयो रंक पद भागि महीते ॥
दीन्हें द्विजन याचकन दाना ❀ हयगजभूमिरतनमणि नाना ॥
गजपुर रहेउ न रंक अभागी ❀ केवल धर्म धुरन्धर त्यागी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० चितभ्रमचकितअजातअरि,धरिशरीरनिजदीन्ह।
धर्म धुरन्धर धीरधर, नाहिं बिचार कछुकीन्ह॥

दीन्हें शकुनी अक्ष उलारी ❀ किङ्कर भये धर्मसुत हारी॥
छूटि राज्य पद दास कहाये ❀ भये अचेत रहे शिर नाये॥
पुनिपुनिं शकुनी कहेउ नृपाहीं ❀ जो कछु शेष रहा गृह माहीं॥
उठत ख्याल अब सो धरि दीजे ❀ पाछे पग धरि अयश न लीजे॥
धर्मसुतहिं कुरुनाथ प्रचारा ❀ गूढ गिरा कहि बारहिं बारा॥
तुम नृप बिदित सत्यव्रतधारी ❀ परहिं न पद ये कर्म पछारी॥
अटपति कुरुनन्दन कै बानी ❀ समुझिन परी तर्कछलसानी॥
उर बरि उठी रोष दुखज्वाला ❀ धरेउ भूप तनया पञ्चाला॥
बान्धव प्रियजन अतिदुखभरेऊ ❀ मानहु अन्य महा नद परेऊ॥

सो० शकुनी सबन पुकारि, साखीकरिनरनाहबहु।
दीन्हेउ पाँसा डारि, हारि गये नृप धर्म सुत॥
लखि अनरथ की बात, भीमादिक भाई सकल।
भस्म भये सब गात, मानहु बिनु मारे मरे॥

धर्मराज तनु सुधि बिसराये ❀ करते उठत न अक्ष उठाये॥
भयो शोकवश धर्म्म भुवारा ❀ मनहु कमलबन परेउ तुषारा॥
भीषम विदुर निपट दुख पावा ❀ द्रोण कृपा महि शीश नवावा॥
बाह्लीक उर दुख अधिकाई ❀ गये सभा तजिगृह अकुलाई॥
मन विस्मय वसि द्रोणकुमारा ❀ काधौं कीन चहत करतारा॥
सचिव महाजन गजपुर वासी ❀ विलपतविकलपरीजनु फासी॥
समुझिसमुझिकुरुनाथ सुभाऊ ❀ होत हृदय नहिं धीरज काऊ॥
रविसुत शकुनी उर आनन्दा ❀ मनहुँ उदधि लखिपूरणचन्दा॥

दो० दुश्शासन आदिक अनुज, सकलप्रफुल्लितगात।
रोम रोम कुरुनाथ के, हर्ष न हृदय समात॥

हीर चीर गज बाजि लुटाये ❀ द्विजन दान नाना विधि पाये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भे याचकगण सकल अयाची ❋ बिजय नगारेकी धनि माची ॥
जीती कुरुपति पाण्डव रानी ❋ कहेउ धर्म्मसुत ते यह बानी ॥
अनुचर भयो समेत समाजा ❋ करहु माानिमम आयसु काजा ॥
कह्येउ युधिष्ठर आयसु होई ❋ माथे मानि करब हम सोई ॥
रूख बदन करि कह कुरुराई ❋ द्रुपदसुता अब देहु मंगाई ॥
सदसि बीच सुनि निर्भय बानी ❋ रोषज्वाल अति उर सरसानी ॥
धीर धीरज रिस सा उर मारी ❋ मूर्छित परेउनृपअवनि दुखारी ॥
रह्यउ न चेत कह्यउ कछु नाहीं ❋ अटकि रहे माणि खम्भन माहीं ॥

दो० सबलसिंह धर्मज दशा, लखी न काहू आन ।
देखि अवज्ञा कुरुपतिहि. परम रोष सरसान ॥

इति श्रीमहाभारते सभापर्व भाषाकृते दुर्योधनधर्म पराजय
द्यूतवर्णननामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दो० सुनिये नृप निज बंशके, पुनि चरित सुखदाय ।
बोले दुर्योधन बहुरि, कामी प्रात बुलाय ॥

सूत प्रात कामी जेहि नामा ❋ करत सदा कौरवपति कामी ॥
अति गम्भीर बचन नृप कह्यऊ ❋ धर्म्मराज महराज ने रह्यऊ ॥
भये आजु ते दास हमारे ❋ सब परिवार द्रौपदी हारे ॥
सो न युधिष्ठिर देत मँगाई ❋ द्रुपदसुता तुम आनहु जाई ॥
ल्यावहु सभा द्रुपद की जाता ❋ तुमसबविधि प्रपंचमग ज्ञाता ॥
कहयउ सँदेश गये पति हारी ❋ अब तुम सेवहु सेज हमारी ॥
सुनत प्रातकामी उठि धावा ❋ आतुर धर्म शिबिरकहँ आवा ॥
दुर्योधन कर सकल सँदेशा ❋ कहेउ शील तजि सकल भदेशा ॥
चलहु सभा बोलत कुरुनाथा ❋ नतु धरि लैजैहैं निज हाथा ॥

सो० सुनत सूत मुख बात, भय बस काँपी द्रौपदी ।
विकलभये सबगात, कौरवनाथ सुभावलखि ॥

धरि धीरज कह द्रुपदकुमारी ❋ सुनहु सूतपति बात हमारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कस यह बचन कहा कुरुराई ❀ राजसभा त्रिय केहिबिधिजाई ॥
कह्यो सूत यह आयसु मोहीं ❀ धरि लैजाहुँ सभामहँ तोहीं ॥
सुनत निठुर सारथिमुख बानी ❀ अति सरोष दुर्योधन बानी ॥
कहेउ सुत ते बचन रिसाई ❀ जानिपरत तुम्हरे शिरआई ॥
भूले कहे भूल केहि तेरे ❀ गये बिसरि भुज पाण्डव केरे ॥
समुझि परत यह हेतु विशेखा ❀ चहत नयन तव यमपुर देखा ॥
बोलेउ सुत सुनहु महरानी ❀ आयउँ मैं नृप आयसु मानी ॥
बचन तुम्हार शीश धरि जैहौं ❀ दोष न मैं कुरुपति पहँ पैहौं ॥

दो० सुनत सारथी के बचन, तुरत दीन दुरियाय।
रूख देखि रानी वदन, गयो भागि भयपाय ॥

कहि सन्देश सकलतेहिं दीन्हा ❀ सुनिकुरुनाथक्रोधअतिकीन्हा ॥
दुश्शासनहि बुलाय नरेशा ❀ कह्यउ सरोष सूत सन्देशा ॥
पुनिपुनि कहतरोषदारुण अति ❀ केशपाणि धरि ल्याव घसीटति ॥
यह शठ पाण्डुसुवन भय पाई ❀ सक्यउ न मूढ़द्रौपदी ल्याई ॥
भीम बाहु लखि कम्पित गाता ❀ अजहूँ गहवर कहत न बाता ॥
सबते प्रिय निज जीवन जानी ❀ सकउ मूढ़नहिं धीरज आनी ॥
चलेउ दुशासन आयसु मानी ❀ आयो द्रुपदसुता जहँ रानी ॥
आवत सरुष दुशासन देखी ❀ पञ्चाली भयग्रसित विशेखी ॥
कहेउ दुशासन सरुष रिसाई ❀ चलु बोलत दुर्योधन राई ॥

दो० दुश्शासन के बचनसुनि, द्रुपदसुताअकुलानि ॥
हमरे तुम सहदेवसम, कहतजोरि युगपानि ॥

तात नीति मग देखु बिचारी ❀ कैसे जाय सभा महँ नारी ॥
जबलगि हम शिरतेन अन्हाहीं ❀ पूरुषमुख देखन कहँ नाहीं ॥
मैं रज स्रवत एक पटधारी ❀ सभा गये पति जाय तुम्हारी ॥
तात चलै कर अवसर नाहीं ❀ नतजतिउँ मैं कुरुपति पाहीं ॥
भीष्मादिक क्षत्रिय बहु राजा ❀ जात सभा महत्रिय कहँ लाजा ॥
तात एकान्त बोलि कुरुराई ❀ मैं सबबिधि कहतिउँ समुझाई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गम दिशि ते समुझाइ नरेशा ❀ कहेउ तात अतिभल संदेशा ॥
दुश्शासन तब नैन तरेरे ❀ सुनुगी हारि गये पति तेरे ॥
कसन बिचार कीन तिन गूढ़ा ❀ मोहिसमुझावति मैं जिमिमूढ़ा ॥

दो० चलति न तैं त्रियसदासिकहँ, करतिउतरप्रतिगात ।
जोरियुगलकरद्रौपदी, कहति बिकलअतिबात ॥

सुनहु तात तुम नीति निधाना ❀ सोमगनहिं तुमजोनहिं जाना ॥
तुम कह तात शपथ शत मोरी ❀ कह्यउ तात नहिं राखेउं चोरी ॥
कहहु सत्य तजिँ जीवन पापू ❀ हारे नृप मोहिं प्रथममि आपू ॥
हारे होहिं प्रथम निज रूपा ❀ किंकर भये मिट्यउ पद भूपा ॥
दासन के गृह होहिं न रानी ❀ नीति बिचार समुझ ममबानी ॥
छूटि गये सब नात हमारे ❀ नृप हारे हम जाहिं न हारे ॥
जो मोहिं प्रथम धरेउ नरनाथा ❀ त्यागिलाज चलिहौं तबसाथा ॥
ह्वै किंकरी करौं सब काजू ❀ जो कहिहैं कौरव शिरताजू ॥
बेगि समुझि प्रति उत्तर दीजै ❀ आयसु होय अवसि सोइकीजै ॥

दो० सुनि दुश्शासन वचन अस, भयो नैन तरेरि ।
हारि गयो अज्ञात पति, नीति विचारति चेरि ॥

सो० कहत कटुक दुर्वाद, रोष भरा धावत भयो ।
देखी जात मर्याद, भयवश भागी द्रौपदी ॥

जात पुकारत आरत बानी ❀ देखि दुशासन अति रिसमानी ॥
झपटि केश लीन्हेंउ गहि हाथा ❀ चलेउ घसीटत जहं कुरुनाथा ॥
देखि दशा दासिन के बृन्दा ❀ करहि विलापबिपति परि फन्दा ॥
दुर्योधन कर सब रनिवासू ❀ बिलपत गिरतनयन मगआँसू ॥
परी धर्मसुत शिबिर तरापा ❀ गज पुरसकल शोकवशकांपा ॥
गहेउ दुशासन द्रौपदि बारा ❀ निकसतनाग नगर गलियारा ॥
देखि दशा बिलपहिं पुरवासी ❀ जड़ जंगम खग मृगनृपदासी ॥
जेहि मग निकसत अंधकुमारा ❀ देखि वज्र उरजात दरारा ॥
देखत सब जहँ तहँ बिलखाहीं ❀ होत शोर जेहि मारग माहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० देखिभरोखन महल ते, दासी वृन्द हवाल।
जायजायरनिवासप्रति. विदितकीन्हततकाल।
सुनि असिगति कौरवगण रानी ❋ बिलपहिंसकलहृदयअतिपानी॥
दुर्गति सुनत द्रौपदी केरी ❋ करुणा भवन भवन प्रतिघेरी॥
नाँघात पँवरि पँवरि प्रतिजाता ❋ द्रुपदसुता परवश बिलखाता॥
मोहिं छुड़ाव मातु गन्धारी ❋ बार बार कह द्रुपदकुमारी॥
भीतर दासिन खबरि जनाई ❋ तजि पर्यंक जनानि उठि धाई॥

॥ गान्धारी उवाच ॥

हा पुत्री हा धर्मज प्यारी ❋ बलि बलिजाय मातु गन्धारी॥
छूटे केश उघरि गयो चीरा ❋ बिलपत दासीगण संगभीरा॥
आवत जानि मातु गन्धारी ❋ गयो दुशासन बेगि अगारी॥
जब लगि रानि द्वार पगु दयऊ ❋ राजसभा दुश्शासन गयऊ॥
कोउ मुसक्यात द्रौपदी देखी ❋ करतमूढ़कोट तर्क बिशेखी॥
सो० करतदयाकोउधीर, कोउधिककहदुश्शासनहिं।
तजतनयनकोउनीर,कोउ निन्दतभीमादिकन॥
द्रुपदसुता के केश. गहि खैंचत कुरुपति अनुज।
बैठे सकल नरेश, मध्य सभा तहँ लै गयउ॥
सिंहासन सोहत कुरुराई ❋ जाय समीप दीन ठढिआनी॥
चहुंदिशि चकित चितै पंचाली ❋ राजसभा लखि थरथर हाली॥
लज्जावंश नहि रहेउ संभारा ❋ स्रवत नयन मगते जलधारा॥
अति सुन्दर लखि द्रुपदकिशोरी ❋ कामिन केरी भई मति भोरी॥
कहहिं जासु गृह द्रुपदकिकन्या ❋ धन्य धन्य पाण्डवपति धन्या॥
पुनि पुनि दुश्शासनहिं सराहीं ❋ है बड़िभागि गही जेहिबाहीं॥
धन्य आजु दुर्योधन राई ❋ आयसु जासु मानि धरिआई॥
लोचनलाभ हमहि जेहि दीन्हा ❋ सफलजगतमहँ जीवनकीन्हा॥
धर्मदशालखि कोउ दुखपावहिं ❋ कोऊपछिताइशीशभहिनावहिं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० दुश्शासन कह द्रौपदी, का रोवत बे काज।
होतनआये सदसि महँ,चेरिन को बड लाज॥
भीषम विदुर नाव महि शीशा ❋ द्रोण कृपा उर शोच्च सरीशा॥
सकल धर्मशीलन दुख पावा ❋ नीचन के उर आनँद छावा॥
शकुनी करण अनन्द समीछे ❋ दुर्योधन करि नयन तिरीछे॥
दुशासन ते कहेउ प्रचारी ❋ वसनहीन करु द्रुपदकुमारी॥
लै बैठारि देहि मम जानू ❋ बांधव वेगि कहा मम मानू॥
उठे दुशाशन आयसु मानी ❋ विकरणकहतजोरि युगपानी॥
तब मुख बचन न सोहत ऐसे ❋ कुरुकुलतिलक कहत तुमजैसे॥
बृद्धद्रोण गुरु भीषम आगे ❋ तुम नृपकहत लाजभय त्यागे॥
देश देशके भूपति राजत ❋ तुमदुर्वचन कहतनहिंलाजत॥
ज्येष्ठ बन्धुके जो त्रिय होई ❋ मातु समान कहत श्रुतिसोई॥
दो० क्षमा तासु उतारि पति, तुम डारी कुरुराज।
अबअसकहत कि जो सुने,होत नीचउरलाज॥
पूरण शशिमहं कीरति तेरी ❋ जनि महीश डारहु करि थोरी॥
मानि विनय मम प्रभु अनुरागी ❋ देहु द्रुपदतनया अब त्यागी॥
धर्मराज सँग बिन अपराधू ❋ कीन नाथ तुम कर्म असाधू॥
विकरण वचन धर्मनय साने ❋ सुनि सरोष रविनंद रिसाने॥

॥ कर्ण उवाच ॥

सुनु विकर्ण तब तनु शिशुताई ❋ बृद्ध बचन नहिं शोभा पाई॥
छोटे वदन कहेउ बडि बाता ❋ सुनिकिमिसकेमहिप गरुज्ञाता॥
है यह सभा सकल गुण खानी ❋ तुमनिजजानिअधिकस ज्ञानी॥
गाल फुलाय बचन कहिदीन्हा ❋ चाहत है सबको लघु कीन्हा॥
वयसे न भूपनके मत योगू ❋ जानत तुम न हँसत सबलोगू॥
दो०खेलत सबमिलि बालकन, जाय सराशन बान।
सीखदेहु जनि भुपतिहि,हौ तुम शिशु अज्ञान॥
बालक इव गृह भोजन करहू ❋ निजमनअहमित नेकनधरहू॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दुर्योधन आयसु शिर धरहू ❀ गृह कारज सबसादर करहू ॥
कह विकर्ण नृप सुनु मत जीको ❀ अब नहिहोनहारकछु नीको ॥
जस नृप तस मंत्री बुधवाना ❀ अस कहि गृहनिजकीन्हपयाना॥
बहुरि सकोप कहत कुरुराजा ❀ द्रुपदसुता ममदेख समाजा ॥
नयनहीन सब सूझत नाहीं ❀ बोलेउ तोहिं सभामहँ ताहीं ॥
है यह सभा अन्ध नृप केरी ❀ केहि प्रकार सूझै री चेरी ॥
है हम सुवन अन्ध नृपतीके ❀ भीम सहितुम जानत नीके ॥
अन्ध तुम्हैं किमि देखै कोऊ ❀ देखहु सबहिं भीम तुम दोऊ ॥

दो० देखन हित अन्धीसभा, तुम कहँ लीन्ह बुलाय।
कीन्हेउ ममअपमानजिमि, तुमअपनेगृहपाय॥

अब द्रौपदी वसन निज त्यागू ❀ बैठि जांघ मम कुरु अनुरागू ॥
अन्धी सभा न देखै कोई ❀ जानब गति हमही तुम दोई ॥
आये चतुर पांच पति तेरे ❀ भेबिन नयन सभा मिलि मेरे ॥
सूझत तुम समेत बहु भीमहिं ❀ करहिं न रोष बृकोदर जीमहिं ॥
बहुरि विलोकि दुश्शाशन ओरा ❀ मानत तैं नहिं आयसु मोरा ॥
वेगि द्रुपदतनया नँगियाई ❀ लै मम जानु देहु बैठाई ॥
भूप वचन सुनि भीम कराला ❀ निकसत रोमरोम प्रतिज्वाला ॥
लपट नयनमग प्रकट विलोकी ❀ लीनगदा रिस रहत न रोकी ॥
बान्धव सकल भीम रुख पाई ❀ भये सरोष सुभट समुदाई ॥
पारथ पाणिगही असि मूठी ❀ कह नृप होति सत्यमम झूठी ॥

सो० धर्मजबदननिहारि, विकलसकल रिसमारिउर।
दीनगदामहिडारि, भीम विकल पारथअतिहि॥

रहे पाण्डुसुत सब शिरनाई ❀ वारिज नयन वारि सरसाई ॥
चलेउ दुशासनरोष रिसाता ❀ कहकुरुमतिहि विदुर अमिबाता
बचन हमार भूप सुन लीजै ❀ पीछे अम्बर हरण करीजै ॥
प्रथम कथा शुभ सुनहु नरेशा ❀ अमिशर्म्म ब्राह्मण इक देशा ॥
राक्षस इक प्रहर्ष अति भारी ❀ कीन युगल मिलि मित्राचारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इक इक पुत्र दुहुन के होई ❋ निर्भय सकल भाँति भय सोई ॥
गये काल भे युगल सयाने ❋ मित्राचार परस्पर माने ॥
गये अहेर दोउ इकदाँई ❋ फिरत विपिन कन्या इक पाई ॥

दो० राक्षससुत तो यह कही, कन्या को हम लेब ।
विप्र कहै दे मित्र मोहिं, परी दुहुन अवरेब ॥

युगल परस्पर शोर मचावा ❋ पुनि यह मंत्र ठीक ठहरावा ॥
जाकहँ चाहै अब यह कन्या ❋ पावै सो वह त्रिभुवन धन्या ॥
झगरत गे कन्या के पासा ❋ करहु दया जापर विश्वासा ॥
जासु हृदय डारहु जयमाला ❋ पावै सोइ कहु बचन रसाला ॥
कन्या कहेउ सुनौ मतिमन्ता ❋ जो शरिष्ठ सोई मम कन्ता ॥
राक्षस कहेउ कि मैं गुणवाना ❋ कह द्विजमैं सबविधि सज्ञाना ॥
झगरत अग्निशर्म्म पहँ आये ❋ कहेउ वाद तिन पद शिरनाये ॥
दुइमा को शरिष्ठ को नामी ❋ भाषहु सत्य बचन मम स्वामी ॥

दो० पुनि पुनि बिनती करतहौं, कहिये करुणाऐन ।
मित्र पुत्र निज पुत्र ते, तब बोले द्विज बैन ॥

हमते वाद बिनाश न होऊ ❋ जाउ प्रहर्ष तीर तुम दोऊ ॥
चले विवाद करत स्वर ऊँचे ❋ तुरत जाय तेहि भवन पहूँचे ॥
तब प्रहर्ष पूँछत मनलाई ❋ का झगरत हो तुम दोउ भाई ॥
तब वे कहन लगे निज स्वारथ ❋ ज्यहिप्रकार जसभयो यथारथ ॥
तुम प्रहर्ष करि कहौ बिचारा ❋ दुइमा कौन शरिष्ठ कुमारा ॥
राक्षस सुनत मौन होइ रहेऊ ❋ तब विचारि दूनोंसन कहेऊ ॥
कश्यप ऋषिहि पूँछि मैं आवौं ❋ वेगि यथारथ तुम्हैं सुनावौं ॥
उठि प्रहर्ष ऋषि के गृह जाई ❋ कीन्ह प्रणाम चरण शिरनाई ॥

दो० कीन्ह बिनय कर जोरिकर, बैठेउ आयसु पाय ।
ऋषि पूछेउ आये कहाँ, कहिये राक्षसराय ॥

ऋषै बचन सुनि प्रीति समेता ❋ लाग्यो कहन प्रहर्ष सचेता ॥
अग्निशर्म सुत औ सुत मोरा ❋ कीन विपिनमहँ झगराझोरा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

झगरत आये दौ मम भवनहिं ❋ कौन श्रेष्ठ कहौ हम गवनहिं ॥
कह कश्यप सुनु राक्षस राऊ ❋ झूठवचन तुम कहेउ न काऊ ॥
जो सुत होय तुम्हारे श्रेष्ठा ❋ तौ अब सत्य कहौ मतिनिष्ठा ॥
होय श्रेष्ठ जो विप्र कुमारा ❋ कहेउ असत्य कहेउजनिबाता ॥
कहे असत्य अधोगति जाई ❋ लक्षै वर्ष सो नरक रहाई ॥
ऐसे थल यह उचित न ताता ❋ भूलि असत्य कहेउ जनिबाता ॥

दो०कश्यपऋषिहिप्रणामकरि, राक्षसनिजघरजाय ।
दुनहुन के आगे बचन, कहन लाग समुझाय ॥

कह राक्षस सुनु ब्राह्मण पूजा ❋ तब पितु हमते सरस बहूता ॥
मातु तोरि है वड़ी सयानी ❋ हमरे सुततें तुम बड़े ज्ञानी ॥
सत्य कहा राक्षस जिउ बधिका ❋ दुइसै वर्ष आयु मैं अधिका ॥
अन्त न कंठ परी यम फाँसी ❋ भाकमलापति नगर निवासी ॥
सत्य असत्य केर अस बीचू ❋ होत कृषी जस सींच असींचू ॥
बीचु अनीति नीति कर भारी ❋ जनुरजनी अँधियारि उजियारी ॥
कही बिदुर नृप नीकि न रचना ❋ जनि बोलहु अधर्म असबचना ॥
नागफाँस कर नाहि अंदेशा ❋ जो तुम करत अधर्म नरेशा ॥
सुनिअसबचनबिदुर दिशिताकी ❋ भृकुटिकीनकुरुपति रिस बाँकी ॥

दो०भृकुटि भंग कुरुनाथ लखि, विदुर रहे चुपसाधि ।
थरथर कम्पति द्रौपदी, दृष्टि बिलोकि उपाधी ॥

सो०परी विपति वारीश, लखि दरकत उर वज्रको ।
धीर न धरत महीश, निजसमुझावत द्रौपदी ॥

कपट द्यूत शकुनीते हारे ❋ विधियहगतिलिखिदीनलिलारे ॥
अहह देव दिवसन कर फेरू ❋ गिरिते रज रज होत सुमेरू ॥
सभामध्य पति पाच हमारे ❋ महावीर रण टरत न टारे ॥
मोहि उघारि होन कब देहैं ❋ उठिके भीम अवासि सुधि लेहैं ॥
बहुरि सभा यहि भूप अनेका ❋ समरथ शूर एकते एका ॥
जाननहार धर्म्मपथ केरा ❋ क्षत्रिय भीषम आदि घनेरा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यदपि न भूपहि कहिनि निहोरी ❋ तौ परन्तु लेहैं सुधि मोरी ॥
गंगासुत चुपाइ किमि रहिहैं ❋ आखिर उठि राजा सन कहिहैं ॥
दो० अनुचित होई न पाइहै, लेहैं मोहि छुड़ाइ ।
आजु पितामह ते सरिस, धीर बीर को आइ ॥
हैं गुरु द्रोण सभा महँ सोई ❋ जिनते अस्त्र सिखे सब कोई ॥
भारद्वाजतनय रण शूरा ❋ लेहैं मोहि छुड़ाय जरूरा ॥
इत उत बहु भरोस ठहरावति ❋ पुनि निजमनकहँसमुझावति ॥
बहुरि कहत कुरुनाथ रिसाई ❋ खैंचत चीर दुशासन भाई ॥
लेहु बसन सब आतुर छोरी ❋ गहि बैठारु जांघ पर मोरी ॥
होई मोरि रुचि पूरण भ्राता ❋ आलिंगन करिहु पद किजाता ॥
आतिशय विकल द्रौपदी कांपी ❋ लेत राहु चन्द्रहि जिमि झांपी ॥
इत उत दिशा दुखित मन हेरी ❋ केहरि मनो भृगी बन घेरी ॥
भीषम द्रोण कर्ण दिशि चितई ❋ निजपति देखि आश सबबितई ॥
दो० सकलसभा दिशि देखि पुनि, चितई पांडवओर ।
भीमहिदेखिसरोषपुनि, बरज्यो धर्म्म किशोर ॥
बहुरि कह्यो कुरुनाथ प्रचारी ❋ उठ्यो दुशासन रिसकरि भारी ॥
आतुर कहत बचन कटु धावा ❋ मनहु कृतांत राज चलि आवा ॥
एक पाणि लीन्हे गहि केशा ❋ यक कर बसन गहे यम भेशा ॥
सकल सभाजन त्रियगति हेरी ❋ आम आम गजनगर बसेरी ॥
बहु अवनीपति जे जन साधू ❋ बूड़त बारिधि शोक अगाधू ॥
धीरन के मुख जोवत अहइ ❋ चहतपिता महअब कछु कहई ॥
निश्चय द्रोण चुपाई न रहिहै ❋ अबशि बचन गंगासुत कहिहैं ॥
कृपाचार्य गति पति खलिबामा ❋ रहिहैं किमि चुप अश्वत्थामा ॥
यहिबिधि निजमन करतभरोसा ❋ शील धीर जे मारग दोसा ॥
सो० जे शठ कायर कूर, मानभंग सबबिधि चहत ॥
सकलसभा भरिपूर, करत मनोथ पृथकपुनि ॥
पकरिसि वसन दुशासन जाई ❋ सरुष प्रचारत पुनि कुरुराई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri: Funding by IKS.

बीर धुरीण रहे चुप साधी ❋ श्रीगत भये सकल अपराधी ॥
लखि दुर्दशा द्रुपदतनयाकी ❋ शोक ज्वाल पाण्डव उरबाकी ॥
वारिज नयन बही जलधारा ❋ रहे नाई शिर पाण्डु कुमारा ॥
निपट बिकल लखिपाण्डुकिशोरा ❋ नहिं बिदरतउर कठिन कठोरा ॥
तदपि दुष्ट असतेहि थल माही ❋ जे हरषत मन धरषत नाही ॥
दुर्योधन कर प्रबल प्रतापा ❋ तपत मनहु रवि द्वादश तापा ॥
अति करुणा सबके उर होई ❋ प्रतिउत्तर करि सकत न कोई ॥
भीष्म द्रोण कुरुविभव विलोकी ❋ रहे चुपाई सके नहिं रोकी ॥

दो० तीक्षणभ्रुकुटिसरोषलखि, अतिकुरुनाथभुवार ।
सकलसभाभयवशविकल, कांपहिंबारहिंबार ॥

कृपाचार्य उर शोच अपारा ❋ कहिन सकैं कछु द्रोणकुमारा ॥
कोउ शिरनाय रहे सकुचाई ❋ अश्रुपात कोउ कृत दुखदाई ॥
जे नृप धीर वीर बलकारी ❋ जानि सत्यलखिहोहिं दुखारी ॥
सकहिं न कछु कहिकाहुहिकाउ ❋ दुर्योधनकर समुझि सुभाऊ ॥
बारबार कह कौरव राजू ❋ वेगि दुशासन करु यहकाजू ॥
खैंचन लाग वसन गहि पानी ❋ द्रुपद सुता तबअतिअकुलानी ॥
तनया विकल द्रुपद नृप केरी ❋ छूटी आस सकल दिशि हेरी ॥
काल रूप लखि कौरवनाथा ❋ जाय रह्योचित जहँयदुनाथा ॥
राधारमण बचन सुनु मेरे ❋ कीन विलाप कलाप करोरे ॥
बूड़त विरह सिन्धु रघुनाथा ❋ जिमि गहि लीनभरतकरहाथा ॥
जिमि कपीश सुग्रीव उबारा ❋ राखि विभीषण रावण मारा ॥
ध्रुवहि निरादर किय पितु माता ❋ ताकहँ नाथ भयो तुम त्राता ॥
तुम बिन नाथ सुनै को मेरी ❋ करिविलाप दै हांक करेरी ॥

दो० भुजउठायहरिनगरदिशि, पाहिपाहिपुनिटेरि ।
कृष्ण कृष्ण राधारमण, दीन्हीं हांक करेरि ॥

दैत्य दलन प्रहलाद उबारण ❋ लागहु ममगोहारि जगतारण ॥
मम अनाथ के नाथ गोसांई ❋ सो न होइ लज्जा जेहि जाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुम बिन आरत पक्ष गहीको ❀ राखु स्मापति लाज गईको ॥
पाण्डव त्यागी सुद्धि हमारी ❀ तुम जानि त्यागहु गिरवरधारी ॥
बैठे सभा सकल अघकारी ❀ कोउ न चहत छुडावन नारी ॥
परवश लाज जात हरि मेरी ❀ त्रिभुवन नाथ शरण मैं तेरी ॥
बीते काल दयानिधि ऐहौ ❀ मोहिं उघारि देखि पछितैहौ ॥
ग्राह ग्रसे गज कीन पुकारा ❀ तब तुम नाथ न लायहुबारा ॥

दो० गोकुल बूडत घेरि घन. जिमि रक्षा तुमकीन्ह ।
नाश्योमातलिसुतमद, गिरिवरकरगहिलीन्ह ॥

ते तुम नाथ कहां गिरधारी ❀ यह पापी खैंचत मम सारी ।
खैंचि वसन ममकरिहि उघारी ❀ का करिहौ तब आय खरारी ॥
गये लाज प्रभु विरद न हरिहैं ❀ तुमहिं कृपालु कहाकोकहिहैं ॥
सरबस हरेउ बचेउ इक बसना ❀ सोऊ हरत बचावत कसना ॥
दवा जरत जिमि गोपन राखा ❀ कौरव अग्नि दीन्ह गृहलाखा ॥
तब तुमही यदुनाथ उबारा ❀ दीन दयालु कहा यहि बारा ॥
दरिद दहि द्विजके दुख काटे ❀ धनपति सरिस सदन धनपाटे ॥
जिमि गुरुसुत आनेउ यदुराई ❀ राखिलेहु मम लाज न जाई ॥

दो० श्रीपतिदीनदयाल अब, तुम पति राखहु मोरि ।
फिरि हरि कैसी करहुगे, जब पति लैहैं छोरि ॥

बीचसभा प्रभु मोहि नँगियावत ❀ करुणा सिन्धु धाय किनआवत ॥
द्रुपदसुता लखि बिकल पुकारा ❀ प्रणतपाल हरि बिदर सँभारा ॥
द्वारावति तजि नागे पायन ❀ आतुर आई गये नारायन ॥
प्रथम पाहि मुखते जब काढ़ा ❀ प्रगटे बसन रूप पट बाढ़ा ॥
वसन रूप धरि वसन समाने ❀ धीरज द्रुपद सुता उर आने ॥
खैंचत प्रथम जोरि भरि जेता ❀ निकस्योवसन वसन मगतेता ॥
देखि चरित्र क्रोध ते पागा ❀ परम रोष करि खैंचन लागा ॥
खैंचत वसन मूढ़ यहि भाती ❀ मथ सागर सुरअसुर किपांती ॥
कढ़नी मनहु शेष भय सागी ❀ दुश्शासन जनु देव सुरारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

खैंचत सरुष दुशासन सारी ❀ निजतनु पुरवत बसन खरारी ॥
सो० देखि बसन के बाढि, भक्तिप्रेम बढ द्रौपदी ।
भई रोमावलि ठाढि, विनयकरतगदगदगिरा ॥
गयो शोच मन भयो अनन्दा ❀ जनु चकोर पायो निशिचन्दा ॥
कृष्णचन्द्र मैं तव बलिहारी ❀ जय गोपाल गोवर्द्धन धारी ॥
जय शारँगधर जय असुरारी ❀ जय मन मोहन कुंजविहारी ॥
जय मुकुन्द माधव घनश्यामा ❀ कमलनयन शोभा शतकामा ॥
पीताम्बरधर धरणी पालक ❀ जय वसुदेव देवकी बालक ॥
जय तव कर सरोज यदुराया ❀ कीन्हों जेहि कर मोपर दाया ॥
जय पद सरसिज ममहित धाये ❀ दुश्शासन कर दर्प नशाये ॥
जय मधुसूदन यदुपति स्वामी ❀ जयत्रिलोकपति अन्तर्य्यामी ॥
जय अघारि जयजय अविकारी ❀ जय जय जय केशी कंसारी ॥
जय मम लज्जा राखनहारे ❀ जयति यशोदानन्द दुलारे ॥
दो० जय कृपालुकरुणायतन, जयतिकोशलानन्द ।
मोरपक्ष धर मुरलिधर, जय जय आनदकन्द ॥
जयति सच्चिदा नन्द हरि, ईश्वर जगदाधार ।
राखी लज्जा जाति निज,जय मम नाथ उदार ॥
निर्भय हर्ष विबश पंचाली ❀ कहिचिरघार तियजैवनमाली ॥
जयजयकार पूरि पुनि रहऊ ❀ दुष्टन बिना सबन जयकहेऊ ॥
देवन देखि सुमन झर कीन्ही ❀ गहगह गगन दुन्दुभी दीन्ही ॥
बाढ़त देखि वसन चहु फेग ❀ मन थिर भयो पाण्डवन केरा ॥
हरि प्रताप दिनकर सम भयऊ ❀ कौरव सिसुकिमुद सम भयउ ॥
हरिहि पुकारत द्रुपद कुमारी ❀ खैंचत सरुष दुशासन सारी ॥
करत जोर बहु भाति दरेरा ❀ बाढ़त वसन सकल चहु फेरा ॥
अरुण श्याम सित रंग हेरे ❀ भांति भाति के वसन घनेरे ॥
पीत रंग के बहुत किनारे ❀ पीताम्बर के ओढन हारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० मिश्रित रंग के पट बढ़े. थके दुशासन हाथ ।
देवन जे देखे नहीं, ते पुरये यदुनाथ ॥
आपु वसन तनु धरि भगवाना ❋ बढ़ये बिविध रंग परिधानी ॥
द्रुपदी चष पुतरी प्रभु कीन्ही ❋ विरदाबलि मूरित करि दीन्हीं ॥
खैंचत चीर दुशासन हारा ❋ अम्बर मनहुँ देवसरि धारा ॥
द्रुपदसुता के अम्बर तेरे ❋ हारे भुजा दुशासन केरे ॥
निकसे पट बिचित्र बहुतेरे ❋ नाहिं समात मन्दिर नृप केरे ॥
दशसहस्र गज बल थकि गयऊ ❋ दश गज अम्बर हरणनभयऊ ॥
निपट होत लखि अनरथ बाता ❋ नाना भाँति होत उतपाता ॥
शिवा यज्ञशाला में बोली ❋ ढहे भवन धरणी जब डोली ॥
अशुभ शब्द कृत रासभ श्वाना ❋ मेघन विना व्योम घहराना ॥
सो० हीसे सकल तुरंग, हयशाला महँ बार इक ।
चिघरे मत्त मतंग, निजनिजआश्रमविकलसब ॥
भयो दाह दिग करत कागा ❋ तदपिनबसन दुशासन त्यागा ॥
बढति बिलोकि तजै पुनि धरई ❋ अनत गहै पुनि सो परिहरई ॥
बिदुर देखि भा अनरथ भारी ❋ गे ज्यहिंगृह विलपति गंधारी ॥
कहेउ रिसाइ मन्त्र सुनु मोहीं ❋ होत अकाज न सुझत तोहीं ॥
कृष्ण आजु द्रुपदी तनु व्यापे ❋ वसन बढ़ाई विरद अस्थापे ॥
नहिं होइहि सुत धर्म अकाजू ❋ जिनके यदुनन्दन महराजू ॥
सदा दास कर करत सहाई ❋ शरणतारत भंजन यदुराई ॥
जे हरि हन्यो निशाचर राजू ❋ सहिदुख निजभक्तन के काजू ॥
सो जानी सब बात तुम्हारी ❋ नहिं अज्ञान ग्रसित गंधारी ॥
दो० जानि विकलप्रहलादजिमि.जोहरिभक्तअनन्य ।
सहि श्रम निकस्यो खम्भते,कश्यप हन्यो हिरन्य॥
सो० अब अनेक उत्पात. देखि परत अनरथ निपट ।
होन चहत सोइ बात, तुब तप बलते थपिरहो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri. Funding by IKS.

जबते रानि कहा सुनु मोरा ❀ भाग्य अभाग्य होत अबतोरा ॥
वसन छुड़ाव दुशासन कर सन ❀ चलन चहत नतु चक्रसुदर्शन ॥
गंधारी सुनि अति दुख पाई ❀ बिलपत विदुर संग उठिधाई ॥
मतिदृग सुत खैंचत इत चीरा ❀ थक्यो पराक्रम भयो अधीरा ॥
भुज थकि गयो बढतनहिंजाना ❀ वसनत्यागिमनअतिखिसियाना॥
निज आसन बैठेउ शिरनाई ❀ मनहुँ रंक निधि पाइ गंवाई ॥
दुर्योधन नृप बैठ उदासा ❀ मानहुँ भयो राजपद नासा ॥
श्रीहत भयो सकल मद भंगा ❀ निपट विकलअपमानतरंगा ॥
सुनत शोर मारग श्रुति केरे ❀ पूँछत मतिदृग संजय तेरे ॥
होत कहाँ यह हाहाकारा ❀ संजय कहै सहित बिस्तारा ॥

सो० सुनतदशा दुख पाय, संजय करगहि पाणिनिज ।
सभाविलोक्यो जाय, कुरुपतिकीअनरथकथा ॥

मध्य सभा कंचन सिंहासन ❀ सोधृतराष्ट्रनृपतिकर आसन ॥
बैठि गये तहँ मतिदृग जाई ❀ परम रोष नहिं बरणि सिराई ॥
दुश्शासन कहँ नृप दुरिआई ❀ शठ कुरुकुल तै दीन लजाई ॥
दुर्योधन पर क्रोध अपारा ❀ कहि कटु बार बार धिक्कारा ॥
त्यहि अवसर आई गंधारी ❀ कहि दुर्वचन कीन्ह रिसभारी ॥
कीन्हो दुष्ट कर्म तुम नीचू ❀ परिहौ अधर्म नरक के बीचू ॥
दीन्हेउ सरुष शाप गंधारी ❀ कह मतिदृग सुनु द्रुपदकुमारी ॥
पुत्र बधू जे सकल हमारी ❀ मनक्रमबचनअधिक तुम प्यारी॥
तब संग शठन कीन्ह अपराधा ❀ भो मम वृद्धापन महँ बाधा ॥

दो० पुत्रि तोंहि मम सप्त शत, मनवांछित वरमाँगु ।
दुष्टन कीन कुकर्म सो, ममदिशि तें सब त्यागु ॥

अब तुम मम निहोर शिर मानी ❀ करहु क्षमा अपराध भवानी ॥
बेगि माँगु पुत्री बरदाना ❀ तुमसममोंहिनप्रियकोउ आना ॥
धर्मराज कुरुपति प्रिय मोरे ❀ नाहि न सुता तदपि समतोरे ॥
बार बार नृप कहँ वर माँगू ❀ द्रुपदसुता मन सुनि अनुरागू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बोली बचन जोरि युग पाणी ❋ सुनहु नरेश सत्य मम बाणी ॥
मोहिं समेत सकल परिवारा ❋ दासभाव मे पांडुकुमारा ॥
सो नरेश माँगे मोहिं दीजै ❋ दासभाव बिन सकल करीजै ॥
वाहन अस्त्र देहु सब काहू ❋ कीजै वेगि बिदा नरनाहू ॥
मतिद्दग कहेउ तोहिं मैं दीन्हा ❋ मागु अपर कछु आयसु कीन्हा ॥

दो०-सुनहु पिता कह द्रौपदी, मन वांछित बरदान ।
मैं पायों तुम्हारी कृपा, नाथ सप्त नृप आन ॥

तव प्रसाद अब कुरु कुलकेतू ❋ फिरि होइहै सुख सम्पति सेतू ॥
उचित विप्र मांगे वर चारी ❋ कहत वेद अस नीति बिचारी ॥
क्षत्री तीनि वैश्य कुल दोई ❋ माँगै एक शूद्र सुत होई ॥
मैं तो पुत्र वधू क्षत्रानी ❋ लीन्हे माँगि तीनि वर जानी ॥
अब नहिं पिता मनोथर मोरा ❋ नरनायक मम मानि निहोरा ॥
बुद्धिचक्षु चर चतुर बुलाये ❋ सबके वाहन अस्त्र दिबाये ॥
चढ़ि वाहन गहि आयुध हाथा ❋ चले अवास धर्म्म नरनाथा ॥
परसे चरण बुद्धिद्दग केरे ❋ बोले भूप युधिष्ठिर तेरे ॥
लज्जा विवश बचन सुनि तोरा ❋ हे सुत होत विकल मन मोरा ॥

सो०-बचन तोर सुनि तात, लाज्जित अवनि समात है ।
माह अछत यह बात, पुत्र परम अनुचित भई ॥

होइ तुम्हार परम कल्याणा ❋ सुनु अशीश मम बचन प्रमाणा ॥
जीति तुम्हारि राज्य सब लीन्ही ❋ दुर्योधन अनीति बाड़ि कीन्ही ॥
सो मैं तुमहिं देत निज पानी ❋ लीजै सुत प्रसाद मम मानी ॥
मतिद्दग आयसु शिरधरि लीन्हा ❋ शीश नवाय गमन गृह कीन्हा ॥
प्रथम नरेश कीन्ह जहँ डेरा ❋ दीन्ह त्यागि तेहि ओर न हेरा ॥
पटल वितान सेन चतुरंगा ❋ चपल तुरंगम मत्त मतंगा ॥
सकल धर्म्मनन्दन तजि दीन्हा ❋ सहितकुटुम्बभवन मग लीन्हा ॥
मिले विदुर मारग महँ आई ❋ जात भये निज भवन लिवाई ॥
रानिन सहित नृपहि अन्हवाये ❋ खान पान विश्राम कराये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

दो०-ह्यां उठि कुरुपति सभाते, गे सब निजनिजधाम ॥
खान पान असनान करि, शेष दिवस रह याम ॥
द्रोण कर्ण भीषम शकुनी, निजनिजगृह मगलीन ।
खानपान विश्राम पुनि, सब भूपालन कीन ॥
प्रथमकरो असनान पुनि, भोजनकरि कुरुनाथ ।
सबलसिंह आयो सभा, दुरद दुशासन साथ ॥

इति श्री महाभारते सबलासहभाषाकृते सभापर्वाणि द्रौपदी चीरवहनोनाम चतुर्थमोऽध्याय ॥ ५ ॥

दो०-सुन्दर कनक मयंक पर, शयन कर्यो कुरुराय ।
विदुर भवन हैं धर्मसुत, कही चरवरन आय ॥
सुनि नरेश मन अति दुख पाये ❋ सौबल शकुनी करण बुलाये ॥
सहित दुशाशन करत सलाहा ❋ बोले दुर्योधन नरनाहा ॥
जीत्यो राज धर्मसुत केरी ❋ दीन्ही बहुरि पिता सोइ फेरी ॥
जीती अवनि पिता ताजि दीन्हा ❋ सोहमरेहित अतिभल कीन्हा ॥
छूटे भूप दास गति तेरे ❋ लेत भूमि असिधार गेरे ॥
त्यागव राज्य उचित मम ताते ❋ किङ्करता विनु धर्म्मज जाते ॥
अब तुम यतन बतावहु सोई ❋ मृषा मनोरथ मोर न होई ॥
परबश होत मनोरथ खाली ❋ संशय विवश उठत मनहाली ॥
कीन्ह सकल कछु सेरउनकाजू ❋ भयो जानि मम परम अकाजू ॥
दो०-अबते कीजै यत्न कछु, विदुर भवन सुतधर्म ।
है अबही सुनिये सचिव, कह कुरुनाथ कुकर्म ॥
गुप्त शत्रु गति प्रकट भई सो ❋ आपुस बीती प्रीति गई सो ॥
यह लाभ भा सचिव हमारा ❋ मारत शत्रु गयो बिन मारा ॥
बड़ अनरथ अब सजग भयेते ❋ बहुत उतपात करै हम तेते ॥
सुनि कुरुनाथ बचन अनुरागे ❋ सब मिलि मंत्र विचारनलागे ॥
परउ ठीक मत नृप सुख पाये ❋ बहु बिधि सौवल सिखै पठाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धर्म नरेश बिदा उन मांगी ❋ बिदुर पठाइ फिरे अनुरागी ॥
निज गृह जात युधिष्टर राई ❋ सौबल मिल्यो बीच मग आई ॥
कीन जोहार माथ महि लाई ❋ कहन लगेउ पनि बचन बनाइ ॥
युक्ति सहित करि छल चतुराई ❋ निज वश कौन युधिष्टिर राई ॥
चलहु नरेश कुरुपतिहि जीती ❋ लीजै वैर द्यूत करि नीती ॥

दो० बड़ि अनीति शकुनी करी, शठ समेत कुरुराज ।
हांतदुसहदुखहृदयमम, गतितुम्हारिलखिराज ॥

सोई गति होइ कुरुपति केरी ❋ हृदय बुताई ज्वाल तब मेरी ॥
करि बहु यतन नृपहि पलटाई ❋ कुरु समाज कहँ गये लिवाई ॥
करि बहु प्रीति सभा बैठारी ❋ मँगवाई पुनि पंसासारी ॥
भावी प्रबल मेटि को सकई ❋ बरजिबरजि सब प्रियजनकथई ॥
धर्मराज कर अक्ष गहे जब ❋ बिहँसिबचन यहकर्ण कहेतब ॥
का अब धरत युधिष्टिर राऊ ❋ कह नृप जो काहिये कुरुराऊ ॥
हारहि सो अस कुरुपति कहई ❋ द्वादश वर्ष विपिन सो रहई ॥
कन्द मूल फल करै अहारा ❋ उदासीन इव सब अचारा ॥
हौर सो निज भवन न आवै ❋ आतुर कानन पंथ सिधावै ॥

दो० होइ बैठ जेहि थल यथा, तस कानन मग लेइ ।
अन्न अशन अरु राज्य सब, सो तजि तृण इवदेइ ॥

अनुचर अपर लेइ नहिं संगा ❋ एक त्यागि निज वंश प्रसंगा ॥
तापस तनु धरि कानन जाई ❋ देइ महीपति चिह्न दुराई ॥
यहि विधि द्वादश वर्ष वितावै ❋ नेम सहित तेरहीं जब आवै ॥
ग्राम निवास करै अज्ञाता ❋ वर्ष दिवस कहि जाय न जाता ॥
मिलै न खोज रहै यहि भांती ❋ वर्ष त्रयोदशई जब जाती ॥
पावै राज्य चौंदहीं आये ❋ खोज त्रयोदशई बिन पाये ॥
जो कदाचि त्यरहीं सुधि पाई ❋ द्वादश वर्ष बहुरि बन जाई ॥
जब जब खबरि तेरहीं पाई ❋ तब तब सो कानन मग जाई ॥
मिलै न खबरि तेरहीं जासू ❋ सो पुनि करै राज्य निज वासू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-भीष्मादिक सब थरहरे, सुनि कुरुपतिकी बात ।
कहि प्रमाण धरि दाउँ सोइ, दीन्हों शत्रु अजात ॥

कह सौबल सुनु धर्म किशोरा ❋ होइ खेल शकुनी संग मोरा ॥
मैं खेलौं तुम्हारी बदि राजा ❋ देखौं शठ शकुनी कर काजा ॥
बोले कुरुजन धर्मज बाता ❋ छल कहि भुलब शत्रुअजाता ॥
कर गहि अक्ष युधिष्ठर राऊ ❋ मानि प्रणाम धरौ सोई दाँऊ ॥
बरजत रहेउ सकल हितकारी ❋ कोहि बिधि मिटै जो होनेहारी ॥
तमकि धर्मसुत अक्ष चलाई ❋ परेउ दांव शकुनी कर आई ॥
खेल खेलार अजित शकुनीते ❋ पुनिपुनि हारिगये नहिं जीते ॥

दो०-हारेउ दाँउ अधर्म अरि, चुपकि रहे शिर नाय ।
विजय नगारे किंकरन, हने सो आयसु पाय ॥

छूटत सभा देश गृह कोषा ❋ लखि उर शोक होत सहरोषा ॥
चितै शैल्य दिशि धर्मज ज्ञानी ❋ बोले श्रवत नयन जल पानी ॥
सुनु शठ तैं सब लाज गँवाई ❋ भयसि बृथा माद्रीकर भाई ॥
मम दुर्गति देखहु मुसक्याई ❋ धिकधिक तुमहिजननीकेभाई ॥
हम हारे शठ तैं नहिं हारे ❋ लाज रोष कह गये तुम्हारे ॥
जानत जगत तोहिं सब लायक ❋ विक्रम थकेउदेखि कुरुनायक ॥
धिकधिक पाप बुद्धि शठ तोरी ❋ निजनयनन देखहुगतिमोरी ॥
धिकधिककितवकितवअभिमानी ❋ दीन्हेंउ मूढ त्यागि ममबानी ॥
नहिं कछु कुरुपति केर कुकर्मा ❋ नहिं शकुनी कृतकर्ण अधर्मा ॥
समरथ भीष्म द्रोण संपाती ❋ तिन्हैं दोष देइय केहिभाँती ॥
तैं शठ भयसि पाप कर मूला ❋ होत न मूढ हृदय तब शूला ॥

दो०-देखि दशा मम लाज तजि, रहे मूढ चुप साधि ।
कहिनसकहिंकोउनीचकछु, कृतकुरुनाथउपाधि ॥

सुनु अधर्म्म निजकाल बिताई ❋ जो न विनाश करौ तब आई ॥
तौ न गहौं शर चाप कृपाना ❋ करौं त्याग क्षत्रिय कुल बाना ॥
अस कहि भूप अग्र पशु धारा ❋ कहत रोषवश पवन कुमारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गरजि जलद सम नयन तेरे ❋ बोले चितै दुशासन तेरे ॥
निपट नीच तव बुद्धि पिशाची ❋ निश्चय मचि शीश पर नाची ॥
जोहिकर बसन द्रौपदी केरे ❋ गहि खैंचेउ करि जोर दरेरे ॥
सो उखारि डारौं भुज तेरे ❋ दाह बुताय हृदय तब मेरे ॥
ठोंकि जंघ बैठहु कहि चेरी ❋ भई मतिभ्रम कुरुनायक केरी ॥
चलत कुशल करि सिंह जगाई ❋ वैनतेय बलि वायस खाई ॥
होत यथा यह बात अयोगू ❋ तेहिबिधिहमहिहँसत सबसोगू ॥

दो० सुनत सभा अस कहतमैं,सबप्रति वचन पुकारि।
तबलगिधिकमोहिंकुरुपतिहि,जबलगडारौंमारि॥

समर भुमि गद लै हाथा ❋ जंघ भंग करिहौं कुरुनाथा ॥
कहे बचन कर फल देखरावों ❋ तौ मैं क्षत्रिय वंश कहावों ॥
अवधि बिताई कहा मम मानू ❋ जो न विनाश करौं तब जानू॥
तौ हम होई निरय पथगामी ❋ पन्नगयोनि जन्म परिमानी ॥
बैठु जंघ मम द्रुपदसुताते ❋ कहेउ सो दुर्योधन मुख जाते॥
निज पदते मरदउँ मुख सोऊ ❋ बन्धु हमार बोध तब होऊ ॥
दिवस विताय गदाधरि लरिहौं ❋ अन्ध नरेश वंश संहरिहौं ॥
त्रिय तजि पुरुष न राखो एका ❋ मतिदृग वंश सत्य मम टेका ॥
कृष्ण शपथ नृपचरण दोहाई ❋ बीते दिवस करब सब आई ॥

दो० असकहि निजकरगहिगदा,भीम चलेनृपसाथा।
बोले पारथ रोष वश, जो कुमार सुरनाथ ॥

सुनु रविनन्द अधम मलरासी ❋ कीन्हेउ मम विस्मयतजिहाँसी ॥
धरणी सम करिहौं शरमारी ❋ कर्ण प्रतिज्ञा सत्य हमारी ॥
वृद्ध पितामह द्रोण हमारे ❋ निज नैनन सुख देखन हारे ॥
धन्य धन्य सब लायक केरे ❋ निज नैन परम सुखहरे ॥
जन्म प्रयंत सत्यव्रत कीन्हा ❋ अन्तकि वयस लाभभलीन्हा
शर सागर कौरव कुल बोरौं ❋ भीष्मादिक क्षत्रिन शिरफोरौं ॥
तौ मै कुन्तीसुन शुचि साँचा ❋ काटौ तव शिर कठिन नराचा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मोहिं अजातशत्रु कै आना ❀ बीते दिवस करा मन माना ॥
अस कहि चले युधिष्ठिर संगा ❀ बोले नकुल रोष भरि अंगा ॥
सुनु रे करण पापकर अंशा ❀ करौं बिनाश सकल तव वंशा ॥
बिष्वक्सेन आदि सुत तोरे ❀ होइहैं नाश सकल कर मोरे ॥

दो० सबलसिंह कहि नकुल अस, गये युधिष्ठरपास।
जो न करौं यह सत्य सब, होइनरक ममवास॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते सभापर्वणि
सौबलयुधिष्टिरछलकरणोनाम षष्टऽध्यायः ॥ ६ ॥

कह ऋषिराय सत्य सुनु राजा ❀ मष्टरहे कुरुनाथ समाजा ॥
तब सहदेव शकुनि तन हेरी ❀ भृकुटि भंग करि नयन तेरी ॥
शकुनी तव मति इश भ्रमाई ❀ नीच मीचु करि यत्न बुलाई ॥
द्यूत हराय कियो छल भारी ❀ कीन सकल दुर्दशा हमारी ॥
जानेउ तुम इनके रिस नाहीं ❀ इर्षा लाज न कछु मन माहीं ॥
जीन भूलेउ भूलि विशेखी ❀ बीते दिवस परी सब देखी ॥
कुरुपति नाश सहित परिवारा ❀ होइहै ममकर मरण तुम्हारा ॥
बीते अवधि शरासन धरिहौं ❀ रिपु कृत कर्म प्रकट सब करिहौं ॥
कृष्ण शपथ अरु धर्म महीशा ❀ करौं समर तव खरिडत शीशा ॥

दो० बात दिवस प्रमाण निज, करौं सकल प्रण साँच।
मतिदृगसुतकटिकटि गिराहि, दाहनकरैनराच ॥

अस कहिचलन भूप पहँ चह्यऊ ❀ द्रुपदसुता तब रिसबश कह्यऊ ॥
सुनहु दुशाशन रुधिर तुम्हारा ❀ जब मम शिर होई बहै पनारा ॥
बाँधव कच तब करि असनाना ❀ कोटि भूप यदुपति के आना ॥
अस कहि केश दिये छिटकाई ❀ दुश्शासन के रुधिर नहाई ॥
जेहि विधि नाथ लाज मम राखी ❀ करहुसत्यप्रणजन अभिलाखी ॥
जंघ भंग कुरुपति सुनि काना ❀ मैं सुखविपुल लहबभगबाना ॥
बढ़त केश विगलित पंचाली ❀ अति भयकार मनो कंकाली ॥
नुसुन्दरता भय गति दूरी ❀ रोष कराल रहा भरि पूरी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० असकहि द्रुपदकुमारिपुनि, चलीयुधिष्ठिरसाथ।
वल्कल लाय दास गण, लखिसुखकौरवनाथ॥

जेहि मग जात युधिष्ठिर राई ❋ अग्र दिये धरि भाजन जाई॥
दुर्योधन कर आयसु जोई ❋ किंकर कहत जोरि कर दोई॥
नृप वल्कल अब धारण कीजै ❋ गृहमग तजिकाननमगलीजै॥
अससुनि भीम भयो मन रोषा ❋ धिककहि देत भुजनपर दोषा॥
राषे तरंग विलोचन लाला ❋ कह्यउ नाय धर्मज पद भाला॥
हम नृप दास भये अब नाहीं ❋ आयसुनीच करत केहिपाही॥
राज्य त्यागि कानन मग जैहैं ❋ तहँकुरुगतिका हमहिं सिखैहैं॥
प्रथम द्रुपदतनपा निज धोरे ❋ का नृप बहुरि जन्म धरिहारे॥
जो न तजत मम नीच पछारी ❋ चहत विलोकन शठयमधारी॥
आयसु मोहि नराधिप देहू ❋ विक्रम बन्धु देखि करि लेहू॥
दुर्योधनहिं प्रकट देखरावौं ❋ जो तुम्हार अनुशासन पावौं॥

दो० तौ सौ भाई आजु सब, कुरुपति आदि बटोरि।
मारि पठावौं यमपुरन, नृप तव शपथ करोरि॥

आजु सहायक है भगवाना ❋ जीतब एक न पैहैं जाना॥
जिन करुणा करि चीर बढ़ावा ❋ सो मम बाहु सहायक आवा॥
तदपि मरण जो यहि थल होई ❋ धृक मम विस्मय कहैन कोई॥
भीष्मादिक विनमारे मरिहै ❋ वृश्चिकराशि न एक उबरि है॥
सहिअसिविपति नजीवननीका ❋ समुझाइये महीपति जीका॥
पारथ कहेउ मोर मत एहू ❋ वेगि नरेश रजायसु देहू॥
तमकि तमकि निजअस्त्र उठाये ❋ सजग देखि कुरुगणभयपाये॥
वल्कल वसन अनूप सोहाये ❋ जे प्रथमहिं कुरु किंकरलाये॥

दो० भीम वचन सुनिकुरुपतिहि, जाइजनायोहाल।
बुद्धिचक्षु सुत रोष वश, भयो विलोचन लाल॥
कहत भयो कुरुनाथ तब, यूथप सुभट बुलाई।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

घेरि पवँरि मारहु सकल. जियत न पावहिं जाई ।
भूपति आयसु धनुष चढ़ाये ❋ सुभट समूह रोषवश धाये ॥
करण दुशासनादि भट भारी ❋ घेरि पँवरि प्रति ठाढ अगारी ॥
सातौं द्वार बीर ठढि आई ❋ लीन्हेउ बज्र किंवार दिवाई ॥
इत यह साज सजे कुरुराई ❋ उत आयसु मांगत सब भाई ॥
वेगि महीपति देवँ योगू ❋ करिये समर मिटै नृप सोगू ॥
रिस उर मोर बड़ दुख होई ❋ कीन्हे समर मिटै नृप सोई ॥
होइ जीति सब नृप भलि बाता ❋ मरण नीक नहिं शत्रुअजाता ॥
जो यहि विधि भई जगत हँसाई ❋ करब काह जग जीवन भाई ॥
कीन्हे समर भुजा सुख पावै ❋ अति कराल तनुताप बुझावै ॥
सुरपुर तात लहब सुख नीके ❋ करिकरि खण्डखण्ड कुरुपतिके ॥
नतु नरेश जारत उर शोषू ❋ मिलहिं न युगल लोक संतोषू ॥
दो० पुनिपुनिअनुजसरोषअति. मांगतसकलनिदेश ।
मन विचारकर कोटि विधि. बोले वचन नरेष ॥
बंधु बचन असि भूलि न कहऊ ❋ भयाअरोग्यअरुझि जिनरहऊ ॥
जन्म प्रयन्त होम जिमि करई ❋ अन्ताकि बैस ताहि परिहरई ॥
तिमि साहि शीश सकल दुखसेतू ❋ चहत बेगारन अब बिन हेतू ॥
वर्ष त्रयोदश भो मम लेखे ❋ अब निजनयन उमापति देखे ॥
पशुपतीश देखिये नैपाल ❋ डाकिन देश भयकर काला ॥
रामनाथ सम ईश्वर देखी ❋ होइहै जीवन सफल विशेखी ॥
महांकाल उज्जैन अशेखी ❋ अमरनाथ कश्मीर सो देखी ॥
दो० विश्वनाथ वाराणी. बहुरि देखि शशि भाल ।
सुनहु बंधु अनन्दयुत. कटिहैं सहज सब काल ॥
अस कहि भुपति चिह्न दुराये ❋ परिहरि वल्कल वसन सुहाये ॥
द्रपदसुता युत बांधव चारी ❋ पहिरे वसन वेष अति भारी ॥
रत्न जाड़व पट चित्र उतारे ❋ ते नरेश तेहि थल सब डारे ॥
कुरु किंकरन परे पट पाये ❋ गत दरिद्र धनवान कहाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बन्धु सुजन जन संग महीपा ❀ आगे चले पाण्डुकुल दीपा ॥
उदासीन इव वेष बनाये ❀ मनहुँ महातप तनु धरि आये ॥
जाहिं पँवरि जहँ वल्कल धारी ❀ धावहिं सुभट समूह प्रचारी ॥
सो मग त्यागहि धर्म कुमारा ❀ आतुर आवहिं आन दुवारा ॥
बज्र किँवार जड़े तहँ पावहिं ❀ सायक वीर सरोष चलावहिं ॥
दो० कहहु दुशासन शकुनी कहं, यूथनाथभटवृन्द ।
देखि पवँरि प्रति धर्मसुत. गयेजहां रविनन्द ॥
देखा कर्ण धर्मसुत आये ❀ वल्कलधर शर चाप चढाये ॥
बिहँसि कहा सुनु शत्रु अजाता ❀ तुमको द्रुपदसुता भई त्राता ॥
भ्रमर मध्य जिमि बोहित परई ❀ गहिकर हाथ पार कोई करई ॥
त्राता नारि भली तुम पाई ❀ कर्ण तर्क करि हँसा उठाई ॥
कछु नहिं कहा धर्म नरनाहू ❀ बोले भीम भयो उर दाहू ॥
सुनु रविनन्दन दूषण यामे ❀ भेद न दंपति श्रुति परिणामे ॥
द्रुपदसुता है जीति हमारी ❀ हँसी न देखहु हृदय बिचारी ॥
होउ न अज्ञ विवश परतीती ❀ देखहु पूँछि विदुरसन नीती ॥
निज तनु होत प्रगट इक देही ❀ बाम अङ्ग त्रिय परम सनेही ॥
तीसरि जीति पुत्र निज होई ❀ कहे विदुर यह प्रगट न गोई ॥
दो० सुनि न कहेउ रविसुत कछु, चुपकि रहे अरगाइ ।
बोले धर्मनरेश तब, आरत बचन सुनाइ ॥
मोहिं कर्ण अब मारग देहू ❀ करि दुर्गति जनि जीवन लेहू ॥
रविसुत कहेउ न आयसु मोहीं ❀ दीजै पंथ कवन बिधि तोहीं ॥
फिरे धर्मसुत सुनि असि बानी ❀ स्रवत नयन वारिज मगपानी ॥
जात पँवरि जेहि शत्रु अजाता ❀ होत शोर तहँ जनु पविपाता ॥
सुभट सरोष अस्त्र गहि धावहिं ❀ लखिसुतधर्मअपर मगजावहिं ॥
याहिबिधिनृप चहुदिशि फिरिआये ❀ मारुमारु तजि पंथ न पाये ॥
भे अति विकल धर्मसुत जामा ❀ शिरधुनिकहतशोकयुतभीमा ॥
भूप तुम्हारि क्षमा दुखदाई ❀ करत शील उरवज्र किनाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अब नहिं मिलिह कुरुपति भारी ❀ भै नृप कुपथ कुमीच हमारी ॥
दो० अहह दैव तुव गति अगम, मरे मीच बिन आई ।
मनकी मनही में रही, कहि बिलपत सबभाई ॥
होत सभा महँ भूप रजई ❀ जियत न जात भवन कुरुराई ॥
हमहिं न रहत मरे कर शोचू ❀ भा नृप दुखद तुम्हार सकोचू ॥
हत नरहार भार तुव नाथा ❀ उत रण सुभट न कौरवनाथा ॥
यह नरेश बड़ शोक मसाजा ❀ वीर बधे नहिं होत अकाजा ॥
जाहिं बंधु जन प्रिय जन मारे ❀ हृदय शोक दुख होत हमारे ॥
कह धरि धीर युधिष्ठिर राई ❀ सुनहु तात तुम तजि कदराई ॥
सदा सहायक है करुणाकर ❀ कस न खबर लैहैं राघावर ॥
द्रुपदसुता की लाज बचाई ❀ तिनहि न बात बड़ी यह भाई ॥
अश्रुकहि लोचन बारि विमोचैं ❀ विदुर समेत बंधु सब सोचैं ॥
दो० सकल कहैं आरत बचन, त्राहि त्राहि यदुनाथ ।
सजल नयन पुनिपुनि कहत, राघावर धुनिमाथ ॥
जातविकल लखि द्रुपदकिशोरी ❀ कहत घटोत्कच दोउकरजोरी ॥
सुनो बिनय मम धर्मकुमारा ❀ विश्वम्भर रखवार तुम्हारा ॥
अब नरेश मोहिं आयसु देहू ❀ जिमिनिज किंकरइवकर नेहू ॥
तब नरेश निज पृष्ठ चढ़ाई ❀ सहित कुटुम्ब नाथ सब भाई ॥
करि दुर्योधन भवन उलंघा ❀ जाउं भूप तब आयसु संघा ॥
नतौ महीपति आयसु देहू ❀ करौं महारण करि संदेहू ॥
नसु यहि अवसर जहँ कुरुराई ❀ जाइ समीप देहुँ पहुँचाई ॥
आयसु बेगि देहु मोहिं राजा ❀ तबपद शपथ करौं सोइकाजा ॥
कहेउ भीम जहँ हैं कुरुनाथा ❀ तहँ मैं जाउँ गदा गहि हाथा ॥
सो० करु सुत सोइ उपाय, भूपति आयसु देहिं जो ।
जियकीजरानिबुताय, सन्मुखलखिदुर्योधनहिं ॥
करौं प्रतिज्ञा सत्य, अबही जो कीन्हौं सप्रथ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

होत शरीर असत्य, को जाने जीवन मरण ॥
भीम बचन सबके मन भाये ❀ आयसु मांगि मांगि शिर नाये ॥
कहेउ धर्मसुत अबकी बारा ❀ मानहु आयसु सकल हमारा ॥
मारग यही विपिन कहँ लीजै ❀ विग्रह बन्धु कथापि न कीजै ॥
यहि प्रकार कहि धर्मकिशोरा ❀ बोले चितै घटोत्कच ओरा ॥
धन्य धन्य सुत भाग्य तुम्हारा ❀ लीन उबारि सकल परिवारा ॥
सब समेत अब सुत बड़ भागी ❀ कानन पंथ चलिय डर त्यागी ॥
सपनेहुँ आन बिचार न करहू ❀ मम अनुशासन सुत उर धरहू ॥
कहेउ सुभग शिष धर्म कुमारा ❀ कीन सबन मिलि अंगीकारा ॥
कुंभोत्कच तनु धरेउ विशाला ❀ छायो रूप श्याम कच लाला ॥

दो० होन लग्यो उतपात बहु, चले पवन उनचास ।
अंधकार माया प्रबल, दिवसनाथ उर त्रास ॥

माया बश राक्षस की धारी ❀ सब परिवार पृष्ठि बैठारी ॥
सहिते द्रौपदी धर्मज राई ❀ दक्षिण भुजा लीन्ह बैठाई ॥
वाम बाहु पर बान्धव चारी ❀ भीमादिक लीन्हेउ बैठारी ॥
पुनि पुनि गर्जि चलत जबभयऊ ❀ नृप कर जोरि विदुरसन कहेउ ॥
तात पिता सम आपु हमारे ❀ शिशुपन ते सबबीधि रखवारे ॥
ममसुधि अब यादवपति लीन्ही ❀ रक्षा आपु जन्म भरि कीन्ही ॥
हरिते अधिक हितू तुम मोरे ❀ पितु मातासमाहित न निहोरे ॥
अब ते एक मोरि रखवारी ❀ करेउतातमम विनय विचारी ॥
जो गृह रहे देइ दुर्योधन ❀ तात निहोरे किहेउ प्रबोधन ॥
तुम तहँ जात रहेउ कछु काला ❀ गये दिवस दुखकटहिंविशाला ॥
जब जब सुरति करै मम माता ❀ करेहुप्रबोध विकल लखिगाता ॥
भोजन पान अधीन तुम्हारे ❀ मातु प्राण धन के रखवारे ॥

सो० विपिन महा दुखरूप, ताते उचित न मातुसँग ।
कही युधिष्ठिर भूप, गहवरउर व्याकुलनिपट ॥
कहेउप्रणाम हमार,तात मातुन्ह विधि बिधि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

असकहिधर्मकुमार, चकित चित्त रोवनलगे ॥
कहेउ विदुर नृप धीरज धरहू ❋ आतुर गमन विपिनमगकरहू ॥
हम कुन्ती बहु विधि समुझैहैं ❋ रंचक शोक न शीश बिसैहैं ॥
हमहिं उचित बिनकहे तुम्हारे ❋ सब प्रकार पद सेवन हारे ॥
तदापि कहेउ तबअतिभलकीन्हा ❋ महा विपतितजिधीरज दीन्हा ॥
अब नहिं काम यहां के ठाढे ❋ कुरु आयसु आवत भट गाढे ॥
तुम कहँ करुणा सिंधु सहाई ❋ दीन घटोत्कच कहँ पहुँचाई ॥
गमन कीजिये शत्रु अजाता ❋ भये मरण नृपनीकि न बाता ॥
विदुर बचन सुनि धर्म नरेशा ❋ कहेउ मातु कहँ पुनि संदेशा ॥
मोर प्रणाम कहेउ जननी ते ❋ मिलिहौं वर्ष त्रयोदश बीते ॥

दो० मोहिं न होय लवलेश दुख, तव प्रसाद बन जात ।
बीते दिन पद देखिहौं, शोच परिहरिय मात ॥

भीम सँदेश विदुर सन कहेउ ❋ ममदिशितातमातु सन कहेउ ॥
कहेउ सहायक जो यदुराई ❋ बीते दिवस गहौं पद आई ॥
भयो हमार कठिन अपमाना ❋ अमरशरीर तजत नहिं प्राना ॥
होत न अब कछु कीन हमारा ❋ काधौं अग्र करिह करतारा ॥
कुरुपति सदृश एक बिन वैरे ❋ सब शठ देखि परतरिपु मोरे ॥
कोउ सज्जन परमारथ बादी ❋ पापी सकल भीष्म द्रोणादी ॥
तुम धर्मिष्ट विदुर सब भाँती ❋ गदगदगिरानपुनि कहिजाती ॥
कह पारथ सुनु तात सुजाना ❋ तुम समर्थ बिज्ञान निधाना ॥
कहब न बिपति मातुसनभारी ❋ जेहि सुख लहहींनहोइंदुखारी ॥

सो० करेहु यत्न सोइ तात,मातु लहैं सुख शोच तजि ।
करि कौरव कुलघात, दरशावौं जननी वदन ॥

दो० पृथक पृथक मातहिं कहेउ,निज निज सबन सँदेश ।
तेहि अवसर करुणा निपट,बरणि न जाइनरेश ॥

बार बार कह द्रुपदकिशोरी ❋ सुरत करायहु मातुहिं मोरी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पूजनीय तुम श्वसुर हमारे ❀ नहिं संदेश पठावन हारे ॥
अनुचित क्षमब कुअवसर जानी ❀ कहेउ मातु ते मम प्रियबानी ॥
पद सेवाकर अवसर आवा ❀ भाग्य कठिन तव मोहिंभ्रमावा ॥
जो जीवत राखहि जगदीशा ❀ धरिहौं आई चरणतर शीशा ॥
तुम प्रसाद सब पुत्र तुम्हारे ❀ रहिहैं मोहिं समेत सुखारे ॥
अस कहि विदुरचरण गहिरानी ❀ विलपत भाषत आरत बानी ॥
पुनि पुनि मिलत धर्म नरनाहू ❀ बहेउ विलोचन वारि प्रबाहू ॥
तेहि अवसर कुरु आयसु मानी ❀ चहुँदिशि वीर धीर अरुरानी ॥
गहे अनेक नग्नि करवाला ❀ रूप भयंकर धनुष बिशाला ॥

दो० धर्मसुताहि पारथ कहेउ, नाथ रजायसु होई ।
चलत वार कौरव सुभट, कछुक दीजिये खोई ॥
नहिं भयो पारथ बचन, नाय विदुरपद भाल ।
चलो घटोत्कक्ष ते कहेउ, सत्य धर्म्म महिपाल ॥
लखि कुम्भोत्कचभूपरुख, आतुर बार न लागि ।
गर्जि ताजि उच्चाट करि, गयो नागपुर त्यागि ॥
सबलसिंह सुनि विरद सुख, कौरवनाथ हवाल ।
व्है उदास शकुनी करण, बोलि लियेततकाल ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते सभापर्बणि पाण्डव वनगमनं नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

॥ इति द्वितीय सभापर्व समाप्तः ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

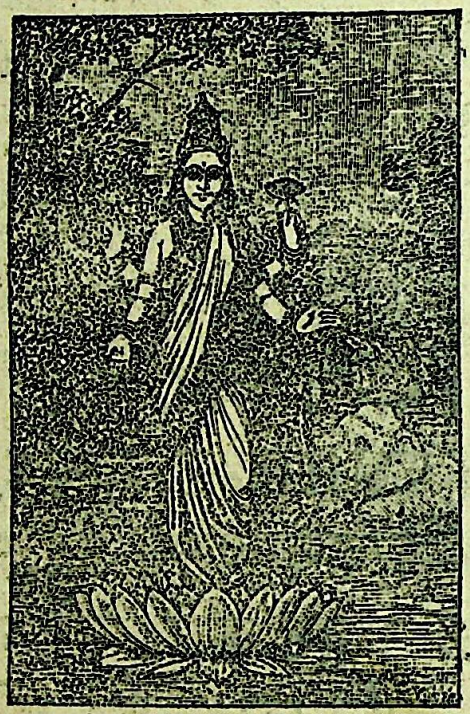

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

वन पर्व ॥ ३ ॥

दो० अब वन पव कथा यह, आगे सुनहु नरेश।
छाँडो देशहिं धर्मसुत, कीन्हो वनाहिं प्रवेश ॥
काम्यक विपिन रहे तहँ जाई ❋ धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई ॥
जहाँ विपिन है बहु बिस्तारा ❋ सिंह भालु वराह अपारा ॥
कामी नाम दैत्य इक रहई ❋ महा सो वीर पराक्रम अहई ॥
ताके डर बहु तपी डराई ❋ तेहि बन निशिवासर सोरहई ॥
मानुष चाप पाई कै धायो ❋ धर्मराज सन पूछन आयो ॥
किंबर नाम अहै वन मोरा ❋ को तुम वीर अहौ बरजोरा ॥
धर्मराज बोले यह बानी ❋ पाराडु पुत्र है सब जगजानी ॥
भीम धनंजय नकुल कुमारा ❋ सहदेव लघु है बंधु हमारा ॥
हमहीं राज युधिष्ठिर अहहीं ❋ सत्य वचन तोंसे सब कहहीं ॥
यह द्रौपदी अहै पटरानी ❋ हारे राज्य लियो वन आनी ॥
दो० सुनत दैत्य हँसिबोलेउ, बिधिमोहिं दीन्हअहार।
भीम नाम बलवीर सो, बैरी अहै हमार ॥
रहै बकासुर बन्धु हमारा ❋ ताको भीमसेन संहारा ॥
शंख हमार हिडम्बक रहई ❋ मारो ताहि दैत्य अस कहई ॥
सो बिधि मो कहँ दीन्ह मिलाई ❋ आजु मारिहौं पांचौ भाई ॥
शोणित करौं भीम कर पाना ❋ तब संतुष्ट होई मम प्राना ॥
यह कहि दैत्य रूप तब धारा ❋ वृक्ष एक हँसि भीम उखारा ॥
मार्यो भीमसेन करि क्रोधा ❋ किंबर नाम दैत्य बड़ योधा ॥
माथो वृक्ष तासु के माथा ❋ क्रोधित भयो पैत्यकर नाथा ॥
एकै एक जीति नहिं पायो ❋ दूनो वीर जूझ मन लायो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब पर्वत इक दैत्य उपारा ❀ भीमसेन के उर पर डारा ॥
मारु मारु करिकै तब धावा ❀ चन्द्रहि राहु ग्रसन जनु आवा ॥
दो० उठेउ भीम तब क्रोधकरि, मल्लयुद्ध तब ठान ।
जिमिसुग्रीवहि बालिसो, बिविध भांति मैदान ॥
क्रोधित भीम गह्यो तब ताहीं ❀ दूनो हाथ दियो काटे माहीं ॥
बहुरि भीम पकरेउ शिर बारा ❀ क्रोधवंत होइ भूमि पछारा ॥
आरत दूनों कीन्ह चिकारा ❀ मुख ते चली रुधिर की धारा ॥
भीम दैत्य को जबहिं संहारा ❀ छाँडेउ तब जब प्राण निकारा ॥
बधेउ दैत्य कहँ भीम जुझारा ❀ हर्षित भे तब पवनकुमारा ॥
मिलि सब बन्धु हर्ष उरछाये ❀ दुर्वासा तहँ देखन आये ॥
साठि सहस्र शिष्य लै साथा ❀ बोलेउ वचन सुनहु नरनाथा ॥
हम सब कहँभोजन करवावो ❀ नातरु ब्रह्म श्राप तुम पावो ॥
त्रासंबत पाण्डव सब भयऊ ❀ तबद्रौपदि हरि सुमिरन करेऊ ॥
सुमिरत श्री हरि आये जबहीं ❀ क्षुधावंत भाषेउ तिन तबहीं ॥
भोजन नेकु न कछु गृह अहई ❀ श्रीपति सो यह द्रौपदी कहई ॥
यदुपति कछू न भोजन अहई ❀ लावो पात्र सो यदुपतिकहई ॥
भोजन भाजन लैकर आई ❀ यक रंचक भाजी तहँ पाई ॥
पुनि कृष्णहि अस वचन सुनाये ❀ तीनों लोक तृपित होई जाये ॥
मुनिगण केर उदर भरि आये ❀ श्रीहरि द्वारवती सिधाये ॥
दुर्वासा कहँ भीम बुलाये ❀ भोजन हेतु चलो मुनिराये ॥
दुर्वासा तब वचन प्रकासा ❀ कबहु न होई भक्त कर हांसा ॥
दो० यह कहि गे दुर्बासा ऋषी हर्षित धर्म कुमार ।
सूर्य विनय करि द्रौपदी, पूजा करि विस्तार ॥
ह्वै प्रसन्न तब रवि वर दीन्हो ❀ माँगु माँगु यह कहि सो लीन्हो ॥
कहा द्रौपदी धर्म्म उपाई ❀ अन्नपूरणा देहु गोसाई ॥
ह्वै प्रसन्न रवि तहँ अति दीन्हो ❀ धर्मराज कहँ हर्षित कीन्हो ॥
प्रतिदिन तहं ब्राह्मण विधि नाना ❀ भोजन करैं बहुत सुख माना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

साटि सहस तहँ मुनिवर आये ❋ नित प्रति तहँ भोजन करवाये ॥
ऐसे धर्म्मराज तहँ रहई ❋ परम हर्ष वन भीतर अहई ॥

दो० ब्राह्मण भोजन प्रतिदिन. वन में धर्म भुवार ।
पांडव विजय रहस्य है, सुने पाप सब क्षार ॥

आये सुनु जनमेजय राजा ❋ धर्म्मराज कीन्हों जस काजा ॥
सरवर एक सुभग बन रहेउ ❋ जल कारण सहदेव तहँ गयउ ॥
जल में एक जन्तु तहँ रहई ❋ पायो शब्द वचन सो कहई ॥
को तुम जीव कहौ अब भाई ❋ कहौ सो सब मम कथा बुझाई ॥
प्रति उत्तर सहदेव न दीन्हो ❋ तुरतहि ग्राह लीलितब लीन्हों ॥
यहि प्रकार तहँ चारिउ भाई ❋ लीले ग्राह सरोवर आई ॥
धर्म्मराज तहँ कन्या विलापू ❋ पीछे गये सरोवर आपू ॥
जल भाजन देखेउ तब राई ❋ तट मै चरणचिह्न है भाई ॥
अरु बक चिह्न पाई लखि राजा ❋ तबचलिगयो सरोवर काजा ॥
लखि भाजन राजन तब गहई ❋ पावन शब्द ग्राह तब कहई ॥

दो० को जीवत को जागता, कहो भेद समुझाय ।
कहे बिनाहि सरोवर. कोउ न जल लैजाई ॥

धर्म्मराज तब मन महं जाना ❋ यही जन्तु कछु कस्यो बिधाना ॥
धर्म्मराज तब कह समुझाई ❋ जीव जौन सो सुनु मन लाई ॥
दया शील समता मन रहई ❋ सत्य छोड़ि मिथ्या नाहि कहई ॥
विष्णु भक्ति आनै करि ज्ञाना ❋ प्रेम भाव मन में जो ठाना ॥
जाके हृदय कपट है नाही ❋ पर सेवक जो है जग माही ॥
जीवै सदां सो भक्त कृपाला ❋ तू किमि जीवै सुनु चण्डाला ॥
कहे बचन अस धर्म्म भुवाला ❋ तब छोड़ेउ सहदेवै काला ॥
फेरि कह्यो को जीवत प्रानी ❋ धर्म्मराज तब कहेउ बखानी ॥
सेवा मात पिता की करई ❋ सेवा धर्म्म हिरदय महँ धरई ॥
पाप कपट जिय कबहु नजाना ❋ जीवै सदां भक्त भगवाना ॥
तू किमि जीव जो निज चोरा ❋ परो है अधम कालि के फेरा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इतना सुनेउ ग्राह पुनि जबही ❋ नकुलहिकहछोड़ेउ पुनितबही ॥
और सत्य अपने जिय माना ❋ है यह धर्मराज जिय आना ॥

दो० को जीवत है जगतमें, सुनिय धर्म कुमार ।
सुनुरे पापी पातकी, धर्मज बचन उचार ॥

अपनी देह हाट करि जाना ❋ करै योग विधि वेद प्रमाना ॥
ये षट चक्र विदारे कोई ❋ जीवै सदा भक्त जन सोई ॥
तू तो भक्ति धर्म नहिं जाना ❋ सदा मृत्यु मुख सुनु अज्ञाना ॥
इतना सुनि त्यहि अर्ज्जुन वीरा ❋ उगिलि ग्राह है हर्ष शरीरा ॥
पुनि तब ग्राह कही यह वानी ❋ धर्मराज सुनि कह्यो बखानी ॥
जीवत योग देह महँ होई ❋ भावत कर्म्म धर्म्म नहिं सोई ॥
कामी क्रोध लोभ अहँकारा ❋ कालरूप जानै संसारा ॥
जीवै जो यह भक्त सुजाना ❋ जीवै सदा भक्त भगवाना ॥
तैं किमि जिये मूर्ख अज्ञानी ❋ परौ नरक चौरासी खानी ॥
सुनत भीम उगिलेउ तेहिं बारा ❋ विनय कीन्ह तिहि वारम्वारा ॥

दो० सुनिये भूपति धर्मसुत, जानत सब संसार ।
पावो जो चरण शरीर मम, तब होवै उद्धर ॥

परस्यो चरण भूप तेहि जबहीं ❋ दिव्य रूप राजा भे तबहीं ॥
धर्मराज पूछ्यो हरषाई ❋ कौन कहो गति कैसे पाई ॥
तबहि राउ सो कहेउ विचारी ❋ सुनहु धर्म सुतविपति हमारी ॥
हमतो यही शाप हित पाई ❋ ताते तव लीलेउ सब भाई ॥
सो जब तुमहिं चीन्हि हम पायो ❋ तुमही ते उद्धार करायो ॥

इति श्रीमहाभारते बबलसिंहचाहान भाषाकृते वनपर्वणि धर्म्म-राजा ग्राह संवाद वर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सुनु राजा यह कथा सुहाई ❋ जौन हेतु हम यह गति पाई ॥
मैं यक बार अहेराहि गयऊ ❋ कर्म्म हीन तबहीं सो भयऊ ॥
एक कहार मूलक ले भयऊ ❋ मम सँग अस्व न एको रहेऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri. Funding by IKS.

परेउँ भूलिकै सो वन माहीं ❀ विपिनसघनतहँसुझ्यो नाहीं ॥
कर्म्म हीन ते दुख मैं लहेऊ ❀ करत तपस्या ऋषि वन रहेऊ ॥
तीन महाऋषि जान न पाये ❀ तिन्हैं कहार तहां धरि लाये ॥
आनि पालकी मोहिं लैगाये ❀ निजपुरको फिरि तब हम आये ॥
द्वारे धरी पालकी आई ❀ बैठ मुनीश्वर पुनि तेहि ठाँई ॥
भोजन पान खबरि नहिं लयऊ ❀ वासर गयउ राति पुनि भयऊ ॥

दो० बासर बीते रैनि भै, कीन्हेउ मैं उच्चार ।
प्रथम पहर मैं भाषेउ, को जागत संसार ॥

तब मुनि कही तहां यह बाता ❀ जन्ममृत्यु दुखसुखसँग गाता ॥
क्षुधा तृषा ते नित दुख सहई ❀ करत बंध सो सुख नहिं लहई ॥
जानौ यह जग दुःख समाजा ❀ सो जागै सब सोवत राजा ॥
दूजे यहै चलाई बाता ❀ जागै कौन कहौ सति ताता ॥
पुनि बोल्यो मुनि बात प्रमाना ❀ योगी योग करै नित ध्याना ॥
कामरु क्रोध लोभ अहङ्कारा ❀ बसैं देह मैं सब बटपारा ॥
सदा ज्ञान ते रहै सचेता ❀ सोवत जगत रहै सो येता ॥
तीजे पहर पूँछ मैं आही ❀ सो मुनि बोले पुनि मुनिपाही ॥
जो कोई ध्यान करै जग माहीं ❀ ताको सकंट परे न काहीं ॥
दिव्य ज्ञान करि हरिको जानै ❀ हिंसाकपट हृदय नाहिं आनै ॥
जो दुःखी सो संशय भई ❀ परवश है अचार सो करई ॥
सो जागै सब सोवैं राजा ❀ सोवैं सोवैं आपन काजा ॥
चौथे पहर कहेउ को जागे ❀ क्रोधित मुनि बोले मो आगे ॥
सुनु मूरख जागै जो ज्ञानी ❀ तू किमिजागै गृह अभिमानी ॥
ग्राह होय राजा तैं जाई ❀ भूप शाप ऋषि को यह पाई ॥

दो० तब मैं बिनती कीन्हेऊ, मो बड़ दोष हमार ।
कीजै दया महामुनि, अब हमार उद्धार ॥

बोले मुनि तब करुणा धारा ❀ द्वापर युग उद्धार तुम्हारा ॥
पाण्डु पुत्र अइहैं बन माहीं ❀ धर्म्मपुत्र धर्म्मौं मन चाहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

परसे अङ्ग होब उद्धारा ❀ पुनि दीन्ह्यों वर याहि प्रकारा ॥
सो राजा तब दर्शन पाई ❀ मम उद्धार भयो अब आई ॥
यहि प्रकार ते पायउँ शापू ❀ मेटेउ शाप कृपा करि आपू ॥
अस्तुति करि राजा दिवि गयउ ❀ धर्मराज मन हर्षित भयउ ॥
भाइन सहित हर्ष हिय भयऊ ❀ तेहि थल वसै धर्म सुख लहेऊ ॥
सुनो भुप जनमेजय बाता ❀ सो जड़भरत हतो मुनि त्राता ॥

दो० रहे हर्ष सो तेहि वन, परम मनोहर ठांय ।
सहितद्रौपदी राजतहं, अरु सब चारिउ भाय ॥

तब सो द्रुपद राज भगवाना ❀ धृष्टद्युम्न सँग कीउ पयाना ॥
मिलन हेतु सो वन महँ आये ❀ बहुविधि उन्हेकृष्ण समुझाये ॥
दुख सुख यह बिधि करतब राजा ❀ हस्तिनपुर कर राज समाजा ॥
याहि बिधि मिले तिनहिंसोजाई ❀ सहित द्रौपदी पाँचौ भाई ॥
धौम्य ऋषिहिं मिलिबहु सुखमाना ❀ तबहिं द्रुपद गृहकियोपयाना ॥
पाण्डव बसहिं जौन बन माहीं ❀ कामक बन उत्तम हैं जाहीं ॥
बहु दिन रहे तौन बन महहीं ❀ चारिउ बन्धु धर्मसुत रहहीं ॥

दो० बहु दिन काम्यकवनहि में, रहेपाडु तहआई ॥
है उदास पुनि धर्मसुत, छोडो सो बन जाई ॥

तबहिं दैत्य वन पाण्डव गयऊ ❀ मार्कण्डेय मुनि दर्शन भयऊ ॥
नारद आदि सुनी यह तबहीं ❀ पांडव गये दैत्य वन जबहीं ॥
तहां बसहिं बहु ऋषय समाजा ❀ पाण्डव शोक मिटइबे काजा ॥
सो सम्बाद बहुत विस्तारा ❀ कछु संक्षेप सुनौ सुख सारा ॥
बसे दैत्य वन पाण्डव आई ❀ तहां द्रौपदी बात चलाई ॥
कहे बचन तब धर्म नरेशहि ❀ विपिन वास बहुसहेकलेशहि ॥
पापी दुर्योधन जग जाना ❀ शकुनी कर्णदुशानसन नाना ॥
अन्ध नृपति कछु कहो न आई ❀ सुनो धर्मसुत पांचौ भाई ॥
हमहिं सहित उन वनहिं पठाये ❀ दुर्योधन छल ख्याल न लाये ॥
नेकु दया हिरदै नहिं लायो ❀ कपट अक्ष करि बनहिं पठायो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri Funding by IKS.

दो० आपु सहेउ बहु दुःख बन, हमे सहो नाहिं जाइ।
दुर्योधन अपकारि सो, रानी कह्यो बुझाइ ॥

नाना यज्ञ धर्म बहु कीन्हा ❀ ताकरबहुफल विधियह दीन्हा ॥
भीम वीर अर्जुन धनुधारी ❀ पलमाँ करैं सकल संहारी ॥
ये तुम्हरे बाचा के कारन ❀ सकैं न कौरव दल संहारन ॥
आज्ञा देउ सुनौ हो राऊ ❀ मारैं शत्रु देश तब पाऊ ॥
क्षमा केर अवसर अब नाहीं ❀ छिपिके रहह कहाँधौं जाहीं ॥
क्षमा के समय क्षमा है भारी ❀ युद्ध समय कीजै हठि रारी ॥
राज धर्म क्षत्री के कर्मा ❀ मारु शत्रु जिन कीन कुकर्मा ॥
द्रौपदी केर बचन ये सुनिकै ❀ बोले बचन धर्म मन गुनिकै ॥
कहे बचन राजा तिहिं ठाई ❀ धर्महि सदां वेद मो आई ॥
बारह संवत निज सुख हारा ❀ चित्त क्षमा तेहि हेतु हमारा ॥

दो० किये क्रोध सम पाप नहि राजा कह्योबुझाइ।
क्रोध किये पुनि धर्म नहि, भाषेउ पांडवराइ ॥

दान धर्म सब कालहिं करई ❀ परैं दुःख तेहि जानि परिहरई ॥
है सब घट में पुरुष प्रधाना ❀ दुखसुखसबसमान करिजाना ॥
एक पुरुष है सुख दुख दाता ❀ दूसर अहैं न सुनु मम बाता ॥
सुनत भीम क्रोधित है गयऊ ❀ धर्मराज सन बोलत भयऊ ॥
जोपै धर्म महा दुख पाये ❀ तो बनको सहेत कहि आये ॥
कौन धर्म्म महँ बहु सुख पाये ❀ देखत देखत राज्य गँवाये ॥
कौन धर्म्म दुर्योधन राऊ ❀ राज्यको सुखसो सकलबनाऊ ॥
आज्ञा देउ बधौं सो भाई ❀ फिरि पीछे लै जाउँ लिवाई ॥
तुम्हहिं राज्य बैठारहुँ राजा ❀ ऐसो जाई करो सब काजा ॥
अर्जुन धनुष खैंचि शर धारैं ❀ एक क्षण में कुरुराज सँहारैं ॥

दो० तुम्हे हीन बल कौरवा, जानै अपने जीम।
आज्ञा देवहु धर्म नृप, कह्यो कोप करि भीम ॥

भीम बचन सुनि राजा कहई ❀ जुआँ खेल हारे सब अहई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बाचा हारि करौ सतकर्म्मा ❀ पीछे युद्ध कीजिये धर्म्मा ॥
धर्म्म न छाँड़व जब तक प्राना ❀ धर्म्म ते राज्य बृद्धिजग जाना ॥
ताही समय व्यास तहँ आये ❀ हर्ष हृदय पांडव समुझाये ॥
तब इक मंत्र व्यासमुनि कहेउ ❀ सुनिकै धर्म्मराज सुख भयऊ ॥
पुनि यह मंत्र जपौ तुम जाई ❀ पारथ ते तब कहेउ बुझाई ॥
देउ मंत्र जप ते वर पैहौ ❀ युद्ध जीति पृथ्वीपति ह्वैहौ ॥
इन्द्र वरुण यम शंकर देवा ❀ होत सबै परसन्नहिं सेवा ॥
यह कहिकै ऋषिव्यास सिधाये ❀ काम्यकवन पुनिपांडव आये ॥
काम्यकवन पुनि भयऊप्रकाशा ❀ पाँचों बन्धु द्रौपदी पासा ॥

दो० यहिप्रकारते बनहिं महं, रहे पाण्डुसुत आनि ।
जनमेजय नृप आगेहू, वैशम्पानि बखानि ॥

इति श्री महाभारते सबलसिंहचौहान भाषाकृते बनपर्वणि काम्यकवन पांडवबास वर्णन नामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

सुनु राजा रहैं जौन प्रकारा ❀ चारिउ बान्धव धर्म कुमारा ॥
केतिक दिवस रहै तिहि ठाहीं ❀ इक दिन पारथ नृपसो काही ॥
आज्ञा होइ जाउँ मैं तहँवाँ ❀ गौरीपति के दर्शन जहँवाँ ॥
आज्ञा पाइ चरण छुइ राई ❀ चढ्यौं हिमाचल पर्वत जाई ॥
व्यास मंत्र जो विद्या देऊ ❀ तौन मंत्र जपि ध्यान लगेऊ ॥
फल औ फूल भषे त्रय मासा ❀ पुनि दुइ मास भयो उपवासा ॥
शंकर तब प्रसन्न ह्वै आये ❀ पारथ सो इमि बचन सुनाये ॥
काहे तप कठोर तनु त्रासा ❀ मन इच्छा सो करो प्रकासा ॥
जो बांछा उर अहै तुम्हारे ❀ होइ सिद्धि सुनु बचन हमारे ॥
भये शम्भु कहि अन्तर्द्धाना ❀ तेहि बन पारथ पुनि तप ठाना ॥

दो० अन्तर्द्धान महेश भे, अरु अर्ज्जुन वर पाय ।
ह्वै प्रसन्न तप करतभे, शंकर सो मन लाय ॥

तप साधत बीते कछु काला ❀ और चरित सो सुनौ भुवाला ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रूप किराती धरो हर तहँवाँ ❀ करत उग्र तप पारथ जहँवाँ ॥
दोउ कर धनुष बाण कर लीन्हों ❀ रुप सुन्दरी गौरी कीन्हों ॥
भूत कटक सब संग लेवाई ❀ कोल भील कर भेष बनाई ॥
अहै नाम शुक दैत्य कुमारा ❀ शूकर रूप धरो पुनि धारा ॥
पारथ के आगे भे आई ❀ रूप किरात महेश्वर जाई ॥
चला दैत्य तारक के काजा ❀ करो बिचार भूप के राजा ॥
गर्ज्यो शूकर पारथ आगे ❀ ध्यान छाँड़िके पारथ जागे ॥
धनुष बाण पारथ कर गहेऊ ❀ तब किरात अर्जुन सन कहेऊ ॥
बहुत परिश्रम करि मै आयो ❀ बड़ो पराक्रम करि मैं पायो ॥

दो० तेहि चाहत है मारने. अरे मूढ अज्ञान ।
अर्जुन कहोन मानि तब, हन्योतासु शिरवान ॥

कोल रूप तजि दानव भयऊ ❀ तब किरात मन क्रोधित भयऊ ॥
मारेसि कोल आपने हाथा ❀ पठवों तोहिं कोल के साथा ॥
यमपुर अबहिं पठावों तोहीं ❀ तैं अब वीर विरोधसि मोहीं ॥
जो शक्ति है तनु तुव हारी ❀ ताते अस्त्र देहु परहारी ॥
सुनि कै क्रोध धनञ्जय ठाना ❀ पुनि किरात पर मार्‍यो बाना ॥
एकौ बाण न भेदेउ अंगा ❀ विस्मय करि पारथ मन भंगा ॥
तब हँसि शंकर बचन बखाना ❀ और बाण तोहिं करो निदाना ॥
अर्जुन धनुष हन्यो बरजोरा ❀ टूट्यो चकित चिंता मन घोरा ॥
अर्जुन कह्यो किरात न होई ❀ होय बिष्णु कि शङ्कर सोई ॥
माया वपु करि बञ्चेउ मोहीं ❀ भयो चकित चिंता मन सोहीं ॥

दो० खड्ग घाव जो मारेउ, सो निष्फल ह्व जाय ।
तबहि वृक्षयक लीन्हेऊ, पारथ क्रोधितधाय ॥

शङ्कर भूत बाण अस मारा ❀ काटि वृक्ष भूतल में डारा ॥
तब पारथ मुष्टिक अस मारा ❀ मारुष करि अर्जुनहिं प्रहारा ॥
शंकर पुनि तहँ हाथ पसारा ❀ अल्प तेज को पारथ मारा ॥
लागत भूमि परेउ मुरझाई ❀ क्षणक एक पुनि चेतसो आई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रहु रहु कहि पुनि उठ्यो प्रचारी ❀ तब सो हृदय निहारि निहारी ॥
प्रथमहि पूज्यो शंकर जोई ❀ पारथ ताहि विलोक्यो सोई ॥
सो माला हर गरे निहारा ❀ देखि चकित भो पाण्डुकुमारा ॥
निश्चय जान्यो शंकर होई ❀ परेउ दौरि चरणन पर सोई ॥
क्षमा करो यह चूक हमारी ❀ बिन जाने कीन्ही मैं रारी ॥
तब शंकर प्रसन्न चित भयऊ ❀ हितकरि चितयपरमसुखदयऊ ॥
मैं प्रसन्न हरि हर कहि दीन्हा ❀ तब अर्जुन प्रणाम सो कीन्हा ॥

दो० पशुपतास्त्र मंत्रहि सहित, हर अर्जुन कहं दीन्ह।
हर्षित गात धनञ्य, चरण कमल गहि लीन्ह ॥

तुम संग युद्ध पारको पाई ❀ ऐसी शक्ति न काहू भाई ॥
अस्त्र देइकै पशुपति नाथा ❀ अन्तर्द्धान भये गण साथा ॥
हर्षवन्त कह पारथ बैना ❀ मैं शंकर देख्यो भरि नैना ॥
धनि जीवन जग आज हमारा ❀ जो शंकर निज नैन निहारा ॥
पारथ बहुत हर्ष जिय पाये ❀ तौने समय देव सब आये ॥
इन्द्र आदि संग सब दिगपाला ❀ पारथ ऊपर भये दयाला ॥
हर नारायण सुरपति कहई ❀ तुम नररूप जन्म सुत अहई ॥
भूमि सहै नहिं क्षत्रा भारा ❀ तेहि कारण अवतार तुम्हारा ॥
जेहि विधि अस्त्र जौन है जेते ❀ सिखै देव हम तुम कहँ तेते ॥
यह कहि शक्र अस्त्र सब दीन्हे ❀ मंत्रन सहित समर्पण कीन्हे ॥

दो० काल दण्डयम दीन्हेउ, वरुण दियोजलवान।
वज्र दण्ड इन्द्रादि दै, हर्षित भो बलवान ॥

जब उपकार अग्नि को कीन्हों ❀ पावक अस्त्र तहां बहु दीन्हों ॥
सप्तपंच गांडिव धनु लीन्हें ❀ नन्दिघोषरथ हुतभुक दीन्हों ॥
आपने अस्त्र यक्षपति दीन्हो ❀ तबहीं इन्द्र कछुकशिष दीन्हों ॥
मातुल साथ स्वर्ग कहँ ऐहौ ❀ अस्त्र अनेक तहां तुम पैहौ ॥
यह कहिकै सुरपति तब गयऊ ❀ रथ सह सूत उपस्थित भयऊ ॥
देवसभा जब पारथ गयऊ ❀ नाना अस्त्र इन्द्र तब दयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहु विधि अस्त्र सिखाये ताही ❋ इन्द्रलोक पारथ जहँ आही ॥
देवअस्त्र पढि सब बिधि जानी ❋ सुरपतिजिष्णु परम सुखमानी ॥

दो० सिखै अस्त्र बहु पारथहिं, देवपुरी महँ जाय।
चिन्ता करत युधिष्ठिर, परथका हित पाय ॥

कौने देश धनंजय गयऊ ❋ चारिउ बांधव शोचत भयऊ ॥
कीन्ह्यो शोच द्रोपदी रानी ❋ तबहिं धर्म सुतकह्यो बखानी ॥
विद्या महा व्यास ते पायउ ❋ तौने कारण वनहिं सिधायउ ॥
गौरीपति आराधन गययऊ ❋ कौन हेतजिय विस्मय भयऊ ॥
हर पूजाते संशय नाहीं ❋ है कल्याण लोक तिहुँ माहीं ॥
होउ प्रसन्न शोच केहि काजा ❋ इमिसबको समुझावत राजा ॥
तप कारण पारथ तहँ जाई ❋ सुनत भीम तब कहो रिसाई ॥
जौ वियोग पारथ सँग होई ❋ प्राण त्यग करिबो सब कोई ॥
प्रथमहिं आज्ञा देतेउ राजा ❋ सहतेउँ कतयहदुखहिसमाजा ॥
क्षमा किये राजा कहँ पैये ❋ दिनदिनदुखबहुबिधिकिमिसहिये

दो० राज्य देश सब छुटेउ, राव तुम्हारे हेत।
देहु रजायसु राज तुम, अबते होउ सचेत ॥

मरिये शत्रु देश तब पाई ❋ बनको दुःख सहो नहिंजाई ॥
बारह वर्ष सहो दुख भरा ❋ एक वर्ष अज्ञात भुवारा ॥
अर्जुन वीर बड़ो धनुधारी ❋ और सहायक श्री वनवारी ॥
राव तुम्हारी आज्ञा पावों ❋ दुर्योधन शतबंधु नशावों ॥
भीम के बचनश्रवणसुनि लीन्हें ❋ धर्मराज उत्तर पुनि दीन्हें ॥
सुनो भीम जो बचन बखानो ❋ दोष हमार सत्य करि जानो ॥
सुनि मम बचन रहो अरगाइ ❋ पीछे बन्धु करो मनुसाइ ॥
अब याहि समय रहो चुप भाई ❋ तबैदशवऋषितहँचाले आई ॥
धर्मराज उर आनँद छाये ❋ अर्घ्य देई आसन बैठाये ॥
कहेउ आप सब वर्णि कलेशा ❋ महादुखित होइ वरणि नरेशा ॥

दो० तजेउ देश बहु दुख सहेउ, दुर्योधन के काज।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आदि अंत मुनि आगे, वरणयों दुख सब राज ॥
सुनिकै तब दुख कहो बखानी ❋ मिटै न कर्म लिखा सुनुबानी ॥
तुम तो बड़ो दुःख नृप पाये ❋ राज्य छोडि बनबासहिं आये ॥
नल दुख सुनो मनहिं धरिराजा ❋ घटै पाप बहु सुक्ख समाजा ॥
पांसे खेलि हारि सब देशा ❋ रानी सँग बन कीन्ह प्रवेशा ॥
एक वस्त्र दोनों ढिंग रहेऊ ❋ सोऊ तजि राजा बन गयऊ ॥
पायउ सो दुख बहु बन जाई ❋ छुट्यो दुःख भे राजा आई ॥
ताको कहउँ सहित विस्तारा ❋ सावधान होइ सुनो भुवारा ॥
तासु दुखहि सुनिहौ हो राऊ ❋ सुनत प्राण धीरज ना रहाऊ ॥
पायउ दुःख पतिब्रता जेता ❋ मोपर कहो जाइ नहिं तेता ॥
दो० सुनत दुखहि बहु नृपति के, पारथ वीर न होइ।
धर्मराज के आगे, कहत दश्व ऋषि सोइ ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते बनपर्वणि
दश्वऋषि आगमनं नामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

॥ बृहदश्व उवाच ॥

सुनु नृप है नैषध एक देशा ❋ तहँ पुनीत नल नाम नरेशा ॥
बहु विस्तार कहो नहिं जाई ❋ लघुकरि ताहि कहो समुझाई ॥
इक दिन राव सरोवर जाई ❋ पंगति हंस देखि बहु पाई ॥
तबहिं हंस पकरि नृप जाई ❋ सोइ हंस तब नृपहि सुनाई ॥
राजा बेगी छाँडि दे मोहीं ❋ कन्या एक मिलावो तोहीं ॥
देश विदर्भ भीम नृप रहई ❋ कन्या एक तासु गृह अहई ॥
दमयंती विधि रूप सँबारी ❋ देखि गिरा रति रूप निहारी ॥
सुनतहि राज हर्ष मन लीन्हा ❋ तुरतहि छाँडि हंसकहँ दीन्हा ॥
राजा गे अंतःपुर माहीं ❋ देश विदर्भ हंस उडि जाहीं ॥
उतरे जाइ हंस सो तहँवा ❋ पारिजात फूले बहु जहँवाँ ॥
दो० उत्तम सरवर देखिकै, उतरो हंस बिचारि।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विधि रचना सब सखी सँग, आई राजकुमारि ॥
देखि हंस कहँ राजकुमारी ❋ गहन हेत तब बुद्धि बिचारी ॥
तब वह हंस रूप अति धारेउ ❋ निज वश कन्याको मन कारेउ ॥
सुनु दमयंती बात हमारी ❋ निषध सुदेश महिपति भारी ॥
नल राजा उपमा को कहई ❋ देखत रूप मोहि जग रहई ॥
तब यह सफल तोर है रूपा ❋ जो पति पावो नल सो भूपा ॥
सुनि दमयंती हृदय जुडाना ❋ हंस बचन सुनि हरषित प्राना ॥
कह दमंयती करहु उपाई ❋ जाते होई मोर पति राई ॥
भये स्वयम्बर उन कहँ वरिहौं ❋ अरु काहूको चित्त न धरिहौं ॥
सुनत बचन यह कहेउ बुझाई ❋ जात अबहिं मै कहौं उपाई ॥
बढ़ो हंस तब पंख पसारी ❋ देखि रही तब राजकुमारी ॥

दो० हंस देश नैषध महँ, राजहि कहा बुझाइ ॥
कन्या मन तुमसौं बसेउ, करहु हर्षमन राइ ॥

राजा सुनत हर्ष मन कीन्हो ❋ पूरव कथा कहन मन लीन्हो ॥
देखि सुता कर चितहि उदासा ❋ रानी नृप सो बचन प्रकासा ॥
राजा सन रानी कह बाता ❋ कन्या योग स्वयम्बर गाता ॥
सुनत वचन राजा मन भाये ❋ देश देश तब बिप्र पठाये ॥
राजा भीम स्वयम्बर कीन्हो ❋ भूपन सबहिं निमंत्रण दीन्हो ॥
नल राजा कहँ नेवत पठावा ❋ करि निज साज तुंरगासिधावा ॥
नारद सुरपुर बात जनाये ❋ चारों दिगपति सुनतै धाये ॥
इन्द्र वरुण यम पावक अहई ❋ चरिउ देव चले मुनि कहई ॥
मारग माँझ मिले नल राई ❋ सुरपति वचन कहो समुझाई ॥
हम सब जात स्वयम्बर काजा ❋ हँसिकै बचन कह्यो सुरराजा ॥
हमरे हेत दूत ह्वै जाहू ❋ दमयंती हमसों करि ब्याहू ॥
चारि जने हम इक मन माना ❋ सुनि नल राजा बहुतलजाना ॥

दो० बोले नल नृप मन्दिरै, रहै बहुत रखवार ।
राजसुता पहँ कैसही, जाइ वचन उच्चार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इन्द्र कह्यो मम आज्ञा होई ❋ तुमहि जात देखिहै ना कोई ॥
करि मन दुरित चले नृप तहवाँ ❋ राजकुँवरि अंतःपुर जहँवाँ ॥
दूनो जन ते दर्शन भयऊ ❋ दुवो रूप मूर्च्छित ह्वै गयऊ ॥
सखी धाइ तब शीतल नारी ❋ सींचेउ तब जल दुवो शरीरो ॥
दूनो चेत भये मन माहा ❋ तब परचौ दीन्हो नरनाहा ॥
जौन प्रकार इहाँ को आये ❋ आवत काहु न देखन पाये ॥
इन्द्र वरुण यम पावक आये ❋ तेइ दूत करि मोहि पठाये ॥
चारौं जन कह मन मह धरहू ❋ एक जने कहँ स्वामी कहहू ॥
लज्जित ह्वै दमयन्ती कहई ❋ देव नाग नर चित्त न अहई ॥
देवलपति हम तुम कहँ जाना ❋ देव नाग नहिं कोउ मनमाना ॥

दो० जा दिन हंसहि रूप कह, ता दिन मैं पति जान।
देव नाग नर गंधव, हृदय और नहिं आन ॥

राजा कहेउ दोष मोहिं होई ❋ कहैं देव हमहीं सब कोई ॥
दूत ह्वै आपन काज सँवारा ❋ देव अवज्ञा दुख है भारा ॥
कह कन्या नृप देवन साथा ❋ पठयहु तुमहिं होन नरनाथा ॥
जिय अपने मन तुमही आनो ❋ तुम तजि कैसे दूसर जाने ॥
यह कहि कन्या नृपहि बुझाये ❋ देवन पै नल राजा आये ॥
देव सबै तब पूछन लीन्हो ❋ तबही नल यह उत्तर दीन्हो ॥
मोहिं छाड़ि मन और न माना ❋ मैं गुण रूप तुम्हार बखाना ॥
सुनत देव भे अन्तर्द्धाना ❋ राजसभा नल करेउ पयाना ॥
देश देश के राजा आये ❋ अद्भुत भूषण रूप बनाये ॥
चारिउ देव भये नल रूपा ❋ लखि नहिं पर सो एकस्वरूपा ॥

दो० बैठे जहाँ नलराज, सब करि करि शृङ्गार।
सँग प्रोहित कर माल ले, सभामांझ पगुधार ॥

प्रोहित सब कर नाम बताये ❋ नल राजा कर नाम सुनाये ॥
कन्या देखि तहा यह रूपा ❋ पांच जने बैठ नल रूपा ॥
विनय करत तब राजदुलारी ❋ हे देवहु मैं शरण तुम्हारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नैषधपति है स्वामी मोरा ❋ करौ प्रगट पद वंदत तोरा ॥
सुनिके विनय दया सुर कीन्हें ❋ आपन रूप बहुरि धरि लीन्हें॥
चीन्हो नल तब राजदुलारी ❋ जयमाला ताके उर डारी ॥
राजा सत्य वचन कह सोई ❋ देवन तजि जाने हम मन मोई ॥
यहै प्रतिज्ञा सत्य हमारी ❋ क्षणयकतुमहिंकरबनहिंन्यारी ॥
दीन्ह देवपति यह वरदाना ❋ इन्द्र कहे सम पवन पयाना ॥
सुमिरत तुम ढिग तुरतहि ऐहौं ❋ याते सदा सुक्ख तुम दैहौं ॥

दो० पावक अग्नी शक्ति दै, वरुण दियौ जलबान ।
धर्म विषे रति यम दई, भे सब अन्तर्ध्यान ॥

देव सबै वर देकर गयऊ ❋ आशा भङ्ग सकल नृप भयऊ ॥
यहि प्रकार दमयन्ति विवाही ❋ देव मंत्र करि जोबिधि काही ॥
दाइज भीम नृपति बहु दीन्हों ❋ ह्वैकै बिदा चलन चित कीन्हो ॥
वाजन शब्द मनौ घन गाजा ❋ नगर आपने आयउ राजा ॥
ऐसे आइ बसे रजधानी ❋ नल राजा दमयन्ती रानी ॥
केतिक दिवस बीति इमि गयऊ ❋ नाना केलि रङ्ग रति भयऊ ॥
नृपके पुत्र प्रगट इक भयऊ ❋ इन्द्रसेन अस नाम सो कहेऊ ॥
कन्या एक भई पुनि ताके ❋ बहुतक हर्ष भइ मन वाके ॥
ऐसे रंग रस राजा कीन्हों ❋ इन्द्र सरिस उपमा कहँलीन्हों ॥
धर्मवन्त नैषधपति राजा ❋ पालै प्रजा पुत्र के काजा ॥

दो० राज्य करै नल राजही, करि बहु धर्म प्रकाश ॥
दमयन्ती अरु राजा, पूजेउ दूनौं आश ॥॥

आगे सुनो धर्म भुव राऊ ❋ देवलोक कर करेउ उपाऊ ॥
बैठे सभा देवता जाई ❋ कलियुग बैठ तहां सुख पाई ॥
इन्द्र तहाँ एक वात चलाई ❋ दमयन्ती राजा नल पाई ॥
देवन केर करेउ अपमाना ❋ नल राजाको पतिकरि जाना ॥
सुनि यह कलियुग उठा सिराई ❋ बोलेउ वचन क्रोध जियलाई ॥
नल के निकट जात सुरराई ❋ राज छोड़ावउँ निज बरिआई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कलियुग द्वापर दोनों भाई ❋ पहुँचे नगर नैषधहिं आई ॥
द्वापर ते कलि कह मुसुक्याता ❋ होइ अक्ष यह सुनु मम बाता ॥
हम अब विप्र रूप ह्वै जैये ❋ चलिये अब पुष्कर सों कहिये ॥
पुष्कर सो यह तब करि बाता ❋ तुम अब जीतो नल कहँ ताता ॥
दो० जीति लेहु नलराजहि, कह कलियुग समुझाइ ॥
बैल रूप तब कलियुग, कहेउ तासु ते आई ॥
धरि यह रूप उन्हैं समुझाई ❋ नल पहँ जाउ स्वरूप बनाई ॥
तहाँ पुनीत रहे नल राई ❋ तिनके वदन प्रवेशहु जाई ॥
एक समय वनमें नल राजा ❋ तृषा लागि जल लीन्हा राजा ॥
यहि प्रकार तब अवसर पाये ❋ नलशरीर महँ कलियुग आये ॥
पुष्कर गे तब नल के पासा ❋ जाई करेउ यह वचन प्रकासा ॥
जुआ हेतु आयउ तुम पाई ❋ आजु दुवो जन खेलिय भाई ॥
नल राजा के मन महँ आई ❋ खेलन हेतु सो करेउ उपाई ॥
दमयंती के बचन न भाये ❋ नल राजा सब द्रव्य गँवाये ॥
सोन रूप जो लाव भुवारा ❋ धरत दाउँ पल महँ सब हारा ॥
गज तुरंग हारे सब राऊ ❋ एकौ बार न जीतै उपाऊ ॥
दो० बहुत दाँव जब लायऊ, हारेउ सब भण्डार ।
पुरजन मंत्री सँग लै, आये नल दरबार ॥
रानी अरु मंत्री समझाये ❋ राजाके कछु मनहिं न आये ॥
रानी कह सब हारे राजू ❋ खेलु न अब उठिचलुनलराजू ॥
रोइ कही छूटत सब देशा ❋ झूंठ बचन नहिं मानु नरेशा ॥
एक सखी बोली तेहि पासा ❋ पठवो पुत्र सासु कें पासा ॥
वह सो आइ यहाँ लै जैहै ❋ सुत कन्या विदर्भ पहुँचैहै ॥
कहिये और बात कुछ नाहीं ❋ पढ़न हेतु पठये तुम पाहीं ॥
सुत कन्या तब रथ बैठावा ❋ सारथि देश विदर्भ पठावा ॥
पहुँचो वेगि सारथी तहँवाँ ❋ देश विदर्भ भीम नृप जहँवाँ ॥
दमयंती पठये लै साथा ❋ सुत प्रलिपाल करौ नरनाथा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

खेले जुआँ कहेउ सो गाथा ❋ चिन्तावन्त भये नर नाथा ॥
दो० यहकहि सारथितबचल्यो, राजहि कियोजोहार
बहुत देश तहँ देखिकै, अवध नगर पगुधार ॥
है ऋतुपर्ण भूप के नाऊँ ❋ हय सारथी रहे तेहि ठाउँ ॥
राज्य सकल तब पुष्कर जीता ❋ यह कलियुग कीन्हे विपरीता ॥
पुष्कर कहो रहो कछु अहई ❋ दमयंती लावहु यह कहई ॥
सुनत राउ भा क्रोध अपारा ❋ रानी के आभरण उतारा ॥
हारे वस्त्र आभरण जेते ❋ राजस्थान आदि पुर तेते ॥
सर्वस हारि उठे नल राजा ❋ पाँसा खेले भयउ अकाजा ॥
दमयन्ती जानो यह राजा ❋ कियो चलन वन केर समाजा ॥
सोई चली दमयन्ती रानी ❋ सो करुणा किमि करौं बखानी ॥
राज्य तजा बनवास सिधाये ❋ ताकी करुणा जाति न गाये ॥
दासी दास बहुत बिलखाहीं ❋ दमयन्ती नृप पीछे जाहीं ॥
दो० चले जात नृप राज सो, पुरजन धीर वराय ।
दमयन्ती नृप ऊपमा, रामचन्द्र सो जाय ॥
पुष्कर दूत फिरे सब गाऊँ ❋ नल राजा कर लेब न नाऊँ ॥
उनहिं केउ जो भोजन देहीं ❋ पकरि नाश कारागृह मेहीं ॥
नगर लोग नृप पीछे जाहीं ❋ भय वश होईबहुत बिलखाहीं ॥
बाहर नगर रहे दिन तीनी ❋ भोजन खबरि न केहू लीनी ॥
क्षुधावन्त तब राजा भयऊ ❋ पक्षि एक तह देखत भयऊ ॥
सुनु रानी यह वचन हमारी ❋ यह पक्षी हैं आजु अहारी ॥
आपन वसन तासु पर डारो ❋ सो पक्षी लै गगन सिधारो ॥
गा अकाश तब बोल्यो बयना ❋ हमें न अब तुम देखौ नयना ॥
खेलि अक्ष सब राज्य गवावा ❋ वसन हीन तबहीं सुख पावा ॥
राजा सुनि यह चकित भयऊ ❋ वसन लिये वह पक्षी गयऊ ॥
दो० राजा कह रानी सुनहु, क्षुधावन्त भे प्राण ।
परमहंस यह देह ते, चाहत कियो पयान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्द्ध वसन पहिरयो नरनाहा ❋ रानी संग चले गहि बाहा ॥
दमयन्ती धीरज धरि करि कहई ❋ दुख सुख नारिपुरुष सबसहई ॥
चले राह राजा अरु रानी ❋ दै राहैं नब आइ तुलानी ॥
दक्षिण दिशि यक मारग जाई ❋ रानी सन बोले नल राई ॥
दूसर मारग सुनु मन लाई ❋ देश बिदेभ सूध यह जाई ॥
पाय पिता गृह सुख तुम रहऊ ❋ संग हमारे दुख किमि सहऊ ॥
कन्त चित्त है तुम थिर नाहीं ❋ ऐसे वचन कहत मुख पाहीं ॥
पति के दुख लों त्रिय दुख होई ❋ पितु को राज्य काम केहि सोई ॥
जो तुम दुख वन सहौ अपारा ❋ तौ पति सुख हमार सब छारा ॥

दो० कुण्डिनपुर कहँ चलौ नृप, जो मन मान कन्त।
तुम कहँ देखत भीम नृप, करि हैं प्रेम अनन्त ॥

बोले राव भीम नृप पाहीं ❋ ऐसे रानि जाब हम नाहीं ॥
हमको पन्थ देखावत कन्ता ❋ कौन काज पितुराज्य अनन्ता ॥
चले जात वन गहन गँभीरा ❋ रानी सहित धर्म नृप धीरा ॥
एक वृक्ष तर वनहिं मँझारी ❋ सोयेउ राउ संगलै नारी ॥
देखि राउ उर में बहु सोगा ❋ देखो विधि कीन्हों कस योगा ॥
रविशशिजिन कहँ देखेउ नाहीं ❋ सो मम संग फिरत वन माहीं ॥
मेरे संग विपिन दुख पैहैं ❋ बहु सन्ताप कहांलौ सैहैं ॥
जाउँ याहि तजि जो वन माहीं ❋ आखिर पिता भवन सो जाहीं ॥
यह बिचार नृपके मन आये ❋ कलियुग हृदय धर्म उपजाये ॥
वसन अर्द्ध लीन्हों पुनि राजा ❋ दया हीन कलि के वश साजा ॥

दो० क्षण आवै नल निकटही, क्षण के चलत जाँमाह।
करै बिचर अनेक बिधी, कबहु करै मनछोह ॥

भीमसुता तजि चलिगे राजा ❋ बहु रोदन करि चले अकाजा ॥
गये राव मन बहु दुख पागी ❋ भीमसुता तेहि अवसर जागी ॥
चहुदिशि चितै चकिताचित भयऊ ❋ हाहा करि बहु रोदन ठयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हाहा स्वामी कन्त हमारे ❋ तजि मोकहँ वन कहाँ सिधारे ॥
प्रथमहिं कहो न छाड़ब तोहीं ❋ जब लगि घटविच जीवनमोहीं॥
यहि दुख जीवन जात हमारा ❋ बचन झूठ नृप भयउ तुम्हारा ॥
कोन्ह्यो सेवा सदां तुम्हारी ❋ कौंनि चूक मै कन्त हमारी ॥
आज्ञाभंग कबहुँ नहिं कीन्हा ❋ केहिहितत्यागीहमहिंदुखदीन्हा॥
धीरज आई दंत जो नाहीं ❋ कैंसे प्राण रहै तन माहीं ॥
कहौं नाथ कैसे तुम रहऊ ❋ हमहिंछाडिकिमि धीरज गहऊ ॥

दो० सघन विपिन महँ रोवती, दमयन्ती विलखाई।
कौन अवगुण कीन्हेउ. दीन कन्त दुख आई॥

सर्प एक तब सन्मुख आवा ❋ रानी पद मुख भीतर लावा ॥
रानी विकल बहुत विलखाई ❋ हाय कन्त मोहिं राखौ आई ॥
नैषध देश स्वामि जब जैहौ ❋ कहो खंत मोकहँ कहँ पैहौ ॥
व्याध एक तहँ देखेउ जाई ❋ वधिक सर्प कहँ टारेउ आई ॥
काम वश्य होइ बोलेउ बानी ❋ कोहि हित बनमें फिरौ भुलानी ॥
तब रानी कहँ चिन्ता आई ❋ नलको मनमें पुनि पुनि ध्याई ॥
रानी श्राप बधिक कहँ दीन्हा ❋ तुरत भस्मतेहिखलकहँकीन्हा ॥
करत बिलाप चली वन माहीं ❋ गिरि कंदर वन ढूंढत जाहीं ॥
कोई नल की कहै न बाता ❋ रोवत रानी अति विलखाता ॥

दो० भृगु वासिष्ठ मुनिअंगिरा, नारदमुनिजहँ आहिं।
करि विलाप तब रानिसो.पहुचीतेहिथलमाहिं॥

जाई तिनाहिं कीन्हेउ परणामा ❋ आपन दुःख कह्यो तब वामा ॥
सबमुनियिलियह आशिषदीन्हो ❋ मिलिहैंनलमुनिजियसुखकीन्हो॥
अतर्द्धान भये मुनिराई ❋ चिन्ता उर रानी के आई ॥
सपनो सो मन में यह जानी ❋ मानुष जन्म कहा तब रानी ॥
कर्म वश्य वन फिरौ भुलानी ❋ ऐसे शोचि रानि अकुलानी ॥
नलको खोजत बहु दुख पाये ❋ आपन पति कहँ देखिन पाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नायक कहो नगर को जैये ❋ खोजो जाई कर्म गति पैये ॥
वन महँ ढूँढि बहुत दुख पाये ❋ ग्राम नगर खोजो चित लाये ॥
सो० चली संग वनराज के, बसे एक वन आहिं।
सिंधुर यूथप बहुततहँ निकसे तोहि वन मांहि॥
कचरि गये तहँ बहु बनिजारा ❋ हाइ हाइ सब करै पुकारा ॥
दमयन्ती देखो तब ताहीं ❋ बहुत लोग कचरे वन माहीं ॥
दमयन्ती कह करत विलापा ❋ मैं बचि गई कर्म बश पापा ॥
कीन्हो गमन बहुत दुख पाई ❋ दिना आठ दश पंथ सिराई ॥
नाम बाहुबल राजा आही ❋ उत्तम नगर चित्त वर जाही ॥
तौन नगर महँ पहुँची आई ❋ लरिकन तहं दुख दीन्ह बनाई ॥
मन में दुःख अहै तेहि भारी ❋ बावरि रूप फिरहि तहँ नारी ॥
ऊपर महल भूम महतारी ❋ देख्यो तिन निज नैन निहारी ॥
तब रानी यक सखी पठाई ❋ दमयन्ती कहं संग लै आई ॥
तब पूंछेउ राजा महतारी ❋ आपनि व्यथा कहौ सुकुमारी ॥
दो० दमयन्ती यह भाष्यउ, हम मानुष अवतार।
करौं कहांलगि बातबहु, बिधि दुख लिखालिलार॥
कहेउ राव की तब महतारी ❋ रहौ गेह काहू सुकुमारी ॥
दमयन्ती बोली यह बाता ❋ रहै धर्म रहिबे तहं माता ॥
होई जौन शुचि सेवा चरणा ❋ ऐसा होय रहिहौ तेहि शरणा ॥
ब्राह्मण सो पूँछति मैं बाता ❋ जाते सुख पावों मैं माता ॥
सुनि राजा की मातु बखाना ❋ पुत्री कह्यउसो वचन प्रमाना ॥
मम कन्या जो अहै सुनन्दा ❋ रहौ तासु संग सहित आनन्दा ॥
तहां जाई दमयन्ती रहई ❋ नल की कथा सुनो जसअहई ॥
इक वन में दावानल लाग्यो ❋ तहँ इक सर्प जरै दुख पाग्यो ॥
ऊंचे स्वर तब कीन्ह पुकारा ❋ हाविधि मोकहं कौन उबारा ॥
मैं नारद को डसिकै लीन्ह्यो ❋ अचलशापमोकह ऋषिदीन्ह्यों ॥
दो० चलि नहिं सक्यो हेतु तेहि, वनमें लागिआग।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कौन उबारै आनिअब,जरत सकौं नहिंभागि ॥
तबहिं भूप मन दया जु आई ❀ तुरत जाई तेहि लियो उठाई ॥
बोल्यो व्याल पैग दश जाहू ❀ तब हमार होई निरवाहू ॥
राजा चल्यो पैग गनि ताहू ❀ दशौ पैग बोले नरनाहू ॥
दशौ पैग जब कह्यो भुवारा ❀ काढ्योनल के मांझ लिलारा ॥
श्याम स्वरूप भूप व्है गयऊ ❀ दै इक वसन मंत्र दुइ दयऊ ॥
एक मंत्र पैहो निज रूपा ❀ एक मंत्र ते व्हैहौ भूपा ॥
यहि विद्या भय तोहिं न होई ❀ यह गति तोरि कीन्ह मैं जोई ॥
है ऋतुपर्ण अवधपुर राई ❀ व्है सारथी रहौ तहँ जाई ॥
बाहुक नाम राखि तहं दयऊ ❀ यह तब कहि कर्कोटक गयऊ ॥
शापहु ते सो भयऊ उवारा ❀ गयऊ भुप ऋतुपर्ण के द्वारा ॥

दो० बाहुक नामा सारथी, रहौं आपु के धाम ।
होई विकट हयजौनतुम, करौं शुद्धमम काम ॥

ऐसे भूप हेतु जहं जाई ❀ भीम भूप मन चिन्ता आई ॥
तबहीं विप्र समूह बुलाये ❀ नल दमयन्ती खोज पठाये ॥
बहुतक देश फिरे द्विज जाई ❀ बीर बाहुपुर देखेउ आई ॥
बिप्र सुदेव देखि गो ताहीं ❀ दमयन्ती मिलि जंलके पाहीं ॥
ब्राह्मण को दमयन्ती चीन्हा ❀ करि प्रणाम वह रोदन कीन्हा ॥
द्विजको लै पुनि निज गृहआई ❀ तबहिं सुनन्दा सबसुधि पाई ॥
भूप पाति पूंछी यह बाता ❀ आपन देश नाम कहुं ताता ॥
भीम भूप के प्रोहित अहई ❀ नाम सुदेव हमारो कहई ॥
सोई सुनन्दा नृप महतारी ❀ अहोप्रथमनहिंकीन्ह चिन्हारी ॥

दो० सेवा कीन्हि हमारि बहु, नल राजा की बाम ।
मैं अनचीन्ह तुमाहिं सो, करवायो सब काम ॥

भीम सो ब्राह्मण जाई सुनायउ ❀ राजा निज दललोग पठायउ ॥
कन्या को लै गयऊ भुवन ❀ राज भीम विदर्भ सिधान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पीछे नल कर खोजन हेता ❀ ब्राह्मण विदा किये नृप जेता ॥
नामपर्ण बोले द्विज पाहीं ❀ तिनसो अब दमयंती कहहीं ॥
बारह मास दुःख भा जाता ❀ जाइ कहेउ तब दिज सबबाता ॥
मोर स्वयंबर कहियो जाई ❀ सुनत दुःख जो औरो पाई ॥
आधो वसन तजो निशि नारी ❀ वनविच देखिन असनविचारी ॥
यह बात सुनि रोवै जोई ❀ जानो नल राजा सो होई ॥
ब्राह्मण चल्यो खोज तहँ पाई ❀ ग्राम ग्राम देशन प्रति जाई ॥
अवध नगर राजा गृह गयऊ ❀ तहाँ जाइकै यह दुख कहेऊ ॥

दो० सुनि बाहुक तहँ रोयऊ, ब्राह्मण पायउ त्रास ।
यहै देखिकै ब्राह्मण, गे दमयंती पास ॥

दमयन्ती पूछत बिलखाई * कहौ विप्र सब बात बुझाई ॥
जननी पास गई तब नारी * है उदास तब बचन उचारी ॥
नल की खबरि कही समझाई * मिलन केर सब करहु उपाई ॥
मोर स्वयंम्बर कहि समुझावो * विप्र सुदेशहि तुरत पठावो ॥
अवध नगर ऋतुपर्ण नरेशा * कहै जाई संमत उपदेशा ॥
जो आजुहि नृप पहुँचहु जाई * तौ दमयन्ती पावह राई ॥
को नल बिन पहुँचै यहि बारा * यही प्रतिज्ञा चित्त विचारा ॥
माता सब बिप्रन समुझाई * तुरत अवधपुर दीन्ह पठाई ॥
तब यह हाल सुनावहु जाई * है ऋतुपर्ण सभा जोहि ठाई ॥
तब राजा बाहुक हकराई * एक दिवस महं पहुचउ जाई ॥

दो० आजुहि पहुचउ तहा सो, वरहु भीमजाहिजाहि ।
आजु करो पुरुषारथ, देश विदर्भहि आहि ॥

यह कहि विप्र तुरन्त पठाये * बाहुक रथहि साजि लै आय ॥
राजा ते यह कहि समुझाई * आजु विदर्भ देउं पहुचाई ॥
सुनतहि राव भयो अवसारा * जातेउ रथ सारथि तोहि मारा ॥
छूटि वसन तब करत परेऊ * लेन हेतु राजा मन करेऊ ॥
कहेउ सूत शत योजन रहा * लौटत पर लीन्ह्येंउ नरनाहा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इन्द्र केर चेला नरनाहू ❀ वृक्ष बेहर मिला तेहि ठांहू ॥
देहु राव ऋतुपर्ण सो कहही ❀ फूल पत्र फल येते रहही ॥
येकोतरसे फल अरु आता ❀ भूमी मोहि परे झरि पाता ॥
इक संशय फल है तरु माहीं ❀ पांचकोटि दल है तरु वाही ॥
बाहुक कह्यो उतरि हम गनिहैं ❀ फिरत बार जो मममति मनिहैं ॥

दो० बाहुक हठ करिकै गनै, पत्र फूल फल ताहि ।
जो कछु भाषत राज भो, सो सब तरुमें आहि ॥

बहुक कह्यो कौन यह ज्ञाना ❀ अक्ष बिद्या यह राव बखाना ॥
बाहुक अक्ष दुगुन गनि दीन्यउ ❀ गणित मंत्र राजा सो लीन्यउ ॥
जब नल भूप मंत्र यह पाये ❀ तब सो कलियुग चले पराये ॥
पूरब विष ज्वाला तनु लागा ❀ तीन त्रासते कलियुग भागा ॥
स्थित भयउ बेहरे माही ❀ ताते पाप वहेरे आही ॥
यह कौतुक तब मारग भयऊ ❀ पाछे देश विदर्भहि गयऊ ।
तब पूछो यह भीम भुवारा ❀ कहो आपजू कहँ पगु धारा ॥
ह्वै लज्जित नृप कहेउ बुझाई ❀ मिलन आपुकहँ आयनभाई ॥
राजा बहु बिधि आदर कीन्हा ❀ उत्तम सदन बास तब दीन्हा ॥
दमयन्ती तब रच्यो उपाई ❀ नलको चीन्हों मन में आई ॥

दो० करन रसोई साज सब. बाहुक पास पठाय ।
पावक अरु जल ना दियो, कीन्हों ऐस उपाय ॥

पावन ते पावन आनेउ पानी ❀ पावकध्यानअगीनिपुनिआनी ॥
दासी डरी देखि ब्यौहारा ❀ दमयन्ती सो करत बिचारा ॥
दमयन्ती दोउ बोले पठाये ❀ दासी संग रथ शालहि आये ॥
देखि सुतन कहँ जल भरि नैना ❀ बाहुक ते दासी कहँ बैना ॥
क्षुधावन्त बालक सुनि लेहू ❀ भोजन आनि कछुक इनदेहू ॥
तब बाहुक बालक कहँ दयऊ ❀ लै बालक अन्तःपुर गयऊ ॥
यह प्रसाद है मिष्ट प्रमाना ❀ निश्चय नल दमयती जाना ॥
तब दमयन्ती आई तहँई ❀ रथशाला बाहुक है जहँई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पिछले दुख की कथा चलाई ❀ सुनत रुदन कीन्हों नलराई ॥
रानी कह्यो कृपा अब करहू ❀ माया तजो रूप सो धरहू ॥
दो०-करकोटकको ध्यान धरि, जप्यो मंत्र शतआन ।
पूर्वरूप तब पायऊ, नलको तब पहिचान ॥
तबऋतुपर्ण चकित लखि भयऊ ❀ बहु विनती राजासन कियऊ ॥
क्षमा करो सब दोष हमारा ❀ मैं माया तब जानि न पारा ॥
तब नर भीभ अनुग्रह कीन्हों ❀ नृपऋतुपर्णको बहुसुखदीन्हों ॥
नलहिं पाइ तब हर्षित राजा ❀ आज्ञा भै तब बाजे बाजा ॥
सो ऋतुपर्ण बिदा तहँ भयऊ ❀ अवधनगर तब राजा गयऊ ॥
तब नरवर भूपति पशु धारा ❀ लै दल परिग्रह संग भुवारा ॥
जो ऋतुपर्ण सो विद्या पाये ❀ तब पुष्कर पर जुवा लगाये ॥
मंत्र यंत्र नल जेते जाई ❀ हारो पुष्कर नृप को भाई ॥
देश कोश साहस भंडारा ❀ रथगज द्रव्य जोहती अपारा ॥
जीते नल पुष्कर जोहारा ❀ फिरि क्रोधित ह्वै कहेउ भुवारा ॥
दो०-दमयंती के दासतुम, कुटुम्ब सहित हौ आन ।
कलिदुख हमकहँ दीन्हेऊ, तुमहिकहैकोजान॥
पुनि नल भे नैषध के राजा ❀ आज्ञा भई बाजे तहं बाजा ॥
अर्द्ध वसन रानी लै दीन्हें ❀ अर्द्ध फारि जो नलनृप लीन्हें ॥
राव देखि सो अतिदुख कियऊ ❀ बैठे राजा दुख बिसरयऊ ॥
धार्मिक नल तब धर्महि कीन्हों ❀ एक ग्राम पुष्कर को दीन्हों ॥
ऐसे राजा दुख सो पाये ❀ पुण्य वीर राजा कहवाये ॥
कहा दश्व मुनि पुनि अनुसारा ❀ सुनो युधिष्ठिर धर्म्म कुमारा ॥
यहिके सुने पाप तनु भागे ❀ व्याधि होयसो तनुनहि लागे ॥
दुखी सुन सब दुख मिटि जाई ❀ बन्दितहो त्यहि बन्दिछुड़ाई ॥
राज्य ते होन सो राज्यहि पावै ❀ जेहि दुख बहुत सहे सुखपावै ॥
होइहौं धम्मज तुमहुं भुवारा ❀ जो यह कथा सुनहु सुखसारा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० बृहदश्वमुनि भाषेऊ, धर्म्मराज सुख पाय।
नशै पाप तनु सुख बढै, नलचरित्र जो गाय ॥

इति श्री महाभारते सबलसिंहचौहान भाषाकृते बनपर्बणि युद्धिष्ठिर बृहश्वऋषिसम्बादेनलोपाख्यानोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

बहु दिन राजा तें बन रहेऊ ❀ इकदिन नारदमुनि तहँ गयऊ ॥
नारद कहि सम्बाद अपारा ❀ तीरथ बरत महामत सारा ॥
तेहि अंतर सुनि कै यह भयऊ ❀ लोमशऋषिपुनितेहिथल गयऊ॥
राजा देखत पूजा कीन्हेउ ❀ अर्घ्यपाद्य दै आसन दीन्हेउ ॥
लोमश कहेउ सुनहु भुवराई ❀ मो कहँ तुम ढिग इन्द्र पठाई ॥
इन्द्र लोक इक दिन पगु धारा ❀ देखा अर्जुन सभा मझारा ॥
सिखे शस्त्र अरु अस्त्र अपारा ❀ परम अनन्दित आहिं कुमारा ॥
पारथ हितै चिन्ता तुम पाये ❀ सुरपति ताते हमहिं पठाये ॥
कहन कुशल पारथ को राजा ❀ हम इत को आये यहि काजा ॥
सुनहु तहाँ हम जाते राऊ ❀ राजा सुनत परम सुख पाऊ ॥
सहित बन्धु नारी नरनाथा ❀ तीर्थराज को चलि मुनि साथा॥
धौम्य नाम प्रोहित संग लागे ❀ चले जात मन अति अनुरागे ॥
तीर्थराज के दर्शन कीन्हे ❀ परम हर्ष भूपति मन लीन्हे ॥
औरौं पुनि तीरथ है जेते ❀ परसे कहत न आवै तेते ॥
नैमिष वन काशी अस्थाना ❀ गया सुरसरी आदि बखाना ॥
सर्व तीर्थ परसे तब राजा * चित उद्वेग धनञ्जय काजा ॥
गंधमदन पर्वत भे पारा * गये बद्रिका श्रमहिं सुवारा ॥
बिंदुत सर तीरथ तब देखा * नाना वन पर्वत बहु लेखा ॥

दो०पुनि विंदुत सर तीर्थ महँ, पांचो जन अन्हाइ।
पुष्प पत्र फल शोभित, देखत तरुवर जाइ ॥

पूर्व और से पवन उड़ाई ❀ पुष्प एक तेहि सर महँ आई ॥
अहै सहस दलपुनि तेहि माहीं ❀ सुंदर बहुत सुगंधित आहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जल ते फूल द्रौपदी लीन्हा ❋ भीमसेन के आगे कीन्हा ॥
आई सो फूल देव के लायक ❋ सुनो वृकोदर हो मम नायक ॥
बेगि अनुग्रह मोपर कीजै ❋ यकशतपुष्प आनिमोहिंदीजै ॥
सुनि के बचन बृकोदर कहई ❋ देहो आनि शोच जनि करई ॥
धनुष बाण कर लैकर धाये ❋ जौने दिशिसो पवन ते आये ॥
चलो सिंधु सम भीम रिसाई ❋ गन्धमदन गिरि देखेउ आई ॥
सो पर्वत गहबर बन भारी ❋ नाना सर्प रहत बिषधारी ॥
नाना मोर नृत्य तहँ करई ❋ कोकिलकुहकिहरषिजिय भरई ॥

दो० छैयो ऋतु तहँ प्रगट शुभ, करत भँवर गुञ्जार ।
अमृतसमफललाग्यऊ, हरष्यो पवन कुमार ॥

बहु वन भीतर हरषि अपारा ❋ कुन्तीसुत जो पवन कुमारा ॥
तेहि बन विहरत भीमसो फिरहीं ❋ नादसिंहसम पुनिपुनि करहीं ॥
हने ग्राह मृग गेड़ा भारी ❋ क्रीड़ा कर इमि वनहिं मंझारी ॥
भगे जन्तु पुनि वन के नाना ❋ सिंह भालु मृग सबै पराना ॥
गर्जे भीम जन्तु सब भागे ❋ कलदी बन देखेउ यक आगे ॥
तोरेउ बृक्ष तौन बन नाना ❋ मिष्ट पाकफल करिसो पाना ॥
गरजे भीम करैं फल पाना ❋ जीव जंतु सब शंका माना ॥
तेहि बन माहँ रहैं हनुमाना ❋ शब्दसुनत सो करहु पयाना ॥
हनूमान तब देह बढ़ावा ❋ उज्जवल रूप अनूप सुहावा ॥

दो० बोले कुवचन भीम सो. वन तै कियो उजार ।
मोरे हाथहिं मरण तुव. भाष्यो पवन कुमार ॥

यह कुबेर बन सब जग जाना ❋ करत भोग यहकहँ हनुमाना ॥
हनू संग जो बन रखवारा ❋ दुओ वीर बल पुंज जुझारा ॥
तिन सब आइ कहीं यहबाता ❋ भयो भीम सुनि क्रोधतेताता ॥
धनुषवाण पुनिकर लै लीन्हेउ ❋ युद्ध बृकोदर बहुबिधि कीन्हेउ ॥
हते भीम जे वन रखवारा ❋ तब कुबेर पहँ जाई पुकारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मानुष एक गहैं धनु बाना ❋ कदलीबन कीन्हेउ खइकाना ॥
हनूमान तेहि बरजन ठाना ❋ सुना कुबेर आपु जो काना ॥
आई कुबेर हनू समुझाई ❋ कंगे बिरोध न तुम कपिराई ॥
देखौ तुम यह मानुष नाहीं ❋ मानुष वेष देव कोउ आहीं ॥
लेहु फूल खावौ फल नाना ❋ जेतिक मनमहँ होइ सुजाना ॥

दो० हनुमान यह सुनतही, क्रोधहि बहुत बढाय।
फूल काज बिधि भीम सो, कीन्हों ऐस उपाई ॥

हनूमान बोलेउ यह बानी ❋ सुनियेभीम बचन असजानी ॥
राम काज लगि मैं यक बारा ❋ लङ्का वीर बहुत सँहारा ॥
सागर लांघि लंक मैं जारा ❋ महिरावण पाताला सँहारा ॥
यह नेम मेरे मन माहीं ❋ मैं कछु प्रीति देखावत नाहीं ॥
इतना प्रेम आप कीरि लेई ❋ पाछे फूल जान लै देई ॥
यह हमार लँगूर जो आही ❋ ताते बात कहत तोहि पाही ॥
भूमि ते मम लँगूर उठावो ❋ लै कै फूल जान तब पावो ॥
सुनताहि भीम कोप जिय गह्यऊ ❋ टारन चित लगूँर सो करेऊ ॥
बायें हाथ गहेउ तब ताहीं ❋ नेकन डोला सो माहि नाहीं ॥
फिरि बल कीन्हों भीम जुझारा ❋ बज्र लँगूर टरत नहि टारा ॥

दो० गहेउ गदा कर भीम जो, धरो भूमि महँ ताहि।
दोनो कर लँगूर सो, गहो भीम कर माहिं ॥

हारेउ भीम करेउ बहु करणी ❋ कपि लँगूर न डोलत धरणी ॥
भीमसेन यह मन में जाना ❋ महाबीर ये हैं हनुमाना ॥
हार्यो भीम ठाढ़ होइ रह्यऊ ❋ हर्षि गति कपि बोलत भयऊ ॥
है प्रसन्न भाष्यो हनुमाना ❋ माँगो वर जो तुम मनमाना ॥
यह सुनि भीम कहन अस लागे ❋ अमृतबचनहनुमान के आगे ॥
जब कौरव कहँ मारग जाई ❋ तब कपि करियो मोरि सहाई ॥
राम काज कीन्ह्यउ जिमि भाई ❋ तैंसेई होयो हमार सहाई ॥
हनूमान बोले यह बाता ❋ भीमसेन सुनिये यह ताता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पारथ के रथ पर हम रहिहैं ❀ रक्षा करत अस्त्र सब सांहहैं ॥
ऐसे बचन कहे हनुमाना ❀ भीमसेन सुनिबहु सुखमाना ॥

दो० यह रहस्य राजा सुन्यो, हनू भीम व्योहार।
दूनो पवन पुत्र बल, कह सुनि हृदय विचार ॥

भयउ प्रसन्न कुबेर सुजाना ❀ भीमसेन लखि बहु सुखमाना ॥
लेउ फूल जेते मन भावै ❀ यहै हनू तब बात सुनावै ॥
सुनतहि भीम हर्षयुत भयऊ ❀ अपने गृह कुबेर तब गयऊ ॥
रक्षक कोउ बोलत कछु नाहीं ❀ तोरत फूल जौन मन माही ॥
बिहरत भीम हरषि मन माहीं ❀ सुमन सुगंधित तोरउ आही ॥
भीमसेन बन में बहु गरजै ❀ हाँक सुनत पशु पक्षी लरजै ॥
व्याघ्र सिंह अरु गज मतवारे ❀ गैंड़ा महिष अनेकन मारे ॥
भीमसेन के शंका भयऊ ❀ भागि जन्तु तेहि बनतेगयऊ ॥
जनमेजय तब हर्षित भयऊ ❀ बैशम्पायन कथा सो कह्यऊ ॥

दो० भीमसेन मन हर्षित. लीन्ह फुल करि हेत।
वशम्पायन भाषत, सुनिये भूप सचेत ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते वनपर्वणि
भीममहनुमानसंवादोनाम गञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

धर्मराज मन चिन्ता भयऊ ❀ कहँ मम बन्धु वृकोदर गयऊ ॥
जिय अकुलाइ मनो उर धरकै ❀ कुशकुन देखि वाम अंगफरकै ॥
निशि स्वप्ना लखि विस्मय राऊ ❀ कुशलक्षेम बिधिभीम मिलाऊ ॥
कहा धौम्य यह बचन बिचारी ❀ घटउत्कक्ष सुमिरण अनुसारी ॥
घटउत्चक आये नृप पासा ❀ का आज्ञा यह बचन प्रकासा ॥
तब राजा यह बोलत भयऊ ❀ गंधमादनगिरिभीम जो गयऊ ॥
नाना कुशकुन देखियत भाई ❀ ताते चित चिंता अधिकाई ॥
तिनउ बन्धु पुरोहित रानी ❀ राजा कह यह बचन बखानी ॥
सबको सुतलै चलिये तहँवाँ ❀ गंधमादनागिरि भीमहै जहँवाँ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनत हर्षि उठि कस्यो प्रणामा ❋ जो आज्ञा कहिये सो कामा ॥
दो० पांचो जने चढाइ पुनि, पीठि आपने आन।
गंधमदन पर भीम जह, कीन्हे तुरत पयान ॥
नाना वन सब देखत जाई ❋ घटउत्कच के ऊपर राई ॥
बहु इतिहास पंथकर अहई ❋ लिखे न जाई सूक्ष्म सो कहई ॥
गँधमादन पर्वत जेँहिं ठाँई ❋ धर्मराज प्रविशे तहँ जाई ॥
देखि धर्मसुत मन हरषाई ❋ करमे धनुष भीम के अहई ॥
अगणित रण महँ मोर बीरा ❋ वीर बृकोदर अभय शरीरा ॥
देखेउ राजहि पवनकुमारा ❋ करि प्रणाम तब बचन उचारा ॥
भीमहि देखेउ अद्भुत रचना ❋ लिये धनुष शर बोलेउ वचना ॥
देव समर सहाय कोउ नाहीं ❋ अस साहस सुत तोहिंन चाहीं ॥
सुनत भीम बहु लजा पायें ❋ घटउत्कच तव वचन सुनायें ॥
आज्ञा कौन मोहि यहि ठाऊँ ❋ रहौं कि निज आश्रम में जाऊँ ॥
आज्ञा पाई चरण शिर नायउ ❋ अपने थल घटउत्कच आयउ ॥
दो० रहे युधिष्ठिर तौन थल, चारि बंधु इक साथ।
करत हर्ष बहुत बनहिं, धर्मराज नरनाथ ॥
एक दिवस तहँ अचरज भयऊ ❋ मृगया हेतु बृकोदर गयऊ ॥
धौम्य पुरोहित लोमश तहँवाँ ❋ गे मज्जन हित सरवर जहँवाँ ॥
तीनों बन्धु द्रौपदी साथा ❋ आसन पर बैठे नरनाथा ॥
जरा नाम इक दैत्य सो अहई ❋ मनहिं विचारि तेहि सन कहई ॥
तहँ तीनो जन पीठि चढाई ❋ पवन वेगलै चला उड़ाई ॥
धर्मराज बोले यह बानी ❋ पाप कर्म कहकर यह अज्ञानी ॥
हमको लिये जात केहि काजा ❋ बहुतति ताहि बुझायउ राजा ॥
धर्म कथा सुनि भूपति पाहीं ❋ हँसेउ दुःख सुनि मानत नाहीं ॥
घोर धर्म कह लंपट नाना ❋ निसरत काम न सबको उजाना ॥
दो० छोड़ै ताहि न दैत्य सो, लैकर चलो उठाइ।
पर्वत कंदर घोर वन, दानव लीन्हें जाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जानि दुष्ट तेहि धर्म भुवारा ❋ ऊँचे स्वर बहु करी पुकारा ॥
येहो भीम गयो कह भाई ❋ परो दुःख हम उपर आई ॥
आरत नाद जबै सुनि पायो ❋ लैकर गदा बृकोदर धायो ॥
दूरिहि ते तब भीम निहारा ❋ लिये जात सो धर्मकुमारा ॥
तब सहदेव भूमि पर आयो ❋ कूदि हाँक तब ताहि सुनायो ॥
तबहि बृकोदर धावत आवा ❋ गदा हाथ करि गर्जि सुनावा ॥
दैत्य अशंक मानि नहिं शंका ❋ हांकत वीर क्रोध करि बंका ॥
तबहिं द्रौपदी धर्मकुमारा ❋ पीछे नकुल बीर बरियारा ॥
इन कह तुरत भुमि बैठावा ❋ दैकर हांक भीम पर धावा ॥
भीम कही निज मरण के काजा ❋ पापी लै भागे सुतराजा ॥

दो० आजु मारि तोहि एकसर, पठवौं यमके पाहिं।
यह कहि गदा घाव तोहि, दीन्हौंमस्तकमाहिं॥

गदा घाव तब भीम सँभारा ❋ तबहीं खल यक बृक्ष उपारा ॥
मारो बृक्ष भीम पर जाई ❋ मारो गदा भीम पलटाई ॥
दोनों वृक्ष युद्ध परिहारा ❋ मल्लयुद्ध तह पुनि विस्तारा ॥
दोनों वीर लरैं बरजोरा ❋ करै युद्ध मानो घन घोरा ॥
कंपमान धरणी मह होई ❋ प्रलय काल आवै जनु सोई ॥
मुष्टिक एक भीम तब मारा ❋ छाड्यौ दैत्य प्राण तेहिबारा ॥
परम हर्ष भो धर्मकुमारा ❋ और अनदिन्त भे परिवारा ॥

दो० आशिर्वादहि देत मुनि, राजा सूंघत माथ।
भुज पूजत लोमशऋषी, हरषि आपने हाथ॥

परम हर्ष राजा तब पाये ❋ कहि संक्षेपहि भारत गाये ॥
पुनि सब मिलिकैकीन्ह विचारा ❋ बद्रिकआश्रम गे तिहि वारा ॥
नाना पुष्प रम्य अस्थाना ❋ रहे हर्षि वन राव लोभाना ॥
संवत चारि बीति इमि गयऊ ❋ पञ्चम वर्ष उपस्थित भयऊ ॥
यही प्रकार रहे वन राऊ ❋ धौम्य आदि मुनि भोजन पाऊ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० नाना ज्ञान कथा तहां, राजा करहिं प्रकास।
चारि बंधु हैं संग तहं, और द्रौपदी पास ॥

इति श्री महाभारते सबलसिंहचौहान भाषाकृते वनपर्वणि जरादैत्यवध बदरिकाश्रमउपस्थितनाम षष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥

कछुदिन राव बीति इमि गयऊ ❋ धौम्य पुरोहित ते नृप कह्यऊ ॥
पारथ बिन देखे मुनिराई ❋ मम चित चंचल रहैं सदाई ॥
पंचम वर्ष खोज अब करई ❋ अर्जुन देखेउ जल दृग ढरई ॥
पूरव कहयो पार्थ यह बानी ❋ पंच वर्ष उपदेशौं आनी ॥
धवलाचल पर दरश हमारा ❋ निश्च पैहौं धर्म मुवारा ॥
चलौं सो पर्वत देखौं जाई ❋ पारथ दरश हेत कहँ राई ॥
प्रोहित साहित द्रौंपदी रानी ❋ तीनों बन्धु अरु लोमश ज्ञानी ॥
कीन्ह विचार चले सब तहंवां ❋ पर्वत धवल आइ पुनि जहंवां ॥
लोमश धौंम्य संग त्रिय भाई ❋ ज्ञान कथा बहु वर्णत जाई ॥
प्रथम गन्ध मादन गिरि देखा ❋ पूरण वारि राव अवरेखा ॥
सोहैं माल पृष्ठि तेहि पासा ❋ धवला पर्वत परम प्रकासा ॥
फटिकशिला तहँ देखत भयऊ ❋ दानव घोर तहां पुनि रह्यऊ ॥

दो० रक्ष यक्ष दानव बहुत, सब कुबेर के दास।
सो परबत देख्यौ तहां, पुरी कुबेर प्रकास ॥

देखी भीम तहं राक्षस जेते ❋ वेगिहि भीम संहारेउ तेते ॥
तबहिं कुबेर मर्म सब पाये ❋ युद्ध हेतु तब आपु सिधाये ॥
तबप्रणाम करि धर्म कुमारा ❋ शुद्ध वचन कहि युद्ध निवारा ॥
हर्षित हैं कुबेर पहं गयऊ ❋ धर्मराज तेहि पर्वत रहयऊ ॥
अर्जुन देवलोक महं रहऊ ❋ अस्त्र अनेक सुरन ते लहेऊ ॥
देवन केर शत्र जे पाये ❋ मारि सकल यमलोक पठाये ॥
जासों देव युद्ध मो हारा ❋ सो मारे सब पाण्डु कुमारा ॥
होइ सन्तुष्ट देव बर दयऊ ❋ क्रीट अस्त्र तब वासव दयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

समय एक तहं सो सुर आई ❀ बैठि सभा महं सभा बनाई ॥
यम कुबेर जलपति वैसन्दर ❀ बैठे और अनेक मुनिन्दर ॥
दो० तब अर्जुन कहं गोदलै, बैठे देव भुवार।
नृत्य करत तहं नर्त्तकी, हर्षित सभा मंझार ॥
नाम उर्वशी देव अपसरा ❀ नृत्य करत सो सभा मंझारा ॥
वीणा ताल मृदग बजाये ❀ नाना रूप नृत्य लव लाये ॥
इंद्र गोद सोवत बलवाना ❀ मानो दूसर इंद्र समाना ॥
पारथ देखि उर्वशी नारी ❀ पीड़ित काम स्वरूप निहारी ॥
काम भाव तेहि अवसर भयऊ ❀ नृत्यगीत बहु बिधि तेहि ठयऊ ॥
प्रीति सहित अर्जुन तेहि हेरा ❀ सो सुरपति देखेउ तेहि बेरा ॥
जो उर्वशी तुमहिं वश करेऊ ❀ तौनत्रिया सुत तुम कहं दयऊ ॥
अर्जुन कहो जाइ जो हारा ❀ इनते प्रकटो वंश हमारा ॥
उठ्यो अखारा नृत्य सेराना ❀ अपने गृह सुर कियो पयाना ॥
सुरपति गे अपने अस्थाना ❀ निज थल गे पारथ बलवाना ॥
अर्द्ध निशा बीती सो ठाई ❀ तेही समय उर्वशी आई ॥
अर्जुन के मन्दिर पगु धारा ❀ देखे लगे कपाट दुवारा ॥
बहुत यत्न करि खोलि किवारा ❀ अर्जुन कह त्रैवार पुकारा ॥
दो० चेत पाइ अर्जुन तब, मन में करैं विचार।
अर्द्धरात्रि किमि उर्वशी, आई निकट हमार ॥
कहै धनजय वचन विचारी ❀ मम ढिग केहि हित आई नारी ॥
अर्द्धरात्रि बीति पूनि गयऊ ❀ निद्रा वश्य देव सब भयऊ ॥
जो कछु दुख है चित तुम्हारा ❀ कहो प्रात सो करौं उधारा ॥
राति जाउ अपने गृह नारी ❀ पुरुष पियार एक की नारी ॥
पारथ बात सुनी जो नारी ❀ मोहिं मदन कर है अनुसारी ॥
हृदय समानो रूप तुम्हारा ❀ काम व्यथा तनु जरत हमारा ॥
सुनत धनञ्जय विस्मय माना ❀ त्राहि त्राहि करि मूँदेउ काना ॥
एक ब्राह्मणी दुजे सुरनारी ❀ इन्द्र अप्सरा मातु हमारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ऐसी बात अपने मुख माहीं ❀ भूलिहुबातजानिकहुमोहि पाहीं ॥
सुनत उर्वशी व्याकुल भयऊ ❀ दुःखित ह्वै पारथ ते कहेऊ ॥
दो० हम आई तुमआश करि, सो तो भई निराश ।
जानेउ अहौ नपुंसक यह कहबचन प्रकाश ॥
जब यह शाप पार्थ कह दीन्हा ❀ ह्वैउदासनिज गृहमग लीन्हा ॥
पारथ चित्त भयउ परितापा ❀ पाप किये बिन पायउ शापा ॥
होतहि प्रात उदित भे भाना ❀ बैठी सभा इन्द्र सुर नाना ॥
प्रात होत पारथ तहँ जाई ❀ हाथ जोरि तब कह्यउ बुझाई ॥
काल्हि नृत्य जो नारी कीन्हा ❀ निशिको शाप हमै तेहि दीन्हा॥
होउ नपुंसक दीन्हों शापा ❀ ताते मो मन भा सन्तापा ॥
सुनि के इन्द्र महा दुःख पावा ❀ तुरत सभा में ताहि बुलावा ॥
इन्द्र कह नारी कह कीन्हा ❀ मो सुत कहा शाप तैं दीन्हा ॥
सुनत उर्वशा लज्जा पाई ❀ हाथ जोरि तब बिनय सुनाई ॥
मेरो शाप होय उपकारा ❀ क्रोध न कीजै देव भुवारा ॥
दो० होइ इक वर्ष नपुंसक, नृप विराट के देश ।
संवत बीते शाप ते, होइहौ मुक्त सुवेश ॥
यह वर तब पारथ कह दीन्हा ❀ अपने भवनगमनतब कीन्हा ॥
तबहि इन्द्र पुत्रहि समुझाई ❀ देव अस्त्र दीन्हेउ बहु आई ॥
कुण्डल कवच इन्द्र तब दीन्हों ❀ भाषेउ सुनिअर्जुनशुभकीन्हों ॥
मिलि सब देव शंख यक दीना ❀ जाके नाद शत्रुबल हीना ॥
पाँच वर्ष सुरपुर महिं भयऊ ❀ पारथ तबहि इन्द्रसो कह्यऊ ॥
आज्ञा दीजै इन्द्र भुवावरा ❀ परसौं पद कहँ धर्म भुवारा ॥
सुनि कै इन्द्र तुरत वर दयऊ ❀ तब रथ मातलिसाजत भयऊ ॥
भेंटि सकल सुर चढे विमाना ❀ मृत्युलोक कह कियो पयाना ॥
रथ प्रवेश करि आयउ तहँवाँ ❀ धवल शिखरपर गजा जहँवाँ ॥
धर्मराज पारथ कहँ देख्यउ ❀ पुनिंनिजजन्मसफलकरिलेख्यउ।
पारथ जाय चरण नृप गह्यऊ ❀ पूछी कुशल हर्ष बहु भयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० सर्व कथा बिस्तार से, पारथ किया बखान।
राजा आगे सहित बिधि, बरणयोबंधु सुजान॥
जेहि बिधि शंकर दर्शन पाये ❀ जिमि किरात ह्वैहर तहँ आये॥
जैसो युद्ध भयो तेहि ठावा ❀ सुरपति जैसे दर्शन पावा॥
जैसे रथ चढि स्वर्गहि गयऊ ❀ जैसे अस्त्र लाभ तहं भयऊ॥
शाप उर्वशी जिमि वर दीन्हा ❀ जैसे देव अस्त्र सब लीन्हा॥
धर्मराज कहँ सबै जनायो ❀ राजा धर्म हर्ष तब पायो॥
तेही समय इन्द्र तहँ आये ❀ धर्मराज ते कहि समुझाये॥
सर्वजीत वर जबहीं दीन्हा ❀ अन्तर्द्धान इन्द्र तब कीन्हा॥
तबहीं मातलि रथ लै गयऊ ❀ धर्मराज आनन्दित भयऊ॥
पुनि यहकथासोऋषिहिसुनायें ❀ घटउत्कच तेहि अवसर आये॥
करि प्रणाम सब के पद वन्दे ❀ कहे वचन तब परम अनन्दे॥
दो० देश छोडि करि राजा, आये दूरि पयान।
चलो सब काम्यकवनहि, हर्षित भये सुजान॥
सुनत बात यह सब मन भाये ❀ तब सबकहफिरि पीठि चढाये॥
सबको ले काम्यक वन आये ❀ रहे तहा आनद बहु पाये॥
काम्यकवनहि बहुत दिन गयउ ❀ परम अनदिन्त सब जन रहउ॥
तहा बहुरि आये यदुनाथा ❀ मिले आइ० पांडवसुत साथा॥
मिले कृष्ण पुनि धीरज दीन्हा ❀ द्वारावती गमन पुनि कीन्हा॥
अग्यन्तर तब कथा सुनाये ❀ मार्कंडये महा पुनि आये॥
बहु सम्बाद तहा मुनि कीन्हों ❀ सो संक्षेप कहन मैं लीन्हों॥
ऐसे पाण्डव वन यह रहऊ ❀ कथा प्रसंग धर्म तब कहेऊ॥
दो० पंच बन्धु अरु द्रौपदी, रहे पाडुवन माह।
भारत पुण्य कथा यह, जनमे जयनरनाह॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंह चौहान भाषाकृते वनपर्वणि अर्जुन बरप्रोक्तोकाम्यकवनआगमनंनाम सप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ऐसे पाण्डव वन सुख पाये ❋ दूत जाय कुरुनाथ सुनाये ॥
काम्यक वन महँ पांचौ भाई ❋ तबहिं बिचार करैं शत भाई ॥
कर्ण दुशासन शकुनी राजा ❋ मंत्र कुमंत्र करैं सब काजा ॥
वनोवास पाण्डव दुख नाना ❋ वल्कलवसन करैं परिधाना ॥
माथे जटा तपी के वेशा ❋ देखिय शत्रु कियो उपदेशा ॥
देखन जाई द्रौपदी पासा ❋ सब मिलिकै करिबे उपहांसा ॥
दुखमं शत्रु देखिये राई ❋ यातै आनँद और न भाई ॥
दुर्योधन दल साज करायो ❋ भीषम द्रोण भेद नहिं पायो ॥
और सब रथ पैदल साजा ❋ चले हर्षि दुर्योधन गजा ॥
काम्यक वनमें पहुंचे जाई ❋ देखत ताहि हर्ष बहु पाई ॥

दो० काम्यक वन देखा तबै. एक सरोवर आहिं ।
देवरु किन्नर गन्धरव, क्रीडा करैं तोहि माहिं ॥

देव चरित्र सुनहु सज्ञाना ❋ कुरुपतिको होइहै अपमाना ॥
नाम चित्ररथ गँधरव राऊ ❋ स्त्री सहित सरोवर आऊ ॥
पत्निसहित सो क्रीड़त भयऊ ❋ वाही थल दुर्योधन गयऊ ॥
दुर्योधन लखि लज्जा पायो ❋ क्रोधवन्त गन्धर्व सुनायो ॥
अरे मूढ़ त्वहिं यह हंकारा ❋ ताकर फल तुम लह्यउ भुवारा ॥
हाथ अस्त्र वह गंधरव नाना ❋ दियो तिनहिं आज्ञा परमाना ॥
मारु मारु यह आयसु दीन्हे ❋ अस्त्र गहेसो धरि सब लीन्हे ॥
भयउ युद्ध सो क्रोधित होई ❋ गंधरव मानुष समनाहिं कोई ॥
कुरुदल सब पराभव दीन्हा ❋ यह लखि कर्णक्रोध तबकीन्हा ॥
हाथ अस्त्र लैके तब धाये ❋ गंधरव दलमें बाण चलाये ॥

दो० गंधरव दलमें बाण बहु, भयो भूमि अंधियार ।
ऐसे मारे कर्ण बहु. क्रोधित बाण अपार ॥

गंधरव सबै पराभव कीन्हें ❋ क्षत लागे तब जात न चीन्हें ॥
मारउ कर्ण खैंचि कर तीरा ❋ चल्यउ रुधिर गंधर्व शरीरा ॥
अस्त्र अनेक करत परिहारा ❋ रुण्ड मुण्ड गन्धर्व संहारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

काहू हाथ कटेउ अरु पाऊ ❋ काहू केर हृदय महँ घाऊ ॥
रुधिर नदी गंधरव रण भयऊ ❋ भागे सब मार्ग तब लयऊ ॥
भागे सब कहँ खोज न पाये ❋ पाछे देखत कर्ण सिधाये ॥
देखि पराभव इन्द्र कुमारा ❋ हाथ धनुष शर तब परचारा ॥
तब गन्धर्व दुशासन मारा ❋ मेरो दुशासन भुवि असभारा ॥
रथते दुश्शासन भुई आये ❋ लज्जावन्त महा भय पाये ॥
कर्ण के संग तब रण ठाना ❋ महावीर दोउ एक समाना ॥

दो० क्रोधवन्त गन्धर्व अति, मारे बाण प्रचण्ड ।
करण सँभारि सक्यउ नहीं, कटे छत्र अरु दंड ॥

मारे रथ सारथि संहारा ❋ हाथ धनुषगहि करण भुवारा ॥
मारे तब गँधरव शर नाना ❋ शस्त्र तेज रज भयो निदाना ॥
कुण्डल सबै पराभव दीन्हा ❋ दुर्योधनहिं बाँधि पुनि लीन्हा ॥
पाण्डव कर बैरी मैं जाना ❋ रहौ तोहिं दुख देहौं नाना ॥
कुरुपति कहँ बाँधे लिये जाई ❋ देखेउ भीमसेन तब आई ॥
देखि हर्षि मन आये तहंई ❋ रहे धर्मसुत पुनि जेहि ठहंई ॥
जोरि हाथ राजासन कहई ❋ ऐसे दुःख दुर्योधन सहई ॥
दुर्योधनहिं बाँधि लै जाई ❋ चलिकै राज्य करौ सब भाई ॥
महा अधार्मी शत्रु भो नाशा ❋ मिल्यो राज्य तुवबिनहिंप्रयासा ॥
तबहिं राव यह कहो बखानी ❋ कैसे नाश भयऊ अज्ञानी ॥

दो० कौन प्रकारहि हेतु कहु, कैसे शत्रु बिनाश ।
सो सब मम आगे कहौ, कीन्यों भीम प्रकाश ॥

कही भीम राजहि समुझाई ❋ गा अखेट दुर्योधन राई ॥
विधि रचनाते गँधरव अयऊ ❋ युवती संग सर क्रीडा ठयेऊ ॥
देखा तह दुर्योधन राऊ ❋ गंधरव गण रण तहां उपाऊ ॥
कर्ण आदि सेना सब भागी ❋ छांड़ो राजहि परम अभागी ॥
गंधरव राज महाबल करेऊ ❋ दुर्योधनहि बांधि लै गयऊ ॥
सुनत धर्मसुत बिस्मय भयऊ ❋ भीमसेनते यहि विधि कहाऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नीति शास्त्र नहिं जानत अहहू ❀ मूरख रूप सदा तुम रहहू ॥
तब पारथ ते यह कहि राजू ❀ लेउ छुडाइ सुयोधन आजू ॥
बंधु बंधुसों कलह प्रमाना ❀ बंधु बंधुको बल जग जाना ॥
तुमहीं तुरत लयावहु भाई ❀ गँधरव कहँ तुव दे बिलचाई ॥

दो० जो गंधरव छाँडै नहीं, तौ तोहि करब सँहार ।
मारि निपातौ धरणि पर, कुरषाति लेहु उबार ॥

आज्ञा सुनि पारथ तहँ जाई ❀ हांक दई गंधर्वहि आई ॥
देखत पारथ गंधरव नाना ❀ शीघ्रवन्त तब करेउ पयाना ॥
तब बिचार गंधर्वन कीन्हा ❀ दुर्योधनहिं डारि तब दीन्हा ॥
तब पारथ अस बाण चलाये ❀ भूमि स्वर्ग सोपान बनाये ॥
बाणन पर लै राजा आये ❀ धर्मराज के दर्शन पाये ॥
धर्मराज यह कहि सो लीन्हा ❀ यहगतितुमहिकहौक्यहिकीन्हा ॥
ऐसो गर्व करिय जनि भाई ❀ जाते अपनो मान गवांई ॥
दुर्योधन सुनि लजा पाई ❀ मरण हेतु कछु करेउ उपाई ॥
तबहीं राज बोध बहु कीन्हा ❀ मर्म वचन कहि धीरज दीन्हा ॥
हम तुम भाई एक समाना ❀ तोर मोर एक अपमाना ॥

दो० हम तुम एकै बंधु हैं, ताते कहा विचार ।
यह सुनि पायां सुख अमित. पापी कुरूभुवार ॥

राजा कह यह वचन सुनाई ❀ मांगो वर पावउ तुम भाई ॥
धर्मराज बोले सुसकावा ❀ दुर्योधन नृपसों यह बाता ॥
अवसर पाइ सुनो नृप जबहीं ❀ तुमते वर मांगब हम तबहीं ॥
कह्यउ सत्य राजा तब गयऊ ❀ कुरुदल तेज हीन सब भयऊ ॥
राजा धर्म बही वनवासा ❀ पूछहिं तपसिन सहित हुलासा ॥
केतक काल रहे सुख पाई ❀ एकदिना जयद्रथ तहं आई ॥
अर्जुन भीम राव के संगा ❀ माद्रीसुत दूनौं रण रंगा ॥
मंजन हेतु सरोवर जाई ❀ तहीं समय दुष्ट सो आई ॥
देखि अकेलि द्रौपदी रानी ❀ लै हरि के भाग्यउ अज्ञानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तौने समय पार्थ तह आये ❀ देख्यो चरित क्रोध जिय पाये ॥
दो० भीम सहित पारथ बली, भेट्यउ दुर्मति जाय।
भीम पछारो तासु को, परा भूमि महँ आय ॥
दूनौ कर शिर केश उपारा ❀ बाँधे बोझ समान भुवारा ॥
श्वासा हीन रह्यउ तन माहीं ❀ ऐसे लाय धर्मसुत पाहीं ॥
राजा देखि दया मन भयऊ ❀ छाँड़िय यह आज्ञा नृप दयऊ ॥
जो कोइ पाप करै जग माहीं ❀ बिन भुगत छुटत सो नाहीं ॥
धर्मकथा कहि ताहि सुनायो ❀ दया धर्म भाषै मन लायो ॥
पाप कर्म को फल तब पावै ❀ नरक माहिं परलोक नशावै ॥
ऐसे ज्ञान बोध समुझावा ❀ करि प्रबोध अस्नान करावा ॥
तब आज्ञा दै धर्म नरेशा ❀ गयो दुर्मति सो अपने देशा ॥
दो० धौम्यनाम प्रोहित तहाँ धर्म राज के साथ।
बारह संबत पूरभे, कहौ बात नरनाथ ॥
अब अज्ञात वर्ष परमाना ❀ कहाँ रहउँ सो करहु बखाना ॥
कुरु के दूत फिर सब ठाऊँ ❀ कहौ दुरौं सो कहौ उपाऊ ॥
जो कोउ लख गुप्त दिन माहीं ❀ बारह वर्ष फेरि बन जाहीं ॥
तौ हमार दु ख छूटत नाहीं ❀ रहिये गुप्त कौन वन माही ॥
यह बिचारि मन रोदन कीन्हा ❀ हम बिधाता बहु दुख दीन्हा ॥
धौम्य नाम प्रोहित तह आई ❀ धर्मराज ते कह समुझाई ॥
तुम तौ धर्म रूप हौं राऊ ❀ बिपतिकाल का:र कस आऊ ॥
सुख दुख व्यापक है संसारा ❀ चित्त धीर्य्य करु पांडु कुमारा ॥
माया विष्णु गुप्त है राजा ❀ गुप्त रूप देवन कर काजा ॥
वामनरूपछल्यउ बलि राऊ ❀ देव काज कीन्ह्यउ परभाउ ॥
दो० राम रूप माया धनि, रावण कीन्ह सँहार।
चित चिन्ता केहि हेतु कर,सुनिये धर्मभुवार ॥
यहि प्रकार प्रेरित समुझाये ❀ तबहिं धीर राजा मन आये ॥
पाँच बन्धु अरु प्रोहित संगा ❀ करत जहां बहु कथा प्रसंगा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जयद्रथ बहु लज्जा जिय पावा ❋ पार्थ भीम अपमान करावा ॥
लाजवन्त हर सेवा ठाना ❋ गंगाधर को कीन्हों ध्याना ॥
बहुत प्रकार तपस्या करेऊ ❋ पाइब जीती मन महँ धरेऊ ॥
होई प्रसन्न तब शंकर आये ❋ माँगु माँगु वर वचन सुनाये ॥
करि प्रणाम जयद्रथ कहई ❋ जीता पाँच पाण्डवन चहई ॥
गंगाधर बोले यह बानी ❋ पारथ तन मन शाँरंगपानी ॥
चारिहु बन्धु जीतिहौ राऊ ❋ पारथ कह जीते नहिं पाऊ ॥
यह बर तो गंगाधर दीन्हो ❋ जयद्रथ हृदय हर्ष बहु कीन्हो ॥
यह बनपर्व कही मै गाई ❋ रहे बनै महँ धर्म्मज राई ॥
जे फल तीरथ कीर अरु दाना ❋ सिन्धु आदि सरिता अस्नाना ॥
जे केदार बद्रिकाश्रम जाये ❋ जगन्नाथ के दर्शन पाये ॥
नाना दुख ब्रतकरि जो सहई ❋ सो वनपर्व सुने फल लहई ॥

दो० कहि वनपर्व कथा यह, सुनु जनमेजय राय ॥
पुण्य कथा श्रीभारते, सबलसिंह कहि गाय ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते बनपर्वणि पाण्डव गंधर्वदुर्योधन युद्धवर्णनंनाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥ इति तृतीय वनपर्व समाप्तः ॥

—❋*❋—

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

॥ विराट पर्व ॥ ४ ॥

दो० कहे सकल वन पर्व के, ऋषि नरेश को ठाट।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषत पर्व बिराट॥
धर्मराज तब विकल व्है, सुमिरेउ ब्यास मुनीश।
नाशन दास कलेश हित, आये इमि जगदीस॥

दण्ड प्रणाम नृपति उठिकीन्हा ❋ मुनि वरबिहंसिलायउरलीन्हा ॥
चारिउ बन्धु द्रौपदी रानी ❋ परसेउ चरण ब्यास के आनी ॥
आय दीन मृग चर्म बिछाई ❋ चरण धोय बैठायो आई ॥
पातनको ब्यंजना कर लीन्हो ❋ पवनकुमार पवन तब कीन्हो ॥
भोजन तब लै आई रानी ❋ नकुलदीन्हजलभाजनआनी ॥
करि भोजन ऋषि शयन अन्नदे ❋ सहदेव आय चरण तब बन्दे ॥
कह्यो राउ नयन भरि वारी ❋ भलेहिनाथममसुरति विसारी ॥
कह्यो कलेश वरणि नहिं आवा ❋ अन्ध सुवनमोहिंबहुतसतावा ॥
कपट रूप को भूमि छुड़ाई ❋ सबहिं बोलाय सुनाय कराई ॥

दो० द्वादश वर्षै जाइ कै, बिपिन बसेरो लेइँ।
खोजन पावहिं तेरहीं, नहीं राज्य हम देइँ॥

जो हम शोध तेरहीं पावैं ❋ द्वादश वर्ष बहुरि वन जावैं ॥
मोहित दुरन बतावहु ठाऊँ ❋ कहिवन कौनदेश ऋषिजाऊँ ॥
खोजत बर्ष मध्य जो पैहै ❋ बहुरि वनै कुरुनाथ पठैहै ॥
आज्ञा देउ रहौं तहँ जाई ❋ जहँसुखहोइ दुःखकटि जाई ॥
जाउँ तहाँ जहँ मोहिं छिपावै ❋ कहुं कुरुनाथ खोजनहिंपावै ॥
कहेउ ब्यास नृप सुनहु विचारा ❋ है नहि अन्त छिपाव तुम्हारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

त्यागहु पकरि आड़ सेवकाई ❋ नृप विराट गृह रहौ छिपाई ॥
सत्य वचन सुनु भूप हमारा ❋ तहँ कटि जैहै काल तुम्हारा ॥
करौ बिचार नृपति अब सोई ❋ भीतर वर्ष न जाने कोई ॥

दो० जाइ रहो वैराट में, जहाँ न जाने कोइ ।
काल काटै विपदा घटै, अधिक अधिक सुख होइ ॥

जैहै बीति विपति सुख पैहो ❋ नृपति फेरि धरणीपति ह्वैहौ ॥
जाइ रहौ तुम देश पराये ❋ रहिहौ सबसन शीश नवाये ॥
ओछी पूरी कहै जो कोई ❋ सहियो बिलगनमानेबकोई ॥
मद साधे नृप ताक दुराये ❋ रह्यो जाति औ नाम छिपाये ॥
हीन रूप ह्वै रह्यो भुवारा ❋ यामे होइ छिपावत तुम्हारा ॥
बोले राउ जोरि युग पानी ❋ नामसकलऋषिकहौवखानी ॥
आपुस में कहिये हम सोई ❋ होई दुवार न जानै कोई ॥
नृप के बचन सुनत सुख पाये ❋ व्यास सबन के नाम बताये ॥
कङ्क नाम भूपति को भाखा ❋ नाम जयन्त भीम को राखा ॥

दो० नाम धनञ्जय को कह्यो, वृहन्नड़ा ऋषि व्यास ।
सेनी सहदेवहि कह्यो, सकल गुणान की रास ॥

बाहुक नाम नकुल को फेरा ❋ सैरन्धरी द्रौपदी केरा ॥
काटहु कलह जाय नर देवा ❋ गर्व छाँड़ि कीजै सब सेवा ॥
छाड़ि क्रोध रहियो तुम राजा ❋ आयसुपाइकरहु नित काजा ॥
कबहुँ न करहु गर्व अपकारा ❋ सेयहु नृपति समेत बिचारा ॥
रह्यो सदा सबके रुख राखे ❋ परम अधीन दीन वच भाखे ॥
निश दिनकरेहुनयनलखिकाजा ❋ जाते रहै प्रसन्नित राजा ॥
भीम आदि बरजेउ सब भाई ❋ जानि काहू सन करहिं लड़ाई ॥
भेय प्रगट जानहिं कुरुराजा ❋ होइहैं नृपति तुम्हार अकाजा ॥

दो० यहि विधितब बहुशिष देय, गये व्यास ऋषिराज ।
सोई मन्त्रन में धर्यो, मनसा बाचा काज ॥

पाई परम सीख भूपाला ❋ बसेकछुकादिनतेहिप्रणशाला ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नित प्रति सकलअहेरसिधावहिं ❋ खगमृगअमित मारिलै आवहिं ॥
धौम्य सहित ऋषिसहसअठासी ❋ भोजन करहिं सहज सुखरासी॥
एक दिवस नृप निकट बोलाये ❋ कह्यो व्यास सोइबचनसुनाये ॥
हम अज्ञात बास अब करिहैं ❋ मिले न सुधि तेहि देशदैरिहैं ॥
वंश पुरोहित मम हितकारी ❋ कौकहो भलि चहौ हमारी ॥
संवत बादि मिलेउ मोहिं आई ❋ महि पर्यटन करौ तुम जाई ॥
यह कहि नयन नीर भरि आये ❋ बिदा करतनृपअति दुख पाये ॥
सकल ऋषिनकरि दण्ड प्रणामा ❋ बिदा कियेकहिकहिसब नामा ॥
चले सकल मिलिआशिष दीन्हा ❋ नैमिषाविपिनबास तिन कीन्हा ॥
करि आते कष्ट करहिंजप योगा ❋ करुगा सहितकरहिंप्रिययोगा ॥
कथा विचित्र महामुनि कहेऊ ❋ जनमेजयमुनिसुनिसुखलहेऊ ॥
मुनि सुन प्रश्नबहुरि नृप कीन्हा ❋ किमि अज्ञातवासउन लीन्हा ॥

दो० व्यास सीखता ऋषि कह्यो, भा मनभूप उचाट।
पांच बन्धु संग द्रौपदी, आये नगर विराट ॥

सरवर निकट बैठ मत लीन्हा ❋ कहेन छिपाइय तनके चीन्हा ॥
पुर ते कछुक दूरि वन रहेऊ ❋ अन्ध कूपता भीतर रहेऊ ॥
शमी वृक्ष ता मध्य विराजा ❋ ताके निकटगयउ चलि राजा ॥
अस्त्र सनाह वसन वर त्यागी ❋ शमी वृक्ष राखेउ बड़ भागी ॥
भीमसेन यक मृतक लै आई ❋ बृक्ष मध्य दीन्हों लटकाई ॥
अब तरु भयउ निकंटक सोई ❋ याके निकट न अइहैं कोई ॥
यह कहि फिरि सरवर तट आये ❋ नृपति आपु द्विज रूप बनाये ॥
सबहिं राखि तहं चलेउ नराधा ❋ गयो प्रथम तब नगर विराटा ॥

दो० दरवानी द्विज देखिकै, अद्भुत रूप विलोकि ।
करयो नगर पैसार नृप, द्वार सके नहिं रोकि ॥

पैठत नगर शकुन नृप भयऊ ❋ भीमसेन सहदेव ते कहेऊ ॥
कैसे शकुन होत ये भाई ❋ हमहिं गणित करि देहुबताई ॥
ऐसे लक्षण मैं पहिचाने ❋ होइहैं काज सकल मन माने ॥
मिलि बाल बालक मग लीन्हें ❋ धेनु बाल प्यावत सुख कीन्हें ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुख महं दिवस बीतिहैं नीके ❀ है हैं काज महीपति जीके ॥
अशकुन एक होत है भीमा ❀ यह शोच आवत है जीमा ॥
लीलै मूष वाम मंजारी ❀ बीतेकछु दिन कलह पछारी ॥
सत्वर बन्धव चारि ठयऊ ❀ राज सभा चलि भूपति गयऊ ॥
द्विजको रूप महीपति कीन्हें ❀ अक्षमाल शिर चन्दन दीन्हें ॥
लकुटि पाणि पुस्तकी सोहाई ❀ सभा मध्य पहुंचे सो जाई ॥

दो० दीन्ह अशीश ऋषीश तब, भेंटयो सहित सनेह ।
उठि विराट नृप विप्रलखि, शिरनायोयुगनेह ॥

कह नृप विप्र कहां ते आये ❀ धर्मराज तुम पास पठाये ॥
कहेउ वचन मो चलती बारा ❀ करिहैं नृप प्रतिपाल तुम्हारा ॥
हम पर परम अवस्था आई ❀ काटहु दिन विराट गृह जाई ॥
मो सन बचन कहेउ यहसांचो ❀ गिरिवर गुहा पैठि गये पांचो ॥
जाहु विराट महीपति पासा ❀ उहां तुम्हैं सब भांति सुपासा ॥
ब्राह्मण नृपति युधिष्ठर केरा ❀ जानौ सब गुण ज्ञान निबेरा ॥
धर्मसुवन तुम पास पठावा ❀ ताते निकट तुम्हारे आवा ॥
सुनो महीपकीन्हों सब माना ❀ बैठारो गुण ज्ञान निधाना ॥
कहौ नाम निज भुपति पूंछा ❀ कहेउ नरेशसकल छल छुंछा ॥
कंक नाम मोहिं व्यास बखाना ❀ सुनिक्षितिपतिकीन्होंसनमाना ॥
जान्यो ब्राह्मण परम अनूपा ❀ अर्द्धासन बैठारेउ भुपा ॥

दो० प्रीति पुनीत भुवालकी, परम स्वच्छद्विजदेखि ।
रह्यो युधिष्टिर की सभा, है गुणवानविशेखि ॥

पुनि आयो तहं पवन कुमारा ❀ आनि भूप कहंकीन्ह जुहारा ॥
दीरघ तनु दीरघ भुज दण्डा ❀ निरखतकौतुकभयो अखण्डा ॥
नृपके निकट भीम जब गयऊ ❀ देखि सभा सब चक्रितभयऊ ॥
सकैं न बूझि सब भय पावा ❀ कौतुक कौन देश ते आवा ॥
है यह कौन परत नाहिं चीन्हें ❀ मल्ल रूप दरवी कर लीन्हें ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चकित सभासद करहिं विचारा ❀ यह धौं कौन आहि कंताग ॥
आवत देखे बिराट महीपा ❀ बूझे ताहि बुलाय समीपा ॥

दो० कित ते आये कौन तुम, कहा तुम्हारो नाम ।
कौन जाति केहि हेत काहि, आयो मेरे धाम ॥

सुनु नृप नाम जयंत हमारा ❀ राज युधिष्ठिर कर सुवारा ॥
करौं विविध विधि से जेवनारा ❀ व्यंजन अमित बनावनहारा ॥
अति सुगंध युत मिष्ट सलोने ❀ करौं पाक औगे नहिं होने ॥
जेई कृतज्ञ भूप भूपाला ❀ बकसतनितपट माणिगणमाला ॥
सरवर भीमसेन की राखत ❀ अमृत सरिस बचन नृतभाषत ॥
भोजन करत भीम के संगा ❀ पालिनृपति तनुकीन्ह मतंगा ॥
सुनिविराट नृपअतिहित कीन्हा ❀ रहेउ बंधु सम आदर कीन्हा ॥
जिमि राखत तुव पांडु कुमारा ❀ तेहि ते हेतु हमार अपारा ॥

दो० निरखे सरवरे भीम की, भूपति ताकी देह ।
तैसो बली विचारिके. ढिय राखे करि नेह ॥

निशा पाय अस पार्थ विचारा ❀ केहि विधि नगर करौं पसारा ॥
होय दुराव न जानै कोई ❀ सहदेव यतन बतावहु सोई ॥
सुधि भूली तुमको किन भाई ❀ सुरपुर असुर बध्यो जब जाई ॥
तब सुरनाथ कृपा अति कीन्हा ❀ अस्त्रसिखाइ मुकुटनिज दीन्हा ॥
तब उन पुत्रभाव करि जाना ❀ दीन्ह वास भीतर अस्थाना ॥
देखि उर्वशी देह बिसारी ❀ भई कामवश सुरपति नारी ॥
रति मांगी तुमते करि ईड़ा ❀ पारथ करहु संग मम क्रीड़ा ॥
पूरण करो मोर अभिलाषा ❀ त्राहि त्राहि माता तुम भाषा ॥
तब उर्वशी क्रोध अति कीन्हा ❀ होवहु हिज्ज श्राप यह दीन्हा ॥
प्रात होत सुरपति पँह जाई ❀ श्राप कथा तुम सकल सुनाई ॥
कहेउ सुरेश उर्वशी बोली ❀ श्राप अनुग्रह करो अमोली ॥
सुनि सुरेश के बचन रसाला ❀ कीन्हों श्राप अनुग्रह बाला ॥
जब चाहौ तब वर्ष प्रयन्ता ❀ वृहन्नड़ा तनु होयहु सन्ता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुरन्द्रिय श्राप आशिषा भयऊ ❋ हिज्ज रूप अर्जुन ह्वै गयऊ ॥
भूषण वसन द्रौपदी केश ❋ तनु शृंगार कान्ह बहुतेरा ॥

दो० वृहन्नड़ा है पार्थ तव, कीन्हों तियको रूप ।
कंकण किंकिणि आदिदै अभरण सजेअनूप ॥
शिर सिन्दूर तांबुल मुख मेहदीं युत युगपानि ।
जावक चरणमृदंगकी ध्वनिकन्हीतिनआनि ॥

गयौ द्वार नृप पाण्डु कुमारा ❋ कहेउ जनावहु हे प्रतिहारा ॥
गायन राज्य युधिष्ठिर केरा ❋ आयो करि पुहुनी को फेरा ॥
सब नृप द्वार देश फिरि आयो ❋ भोजन कहुँ न पेट भरि पायो ॥
जब बन चले युधिष्ठर राई ❋ कहेउमोहिं तब निकट बुलाई ॥
जायो भवन बिराट भुवारा ❋ तहँ ह्वै हैं प्रतिपाल तुम्हारा ॥
वेतपाणि राजा सन जाई ❋ समाचार सब कहेउ बुझाई ॥
गायक द्वार एक प्रभु आवा ❋ कहत युधिष्ठर मोहिं पठावा ॥

दो ० सुनि बोले भीतर नृपति, सब बूझ्यो व्यवहार ।
सकल गान संगीत लखि, कला चौंसठी चार ॥

नृपति युधिष्टिर केर अखारा ❋ करौं गान संगीत प्रचारा ॥
गावहुं मोहन राग रसाला ❋ नाचि नाचिरिझवोंमहिपाला ॥
अपनो गुण कहिब निज बानी ❋ कहत भूप आवत गिल्यानी ॥
रहत रहे जे धर्म्म समाजा ❋ ममगुण पूंछ कंक सन राजा ॥
विद्या पढ़ी सकल नृप जेती ❋ जानत सकल कंकऋषि तेती ॥
जब बन चल्यो युधिष्ठिर राई ❋ कहउ मोहिं निज बिकट बुलाई ॥
सेवहु तुम विराट नृप जाई ❋ मिलहुमोहिनिजकाल बिताई ॥
है समरथ विराठ भूपाला ❋ सो तुम्हार करि हैप्रतिपाला ॥

दो० मैं पारथ को सारथी, बृहन्नड़ा मम नाम ।
जीवन आयो आपु धर, लियो आइ विश्राम ॥

धर्म्मपुत्र करिहै बहु नेहू ❋ पठयो इहां जानि के गेहू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

इतनो भार हमारो लेहू ❀ वस्तर अन्न वर्ष भरि देहू ॥
लघु कन्या बालकन पढ़ाऊँ ❀ पूरण गीत संगीत सिखाऊं ॥
विद्या अमित वरणि नाहि जाई ❀ अल्प दिवस महँ देउँ सिखाई ॥
भूप सुता उत्तरा कुमारा ❀ सौंपी पढ़न योग सुकुमारी ॥
फिर सहदेव पहूँचे आई ❀ नृप सों बचन कहत सिरनाई ॥
मैं तो धर्म्म पुत्र को ग्वाला ❀ अतिशयकृपाकरहिंमहिपाला ॥
निकासि दूरि वन वीथीन गयऊ ❀ दै उपदेश पठै मोहिं दयऊ ॥
करि जानौं गायन के सारू ❀ अरु जानौं नवविधिहथियारू ॥
मो देखत गोधन कोइ हरई ❀ को नर जुरि मम समता करई ॥
वर्ष पञ्च इक धेनु चराई ❀ सेवन करौं पञ्चशत गाई ॥
सत्य वचन यह सुनहु भुवारा ❀ सेनि गोप हैं नाम हमारा ॥
मोहिं जयंत कंक ऋषि जानहिं ❀ उनहिं बूझि भूपति तब मानहिं ॥
सुनि तिन जानेउ बुद्धि विशाला ❀ सौंपी सब सुरभी भुपाला ॥

दो० फेरि नकुल आये तहाँ, लीन्हें ताजन हाथ ।
देख रूप की राशि तव, चकित भये नरनाथ ॥
कौन देशको जाति कहु, कहा तुम्हारोनाम ॥
केहि कारण वैराट कहि, देखो मेरो धाम ॥

बाहुक राय युधिष्टिर केरा ❀ राखत मान सबै बिधि मेरा ॥
वै दुरिकै बन गयो भुवारा ❀ दै सब ते हम कहँ दुख भारा ॥
काटर कूचर अश्व चलावों ❀ योजन शत प्रमाण लै धावों ॥
बूझहु कंक ऋषिहि गुण मेरा ❀ आयों नृपति नाम सुनि तेरो ॥
मो कहँ सौंपो साहन जेते ❀ करो बनाय सूध सब तेते ॥
सुनि भूपाल अमित सुख पावा ❀ पाण्डु सुवन ते हेतु बढ़ावा ॥
देखि मूक मुख तिन तेहिकाला ❀ कह बाहुक तन चतुरभुलावा ॥

दो० सौंपेउ साहन नकुल कहँ, है भूपाल उदार ॥
बहुरि सो आई द्रौपदी, भूपति भवन मंझार ॥

नगी किधौं पन्नग की जाई ❀ कमला किधौं देह धरि आई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रानिन सहित सखिन के वृन्दा ❀ निरखैं मुख चकोरजिमिचन्दा॥
कह रानी निज नाम बतावो ❀ केहिकुलकीकुल बधूकहावो ॥
कहौ जाति आपन गुण ग्रामा ❀ केहि कारन आइउ मम धामा॥
पाण्डव सदन द्रौपदी रानी ❀ दासी तासु लेहु मोहि जानी ॥
सुनहु श्रवण तुम अमित बड़ाई ❀ देखेहुँ द्वार विपति वश आई ॥
पतिसंग चली बिपिन जब रानी ❀ मोसनकहीं विहंसि यहबानी ॥
तुम गृह जाहु विराट भुवाला ❀ काटेहु कालिकछुकादिनबाला ॥

दो० आइउ तुव सेवा करन, सैरंध्री मम नाम ।
आज्ञा देहु कृपालु ह्वै, करौ यह बिश्राम ॥

कोली विहसी वचन तब रानी ❀ केहि सेवामें बहुत सयानी ॥
चन्द्रवदनि सोइ बाग बताऊ ❀ सौंपौंतुमहिं सजित चितचाऊ ॥
भोजन मैं करवावों रानी ❀ भूषण अंग सजौं सुखदानी ॥
चुनि चुनि नये वसन पहिराऊ ❀ लै दर्पण मुख द्युति दरशाऊ ॥
लै कुंकुम घन सार लगावों ❀ कुसुमावलि शुचिसज बखावों ॥
अतर लाग तनु पान खवावों ❀ तुम्हरी आज्ञा सदा बजावों ॥
करिहौं दोय काज नहिं रानी ❀ छुवहुँचरण नहिंजूठे निखानी ॥
सैरंध्री बचन सुनि काना ❀ रानी बहुत कीन्ह सनमाना ॥
तनया सम मेरे गृह रहियो ❀ मो सन मनका बातैं कहियो ॥
हलुकी भारि कोई न भाषहिं ❀ बस कोई आदर तुव राखहिं ॥
तुम थोरहिं कीजै सन्तोषा ❀ निशिदिन करौं तुम्हारो पोषा॥
सैरंध्री जोरि युग पानी ❀ करत विनयसुनियोकछुगनी ॥
रक्षक मोर पंच गन्धर्वा ❀ निशिदिन मोहि रखावतसर्वा ॥
अति बलवंत भयानक सोई ❀ रहै संग देखे नाहिं कोई ॥
सो वे अन्तीरक्ष के वासी ❀ करैं प्रीती जानैं निज दासी ॥
पाप बुद्धि देखै मोहिं कोई ❀ करै निवर्त होय किन जोई ॥
जाको अन्न खाइये रानी ❀ तापै रहिये सदा छल हानी ॥
यातें तुम कहं प्रथम जनाई ❀ पाछे जान ठहरै कनि जाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सत्य वचन सुन मोर सहाई ❀ लखै कुदृष्टि जियत नहिं जाई ॥
सखी निकट परम हित मानी ❀ निशिदिन प्रीतिकरत प्रतिरानी ॥
सजत शृंगार शिखावत जोई ❀ सैरंधरी बचन सोइ होई ॥
काल पाय कै पाण्डु कुमारा ❀ मिलहिं समेत द्रौपदी दारा ॥
सकलअवस्था निजनिज कहई ❀ फिरि बिलगाय मौन ह्वै रहई ॥
जब भूपतिहि जोहारन आवहिं ❀ प्रथमकंक ऋषिको शिरनावहिं ॥

दो० यहि विधि पाँचौ पाण्डुसुत, द्रौपदी वाम ॥
कालक्षेप पुनिकरहिं जिमि, क्षुद्रसकलगुणग्राम ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहान भाषाकृते विराटपर्वणि पाण्डव अज्ञातवासवर्णनंनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दो० कछु दिन बिते नगरमो गृहगृह प्रति उत्साह ।
अपनी दुहिता को रच्यो, नृपति विराटविवाह ॥

देश देश कहँ दूत पठाये ❀ सकल क्षितीश पुहुनिकै आये ॥
सभा विचित्र रची तहँ राजा ❀ जनु अमरावति रचा समाजा ॥
आपु लसै जैसे सुरसांई ❀ सब नरेश जनु सुर समुदाई ॥
सुरगुरु सम ऋषिकंक बिराजा ❀ अति बिचित्रतहँवनी समाजा ॥
कहूँ नृत्यकरि नाचि गावैं ❀ कहूं नाटकी स्वांग दिखावैं ॥
नाचहिं कहूँ बिदुष करि जाला ❀ कूनहिं कांख बजावहि ताला ॥
गाल फुलावहिं करहिं तमासा ❀ नाना भांति करहिं परिहासा ॥
वारमुखी बहु नाचहिं गावहिं ❀ वाणी वेणु मृदंग बजावहिं ॥
बाजहि आउझ झांझ तँबूरे ❀ मुनि मन हरतराग अति पूरे ॥
चन्द्रवदन उर्वशी लजाहीं ❀ जिनहिदेखिरतिद्युतिंकछुनाहीं ॥
काहूँ मल्ल लरहिं अति भोरे ❀ कहूँ मेष अति लरहिं सिंगारे ॥
मत दंपति कहुँ लरहि दँतारे ❀ श्याम वर्ण पर्वत से कारे ॥

दो० शोभा राज समाजकी, मोपै कही न जाय ।
देश देश के भूप सब, जुरे सुवेष बनाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मल्ल एक तहँ आव प्रचण्डा ❀ दीरघ तनु दीरघ भुज दण्डा ॥
औ द्वौ चरण कड़ा द्वौ पानी ❀ पति वसन शोभाकी खानी ॥
बड़ी भीर भूपन के देखा ❀ कहीं सभा महँ बात परेखी ॥
अहंकार युत बचन बखाना ❀ सुनहु महीप बचन दै काना ॥
जीति विदर्भ देश जे शृंगी ❀ जीते मल्ल सरंग तिलंगी ॥
काश्मीर लाहौर चँदेरी ❀ बन्दर सब कर्नाटक हेरी ॥
अंग बंग कामरू मँझाई ❀ औगे देश बिलोकेउ जाई ॥

दो० मोसे मल्ल जुरे नहीं, कोउ न कौनेउ देश ।
है कोई मोसे जुरै, आज्ञा देहु नरेश ॥

सुनि सुनि सभा न बोले कोई ❀ मन साहस काहू नहिं होई ॥
नृप विराट को सधि ह्वै आई ❀ तब जयंत कह लीन्ह बुलाई ॥
सुनि जयन्त मम आज्ञा मानो ❀ मल्ल युद्ध तुम यासों ठानो ॥
मैं अपने मन कीन्ह बिचारा ❀ तुम सुआर यह मल्ल जुझारा ॥
जो हारौ तौ हारि न होई ❀ जीते द्रव्य देइ सब कोई ॥
धरि मारौ जो मल्ल जुझारा ❀ जग महँ होइहि सुयशतुम्हारा ॥
सुनि जयन्त बोल्यो कछु नाहीं ❀ रहे चुपाय कछू मुख चाहीं ॥
कहेउ कंक किमि हृदय डेराना ❀ करु जयन्त नृपबचन प्रमाना ॥

दो० तब जयन्त यह मल्ल सों, कहीं बात अरगाय ।
हमतुम रस सों खेलिये, लीजै सभा रिझाय ॥
तू जो आनै रोस मन, डारै भुजा उपारि ।
हम परदेशी उरद हित, देहैं भूप निखारि ॥

कहेउ मल्ल सुनु कौन विचारा ❀ तै कस कादर बचन उचारा ॥
दीरघ भुजा बचन कह दीना ❀ ऐसी कहै होय जो हीना ॥
यह सुनि नयन अरुण ह्वै आये ❀ तब जयंत यह बचन सुनाये ॥
करु अब जौन होय बल तोरा ❀ जानि मानसिखलमोर निहोरा ॥
मल्ल युद्ध लागे दोउ करना ❀ मुष्ठिघात अरु घालहिं चरना ॥
मल्लयुद्ध दोउ यहिं बिधि करहीं ❀ लपटहिं धरहिं झूमिझुकिपरहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फिरि फिरि करिबलउठहि सँभारी ❀ सम बल युगलन मानहिंहारी ॥
तब जयंत भुजबल अतिकीन्हा ❀ मल्ल उठाय डारि महि दीन्हा ॥
करि बड़ क्रोध धरणि पर डारा ❀ जनु सुरवज्र गिरिन को मारा ॥
सँभरि उठ्यो यह बचन सुनाये ❀ अब मारौं खल तू कित जाये ॥
लै तब गुरज उठो अकुलाई ❀ हनो जयन्त नाशिका जाई ॥
विषम चोट थरहरेउ शरीरा ❀ मूर्छि गिरेउ महि पांडव वीरा ॥
देखि कंक सैरंध्री जानी ❀ हाइहाइकरि अति अकुलानी ॥
चेति जयंत उठो गल गाजी ❀ जानन पाइहिअबखल भाजी ॥
भूमिहिं सातवार धरि मारहुं ❀ गहिरे गर्व दुष्टको गारहुं ॥
फेरि जुरेउ जिमि करि बल जोरी ❀ कीन्ह प्राण बिन मल्लमरोरी ॥

दो० मृतक तासु तनु क्रोध करि, दीन्हो दूरि पवारि ।
देश देश के भूप सब, करत बड़ाई झारि ॥

देखत सभा सब नर हर्षे ❀ बसन कनक मणि मोलन वर्षे ॥
कह मुनि सुनु जन्मे जय राजा ❀ कहौं सुनौ अब भा जस काजा ॥
मत्त गयंद नृपति को ऐसो ❀ कज्जल गिरि भुधरहै जैसो ॥
कानि महावत की नहिं आवै ❀ करै प्राण बिन जो द्विप पावै ॥
सुंदर महल दिये महि डारी ❀ गये निकट नर डारै फारी ॥
शूँड़ि दाबि बहु बृक्ष उखारै ❀ नहिं कुन्तल ते रहै सँभारै ॥

दो० बाँधहु जाय गयंद कहँ, पटयं नर नरपाल ।
सकै निकट नहिं जाय कोउ, देखि देवविकराल ॥

जाय भुप सन कथा जनाई ❀ कोऊ निकट सकै नहिं जाई ॥
कैसहु हाथ न कुंजर आवै ❀ अबसो करिये जो भुपवनावै ॥
तब जयंत ते कहेउ बोलाई ❀ गजहि पकरि से आवहु जाई ॥
कै बाँधहु कै डारहु मारी ❀ पुरको कंटक देहु निकारी ॥
जब नरेश की आज्ञा पाई ❀ चल्यो बृकोदर अति हरषाई ॥
सिंहनाद गरज्यो बल बीरा ❀ तब गयंद थरपरेउ शरीरा ॥
पूँछ पकरि झझकोरेउ ऐसे ❀ दाबत मृग कर चीता जैसे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दशन पकरि लै पहुँचो थाना ❋ ज्यों अजयालीजै गाहिकाना ॥
बाँधि ताहि भूपति शिर नायो ❋ तब जयंत वसनन पहिरायो ॥
दो० यहि विधि वात मास दश, नृप विराट के तीर।
कालक्षेप निशिदिन करैं, पांडुपुत्र बलवीर ॥

इति श्रीमहाभारते विराटपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
दितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दो० कीचक वली विशाल तनु, नृपतरुणी को वन्धु ।
सहस हिरदसमताहिवल, यौवनमदअतिअन्धु॥

शत बांधव कीचकके बली ❋ बल अवगाहत नृप अस्थली ॥
सोहत इक इक मातुक जाये ❋ ऐसे सुभट महापति भाये ॥
एक दिवस कंचक हरषाई ❋ निज भगिनीके मंदिर जाई ॥
रानी ढिग कीचक चलि जाई ❋ कीन्ह प्रणाम चरण शिर नाई॥
बंधु विलोकि हृदय हरषानी ❋ दीन्हअशीश मुदितमनरानी ॥
भोजन करत कनक की थारी ❋ द्रुपदसुता तह करत बयारी ॥
देखि चेरि कहँ कीचक वीरा ❋ काम विवश थरहरेउ शरीरा ॥
इत भगिनी सन बचन वखाना ❋ दासी वम ह्वै रह्यो पराना ॥
तहँ कीचक तनु दशा विसारी ❋ सैरन्ध्री दिशि रह्यो निहारी ॥
भयो कामवश बुद्धि भुलानी ❋ छाँड़िसिलोकलाज कुलकानी ॥
सैरन्ध्री अपने मन जाना ❋ कामाविवश यह खल बौराना ॥
ताहि सुनाय कह्यो सुनु रानी ❋ अकथकथाकछु कहौं बखानी ॥
गँधरव पंच महा बल भोर ❋ ते मम सँग निशिदिन रखवारे ॥
अन्तरिक्ष देखै नहि कोई ❋ तुम कहँ प्रथम सुनायो सोई ॥
मोहिं कुदृष्टि विलोकै जोई ❋ सो नर कठिन कालवश होई ॥
दो० अवशि हनैं गन्धर्व तोहि, मोहिं विलोके जाई ।
बली होइकी निर्वली, जीवत वचै न सोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यद्यपि सैरन्ध्री विभव बखाना ❋ कीचकमनहुँसुन्यो नहिं काना ॥
कामअन्ध नहिं सुझत तेही ❋ विष असछहरि गयोसब देही ॥
भयो विकल सब दशा विसारी ❋ द्वौकर जोरि विनय अनुसारी ॥
भगिनी सन बोली विसवासी ❋ मांगे देहु मोहिं निज दासी ॥
मोकहँ मिलै मोहिं यह इच्छा ❋ मांगा लाज छांड़ि यहभिच्छा ॥
मोहि दया करिकै यह दीजै ❋ याकी बदी सहस्र तुम लीजै ॥
लाज छांड़ि कै करौं ढिठाई ❋ करा वचन फुर हृदय जुड़ाई ॥
होइ मोरि तौ जाउ लिवाई ❋ देउँ बन्धु किमि वस्तु पराई ॥

दो० द्रुपदसुता की अनुचरी, देत मोहिं अतिक्षोम ।
यह मोरे जनु पुतरी, करौ बन्धु जनि लोभ ॥

जादिन प्रथम भवन मम आई ❋ कन्या कै राखेउ मैं भाई ॥
कह मुनि सुनु कुरुकेतु भुवारा ❋ सुनै न काम विवशमतवारा ॥
रानी वचन कहे विधि नाना ❋ कीचक सुन्योन एकौ काना ॥
बोली बहुरि वचन यह रानी ❋ सुनहु बन्धु इककथा पुरानी ॥
द्रुपद सुता पति संग बन गयऊ ❋ इनहिं पठाइ भवन ममदयऊ ॥
रहै जीविका हित गृह माहीं ❋ दासी मोरि बन्धु यह नाहीं ॥
जाइय भवन देई नहिं जाई ❋ देउं कौनि विधि वस्तु पराई ॥
यह सुनि नयन अरुण है आये ❋ क्रोधवंत है वचन सुनाये ॥

दो० कहु कैसे तू राखिहै, दासी बल करि लेहुं ॥
राज्यपाट सब छीनिकै, कोटि कोटि दुख देहुं ॥

चेरी लागि नशावहु राजू ❋ तोर कहा सुधरि है काजू ॥
अति बलवत बधु शत मोरे ❋ राखि लेइ ऐसौ को तोरे ॥
सुयो कठोर बंधु की बानी ❋ बोली प्रेम क्रोध है रानी ॥
पर तरुणी रज जे जग भयऊ ❋ ते निज करनीसोंमिटि गयऊ ॥
जो चाहो आपनि कुशलाता ❋ फेरि कहौ जनि याकी बाता ॥
रावण कथा नो तुम भाई ❋ रामचंद्र की नारि सुराई ॥
सिया हरत नहिं लागिविलम्बा ❋ नशो दशानन सहित कुटुम्बा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गौतम तिय लखि शक्र लुभाने ❋ भयो सहस भगजगसब जाने ॥
बांधेउ असुर पाप वश सोई ❋ भयो खण्ड जानत सब कोई ॥
ह्वै सकाम गिरिजा तनु हेरा ❋ एक नयन बिन भये कुबेरा ॥
शुम्भनिशुम्भ असुर अभिमानी ❋ मोहा परमशक्ति जिय जानी ॥
कथा प्रसिद्ध सकल जग खानी ❋ अपने पाप मिटा अभिमानी ॥
बंधुवधू रत रघुपति जानी ❋ मारेउ बालि हिय शर तानी ॥
पर त्रिय रत हित शठमन दीन्हा ❋ पैहै फल खल आपन कीन्हा ॥

दो० भगिनीमुखकेवचनसुनि, कियपयाननिजधाम ।
विकल महा जियकलनहीं, घरीमुहूरत याम ॥

कीचकको सुधि बुधि नहिंरहेऊ ❋ सूने भवन सैरंध्री लहेऊ ॥
कामअंध अंचल तेहि गहेऊ ❋ आतुर ह्वै यहिविधितबकहेऊ ॥
चित हमार तुव रूपहि पागो ❋ भयो असक्त सुधिरज भागो ॥
मेरे तरुणी शशि अनुहारी ❋ सब पर होय सोहागिन नारी ॥
उत्तम भुषण वसन बनावो ❋ अरु दासीको नाम मिटाओ ॥
वचन तुम्हार मेटि नहिं जाई ❋ रहौ नारि मम हृदय समाई ॥
सुनत वचन मन शंका आई ❋ कहेउ सैरन्ध्री वचन बनाई ॥
तुमहिं देखि मोह्यो मन मोरा ❋ कीन्हें प्रीति नाश है तोरा ॥
गंधर्व पच मोहि रखवारी ❋ दीरघ तनु मन विक्रम भारी ॥
मोहि छुवत वे तुरते आवैं ❋ सुनु कीचक तुव प्राण नशावैं ॥
तव मारे मम अपयश होई ❋ मोकहँ दोष देइ सब कोई ॥
या महँ उभय प्रकार बिगारा ❋ मरण तोर मम देश निकारा ॥
तुम भगिनी सुनि देइ निकारी ❋ इहां जीविका उठी हमारी ॥
यह सुनि कीचक अतिभयमानी ❋ गई पराइ पाण्डु की रानी ॥
निशिदिन ताकहं नींद न आवै ❋ धन सम्पति घरबार न भावै ॥
बोलि दूतिका यहि विधि कहेऊ ❋ वह दासी ममचितबासरहेऊ ॥

दो० मनसा वाचा कर्मणा, तुम अब करहु उपाय ।
मृग नयनीनिशिकरवदनि, मोपरभुरैलै आउ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भुरै लै आउ सैरन्ध्री आवै ❋ निजइच्छा मांगो तुम पावै ॥
गई दूतिका विविध प्रकारा ❋ लागी करल युक्ति उपकारा ॥
बहुत भाँति दूती समुझायो ❋ चित्त सैरन्ध्री एक न आयो ॥
हहाँ बिचार न बोलै सोई ❋ आजुकाल्हिकछु काजनहोई ॥
रही मास द्वै अवधि हमारी ❋ नहि जानै कुरुपति अपकारी ॥
कीचक आतुर ह्वै उठि धायो ❋ जहा सैरन्ध्रीतह चलि आयो ॥

दो० सुने घरमों पायकै, गहे केश कर धाय ।
अब कहु राखे तोहि को, कौन छुड़ावै धाय ॥

गंधव्र महँ गंधव पति होई ❋ सकै छुडाय तोहिं नहि सोई ॥
गँधरव के बल तू अभिमानी ❋ बोलु छुड़ाय देई अब आनी ॥
यदपि बली रक्षक तू होई ❋ मोरे तुल्य होई नहिं सोई ॥
व्याकुल भई नीच वश रानी ❋ गई लाज अब हृदय डेरानी ॥
हरे कृषण नाम यह भाषी ❋ दुश्शासन ते तुम पति राखी ॥
सैरंध्री बिनय मृदु वाणी ❋ विविध प्रकारजोरि युगपाणी ॥
यदपि विनय कृत विविध प्रकारा ❋ सुनै न काम विवश मतवारा ॥
बोला कामवश्य गिसि आई ❋ तजौं तोहि करि निज मन भाई ॥

दो दासी कर्म कराइ कै. त्रास देखाबहुँ तोहि ।
अपन मन भाई करौं, यही वाणि अब मोहि॥
कैसेहु खल नाहि हठ तजै, अंचल डारो फारि।
करते केस न तजै सो, अति अकुलानी नारि ॥

सैरंध्री तब बुद्धि विचारी ❋ विविध भाँति कीन्ही मनुहारी ॥
रसते प्रीति बढ़ति है जोई ❋ तस नहिं कछु अनरसते होई ॥
दान मान युत आदर धरई ❋ परतिय सो अपने वंश करई ॥
यथा बीजते द्रुम उठि जाई ❋ तिमि रसकी प्रतीत सरसाई ॥
निशिदिन लिये रहै मन हाथा ❋ बढ़ै हेतु तब परतिय साथा ॥
मिष्ट सुधा सम वचन सुनावै ❋ इष्ट समान हिय बिचलावै ॥
कहत वचन पुरवै सब सोई ❋ पर पत्नी ताके वश होई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यह कीचकहु सुन्यो ना चीन्हा ❋ पर तियबरबसकेहिवशकीम्हा ॥
दो० जानत रसकी प्रीति नाहिं,तैं खल एको बात ।
परतरुणीको मन दियो, तव सब सुख सरसात ।
रहसिरहसिअबमनमिलै,तौलहि हाँसिपरनारि।
बौराया यह वचन कहि, गूत उपाय विचारि ॥
तजे केश तब गृह अभिमानी ❋ सैरन्धरी गई जहँ रानी ॥
कह ऋषि सुनु कुरुवंश भुवाल ❋ गये बीति पुनि इक पखवारा ॥
दीपमालिका के दिन रानी ❋ बोली सरंध्री सो बानी ॥
भोजन मिष्ठ कछुक हित भाई ❋ सुरापात्र दै आवहु जाई ॥
द्रुपदसुता सुनि अति अकुलानी ❋ जाव मोर हां नीक न रानी ॥
लज्जा मोरि जीव वहि केरा ❋ रानी जानत लागी बेरा ॥
यदपि सैरन्ध्री कह्यो बखानी ❋ बरबस ताहि पठायो रानी ॥
पिय मत्त मद कनक प्रयका ❋ देखि सरन्ध्री भयो सशंका ॥
अशन पान माहि राखि परानी ❋ धाये केश पकट गहिपानी ॥
सैरन्ध्री तब बचन उचारे ❋ गहत केश कहि हेत हमारे ॥
तुम मन बसेउ मोर मन सोइ ❋ दिन रातिकीचकपशुगतिहोई ॥
दो०रैनि गये तुमआयऊ, नाच अखारे जाय ।
शिथिल भयो यह वातसुनि,केशदियेसुकराय ॥
योंग भोग सुन सदन, वन निशि कीचराय ।
जाउ तहाँ हौं आईहौं यामय रैनि गंवाय ॥
जहाँ उत्तरा की चटसारा ❋ होइ मिलाप हमार तुम्हारा ॥
खेलत लाज वचन नहिं जानी ❋ करि छल गईबहुरिजहं रानी ॥
कीचक यह शुनि अतिशुखपावा ❋ कह्यो सैरध्री वचन शुहावा ॥
जात भयो अपने गृह सोई ❋ हेरत बाट नीशा कब होई ॥
गई दुखित तह द्रौपदी रानी ❋ है पीत भूप जहा सुख दानी ॥
कीचक कानि न एकौ राखी ❋ सो गति वाम भूप सम भाखी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आयसु अर्जुन को नृप दीजै ❋ कीचक मारैं सो नृप कीजै ॥
यह कहिकै उपजी तन पाता ❋ ऊँचेस्वर करि कीन्ह विलापा ॥
रोवत वाम श्वास नहिं आवै ❋ भूपति बहुन भाँति समुझावै ॥

दो० मास दिवस बीतै त्रिया, सो व्रत पूरण होई ।
तौं लागि कालहि काटिये लखैं कछू नहिं कोई

अवधि बीत कीचक संहारौं ❋ तब त्रिय और विचारबचारौं ॥
की तब लगे रहौ मन मारी ❋ की बनावास करावो नारी ॥
सुनि नृप वचन विकल भै रानी ❋ करन विलाप हिये अकुलानी ॥
उतर देत नहिं बनहिं बनावा ❋ नयनन निर गरे भरि आवा ॥
रोदन करत चली तब रानी ❋ गैपति अब पति बातन मानी॥
विलखा वदन तिय पहुँचीतहाँ ❋ हतेवीर बल अर्जुन जहाँ ॥
नयन सनीर कढ़त नहि बानी ❋ कथा समस्त बखानी रानी ॥
वरणो कीचक की अधिकाई ❋ कह्यो भूप मन कछु नहिं आई
दीन्ह जवाब धरणि के धाराणा ❋ आइउँ पार्थ तुम्हारी शरणा ॥
मेरो कह्यो गोसांई कीजै ❋ हति कीचक जगमें यश लीजै ॥
तुमहिं अछत अस हाल हमारा ❋ बल पौरुष कहँ गयो तुम्हारा ॥

दो० कह्यो पार्थ तीयसों, करि अति क्रोध कराल ।
आज्ञा पावों भूपकी, शठहिं बधौं उत्ताल ॥

जो भूपतिकी आज्ञा पावों ❋ तौ कीचक यम लोक पठावों ॥
नृपकी कानि न तोरी जाई ❋ तोरे कछु नहिं करौं उपाई ॥
सरवर तीर सबन के आगे ❋ चलती बार बचन नृप मांगे ॥
मम आयसु विन कृत कठिनाई ❋ कृष्णचरण तोहि कोटि दुहाई ॥
नृपको बचन न मेटो जाई ❋ मास दिवस तुम रहो चुराई ॥
सुनत सैरंध्री अति दुख माना ❋ पारथ कटु वचन बखाना ॥
छूटो तुमहिं क्षत्रि कुलबाना ❋ तजेउ सान धरि वेष जनाना ॥
लाज हीन भयो पांडुकुमारा ❋ तुमहिं जियतअसहालहमारा ॥
सो सुनि पार्थ रहो शिरनाई ❋ माद्री सुनत तीर चलि आई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० गई नकुल सहदेव पहँ. विलखि बदनवर नारि।
अधिकाई ता दुष्टकी. सब विधिकही पुकारि॥

कीचक बाँह हमारि गही ❀ तुम मैं कहौं कहाँ पति रही॥
मेरो कहो नहीं हसि टारौ ❀ क्यो न आपने अरि कहँ मारौ॥
सहदेव नकुल कही सुनु रानी ❀ मेटि न जाइ भूपकी बानी॥
कह्यो नृपति मोहिं. बारहिंबारा ❀ भ्राता यह न करेउ अपकारा॥
कटुक कहेउ सुनि लेउ चुपाई ❀ काहुहि उतरु न दीजै भाई॥
बिन आज्ञा कृत परम दुरंता ❀ जानौं पाप मोर वपु हन्ता॥
तुम दुख देखि मोहि कठिनाई ❀ नृप आयसु मेटी नहिं जाई॥
सहदेव नकुल बहुत दुख पावा ❀ जोग्यिपाणिरानिहिसमुखझावा॥

दो० सुनि सुनि तेरे वचन अब. बाढ़त क्रोध अपार।
मेट जाय न नृप वचन. विनयो बारहिं बार॥
मारौं कीचक क्षणक महं, भूपति आयसु पाय।
करै अवज्ञा नारि अब; काकरि नरकहि जाय॥

मास एक तू और निवारी ❀ तब साकहौं कीचक कहमारी॥
इनहूँ ते तिय भई निरासा ❀ पहुँची भीमसेन के पासा॥
सजल नयन भरि आंसू ढारे ❀ भीजत नयन भये रतनारे॥
पवनपुत्र तबयाहि बिधि जानी ❀ विलखी ठाढ़ द्वार पर नारी॥
आयो द्वार लखे तिय नयना ❀ श्वासलेत कछु कहेन बयना॥
बोली बिलखी आजु गृहमाहीं ❀ कीचक दुष्ट गही मम बाही॥
पाराडु सुवन पै फिरी पुकारी ❀ वे गुहारि लाग्यो नहिं चारी॥
अब तुम स्वामी रहौ चुपाई ❀ गहि सो दुष्ट मोहि लै जाई॥
सुन्यो श्रवणजबसकल प्रसगा ❀ रोष बढ़ो विकसो सबअंगा॥
लखि त्रियके मुख कै मलिनाई ❀ दौरि गई दृगमे अरुणाई॥
बूझत बचन उतर नहिं देती ❀ गहवर बयन नयन जलसेती॥
कीचककोसुनितब मुख नामा ❀ भयो सक्रोध भीम बलधामा॥
देखत जो न वधौं क्षण जाई ❀ कोटि युधिष्ठिर केरि दोहाई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० लीन्हो नीच बुलाय के, नीच आपने हाथ।
जीतो चाहत श्वान नर, सिंहबली के साथ॥

दादुर जुरा चहत हरि संगा ❋ चीताहि जीता चहै कुरंगा॥
चहत कपोत बाज सन रारी ❋ मूषक जीतन चहत मँजारी॥
गर्दभ चहत मंतगाहि ठेलो ❋ चहतभुंजग गरुड़ संग खेलो॥
तुम सन कही बचन कटु बागी ❋ अपने हाथ मीचु वहि माँगी॥
कहेसि बिलोम बचन तजि ज्ञाना ❋ यहिकर कालआय नियराना॥
सैरन्ध्री यहि बिधि समुझाई ❋ चल्यो भीम त्रिय रूप बनाई॥
नाच महल महँ बैठो भीमा ❋ दीपक बुझायक्रोध करिजीमा॥
तहाँ कामवश कीचक आवा ❋ नारिजानि कुचपाणि चलावा॥
गहे भीम तब दौ भुज दण्डा ❋ मल्ल युद्ध तहँ भयो अखंडा॥
करि बल भीम ताहि महि डारा ❋ चलापराय अधम हिय हारा॥
मोहिं युधिष्ठिर भूप दुहाई ❋ कीचकबधौं जियत नहींजाई॥

दो० काल सर्प सो खेलेउ, कालम हरि अकुलाय।
पूँछ मरोरी सिंह की, अब जीवत नहिं जाय॥

पकरो भीम क्रोध करि धाई ❋ भिरो बहुरि शठ ताल बजाई॥
दौ महँ हारि न कोई मानै ❋ कोपिअमित गतियुद्धहि ठानै॥
अतिबल भीमसेन तब कीन्हा ❋ पटक्यो भूमि कंठ पग दीन्हा॥
मारि दुष्ट प्राणन बिन कीन्हा ❋ मूढ़ उठाय पुहुमि तब दीन्हा॥
महा खोहड़े राखो जाई ❋ जानै पुरजन नहिं ज्यहिभाई॥
डारेउ भीम तहाँ बलवाना ❋ परेउ अधमतनु शृङ्ग समाना॥
लखत ढहेग गृह शब्द अघाता ❋ सुनि नरेश जागो अधराता॥
चाहेउ चलन खड्ग गहि पानी ❋ बरजेउ बुगल जोरिकर रानी॥
नाम सैरन्ध्री तुव घर दासी ❋ कीचक करी ताहि सँग हांसी॥
गँधरब पंच तासु रखवारे ❋ जानि परी कीचक उन मारे॥
चुपाकि रहेउ नृप तो कुशलाई ❋ सुनि त्रिय बचन बैठि अरगाई॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राजा ❋ कहेउसोभीमकीन जसकाजा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० मारि दुष्ट धरि खोह में, मनकी व्यथा नशाय।
अर्द्धनिशासुतपवनको, निजथलपहुँच्योजाय ॥
जागे पुरजन सदन प्रति, प्रायभये नर नारि।
मृगकदेखिकीचकनहीं,कोउनाहिंसकेउबिचारि॥

इति श्रीमहाभारते बिराटपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते कीचकवधवर्णनंनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दो० अन्त पुर चरवर बदन, सुधि पाई नरपाल।
सचिवसभासदसुभटसँग, तहँआयोतिहिकाल ॥
नृप विलोकि शंका उपजावा ❋ सजलनयनमुखबचनसुनावा ॥
शोक विवश तनु दशा बिसारी ❋ करत बिलाप ताप अतिभारी ॥
क्यहियाहि बध्यो जानि नहिंजाई ❋ बारबार कहि नृप बिलखाई ॥
करिय उपाय मिलै ज्यहि शोधा ❋ बिनअरिनिधनामिटिहिनहिंक्रोधा
बंधु बधन सुधि ताक्षण पाई ❋ भूपति की तरुणी तहँ आई ॥
रोदन करत बहुत अकुलानी ❋ देखत भूप व्यथा तनु जानी ॥
अपने मनही महँ दुख माना ❋ बारबार यह बचन बखाना ॥
कीचक कौन शूर सँहारो ❋ जासों युद्ध जुरो सो हारो ॥
अंग नहीं क्षत और न आयो ❋ भूलि रहेउ कुछसाधन पायो ॥
इमि महीप कह बचन बखानी ❋ बोली बिलखि बदन ह्वै रानी ॥
दो० रहै तुम्हारे धाम में, जेहि सैरन्ध्री नाम।
गँधर्रब रक्षक तासु के, रक्षत आठौ याम ॥
कीचक अति आसक्त है, गहि सैरंध्री बाल।
ताही दिनते मैं लख्यो, घेरो है यहि काल ॥
कीचक तिन गन्धर्वन मारे ❋ नहिं काहू पर गयउ उखारे ॥
अब चलि क्रिया तासु की कीजै ❋ लैलै कुश सब अंजलि दीजै ॥
रानी बचन श्रवण सुनि राजा ❋ लागो करन क्रियाको साजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब कुतवालै बोल्यो राऊ ❀ प्रजालोग सब बेगि बोलाऊ ॥
लै कीचक को घाटै जाऊ ❀ विधि सो सर्व क्रिया करवाऊ ॥
कह ऋषि कंक नीच को अंगा ❀ छुवत सुकृत होई सो भंगा ॥
उत्तम जाति होय नर कोई ❀ छुवै अंग कीचक का सोई ॥
गयो नृपति सुधि आय तुरंता ❀ कहेउ लै आउ सुवार जयंता ॥
बार बार तासन कह राऊ ❀ कीचक मृतक घाटलै जाऊ ॥
सुन्यो न बचन रहेउ चुपकाई ❀ फेरि नृपतिअसकहेउ रिसाई ॥
तै मेटो बल बचन हमारा ❀ मूढ कहां तब होइ गुजारा ॥
मरत्यउँ तोहि मूढ़ अज्ञानी ❀ मानत पाडु सुवन कै आनी ॥
धर्मराज पठायो ताकि मोहीं ❀ सरवरि गनौं बन्धु की तोहीं ॥
नृपके बचन श्रवण सुनि भीमा ❀ कहेउ बचन क्रोधित ह्वै जामी ॥

दो०-मारो कीचक मैं कहाँ, कत कीजत है क्रोध ।
मो दुख मानत वादि नृप, अंतहि लीजै शोध ।
भोजन भाजन छाँडि कै,मैं नहिं अंतहिं जाउँ ।
मनसा वाचा कर्मणा, तुम कहँ बहुत डराऊँ॥

सो०-करी कृपा नरनाहु. यहि बिधि कही जयन्त सों।
कीचक को लैजाहु, दूरि नगरते कृति करहु ।
बन्धु कुटुम्बी सोइ मृत्यु कही सों काढि कै ॥
कहा परी है मोहि, ऐसे कर्म न हौं करौं ॥

बार बार इमि कह्यो सुवारा ❀ कृति करवावहु जाय सुवारा ॥
देखि कंक ऋषि केर इशारा ❀ तब जयंत इमि बचन उचारा ॥
जो अब भोजनको कछु पावौं ❀ तौ कीचक लै घाटै जावौं ॥
भोजन अमित मँगवाना ❀ बैठि जयंत तहाँ सब खावा ॥
मेवा बहु पकवान मिठाई ❀ खात जयंत न होत अघाई ॥
रोवैं कीचक के सब भाई ❀ बरणिविविधबलशील बड़ाई ॥
कह नरेश सुनु बचन जयन्ता ❀ मृत ढिगभोजन कर्म दुरन्ता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लैजा लोथ करत कत देरा ❀ क्रिया करन हित होत अबेरा ॥
दो करि भोजन बलवंत तब, कीचक लियो उठाय ।
दूरि नगर ते घाट पर, मृतक उतारो जाय ॥
इत कीचक के बन्धु सब, पकरि सैरन्ध्री बाल ।
जारन चल्योबन्धुसंग, लियोचल्योतेहिकाल ॥
जेहि हित मारो बन्धु हमारो ❀ पकरि पाय वाके सँग जारो ॥
बरजत पुरजन सो नहि मानैं ❀ काहू बचन चित्त नहि आनैं ॥
करत विलाप द्रौपदी रानी ❀ को राखै बिन शारंगपानी ॥
बिविध भांति सो करत विलापा ❀ अतिशयकरुनऋषिहिदुखव्यापा॥
देखत रह्यो विराट भुवाला ❀ सोउन गेकिसक्योतेहिकाला ॥
पकरि ताहि तहँवाँ लै आयो ❀ कीचक मृतक जहा पौढ़ायो ॥
भरि भरि घृत घट केतिक आने ❀ चँदन अगर न बखाने ॥
तहं द्रौपदी अधिक सन्तापा ❀ हागँधवर काहि करत विलापा ॥
छुवत तुव मोहि बरत दरेरा ❀ तुव बल थकित भयोयाहि बेरा ॥
दो० रुदन करत लखि द्रौपदी, गृह तव चल्यो जयन्त ।
क्रोध बढ़ेउ सब अंग में देखत कर्म्म दुरन्त ॥
बसन उतारि धरेउ कहूँ, भीम भीम है धाय ।
फूलिगात दूनो भयो. उपमा कही न जाय ॥
ह्वै गये अरुत नयन रतनारे ❀ उठो क्रोध नहि रहत सँभारे ॥
भृकुटि कुटिल अति क्रोध प्रचंडा ❀ कालदंड सम द्वौ भुजदंडा ॥
कुधर समान कलेवर भयऊ ❀ सरवरनिकट भीमचलिगयऊ ॥
करै विचार करौं अब सोई ❀ जेहित्रियबचै निधनखलहोई ॥
बेष छिपाय बन्यो गन्धर्वा ❀ कीचक बंधु बधौं जेहि सर्वा ॥
मरै सकल सो करौं उपाई ❀ जेहि खलएकजिपतनहिंजाई ॥
बसन उतारि खोह धरि दीन्हा ❀ भीम रूह तब भीमहि कीन्हा ॥
नगरूप तनु परम मतंगा ❀ कीचचढ़ाइ लीन्हसब अंगा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० कीच चढाई सकल तनु, केश दिये मुकराय ।
कर तरुवरलै वज्र सम, दै दिखराई आय ॥

कीचक बंधु भजे अकुलाई ❋ कह गंधर्व पहुंचिगा आई ॥
भीम बटोरि वीर सब लयऊ ❋ सुरजनु बज्र गिरिनको हयऊ ॥
भीम लपेटि पंक तनु धायो ❋ बड़े केश बहुधा मुकरायो ॥
वेष भयानक लखि विकरारा ❋ चहुंदिशि भागि चलैनरदारा ॥
हने हाँकि कीचक के भाई ❋ वृक्ष घात दैं गर्द मिलाई ॥
ह्वै निशंक सब लोथ उठायो ❋ चिता बनाइ सकेलि चढ़ायो ॥
ताके हाथ कहा हथियारू ❋ सो सब बरणौं ताको सारू ॥
कह जयंत कछु बरणि न जाई ❋ जब गन्धर्व पहूंचो आई ॥
प्रथम भजे नर देखत जाई ❋ करत पुकार भूप सन सोई ॥

दो० गये शेष तहँ नर जिते, कही भूपसन जाय ।
कर तरुवर गन्धर्व लै तेहि थल पहुंचो आय॥

मानुष रूप गहे द्रुम पानी ❋ कीचक कुलकी घालिसिघानी ॥
महाराज पठवहु सब योधा ❋ लेय जायतिन्हकर सबशोधा ॥
जबयह बचन सुन्यो नृप काना ❋ भयो सशंक अचंभव माना ॥
अंग अंग हालेउ सब गाता ❋ मुखसेनिकासिसकत नहिंबाता ॥
वह शव कीचक भीम जरायो ❋ फिरि जहँद्रुपदसुता तहँआयो ॥
खल बधि भीम निकटजबगयऊ ❋ रानी अंगद अति सुखभऊय ॥
बोली बचन हास करि रानी ❋ राख्यो तुम पांडव को पानी ॥
हता सो अर्जुन भयो जनाना ❋ तुम लगि रह्यो बंशको बाना ॥
जब द्रौपदी कही यह बाता ❋ भयो प्रसन्न भीम सब गाता ॥

दो० गृह तन पठई द्रोपदी, आपु गये सर पास ।
न्याह धाय पहिरे वसन, आयो आपुअवास ॥
सवर तर द्रुम डारिकै, आयो भूप निकेत ॥
धाय धाय नरनारि सब, पूँछत करि हेत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पहुंचो भीम भूप दरबारा ❋ समाचार कहु कहेउ भुवारा ॥
कहु जयंत कैसी भै भाई ❋ कैसे गंधरव पहुंचो आई ॥
अरुण नयन देखा युत क्रोधा ❋ ताकी सरवरि और न योधा ॥
हाथ समाल मनहु यम दण्डा ❋ काल दण्ड सम बाहु प्रचण्डा ॥
अति बिशाल तनु वेष कराला ❋ देखिये जनु कालहुके काला ॥
कीचक बन्धु हते बल भोर ❋ सोतेहि मम देखत संहारे ॥
बड़े वीर मारे बलवाना ❋ कोऊ भागि न पायो जाना ॥
तहं नृप एक बुद्धि मोहिं आई ❋ गिरि कन्दरमहं रह्यो लुकाई ॥
कृष्णदेव मम कीन्ह संहारा ❋ भूप कृपा करि मोहि उबारा ॥
निकरि न सक्यो तासुकी त्रासा ❋ गिरि कन्द भे देखि तमासा ॥

दो० नीचे ऊपर काठ करि, कीचक दीन्हों डारि ।
आयो वीर कराल तहँ जहँ सैरन्ध्री नारि ॥

ताके कान मांझ कछु कहेऊ ❋ हौ सशंक बैठो तहं रहेऊ ॥
देखत सो उड़ि गयो अकाशा ❋ डारि दियो द्रुम सरवर पासा ॥
सुतन नरेश बित्त भयमानी ❋ देवि रूप सैरन्ध्री जानी ॥
अरु गंधर्व भक्ति उर राख्यो ❋ निशिदिननृपसेवाअभिलाख्यो ॥
पांचौ बांधन कालहि पाई ❋ भये एक थल सब जन आई ॥
कहा द्रौपदी नृपहि सुनाई ❋ चारि बन्धु तुम लाज बिहाई ॥
द्रुपद कुमारि बार बहु भाखी ❋ मीम लाज मेरी हठ राखी ॥
सुनत प्रसन्न भये सब भाई ❋ कोउ सकै नहिं भेदहि पाई ॥
रही राति कछु प्रात तुलाना ❋ गयेसकसनिजनिजअस्थाना ॥

दो० यहिबिधिबीते दिवसकछु, नृपातीविराट निकेत ।
दुरे रहे पाण्डव सकल, काल क्षेप के हेत ॥

इति श्री महाभारते बिराटपर्बाणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
कीचकवधबन्धुबधवर्णनि नामचतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० वैशम्पायन सों कही. जनमेजय यह बात।
कहो कथा मम वंश की.सुनत न श्रवण अघात॥

कह ऋषिचितदेसुनहु भुवारा ❋ कथाविचित्र अमियरससारा ॥
दुर्योधन नृप यह सुधि पाई ❋ कीचक केहुँमार्य्यउ शत भाई ॥
शकुनि कर्ण ते पूछि नरेशा ❋ कीचकबधबड़मोहिं अंदेशा ॥
सहननाग बल अति बरियारा ❋ कहौ कर्ण कहि कीचमारा ॥
सुनत कर्ण इमि कहौ बखाना ❋ कहौ सुनहु नृपमै जसजाना ॥
मो मन उपजत यह सन्देहू ❋ भीम कर्य्यो है कारज येहू ॥
पठवहु दूत तहाँ चलि जाई ❋ सुधिलै खबरि जनावहिआई ॥
भूपति की आज्ञा जब पाई ❋ पठयहु शकुनि दूतसमुदाई ॥
चले दूत नहिं लागी बारा ❋ पहुंचे देश विराट भुवारा ॥
सकल भाँति तिन कीन्हदिठाई ❋ तहाँ न सुधिपांडवकी पाई ॥
भये थकित घूमे हलकारा ❋ आयनृपतिकहँनकीन्हजुहारा॥
जोरिपाण तिन विनय सुनाई ❋ पाडवकी कहुसुधि नहिं पाई ॥
सकल विराट पुरी हम देखी ❋ लेत शोध तहँ रहे विशेखी ॥
केहि मारे कीचक सौ भाई ❋ सो छुक भेद जानि नही जाई ॥
लखे न पाण्डु सुवन तेहि ठावां ❋ सुन्यो श्रवणनहिं एकौ नवां ॥
कह्यो दूत नृप सों वच येहू ❋ सुनि नरेश मन भा सन्देहू ॥

दो० भूपति मन संदेह करि, बोले भीषम द्रोन।
पुर बिराट कीचक वधे.केहिधौं कारण कौन ॥
कीचक को संहारिहै भीम विना नहिं और।
कह्यो द्रोणगज सहस सम.सुभटनको शिर मौर॥

कह्यो सुशर्मा नृप सुनि लीजै ❋ अबकछुऔर बिचार न कीजै ॥
संग चमू कछु देहु सहाई ❋ बेढ़ौं नृप विराट की गाई ॥
और यतन ते वे नहिं ऐहैं ❋ धेनुहरण सुनि तुरतै धैहैं ॥
सुरभिहरण सुनि नहिं सहि रहैं ❋ लागि गोहारि चले सब ऐहैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

होत युद्ध नहि रहहि सँभाग ❀ तहँ खालि जैहै शत्रु तुम्हारा ॥
भूपति अमित सैन सँग दीन्हों ❀ वेदावेगि तेहि अवसर कीन्हों ॥
गमनी संग चमु चतुरंगा ❀ उठी धूरि छापि गये पतंगा ॥
शकुनि बोलाय कहेयोइमि राजा ❀ अब सब करहु कटककोसाजा ॥

दो० चली चल चतुरंगिनी, गज तुरंत के यूथ !
रथी महारथि अतिरथी,सुभट पदाति वरूथ॥

चली सैन को वरणै पारा ❀ बाजे गोमुख शंख नगारा ॥
झांझ ढोल अरु मोर बजाई ❀ मारू राग सहित सहनाई ॥
चलत नृपहि अति होत अतंका ❀ झरे नकीब भये बहु डंका ॥
विरद बखानि बन्दिजन बोले ❀ हालो धरा धराधर डोले ॥
बल कलिंग भगदत्त महीपा ❀ आये साजि नरेश समीपा ॥
द्विरद दुमत्त दुशासन अत्री ❀ शकुनी कृतबर्मा से क्षत्री ॥
विकरण करण शल्यब लधामा ❀ कृपाचार्य अरु अश्वत्थामा ॥
सन्धुराज लक्षन बलबाना ❀ सजिसजिनिजदलहनेनिशाना ॥
बाहुलीक गंगाधर राजा ❀ नृपकांबोज कीन रण साजा ॥
सौ बांधव दुर्योधन केरे ❀ औरो सजे बार बहु तेरे ॥
भीषम द्रोण अलम्बुष साजे ❀ सोमदत्त भुरिश्रव गाजे ॥
दक्षिण दिशा सुशमी घेरा ❀ उत्तम दिशि कुरुनाथ गरेरा ॥

दो० वन वीथिन छाये सुभट लियो देश सब घेरि।
बांध्यो ग्वालसमूह तहं लीन्हो धेनु खदेरि ॥

केतिक ग्वलनालियबाधिसुशर्मा ❀ केतिक भाजि गये वश भर्मा ॥
ते नरेश पह जाय पुकारे ❀ धेनु वृन्द हरि गय तुम्हारे ॥
सेनापति पठवहु बलदाई ❀ शत्रु जीति गो लेई छोड़ाई ॥
गोधन हरो सुशर्मा आई ❀ उठि नरेश चालि लेहु छोड़ाई ॥
जो न नरेश होहु असवारा ❀ तौनहिगोधनामिलाहिंतुतुम्हारा ॥
और न सकहि सुशर्महिं जीति ❀ सुनु नरेश मनमान प्रतीती ॥
देखि सचिवदिशिनृपतिसुजाना ❀ करि सुधिकीचककीपछिताना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० कीचक कहँ सुमिरै नृपति, यह कहि बारहिंबार ।
वा बिन सुरभी बेढ़ियो, को कहि लखै पुकार ॥
हस्ये बोल्यो भूप तव, सेनापाल बुलाय ।
धाइ सुशर्मा बीरजे, सुरभी लेहु छुड़ाय ॥

उत्तर शंख नृपति सुत बीरा ❋ औरौ सजे अमित रणधीरा ॥
चले नरेश साजिकै साजा ❋ बाजे विपुल जुझाऊ बाजा ॥
गज रथ अरु पदाति बहु संगा ❋ बहु कुरंगगति चले तुरंगा ॥
करि बहु यतन सुशर्मा हांकी ❋ चलिनाहिंसकत धेनुसबथाकी ॥
सहदेव खुरा व्याधि उपजाबा ❋ ताते धेनु सकत नहि जावा ॥
तब लागि सुभट गये सब आई ❋ बाजै पटह शंख सहनाई ॥
पणव धेनुमुख भरि समूहा ❋ बाजे कटक भयो अति हूहा ॥
उभय कटक महँ बाजन बाजे ❋ करि करि नाद बीर सब साजे ॥
द्वउ दिशि दल उमड़े घन घोरा ❋ जहँ तहं सुभट भिरे बरजोरा ॥
अँधाधुन्ध रण भयो असूझा ❋ अपन बिरान परत नाहिं सूझा ॥
विविध भाँति तनु अस्त्र प्रहारे ❋ टरे न एक एकके टारे ॥
उत्तर कुँवर आनि रण मराडो ❋ बाणनते रिपु सैन बिहराडो ॥
देखि सुशर्मा क्रोध अपारा ❋ करि संधान सारथी मारा ॥
करि अति नाद सुशर्मा गाजे ❋ चढ़ि तुरंग उत्तर रण भाजे ॥
गयो नगर तन अति भय मानी ❋ ले धेनु शंख कीन्ह रण आनी ॥

दो० शंख सुशर्मा वीरते, परो आनि जब जोर ।
महा भयंकर युद्धभो, बिशिख चले चहुँओर ॥
विजय बृहन्नड घर रहो, पांडुपुत्र तह चारि ।
देखत कौतुक युद्धको, सकै न कोउ हारि ॥

पञ्चबाण तब शंख प्रहारे ❋ ते शर काटि सुशर्मा डारे ॥
शर बहुत्यागिं कीन्ह अतिजुझा ❋ मूर्च्छित कुँवरनयननहिंसूझा ॥
देखि सारथी रथी अचेता ❋ दल पीछेगा यतन समेता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब विराटनृप करि संधाना ❋ एकबार मारे सौ बाना ॥
तेश्वर विशि सुशर्मा काटे ❋ बाण पचीस क्रोध करि छांटे ॥
मूर्च्छित भयो विराट भुवाला ❋ करिनिबन्ध निजरथपर डारा ॥
बर्षन बाण सुशर्मा लागा ❋ भयो अधीर कटक सब भागा ॥
नृपहि बाँधि सब जीति सहाई ❋ चल्यो धेनु लै शंख बजाई ॥

दो० सहदेव वपुष गुवालके, कङ्कऋषिहिं शिरनाय ।
टेरि सुशर्मा हाँक दे, भिर ततक्षण जाय ॥
मत्त करी दल तासुको, अंकुश टेर सुनाय ।
फेरो बल करि सिंहज्यों,गहो कोपि धरधाय ॥

भयो युद्ध कछु कहत बनैना ❋ देखत थकित भई सब सैना ॥
मल्लयुद्ध तहँ भयो अपारा ❋ लात घात मुष्टिका प्रहारा ॥
भिरहिं गिरहिं उठि लरहि सँभारी ❋ अति बलयुगल न मानेंहारी ॥
तबहिं सुशर्मा बल करि तागे ❋ पांडुपुत्र गहि धरणि पछारो ॥
मल्ल युद्ध करि दल बिच लायो ❋ छोरि विराटहि दल महँ लायो ॥
भीमसेन गज यूथ सँहारे ❋ पकरि तुरंग तुरंगन मारे ॥
गहि पदाति के शीश उपारे ❋ और सबै मल्लन को मारे ॥
बारहिं बार भीम रण गाजे ❋ सुनि सुनि नादशत्रुसबभाजे ॥
नकुल कीन्ह तब खड्ग प्रहारा ❋ कटी सेनबहिशोणित धारा ॥

दो० वही सरित तहँ रक्त की, गयो सुशर्मा भाजि ।
छोरि विराटहि लै चले, पांडुपूत्र रण गाजि ॥

आय कंक कहँ नायो माथा ❋ देखि सकल दलभयोसनाथा ॥
फिरी धेनु सुख भयो अपारा ❋ गृह कहँ चल्यो विराट भुवारा ॥
उत्तर दिशि दुर्योधन राई ❋ बेढ़ि लई सुरभी समुदाई ॥
द्रोण दुशासन अरु भगदन्ता ❋ किते यूह लै चले तुरन्ता ॥
धेनु बृन्द यक कर्ण विलोकी ❋ रथ दौराय लीन्ह तहं रोकी ॥
मिथुना ग्वालन धेनु लै भाजा ❋ तेहि तहं खुराब्याधिउपराजा ॥
बहु बिधिमारि ग्वाल गणथाके ❋ अचलभयो धेनुचलतनहाँक ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मिंथुना शाप कर्ण कहँ दीन्हा ❀ फल पैहो तुम आपन कीन्ही ॥
जैसे अचल कीन्ह धनु मोरा ❀ भारत मे अटकै रथ तोरा ॥

दो० अपर ग्वाल गण आइकै, बहु विधि करी पुकार ।
उत्तर उत्तर की दिशा, बेढो धेनु तुम्हार ॥

सुरभी शत हरि गई तुम्हारी ❀ बैठ सुचित्त सदन महँ झारी ॥
हरी एक दुर्योधन गाई ❀ एक दुशासन लै हँकवाई ॥
करिवर एक कर्ण हरि लीन्हा ❀ कृतवर्मा आगे धरि दीन्हा ॥
नृप भगदत्त गाय बहु तेरी ❀ हरे यूथ चँहुओर गेरी ॥
पीत श्याम सुरभी बहु चोरी ❀ हरि लीन्ही कपिला अरु धौरी ॥
लक्षनण कुँवर हरे यक यूहा ❀ लैकलिंग यह धेनु समूहा ॥
कुंवर पुकार श्रवण सुनि मेरी ❀ हरी द्रोण सुरभी बहुतेरी ॥
लिये जात धन अश्वत्थामा ❀ उत्तर दिशि उत्तर बलधामा ॥

दो० ग्वाल विलाप, करि उत्तर ते बहु भाँति ।
कही तुम्हारी धेनु हरि, लीन्हे कुरुपति जाति ॥

बाह्लीक गङ्गाधर गाई ❀ हरि काम्बोज लीन्ह अगुवाई ॥
सोमदत्त भीषम रण गाढ़े ❀ शकुनी शल्य रोकि मग ठाढ़े ॥
करत कुलाहल गिरि जाता ❀ दीरघ दीरघ स्वर करि बाता ॥
कहत गोप कविविधविलापा ❀ धेनु हरण सुनितोंहिनव्यापा ॥
ऐसो धिक जीवन जग तोरा ❀ शालतउर न वचनसुनि मोरा ॥
उत्तर कहत सुनुहु सब ग्वाला ❀ सेना साहित न भगवनभुवाला॥
मेरे रथ नहि सारथि भाई ❀ होत लत मै धेनु छुड़ाई ॥
जो मेरे रथ हाँकत कोई ❀ कौरव जियत न छाँड़ौ कोई ॥

दो० द्रुपदसुता यह वचन सुनि, अर्जुन ते अकुलाय ।
कह्यो बृहन्नड़ कुँवर का, तुम रथ हाँकौ जाय ॥

कह्यउ पार्थ तुव त्रिय बौरानी ❀ रथहांकब गतिहमनहिंजानी ॥
कहै कुँवर मोसन नहिं होई ❀ देव निकारि देश ते सोई ॥
दासी भुरै कुँवर उरझावा ❀ चहत जीविका मोरि छुड़ावा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जानौं गाय सकल मैं गीता ❀ विधि भांति नाचौं संगीता ॥
और बजावहुँ मैं सब बाजा ❀ करौं प्रसन्न उदर हित राजा ॥
चहत मोरि सब विधि उपहासी ❀ मृषा कुँवर बोलत यह दासी ॥
यह कहि पार्थ रहे अरगाई ❀ द्रपदसुता रानी पहं आई ॥
तहाँ बैठि उत्तग कुमारी ❀ कह सैरन्ध्री वचन उचारी ॥
बचन हमार सुनहु महरानी ❀ धेनु बेढ़ि कुरुपति अभिमानी ॥
पठवहु कुँवर भवन नहिं राजा ❀ धेनु गये लागो कुल लाजा ॥

दो० यह पारथ को सारथी, बृहन्नड़ा याहि नाम ।
जो यह हाकै कुंवर रथ, जीते सब संग्राम ॥

अब पठवहु उत्तरा कुमारी ❀ प्राणनते वह अधिक पियारी ॥
जो यह कहहि हिज्ञ ते बानी ❀ सो फुरकरहि सत्य सुनु रानी ॥
कन्या सरस जानि मन ताको ❀ विद्या सकल पढ़ाई याको ॥
हांकब रथन कहा किन कोइ ❀ याको हठ टारै नहिं सोई ॥
सुनत श्रवण सैरन्ध्री बानी ❀ कह्यउ उत्तरा ते यह रानी ॥
सँग सरन्ध्री के तुम जाउ ❀ विजय वृहन्नड़को समु झाउ ॥
हठकरि कह्यउ काज जेहि होई ❀ उत्तर को रथ हाँकै सोई ॥
सुनत बचन आतुर सो आई ❀ सँग सैरन्ध्री लीन्ह लेवाई ॥

दो०जाय पार्थ पहँ रुदन करि, गई कंठ लपटाय ।
मलिनवसनगुडियाभंई, खेलन मोहि सोहाय ॥
सुन्यो श्रवण यहिपुरनिकट, आयोहैकुरुराय ।
तिनकोभूषणवसनगुरु, मो कहँ देउ छिनाय ॥

जब लगि बचन करौं फुर मोरा ❀ तब लगि कंठ न छांड़ौं तोरा ॥
भूषण वसन कौरवन केरा ❀ बिन आने नहिं होय निबेरा ॥
अर्जुन ते उत्तारा कुमारी ❀ बोली बहुरि नयन भरिवारी ॥
भीषम द्रोण कर्ण उर माला ❀ दुर्योधन के मुद्रक बिशाला ॥
देहु गुरु मोहि आनि छिनाई ❀ यहि विधि बारबार रट लाई ॥
कहत द्रौपदी श्रवण बानी ❀ सभा शुद्धि सब तोहिंभुलानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बीती अवधि डरहु केहि काजा ❋ लरहु निकट आयो कुरुराजा ॥
क्षत्रिय युद्ध डरहिं जो पारथ ❋ कर्म धर्म बहु ताहि अकारथ ॥
का क्षत्रिय द्विज गाइन काजा ❋ उडि न लरै कुल आवै लाजा ॥
तुम सरमात प्रबल त्रिय नाहीं ❋ जिय डेरातजिमिपियहँजाहीं ॥

दो० चित्त जाउ रत साहसी, महाबाहु बलधाम ।
बृहन्नडा का रूप धरि, तुम छाँड्यउ वह नाम

क्यों हठि रह्यउ चुपकि तुम पारथ ❋ करौ युद्ध है उतर स्वारथ ॥
कह द्रौपदी श्रवण लगि बाता ❋ भये दृगअरुणफूलिसबगाता ॥
कह्यो उतरा वचन रसाला ❋ देहु मँगाय बसन माणे माला ॥
बारबार यह कहि बिलखाई ❋ तजै न कंठ रही लपटाई ॥
समुझायो बिधि पार्थ अनेका ❋ सुनि उतरा तजत नही टेका ॥
अर्जुन देखि दया उपजाई ❋ दृगजल पोंछि कुँवरि समुझाई ॥
कौरव जीति सबन मणि लेऊं ❋ पुत्री तेहि क्षणक मह देऊं ॥
जो नहिं भूषण वसनहिं लावों ❋ अनन फिरिनतेहिदिखरावों ॥
करि प्रबोध उत्तरा पठाई ❋ उतर ते बोल्यो हरषाई ॥

दो० उत्तरसों तबहीं कही, विजय बृहन्नड बात ।
साजों कौरव युद्धको, व्है प्रसन्न सब गात ॥
पारथ सारथि मैं कियो, जानत हौ रथ हाँकि ।
जहाँ होतह सारथी, जीति सकै को ताकि ॥

इतिश्रीमहाभारते विराटपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
पंचमोऽध्यायः ॥५॥

सुन्यो वचन यह राजकुमारा ❋ हृदय माँझ सुख भयो अपारा ॥
टोप सनाह पार्थ के आगे ❋ राखे वचन कहन इमि लागे ॥
कवच पहिरि पारथ परमाना ❋ जाते अंग न भेदै बाना ॥
जिमि कीचक पहिरै वर नारी ❋ तिमिसनाह कृत सुबन नगारी ॥
देखि लोग सब हँसे ठठाई ❋ कैसे हिज्ज युद्ध समुहाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सिंधु समान कटक कुरुराई ❋ रथ लै भाग्यो युद्ध डराई ॥
सबके बचन हासरस पागे ❋ सुनत द्रौपदी शर सम लागे ॥

दो० कहत पार्थते द्रौपदी, बौरावत क्याहि काज ।
रथ साजो अब कुँवरको,रण जीतो कुरुराज ॥
वर्ष दिवसकी अवधि वदि, गये और दिनबीति॥
कीजै युद्ध निशंक व्है, रही कौन की भीति ॥
भयो वृहन्नडा सारथी, रथ आरुह्यो कुमार ।
साजि कटक लीन्ह धनुष,कोपि गह्यो तलवार ॥

गन्धर्वन जे मन्त्र सिखाये ❋ सो पढ़ि तुरंग उठाये ॥
ह्वै सारथी वेगि रथ हांको ❋ औघट वाट न कानन ताको ॥
कौरव दल लखि सिन्धु समाना ❋ उतर के घट रह्यो न प्राना ॥
गाजत गज हींसत हैं घोरा ❋ दुन्दभि भेरि नाद अति शोरा ॥
शंखनाद पूरे सब कोई ❋ मारु मारु सब दल महं होई ॥
द्वन्द्व घराट ध्वनि अति ठहनाई ❋ मारू राग सहित सहनाई ॥
रंग रंग बैरख फहराई ❋ हरित पीत श्याम सोहाई ॥
बाजत सेन सेन पर डंका ❋ वर्णि बन्दि जन कहत अतंका ॥
सारथि सन उत्तर कर जोरा ❋ लै चलु भागि भवन रथ मोरा ॥
बार बार तेहि विनय बखानी ❋ एकौ बात न सारथि मानी ॥

दो० करत विनय सोनाहिंसुनत, रथत्याग्यो अकुलाइ
भाजत लखि उत्तर कुँवर, गयो पार्थ तब धाइ ॥

बाँधि धीर रथ ऊपर आई ❋ सन्मुख चल्यो सेन पर धाई ॥
तब गुरु द्रोण पार्थ पहिचान्यो ❋ सबहींते यहि भांति बखान्यो ॥
बाँधि रथी रथ ऊपर धारो ❋ ह्वै निशंक रण को पगु धारो ॥
अवगाहन सागर संग्रामा ❋ भुज बल पैज करी बल धामा ॥
शूर सगज ह्वै सब धेनु बाणा ❋ लेहु अरु शक्ति कृपाणा ॥
पवन मगन सम अर्जुन आवत ❋ वा बिनको जगमे अस धावत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दुर्योधन ते द्रोण बखाना ❀ अब सब जग होहु बलवाना ॥
भूप भली कछु परत न दीसी ❀ है आवनि यह अर्जुन कीसी ॥
कह भीषम सुनु बचन हमारा ❀ मृग संग धावत दीखसियारा ॥
छुवत नितम्ब तासु पद धावत ❀ सुनु नरेश यह पारथ आवत ॥
धरो बांधि रथ राज दुलारा ❀ त्रियस्वरूप यह पांडु कुमारा ॥

दो० मंद दृष्टि भइ द्रौणकी, भीषम गये बुढ़ाय।
कह्यो शकुनियह कर्णसों, हंस्यो कर्ण हहराय।

सुनि भीषण भा क्रोध अपारा ❀ कह नरेश सुनु बचन हमारा ॥
बन बन फिरत बहुत दुखपावा ❀ परम क्रोध करि पारथ आवा ॥
चलहि क्रोधकरितुमहिं बिलोकी ❀ ये शठ एकौ सकहिं न रोकी ॥
भीषम कह्यो कर्ण सन बोली ❀ दलकी तीनि बनावहु टोली ॥
एक सेन ले चलहु भुआला ❀ एक करै गोधन प्रतिपाला ॥
पारथ रोकि करौ संग्रामा ❀ एक सेन ते सब बलधामा ॥
यहि बिधि भीषम मंत्र दृढ़ाई ❀ तीनि अनी करि सेन बनाई ॥

दो० द्रौणी कृतवर्म्मा शकुनी. शत बंधव वीरेश।
कृपाचार्य अरु कर्ण संग. सो लै चल्यो नरेश॥

नृप भगदत्त शल्य बलदाई ❀ चले संग लै धेनु लिवाई ॥
भीषम द्रोण आदि रणधीरा ❀ मग रोके ठाढ़े सब वीरा ॥
करै शंख ध्वनि औ गले गाजैं ❀ मारू पटह भेरि बहु बाजैं ॥
गौमुख ढाके ढोल पणवानक ❀ बाजतसब अतिहोत भयानक ॥
द्विरद यूथ देखत अति भारी ❀ भादौं जलद घटा जनु कारी ॥
रथ के ठाट भूमि सब छाये ❀ परै न भूपर तिल छिटकाये ॥
तुरंग पदाति बिलोकि अपारा ❀ भयो संशक बिराट कुमारा ॥

दो० उत्तर सों सारथि कही, भयनकरहुकछु अंक।
सकल निपातों अरि चमू, रहियो आप निशंक॥
असकहि फेरोतुरंग रथ, सुनिपाण्डवकुलदीप॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पलक न बीती विपिनमहं, लगे नगर समीप ।
अधंकूप तरुवर शमी, तापर धनु अरु बाण ।
वेगिलआवहुमोनिकट, गंजौं अरिदल प्राण ॥

सुनत बचन उत्तर हरषाई ❀ त्यहिदुखमनिकटतुरंतचलिजाई ॥
चढ़ेउ पार्थ की आज्ञा माना ❀ अस्त्र सनाह विलोक्योआना ॥
पार्थ सुनो माणि श्वेत सनाहा ❀ श्वेत धनुष श्वेत गुण आहा ॥
आनो बेगि छुवै मति सांई ❀ अस्त्र सनाह नृपति कर होई ॥
फिरि देख्यो ऊत्तरा कुमारा ❀ अर्जुन ते यह पार्थ उचारा ॥
कनकरचित मणिखचित सोहाये ❀ धनुष सनाह देखि युग पाये ॥
आयसु होइ डारि मोहि दीजै ❀ कह पारथ यह कत मतकीजै ॥
यह सहदेव नकुल धनु गेरा ❀ रहि न सकै मम खैंच दरेरा ॥
सो उत्तर छाँड्यउ अरुगाई ❀ और सनाह बिलोक्यो जाई ॥
कोटि भांति उत्तर बल करेऊ ❀ जब न उठ्यो तब सो परिहरेऊ ॥
उठो न धनुष कवच हियहारो ❀ अर्जुन ते इमि बचन उचारो ॥

दो० उठ्योनधनुषसनाहकर, कोटिभाँति बलकीन्ह ।
लोह मयी जनुबज्रसम, केहि निमितकै दीन्ह॥

परी गदा गिरिवर समताई ❀ है केहि कै मोहिं देउ बताई ॥
कह अर्जुन उत्तरा कुमारा ❀ याको सुनहुसकल व्यबहारा ॥
लोहमयी धनु कवच कराला ❀ भीमसेन को गदा बिशाला ॥
लावहु और करिय रण जाई ❀ मग हमार देखत कुरुराई ॥
लाव वेगि धनु कवच हमारा ❀ पल लागतजनु कल्पअपारा ॥
जो गृह जाइ भाजि कुरुराई ❀ फिरि का करबयुद्ध महँ जाई ॥
अक्षत तूण जाइ तहँ देख्यो ❀ संभ्रम भयो कुंवर यह लेख्यो ॥
छुवत पाणि उत्तरा कुमारा ❀ अहिह्वै बिशिखं करत फुंकारा ॥
स्वै किरीट स्वै कवच विलोका ❀ रवि समतेज धनुष अवलोका ॥
पारथ ते तब कहाउ कुमारा ❀ धनुजनु दिनकर तेज पसारा ॥
तब आयुध हम छुवन न पावैं ❀ व्याल रूप शर काटन धावैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनु सारथि मम वचन सुहाये ❀ मोपर अस्त्र न जायँ उठाये ॥
यह सुनिकै पारथ हरषाई ❀ कवच अस्त्र सब लीन्ह उठाई ॥

दो० निर्गुण धेनु गुण करि सोइ, सूधे कीन्ह बाण ।
काढी गंगा भूमि ते, धाये सकल कृपाण ॥
पहिर कवच शिर टोप दै, निज धेनु करि टंकोर ।
हांक्यो रथ बहु कोप करि, पहुंचो कटक बहोरि ॥
वीर धनुद्धर धीर करि कै मन महँ कहूं न हार ।
भादुर्घटसबघटनमहमहँ, कौरव दलअतिकार ॥

बैठो आनी ध्वजा हनुमंता ❀ जाके बलको नाहि कछु अंता ॥
करिअतिक्रोधधनुष शरलीन्हों ❀ देवदत्त शंखध्वनि कीन्हौं ॥
चल्यो पार्थ निज रोष बढ़ाई ❀ जीतन हित दुर्योधन राई ॥
सारथि ते उत्तर कर जोरी ❀ कहै सुनहु बिनती कछु मोरी ॥
तुमते कहौं बृहन्नड़ बांची ❀ मोते कहौ बात सब साँची ॥
कौन आप मोहिं देउ बताई ❀ मो मनकी संशय मिटि जाई ॥
कह अर्जुन भाषत सति भाऊ ❀ है ऋषि कंक युधिष्ठिर राऊ ॥
हौं अर्जुन यह सुनहु कुमारा ❀ भीम जयंत तुम्हार सुवारा ॥
सेनी सहदेवहि तुम जानो ❀ बाहुक नकुल सत्यही मानो ॥

दो० वह है रानी द्रौपदी, जेहि सैरंध्री नाम ।
कछु न भय चित कीजिये, जीतौं सब संग्राम ॥
तुम्हारी सुरभी सो हरी, लेत हमारो शोध ।
अब सुन बाते से अवधि, तब मैं कीन्ह क्रोध ॥

इति श्रीमहाभारते बिराटपर्वणि सबलासिंहचौहान भाषाकृते
षष्ठोऽध्याय ॥ ६ ॥

दो० उत्तर फिरि लाग्यो चरण, सुनु स्वामि सतिभाय ।
दशौ नाम अपन काहौं, तौ मो मन पतियाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कौरव बंश जन्म हम लीन्हा ❀ अर्जुननाम ब्यासमुनिकीन्हा ॥
बाण पंथ सुर द्विरद उतारा ❀ पार्थ नाम भा जगतहमारा ॥
जीत्यो बात कवच संग्रामा ❀ कीन्ह्यो सुनासीर को कामा ॥
भये प्रसन्न समेत समाजा ❀ विजयी नाम धरो सुरराजा ॥
पुनि नरेश शिर मुकुट बंधावा ❀ तहां किरीट नाम कहावा ॥
द्रुपद नरेश सेन सब काटी ❀ एक मिलाय मांस अरुमाटी ॥
पुनि विभत्सरस करि रण राखा ❀ नाम बिभत्सद्रोण यह भाखा ॥
धनपति जीति दण्ड लै आना ❀ नाम धनंजय कृष्ण बखाना ॥
द्वौं कर जोरि करौं संग्रामा ❀ परो सव्यसाची तब नामा ॥
श्वेत तुरंगम रथ माचि आऊं ❀ भयो श्वेतबाजी तब नाऊं ॥

दो० रथ साजत मैं युद्ध हित, ध्वज बैठत हनुमान ।
नाम कपिध्वज जग विदित, याही ते तू जान ॥

शब्द होत रहै हमरे बाना ❀ शब्दभेद जग नाम बखाना ॥
औरहु सुनो विराट कुमारा ❀ हम तुम्हार कीन्हों अपकारा ॥
बार बार विनवों कर जोरी ❀ सो सब चूक बकासिय मोरी ॥
भीमसेन शत कीचक मारे ❀ ते अपराधी हते हमारे ॥
बरबस गह्यो द्रौपदी रानीं ❀ मोरेउभीम मानि जियग्लानी ॥
मोरेउ मल्ल दिग्द गाहि लायो ❀ तेरे गृह हम अति सुख पाये ॥
तुम्हरे आनि विपति सब डारी ❀ वर्ष दिवसकी अवधि हमारी ॥
द्वादश वर्ष विपिन ह्वै आये ❀ तब छाया महँ अति सुख पाये॥
सुनि यह श्रवण विराट कुमारा ❀ जोरि युगलकर बचन उचारा ॥
हलुकी भारी जो हम कहेउ ❀ आप समर्थ श्रवण सुख लहेउ॥
जो कछु हमतें भा अपराधू ❀ सो सब क्षमाकरहु तुमसाधू ॥

दो०वीर धनंयज क्रोध करि,चल्यो सबल रथहांकि ।
अति बल चले तुरंग सब,शिथिल ह्वैरथा हांकि॥
पाय तेज गन्धर्व को, अति बल भयो तुरंग ।
कही द्रोण गुरु पार्थ सों, कौन कर रण रंग ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आय धनुर्द्धर मा रण काजू ❀ सन्मुख करै युद्ध को आजू ॥
बीर बली नहिं धीरज धरिहैं ❀ कौन बीर अर्जुन सन लरिहैं ॥
दल जै हैं चहुँ ओर पराई ❀ युद्ध जुरे नहिं कोउ समुहाई ॥
सुनहु सकल मम बचन सुहावा ❀ याते अधिक शोच उर आवा ॥
प्रलय काल जेहि करैं मशाना ❀ कौधौं सहै पार्थ कर बाना ॥
कोटि उपाय करो सब सोई ❀ अर्जुन जीति सकै नहिं कोई ॥
याहि विधि कहि गुरुद्रोण बुझावा ❀ भयो अमर नृप चरित सुहावा ॥
प्रथम पार्थ युग बाण चलाये ❀ ते गुरुद्रोण निकट चलिआये ॥

दो० एकगिरो गुरुचरणतर एक श्रवण ढिग आइ ।
करि प्रणामपारथ कही, परो भूमि पर जाइ ॥
तजे पार्थ पुनि बाणयुग, गयो पितामह पास ।
परो चरणयकश्रवण महँ,कीन्हो आयप्रकास ॥

प्रथम पिता मह पार्थ प्रणामा ❀ तुम ते कहौं सुनहु बलधामा ॥
पुनि अर्जुन यह कह्यो सँदेशा ❀ तुम सन्मुख रण मोहिंअँदेशा ॥
क्षमब नाथ अपराध हमारी ❀ कुरुपति हमें बैर हैं भारी ॥
कपट द्यूत करि भूमि छुड़ाये ❀ तेरह बर्ष महा दुख पाये ॥
करिहौ आज भयंकर रारी ❀ अब न पितामह लागिहमारी ॥
याहि कहि बचनबाण महिजाही ❀ कह्यउ पितामह संहहिं सुनाई ॥
कह भीषम अब अर्जुन आवा ❀ करहुसकल मिलि रणकोदावा ॥
सकल सजग ह्वै गहि हथियारा ❀ करहुयुद्ध जानि करहुअबारा ॥

दो० कहेउ द्रोण गांगेय तें, सुनिये बचन प्रमाण ।
श्रवण लागि मोसों कह्यो,यह अर्जुनकोबाण ॥

तुमसन्मुख रण उचित न मोको ❀ जाते बिनय सुनायो तोको ॥
कपट द्यूत करि विपिन निकारा ❀ तेरह वर्ष सह्यो दुख भारा ॥
अब न गुरु अपराध हमारा ❀ करिहौ कटक सकल संहारा ॥
अस कहि बाण परो महि जाई ❀ ह्वै सचेत सब करहु लराई ॥
तेहि अवसर अर्जुन तहँ आई ❀ देखे सकल बीर समुदाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गर्जत जहँ तहँ धनुष चढ़ाये ❀ तहँ कुरुनाथ देखि नहिपाये ॥
उत्तर ते यह पार्थ बखाना ❀ सुनुबिराट सुत बचन प्रमाना ॥
अपर निधान निसरहिं नहिंकाजा ❀ चलुरथ हाँकि जहाँ कुरुराजा ॥
सुनि विराट सुत तुरँग उठाये ❀ जेहिदलनृपाति तहाँचलिआये ॥
लीन्हो पार्थ भूप कहँ ताकी ❀ लैगा बोगी कुँवर रथ हाँकी ॥
भीष्म द्रोण सेना सब धाई ❀ पहुंची निकट भूप के आई ॥
हाहा हूत सेन महँ भयऊ ❀ दलतीनो यक मिलहै गयऊ ॥
कह नरेश सब वीर बुलाई ❀ को रोके अर्जुन कहं जाई ॥

दो० जीवन पारथ वीर हित, बीरा लियो कलिङ्ग ।
अचल मेरु सो रण रच्यो, कर्योकोटिरणरंग ॥

नृप कलिङ्ग अर्जुन बल पाई ❀ द्वौदिशि बाण बुन्द झरिलाई ॥
दश शर तब कलिंग नृप छांटे ❀ आवत पार्थ बीचही काटे ॥
पुनि अर्जुन इक बाण प्रहारा ❀ कुन्तल नृप कलिंग को मारा ॥
पुनि शर हंयो कालके आगे ❀ काट्याउ गजके ध्वजा पताके ॥
गज तजि चढ्यो अपर रथआई ❀ कीन्ह कलिंग युद्ध अधिकाई ॥
तब कलिंग कीन्हों अति कोपा ❀ शरन मारि पारथ रथ तोपा ॥
अग्नि बाण तब पर्थ पँवारा ❀ सब शर भये निमिष महँ छारा ॥
पुनि शत विशिष कलिंग चलाये ❀ ते सब अर्जुन मारि गिराये ॥

दो० पार्थ सहस दश बाण ते, हतो कोप करि वीर ।
मूर्च्छितगिराकलिङ्गरण, धरिनसकतदलधीर ॥

इति श्रीमहाभरते विराटपर्वणि सबलसिंहचौहानआज्ञाकृते
कलिङ्गयुद्ध वर्णंननाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दो० जबकलिङ्गमूर्च्छितभयो, तबविकरणरणसाजि ।
कोपि शरासन बाण लै, आयो सन्मुख गाजि ॥

तब विकरण करि कोप चलाये ❀ भूमि अकाश बाण ते छाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

घोर युद्ध कीन्हों यही भांती ❋ ह्वैगै मनहुँ दिवस महँ राती ॥
अतिशय अंधकार तहँ भयऊ ❋ परैनलखि दिन करछिपिगयऊ ॥
विकरण हनो क्रोध करिजियमो ❋ तीस बाण पारथ के हियमो ॥
पारथ बाण क्रोध करि छंड्यो ❋ पलमहँ शर विकरणके खंड्यो ॥
औरौ बाण पांडुसुत छाटे ❋ हय गय मरे अमित रथ कोट ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर मारा ❋ काटि सेन बहि शोणित धारा ॥
परीं लोथ धरणी पर पाटी ❋ बूझि न पर शीश अरु माटी ॥
कहूँ जंघ कर शिर पद डारे ❋ कहूँ कबंध परे महि भारे ॥

दो० तबविकरण चालीस सर, हन्यो कीश बलवंत ।
कोटि बाण पारथ हन्यो, संगर भयो अनन्त ॥
तब विकरण साहस रहित, भूमि परो मुरछाय ।
देखि कर्ण बल वीर तब, आयो धनुष चढाय ॥

धनुष चढाय कर्ण ललकारे ❋ कठिन बाण अर्जुन पर मारे ॥
ते सर सर्व जिष्णु रण खंड्यो ❋ करिअति क्रोधसहसशरछंड्यो ॥
ते सब विशिख कर्ण पुनि काटे ❋ लाघव शर पारथ पर छांटे ॥
आवत देखे बाण अपारा ❋ अर्जुन आग्नि बाण तब मारा ॥
कर्ण बाण जोरे सब आगी ❋ लागी जरन सेन सब भागी ॥
बरुण बाण तब कर्ण चलायो ❋ क्षण भीतर सब अनल बुतायो ॥
अर्जुन शर बूड़त जब जान्यो ❋ मारो तुरत पवन को बाना ॥
तासु चलत गा नीर सुखाई ❋ ध्वजा पताका छत्र उड़ाई ॥
अहिशर करण त्याग तबकीन्हा ❋ नागनसकलपवनभखि लीन्हा ॥
तब अर्जुन शिखि बाण चलाये ❋ मोरन सकल सर्प सम खाये ॥
रविसुत अन्धकार शर पाग्यो ❋ देखत सब पक्षी गण भाग्यो ॥
परै देख ना नयन पसारा ❋ व्याकुल भयो विराट कुमारा ॥
अर्जुन ते तब वचन उचारा ❋ प्राण जात अब करहु उबारा ॥
तब पारथ रवि बाण प्रहारा ❋ तम भा दूरि भयो उजियारा ॥

दो० तब रविनन्दन कोप करि, मारे पर्वत बान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पारथ रथ पर शैल गण, चहुँ दिशि तेफहरान ॥
बज्र बाण तब पार्थ प्रहारा ❀ सबगिरिभयो निमिष महँछारा ॥
तब रविसुवन क्रोध उपजाबा ❀ पढ़िसुमंत्र यम बाण चलावा ॥
पार्थ कठिन शर आवत जाना ❀ मृत्यु बाण कीन्हो संधाना ॥
अस्त्र अस्त्र लाड़ि शीतल भयऊ ❀ रविसुत कोपि कठिनशरलयऊ ॥
सो लै अर्जुन कै उर मारा ❀ बही प्रवाह रुधिर के धारा ॥
रविनन्दन बिराट सुत ताका ❀ मारो कठिन बाण दे हाँका ॥
अब अर्जुन रण करहु सँभारा ❀ कहाँ निर्धन सारथी तुम्हारा ॥
अर्जुन लये बाण कर चोखे ❀ कही कर्ण भूल्यो जनि धोखे ॥
यम अरु इन्द्र वरुण चलिआवैं ❀ सारथि छाँह त्रुवन नहिं पावैं ॥
सुन रविसुत केतिक बल तोरे ❀ सन्मुख युद्ध करहिं जो मोरे ॥
यह कहिकै अर्जुन शर छण्डित ❀ कीन्होबिशिखकर्णको खण्डित ॥
पुनि पारथ कृत बिशिख प्रहारा ❀ भंज्यो तुरँग सारथी मारा ॥
शतसहस्र शर भालक लीन्हे ❀ रविनन्दन उर भेदन कीन्हे ॥
अगणित बाण हृदय महँ लागे ❀ सहि न सके रविनन्दन भागे ॥
दो० रण अर्जुनको नेकहू, सहि न सको स्वइ बान ॥
रण मंडित ताजि को भयो, रविसो तेज निधान॥
गयो पराय कुरुपतिहि आगे ❀ बिह्वल बचन कर्ण तंह पागे ॥
सुनु नरेश भा कठिन मसाना ❀ सहि न सक्यों अर्जुनके बाना ॥
जब यह सुन्यो कर्ण मुखबाता ❀ क्रोध कृशानु जरै सब गाता ॥
बोल्यो नृपति कुटिल करि भोहैं ❀ अरुण वर्ण भे नयन रिसौहैं ॥
क्षत्रिय कुल बालक सिर गारी ❀ करत युद्ध पग परै पछारी ॥
आयो कर्ण युद्ध ते भागी ❀ तुमहिबिलोक मोहिंरिसलागी ॥
तुम अर्जुन कहँ पीठि देखाई ❀ भै बड़िलाज बराणि नहिजाई ॥
भूरिश्रवा मगध पति आगे ❀ द्रोणहिबोलि कहन नृपलागे ॥
तुम सब मैं पाले याहि कामहिं ❀ पारथ जीति सकै संग्रामहिं ॥
दो० यह कहिकै कुरुनाथ तब, नेकु न मानी शंक ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चल्यो निशान बजाइ रण. भयो महा आतंक ॥
भयो चलत अशकुन अतिभारी ❀ रविके अक्षत फिकरिसि आरी ॥
बिनु घन नभ मण्डल घहराई ❀ रहे गिद्ध दल ऊपर छाई ॥
बोल उलूक भयंकर बानी ❀ बिन वारिद नभ बरसतपानीं ॥
करैं काक कंक नभ ठाटी ❀ चलहिं जम्बुगण मारग काटी ॥
रासभ श्वान भयंकर बोली ❀ बोलत धरा बार बहु डोली ॥
गिरिगिरि परत शरासन पाणी ❀ परतम्यानतजिनिकरि कृपाणी ॥
खास दास कर छत्र बिशाला ❀ परो टूटि अरु नृप माणिमाला ॥
दिशा धूंधि धरणी पर जाई ❀ गये नृपति के चमर उड़ाई ॥
अशकुन और भयो यक बाँका ❀ भूपति रथ को टूट पताका ॥

दो० मै शंका भूपाल तब, कह्यो द्रोण सन बोलि ।
अशकुनकारणसकलगुरु, हमाहिबतावहुखोलि॥

कह्यो द्रोण गुरु सुनु कुरुराई ❀ कहतशकुन अतिबिकट लराई ॥
ह्वै है इहाँ कठिन संग्रामा ❀ होहिनिराश सकल बलधामा ॥
कह्यो बचन गुरु रह्यो चुपाई ❀ बोल्यो कर्ण नृपतिसन आई ॥
रण भाजे मो कहँ भे लाजा ❀ अब मै लरब पार्थसन राजा ॥
यह कहि कर्ण हांकि रथदीन्हा ❀ बाण बृष्टि पारथ पर कीन्हा ॥
देखि पार्थ लीन्ह शारंगा ❀ पुनि रण रच्यो कर्ण के संगा ॥
उभय वीर लागे शर मारन ❀ सौ ते सहत हजार हजारन ॥
तब रविसुवन क्रोधअति कीन्हो ❀ बाण पचीस फोंक पर दीन्हो ॥
हांक मारि रथ ऊपर छंड्यो ❀ अर्जुन ते शर बीचहि खंड्यो ॥
और पांच शर पार्थ चलाये ❀ कर्ण बली ते काटि गिराये ॥

दो० कर्ण धनुर्द्धर क्रोध करि, हन्यो नराच अचूक ।
ते पारथ निज शरन ते, काटि कियो दुइटूक॥

और सहस शर त्यागेउ पायल ❀ ताते भयो तरणि सुत घायल ॥
लक्ष बाण सेना पर मारे ❀ हय गज रथ पदाति संहारे ॥
पारथ करेउ युद्ध सरसाई ❀ रण महँ रक्त नदी बहि आई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मत्त मतंग भेरे जे भारे ❀ भये सरिस दोउ ओर करारे ॥
चमकत खंड मीन सम जाने ❀ चर्म सेवार सरिस अरुझाने ॥
अहिसम रुधिर नदी महँ सांगी ❀ जहँ तहँ परी धूप जनुनांगी ॥
शिर बिन कवच सहित उतराहीं ❀ जहँ तहँ सुभटग्राहजनुआहीं ॥
बिन शिर सेन जात पहिंचाने ❀ मनहुं सूस जल मैं उतराने ॥
रथ के चक्र अमित उतराहीं ❀ जनु आवत भ्रमतजल माहीं ॥
परी पत्र पुरइनि सम मानो ❀ बहतढाल कच्छप समजानो ॥

दो० भैरव भूत पिशाच सब, गावत करि करि हेत ।
नाचत चौंसठि योगिनी, रुधिर पियतयुत प्रेम ॥

अंध धुंध रण भयो भयंकर ❀ नाचत हँसत लेत शिरशंकर ॥
कटकटाहि जम्बुक रण धावहिं ❀ पियहिंरुधिरमलखाहिअघावहिं ॥
गिद्ध आदि पक्षीगण धाये ❀ रण महँ भये तृपति मनभाये ॥
उठहि कबन्ध मुंड विन धावहिं ❀ धरुधरु मारु मारु गोहरावहिं ॥
देखेउ कर्ण भयावन खेता ❀ लीन्हो धनुष कीन्हचितचेता ॥
करि रिस शतसहस्र शर मोर ❀ पांडु सुवन ते कोटि निवारे ॥
अर्जुन कोपि बाण दश त्यागे ❀ काटे तुरंग स्वामि उर लागे ॥
भयो विरथ तब तरणि कुमारा ❀ भयो आनरथ पर असवारा ॥
करि रिस कीन धनुय टंकोरा ❀ अशनिसमानशिला मुखजोरा ॥
हांक मारि कै कर्ण चलावा ❀ बीचहि अर्जुन काटि गिवारा ॥
समबल युगल कर्ण अरु पारथ ❀ कीन्हों महा भयानक भारथ ॥
सत सहस्र शर पार्थ निवारे ❀ हय गज कटे सुभट बहु मारे ॥
कीन्हों पार्थ कठिन संग्रामा ❀ कोटिन सुभटगिरे बहु नामा ॥

दो० कर्ण धनुर्धर क हिये, एक बार सौ बान ।
मारो अर्जुन कोपकरि, कीन्ह्यो कठिन समान ॥

तरणि तनय कहँ मूर्च्छा आई ❀ रथ सारथी दीन्ह पहुँचाई ॥
दुश्शासन तब युद्ध सँभारो ❀ देख्यो कर्ण महाबल हारो ॥
ले कर धनुष कोपि बलवाना ❀ पारथ पर छाँडे बहु बानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ते शर जिष्णु कोटि सब डारे ❀ दस शर दुश्शासन उर मारे ॥
पार्थ वाण सारथि के अङ्गा ❀ बीसबाण ते हने तुरङ्गा ॥
चारि बाण काटे रथ चाका ❀ सात बाण ते ध्वजा पताका ॥
पारथ कीन्ह कठिन शर जाला ❀ करि फुङ्कार चले जनु व्याला ॥
भये विरथ दुश्शासन भाजे ❀ शङ्खध्वनि करि पारथ गाजे ॥
अर्जुन बाण बुन्द झरि लाई ❀ कुरुसेन सब चली पराई ॥

दो० भारत अति पारथ कियो, मारी सेन अनन्त ।
बाण शरासन साजिकै, तब आयो भगदन्त ॥

आपन दल जब डोलत ताको ❀ मत्त द्विरद आगे नृप हांको ॥
दश सहस्र शर एकहिं बारा ❀ कीन्हो नृप भगदन्त प्रहारा ॥
ते शर पार्थ कोटि महि डारे ❀ लक्ष बाण करि क्रोध पवांरे ॥
पारथ बाण कोटि भगदत्ता ❀ आगे पेलि चल्यो मय मत्ता ॥
निकट देखि अर्जुन धनु ताना ❀ मारो मगधराज उर बाना ॥
चेत न रह्यो शिथिल सब अङ्गा ❀ तब कुन्तल लै फिरेउ मतङ्गा ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर छांटे ❀ भारत भूमि बाण ते पाटे ॥
रण सन्मुख जेतो दल पायो ❀ मारि पार्थ यम लोक पठायो ॥

दो० अति सङ्कट भा कटक मंह, सेना चली पराई ॥
तब पारथ रणभूमि में, गर्जो शंख बजाइ ॥

इति श्रीमहाभरते विराटपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
कर्णयुद्ध वर्णननाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

दो० पार्थबाण नहिसहि सक्यो, कुरुदलचल्योपराइ ।
देखि द्रोण गुरु क्रोध करि. आयो रथ दौराई ॥

हांक माारि यह बचन सुनायो ❀ पार्थ संभारुद्रोण अब आयो ॥
सुनियह बचन पार्थचलि आगे ❀ करनप्रणाम गुरू सन लागे ॥
देख्यो द्रोण नमित पद सोई ❀ आशिष दयो मनोरथ होई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अस कहि गुरु को दंड चढ़ायो ❀ होइहसजग कहिबाण चलायो ॥
सुनि अर्जुन गहि लीन्हपिनाका ❀ शरसंधानि दोन पुनि हांका ॥
सजग रहो कहि बाण चलावा ❀ गुरु प्रेरित सर काट गिरावा ॥
लघु संधानि द्रोण सर मारे ❀ ते सब पार्थ काटि महि डारे ॥

दो० सहस बाण संधान करि, पार्थ कियो रण रङ्ग ।
रथ सारथि चूरण कियो जूझे चारि तुरङ्ग ॥

तब गुरु चढ़यो अपर रथ जाई ❀ लै धनु बाण बुन्द झरिलाई ॥
द्रोण विशिख यह भांति चलायो ❀ भूमि अकाश बाण ते छायो ॥
ते शर पार्थ निमिष मह काटे ❀ दिशिअरु विदिश बाणतेपाटे ॥
कोपि द्रोण शर अनल प्रहारा ❀ किये बाण अर्जुन के छारा ॥
सहस शिखा पारथ चहु ओरा ❀ जारन चल्यो अनलकरिशोरा ॥
वरुण बाण तब पार्थ चलायो ❀ क्षण भीतरसब अनलबुतायो ॥
कोपि द्रोण ब्रह्मास्त्र प्रहारा ❀ नारायण शर पारथ मारा ॥
अस्त्र शस्त्र ते भयो निवारण ❀तबलगिनिशितविशिखअतिमारण
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ वज्र बाण पुनि कीन्ह प्रहारा ॥
तब धनु तानि द्रोण रण लायक ❀ तड़प्यो सेनानी को सायक ॥
ताते इन्द्र बाण क्षय कीन्हों ❀ तब पारथ मृत्युअस्त्रहिलीन्हों ॥

दो० मृत्यु अस्त्र लै द्रोण गुरु, कीन्हो तुरत प्रहार ।
सबलसिंह चौहान कह, चल्यो करत फुङ्कार ॥

संघट करि अकास उड़ि गयऊ ❀ लड़तलड़त सो सीतलभयऊ ॥
परे भूमि दोनो शर आई ❀ कह्यो द्रोण अजुनहिं सुनाई ॥
सुनहु पार्थ रण करहु संभारा ❀ अब नहिं होय तुम्हार उबारा ॥
अस कहि महा काल शरलीन्हा ❀ पढ़िकैमन्त्र फोंक पर दीन्हा ॥
जान्यो पार्थ भयो अब मरणा ❀ सुमिरे कृष्णदेव के चरणा ॥
छूटो जबहि द्रोण को बाना ❀ मुख पसारि लीन्हों हनुमाना ॥
तब अर्जुन एक बाण प्रहारा ❀ रथ सारथी द्रोण कर मारा ॥
सहस बाण मारे गुरु अंगा ❀ चारि बाणते बध्यो तुरंगा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विरथहि भयो द्रोण जब जान्यो ❀ भूरि श्रवा आनि अरुझान्यो ॥
मारे अर्जुन के दश बाना ❀ बीस बाण मारे हनुमाना ॥
द्वै द्वै शर तुरंगन मारे ❀ शिथिल भयो पट टरतन टारे ॥

दो० तब पारथ अति क्रोध करि, मारो बाण कराल।
मूर्च्छि गिरे भूरिश्रवा, सुधि न रही तेहि काल॥

तब सारथि स्यंदन पलटावा ❀ लै नरेश के आगे आवा ॥
द्रोण अपर रथ के असवारी ❀ सन्मुख पार्थ जुरे धनुधारी ॥
द्वै सरोष गुरु बहु शर छांड़ेउ ❀ आवत अर्जुन बीचहि खांड़ेउ ॥
तबही पारथ क्रोध अपारा ❀ गुरु उर कठिन बाण एकमारा ॥
जबहिं द्रोण कंह मुर्च्छा आई ❀ फिरेउ सूत स्यन्दन पटलाई ॥
अर्जुन कोपिधनुश धरिहाथहि ❀ बधीसेन काटे बहु माथहिं ॥
परी लोथ धरणी पर छाई ❀ रण मह रुधिर नदी बहिआई ॥
सब योगिनि तहं करत विहारा ❀ ताल बजाइ करत किलकारा ॥
भक्षहिं मांस रुधिर पुनि पावहिं ❀ आशिष देहिपार्थ चिरजीवहिं ॥
जीत्यो पार्थ द्रोण संग्रामा ❀ सुनि आयो तह अश्वत्थामा ॥

दो० पवन गमन सम द्रोणसुत, गयो तुरत रथ हांकि।
विशिख चलायोक्रोधकरि, पारकीदिशिताकि॥
सो शर काटे निमिष महँ, कीन्हो पुनिशरजाल॥
द्रोण तनय के उर हन्यो, अर्जुन बाण कराल॥

लागत बाण भयो तन पीरा ❀ रुधिर धार गा भीजि शरीरा ॥
धनुष चढ़ाय द्रोण सुत छांड़े ❀ दिशिऔ विदिशि बाणसबमांडे ॥
ते शर अर्जुन काटि निवारे ❀ द्रोणी हृदय बाण दश मारे ॥
भा अति क्रोध द्रोण सुतजियमें ❀ मारो शर अर्जुन के हियमें ॥
फूटि कवच निसरेउ शर पारा ❀ बहत प्रवाह रुधिर के धारा ॥
अर्जुन अंधकार शर मारा ❀ कुरुदलमध्य भयो अंधियारा ॥
व्याकुल कटक भागि सबगयउ ❀ प्रभा अस्त्र द्रोणी गुण दयउ ॥
ताते फैलि रह्यो उजियारा ❀ अर्जुननिशितविशिखतब मारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० तबरण कोप्येउ द्रोण सुत, खंड्यो अर्जुन बान॥
भाषा पर्व विराट यह, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारते बिराटपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते द्रोणी संग्राम बर्णन नाम नवमोऽध्याय ॥ ९ ॥

दो० वैशम्पायन से कही, जन्मेजय शिर नाय।
कीन्ह कृतारथ मोहिं तुम, अद्भुतचरित सुनाय॥

कह मुनि सुनु जन्मेजय राई ❀ कथा विचित्र श्रवण मन लाई ॥
गुरु सुत दर्पण बाण चलायो ❀ भूमि अकास आरसी छायो ॥
देखि अनेक द्रोण सुत पायो ❀ पारथके उरमें भ्रम छायो ॥
परत देखि बहु अश्वत्थामा ❀ काके संग करौं संग्रामा ॥
यह कहि पार्थ चलायो बाना ❀ कीन्हद्रोणसुत कठिनमशाना ॥
लड़त लड़त द्वौदल मिलिगयउ ❀ द्रोणी कोपि खड्ग कर लयऊ ॥
कीन्ह प्रहार द्रोणसुत डाटा ❀ धनु गुणपारथ को तब काटा ॥
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ निज असि काढ़ि सारथीमारा ॥
पुनि मारे द्रोणी के बाजी ❀ भयवस भयोयुद्ध तजि भाजी ॥

दो० अर्जुन धनु गुणसाजिकै. कीन्हविशिख सँधान॥
रोक्यो तब जयद्रथ चलि, साजि शरासन बाण॥

सिन्धुराज दशविशिख चलाये ❀ ते सब अर्जुन काटि गिराये ॥
पुनि मारेउ पारथ इक तीरा ❀ कवच भेदिगा छेदि शरीरा ॥
सिंन्धु नृपति तब मुर्च्छा आयो ❀ स्यन्दन डारि सूत लै जायो ॥
तब करिक्रोधशकुनि चलिआयो ❀ अर्जुनको बहुबाण चलायो ॥
ते शर काट्यो पांडु कुमरा ❀ पुनिइकबाण शकुनिउर मारा ॥
बाण लगत तनु मोह जनावा ❀ तबहि सुत रथ फेरि चलावा ॥

दो० कोपिकियो संग्राम तब, पार्थ हन्यो बहुतीर।
पारथ केएकहुविशिख. सहिनसकतकोउवीर॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शकुनी गिरत शल्य चलि आये ❀ पारथ पर बहु विशिष चलाये ॥
सो शर अर्जुन काटि निवारे ❀ बाण पचीस शल्य उर मारे ॥
भयो विकल व्यापी बहुपीरा ❀ गयो भागि उर रह्यो न धीरा ॥
रथ आगे पुनि पार्थ चलावा ❀ जीतियुद्ध तब शंख बजावा ॥
बाह्लीक गङ्गाधर आये ❀ नृप कम्पोज युद्ध हित धाये ॥
सोम दत्त करि क्रोध अपारा ❀ लै कर धनुष सेन ललकारा ॥
कीन्ह सकल मिलियुद्ध प्रचारा ❀ चहुंदिशि असि अर्जुन कहंमारा ॥
शूल साग्गि कोउ शर बरसा ❀ कोउआसिघातहने कोउफरसा ॥
देख्यो पार्थ असे चहुंओरा ❀ करिअति क्रोध पार्थशर जोरा ॥
भये एक ते विशिख हजारन ❀ कौरवदल लाग्यो संहारन ॥
कोपि पार्थ बहु बाण प्रहारो ❀ सोमदत्त को दल सब मारो ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर सारत ❀ सन्मुख आनि जुरेसब मारत ॥
लै कृपाण कर पार्थ उठो तब ❀ मारि भगाय दयो बलकरिसब ॥
भजे शूर ते नहि फिरे हेरत ❀ रण में पार्थ दौरि कै घेरत ॥

दो० पार्थबाण नहि सक्योसहि, कुरुदल चल्योपराइ।
धनु टंकोरेउ क्रोध करि सोमदत्त तब आइ ॥

लै सो विशिष पार्थ पर छांड़े ❀ शकसुवन तेहि बीचहि खांड़े ॥
कह अर्जुन कुरुपति बन काढ़ा ❀ शकुनी कर्ण मत्र सुनि गाढ़ा ॥
तुमहुं कीन्य नहि न्याय हमारा ❀ मारन हेतु धनुष कर धारा ॥
अब नाहि बचहु बचनसुनुसांचा ❀ अस कहि पारथ हन्योनराचा ॥
लाग्यो विषम बाण उर जाई ❀ सोमदत्त कह मूर्च्छा आई ॥
बाह्लीक हांक्यो रथ आगे ❀ करन युद्ध पारथ सन लागे ॥
लै कर धनुष कीन्ह संधाना ❀ अर्जुन को त्यागो सो बाना ॥
तेशर पार्थ काटि सब दीन्हा ❀ पार्थ सहस्र शर त्यागन कीन्हा ॥
बाह्लीक ते शर सब काटे ❀ लक्ष बाण अर्जुन रथ पाटे ॥

दो० आवत देखे बाण जब, पारथ गहि कोदण्ड।
पल महँ खंड्यो सकल शर, कीन्ह्यो युद्ध अखण्ड॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शत सहस्र शर एकहि बारा ❀ बाहुलीक उर पारथ मारा ॥
रथ अचेत ह्वै गिरत विलोका ❀ गंगाधर पारथ कह रोका ॥
बाण शरासन कृत संधाना ❀ अर्जुन पर छांडे बहु बाना ॥
ते शर खंडि पार्थ शर त्याग्यो ❀ सोमदत्त सुत उर सो लाग्यो ॥
मरेउ मूर्च्छित गंगाधर जबहीं ❀ रण कम्बोज कीन्ह पुनि तबहीं ॥
आवत ही अर्जुन बलवाना ❀ हृदय मांझ मारेउ यक बाना ॥
लागत चेत न रह्यो शरीरा ❀ रथ मुरझाई गिरेउ रणधीरा ॥
द्विरद दुमत्त क्रोध करि धाये ❀ लक्षन कुंवर अलंबुष आये ॥
संग चमू चतुरंग घनेरी ❀ लीन्हो पांडुसुमन कहं घेरी ॥

दो० शंक न मानत पार्थ भट, यद्यपि ग्रसत अनेक।
डरत न गज सेना निरखि, सिंह बली जिमिएक।

घेरि पार्थ सब करहिं लड़ाई ❀ सेन किधौं बर्षा ऋतु आई ॥
घोर घने गज दीरघ धाये ❀ पावस जलद घटा जनु छाये ॥
श्वेत वर्ण गजदन्त विभांती ❀ सो जनुउड़त गगन बकपांती ॥
होत चमर जहं तहं दस माहीं ❀ राजहंस जनु गगन उड़ाहीं ॥
घन गर्जत बाजत जे डङ्का ❀ आसप्रहार जनु बिज्जु दमङ्का ॥
धनुजनुसुरपति धनुष विशाला ❀ बुन्द मनहु बर्षत शर जाला ॥
अर्जुन मनहु बीर रस पागे ❀ शर समूह पुनि मारन लागे ॥

दो० प्रलयकाल के पवन सम, पार्थ बाण हहराइ।
आइ फँसे कुरुदल भजे, नीरद से भहराइ ॥

द्विरद दुमत्त कीन्ह अति कोपा ❀ शग्न मारि पारथ रथ तोपा ॥
पारथ कीन्ह तुरत संधाना ❀ अरि शर खंडि हने बहु बाना ॥
पंच विशिख ते द्विरद प्रहारो ❀ दुइ शर ले दुमत्त उर मारो ॥
परे मूर्च्छित रण दूनौं भाई ❀ लक्षण कुंवर जुर तब आई ॥
अर्जुन उर मारे दश बाना ❀ सत्तरि बाण हने हनुमाना ॥
रुधिर धार भीज्यो सब अङ्गा ❀ पारथ कोपि लीन्ह शारङ्गा ॥
यहिविधि कीन्हों विशिख प्रहारा ❀ रथ सारथी कुंवर को मारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

प्रेरेउ बहुरि बाण बहु साजी ❋ कीन्हनिधन कुरुपतिसुतबाजी ॥
भये अरूढ कुँवर रथ आना ❋ कीन्होबहुरि बिशिख सँधाना ॥
तब पारथ करि क्रोध अपारा ❋ अशनिसमान बाण उर मारा ॥

दो० मूर्च्छित परा रण भूमि महँ, जब कुरुनाथ कुमार।
साजि अलंबुष धनुष शर कीन्हों युद्ध अपार ॥

गहि कर धनुष अलंबुष धाये ❋ पारथ रथ सन्मुख चलि आये ॥
सात कोटि दानव गण साथहि ❋ धाये सकल धनुषधरि हाथहि ॥
धरि बांधहु दानवपति टेरो ❋ धरु धरु मारु करि घेरो ॥
केहुँ कीन्हो धर शक्ति प्रहारा ❋ मुद्गर शूल केहुँ मारा ॥
परशु कृपाण चले गहि मारन ❋ कोउ खड्ग कोउ परिघ कटारन ॥
कोउ कर सुभट भुशुण्डी लीन्हें ❋ महा मारु पारथ पर कीन्हें ॥
भिण्डिपाल कोउ वृक्ष उपारी ❋ केहु गिरि शिला पार्थ परडारी ॥

दो० सातकोटि दल दैत्य को, करि करि क्रोध अपार।
सब मिलि कीन्होंपार्थपर, निज अस्त्र प्रहार ॥
कियो हस्त लाघव अतिहि, सबको बाण कृपाण।
रोक्यो पारथ असुर बहू, मरि कियो विन प्राण ॥

मारि पार्थ घाल्यो दल घानी ❋ असुर सन भहराइ परानी ॥
दनुज राज तब करि संधाना ❋ पारथ पर प्रेरेउ शत बाना ॥
ते शर कोटी पार्थ रण कोपा ❋ बाणन मारि दैत्य रथ तोपा ॥
ते शर दैत्यराज सब काटे ❋ बाणन मारि पार्थ पाटे ॥
अर्जुन अग्निबाण फटकारा ❋ सब शर कटे निमिष महँ छारा ॥
स्यन्दन सूत तुरङ्ग जरि गयऊ ❋ अन्तर्द्धान असुरपति भयऊ ॥
प्रगट भयो स्यदन्न असवारा ❋ सन्मुख चला करत ललकारा ॥
बधौं पार्थ तेहि एकै बाना ❋ काल तुम्हार आय नियराना ॥

दो० यह सुनि पारथ तब कह्यो, दनुज राज सों बात।
कियेबडाइ निज बदन, नाहिं कछु बल सरसात ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हम तुम करिय आजु संग्रामा ❀ जीते युद्ध होय बल धामा ॥
अस कहि पार लीन्ह शारंगा ❀ दनुजराज के बधे तुरंगा ॥
अमित बाण करि क्रोध पबारो ❀ स्यंदन भंजी सारथि मारो ॥
बहुरि असुर स्यदत चढ़ि आयो ❀ पारथ कह बहु बाण चलायो ॥
पांडुपुत्र सो सायक खंडयो ❀ लक्ष बाण दानवपति मंडयो ॥
तेऊ विशिष काटि महि डारे ❀ बहुरि धंनजय बाण पंबारे ॥
आवत देखि पार्थ को बाना ❀ दनुजराज कीन्हों संधाना ॥
आवत शर अर्जुन के काटे ❀ खंड खंड करि बीचहि पाटे ॥
देखी पार्थ करि क्रोध अपारा ❀ तुरंग सूत दावन को मारा ॥
याहि बिधि पार्थ बीस रथ भजेउ ❀ अरु अनेक दलबादल गंजेउ ॥
सकै न जीति हारि हिय मानी ❀ तबहिं अलंबुष माया ठानी ॥

दो० मारू२कहि दनुज पति, गयो आकाश उड़ाय ।
वर्षन लाग्यो गिरि शिखर,अन्धकार उपजाय ॥
सिंहनाद करि गगन महँ, गर्जत बारहिं वार ।
विटपचलायो क्रोधकरि,विविध माँति हथियार॥

इति श्री महाभारते विराटपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते अलंबुषयुद्धवर्णनोनाम दशमोऽध्याय ॥ १० ॥

दो० दैत्य युद्धते विकलभे, तब उत्तराकुमार ।
पारथ राखहु प्राणअब,यहि विधि करत पुकार॥

दीने बचन सुनि पांडु कुमारा ❀ पढि रबि मंत्र बाण तब मारा ॥
सहस किरण शर कीन्ह प्रकाशा ❀ भयो तुरत माया निशि नाशा ॥
पुनि अर्जुन कीन्ह संधाना ❀ मारे दैत्यराज उर बाना ॥
पारो धारणि खसि मूर्च्छित भयऊ ❀ स्यदन्न घालि सुतलै गयऊ ॥
देखि युद्ध कृतवर्मा धाये ❀ शङ्खध्वनि करि हांक सुनाये ॥
मैं आयो पारथ रहु ठाढ़ो ❀ सेनाधि तेरो मन बाढो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अस कहि कृतवर्मा रण कोपी ❋ करि शरजाल दीन्ह रथतोपी ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर छाये ❋ शर पंजर करि पार्थ दबाये ॥
अर्जुन अनल बाण तब मारे ❋ विशिख असंख्य जारिसबडारे ॥
कृतवर्मा करि क्रोध अपारा ❋ कठिन बाण अर्जुन उर मारा ॥

दो० लग्यो कठिन शर पार्थ उर, क्षत युतभयो शरीर ।
लीन्ह शरासन क्रोध करि, पांडुपुत्र रणधीर ॥

करिअतिक्रोध शिलीमुखछांट्यो ❋ नृपको धनुष शक्रसुत काट्यो ॥
काटे धनुष कृत शूल प्रहारा ❋ बीचहि पार्थ काटि महि डारा ॥
करि रिस छांड़्यो शक्ति प्रचंडा ❋ शरन मारि अर्जुन द्वै खंडा ॥
पुनि पारथ करि क्रोध कराला ❋ कृतउरहन्योविशिखतेहिकाला ॥
बाण लगत तनु मोह जनायो ❋ तब कुन्तलगजफोरिचलायो ॥
कृपा चार्य कीन्हों संधाना ❋ अर्जुन पर छाड़े बहु बाना ॥
आवत पार्थ कोटि महि डारे ❋ सहस बाण करि क्रोध पवाँरे ॥
ते नराच कृत बीचहि खाँड़े ❋ लक्ष बाण पारथ पर छाँड़े ॥
कठिन विशिख अर्जुनगुणदीन्हो ❋ आवत बाणसकल क्षय कीन्हो ॥

दो० पुनि किरीटि अति क्रोध करि, मारे बाण अनन्त ॥
रथ तुरंग पैदल गिरे, मतवारे मैमन्त ।

अर्जुन बहु कुरु कटक निपातो ❋ कृपा तब भयो क्रोध ते तातो ॥
अर्जुन उर मारे दश बानहिं ❋ साठि बाण मारे हनुमानहिं ॥
लै कर धनुष पार्थ रिसिआना ❋ कृपके उर मारे दश बाना ॥
दश शर हन्यो सारथी अंगा ❋ बीस बाणते हन्यो तुरंगा ॥
चारि बाण काटे रथ चाका ❋ पांच बाणते ध्वजा पताका ॥
भयो विरथ कृप चढि रथ आना ❋ पुनि अर्जुनतेहिंकीन्हमशाना ॥
कृपाचार्य बहु विशिख पवांरे ❋ अर्जुन सकल काटि महि डारे ॥
लक्ष बाण तब पार्थ चलाये ❋ आवतही कृप काटि गिराये ॥
कृपाचार्य तब धनु कर लीन्हो ❋ महा मारु पारथ पर कीन्हों ॥
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❋ वज्र बाण कृपके उर मारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० जब कृप रण मुर्च्छित भयो, गयो कटक महराइ।
तब उत्तर कुरुनाथ ढिग, पहुंचो रथ दौराइ ॥

पार्थहि देखि नृपति ढिग आयो ❋ तब भीषम कोदंड चढ़ायो ॥
तब अर्जुन भीषम ढिग हेरा ❋ कीन्हों चितहि शोच बहुतेरा ॥
उत्तर सुनहु पितामह आये ❋ परशुराम जिन युद्ध हराये ॥
अस काहे कीन्हो दंड प्रणामा ❋ आशिष दयो होइ मन कामा ॥
पुनिअर्जुन कुरुपति दिशिताका ❋ उतर कुमार वेगि रथ हांका ॥
नृपदिशि जात पार्थ अवलोका ❋ शर संधानि गंगसुत रोका ॥
जात कहां कहि बाण चलावा ❋ सो शर अर्जुन काटि गिरावा ॥
पारथ दीन बाण गुण चोखा ❋ भीषम पर छाँड़्यो करि रोखा ॥

दो० आवत देख्यो युद्ध महँ, जब अर्जुन को बान।
परमक्रोधकरि गंगसुत,कीन्हो विशिख सँधान ॥

हाँक मारि शर कीन्हे प्रहरा ❋ आवत बाणकाटि महिडारा ॥
पुनि भीषम निज तेज सँभारो ❋ पारथ पर बहु बाण प्रहारो ॥
ते शर कीन्ह पार्थ शत खण्डा ❋ हन्यो क्रोधकरिविशिखप्रचंडा ॥
लख्यो गंगसुत आवत बाना ❋ शर संधानि शरासन ताना ॥
शंतनुसुत काट्यो करि रोखा ❋ तज्यो बाण पारथ पर चोखा ॥
ते शर अर्जुन काटि निबारे ❋ भीषम ते यह बचन उचारे ॥
धनुष समाँरि पितामह लीजै ❋ सावधान मोसन रण कीजै ॥
यह कहि अर्जुन बाण चलायो ❋ कौरवदल बहु मारि गिरायो ॥
द्विरद लक्ष मारे मतवारे ❋ अश्व पदाति असंख्य संहारे ॥
दश सहस्र स्यंदन बध कीन्हों ❋ रुण्ड मुण्डकछुजातनचीन्हों ॥
शोणित सरित बही विकरारा ❋ काक कंक कृत मांस अहारा ॥
पियहिं रुधिर जम्बुक पल खाहीं ❋ कट कटाहिं फेकरै हुआहीं ॥
गिद्ध खाहिं पल उड़हि अकाशा ❋ शंकर देखहि युद्ध तमाशा ॥
जहँ तहँ कबध उठि धाये ❋ मारु मारु कहि शब्द सुनाये ॥

दो० भयो भयंकर खेत अति, अर्जुन कीन्ह मशान।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नाचत चौंसठि योगिनी, करि करि शोणित पान ॥
भीषम देखि क्रोध जिय आना ❀ कीन्हों कठिन बाण संधाना ॥
होय सक्रोध नराच प्रहारो ❀ रथ कहं तीन पैग पै टारो ॥
पुनि भीषम कीन्हों सन्धाना ❀ पारथ के मारे सौ बाना ॥
लक्ष बाण हनुमानहिं मारे ❀ अष्ट विशिख ते तुरंग प्रहारे ॥
तब भीषम यह मंत्र विचारा ❀ करौं निपात विराट कुमारा ॥
मृत्यु बाण कीन्हों संधाना ❀ छूट्यो विशिख पार्थतब जाना ॥
ह्वै सरोष शिव सायक लीन्हों ❀ ताते मृत्यु अस्त्र क्षय कीन्हों ॥
दो० हन्यो शिलीमुख तानि धनु, ह्वै सरोष पारथ ।
सहस पैग पीछे टरो, शन्तनुसुत को रथ ॥
पुनि रथ हांकि गंगसुत आयो ❀ पारथ पर बहुविशिख चलायो ॥
तब पारथ कीन्हों रिस भारी ❀ ध्वजा खण्ड भीषमकी डारी ॥
कोटि बाण सेना पर मारे ❀ हय गज रथ पदाति संहारे ॥
मारि बिछाय दियो दल ऐसो ❀ प्रलय पवन कदलीवन जैसो ॥
क्रोध सहित पारथ शर छूटे ❀ शीश सैन केतिक के टूटे ॥
कटे जानु जंघा यक बाहौ ❀ चले भाजि रणते नहिं चाहौ ॥
करि अतिक्रोध धनुष शरसांध्यो ❀ नाग फांस कैते भट बांध्यो ॥
पारथ बाण वृष्टि जब ठानी ❀ भये विकल कुरुसेन परानी ॥
दो० तब भीषम अति क्रोध करि, मारे तीक्ष्णबान ।
शत लागे पारथ हिये, शत सहस्र हनुमान ॥
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ तुरंग सूत भीषम को मारा ॥
भयो विरथ गंगासुत जबहीं ❀ पूरो शंख पार्थ रण तबहीं ॥
भीषम आये चढ़ो रथ आना ❀ अर्जुन पर पुनि शर संधाना ॥
दुर्योधन सब बांधव आये ❀ चहुदिशि ओर पार्थके धाये ॥
मूर्च्छा विगत द्रोण गुरु जागे ❀ तानि शरासन सायक त्यागे ।
कर्ण आदि जागे सब वीरा ❀ लै लै पाणि शरासन तीरा ॥
चहुंदिशि गांसिपार्थ कंह लीन्हा ❀ बाणवृष्टि क्रोधित ह्वै कीन्हा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मुद्गर गदा शूल कोउ मारेउ ❀ सांगि शैल कोउ खड्ग प्रहोरेउ ॥
फेंकि चक्र फरसा कोउ मारा ❀ केहुँ मोरेउ केतिह हथियारा ॥
कोटिन सुभट भुशुण्डी लीन्हे ❀ महा मारु पारथ पर कीन्हें ॥
तदपि पार्थ मन नेकु न मुरई ❀ शर सन्धानि प्रबल रण करई ॥

दो० जब जान्योरथग्रसितभो, कीन्हविशिखसन्धान।
पारथ छाँड़यो क्रोध करि, रणमँहमोहनबान॥

पारथ मोहन बाण चलावा ❀ जो शर कृष्णदेव सिखरावा ॥
मोहे सब कौंरव बल बीरा ❀ परे मूर्च्छित नहिं चेत शरीरा ॥
भयो गंगको आशिष सांचा ❀ नहिं मोहैउ भीषम रण बांचा ॥
उत्तर पठयो पार्थ प्रचारी ❀ पट भूषण सब लेहु उतारी ॥
चल्यो पार्थकी आज्ञा मानी ❀ पहुंचो निकट भूप के आनी ॥
कुरुपति और बीर बहुतेरे ❀ भूषण वसन मुकुट सबकेरे ॥
लेतकुंवर एकहु नहि जागे ❀ रथ लै धरे पार्थ के आगे ॥
दुर्योधन की मुर्च्छा जागी ❀ निजदिशिदेखिलाजअतिलागी ॥
पार्थ विजयलखि रिस उपजायो ❀ लैकर धनुष युद्ध हित आयो ॥
जाग्यो सकल सुभट समुदाई ❀ चले युद्ध हित धनुष चढ़ाई ॥
भीषम आइ बरजि दल राख्यो ❀ अरु यह बचन भूपतेभाख्यो ॥
लरे एक ह्वै सब मिलि धायो ❀ अर्जुन ते रण जय नहिंपायो ॥

दो० चुपह्वै रहहू गृहचलो,पारथ अति बलधाम ॥
लज्जा ह्वै है भूप सुनु, तजि भागे संग्राम ॥

विकलभयो नृप अति दुखपावा ❀ क्रोध विवश मुखबचननआवा ॥
दीरघ श्वास ब्याल जिमि लेई ❀ लगे वज्रवत उतर न देई ॥
भीषम ते बोल्यो बिलखाई ❀ गई पितामह बिगरि लराई ॥
कह भीषमअबलगि नहिंलाजा ❀ भाज्यो कटक भूपनहिं भाजा ॥
ताते नृप बर्जत मैं तोहीं ❀ कारण समुझिपरो सब मोही ॥
अर्जुन पर दयालु भगवाना ❀ तुमते सहि न जाई नृपबाना ॥
शरण भागे तुव जगत हँसाई ❀ ताते भवन चलो कुरुराई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जीतै पारथ सकल समाजा ❀ तब लगि विजयन भागैराजा ॥
भाजै सकल सेन किमि झारी ❀ बिनु नरेश भागे नहिं हारी ॥
भीषम वचन सुनत कुरुराई ❀ फिरे भवन संग भट समुदाई ॥

दो० भीषमआयसुमानिकै, दललै चल्यो अवास ।
धावन धायगयो तबहिं नृप विराट के पास ॥
जीति उत्तरै अरिचमू कौरव गयो पराइ ।
सुत सपूत कीन्हो विजय भाग्य तिहारे राइ ॥

भूपति खेलत पंसासारी ❀ संग कंक ऋषि लै सुखकारी ॥
सब जन सुतकी कीरति गावैं ❀ हर्ष नृपति आनन्द बढ़ावैं ॥
बारबार नृप निज मुख वरणो ❀ उत्तर कीन्ह अमानुष करणी ॥
रथ चढ़ि एक न संग समाजा ❀ सैन सहित जीत्यो कुरुराजा ॥
भीषम द्रोण कर्ण कृप हारे ❀ और कहां जग जीवँ विचारे ॥
उत्तर सम जग है न जुझारा ❀ भयो कबहुं नहिं होने हारा ॥
बार बार नृप कीन्ह बड़ाई ❀ कह्यो कंकऋषि तबमुसु क्याई ॥

दो० विजयबृहन्नड़ जेहि कटक सोकत जीतोजाइ ।
जुरै युद्ध संग्रम थल कालहु देइ भगाइ ॥

इतना सुनत भूप उर जरेऊ ❀ राते दृग करि बहु रिस भरेऊ ॥
तत्क्षणही नरनाह विराटा ❀ हन्यो कंक ऋषि पंस लिलाटा ॥
छुटे रुधिर द्रौपदी धाई ❀ अंजलि में लै लीन्हो आई ॥
निरखि भुप पन चिन्ता मानी ❀ कह्यो सैरंध्री भेद बखानी ॥
बिन जाने चित होत अंदेशा ❀ कह्यो सैरंध्री सुनहु नरेशा ॥
भूतल रुधिर परे जो एहू ❀ द्वादश वर्ष न बरसै मेहू ॥
यह कहिकै भुपति समुझायो ❀ भीमसेन के उर दुख आयो ॥
फरकत अधर नयन भे राता ❀ चाहत भीम कियो उतपाता ॥

दो० महाक्रोध लखि भीम उर, धर्मपुत्र दै सैन ।
बरजो केहरि क्षुधित है, युद्ध कहू यह हैन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उत्तर कुँवर भवन चलि आयो ❋ भूपतिसों यह बचन सुनायो ॥
आजु वृहन्नड़ सब दल जीतो ❋ कौरव गयो युद्धते रीतो ॥
मारि शूर सब दीन्ह भगाई ❋ प्रबल पवन जिमि मेघ उड़ाई ॥
भयो मौज नृप धाम सिधावा ❋ भीतर उत्तर बोलि पठावा ॥
युद्ध कथा सगरी कहि दीनी ❋ सारथिकी शरजाल प्रवीनी ॥
है अर्जुन जिन कौरव मारे ❋ दिवस इते यहि ठौर निवारे ॥
यहि प्रकार सुत कहि समुझाये ❋ सुनिविराटतब अतिसुखपाये ॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राई ❋ कथाविचित्र श्रवण सुखदाई ॥

दो० धर्म पुत्र नर नाह सों, अर्जुन बोल्यो बैन ।
जाने हम सब कौरवन, अब कछु चिंता हैन ॥
तेरह वर्ष दिवस दश, बीति गये यहि भाव ।
अब बैठो शिरछत्र धरि, गुप्त करत कत नाव ॥

दीन्ह त्रास कुरुनाथ निकारा ❋ बसि वनवास सह दुख भारा ॥
छुटे अशन बसन घर नासा ❋ अन्नहीन कीन्हों उपबासा ॥
भूख प्यास ते भयो वियोगी ❋ उदासीन जैसे रह योगी ॥
बल विहीन तुमको नृप जानी ❋ अन्ध सुवनकछुकानिनमानी ॥
आयसु होइ जीति अपराधी ❋ भुजबलजीतिलउँ महि आधी ॥
करि सन्धान बाण शर धारा ❋ बोरौं कुरुप सहित परिवारा ॥
देहु निदेश धनुष संधानौ ❋ भूप मरे कौरव सब जानौं ॥
यहि विधि कहत परस्पर बाता ❋ बीति रैनीगै भयो प्रभाता ॥

दो० प्रात होत शिर छत्र धरि, धर्म पुत्र सुख पाय ।
दान दिये बहु याचकन. विप्र सनुह बुलाय ॥
बान्धव चारिउ जोरि कर, ठाढ़े भये सुजान ।
करनहार सब राज के, करत भूप सन्मान ॥
नहि वाहन पदत्राण नहि, उत्तर साहत विराट ।
नृपतियुधिष्टिरचरणाउठि, राख्योआनिलिलाट॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० भई ढिठाई होय जो, सो क्षमियो अपराध।
चूक न मानत दास की, भूप बड़े जो साध॥
बिन जाने करवाई सेवा ❀ क्षमहु चूक बड़ि भई नर देवा॥
ओछी पूरी चित्त मत धरियो ❀ भूप अनुग्रह हम पर करियो॥
मम गृह रही द्रौपदी रानी ❀ दासी भाव आज लग जानी॥
बहु प्रकार ते टहल कराई ❀ सो सब क्षमा करहु तुम राई॥
अस कहि परो चरण कर जोरी ❀ कीन्हविनय बहुभाँतिनिहोरी॥
मन वच कर्म दास तव स्वामी ❀ कीजै कृपा जानि अनुगामी॥
कह्यो भूप सन बारहिं बारा ❀ सविनय वचन विराट दुवारा॥
सुनत युधिष्ठिर आनन्द पाये ❀ करि सन्मान विराट बुझाये॥
दो० विपति हमारी सब हरी, राख्यो पुत्र समान।
तोसों होहिं न दूसरो, महिमण्डल नृप आन॥
तुम पटतरि को दीजै आना ❀ उऋण होउँनहि अपनेजाना॥
तुम सबको दीनी सब भलिहै ❀ तुव कीरति जगमें नृप चलिहैं॥
नित नित नीति बढै अति भारी ❀ भयो भूप तुम भुजा हमारी॥
जीत समर सुरभी जे आनी ❀ जितनी तरुण दुधारू जानी॥
ते रण शूरन को दीन्हीं ❀ सबकी विदा महिपति कीन्हीं॥
पहुँचो नगर जाई कुरुराजा ❀ सन्ध्या समय समेत समाजा॥
बैठ्यो भवन मानि गिल्यानी ❀ भये स्वप्रवत अन्न न पानी॥
कुशबिछाय कृत शयन सुआला ❀ हरि दानव लै गयो पताला॥
दानवराज बहुत समुझावा ❀ तुम लगि भुप हमारो दावा॥
जो तुम प्राण त्याग कर दीन्हा ❀ जग मिटि गयो दानवी चीन्हा॥
तुम भट तनु करि सकल प्रवेशा ❀ करबयुद्ध जनि करब अँदेशा॥
दो करहु युद्ध कदराइ तजि, छांडहु सब सन्देह।
प्रबिशहिं सबकी देह में, दैत्य आइ करि नेह॥
याहि प्रकार कुरुपति समुझाये ❀ दैत्य संग मृतलोक पठाये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जेहि थल शयन कियो तो राई ❀ कुश सारथी गयो पौढ़ाई ॥
गयो दनुज पुनि असुर समाजा ❀ प्रात होत जाग्यो कुरुराजा ॥
द्रोणी कर्ण तहां चलि आये ❀ कहिनीजभेद भूप समुझाये ॥
नरकासुर द्रोणी के अंगा ❀ भा प्रवेश नृप सुनहु प्रसंगा ॥
लोहैं कर्ण तनु कर्ण समानो ❀ याहिप्रकार सब दानव जानो ॥
तेहि अवसर आये सब योधा ❀ दनुजनामकहि नृपतिप्रबोधा ॥
यहिविधि कह्योनृपति बल धामा ❀ मारि पार्थ जीतब संग्रामा ॥
कृत दानव तनु सकल प्रवेशा ❀ गरहुयुद्ध नृप तजहु अँदेशा ॥
सुनि नरेश अतिशय सुख पाये ❀ शकुनी बोलि मंत्र ठहराये ॥
जाइ दूत जहं धर्म्म नरेशा ❀ उनते याहि विधि कह्यो संदेशा ॥
अबधि साधितुमकीन्ह प्रकासा ❀ द्वादश वर्ष करहु बनबासा ॥
याहि विधि भूपति दूत पठावा ❀ नृपति युधिष्ठरपै चलिआवा ॥
सहित द्रोपदी पांचो भाई ❀ बैठ देखि यह बात सुनाई ॥

दो० प्रकटे भीतर अवधि में, फेरि करहु बनवास ।
मिति सो पूरण कीजिये, तब तुमकरहु अवास ॥
कहि सब विधि मलमास की, समुझायो सो दुत ।
समुझिताय बैठो तहां, जिमि सुर पुर सुर दूत ॥

इति श्रीमहाभरते विराटपर्बणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकाऽदशोध्यायः ॥ ११ ॥

दो० उत्तर सो कीन्हो मतो, नृप विराट तेहि बार ॥
दुहिता दीजे अर्जुनाहिं, करि विवाह शुभचार ।

अर्जुन तेहि नृत्य सिखरायो ❀ निशिवासर गुणगान बतायो ॥
सो दुहिता ताको अब दीजै ❀ अबकछु और विचारनकीजै ॥
यह कहि भूपति दूत पठायो ❀ अर्जुन ते यह बात सुनायो ॥
तेहिं सुता नृप अपनी दीन्हिं ❀ हेतु विवाह करन चितलीन्हिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनत पार्थ यह वचन सुनावा ❋ मैं दुहिता सम जानि पढ़ावा ॥
बात कहत तोहि लाज न आई ❋ मिथ्या वचन कह्यो इत आई ॥
मो सुत को दुहिता यह दीजै ❋ आनन्द सों यह कारज कीजै ॥
यह कहि पार्थ दूत पलटाई ❋ तहीविराट सो कहयोबुझाई ॥
सो सुनिकै भुपति सुख पायो ❋ बूझि मुहूरत मङ्गल गायो ॥
गावत आनन्द सो नर नारी ❋ भूप युधिष्ठिर को दै गारी ॥
नैमिषवासिन अवधि बिताये ❋ ताही समय धौम्यऋषिआये ॥
करि प्रणाम पाण्डव सब भाई ❋ पकरे चरण द्रौपदी आई ॥
समाचार कहि भूप सुनाये ❋ सुनतधौम्यऋषिअतिसुखपाये॥

दो० दूत द्वारका नगर को, पठवहु अति सुख पाय ।
वार न लागी वाट में, कही कृष्ण सों जाय ॥

दीनानाथ दयालु गुसाँई ❋ कह्यो प्रणाम भूप सब भाई ॥
कृपासिन्धु कृत दास सहाई ❋ द्रुपदसुता की लाज बचाई ॥
करी आस प्रहलाद पुकार ❋ हरी त्रास हरणाकुश मारे ॥
कह्यो भूप यह त्रिभुवन राई ❋ सदा रहत तुम मोर सहाई ॥
तुह्मरी कृपा विपति भै दूरी ❋ है दयालु कीन्हो सुख भूरी ॥
अभिमन्यु ब्याह रचो है राजा ❋ आइय यहां समेत समाजा ॥
अभिन्युव्याह मातु सहित यदुराया ❋ बोलेउ भूप चलिय करि दाया ॥
है दयालु दीन्हो सुख भारी ❋ करी दूरि प्रभु विपति हमारी ॥

दो० करि आये हो करत हो. करिहो सदा सहाय !
सहित मातु अभिमन्यु लै,आपुहि पहुँचो आय॥

दो० गये कृष्ण भगीनी सहित लै अभिमन्युकहंसाथ।
उठे देखि सुख पाय कै, धर्मसुवन नरनाथ ॥
मिलि कै शारँगपाणि को, लै आये निजगेह ।
अस्तुति बन्धुन युत करत. मनवचक्रमकरिनेह ॥

दो कर जोर कृष्ण के आगे ❋ करन विनय कुन्तीसुत लागे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

श्री यदुनन्दन मुनिजन बन्दन ❀ कल्मषहर सब दुष्ट निकंदन ॥
जगतारण खलबदन विदारण ❀ दुखतारण गजराज उधारण ॥
जग पावन सन्तन मन भावन ❀ ब्रज छावनगिरिवरनखलावन ॥
जन मन रंजन भवभय भंजन ❀ दनुजानिमर्दन भवधनु गंजन ॥
कंस विनाशन प्रभु गरुड़ासन ❀ यदुवंशी अवतंस प्रकाशन ॥
असुर निवारण मुनिजन पारण ❀ कुंजविहारण गणिका तारण ॥
जगधर नगधर पीताम्बर धर ❀ हरि दमोदर हलधर सोदर ॥
सिन्धु सुतावर श्री राधाधर ❀ सर्व निवारण सर्व देव पर ॥
जनकसुता भूषण भवभुषण ❀ सुररिपुदूषण तल तल पूषण ॥
भक्तन हितकर हर निशिचारी ❀ शुभगतिकारी भव भयहारी ॥

दो० करि अस्तुति श्रीकृष्णकी. भूपतिअतिसुखपाय।
नगर काम्पिला द्रुपदको, दीन्हो दूत पठाय ॥

सुनि सन्देश फूलि हिय गयऊ ❀ द्रुपदनरेश पयानहि कियऊ ॥
गज रथ सहिन तुरी तुषारा ❀ सबदल युत वाहन भराडारा ॥
पांचाली सुत पाँचो साथा ❀ पहुँचो पुर विराट नरनाथा ॥
विदुर गेह ते कुन्ती आई ❀ मिलि सुतनअतिआनँदपाई ॥
द्रुपदसुता ताके पद वन्दे ❀ सबमिलि कै सबजनआनन्दे ॥
वन ते बाली घटोत्कच आये ❀ निजमाता कँह संग लगाये ॥
नगरराज गिरेते चलिआये ❀ काशिराज भुपति मनभायो ॥
जरासन्ध पटना को राजा ❀ आयो सुतन समेत समाजा ॥
शूरसेन कह दूत पठायो ❀ सुनत सँदेश वेगि तहं आये ॥
धर्मपुत्र सब राज समाना ❀ विविधअनुजसबबुद्धिनिधाना ॥

दो० शुभटिकाशुभ लग्नगनि, शुभवाराह सो पाइ ॥
रच्यो ब्याह अभिमन्यु को, मंगल चार कराइ।
भाँवरि पारथ देखि कृत, पांचौ भाय हुलास ॥
कन्योव्याहविधिवतसकल,धौम्यसहितऋषिव्यास॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० दोऊकुलकी रीति सों, करि विवाह सुखदानि।
बाजी गज रथ हेम मणि, दीन्हों नृप सुखखानि।
भाट भले विरुदावलि गावत ❀ सिन्धुर वाजि घनेनगपावत ॥
नृत्यत गुणी राग बहु साजत ❀ तालपखाउझ आउझबाजत ॥
को वरणै सब आनन्द संयुत ❀ वासरहू निशि कौतुक अद्भुत ॥
भाँवरि परतीं वेदन उच्चरि ❀ दोऊ कुलकी रीति सबै करि ॥
तेहि औसर विराट नरनाथा ❀ दयो राखि कुश कन्याहाथा ॥
व्यास आदि वेदध्वनि कीन्हों ❀ स्वस्तिबोलि अर्जुनसुतलीन्हों ॥
विविधभाँनि बाजध्वनि माची ❀ जहं तहं वारमुखी बहुनाची ॥
दो० अभिमन्यु कहँ दीन्हीं सुता, हरषे भूप बिराट।
धर्मपुत्र सुखपायकै, लसत अनंदित पाट ॥
बोलि मयासुर को रच्यो, सुन्दर महलबनाय।
नृपतियुधिष्ठिर यों कही, अर्जुन निकट बुलाय ॥
सो० सुनि अर्जुन गुणधाम, मयदानव बोलो तुरत।
धवलसँवारोधाम, खचिखचिरचिकरनिज ॥
मय दानव कहं पार्थ बुलायो ❀ रचहुधामयहकहि समुझाये ॥
रचहु भवन यहि भाँति बनाई ❀ चित्रविचित्र वरणि नहिंजाई ॥
रंग रंग रचि सदन बनाये ❀ हरित पीतमणिश्वेत सुहाये ॥
दीसत उज्जवल श्वेत अटारी ❀ नलित कमल घटा जनुकारी ॥
भमित कतहुँ प्रसाद सतंगा ❀ खचितअरुणमणिरचितउतंगा ॥
को कवि उपमा तासु बखाने ❀ देखत कौतुक देव भुलाने ॥
पञ्चमणिन रचि जाल बनाये ❀ भूप रहन हित भवनसुहाये ॥
मय दानव यह रचना ठानी ❀ जहंतहँ थल जहँतहँपानी ॥
लखिय द्वार मनमानि प्रतीती ❀ करत प्रवेश मिलततहंभीती ॥
देखिय तहा उतंग देवाला ❀ रच्यो तहां शुभद्वार विशाला ॥
बैठत नित्य सभा जहँ राजा ❀ तेहि देखत ऐरावत लाजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पुर अन्तर वीरज्यो शुचि धामा ❀ तहँ रनिवास करे विश्रामा ॥
बहुत भीर युत नृप दरवारा ❀ को कहि तासु बखानै पारा ॥
हय हींसत सिन्धुर बहु गाजत ❀ निशि वासरदुन्दुभितहंबाजत ॥
बैठ तहँ नृप साज बनाई ❀ कहत बीन्दजन विरद सुनाई ॥

दो० भीम पार्थ सहदेव नकुल, बैठे कृष्ण सुजान ।
पण्डितगण मण्डित रहत,सबलसिंह चौहान ॥

इति श्री महाभारते विराटपर्वणि सबलसिंहचौहान विरचिते अभिमन्युविवाहवर्णनंनाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

दो० सोमबंश नृप धर्मसुत, शोभित शक्र समान
चारि बन्धु सरि देवकी, दुष्ट दलन बलवान ॥

अञ्जलि जोरि जोरि युग पानी ❀ कृष्णदेव ते विनय बखानी ॥
जहँ जहँ परी विपति जब भारी ❀ करि सुधि हरी तुरत बनवारी ॥
दयासिंधु सोई करिय विचारा ❀ मिलैवोगि जेहि देश हमारा ॥
अब हरि हरहु अशेष कलेशा ❀ करहु दूरि प्रभु मोर अँदेशा ॥
अन्ध पुत्र कीन्हों अपकारा ❀ कपट यूपकरि मोहिं निकारा॥
धाम ग्राम गज बाजि छिनाई ❀ लहि सम्पदा सब कुरुराई ॥
खैंचो चीर दुशासन आनी ❀ कीन्ह न कानि बिकल भैरानी॥
दीनबन्धु कहि द्रुपदकुमारी ❀ राखु राखु बहु वार पुकारी ॥
हम सब बैठि रहे शिर नाई ❀ करि सहाय तुल लाज बचाई ॥

दो० करि आयहो करत हो, सेवक सदा सहाय ॥
करी बन्दना कृष्ण की, धर्मपुत्र भवराय ॥

दो कर जोरि भूप अनुरागे ❀ करतविनय कमलापतिआगे ॥
कच्छप बपु धरि सागर थाहन ❀ मत्स्यरूप शङ्कासुर दाहन ॥
वंदन मुनिजन सनक सनंदन ❀ जयजय जयतुमजययदुनंदन ॥
सूकर रूप रदन धरणीधर ❀ खलहि रणाक्षहिपातितप्राणहर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भूतल खल दल दुष्ट निकन्दन ❋ जय जयजयतुमजययदुनंदन ॥
नरहित तनु प्रहलाद उबारण ❋ हिरणकसिपुनखउदरविदारण ॥
सेवक कष्ट हरण जगवन्दन ❋ जयजयजयतुमजययदुनदन ॥
छलिबलि बांधि पताल पठावन ❋ बामन वपुधरि भूतल आवन ॥
काटत सब माया दुख द्वंदन ❋ जयजयजयतुमजययदुनंदन ॥
परशुपाणि क्षत्री मद नाशन ❋ रघुकुलकमल निदेशप्रकाशन ॥
रामचन्द्र दशरथ कुलनन्दन ❋ जयजयजयतुमजययदुनंदन ॥
कंस कुटिल असुरन भयकारी ❋ केशी मर्दन आजिर विहारी ॥
पीत वसन तनु चर्चित चन्दन ❋ जयजयजयतुमजययदुनंदन ॥
बोधरूप धरणी पर धरिहौ ❋ कलकी ह्वै दुष्ट संहरिहौ ॥
अस कहि नृपति कीन्ह पदवंदन ❋ जयजयजयतुमजययदुनंदन ॥

दो० विनय मानिकै करि कृपा, दुर्योधन पहँ जाव ।
समुझावो बहुविधि उन्है, वचैजु तनको घाव ॥

विहँसि कृष्ण तबही उठि धाये ❋ नगर हस्तिनापुर चलि आये ॥
सुनि कुरुनन्दन अर्जुन पठाये ❋ सभा मध्य लै कृष्णहि आये ॥
कह नरेश कित चरण चलायो ❋ विहँसि कृष्ण उबचनसुनायो ॥
धर्मराज तुम पास पठाये ❋ गोत्र विरोधन मेटन आये ॥
भूपति जगमे यह यश लीजै ❋ अधो देश बाँटिकै दीजै ॥
आपन कुलहि कलंक लगावहु ❋ कलह गोत्रको भुप बचावहु ॥
दुर्योधन बोल्यो अकुलाई ❋ कैसे सकहु कलेश बचाई ॥
देश बाँटि जो उनको देहैं ❋ योगी ह्वै कपाल हम लेहैं ॥
भूप बाँटि कत मोपै पावैं ❋ जो वे नभभूतल फिरि आवैं ॥
कृष्णकयहो सुनि मोर निहोरा ❋ मानहु वचन होहि यश तोरा ॥
और भूमि जनि भूपति देहू ❋ पांच ग्राम दीजै करि नेहू ॥

दो० अर्कस्थल वरकस्थली, एक चक्र पुनि देहु ।
नगरवरण अरु हस्तिपुर, और देश तुम लेहु ॥
सुई अग्र जितनी उठै, सो काहि कबहु न देइँ ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पुनि पीछे भुव भावकरि,प्रथम युद्ध करि लेइँ ॥
तुमहिं कहत यह कैसी आवत ❋ जियत मोहिंधरणीको पावत ॥
सुनिहरिबचन जरत सब गाता ❋ जियतसुनी यह अद्भुतबाता ॥
दुर्योधन मुख वचन अलीका ❋ सुनिबोल्यो यादवकुलटीका ॥
ऐसी बात कहौ जनि सपने ❋ कुरुपति व्याधिलेताशिरअपने ॥
पाण्डव से तुम नहिं बरिएहौ ❋ फिरि नरेश पीछे पछितैहो ॥
भूपति देखु हिये महँ बूझी ❋ तुमकहँअबहिंपरतनहिंसूझी ॥
मिटि जैहै तुम्हार यह तेहो ❋ भूप भूमि देहो तुम देहौ ॥
लेइहि कोपि गदा जब पानी ❋ गाजिजहिभीमसेन रणआनी ॥
हाँक सुनत कुरुदल भहराई ❋ जिमिविगदोखि भेड़ समुदाई ॥
अर्जुनकोपि धनुष जब धरिहै ❋ कौरवमारि प्रलय करिडरिहै ॥
पार्थ बाण सहि सैकै न कोई ❋ नर किन देव दैत्य जिन होई ॥
लेकर खंग नकुल बलधामा ❋ अवगाहहिं सागर संग्रामा ॥
सहदेव युद्ध जुरै करि क्रोधा ❋ तुव दल रोकि सकै कौं योधा ॥
कुलकोकलह न त्यागिहिकोही ❋ ऐसो भाव तजै अब तोही ॥
छाँड़त मान न बात अनैसी ❋ है तुह्मारे मन मँह नृप कैसी ॥

दो० पार्थ ध्वजा पर बैठिकै. गरज पवनकुमार ।
धर्मराज के धर्म ते. होइहि नाश तुम्हार ॥
कृष्णाउठे यहबचन कहि,तिनकोयहसमुझाय ।
भावी सो कैसे मिटै को. करि सकै बचाय ॥
नगर हस्तिनापुर तबैं. कुन्ती पहुँची जाय ।
समाचार श्रीकृष्णजू सकल कह्यो समुझाय ॥
दुर्योधन मति परिहरी. देत न पाँचौ ग्राम ।
देवकी कहु का चली. श्रवण सुनत नहिं नाम ॥

दुर्योधन उर बाढ़ो गर्वा ❋ कहत जीतिहौ भारत सर्वा ॥
सो सुनिकुन्ती अति दुखपावा ❋ हरि दिशिदेखिनयनजलछावा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मो सम जगत दुखी नहि कोई ❋ भयो न है आगे नहिं होई ॥
कुन्ती दुखित देखि यदुराई ❋ कहि हरिचन्द्र कथा समुझाई ॥
भे हरिचन्द्र अवध रजधानी ❋ धर्मरूप मदनावति रानी ॥
रोहिताश्व सुत भयो कुमारा ❋ जनु ऋतुराज लीन्हअवतारा ॥
एक छत्र बसुधा नृप केरी ❋ ऋधि सिधिरहैभवनाजिमिचेरी ॥
निन्नानवे यज्ञ नृप कीन्हा ❋ सबई करन हेतु चित दीन्हा ॥
यह नरेश मन मनसा आई ❋ करि शत यज्ञ होहु सुरराई ॥
सो सुधि सुनासीर कहुं पाई ❋ मै शंका मुखगा कुम्हिलाई ॥
उर न चैन अति भयो अँदेशा ❋ गाधिसुवन पहँ गयो सुरेशा ॥

दो० विश्वामित्रहि सो कही. सुरपति विनय सुनाय ।
राखो चहो जो इन्द्रपद. तौ कछु करौं उपाय ॥

करै जो यज्ञ सिद्धि हरिचन्दा ❋ लेइ इन्द्रपद मनहु मुनिन्दा ॥
करिय उपाय महामुनि सोई ❋ जाते यज्ञ सिद्धि नहिं होई ॥
कृत अवधेश उपद्रव दावा ❋ जो मुनीश तुम चहौ बचावा ॥
सत्य हीन हरिचन्द्र नरेशा ❋ करहु मोर तब मिटै अँदेशा ॥
सो सुनि गाधिसुवन सुखपाये ❋ हँसि सुरेश ते बचन सुनायो ॥
यदपि न हमहि उचित सुनुराजा ❋ करिय अकारनपरअयकाजा ॥
तुम आगमन परो मोहि भारा ❋ करब शक्र हम काज तुह्मारा ॥
सो पाय हम करब सुरेशा ❋ जाते नसैं तुह्मार कलेशा ॥

दो० सत्यहीन हरिचन्द्र करि. करौं तुम्हारो काज ।
इन्द्रपुरी का अवध को, तुरत छुडावो राज ॥

यहि प्रकार शक्रहि मुनि बोधा ❋ विदा कीन्ह बहु भांति प्रबोधा ॥
पुनि बराह वपु आपु बनाये ❋ कौशिकअवधपुरी चलिआये ॥
गयो बराह नृपति फुलवारी ❋ दलफलमूलअशनन कृतछारी ॥
दशन घात सब बृक्ष ढहाये ❋ सरबर पैठि जलज सब खाये ॥
पुरइन तोरि मिलायो कीचा ❋ अति रव करि गर्जासर बीचा ॥
मालाकार भूप सन जाई ❋ समाचार सब कहेउ बुझाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

महाराज यक आव वराहू ❀ मूरतिबन्त सोह जनु राहू ॥
त्यहिं सब उपबनकीन्ह उजारी ❀ खनि तड़ाग काँदव करि डारी ॥
सुन महीप पुनि रिस उपजाई ❀ चल्योतुरंगचढ़ि दलअधिकाई ॥
ले नरेश सँग सुभट अनेका ❀ चहुँदिशि जाय बाटिका छेका ॥
तब नरेश कह भूजा उठाई ❀ सुनहु श्रवण दै भट समुदाई ॥
ज्याहिदिशेा जाइ निकरि वाराहा ❀ त्याहि चारों तुनु तेज कराहा ॥
पुनि वराह मन विस्मय आई ❀ निकस्यो निकट भूपके जाई ॥

दो० जाकी दिशि व्है मैं कढ़ौं. कारैं भूप तोहि दाह ।
यहविचारिकै नृप निकट. निकरो आइवराह ॥

मारन चल्यो भूप शर साजी ❀ चल्यो बराह मरुतगातिभाजी ॥
तब नरेश करि चपल तुरँगा ❀ गयो अकेल न दूसर सँगा ॥
परम गहन द्विज रूप बनाई ❀ दीन अशीष मुनिश्वर आई ॥
भूपति विलोकि अचम्भव माना ❀ करिप्रणाम यहबचनबखाना ॥
पूरण मोरि भाग्य मुनि राया ❀ दीन्हों दरश कीन्ह बड़िदाया ॥
यह सुनिमुनिबोल्योमुसक्याता ❀ आयोंतुमहि श्रवणसुनिदाता ॥
पूरण करहु मनोरथ मोरा ❀ बाढ़ै सुयस जगत नृप तोरा ॥
कह नृप अस भाषौ जनिभोरे ❀ तुमकहँ कछु अदेव नाहिंमोरे ॥
बार बार मुनि बचन दृढ़ाई ❀ नृप सन बिष्णुशपथकरवाई ॥
माँगौं राज पाट भण्डारा ❀ तापर ओर कनक सौ भारा ॥
देन कह्यो नृप पुर जब आये ❀ गाधिराज सुत संग लगाये ॥

दो० दीन्ह नरेश सुनीश कह राज पाट भण्डार ।
विहँसि गाधिसुत तब कही, स्वर्ण देहु सौभार ॥

जो नहि राय दहु तुम मोग ❀ नाशैं सकल सत्य नृप तोरा ॥
कह नरेश नहि मैं सर्वसु दयऊ ❀ रानी तुनय मोर तनु रह्यऊ ॥
कह हरिचन्द्र बचन छल हानी ❀ लीजै बेंचि मुनीश्वर ज्ञानी ॥
गाधिसुबन सुनि अति सुख पाये ❀ लै निज संग बनरस आये ॥
सात दिवस मग अन्न न पानी ❀ कीन्हो नृप ननेक अरुशानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अठयें दिवस गंग के तीरा ❋ चहत पान जल विकल शरीरा ॥
तब द्विज कहेउ नरेश सुनाई ❋ बिना कनक जो तू जल खाई ॥
होइहि सत्य धर्म तुव क्षारा ❋ फिर न प्रतिग्रह करब तुम्हारा ॥
सुनि नरेश मन अति दुख पाये ❋ बैठि गंग तट शीश नवाये ॥

दो० रोंहिताश्व अति तृषित है, तब थरहरो शरीर।
मूर्च्छि परो तनु विकल अति. जन्हुसुता के तीर॥

करत विलाप बिकल अतिरानी ❋ अञ्जल बोरि लिआई पानी ॥
तब द्विज इमि रानी ते बोल्यो ❋ जाना सत्य धर्म तुव डोल्यो ॥
स्वर्ण दिये बिन जल मुख डारा ❋ कुँवर बदन गा धर्म तुह्मारा ॥
सुनि रानी मन अति दुख व्यापा ❋ बैठि गंग तट करत विलापा ॥
रबि आकर्ष जग्यो मुनराई ❋ बारह कला तपै रबि आई ॥
भयो तेज कछु बरणि न जाई ❋ रानी नृपति गिरउ मुरछाई ॥
बिनय कीन्ह नृप बारहिं बारा ❋ तुमते प्रगट्यो बंश हमारा ॥
सो तुम दया छाँड़ि प्रभु दयऊ ❋ सुनि नरेश प्रभु शीतल भयऊ॥
कृपादृष्टि देख्यो नृप रानी ❋ सहित कुँवर तनुतापबुझानी ॥
रविप्रसाद तनु अति बल भयऊ ❋ क्षुधापियासत्रास मिटिगयऊ ॥
तब मुनि संग नरेश लिवाई ❋ बैठि राज मारग मह आई ॥
बोलि सबन ते बचन सुनाये ❋ बिक्रय हेतु मनुज हम लाये ॥

दो० सबहिं सुनाय मुनीश पुनि,कहि इमि वारहिंवार।
तीनि मनुज का मोल हम,स्वर्ण लेहिं सौभार ॥

रानिहिं निरखि रूप अधिकाई ❋ सुनि माता वेश्या तहं आई ॥
मोल करनको कीन्ह प्रचारा ❋ कह ऋषिकनकअर्द्धसौभारा ॥
भार पचास स्वर्ण मोहिं दीजै ❋ बालक सहित वाम यहलीजै ॥
दीन्ह हिरण्य अर्द्ध सो भारा ❋ रानिसहित लै चली कुमारा ॥
वेश्या ते कर जोरि सयानी ❋ बोली बचन दीन ह्वै रानी ॥
लीन मोल तुम जीव हमारा ❋ कौन काज हम करब तुम्हारा ॥
गणिकै कह्यो रानि ते बानी ❋ कारज सुनहु हमार सयानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नावि गाय जग पुरुष रिझाई ❀ दान पाइ जीविका चलाई ॥
दो० पर पुरुषन ते प्रीति करि, द्रव्य लाइये धाम ।
हावभाव करि मनहरिय,कीनादोय वश काम ॥
सुनि रानि मन भयो अँदेशा ❀ मनमा सुमिरेउ देव निदेशा ॥
तुम कुलकी कुलवधू कहाई ❀ गई लाज मैं जगत हंसाई ॥
रहै धर्म सोई करिय उपाई ❀ ह्वै दयालु प्रभु करिय सहाई ॥
रवि मण्डल ते बहु कपि आये ❀ वारमुखिन कह त्रास दिखाये ॥
गणिकन विकल विप्र सन जाई ❀ कथाअलौकिक सकलसुनाई ॥
त्यागो जो लिय द्रव्य हमारा ❀ तुम यह लेहु पुत्र अरु दारा ॥
बारमुखी इमि बचन सुनाये ❀ सत्यकेतु द्विजतहँ चलि आये ॥
तिन तब बूझेउ सकल प्रसंगा ❀ सुनि दुख लह्योमहामुनिअंगा ॥
कनक मँगाय दीन्ह मुनि ज्ञानी ❀ वेश्यन ते लीन्ह सुत रानी ॥
दो० कन्या करि राखी भवन, करि सनेह मुनिराय ।
द्विजपत्नीकहप्रीतिकरि,अधिकअधिकसरसाय॥
नृप कहँ लीन्हो मोस चंडारा ❀ दीन्हो कनक अर्द्ध सौ भारा ॥
कालसेन रह त्याहिका नाऊँ ❀ लै हरिचन्द्रहिं गा निज ठाऊँ ॥
कही दानवी सकल कहानी ❀ सौंप्यो नृप कह घाट मसानी ॥
तहां मृतक जो नर लै आवै ❀ बिना दण्ड कृतिकरन न पावै ॥
मुद्रा पंच बसन युग देई ❀ करन देइ कृति जब लै लेई ॥
मिलैं दण्ड सो लै नृप धीरा ❀ घट भरि लेई गंग को नीरा ॥
नित प्रति कालेसन के आगे ❀ धरैं जाय नृप अति अनुरागे ॥
कह्यो नाम नृपसन त्यहि बागा ❀ सुनि सुमहीपतिपांयनलागा ॥
सुनु स्वामी हरि याम मनाऊँ ❀ मोरे कतहु गाँव नहिं ठाऊँ ॥
यहि विधि ताहि भूप समुझाई ❀ पहुँचो प्रात घाट सो आई ॥
दो० यहि विधि बात कछु दिवस, मुनि ह्वै सर्प कराल ।
डस्योअनि पुरि नृप तयन,प्राणतजे ततकाल ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सत्यकेतु कुश समद हित, वनकह कीन्ह पयान ।
द्विज तरुणी ताक्षण गई, करन गंग असनान ॥

रानी निरखि शोच उपजावा ❀ करत विलाप दुसह दुखपावा ॥
अर्द्ध बसन ते कुँवर ओढ़ाये ❀ अर्द्ध बसन निज देह छिपाये ॥
ले गई तुरत गंग के तीरा ❀ रुदनकरत अति विकल शरीरा ॥
चाहत जल डारौं त्यहि काला ❀ आयो भूप रूप चण्डाला ॥
लखि मृदु कुंवर नयन जलमोचे ❀ भयो दुसह दुखनृपअतिशोचे ॥
स्वामी भक्ति सुधि भूपहि आई ❀ तब रानी कहँ कह्यो रिसाई ॥

दो० निठुर वचन बोल्यो तबहिं, नारी सों नरनाह ॥
दण्ड दिये विनु जानि मृतक, कीजै सरितप्रवाह॥

कह रानी गे भूलि भुवारा ❀ रोहिताश्व यह तनय तुह्मारा ॥
असकहि कीन्ह बिलाप कलापा ❀ बोल्योनृपति सहित परितापा ॥
मैं हौं कालसेन को दासा ❀ छाँड़िदेहु मन तेयह आसा ॥
मुद्रा पत्र बसन बिनु लीन्हे ❀ मानौं मैं न कोटि बिधि कीन्हे ॥
बिप्र पाणि तुम बेचि बहाई ❀ अब नृप द्रव्य कहां हम पाई ॥
बसन कुवर को लेहु उतारी ❀ लेहु बेचि मम अमिष मारी ॥
सुनि नरेश कहँ क्रोध न थम्भा ❀ पकरि केश बाध्यों लै खम्भा ॥
मारन चल्यो खड्ग गहि पाणी ❀ तब यह भई गगन महंबाणी ॥

दो० सत राखो तनु कष्ट सहि, बीति गये दिन मंद ।
केश तजो धीरज धरो, धन्य धन्य हरिचन्द्र ॥

अस कहि प्रकट भये भगवाना ❀ माँगुभूप अस बचन बखाना ॥
परे चरण नृप करठ लगाये ❀ रानी के बन्धन छुटवाये ॥
ह्वै प्रसन्न तब श्री भगवाना ❀ भूपति कहँ दीन्हो बरदाना ॥
अब नृप करहु अवधपुरवासा ❀ अन्तकाल आयहु ममपासा ॥
करी कृपा हरि कुँवर जियाई ❀ अन्तर आप भये सुर राई ॥
प्रभु की कृपा नगर निज आये ❀ अचल राज्य माता उन पाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नहिं उनके दुख को कछु छोरा ❋ तिन देखत केतिक दुख तोरा ॥
शिव प्रसाद मिटि जैहे सोई ❋ धीरज धरहु नीक अब होइ ॥
यहि प्रकार कुन्ती समुझाई ❋ बिदुर भवन गे सँग लिवाई ॥
करि भोजन तहँ साँरगपानी ❋ कीन्हे शयन सब राति सेरानी ॥

दो० प्रात होत श्रीकृष्ण जू, दुर्योधन के पास ।
गये फेरि हित सो सुबुधि कीन्हे वचन प्रकास ॥
कहो हमारो कीजिये. पांच ग्राम दै देहु ।
बन्धु एकसौं पांच सों. निशि दिन बढ़ै सनेहु ॥
दुर्योधन नृप कृष्ण के. बचन सुने तेहि काल ।
प्रतिउत्तर हारसो कह्यो. भये बिलोचन लाल ॥
नितहरिशालै शालाहरि.कितहिशलावतआनि।
करौअपाण्डव भूमिसब.धरौंन कुलकी कानि ॥

सो सुनि बचन कृष्ण नहिं भाये ❋ ह्वै सक्रोध यहि भाँति सुनाये ॥
कोपि भीम रण मेंदल गाजहिं ❋ सुनतनाद कौरवदल भाजहिं ॥
देखि गदायुत पवनकुमारा ❋ को तापर डारै हथियारा ॥
सहदेव नकुल अरु पाडुंकुमारा ❋ तासम सकल कौन संसारा ॥
जब कोपिहिं लै पाणी पिनाका ❋ धीर न रहै सुनत रण हांका ॥
समुझत नही बचन सुनिमूढ़ा ❋ परतसूझि नहि अरूढ़ा ॥
अबहिं न कावत चेत अभागे ❋ समुझहिनीच मुढ़ मह लागे ॥

दो० बोले शकुनि सरोष ह्वै. कहां नृपति सों जाय ।
कौन कानि याकी करौं.बांधि लेहु सुखपाय ॥
दुख पायो भीषम विदुर. विकल भयेसब गात ।
चहत कियो अपमान सब.बनै नहींकछुबात ॥

भीषम बिदुर बिकल प्रभु जानी ❋ बदन पसारेउ सारंगपानी ॥
मुख भीतर देख्यो ब्रह्मण्ड ❋ सम्भ्रम छायोचित्त अखण्ड ॥
देख्यो गगन सूर्य शशि तारा ❋ देख्यो भूमि अकाश पतारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भूधर सरित सिंधु अरु कानन ❀ देख्यौ सुर सुरेश सहसानन ॥
देख्यो शम्भु बिरञ्चि मुनीशा ❀ दानव दनुज शृष्टि सब दीशा ॥
कुरु पाण्डव देखे संग्रामा ❀ जहँ तहँ मरे परे बल धामा ॥
कृप कृतवर्म्मा अश्वत्थामा ❀ कुरुदल मध्य बच ये साता ॥
सात्यकि चरित पञ्चबन्धु सुत्राता ❀ पांडव मध्य बचे ये साता ॥
यहि विधि चरित कृष्ण दरशाये ❀ भीषम बिदुर चरण शिरनाये ॥

दो० यहिविधि दरशायो चरित.भीषम कोजगदीश ।
बचन प्रकाश्यो विदुरसों.हरिपद नायो शीश ॥

खल दुर्योधन मर्म न जानत ❀ शिषत्रिभुवनपतिकीनहिंमानत ॥
भूल्यो मुरख नृपता गर्वा ❀ कुल के धर्म तजे यहि सर्वा ॥
ह्वै है सो सोई लिखा करतारा ❀ यह भीषम कह बारहिंबारा ॥
कह मुनि सुनहु मुकुटधरधारी ❀ सोच हरण सन्तनहितकारी ॥
चले कृष्ण नृपको समुझाई ❀ पहुंच्यो धर्मपुत्र पहं आई ॥
पञ्ज बन्धु पद शीश नवाये ❀ बैठि कृष्ण यह बचन सुनाये ॥
सूझम महि तुमको नहिं देता ❀ उद्यम कीन्हों भारत हेता ॥
बिना युद्ध महि कबहुं न दै है ❀ जो जीति सोई सब लैहै ॥
बार बार कह बात कन्हाई ❀ बिना यद्ध कौने महि पाई ॥

दो० वीरभाग है जीति रण. कुर तजैं कदराय ।
अस्त्र गहौ भरत रचौं. लीजै सब बचाय ॥
कृष्ण कहौ सबके मते. मनमानी यह वात ।
धर्मराज बन्धु सहित. भये प्रसन्नित गात ॥

इति श्रीमहाभरते विराटपर्बणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते त्रयोदशोध्यायः ॥ १३

इति चतुर्थ विराट पर्व समाप्त ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

उद्योगपर्व ॥ ५ ॥

दो०-विधि हरि हर गणपति गिरा, सुरमुखपाइनियोग ।
सबलसिंह चौहान कहि· भणित पर्व उद्योग॥

कह ऋषिराइ सुनहु कुरुकेतू ❋ कथा सुभग मुद मंगल हेतू ॥
जब हरि धर्मराज पहँ आये ❋ मिसतहृदय अति आनँद छाये ॥
गहे चरण भीमादिक भाई ❋ बैठे अति प्रसन्न यदुराई ॥
तब सुधि पाइ विराट अुवारा ❋ आये सभा सहित परिवारा ॥
उत्तर सखा कुँवर दोउ साथा ❋ आइ चरण परसे यदुनाथा ॥
उठे भूप मिलि भये सुखारे ❋ गहि भुज निज समीप बैठारे ॥
सुतन समेत द्रुपद महराजा ❋ धृष्टकेतु त्यहि सभा विराजा ॥

दो० काशिराज बैठे सभा, सूरसेन नरनाह ।
जरासंधसुत सात्यकी, नृप सब सहित उछाह॥

पांचाली सुत पांचौ वीरा ❋ घटोत्कच अभिमन्यु रणधीरा ॥
हरि समीप बैठे नरनाथा ❋ अर्जुन भीम जमलयुग साथा ॥
प्रद्युम्नऽरु अनिरुद्ध कुमारा ❋ जाम्बवती सुत साम्बजुझारा ॥
बैठे यादव द्वादश जाती ❋ सब परिवार पुत्र अरु नाती ॥
बैठे सब नृप सखा सुखारी ❋ भोज वृष्णिअंधकगण झारी ॥
हरि समीप हल मूशल वारे ❋ आसव पिये नयन रतनारे ॥
नील निचोल अभूषण साजे ❋ प्रभुके दक्षिण ओर बिराजे ॥
जा कहँ शेष कहै संसारा ❋ सो बलभद्र सहे जग भारा ॥
औरो देश देश के राजा ❋ जुरे आनि तहंसकल समाजा ॥

दो० भूप वाम दिशि द्रौपदी, भूषण वसन उदोत ।
मनहु प्रभाकर की सभा, जगरमगर द्युति होत॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

केहरि कटि मृग शावक नयनी ❀ बोलाविहंसि वचनपिकबयनी ॥
दुर्योधन गृह भूप पठाये ❀ कारज सकल नाथ करिआये ॥
कह हरि वह एको नहिं मानहि ❀ तृणसमानतिहुँलोकहिजानहि ॥
कहे वचन हँसि सारँगपानी ❀ बिना युद्ध महिमिलहिनरानी ॥
सो सुनि धर्मराज दुख पायउ ❀ वासुदेव ते विनय सुनायउ ॥
मानत सो न कुमारग गामी ❀ अब उपाय कीजै का स्वामी ॥
कही विहँसि तब सारँगपानी ❀ सुनहु नरेश प्रम सज्ञानी ॥
बैठ द्रुपद विराट भुवारा ❀ पूँछि मंत्र तस करहु प्रचारा ॥
जस कछु मतो कहैं सब लोगा ❀ कहेउ कृष्ण तसकरियिनियोगा ॥

दो० बुद्धि वहिक्रमबद्ध शुचि, ज्ञानवान पञ्चाल ।
धर्म्मशाल बल नृप कहै, करिय यतन ततकाल॥

श्रेष्ट वरिष्ठ भूप सब लायक ❀ पितु समान तुम्हरे हितदायक॥
इनहि पूँछि करिहौ जौ काजा ❀ होइहि सकल मनोरथ राजा ॥
पूँछी बैठि विराट भुवारा ❀ इनते को हित चहत तुम्हारा ॥
द्रुपद विराट कही यह बानी ❀ सब जानत प्रभु अन्तर्य्यामी ॥
अब प्रभु और न करहु बिचारा ❀ आयुध बाँधि होहु असवारा ॥
कोटिन विधि प्रभु यतन विचारे ❀ मिलै न महि कौरव बिन मारे ॥
सुनि यह वचन सात्यकी बोला ❀ कहे नाथ इन वचन अमोला ॥
मत हमार सुन पावन वारी ❀ जले जियत कुरुपतिअपकारी ॥

दो० तबलग कुशल न पांडुसुत, सुनिये दीनदयाल।
जबलग दुर्योधन जियत, ग्रसत न वा कहँ काल॥

आज्ञा नाथ मोहिं अब दीजै ❀ मरे सकल कौरव सुनि लीजै ॥
पारथ ते धनु विद्या पाई ❀ कीन्ह निपुण सब अस्त्रपढ़ाई ॥
यहि विधि रण जीतौयदुनायक ❀ कौरव निधन करन के लायक ॥
सुनत वचन हलधरहि न भाये ❀ क्रोधि तनयन अरुणहोइआये ॥
मोहि न भावत मन्त्र तुम्हारो ❀ चहतसकल मिलिखेल बिगारो ॥
धृतराष्ट्रक के छोटे भ्राता ❀ जानहुपाराडु जगत् विख्याता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वेद पुराण विदित सब काहू ❀ होइ परन्तु जेठ नरनाहू ॥
है जेठे को राजकुमारा ❀ दुर्योधनहिं राज्य अधिकारा ॥
पहुँचत नहिं पाराडव को दावा ❀ नाहक सब मिलि बैर करावा ॥

दो० सुने श्रवण बलदेव के, मंत्र जबै यदुनाथ ।
लागे करन विवाद तब, निज भ्राता के साथ ॥

दूरो प्रगट भये का बासा ❀ मेटि को सकै पांडुसुत आसा ॥
यहि प्रकार हरि कहि समुझावा ❀ सुनतबचन हलधरहिनभावा ॥
बाहुलीक कछु कीन न दावा ❀ प्रथम पितामह अंश न पावा ॥
राज्य योग नहिं होत कनिष्ठा ❀ करवावत तुम कान्ह अरिष्ठा ॥
हँसि बोले तब सारँग पानी ❀ सुनहु तातयक कथा पुरानी ॥
भे शन्तनु ते प्रथम देवापी ❀ बाहुलीक भे मध्य प्रतापी ॥
देखेउ ज्येष्ठ कुष्ठ तनु चीन्हा ❀ तातेराज्य पितहि नहिं दीन्हा ॥
बाहुलीक मातुल पहँ गयऊ ❀ शन्तनु नाम नृपति सोभयऊ ॥
प्रथम व्याह गंगा ते कीन्हा ❀ ताके जन्म पितामह लीन्हा ॥
राज्य बिचित्रवीर्य कहँ दयऊ ❀ भीष्म ज्येष्ठ राजा नहिं भयऊ ॥
पूँछेउ द्रुपद सुनहु जगतारण ❀ अंशहीन भीषम केहि कारण ॥
महारथी सन और न पूजा ❀ जेहिसमानजग भयऊनदूजा ॥
बल ते कवन छुड़ावत दावा ❀ केहि कारणउनराज्य न पावा ॥

दो० प्रकट शंतनु गंग ते, महाबाहु बल खानि ।
अंश न पायो वंशको, कारण कहौ बखानि ॥

सुनि श्रीहरि आये इन बातन ❀ सुनहु पृषदसुत कथापुरातन ॥
भागीरथी ब्याहि सुख पाये ❀ करि करार भवनहिं नृपलाये ॥
बालक सप्त प्रथम उपजाये ❀ तेइ नृप लै प्रवाह पहुँचाये ॥
भीषम जन्म जगत जब लीन्हा ❀ बालबिलोकि मोहनृप कीन्हा ॥
कहेउ भूप गंगा सुनि लीजै ❀ अबकी सुत मांगे मोहिं दीजै ॥
कह सुरसरि नृप कीन्ह करारा ❀ पहुँचावों बालके तुव धारा ॥
तुमहिं भूप अब सुत प्रियलागे ❀ यह करार कीन्हा मैं आगे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अब तुम पुत्रलोभ जिय आना ❀ निजप्रवाह हमकरब पयाना ॥
अपनो पुत्र प्रीति करि लीजै ❀ जाहू भूप मोहिं आज्ञा दीजै ॥
करहु नृपति अब तजि संदेहा ❀ राखहु हमहिं कि बालकयेहा ॥
कहनेरश मोहिंशिशु प्रियलागत ❀ जोरि पाणि तुमते यहमांगत ॥
सुरसरि सुनि महीप मुख बानी ❀ निज प्रवाहततकाल समानी ॥
नारि बिरह दुख भूपहि व्यापा ❀ विकलरैनदिन कीन्हबिलापा ॥
राज्य योग बीते कछु काला ❀ भयो कुंवर दुख तजे भुवाला ॥
परशुराम धनु विद्या दीन्हों ❀ आपु समान महारथ कीन्हों ॥
करहि गंगसुत राज्य प्रचारा ❀ भूप द्योसप्रति रमत शिकारा ॥

दो० घूमत भूप अखरान बन, गयउ नदी के तीर ।
देखि तहां कन्या नवल, पहिरे भूषण चीर ॥
कीधौं रति सम मेनका. रंभा रूप समान ।
विज्जुलतासी देखि छवि. संभ्रम भूप भुलान ॥

ठाढ़ नरेश नदी के तीरा ❀ कामाविवशअति बिकलशरीरा ॥
हांकि अश्व चलिगे नृप आगे ❀ पूँछन बचन प्रेम सों लागे ॥
केहिं सुकृती की सुता सुहाई ❀ कारण कवन नदी तट आई ॥
तुमहिं देखि लोभेउ मन मोरा ❀ को तुव पिता नाम का तोरा ॥
सुता निषादराज की राजा ❀ निशिदिन मोरनदी तटकाजा ॥
मीन राज व्योहार हमारा ❀ मत्स्योदरी नाम द्विज सारा ॥
आवत मम तनु कठिन कुवासा ❀ देखि लोग दाबैं निज नासा ॥
यहि प्रकार कछु दिवस बिताये ❀ यहि मग ऋषय पराशर आये ॥

दो० सरिस तीर ठाढे भये. तपो मूर्ति अभिराम ।
मोहिंविलोक्योतरणिपर. विकलभयेवशकाम ॥

मोहिविलोकि ऋषि प्रेम अधीरा ❀ भये काम बश विकल शरीरा ॥
मांगी रति मुनि करि बहु ईड़ा ❀ बोली मैं न भूपबश बीड़ा ॥
कह मुनि हमहि देव ऋतुदाना ❀ लेहु शापकी बज्र समाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्रोधवन्त ऋषि को जब देखा ❀ प्रात उत्तर मैं दीन्ह बिशेखा ॥
मैं तुम्हारि पुत्री ऋषिराई ❀ मालिन रूप अरु देह गंवाई ॥
नीचजाति कृत अशन कुभोगा ❀ नाहिं न नाथ तुम्हारे योगा ॥
बरै पुरुष पितु शिष बिन जोई ❀ कुलटा नाम कहावै सोई ॥
मैं मुनीश तुव हाथ बिकानी ❀ छोड़्यो लोकलाज कुलकानी ॥
तुमहिं बिलोकि राज अनुकूला ❀ देखहु नाथ लोग दोउ कूला ॥
अति कलंक लागी मुनि हमको ❀ दिनरतिनाथउचितनहिंतुमको ॥

दो॰ है प्रसन्न तब ऋषिकहेउ. त्यागहु तरुणि विषाद ।
तुव तनु गन्ध कपूर की. होइहि मोर प्रसाद ॥

ऋषि आशिष प्रसन्नचित भयऊ ❀ छूटि विषाद शोक सब गयऊ ॥
शशिसमान तनु भयो प्रकासा ❀ योजन भरि पूरेउ पुनि वासा ॥
योजन भरि तनु बहेउ सुगन्धा ❀ कह्यो नाम पुनि योजनगन्धा ॥
सत्य चरित भाषेउ निज श्यामा ❀ ताते सत्यवती तुव नामा ॥
यह करि कीन्हें ऋषय चारित्रा ❀ भयउदिवसमहँ राति विचित्रा ॥
परेउकुहिर दिन कर द्युतिनासा ❀ रमितभयेमुनि सहितहुलासा ॥
योजन भरि पूरयो पुनि वासा ❀ तनु सुगन्ध दुर्गन्ध विनासा ॥
निशिते सरिस भयो अंधियारा ❀ सूझ न आपन हाथ पसारा ॥
होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हों ❀ कन्या रूप सदा तेहि कीन्हों ॥
यहि प्रकार मोहिं दे बरदाना ❀ है प्रसन्न मुनि कीन्ह पयाना ॥
जब ऋषीश निज मारग गयऊ ❀ भये प्रकाश कुहिर मिटिगयऊ ॥
तिनते भये व्यास मति माना ❀ प्रगटत बनको कीन्ह पयाना ॥

दो॰ सत्यवती भूपाल ते. कह निज कथा प्रमान ।
भाषित पर्व उद्योग यह. सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्बाण सबलसिंहचौहानभाषाकृते
प्रथमोऽध्याय; ॥१॥

काम विवश नृप बचन उचारे ❀ सत्यवती चलु भवन हमारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सब प्रकार तुव मम सुखदानी ❀ तुम कहंलै करिहौं पटरानी ॥
करहु कौल नृप चलहुं तुम्हारे ❀ होइ महापति पुत्र हमारे ॥
तुव करार आवहि केहि काजा ❀ करहि कौल भीषम सुनुराजा ॥
सुनि नरेश बहु दूत पठाये ❀ गंगासुतहि बोलि लै आये ॥
सत्यवती सुनि सकल प्रसंगा ❀ कीन्ह प्रणाम प्रसन्नित अंगा ॥
चलहु पिता संग मातु उदारा ❀ सब प्रकार मैं दास तुम्हारा ॥
सत्यवती सुनि आयसु दयऊ ❀ धनिपितुभक्तजगततुमभयऊ ॥
करहु कौल हमते युवराजा ❀ तनय हमार करै तब राजा ॥
चलौं भवन तब तुव पितु संगा ❀ देहु बीच जगपावनि गंगा ॥

दो०धर्म धुरंधर धीर धर, देव अंश अवतार ।
तुम सम सत्य प्रतिज्ञ जग, भये न होनेहार ॥

बचन पालि तुम राज्य न लैहौ ❀ निश्चय मम पुत्रन को दैहौ ॥
तुम्हरे बंश प्रबल सुत होई ❀ लेइ छिनाय राज्य पुनि सोई ॥
तब शंतनु भीषम प्रति बोले ❀ हे सुत लेन नारि यह बोले ॥
कीन्हे बिन उपकार तुम्हारे ❀ नहिंचलिहैपुनि भवन हमारे ॥
यहि बिनमैंनजियउ सुनुशावक ❀ जारत मोहि मदन बिनपावक ॥
शंतनु बचन शोक सम खोले ❀ सुनतहि तब गंगासुत बोले ॥
सुनहु पिता तुम मोर करारा ❀ निरखहुँ मैं न नयन भरि दारा ॥
किमि ह्वै है सन्तति को.साजा ❀ करिहा सत्यवती सुत राजा ॥
माता पिता श्रीहरि गुरु आना ❀ सत्यवती सुनु बचन प्रमाना ॥
जैसे हम गंगा कहँ जानब ❀ त्यहिते सरिसमातुतुहि मानब ॥
करि करार शुभ यान चढ़ाये ❀ नगर हस्तिनापुर लै आये ॥
सब प्रकार निज लायक जानी ❀ शंतनु नृप कीन्हेउ पटरानी ॥
चित्रांगद बिचित्र सुत जाके ❀ भये देव सरिवर नहिं ताके ॥
तनु तजि नृप सुरपुर जबगयऊ ❀ चित्रांगदहि राज्य पुनि भयऊ ॥
गिरि कन्दर महँ फिरत शिकारा ❀ प्रबल सिंह ताको बन मारा ॥
भये दुखित भीषम सुनि बाता ❀ अतिशय बिकलभईपुनिमाता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सहित धराधन सेन समाजू ❋ दीन्ह विचित्रवीर्य्य कहं राजू ॥
दो० आज्ञा लीन्ही मातु की, भीषम अति हरषाय।
काशिराज की लै सुता, भ्राता व्याहिनि आय॥
यातें राज न भीषम लीन्हा ❋ राज विचित्रवीर्य्य कहँ दीन्हा ॥
रानिन विवश भयउ नरनाहा ❋ रमते रैनिदिन सहितउछाहा ॥
राजकाज नृपको सब भूला ❋ प्रतिदिन रहैं नारि अनुकूला ॥
द्वादश वर्ष भवन ते राजा ❋ कढेउ न जान्यो दूसर काजा ॥
गंगासुत कृत राज्य प्रचारा ❋ भूप दिवस निशिर मत विहारा ॥
बल न रहेउ तनु नारि प्रसंगा ❋ भयऊ राजयक्ष्मा नृप अंगा ॥
त्यागेउ प्राण राज तेहि रोगा ❋ भये विकलजन तिहिकेशोगा ॥
सत्यवती अति कीन्ह बिलापा ❋ भीषम उर उपज्यो परितापा ॥
दो० धरि धीरज बैठे भवन, दुखित नयन जलरोकि
माता सों कीन्हों मतो, वंश विहीन विलोकि ॥
माता सुनहु व्यास जो आवैं ❋ कह भीषम वे वंश चलावैं ॥
सुमिरत तुरत व्यास मुनि आये ❋ अक्षमाल तनु भस्म चढाये ॥
जटाकलाप बाल अति भूरे ❋ शोभित नयन अरुण पुनिरूरे ॥
उठि भीषम चरणन शिरनाये ❋ सत्यवती पुनि कंठ लगाये ॥
सादर सिंहासन बैठारे ❋ विनय कीन्ह दुख हरो हमारे ॥
वंशविहीन बन्धु तुव भयऊ ❋ भयो राजयक्ष्मा मरि गयउ ॥
अब करि कृपाऋषिय अवतंशा ❋ करिय प्रकट रानिन ते वंशा ॥
व्यास मातु की आज्ञा जानी ❋ अन्तःपुर बैठे सुख मानी ॥
कालिहि कहेउ अम्बिका बोली ❋ मुनिशय्या तुम जाहु अमोली ॥
इनते सुत प्रगटौ तुम जाई ❋ बाढ़ै वंश राज्य अधिकाई ॥
दो० कही अम्बिका मातु यह, बात न मोतौ होय।
कुलटा कहिहैं लोगजग, जाय धर्म सब खोय
ये हैं व्यास विष्णु अवतारा ❋ व्यापि रहो सगरे संसारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तासु परश कीन्हे नहि पापा ❀ अमनसमुझित जौपतिरापा ॥
सत्यवती की आज्ञा मानी ❀ ऋषि ढिग गई अम्बिका रानी ॥
व्यास तेज ते तनु थहराई ❀ बैठि सकुचवश शीश नवाई ॥
जिमि हिमगत कमला कुम्हिलाई ❀ थके वचन मुख आव न बानी ॥
भयवश अंग अंग सब कांपी ❀ सुरत करत लीन्हे मुख झांपी ॥
गये व्यास माता के पासा ❀ निकट बैठि यह बचन प्रकासा ॥

दो० साहि न सकी मम जेत त्रिय, लिये ढांकि दृगबार
ह्वैहैं याके मातु सुनु, अक्ष विहीन कुमार ॥

सत्यवती सुनि अति दुख लहेऊ ❀ पुनि पुनि वचन पुत्रसोंकहेऊ ॥
नयन विना राजा अधिकारी ❀ होत नहीं सुत देखु विचारी ॥
करहु प्रकट अम्बा ते बालक ❀ सो कुरुवंश होई प्रतिपालक ॥
व्यास मातुकी आज्ञा मानी ❀ अन्तःपुर बैठे पुनि आनी ॥
कह अम्बा ते योजनगन्धा ❀ होइ अम्बिका के सुत अन्धा ॥
मुनि शय्या कहँ अब तुम जाहू ❀ उपजै पुत्र होई नरनाहू ॥
आयसु मांगि गई मुनि तीरा ❀ देखि तेज भयो पीत शरीरा ॥
तब मुनीश आलिंगन कीन्हा ❀ होय भूप सुत आशिष दीन्हा ॥
यह कहि सत्यवती पहं आये ❀ समाचार सब कहि समुझाये ॥

दो० सकल सुलक्षण होव सुत, महाराज के योग ।
पीतभइ त्रियदेखि मोहिं, होयपीत तनु रोग ॥

यह कहि बचन मातु के आगे ❀ सुमिरन करन ब्रह्म को लागे ॥
कह्यौ मातु अब सुत सुनि लीजै ❀ अपने मन बिचार यह कीजै ॥
यहिते अधिक न दूसर शोगा ❀ अन्ध एक सुत यक युत रोगा ॥
देहु एक सुत अबकी बारा ❀ विष्णु भक्त जानै संसारा ॥
कहेउ व्यास माता सुनि लीजै ❀ शय्या पठै अम्बिका दीजै ॥
सत्यवती सुनि ताहि बुलाई ❀ सुनत अम्बिका शीश डोलाई ॥

दो० एक वार माता करौं, वचन तुम्हार प्रणाम ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वारमुखी सम सो त्रिया वारवार ऋतुदान ॥
सत्यवती कह बालक काजा ❀ तुम ऋतु करौ छाड़ि कै लाजा ॥
सासुहि निकट भली कहि आई ❀ मुनि समीप परिचरी पठाई ॥
भये रमित जानेउ मुनि रानी ❀ निजल देखि दासी पहिंचानी ॥
आये मुनि माता के आगे ❀ कथा समस्त कहनपुनि लागे ॥
याते होइहि प्रकट कुमारा ❀ परमभक्त जानहि संसारा ॥
माता सत्य कहौं मैं तोहीं ❀ पुनिछलकीन्ह अम्बिका मोहीं ॥
मोहिं विलोकि परम भय पाई ❀ पठई और आपु नहिं आई ॥
निपट निलज्ज देख मैं सोई ❀ काशिराजका सुता न होई ॥

दो० मातासोंयहकहिचले, मुनि वनको सुखपाइ ।
भये अम्बिका के तनय. धृतराष्ट्र तनु आई ॥

भे अम्बा के पाराडु कुमारा ❀ वंशविभूषण जग प्रतिपारा ॥
दासी योनि विदुर अवतारा ❀ विष्णुभक्त अरु परम उदारा ॥
प्रथम अम्बिका के सुत भयऊ ❀ अन्ध जानि कै राज्य नदयऊ ॥
भीषम वाहुलीक मत कीन्हा ❀ अम्बा सुताहि राज्य नहिं दीन्हा ॥
पाराडुहि सिंहासन बैठायो ❀ तिलक कियो शिरछत्र धरायो ॥
राज्ययोग पुनि राजकुमारा ❀ नाहिंन भ्रात जात अधिकारा ॥
यहि प्रकार हरिकरि समुझावा ❀ द्रुपदनरेश सुनत सुख पावा ॥
सुनि बलदेव कही यह बानी ❀ सुनहु बात यह सारंगपानी ॥
भीषम द्रोण कर्ण धनुधारी ❀ दुर्योधन के आज्ञाकारी ॥
विनायुद्ध देइहि महि नाहीं ❀ जीती को सकै कृष्ण उनपाहीं ॥
कर्ण समान बली संसारा ❀ नाहि न प्रकट कीन करतारा ॥
हम अपने मनमें करि बूझा ❀ को हरि करहि कर्ण ते जूझा ॥
सुठताहि वचन नयन रतनारे ❀ भये क्रोध नहिं रहत संभारे ॥

दो० बोले हरि वलदेव ते, भ्राता करहु विचार ।
धर्मराजके अंश को, कौन छुड़ावन हार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करौं नाश कौरव सकल, जो न देइ नृपअंश ।
हतौं द्रोण भीषम करण, वाहुलीक युत वंश ॥
यदपि बली कुरु युध संसारा ❀ मोते रण नहि तासु उबारा ॥
चक्र पाणि गहि मस्तक फारौं ❀ राज युधिष्ठिर को वैठारौं ॥
यह करतूति न करि दिखरावों ❀ नहिं वसुदेव को तनयकहावों ॥
मिटै जु अंश धर्म नृप केरा ❀ गावै अयश जगत सब मेरा ॥
का बल देखि सुनो बल भाई ❀ करत कर्ण की आपु बड़ाई ॥
अर्जुन भीमसेन बलदाई ❀ नहिं त्रिभुवन इनको समताई ॥
अति हठ हनूमान ते कीन्हा ❀ सकेन जीति सखा करि लीन्हा ॥
ह्वै किरात गिरिपर रण कीता ❀ वनोवास जिन शंकर जीता ॥
असुर सेवन्त कवच बलवाना ❀ जाके रण सुरपति भयमाना ॥
सो अर्जुन पल मह संहार्यो ❀ इन्द्रहि इन्द्रासन बैठार्यो ॥
जिन बांधे शर सों सोपाना ❀ ऐरावत धरणी जिन आना ॥

दो० बाणन कीन्ही बाण नभ, हाथी लियो उतारि ।
कुन्ती सो पूजन कियो, सलज भई गन्धारि ॥
धनपति छोडों दंड लै, जीते सब भुपाल ॥
पारथसों बलवान जग, भयहु न कवने काल ॥

जब विराटपुर कौरव घेरा ❀ वढी गाय अहीरन टेरा ॥
भीषम द्रोण कर्ण सब आये ❀ अर्जुन एक सबन बिचलाये ॥
एकएक सबमिलि मिलि लरेउ ❀ तब उन पारथको का करेउ ॥
बाणन मारि सकल बिचलाये ❀ फेरि धेनु नगर फिरि आये ॥
देव दैत्य दानव बलझारी ❀ जंह लगिरचै सृष्टिविधि भारी ॥
तीनो लोक अस्त्र गहि आवैं ❀ पारथ सो रणजय नहिपावैं ॥
सहदेव दक्षिणकी जय कीन्हा ❀ लंका दराड विभीषण लीन्हा ॥
नकुल वारुणी दिशि बल भारी ❀ जीत्यो सिन्धुतटी लघुझारी ॥
भीमसेन सब पूरब ओरा ❀ निज भुजबलजीत्योबर जोरा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यकचक नाग बकासुर मारा ❋ जरासन्ध कीन्हों दुइ फारा ॥
मारि हिडम्ब हिडम्बी ब्याही ❋ बन्धुको जीति सकैरणमाही ॥
जिन मारो कीचक सौ भाई ❋ सकै बन्धुको अंश छुड़ाई ॥
धर्मराज सरि को संसारा ❋ तजेउ धर्म न सहेउ दुख भारा ॥

दो० भीम पार्थ करि हैं सकल, कौरवकुल संहार ।
धर्मराज के शत्रुको, मरत न लागी वार ॥

इति श्रीमहाभरते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दो० प्रश्न बहुरी कुरुवंशमणि, कीन्हो पद शिर नाइ ।
कह ऋषि जनमेजयसुनौ, कथाश्रवणमनलाइ ॥

बल दिशि देखि बहुरि हरि बोले ❋ भ्राता सुनौ कहत मै खोले ॥
अनहित चहत धर्मसुत केरा ❋ जानहु परम शत्रु सो मेरा ॥
कह बलदेव सुनहु हरि भ्राता ❋ रचि राख्योयहकलहबिधाता ॥
तुम कहं धर्मराज प्रिय जैसै ❋ मम प्रिय दुर्योधन नृप तैसे ॥
जो सात्विकी बीरबर होई ❋ मम संग्राम करै शठ सोई ॥
है यह बात मते की भाई ❋ कुरुपाराडव की प्रीति निकाई ॥
कहि यह बचनबिदा पुनि भयऊ ❋ बल चलिनगर द्वारकै गयऊ ॥
तब नृप कह्यउ सुनहु बनवारी ❋ कहेउ राम मतनीकविचारी ॥
करत युद्ध कटिहै परिवारा ❋ मो कहँ जग कहिहै धिक्कारा ॥
जैहैं बन्धु बन्धु सन मारे ❋ कलहनीक नहिमंत्रहमारे ॥
मिलै भूमि अरु मिटै लड़ाई ❋ सोई अब कीजै यदुराई ॥
कहेउ बिहंसि तब बोले कन्हाई ❋ अरि पर दया परम कदराई ॥
बैठि सब सबको मत लीजै ❋ मिलै भूमि माहिसो अब कीजै ॥
कहेउ नकुल यह मंत्र हमारा ❋ सुनहुसकलमिलिकरहुबिचारा ॥
सत्य बचन नृप सुनु हम पाहीं ❋ बिनायुद्धमिलि हैं महि नाहीं ॥
भीमसेन अर्जुन मन भायउ ❋ कहेउ बंधु भल मंत्र दिखायउ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

द्रुपद बिराट कहे मत नीका ❀ तब बोलेउ यादवकुल टीका ॥
दो० कही कृष्ण भूपाल ते, सुनिये मंत्र हमार ।
बिन दलसोंकछु बल नही, बिदितसकलसंसार ॥
जहँ लग तुह्मारे अंश के, भुमि भूप भुवराइ ।
साजि निज दल आवैं सकल, दीजै पत्र पठाइ ॥
कह मुनि सुनहु बचन कुरुराई ❀ कथा बिचित्र श्रवणमनलाई ॥
सुनि हरि बचन नृपतिमनभायो ❀ देश देश कहँ पत्र पठायो ॥
पुनि हरि द्वारावती सिधायो ❀ द्रुपद सेन हित निजपुरआयो ॥
सजि दल देश देश के राजा ❀ नृप बिराटपुर जुरो समाजा ॥
नगर चंदेरी के भूपाला ❀ धृष्टकेतु आये तेहि काला ॥
अक्षौहिणी चमू यक संगा ❀ यह गज रथ पदचर बहुरंगा ॥
सब कवची खड्गी धनुधारी ❀ सबै शूर महाबल भारी ॥
उत्तर पुर बिराट नृप केरा ❀ कीन्हें धर्मराय कढ़ि डेरा ॥
अक्षौहिणी धर्म नृप केरी ❀ भई नृपन की भीर घनेरी ॥
ताही समय द्रुपद नृप आये ❀ अक्षौहिणी संग निज लाये ॥
धृष्टद्युम्न पुत्र रण रंगी ❀ चौंसठि नृपति द्रुपतिकेसंगी ॥
दूसर नृपति शिखंडी आये ❀ भीषम बधहितबिधिउपजाये ॥
चारि बन्धु षट सुत दश नाती ❀ आयो अयुत द्रुपद के जाती ॥
सबहीं महारथी बल भारी ❀ सन्नाही खड्गी धनुधारी ॥
दो० शूरसेन आये तबै, लै निज सेन गंभीर ।
कवची खड्गी कुंडली, धनुधारी सब बीर ॥
जरासन्ध सुत नृप सहदेऊ ❀ सेन सहित आये नृप तेऊ ॥
अक्षौहिणी एक संग लीन्हें ❀ धर्मराज हित रण मन दीन्हें ॥
काशिराज की सेना आई ❀ अरु आये नृप गण समुदाई ॥
बारह निकसि बिराट भुवारा ❀ उतरे शंख सहित परिवारा ॥
अक्षौहिणी संग निज लीन्हें ❀ डेरा धर्मराज ढिग कीन्हें ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गज रथ औ असवार पदाता ❀ अक्षौहिणी जुरेउ दलमाता ॥
घटोत्कच निज साथ सिधायो ❀ पांच कोटि राक्षस संग लायो ॥
भूप पंचनद के जे बासी ❀ आये सेन साहित बलरासी ॥
शृङ्गी सिन्धु कच्छ के राई ❀ आये सकल समेत सहाई ॥
चालिस सहस जुरे तहँ राजा ❀ को वरणै नृप सेन समाजा ॥

दो० बन्धुन युत बैठे सभा, धर्म्मराज के रूप।
जुरे आइ तिहि थल सबै, देश देश के भूप ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वाणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दो० जनमेजय मुनि ते कह्यो, कहो कथा मन लाइ॥
सुधि पाई कुरुनाथ जब, तब कस कीन्ह उपाइ ॥

चरवर मुख कुरुपति सुधि पाई ❀ जोख्यो कटक युधिष्टिर राई ॥
तब नरेश मन शंका आई ❀ शकुनि कर्ण कह लीन्ह बुलाई ॥
द्रोणी और दुशासन आये ❀ बैठि सकल मिलि मंत्र दृढ़ाये ॥
दुर्योधनकहि श्रवण सुनाई ❀ दूत बचन मुख पहँ सुधि पाई ॥
सुनत अजातशत्रु दल जोरा ❀ अक्षौहिणी सप्त घन घोरा ॥
सुनहु सचिव कीजेकेहि भाँती ❀ भय बश परी नींद नहि राती ॥
सुनि यह उत्तर कर्ण तब दीन्हा ❀ नृपतुमशोच अकारथ कीन्हा ॥
पंच बन्धु सात्विक यदुराई ❀ अरु नरेश सब शत्रु सहाई ॥
द्रुपद विराट सेन सजि आवै ❀ मारौं सकल जान नहिं पावै ॥

दो० यम कुबेर वरुणेन्द्र मैं, जीति सकौं दिगपाल।
मानुष मोते को जुरै, अभय होहु भूपाल ॥

सुनि यह बचन भूप सुख पायो ❀ साधुसाधु करि हृदयलगायो ।
कर्ण समान धर्म्मव्रत धारी ❀ नहिंत्रिभुवन हमारहितकारी ॥
तन मन वचन जानै आना ❀ मम कारज नहिंदुर्लभ प्राना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मिलै न हितदायक जग तोसे ❀ रहत सदा मैं कर्ण भरोसे ॥
जा दिन युद्ध परै कठिनाई ❀ मित्र मित्रसुत कारहिं सहाई ॥
पाण्डव निधन करनके लायक ❀ बन्धु सरिस मरैं हितदायक ॥
जब यहि भाँति प्रशंस्यो ताहीं ❀ बोल्यो करि बिचार मनमाहीं ॥

दो० कियो रंकते राउ तुम, राखत मान हमार ।
तिल तिलतनु कटिगिराहि, ताकेप्रतिउपकार ॥

स्वामि काज लगि शीश समर्प्यो ❀ जुरे कालरण ताहि न डर्प्यो ॥
जुरे युद्ध करणी नृप मेरी ❀ देख्यो कहौं कहा बहुतेरी ॥
करिअतिक्रोध शिलामुखजोरों ❀ शरसागर पाण्डव दलबोरों ॥
भूप न करिय शोक कछु जीमा ❀ सकैं जीति नहीं अर्जुन भीमा॥
रण महँ बांधि युधिष्टिर राई ❀ जयति पत्र देहौं लिखवाई ॥
मेरे बल समान नहिं पारथ ❀ सकै न जीति थकै पुरुषारथ ॥
सुनत तबै द्रोणी रिस बाढ़ो ❀ तीक्षण बचनबदनते काढ़ो ॥
पारथ की सरि भट संसारा ❀ भयो जगत नाहिं होनेहारा ॥

दो० कह्यौ द्रोणसुत भूप सुनु, ऐसो को संसार ।
पारथ शर अति कठिन हैं, सहै युद्ध का भार॥

सुनहु भुप अब कथा पुरानी ❀ पार्थ चरित मैं कहब बखानी ॥
प्रथम द्रोण अरु द्रुपद मिताई ❀ सो प्रसंग नृप सुनु चितलाई ॥
जब विराटगण राज छिनाबा ❀ हारिसमर नृप कानन आवा ॥
मिले पिता नृप यमुना तीरा ❀ देखि युगल दृग भये सनीरा ॥
गहि पद नृप प्रणामतबकीन्हेउ ❀ होहुअभयसुनिआशिषदीन्हेउ ॥
भारद्वाज अरु प्रषद मिताई ❀ अतिशय रही सुनहु कुरुराई ॥
द्रोण द्रुपद खेलैं इक संगा ❀ बढी परस्पर प्रीति अभंगा ॥
कथा समस्त द्रुपद जब कह्यऊ ❀ भयेक्रोधसुनिद्रोणन सह्यऊ ॥

दो० कहेउ द्रोण सुनिये द्रुपद, बधि विराट गण आज ॥
सकल देश पंचाल को, तुमहि करावों राज ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बधि बिराट तोहिं राज करावों ❀ द्रोण नाम तब विप्र कहावों ॥
हतौं शत्रु मैं एकै बाना ❀ तो मोहिं परशुरामकी आना ॥
जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ❀ ते अधमूल परहिं गे झारी ॥
अस कहि लीन्ह सराशन बाना ❀ द्रुपद संग लै कीन्ह पयाना ॥
कहेउ भूप यह चलती बारा ❀ करौं निधन जो शत्रु हमारा ॥
आधो राज्य विप्र सुनु तोरा ❀ पुनि मानब भरि जन्म निहोरा ॥
अस कहिनगरनिकटचलिआयो ❀ पाणिशिलीसुखधनुष चढ़ाये ॥
सो सुनि सकल शत्रुगण धाये ❀ ब्रह्म अस्त्र ते द्रोण जराये ॥
द्रुपदहि सिंहासन बैठारा ❀ धारेउ क्षत्र तिलक शिर सारा ॥
द्वादश वर्ष द्रोण सुनु राई ❀ बस काम्पिला सुख अधिकाई ॥
हमेर हेतु धेनु पित यांची ❀ दयो नृपतिकरिबुद्धिपिशाची ॥
मित्र जीनि कर शाप न दीन्हा ❀ करेउ निधननगरताजिदीन्हा ॥

दो० गजपुर को तब द्रोण सुनि, कीन्हों तुरत पयान ।
पहुँचे वासर सात महँ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दो० गेंद खेल खेलत सबै, जुरे बालकन साथ ।
तुम फेंकेउ तब रोकउ, भीम ओड़ि कै हाथ ॥

छाँड़ेउ गेंद कूप में गयऊ ❀ तुमसबमिलिविस्मयवशभयऊ ॥
ताही समय द्रोण तहँ आयो ❀ बालक रुदत देखि चुपकायो ॥
सींक धनुष शर द्रोण सँधानी ❀ गेंद काढ़ि दीन्ह तब आनी ॥
लिये तुरत भीषम पहँ आये ❀ सकल चरितबालकनसुनाये ॥
देखि पितामह मन अनुमानेउ ❀ आये द्रोण सत्य जिय जानेउ ॥
चलिकै मिल गङ्गसुत आई ❀ सभा मध्य लै गयउ लेवाई ॥
अर्घ्यपाद्य सिंहासन दीन्हा ❀ चरण धाय चरणोदक लीन्हा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लक्ष धेनु पुनि दीन्ह बिआऊ ❀ दीन्हेउ बहुरि पंचशत गांऊ ॥
दो० जोरि पाणि कीन्ही विनय, भीषम पद शिरनाय।
बालक सौंपे बोल सब, कीजै निपुण पढ़ाय ॥
अस्त्र सिखायनिपुणजबकीन्हा ❀ तुमसबमिलि गुरु दक्षिणादीन्हा ॥
अर्जुन दीन्हेउ जीति बदाऊ ❀ सहस एक दश संयुत गांऊ ॥
पद गहि बचन कह्यो यह साँचो ❀ आयसु करा चहौ जो याँचो ॥
कह अर्जुन आयसु जो दीजै ❀ आज्ञा होइ नाथ सो कीजै ॥
कह गुरु द्रव्य लेउँ नहिं तोरा ❀ कीजै सफल मनोरथ मोरा ॥
द्रुपद मित्र कीन्हो अपमाना ❀ ताते माँगत हौं यह दाना ॥
बाँधि चरण तर दाबौ आई ❀ चुकेउ तात अभिमत मैं पाई ॥
कुरु पाण्डव की मिली सहाई ❀ घर्यो नगर कम्पिला गाई ॥
सुनेउ द्रुपद अरि सेना आई ❀ निकरेउ तुरत निशान बजाई ॥
दो० चारि चमू ह्वै मिलि गई. भयो घोर संग्राम।
हय गज रथ लाखन परे, सुभट कटे बहु नाम ॥
द्रुपद कर्ण ते सरस लड़ाई ❀ महायुद्ध कीन्हउ प्रभुताई ॥
शोणित बाण द्रुपद उर लागा ❀ क्रोध अनल उर अन्तर जागा ॥
हन्यो कर्ण के चारिउ घोरा ❀ असिनिकारिसारथि सिरफोरा ॥
विरथ देखि तब गे कुरुनायक ❀ धनुष तानि छाँडे बहुसायक ॥
देखत युद्ध द्रुपद शर छाँडत ❀ कर ते धनुष भूप तब डारत ॥
करिअतिक्रोधबिशिख बहुत्याग्यो ❀ भई बिकल सेना सब भाग्यो ॥
भीमसेन लज्जा जिय आयो ❀ अर्जुन ते यह बचन सुनायो ॥
करि प्रण देन कहेउ तुम दाना ❀ अबकर गुरुहित पार्थ मशाना ॥
भा पारथ उर क्रोध कराला ❀ रिसवशभये बिलोचन लाला ॥
अर्जुन कहन सूत ते लागे ❀ लै चलु हांकि बेगि रथआगे ॥
सुनि सारथी हाँकि रथ दीन्हा ❀ देवदत्त शंखध्वनि कीन्हा ॥
गांडिव धनुष बहुरि टंकोरा ❀ चौदहभुवन भयो रव घोरा ॥
पुनि पारथ दीन्हो शर जाला ❀ लीन्हबांधिरणद्रुपद बिहाला ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पकरि द्रोण चरणन पर डारा ❀ मित्रजानि सुनिनाहिंन मारा ॥
दीन्ह छुड़ाय द्रोण पंचाला ❀ सुनु अर्जुन करणी भूपाला ॥

दो० शरसों वारिधि बांधि जिन. जीतेउपवनकुमार ।
भयो न होनेहार कोउ, अर्जुन सरि संसार ॥

पारथ कीन्ह अमानुष करणी ❀ चितदै सुनहु कहबहमवरणी ॥
इन्द्रकील गिरि पर तप हेतू ❀ गयो मंत्र साधन वृषकेतू ॥
तेहि थल धनुषबाण धरि दीन्हा ❀ करिआचमन देह शुचिकीन्हा ॥
धरि उर ध्यान पार्थ तप साधत ❀ करि व्रतमौन शम्भु आराधत ॥
एक चरण द्वै भुजा उठाये ❀ शिवशिवरटत परमहित लाये ॥
तप साधत बीते बहु काला ❀ भयउचरित यकसुनहुभुवाला ॥
प्रथमहिं भीम बकासुर मारा ❀ तासुबंधु अतिशय बरिआरा ॥
पूर्व्व के बैर रोष बढ़ि आवा ❀ धरि वराहि तनु मारन धावा ॥
जब पारथ समीप नियराना ❀ सो चरित्र शंकर सब जाना ॥
गंगाधर पिनाकधर आये ❀ गणगणपति सब संगल गाये ॥

दो० धरिकिरात तनु हरचले. लिये हाथ हथियार ।
रक्षा हित हरि मित्रकी. करन असुर संहार ॥

अर्जुन ढिग शूगर नियराना ❀ शिव शर जोरि शरासनताना ॥
करि अतिक्रोध अधम तनु मारा ❀ आधो निकसि रहो शर पारा ॥
घुरघुरात पुनि पारथ ओरा ❀ चला असुर मारन करि शोरा ॥
परेउ श्रवण शूकर वर बोला ❀ सुनिरवतब किराटिहग खोला ॥
आवत यक बराह अति तीछे ❀ आयुधधृताकिरात गण पीछे ॥
ह्वै सरोष लीन्हों तब चापा ❀ शर संधान कीन्ह करि दापा ॥
यहि बिधि अर्जुन बाण प्रहोरेउ ❀ निजप्रवेश हर शरहि निकारेउ ॥
कह शंकर यह मोर शिकारा ❀ मारेउ अधमन कीन्ह बिचारा ॥

दो० अरुणनयन भृकुटी कुटिल. बोलपार्थ सिरात ।
समुझि कहततुवबातनाहिं. रेरे अधम रिसात ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नीच जाति अति अधम किराता ❀ मूरख समुझिन बोलत बाता ॥
मोते बचन कहत कटु बानी ❀ अबतुव मृत्युआइ नियरानी ॥
अतिबलहीन न बल तनु माहीं ❀ मानत अधम निहोरा नाहीं ॥
यहसुनि गण क्रोधित होइ धाये ❀ बाणन मारि पार्थ बिचलाये ॥
षण्मुख द्विरद बदन नहिं जीते ❀ चले पराई सकल भयभीते ॥
विकल सकल तनु शुंडिहलावत ❀ भागतशिवदिशिवचनसुनावत ॥
भागे सब किरात गण झारी ❀ बिन किरातपति भगे न हारी ॥
सुनि यहवचन शंभु हँसिदीन्हा ❀ गहिपिनाकसायककरलिन्हा ॥
धूरजटी बहु बाण पवाँरे ❀ अर्जुन काटि काटि महि डारे ॥
पारथ शर काटैं शूलीधर ❀ भयो युद्ध अतिविकलपरस्पर ॥
विजय बृहन्नड़ के संग्रामा ❀ लरत न करत शंभु विश्रामा ॥
तब चरित्र गौरीपति कीन्हों ❀ अक्षयतूणके शर हरि लीन्हों ॥
गांडिव धनुष बिजय तब लीन्हा ❀ करि अतिरोषप्रहारण कीन्हा ॥
गंगाधर कीन्हेउ हुंकारा ❀ फाटो धनुष भयो दुइ फारा ॥

दो० तबै किरीटी क्रोध करि, कीन्हेउ खन्ड प्रहार ।
तिलभरिकट्योनशंभुतनु.विफलभयोअसिधार ॥

अर्जुन मही डारि तरवारी ❀ मल्लयुद्ध पुनि कीन्ह प्रचारी ॥
लरिविलगाहि बहुरि पुनि करहीं ❀ नाना भाँति दाँव दोउ करहीं ॥
अर्जुन पद कहं हाथ चलावा ❀ चहत उमापति भूमि गिरावा ॥
चरण परस कीन्हें जब हाथा ❀ ब्रम्ब्रुहि बोल्यो गिरि नाथा ॥
अबमोहिं अतिप्रसन्न जियजानू ❀ मागु तात अभिमत बरदानू ॥
असकहि शिव निजरूप देखावा ❀ पञ्चबदन शशिअर्द्धसोहावा ॥
जटा कलाप शीश पुनि गंगा ❀ चढ़ीसकल बनुभस्म अभङ्गा ॥
हृदय कपाल माल विकराला ❀ उठतत्रिपञ्चनयन महँज्वाला ॥
भुजंग विभूषण दिग्पट धारी ❀ अर्द्धअगं गिरिराज कुमारी ॥
अभय एक कर एक बरदाना ❀ एक पाणि महँ शूल महाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०—एक पाणि डमरू लीये, नीलकण्ठ भगवान ।
बार बार कह पार्थ ते, माँगु माँगु बरदान ॥

जीते बिना युद्ध गिरिजापति ❋ मैं बरदान न तुमते माँगति ॥
बिन जीते रण मौलिमयङ्का ❋ वर माँगौं बड़ कुलहि कलङ्का ॥
प्रथमहिं विजयपत्र लिखिदीजै ❋ पुनी वर देहु कृपा प्रभु कीजै ॥
तुव पद सप्तकोटि हरीआना ❋ ऐसे नहिं माँगौ बरदाना ॥
हम हारे सुत संग तुम्हारे ❋ होइहौ विजय प्रसाद हमारे ॥
सुनि यह बचन पार्थ अनुरागे ❋ अस्तुति करन जोगीकर लागे ॥
जय गिरिजापति जय कुमारी ❋ चतुरबदन सेवित भुज चारी ॥
शारद शेष चरीत तुव गावत ❋ निगम नेति कहि पार न पावत ॥
बारहिं बार शक्रसुत भाखा ❋ निज प्रणटारी मोर प्रणराखा ॥
अस काहि परे चरण अकुलाई ❋ पाहि पाहि प्रभु जन सुखदाई ॥
गणाधर त्रिशूलधर शङ्कर ❋ दुष्टदलन पालन निज किंकर ॥
नीलण्ठ सितकण्ठ शम्भु हर ❋ महाकाल कङ्काल कृपाकर ॥

दो०—शृंगी शूली धूर्जटी, कुण्डलीस त्रिपुरारि ।
वृषा कपर्दी मानहर, मृत्युंजय कामारि ॥

जयति सादशिव सब गुणरासी ❋ काशिपति कैलाश निवासी ॥
सुनि यह गिरा मगन हर भयऊ ❋ पारथ को याविधि वर दयऊ ॥
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे ❋ नाश होय सब शत्रु तुम्हारे ॥
होइहैं सफल सकल जे काजू ❋ मिलिहै तुमहिं अकण्टक राजू ॥
यहकहि हर सब अस्त्र सिखायो ❋ पुनिपशुपति को भेद बतायो ॥
परै पार्थ जब कठिन मशाना ❋ ता दिन शर कीजै संधाना ॥
छूटत प्रलय शत्रु दल होई ❋ त्रिभुवन रोकि सकैनहिंकोई ॥
यहि विधि अर्जुनको बर दयऊ ❋ अन्तर्द्धान उमापति भयऊ ॥
यक बलिष्ट पुनि शिव वरदाना ❋ कहहु भूप को पार्थ समाना ॥
कहेउ वचन इमि द्रोण कुमारा ❋ समुझायो बहु भाँति मुवारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० गुरुबांधव मुख वचन सुनि, मौनभयो महिपाल ।
पुनि शकुनी बोलउ बहुरि.सबलसिंह उत्ताल ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वाण सबलसिंहचौहान भाषाकृते पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दो० मंत्र हमार बिचारिकरि,सुनुमणि संसुभिभुवार।
सबल शत्रु तुव धर्मसुत. जोरेउ सेन अपार ॥

जोरेउ धर्मराज निज पच्छी ❋ तुमदलहीन बातनहिं अच्छी ॥
अब लग भूप चेत नाहिं कीन्हा ❋ देशकाल कछुपरत न चीन्हा ॥
पठवो पत्र करहु चित चेता ❋ आवहिं नृप सबसेन समेता ॥
तुम जानत हौ भीम सुभाऊ ❋ अवसर परे न चूकत दाऊं ॥
अरि दलयुक्त आप दलहीना ❋ करि बैठे कछु धर्म अलीना ॥
सुनहु सकल मैं कहत पुकारे ❋ फिरि सँभरिहिनहिनाथसँभारे ॥
बोलहु सकल भूप अब सई ❋ अब विलम्ब महँ कौन उपाई ॥
बर पर चढ़े खल महँ भीमा ❋ डारेउ अवनि क्रोधकरिजीमा ॥
राखत सदा बर जिय माने ❋ लखि प्रताप तुम रहत डेराने ॥
जो बलहीन भीम करि पावै ❋ भूप तुमहिं यमलोक पठावै ॥

दो० निजकरणी नरपाल तूम, देखहुचितहिविचार।
कसहु जँजीरन सकल तनु,दियोगँगमहँडारि ॥

सो सुधि भूप हिये मह भूली ❋ अजहूं उठत जासु ते शूली ॥
पठवहु पत्र न करहु विलम्बा ❋ क्षितिपति औवसहित कुटुम्बा ॥
है जेहिके जितनी नृप सामा ❋ आवै साजि करन संग्रामा ॥
खोलि पत्र सबको लिखि दीजै ❋ अब कछु भूप बिलम्बनकीजै ॥
सुनत नरेश परम सुख पायो ❋ देश देश कहँ पत्र पठायो ॥
श्रीपात्रिका दीन्ह सहि दानी ❋ चलेउ राज कर आयसु मानी ॥
सुनि निदेश पृथ्वीपति राजा ❋ आये सकल समेत समाजा ॥
आये मगधराज भगदत्ता ❋ अस्सी लक्ष जाके मदमत्ता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रथनपती अरु वाजि अनेका ❋ अक्षौहिणी संग दल एका ॥
गदा चर्म असि तूण सोहाये ❋ महा पिनाक रूप दरशाये ॥
रङ्ग २ के सङ्ग पताका ❋ अति उतंग जनु चुंबति नाका ॥
बाजत बाजन विविध प्रकारा ❋ पणव वेणुमुख शंख नगारा ॥

दो०-ऐरावत गजको तनय, दीन्हों तेहि सुरपाल ।
मन्दर ते उन्नत कछुक, देह विशाल कराल ॥

चारिउ चरण स्रवत मद धारा ❋ जनु झरना जल बहत पहारा ॥
दन्त विशाल श्वेत सुर भंगा ❋ मानहुँ रजत शैल के शृंगा ॥
कंचन मणिमय रुचिर अँबारी ❋ गज मुक्ता झालरि शुभकारी ॥
तापर मगधराज असवारी ❋ देखि स्वरूप शत्रु भयकारी ॥
निन्नानवे संग लै राजा ❋ चलेउसाजिनिज सेनसमाजा ॥
युद्ध हेत सब साज बनाये ❋ यहि प्रकार गजपुर कहँ आये ॥
पुनि आयो कलिङ्ग दल साजी ❋ अगणितरथपदाति अरुबाजी ॥
सौ बांधव अतिशय बलभारे ❋ द्विरद लक्ष बहु मतवारे ॥
द्वादश नृपति सँग बलदाई ❋ सेन विचित्र वरणि नहिं जाई ॥
टोप सनाह पाणि दस्ताना ❋ अस्सी लक्ष लीन्हें धनुबाना ॥

दो० षट भेरी करि शंख ध्वनि, घुर्मत लाल निशान ।
आयो सजि गजपुर कटक, नृप कलिंग बलवान ॥

नगर हस्तिनापुरी समीपा ❋ निजनिजरुचिकृतशिबिरमहीपा ॥
आयो यमनराज हिति काला ❋ एकविंश लीन्हे महिपाला ॥
महाबली सब तेज तुरंगम ❋ अक्षौहिणी अनी इक संगा ॥
बड़े धनुष अरु कवच विशाला ❋ नील बसन तनु वेष कराल ॥
है सब एक जाति के काछी ❋ अस्त्र शस्त्र धृत सेना आछी ॥
नील रंग के श्याम पताके ❋ पवन लगे नित नभ बाँके ॥
बाजत बिपल अरब्बी बाजा ❋ चढ़ि आयो लै सेन समाजा ॥

दो० अक्षौहिणी कलिंग की, परी गंग के तीर ॥
तासु निकट कीन्हें शिबिर, यमनाधिपरणधीर ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनि आयो तहँ सुरथ कुमारा ❀ सिंधु नरेश वीर बरिआरा ॥
बड़े धनुर्द्धर अति बलखानी ❀ नाम जयद्रथ शिव वरदानी ॥
त्रिभुवन विदित जान सब कोई ❀ नृप दुर्योधन कर बहनोई ॥
गज रथ वाजि पदाति अपारा ❀ बाजत गोमुख शंख नगारा ॥
जाके दलहि ध्वजा पँचरंगा ❀ अक्षौहिणी एक पुनि संगा ॥
कुण्डि वर्म तूणी धनु बाणा ❀ धरे बीर सब चर्म्म कृपाणा ॥
हस्ती रथ कोउ तुरंग सवारी ❀ सप्त सहस्र भूप बल भारी ॥
नगर हस्तिनापुर चलि आये ❀ कियेशिबिरनिजनिजमनभाये ॥

दो०-निजनिज रुचि डेरा करत, प्रमुदित हिये भुवार॥
दुर्योधन आदर किये, किये विविध सतकार ॥

सजि सजि सेन नरेश अनेका ❀ आये शूर एक ते एका ॥
यहि प्रकार आये सब भूपा ❀ कीन्हशिबिरसबनिजअनुरूपा॥
प्रथम दूत कुरु खेत पठाये ❀ सुनिसुधिदनुज राजचलिआये ॥
नाम अलंबुष वीर अभंगा ❀ सात कोटि दानव दल संगा ॥
नाना वाहन आयुध धारी ❀ मेचक बरण घटा जनु कारी ॥
नाना बिधि माया सब जानैं ❀ तृणसमान तिहुँलोकहिं मानैं ॥
दानवराज द्विरद असवारी ❀ गरजतपुनिपुनि अतिबलभारी ॥
पितु करमधुज विदित जग जासू ❀ बलिसुत वानि पितामह तासू ॥
निज भुजबल सुरगण सब जीते ❀ रहत सुरेश जेसु भय भीते ॥
कह सुनि सुनहु कथा कुरुराई ❀ दल न होइ जनु पावस आई ॥
श्याम घटा सम निशिचर धारी ❀ बिज्जुछटा असिपाणि उघारी ॥
सघन घटा बिच पांति बलाकी ❀ गर्जत रव सोहत अति बाँकी ॥

दो०-गजघंटा भेरी पटह, गर्जत अति मनुजाद ॥
नगर हस्तिनापुर निकट, भयो भयंकर नाद ॥

कौतुक हेतु विबुध गण आये ❀ देखनको विमान नभ छाये ॥
धृतराष्ट्रक नन्दन सुधि पाई ❀ बाहर मिलेउ नगरके आई ॥
कीन्हेउ युगल परस्पर भेंटा ❀ कुशल पूँछि मन संशय मेटा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करि सन्मान अलंबुष केरा ❋ पुनि महीप करवायो डेरा ॥
सभा मध्य फिरि गयउ कुमारा ❋ भइ बाड़ि भीर राज दरबारा ॥
ताही समय शल्य नृप आये ❋ अक्षौहिणी संग इक लाये ॥
सभा मध्य कुरुपति सुधि पाई ❋ कीन्हमंत्र सब सचिव बुलाई ॥
बोले शकुनि भरत कुल टीका ❋ मोते सुनिय मंत्र यह नीका ॥

दो० मिलियसपदिआगे निसरि, करिबहुआदरभाय।
देइ निमंत्रण युद्धको, शल्य लेउ अपनाय॥

सब मिलि यहै मंत्र दृढ़ कीन्हा ❋ आगे चलि कौरवपति लीन्हा ॥
मिलतउभय अभिवादनकीन्हों ❋ तब कुरुनाथ निमंत्रण दीन्हों ॥
मातुल चलहु हमारे धामा ❋ आये लेन हेतु संग्रामा ॥
उनके कृष्ण सहायक ऐहैं ❋ ताकी सरि हम कहि लगैहैं ॥
मातुल सुनु प्रसाद बिन तोरे ❋ होइँ न सफल मनोरथ मोरे ॥
सुनिके शल्य कही मृदुबानी ❋ सुनहु नरेश परम सज्ञानी ॥
धर्मराज नहिं मोहिं बुलाये ❋ हम सुधि पाई आपुते आये ॥
तुम चलि प्रथमनिमंत्रण दीन्हा ❋ मोहिं महीप अपन करिलीन्हा॥
मह छाँड़ो भैनैन कर संगा ❋ सबते लख भूप तुव संगा ॥

दो० भीमपार्थसहदेव पुनि, नकुल सबनकर मोह।
त्यागे तुम्हरे हेतु नृप, धर्मराज ते छोह॥

तजि नाते को नेह विचारा ❋ अब दीन्हें हम संग तुम्हारा ॥
अब नृप धर्मराज पहं जाइब ❋ आतुर भेंटि सपदि पुनि आइब ॥
यहाँ राखि सब सेन समाजा ❋ आवहु देखि युधिष्ठिर राजा ॥
गजपुर राखि सेन सब बाँकी ❋ चला भूप चढ़ियान इकाकी ॥
घुरघुरात रथ चक्र कराला ❋ मृदु रव करत किंकिणी जाला॥
श्वेत संग फहरात पताके ❋ पवन लगे निर्तत नभ बाँके ॥
मिले न वर्ष त्रयोदश बीती ❋ दरश लालसाकी अति प्रीती ॥
पुलकित गात नयन जल छाये ❋ यहि प्रकार विराटपुर आये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० दरश लालसा उर अधिक, को करिसकै बखान।
यहिविधिआयो शल्य नृप, सबलसिंह चौहान।

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते षष्ठमोऽध्यायः ॥ ६ ॥

धर्म नरेश सभा सुधि पाई ❋ द्वारपाल हमि जाई जनाई ॥
शल्य आगमन सुनि सुखपाये ❋ लेन हेतु नृप भीम पठाये ॥
द्वार जाय अभिवादन कीन्हों ❋ मातुलनिरखिआशिषहिदीन्हों ॥
रथ तजि चले प्रथम अनुरागे ❋ भेंटेउ भीमसेन बढ़ि आगे ॥
पुलकित गात नयन जल छाये ❋ कुशल पूँछि तनु ताप बूझाये ॥
युगल प्रसन्न भये मिल जीमा ❋ आये सभा शल्य अरु भीमा ॥
आवत निकट धर्मसुत देखी ❋ मिले प्रेम युत हर्ष विशेखी ॥
कुशल पूँछि तनु आनन्द छाये ❋ पुलकित नयन सजल ह्वै आये ॥
करत प्रणाम नकुलसहदेव ❋ मिलउ बहोरि सजल दृगतेउ ॥
तेहि अवसर पारथ तहँ आये ❋ मातुल देखि चषन जल छाये ॥
कीन्ह प्रणाम निकट भये ठाढ़े ❋ मिले बहुरि अति आनन्द बाढ़े ॥
अभिवादन तब करत नराटा ❋ मिले पार्थसुत द्रुपद विराटा ॥
धुनि आयो द्रोपदी कुमारा ❋ भेंटत पुनि पुनि करत जुहारा ॥

दो० सभा मध्य नृप शल्य कहँ, तब लगयौ भुवार।
बहु प्रकार आदर कियो, खानपान अधिकार॥

शल्य नरेश कुशल बहु भाँती ❋ पूछत नृपहि जुड़ावत छाती ॥
तेरह वर्ष विपित महँ बीती ❋ कुरुनंदन यह कीन्ह अनीती ॥
तेरह वर्ष विपन महँ बीती ❋ कुरुनंदन यह कीन्ह अनीती ॥
तात कीन्ह छल सभा बुलाई ❋ कपटद्यूत करिभूमि छुड़ाई ॥
बह अतिकीन्ह शकुनि छलकारी ❋ धर्म नरेश धर्मबत धारी ॥
जबते तुम कहँ देश छुड़ावा ❋ तबतें मह दारुण दुख पावा ॥
तुम्हरे विरद अरु रीती ❋ तलफत रह्यों जरतनितछाती ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गत तेरह सम्वत सुधि पाई ❋ तुहैं देखि गये नयन जुड़ाई ॥
दो॰ आयो तुम्हरे मिलनको, छल कीन्हे कुरुनाथ।
दियो निमत्रण युद्धको करि लीन्हों निज हाथ॥
या महं धर्म अधर्म बिचारी ❋ कहौ करौं सिख मानि तुम्हारी ॥
कहाँ गये बिन धर्म नसाई ❋ छाँड़त तुमहिं परम कठिनाई ॥
तुमते नहिं दूसर संसारा ❋ जाननहार धर्म व्यवहारा ॥
तज्यो न धर्म सकलताजिदीन्हा ❋ त्यागेउ ना वचन मग लीन्हा ॥
तुम भगिनीसुत पांचौं भाई ❋ मोरे प्रणान ते अधिकाई ॥
कहौ विचारि करौं अब सोई ❋ जाते धर्म लोप नहिं होई ॥
सुनतहि धर्म्मराज हँसि बोले ❋ मातुल सुनहु कहत मैं खोले ॥
क्षत्रिय धर्म्म कठिन नृप एहा ❋ ताते त्यागहु तुम सन्देहा ॥
दो॰ दियो निमत्रण युद्ध को, उन लीन्हों अपनाय।
कीन्हें और विचार अब, क्षत्रिय धर्म नशाय ॥
तुम अब दुर्योधन के ओका ❋ मातुल जाउ तजो सब शोका ॥
तुम कौरव की कीन्ह गोहारी ❋ अर्जुन कर्ण बैर हैं भारी ॥
समर भूमि दोनो बल धामा ❋ जब जूरि करहिं कठिनसंग्रामा ॥
आपु कर्ण की निन्दा कीजै ❋ मांगत हौ मांगे यह दीजै ॥
कहेउ शल्य सुनिये भुवराई ❋ कारण सकल कहौ समुझाई ॥
निन्दा किये कर्ण की राजा ❋ यामें सफल बनत तुव काजा ॥
सो सुनि धर्मराज हँसि दीन्हा ❋ ते उतर मातुल कहं दीन्हा ॥
निज निन्दा सुनि शत्रु प्रशंसा ❋ घटिहै शल्य कर्ण को अंशा ॥
दो॰ निज हीनी अरु शत्रु की, सुनत बडाई कान।
रिस वश ह्वै है कर्ण तव, सूध लगि हैं बान ॥
यह कहि धर्मराज समुझाये ❋ एवमस्तु कहि शल्य सिधाये ॥
बाहर नगर भीम पहुंचाये ❋ विदा भये पुनि शीश नवाये ॥
दे अशीष नृप शल्य सुजाना ❋ पुनि मतंगपर गत बलवाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दुर्योधन आदर करि लीन्हा ❋ प्रीति सहित अभिवादन कीन्हा ॥
उत्तम सदन शिबिर करवाये ❋ सुनहु भुप अब चरित सुहाये ॥
नगर कौशिली को महिपाला ❋ बृहद्बली आयो तिहिंकाला ॥
अति दल चलत धारा पुनिहाली ❋ सूर्यवंश की धरे प्रणाली ॥
सुनि कुरुनन्दन अजुन पठायो ❋ आदर ते सब शिबिर करायो ॥

दो० बहु प्रकार सत्कार करि, खान पान सन्मान ।
मिलतशिबिरनितप्रतिआधिक,सबसिहासनचौहान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते सप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

दो० हरिपद पंकज ध्यान धरि,ऋषय नयनजलपूरि ।
कह मुनिजनमेजय सुनहु,कथाअमियरसमूरि॥

नगर अवंती ते चलि आये ❋ भुप बिंद अनुबिंद सूहाये ॥
लीन्हें संग चमू चतुरंगा ❋ रथपदाति गज वाजि अभंगा ॥
यधामन्यु अरु वीर तमोजः ❋ आये सेन सहित कंबोजा ॥
राजा राजपुत्र बलवाना ❋ आये अमितकटकविधिनाना ॥
सेना सहित उलूक नरेशा ❋ पुनि गजपुर महँकीन्हप्रवेशा ॥
जुरेउ हस्तिनापुरी समाजा ❋ साठि सहस छत्रधर राजा ॥
इहा युधिष्टर पार्थ बुलाये ❋ भ्राता सुनहु कृष्ण नहिं आये ॥
तातें तुम लआवहु जाई ❋ दरश पाई गत विपति बुझाइ ॥
अर्जुन नृपको आज्ञा पाई ❋ चले तुरंत चरण शिर नाई ॥
बेगवन्त जोते रथ वाजी ❋ लायहु तुरत सारथी साजी ॥
चले किरीटी अति हरषाई ❋ चले जोवत मग बार न लाई ॥
सतयें दिवस गोमती तीरा ❋ उतरि अन्हाने निम्मर्ल नीरा ॥

दो जल निर्म्मल गंभीर अति,वनज विपुल बहुरंग ।
मधुपमत्त गुंजत भ्रमत, कलरव करत विहंग ॥

आगे चलि व्दारावति देखी ❋ मगमें भवन विचित्र विशेषी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कनक रचितमणिखचितदेवाला ❋ अष्टद्वार पुर आण बिशाला ॥
अति गँभीर जल युत पद वाना ❋ उठत तरंग पयोधि समाना ॥
श्वेत रक्त माणि हरित बँधावा ❋ परम अनूपम रूप सोहावा ॥
दक्षिण ओर समुद्र विराजा ❋ पश्चिम दिशि रैवत गिरिराजा ॥
कोटिन पुर महँ उड़त पतंगा ❋ हंस मयूर कपोत विहंगा ॥
निर्त्तत कोटिन केतु पताका ❋ अति उतंग जनु चुँबत नाका ॥
कोटिन गज कुञ्जल लै आवैं ❋ सरित घाट महँ नीर पियावैं ॥
करत विहार द्विरद मतवारे ❋ गिरि सम वपुष भूलते कारे ॥
कोटिन बाजि सहानी आवैं ❋ नीर पियाइ नदी अन्हवावैं ॥

दो० अति उतंग पुर द्वार शुभ, माणिमय मंजु किवाँर।
कोटि दरवानी खडे, लिये हाथ हथियार ॥

कोटिन मणिमय रुचिर कंगूरा ❋ अति उतंग नभ परसम जूरा ॥
जम्बूनद मणिगणयुत त्राना ❋ शोभित सुभग सुरेश समाना ॥
रंग रंग रत्नन की भासा ❋ रवि कर परसत करत प्रकासा ॥
पुर शोभा कुन्तीसुत देखत ❋ जीवन जन्म सफलकरिलेखत ॥
यहि विधि पँवरि द्वार चलिआये ❋ दरवानिन लखि शीश नवाये ॥
कहे वचन सुधि करत तुम्हारी ❋ संध्या समय रहे बनवारी ॥
रुक्मिणि मन्दिर ते बाढ़ि आई ❋ सात्यकि सों इमि वचन सुनाई ॥
बीते युगल मासि सुनु भाई ❋ अर्जुन की कछु सुधि नहिं पाई ॥
ताते वेगि विलम्ब न कीजै ❋ लोचनलाहु निरखिचलिलीजै ॥
असकहि शयनभवन मनदीन्हा ❋ अर्जुन सुनत हर्ष मन कीन्हा ॥
तेहि अवसर दुर्योधन आये ❋ शयन किये यदुनन्दन पाये ॥
ताके हृदय गव नहिं थोरा ❋ बैठेउ जाइ सिरहने ओरा ॥
गये पार्थ सोवत यदुनाथा ❋ ठाढ भये सन्मुख करि माथा ॥

दो० पराशि चरण ठाढे भये, हरि पायन की ओर।
हिये प्रीति अति मन विमल, श्रीसुरराजकिशोर ॥

साही समय जगतपति जागे ❋ देखेउ पारथ पायँन आगे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उठे सप्रेम दोउ बनवारी ❋ मिलन हेतु दौ भुजा पसारी ॥
अर्जुन गहे चरण लपटाई ❋ भुज गहि हरि लीन्हें उरलाई ॥
कुशल प्रश्न पूँछेउ बहु भाँती ❋ पुनिपुनिमिलतजुड़ावतछाती ॥
तेहि अवसर कुरुनन्दन आये ❋ अभिवादन कहिआपजनाये ॥
यदुपति कुरुनाथहिं पहिचाना ❋ मिलेबहुत विधिकरिसन्माना ॥
गहिभुज लै समीप बैठाये ❋ पूछहु नृप केहि कारण आये ॥
हँसि बोले दुर्योधन राजा ❋ सुनहुकृष्णआयहुँजे हिकाजा ॥

दो० करो सहाय हमार तुम, जो कीन्हौं बहु बोध ।
बहुत कहा तुमते कहैं, जानत वंश बिरोध ॥

ताते तजि अब पांडव संगा ❋ तुम हरि होहु हमारे अंगा ॥
क्षत्रिय धर्म्म सुनहु यदुराई ❋ जाके भवन प्रथम जो जाई ॥
सो ताहिका होइ सहायक ❋ करहु विचार होइ जे लायक ॥
आयउँ भवन प्रथम मे तुम्हरे ❋ हे हरि होहु सहायक हमरे ॥
सुनि यदुपति बोले मुसुक्याई ❋ दल बल हनि युधिष्ठिर राई ॥
निज आगम कह आप विशेखा ❋ हम प्रथमहिं पारथको देखा ॥
वचन हमार भूप सुनि लीजै ❋ करहु विचार बोगि सो कीजै ॥
यह कहिकै हरि माया प्रेरी ❋ बरबस जाय तासु मति फेरी ॥

दो० चारि लक्ष गोपाल गण, वाहन अश्व समेत ।
एक ओर हम शस्त्र बिन, कहो भूपका लेत ॥

होत प्रथम छोटे को उरा ❋ पाछे लेइ जेठ को पूरा ॥
यह कहि बिहँसे शाँरगपानी ❋ मुख देखत माया लपटानी ॥
ज्ञान भंग दुर्योधन भयउ ❋ हरिमु खनिरखिवचनयहकहेउ ॥
हे हरि नटवर वेष तुम्हरा ❋ नाचत गावत लै पर दारा ॥
गजपुर साजि आये सब राजा ❋ तिनमहँ कवन तुम्हारो काजा ॥
ताते हरि सेना हम लीन्हेउ ❋ तुमकहँ हम अर्जुनको दीन्हेउ ॥

दो० कह्यो किरीटी बिहँसि तब, सुनिये यादव राइ ।
आपु हमारे पग धरिय, दल कोऊ लै जाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनि हरि गण गोपाल बोलाये ❋ मणिमयकुण्डलमुकुटसोहाये ॥
मणिमय भूषण हार विराजत ❋ जटितवसन तनुशोभा छाजत ॥
मणियय कवच बड़े धनुधारी ❋ शोभित मनहुँ बरात सुधारी ॥
कञ्चन मणिमय स्यंदन भारी ❋ गजमुक्ता झालरि छबिभारी ॥
सो दल दुर्योधन कहँ दीन्हा ❋ करिसन्मान बिदाप्रभु कीन्हा ॥
भयो प्रसन्न हिये महिपाला ❋ चलेउ संग लै गण गोपाला ॥
गयो बहोरि जहाँ बलदेवा ❋ चरण परासि विनयो बहु सेवा ॥
अर्जुन साथ जात यदुनाथा ❋ चलहुसंगमोहिंकरहुसनाथा ॥
उन पांडव को कीन्ह सहारा ❋ सब प्रकार मैं दास तुम्हारा ॥

दो० भये युधिष्ठिर और हरि, सो जानत सब भेव ।
मनसा बाचा कर्मणा, मैं तुम्हार बलदेव ॥

अस कहि परेउ चरण कुरुनायक ❋ नाथ कृपा करि होय सहायक ॥
राखत सदा भरोस तुम्हारा ❋ तुम बिन कौन मोर रखवारा ॥
हलधर सुनेउ भूपकी बानी ❋ बोले वचन दीन अति जानी ॥
हम इत हरि उत बात न नीकी ❋ सुनहु कहौं तुम्हरे हितहीकी ॥
लेहु सेन संग मंत्र हमारा ❋ होइ जो लिखा करतारा ॥
अस कहि लक्ष दीन्ह संग योधा ❋ विदा कीन्हबहुभाँति प्रबोधा ॥
दुर्योधन लै संग सिधाये ❋ कृतवर्म्मा के मन्दिर आये ॥
देखत कृत नृप आसन दीन्हा ❋ बहु प्रकार ते आदरकीन्हा ॥

दो० बैठारे आसन विमल, करि बहुविधि सत्कार ।
कुशलप्रश्नपूँछत नृपति, अतिहितबारहिंबार ॥

अहो भूप कछुआज्ञा दीजै ❋ करि अनुकम्पकाजसोईकीजै ॥
अतिशय कृपा करी कुरुनाथा ❋ तुव आगम मैं भयो सनाथा ॥
सुनि दुर्योधन वचन सुनाये ❋ सुनहु भूप जेहि कारण आये ॥
सो जानौ सब बात तुह्मारी ❋ पांडव हमैं बैर है भारी ॥
उनके साथ आपु बनवारी ❋ तुम नृप करहु सहाय हमारी ॥
सो सुनि कृतवर्म्मा तब बोले ❋ धीर बीर अरु समर अडोले ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भूप तुम्हार साथ हम दीन्हा ❋ यहप्रणमै निश्चयकरिकीन्हा ॥
यह सुनिकै सेना हँकराई ❋ भयउ अरूढ़ निशान बजाई ॥
लीन्हें साथ चमू चतुरंगा ❋ अक्षौहिणी एक नृप संगा ॥
कीन्ह हस्तिनापुरी प्रवेशा ❋ करवायो तेहि शिबिर नरेशा ॥
सेन विचित्र देखि सुख माना ❋ जीते युद्ध शकुनि मन जाना ॥
कर्ण दुशासन बहुत अनन्दे ❋ पुनि पुनि कुरुनन्दनपदवन्दे ॥
यह सुधि धृतराष्ट्रक सुनि पाई ❋ बहुअनन्द नहिं हृदय समाई ॥
यहाँ कृष्ण अर्जुन सँग लीन्हें ❋ अन्तःपुर प्रवेश प्रभु कीन्हें ॥
रुक्मिणि सतभामादिक नारी ❋ लाई सुनि अर्जुन कहं झारी ॥
बैठे पार्थ सहित बनवारी ❋ सतभामा तब चरण पखारी ॥
जाम्बवती जल भाजन लाई ❋ पानदान लक्ष्मणा लयाई ॥
रुक्मिणि अतरदान कर लीन्हें ❋ सतभामा भोजन हित कीन्हें ॥
याहि प्रकार आठौं पटरानी ❋ अतिहिकरतकृष्णप्रियजानी ॥

दो० हरि समेत भोजन किये, दियो रुक्मिणी पान ।
सतभामादिक नारि सब, करत बिविध सन्मान ॥
कुशल प्रश्न पूँछी सबन, अति हित बारंबार ।
है अभिमन्यु नीके तहां, सबके प्राण अधार ॥

सो सुधि पाई देवकी आई ❋ देखियुगलतनु आनन्दछाई ॥
हरि अर्जुन उठि कीन्ह प्रणामा ❋ दीन्हि अशीष होइ मन कामा ॥
माता पुनि पुनि कण्ठ लगाई ❋ बोलीबचन नयन जल छाई ॥
तुम बिन रहेउ हिय अति शोका ❋ तेरह वर्ष बादि अवलोका ॥
सुनहु कृष्ण जो मंत्र हमारा ❋ प्राणहु तेमोंहिंअधिकापयारा॥
तुमहिं त्यागि कोइ और न जाना ❋ रक्षा तुम कीजै भगवाना ॥
कहि अस बचन देवकी रानी ❋ अर्जुन कहं सौंप्यो गहिपानी॥
हरि अर्जुन उठि बीर न लाये ❋ निजपितु के मंदिरचलिआये॥

दो० करि प्रणाम अर्जुनसहित, कहेउ कृष्णसबभेव।
दै अशीश आनन्द सों, विदा कियो वसुदेव ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

निकरि पवँरि ते बाहर आयो ❋ तब श्रीहरि सात्यकी बुलायो ॥
होहु तैयार सेन सजि भाई ❋ हेरत बाट युधिष्ठिर राई ॥
सुनि सात्यकि निज सेनहंकारी ❋ आयुध बांधिलीन्ह असवारी ॥
दारुक नाम सारथी साजी ❋ स्यंदन भानु जानुलखि लाजी ॥
सुग्रीवादिक हय मचि आई ❋ भे अरूढ़ हरि शंख बजाई ॥
भुज गहि अर्जुन संग चढ़ाये ❋ पवन वेग रथ हांकि चलाये ॥
गमनी संग चमू चतुरंगा ❋ उठी धूरि छपि गयऊ पतंगा ॥
पारथ पूछत विविध कहानी ❋ कहत जात मग शारंगपानी ॥

दो० पारथ पूँछेउ जोरि कर, कहिये श्रीभगवान ।
शत्रु विजय अरु मोर हित, सबलसिंहचौहान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

कहेउ कृष्ण अब सुनु मत मोरा ❋ यामों है अर्जुन हित तोरा ॥
होइहि सकल शत्रु की नासा ❋ मिलहिंराज्यतोहिबिनहिंप्रयासा॥
जाके अंस मोर अवतारा ❋ पालत सृजत हरत संसारा ॥
सुमिरण करहु शक्ति तुम सोई ❋ पूरण सकल मनोरथ होई ॥
सुमिरण कीन्ह शक्र फल पावा ❋ जेहि प्रसाद सुरनाथ कहावा ॥
विधि कर्ता अरु हर संहर्ता ❋ जासु प्रसाद विष्णु जगभर्ता ॥
पारथ करौ तासु को ध्याना ❋ सब प्रकार होइहि कल्याना ॥
सो जानहु सब मोर स्वरूपा ❋ प्रकृति पुरुष है एक स्वरूपा ॥
करहिं भेद जे नर अज्ञाना ❋ परहिं नरक पावहिं दुख नाना ॥

दो० भयउ बोध अर्जुन कहेउ, कहियेश्रीभगवान ।
जेहि प्रकार ते कीजिये, परम शक्ति कोध्यान ॥

प्रेमातुर जानेहु भगवाना ❋ लागे कहन सक्ति को ध्याना ॥
दिसा वसन अरु सक्ति कराला ❋ पहिरे उर मुंडन के माला ॥
अंग अंग अहि भूषण नाना ❋ सिवारूढ़ अरु बसत समाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मुक्त केश अरु बदन पसारे ❋ जिह्वा ललन दशन भयकारे ॥
निकसत अरुण नयन त्रैज्वाला ❋ अष्टबाहु तनु श्याम तमाला ॥
घुर घुर शब्द सहित घनघोरा ❋ शिवानाद पूरति चहुँ ओरा ॥
मुंड एक कर एक कृपाना ❋ यक कर अभय एक बरदाना ॥
एक पाणि मदिरा कर भाजन ❋ एक पाणि शृंगीहितु बाजन ॥

दो० एक हाथमें खड्ग धरे, इक शूली वर धार ।
उठतप्रभानभ तेजकी, रवि शत कोटि अपार ॥

यहि प्रकार हरि भेद बतायो ❋ अर्जुन नयन मूंदि तब ध्यायो ॥
कीन्ह ध्यान क्षण एक बहोरी ❋ अस्तुति करत दोउकर जोरी ॥
जय गिरिजा जय प्रणतपालिका ❋ असुरराज शृंगयुद्ध जालिका ॥
महिष मार्दिनी मातु कालिका ❋ नितभक्तनकीविपतिघालिका ॥
जयजयजय माहिषासुर मार्दिनि ❋ अजाकुजाजयमातुकपर्दिनि ॥
शिवा शंभु घरणी शिव दूती ❋ जेहिसुमिरेजग सकल बिभूती ॥
चण्डमुण्ड दलिनी अरु चण्डी ❋ ललिता ललितरूप खलखंडी ॥
धूमावती सती तुम सीता ❋ होहिं कामसबअरिगण जीता ॥
रिपु खण्डन तुव नाम पुनीता ❋ शशिहि जटाकंठ शुभ गीता ॥
तारा तरणि तारनी गंगा ❋ त्रैपुरकी त्रय ताप बिभंगा ॥
कुला कुरू कुरुकुल महरानी ❋ गिरा हरा जय जय श्रीबानी ॥

दो० छिन्ना तू बगलामुखी, बाराही जगमाय ।
चरण शरक जगदंबिका, कीजै बेगि सहाय ॥
करौ राजराजेश्वरी, मातंगी दुख हानि ।
दुष्ट दंड दैं विपति से, राखि लेहु जन जानि ॥

सांची दुख दलनी जय बाला ❋ करहु कृपा अब होहु दयाला ॥
प्रकट्यो एक गगन थल ज्वाला ❋ अस्तुति करैं देव दिग पाला ॥
व्योम गिरा यह भयो महाना ❋ मांगु मांगु अर्जुन बरदाना ॥
गगन गिरा सुनि मन हर्षाई ❋ बोलेउ पार्थ चरण शिर नाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शत्रु बियंज अरु नृप कल्याना ❋ मांगत मातु देहु वरदाना ॥
है प्रसन्न सुनि अर्जुन बानी ❋ एवमस्तु कहि गई भवानी ॥
तब दारुक हय हांकि चलायो ❋ चले मरुत गति बारन लायो ॥
सात्यकि चले कृष्ण रथ संगा ❋ लीन्हें साथ चमू चतुरंगा ॥
गयउ युधिष्टिर कटक समीपा ❋ किये शिबिरतबसकलमहीपा ॥
जहँ तह कोटिन तनित बिताना ❋ जहँ तहँ बाजैं नौबतिखाना ॥
गर्जत गज हींसत बहु घोरा ❋ हाहाकार शब्द चहुँओरा ॥
पुर बिराट दल जुरेउ अपारा ❋ नहिं कोउ काहू जानन हारा ॥
होत नारद घरियार घनेरा ❋ ध्वजा देखि परखिय नृप डेरा ॥

दो० अंध धुंध दल नृपन के, परत न कतहूँ जानि ।
रंग रंग झंडा गड़े, भूपनि की पहिंचानि ॥

तब दारुक हरि रथहि चलाबा ❋ पवरि अजातशत्रु की लावा ॥
द्वारपाल तब जाइ जनाये ❋ महाराज हरि अर्जुन आये ॥
बहुत अनन्द भूप मन कीन्हों ❋ बाहर निकसि पँवरिते लीन्हों ॥
कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा ❋ रथते उतरि मिलेउ यदुनाथा ॥
अर्जुन मिलेउ चरण गहि धाई ❋ दीन्ह अशीश युधिष्ठर राई ॥
कृष्ण समेत सभा पुनि आई ❋ बैठे अति प्रसन्न सुख पाई ॥
प्रभु कहँ सिंहासन बैठारा ❋ बहुबिधि नृप कीन्हें सतकारा ॥
चरण धोई चरणोदक लीन्हा ❋ पावनभवन सींचि जल कीन्हा॥
तेहि अवसर भीमादिक भाई ❋ परसे चरण कृष्ण के आई ॥

दो० प्रीति सहित यदुवंश मणि, भेटे हृदय लगाय ।
बैठारे सन्मान करि, हर्ष सहित सुख पाय ॥

द्वौ कर जोरि कृष्ण के आगे ❋ बिनती करन धर्मसुत लागे ॥
हे प्रभु तुव करतूति महाना ❋ थके चारि श्रुति अंत न जाना॥
महिमा अमित वेद जो गावत ❋ नेतिनेति कहि नेति सुनावत ॥
सहसवदन सों शेष बखानत ❋ पुनिसोउकहतपारनहिं पावत ॥
शारद सनकादिक सुर नाना ❋ बिधि नारद कछु पारनजाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शिव सामर्थ्य जानि सब पावा ❀ बहु प्रकार काहि नेति सुनावा ॥
यद्यपि निर्गुण वेद बखाना ❀ जनहितसगुणहोत भगवाना ॥
मत्स्यरूप धरि वेद उधार्‌यो ❀ हे प्रभु तुम शङ्खासुर मार्‌यो ॥
दो० हाटक दृग धरणी हरी, सो ले गयो पताल ।
कीन्हबिनयसुरद्योसनिशि,भयोप्रकटततकाल ॥
धरि वराह वपु श्री भगवाना ❀ पैंठि सिन्धु महँ धरे विषाना ॥
अधम कनकलोचन तुम मारा ❀ कीन्हेंउ बहुरि धरणि बिस्तारा ॥
व्याकुल जन प्रहलादहि जानी ❀ होइ नरहरिमार्‌यो अभिमानी ॥
हिरण्याक्ष निज लोक पठावा ❀ हरी विपति हरिदास बचावा ॥
कमठ रूप धरि मन्दर लीन्हों ❀ मथ्योपयोधिसुरनसुख दीन्हो ॥
मधु दै नाथ असुर बैरायो ❀ किये असुर सुरसुधा पिआयो ॥
ह्वै वामन अमरेश बचायो ❀ बलिछलिबांधि पताल पठायो ॥
पुनि प्रभु परशुराम वपु धारेउ ❀ अधम नरेश नाश करि डारेउ ॥
सकल भूमि को भार उतारा ❀ कीन्हेंउ बहुरि धर्म बिस्तारा ॥
दो० देखिदेखिमहिदेवदुख, धरणिविलोकिअनाथ ।
कीन्ह दया प्रभुअवधपुर, प्रगटभये रघुनाथ ॥
रावण कुम्भकर्ण खल मारा ❀ करि सनाथ महि भार उतारा ॥
कृष्ण रूप अब ममहित कारण ❀ कीन्हेंउ नाथ धरणि परधारण ॥
जयमधुमुरअघ नरक बिनाशन ❀ चक्रपाणि जय श्रीगरुड़ासन ॥
केशी कंस हने चाणूरा ❀ मुष्टिक असुरशकट अघक्रूरा ॥
जय वृन्दाबन विपिन बिहारी ❀ महिमा अगम अपार तुम्हारी ॥
होताहि प्रगट पूतना मारी ❀ हरी ताप यशुदा की भारी ॥
तृणावर्त्त बैंडर ह्वै आवा ❀ कण्ठचापि प्रभु मारि गिरावा ॥
मारेउ अधम भूप शिशुपाला ❀ काटेउ सकल भूमिको शाला ॥
बिप्र सुदामा दारिद नाशा ❀ पूजी सब प्रकार प्रभु आशा ॥
जहँ तहँ परे दास तुव गाढ़े ❀ करि सहाय सङ्कट ते काढ़े ॥
गहेउ ग्राह गज कीन्ह पुकारा ❀ पवि ते प्रकट न लागी बारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ग्राह मारि निज धाम पठावा ❀ मिटिविपतिगजविनयसुनावा ॥
परी विपति प्रहलाद पुकारा ❀ पवि ते प्रकट न लागी वारा ॥
असुर मारि पठयो निज लोका ❀ निजसेवककहँकीन्हविशोका ॥
दशमुख हति वैकुण्ठ पठायो ❀ भयविशोकसुर मुनिसुखपायो ॥
तैसेहि कृपादृष्टि अवलोकी ❀ हरहुविपतिमोहिंकाहुविशोकी ॥

दो० अस कहि भूपति पद गहे, पाहिपाहि यादौन ।
काटहुसंकट विकट अब, ह्वैदयालुसुखदौन ॥
ह्वै प्रसन्न यदुवंशमणी, तब बोले हरषाय ।
गई विपति धीरज धरहु, धर्मपुत्र भुवराय ॥
शरणागत पालक विरद, विदित भार संसार ।
ताते अब तन मन वचन, करब सहाय तुह्मार ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अब नृप सुनहु कथा मनलाई ❀ हरि सुधि पाई द्रौपदी आई ॥
परसे चरण प्रेमयुत आनी ❀ नयन नीरमुख कढ़त नबानी ॥
हरिहि देखिकै रोवन लागी ❀ विह्वल बचन शोक ते पागी ॥
हे प्रभु जब तुम यज्ञ कराई ❀ द्वारावती गये यदुराई ॥
तब जो भई अवस्था मेरी ❀ सो अबसुनहुजानिनिजचेरी ॥
बिभव देखिकुरुपतहि न भावा ❀ ह्वै उदास निज मंदिर आवा ॥
शकुनी कर्ण दुशासन आये ❀ बैठिसबनमिलि मंत्र दृढ़ाये ॥
दल बटोरि करि युद्ध दरेरा ❀ लीजै राज्य पाण्डवन केरा ॥
करि मत बुद्धिचक्षु यह आई ❀ सकलकथातिनकहिसमुझाई ॥

दो० बिन समझे अज्ञान ते, तुम मानत मन रोष ॥
अब सुतकरहुविरोधिजनि,उनकरकछुनहिंदोष ।
उनते युद्ध न तुम बरिऐहो ❀ बिना काज कत बैर बढ़ैहो ॥
कह्यो भूप तुम कहत बिलोकी ❀ हमरे मते मंत्र नहिं नीकी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उन कहँ दीन्ह बिभव करतारा ❋ तुमहिंउचितनहिंकरबबिगारा ॥
बोले शकुनि तेज छलकारी ❋ सुनहु भुप यह बात हमारी ॥
युद्ध करहु जान नृप अज्ञानी ❋ हारि जीति कछु परतनजानी ॥
मोहिं अक्ष विद्या निपुणाई ❋ लेइय जीति खेलि प्रभुताई ॥
जीते ख्याल विरोध न होई ❋ काढ़िय द्रव्य हीन करि सोई ॥
सुनि मत दृतराष्ट्रक वन भायो ❋ द्युत हेत उन नृपति बुलायो ॥
गये नरेश सहित परिवारा ❋ समय द्युत को वर्णै पारा ॥
धरत दाँव शकुनी यह भाखै ❋ जीतौ जीति लेउ नृप राखै ॥
जीतौ राज पाट भँडारा ❋ यह गज रथ समेत परिवारा ॥
नहिं कछु भूपति धर्म विचारेउ ❋ चारिउ बन्धु अपनपौ हारेउ ॥
कह्योशकुनि अब जो कछु होई ❋ धरहु भुप हम जीते सोई ॥
कह नृप धरहु द्रौपदी रानी ❋ जीतब तेइ कही यह बानी ॥
यह कही शकुनी पांसा डारे ❋ जातेउ कुरू धर्मसुत हारे ॥

दो० भये दुखित भीषम विदुर, द्रोण हरे शिर नाय ।
गये सभा ते उठि तुरत, बाहूलीक अकुलाय ॥

शकुनी कर्ण बहुत हरषाना ❋ अतिशय सुख दुर्योधन माना ॥
कहेउ प्रातकामी ते बोली ❋ मैं जीति नृप नारि अमोली ॥
द्रपदसुत पांडव की रानी ❋ तावहँ मोहिं मिलावहु आनी ॥
कहेउ सँदेश धर्मसुत हारी ❋ अब तुम दासी भइउ हमारी ॥
मैं अभिमत्त रूप पर तोरे ❋ बैठहु आनि जंघ पर मोरे ॥
सकल नरेशआनि त्याहि कहेऊ ❋ पाण्डवनाथ क्रोध कर दहेऊ ॥
रिस करि कहेउ धीर धरि गाढ़ा ❋ एरे अधम दूरि रहु ठाढ़ा ॥
हम कौरवपति के रिपु सोहूं ❋ नीच संभारि न बोलत तोहूं ॥
तू शठ मोर प्रभाव न जाना ❋ बोलत वचनसहितअभिमाना ॥
यह सुनि भानुमती रिसवाई ❋ जानत नीच भृत्यु तुव आई ॥
सुनि अस बचन बहुतभयपावा ❋ सूत बहुरि कुरुपति पहँ आवा ॥
सुनत सँदेश बहुत दुख मानी ❋ नहिं आवत कौरवपति रानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० दुश्शासन ते बोलि कै, कहेउ भूप रिसवाय।
गहिकै केश घसीटिकै, तुम लै आवहु जाय॥
यहिकी बात सकल मैं जानी ❀ लावा सो न भीम भय मानी॥
सुनत बचन दुश्शासन आवा ❀ चलहु वेगि तोहिंभूपबोलावा॥
यहिबिधिबचन दुश्शासनकीन्हा ❀ सुनु यदुनाथ उत्तर हम दीन्हा॥
पूँछति सत्य दुशासन चौंको ❀ हारे प्रथम भूप की मोको॥
जो नृप प्रथम अपन पौहारा ❀ भये दास नहिं नाम हमारा॥
हारो होय प्रथम मोहिं राजा ❀ दासी होत न मोको लाजा॥
सुनत दुशासन अति रिसमानी ❀ गहिकै केश सभामहँ आनी॥
तब यदुनाथ मोहिं रिस लागी ❀ कहेउ छोड़ममकेश अभागी॥
रजस्वला मैं यक पट धारी ❀ मुंच मुंच रे शठ अपकारी॥
दो० सभा मध्य बैठे सबै, कौरवकुल सरदार।
लिये जातमोकहँनिलर्ज्ज,करतअधमअपकार॥
कस रिस करत पतिन तुहि हारी ❀ अब तुम दासी भई हमारी॥
चेरिनि करि कवन बड़ि लाजा ❀ चलु बोलत दुर्योधन राजा॥
मम गति देखि सकल रनिवासू ❀ करत विलाप ढरत दृगआँसू॥
सो सुधि गांधारी सुनि पाई ❀ करि विलाप पाछे उठि धाई॥
छूटे बीर न चीर सँभारा ❀ हा पुत्री कहि करत पुकारा॥
जब लागि कढ़ी भवनते रानी ❀ तबलग नीच सभा महँ आनी॥
भीषम विदुर नाइ शिर लीन्हा ❀ कृपअरुद्रोण शोचजियकीन्हा॥
शकुनी कर्ण बहुत सुख पावा ❀ दुर्योधन यहि भाँति सुनावा॥
दो० दुश्शासन ते तब कह्यो, दुर्योधन मुसक्याय।
वस्त्रहीन करि जंघ पर, बैठारो त्रिय आय॥
सुनि यहबचनशकुनिहँसिदीन्हा ❀ विकरण देखिक्रोधजियकीन्हा॥
उचित न तुहिं कौरवकुल राजा ❀ कहतबिलोकिबचनतजिलाजा॥
ज्येष्ठ बन्धु त्रिय मातु समाना ❀ बर्णत आगम निगम पुराना॥
नाथ मानि अब बिनय हमारी ❀ छांड़ि देहु अब द्रुपद कुमारी॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुम कीरति जग पूर्ण मयंका ❋ जानिलावहुनृपकुलहिक लंका ॥
जब विकर्ण यहि भाँति बखाना ❋ सुनत बचनतब कर्ण रिसाना ॥
अबहिं बस तोरि मत लायक ❋ जाहु भवन खलहुधनुसायक ॥
सुनि यह बचन मौन ह्वै रहेऊ ❋ दुश्शासन तेतव नृप कहेऊ ॥

दो० नग्नकरौतुमद्रौपदी, निज कर वसन उतारि ।
बैठारौ लै जंघ पर, यह रुचि बन्धु हमारि ॥

भीषम द्रोण रहे चुप साधी ❋ पकरेसि बसनअधम अपराधी ॥
लागेउ खैंचन चीर अभागी ❋ भई बिकल मैं रोवन लागी ॥
ममगति देखि पतिन दुखपावा ❋ अश्रुपात करिमाहिशिर नावा ॥
टूटी आश भयउ दुख भारी ❋ दीनबन्धु मैं तुम्हैं पुकारी ॥
हे यादवपति हे दामोदर ❋ हे माधव हे हलधर सोदर ॥
हे गोबिन्द गिरिधर बनवारी ❋ कृष्ण कृष्ण कहि शरणपुकारी ॥
हे मुरलीधर राधानायक ❋ वासुदेव अब होहु सहायक ॥
खैंचत वसन कुमारग गामी ❋ राखहु लाज दया करि स्वामी ॥
नाथ बसन महँ आपु समाने ❋ रही लाज कौरव खिसियाने ॥
खैंचत वस्त्र दुशासन हारा ❋ अम्बर के लागे अम्बारा ॥
यह चरित्र देखा सब काहू ❋ हाली धरा भयो दिगदाहू ॥
बिन घन आसमान घहराना ❋ कौरवसभा सबहिं भय माना ॥
भूप यज्ञशाला महँ आई ❋ शिवाशब्द कीन्हों अधिकाई ॥
बोलत रासभ श्वान कुमारा ❋ गगन दुष्ट पक्षीगण क्षारा ॥
खैंचत थकेउ दुशासन बासन ❋ बसन छोड़िबठ्योनिजआसन ॥
शीश नाय नृप बैठ उदासा ❋ चकित भये सब देखि तमासा ॥

दो० अम्बरहीनबिलोकिनृप,बोले सकेउ नहिं बैन ॥
रक्षा कीन्ह करि कृपा, तुम प्रभु पंकज नयन ।
तजी लाज अर्जुन नकुल, धर्मराज भय मानि ॥
सहदेव बोले कछुक, भीमसेन बल खानि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहत द्रौपदी करि करि रोसा ❋ मोहिंनकुन्तिहि सुतन भरोसा ॥
इन पतीन कछु पति न हमारी ❋ तुम रक्षा कीन्ही बनवारी ॥
पूंछेउ धृतराष्ट्रक संजय सों ❋ होत कहा काहिये सो मोसों ॥
अक्षहीन कछु परत न जानी ❋ सुनि संजयकछु कथा बखानी ॥
आप महीप सभा में ठाढ़े ❋ परम रोष पुत्रन पर बाढ़े ॥
दुश्शासनहिं दीन्ह दुरि आई ❋ करि प्रबोध मोहि निकट बोलाई ॥
कीन्ह कृती मैं नहिं कछु जाना ❋ मांगु मांगु पुत्री बरदाना ॥
बुद्धिचक्षु करि क्रोध अपारा ❋ बार बार पुत्रन धिक्कारा ॥
तेहि अवसर गांन्धारी आई ❋ देखिअनीति सुनत रिसिआई ॥
करेऊ बिलोकि कर्म्म भ्रम त्यागी ❋ परिहौनरक असाधु अभागी ॥

दो० धृताराष्ट्रक अति प्रीति ते, कह मांगु बरदान ।
दास भाव निज पांडुसुत, मैं माग्यो भगवान ॥

वाहन अस्त्र पतित के देहू ❋ विदाकरिय अब करि नृप नेहू ॥
कहो भूप दीन्हों मैं तोहीं ❋ प्राण समान सुता तव मोहीं ॥
बुद्धिहीन इन कीन्ह कुकुर्म्मा ❋ छांडिनि लोकलाज कुल धर्म्मा ॥
धर्म्मराइ दुर्य्योधन पोचन ❋ कहत सत्य मोरे द्वै लोचन ॥
यह सकोच जानौ जिय भोरे ❋ प्राण न अतिशय हे प्रियमोरे ॥
द्रुपदसुता मम वचन प्रमाना ❋ अबतुम मांगि लेहु वरदाना ॥
अब न मनोरथ पूजा आशा ❋ यहिअन्तर पुनिवचन प्रकाशा ॥
अभिमत मिलौ कृपा भव तोरे ❋ तव प्रसाद होइहि सब मोरे ॥
क्षत्रिय लेइ तीन वरदाना ❋ बिप्र चारि मांगै नहिं आना ॥
दुइ वश्यस्य शूद्रकहि एका ❋ मागैं अवर होई अविवेका ॥

दो० वाहन अस्त्र देवाइकै, विदा कीन्ह महिपाल ।
परसि चरणनिजचढिरथन, चलेभवनतोहिकाल

सौबल नाम शकुनि को भाई ❋ मिल्यो पंथ मह गयउ लेवाइ ॥
प्रीति समेत सभा बैठायहु ❋ पंसासर बहुरि मँगवायहु ॥
वर्जत रहेउ सकल वरिवारा ❋ मिटै न जो प्रभु होनहारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लीन्हो अक्ष वदी यह बाजू ❀ द्वादस बर्ष तजै सो राजू ॥
विपिन वास करि वर्ष बिताई ❀ करै न अन्न अशन फल खाई ॥
वर्ष दिवस करि पुर अज्ञाता ❀ करै निवास जानिनहिं जाता ॥
लीन्हे खोजे बहुरि बनजावै ❀ काल बिताई राज्य पुनि पावे ॥
रहेउ न कछुक मूप हरि ज्ञाना ❀ धरो दांव कहि बचन प्रमाना ॥
लीन्हों अक्ष शकुनि छलकारी ❀ दीन्हों डारि गये नृप हारी ॥

दो० होई उदास भूपालतब, बनकहँ कीन्ह पयान ।
कीन्ह प्रतिज्ञा क्रोधकरि, भीमसेन बलवान ॥

निन्दा कीन्ह अधम तैं मोरी ❀ आई मीचु दुशासन तोरी ॥
जेहि कर केश गहे अभिमानी ❀ गहे वसन नँगिआवन रानी ॥
सभा मांझ खल कानि न मानी ❀ सो उखारि डारौं तुव पानी ॥
बहुरि जंघ ठोंकि कुरुनाथा ❀ तोरो जंघ गदा गहि हाथा ॥
सुनहु सकल निज काल बिताई ❀ कृष्ण शपथ करिहौं सबआई ॥
सत्य वचन हरि सत्य हमारा ❀ करिहौं सब कौरव संहारा ॥
अर्जुन कही कर्ण के आगे ❀ हँस्यो मोहिं सबतेभ्रम त्यागे ॥
शरन मरिन जर्जर तनु तोरा ❀ करिहौ कृष्ण शपथ प्रणमोरा ॥
सहदेवहु शकुनी सेन बोले ❀ विषधर मनहुं विष रस खोले ॥

दो० द्यूत हराये नीचतोहिं, करि छलको अधिकार ।
होइहि मोरे करन ते, शकुनी मरण तुम्हार ॥

बधौं तोहि नहि अवधि बिताई ❀ मोहिं युधिष्ठिर भूप दोहाई ॥
येहि भांति नकुल बनवारी ❀ सभामध्य कीन्हों प्रण भारी ॥
सहदेव कह्यो शकुनि ते जैसे ❀ कह्यो शल्य ते राजा तैसे ॥
हँसेउ मोहि कछु कानि न मानी ❀ करि बहुबारकितव अभिमानी ॥
बीते काल न तोकहं मारौं ❀ तो नहि धनुष बाण कर धारौं ॥
मोरे उर उपजा अति रोसा ❀ प्रण कीन्हों करि नाथ भरोसा ॥
करि अस्नान रुधिर तुव धारा ❀ बांधौं तुव दुश्शासन बारा ॥
तुव बल प्रण ठानेउ यदुराई ❀ उचित होई तस करियउपाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पुनि हम पांच पांडुसुत रानी ❀ श्रीमुख भगिनी कहतबखानी ॥
तेइ तुम साक्षात भगवाना ❀ पांडव हैं अतिशय बलवाना ॥
तिनहिं आछत यह हाल हमारा ❀ यथा अनाथ नाथ विन दारा ॥
तेरह बर्ष न बांधे केशा ❀ फिरत अजहुं विधवा केवेशा ॥

दो० सुन्यो द्रौपदी के वचन, लोचन मोचत वारि ।
कहो प्रतिज्ञा कीन्ह सो, होइहि सत्य तुम्हारि ॥
सबलसिंह चौहान कहि, भक्तिवश्य भगवान ।
बैठारो पुनि द्रोपदी, करि बहु विधि सनमान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

पूंछेउ सुनि जनमेजय राई ❀ कथा विचित्र कहो मुनि गाई ॥
सुनत श्रवण नहिं तृप्त हमारा ❀ कहिये नाथ सहित विस्तारा ॥
भयो प्रसन्न सुनत नृप बानी ❀ लागे कहन कथा मुनिज्ञानी ॥
तेहि अवसर आये सब राजा ❀ कृष्ण सहि तजहँभूपतिराजा ॥
नाइ नाइ शिर हारहि जोहारा ❀ बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा ॥
ताही समय द्रुपद नृप आये ❀ सुनतसहित हरिपद शिरनाये ॥
देखि नृपहिं वसुदेव कुमारा ❀ मिले बहुरि आसन बैठारा ॥
परसे चरण विराट भुवाला ❀ सनमाने तब दीन दयाला ॥
कह्यो भूप सुनिये यदुराई ❀ अब करिये प्रभु कौन उपाई ॥
हे हरि यतन बतावहु सोई ❀ जामहं मोहि परमहित होई ॥
मोसम को जग और सभागी ❀ अतिदुखसह्यो बन्धुजेहिलागी ॥
मोसम दुखी सुनहु भगवाना ❀ भयो न भूपर भूपति आना ॥
जान्यो कृष्ण भूप दुखपावा ❀ कहि सुरराज कथा समुझावा ॥

दो० बृत्रासुर को बधन करि, भये मुदित सुरराज ।
घेऱ्यो हत्या आनि तव, छुट्यो राज समाज ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विप्र वंश ताको अवतारा ❋ ताते पातक लग्यो भुवारा ॥
भाग्यो अमर नाथ दुख पाई ❋ कमलनाल महं रह्यो छिपाई ॥
फिरि शतयज्ञ नहुष महिपाला ❋ लह्यो इन्द्रपुर सुनहु भुवाला ॥
सेवहिं सब सुर सहित समाजा ❋ सिंहासन बैठे नहु राजा ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा ❋ सेवहिं मनुज देव मुनि सर्वा ॥
रम्भादिक सुर तिय सब आवैं ❋ करैं गान अरु नृत्य दिखावैं ॥
आवैं सुर तिय करि शृङ्गारा ❋ रमित रहैं नृप करत विहारा ॥

दो० याहि विधि राज समाज ते, बीति गये कछुकाल ।
अति प्रमोद ते नृप सुनहु, कथा कहौं भूपाल ॥

सो सुधि पाइ सभीत परानी ❋ गुरु गृह गई भागि इन्द्रानी ॥
मार्ग जीव सह बिपति सुनाई ❋ मैं प्रभु चरण शरण अब आई ॥
बहु प्रकार मुनि धीरज दीन्हा ❋ कीन्ही कृपाअभय पुनिकीन्हा ॥
तब सुरगण गुरु सकल बुलाये ❋ बांटि लेहु अघ कहिसमुझाये ॥
सब पर छिटिकि जाइ सब पापू ❋ मिटै सुरेश कर परितापू ॥
कीन्हों सब मिलि अंगीकारा ❋ सब पर गयो पाप को भारा ॥
ऊसर भयो धरा जो लयऊ ❋ प्रथज्वाल हुत भुक महंभयऊ ॥
लीन्ह्यो वरुण भई जल काई ❋ यहि प्रकार सब सुर समुदाई ॥

दो० भयो पाप विन पाकरी, पूरि रही सुख भूरि ।
पठये ढूंढन पायकहि, गयो विलोकत दूरि ॥

पायक ढूंढि फिरे सब देशा ❋ मिलेइन्द्र नहि भयो अँदेशा ॥
सर्व कथा सुरगुरुहि सुनाई ❋ मिले कतहुं तब शची पठाई ॥
ढूंढत फिरत विकल इन्द्रानी ❋ मगमहं मिले देवऋषि आनी ॥
कीन्ह दया तब दीन्ह बताई ❋ कमलनाल महं रहयो छिपाई ।
इन्द्र भाग गिरि पर भय माने ❋ मानसरोवर इन्द्र छिपाने ॥
सुनि नारद के बचन प्रमाना ❋ गई शची तहं रोदन ठाना ॥
कीन्ह बिलाप ताप तनु धारी ❋ बार बार कहि नाम पुकारी ॥
सुनि सुरेश मन दुख अधिकाई ❋ निकरि कमल ते दान देखाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुम पर गुरु कीन्हों अनुरागा ❋ दीन्ह पाप करि सुरन विभागा ॥
रह्यो न तब शिर अघ लवलेशा ❋ बोले सुरगुरु चलिय सुरेशा ॥
दो०—मो कहँ पठयो देवगुरु, लावहु बेगि बुलाइ ।
वचन मानि फुर गुरु वचन, गये इन्द्र हर्षाइ ॥
गुरुहि प्रणाम कीन्ह सुरराई ❋ भे प्रसन्न मन आशिष पाई ॥
बैठि इन्द्र पद नहुष नरेशा ❋ मिलै राज तब मिटै अँदेशा ॥
मिलि राजा कहँ गुरु सनमाने ❋ दिवस पंचदश रहे छिपाने ॥
धर्म हीन करि नहुषहि राजा ❋ तब पावहु तुम राज समाजा ॥
याहि प्रकार सुरपति समुझाये ❋ करि प्रबोध निज भवन छिपाये ॥
कह्यो कृष्ण अब सुनहु भुवाला ❋ भयो काम वश नहु महिपाला ॥
पठये दूत बुलावहु जाई ❋ बड़ अभिमान शचीनहिं आई ॥
कह्यो जाइ नृप बोल्यो रानी ❋ सुनत उतर दीन्हों इन्द्रानी ॥
दो०—जब चाहत सुरराज मोहिं, वाहन चढत नवीन ।
जाइ लवाइ सो मानते, होइ मोर आधीन ॥
तेहि गद्दी नहु आइ विराजा ❋ जाइँ लवाइ जहाँ सुरराजा ॥
दूत जाय यह वचन उचारा ❋ नहु नरेश मन करत बिचारा ॥
कहि नवीन चढ़ियान सिधावहु ❋ शची बुलाइ भवन कहं लावहु ॥
तब देवन शारदा बुलाई ❋ बैठि जीभ मति भूप भ्रमाई ॥
शिबिका पकरि बिप्र गण लाये ❋ ह्वै अरूढ़ तब भूप सिधाये ॥
द्विजन शाप दीन्हों करि शोका ❋ परै धरणि खलतजि सुरलोका ॥
पुण्य क्षीण होइ नहु महिपाला ❋ पर्‍यो धरापर सो ततकाला ॥
अमरनाथ निज पायउ राजा ❋ भयउ वइस सब साजसमाजा ॥
तैसे तुम पैहौ महिपाला ❋ धरहु धीर बीते कछु काला ॥
दो० सबलसिंह धीरज दियो, करि प्रबोध महिपाल ।
लीन्हें बोलि नरेश तब, मंत्र हेत तिहिकाल ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकादशोऽध्याय ॥ ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहेउ भूप अब सकल नरेशा ❀ निजनिजमतकीजिय उपदेशा ॥
नृप विराट कह यह मत मोरा ❀ जब लग जिये शत्रु जगतोरा ॥
मिलिहि राज्य नहिं कोटि उपाई ❀ करिय भूप जस तुमहिं सोहाई ॥
सुनत बचन कह द्रुपद कुमारा ❀ सुनहुसकल मिलिमंत्र हमारा ॥
पहुँचत दूत तुरत अब कोई ❀ समुझावै कुरुपति नृप सोई ॥
सुनत बचन हरिके मन भावा ❀ द्रुपद पुरोहित बोलि पठावा ॥
अब तुम दुर्योधन पहँ जाई ❀ नाना भांति कहेउ समुझाई ॥
करि उपाय कीजै बुधि सोई ❀ जामहँ विप्र भूप हित होई ॥
पृथक्पृथक् कहि सबन सँदेशा ❀ बिदा कीन्ह हरिकरि उपदेशा ॥

दो०अति प्रसन्न द्विजराज मन, है शिबिका असवार ।
नगर हस्तिनापुर तबै, जात न लागी वार ॥

पहुँचे बिप्र भूप के द्वारे ❀ बोले बचन बोलि प्रतिहारे ॥
धर्मराज हरि मोहिं पठायो ❀ कहन सँदेश भूप ते आयो ॥
वेतपाणि सुनि जाई जनावा ❀ बुद्धिचक्षु तब बोलि पठावा ॥
गयो सभा महँ द्रुपद पुरोधा ❀ त्रिकालज्ञ पूरण बुधि बोधो ॥
कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा ❀ बैठारो निज बोलि समीपा ॥
आशिर्बाद विप्र तब दीन्हा ❀ नृपसन्मानविविधिविधिकीन्हा ॥
द्रोण कर्ण सब बैठि समाजा ❀ भीषम बाह्लीक महराजा ॥
कृप अरु शल्य जयद्रथ भूपा ❀ बैठे जहँ कौरवकुल दीपा ॥
धृतराष्ट्रक नन्दन सो भाई ❀ बैठे सभा सुवेष बनाई ॥
सोमदत्त नृप बैठ सुजाना ❀ द्रोणपुत्र गुण ज्ञान निधाना ॥

दो० भूरिश्रवा कलिंङ्ग अरु, मकरध्वजौ महान ।
बैठि सुबाल कुमार तहँ, अरु उलूक बलवान ॥

विप्र सुनाइ कहा सब आगे ❀ कहन सँदेश भूपते लागे ॥
मोहिं पठायो धर्म नरेशा ❀ चितदै सुनहु महीप सँदेशा ॥
निकट बुलाइ धर्मसुत हमको ❀ प्रथम कहेउ अभिवादनतुमको ॥
कहेउ बहोरि कृपा नृप कीजै ❀ बीती अवधि राज्य अब दीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

किङ्कर जानि करिये अब दाया ❀ हम तुम्हरे छाँड़ौ मति माया ॥
तेरह वर्ष सहे दुख नाना ❀ सोहरिकिहेऊविपतिअवसाना ॥
दुर्योधन कीन्ही अनरीती ❀ तुम्हरी कृपा विपति अबबीती ॥
मिटै कलह सो करिय ऊपाई ❀ यहि विधि कही युधिष्ठिरराई ॥
चलती बार पार्थ मोहिं जाना ❀ कहेऊ प्रणाम नरेश सुजना ॥

दो० मोते कहेउ सँदेश जो, सो सुनिये दै कान ।
मेटो कुलको कलह अब, तुम्हरे सब बुधिमान ॥

कह्यो भीम मोहिं चलती बारा ❀ कहौं जो आयसु होइ तुम्हारा ॥
कही बात जो राखौं गोई ❀ ताते पाप अधिकई होई ॥
कहे न होइ दूत शिर दोषा ❀ ताते सुनिय भूप तजि रोषा ॥
हम तुम्हार अपराध न कीन्हा ❀ करिछल तुमदारुणदुखदीन्हा ॥
बीते कछु दिन तुम फल पैहौ ❀ समुझतअबनहिंमनपछितैहौ ॥
लैकै गदा युद्ध जब करिहौं ❀ सौ बांधव दुर्योधन मरिहौं ॥
कटै बन्धु जब विधवा वेशा ❀ तब करिहौ चित चेत नरेशा ॥
करहुँ निपात सेन तुव काटी ❀ देहु मिलाय मांस अरु माटी ॥
रक्त नदी तब बहहिं महाना ❀ कर्ण आदि कटि हैं भटनाना ॥
उठैं कबन्ध गिद्ध फल खैहैं ❀ तब नरेश आधो हम पैहैं ॥

दो० अबतो चेतहु भूप तुम, सुनिकै वचन हमार ।
समुझावो दुर्योधनहिं, बचन सबै परिवार ॥

नकुल सँदेस सुनहु दै काना ❀ बुद्धिचक्षु तुम अति सज्ञाना ॥
अंश हमार समुझि नृप दीजे ❀ अपने जियत कलंक न लीजै ॥
जो न देऊ नृप अंश हमारा ❀ होइहि युद्ध न लागी बारा ॥
चलती बार भूप सहदेवा ❀ करि प्रणाम विनयी बहुसेवा ॥
छाँड़ो पिता हमारो मोहा ❀ करि बहु दुर्योधन पर छोहा ॥
अब यह समुझि परी मनमाहीं ❀ उनके दुर्योधन हम नाहीं ॥
मरे बालपन पांडु न देखे ❀ तुम पितु हते हमारे लेखे ॥
तुम्हरे ईछल हम दुख पावा ❀ करि छल शकुनी देश छुड़ावा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० परी विपति वनवन फिरे, सहे अशेष कलेश ।
समुझावहु दुर्योधनहिं, मेटहु कलह नरेश ॥

मोहिं बोले वसुदेव कुमारा ❀ तुमते कहेउ नरेश जोहारा ॥
जो कछु दीनबंधु भगवाना ❀ कहेउ सँदेश सुनिय दै काना ॥
तुमते काह कहिय बहुतेरा ❀ दीजै अंश युधिष्ठिर केरा ॥
पृथमहिं बहु प्रकार समुझावा ❀ दुर्योधन के मनहिं न आवा ॥
मानत सो न बहुत अभिमाना ❀ कालविवश सब ज्ञान भुलाना ॥
तज्यो बिवेक पापा प्रिय लागा ❀ उपज्यो हंसवंस जिमि कागा ॥
लीन्हे अयश सकल यश खोई ❀ बाँस वंश महँ भयो घमोई ॥
कौरव कुल यश पूर्ण मयंका ❀ भा दुर्योधन तिनहिं कलंका ॥

दो० समुझावत तुम अबहिं नहीं, सब जानत सज्ञान ।
बहुरि कह्यो संदेश सब सुनहु भूप दै कान ।

चलत बार कह द्रूपद सँदेशा ❀ सुनहु कृपा करि कहत नरेशा ॥
अपने जियतकलंक न लावहु ❀ कलह गोत्र को भुप बचावहु ॥
धृष्टद्युमन यमसुत अरिखण्डी ❀ अब लगुरखोवर्जि सिखण्डी ॥
कीजै संधि मिटै उतपाता ❀ बढ़ै भूप का कीरति दाता ॥
मैं सिख देत जानि संबंधी ❀ चक्षुहीन कछु बुद्धि न अंधी ॥
वेगि उपाइ करहु नृप सोई ❀ संधि होइ जेहि कलह न होई ॥
दुर्योधन अरु पांडुकुमारा ❀ जानहु हेतु समान हमारा ॥
हम चाहत है तुम्हरे हितकी ❀ करहुविचार होई जो नीकी ॥

दो० चलत विलाप बुलाय मोहिं, कह्यो विराट संदेश ।
सावधान होइ लाइमन, सो अब सुनहु नरेश ॥

दुर्योधन कीन्हों अपकारा ❀ धर्मराज कहँ देश निकारा ॥
तुम्हरे योग न बात अलीका ❀ देखेउ समुझि भरतकुलटीका ॥
करहु होई जो नीक बिचारा ❀ यह नृप कहेउ विराट भुवारा ॥
विप्र बचन सुनि भा रदाहू ❀ विहँसि बचन बोला नरनाहू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहुत विप्र कत वाद बढ़ावहु ❀ पांडुसुतनकी कुशल सुनावहु ॥
प्राण समान परम प्रिय जीके ❀ हैं सब भ्रात जान मम नीके ॥
दुर्योधन उनते छल कीन्हा ❀ द्यूत खेलाइ राज्य हरि लीन्हा ॥
करि कुबुद्धि यहि दीन निकारी ❀ बनवासिसहेउ विपतिअतिभारी ॥
द्रुपदसुता अतिशय सुकुमारी ❀ देखे रूप न इन्दु तमारी ॥
बन बसि फिरि लाज सबत्यागी ❀ कीन कुमाते ममपुत्र अभागी ॥

दो० अबहूं तजत कुचाल नहिं, कालविवशकुरुनाथ ।
अक्षहीन अरु वृद्धतन, मैं जनु भयो अनाथ ॥

सुनत विप्र नहिं मोर सिखावन ❀ भयो पुलस्त्य वंशजिमि रावन ॥
जैसे उग्रसेन सुत कंसू ❀ प्रकट्यो कालनेमि कर अंसू ॥
पितहि पकरि कारागृह डारे ❀ तैसे यह कछु वश न हमारे ॥
जबते धर्मराज बन गयऊ ❀ तबते हमहिं दुसह दुख भयऊ ॥
उनके विरह दिवस अरु राती ❀ तलफत रहत जरत नितछाती ॥
दुर्योधनहिं बहुत समुझावत ❀ पै वाके कछु मनहिं न आवत ॥
अबहूं बहुत भांति समुझैहौं ❀ अपने चलत मिलाप करैहौं ॥
अस कहि बुद्धिचक्षु समुझाये ❀ द्विज प्रबोध अंतःपुर आये ॥
संजय संग पाणि पकराई ❀ भूप भवन कहँ गयउ लवाई ॥

दो० बैठारे सुनि सेज पर, गंधारी दै पान ।
सबलसिंह चौहानकहि, करत विविधसन्मान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

भीषम और हरिद्विज ह्यऊ ❀ कह्यो प्रणाम धर्मसुत कह्यऊ ॥
अब तुमते कछु कह्यउ संदेसा ❀ सुनहु पितामह तजहु अंदेसा ॥
कुरुनन्दन कीन्हों अपकारा ❀ सुनि सकुनीशिखदेशनिकारा ॥
रहे विपिन बसि जाय उदासी ❀ तुम्हरी कृपा विपति सब नासी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मुये पांडु हम सबते बालक ❋ तब तुमहीं कीन्हों प्रतिपालक ॥
रहत सदा तुव चख अनुकूले ❋ भलेहि नाथ हमरी सुधि भूले ॥
हैं हम नाथ कृपा अभिलाषी ❋ अनुचर जानि नफेरियआँखी ॥
सुनत वचन छाये जल कोये ❋ करिसुधिविकल पिता महसोये ॥

दो० पुलकि गात गदगदगिरा, भरि आये जल नैन ।
हैं नीके सब पांडुसुत, तब बोलेउ द्विज बैन ॥

तुम्हरी कृपा सहित परिवारा ❋ कुशलअबहिं लगपांडु कुमारा ॥
सुनि भीषम यह बचन उचारा ❋ उनहीं कुल राखै करतारा ॥
धर्मराज निज राजहि पैहैं ❋ निश्चय सब कौरव मिटिजैहैं ॥
दुर्योधनहिं गर्व अति भारी ❋ धर्म नेरश्च धर्मव्रत धारी ॥
सदा विश्वम्भर गर्व प्रहारी ❋ धर्म क्षेमकर श्रीबनवारी ॥
पांडव क्षेम मानु विश्वासू ❋ द्विज जानहु कौरवकुलनासू ॥
यहि विधि वचन विप्रते खोले ❋ गंगासुत कुरुपति से बोले ॥
मानि बचन मम कलह बहावहु ❋ करहुसंधि सबमिलिसुखपावहु ॥
सुने वचन लागे जिमि सायक ❋ ह्वै सक्रोध बोले कुरुनायक ॥
तुमहिं न उचित पितामह ऐसी ❋ कही सभा सत बात अनैसी ॥

दो० तुमहिंत्यागिमनवचनकहि, हमनहिंजानैऔर ।
उचित न कटुवाणी कहत, कौरवकुल शिरमौर ॥

अस कहि दुर्योधन दुख माना ❋ ऊठि अपने गृह कीन पयाना ॥
अपने भवन पितामह आयो ❋ विप्र द्रोण ते वचन सुनायो ॥
कहे प्रणाम तुमहिं गुरु भुपा ❋ कीन विनयकछुमातिअनुरूपा ॥
चतुर्वेद धनुवेद निधाना ❋ आचारज नहि तुमहिं समाना ॥
हौ समर्थ प्रभु सबहि प्रहकारा ❋ शाप देन अरु बाण प्रहारा ॥
देव अदेव जगत भय मानत ❋ तव तप तेजसकल उरआनत ॥
शशि सम कोटिन दिशनप्रकासा ❋ कुरुपाण्डव तुम्हरे सब दासा ॥
सब प्रकार जानत बुधि बोधन ❋ तुमहीं समुझावहु दुर्योधन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० तपबल बुधिबल अस्त्रबल, विद्याबल बलवाह ।
कर्म धर्म अरु ब्रह्मबल. विदित जगतसबकाह ॥
तुव बलको भरोस उर मोरे ❋ की हरि और न जानत भोरे ॥
यह संदेस अरु पुनि पद वंदन ❋ तुमते कहेउ पांडु के नंदन ॥
सुनत वचन भे द्रोण सशोके ❋ कमल नयन जलरहत नरोके ॥
पुलकित गात कृपा अधिकाई ❋ विविध भांति पूंछी कुशलाई ॥
शिष्य वर्ग हैं सकल हमारे ❋ द्विज द्रौणिहुंते अधिक पियारे ॥
धर्म शील निधि पांचो भाई ❋ मोरे प्राणन ते अधिकाई ॥
ताते उनकी कुशल बतावहु ❋ मोरे जियकी ताप बुतावहु ॥
कह द्विज हैं पाडव सब नीके ❋ नाथ तुम्हार दास जगतीके ॥

दो० दुर्योधन काढ़ेउ बिपिन, देखरायो अति त्रास ।
रहत पांडुसुत कुशल हैं, तव चरणन की आस ॥
मनसा वाचा कर्मणा, नाथ तुम्हारो दास ।
मानत ज्योंहरिको तुमहिं, धर्म सहित विश्वास ॥

कहि यह बचन मौन द्विज भयऊ ❋ उठि गुरु द्रोण भवन ते गयऊ ॥
विप्र संग लै अश्वत्थामा ❋ करवायो गृह निज बिश्रामा ॥
बहु विधि खान पान करवाई ❋ शयन हेतु शय्या बिछवाई ॥
कीन्ह द्रोणसुत प्रीति घनेरी ❋ पूंछी कुशल पाडवन केरी ॥
अर्जुन भीम नकुल हैं नीके ❋ प्राण अधार बंधु मम हीके ॥
अभिमन्यु सहित सकल परिवारा ❋ अरु औरो द्रौपदी कुमारा ॥
सबकी मोकहं कुशल बतावहु ❋ भिन्नभिन्न कहि वरणि सुनावहु ॥
उन हमको कछु कहेउ संदेशा ❋ सोद्विजकहनृप सहितकलेशा ॥

दो० बडी बिपति तेरह बरष, सही भूप कुंतेव ।
सो बीती हरिकी कृपा, हैं नीके सहदेव ॥

यह कहि द्रोणि नयनजल छाये ❋ गदगद कंठ वचन नहिं आये ॥
देखी बहुत प्रीति अधिकाई ❋ कुशल प्रश्न कहि विप्र सुनाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पांडव सकल सहित सुत दारा ❋ कुशल आजुलग सब परिवारा ॥
करहु यत्न कछु कहत पुकारे ❋ यथा कुशल अब होततुम्हारे ॥
अबते तुम भूपहिं समुझावहु ❋ कलह मेटिकै संधि करावहु ॥
कहेउ प्रणाम तुमहिं कुतेंवा ❋ सुनत सँदेश कहौं महिदेवा ॥
हम जानत जिमि अर्जुन भीमा ❋ तैसे तुमहिं आजु संग जीमा ॥
इन भ्रातन वर विपति बंटाई ❋ गुरु बांधव तुम सुधिविसराइ ॥
जानत सो कौरव जो कीन्हा ❋ तुमहिंनउचितकृपातजिदीन्हा ॥
कहेउ द्रोणसुत द्विज सुनिलीजे ❋ अपने मन विचार तुम कीजे ॥

दो० खान पान सन्मान दै, सब प्रकार कुरुनाथ ।
दास भाव मति रहत, करिलीन्होंनिजहाथ ॥

चित महं उन सन प्रीति घनेरी ❋ परबस भयो लागि नहिं मेरी ॥
अनभल चहत न पांडव केरा ❋ कौरव बस मन फिरत नफेरा ॥
अस कहि शयन करन द्वउलागे ❋ अब नृप सुनहुचरित जसआगे ॥
यहां भुर मन शोच अपारा ❋ कह संजय ते बारहिं बारा ॥
देखि परत मोहिं बात न नीका ❋ दुर्योधन की चली अलीका ॥
सुनत श्रवण नहिं कछुउतपाती ❋ परि न नींद शोकबस राती ॥
भीम स्वभाव विदित सबकाहू ❋ असकहिविकलभयो नरनाहू ॥
तब नृप कहा सुनहु गन्धारी ❋ समझावहु निज सुत अपकारी ॥
सुनि संजय पुनि तुरत पठाये ❋ दुर्योधनहिं बोलि लै आये ॥
रावण कुम्भकर्ण जिन मारा ❋ सुर विजयी जानत संसारा ॥
हय हयराज प्रचारि प्रचारी ❋ काटेउ सहसबाहु बलभारी ॥

दो० केशी कंस अघा बका, सुष्टिक औ चाणूर ।
धेनुक हति बृष पूतना, तृणावर्त्त खलकूर ॥

मार्‍यो बालि वस्तसुर नीचा ❋ सुभट ताडुका अरु मारीचा ॥
खरदूषण त्रिशिरादि कबंधा ❋ विपिन विराध असुरकृत बंधा ॥
शंखचूड़ भस्मासुर मारा ❋ राख्यो शम्भु विदित संसारा ॥
ते पाण्डव के भये सहायक ❋ जीति को सकैतातरघुनायक ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तिनते बैर किये भल नाहीं ❋ संधिनीकि समुझौ मनमाहीं ॥
पुनि तुम्हरे हैं बन्धु नजीकी ❋ दीजै अंश बात यह नीकी ॥
तुव पितु के लघु बन्धु भुवारा ❋ भये पाराडु जानत संसारा ॥
धर्मराज कछु पाप न कीन्हा ❋ छलकरि राज तात तुमलीन्हा
दो० उननहिंकीन्ह बिरोध सुत, नाकछुलियोतुम्हार ॥
छलकरि अक्ष खेलाई कै, तैं कीन्हों अपकार ॥
अजहूं कहा हमारो कीजै ❋ मिटै बिरोध अंश दै दीजै ॥
अति हित गन्धारी की बानी ❋ सुनी न श्रवणनेकु अभिमानी ॥
धृतराष्ट्रक बहुबिधि समुझावा ❋ कालबिबशकछुमननहिं आवा ॥
मातु पिता का बचन न माना ❋ जस भावी तस उपज्यो ज्ञाना ॥
भावी बश जानहु सब लोगा ❋ भावी बश न होइ सब योगा ॥
भावी सुमति कुमति उपराजै ❋ हानि लाभ अरु विजय पराजै ॥
कह वैशम्पायन सुनु राजा ❋ सुनि कुरुनाथ क्रोध उपराजा ॥
हरि कहि परशुराम जग जाये ❋ जीति पितामह बनहिं पठाये ॥
दानव देव मनुज बल भारी ❋ भीष्म पद कोऊ नहिं टारी ॥
जीति सकल रण बन्धु विवाही ❋ बानर ऋक्ष बिदित सबकाही ॥
गुरु द्रोण दशहूं दिशि जीते ❋ सुर अरु असुर जासु भयभीते ॥
जो हठि कर्ण करै संग्रामा ❋ करिनहिंसकैं विजयघनश्यामा ॥
दो० कह्यो मातु से जोरिकर, चुप करि रहु अरगाइ ॥
तिलभरिदेउंनजियत महि, सकैको टेक छुड़ाइ ॥
असकहि अपने भवन भुवाला ❋ जात भयो राजा ततकाला ॥
होतहि प्रात सभामहँ आयो ❋ बुद्धिचक्षु द्विज बोलि पठायो ॥
स्वर्ण पञ्चशत दीन्हों दाना ❋ कीन्ह दान नृप करि सन्माना ॥
आजु काल्हि महं संजय ऐहैं ❋ सत्य सँदेश यहां को लैहैं ॥
करि बहु यतन सुतन समुझाई ❋ देहौं तात मिलाय कराई ॥
कहि द्विजते यहि भांति सँदेशा ❋ कीन्ह बिदा यहि भांति नरेशा ॥
कहत प्रात संजय को आवन ❋ तिनके हांथ सँदेश पठावन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० धृतराष्ट्रक आशिक कह्यो, लै पाण्डव कोनाम।
नृपमण्डलीजोहारकरि, हरिको कह्यो प्रणाम॥

यहि प्रकार कहि द्विजवर बाणी ❋ भूपसहितसुनि सारंगपाणी॥
गूढ़ गिरा समुझत मनमाहीं ❋ और बिचार कहि कछुनाहीं॥
उन सगरी संजय पर राखी ❋ हरिते कहत धर्मसुत भाखी॥
तबहरि कहत चुपो दिन चारी ❋ आवैजो न करिय पुनि रारी॥
बुद्धिवान पांचाल पुरोहित ❋ इनते को चाहत तुम्हरो हित॥
येउ गये न कछू करि आये ❋ कारज रह्यो संदेश न लाये॥
इनते को जाइ अब ज्ञानी ❋ बिहँसिविहँसिकहसारंगपानी॥
सुनत बचन नृप द्रुपद लजाने ❋ करी कृपा श्रीहरि सनमाने॥

दो० हरिपदपंकजनाइशिर, निजनिजशिबिर भुवाल।
गये सकल प्रमुदित अधिक, हियेराखिगोपाल॥

इहां प्रात मतिदृग जब जागे ❋ संजय बोलिकहन अस लागे॥
धर्मराज हरि पहँ तुम जाई ❋ कह्योबचननिजमतिनिपुणाई॥
कलह घटै ज्याहि सम्मति होई ❋ बुद्धि विचारि कह्यो तुम सोई॥
मम दिशि ते पूछेउ कुशलाता ❋ प्रीति समेत मनोहर बाता॥
बुद्धिमान कह तुमहि सिखैये ❋ करहु गहरु जनितुम अबजैये॥
सुनि संजय नायो पद शीशा ❋ बिदाकीन्हनृप दीन्हअशीशा॥
रथ अरूढ़ ह्वै तुरत सिधाये ❋ प्रमुदित धर्मराज पहं आये॥
देखि पाण्डुसुत सैन महाना ❋ सुरपति सरिस अचंभो माना॥
घण्टानाद मनुज रव नाना ❋ होत कुलाहल सिंधु समाना॥
पँवरि द्वार संजय चलि आये ❋ शयन किये हरि अर्जुन पाये॥

दो० द्वारपाल भीतर भवन, देखि सरोरुह नयन।
कनकपलँगअर्जुनसहित, करतकृपानिधिशयन॥

दोऊ कर पुनि दोऊ पानी ❋ चापत चरण द्रौपदी रानी॥
संजय को आगमन सुनावा ❋ द्रुपदसुता हँसि बलि पठावा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनि सँदेश अंतःपुर आये ❀ प्रीति सहितपुनिपदशिरनाये ॥
हरुये चरण धरहु कह रानी ❀ परैं जागि जनि सारंगपानी ॥
चाप पाय प्रभु नयन उनींदे ❀ अर्जुन सहित उठे रवि नींदे ॥
जीव बंधु को रंग लजाये ❀ दृग बिलोकि संजय भय पाये ॥
उग्ररूप देखत घनश्यामा ❀ कंपित तनु पुनि करत प्रणामा ॥
संजय दिशि देखा जदुबीरा ❀ बोले घन इव गिरा गँभीरा ॥

दो० कह संजय दुर्योधनहिं, समुझावत तुम नाहिं ।
मारोचहतसबमिलिगठहि,समुझिपरीमनमाहीं॥

धर्मराज को देत न हींसा ❀ अपने बिभव करत बल बीसा ॥
मस्तक काटि सहित परिवारा ❀ लेहौं अंश बांटि दुइ फारा ॥
भुलो अधम कर्ण बल पाई ❀ वाही पापी सब कुमति सिखाई ॥
सकै न जीति पार्थ के आगे ❀ मरिहैं नीच एक शर लागे ॥
जो कदापि अर्जुन कदराई ❀ हनहुं चक्र गहि शंभु दुहाई ॥
सुनत बचन संजय भय माना ❀ करि प्रबोध अर्जुन सन्माना ॥
हे यदुनाथ कृपा अब कीजै ❀ अभयदान संजय कहँ दीजै ॥
पारथ बचन मानि भगवाना ❀ निज सेवक संजय कहं जाना ॥
प्रीति समेत लीन्ह बैठारी ❀ बोला मधुर गिरा बनवारी ॥

दो० हरि अर्जुन संजय सहित, चले युधिष्ठिर पास ।
सबलसिंह हितसों करत मग मे बागविलास ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

कह मुनि जनमेजय सुनिलीजै ❀ कथा अमिय सम पानहिकीजै ॥
धर्म सभा हरि पारथ आये ❀ संजय सहित मोदमन छाये ॥
धर्मराज आगे चलि लीन्हा ❀ हरिहि समेत दण्डवत कीन्हा ॥
अर्जुन धर्मराज पद बन्दे ❀ बैठि सभा हरिसहित अनन्दे ॥
तेहि अवसर संजय तहँ आये ❀ करि बिनती बहु पद शिरनाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धर्मराज निज निकट बुलाई ❀ बूझत कुशल सनेह बढाई ॥
कुशल प्रश्न कहि कहत सँदेशा ❀ ज्यहि प्रकार कहिदीन नरेशा ॥
मानत अबहिं नाहिं दुर्योधन ❀ समुझैहौं करिकै बुधिबोधन ॥
तुम सुत चुपकि रहौ दिनचारी ❀ होई मन भावती तुम्हारी ॥
होइ न कलह मिलाप कराई ❀ देव तात तुव अंश दिवाई ॥
आशिष कह्यो कुशल पुनिबूझी ❀ है नृपकी रति तुमहि अबूझी ॥
जबते तुम कीन्हों बनवासा ❀ उर न चैन नृप रहत उदासा ॥
नित प्रति दुर्योधन की निन्दा ❀ करत रहत यह है मतिमन्दा ॥
तुम पै कृपा रहत अधिकाई ❀ चलतकहेउ निजनिकट बुलाई ॥
आवहुतात देखि निज आँखिन ❀ मातन मैं न औरही साखिन ॥

दो० भ्रात जात मम प्राण सम, जानत सब संसार ।
सुनि शकुनीसिखनीचयहि, काढ़ाबिनअपकार ॥
दुर्योधन मति परिहरी, बैठि अलीकन बीच ।
दृगाविहीन मैं जरठतनु, मानत बात न नीच ॥

यदपि न मानत वश कुटिलाई ❀ करवैहों मिलाप बरिआई ॥
गन्धारी आशिष कहि दीन्हा ❀ कहिहौंसुतनकृपापुनि कीन्हा ॥
बिन कलंक नहिं दोष तुम्हारा ❀ करिकुबुद्धिवहिबिपिन निकारा ॥
तुम पर कृपा करत बनवारी ❀ सकै तात की बात बिगारी ॥
सब विधि सुत तुम्हार कल्याना ❀ करि हैं कृपासिन्धु भगवाना ॥
गान्धारी आशिष सुनि काना ❀ कीन्ह प्रणाम भूप सुख माना ॥
पतिव्रता पुनि मातु हमारी ❀ गान्धारी जानत श्रुतिचारी ॥
आशिष दीन्ह कृपा करि भारी ❀ सब प्रकार विधिबात सुधारी ॥

दो० गँधारी आशिष दियो, विविध भांति सनमान ।
सुनु संजय कह धर्मसुत, हो हमार कल्यान ॥

पूंछ्यो भीमसेन संजय से ❀ कहेउ सँदेश पिता कछुहमसे ॥
पाप बुद्धि देखत को सीधे ❀ सुतन नेह ममता महँ बीधे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विधिवत नृप जानत सब साधू ❋ लीजै मौन न कछु अपराधू ॥
तैसे मौन रहत दिन राती ❋ है पुनि अंध सकल कुलघाती ॥
सिखै कुचालि बचन मृदुभाखी ❋ पापमूल विधि दीन्ह न आंखी ॥
है अति क्रूर सुभाव प्रपंची ❋ भुलवत हमहिं भूप अबबंची ॥
आंधर आपु अक्ष बिन जाना ❋ बहु पापी अब सकल जहाना ॥
क्रूर वचन सुनि भूपति लरजे ❋ रहेउ चुपाइ भीम कहं बरजे ॥
हीन न कहिय बड़ेन कहं भीमा ❋ पातक बढ़त बिचारहु जीमा ॥
पिता समान पिता को भाई ❋ कहेउ न कछु तुम रहेउ चुपाई ॥
उन कहं पुत्र लोभ अति जीते ❋ मोह हमार तज्यो कबहीते ॥
भूप बचन सुनि भीम चुपाने ❋ बोले नकुल वीररस साने ॥

दो० सुनु सञ्जय वह शठ अजहुँ, देत न अंश हमार॥
दुर्योधन हो कालवश, करन क्रूर अपकार ॥

नहिंकछु कोउ वाकहँ समुझावत ❋ नाहक सब मिलि बैर बढ़ावत ॥
फिरि पाछे सब तुम पछितैहौ ❋ मेरे युद्ध ते फेरि न लहिहौ ॥
भीषम विदित सत्यब्रत धारी ❋ त्याग्यो राज्यलोभ अरु नारी ॥
विदुरभक्त विज्ञान निधाना ❋ गतविलोकिकहसकलजहाना ॥
सोमदत्त गंगाधर दोऊ ❋ सब लायक जानत सब कोऊ ॥
भूरिश्रवा वीरता माते ❋ सके न युद्ध जीति सुर ताते ॥
बाहुलीक की बड़ी प्रभुताई ❋ जीति धरा निज बाँह पुजाई ॥
सभा माँझ शठ द्रुपद कुमारी ❋ केश पकरि चह कीन्ह उघारी ॥
दुर्योधन को विभव विलोकी ❋ कुरुपाण्डवकोउसक्योनगोकी ॥
कृप अरु द्रोण बड़े बलधामा ❋ रह चुपके तहँ अश्वत्थामा ॥
समुझि परी सम्मति सबहीकी ❋ कर्णहु कही बात नहिं नीकी ॥
एक एक जीतहिं संसारा ❋ उनहिं निदरि पावत को पारा ॥
एकौ कोऊ भये न संगी ❋ समुझि परे सब पाप प्रसंगी ॥
जस उनके तस सकल हमारे ❋ पाप बुद्धि करि केहु न निवारे ॥
सुनि सहदेव कहत सुनु भ्राता ❋ हैं हमारे रक्षक सुरत्राता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० नग्न करन हित द्रौपदी, कीन्हों सबन उपाय ॥
रही लाज पटना घट्यो, कृत सहाय यदुराय ॥

हैं यदुनाथ हमारि सहायक ❋ कहौ कौन उत इनके लायक॥
सुनि सहदेव ओर प्रभु हेरी ❋ कह संजय ते नयन तरेरी ॥
नीचन के बल खल बौराना ❋ धर्मराज कहँ तृण समजाना ॥
यही भूल मीचु शठ केरी ❋ संजय सत्य प्रतिज्ञा मेरी ॥
पांडुसुतन को काज सुधरिहौं ❋ वंश नाश कौरव को करिहौं ॥
जो नहिं देई युधिष्ठिर अंशू ❋ रहै न धृतराष्ट्रक को वंशू ॥
तातें तुम संजय समुझावहु ❋ धर्मराज को अंश दिवावहु ॥
सुनि संजय विनवैं करजोरी ❋ सुनहु नाथ इक विनती मोरी ॥

दो० अरुणनयनभ्रकुटीकुटील, लखिहरिरूपकराल।
संजय सोच सँकोच वश, विनवत श्रीगोपाल ॥

दूत कर्मते बचन बखाना ❋ मैं तुम्हार अनुचर भगवाना ॥
दे संदेश नरेश पठायो ❋ सत्यवचन बलितुमहिं सुनायो ॥
अब जस कहौं कहौं तस जाई ❋ दोष हमार कौन यदुराई ॥
करब न करब भूप के हाथा ❋ अस कहि प्रभुपद नायोमाथा ॥
परम चतुर संजय कहं जाना ❋ बिहँसे कृपासिंधु भगवाना ॥
बुद्धि सराहि करि अति दाया ❋ प्रीतिसहितनिजनिकटबुलाया ॥
मोर सँदेश तात कहि दीजो ❋ निज नरेश ते भय मतकीजो॥
राज्य युधिष्ठिर को तुम देहू ❋ तजिअभिमानकलहकिनलेहू ॥
जो न सुनहु यह बचन हमारा ❋ करहुं निपात सकल परिवारा ॥

दो० अंश युधिष्ठिर को तजहु, मानहु बचन हमार ।
अनहित होइ न तोर नृप, बचै सकल परिवार ॥

अस कहि पुनि राजीवविलोचन ❋ रहे चुपाई दास दुखमोचन ॥
भीमसेन संजय के आगे ❋ कहन सँदेश क्रोध करि लागे ॥
बैठि सभा महँ मारि चपेटा ❋ फारौं गाल बिदारौं पेटा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दुर्योधन रण महँ संहारौं ❋ दुश्शासन के भुजा उखारौं ॥
कौरव जियत जान नहिं देहौं ❋ एकौ युद्ध भूमि जब पेहौं ॥
अबहीं नीक अंश मम दीन्हें ❋ तबलग कुशलगदाकरलीन्हें ॥
कह्यो पार्थ मत यहै हमारा ❋ भीमसेन जो वचन उचारा ॥
दीन्हें अंश मिटै सब रारी ❋ समुझो दिशिते कहउ हमारी ॥

दो० समुझावहु निज तनय अब, देइ अंश नरनाह ।
तात तुमहिं हित होइगो. अनहित तजुमनमांह॥

यह सँदेस कह्यो तुम मोरा ❋ यामें भूप होत हित मोरा ॥
भ्रात तात अरु तनय तुम्हारे ❋ जैहैं भूप उभय दिसि मारे ॥
ताते तात सो करिय उपाई ❋ होइ संधि जिहि मिटै लड़ाई ॥
धर्मराज कहि दीन्ह सँदेशा ❋ भल जानेहु तस कहेउ नरेसा ॥
देउ भूमि तब मिटै लड़ाई ❋ बाढ़ै भूप कीर्ति सुखदाई ॥
अस कहि संजय फेरि पठाई ❋ रहो कृष्णपद सीस नवाई ॥
धर्मराज ते बिदा कराये ❋ रथ अरूढ़ होइ गजपुर आये ॥
अंतःपुर जहँ बैठ नरेसा ❋ गालवगण तहँ कीन्ह प्रवेसा ॥
करि प्रणाम पुनि आप जनाये ❋ मुनिमहिप निजनिकटबुलाये ॥
कुशल प्रश्न मोहिं सकल बतावहु ❋ जो उन कह्यो सँदेश सुनावहु ॥

दो० गात कम्प गहवर भये, कहि न सकत कछुबैन ।
जो कछु कह्यो संदेश नृप, पीतम पंकज नैन ॥

धरि धीरज संजय अस भाषत ❋ सुनहु भूप कछु गोइ न राखत ॥
अब उनके नृप सेन अपारा ❋ गजरथ अरु पदाति असवारा ॥
चालिस सहस भूप जिन जोरा ❋ अक्षौहिणी सप्त घनघोरा ॥
नृपति विराट द्रव्य समुदाई ❋ दीन्हों द्रुपदराज यदुराई ॥
विभव विलोकि धनेश लजाहीं ❋ केहि पटतर दीजै कोउ नाहीं ॥
है अब सरिस इन्द्र प्रभुताई ❋ देखै बने न वरणि सिराई ॥
दीन्हों एक द्विरद भगवन्ता ❋ शंकर वर्ण सुन्दर चौदन्ता ॥
तापर भूप करत असवारी ❋ मन्दरसे उन्नत है भारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गन्धर्वन जे दीन्ह तुरंगा ❋ चित्र विचित्र मनोहर अंगा ॥
तेइ तुरंग नकुल के घोरे ❋ धावत चपल चलत शिरमोरे ॥
अरुण वाजि सहदेव सुहाये ❋ जीवबंधुको रंग लजाये ॥

दो० भीमसेन के हय सुनहु, चञ्चल चपल तुरंग ।
वायुवेग मग अति चपल, हरित सुआके रंग ॥

श्वेत वर्ण अर्जुन हय राजत ❋ उच्चश्रवहु देखि मन लाजत ॥
मुकुट समेत अमोलक माला ❋ करि अतिकृपादीन सुरपाला ॥
अदिति श्रवणके कुण्डल दोई ❋ पहिराये जेहि मृत्यु न होई ॥
अक्षयतूण दीन जलनायक ❋ घटै न शरसाधे जेहिसायक ॥
तस पँचकर्म्म धनुष गाण्डीवा ❋ दीन्हों अनल जगतकी सीवा ॥
देवदत्त दीन्हें भगवाना ❋ शंङ्ख अनूपम सब जगजाना ॥
जासु महारव घोर प्रचण्डा ❋ पूरित शब्द भेद ब्रम्हण्डा ॥
वृषपर्वा की गदा विशाला ❋ दीन्हों भीम कहीं नँदलाला ॥
नकुलहिकी वर्णत तरवारी ❋ दीन्ही अति प्रचण्ड बनवारी ॥
शंकर नन्दिघोष रथ दीन्हा ❋ अर्जुनकहँ निर्भयपुनि कीन्हा ॥

दो० धर्मराज अब इन्द्रसम, विभवको सकैवखानि ।
सुनहु भूप सन्देह नहिं, जहं श्रीपति सुखदानि ॥

अर्जुन कीन सखा हनुमाना ❋ लंकाविजय सकल जगजाना ॥
सावधान होइ सुनहु नरेशा ❋ अब पाण्डवकी सुनो सँदेशा ॥
छलकरि दीन्ह्यो बिपिननिकारी ❋ दीजै अंश न कीजै रारी ॥
दुइमा भूप भली जो जानौ ❋ अबन विलम्ब बेगि सो ठानौ ॥
याही भाँति कह्यो यदुराई ❋ तजहु अंश नहिं रचहु लड़ाई ॥
रण महँ पकरि सुदर्शन पानी ❋ कौरव कुलकी घालौं घानी ॥
करत अनीति कर्ण बलसेती ❋ तिहिकी बात नीच कहु केती ॥
क्षणमहँ सब कौरव दल मरिहौं ❋ राज्य युधिष्ठिर के वैठरिहौं ॥
उनको अंश छाँड़ि तुम देहू ❋ ताजि अभिमान अभयपदलेहू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० सत्य सत्य तुमते कहौं, मैं उनकर सन्देश।
सुनि उपदेश जु चित चहै; सो अब करहु नरेश॥

सञ्जय बचन सुनत उर दहेऊ ❋ विकल विशेष भूप अस कहेऊ॥
मातु पिता को करि अपमाना ❋ कालबिबशसिखसुनतनकाना॥
सञ्जय मैं उठाय नहिं राखी ❋ समझावहुसबबिधितुमसाखी॥
बल बिहीन पुनि जरठ न आंखी ❋ सुनतवचन पापअभिलाखी॥
तृण समान मोको शठ जानत ❋ सुनत श्रवण एकौ नहिंमानत॥
सुनि संजय बोले मुसकाई ❋ सत्य नाथ कहि पद शिरनाई॥
सब जानत तुम ज्ञान अरूढ़ा ❋ पुनि कहि गयो गिरा यह गूढ़ा॥
हमहूँ नाथ तुम्हार सिखाये ❋ सब प्रकार कहि भेद बताये॥
भयो द्युत तब तुमहिं न जाना ❋ लछ भवन बिन मत निर्माना॥

दो० तजि मनकी अवरेब अब, समुझावहु कुरुनाथ।
रहत रैनि दिन मैं सदा; नाथ तुम्हारे साथ॥

मेटहु कलह भूप सज्ञाना ❋ जग भल कहौ लहै कल्याना॥
होइ सुयश कीरति उजियारी ❋ मिटै कलंक होइ सुख भारी॥
होइ प्रसन्न त्यागि नृप सञ्जय ❋ असकहिभवनगयेपुनिसंजय॥
श्रीधृतराष्ट्र सबहि के आगे ❋ सुत की करण धर्षणा लागे॥
कपट दूत रचि निच निकाग ❋ कर्ण सीखते करि अपकाग॥
सौबल शकुनि कुमंत्र सिखावा ❋ उन यह बन्धु बिरोध करावा॥
संजय बचन कहत हौं साचौ ❋ सम प्रियपुत्र एकसौ पांचो॥
जो सब सम कत बैर करावत ❋ संधि कराइ न कलह बहावत॥
यह सम्भव तब बात अरूठी ❋ तात न समुझिपरतकछुझुठी॥
दीन्ह धरा धन साज समाजा ❋ तुम कीन्हे दुर्योधन राजा॥
भीष्म विदुर तुम्हारेइ अङ्गा ❋ कृप अरु बाहुलीक तुव संगा॥
द्रोणी द्रोण तुम्हारि सहायक ❋ त्रिभुवनविजयकरनकेलायक॥
धरि कारागृह देहु बंधाई ❋ दुर्योधनहिं निबिड़ पहिराई॥
निन्नानवे पुत्र बल भारी ❋ तेइ नरेश तुव आज्ञाकारी॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

औरे सुतहिं राज्य नृप दीजै ❋ फिरि मन चहै बात सो कीजै ॥
सुनि निष्ठुर संजयमुख भासा ❋ गयो जानि नृप भयो उदासा ॥
दो० सबलसिंह चौहान कह, वाक्य बिनाश बनाई।
बोलेउ विहसि नरेश तब, संजय को बहलाई ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

जनमेजय सुनि मत अनुरागे ❋ पूछै बहुरि ऋषै सों लागे ॥
कथा सुधा रस मोहिं सुनाई ❋ होत न तृप्ति श्रवण मुनिराई ॥
अब प्रभु कहा सहित बिस्तारा ❋ मिटै नाथ संदेह हमारा ॥
कह मुनिसमुझिपरै भ्रम त्यागे ❋ चित्र विचित्रचरितजसआगे ॥
धृतराष्टहि मन अति संदेहा ❋ कहत बचन संजय से एहा ॥
उर अति दाह नींद नहीं आवत ❋ कलहदेखिमनशोच जनावत ॥
पांडुतनय मम सुत अपकारी ❋ कुल महँ होत मिटत नहिंरारी ॥
चुपकै देन मिलै नहिं शीशा ❋ यह नहिं देन कहत अवनीशा ॥
अस विचारी असमंजस मोही ❋ दुर्योधन खल अतिकुल द्रोही ॥
दो० संजय ते बोले बिलखि. करि चितचेत मुवार।
भ्रात जनाउत तनै इत, बाढो कलह हमार ॥

यामें उभय प्रकार बिगारा ❋ ताते मन कछु थिर न हमारा ॥
तुम सुत जाहु विलम्ब न लावहु ❋ बिदुर बोलाइ इहां लै आवहु ॥
सुनि संजय उठि तुरत सिधाये ❋ पलमहं बिदुरभवनकहंआये ॥
कुश आसन पर ज्ञान अरूढ़ा ❋ साधत योग बैठि गति गुढ़ा ॥
कुण्डलनी तजि मूल उठाये ❋ निरषत परम ज्योति सुखपाये ॥
सहस पत्रको कमल जो फूला ❋ तापर पुनि हरिध्यान अमूला ॥
इड़ा पिंगला दूनों श्वासा ❋ साधत करत सुषुम्णा बासा ॥
नासा ऊपर करि अनुरूपा ❋ निरखत निर्गुण ब्रह्म स्वरूपा ॥
रसना उलटि कंठ अवरोधी ❋ सूधो कीन्ह कमलतनुशोधी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मरु दंड सम आसन लीन्हें ❋ पुनि षट चक्र विदारण कीन्हें ॥
दो० पापिनि सांपिनि दुःखगति, करिरसनापुनिरोक।
पियतसुधारसयतनयुत. जेहितनरहतविशोक ॥
अंगन सहित योग गति साधी ❋ करत ध्यान पुनिलाई समाधी ॥
तब संजय करि यतन जगावा ❋ चलहु बेगि अब भूप बुलावा ॥
अर्द्धनिशा सुनि आयसु पाये ❋ विदुर बेगि पुनि मंदिर आये ॥
गांधारी अरु भूप अकंता ❋ अभिवादन पुनि कीन्ह तुरंता ॥
कहेउ नरेश विदुर इत आवहु ❋ ममसमीपचिततपनि बुतावहु ॥
संजय कह्यो सँदेशा जबते ❋ मोकहं नींद न आवत तबते ॥
अब उपाय कहिये कछु भाई ❋ बुधि विचारि जेहि बचै लराई ॥
संजय सो सँदेश नृप पाये ❋ सों नरेश सब वरणि सुनाये ॥
दो० कहेउ विदुर तब भूपते, तुवसुतवश अभिमान।
जोसिखवतमनमानिहित, करतनसोकछुकान ॥
देइअमियकोउप्रीतिकरि,त्यागिकरतविषपान।
दुर्योधन मातिपरिहरी, बिधिगति अतिबलवान॥
कुरु नरेश को सब परिवारा ❋ करहि नाश यह तोर कुमारा ॥
देखहु शठ हठ शील अभागी ❋ प्रगटो यथा दारुत आगी ॥
हस्ती कुलहि न लागी बारा ❋ एकहिसाथ करहि सब छारा ॥
शत कुमार गंधारी जाये ❋ वेश्या पुनि युयुत्सु उपजाये ॥
जब भये तनय एकशत एका ❋ गर्दभ शब्द भयो अरु एका ॥
श्वान शृगाल भयंकर बोला ❋ कर रत काग धरा गइ डोला ॥
भूप यज्ञ थल आनि शृगाली ❋ करत फेकार क्रूर भयवाली ॥
सुर ज्ञानिन इमि बचन उचारा ❋ कुलनाशक नृप तनयतुम्हारा ॥
उपजेउ कहो हमारो कीजै ❋ गढ़ा खोदाय गाड़ि अबदीजै ॥
दो०पुत्रलोभ ते नहिं सुनेउ, तब सब रहेउ चुपाइ।
होनी होइ सो होइनृप, को करिसकै मिटाइ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुलघालक नृप तयन तुम्हारा ❀ जगपहँ प्रकट कीन्ह करतारा ॥
बरजत बात करन चतुराई ❀ अन्तर भूप अनीति सिखाई ॥
कपट निपुण अरु परसन्तापी ❀ हौ तुम नाथ जन्म के पापी ॥
तुम्हरे मनकी जानन हारा ❀ है नरेश सब दास तुम्हारा ॥
तुव भल कहत चहत अस बानी ❀ मोंहि नरेश कछुलाभन हानी ॥
बिन पूछे मैं यहहूँ कहहूं ❀ सहिदुखदुसहचुप्प पुनिग्रहहूं ॥

दो० जो पूछा तो करो अब, जात मनकी अवरेव ।
अंश युधिष्ठिर को तजहु, करिकरुणानरदेव ॥

जानेउ राव मर्म सब जाना ❀ विदुर भक्त विज्ञान निधाना ॥
सो बहराइ कहत अस राजा ❀ भ्रातासुनहु हिये जस भ्राजा ॥
अब उपाय कछु बन्धु बतावत ❀ शोचबिवशकछुनोंदनआवत ॥
पाण्डुतनय मम तनय कुचाली ❀ करत विरोध सुनहु गुणशाली ॥
सो मेटहु कछु तनय बिचारी ❀ सुनत विदुर मृदु गिरा उचारी ॥
पाण्डुसुतनकी कछु न अनीती ❀ उन अपने बलजो महिजीती ॥
सोऊ देत न तनय तुम्हारा ❀ मिटै कलह किहिभाँति मुवारा॥
पितृ पितामहँ अंश न देहू ❀ जीति देहु करिये नृप नेहू ॥

दो० लेहु सुयश मेटहु कलह, करिकरुणा तुमराइ ।
ऐसे हीने पांडुसुत, जो वे रहे चुपाइ ॥

वे नहिं कालहु को भय मानत ❀ तृण समान तुवपुत्रन जानत ॥
हैं सहाय यदुनायक जाके ❀ कस न होई निर्भयमन ताके ॥
कृष्ण भरोस मानि मन माही ❀ जीतत समर डरत कछुनाही ॥
अब लग मोहनिशा तुम सोवत ❀ मननीके उनकहं हम जानत ॥
बर्जत प्रभु युधिष्टिर भाई ❀ तिहि कारण नृप रची लराई ॥
जब जब भीमसेन मन माखत ❀ तबतबबराजि बरजि नृपराखत ॥
दुर्योधन कहं नृप समुझाई ❀ मिटै कलह सो करहु उपाई ॥
हे महिपाल बात यह नीकी ❀ तुम्हरे कहत परम हितहीकी ॥

In Public Domain, Chambal Archives,,Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० मनसा वाचा कर्मणा, करि चित चेत भुवार।
समुझावहु दुर्योधनहिं, अनहित बचै तुम्हार॥

जब लगि भीमसेन बलदाई ❋ रचत युद्ध नहिं तबहिं भलाई॥
क्रूर कर्म अति कुटिल सुभाऊ ❋ है साहसी विदित सब काऊ॥
कालहु की भय नेकु न मानत ❋ सो नरेश नाके तुम जानत॥
यक्षराज अर्जुन ते हारे ❋ सो जाने सब भेट तुम्हारे॥
लंका पुर दांड़ेउ सहदेऊ ❋ सो तुम्हार जाना है भेऊ॥
शंकर शत्रु धनंजय जीते ❋ देव अदेव जासु भय भीते॥
सके जीति नहिं पवन कुमारा ❋ कीन्हें सखा विदित संसारा॥
त्रिभुवनपति बैकुण्ठ बिहारि ❋ हैं तिनके सहाय गिरधारी॥
है अनन्य हरि भक्त अतीवा ❋ जीते को पाण्डव बलसीवा॥
पश्चिम देश नकुल सब झारि ❋ जीते यमनजाल बल भारी॥
ते सब धर्मराज अनुगामी ❋ दीजै अंश बात सुनु स्वामी॥
कह भूपाल सत्य सुनु भाई ❋ देत नीच नहिं मोरि दिवाई॥
यह सुनि विदुरउतर पुनिदीन्हा ❋ बर्जत रह्यो भूप जब कीन्हा॥
तब रुख लखि मैं रह्यउँ चुपाई ❋ कह्यउं नाथ तुम सबै सुनाई॥
दुर्योधन तुम कहँ दुखदाई ❋ सुनहुनाथ नहिं मोरि सिखाई॥
राज्य योग नहिं लक्षण चीन्हों ❋ मंत्री कर्म त्यागि हम दीन्हों॥

दो० राज छोडि नरनाहसुन, कबहुन होइ उछाहु।
कराहि अवज्ञा पुत्रजब, तबनितनितपछिताहु॥
राज दियो दुर्योधनहिं, पुत्र प्रीति है लीन।
तुम्हरोभोजनपानअब, नृप उनके आधीन॥

दुर्योधन कहँ कीन्हेउ नाथा ❋ सर्वस भूप तजेउ निज हाथा॥
अब शोचत नहिं प्रथम संभारे ❋ असकहि विदुर नयनजलढारे॥
सुनौ भूप विधि रेख लिलारा ❋ लिखी ताहि को मेटनहारा॥
दासी योनि जन्म जहँ जावा ❋ ताते तात न बनै बनावा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS.

हमहुँ विचित्रवीर्य के बेटा ❋ मगमहँ चलत भई नहिं भेंटा ॥
धनुविद्या भीषम जो दयऊ ❋ सोमोहिंनाथबिसरिनहिं गयऊ ॥
तुम अरु पाण्डव सखा हमारे ❋ पातक होइ दोउ के मारे ॥
पाण्डुपुत्र तुव पुत्र अभागे ❋ कलह विलोकि अस्त्रहमत्यागे ॥
करि नहिं सकैं और कोऊकी ❋ समगति हम न भूप दोऊकी ॥

दो० दुर्योधन अति मानते, श्रवण सुनत नहिं बात ।
परमचतुरगुणनिधिविदुर, समुझिसमुझिपछितात

अहो देव तुव मति हरि लीन्ही ❋ अतिकुबुद्धिकुरुनाथहि दीन्ही ॥
हानि लाभ तुव वश मैं जाने ❋ असकहि विदुरबहुतपछिताने ॥
धृतराष्ट्रक मन शोच अपारा ❋ कहत विदुर ते बारहि बारा ॥
दुर्योधन अति कीन अनीती ❋ सो मैं भली भांति सबकीती ॥
संजय गिरा मानि विश्वासू ❋ जानेऊ बन्धु भगत कुलनासू ॥
धन मदमत अधम अपकारी ❋ कीन नागिनि शठद्रुपदकुमारी ॥
सोसुधिउनहि बिसरि किमि जैहैं ❋ दुर्योधन के आगे ऐहैं ॥
अबहुँ न शठ समुझतसमुझावा ❋ बिनकारण को बैर बढ़ावा ॥
अबमोहिं समुझि परत मनमाहीं ❋ बाढ्यो कलह पार कछुनाहीं ॥

दो० दुर्योधन के मन बढ़ेउ, सुनहु विदुर अभिमान ।
सिखावत मैं विधि कोटिते, सोकछुकरतनकान॥

बीति गई यामिनि युग यामा ❋ आवत नींद न मन विश्रामा ॥
करहु बिचार यतन अब सोई ❋ जाते बन्धु बोध मन होई ॥
भये विकल लखि मन दुखपावा ❋ कीन्ह बोध पुनिपद शिरनावा ॥
आवाहन करि विदुर बुलाये ❋ सनकादिकबिधिसुतचलिआये ॥
नृप प्रबोधि मनमोद बढ़ाये ❋ पुनिमुनि सत्यलोक कहँआये ॥
सञ्जय पठवो बोलि सुयोधन ❋ लागे भूप करन सब बोधन ॥
गान्धारी अरु विदुर बुझावा ❋ कालविवशकछुमनहिंन आवा ॥
सब कहँ प्रतिउत्तर पुनि दीन्हा ❋ गयोभवनशिषकानन कीन्हा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० भानुमती तब हंसि कह्यो, कहिये नाथ हवाल।
गये बेगि पितू भवनते, आये बहुरि भुवाल॥

अन्ध बधिर हटशील अनामी ❋ क्रूरकुबुद्धि कृपण अरु कामी॥
मत्त प्रमत्त जरठबश ओरे ❋ नीच प्रसंगी अरु मति भोरे॥
ऐसे पितुको कहा न कीजै ❋ पकरि ताहि कारागृह दीजै॥
नीच प्रसंगी पिता हमारा ❋ दासीसुतहिं दीन्ह अधिकारा॥
कहत भूप जो बिदुर सिखावत ❋ ताते कछु मोमन नहिंआवत॥
द्वौ करजोरि कहत तब रानी ❋ करि करुणा करिये मम बानी॥
देखहु समुझि भरत कुलटीका ❋ पितु निदेश परिहर बन नीका॥
सो सुनि अधम बहुत रिसवाई ❋ कहि कटुबचन दीन्ह दुरियाई॥
भइ मन त्रास ग्रसित तब रानी ❋ गई पराई भवन भय मानी॥
प्रातहि यहां धर्मसुत जागे ❋ हरिहि समोद जगावन लागे॥

दो० अस्ताचल हरनी रुचिर, शृंग शृंग उतमंग।
खजुआवत मुखते सुखी, चूंचूं करत बिहंग॥
करत प्रगट पुनि प्रातरबि, बालक सहितउछाह॥
कूक कपोतन की मनहुं, प्राची दिशिको राहु॥

अरुण चूड़ बर बोलन लागे ❋ फुले कमल भ्रमर अनुरागे॥
चहत पक्षिगण तजन बसेरा ❋ करत मधुर स्वरनाद घनेरा॥
चरन मानसर हंस सिधाये ❋ उड़त हलावत परन सुहाये॥
सकूचे कुमुद उलूक निवासा ❋ अन्ध कूप लीन्ह मन त्रासा॥
यथा अनीति सुराज नशाने ❋ बचक चोर सभीत छपाने॥
शशि द्युति रह्योचरणगिरिआधी ❋ जिमिनिर्बलनृपाबेगत उपाधी॥
रविभयमानि शरण तकि आवा ❋ मनहुं प्रतीचीशशिहि छिपावा॥
तरुवर बास शिखिशिखिडन त्यागे ❋ करि मृदुख निर्त्तत सुखपागे॥

दो० भयो प्रात अब करि कृपा, जागो राजिवनैन।
उचकि उठे सुनि श्रवणपुट, धर्मराज के बैन॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धर्मराय हरि पद शिर नाये ❋ पुलकितगातनयनजल छाये ॥
परमानन्द प्रेम उर आवा ❋ प्रभुछबिदेखि निमेषन लावा ॥
श्याम सजलघन सरिस शरीरा ❋ दृग राजीव हरणजन पीरा ॥
आनन्द इन्दु सहित मृदुहासा ❋ लोल कपोल मनोहर नासा ॥
खुलत दशन अतिद्युति दरशाई ❋ ताड़ितप्रभा जेहि देखिलजाई ॥
उन्नतभाल भृकुटि श्रुतिकुण्डल ❋ जनुजुगरविअहिगहिशशिमंडल॥
करत बिचार सुयश यह लीजै ❋ अमि अँचवाई अमरपद दीजै ॥
रवि रथ बंधन कहि कर गाये ❋ प्रति उपकार करण जनु लाये ॥
बृषभ कन्ध अरु कंबुक ग्रीवा ❋ अतिविचित्र शोभाकी सीवा ॥
कीट मुकुट शिर सोह विशाला ❋ नवतुलसीदलगजमणिमाला ॥

दो० भुज प्रलम्ब पुनि कर कमल, सुखउदार केयूर।
उर विशाल रेखा उदर, रिपुमर्दन जन शूर ॥

कटि केहरी उदर त्रय रेखा ❋ कहिनसकैंछबिकबिशतशेखा ॥
नाभि गंभीर देखि मति घुमरी ❋ मानहुतरणि तनयजलकुमरी ॥
पीत बसन शोभित शुचि फेंटा ❋ सजल जलदजनुजटितलपेटा ॥
जंघ पीड़नी नयन निहोरे ❋ उपमा कहि न सकत कविहोरे॥
हरिपदते प्रकटी पुनि गंगा ❋ धरी शीश पर बैरि अनंगा ॥
तापद की उपमा का दीजै ❋ जोकछुकहियसोअल्पगनीजै ॥
शापशिला गौतम की नारी ❋ जे पद परशी पलक में तारी ॥
जे पदपद्म पखारि निषादू ❋ भयोबिदितजगविदितविषादू ॥
जे पद पद्म चारि श्रुति गाये ❋ चापत सिन्धु सुता उर लाये ॥
ते पद निरखि युधिष्ठिर राई ❋ अति आनन्द हृदय न समाई ॥
अस्तुति करत भरत जललोचन ❋ जयरुक्मिणीरमणअघमोचन ॥

दो० जय जय श्रीबृन्दाबिपिन, वासी नाशी पाप।
अविनाशी गति देहु तुम, दासनदेव दुराव ॥

चरण शरण कहि नाम पुकारत ❋ ताके नहिं गुण दोष बिचारत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चरण शरण कहि द्विरद सुनायो ❀ त्याग्यो गरुड गगनपथ धायो॥
कहुँ पटपाति गिरी कहुँ माला ❀ हरी विपति पुनि दीनदयाला॥
ग्राह निधनकरि शुभगाति दीन्हीं ❀ तहँगजराजाविनयबहु कीन्हीं॥
शापकथा कहि दोष मिटावा ❀ पुनि गजेन्द्र निजलोक पवावा॥
शबरी नाम अपावन नारी ❀ परी चरण कहि शरण पुकारी॥
कृपा दृष्टि देखी बनवारी ❀ चढ़ि बिमान वैकुंठ सिधारी॥
कृपा निषादराज पर कीन्हा ❀ भालुकीशनिजसमकरलीन्हा॥
रावण बन्धु विभीषण नामा ❀ कीन्ह कृतारथ श्रीसुखधामा॥
करि करुणा हरिलीन्ह विषादा ❀ भक्त शिरोमणि मे प्रहलादा॥
अग जगनाथ अनुग्रह कीन्हा ❀ अविचलपदबीबुवकहँ दीन्हा॥

दो०-केशी हर कल्याण कर, कृपासिन्धु भगवान।
कूर कुपूतन को सुगति, कौन देय बिन कान॥
बाल्मीकि उलटा जपे, कह्यो आधही मान।
सबलसिंह चौहान कहि, कीन्हों आपु समान॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
पंचदशोऽध्यायः॥ १५॥

गणिकागीध अजामिल तारण ❀ गोपीपति गोत्रास निवारण॥
श्रीकमला छुच कुंकुम मण्डन ❀ जनकसुतादुखदुसहाबिखण्डन॥
हरिजन हृदय पयोधि मराला ❀ रहत विहार करत सब काला॥
गिरिवरधारी नाथ छबीला ❀ नारायण श्रीकंत रँगीला॥
माखन चोर चतुर्भुज स्वामी ❀ पद्म गदाधर अन्तर्यामी॥
ताते बिनय मानि प्रभु मोरी ❀ दुर्योधन गृह जाहु बहोरी॥
मानहिंसो न विवश अभिमाना ❀ पुनरागमन करिय भगवाना॥
करि बहुयतन ताहि समुझावहु ❀ अपनी दिशिते चूक नलावहु॥

दो०-समुझावहु प्रभु विविधबिधि, जाइय अबतिबार।
होइहि होनेहार पुनि, जो विधि लिखा लिलार॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनियह वचन कृष्णहँसि दीन्हा ❀ नीक विचार भूप तुमकीन्हा ॥
अर्जुन भीम नकुल सहदेऊ ❀ बोलिय सकल भूप अब तेऊ॥
सब मिलि करहिं मंत्र उपदेशा ❀ कहेउ कृष्ण तस करिय नरेशा॥
सुनि नरेश सोइ वेगि बुलाये ❀ भीमादिक भ्राता चलिआये ॥
द्रुपद विराट और सब राजा ❀ धर्मराज पहँ जुरेउ समाजा ॥
पुत्रन सहित द्रौपदी रानी ❀ चलि आई जहँ शारँगपानी ॥
कह हरि सुनहु सकल मनलाई ❀ पठवत हमहिं युधिष्ठिर राई ॥
सन्धि हेतु दुर्योधन भवनहिं ❀ कहिये मंत्र रहौ जनिमौनहिं ॥
निज निज मति जनि राखौगोई ❀ सबमिलिकहौकरिय अबसोई ॥

दो०-धर्मराज सुनि हरि वचन. कही सबनते बात।
कहिये मंत्र विचारि कै. कृष्णदेव उत जात ॥

बुद्धिबिचारिसकल मिलिभाखौ ❀ अन निजमंत्र गोइ नहिंराखौ ॥
करियामिलाप कि कीजिय रारी ❀ तौन बात अब कहौ बिचारी॥
कहेउ भीम वहि कीन्ह कुकर्मा ❀ त्यागेउ लोकलाज कुलधर्मा ॥
केश पाणि धरि द्रुपदकुमारी ❀ सभामध्य चह कीन्ह उघारी ॥
सुमिरण तुमहिं दीन ह्वै कीन्हों ❀ दीनदयालु राखि तब लीन्हों॥
लक्ष सदन चलि हमहिं पठायो ❀ अद्धराति महँ अनल लगायो॥
लीन्हेउ राखि तहाँ ते बाचे ❀ हरिकी कृपा अल्प नहिं आँचे॥
बिषमोदक वाह नीच खवायो ❀ रह्यउ न चेत जँजीर मँगायो ॥

दो०-कसेउ लोह गुण सकल तनु, डारि दियो ततकाल।
परेउ गंगकी धार महँ, तत्क्षण गयो पताल ॥

गयों भूमितल कछु सुधि नाहीं ❀ छहरि गयो विष सब तनमाहीं ॥
सर्प लोक पहुँचो यदुराई ❀ सुनि सुधि नागसुता तहँआई॥
असिनि आइ करि मोंहिं तमासा ❀ नाना भांति करैं परिहासा ॥
विषतनु भरे खुलत नहिं नयना ❀ कछुकछुसुनौंश्रवणपुटबयना ॥
अस्तुति करैंमोहिं लखि मोही ❀ नाग कुमारि कामवश मोही ॥
आप सरिस मम सुन्दरताई ❀ वर्णत प्रीति करत अधिकाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करै कष्ट तनु हरि हर ध्यावैं ❀ बड़े भाग ऐसे पति पावैं ॥
देवसुता जाको ललचाहीं ❀ नर नारी किहि लेखे माहीं ॥
कर्कोटक तनया सुनि बाता ❀ आई मम समीप हरषाता ॥
अभियसींचिमुख मोहिं जियायउ ❀ जानिविषयतनुताप बुझायउ ॥

दो०-सहरावत पद पाणिगहि, करत प्रीति अधिकारि।
श्रमित दोखि मो तनु करत, बारहिंबार बयारि॥

दो०-मृगनयनी हिमकर वदनि, पहिर भूषण चीर।
तनुनबीन कटिखीन अति, व्याप्यो कामशरीर॥

मोहिं विलोकि तनुदशा बिसारी ❀ चित्र पुतिलका कीअनुहारी ॥
मम गति लीन बढ़ो अनुरागा ❀ त्यागे लाज मनो भव जागा॥
देख्यो नागसुता गति लोगन ❀ जायजनायोतिनपुनि भोगन ॥
नागसुता मानुष तनु राँची ❀ भये सक्रोध बात सुनिसाँची ॥
गुणमंजरी मनुज पति लीन्हों ❀ केहुँ कर्कोटक से काहि दीन्हों ॥
समुझि हिये यह बात अयोगी ❀ चलासकोपिअरुण दृगभोगी ॥
यहाँ कामवश छाँड़ि विचार ❀ वरहु मोहिं कह बारहिंबारा ॥
मैं समुझाय कही वाहि पाहीं ❀ गुणमंजरी उचित अस नाहीं ॥
सुनि यह तोहि निन्दसबलोगा ❀ नागसुता नाहि मानुषयोगा ॥

दो०-योग मनुज वर तुमहिं नहिं,देवयोनिमहँव्याल।
काम विवश बरवस हिये,पहिरायो जयमाल॥

क्रोधित व्यथा सर्प समुदाई ❀ प्रसन मोहि तेहिथलमहँआई ॥
कोउ फण एक उभय त्रय चारी ❀ चपल जिह्व चषअतिरतनारी॥
पंच सप्त षट फण को सर्पा ❀ कोउ फणअष्टकरत अतिदर्पा ॥
दश फण नाग पञ्चफण सोऊ ❀ कोउ फण बीस तीस हैकाऊ ॥
चालिस कोउ पचास फण योंगी ❀ सत्तरिसाठि असी फणभोगी ॥
शत फण एक पंञ्चशत एका ❀ नाना विधि फण सर्पअनेका ॥
उगिलत विष अरु दृग रतनारे ❀ आशी विष भारे तनु कारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri, Funding by IKS.

धूमर लाल श्वेत रंग नाना ❀ हरितपीतअरुणविविधविभागा ॥
ग्रसिनि आइ मोहिरिसिकरिभारी ❀ देखि विकल भै नागकुमारी ॥
त्याहि अवसर कर्कोटक आये ❀ चँचल जिह्व वदन फैलाये ॥
दो० श्यामवर्ण जनु जलद सम, रसना चलत निहारि ।
खूले दशन अवलोकिपुनि, उपमाकहतविचारि ॥
चपलाजिह्वसुखबिच अभिरामिनि ❀ चमकताथिरनहताजिमिदामिनि
श्यामवर्ण सित दशन विभाँती ❀ सघन घटा महँ जनुबगपाँती ॥
डरी मनहिं मन नागकुमारी ❀ विनयकहै बिधि बिष्णुपुरारी ॥
उमा रमा हे शारद माता ❀ विनयकरतराख्यो अहिवाता ॥
तब सुमिरेउ भय हरण कृपाला ❀ आयो गरुड़ सर्पकुल काला ॥
ताहि देखि सब उरग पराने ❀ जहँ तहँगये जात नहिं जाने ॥
कर्कोटक खगनाथ निहारी ❀ बल भा थकित करत मनहारी ॥
प्राण दान दै प्रथम बचाये ❀ अबसक्रोधकिहिकारण आये ॥
दो० पक्षिराज बोले विहँसि, सुनहु सर्प शिरताज ।
पाण्डव को सन्देह नहिं, रक्षक श्रीब्रजराज ॥
सो ददुनाथ चराचर स्वामी ❀ जगतबिदितमैंतिहिअनुगामी॥
जो कुछ कुशल चहौ अहिराई ❀ मिलि पांडव कहँ बैर बिहाई ॥
वचन हमार मानि तुम लेहु ❀ दुहिता भीमसेन कहँ देहू ॥
गरुड वचन सुनि तजि सन्देहू ❀ सुता विवाहि दीन्ह करि नेहू ॥
गुणमंजरी सहित भगवन्ता ❀ रह्यो शेषपुर वर्ष प्रयन्ता ॥
सर्प दया करि तहँ पहुँचाये ❀ गजपुर धर्म्मराज पहँ आये ॥
समाचार सुनि परम अनन्दा ❀ रक्षो तुम कीन्हों ब्रजन्दाच ॥
त्र हमार सुनिय यदुनायक ❀ कुरुपतिनिधनकरनकेलायक ॥
दो० बिन कारण काढें बिपिन, कीन्हेसिशठअपकार ॥
ताते कीजिय अवसिरण. यह मत नाथ हमार ॥
भीम वचन सुनि पुनि सहदेवा ❀ कही नाथ सुनिय जगदेवा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उन हमार किन्हों अपमाना ❀ नाथतुम्हार भेद सब जाना ॥
कर्शकर्षण शठ अपकारी ❀ सभा मध्य करि द्रुपदकुमारी ॥
भीषम द्रोण कर्ण के आगे ❀ रंचक कानि न कीन्ह अभागे॥
सो सुधि यदुनन्दन नहिं भूलत ❀ सुमिरिसुमिरिअजहूँउरशूलत ॥
भूप वचन गजपुर कहँ जैये ❀ हे हरि युद्ध अवशि ठहरैये ॥
सावत जागत शरण तुम्हारी ❀ बनै सो करि उचित बनवारी ॥
श्रुति कीरति सो धाम सतायो ❀ सन्तानिकामिलिवचनसुनायो ॥
युत प्रतिबिम्ब कृष्ण के आगे ❀ क्रोधितवचनकहन सब लागे ॥
द्रुपदसुता यहि खल अभिमानी ❀ नाथ तुम्हारि वात संब जानी॥
ताते और विचार न करहू ❀ अब प्रभु दुर्योधन ते लरहू ॥
द्रुपद नरेश यह मत राख्यो ❀ सहित विराट शिखंडी भाख्यो ॥
सात्यकि धृष्टद्युम्न बलवाना ❀ अभिमन्युकाशिराजमनमाना ॥

दो० धृष्टकेतु पटनेश मिलि, सबन करौ मत ठीक।
शूरसेन यहि विधि कह्यो, और विचार न नीक ॥

मैं हरि कहत आपने जीकी ❀ है विन युद्धबात नहिं नीकी ॥
धर्म्मराज वहि शठ अपमाने ❀ तुम समेत निर्बल करि जाने ॥
और बात सब तजि धनश्यामा ❀ ताते करिय अवशि संग्रामा ॥
कहत नाइ शिर वचन घटूका ❀ सुनिय नाथ क्षमा करि चूका ॥
पाण्डव साहित अछत गोपाला ❀ द्रुपदसुतापुनिफिरत विहाला ॥

दो० छल करि दुर्योधन अधम, काढ़सि हमहिं बिदेश।
बाँधे अजहुं न द्रौपदी, गहे दुशासन केश ॥

तेरह वर्ष गई हरि बीती ❀ सुधिन लई केहुँनिपटअनीती ॥
पाण्डव सबल जान संसारा ❀ तुम ईश्वर वसुदेव भुवारा ॥
तिनतेकछु निसरेइ नहिं काजा ❀ मै बड़िलाज सुनहु ब्रजराजा ॥
अब प्रभु दुर्योधन कहँ मारौं ❀ द्रुपदसुता को शोक निवारौं ॥
कोटिहु यत्न रहौ जनि बरजे ❀ गर्जत देखि जराचर लरजे ॥
धर्म्मराज तब क्रोध निवारो ❀ कहि प्रिय वचन निकटबैठारो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सब लाकक तुमको हम जानत ❀ है बड़ पाप गोतके मारत ॥
हे हरि सम्मत कहत पुकारे ❀ होइ नाथ भल मंत्र हमारे ॥
दो० सुने वचन नरपाल के, द्रुपदसुता अकुलाइ ॥
बोली हरिसों जोरि कर, चरणकमल शिर नाइ ॥
क्रूर शूर नहिं भूप हमारा ❀ जानत तुम यदुवंश कुमारा ॥
गहिकै केश सभा शठ आनी ❀ भानतसो न कछुक गिलानी ॥
इन ते होत भली सो नारी ❀ रोदन करत पुकारि पुकारी ॥
तौ कछु बोध हिये हरि होई ❀ सभामध्य वहि खल निहरोई ॥
पुरुषाकार पाण्डुसुत नारी ❀ इनके वल रोंपत महि शरी ॥
अभिमन्यु आदि सप्त सुत मोरे ❀ करिहैं विजय दास सब तोरे ॥
मम गति देखि लाज पञ्चालहिं ❀ डरैं न कछु निडरैं रण कालहिं ॥
बान्धव धृष्टद्युम्न बल भारे ❀ भये कुण्ड ते संग हमारे ॥
रण महँ लरैं टरैं नहिं टारे ❀ करिहैं विजय प्रसाद तुम्हारे ॥
युधामन्यु मम बन्धु तमोजा ❀ नाम शिखण्डी नयन सरोजा ॥
दो० मम गति देखि सलज्जसब, करिहैंकठिनमशान ।
अस कहि कै पुनि द्रोपदी, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
युधिष्ठिरश्रीकृष्णसम्वादोनाम षोडसोऽध्यायः ॥ १६ ॥

कहेउ धनंजय सुनिय श्रीहरि ❀ काढ़ेसि धर्मराज हीने करि ॥
सब प्रकार जानत जगवन्दन ❀ बलीवछलीअधम कुरुनन्दन ॥
कपट अक्ष शकुनी निर्मायो ❀ करि छल कीन्हें जूप हरायो ॥
औरौ छल कीन्हसि भगवाना ❀ सो चरित्र सुनिये दै काना ॥
कुरु पांडव बालक सब भीरा ❀ खेलत रहे गङ्ग के तीरा ॥
बिषमोदक भीमहिं तहँ दीन्हों ❀ तव ते हम प्रतीति तजि दीन्हों॥
धर्मराज वन गयउ शिकारा ❀ श्वान संग युत तुरंग सवारा ॥
परम अकिंचन विप्र बुलायो ❀ विषमोदक तेहि हाथ पठाया ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

स्वर्ण सप्तदश दीन अकोरा ❀ पटयहु करहु परमाहित मोरा ॥
मोदक धर्मराज कहँ दीजै ❀ पठये है कुन्ती कहि दीजै ॥
दो०-अशन करायो यतन करि, कह्यो न नाम हमार ।
करि बिनतापठयोद्विजहिं, जहंनृपाफिरताशिकार ॥
जान्यो भेदन द्विज तहँ आयो ❀ धर्म्मराज ते आनि सुनायो ॥
पठयउ मोहिं पाण्डुसुत रानी ❀ मोदकतुमहिंदियो निज पानी ॥
क्षुधित जानिकै मोहिं पठायो ❀ करहुअशनअसकहि समुझायो ॥
परम गहन बाँधेउ नृप घोरा ❀ बैठे विटप छाँह घनघोरा ॥
क्षुधित तृषाते विकल शरीरा ❀ जानि निवास जलाश्रय तीरा॥
भोजन तुरत करन नृप लागा ❀ बिषमोछहरि देखि द्विज भागा ॥
त्राहि त्राहि करि हृदय डराना ❀ छल कीन्होसि शठमनहिं जाना ॥
तृषावन्त नृप विषकी पीरा ❀ परे मूर्च्छि नहिं चेत शरीरा ॥
विकल बिलोकि कृपाप्रभुकीन्ही ❀ उदक पिआई त्रासहरिलीन्ही ॥
दो०-निकसित तत्क्षणभूमिते, जल भोजन युत साथ ॥
पान करायो हरि तृषा, करी कृपा यदुनाथ ॥
जल पियाई फेरे तनु पानी ❀ मिटी तृषा तनु ताप बुझानी ॥
छल करणी मैं तुमहिं सुनाई ❀ वनकी सुनहु बात यदुराई ॥
वन काढ़ेसि शठ करि अपकारा ❀ निधन हेतु नितकर बिचारा ॥
दूत आय यह बात जनाई ❀ वन महँ निकट युधिष्टिर राई॥
परम दीन द्विज भेष जनाई ❀ बसहिं बिपिनतृणशालाछाई ॥
भोजन कबहुँ मिलै कहुँ नाहीं ❀ वसन मलिनजीरण तनुमाहीं ॥
तेज हीन तनु विकल विशेखी ❀ आयो नाथ आजु मैं देखी ॥
दुत बचन सुनि अति सुखपाये ❀ बिहँसिसचिवसबानिकटबुलाये ॥
दो०-चरवर आयो सुनु सचिब, धर्मराज कह देखि ॥
कह्यो मेन लैकै चली, भोजन हीन विशेखि ॥
कबहुं खात है मूल फल, कबहुंक अंचवत नीर ॥
निर्बल भयो शरीर सब, टूटी पर्णकुटीर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सब मिलि चलौ सेनसजिजाइय ❀ मानभंग उनको कारिआइय ॥
अस कहि चलेउ तुरतकुरुनायक ❀ सेन साजि कर्णादि सहायक ॥
पर्णकुटी ढिग खल चलि आयो ❀ सुनत चित्ररथ इन्द्र पठायो ॥
देखि अनीति सुरेश रिसाना ❀ चलेउ चित्रतबसाजिविमाना ॥
शरन मारिदलन्याकुल कीन्ह्यसि ❀ दुर्योधनहिंबाँधिपुनि लीन्ह्यसि ॥
करि निबन्ध लै गयो अकासा ❀ आरत शब्द करत मनत्रासा ॥
नृपति धनंजय आनि छुड़ायो ❀ शरन मारि गन्धर्व भगायो ॥
दीन्हि पठाई बहुरि रजधानी ❀ बल की बात नाथ सब जानी ॥

दो०-सहि न सकत प्रभु एक क्षण, रोवत द्रुपदकुमारि।
करौ नाथ कुरुनाथ कहं, वाण शरासन धारि ॥

अस कहि भयो विलोचन राते ❀ मोचत खुलत मनहुँमदमाते ॥
जीभ निकारी अधर पुनि चाटत ❀ फरकत जात दशन ते काटत ॥
मुख अति अरुड़ कुठिबभइभौहैं ❀ श्वासलेत जिमिव्यालार सोहैं ॥
क्रोध विवश अर्जुन कहँ जानी ❀ बर्जत भूप कहत मृदुबानी ॥
अपनी दिशीते चूक न करहू ❀ मानै जब न बन्धु तुम लरहू ॥
ताते अब श्रीकृष्ण पठाई ❀ जाय उनहिं देवै समुझाई ॥
जो वह देई गाऊँ दुइ चारी ❀ रहेउ चुपाई नीकि नहिं रारी ॥
सुनत बचन द्रौपदी रिसानी ❀ हे नृप फेरि कही यह बानी ॥
मम गति देखिन आवत लाजा ❀ निपटअनीतिसुनहु ब्रजराजा ॥

दो० विकल विलोक्यो द्रौपदीं, करि प्रबोध यदुराय।
जो तुम्हरे मन भावना, सो हम करव उपाय ॥

यहि बिधि कहि यदुनाथ बुझाई ❀ करि प्रबोध पुनि भवनपठाई ॥
नृप सन बिदा माँगि भगवाना ❀ सात्यकिसहित चले चढ़ियाना ॥
पठवन चले नकुल हरि साथा ❀ स्यन्दन की पटिका गहिहाथा ॥
विनय करतानिजविपति सुनावत ❀ पुनिपुनिचरणकमलशिरनावत ॥
फिरेउ तात हरिमुख सुनि बानी ❀ बोले नकुल ढरत दृगपानी ॥
गद्गद कंठ गिरे भरि आवा ❀ ऊर्ध्व श्वास लै बचन सुनावा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कौरवपति अति कीन्ह अनीती ❀ वर्ष त्रयोदश बन महँ बीती ॥
केश पकरिकै शठ अभिमानी ❀ द्रुपदसुता मंदिर ते आनी ॥
मारन कह्यो भीम मन रूठी ❀ हे हरि भई प्रतिज्ञा झूठी ॥

दो०-क्षत्रिय ह्वै प्रण भाषई, फिरि न करै ब्रजराज।
विदित सकल संसार महँ, याते अधिक न लाज॥

सभा मध्य सुनिये भगवाना ❀ करि रिसद्रुपदसुता प्रणठाना ॥
दुश्शासन के रक्त नहाई ❀ बांधब कच तब कृष्ण दुहाई ॥
मृषा न प्रण करिहैं निज रानी ❀ सो दुखसमुझि सुदर्शनपानी ॥
रहत नाथ मन मोर मलीना ❀ धर्मराज पुनि राज विहीना ॥
तेहि दुखते दुख अति भगवाना ❀ सो अब कहौ सुनियदै काना॥
वृद्ध मातु परघर प्रतिपालक ❀ यथा अनाथहोत बिनबालक ॥
पंच पुत्र जेहि सब परिवारा ❀ भ्रातजात तुम हरि अवतारा ॥
सो कुंती ऐसो दुख पावत ❀ हे हरिनेकु लाज नहिं आवत ॥
अर्जुन कहेउ कर्ण कहँ मारण ❀ तेहि प्रणके रक्षक जगतारण ॥
मंत्र हमार सुनिये यदुराई ❀ मिटै कलंक सो करिय उपाई॥

दो०-हम देखत शठ द्रौपदी, आनी सभा निशंक ॥
खंडिय अरिरण मांडि करि, तब यह मिटै कलंक॥

अस कहि नकुलचरण शिरनावा ❀ करिप्रबोध हरि कण्ठलगावा ॥
विहँसि वचन भाष्यो बनवारी ❀ पूजी मन कामना तुम्हारी ॥
मिटिहैं सब सामर्थ्य कलेशा ❀ धरहुधीर तजिसकल अँदेशा ॥
धर्मशील को कबहुँ अकाजा ❀ होयन नकुल कहतब्रजराजा ॥
पापिन को सुख स्वप्न समाना ❀ जानहु तातन ठीक ठिकाना ॥
वो अनीतिरत नीति न जानत ❀ तृण समान त्रैलोकहि मानत ॥
धर्म्मशील है भूप तुम्हारा ❀ गति अलीक जानत संसारा॥
नीति निपुण मम भक्त प्रवीना ❀ सुरमहिसुरगुरुपदमति लीना ॥
ऐसेन को नहिं होत अकाजा ❀ यहिविधिकरि प्रबोधब्रजराजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अब विलम्ब नहिं दिनदश बीते ❀ करिहौंकाज तात मन चीते ॥
भये मुदित सुनि श्रीपति बानी ❀ प्रीति प्रतीति नजायबखानी ॥
दो०-भयो बिदा मन हर्ष अति, पद गहि गोकुलचंह।
करि प्रबोध फेरे नकुल, सबलसिंह नंदनंद ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

फिरे नकुल प्रभु आयसु पाई ❀ सात्यकि सहित चले यदुराई ॥
नगर वारुणावर्त्त बसेरा ❀ कीन्ह जाइ हरि जायअबेरा ॥
हरि सुधि पाइ सकल पुरबासी ❀ आये मिलन ज्ञान गुणरासी ॥
विविध प्रकार कीन्ह सतकारा ❀ जोरिजोरि करहरिहि जुहारा ॥
बहुत भाँति कीन्हें पहुनाई ❀ अति आनन्दन हृदय समाई ॥
तेहि निशि तहाँ शीलगुणधामा ❀ सात्यकिसहितकीन्ह विश्रामा ॥
अरुणचूड़ अरुणादय बोले ❀ कमलविलोचन लोचनखोले ॥
तब श्रीहरि सात्यकी जगायो ❀ दारुक वाजि साजिरथ लायो ॥
पुरजन सकल बिदा हरि कीन्हों ❀ मोर भये पुनि मारग लीन्हों ॥
नाना भाँति कहत इतिहासा ❀ चले जातमगसहित हुलासा ॥
दो०-पूछेउ सात्यकि जोरि कर, सुटहु रुक्मिणीरौन।
भारत पद कुरुवंश को, कहौ सो कारण कौन॥

बोले विहँसि वचन यदुराई ❀ पूरब कथा सुनहु तुम भाई ॥
याहि कुल भयो भूप दुष्यंतू ❀ शील सनेह सत्यनिधि सेतू ॥
सो शकुन्तला विदित न काही ❀ भूपविपिन महँ ताहिविवाही ॥
भरत नाम तिन सुत उपजायो ❀ भारत सब शशिवंश कहायो ॥
हँसि बोले सैनेश कुमारा ❀ कहिये नाथ सहित विस्तारा ॥
स्वल्प कहे मन बोध न होई ❀ गुप्त कथा जनि राखौ गोई ॥
सब हरि चित्र विचित्र कहानी ❀ लगेकहनसुनि सात्यकिबानी ॥
सावधान मन थिर कहिं भाई ❀ अब तुम सुनहु कथा सुखदाई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-चन्द्रवंश महँ आइ नृप, प्रकट भयो दुष्यन्त।
तिनको गुण बर्णन करत,कविपंडितशुचिसन्त॥

जनु रचना निज बिश्व सँवारी ❀ रचि विरंचि तेहिदै करतारी॥
काम कला अबला मनजानहिं ❀ काल समान शत्रु को मानहिं॥
प्रजा जानि मन पूरण लाहु ❀ सदा उछाह करत सब काहु॥
द्विजगण धर्म केर अवतारा ❀ जानहिंहृदय अनन्द अपारा॥
कुलके वद्ध स्वल्प सुजाने ❀ सेवक सेवहिं नृपहिं डराने॥
जाके राज्य अनीति न होई ❀ प्रजा प्रसन्न जानिं सब कोई॥
साम दान पुनि दंड विभेदा ❀ करै भूप जिमि वरणै वेदा॥
अतिथि क्षुधारत की सुधि लेई ❀ यथोयाग याचक कहँ देई॥
सुनि सभबुधिविवेकजिमि हँसा ❀ सुर सिहात करि भूप प्रशंसा॥

दो-कल्पवृक्ष सम दान कहँ, कीरति शशि अबदात।
भानुसमानप्रतापजग, अधिकअधिकसरसात॥

राजसूय आदिक विधि नाना ❀ कीन्हीं भूप दये बहु दाना॥
केर अमित नित यज्ञ अरंभन ❀ पूरि रहै पुहुमी महँ खंभन॥
तासु तेज रवि उदय विलोके ❀ नृप कीरीट सब कुमुहसशोक॥
रहत मौन कछु कहत सो नाहीं ❀ तनुसमीप जिमितनुपरछाहीं॥
बंचक चोर उलूक समाना ❀ हेरत मिले न ठीक ठिकाना॥
सुजन कमल फूल बहुभाँती ❀ खलमलीनजिमिउडुगणपाँती॥
भये कोकनद वनिक विशोका ❀ सुरपूरणावलसहिं निजलोका॥
जीय बंधु सम मित्र सुखारे ❀ फूलि रहे जहँ तहँ रतनारे॥

दो०-नृप कीरति पारद किधौं, शारद मुक्ताहार।
हिम गिरि की कैलास की, किंधौं देवसरिधार॥
शारद चन्द्र कि चन्द्रिका, मानहु करत प्रकास॥
धवल ध्वजासी देवपुरि, ऊपर करत विलास॥

कुंद कलीसी कुमुद कलीसी ❀ हाटक सी बग पाँति मलीसी॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्षीर फेनुसी गंग रेनुसी ❀ वासुकिसी सुरपतिकि धेनुसी ॥
कामधेनुसी फटिकसिलासी ❀ वेलासी करपूर विलासी ॥
गणपतिसी दरसी गिरिजासी ❀ कीरति विशद नदी विरजासी॥
शांति सत्यसी संतवसनसी ❀ उदधि उदधसी द्विरद दशनसी ॥
को तुषार की तरणि तरंगा ❀ किधौंविष्णुतनु विशदकुरंगा ॥
नृपति कीर्ति जनु श्वेत विताना ❀ भरतखण्ड मण्डल महँताना ॥
दान ज्ञान द्वौ खंभ विभागे ❀ नानासुत सिरसा कसि लागे ॥
बुधिकनात हरिभक्त चँदौवा ❀ हिंसायुत परदा तहँ जोवा ॥
युद्ध शूर नृप बुद्धि उदारा ❀ गुण अनेक को वरणै पारा ॥
अपर कथा अब कहौं बुझाई ❀ चितदै सुनहु श्रवण सुखदाई ॥

दो०-कथा भूप दुष्यन्तकी, भाषी चित्र विचित्र ।
ज्यहिविधि भई शकुंतला, सो अब सुनहुविचित्र॥

विश्वामित्र महामुनि आये ❀ करतविपिन तबध्यानलगाये ॥
तहँ मेनका रूप गुण रासी ❀ जात गगनपथ देव विलासी॥
भूषण वसन विभूषित अंगन ❀ गावत राग वसन्त तरंगन ॥
वीण बजावत ताल अभंगन ❀ निर्त्तत गति संगीत उमंगन ॥
फूलन को गजरा जु तरंगन ❀ उठव सुगंध समीर प्रसंगन ॥
मुख तांबूल कपूर लवंगन ❀ अलिगुंजतसंग अरग प्रसंगन ॥
मुनि समीप उतरी सो आई ❀ करी कलान समाधि जगाई ॥
देखि मेनकहि बिकल शरीरा ❀ मुनि मन भयो मनोभव पीरा॥
बहुत बार लगि रह्यो निहारी ❀ सुधिनरहीतनुसुरति बिसारी ॥
बीण बजाइ मधुर स्वर गावत ❀ खेलत फाग गुलाल उड़ावत ॥

दो०-मुनित्रियऋषितियगाधिसुत, निरखतबारहिंबार ।
विकल युगल तनु कामवश, भूलों सब आचार॥

विश्वामित्र मनोभव जीता ❀ वर्ष एक सम बासर बीता ॥
भई निशा सो मुनि ढिग आनी ❀ करि ढिठाई तनु महँ लपटानी॥
जंघ जंघसो कटि कटि जोरी ❀ उरसे उर मुनि मत भई थोरी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अधराधर ऊपर रद दीन्हा ❀ करिचुम्बन आलिंगन कीन्हा ॥
करि विपरीति सुरति बहुभाँती ❀ द्वादस मास गये जनु राती ॥
भये विकल तब मन सुधि आई ❀ खोयो तप बहु कीन भोगाई ॥
रति करिकै मुनिवर पछताने ❀ तिहि वनते कहु अनत पराने ॥
भई सुता बीते नौ मासा ❀ गई डारि सो सुरपति पासा ॥
एक बार नहिं क्षीर पियाये ❀ रोदन करत क्षुधा तनु छाये ॥
दीनशब्द सुनि मुनीवर आई ❀ तृणशाला लै जाइ जियाई ॥
मुनि उतंग कीन्ही प्रतिपाला ❀ भई तरुणि बीते कछु काला ॥

दो०-सबलसिंह चौहान कह, हृदय परम आनन्द ।
दिनदिनद्युतिबाढीअधिक,जिमिद्वितियाकोचन्द

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

तनुसे निकसि ज्योतिद्युति भारी ❀ फैलि रही चहुँदिशि उजियारी ॥
लाजसहित चष अरुण नुकीली ❀ करुणायम सबभाँतिछबीली ॥
अंजन दै दृग रंजित कीन्हे ❀ खंजनकी उपमा हरि लीन्हे ॥
मृग निज दृगपठतर नहिं जाने ❀ लाजमानिमनविपिन छिपाने ॥
त्रियदृग करत कमल करि कोऊ ❀ मम मनमें भासित नहिं सोऊ ॥
कमल फूल तज्यो तनु ताहु ❀ ऐसि ज्योति मोहत सबकाहु ॥
नासा सुभग अनूप सज्योती ❀ जगमगात नथबेसरि मोती ॥
नांक समीप मोद अधिकाई ❀ गुरु कवि मंत्र करत मन लाई ॥
आनन सुभग चन्द्रमद हारी ❀ अधर प्रवाल लाल सुखकारी ॥
भृकुटी वाम श्याम अहि छौना ❀ शशिसमीप जनु रचे खिलौना ॥
कच मेचक तल श्रुति ताटंका ❀ घनघमण्ड दामिनी दमंका ॥
अधर बीच द्युति दशन विभाँती ❀ जनु विद्रुम मुक्ताहल पाँती ॥
करि न सकत कवि कण्ठ लुनाई ❀ फिरिनरच्योविधिकरिनिपुणाई ॥
ज मृणाल भूषण सब अंगा ❀ देखि अनंग नारि मन भंगा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अति उन्नति कठोर वक्षोजा ❀ गेंद खेल जनु रच्यो मनोजा ॥
कटि सूक्षम कच अंगुलि परना ❀ नखअतिअरुणलालद्युतिहरना॥
दो०-अतिसूक्षममृदुउदरपुनि, पुनिअमोल अभिराम ।
उपमा कहत बिचारि जनु, रच्यो दुलीची काम ॥
जंघ थम्भ सम कलदिके, उन्नत सुभगानितम्ब ॥
अति सुन्दर पिंडुरीलखे, करत मदन आलम्ब ॥
अम्बुज सम कर पद अरुणारे ❀ थिरन बुद्धि मोखान निहारे ॥
तनमन काम सरिज उजियारी ❀ मनहुँ दीपते दीपक बारा ॥
एक समय यदुवंश नरेशा ❀ देखि चकित भे अद्भुतवेशा ॥
मृगया फिरत बिलोकत राजा ❀ बिहरतविपिनकरततनुसाजा ॥
भयो कामवश ताहिं विलोकी ❀ चितवतचकितनयनजलरोकी॥
देखि स्वरूप नराधिप फूले ❀ जनु मन्मथहि डोल कढिझूले ॥
प्रेम सो डारि डोलावत खींचे ❀ कबहुँ उरध मन कबहूँ नींचे ॥
करत विचार नरेश सुजाना ❀ प्रिय वश भयो हरे विधिज्ञाना ॥
रम्य अरम्य जानि नहिं जाई ❀ समुझिसमुझिनृपमनपछिताई ॥
द्विज कुमारि की भूप किशोरी ❀ मन्मथ विवश करी मतिभोरी ॥
विप्रसुता तब बात अयोगा ❀ सुनि परन्तु हँसिहै सबलोगा ॥
दो०-भूपसुता जो होइ तब, बनि आई सब बात ।
होअगम्यतौंनीकनहिं, समुझिसमुझिपछतात ॥
विस्मय हर्ष विवश नरनाहू ❀ धरि धीरज मन करत उछाहू ॥
मै अपने मन की गति जानत ❀ कबहुँअसयथपदनहिंआनत ॥
इत विधि रच्यउ मोर संयोगा ❀ योग त्यागिनहिंहोइ अयोगा ॥
मन्मथ विवश भूप कहँ जानी ❀ तब यह भई गगनपथबानी ॥
विश्वामित्र मेनका नारी ❀ भा विहार भई प्रकट कुमारी ॥
सो शकुन्तला सब गुणखानी ❀ तुव नरेश होई यह रानी ॥
गाधिसुवन क्षत्रिय कुल माहीं ❀ जानत सब अयोग कछु नाहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनि उतङ्ग कीन्हा प्रतिपाला ❀ गगनागिरासुनियगन भुवाला ॥
निकट गये नृप विवश अनंगा ❀ प्रेम सहित करि चपल तुरंगा ॥
दो०-पूछेउ नृप कित बन फिरत, कापुनिनामतुम्हार।
सुता अलौकिक कौनकी, मन बश करे हमार ॥
बोली बिहँसि शकुन्तला, सुनिये भूप प्रसंग।
तुव क्षत्रिय हम विप्र की, सुता मनोहर अंग ॥
सुनि उत्तंग विदित सुखरासी ❀ तासु सुतामै विपिन विलासी॥
अगम सदा क्षत्रिय कुल माहीं ❀ बात अयोग उचित नृपनाहीं॥
तासु गिरा सुनि कह्यउ नरेशा ❀ जनि बोलहुअसबचनमदेशा ॥
विधिसुत आत्रि विदित संसारा ❀ भयो चन्द्र सुत बुद्धि उदारा ॥
शशिसुत बुध बुधसुत जगजाना ❀ इला पुरुवर नाम वखाना ॥
तिहि कुल भयो मोर अवतारा ❀ सम संयोग हमार तुम्हारा ॥
जिमि रति काम शचीसुरनायक ❀ जलदयथादामिनिसुखदायक ॥
तिमि संयोग हमार तुम्हारा ❀ बुद्धि विचार रचेउ करतारा ॥
तव स्वरूप सुन्दर जलरासी ❀ मगन होत कुरुपार विलासी ॥
दो०-तुमाहिं बिलोकत कुसुम धनु, लिये कुसुमशरहाथ।
तिल तिल तनु जर्जर करेउ. ह्वै सकोपरतिनाथ ॥
तब त्रिय रूप ठगोरी डारी ❀ मंदहास जनु फांसि पवारी ॥
असि पुत्रिका कटाक्ष अमोला ❀ कर्षत प्राण मंत्र मिठबोला ॥
विष मोदक कपोल युक तोरे ❀ निरखत छहरि गयो तनुमोरे ॥
अधर सुधारस मोहिं पियावउ ❀ करि करुणाअबवेगिजियावउ ॥
तुम बिन मैंन जियउँ घटिकाहू ❀ समुझत अबनबहुरि पछिताहू ॥
मूरि विशल्य करन कुच तोरो ❀ परसत मिटै व्यथा तब मोरे ॥
संजीवनी तोर सम्भोगा ❀ रहै न काम योनि महँभोगा ॥
है यह योग और कोउ नाहीं ❀ ताते विनय करत तुम पाहीं ॥
दो०-नयनवयन तनमिलि रहो. रहीमिलनकह देह।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सो मिलाइ अस नेह ते, त्यागहु सब सन्देह ॥
कहेउ उतंगसुता सुनु राजा ❀ धीरज धरे सरै सब काजा ॥
पितु आयसु विन यह वड़िहासी ❀ रहौ चुपाई जानि निजदासी ॥
कह नृप और विचार न कीजै ❀ अंग दान हितकरिमोहिंदीजै ॥
नैन बैन मिलि मिलेउ सनेहा ❀ यह अभिलाष मिलै सबदेहा ॥
सुनि सलज्ज उतंग किशोरी ❀ बोली मधुर गिरा करजोरी ॥
तन इत मन तुम्हरे मन साथा ❀ करि सङ्कल्प रहत नरनाथा ॥
कछु दिन में करि हैं जयमाला ❀ बोलि पिता मुनिदेव भुवाला ॥
डारब सुमन माल तव ग्रीवा ❀ होइ विवाह रहे श्रुती सीवा ॥
तुम कहँ देह देइ हम राखी ❀ तजौ शोचनृप सब सुर साखी ॥
दो०-रचेउ विरञ्चि विचारिकै, मोर तुम्हार विवाह ।
तुम तजि करहुं न आन पति, धरहु धीर नरनाह ॥
श्रीहरि हर गिरिजापतिं आना ❀ वरहुं तुमहिं की त्यागउँ प्राना ॥
भजौं न आन पुरुष तनु छूटै ❀ पितु नरेश ताजि पीके लकूटै ॥
बूड़ौं वारि अनल तनु जारी ❀ वरौं तुमहिं की रहौ कुमारी ॥
सुनि प्रियवचनतुरंग तजिदीन्हा ❀ तहँ गन्धर्व व्याह करिलीन्हा ॥
काम विवश नृपज्ञान भुलाना ❀ आलिंगनकीन्हो बिधिनाना ॥
शकुन्तला निज नाम बतावा ❀ पुनिनृपगमनभवनकहँ आवा ॥
तब शकुंतला मन्दिर आई ❀ दोहद भयो शोच अधिकाई ॥
सो चरित्र मुनिनायक जाना ❀ जोकछुभयोसकलधरि ध्याना ॥
पूँछेउ ऋषै सर्व कहि दीन्हा ❀ जिमिगन्धर्वव्याहनृप कीन्हा ॥
दो०-धीरज दियो शकुन्तलै, उत्तम कुल नरनाह ।
यामें सुता कलंकनहिं, करि लीन्हों तुम व्याह ॥
ताके भयो भरत महिपाला ❀ धर्म शील बलबुद्धि विशाला ॥
षोड़श वर्ष भयो नरपालक ❀ खेलहिंविपिनख्यालसँगबालक॥
महिष शृंग धरि कबहुँ उखारैं ❀ कबहू अँगुलि व्याल मुखडारैं ॥
सिंह लूम धरि कबहुँ भ्रमावैं ❀ द्विरदमतंगहि दशनन लावैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अदिति कुमार पुरंदर जैसे ❀ सुत शकुंतला जायो तैसे ॥
अनसूयाके यथा निशाकर ❀ कश्यपके जिमि भये प्रभाकर॥
रविके मनु मनुतनय प्रियव्रत ❀ तिमि शकुंतलातनय धर्मव्रत ॥
तरणि समान तेज तनु माहीं ❀ बल पटतरिय बलीकोउ नाहीं ॥
धनुर्वेद मुनि ज्ञान पढ़ाई ❀ अस्त्रशस्त्रसिखिकरिनिपुणाई ॥
राज्यनीति बहुभाँति पढ़ायो ❀ हयगजरथहिसोयुद्ध सिखायो ॥

दो०-पढौ कि पुनि चटसार महँ, खेलन जाय शिकार।
सवलसिंह चौहान कहि, मुनि मन मोद अपार॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलासिंहचौहानभाषाकृते
ऊनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

राज्य योग सब लक्षण जानी ❀ निकटबुलायकहतमुनिज्ञानी ॥
पितु तुम्हार शशिवंश नरेशा ❀ नृप दुष्यंत सब जानत देशा॥
अति बलिष्ठ दुहितासुत मोरा ❀ सकल धरामंडल है तोरा ॥
भूपति रहै कृपा अभिलाखे ❀ रहै सुरेश जासु रुख राखे ॥
तुम पितु सभा अलौकिकलीला ❀ बसैं दिगीशन केर उकीला ॥
सोमवंश महँ जन्म तुम्हारा ❀ अत्रि गोत्र जानै संसारा ॥
पुरूरव इला पितामह नामा ❀ तेज निधान शूर बल धामा ॥
पितु गृह चलहु करहु निज राजू ❀ सहित धरा धन सेन समाजू ॥
पुनः बहिक्रम भूप बुढ़ाना ❀ और नसुततुमकहँ नहिंजाना ॥
चिंता विवश भयो नृप अंगा ❀ प्रातहि तात चलहु मम संगा ॥
तुमहिं विलोकि भूप सुख पाइहि ❀ राज्य देइ पुनि कानन जाइहि॥
तपचर्या की करत विचारा ❀ सुतहित विपिननजाइँ भुवारा ॥
तुमहिं विलोकित्यागिसबशूला ❀ नृपतपकरहिं सहितअनुकूला ॥

दो०-प्रातहि सहित शकुन्तला, चलहु हमारे साथ।
सुखी करहु दुष्यंत कहँ, होहु पुत्र नरनाथ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अस कहि पुनि मुनि सवनलागे ❀ उदित होत उदयकर जागे ॥
सुत शकुंतला सहित पयाना ❀ कीन्हकहामुनिज्ञान निधाना ॥
आये चन्द्रवंश रजधानी ❀ दर्शन दीन्ह सभा महँ आनी ॥
देखि महीपति कीन्ह प्रणामा ❀ दीन्हअशीशमुनीश अकामा ॥
अर्घ्य देइ आसन बैठारे ❀ है प्रसन्न तब बचन उचारे ॥
सुनहु भूप यह भरत कुमारा ❀ तनय तुम्हार विदित संसारा ॥
अस कहि पुनि प्रणाम करवावा ❀ प्रीतिसहित निजढिग बैठावा ॥
देखत भूप भरत की ओरा ❀ अतिसुंदर तनु वयस किशोरा ॥

दो०-वृषभ कंध दीरघ भुजा, दीरघ वक्ष विशाल ।
चंद्र वदन कटि केहरी, कमल विलोचन लाल॥

कछु शिशुता कछु तनु तरुणाई ❀ सहित वीरता कढ़त लोनाई ॥
तब शकुंतला सभा मँझारी ❀ आई तुरत दिशातम हारी ॥
नृपहिं देखि मनहीं मन माहीं ❀ कीन्हप्रणामप्रगट कछुनाहीं ॥
देखत चकित सभा सब कोई ❀ शची किधौं रंभा रति होई ॥
मंजुघोष मेनका घृतासी ❀ विश्वमोहिनी कुल की रासी ॥
प्रभा सरस शोभा तनु जाके ❀ नहिं त्रिलोक पटतर महँताके ॥
जा तनु की सुंदरता ताकी ❀ सलज होन उरवशी वराकी ॥
की रोहिणी किधौं अनुसैया ❀ अरुन्धतीकी उदित जोन्हैया ॥

दो०-रहे मौन नहिं कहत कछु,शोभा विपुल निहारि ।
दखी भूप शकुंतला, पहिचानी निज नारि ॥

कह नृप कौन कहाँ ते आई ❀ बोली मधुर गिरा शिर नाई ॥
करत हँसी की बिन पहिचाने ❀ पूँछतनाथ कि हमहिं भुलाने ॥
भूली सुरति भई मति भोरी ❀ मैं शकुन्तला अनुचरी तोरी ॥
दृग नीचे करि कहत सलाजा ❀ बनमहँमिलीसमुझमन राजा ॥
जहाँ उतंग केर पर्णशाला ❀ परम गहन सुधिकरहु भुवाला ॥
नदी पुनीत तरणितनया तट ❀ सुन्दर सुखद छाँह शीतलबट ॥
नाम बताय भवन तुम आये ❀ करिप्रबोध मोहिं भवन पठाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भरत जन्म की कथा सुनाई ❀ तुम्हरे दरश हेत इत आई ॥
यह लालसा न दूसर काजा ❀ छाँड़ि विपिन भूलि सुधिराजा॥

दो०-देखी सुनी न मैं कछू, बिहँसि कही महिपाल।
सुनहुसभासद मिलिसकल,मृषाकहतयहबाल॥

यह त्रियरत्न पुरुष के लोभा ❀ सानतमाहिं चहतनिजशोभा ॥
वारवधू की गति पहिचानी ❀ है कुलटा मन में मैं जानी ॥
सुनि शकुन्तला कह मन माखी ❀ तब नरेश दीन्हों सुर साखी ॥
पतिव्रत जो छाँड़ौं मैं नाथा ❀ तौ तुम करौ खंडशत माथा ॥
अस कहि पतिव्रता रिसवाई ❀ कहत सुरन ते भुजा उठाई ॥
सुनत श्रवण तुम देतन साखी ❀ ह्वैहौ तेज हीन बिन आँखी ॥
सुनि यह पतिव्रता भय माना ❀ भई गगन सुर गिरा प्रमाना ॥
सम संयोग कलंक बिहीना ❀ अति पुनीत नृपनारिप्रवीना ॥
भरत नाम यह तनय तुम्हारा ❀ करहु भूप तुम अंगीकारा ॥

दो०-सुनहु नरेश शकुन्तला, सब बिधि समसंयोग।
भइ सुरगिरा प्रमाण नभ, सुनि हर्षे सबलोग॥

सकल सभासद निकट बुलाई ❀ अति आनन्द न हृदयसमाई ॥
कहत सुनाइ सबन ते राजा ❀ गगन गिरासबसुनहु समाजा ॥
है शकुन्तला मम पटरानी ❀ निश्चय भरत पुत्र सुखदानी ॥
लोक वेद ते नारि कुमारा ❀ कीन्ह प्रथम नहिं अंगीकारा ॥
हँसिहैं लोग नरेश लोभाने ❀ तरुणत्रियाअरुसूत बिनजाने ॥
राख्यो गृह बाड़ि कीन्ह ढिठाई ❀ अस विचारि सुरगिरा सुनाई ॥
प्रथमहिं भई बिपिन नभ बानी ❀ करि विवाह तब कीन्ही रानी ॥

दो०-अस कहि भूप शकुन्तला, दीन्हीं भवन पठाइ।
बैठारे पुनि मोदते, भरत समीप बुलाइ॥

कह नरेश तब सुनहु उतंका ❀ कहिये नाथ मिटै आशंका ॥
देवन सम संयोग बखाना ❀ क्यहि प्रकारते मैं नहिंजाना ॥
सुनि उतंग मोदक अधिकाई ❀ कथा प्रथम मुनि वरणिसुनाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुम शकुन्तलहि मुनिवर भाखी ❀ सुनहु भूप विधि ते षटसाखी ॥
एकै भांति प्रकट भये दोऊ ❀ कथा विचित्र सुनहु नृपसोऊ ॥
विधियुत कुश जानत संसारा ❀ प्रकट करे कुशनाम कुमारा ॥
तिनके गाधिराज बल खानी ❀ अङ्गदेश कीन्हीं रजधानी ॥
कौशिक तनय कौशिकी नामा ❀ तनयाविदितशील गुणधामा ॥
काम विपिन तपकीन्ह महाना ❀ भई पुनीत नदी जग जाना ॥
कौशिक मुनितनुजनितअनंगा ❀ भई सुता मेनका प्रसंगा ॥

दो०-सो जग विदित शकुन्तला, सबविधिसमसंयोग।
भयो तुम्हारे भूप सुत, अर्ध सिंहासन योग ॥

सुनहु कथा चित लाइ नरेशा ❀ निजकुलकीसबत्यागिअँदेशा ॥
कीन्ह विरंचि आत्रि सुत नामा ❀ तप मूरति मुनिवर गुणधामा ॥
भे जग विदित चन्द्र सुत ताके ❀ निशितम रहत कंठतर जाके ॥
अमिय मयी अरु सुरपति मीता ❀ धरो शीश शिव जानिपुनीता॥
सप्तविंश त्रिय जग उजियारी ❀ अतिंप्रियतिनहिंरोहिणीनारी ॥
तिनके सुत बुध बुद्धि निधाना ❀ भये सौम्य ग्रह सबजगजाना ॥
इला पुरुरवा भे बुध बालक ❀ अतिबलिष्टश्रुतिपथप्रतिपालक॥
भयो कामवश चेत न आवा ❀ विपिन फिरत उरबशी भ्रमावा॥
दोखि स्वरूप ज्ञान सब गयऊ ❀ बिसरी देह काम बश भयऊ ॥
हाँसि दरशाइ बिलोचन तीछे ❀ चली पराइ चला नृप पीछे ॥
नग्न शरीर नागिन तरवारी ❀ हा उरबशी पुकारि पुकारी ॥

दो०-प्रकट होइ कहुंनिकटहोइ, कबहुं जाइ द्रुमओट।
कबहूं दिखावत हासमृदु, कबहुंकरतदृगचोट ॥

कबहुँक प्रकट होत त्रिय आगे ❀ चले जात नृप पाछे लागे ॥
निकट बिलोकि गगन उड़िजाई ❀ दूरि देखि पुनि दइ दिखाई ॥
कबहुँ वाम दक्षिण दिशि पूरा ❀ राग अलाप बजाइ तमूरा ॥
याहि विधि गगन बीच लै जाई ❀ श्रमित निहारि प्रीतिअधिकाई॥
निजवशजानि दया अति बाढ़ी ❀ भूप समीप जाइ भइ ठाढ़ी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करि विनती नृप भवन लिवाये ❀ करि प्रसंग तुमको उपजाये ॥
यथा पुरुष तुम तिमि वह दारा ❀ सब विधिसमसंयोग तुम्हारा ॥
कहि यहि विधि मुनिवर उत्तंगा ❀ गये मण्डली मेटि असंगा ॥

दो०-बानप्रस्थ बिचारि अब, विपिन गये ततकाल ।
लै निज हाथ शकुन्तला,भरत भये महिपाल॥

जिनको सुयश पयोनिधि पारा ❀ गये उलंघि पहाड़ अपारा ॥
तिन पुरु नाम तनय उपराजा ❀ भयो सकल पुहुमीपति राजा ॥
नहुष नृपति तिनके बलदाई ❀ लीन्ह इन्द्रपद इन्द्र भगाई ॥
तिनके सुत पुनि भये ययाती ❀ तेज प्रताप विदित सबभाँती॥
अरजा पुनि दूसरी कनिष्ठा ❀ नृप की नारि नाम शरमिष्ठा ॥
शुक्रसुता ज्येष्ठी देवयन्या ❀ लघुत्रिय वृषपर्वा की कन्या ॥
युग पत्नी दश सुत उपजाये ❀ तिनके भारत सकल कहाये ॥
कथा विचित्र सुनत सुख पावा ❀ पुनिसात्यकिहरिपदशिरनावा ॥
आगे चलि हस्तिनपुर देखी ❀ चित्रित चित्र विचित्र विशेषी ॥
अति उतंग सोहत पुर फाटक ❀ रचित किंवार द्वारमणि हाटक ॥
बसत लसत पुरद्युति अधिकाई ❀ जनु सुर नगर वास तहँ आई॥
बसत तहाँ दुर्योधन पोचा ❀ कहत इन्द्रसन मन संकोचा ॥

दो०-पुरजन देवी देव से, पांडव गये विदेश ।
करत नहुष जनु इन्द्रपथ, भागि निकारि सुरेश ॥

नन्दनवन निन्दत बन बागा ❀ रुचिर वापिका कुप तड़ागा ॥
मन्दाकिनि सम सोहत गंगा ❀ उपमा उठत अनूप तरंगा ॥
वर्ण वर्ण पक्षी रव शोरा ❀ वेद पढ़त जनु सुर दुंहुँ ओरा॥
शंकरागिरि जनु रुचिर अटारी ❀ चातुर चारु सहित गचढारी ॥
रंग रंग ध्वजपांति विभाँती ❀ मनहु सपक्ष शैल उतपाती ॥
सोहत जहँ तहँ रुचिर कँगूरा ❀ त्रिय नगरी शिर सुन्दर जूरा॥
खुले द्वार सहित सुखरासी ❀ सुरपुर सरिस करत जनु हासी ॥
कोटिन गुड़ि उड़ि उड़ि रँग राची ❀ नगर नगारनकी धुनिमाची ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-पुरशोभा हर्षत निरखि, गये निकट भगवान।
सबलसिंह चौहान कह, को करि सकै बखान।

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

दो०-दारुक हाँक्यो अश्व रथ, सुमिरि गणेश महेश।
नगर हस्तिनापुर तबै, कीन्हों तुरत प्रवेश॥

बनिता अनुपम रूप विलोके ❀ इकटक लखैं नयन पल रोके॥
हरि शोभा सागर सुखसारा ❀ त्रियलोचनझखकरत बिहारा॥
गली बजार छतीसो कोमा ❀ निरखतमुखचकोरजामिसोमा॥
सात्यकिसहित अलौकिक वेखा ❀ चले जात पुरवासिन देखा॥
तरणितमीसकि तरणि किशोरी ❀ की मधु मदन मनोहर जोरी॥
हरि हर कहि वर्णत है कोउ ❀ नर नारायण हैं की दोऊ॥
सात्याकि सहित सोह भगवन्ता ❀ इन्द्रसहित जनुजात जयन्ता॥
मारग महँ शोभा अधिकाई ❀ मनहुँ रामलक्ष्मण दोउ भाई॥

दो०-पीतवसन सुन्दर ललित, कलितविभूषण गात।
फलितमनोरथसबनके, निरखत सुखसरसात॥

प्रभु शोभा वर्णत नर नारी ❀ निरखिनिरखितनुदशाविशारी॥
छबि अभिराम कामशत कोटी ❀ हरि पटतरिय बात यह छोटी॥
प्रभु शोभा सागर अवगाहा ❀ सुरनर मुनिकोउ पावनथाहा॥
इकटक चितै परस्पर कहई ❀ इनकी सरि येई जग अहई॥
उपमा काहि देइ कों योगा ❀ कहत परस्पर सब पुर लोगा॥
सरिसात्यकि करिउभय विभागा ❀ कोऊ कहत ज्ञान वैरागा॥
तहँ प्रभु मोहन तन देखरायउ ❀ मोहे सब तन सुधि बिसरायउ॥
प्रभु शोभा निरखत कोउ ठाढ़े ❀ वर्णत कोउ नयन जल बाढ़े॥

दो०-मन हरिवश सरवस सहित, बिसरि गई सुधि देह।
प्रभु तनुद्युति वर्णन करत, पुरजन सहितसनेह॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कमल नयन कुण्डल द्वै कानन ❀ अतिकमनीयकलानिधिआनन॥
भृकुटी कुटिल नासिका कीरा ❀ उर बनमाल मनोहर हीरा॥
क्रीट मुकुट सिर ऊपर धारे ❀ दाड़िम दशन अधर अरुणारे॥
उन्नत भाल सुजन मन भावन ❀ सुन्दरलोल कपोल सुहावन॥
वृषभकन्ध अरु दीरघ बाहू ❀ वक्षविशाल सुखद सब काहू॥
पानपीठि उर भृगुपद रेखा ❀ कटि केहरी उदर त्रय रेखा॥
पद्मपाणि पदपद्म अनूपा ❀ अतिविशालदोउयदुकुल भूपा॥
हरिहि विलोकि नागपुर नारी ❀ काम विवश तनुदशा विसारी॥
भूषणहीन न लाज सँभारा ❀ निरखैं आइ लाज तजि दारा॥

दो०-दधि दूर्व्वा अक्षत अमल, एलादिक झरिलाय।
करैं सुमंगल विविध विधि, मोहन राग सुनाय॥

जात राजमारग प्रभु सोहे ❀ पुर नरनारि देखि छबि मोहे॥
तिन मोहिनी रूप प्रभु देखा ❀ कहि न सकैं कवि शारदशेखा॥
शारद शम्भु गणेश षड़ानन ❀ वर्णत वृद्ध भये चतुरानन॥
नारदादि केहु पार न पाये ❀ विविधभाँतिकहि नेतिसुनाये॥
सुर सुरेश कहि पार न पावा ❀ अशनृपसुनहुव्यास जसगावा॥
प्रभु छाब वारिध कोटि महाना ❀ सीकरसमत्रिभुवन छबिनाना॥
तदपि तासु उपमा सम नाहीं ❀ तुमते कहत सुनी गुरु पाहीं॥
सुनिये गिरा अमियरस बोरी ❀ कीन प्रश्न पुनि नृप करजोरी॥
सुनत श्रवण नहिंकथा अघाई ❀ काहिय कृपाकरिअब ऋषिराई॥
सुनि नृप वचन प्रीतिरस पागे ❀ कथाविचित्र कहनसुनि लागे॥

दो०-दोष हरणि सब सुख करणि, भारतकथारसाल।
जनमेजय चितदै सुनहु, मिटै मोह जगजाल॥

भीषम विदुर सुनी यह बाता ❀ नगर प्रवेश कीन्ह जनत्राता॥
कृप अरु द्रोण साहित अनुरागे ❀ करत प्रणाम लीन्ह चलिआगे॥
भीषम द्रोण देखि हरि आये ❀ पुरजन साहित प्रेम उर छाये॥
उतरे कृपासिंधु भगवाना ❀ मिले बहुत कीन्हें सनमाना॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भेंटत कृपहिं प्रीति अधिकाई ❀ कुशल प्रश्न पूँछत यदुराई ॥
नाथ कुशल देखत्त अब तुमको ❀ हृदय लाय भेंटब प्रभुहमको ॥
पातित उधारण विरद सँभारा ❀ भयो सकल अघ दूरि हमारा॥
ताही समय विदुर चलि आये ❀ परे चरण नहिं उठत उठाये ॥
गहि भुज कृपासिंधु भगवाना ❀ लीन्ह लाय उरकारसनन्माना ॥
सुनहु विदुर तुम अति विज्ञानी ❀ जिनका मुख देखत अबहानी॥
ज्ञान विराग योग गतिआनत ❀ धर्म स्वरूप भक्ति रस जानत॥
जीतेउ काम कोध मद लोभा ❀ कार न सकै माया मनलोभा ॥
हरि सेवक प्रहलाद समाना ❀ बिधिसमबुद्धिविवेक निधाना ॥
रविनन्दन सम नीति बिचारा ❀ योगिन महँजिमिसनतकुमारा॥
भक्त अनन्य यथा हनुमन्ता ❀ अम्बरीष नृप सम शुचिसन्ता ॥
करि सन्मान कृष्ण बहुभाँती ❀ पुनिपुनिमिलतलगावतछाती ॥
बोलेउ विदुर अकिञ्चन मीता ❀ नाम तुम्हार विदित जन हीता॥
दिरद तुम्हार निगम कहि गाई ❀ निज दासन कहँ देत बड़ाई ॥

दो० मोते को संसार महँ, महा अधम यदुवीर ।
अधम उधारण नाम तुव, सुनत होत ऊरधीर ॥
भक्त बछल तुव नाम सुनि, तब मन बडो डराय
सुने पतित पावन विरद, हर्ष न हृदय समाय ॥

पूरव नाथ पाप हम कीन्हा ❀ दासी योनि जन्मविधि दीन्हा ॥
अघभाजन नहिं भजन तुम्हारा ❀ केहि विधि नाथ मोर निस्तारा॥
परम अधीन विरद मुख बानी ❀ सुनि श्रीकृष्ण भक्तिरसरानी ॥
कीन्ह प्रबोध नाथ विधि नाना ❀ हृदय लाल कीन्हों सनमाना॥
तुमहौं विदुर धर्म्म अवतारा ❀ परमभक्त अरु ज्ञान उदारा ॥
पुरवासिन अभिवन्दन कीन्हा ❀ सौम्यरूप प्रभु दर्शन दीन्हा ॥
श्वेत कमल लीन्हें गोपाला ❀ पहिरे श्वेत दिरद माणिमाला ॥
अंग अंग महँ भूषणभूरी ❀ मृदु मुसक्यानिविलोकनिरुरी ॥
पीत वसन कुलकुंडले कानन ❀ अतिकमनीयसुधाधर आनन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सात्यकि रूप लखे बनवारी ❀ निरखिनिरखिछबिहोतसुखारी ॥
भिषम द्रोण सहित यदुराई ❀ भूप भवन कहँ चलेउ लवाई ॥

दो० सुनी श्रबण आयो निकट, पँवरिद्वार यदुराय ।
लेन हेत कुरुनाथ तब, दिन्हें अनुज पठाय ॥

विकरण दुश्शानन वलधामा ❀ दुर्मुख दुसुख द्विरद पुनिनामा ॥
निपट निकट जब आनि निहारा ❀ मदसमेत तिन कीन्ह जोहारा ॥
दुर्योधन के बान्धव आये ❀ तहँ प्रभु उग्र रूप दरशाये ॥
चक्र एक कर शारँग पाणी ❀ एकपाणिमहँ निशितकृपाणी ॥
जैसे प्रलय काल महँ शंकर ❀ अरुण नयन अरुबेष भयंकर ॥
रूप त्रिविक्रम समर महाना ❀ कुरुगण देखि अचम्भव माना ॥
डरपे दुर्योधन के भाई ❀ हरिहि देखिमूख गे कुम्हिलाई ॥
तम गुण उनहिं कृष्ण देखरावा ❀ भुप भेद केहुँ जानि न पावा ॥
मोहन रूप देखि नर नारी ❀ लोकलाजतजिचलीं पछारी ॥
सात्वकि रूप विदुर तहँ देखा ❀ कहत नाइ मन हर्ष बिशेषा ॥
राजा देखि प्रजा सुख पाये ❀ भयेमुदितनिजनिजगृहआये ॥
यह चरित्र कीन्हों भगवाना ❀ और को भेद औरँ नहिंजाना ॥

दो० जैसी जाकी भावना, तेहि तैसो भगवान ।
पल महँ दरशायो चरित, मर्म न काहू जान ॥

पँवरि दुआर गयो यदुनाथा ❀ भीषम द्रोणाबिदुर कृप साथा ॥
द्विरद दुमत्त दुशासन संगा ❀ दुर्मख विकरण वीरँ अभंगा ॥
दुर्योधन को बिभव निहारा ❀ इन्द्र सरिस को वरणै पारा ॥
प्रथम पंवरि कोटिन धनुधारी ❀ रक्षक तरुण पुरुष बलभारी ॥
दूसर दुर्योधन कर चेला ❀ उमड़ेउ मनहुँ सिंधुतजिबेला ॥
ते सब शक्ति भुशूंडी लीन्हें ❀ रक्षहि द्वार सजग चितदिन्हें ॥
तिसरे द्वार करहि बहू हूहा ❀ कुन्त पाणी तहँ मनुज समुहा ॥
गये कृष्ण चलि चौथा कक्षा ❀ रक्षक महा मल्ल बहु दक्षा ॥
मुद्गर भिन्दिपाल कोउ सांगी ❀ गहे सचेत खड्ग कोउ नांगी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पंचम पँवरि द्वार हरि आये ❀ बिबिध भाँती तहँ यंत्रलगाये ॥
तीनि लक्ष भट मत्त शराबी ❀ लीन्हपाणिज्वालित मस्ताबी ॥
दो०-द्रोण कर्ण सम तूलके, अयुत वीर बरीयार ।
गर्जि गदा गहि गर्वते ठाढे षष्टम द्वार ॥
सप्तम द्वार खड़े बहु खोजा ❀ केहरि से किरात कांवोजा ॥
विविधिन भाँति अस्त्र कर माहीं ❀ जिनहिंदेखि सुरअसुरसकाहीं ॥
वर्णत विरद बन्दिजन जूहा ❀ वेतपाणि दरवानि समूहा ॥
वेतपाणि तहँ जाय जनाये ❀ मिलन हेतु यदुनन्दन आये ॥
लावहु काहि नृप आयसु दीन्हा ❀ तेहि अवसर हरिदर्शन दीन्हा ॥
प्रभुहि विलोकि उठयो कुरुनाथा ❀ सोबल शकुनि कर्ण लै साथा ॥
ताके हृदय गर्व अति भारा ❀ गये निकटचलिहरिहिजोहारी ॥
धनमद अन्य अधम आभिमानी ❀ ज्ञानहीन कछु कानीन मानी ॥
दो०-उत्पति थिति नाशन करण, विश्वभरणभगवान ।
नरकरि जानत ताहि खल, सबलसिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

कृष्ण समेत चला कुरुराजा ❀ धृतराष्ट्रकपहँ सकल समाजा ॥
भीषम द्रोण कर्ण सँग लीन्हें ❀ बांधव सब परिवारित कीन्हें ॥
गयउ भूप पहँ बिदुर अगारी ❀ कह्यो जाय आवत बनवारी ॥
कहत भूप कोउ मोहि उठावहु ❀ चलहुवेगि लैहारीहीमि लावहु ॥
सञ्जय गहि कर नृपहि उठायो ❀ कृष्ण समीप तुरत पहुँचायो ॥
भेंटे कृपासिंधु उर लाई ❀ नृप आनँद अति उरन समाई ॥
कुशल प्रश्न पूँछत ब्रजराजहिं ❀ गयो भूपलै साहित समाजहिं ॥
निज समीप हरि कहँ बैठारा ❀ बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा ॥
दो०-बहुलीक भीषम करण, द्रोणी द्रोण समेत ।
सोमदत्त सैंधव शकुनि, बैठे सभा निकेत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कृप अरु शल्य जान सब कोऊ ❀ भूरिश्रवा अलम्बुष दोऊ ॥
पुत्र पौत्र भूपति के जेते ❀ बैठे दुर्योधन ढिग तेते ॥
बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा ❀ मगधराज तेहिं सभा विराजा ॥
भूप कलिङ्ग और कृतवर्मा ❀ नृपति वृहद्बल सहित सुशर्मा ॥
जयनराज शशिवेद नरेशा ❀ नृपति उलूक बनाइ सुवेशा ॥
औरौ देश देश के नायक ❀ दुर्योधन के सकल सहायक ॥
हरि आगमन सुनत सजिसाजा ❀ धृतराष्ट्रक गृह जुरो समाजा ॥
यथा योग्य बैठे नृप झारी ❀ विदुर सभा विधिवत बैठारी ।
बैठे भूप सहित वनवारी ❀ सञ्जय नृप के बैठ पछारी ॥

दो०-सुस्थित अति आनन्द ते, नृप समीप घनश्याम ।
हरि दाक्षिणादिशिसात्यकी, लखैविलोकनिवाम ॥

यदुनन्दन दिशि बारहिं बारा ❀ निरखत विदुर अनंद अपारा ॥
परत निमेष न यक टक ठाढ़े ❀ मानहुँ चित्र माँझ लिखिकाढ़े ॥
हरि छबि देखत चष अनुकूली ❀ जानेत सनेह देह सुधि भूली ॥
क्षण क्षण प्रभुपदमञ्जुकपोला ❀ भ्रमत विदुर चितप्रेमहिंडोला ॥
देखत होत न मन संतोखा ❀ यथा अडोल खेल को धोखा ॥
विदुर दशा जब कृष्ण निहारी ❀ कर्णहिं निकट लीन्ह बैठारी ॥
कृप अरु द्रोण विदुर दिशि दोऊ ❀ देखि सप्रेम सराहत सोऊ ॥
धन्य विदुर विज्ञान निधाना ❀ नर तनु पाई भक्तिरस जाना ॥
काम क्रोध ताजि सब संसारी ❀ भजत सदा अघहरण मुरारी ॥

दो०-विष रस इव त्यागी विषय चरणकमल लवलाय ।
रहत शरण यदुनाथ की, नाते नेह बिहाय ॥

कृपादृष्टि प्रभु विदुर विलोकी ❀ भरे मोद मन कहेउ बिशोकी ॥
हरि की देखि प्रीति अधिकाई ❀ अति अनंद नहिं हिये समाई ॥
गालवगण मन मोद अपारा ❀ पुलकावली नयन जल धारा ॥
देखत रूप चक्षु पल रोके ❀ सुरसिहाततेहि भाग विलोके ॥
कह मुनीश यह कथा सुहाई ❀ तुव हित हेतु भूप मैं गाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अब मै कहब विचित्र कहानी ❀ सावधान सुनु नृप सज्ञानी ॥
सुनत रहत नहिं अघ लवलेशा ❀ शोक मोह भ्रम मिटै नरेशा ॥
धृतराष्ट्रक अति आदर कीन्हा ❀ भोजन हेतु उतर हरि दीन्हा ॥

दो०-प्रीति न रंचक तुम विषे, नहिं हमरे आपांति ।
कौन हेतु कीजै अशन, सुनत भूप ता पांति ॥

कहेउ भूप सुनिये जगतारण ❀ तुम तापाँति कहौंकेहिकारण ॥
सुनि नृप वचन कहत हँसि केशो ❀ सुनहु भूप तब मिटै अँदेशो ॥
हस्ती नाम भरत कुल जायो ❀ नगर हस्तिनापुरी बसायो ॥
तरणिसुता ते भयउ विवाहू ❀ तापत नाम विदित शबकाहू ॥
तिन यह कौरववंश चलायो ❀ ताते तुम तापती कहायो ॥
सुनि हरि बचन भेद सब जाना ❀ धृतराष्ट्रक मन महँसुखमाना ॥
कथा अपर तब श्रीमुख गाई ❀ सुनि सुखलह्यो सभासुखदाई ॥
अमृत सरस कृष्ण मुख बानी ❀ भीषम विदुर सुनत सुखमानी ॥
कह वैशम्पायन सुनु राई ❀ कथा विचित्र श्रवणासुखदाई ॥

दो०-बुद्धिचक्षु बोले बिहंसि, कहिये दीनदयाल ।
केहि बिधिते तपतीबरी, सुनि हस्ती महिपाल ॥

केहि बिधिते भा भूप मिलापू ❀ किमिउतपतिकहियेअबआपू ॥
सुनि नृप वचन कृष्ण अनुरागे ❀ कथाबिचित्र कहन असलागे ॥
रविमण्डल होइ जात बराकी ❀ भये दिनेश कामवश ताकी ॥
काम बाण ताहुके लागा ❀ रविदिशि देख भयो अनुरागा ॥
सो चरित्र सुरनायक जाना ❀ दीन्हों शाप क्रोध उर आना ॥
धरिमानुष तनु ह्वै व्यभिचारिणि ❀ वर्ष प्रयंत रहौ अपकारिणि ॥
ह्वै मानुषी रूप सोई दारा ❀ रविमंडल महँ करत विहारा ॥
मोच्यो शाप काल जब बीता ❀ तहौं गर्भपुनि सुरपति मीता ॥
भई सुता कर्दम ऋषि जानी ❀ सो उठाय निज आश्रमआनी ॥
गई सुरेश भवन पुनि बाला ❀ कीन्होंसुनि कन्या प्रतिपाला ॥
शशिसमबढ़तकढ़त द्युतितनकी ❀ जगरमगरजिमिदामिनिघनकी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

थिरनरहतलखिमतिमुनि जनकी ❀ होतलाजवश नारि अतनकी ॥

दो०-तरणिप्रभा तनु शशिवदनि, मृगनयनीकटिखीन।
पीन पयोधर मधु अधर, षोडश वर्ष नवीन ॥

तेहि पटतर रंभादिक नाहीं ❀ सुरी किन्नरी देखि लजाहीं ॥
तप्त स्वर्ण आभा तनु जानी ❀ तपती नाम धरो मुनि ज्ञानी॥
हस्ती भूपति फिरत शिकारा ❀ रविनन्दिनि गईविपिननिहारा ॥
औचक मिले पंथ मँह सोऊ ❀ देखि परस्पर बरबस दोऊ ॥
राजकुँवर रविजा अवलोकी ❀ देखत रूप दृगंचल रोकी ॥
तरुण वहिक्रम तरुणि किशोरी ❀ दामिनि वर्ण देह अति गोरी ॥
पहिरे तनु शुचि वसन सुरंगा ❀ मणिगणखचितविभूषणअंगा ॥
इंदु वदीन मृगशावक नयनी ❀ भृकुटीकुटिलविलोकि प्रवीनी ॥
लोल कपोल हँसनि मृदु बंका ❀ दमकत श्रवण तड़ित ताटंका॥
अधर प्रवाल लाल अरुणारे ❀ अहि उपमा लम्बित कच कारे॥
दाड़िम दशन नासिका नीकी ❀ देखत कीर तुंड मति फीकी ॥
कंबु कंठ अरु बाहु मृणाला ❀ कोमल कलित कमलकरनाला ॥
श्रीफल से कठोर वक्षोजा ❀ गेंद खेल जनु रच्यउ मनोजा॥
सूक्षम कटि अरु रूप अपारा ❀ लचकत पुनिपुनिकचघुँघुवारा॥
शभनितम्ब पुनि नाभि गँभीरा ❀ देखि भूप मन मन सिज पीरा॥
मनो मनोज कुसुम शर लीन्हा ❀ बाणनमारिलक्षलखिकीन्हा ॥

दो० सुघर पेंडुरी पद कमल, सूक्षम अँगुली बीश ।
कदलि पत्रसम पीठिपुनि, जनुविरंची जगदीश॥
बीस अंगुली कमल कर, लसत बीस नख लाल।
बीसकला जनु भौम धरि, करत प्रकाश विशाल॥

राजकुँवर तनु शोभा भारी ❀ देखि कामवश तरुणिकुमारी ॥
वय किशोरे तनु सुन्दरताई ❀ वरणि न जाई देखि मन भाई॥
क्रीट मुकुट शिर ऊपर धारा ❀ जगमगातमणिगणउजियारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आनन मनहुँ शरद शशिमंडल ❀ झल झलातकाननदोउ कुंडल ॥
भ्रूकुटी कुटिल लसित यहि ताका ❀ बिनगुणमनहुँमनोजपिनाका ॥
नासा की उपमा कवि गावत ❀ अतिविचित्रशुकतुंडलजावत ॥
दृग कछु श्याम कछुक अरुणारे ❀ सोहत जनु बंधुक अतिकारे ॥
सोहत कच मेढक मुखनेरे ❀ अतिहिहेतुजनुशशिअहि धरे ॥
वृषभ कंध युग बाहु विशाला ❀ कंबुक कंठ द्विरद मणिमाला ॥
वक्ष विशाल नाभि गम्भीरा ❀ कटि केहरि जंघा विस्तीरा ॥
अरुणचरण कर अरूण सोहाये ❀ अमल कमल शोभा दर्शाये ॥

दो० मनासेज सरिस महीपसुत, रूप शील गुण गेह।
नख शिख देखि अशेष छबि, तपती भई विदेह॥

देखि भूपसुत तरुणि किशोरी ❀ जानित सनेह देह भय भोरी ॥
शशि फूल कानन ताटंका ❀ अतिप्रकाश जनुविज्जुदमंका ॥
मुक्तमाल उर मणिगण हारा ❀ जनुकर निकर निशेष पसारा ॥
अंगन जटित ललित कर भूषण ❀ करत प्रकाश कमल पर भूषण॥
दशौ अंगुलन महँ दश मुद्रा ❀ चलतहलत बाजत कटिक्षुद्रा ॥
आस मास बिछिया टोरवारे ❀ पायँ पैजनी नेवर न्यारे ॥
वसन विभूषण बैस नवेली ❀ पूँछत भूप बिलोकी अकेली ॥
की तुम राजसुता सुरकन्या ❀ कवन हेतु कोहि फिरत अरन्या॥
तुव वश भयो प्राण अब मेरा ❀ कवनेउ यतन फिरत नहिंफेरा ॥
ताते कहो हमारो कीजै ❀ अब गन्धर्व व्याह करि लीजै ॥
तुमहिं विलोकि मदनधनुलीन्हों ❀ शरन मारि जर्जर तनु कीन्हो॥
मुर विशल्य करन तुम देही ❀ परसत मिटै व्यथा तनु देही ॥

दो०-सुन्दर शरल शरीरतब, जिमि मनासिज की पास।
फंसी जाइ ता बीच मन, देखि मनोहर हास ॥

तरणिसुता नृप सुत वश कीन्हा ❀ नृपकिशोरतेहिचितहरिदीन्हा ॥
निजवश रहो न कछु ताहूको ❀ फेरे फिरत न मन वाहुको ॥
दूनौं तनु मनोज वश भयऊ ❀ तहँ गन्धर्व ब्याह करि लयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यह करतब कर्दम ऋषि जानी ❀ दीन्ही सौंपि नृपहि गहि पानी ॥
हर्षि भूप तेह निज गृह आनी ❀ ढोल बजाइ कीन्ह पटरानी ॥
दो०—हस्ती नृपके तनय कुरु, पदिनीते उपतीय ।
तिनके सुत शंतनु नृपति, तहि ते तुम तपनीय ॥
शंतनु सागर को अवतारा ❀ भयो बड़ो तजसी भुवारा ॥
गंगा सागार को भा संगम ❀ ताहिते भीषम औविचल जंगम ॥
पीछे नृप मत्स्योदरि आनी ❀ जव सुरसरि निज धीर समाना ॥
ताको सत्यवती अस नामा ❀ चित्रांगद सुत बल के धामा ॥
चित्रवीर्य पुनि दुसर बेटा ❀ भयो भूप संग्राम अपटा ॥
दो०—चित्रवीर्य के पाण्डु नप चित्रांगद के आप ।
हौ एक कछु भेद नहिं, ताते करहु मिलाप ॥
विग्रह आपुस को नहिं नीका ❀ छांडहु अब सब बात अलिका ॥
कलह तुम्हार न काहुहि भावत ❀ तात बार बार हम आवत ॥
हरि सुख हरि कहत दुर्योधन ❀ तुम आये इत कवन प्रयोजन॥
कह हरि हमैं युधिष्ठिर राजा ❀ पठयानि तुम्हरे ढिगयाहिकाजा ॥
कहिनि कि हम कहजुवा हरायो ❀ छल बल करिकै बनहिं पठायो ॥
ते गे वर्ष त्रयोदश बीती ❀ अवहु तौ तांज देहि अनीती॥
सो अब कहा हमारो कीजै ❀ आधी भूमि बांटि नृप दीजै ॥
उन बन बासि बहु सहें कलेशू ❀ तेहिते तुम कह उचित नरेशू ॥
यह जो नहिं तुमहि सरम आई ❀ तो हम कहं करौ तुम राई ॥
पञ्च ग्राम पाण्डव कहँ देहु ❀ कलह निवारण होई सनेहु ॥
इन्द्रप्रस्थ तिलस्थ वरुणागर ❀ वाराणसि हस्तीपुर आगर ॥
इनके दिये मिटति है रारी ❀ नातरु होइहि अनरथ भारी ॥
सुनि दुर्योधन राउ रिसाना ❀ नारायण मैं कौरव जाना ॥
तुम्हरे कहे देइँ सब देशू ❀ हम जो कहैं करिय सो वेशू ॥
सुइ अग्र महि उठो जो जेती ❀ विना युद्ध हौं देउँ न तेती ॥
ग्वाल वंश हौ जाति के नीचा ❀ परत आय राजन क बीचा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यह कहि कह्यो दुशासन भाई ❀ कर गहि याहि देहु दुरिआई ॥
किती पकरि कारागृह दीजै ❀ मिटै प्रचंच बात यह कीजै ॥
वे हमते सरवरि कब करते ❀ जो ये उनकर पक्ष न धरते ॥
इनहिं के बल वे बरिआरा ❀ यहु अहरि है बड़ो गँवारा ॥
नृप रुख लखि हरि अन्तर्य्यामी ❀ भे अतिउग्र उरग अरि गामी ॥
उठे तुरत तब शारँगपानी ❀ कहि तुव मृत्यु निकट नियरानी ॥

दो०-हरि सँग भारद्वाज सुत, गंगासुत गांगेय ।
बाहुलीक विकरण करण, चले संग उठितेय ॥
करत बतकही सबन ते, चलेजात घनश्याम ॥
राखि लोग सब द्वारपर, गयोविदुर के धाम ॥
श्वेत केश शिरशोभिये, ओढ़े श्वेत दुकूल ।
देखो कुन्ती जाय हरि, सादर के मम तूल ॥

पिता श्वंसा कहँ कीन्ह प्रणामा ❀ आशिष दियो होय मनकामा ॥
हरिही विलोकि नयन जलछाये ❀ माथ सूंघि हरि कंठ लगाये ॥
कुशल रहे वसूदेव कुमारा ❀ मैं अनाथ के प्राण अधरा ॥
बोले कमल नयन यह बाता ❀ तुमहरी कृपा परम कुशलाता ॥
धर्म नरेश समेत कुटुम्बा ❀ कह्यहु प्रणाम सुनहु अबअंबा ॥
सुनि यह बचन भयो परितापा ❀ लागी कुन्ती करन विलापा ॥
उर दुख दुसह बरत ज्वर होली ❀ पुनि कुन्ती श्रीपतिसों बोली ॥
सब कोउ कहत पंचसुत शूरा ❀ हमरे जान भये अब कूरा ॥
लाज तजी सुत काम न आये ❀ विदुर अन्न दै हमहिं जिआये ॥
अब तुमते कहियत बनवारी ❀ तुमहूँ छाँड़ी सुरति हमारी ॥
पालन योग्य तिहूँ पुर दारा ❀ बोले पिता तरुणी भरतारा ॥

दो०-वृद्ध बैस सूत चाहिये, करहि मातू प्रतिपाल ।
अपनो काटी कृष्ण हम, बिदुर अन्नते काल ॥

धर्मराज छाँड़ी सब शर्माहि ❀ त्याग कीन्ह छत्रिनके धर्माहि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नृप विराट की करि सेवकाई ❀ राज्य तजो अरुलाज विहाई ॥
उदर पालि सुत दिवस वितावहिं ❀ दुर्योधन भय मानि न आवहिं ॥
सुनहु कथा इक कहत बखाना ❀ यद्यपि सब जानत भगवाना ॥
विंदुल नाम एक क्षत्रानी ❀ राजा शक्तिकेतु की रानी ॥
सोहति नगर अवन्ती बासी ❀ सब चरित्र हम कहतप्रकासी ॥
माहिषमती भूप बलधामा ❀ ताको चन्द्रसेन अस नामा ॥
निज दल साजि निसानबजाई ❀ घेरों नगर अवन्ती आई ॥
सत्यकेतु निसरे भूपाला ❀ भयो युद्ध जूझे तेहि काला ॥
लूट्यो नगर लगायो आगी ❀ गर्भवती विंदुल उठि भागी ॥
चली पराई दुखिय अधिकाई ❀ दाशनाम नगर चलि आई ॥
ब्रह्मदत्त तहँ रह्यो भुवाला ❀ सब प्रकार कीन्हों प्रतिपाला ॥

दो०-यद्यपि जानत सकल तुम, तदपि कहौं गोपाल ।
नृप तरुणी कहँ त्याहि नगर, बीतिगयेकछुकाल ॥

उपजे ताके सुत अभिरामा ❀ ताको कृष्ण युद्ध जितनामा ॥
प्रौढ़ विलोकि मातु सुख पावा ❀ शाशिसम बढ़त बार नाहिंलावा॥
दिनप्रति नगर बालकन संगा ❀ खेलत रहत विहंग पतंगा ॥
मातु पढ़ायो पुनि धनुवेदा ❀ समरथ देखि तज्यो मनखेदा ॥
सुतहि बुलाइ मातु उपदेशा ❀ तुव पितु रह्यो उजैन नरेशा ॥
माहिषमती भूप बध कीन्हा ❀ राज तुम्हार छीनि तेहिलीन्हा॥
अब सुत और न बाद विचारहु ❀ लेहुभूमि निज अरिकोमारहु ॥
अब लगि मरत न तुव पितुघाती ❀ तब लगि पुत्र जुड़ातनछाती ॥
शत्रु तुम्हार जियत संसारा ❀ नाहक क्षत्रि वंश अवतारा ॥

दो०-कह्यउ भूपसुत मातु ते, सुनिये वचन प्रमान ।
मैं दलबल अरु द्रव्यविन, अरि संगसेनमहान॥

तासु मातु हरि कहत रिसानी ❀ बालक ते बोली मृदु बानी ॥
जानत सुनत क्षत्रिकुल धर्मा ❀ ताते मन मानत तुम भर्मा ॥
लड़े अकेल न मन भ्रम आनै ❀ कीट समान कोटि दल मानै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ताते तात तजो सब शोका ❀ जीति सुयश मरे सुरलोका ॥
मातु वचन ते उठि रण कीन्हा ❀ करिअरिनिधनराज्यनिजलीन्हा
करि साहस सोई भयउ भुवाला ❀ और कथा सुनु दीनदयाला ॥
जैसे धर्मराज अवतारा ❀ सोहरिसुनहु सकल व्यवहारा ॥
भयो हमार भूप नरनाहू ❀ दीन्हों दंड धरा सब काहू ॥

दो०-शशिसमकीरति लिखिरही, भानु समान प्रताप ।
देवविटप सम दान कहं, बल सुरेश जनुआप॥

राज्य करहिं नृप सुख अधिकाई ❀ बुद्धिचक्षु की फिरी दोहाई ॥
सचिव विदुर अति भयउ सुजाना ❀ धर्मशील विज्ञान निधाना ॥
वाह्लीक गंगासुत दोऊ ❀ अरिघालक जान सब कोऊ ॥
आज्ञा भंग जवन दिशि होई ❀ आनै बाँधि होई किन कोई ॥
एक दिवस निज सहितसमाजा ❀ सभामध्य नृप पांडु विराजा ॥
भीषम ते तब बचन उचारा ❀ सुनहु मनोरथ सुभग हमारा ॥
महि पर्यटन होत मन मोरा ❀ होइ पिता जो आयसु तोरा ॥

दो०-हँसि बोले गांगेय तब, जो इच्छा मन माह !
सेन लेहु चतुरंगिनी, शुभ कीजै नरनाह ॥

भीषम की आज्ञा जब पाई ❀ चल्या भूप संग दल ससुदाई ॥
माद्री संग सहित मोहिं लीन्हा ❀ पटह बजाइ गमन पुनिकीन्हा ॥
पूरब दक्षिण पश्चिम देशा ❀ जीति जीति लिय दंड नरेशा॥
जो कछु वस्तु जीति नृप पायो ❀ बुद्धिचक्षु कहँ सकल पठायो ॥
सेन समेत बजाई निशाना ❀ उत्तर दिशि नृप कीन्ह पयाना॥
लै लै दण्ड भूप सब आये ❀ द्वैपायन के शीश नवाये ॥
यथायोग्य सब ते नृप लीन्हा ❀ तिनकहँअभयदानपुनिदीन्हा॥
लीन्हें संग चमू चतुरंगा ❀ चढ़्यो भूमि गिरिशृंग उतंगा ॥
करि दर्शन नारायण केरा ❀ शैल हिमालय कीन्हें डेरा ॥
तहँ सब नृप परवतिया आये ❀ दोऊ पयान शीश नवाये ॥

दो०-जलसुन्दर अरु फल सुभग, फूले कुसुम सुवास !

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गिरिपर देखि सुपास अति, कीन्ह नरेश निवास ।
एक दिवस मृगया कहँ राजा ❀ गयो भूप संग सुभट समाजा ॥
तहँ ऋषि परम गहन इक रहई ❀ कामाविवशानि जतियसनकहई ॥
ज्ञान ध्यान तनु सकल भुलाना ❀ वासर महँ मांग्यो रतिदाना ॥
सुनि द्विज बचन कहत तिय सोई ❀ रति दिन नाथ पशुन की होई ॥
कह द्विज नारि मृगा तनु लीजै ❀ हम मृगह्वै तुमते रति कीजै ॥
काम बाण तुम्हरे उर लागा ❀ ज्ञान विवेक सकल तुव त्यागा ॥
अस कहि तुरत मृगा तनु धारा ❀ ह्वै मृग तब द्विज करत बिहारा ॥
पतिको बचन तजै जो नारी ❀ परै नरक पावै दुख भारी ॥
दो०-यहाविचारद्विजात्रियाकियो, पियको बचन प्रमान ।
गयो पांडु तत्क्षण तहां सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

दो०-कह कुन्ती गोपाल ते, सुनिये दीन दयाल ।
मृग विलोकि भूपाल तब, तज्यो बाण ततकाल ॥
लागत बाण बिकल ह्वै घूमी ❀ मानुष रूप पर्‍यो द्विज भूमी ॥
गिरतहि तुरत प्राण तजि दीन्हा ❀ ऋषितरुणीअतिरोदन कीन्हा ॥
कह्यो बचन करि क्रोध अपारा ❀ ले मम शाप भूप चंडारा ॥
सो रति करत मर्‍यो पति जैसे ❀ तजो नरेश प्राण तुम तैसे ॥
आयो शिबिर मानि गिल्यानी ❀ करै न सुरति भूप भय मानी ॥
ज्याहि विधि शाप विप्र तियदीन्हा ❀ सो नरेश मोते कहि दीन्हा ॥
भयो भूप उर नाथ वियोगा ❀ विदा किये घर कहँ सब लोगा ॥
दोउ तिय संग भये बनवासी ❀ उदासीन जिमि फिरै उदासी ॥
परम गहन गिरि देखत फिरहीं ❀ जप तप योग नेम व्रत करहीं ॥
दो०-चन्द्रभाग पर्वत गयो, लै युवती युग साथ ।
विरची पर्णकुटी तहाँ, कीन्ह वास नरनाथ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पावन मानसरोवर तीरा ❀ करहिं महातप सुनु यदुवीरा ॥
मास नन्दिनी करि असनाना ❀ ऋषिसमाजनितसुनहिं पुराना ॥
श्रुति पथ सतमारग आचरहीं ❀ होत अस्त रवि अशन न करहिं ॥
एक दिवस पर्णशालहिं आये ❀ मोहिं विलोकि नयन जल छाये ॥
मैं पूँछा क्यहि हेतु उदासा ❀ तब नरेश इमि बचन प्रकासा ॥
संततिहीन भयो मैं रानी ❀ करहुँ न रतिहि शाप भयमानी ॥
तब श्रीपति मैं धीरज कीन्हों ❀ सिखये मंत्र ऋषय कहिदीन्हों ॥
सुर आकर्षण विद्या जानी ❀ सुनत नरेश धरि तब आनी ॥
आज्ञा दीन्ह करौ सुर जापू ❀ तब मैं कह्यो भूप यह पापू ॥
पतिव्रता परपति मन देई ❀ सुकृत जाइ जग अपयश लेई ॥
वेद पुराण बिदित कह राजा ❀ होइ दोष नहिं संतति काजा ॥
तनु सुख हेतु नारि जो करहीं ❀ सुकृत नशाई नरक सो परहीं ॥

दो०-सुर आकर्षण जपहु तुम, मम अनुशासन मानि ।
करहु वंश उद्धार अब, तजि मनकी गिलानि ॥

पति निदेश मेटो नहिं जाता ❀ धर्माकर्ष जप्यो सुत्राता ॥
आवत धर्म न लागी बारा ❀ दोहद भयो विदित संसारा ॥
जादिन जन्म युधिष्टिर लीन्हों ❀ अति उतसाहपांडनृप कीन्हों ॥
छाये नभ पथ गगन विमाना ❀ सुरसुन्दरी करहिं कलगाना ॥
शंख बजाइ दुन्दुभी दीन्हों ❀ पुहुपमयी वसुधा सब कीन्हों ॥
तब यह भयो गगनमहँ बानी ❀ तुम सुत भयो भागवत रानी ॥
धर्म स्वरूप भूप अति भारी ❀ एक छत्र बसुधा अधिकारी ॥
होई बालक बलि सम दानी ❀ नारद सम होई विज्ञानी ॥
हरि सेवक प्रहलाद समाना ❀ सुरपति सम होई बलवाना ॥

दो०-रविसुत सम जगनाथ कहं, तेज तरणिका रूप
जाके सम तिहुँलोक महँ, होइ न औरो भूप ॥

धर्मशील अति कुल उजियारा ❀ होइ अजीत शत्रु संसारा ॥
या के राज अकाज न होइहिं ❀ है निश्चित प्रजा सुखभोगिहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहि मृदुगिरा बोध करि मोका ❀ गयेबिबुधसबनिजनिजलोका॥
जूप व्यसन करि कर्म अलीना ❀ भये धर्मसुत राज्य विहीना ॥
यह हरि अद्भुत बात अनूठी ❀ ह्वै गई गिरा सुरन की झूठी ॥
यहि प्रकार बहु काल बितायो ❀ नृप समोदं पर्णशालहिं आयो॥
मोते विहँसि कही नरपालक ❀ अबतुमप्रगटकरहुइकबालक ॥
बिना सहायक राज न होई ❀ ताते चहिय भूप सुत दोई ॥
ज्येष्ठ कनिष्ठ उभय जग भाषा ❀ पूरण करहु मोरि अभिलाषा ॥
यहि विधि नृप संभाषण कीन्हा ❀ सुनिय नाथ उत्तर मैं दीन्हा ॥

दो०-मैं नहिं आज्ञा करि सकौं, मानतहौं मन भीति ।
उचित सिखावन नाथतुम, यह कुलटनकीरीति॥

सुनि नरेश बोल्यो तव आपू ❀ देव परस कीन्हें नहिं पापू ॥
देवाकर्षण सब तुम जानहु ❀ करि जप तप देवनको आनहु ॥
पवन मंत्र मैं सुमिरण कीन्हा ❀ आइ प्रभंजन दर्शन दीन्हा ॥
भये रभित आँनद अति जीमा ❀ दोहद उभय प्रगट भय भीमा ॥
भयो गगन सुर गिरा प्रमाना ❀ होइहि बालकअति बलवाना ॥
महावीर जानिहिं संसारा ❀ याते सब अरि कुल संहारा ॥
कौरव साहित कुशल ना उनके ❀ हरि भे बचन झूठ देवन के ॥
यहि विधि वर्ष बीति यक गयऊ ❀ तादिन नाथचरित यह भयऊ ॥
पर्णकुटी ते उठेउ समोदा ❀ लीन्हों भीमसेन कहँ गोदा ॥

दो०-जाइ विलोक्यउ रुचिर यक, चन्द्रभाग की शृंग ।
तापर भई अरूढ मैं, बालक लियो उछंग ॥

तहँ बालघी सिंह फटकारे ❀ गर्जत सन्मुख चला हमारे ॥
मैं सभीत तनु सुधि बिसराई ❀ परा भीम गिरि गोद बिहाई ॥
हाई सरोष केहरि की ओरा ❀ चला निशंक करत रव घोरा ॥
हाली धरा शिला गे फूटी ❀ जहँ तहँ परे वृक्ष बहु टूटी ॥
गर्जत भीम भयउ अति शोरा ❀ गिरेउ सिंह महि रहेउ न जोरा ॥
देखि समीप बार नहिं लाग्यो ❀ अतिसभीतपुनिसोउठिभाग्यो॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लक्ष भवन महँ खंभ उपारा ❀ जरत बचाइ लीन परिवारा ॥
एक चक्र वकवदन विदारा ❀ दैत्यहिं एक विपिन महँ मारा ॥
तासु सुता कीन्हेउ निज दारा ❀ अस बल विदित भीस संसारा ॥
सो सुधि भीमसेन कहँ भूली ❀ की हरि भई बाँह युग लूली ॥
अब सुनियत कीचक सौ भाई ❀ मारेउ भीम बार नहीं लाई ॥
जरासंध कीन्हों दुइ फारा ❀ अति बलवान न लागी बारा॥

दो० अति निलज्ज भै पांडुसुत, भई टेककी हानि !
अब आवत नहिं युद्ध कहँ, दुर्योधनभयमानि ॥

पकरेउ केश दुशासन आनी ❀ भई विकल पांडव की रानी ॥
सकेउ न देखि भयो मन माखा ❀ तादिन भीमसेन प्रण भाखा॥
तुव शोणित अस्नान करावों ❀ तादिन सुनु त्रिय केश बँधावों ॥
क्षत्री कैर न प्रण प्रतिपाला ❀ कहीनिलजत्याहिदीनदयाला ॥
जियंत दुशासन अरु कुरुराजा ❀ बहुअमोघअतिमनआवत लाजा
अब लगि सुनत रही सुत शूरा ❀ वसुधा मध्य शब्द बहु पूरा ॥
अब सुनियत अक्रूर अमानी ❀ पूरि रही जग महँ यह बानी ॥
त्याग्यो प्राण मन लाज न आई ❀ भई कीन्ह अब जगत हँसाई॥

दो० यद्यपि जानत नाथ तुम, तीनि काल व्यवहार !
तदापि कहत जेहि विधिभयो, पारथकोअवतार॥

मोते कही भूप यह बानी ❀ बचन हमार सुनहु सुखदानी ॥
ज्येष्ठ कनिष्ठ भयो सुत होई ❀ अब सो कार्य मध्य सुत होई ॥
सुनि नृप गिरा शीश धरि लीन्हा ❀ सुनासीर आकर्षण कीन्हा ॥
आवत शक्र न लागी बारा ❀ दोहद भयो विदित संसारा ॥
शुभ दिन शुभ घटिका जबभयऊ ❀ तादिन जन्मपार्थ जगलयऊ ॥
सुरन सहित सुरनायक आये ❀ देखनको विमान नभ छाये ॥
विश्वावसु घटसुत गँधर्वा ❀ गावत विविध राग सुर सर्वा ॥
मंजुघोष मेनका घृताची ❀ तोरहिं ताल तान गति नाची॥
बाजहिं पटह शंख करनाला ❀ वर्षहिं विबुध कल्पतरु माला ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-विबुध नटी आई सकल, करत सुमंगल गान।
पूरि रहो आनंद जग, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वाणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
त्रयोविंशोऽध्यायः॥ २३॥

यहि विधि बीति याम यक गयऊ ❀ मधुर गिरा नभ मण्डल भयऊ॥
होइहिं बालक अति धनुधारी ❀ परम धर्म श्रीहरि हितकारी॥
ब्रजमहँ होई कृष्ण अवतारा ❀ सो याको होइहैं रखवारा॥
हम सब देवन के तारयण ❀ ते दोऊ हैं नर नारायण॥
नर अर्जुन नारायण यदुपति ❀ ये दोउ जानौ एकै गति॥
कह्यो कर्णशूली यह नामा ❀ गये अमरसबनिजनिज धामा॥
तुव बललीन जगत महँ पारथ ❀ यह मेरो तन और अकारथ॥
भयो न अमर वचन कछु साँचा ❀ मरेउनकर्णआजुलागी बाँचा॥
दियो काढ़ि दुर्योधन राई ❀ बनबनाफिरतलाजनाहिं आई॥
ऐसी सहै होइ जो हीना ❀ है बलिष्ठ अरु अस्त्र प्रवीना॥

दो०-गर्व कियो हनुमान से, बाँध्यो सागर वारि!
बानन कीन्हों वाट नभ, हाथी लियो उतारि॥

असुर निवात कवच बध कीन्हा ❀ धनपतिजीतिदण्डलै लीन्हा॥
फूँके वन खाण्डीव गरेरा ❀ नाश्यो गर्व पुरन्दर केरा॥
द्रुपद नरेश स्वयम्बर माहीं ❀ भेदि मत्स्य द्रौपदी विवाहीं॥
इन्द्रकील रण शम्भु रिझायो ❀ है प्रसन्न सब अस्त्र सिखायो॥
सकल धरा निज बल वश कीन्हा ❀ द्रुपदजीति गुरुदक्षिण दीन्हा॥
देव दैत्व मानव बल झारी ❀ तुव प्रसाद जीते बनबारी॥
गये साजि कौरव दल भारी ❀ भीषम द्रोण कर्ण बल भारी॥
ते अर्जुन बिराट पुर जीते ❀ अबक्याहि काजहोतभयभीते॥
केहि कारण अब बार लगाई ❀ मिलि रण भूमि करैं कदराई॥
कह कुंती सुनिये यदुराई ❀ पारथ ते कहिये समुझाई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दुर्योधन भय मनहिं न आवत ❀ अपने कुलहिं कलंक लगावत ॥
सिंह वंश महँ भयो सियारा ❀ देखत तुमहिं नग्न मै दारा ॥
क्षात्रि धर्म दीन्हों सब खोई ❀ बाँस बंश महँ भागो घमोई ॥
तुम अतिनिलजलाजसब त्यागा ❀ उपजे हँसवँश जिमि कागा ॥
शत्रु तूम्हार शीश पर गाजत ❀ देखतनयन नेक नहिं लाजत ॥
की तुम मरहु सकल विष खाई ❀ की आयुध धरि सेहु लराई ॥
हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा ❀ तुमअतिनिलजनआवतलाजा॥

दो०-की यदुनायक जाय तुम, उनहिं कहो समुझाय ।
करैं युद्ध नत नाथ मैं मरौं हलाहल खाय ॥
यहि प्रकार कहिकृष्णते, हृदय बहुत संताप ।
सुधि करि कुंती सुतनकी, लागी करन विलाप ॥

कह्यो कृष्ण माता सुनि लीजै ❀ दिनदश पाँच धीर मन कीजै ॥
बंधुन सहित धर्म नरपालक ❀ आवत हैं कौरवकुल घालक ॥
करिहैं युद्ध विजय सबहीते ❀ होइहैं काज सकल मन चीते ॥
सुनि हरि बचन धीर मन आनी ❀ लगी कह निज प्रथमकहानी ॥
मम सुत देखी हृदय अकुलाई ❀ माद्री निकट भूप के आई ॥
सुत न भये दारुण दुख व्यापा ❀ नृप समीपअतिकीन्हाविलापा ॥
कारण पूँछि भूम दुख पावा ❀ निकटबोलिमोहिंवचनसुनावा ॥
बिप्र बधू की शाप सयानी ❀ तुमकहँ कह्यो बात सबजानी ॥
मोते कछु निसरी नहिं काजा ❀ असकहिभयेसकल दिगराजा ॥
करहु उपाय तोरि यह दासी ❀ उपजै सुत पावै सुखरासी ॥
तब हरि दुखित भये मैं जाना ❀ धीरज दीन कीन सनमाना ॥
आगम करि अश्विनी कुमारा ❀ आयेधरणि न लागी बारा ॥
बिबुधवयदामिलि व्योम सिधायो ❀ भयो गर्भ माद्री सुख पायो ॥

दो०-भे अनन्द भूपाल मन, सुनहु देव के देव ।
अति विचित्र तब माद्रिसुत, भयेनकुलसहदेव ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इक दिन भयो चरित भगवाना ❀ मुनि समाज नृप सुने पुराना॥
भोजन को मैं साज बनावा ❀ रह्यो शेष दिन भूप न आवा॥
गहवर भई नाथ मोहीते ❀ करते अशन भूप दिन बीते॥
माद्री करि शृँगार गिरि ठाढ़ी ❀ तनुतेनिकसिज्योतिअतिबाढ़ी॥
लखि स्वरूप दिननायक मोहे ❀ भये न अस्त जान पर सोहे॥
भोजन कीन्ह भूप सुख पाई ❀ मद्रसुता प्रणशालहि आई॥
होताहि अस्त ओट रवि भयऊ ❀ देखि नरेश शयन निशि गयऊ॥
कारण हमहिं महीपति पूँछा ❀ मैं काहि दीन्हसकलछल छूछा॥

दो०—भावी कौनिउ यतन ते, मिटि न सकै यदुवीर।
काम विवश नरनाह ह्वै, सकै न मन धरि धीर॥

मोते कहेउ भूप बहु बेरा ❀ माँद्री विवश भयो मन मेरा॥
शाप सुरति मैं नाथ दिवाई ❀ सुनिश्रवणकछुमननहि आई॥
मद्रसुता ते करि अनुरागा ❀ परसत देह भूप तनु त्यागा॥
माद्री सहित मोहिं दुख व्यापा ❀ उच्चस्वर करि कीन्ह विलापा॥
रोदन सुनत महामुनि आये ❀ कोल किरात भील सब धाये॥
रोवहिं कहि नृप कीरति रूरी ❀ आरत शब्द रहा तहँ पूरी॥
जे मुनि नृपके परम सनेही ❀ ज्ञान कथा कहि धीरज देहीं॥
मोहिं प्रबोध करि चेत बहोरी ❀ चिता बनायेसि काठ बटोरी॥

दो०-जरन चली मैं भूप सँग, पाछिलि प्रीति दृढाय।
मद्रसुता तब बिकल ह्वै, गहे चरण लपटाय॥

हमरे हेतु भूप तनु त्यागा ❀ मा कलंकअरु पातक लागा॥
तुम्हरे पंच सुतन सम प्रीति ❀ तसिहमरेनहिं निपटअनीती॥
जो तुम रहौ करौ प्रतिपालक ❀ जौ लगिपुष्टहोय सब बालक॥
मोहिं प्रबोधि लै करि नृप अंगा ❀ चढ़ी चिता लै शीश उछंगा॥
त्याहिक्षण धन्य भूपकी भामिनि ❀ प्रिय केसंग भई सहगामिनि॥
चढ़ि बिमान पतिसँग सुरलोका ❀ गई भई सो परम विशोका॥
जीवत रहिउँ छांड़ि निज नेता ❀ हमतजि लाजदुसहदुखहेता॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनत लागि कृत जन्म खुवारी ❀ तिन हरि तजी वृद्ध महतारी ॥
धर्मराज ते कह्यो सँदेशा ❀ करतयुद्ध नहिंमानि अँदेशा ॥
क्षत्री धर्म दूरि हैं याते ❀ विरुद सँभारि लरौ सुत ताते॥
नाहिं न हीन वंश अवतारा ❀ मे कादर सुत मनहिं बिचारा ॥
कुरुवंशिन कर अनुचर होई ❀ अब लग युद्ध सकात नसोई॥
तुम शन्तनु नृप के कुल माहीं ❀ जासु युद्ध सुर असुर सकाहीं ॥
मातु पक्ष नहिं हीन तुम्हारा ❀ है यदुवंश विदित संसारा ॥
शूरसेन के हौ तुम नाती ❀ तिनकोसुयशविदितसब भाँती॥
पुहुमी के राजा बहु जीते ❀ बचे रहत अजहूँ भय भीते ॥

दो०-मातु पक्ष पितु पक्ष अब, बिदित सकल संसार ।
शूरबीर अरु धीरधर, तुम सुत भयो लेड़ार ॥
कहा कृष्ण समुझाय तुम, यह सिखमानिहमारि।
करहु राज्य तुम आपनौ, अब निजबैरिन मारि॥

जो चुप रहौ साधि निज मौनहि ❀ मिलिहिनराज्यकरहुवन गमनहि
अस्त्र सनाह त्यागि कर देहू ❀ भिक्षा करहु कमण्डलु लेहु ॥
कितौ करहु तुम मारि सिखाई ❀ मारहु शत्रु करौ मनुसाई ॥
जो न लरहु कौरवसन आई ❀ तौ मैं मरहुँ हलाहल खाई ॥
भीमहिं कहेउ सँदेश हमारा ❀ कस कादर भा जीव तुम्हारा॥
शूरवीर तुम्हारी जग लीका ❀ लरतन सुततुमकरत ननीका ॥
सब ते मोहिं भरोस तुम्हारा ❀ बल पौरुषकित गयउ तुम्हारा ॥
तुम विराट पुर बैठि लुकाने ❀ मिलिहि भूमि नहिंपुत्र डराने ॥

दो०-करत तपस्या चारि युग, सब नरेश जेहि लागि ।
दूरि बैठिसुत नारि इव, राज्य दियो तुमत्यागि ॥

रहे बैठि चुप लाज अकाजन ❀ सिखीधनुषविद्या केहि काजन ॥
गदा युद्ध केहि काजन सीखा ❀ सो प्रभावकछु नयनन दीखा ॥
कहेउ सँदेश भूप के आगे ❀ करहु युद्ध आनि भ्रम त्यागे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जो नहिं लरहु मानि डर होरहु ❀ नाबिचनकरिबनहिं सिधोरहु ॥
हम नहिं जियव पुत्रयहि लाजा ❀ हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा ॥
पुर विराट होरेउ कुरुनायक ❀ अबसुतनिफलभयेतुवसायक ॥
कीन्ह प्रथम प्रण सो बिसरावा ❀ भूली वृद्ध मातु रण दावा ॥
सब ते बहुत तुम्हारी आसा ❀ आवत सो नमानि अरित्रासा ॥
देव दैत्य गंधूव बल भारी ❀ तुव शर साहि न सकैं धनुधारी ॥
यक्षराज निज युद्ध हरायो ❀ करि मद भंग दण्ड लै आयो ॥
दुर्योधनहिं तुम्हारी सारिकै ❀ करहुयुद्धनिजप्रणसुधि करिकै ॥

दो०-सो पुरुष भूलेउ नहीं, करत युद्ध नहिं आय ।
क्षात्रि धर्म खोयो सकल, दुर्योधन भय पाय ॥

जो नहिं लरत देखि दुख मोरा ❀ अर्जुन धनुष बाण धृग तोरा ॥
जीवन आश पुत्र कदराने ❀ कर्ण बाण भय मानि छिपाने ॥
अरित्रियहँसहिश्रवण सुनि बाता ❀ मरे लाज वश कायर माता ॥
क्षत्री धर्म नहीं तनु माही ❀ तुमअतिनिलजलाजमननाहीं ॥
कह्यो सँदेश नकुल सन जाई ❀ जीरण मातु तात विष खाई ॥
तुम ते सुत न और बरजोरा ❀ जीत्येउ नृप समपश्चिमओरा ॥
बल पौरुष तव नाहिं न जानत ❀ तुमहूँ दुर्योधन भय मानत ॥
धनु पकरे धरती थहराई ❀ लाज तजी अरु भूमिगँवाई ॥
धर्म्मशील अतिशय बलदाई ❀ सो तुम वृद्ध मातु बिसराई ॥
मो कहँ हरि अति प्रिय सहदेऊ ❀ भूल हमहिं विपति महँ तेऊ ॥
तुम हरि कह्यो हमार सँदेशा ❀ करहु युद्धतजिसकल अँदेशा ॥
मिलिहै राज्य सत्य मत येहा ❀ है है विजय न कछु सँदेहा ॥

दो०-बहु अधर्म तुम धर्मरत, गत विलोक मदमान ।
है है जय संशय नहीं, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वाणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यह तुम कह्यो द्रोपदी ते हरि ❀ कछु दिन रहो हिय धीरजधरि॥
पैहौ राज्य साज तुम येहू ❀ प्रभु की कृपा न कछु संदेहू॥
तुम प्रभु धर्म्मराज समुझाई ❀ करहु यतन ज्यहि होइ लड़ाई॥
सब जग कहत सुतनकहँ खोटी ❀ है बिन युद्ध बात अब छोटी॥
अस कहि कुन्ती रोदन कीन्हा ❀ कृपासिंधु तब धीरज दीन्हा॥
दिनदश धीर धरौ मन अम्बा ❀ मरिहै कुरुपति सहित कुटुम्बा॥
असकहिकृष्णबिदापुनि कीन्हा ❀ करत प्रणाम आशिष दीन्हा॥
दै आशीश कुन्त सुख पाये ❀ बाहर भवन दयानिधि आये॥

दो०-पँवरि द्वार भे आइकै, रथ असूढ यदुनाथ।
पुर बाहर लग लोग सब, गये पठावन साथ॥

भीषम द्रोण विदा हरि कीन्हें ❀ करिप्रणामनिजगृहमग लीन्हें॥
बाहुलीका विकरणपुर लोगा ❀ फिरेसकलहरिदीन्ह नियोगा॥
करत प्रणाम कर्ण कहँ जानी ❀ रथ बैठारि लीन्ह गहि पानी॥
हँसि कै कृष्ण कही यह बाता ❀ सुनहु कर्ण पूरव इतिहासा॥
शूरसेन नृप अति बल भारे ❀ भयं पितामह विदित हमारे॥
कुन्ती नाम सुता उपजाई ❀ सो तप हेतु नदी तट आई॥
तहँवाँ दुर्वासा ऋषि आये ❀ देव अकर्षण मंत्र सिखाये॥
एक दिबस सुखता अधिकाई ❀ मंत्र परीक्षा की मति आई॥

दो०-बाल भाव के व्याजते, नहिं कामना विचारि।
जपेउ अर्कषण मन्त्र तब, दीन्ह्यउ दरश तमारि॥

सहस किरण तनु तेज अपारा ❀ भई बिकल नहिं रह्यो सँभारा॥
मूँद्यो नैन बन नहिं आवा ❀ कीन्हप्रभाकरनिजमन भावा॥
मूर्च्छा विगत नैन जब खोली ❀ तब कुन्ती लज्जित ह्वै बोली॥
यह सुर कीन्ह नीकिनहिं बाता ❀ भाकलंकयाहिअब पितुमाता॥
रहिहि गुप्त जानहिं नहिं कोई ❀ याते तुमहिं कलंक न होई॥
अंग भंग नहिं होइ तुम्हारा ❀ ले तिय आशिवाद हमारा॥
भये दिवाकर अंतर्धाना ❀ यह चरित्र काहू नहिं जाना॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चढ़ि विमान रवि गगन सिधाये ❀ दोहद गयउ गर्भ तुम आये ॥
लज्जित मातु पिता भय मानी ❀ भवन कोन महँ रहे लुकानी ॥
तस्करवत तुम कहँ कुंती जायो ❀ डारि मंजूषा सहित बहायो ॥
दो०-प्रकट भये तुम गर्भते, तनु द्युति पुंज अपार ।
धनुषबाण कुण्डलकवच, सहित लीन्ह अवतार ॥
देखि तरणि सम तेज अपारा ❀ दीन बहाई सरित की धारा ॥
बहत नदी तनु तेज विराजा ❀ जलते प्रकट मनहुं दिनराजा ॥
तहँ कुरुनाथ सारथी आवा ❀ बहत प्रवाह देखि तौहि पावा ॥
ताकी तरुणि रही बिन बालक ❀ लैगा भवन कीन्ह प्रति पालक ॥
तुम हौ धर्मराज के भाई ❀ तजहु शत्रु संग करहु सहाई ॥
बचन हमार समुझि मन अपने ❀ और बिचार करहु जिन सपने ॥
सुनेउ श्रवण श्रीपति मुख बाता ❀ बोले बचन कर्ण मुसक्याता ॥
सुनी श्रवण तुमते जब बानी ❀ निश्चय मातु प्रथम हम जानी॥
जानेउ धर्म्मराज हम भाई ❀ भयो बहुत सुख कहा न जाई ॥
क्षत्री धर्म्म नाथ यह नाहीं ❀ कौरव तजि पांडव पह जाहीं ॥
साहित विवेक कहौ हरि जोई ❀ तुव शिष मानि करब हम सोई ॥
चहौ नाथ जो सत्य छुड़ाई ❀ सो हम करब न कोटि उपाई ॥
यह कहि कर्ण मौन गहि रह्यऊ ❀ तबयदुनाथ विहँसिइमिकह्यऊ ॥
राज्य पाट तुम लेहु घनेरा ❀ छठवाँ अंश द्रौपदी केरा ॥
दो०-पांचबन्धु सेवा करहिं, तुम्हरी सहित समाज ।
चलहु कर्ण जहँ धर्म सुत, अब हूजिय महराज ॥
सुनि हरि बचन कर्ण हँसि दीन्हा ❀ नीक बिचार नाथ तुम कीन्हा ॥
जानहिं मोहिं युधिष्टिर भाई ❀ करैं राज्य नहिं धर्म्म विहाई ॥
वे हमको देहैं सब जबहीं ❀ हम देइब कुरुपति कहँतबहीं ॥
यामें होइहि परम अकाजू ❀ रहेउ न नाथ पांडुकुल राजू ॥
और बिचार करौ जनि स्वामी ❀ रहौ चुपाई जानि अनुगामी ॥
कह हरि कहेउ परम हित तोरा ❀ चलहु कर्ण सुनि मोर निहोरा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुम कुन्तीके जेठे बालक ❀ करहु राज्य अरुकुलप्रतिपालक ॥
तुम हरि कही साँच सब सोई ❀ ऐसे समय उचित नहिं होई ॥
कुरु पांडवन बैर है भारी ❀ मोरे बल रोपी उन रारी ॥
मोहिं कुरुनाथ बंधु करि भाखा ❀ अशनवसनकछुबीच नराखा ॥
सहित धरा धन सेन समाजा ❀ कीन्हेउ अंगकोश को राजा ॥

दो०-पाल्यो उन लघु पुत्र ज्यों, माने करि गुरुदेह ।
शीश समपर्ण स्वामी संग, पूरव मानि सनेह ॥

औरो कृष्ण सुनो भत मोरा ❀ सो अब करिय दास मैं तोरा ॥
लक्ष भूष दोउ ओर प्रतापी ❀ तिन महँ पुण्यवान कोपापी ॥
समर कराय करिय प्रभु सोई ❀ सुख गर्वा पावैं सब कोई ॥
अब तुम जाहु बिलम्बन लावहु ❀ पांडव कटकसाजि लै आवहु ॥
श्रीहरि और न करहु बिचारा ❀ अब रण होय हमार तुम्हारा ॥
असकहिकर्ण बिदा पुन मांगी ❀ प्रभुपद परासि चलउ अनुरागी ॥
तनु उत चल मन हरिके साथा ❀ पहुँचे कर्ण जहां कुरु नाथा ॥
साम दाम भय भेद दिखाइ ❀ कही कर्ण मनहिं न आइ ॥

दो०-दारुक हाँकेउ अश्व पुनि, चले बेगि भगवान ।
जाय जुधिष्ठिर कटक महं, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलासिंहचौहानभाषाकृते

श्रीकृष्णगमनंनाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

कथा सकल मुनिबराणि सुनायो ❀ जनमेजय नृपसूनि सुखपायो ॥
पाछे बहुरि सहित अनुरागा ❀ लगे कहन इमिसकलबिभागा ॥
कटक समिप कृष्ण जब आये ❀ धर्मराज सुनि आतुर धाये ॥
सब बँधुन मिलि कीन्ह प्रणामा ❀ लइगे जहा भूप विश्रामा ॥
अर्घ्य देत आसन बैठारे ❀ शीतलजल लै चरण पखारे ॥
पुछेउ भुप कहा करि आये ❀ वासुदेव हाँसि बचन सुनाये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कह हरि तेहि एकौ नहिं मानी ❀ देन न कहत भूप अभिमानी॥
मिलिहि न और यतन ते राजा ❀ करहु युद्ध कीजै दल साजा॥
दो०-सुनत श्रवण नहिं बात कछु, देवकी नहिं चाह।
बिना युद्ध नहिं महिमिलि, कोटि यतन नरनाह॥
मंत्र हमार भूप सुनि लीजै ❀ साजो सेन बिलम्ब न कीजै॥
ह्वैइ निशंक अब करहु तैयारी ❀ ह्वैहै विजय कहत गिरिधारी॥
समुझत कृष्णबचन कछु हीमा ❀ लरहु नरेश कहा यह भीमा॥
अर्जुन कही भूप सुनि लीजै ❀ सजि निज कटकदुंदुभी दीजै॥
करहु युद्ध यह मंत्र हमारा ❀ होई सो जो लिखा करतारा॥
बोले बचन नकुल मुसकाता ❀ अब नृप लरो न दूसरि बाता॥
जानत हमहिं दीन प्रतिपच्छी ❀ रहौ चुपाय बात नहिं अच्छी॥
अब जानि डरिय लरिन नरदेवा ❀ बोले बचन नकुल सहदेवा॥
दो०-नहिं मानत हरिके कहे, भूले देखि समाज।
लरहु न करहु बिलम्ब अब, कहा द्रुपदमहराज॥
कही सात्यकी सुंदरि बानी ❀ बिन संग्राम क्षत्रियन हानी॥
ताते अबशि युद्ध अब कीजै ❀ रिपु रणजीति देश सबलीजै॥
धृष्टद्युम्न यही मत राख्यो ❀ सहितविराट शिखंडी भाख्यो॥
धर्मराज हरि मिलि ठहरावा ❀ करब युद्ध यह मंत्र दृढ़ावा॥
तेहि अवसर निज साज बनाये ❀ भीष्मकपुत्र रुक्म तहँ आये॥
कुंडिनपुर नरेश बरिआरा ❀ सो नृप वासुदेव को सारा॥
है लघु बंधु रुक्मिणी केरा ❀ लीन्हें साथ कटक बहुतेरा॥
गज रथ पदचर विपुल तुरंगा ❀ अक्षौहिणी एक पुनि संगा॥
दो०-तेहिअवसर प्रापत भयो, भूपति सभा मझारि।
बैठारे पारथ निकट, सबहिं जोहारि जोहार॥
देखेउ धर्मराज की ओरा ❀ बोले वचन गुमान न थोरा॥
जो आरत ह्वै राखा मोहीं ❀ भूप अशत्रु करौं मैं तोही॥
बुद्धिचक्षु को नाम मिटावौं ❀ एक छत्र महि रास करावौं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हमते होउ भूप आधीना ❀ करौं भूमि सब शत्रु बिहीना ॥
सुनत बचन मन भीम न भायो ❀ ह्वै सरोष यहि भाँति सुनायो ॥
रहत सदा हम कान्ह भरोसे ❀ कीट समान गनैं नर तोसे ॥
फिरि ऐसी जो बात बिचारी ❀ तौ डारौं पुनि जीभ निकारी ॥
मारौं तुहिं न अधम अभिमानी ❀ मानत कृष्णदेवकी कानी ॥
औ रुक्मिणि की कानि नथोरी ❀ ताते बची मृत्यु सुनु तोरी ॥
जस तैं बचन भूप ते वागे ❀ अस जौ कहत हमारे आगे ॥
रुक्मिणि बंधु जो न तुम होते ❀ मारि तुरत यमलोक पठोते ॥
छाँड़त कृष्ण देव के नाते ❀ मुहँ मसिलाय जाउ उठिताते ॥
अस कहि भीमसेन रिसवाई ❀ भुजा पकारिकै दीन्ह उठाई ॥
चला तुरत जिय लज्जा पायो ❀ दुर्योधन के भवन सिधायो ॥

दो०-गये हस्तिनापुर सबै, निज सेना लै साथ ॥
अति आदर ते उठि मिले, बैठारे कुरुनाथ ॥

बैठतही इमि बचन बखाने ❀ जो कुरुपति तुम होउ डराने ॥
तौ हम होई तुम्हारे संगा ❀ पाण्डव रण जीतौं रणरंगा ॥
जो तुम होउ अधीन हमारे ❀ करौं काज कुरुनाथ तुम्हारे ॥
सुनि कुरुनाथ क्रोध अधिकाई ❀ कहिकटुबचनदीन्ह दुरिआई ॥
द्रोणी कर्ण सहायक मोरे ❀ जीतिसकै जग महँ असकारे ॥
गुरु द्रोण जो अस्त्र सँभारैं ❀ देव अदेव सकल रण हारैं ॥
वृद्ध पितामह विदित हमारे ❀ जिनसे परशुराम रण हारे ॥
ते भृगुनाथ विष्णु अवतारा ❀ और को जीति सके संसारा ॥
मेरो बल कोउ थाह न पावत ❀ ताहि मूढ़ तैं भर्म देखावत ॥
बल तुम्हार हमरो सब जाना ❀ जादिनकृष्ण बाँधिकै आना ॥
शीश मुण्डि कीन्हें अपमाना ❀ बल छुड़ाइ दीन्हें जगजाना ॥
हरि पांडव के भयो सहायक ❀ तेऊ नहिं मोरे रण लायक ॥

दो०-होइ सक्रोध कुरुनाथ तब, दीन्हेउ ताहि उठाइ।
अतिलज्जितहोइनाइशिर, गयोभवन सकुचाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

है प्रसन्न बोलै मुनिराई ❀ अब नृप सुनहु कथामन लाई॥
गये कृष्ण पांडव घर जबते ❀ माअति विकल कुरूपतितबते॥
तेजहीन मन अति दुर्चातई ❀ शोच विवशानिशिनींद नआई॥
प्रातहि होत द्रोण गृह आये ❀ करिप्रणाम इमि बचन सुनाये॥
पांडव हमहि बैर सरसाना ❀ शरण तुम्हार भरोस नआना॥
होइय आप सहायक मोरे ❀ अब मैं चरण शरण गुरुतोरे॥
अस कही नयन नीरभरिलीन्हा ❀ सुनिकै द्रोण उतर तेहिदीन्हा॥
भरत बंश में जन्म तुम्हारा ❀ सुयश तुम्हार विदित संसारा॥
राज्यनीति महँ बहुत प्रवीना ❀ करत भूप तुम कर्म मलीना॥
कपट यूष कछु सत्य न हारे ❀ तुम पांडव केहि हेतु निकारे॥
सकुनी मंत्र मानि छल कीन्हा ❀ आप कृष्ण सिखअंशनदीन्हा॥

दो०-आप बली है पांडुसुत, अरु सहाय भगवान।
करहु भूपविधिकोटितुम, जीतिनसकहुमसान॥
उनकोकछुअनदोषनृप,तुमअतिकीन्हअनीति।
जहाँ धर्म तहँ कृष्णहैं, जहाँ कृष्ण तहँ जीत॥

वासुदेव हैं हरि अवतारा ❀ उनहिं को जीति सकै संसारा॥
ते दयालु पांण्डव के जानौ ❀ ह्वै है विजय सत्य करि मानौ॥
भीषम आदि सकल रणधीरा ❀ रण तीरथ महँ तजैं शरीरा॥
जानौ सब कौरव संहारे ❀ हमहूँ कर्ण जाब रण मारे॥
होइहि सुनि सब को मद भंगा ❀ हम नृप करब तुम्हारो संगा॥
हम मानत मन में नहिं त्रासा ❀ भये वृद्ध नहिं जीवन आसा॥
होइ निश्चिन्त बैठु अब राजा ❀ हम तन तजब तुम्हारे काजा॥
छोड़त तुम्हैं बहुत काठिनाई ❀ जुरै काल तौ करौं लराई॥

दो०-युद्ध जुरे पांडव सहित, मैं रोकौं घनश्याम।
कोटि शपथ भृगुरामकी, करौं घोर संग्राम॥

धीरज दीन्ह द्रोण गहि बांहा ❀ अब तुम अभय होहुनरनाहा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

द्रोणी कही बन्धु सुनि लीजै ❀ भय त्यागहु मन धीरजकीजै ॥
तीनों लोक अस्त्र गहि आवै ❀ मारौं सकल जान नहि पावै ॥
मन बच कर्मसु तोर सहाई ❀ अब तुम अभय होहु कुरुराई ॥
भीषम भवन गयउ तब राजा ❀ द्रोण कर्ण लै सकल समाजा ॥
जाइ भूप तब दर्शन कीन्हा ❀ गंगासुत आदर करि लीन्हा ॥
करि प्रणाम कौरव कुलदीपा ❀ सत्यब्रत के बैठि समीपा ॥
कह भीषम केहि कारण आये ❀ सुनि महीप तब बचन सुनाये॥
बधु बैर शालत उर मोरे ❀ आयों शरण पितामहँ तोरे ॥

दो०-एक सबल तो पांडुसुत, औ सहाय भगवान ।
कहेउ भूप भीषम सुनहु, तुम जानत बुधिवान ॥

अब उनके दल जुरे अपारा ❀ शूर एक ते एक जुझारा ॥
नृपको बचन श्रवण सुनि लीन्हा ❀ हँसि गांगेय उतर तब दीन्हा ॥
उन न कर्यो अपराध हमारा ❀ तुम छल करि परदेश निकारा ॥
शकुनी कर्ण कुबुद्धि सिखाई ❀ खोयहु तुमहिं सुनहु कुरुराई ॥
पुनि यदुनाथ वसीठी आये ❀ माँगे पांच ग्राम नहिं पाये ॥
हम सब तुमहिं रहे समुझाई ❀ सुनत नहीं धौं कुमति सिखाई॥
कर्ण भरोस मानि मन राजा ❀ करत अनीति नशावतकाजा ॥
कहा हमार श्रवण सुनि कीजै ❀ नीच जाति का मंत्र नलीजै ॥
यह है कर्ण जाति को हीना ❀ तुमहि सिखावत मंत्रअलीना ॥
जाति अहीर अधम अभिमानी ❀ सुनि कुरुनाथ रहे चुपमानी ॥
उचित न कछु उत्तर पुनि जानी ❀ उठिगा भवन मानि गिल्लानी ॥

दो०-होइ सक्रोध बोले करण, सुनहु बात कुरुनाथ ।
जियत पितामह जबलगे, तौ न छुवों धनुहाथ ॥

यह कहि बसन कर्ण उठि गयऊ ❀ दुर्योधन मन विस्मय भयऊ ॥
मुख मलीन कुरुनायक चीन्हा ❀ देखि पितामह धीरज दीन्हा ॥
पांडव सहित आप घनश्यामा ❀ जीति न सकहिं भूप संग्रामा॥
करि मन कोप धनुष कर धारौं ❀ सकल क्षितीधरणी कै मारौं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

को नरेश मोरे रण लायक ❀ करौं निपातसाधिधनुसायक ॥
चौबिस दिन भृगुपति रण कीन्हा ❀ तिनते जयतिपत्र मैं लीन्हा ॥
काशी नृपति स्वयम्बर ठाना ❀ आये भूप भूमिके नाना ॥
देव दैत्य नर तनु धरि आये ❀ जीति युद्ध में सकल हराये ॥

दो०-धीर धरौ चिन्ता तजौ, कीजै मन विश्राम ।
अभय होउ भूपाल अब, को जीतै संग्राम ॥
राउ तुम्हारी ओर जो, देखि नयन उघारि ।
शत्रभावकरि ताहि की, डारौं आँखि निंकारि॥

सुनि यह बचन धीरता आनी ❀ कृपके भवन चला अभिमानी ॥
कृपाचार्य्य पद परशन कीन्हा ❀ ह्वै प्रसन्न तब आशिष दीन्हा ॥
पूँछेउ सुनि केहि कारण आये ❀ समाचार कहि भूप सुनाये ॥
कुरु पांडवकी कलह महाना ❀ सो चरित्र तुम्हरो सब जाना ॥
हम उन पर साजी अवधारी ❀ भये सहायक श्रीबनवारी ॥
बूझि परत नहिं मोहि उबारा ❀ अब सुनि एक भरोस तुम्हारा ॥
असकहि लोचन वारि विमोचे ❀ सुनतबचनसुनिमनमहँ सोचे ॥
वचन हमार भूप सुनि लीजै ❀ शोकत्यागि करि धीरज कीजै ॥
तजब देह भारत रण एहा ❀ तजब न तुमहिं तजौ संदेहा ॥

दो०-यहि प्रकार सन्मान करि, कीन्हें विदा मुवार ।
सबलसिंग चौहान कह, गये कर्ण के द्वार ॥

इति श्रीमहाभारते उद्यागपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
भीष्मदुर्योधनसम्वादोनाम षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

दो०-कर्ण कुरुपति केर मत, बर्णत वरहिं विभाग !
कह मुनि जनमेजय सुनहू, कथासाहिअनुराग ॥

पँवरि दुवार भूप जब आये ❀ समाचार प्रतिहार सुनाये ॥
सुनत कर्ण मन अति अनुरागू ❀ करत प्रणाम लीन्ह चलिआगू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

देइ उपायन भवन लै आये ❀ आति अनूप आसन बैठाये ॥
जोरि पाणि पुनि आयसु माँगा ❀ बोलेउ राउ सहित अनुरागा ॥
अनल सहाय पवन कब यांचे ❀ कौं सहाय सखा ये साँचे ॥
तुम ते और मित्र को मेरे ❀ मैं रण रच्यउ बाह बल तोरे ॥
जानत तुम गाङ्गेय रुखाने ❀ तासु वचन सुनि मित्र रिसाने ॥
बालक जरठ बचन परतीती ❀ तातनकरियकहतअसिनीती ॥
बालापन महँ बहु बुधि होई ❀ जरा जनित डारै सब खोई ॥
तात मित्र क्रोध तजि दीजै ❀ उठिकै युद्ध शत्र ते कीजै ॥

दो०-लरहु शत्रुगन क्रोधिकरि, लेहु धनुष शर हाथ ॥
तुव बलते मैं रचेउ रण, बिहँसि कहा कुरुनाथ ॥

सुनिकै कर्ण चित्त सुखमाना ❀ बार बार यह बचन बखाना ॥
भूपति सत्य कहौं प्रण कीन्हें ❀ तुमते उऋण न प्राणहुँदीन्हें ॥
अब निशंक होइय भूपाला ❀ तुव हित मैं करिहौं शरजाला ॥
बरुण कुवर इन्द्र यम आवैं ❀ ते मोते जयपत्र न पावैं ॥
द्रुपद विराट भूप बहुतेरे ❀ पांण्डव नहिं हमरी सरि केरे ॥
उन कह कृष्णदेव उपजावा ❀ चहत बराबर युद्ध करावा ॥
जबते भवन कूबरी डारी ❀ बुद्धि बिहीन भये वनवारी ॥
मम बल जानत भूप कन्हाई ❀ गई भूलि सुधि कुमति सिखाई ॥

दो०-नाथ पठाइय दूत कोउ, धर्मराज पह जाई ।
करैं युद्ध की जाइ बन, उनहिं कहै समुझाई ॥

कर्ण बचन सुनि नृप सुख पाये ❀ बोलि उलूक वकील पठाये ॥
पृथक पृथक कहि सबन सँदेशा ❀ करहु युद्धकी छाँड़हु देशा ॥
सुनत सँदेश जो तुम नहिं आये ❀ अब नहिं बचो जीव दबराये॥
की अब बेगि आनि तुम लरहू ❀ की बन जाहु अस्त्र परिहरहू ॥
जो तुम मान भये भय पावत ❀ तो अब हम विराटपुर आवत॥
लै सँदेश उलूक सिधाये ❀ धर्मराज की सेनहिं आये ॥
पवँरि दुवार बेगि लै आये ❀ द्वारपाल तब जाइ जनाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नृप कुरुनाथ वकील पठाये ❀ कहन सँदेशस्वामिपहँ आये ॥
तब उलूक इमि बचन सुनावा ❀ धर्मराज सुनिनिकट बोलावा ॥
कहत सँदेश भूप को याँची ❀ सो अब सुनहु बातसब साँची ॥
दूतन केरि रीति असि होई ❀ कहैं सँदेश सत्य सब सोई ॥
अब नृप और बिचार न कीजै ❀ कीउठिलड़हुकिबनमग लीजै॥॥

दो०-कर्ण भूप सँदेश तुम, सुनहु भूप दै कान।
कौरव पाण्डव भूमिसब, छाइदशौं दिशि बान॥

पाहि पुकारि शरण जब ऐहौ ❀ तौं तुम जीवदान नृप पैहौ ॥
जो भूलत हो कृष्ण भरासे ❀ तुम न बचहु दुर्योधन रोसे ॥
जो कुबुद्धि पदवी रिसिआई ❀ त्याहि त्यागहुजोचहहु भलाई ॥
जो उठि लड़हु बात नहिं मानहु ❀ कृष्ण समेत मरे सब जानहु ॥
सो सुनि भीम हिये रिस व्यापी ❀ कहत सँभारि बचन नहिं पापी ॥
भे दृग अरुण खड्ग कर लीन्हा ❀ वरजेउकृष्णपाणिगहि लीन्हा ॥
अब जय विजय सुनो सबबाता ❀ करैं न भूप दूत कर घाता ॥
यद्यपि कहैं कटु बचन वकीला ❀ करैं न क्रोध नरेश सुशीला ॥
बरजेउ भीमहिं शारंगपानीं ❀ गयो उलूक भागि भय मानी॥

दो०-बोलि निकट नृप धर्मसुत, कह्यो बचन समुझाइ।
दुर्योधन ते यह कहो, अब हम पहुँचे आइ॥

अब तुम मृषा न जानहु बाता ❀ कृष्ण शपथ ऐहौं सुनु भ्राता ॥
निज पौरुष तुम करहु सँभारा ❀ कोटि यत्न नहिं होइ उबारा ॥
अस कहि पठयो फेरि उलूका ❀ चला हृदय उपजी अतिहूका ॥
रथ अरुढ़ होई तुरत सिधाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलि आहे ॥
पँवरि दुवार तज्यो असवारी ❀ गा दुर्य्योधन सभा मँझारी ॥
भीषम द्रोण कर्ण सब राजा ❀ सभा मध्य कुरुनाथ विराजा ॥
देखी राज मण्डली भारी ❀ बैठेउ सबहि जोहारि जोहारी ॥
कह नृप कहन सँदेश पठाये ❀ समाचार उनके कछु लाये ॥
हँसि बोले तब बचन उलूका ❀ कही युधिष्ठिर नृप दुइ टूका ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हम आवत तुम होहु तयारा ❀ करहु युद्ध नहिं ओर बिचारा ॥
सकल सभा महँ तुमहिं सुनावत ❀ होहु सचेत धर्मसुत आवत ॥

दो०-शपथ कीन्ह भगवान की, यह उन कह्यो सँदेश।
प्रात होत अब आइहौं, अब न बिलम्ब नरेश॥

सुनहु सँदेश न राखौं गोई ❀ करौ भूप अब जो रुचि होई ॥
बोलेउ सुनत कर्ण रिसवाई ❀ कहे बचनपुनि सबहि सुनाई ॥
अब नृप धर्म्मराज मम नेरे ❀ आवत कठिन काल के प्रेरे ॥
रण सन्मुख हरि अर्जुन पावौं ❀ मारि सकल यमलोक पठावौं ॥
शर पंजर करि भीम दबावौं ❀ मारि सकल पांडव बिचलावौं ॥
बाँधि युधिष्ठिर करि मनुसाई ❀ जयतिपत्र देहौं लिखवाई ॥
सहि न सकैं पांडव मम सायक ❀ अबतुमअभयहोहुनर नायक ॥
कौरव चरित्र कहेउँ मैं गाई ❀ अब सुनु अपर कथा कुरुराई ॥

दो०-होत प्रात उठि धर्मसुत, गये जहाँ यदुराय।
करहिं वन्दना जोरिकर, चरण कमल शिरनाय ॥

कही युधिष्ठिर अब बनबारी ❀ साजिकटकअब करहु तयारी ॥
चलत उलूक सुनहु भगवाना ❀ प्रात होत कहि दीन पयाना ॥
कृष्ण तुम्हारि शपथ हम खाई ❀ अबबिलम्बमहँअति कठिनाई ॥
पठै दिये चरवर बनवारी ❀ कहेउ नृपन सन करहु तयारी॥
निज निज सैन नरेशन साजी ❀ उठे निशान दुन्दुभी बाजी ॥
पटल वितान लदायो चारू ❀ और लदायो सकल बजारू॥
अगणित ऊँट वृषभ शकटादी ❀ खच्चर महिष चले लै लादी ॥
सकल वस्तु कारीगर नाना ❀ लै लै लादि चले निजबाना॥
गज रथवाजिसाजि शिबिकाली ❀ भये अरुढ़ मेदिनी हाली ॥

दो०-सहनाई अरु पवन घन, ढोल ढोंकि झनकार।
पटह भेरि अरु धेनुमुख, बाजे विविध प्रकार॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बन्दीगण बोले विरद, रही शंख ध्वनि पूरि ।
द्विरद घण्ट बाजत घने, भयो शब्द तहँ पूरि॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

द्रुपद नरेश साजि सब याना ❀ भया अरुढ़ बजाय निशाना ॥
धृष्टद्युम्न शिखंडी आवत ❀ रण अरुढ़ ह्वै शंख बजावत ॥
युद्धमान सैना सब साजे ❀ पणव मृदंग भेरि बहु बाजे ॥
द्विरद अरुढ़ वीर बरिआरा ❀ चल्यो तमौजा द्रुपद कुमारा ॥
पणव मृदंग भेरि बहु बाजे ❀ भे असवार नृपति दल गाजे॥
पुनि रथ साजि सात्यकी आयो ❀ सेन संग निज शंख बजायो॥
सुतन समेत विराट भुवारा ❀ लै निज कटक चले सरदारा ॥
काशिराज सेना सँग लान्ही ❀ रथ अरुढ़ ह्वै दुन्दुभि दीन्ही ॥
शूरसेन अपनो दल साजे ❀ पहिर सनाह सिंह सम गाजे॥
जरासँध सुत नृप सहदेऊ ❀ लै निज कटक चला पुनि तेऊ॥
चालिस सहस छत्रधर राजा ❀ भे अरुढ़ बाजे पुनि बाजा ॥

दो०—साजे सकल नरेश पुनि. गज रथ तुरंग पदात
रथी महारथ गजरथी. कटक क्षोहिणी सात ॥

मिलि जुरि पवाँरिद्वार जब आवा ❀ धर्मराज निज द्विरद मँगावा ॥
कुन्तल साजि लायो मयमन्ता ❀ शंखवर्ण सुन्दर चौदन्ता ॥
देखत रूप परम विकरारा ❀ चारिउ चरण बहत मदधारा ॥
कनकरचित मणिखचित अँबारी ❀ गजमुक्ता झालार छबिकारी ॥
धर्मराज हरिपद शिर नाई ❀ भे अरुढ़ प्रभु आयसु पाई ॥
बाजत दुन्दुभि शंख घनेरे ❀ करि आति नाद नकीबन टेरे॥
भयो शोर बहु दिग्गज डोले ❀ करि उदबाद बंदिजन बोले ॥
गोमुख भेरि शब्द अति भारे ❀ जहँ तहँ बिपुल नकीब पुकारे॥
होत महारव भयो अतंका ❀ बाजि उठे दलमें बहु डंका ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भीमसेन अपनो रथ साजे ❀ भये अरूढ़ बार बहु गाजे ॥
पुनि पाँचौ द्रौपदी कुमारा ❀ शंख बजाय भये असवारा ॥

दो० माणिमय चित्र विचित्र रथ. भये नकुल असवार।
पांच कोटि इकसठ लिये साज्यो भीमकुमार॥

तब सहदेव कीन असवारा ❀ अर्जुन लै साजे बनवारी ॥
लै शंकर सनाह पहिरायो ❀ इन्द्रदत्त शिर मुकुट बँधायो ॥
अदिति श्रवणके कुण्डल दोई ❀ पहिरायो जेहि मृत्यु न होई ॥
अक्षय तूण वरुण जो दीन्हा ❀ सोईलै हरि पढ़ि ढिग कीन्हा ॥
हुतभुक दीन्हेउ धनुष महाना ❀ गांडिवनामसकल जगजाना ॥
शपथ पंच लागी हौं जामें ❀ विद्युत कोटि प्रभा हैं तामें ॥
सो लै हरि अर्जुन कहँ दीन्हों ❀ धरिशिरहाथअभयपुनिकीन्हों॥
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे ❀ रण महँ शत्रु जाय तुव मारे ॥
पुनि दीन्हों प्रभु आशिष येहा ❀ निश्चय विजय न कछु संदेहा॥
अस कहि नंदिघोष रथ आना ❀ सारथि रूप धरेउ भगवाना ॥
श्वेत वर्ण लै चारों घोरे ❀ ते हरि आनि यान महँ जोरे ॥
करि अति कृपा बार नहिं लायउ ❀ पाणि पकरि हरि पार्थ चढ़ायउ ॥
करि सारथी वेष बनवारी ❀ जोती गहे पितांबर धारी ॥
शीश मुकुट जनु तरनि अभंगा ❀ चन्दन ते चर्चित सब अंगा॥
पीतवसन तनु श्याम सोहावन ❀ माणियुत पीत बिराजत पावन॥
कौस्तुभ कंठ रुचि बनमाला ❀ अंगद युत द्वौ बाहु बिशाला॥

दो० कमलनयनकुडण्लकीलत, ललितमधुरमुसकान!
कच कारे कटि केहरी.कोटि काम हरमान ॥
पाणि कल्पतरु पदकमल. कमलबदन कमनीये॥
केशी कंस कलेश हर. कीन्ह कृपा करि जीये॥
कर्‍यो सारथी वेष जब. रथ हांक्यो भगवान।
पार्थ ध्वजा पर बैठिके. तब गर्ज्यो हनुमान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

है प्रसन्न बोले भगवाना ❀ सुनहु युधिष्ठिर वचन प्रमाना ॥
मंत्र हमार भूप सुनि लीजै ❀ व्यूह बनाय गमन पुनि कीजै॥
विरचि पिपीलं व्यूह भगवाना ❀ कीन्ह बजाय निशान पयाना॥
अर्जुन रथ हांकेउ बनवारी ❀ सकल सैनके भयो अगारी ॥
युद्धमान पुनि दक्षिण ओरा ❀ चले संग लै दल घन घोरा ॥
सेन सहित दिशि वाम तमोजा ❀ रथ अरुढ़ जनु अपर मनोजा॥
धृष्टद्युम्न अतिबल धनुधारी ❀ अर्जुन रथ के चलेउ पछारी ॥
नाना वस्तु लादि लै चारु ❀ ता पीछे सब लोग बजारु ॥
ताके दक्षिण भाग शिखंडी ❀ लिये साथ निज सेन अखंडी॥
दल चतुरंग संग पुनि साजे ❀ धृष्टकेतु दिशि वाम विराजे ॥
लिये धनुष कर सायक तीछे ❀ सैन समेत सात्यकी पीछे ॥

दो०—चलत कटक हाली धरा, लगी रेणु आकास
चले नकुल सहदेव संग, लिये संग रनिवास ॥

दक्षिण दिशि द्रोपदीकुमारा ❀ चले संग लै कटक अपारा ॥
घटउत्कच दल लै दिशि वामा ❀ पाँच कोटि रक्षक बलधामा ॥
अभिमन्यु रथ पाछे पुनि आवत ❀ लिये धनुषकरबाण फिरावत ॥
अभिमन्यु संग वीर बरियारा ❀ उत्तर शंख विराट कुमारा ॥
लीन्हें साथ सैन समुदाई ❀ कीन्ह पयान निशान बजाई ॥
धर्म्मराउ पुनि कीन्ह पयाना ❀ बाजे दल गहगहें निशाना ॥
पवन धेनुमुख भेरि समूहा ❀ बाजे शंख चले दल यूहा ॥
चालिस सहस छत्रधर राजा ❀ चले संग लै सैन समाजा ॥
द्रुपद नरेश चलेउ दल साजी ❀ मयउ अरुढ़ दुन्दुभी बाजी ॥
उठी धूरि गो छाय अकाशा ❀ रवि अलोप पूरी सब आशा ॥
लेकर धनुष चले पुनि गाजत ❀ नृपके दक्षिण भाग बिराजत ॥
बायें ओर विराट भुवारा ❀ कीन्ह पयान बजाय नगारा ॥
काशिराज नृप गज के पाछे ❀ सैल समेत बिराजत आछे ॥

दो०—रथ अरूढ कर धनुष धरि, शूरसेन महराज।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नृप गज के आगे चले, लै निज साज समाज॥
पीछे अनी वृकोदर आवत ❀ करत घोर रव गदा फिरावत॥
वाम पाणि लीन्हें करवाली ❀ भीमहिं चलत धरा सब हाली॥
क्षोभित सिन्धु धराधर डोले ❀ कमलानलअहिदिग्गज बोले॥
कौतुक देखि चकित सुर डीठी ❀ परेउ भार कच्छप की पीठी॥
कर रव भीम बार बहु गाजे ❀ रवि तुरंग तजि मारग भाजे॥
सुरपुर भेदि भीम की हाँका ❀ परी जाय ध्रुव लोकपै हाँका॥
चली जात मग सेन अपारा ❀ बाजत शंख मृदंग नगारा॥
भाट भरतकुल विरद बखानत ❀ सुनिसुनिशब्दशत्रुभयमानत॥
दल विलोकि मग होत अतंका ❀ रघुबर प्रथम गये जिमि लंका॥

दो०—गोमुख शंख निशान रव, भेरि भूरि करनाल।
गज घंटा गाजत सुभट, सुर पुर शब्द कराल॥

कम्पत शेष विकल भुजगेशा ❀ उठी धूरि छापि गयो दिनेशा॥
सुर विमान नभ ऊपर छायउ ❀ सुमन वर्षि शुभशकुनजनायउ॥
कह नृप तुम हरि अन्तर्यामी ❀ विजय उपाय कहो अबस्वामी॥
बोले बिहँसि बचन भगवाना ❀ करहु नरेश शक्ति को ध्याना॥
तासु प्रसाद विजय नृप होई ❀ यह ताजि और उपायन कोई॥
सुनि हरि बचन भूप अनुरागे ❀ करन ध्यान अम्बा को लागे॥
करि आचमन मूँदि दृग लीन्हें ❀ प्राणायाम वेदविधि कीन्हे॥
करि अष्टांग सकल सुरसाधी ❀ करतध्याननृपलागि समाधी॥

दो०-मुक्त केश कर खड्ग धर, मुण्डमाल दृग लाल।
को सहाय मेरी करै, बिन काली यहि काल॥
उरग किंकिणी कटि लसै, शवारूढ़ भुज चारि॥
हरन हमारे दुसह दुख, हे त्रिपुरारि पियारि॥

याहि विधि विनयभूपजबकीन्हा ❀ हे प्रसीद तब दर्शन दीन्हा॥
सानुकूल तब भई भवानी ❀ वरंबूहि बोली हँसि बानी॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हे नरेश तुम हरिहि पियारे ❀ माँगहु जो अभिलाष तुम्हारे ॥
सुनि प्रियगिरा अमियरससानी ❀ बोलेउ राउ जोरि युग पानी ॥
मिटै कलेश सुनै तब भाषा ❀ दरश देखि पूजी अभिलाषा ॥
जानहु मातु मनोरथ मोरा ❀ मैं का कहौं दास मैं तोरा ॥
तब यह कही अनुग्रह मोरे ❀ ह्वै है सफल मनोरथ तोरे ॥
धर्मराज कहँ दै बरदाना ❀ भई शक्ति पुनि अन्तर्द्धाना ॥
हरि नरेश गन सुख अधिकाई ❀ कीन्ह पयान निशान बजाई ॥
मग सर सरित सूखिगा पानी ❀ पंक रेणु ह्वै गगन उड़ानी ॥

दो०-चले जात मग धर्मसुत, लीन्हे दल निज साथ ।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्रीब्रजनाथ ॥

करत शिबिर पुनि करत पयाना ❀ तब कुरुदेश आय नियराना ॥
बीच बीच मग करत बसेरा ❀ कबहु पयान होय कहुँ डेरा ॥
नगर वारुणावर्त्त समीपा ❀ कीन्ह्यो शिबिर पांडुकुलदीपा ॥
जागे सकल निशा अवसाना ❀ प्रात होत पुनि कीन्ह पयाना ॥
सुमिरि गौरि हर कृष्ण गणेशा ❀ गज अरुढ़ ह्वै चले नरेशा ॥
कुरुक्षेत्र के पश्चिम ओरा ❀ कीन्हें धर्मराज तहँ डेरा ॥
अमल अमोल बितान तनाये ❀ पटल कनात सहित छबि छाये ॥
बाजत दल घरियार घनेरे ❀ जहँ तहँ परे नृपन के डेरे ॥
परो धर्म्मसुत सेन अखण्डा ❀ परखहिंशिबिरदेखिनिजझण्डा ॥

दो०-धर्मराज को पाई सुधि, कुन्ती पहुची आय ।
देखि पुत्र अरु पूत्रतिय, आनंद उरनसमाय ॥

धर्म्मराज पदबन्दन कीन्हा ❀ होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हा ॥
बन्दत चरण नकुल सहदेऊ ❀ पाई अशीष मुदित मन भयऊ ॥
अर्जुन भीम आइ पद बन्दे ❀ अभिमन्युआशिषपाइअनन्दे ॥
परसे चरण द्रौपदी रानी ❀ उर लपटाइ लीन्ह गहिपानी ॥
प्रीति सहित यदुनन्दन भेटी ❀ भीतर पलटि गई दुख मेटी ॥
सुनि सब पुत्रवधू उठि धाई ❀ परी चरण अति आनँद छाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुशल पूँछि कै कंठ लगाई ❀ दीन्ह अशीश निकट बैठाई ॥
अभिमन्यु आदि परे पग नाती ❀ हृदय लगाई जुड़ावत छाती ॥
दो०-कुन्ती गोद समोद तब बैठारो सुत नन्द ।
सबलसिंह चौहान कह, पूरि रह्यो आनन्द ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
अष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

कह ऋषि सुनु जनमेजय राई ❀ कथा बिचित्र श्रवण सुखदाई ॥
यह सुधि दुर्योधन नृप पाई ❀ भयऊ अरुढ़ निशान बजाई ॥
भीषम कर्ण द्रोण धनुधारी ❀ साजी सैन भयंकर भारी ॥
कृपाचार्य्य द्रोणी रण रंगा ❀ लीन्हें संग चमू चतुरंगा ॥
बाहुलीक लै कटक अपारा ❀ भये अरुढ़ बजाई नगारा ॥
सोमदत्त सँग दल समुदाई ❀ बाजत पटह शंख सहनाई ॥
भूरिश्रवा सैना सब साजे ❀ गंगाधर काम्बोज बिराजे ॥
रथन अरूढ़ बजाइ निशाना ❀ दुर्योधन सँग कीन्ह पंयाना ॥
शल्य नरेश अलबुंष साजे ❀ पवन निशान शंख बहु बाजे ॥
साज्यो पुनि कलिंग नरनाथा ❀ लै नवलाख द्विरद पुनि साथा ॥
दो०-रथ तुरंग बहु रंग के, सेना साथ अनन्त ।
असी लक्ष गज लै चले, महाराज भगदन्त ॥
सिन्धु नरेश जयद्रथ नामा ❀ अति रणधीर वीर बलधामा ॥
लैकर धनुष बजाइ नगारा ❀ कौरव सँग भयो असवारा ॥
शकुनी औ विकरण रण रंगा ❀ द्विरद दुमत्त दुशासन सँगा ॥
सौ बान्धव दुर्योधन केरे ❀ भ्रातजात अरु तनय घनेरे ॥
निज निज रथन भये अवसारा ❀ बाजत गोमुख शंख नगारा ॥
सेन समेत त्यागि सब धर्म्मा ❀ द्विरद अरुढ़ चल्यो कृतवर्म्मा ॥
नृप उलूक बृषसेन भुवाला ❀ चले सँग लै कटक विशाला ॥
नृप शशिबिन्दु चले दल साजे ❀ तुरँग अरुढ़ दमामें बाजे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा ❀ चले साथ लै सेन समाजा ॥
अस्त्र निपुण अरु अति बलदाई ❀ ज्येष्ठ मित्रविन्दा के भाई ॥
कह हरि कथा भूप तुव जानी ❀ अति प्रिय कृष्णदेवकी रानी ॥
तासु बन्धु द्वौ अति बलदाई ❀ दुर्योधन के भये सहाई ॥
दो०-साठि सहस नृप छत्रधर, दै गहगहे निशान ।
निज निज दल सँगलैचले, गर्द लोपि गयेभान॥
एकादश क्षोहिणि दल साथा ❀ करत अकूत चल्यो कुरुनाथा॥
बाजे बाजन भाँति अनेका ❀ उठी धूरि रविमण्डल छेका ॥
भा अँधियार जानि निशि घोरा ❀ बिछुरे चक्रवाक के जोरा ॥
बाजत बिपुल नृपन के डंका ❀ हाली धरा परम आतंका ॥
दलके भार धरा धर डोले ❀ विरुदावली भाट बहु बोले ॥
सुनि सुनि नाद नकीबन केरा ❀ खग मृग त्यागो भागि बसेरा ॥
गर्जत विपुल सुभट मग जाहीं ❀ अति आतंक होत दल माहीं॥
पीत ध्वजा रथ पीत विराजे ❀ पीत धनुष पीतै गुण साजे ॥
पीत वर्ण चारो हैं घोरे ❀ वसन विचित्र पीत रँग बोरे ॥
धनुष चिह्न ध्वज ऊपर राजत ❀ पीत वर्ण दल कर्ण विराजत ॥
दो०-श्वेत वर्ण तनु वसन पुनि, श्वेत धनुष अरु बान।
श्वेत केश रथ बाजिहैं, श्वेत ध्वजा फहरान ॥
ताल चिह्न ध्वज शोभा पावत ❀ लै दल श्वेत पितामह आवत ॥
श्याम वर्ण रथ अधिक सोहावत ❀ श्यामवर्ण घोड़े छबि पावत ॥
नील कंज रित धनु कर लीन्हें ❀ नील वर्ण तामें गुण दीन्हे ॥
नील रंग फहरात पताका ❀ खड्ग चिह्न तामें अति बाँका ॥
नील निचोल विभूषण साजे ❀ नील वर्ण दल द्रोण विराजे ॥
अरुणवर्ण दल साजि सुशर्म्मा ❀ अरुणवर्ण शोभित धनुकर्म्मा ॥
अरुण चमर शोभित रथ केतू ❀ चलेउसाजि कुरुपतिजय हेतू ॥
सिन्धुराज के तुरै हरेवा ❀ अति लाघवगति मनहुँपरेवा ॥
हरित केतु सोहत रथ ऊपर ❀ हरित वसन छायो दल भूपर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कौरव सब कुरुनायक संगा ❀ तिनके रथन ध्वजा पचरंगा ॥
द्विरद चिह्न नृप स्यदन सोहत ❀ अतिविचित्ररणकोमनमोहत ॥
दो०-निज निज रथन अरूढ नृप, सोह ध्वजा बहुरंग ।
हरितपीत कोउश्याम सित, राजत सुघरसुरंग॥
यहि प्रकार कौरवपाती सैना ❀ बली जात उपमा कछु हैना ॥
अति अगाध कछु अंत न जाना ❀ प्रलयभिन्धुकहिव्यासबखाना॥
कुरुक्षेत्र के पूरब ओरा ❀ कौरव कटक टिका घनघोरा ॥
तनवायो तहँ विपुल विताना ❀ बजत घोर रव नौबतखाना ॥
गड़े केतु दल नाना कारा ❀ बाजत पँवरि पँवरि घरियारा ॥
शिबिरझिबिरप्रति सबबल धामा ❀ कीन्हेउ खान पान विश्रामा ॥
द्वोउ नरेश बहु खनक पठायउ ❀ ऊँच नीच महिसुदब बनायउ॥
करि सब भूमि गये यहि ताका ❀ अटक जहां न स्यंदन चाका॥
दो०-ऊँच नीच खनि खनिकगण, कीन्हीभूमिसमान।
सबलसिंहचौहान कहि, योजन सप्त पयान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वाणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

जनमेजय पूँछत अनुरोगे ❀ पुनिमुनिकथाकहन सोलागे ॥
करन हेतु कुलको सम्बोधन ❀ आये व्यास जहाँ दुर्योधन ॥
उठि प्रणाम कीन्हों तब राजा ❀ आशिष दीन्हरहै नृप लाजा ॥
क्षत्री धर्म बढ़ै तनु भारी ❀ जीवत छुटै न बानि तुम्हारी॥
अस कहि व्यास बहुत समुझावा ❀ वंश बैर केहि काज बढ़ावा ॥
सो अब भूप त्यागि करि दीजै ❀ कलह नीकनहिंसम्मत कीजै ॥
देहु अंश सुनि शीष हमारी ❀ पांडव सबल होई बड़ि रारी ॥
बिन कारण कीन्हों अपकारा ❀ लै कलंकतुमबिपिन निकारा ॥
समुझि परस्पर करहु मिताई ❀ देहु अंश नृप मिटै लड़ाई ॥
व्यास कही कछु चित्त नआनी ❀ सुनतबिहँसिबोलाअभिमानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-द्रोण कर्ण भीषम प्रबल, मो हित ये धनुधारि।
देहुँ न भूमि मुनीश मैं, करौं भयंकर रारि॥

जो कोटिन पांडव दल आवैं ❀ सब गुरु द्रोण मारि बिचलावैं॥
लरैं पितामह जो करि क्रोधा ❀ सकै रोकि रणको जग योधा॥
चलहिं सरोष कर्ण धनु तानी ❀ को रण बचहि महामुनि ज्ञानी॥
सुनिनृपबचन जानिअभिमानी ❀ कहीव्यासमुनिप्रथम कहानी॥
पुर कांपिला देश पंचाला ❀ पृषद नाम तहँ भयो भुवाला॥
बल प्रताप करि राज्य बढ़ावा ❀ द्रुपद नाम तेहि सुत उपजावा॥
विद्या कारण भूप पठाये ❀ अग्निवेष के आश्रम आये॥
ऋषि के भवन बड़ी चटसारा ❀ द्विजकुमार अरु राजकुमारा॥
प्राकृत दत्र बचन को भाखा ❀ ताते दूरि किये नहिं राखा॥
भरद्वाज ऋषि केर कुमारा ❀ पढ़हिं द्रोण तहँ बुद्धि उदारा॥
प्रषद पुत्र ते परी मिताई ❀ एकहि सँग पढ़े मन लाई॥
रह्यउ न बीच प्रीति अति बाढ़ी ❀ नृप सुत कीन्ह प्रतिज्ञा गाढ़ी॥
जब पाइब हम साज समाजू ❀ आधा बाँटि देहु तोहिं राजू॥
यहि प्रकार बीते कछु काला ❀ भे पृषद मे द्रुपद भुवाला॥
विद्या सकल द्रोण पढ़ि लीन्हा ❀ जाइ महाबन पुनि तप कीन्हा॥
गौतमसुता द्रोण पुनि ब्याही ❀ कृप भगिनि जानतजगताही॥
ताके सुत भे अश्वत्थामा ❀ जगतविदितगुणसबअभिरामा॥

दो०-द्रोण द्रुपद भूपाल ते, सुत हित माँगी गाइ।
नहिं दीन्हो अपमान करि, दियो तुरत दुरिआइ॥
जानत जग समरथहते, मुनिवर उभय प्रकार।
दियो शाप नहिं क्रोध करि, कियोनअस्त्रप्रहार॥

लज्जा भई द्रोण दुख पाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलि आये॥
गेंद काढ़ि बालकन देखावा ❀ सुनि भीषमनिजनिकटबुलावा॥
चरण परस कीन्हों सनमाना ❀ दीन्हों धेनु धरा मणि नाना॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सौंप्यो पुनि कौरव कुलकेतू ❀ बालक सब धनुर्विद्या हेतू ॥
अर्जुन ते मानत अति प्रीती ❀ अस्त्र सिखायो अद्भुत रीती ॥
अस्त्र सिखाय निपुण पुनि कीन्हों ❀ भीषम जाय परीक्षा लीन्हों ॥
तुंग विशाल एक वट भूपर ❀ कृतमा भार धरा ता ऊपर ॥
पक्षि रूप करि लक्ष बनायो ❀ भेद हेत सब शिष्य बुलायो ॥

दो०-गुरु अनुशासन मानि तब, जुरे सबै इक साथ।
कटि निषंग करबाल कसि, चले धनुष धरिहाथ॥

भीषम द्रोण विदुर तहँ ठाढ़े ❀ द्रोण समीप मोद मन बाढ़े ॥
जाय प्रणाम सबन मिलि कीन्हा ❀ चिरंजीवकहि आशिष दीन्हा ॥
पंगति बांधि ठाढ़ गुरु कीन्हा ❀ हनहु लक्ष यह आज्ञा दीन्हा॥
कह्यो द्रोण दुर्योधन भूपहि ❀ देखत पुत्र पक्षि के रूपहि ॥
देखत वृक्ष माँह की नांहा ❀ सुनियहवचनकह्योकुरु पांहा ॥
सब देखत बोले कुरुराजा ❀ कहिऋषितुमतेसरहिन काजा ॥
पुनि मुनि धर्मराज तें पूँछा ❀ उनकहिदीनसकलछल छूँछा ॥
सब देखत हों सुनि यह बानी ❀ सरिहि न काममहामुनि ज्ञानी ॥
सकल शिष्य पूँछे यहि भाँती ❀ कही बात नहिंगुरुहि सोहाती ॥
पुनि पूँछी मुनि अर्जुन पाहीं ❀ देखत हमहिं कहेउ उन याहीं ॥
पक्षि बृक्ष हम कछुहि न लेखत ❀ दृष्टि लगाय तुण्ड कहँ देखत ॥

दो०-पार्थ बचन सुनि द्रोणगुरु, बोले गिरा प्रमान।
तुमते निसरी कजासुत, करहु विशिख सन्धान ॥

सुनि अर्जुन छाड़े तब बाना ❀ कटीतुण्ड सबहीं सुखमाना ॥
अति अनन्द भीषम उर छाये ❀ साधु साधु कहि कण्ठ लगाये ॥
तुमसबमिलिगुरुदाछिणा दीन्हेउ ❀ अर्जुन द्रव्य द्रोण नहिं लीन्हेउ ॥
द्रुपद मित्र कीन्हेउ अपमाना ❀ लावहु बांधि देहु यह दाना ॥
गुरु शासन अपने शिर धारा ❀ नृपहि जीति चरणन तरडारा ॥
देखि द्रोण तब दीन छुड़ाई ❀ गयो नरेश भवन सिखिआई ॥
श्रीहत भयो तेज तनु नाहीं ❀ नृप प्रण कीन्हो यह मनमाहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मोते बैर द्रोण उपजावा ❀ शिष्य हाथ अपमान करावा ॥
करि उत्पत्ति पुत्र बलवाना ❀ करवावों ताको अपमाना ॥
बोलि लीन्ह बहु विप्र समाजा ❀ कीन्ह अरम्भ यज्ञ कर काजा॥
वेद ऋचा पढ़ि विप्र अनन्ता ❀ कीन्ह यज्ञ पुनि वर्ष प्रयन्ता॥
ह्वै प्रसन सुरनायक आये ❀ सिद्धकाजकहि भवनसिधाये ॥

दो०-प्रथम प्रकट भइ द्रौपदी, उपमा कहत बनैन ।
धृष्टद्युम्न पुनि कुंडते, कढ़ो पुत्र जनु मैन ॥
शीश मुकुट कुंडल कवच, लियो धनुष शर हाथ॥
द्रोणनिधन हित निर्मयो, कमलयोनि कुरुनाथ ॥

भीषम निधन हेतु संसारा ❀ भयो शिखण्डीको अवतारा ॥
काशिराज त्रैसुता सयानी ❀ भीषमजीति स्वयम्बर आनी॥
नाम अम्बिका सब गुणरासी ❀ अंम्बा नाम रूप कमलासी ॥
युगल विचित्रवीर्य कहँ व्याही ❀ अम्बालिका न ब्याह्यो ताही॥
नयन सनीर गरे भरि आवा ❀ बोली बचन शोच उपजावा ॥
गंगासुत तुमहीं हौं आनी ❀ मोको अब लीजै गहि पानी॥
सुनि भीषम बोले यह बानी ❀ राजसुता तुम बात न जानी॥
मातु पिता सन कीन्ह करारा ❀ देखौं मैं न नयन भरि दारा ॥
परशुराम जहँ पुरुष अनादी ❀ भा मनशोक गई फिरिआदी ॥
कही कथा पुनि रोदन कीन्हा ❀ ह्वै दयालु तिन धीरज दीन्हा॥

दो०-आज्ञा भंग न करि सकै, भीषम शिष्य हमार ॥
तोको सौंपौं पाणि गहि, यह मुनि कीनकरार ॥

प्रात होत मन परम अनन्दन ❀ लै नृपसुता चले भृगुनन्दन॥
पुरी हस्तिना को चलि आये ❀ भीषम देखि चरण शिर नाये॥
आदर ते पुनि भवन लवाये ❀ आति पुनीत आसन बैठाये ॥
आवतही इमि बचन सुनायो ❀ सुनहु पुत्र जा कारण आयो॥
की याको लीजै गहि पानी ❀ की रण राचेय कहीयह बानी ॥
मो सम कौन भयो जग अत्री ❀ इकइस बार हने सब क्षत्री ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कोउ कोउ बचे नारिके बोले ❀ सुनि सक्रोध गंगासुत बोले ॥
क्षत्रीवंश बैर भरि लैहौं ❀ समर हराय जान तब दहौं ॥
अस्त्र शस्त्र लै रथ चढ़ि आई ❀ कुरुक्षेत्र दोउ रचेउ लड़ाई ॥

दो०-द्वन्द्व युद्ध तहँ अति भयो, शर छूटै पुनि बाम।
गुरू शिष्य सम मिलि करयो, तेइस दिन संग्राम॥

तब भीषम करि क्रोध अपारा ❀ कठिन बाण तनु तानि प्रहारा॥
वाम पार्श्व लागेउ जब सायक ❀ रथते विकल गिरेउभृगुनायक ॥
उठे सँभारि कीन संधाना ❀ भीषम के मारे बहु बाना ॥
दक्षिण पार्श्व शक्ति पुनि मारी ❀ परेउ गंगसुत भूमि दुखारी ॥
शक्तिघात लागी अति पीरा ❀ सुधिनरही कछु बिकलशरीरा ॥
ताही समय सकल वसु आये ❀ पाणि पकरि गांगेय उठाये ॥
हौ अष्टम वसु को अवतारा ❀ तुम पीड़ित नहिं करहुसँभरा ॥
अस काहि गये सप्तबसु जबहीं ❀ रथ अरुढ़ गंगासुत तबहीं ॥

दो०-ब्रह्म अस्त्र संधानि करि, कीन्हों तुरत प्रहार।
छिटकी ज्योति अकाश महँ, चले करत हुंकरा॥

भृगुनन्दन ब्रह्मास्त्र प्रहारा ❀ चलेउ अकाश भयोउजियारा ॥
भये शिथिल आये ह्वै धरणी ❀ युद्ध कियो करि अद्भुत करणी॥
जमदाग्नि यिज शक्ति प्रहारी ❀ भयो अगाध शब्दअतिभारी ॥
छिटकी ज्योति चली नभ कैसे ❀ ग्रीषम के प्रचंड रवि जैसे ॥
लागी हृदय परत नहिं सूझी ❀ महिगिरि परो सारथी जूझी ॥
जोती छूटि स्ववश ह्वै बाजी ❀ चले पलटि स्यंदन लैभाजी ॥
रथ अरुढ़ ह्वै कृप करि गंगा ❀ गही बाँह लै फिरे तुरंगा ॥
होइहि विजय पुत्र सुनि लीजै ❀ ह्वै निश्चिन्त युद्धअब कीजै ॥
यह कहि कै स्यंदन पलटाई ❀ भृगुनन्दन के सन्मुख लाई ॥
चतुर्विंश दिन युद्ध सँहाना ❀ अब नृप कहौं सुनो दैकाना ॥
देव अस्त्र दोउ करैं प्रहारा ❀ करहिंनिवारणविविध प्रकारा ॥
नारायण शर भीषम लीन्हा ❀ पढिकै मन्त्र फोंक परदीन्हा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-तब सकोप भृगुराम होइ, लीन्हो पशुपति बान।
अतिलाघवदृगअरुणकरि, कीन्होधनुषसंधान॥

छिटकी ज्योति भयो उजियारा ❀ नभ पथ चले करत फुकारा॥
अस्त्र अस्त्रते भयो निवारण ❀ तब लागेउ तीक्षण शर मारण॥
नील बाण भीषम फटकारा ❀ भृगुपति के मस्तक महँमारा॥
रहेउ न धीर भई अति पीरा ❀ गिरे भूमि नाहि चेत शरीरा॥
भीषम देखि बहुत पछिताने ❀ धाये उतरि छत्र फिर ताने॥
कहत न बनै नयन जल बाढ़े ❀ मुख पर छत्र छाँह किय ठाढ़े॥
उठहु नाथ गंगसुत बोले ❀ सुनि भृगुराम युगल दृगखोले॥
देखि उठ्यो भृगुकुल अवतंसा ❀ भीषम कहँ बहुबार प्रशंशा॥
तुम सम कोउ गुरु भक्तनआना ❀ अब सुत माँगिलेहु बरदाना॥
मागत हौं माँगे यह दीजै ❀ रथ चढ़ि लड़हु कृपापुनिकीजै॥

दो०-परशुराम अरु गंगसुत, चढे रथन पर जाइ।
धनुष बाण पुनि करगहे, निज निज शंख बजाइ॥

तेहि अवसर मरीचि ऋषि आये ❀ गहिकर परशुराम समुझाये॥
अब तुम तात तजो यह काजै ❀ शिष्य पुत्र ते नीक पसजै॥
भीषम ते बोले ऋषिराजा ❀ गुरुते रण जीतें बड़ि लाजा॥
ताते युद्ध त्याग करि दीजै ❀ है मत नीक भवन मग लीजै॥
सुनि शुभ गिरा भगसुत बोले ❀ कहे नाथ तुम बचनअमोले॥
क्षत्री समर विमुख ह्वै जाई ❀ लोक अयश परलोक नशाँई॥
ताते मैं प्रभु प्रथम न जैहों ❀ अपने कुलहि कलक न लैहों॥
परशुराम हैं हरि अवतारा ❀ जीते भूमि भूप बहु बारा॥
अर्जुन भुज गहि पाणि कुठारा ❀ काटे सुयश विदित संसारा॥
इकइस बार भूप बिन कीन्हीं ❀ धरा सकल विप्रन कहँ दीन्हीं॥

दो०-तातें प्रथमहिं नाथ तुम,उनहिं देउ पलटाय।
तब लगि मैं नहिंरणतजों,कीन्हे कोटिउपाय॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अस कहि मौन गंगसुत भयऊ ❀ पुनि मुनि परशुराम पहँ गयऊ॥
गहि जोती कर बाजि फिरायो ❀ बहु बुझाय स्यन्दन पलटायो ॥
चले निरखि भृगुनन्दन जाना ❀ हर्षि गंगसुत कीन्ह पयाना ॥
विनय बचन बहु भाँति सुनाये ❀ करि प्रणाम अपने थल आये ॥
ह्वै निराश तब राजकिशोरी ❀ चिता बनायो काठ बटोरी ॥
सुरसरि निकट माँगि वर लीन्हा ❀ भीषम निधन हेतु प्रणकीन्हा॥
जरी नारि करि बुद्धि प्रचण्डी ❀ द्रुपद पुत्र सोइ भयो शिखण्डी॥
कर्ण निधन हित सुनहु मुवारा ❀ है जग पारथ को अवतारा ॥
तुम्हरी मीचु भीम के हाथा ❀ है निश्चय जानहु कुरुनाथा ॥

दो०-मृषा होय नहिं तुवबचन, जानि परो अब सोय ।
भावी कैनउ यतनते, मेटि सकै नहिं कोय ॥
तुव जानत भवितव्यता, कह नृप बारहिं बार ।
करब युद्ध होइहि सोई. जो बिधि लिखा लिलार ॥

सुनत व्यास उठि कीन्ह पयाना ❀ भावी चित्त प्रबल हम जानी ॥
सुमिरत मन हरि ध्यान लगाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलिआये ॥
धृतराष्ट्रक आदर करि लीन्हा ❀ दण्ड प्रणाम बार बहु कीन्हा ॥
गहि पद भूमि व्यास ते बूझा ❀ होइहि सम्मति की अब जूझा ॥
कह सुनि होइहि विकट लराई ❀ बोल्यो राउ बहुरि शिर नाई ॥
मैं जानों जेहि सत संग्रामा ❀ करि उपायसोई सेन्य अकामा ॥
दिव्य दृष्टि सञ्जय कहँ दीन्हा ❀ य कहिहैं तुम ते रण चीन्हा ॥
जो होई संग्राम तमासा ❀ असकहिगयोविपिनऋषिव्यासा॥

दो०-वैशम्पायन यह चरित, समुझायो सब भूप
सबलसिंह चौहान कह, निज बल के अनुरूप ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलासिंहचौहानभाषाकृते
त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० कह मुनि जनमेजय सुनहु निजकुलकेगुणगाथ।
बोलि सकल मंत्री निकट करत मंत्र कुरुनाथ॥
कहहु सचिव का करिय बिचारा ❀ बैरी धर्मराज बरिआरा ॥
लागत हमैं सकल मत फीका ❀ शकुनी कह्यो मंत्र अब नीका॥
ईहै मंत्र कर्ण पुनि दीन्हा ❀ चहिये शत्रु निवारण कीन्हा ॥
भूरिश्रवा द्रोणि मन भायउ ❀ सबन बैठि दृढ़ मंत्र दृढ़ायउ ॥
इहां कृष्ण लै सकल समाजा ❀ अर्जुन भीम धर्मसुत राजा ॥
द्रुपद विराट आदि भट भारी ❀ पूँछत सबहिं मंत्र बनवारी ॥
बुद्धिमान हौ तुम सब भूपा ❀ कहौ मंत्र निज निज अनुरुपा॥
तब इमि कहेउ विराट मुवारा ❀ सुनहु मंत्र वसुदेव कुमारा ॥
और बिचार कौन यहि माहीं ❀ बिना युद्ध मिलि है महि नाहीं॥
दो० कही द्रुपद नरनाह तब सुनिये श्रीब्रजराज ॥
और बिचार न कीजिये करहु युद्धकर साज॥
कही सात्यकी सुनिये मो मति ❀ मिलिहिनभूमियुद्धबिनुयदुपति॥
ताते कीजै अवशि लराई ❀ शत्रु जीति महि लेव छुड़ाई ॥
नीक मंत्र सात्यकी बिचारा ❀ कह्यो नकुल यह बारहिंबारा ॥
कुन्ती कह्यो मंत्र सुनि लीजै ❀ करिअरिनिधनराज्यनिजकीजै॥
हैं यदुनाथ सहायक तोरे ❀ ह्वै है विजय पुत्र मत मोरे ॥
सहदेवहु दीन्हों मत एहा ❀ कीजै रण त्यागो संदेहा ॥
धर्म्मराज कीजै रण करणी ❀ जीतौ शत्रु मिलै निज धरणी॥
दुर्योधन कीन्हों अभिमाना ❀ समुझायो हरि बात न माना ॥
बिना युद्ध कैसे महि देहै ❀ अब नृप त्याग करौ संदे है ॥
दो० भीमसेन यहि विधि कहेउ बिहंसि कृष्ण ते बैन।
बिना युद्ध नहिं महि मिलै पीतम पंकज नैन ॥
अब देखो पुरुषारथ मोरा ❀ करिहौं बहुत कहत हौं थोरा ॥
सन्मुख दुर्योधन सन लड़ऊँ ❀ रुण्डमुण्डमय मेदिनि करऊँ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनहु भूप कौरव बिन मारे ❀ नहिं आइहि सन्तोष हमारे ॥
दुर्योधन जीतौं रण माहीं ❀ कृष्णकृपाकछुनिजबलनाहीं ॥
ताते और बिचार न करहू ❀ अब भय त्यागि भूपतुमलरहू॥
कहेउ शिखण्डी सुनहु नरेशा ❀ करहु युद्ध सब छांड़ि अँदेशा ॥
भीषम युद्ध भयउ शिर हमरे ❀ करिहौंनिधनविजयाहिततुम्हरे ॥
धृष्टद्युम्न बोले तेंहि काला ❀ करहु युद्ध जनि डरहु भुवाला॥
मैं आड़ौं अब द्रोण लड़ाई ❀ मारौं करौं महा प्रभुताई ॥
काशिराज दीन्हें मत येहा ❀ लड़हु नरेश तजहु सँदेहा ॥
भये सहायक श्री बनवारी ❀ निश्चय विजय न हारि तुम्हारी॥

दो० धर्मराज बोले बिहँसि, सुनिये दीनदयाल ॥
जाके शिर तुव कर कमल, ताहि न जीते काल॥

दुर्योधन प्रभु कीन्ह कुकर्मा ❀ छाँड़े लोकलाज अरु शर्मा ॥
तृण समान तिहुँलोकहि जानी ❀ कीन्हेसि नग्न द्रौपदी रानी ॥
बढ़हि पाप मारे रण भाई ❀ मत मोरे नहिं नीकि लड़ाई ॥
मंत्र हमार नाथ सुनि लीजै ❀ कीजै संधि युद्ध जनि कीजै ॥
कीजै निधन यदपि अपराधी ❀ जो नहिं बांटि देय महि आधी॥
फरकत अधर द्रौपदि बोली ❀ है हरि धर्मराज मति डोली ॥
क्षत्रिधर्म सब दीन्ह गँवाई ❀ है नृप निलज लाज नहिं आई॥
कहिबे को हमरे पति पाँचा ❀ पति न रही सुनिये प्रभु सांचा॥
विधवा भली बिना पति नारी ❀ पतिन जियत गई लाज हमारी॥
येइ पति पतित रहे शिर नाई ❀ पकरेउ केश दुशासन धाई ॥
बार बार तुव नाम पुकारी ❀ बसन पैठि प्रभु लाज उबारी ॥
अस कहि तुरत द्रौपदी रानी ❀ बहेउनीरदृगअति अकुलानी ॥

दो० बोले पारथ रोष करि, तुव प्रसाद यदुनाथ ।
करौं अकौरव भूमि नहिं, तौन छुवौं धनु हाथ॥

प्रभुपद शपथ धनुष जब धारिहौं ❀ कीर समान कर्ण कहँ मारिहौं ॥
सुनिके बचन धीरता आनी ❀ रही चुपाय द्रौपदी रानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब हरि धर्मराज सन बोले ❀ मधुर हास श्रुति कुंडल डोले ॥
मैं सहाय प्रभु धीर न आनत ❀ अजहूँ दुर्योधन भय मानत ॥
तजहु नृपाति सब सँशय शोचा ❀ हौं रण अजयको जीतै तोका ॥
है नरेश कादर मन तोरा ❀ होत न धीर बचन सुनमोरा ॥
कुरुदल देखत चित्त डराने ❀ तौ कत प्रथम युद्ध तुम ठाने ॥
करहु चित्त दृढ़ रहहु पोढ़ाने ❀ मिलिहि न भूमि भूप कदराने ॥
माँगे भीख धरा जो पावहि ❀ तो दीनहुँ भूपाल कहावहि ॥
अब ह्वै निडर अस्त्र कर लीजै ❀ करि आरिनाश राज्य नृप कीजै॥

दो०-क्षत्री समर सकाइ तौ, जगत हँसाई होइ।
ह्वै निशंक अरिते लडै. शूर कहावै सोइ॥

क्षत्री समर पराभव पावै ❀ लोक अयश परलोक नशावै ॥
सन्मुख लड़हु छाँड़ि सब लोभा ❀ तनु परिहरे होत कुल शोभा ॥
तुम नृप क्षत्री धर्म न जानत ❀ ताते युद्ध करत भय मानत ॥
भोगी बीर धरा को नावा ❀ करहिं भोग जे नृप बलधामा ॥
जे नृप क्रूर तजहिं कदराई ❀ मिलहिनमहितोहि आनउपाई ॥
तात नृपति त्यागि सँदेहू ❀ ह्वै निशंक कर आयुध लेहू ॥
सन्मुख दुर्योधन संग लड़हू ❀ क्षत्री धर्म प्रकट अब करहू ॥
पुनि हँसि कह्यो द्रौपदी रानी ❀ हे नृप सुनहु कृष्ण की बानी ॥
भय छाँड़हु अब रचहु लड़ाई ❀ सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥
भरतवंश भये भूप अनेका ❀ शूर समर्थ एक ते एका ॥

दो०-होइजोमेरु समान अरि, तृण अवलोकित दीठिं।
महावीर अरु धीरधर, कालहु देत न पीठि॥

की अब बुद्धि भ्रष्ट तुव भयऊ ❀ की वह विजय पलट होइ गयऊ॥
जो न करहु तुम युद्ध नरेशा ❀ आयुध छाँड़ि धरहु त्रियवेशा ॥
धर्मराज पुनि लज्जा पायो ❀ अरुणनयनकरिबचनसुनायो ॥
बोलत नारि न बचन सँभारे ❀ लड़हु शत्रुसन टरहु न टारे ॥
मरे श्री ब्रजराज सहायक ❀ सकै न जीति युद्ध कुरुनायक ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धीरज धरहु आजु निशि बीते ❀ करिहौं युद्ध नारि सबहीते ॥
अपनो करो नीच फल पैहें ❀ हैं पापी कौरव मरि जैहैं ॥
कृष्णदेवकी सीख न मानी ❀ उनकी मृत्यु आई नियरानी ॥

दो०-दुर्योधन के उर बढेउ, द्रुपदसुता अभिमान ।
गर्वप्रहारी हरि विदित, मेर सकल अरि जान ॥

प्रभु की कृपा परिश्रम थोरे ❀ ह्वैहैं निधन सकल रिपु मोरे ॥
कहत असत्य बचन नहिं तोसे ❀ सदा रहत मैं कृष्ण भरोसे ॥
हरिकी कृपा सफल सब काजा ❀ अस कहि भयो मौनसुख राजा ॥
हँसत बचन बोले बनवारी ❀ सुनहु बात भूपाल हमारी ॥
अब नरेश छाड़हु सँदेहा ❀ कीजै युद्ध सत्य मत एहा ॥
बचन हमार मृषा जनि मानहु ❀ होइहै विजय सत्य नृप जानहु ॥
करिहौं मैं होई यश तोरा ❀ शरणागतपालक प्रण मोरा ॥
हौ नरेश अब शरण हमारे ❀ करहुं सफल सब काज तुम्हारे ॥

दो०-मनसा वाचा कर्मणा, करहुं तुम्हारो काज ।
अभय होहु नरनाहअब, तुमहिं देहुँ सब राज ॥
उचित सकल सामर्थ्यकहँ, शरणागतप्रतिपाल ।
तदपि मोरि वाणी विदित. धर्मराज तिहुँ काल ॥
करौं अकौरव भूमि सब, छत्र धरौं तुव शीश ।
बचै न खल शंकर शपथ, सप्ताशिवा अज ईश ॥
भयो मुदित मन धर्मसुत, सुनि हरिगिरा प्रमान ।
भणित पर्व उद्योग इमि, सबलसिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते

एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

इति पंचमो उद्योगपर्व समाप्तः ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

भीष्म पर्व ॥ ६ ॥

गुरु गोविंद के चरण मनैये ❀ जेहि प्रसाद उत्तम गति पैये॥
कै प्राणाम रघुपति के पाँयन ❀ चारि वेद जाके गुण गायन ॥
अवधनाथ सीतापति सुन्दर ❀ दीनबन्धु रघुबंश पुरन्दर ॥
शिव सनकादिक अंत न पावैं ❀ नरसुखते केहि बिधि यशगावैं॥
शुक शारद नारद से पाठक ❀ हनूमान गावैं गुण नाटक ॥
बाल्मीकि रामायण करता ❀ राम चरित्र पापको हरता ॥
अष्टादश पुराण श्री भारत ❀ भाष्यो व्यास ज्ञान पुरुषारथ ॥

दो० पाराशर ते जन्म है, व्यासदेव ऋषिराज ।
यामुख भारत प्रकटभो, कवि कुलको शिरताज॥

गुरु गणेश शारद के पाँयन ❀ करैं प्रणाम होहु सुखदायन ॥
माहिमा निगम कहत नहिं आवै ❀ शेष सहससुखते गुण गावै ॥
संवत सत्रहसै अट्ठारहि ❀ पूनोतिथि मंगल के वारहि ॥
माघ मास में कथा बिचारी ❀ औरँगशाह दिलीपति भारी ॥
सब पुराण पारायण भारथ ❀ यामहँ कुरु पाण्डव पुरुषारथ ॥
व्यासदेव मुवि भार निवारण ❀ भारत रच्यो जगत के तारण॥

दो० योग युद्ध रस मँत्रणा, भारत मोहे सर्व ।
सबलसिंह चौहान कह, भाषा भीषम पर्व ॥

वैशम्पायन बोले बानी ❀ अपर कथा सुनु नृप सज्ञानी ॥
नृपाति युधिष्ठिर कृष्ण पठाये ❀ पांच ग्राम मांगन प्रभु आये ॥
दुर्योधन सुनिके हठ गहेउ ❀ सूजी अग्र देन नहिं कहेउ ॥
काहि हरि चले छीनि सब लैहैं ❀ अर्जून भीम शाक तब दैहैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गयो आपु जहँ धर्म नरेशौ ❀ इतही कथा कही सब केशौ ॥
माँगे पाँच ग्राम नहिं पाये ❀ गर्व बचन कुरुनाथ सुनाये ॥
हतकी बात छाड़ि सब दीजै ❀ पहिरि सनाह युद्ध अब कीजै॥
सुनत युधिष्ठिर शँका मान्यो ❀ विग्रह भयो अवशि मैं जान्यो ॥
अहो कृष्ण संतन सुखदायक ❀ हम नहिं युद्ध करनके लायक ॥

दो०-भीषम द्रोणरु कर्ण कृप, लक्ष छत्रधर साथ।
तासों संगर खेत चढि, किमि जीतहिं यदुनाथ॥

कह्यो कृष्ण पाण्डवसुत आगे ❀ अपनो राज देत को माँगे ॥
साहस कै रण को मन लैये ❀ मारिहि रिपुहि देश तब पैये ॥
द्रुपद विराट आदि क्षत्रियगन ❀ हम सारथि पारथके स्यंदन ॥
अर्जुन भीम देहु रणको मन ❀ जीतहु युद्ध कही जगवंदन ॥
अर्जुन कही युधिष्ठिर राजहिं ❀ अबबिलंबकीजैकेहि काजहिं ॥
भीमसेन याहि भाँति बखानेउ ❀ कृष्ण कही मेरे मन मानेउ ॥
कीजै युद्ध भयानक भारथ ❀ अब देखो मेरो पुरुषारथ ॥
दुर्योधन सो बंधु सँहारौं ❀ भीषम कर्ण खेत चढ़ि मारौं ॥
आपु सहाय जगत के तारण ❀ शोच नरेश करौं केहि कारण ॥

दो०-सभा मध्य रक्षा करयो. द्रुपदसुताकी लाज।
कौरब दल तृण सम गनौ, जो सहाय ब्रजराज॥

नृपति युधिष्ठिर आनन्दित मन ❀ साजहु सैन कहेउ माधवसन ॥
नृपकी आज्ञा श्रीहरि पायो ❀ साजत सैन बिलम्ब न लायो ॥
द्रुपद विराट शंख रथ साजे ❀ पहिरि सनाह सिंहसम गाजे ॥
धृष्टद्युम्न रथ पर चढ़ि आयो ❀ जाके शिर हरि मुकुट बँधायो ॥
कंचन रथ सहदेव सुहाये ❀ तेज तुरंग नकुल चढ़ि आयो॥
लोह चक्र जो हरि निर्मायो ❀ भीमसेन चढ़ि शोभा पायो ॥
पहिरि सनाह खड्ग कटि बाँधे ❀ गदा लिये कर शारँग काँधे ॥
कालरूप सम भीम भयंकर ❀ प्रलयकाल महँ जैसे शंकर ॥
चढ़े सात्यकी उत्तम स्यंदन ❀ अभिमन्यु चढ़े सुभद्रानन्दन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शूरसेन चढ़ि नृपाती छत्रधर ❀ जरासन्धसुत चल्यो धनुर्द्धर ॥
धृष्टकेतु कीन्हीं असवारी ❀ काशीराज महाबल भारी ॥
पँच कुमार द्रौपदी जाये ❀ हर्षित चले सुवेष बनाये ॥
चले शिखण्डी रणके शूरा ❀ साजे सैन महाबल पूरा ॥

दो०-हीरा मणि चामर लगे, श्वेत वरण गजराज ।
दण्ड छत्र धरि शीशपर, कियोयुधिष्ठिर साज ॥

कंचन मणिमय बनी अमारी ❀ तेहि पर नृपाति कीन्ह असवारी ॥
पारथ कहं यदुनाथ बनायो ❀ निज कर लै सनाह पहिरायो ॥
मणिमय कुण्डल मुकुट बिराजत ❀ बाँधे अस्त्र मनोहर छाजत ॥
कर गहि धनुष बाण वहु साजैं ❀ अक्षय त्रोण देखि रिपु भाजैं ॥
नन्दिघोष रथ कीन्हेउ मण्डित ❀ शोभा निरखिहोतारिपुखण्डित ॥
औ अनेक कुंजर हैं माते ❀ दन्त विशाल क्रोध ते ताते ॥
तिनके नयन परी आँधियारी ❀ ठाढ़े हालत जो बलभारी ॥
लीला चारि तुरंग लगायो ❀ जाको वेग पवन नहिं पायो ॥
हनूमान ध्वज ऊपर आयो ❀ जेहि बलसे सब लंक छुड़ायो ॥
कृष्णचरण कीन्हेउ तब बन्दन ❀ पारथ जाइ चढ़े निज स्यन्दन॥
श्रीहरि निरखि बहुत सुख पायो ❀ आपु सारथी वेष बनायो ॥

दो०-आपु कृष्ण जोतीगहेउ, अर्जुन पुलकित गात ।
हाँकत हय हिय हर्षते, पीताम्बर फहरात ॥

पाँचौ बन्धु करी असवारी ❀ कुन्ती तब आरती उतारी ॥
भाँति अनेक शकुन शुभ कीन्हेउ ❀ सुनत सौंपि हरिके कर दीन्हेउ ॥
मम अनाथके पाँचौ बालक ❀ प्रभुरणमें कीन्हेउ प्रतिपालक ॥
कही कृष्ण तुम भवन सिधारहु ❀ जयहोइहिजियशोच निवारहु ॥
यह कहि गमन आपुहरिकीन्हों ❀ आनन्दित शंखध्वनि कीन्हों ॥
गज पर सरस दमामें बोलत ❀ शब्द अघात शेष शिर डोलत ॥
ढाक ढोल औ भेरी बाजत ❀ सहनाई में मारू राजत ॥
करिकै बम्ब चले तब राजन ❀ अरु अघात बाजे बहुबाजन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सप्त क्षौहिणी सेन सँवारी ❀ चालिस सहस छत्र के धारी ॥
तीनि कोटि कुंजर मतवारे ❀ पंच कोटि रथ सरस सँवारे ॥
बीस गोटि असवार महाबल ❀ तीस कोटि सब लेखौ पैदल ॥

दो०-कुरुक्षेत्र आयें सकल, जहाँ युद्ध कौ ठाट।
बिप्र बेद ध्वनि पढत हैं, बोलत मागध भाट ॥

अब यह कथा चली शुभ आगे ❀ कुरुपति साज करन दललागे ॥
भीषम द्रोण कर्ण कृष आये ❀ भूरिश्रवा बृषसेन सुहाये ॥
सोमदत्त कृतवर्मा अत्री ❀ बाहुलीक अश्वत्थामा क्षत्री ॥
है भगदत्त नृपति को साथी ❀ योजन पांच तासु को हाथी ॥
चले अलम्बुष दानव राजन ❀ शकुनीशैल्यकियोरणको मन ॥
औ शशिबिन्दु नरेश महाबल ❀ चले कलिंग लिये कुंजर दल ॥
है नवलाख महाबल हाथी ❀ सो बान्धव कलिंग के साथी ॥
आये नृपति महाबल भारी ❀ तेज तुरंग किये असवारी ॥
तब सारथि नृप रथ लै आये ❀ कंचन के चाके निर्माये ॥
गजमुक्ता की झालरि सोहै ❀ मानुष कहँ शंकर मन मोहे ॥
लाल प्रवाल जाड़ित बहु मणी ❀ जगमगात हीरन की कणी ॥
आनि तुरंग तेज रथ जोरे ❀ पवन वेग उइ चारिउ घोरे ॥
चढ़े साजि दुर्योधन नीके ❀ सम्पति देखि इन्द्र मन फीके ॥

दो०-दुश्शासन रथ साजियो, सौ भाइन लै साथ।
साठि सहस नृप छत्रधर, चढे साजि कुरुनाथ ॥

औ अनेक कुंजर हैं माते ❀ दन्त बिशाल क्रोध ते ताते ॥
तिनके तयन परी अँधियारी ❀ ठढ़े हालत जो बल भारी ॥
कंचन रथ अति दिव्य अनूपा ❀ जाहि देखि मोहत सुरभूपा ॥
दिव्य अनूपम झालरि सोहै ❀ गजमुक्ता देखत मन मोहै ॥
उन्नत ध्वजा अनूपम सुन्दर ❀ देखत शोचन लाग पुरन्दर ॥
रथको ठट भूमि सब मण्डित ❀ हय पदाति धाये रण पण्डित ॥
कुरुसागर के व्यास बखानेउ ❀ अतिअघातकोउअंतनजानेउ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

भानुमती आरति लै आई ❀ कियो शकुन शुभ मंगलगाई ॥
भयो बम्ब बैरख फहराने ❀ प्रलयकाल जनु घन घहराने ॥
धूरि धुन्दि महँ रवि नहिं सूझैं ❀ ध्वज घनसघन पवन आरूझैं ॥
डोली अनी शेष शिर धाकेउ ❀ भूमि चली पर्वत सबकाँपेउ ॥

दो०-दर्शन बराहन दृढ़ रहे, दबी कमठ की पीठि ।
दिग्गज करहिं चिकार सब, दिगपतिचकृतदीठि॥

कुरुक्षेत्र कौरव पति आये ❀ तब भीषम कछु बचन सुनाये ॥
द्रोण आपु शाँरँग कर गहिये ❀ सावधान होइ रण में रहिये ॥
भीषम द्रोण युधिष्ठिर देखेउ ❀ सब आगे अचरज करि लेखेउ ॥
नृप मन महँ तब मंत्र बिचारी ❀ तुरत तजी गजकी असवारी ॥
आपु पयादे चले नरेशू ❀ अर्ज्जुन कह देखिय हृषिकेशू ॥
शत्रुसेन मो कीन्हेउ गमनहिं ❀ आनन्दित जैसे चल भवनहिं ॥
जो कुरुनाथ बाँधि कै राखैं ❀ कीजै महा भीम यह भाखै ॥
जौन बुद्धि के पाँसा खेले ❀ वहै बुद्धि कै चले अकेले ॥
बिन आज्ञा कैसे संग जैये ❀ बिना गये पाछे पछितैये ॥
कही कृष्ण अब चुप कर रहिये ❀ नृपको कठिन कथा नहिं कहिये॥
धर्म्मराज धर्मै हित जानत ❀ शत्रु मित्र समता करि मानत ॥
यामों यहै मंत्र को कारण ❀ कही आपु यह त्रास निवारण ॥
सब सेना मिलि थिर ह्वै रहिये ❀ देखहु खड़े कछू नहिं कहिये ॥

दो०-कुरुदल सब चकृत भये, कहैं परस्पर बैन ।
मिलो बिचारो दीन ह्वै, देखि भयानक सैन ॥

आपु युद्धिष्ठिर भीषम दरशो ❀ छाँड़ो रथ गंगासुत हरषो ॥
आतुर चरण वन्दयम कीन्हों ❀ हँसि भीषम अंकम भरलीन्हों ॥
सदा होहि कल्याण तुम्हारो ❀ जीतहु युद्ध शत्रु सँहारो ॥
धर्मराज यहि भाँति बखानत ❀ हमतौ तुमहिं पाण्डु कै मानत ॥
पूर्व जबहिं हम थे सब बालक ❀ तब तुमहीं कोन्हों प्रतिपालक ॥
कपट पाँस करि बनाहिं पठाये ❀ तेरह बर्ष महा दुख पाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

राज लियो दुर्योधन भाई ❀ पंच ग्राम माँगे नहिं पाई ॥
आपु युद्ध करिबे चित दीन्हों ❀ तौ सब ठाट बृथा हम कीन्हों ॥
तुमते परशुराम रण हारे ❀ तोहि समान हम कहा बिचारे ॥
एक भरोसो मन में आयो ❀ जय होइहै तुव आशिष पायो ॥
हँसि गांगेय कहन अस लागे ❀ बड़े साधु तुम परम सभागे ॥
जहाँ धर्म तहँ कृष्ण बिराजै ❀ जहाँ कृष्ण तहँई जय छाजै ॥

दो०-धर्म भरोसे धर्म बल, धर्म भोगियो राज।
सबलसिंह चौहान कहि, धर्महि ते शुभ काज ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
थमोऽध्यायः ॥ १ ॥

आई द्रोण पद परशन कीन्हों ❀ आनन्दित ह्वै आशिष दीन्हों॥
नृपाति होई कल्याण तुम्हारो ❀ अपनो शत्रु खेत मों मारो ॥
नृपाति युधिष्ठिर आपु बखाने ❀ तुम गुरु द्रोण जगतसबजाने॥
जो आपन शाँरग कर धरिये ❀ तीन लोक क्षणमें बशकरिये ॥
जो तुम युद्ध विषे मन लाउब ❀ तब कैसे कै हम जय पाउब ॥
हँसि कह द्रोण युद्धिष्ठिर आगे ❀ मधुर बचन कहिबे कछु लागे ॥
अहो नृपाति संतन हितकारी ❀ तोरे सदा सहाय मुरारी ॥
कोटिन द्रोण अस्त्र गहि आवैं ❀ चक्रपाणि सों जय नहिं पावै ॥
जाके सदा सहायक केशो ❀ ताके जयको कौन अँदेशो ॥

दो०-जय ह्वै है तुव सर्वदा, सुनहु पांडु के नन्द।
जाके पारथ से रथी, औ सारथि जगवन्द ॥

कृपाचार्य्य पदवन्दन कीन्हों ❀ जयतिपुत्रको आशिष दीन्हों ॥
भीषम द्रोण कही यह बानी ❀ जीते युद्ध युधिष्ठिर जानी ॥
कीन्ह प्रणाम चले पुनि आगे ❀ धर्म पुकार पुकारन लागे ॥
याहि दल में जेहि जीवन भावै ❀ तुरत कृष्ण शरणागत आवै ॥
सुनि युयुत्सु चलि आयो आगे ❀ नृपसों बचन कहन असलागे ॥
अहो धर्मसुत शरण तुम्हारी ❀ चलो जाई दरशौं बनवारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नृप युयुत्सु रथ चढ़िकै लीन्हों ❀ तुरत आपनो दलशुभ कीन्हों॥
गयो युयुत्सु पाण्डुसुत सँगहि ❀ सुनि कुरुनाथ भयो मनभंगहि॥
रथते उतार तुरत चलि आयो ❀ भीषमते याहि भांति सुनायो॥
हौ सेनापति सबके रक्षक ❀ गयो युयुत्सु तुम्हैं परतक्षक॥

दो०-धर्मपुत्र इत आइकै, कीन्हौं कहा बिचार।
लक्ष सेन सँग लै गयो, तुम दलके सरदार॥

भीषम कह्यो सुनहु हो राजन ❀ आये हमहिं बन्दिबे काजन॥
कादर ह्वै युयुत्सु शरणागत ❀ हम मारे नहिं देखत भागत॥
अब यह शोच चित्त नहिं कीजै ❀ सावधान रणको मन दीजै॥
भृगुपाति सप्तदिवस रण कीन्हों ❀ तिनते जयतिपत्र हम लीन्हों॥
सुर अरु असुर नृपतिरण मारयो ❀ जीति स्वयम्वर बंधु विवाह्यो॥
पांडव सुत के कृष्ण सहायक ❀ तेउ नहिं मेरे रण लायक॥
प्रण राखों हरि को प्रण टारों ❀ नितक्रम दश सहस्र रथ मारों॥
सुनि दुर्योधन आनन्दित मन ❀ हर्षिवचन भाष्यो भीषम सन॥
अष्टादश क्षौहिणि दल दोऊ ❀ एक रथ चढ़ि जीतै कोऊ॥
कह भीषम जो तेज सँभारों ❀ एक दिवस दोऊ दल मारों॥
द्रोण कांपि जो शर संधानै ❀ तीनि दिवस में करै निदाने॥
कर्ण पांच दिन जो रण रचै ❀ दोऊ दल में कोऊ न बचै॥

दो०-द्रोणी तीनै दंड में, दोउ दल करै निदान।
पल लागत अर्जुन बधै, छुवै न दूजो बान॥

दुर्योधन सुनि मौनहिं गहेऊ ❀ विस्मय भयो मान नहिं रहेऊ॥
जो तुम अर्जुन जानत ऐसे ❀ रणमें जय तुम करिहौ कैसे॥
भीषग कह कौरवदल नाथहि ❀ दशदिन केर भार मन माथहि॥
अपनो कटक करों सब रक्षक ❀ पांडव दल मारौं परतक्षक॥
सुनि दुर्योधन आनँद पायो ❀ अपने दलहि युधिष्ठिर आयो॥
लै युयुत्सु हरि पाँयन डारे ❀ अहो कृष्ण यह शरण तुम्हारे॥
जैसे हमहैं पाँचों भाई ❀ तेहि समान जानौ यदुराई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहो कृष्ण शुभ होहि तुम्हारो ❀ सावधान ह्वै युद्ध बिचारो ॥
धर्मराज कीन्हों असवारी ❀ श्वेत गयंद महा बल धारी ॥
दो०-सिंहनाद वीरन करयो, भयो भयानक शोर ॥
दशो दिशा पूरित भई, ज्यों घुमरे घन घोर ॥
पारथ कही सुनहु जगबन्दन ❀ द्वौ दल मध्य राखिये स्यन्दन ॥
सुनिकै कृष्ण हाँकि रथ दीन्हों ❀ मध्य भूमि लै ठाढो कीन्हों ॥
पारथ आनि सबहिं दिशि देखेउ ❀ सबके अग्र पितामह लेखेउ ॥
श्वेत वर्ण रथ सरस सुहायो ❀ श्वेत वर्ण तनु शोभा पायो ॥
श्वेत धनुष श्वेतै गुण जोरे ❀ श्वेत वर्ण हैं चारहु घोरे ॥
गुरू द्रोण रथ श्याम सुहायो ❀ श्याम वर्ण घोड़े छबि पायो ॥
कृपाचार्य्य को अर्जुन देख्यो ❀ मनमँहआतीविस्मयकरिलेख्यो ॥
देख्यो दुर्योधन सौ भाई ❀ धवल छत्र शिर शोभा पाई ॥
सिंधुराज देख्यो बहनोई ❀ मामा शल्य जान सब कोई ॥
दो०-गुरू पितामह बंधु सुत, देख्यो सब परिवार ॥
इन्हैं मारि जय का करो, दीन्हों धनु शर डार ॥
कही कृष्ण पारथ सुनि लीजै ❀ क्षत्रिय धर्म त्याग नहिं कीजै ॥
रण देखे क्षत्रिय जो डरहीं ❀ अंतकाल सो नरकहिं परहीं ॥
प्रथम क्रोध करि रणमें आयहु ❀ अब यह ज्ञान कहाँते पायहु ॥
गहहु अस्त्र कर युद्ध सँवारहु ❀ छाँडहु शोच शत्रु सँहारहु ॥
बालक युवा वृद्धता आवै ❀ अंत मृत्यु सब प्राणी पावै ॥
यामें कोऊँ नहिं काहुहि मारहि ❀ जो सिरजै सोई सँहारहि ॥
काल वश्य है सब संसारा ❀ यामें कछु नहिं दोष तुम्हारा ॥
क्षत्रिय को साहस ते कामहिं ❀ कीजै युद्ध होई यश थामहिं ॥
दो०-दान मरण रण शूरता, क्षत्रिय धर्म प्रमान ।
पारथ अस्त्रहि गहो कहि, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्जुन कहेउ सुनहु जगतारण ❀ गोत्र बधन कीजै केहिकारण ॥
बाढ़ै पाप पुण्य सब नाशहिं ❀ पावों अन्त अधोगतिबासहिं ॥
गुरु परिवार बधौं केहि काजहि ❀ जेहौं बनहिं छोड़िकै राजहि ॥
अर्जुन को माधव समुझायो ❀ चारि वेद को सार सुनायो ॥
गीता ज्ञान कह्यो भगवाना ❀ सुनु पारथ वेदान्त प्रमाना ॥
मातु पिता सुत बंधु कहावै ❀ अंतकाल नहिं साथ सिधावै ॥
अपना धर्म कर्म हैं साथी ❀ सुख सम्पति झूटो सब साथी ॥
जो बन जाय तपस्या करिहौं ❀ अन्त भये जगमें अवतरिहौं ॥
दान अनेक यज्ञ जो करहीं ❀ स्वर्गभोग करि महि अवतरहीं ॥
ताते जन्म मरण नहिं छूटै ❀ अचल न होहिं कोटिशतकूटै ॥
पुण्य पाप दोऊ जब नाशहिं ❀ तब पावहिं मेरे पुर बासहिं ॥

दो०-पुण्य पाप बांधो जगत, को काटन समरत्थ ।
निर्मल ज्ञान विवेकता, कै मन अपने हत्थ ॥

मन मो मुक्ति मुक्ति नर पावै ❀ मनके चले कर्म गति आवै ॥
सब इन्द्रिन मो है मन नायक ❀ बंधन मुक्ति देन के लायक ॥
जाके हृदय दया को बासहि ❀ ताके धर्म सदा परकाशहि ॥
जहँ लगि जीव जगत में अहई ❀ सब के हृदय बास मम रहई ॥
नदिन मध्य गंगा कहँ जानहु ❀ तरुन मध्य अश्वत्थ बखानहु ॥
ब्रह्मऋषिन में नारद जानहु ❀ कपिलेदेव सिद्धन मों मानहु ॥
गजन माहिं ऐरावत देखौ ❀ उच्चैःश्रव हय मध्य विशेखौ ॥
सामवेद वेदन महँ गनई ❀ साधुन में शँकर सब भनई ॥
नरन माहिं राजा कै राखित ❀ देवन माहिं इंद्र मम भाषित ॥
सर्पन मध्य वासुकी कहिये ❀ नागन महँ अनन्त मो रहिये॥

दो०-ग्रहन माहिं रबि हम अहैं, तेज अग्नि मो जान ।
नारिन महँ रंभा अहै, गुण सात्यकी प्रमान ॥

चारिवर्ण महँ जो अवतरिहौ ❀ जो कुल धर्म सोई सब करिहौं ॥
तोते कर्म लागि सब करिये ❀ केवल नाम हमारे धरिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहौ कहां लगि ज्ञान बुझावैं ❀ मृतकसेन सब नैन दिखावैं ॥
पारथ कही सुनहु हो केशो ❀ नयन लखौं तो मिटै अँदेशो॥
दिव्य दृष्टि अर्जुन तब पायो ❀ मुखमें सब ब्रह्माण्ड दिखायो ॥
मेघावर्ण शशी आकाशहि ❀ रविशशिनयनकियेपरकाशहि ॥
मुख भो अग्नि शारदा रसना ❀ कंध रुद्र तारागण दशना ॥
इंद्र बाहु ब्रह्मा हिय सोहेउ ❀ नाभी सिन्धु देखि मन मोहेउ ॥
पृष्ठ अष्ट वसु शोभा पायो ❀ जंघ दशौ दिशिपाल सुहायो ॥
चरण विष्णु रोमावाली तरुगन ❀ अस्थि पहार वेद श्रुतिहै मन॥
धरणी मांस नदी नख लेखेउ ❀ महा विराट रूप यह देखेउ ॥

दो० मुख बिस्तारेउ कृष्ण तब, पारथ देखेउ नैन ।
जूझे सब सेना मृतक, रण में कीन्हें शैन ॥

सर्व मृतक पारथ जब देखेउ ❀ अपनेजियअचरजकरि लेखेउ ॥
त्रसित भयो तनु कंप जनायो ❀ मूँदेउ नैन बचन नहिंआयो ॥
अर्जुन कहँ त्रासित करि जाना ❀ कठिन रूप छांड़ेउ भगवाना ॥
अर्जुन अब युग नैन उघारौ ❀ सखा रूप मम त्रास निवारौ ॥
तब पारथ देखेउ बनवारी ❀ जोती गहे पिताम्बर धारी ॥
अर्जुन तब कमलापति आगे ❀ अस्तुति करन जोरिकरलागे ॥
तुम प्रभु तीनि लोक के करता ❀ दाता जन्म प्राण के हरता ॥
अब सँशय प्रभु मिटी हमारी ❀ करिहौं युद्ध सुनहु गिरधारी ॥
यहकहि धनुष हाथ करि लीन्हेउ ❀ देवदत्त शंखध्वनि कीन्हेउ ॥
दोउ दल सिंह नाद करिआयो ❀ युद्ध भूमि में शोभा पायो ॥

दो० दोऊ दल बाजन बजे, गर्जे सिंह समान ।
क्षत्रिय गण थर हाँक दैं, साधे शारँग बान ॥

भयो कुलाहल दल में भारी ❀ आगे भये महा धनुधारी ॥
भीषम द्रोण कर्ण नृप आये ❀ शंखध्वनि करि नाद सुनाये ॥
सुनिकै भीमसेन तब धायो ❀ मानहुँ काल देह धरि आयो ॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन रण करिये ❀ भीषम के सन्मुख ह्वै लरिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तबहिं धनंजय धनु कर गहेऊ ❀ आगे ह्वै भीषम सन कहेऊ ॥
करि प्रणाम सायक दश छँडेउ ❀ गंगासुत बीचहिं शर खँडेउ ॥
भीषम कहेउ सुनहु जगतारण ❀ सारथि भको भक्त के कारण॥
पांडव धन्य धन्य ये पारथ ❀ जाके रथ पर श्रीपति सारथ ॥
यह कहिकै रणको मन लायो ❀ महारथी सब युद्ध मचायो ॥
भीमसेन दुश्शासन क्षत्री ❀ दोऊ जुरे महा बल अत्री ॥
धृष्टद्युम्न द्रोण के आगे ❀ क्रोधित बाण चलावन लागे॥
नकुल और जयदर्थ सुहावैं ❀ क्रोधवन्त दोउ युद्ध मचावैं ॥

दो०-शकुनी अरु सहदेव रण, भिरे प्रचारि प्रचारि ।
नृपति युधिष्ठिर शल्यसों, कियो भयंकर मारि॥

भूरिश्रवा सात्यकी लगाहे ❀ कृतवर्मा विराट रण रंगाहि ॥
भगदत्ताहि क्रोधित जब जान्यो ❀ द्रुपद नरेश आपु रण ठान्यो ॥
सोमदत्त उतरा रण मंड्यो ❀ बाणन ते रिपु सेन विहंड्यो ॥
कृपाचार्य सन्मुख ह्वै धाये ❀ तिनसों काशिराज रण पाये ॥
घटउत्कच कीन्हों संधानहिं ❀ जुरे अलम्बुष ते रण धामहिं ॥
नृप शशिबिन्दु शंख संग्रामहिं ❀ क्रोधित लगे चलावनबाणहिं ॥
तब द्रोणी निज कर धनुशर गहि ❀ जुरे शिखंडी ते रण रंगहि ॥
कुरुदलं में वृषसेन सुहाये ❀ तिनते चेति करण रण लाये ॥
जुरे बीर सब लै शारँग शर ❀ होन लगी अति मारु परस्पर ॥
दोऊ दल कीन्हेंउ सन्धानहिं ❀ क्रोधित लगे चलावन बानहिं ॥
शतते सहस सहसते लाखन ❀ वरषैं बाण सकै को भाखन ॥

दो०-दोउ दल बीरन रण रचे, जलद बुंद सम बान ।
महा भयानक युद्ध कह, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भाष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्जुन सों भीषम पुरुषारथ ❀ कीन्हों प्रलय भयानक भारथ॥
क्रुद्धित चले चलावत बानहिं ❀ विशति शरमार्‌यो हनुमानहिं ॥
महावीर रण दोउ समानहिं ❀ कृष्ण शरीर हन्यो दशबानहिं ॥
सहस बाण भीषम कर लीन्ह्यों ❀ ताते मारु पारथहिं दीन्ह्यों ॥
अष्ट विशिष क्रुद्धित है जोरे ❀ घायल किय रथ चारिउ घोरे ॥
और लक्ष शर क्रोधित मारा ❀ बहै प्रवाह रुधिर कैं धारा ॥
सप्त बाण ते ध्वजा निशानहि ❀ बाणन ते सेना घमसानहिं ॥
कृष्ण अंग दश विशिष सुमान्यो ❀ तब अर्जुन शरधनुष सुधान्यो ॥
षष्टि बाण भीषम उर मारा ❀ मानहुँ वज्रपात फटकारा ॥
सप्तबाण हनि ध्वजा निशानहिं ❀ सारथि उर मान्यो दश बानहिं॥
चंचल अश्व रहे रथ जोरे ❀ घायल भे रथ चारिउ घोरे ॥
अर्जुन बाण चमू पर मान्यो ❀ हय गज रथ पदातिसंहान्यो ॥

दो०-क्रोधवन्त अर्जुन भयो. कीन्हों लघु संधान।
जल थल भारत भूमि सब. शर छायो असमान॥

एकै शर पारथ संधानहिं ❀ गुण में धरतहोहिंदशबानहिं ॥
चलत होहिं शत लगे सहस्रन ❀ यहि प्रकारकियोसैननिकंदन ॥
जब पारथ बहु कटक सँहान्यो ❀ भीषम अपनो तेज सँभान्यो ॥
लघु संधान लगे शर वर्षन ❀ जूझे सैन सहस्त्र सहस्त्रन ॥
दोउ सुभट अति समर जुझारा ❀ बरषहिं बाण मनो जल धारा॥
भीषम अग्नि बाण संधान्यो ❀ लखि पांडव दल शंका मान्यो॥
प्रकटो अग्नि बाण ते ऐसो ❀ प्रलयकाल बड़वानल जैसो ॥
प्रकटीं शिखा सहस्त्र सहस्त्रन ❀ पांडव दल लागे जारन तन ॥
जब पांडव सेना अकुलान्यो ❀ वरुण बाण अर्जुन सधान्यो ॥
वरुण विशिख ते वरष्यो पानी ❀ निमिष एक महँ अग्निबुतानी॥
रण में मेघ घुमारि कै आयो ❀ महा वृष्टि वर्षा झरि लायो ॥
वसन सनाह भीजि तनु लागे ❀ पर भीजे शर चलत न आगे॥

दो० पवन अस्त्र भीषम गह्यो, सूख्यो नीर तुरंत।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हय पदाति रथ उडत हैं, मतवारे मय मंत्र ॥
ऐसी तेज समीर चलाई ❀ मानहु घरी प्रलय की आई ॥
नाग विशिष तब फलगु प्रहारा ❀ सर्पन कीन्ह्यों पवन अहारा ॥
फन काढ़े अजगर सब धावहिं ❀ लीलहिं सेन बिलंब नलावहिं ॥
विषके तेज कटक व्याकुल अति ❀ भीषम शर संधान्यो खगपति ॥
गरुड़ देखि सब सर्प पराने ❀ भये अलोप जात नहिंजाने ॥
तीक्षण पंचबाण कर लीन्ह्यों ❀ ते शर चोट शीश पर दीन्ह्यों ॥
अर्जुन इमिअतिविशिख चलायो ❀ शरसों भीषमको रथ छायो ॥
गंगतनय हँसि विशिख पँवारे ❀ पारथ शर बीचहिं कर डारे ॥
कृष्ण देवँ रथ हाँकि चलायो ❀ भीषम के सन्मुख पहुँचायो ॥
दो०-अर्जुन रथ आयो निकट, भीषम देखउ नैन ।
क्रोधवन्त शर साधिकै. कह्यो कृष्ण सों बैन ॥
दीनबंधु सन्तन सुखदायक ❀ पारथ नहिं मेरे रण लायक ॥
पांडु वंश के रक्षा कारण ❀ सारथि आप जगत के तारण ॥
आपु सुदृढ़ जोती कर गहिये ❀ मारत हौं तीक्षण शर सहिये ॥
ऐसो शर भीषम सँधान्यो ❀ देवलोक सब शंका मान्यो ॥
कम्पत है पांडव दल ऐसो ❀ कदली पातमरुत लगि जैसो ॥
दिगपालन देखत भय मानी ❀ वसुधाशायक निरखि सकानी ॥
जो शर परशुराम तें पायो ❀ क्रुद्धित ह्वै सोइ बाण चलायो ॥
छूटत बाण शब्द भयो भारी ❀ दशादिशिअतिकीन्हीउजियारी॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै ❀ सावधान रणको मन दीजै ॥
जब पारथ सुरपुर पगु धान्यो ❀ देवकाज सब दैत्य सँहान्यो ॥
तब सुरपति शिर मुकुट बँधायो ❀ तहाँ किरीटी नव शर पायो ॥
दो०-हँसि दीन्हों सुरनाथ तब, पारथ लीजै बान ॥
महा कष्ट रण महँ परै, तब कीन्ह्यों संधान ॥
सोई शर पाणिविजयनर लीन्ह्यों ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर कीन्ह्यों ॥
जिष्णु क्रुद्ध होइविशिख चलायो ❀ आवत बाण सोकाटिखसायो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

काट्यो शर श्रीपति सुख मान्यो ❀ तब अर्जुन यहि भाँति बखान्यो ॥
अहो पितामह धनु दृढ़ धार्यो ❀ सावधान मोते रण कर्यो ॥
दोऊ सरस रच्यो पुरुषारथ ❀ कीन्ह्यों महा भयानक भारत ॥
पांडवदल भीषम बहु मान्यो ❀ भीमसेन तब आपु सँभान्यो ॥
रथ ते उतरि गदा गहि धायो ❀ कौरव दल में युद्ध मचायों ॥
गदा घाव गजको शिर फोन्यो ❀ सहित भुशुंडि दशन सब तोन्यो ॥
कोपि गदा रथ ऊपर मारै ❀ सहित रथी सारथि सँहारै ॥
हय पदाति आगे जो पावै ❀ भीमसेन तेहि मारि गिरावै ॥
रथहि पकरि रथ ऊपर मारे ❀ गहि गयन्द गज ऊपर डारै ॥
आरत लगे जात लोटत गज ❀ लागे धुका उताइल गजसज ॥

दो०-कौरवदल त्रासित भयो. धरै न कोऊ धीर ॥
सहसा कै रण में जुरे, एक बार शत वीर ॥

दै करि हाँक कियो दृढ़ ठानहिं ❀ सबै रथिन मिलि मारे बानहिं ॥
काल समान तेज रण छूटे ❀ वज्र शरीर लागि सब टूटे ॥
भीमसेन क्रुद्धित होइ धाये ❀ मारि सबै यमलोक पठाये ॥
काहुहि गहि मुष्टिक सों मारे ❀ जेअ भिरे ते सकल पछारे ॥
कौरव दलहि प्राण भय कीन्ह्यों ❀ कोधित द्रोण हाँक तब दीन्ह्यों ॥
रहु रहु अरे वृकोदर ठाढ़ो ❀ सेना बाधि तेरो मन बाढ़ो ॥
यह कहि धनु नराच दृढ़ धारयो ❀ भीम अंग दशा विशिख प्रहारयो ॥
गुरु द्रोण अगणित शरमान्यो ❀ तब निज रथहि भीम पगु धारयो ॥
भीषम ते अर्जुन संग्रामहिं ❀ दोऊ जुरे खेत जय कामहिं ॥
पारथ जब लगि भीम निहारयो ❀ दश सहस्र रथ भीस्महि मारयो ॥
तब भीषम जय शंख बजायो ❀ संध्या लखि निजरथहि घुमायो ॥
फिरकै सुभट कियो जब गवनहिं ❀ पांडव गये आपने भवनहिं ॥
दुर्योधन हर्षित होइ कह्यो ❀ रणमों भीषम को प्रण रह्यो ॥
दशसहस्र मारयो रथ नीके ❀ पांडव गये युद्धमें फीके ॥
सेन सकल कीन्हेऊ विश्रामहिं ❀ धर्मराज आये निज धामहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-अस्त्र खोलि धरणी धर्यो, टोप सनाह उतारि ।
श्रम नाश्यो असनान करि, जेंवैं सहितमुरारि ॥

द्रुपदसुता यह कथा चलाई ❀ आजु युद्ध केहि की प्रभुताई ॥
कही कृष्ण भीषम रण मण्ड्यो ❀ दशसहस्र रथ क्षणमेंखण्ड्यो ॥
प्रात शंख कीजै सेना पति ❀ कुरुदल अर्जुन संहारहिं अति ॥
कही द्रौपदी सुनिये केशो ❀ मेरै मन यह बड़ो अंदेशो ॥
जो पै शंख भीष्मतै लरिहैं ❀ अर्जुन भीमसेन का करिहैं ॥
कही कृष्ण यामें है कारण ❀ शत्रु सेन कीजै संहारण ॥
प्रात होत दोऊ दल साजहिं ❀ शब्द अघात दमामें बाजहिं ॥
श्री हरि कह विराठ सुनु भूपति ❀ शंखहि कीजै आजु जमूपाती ॥
सुनि विराट कह आनंदितमन ❀ जो आज्ञा कीजै जगवंदन ॥
मैं कुलमें सुपुत्र सुत जायो ❀ भारत सेनापती कहायो ॥
धर्मराज श्रीपति के आगे ❀ बाँधल मुकुट शंख शिर लागे ॥

दो०-कह्यो शंख कर जोरिकै, सुनि लीजै सुखधाम ।
तुम समान सारथि भये, भीषम ते संग्राम ॥

पारथ रथी आप प्रभु सारथ ❀ भीषम कियो सरस पुरुषारथ ॥
मेरे रथ नहिं सारथि ऐसो ❀ समता युद्ध होइ रण कैसो ॥
जो श्रीपति सम सारथि पावों ❀ मारि सबै कौरव बिचलावों ॥
कही कृण सात्यकि सुन लीजै ❀ आज आप सारथि प्रणकीजै ॥
बैठि शंख रथ जोती धरिये ❀ भीषम के सन्मुख रण करिये ॥
प्रभु आज्ञा सात्यकिं तब पायो ❀ आपु सारथी वेष बनायो ॥
चारि तुरंग आनि रथ जोरे ❀ घूंघुट सहित चलत मुख मोरे ॥
बाँध्यो मुकुट शंख मन हर्ष्यो ❀ राज युद्धिष्ठिरके पद पर्श्यो ॥
तब विराटके पद सोइ लाग्यो ❀ कृष्णचरण परस्यो अनुराग्यो ॥
कियो सात्यकी को पगवंदन ❀ चढ्यौ जाइ रथ परमानंदन ॥
नन्दिघोष अर्जुन असबारी ❀ जोती गहे पीताम्बर धारी ॥
भीम सहित सेना सब साज्यो ❀ सिंहनाद करि रणमें गाज्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives; Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-सबके आगे शंख रथ, साधे कर धनु बान।
सबलसिंह चौहान कह, भारत के संग्राम ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वाणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

कुरुदल साज करन सब लागे ❀ राजा कहेउ पितामह आगे ॥
आजु अस्त्र यहि बिधिते धरिये ❀ कृष्णसहितअर्जुनबध करिये ॥
भीषम कही युद्धको चलिये ❀ शोच कहा ह्वै है सब भलिये ॥
महा गँभीर कियो दल साजन ❀ बाजन लगे युद्धके बाजन ॥
कुरुक्षेत्र आयो कौरव दल ❀ देखत हाँक दियो दोऊ दल ॥
भीषम अति अचरज करिलेख्यो ❀ बाँधो मुकुट शंख शिर देख्यो ॥
तब सात्यकि रथ हाँक चलायो ❀ भीषम के सन्मुख पहुँचायो ॥
शंख प्रथम दश बाण चलायो ❀ ते शर भीषम काटि गिरायो ॥
हँसि भीषम दश शायक जोरे ❀ ते शर शंख बीचही तोरे ॥
कोपि कुँवर शतबाण प्रहारयो ❀ भीषम के उर मध्यसु मारयो ॥
शर लागत भीषम रिस बाढ्यो ❀ शोणितशर तुणीर ते काढ्यो ॥
काल समान बाण सब छूटे ❀ भोदि सनाह अंगमें फूटे ॥
दो०-क्रोधवन्त भीषम भये, कीन्हों लघु संधान।
सर सरिता सात्यकि भये, कुँवर अंग बहुबान ॥
नृपाविराट सुत तेज सँभान्यो ❀ षष्टि बाण भीषम उर मान्यो ॥
भीषम शंख लरे रण अंगन ❀ दोऊ दल बहुकियो निकंदन ॥
गज सो गज चौदन्त लराई ❀ रथी रथी सों मारु मचाई ॥
जुरे आई असवार महाबल ❀ लगे पदाति पदातिन करिबल ॥
महारथी रथ हाँकि चलायो ❀ कौरव कटक मध्य तब आयो ॥
तब अर्जुन कोदण्ड सुधान्यो ❀ क्रुधित ह्वै बहुविशिखप्रहान्यो ॥
जो जो सैन्य दृष्टि में आयो ❀ क्षणमें अर्जुन मारि गिरायो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रुण्ड मुण्ड वसुधा में तोप्यो ❀ सुझि न पर्‌यौ मास माहि रोप्यो ॥
दो०-घोर युद्ध कपिध्वज कियो, सेना बध्यो अनंत ।
गज रथ हय पदचर गिरे, कहूँ शीश कहूँ दंत ॥
अर्जुन बध्यो सेन यहि रूपहि ❀ देखि क्रोध उपज्यो तब भूपहि ॥
दुर्योधन क्रोधित ह्वै धायो ❀ छत्र छाँह रवि दृष्टि छपायो ॥
नन्दिघोष रथ राजन घेन्यो ❀ मारु मारु दुर्योधन टेन्यो ॥
दुश्शासन सब राजन लीन्हें ❀ बाण वृष्टि पारथ पर कीन्हें ॥
चहूँओर वर्षत शर कैसे ❀ भादौं बूँद सघन घन जैसे ॥
नन्दिघोष रथ शर ते छायो ❀ अर्जुन कृष्ण दृष्टि नहिंआयो ॥
पारथ इन्द्र अस्त्र गुण जोरे ❀ अन्तरिक्षही सब शर तोरे ॥
अरु सहस्र राजा बध कीन्हों ❀ शंखध्वनि अर्जुन तब दीन्हों ॥
माणिमय मुकुट जरायन जरे ❀ शशि सहित वसुधा में परे ॥
जहाँ जहाँ अर्जुन रण ताक्यो ❀ तहाँ तहाँ माधव रथ हाँक्यो ॥
और अनेक निशित शर मार्‌यो ❀ युत चौरासी तुरँग माहि पार्‌यो ॥
कीन्ह धनंजय सेन सुखंडित ❀ नर के शीश मेदिनी मंडित ॥
दो०-यहि विधि पारथ रण रच्यो, कहिनसकैकविबैन ।
रथ हाँकत हैं हाँक दै, पीतम पंकज नैन ॥
सिंहनाद दुश्शासन कीन्ह्यों ❀ क्रुधित धनुष फेंकि शर दीन्ह्यों ॥
सप्तबाण पारथ उर मार्‌यो ❀ एक बाण यहि भाँतिप्रहार्‌यो ॥
सारथि शीश काटि महि डार्‌यो ❀ कृष्ण अंग दशबाण प्रहार्‌यो ॥
रथते दुश्शासन महि आयो ❀ देखि विरथ दुर्योधन धायो ॥
तब कुरुनाथ धनुष कर लीन्ह्यों ❀ महामारु कपिं ध्वजपर कीन्ह्यों ॥
सुनि कै शोर वृकोदर धायो ❀ द्रोण जाय बीचहि अटकायो ॥
भीषम कही द्रोण रण रंगहि ❀ जुरे धनंजय कुरुपति संगहि ॥
आप शंख सन समर जु कीजै ❀ हम पारथ पर सायक दीजै ॥
जान्हविसुत यह कहि लघु धायो ❀ शर वर्षा पारथ पर लायो ॥
दुर्योधन को पाछे घाल्यो ❀ आगे रथ गंगासुत चाल्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सिंहनाद करि हाँक जनायो ❀ रहु अर्जुन भीषम अब आयो ॥
दो०-अबलौं जो सेना बध्यो, हौं न रह्यौं यहि ठौर ।
तौ पारथ बल जानिबो, जो दल बधिहौ और ॥
कोटिन अर्जुन करहुँ सँहारण ❀ कृष्ण सहाय बचौतेहि कारण ॥
अर्जुन सुनि क्रुद्धित परिजन्यऊ ❀ दृढ़ होइ धनुष बाणकर धन्यऊ ॥
पारथ क्रोधवन्त ह्वै टेन्यो ❀ जब तुम सब विराटपुर घेन्यो ॥
तादिन मैं सब को बल जान्यो ❀ गोधन सबै फेरिगृह आन्यो ॥
बड़े अहहु बड़ वचन न कहहू ❀ दृढ़ ह्वै धनुष बाण कर गहहू ॥
यह कहि कै लागे शर वर्षन ❀ शतते सहस सहस्र सहस्रन ॥
अपर चरित्र सुनहु मन लाई ❀ शंख द्रोण जहँ करत लड़ाई ॥
एकहि एक क्रोध ते मारत ❀ आवत बाण बाण ते टारत ॥
श्रमित युद्ध दुर्योधन देख्यो ❀ अपनेजिय अचरजकरि लेख्यो ॥
शंख कुंवर अति विशिष बँवान्यो ❀ रथ के चारि अश्व संहान्यो ॥
कियो सारथी को शिर खंडित ❀ पुत्र विराट महा रण मंडित ॥
दो०-द्रोण अपर रथ पर चढ़्यो, कछु लज्जाकछु क्रोध ।
महारथी देखत सकल, बालक पर अनुरोध ॥
जब लग द्रोण आपु संभान्यो ❀ तनय विराट सैन्य बहु मान्यो ॥
कौरव दल बहु शंख निपातो ❀ गुरु तब भयो क्रोध ते तातो ॥
रहुरे शंख ठाढ़ रण रंगहि ❀ एकै शर कृत जीवन भंगहि ॥
दूजो बाण करौं सन्धानहिं ❀ तौ मोहिं परशुराम कीआनहिं ॥
यह कहि ब्रह्म अस्त्र कर लीन्यों ❀ पढिकै मंत्र फोंक शर दीन्यों ॥
शर को तेज अकाशहि व्याप्यो ❀ सुर नर नाग देखि कै काँप्यो ॥
छिटक्यो किरणि बाण ते कैसे ❀ ग्रीषम ऋतु प्रचंड रवि जैसे ॥
देखि त्रास सात्यकि जिय बाढ़ो ❀ द्रोण तोण ते शर जब काढ़ो ॥
कहहुकुँवर तव रथहि फिरावों ❀ अर्जुन के पीछे पहुँचावों ॥
शंख कह्यो अस्थिर ह्वै रहिये ❀ क्षत्रीधर्मकिमिजियनहिं गाहिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० बाँध्यो मुकुट जु कृष्ण कर, भारत के रण खेत ।
द्विजसों दृष्टि दिखायकै, तनु राख्यो केहि हेत॥

कार्मुक द्रोण श्रवण लगि तान्यो ❀ छूटत बाण शब्द घहरानो ॥
बाण प्रताप अग्नि बहु बाढ्यो ❀ बड़वानल जनुदाधिते काढ्यो ॥
सप्त ताल भयो अग्नि उँचाई ❀ चौदह ताल रह्यो चकलाई ॥
देखेउ ब्रह्म अस्त्र ढिग आवत ❀ सात्यकि बहुरिकुँवर समुझावत ॥
फेरौं रथ सुनु वचन बावरो ❀ बिन कारज कस मरत रावरो ॥
रथ समेत यहि बिधि जरि जैहो ❀ खोजत कतहुँ अस्थिनहिंपैहो ॥
जो मेरो रथ फेरहु भाई ❀ कृष्ण चरण युग कोटि दुहाई ॥
गुरुहति द्विजहति पाप सुपावहु ❀ जो सात्यकि रथफेरि चलावहु ॥
जन्म भये ते मृत्यु न छूटै ❀ सो सपूत जग में यश लूटै ॥
रणते भागि भवन जब जैबो ❀ क्षात्रिन मो किमि वदन देखैबो ॥
कुँवर लग्यो जलबाण चलावन ❀ ब्रह्म अग्नि को सकै बचावन ॥
रण में द्रोण अधर्म बिचार्यो ❀ त्राहि त्राहि सब देव पुकार्यो ॥

दो०-सुरगण सब यहि बिधिकहै, द्रोण अधर्म बिचार॥
बालक ते रण ठानिकै, ब्रह्म सुअस्त्र प्रहार ।

अस्त्र तेज सब अंगहि व्यापो ❀ सहित तुरंग सात्यकी काँप्यो ॥
तव सात्यकि रथ फेरि चलायो ❀ कुँवर कुदि धरणी पर आयो ॥
सन्मुख रह्यो नेकु नहिं मुर्यो ❀ ब्रह्म अस्त्र मों ठाढ़ो जर्यो ॥
दोऊ दल देखत है नयनहिं ❀ साधु शंखभाष्यो सबबयनहिं ॥
भस्म भयो मन नेकु न मोरो ❀ भाजो सात्यकि लै रथ घोरो ॥
देखत द्वौ दल शंख जरायो ❀ फिरिकै द्रोण त्रोण शर आयो ॥
द्रोण आपु जय शंख बजायो ❀ सुनिके धृष्टद्युम्न मन लायो ॥
रे गुरु द्रोण ज्ञान कर हीनों ❀ करि अधर्म खोयो पन तीनों ॥
ह्वै कै बिप्र अस्त्र जो बाँध्यो ❀ बालक पर ब्रह्मास्त्रै साध्यो ॥
अब माते संग्राम बिचारहु ❀ अहो बिप्र पहिले शर मारहु ॥
सुनि गुरु द्रोण क्रोधते जाग्यो ❀ तीक्षणबाण चलावनलाग्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुँवर सबै बे बाण सँभान्यो ❀ द्रोण ललाट तीनि शरमान्यो ॥
दो०-जब ब्रह्मास्त्र उदोत मय, पारथ देख्यो नैन ।
तौ लगि भीषम बधि गये, दशसहस्र रथसैन ॥
भीषम शंख दयो जय हेतू ❀ सुनिकै शब्द फिर्‌यो कुरुकेतू ॥
सब मिलि गये आपने धामहिं ❀ दोऊ दल कीन्ह्यो विश्रामहिं ॥
अब यह कथा चलीजो आगे ❀ भोजन पान करन सब लागे ॥
बालि बाढ़िधर बाढ़ि धरायो ❀ कोउ शायकमहँ सान करायो ॥
कोउ निषंग महँ शायक देखत ❀ चारो चारु तबल कोउ देखत ॥
कोउ स्यंदन महँ साज लगावत ❀ कोऊ शक्ति सनाह बनावत ॥
धर्मराज माधव सँग लीन्हें ❀ गमन विराट भवन शुभकीन्हें ॥
अहो नृपति मन शोच निवारहु ❀ क्षत्रिधर्म निज हृदय बिचारहु ॥
कह्यो विराट सुनहु नृपनायक ❀ जूझे पुत्र मोहिं सुखदायक ॥
धर्मराज के काजहि आयो ❀ शोच कहा बहुतै सुख पायो ॥
दो० धर्मराज बंधुन सहित, साथ लिये घनश्याम ।
भोजन को बैठे सकल, द्रुपदसुता के धाम ॥
षटरस भोजन आनि बनाये ❀ जेंवत भीम महासुख पाये ॥
द्रुपदसुता कछु बचन उचान्यो ❀ आजुयुद्धकेहि भाँति सँवान्यो ॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन बल भारी ❀ मारे सहस क्षत्र के धारी ॥
द्रोण अधर्म युद्ध मन लायो ❀ ब्रह्मअस्त्र ते शंख जरायो ॥
धर्मराज कह सुनहु मुरारी ❀ मम उर यह संशयअतिभारी ॥
दशसहस्र रथ नितक्रम जूझै ❀ भीषमते जय मोहिं न सूझै ॥
कहेउ द्रौपदी नृप नहिं डरिये ❀ बनकी कथा आपु सुधि करिये ॥
दुर्व्वासा कुरुनाथ पठायो ❀ अर्द्धरात्रि पर्णशाला आयो ॥
सप्त सहस्र शिष्य संग लागे ❀ भोजन आय द्वार ह्वै माँगे ॥
क्षुधावन्त हम भोजन दीजै ❀ नाहिंत ब्रह्मशाप अब लीजै ॥
दो०-भोजन दीजै कवन बिधि, एक अन्न नहिं भौन ।
ब्रह्मशाप के त्रास ते, सबै रहे ह्वै मौन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब मैं कह्यो ऋषिय सुनि लीजै ❀ आपु जाय प्रभु मज्जन कीजै ॥
मैं भोजन कर साज बनावों ❀ आवहु तुरत सबन बैठावों ॥
छल करि मैं ऋषिको छिन टारो ❀ बहुत त्रास जिय मध्य बिचारो ॥
प्रभु यहि समय दया अब करिये ❀ नाहिंत ब्रह्मशाप मो जरिये ॥
सब मिलि कृष्णचरणयुग ध्याये ❀ सुमिरतहि तुरन्त प्रभु आये ॥
करि प्रणाम बहुतै सुख पायो ❀ क्षुधा क्षुधा यदुनाथ सुनायो ॥
तब मैं कह्यो अन्न नहिं लेशव ❀ भोजन कहा दीजिये केशव ॥
रांधन को भाजन प्रभु देख्यो ❀ तामें शाककणा इक लेख्यो ॥
तब घनश्याम शाक वह खायो ❀ मुनिगण केर उदर भरि आयो ॥
कोउ उदर निज पाणि भ्रमावहिं ❀ कोऊ पत्रन्ह सेज बनावहिं ॥
काहुको दूध घीव तब आवहिं ❀ मंत्र अगस्त्यकोऊमनलावहिं ॥
भीमसेन जब जाय बुलायहु ❀ द्विजगणचलहुगहरुकिमिलायहु

दो०—दुर्वासा यहि बिधि कह्यो, नाहिं न भक्त विनाश ।
सबलसिंहचौहान कह, चरणकमल की आश ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

आये कृष्ण साधु सुखदायक ❀ पांडु वंश के सदा सहायक ॥
दुर्वासा कह सुनहु वृकोदर ❀ व्यापो कृष्ण सबन के ओदर॥
जैसो हम याचज्ञा लायो ❀ अपनो कियो आपु ते पायो ॥
यहि कहकै सब द्विजगण भागे ❀ आये भीम कृष्ण के आगे ॥
हँसि प्रभु द्वारावति पगु धार्‌यो ❀ वे चरित्र नृप चित्त बिसार्‌यो ॥
यह सुधि सब बिसरी केहि कारण ❀ कहाँ शोच जहँ त्रास निवारण ॥
द्रुपदसुता यहि भाँति बखान्यो ❀ सुनियदुपतिअतिशय सुखमान्यो
कौरव कटक समर महँ आये ❀ धनु कर शर निषंग कटि लाये ॥
होत प्रभात सजे कुरु केतू ❀ बजे निशान युद्ध के हेतू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सिंहनाद करि शब्द सुनायो ❀ पाण्डव सकल अजिरण आयो ॥
दोउ अनी सन्मुख तब भयऊ ❀ वीरन धनुष फेंकि शर दयऊ ॥
दो०—रथ गज पदचर नृपति सब, करन लगे रणघोर ।
महारथी सेनापती, भिरे जोर सों जोर ॥
आँदू खोलि दिये अँधियारी ❀ धाये गज पर्वत से भारी ॥
मादौं घटा उनै जनु आयो ❀ गजन युद्ध चौदन्त मचायो ॥
बाण बूँद झरि रथि कर बलकै ❀ शायक खड्ग दामिनी दमकै ॥
करिकै नाद भीष्म तब धायो ❀ भयो शब्द जनु घन घहरायो ॥
शक्ती शैल ऊपर सब टूटहिं ❀ बज्रपात अर्जुन शर छूटहिं ॥
विषम खड्ग बाज्यो शर खंडित ❀ भीषम रथ हाँक्यो परचंडित ॥
नन्दिघोष के सन्मुख आयो ❀ बाण वृष्टि अर्जुन पर लायो ॥
पारथ ते शर काटि निवार्‌यो ❀ पंच विशिष भीषम उर मार्‌यो ॥
लागत विशिख क्रोध उर बाढ्यो ❀ तीक्षण शर निषंग ते काढ्यो ॥
हन्यो ताकि कपि ध्वज के हियमों ❀ गंगासुत क्रोधित ह्वै जियमों ॥
दो०—भीषम अर्जुन रण रच्यो, भयो युद्ध अति घोर ।
धृष्टद्युम्न अरु द्रोणते, पर्‌यो आनि अति जोर॥
क्रुद्धित ह्वै बहु विशिख चलायो ❀ धारी व्योम महा शर छायो ॥
गुरु द्रोण बहु शायक छाँड्यो ❀ धृष्टद्युम्न क्रुद्धित ह्वै खाँड्यो ॥
भरद्वाज सुत बाण चलायो ❀ कुँवर उत्तरा खड्ग लै धायो ॥
झपटै बाज चर्म पर जैसे ❀ पहुँचो आय द्रोण ढिग तैसे ॥
निकट जानिकै गुरु सँभार्‌यो ❀ लघुसंधान बाण तब मार्‌यो ॥
बरषहिं बाण घात नहिं पायो ❀ कुँवर पेलि अपने दल आयो ॥
लै को दण्ड लग्यो शर मारन ❀ छाँड्यो बाण सहस्त्र अपारन ॥
कृपाचार्य्य किय शर संधानहिं ❀ भिरेनकुल तिनतेजयकामहिं ॥
मंत्री शकुनी रण सहदेवहिं ❀ पांड़ित दोउ युद्ध के भेवहिं ॥
हाँक्यो जबहिं अलंबुष स्यंदन ❀ तिनते भिर्‌यो हिडंबीनन्दन ॥
शल्य नरेश सात्यकी लरई ❀ कृतवर्म्मा विराट रण करई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

युद्ध देखि भगदत्त रिसानो ❀ चढ़ि गयंद पर कियो पयानो ॥
दो०-एरावतको सुत अहै, ताहि दियो सुरराज ॥
तापर चढ़ि भगदत्त नृप, कियो द्रयुको साज ॥
मन्दर सों देखत नर डरई ❀ योजन ऊपर पाँव सो धरई ॥
दन्त विशाल कहत नहिं आवै ❀ मनहुँ शृङ्ग कैलास सुहावै ॥
कालरूप मम कुंजर धायो ❀ पांडव के दल ऊपर आयो ॥
कटक अमित पाँयनसों मान्यो ❀ शुण्ड लपेटी रथी फटकान्यो ॥
अपनो दल डोलत अनुमान्यो ❀ भीम अग्र ह्वै हाँक सुठान्यो ॥
क्रुद्धित शर कोदण्ड सुधान्यो ❀ कुँजर शीश विशिषशत मान्यो ॥
शायक अमित हने गजमत्तहि ❀ षष्टिबाण मान्यो भगदत्तहि ॥
तब भगदत्त क्रोध उर कीन्ह्यों ❀ पंचविंश शर फोंकन दीन्ह्यों ॥
भीमसेन उर मध्य प्रहारा ❀ बहै प्रवाह रुधिरकी धारा ॥
दो०-तब गयंद अतिक्रोधकरि, गह्यो भीम रथ आय ।
फेंकि दियो रथ भूमि में, परो कोश पर जाय ॥
कहूँ तुरंग कहूँ रथ टूट्यो ❀ कहूँ सारथी कर शिर फूट्यो ॥
भीमसेन तब लज्जा पायो ❀ रहु भगदत्त वृकोदर आयो ॥
हाँक मारि यहि भाँति जनायो ❀ लैकर गदा क्रोधकरि धायो ॥
एकहि गदा शीश पर दयऊ ❀ चारि पैग पीछे गज गयऊ ॥
गदा घाव गजराज सँभान्यो ❀ झारि शीश आगे पग धान्यो ॥
तब भगदत्त क्रोध जिय कीन्ह्यों ❀ हाँकि शैल उर मध्यसों दीन्ह्यों ॥
शैल घाव ते मोह जनायो ❀ धक्का मारि गजराज गिरायो ॥
गिन्यो भीम धरणी महँ कैसे ❀ भूधर परत भूमि तल जैसे ॥
द्रुपद नरेश देखि करि धायो ❀ उतरा काशिराज सँग आयो ॥
जुरयो शिखंडी अति रणधीरा ❀ चारिउ बीर महाबल वीरा ॥
सहस सहस शर सबन चलायो ❀ शीश गयंद बाणते छायो ॥
गज पर शर वर्षत सब कैसे ❀ गिरि पर वृष्टि नीर घन जैसे ॥
दो०-नृप भगदत्तजु क्रुध ह्वै, लीन्हेउ शर कोदण्ड ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चारिउ भट मोहित किये, भारत रण बरबण्ड ॥
चारिउ वीर विमोहित कीन्ह्यों ❀ पेलि गयंद कटक पर दीन्ह्यों ॥
सन्मुख आई शूर शर जोरहिं ❀ झपटि गयन्द सबनशिर तोरहिं ॥
ठोकर अपर पैर ते मारहिं ❀ काहुहि छेदि दंड ते डारहिं ॥
बिगरी अनी व्यूह सब फूटे ❀ विपुल सँग निज सँगते छूटे ॥
भयो शोर दल बैरख डोल्यो ❀ क्रुद्धित धर्मराज तब बोल्यो ॥
अहो मूढ़ भागत केहि कामहिं ❀ सन्मुख युद्ध करहु रणधामहिं ॥
प्राण गये उत्तम गति पैहहु ❀ चढ़ि विमान सुरलोक सिधैहहु ॥
क्षत्रिय वंश जन्म जो पावै ❀ सो सुपुत्र रण प्राण गँवावै ॥
धर्मराज यहि विधि ते कह्यऊ ❀ फिरिके अस्त्र सबनकर गह्यऊ ॥
शर अरु शक्ति शैल ते मारहिं ❀ तोमर फरसा कोउ प्रहारहिं ॥
क्षत्री क्रोधवन्त ह्वै धाये ❀ तूणिन माँह खांड अजमाये ॥
दो०—साहस करि क्षात्रिय सकल, करहिं सुअस्त्र प्रहार ॥
महा भयंकर देवगज, होत घाव नहिं पार ॥
तब भगदत्त निकर शर डार्यो ❀ क्षत्रियाविपुलसमर माहिमार्यो ॥
रथ अनेक गज गहि फटकारे ❀ ऊपर शर भगदत्त जु मारे ॥
व्याकुल सैन्य त्रसित ह्वै भागे ❀ दबे ते सकल परे जे आगे ॥
शत नरेश तेहि ठहर जूझे ❀ चले न भाज पँक आरूझे ॥
गज रथ अरु असवार सहस्रन ❀ धर्मराज हित मृत्यु भये रन ॥
कायर सकल जीव लै भाजे ❀ तब भगदत्त समर महि गाजे ॥
सिंहनाद करि हाँक सुनावै ❀ है कोउसुभटजो सन्मुख आवै ॥
पांडु वंश सब मारि गिरावों ❀ एक छत्र कुरुराज करावों ॥
तब अपनो पुरुषारथ लेखों ❀ अर्जुन कृष्ण नयन जब देखों ॥
धर्मराज के सन्मुख आयो ❀ अर्जुनको माधव समुझायो ॥
दो०—अर्जुन अब देखत कहा, धर्मराज पर भीर ।
चलहु जाइ उलरणकरिय, रथ हाँक्यो यदुवीर ॥
सकल सैन्य धीरज मन धरेऊ ❀ जबहीं दृष्टि कपिध्वज परेऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करि टँकार धनुष कर लीन्हों ❀ अर्जुन आइ हाँक रण दीन्हों ॥
गज क जोर सैन्य सब मारे ❀ परहु आय अब घात हमारे ॥
अब छाँड़हु जीवन की आशहि ❀ गज समेत जैहो यम पासहि ॥
तब भगदत्त क्रोध करि कह्यो ❀ अर्जुन मैं खोजत तोहि रह्यो ॥
भली भई विधि कीन्हीं भेटहि ❀ जैहो आजु काल के पेटहि ॥
सुनि अर्जुन धनु शायक लायो ❀ क्रोधित ह्वै अति बाण चलायो ॥
कुंड केश असि विशिष चलाये ❀ गज समेत भगदत्तहि छाये ॥
तब भगदत्त बाण सब काटे ❀ क्रुधित ह्वै सब शायक पाटे ॥
षष्टि बाण मारेउ अर्जुन तन ❀ असीनराच हन्यो श्यामहिघन ॥
सहसबाण मान्यो हनुमानहिं ❀ पंचबाण ते ध्वजा निशानहिं ॥
अष्ट विशिष अश्वन उर लागे ❀ थकित भयो रथ चलतनआगे ॥
तब शर विंशति विजयी मान्यो ❀ नृपको चाप खंडि कै डान्यो ॥
पुनि पारथ कीन्हों संधानहिं ❀ शक्ति बचि मान्यो दशबानहिं ॥
निष्फल भयो शक्तिजब जान्यो ❀ लैकर चाप विशिष संधान्यो ॥
क्रुधित नृप मान्यो तक्षिण शर ❀ घायल भये आपु धरणी धर ॥
गजहि पेलि अर्जुन पर आयो ❀ ऊपर ते बहु शर झरि लायो ॥
गज समेटि कै फेक्यो स्यन्दन ❀ अर्जुन कहीं कहीं जगवन्दन ॥
तीक्षण बाण घाव उर दीन्हों ❀ अर्जुनकृष्णविमोहित कीन्हों ॥
गिरत आपु भाष्यो गिरिधारी ❀ हनूमान रथ रक्षाकारी ॥

दो०-हम पारथ अरु रथ सहित, तुम रक्षक हनुमान ।
यह कहिकै मोहित भये, भक्त हेतु भगवान ॥

अर्जुन कृष्ण मोह जब पायो ❀ तब भगदत्त क्रोध करि धायो ॥
गज के पाँयन ते रथ तोरौं ❀ ठोकर ते अर्जुन शिर फोरौं ॥
हनूमान हँसि बचन सुनायो ❀ नृप यह मंत्र अकारथ लायो ॥
मो कहँ रथ सौंप्यो रघुनायक ❀ एरावत नहिं तोरन लायक ॥
यम अरु इन्द्र वरुण जो आवहिं ❀ तेऊ नहिं रथ देखन पावहिं ॥
वेष्टि लँगूर सबै रथ दीन्हें ❀ धायो मत्त हस्ति रिस कीन्हें ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्रुद्धित ह्वै नृप धनुष सँभान्यो ❀ लक्षबाण हनुमानहिं मान्यो ॥
प्रबल तेज शोणित छुट्यो ❀ वज्र शरीर लागि सब टूट्यो ॥
दोउ दंत गहि पेलेऊ बलकै ❀ कछुक ढील दीन्ह्योंकापि छलकै ॥
द्वौ संध बीच दंत जब धस्यो ❀ तब हनुमान लँगूरहि कस्यो ॥
पेंच लँगूर दशन दोउ टूटे ❀ तब गज महाकष्ट ते छुटे ॥
उखरे दशन चकित सब कोऊ ❀ शोणित बहै रदन कर दोऊ ॥

दो०-हरि जागे अर्जुन उठे, हाथ धनुष लै बान ।
पेंच लँगूर समेटि कै, रथ छाँड़्यो हनुमान ॥

सुनु भगदत्त कह्यो यह पारथ ❀ तुमकीन्ह्यों अतिशयपुरुषारथ ॥
अब मेरो प्रण नृप सुनि लीजै ❀ एक बाण कुंजर बध कीजै ॥
दूजो शर संधान जु करऊँ ❀ नहिं कोदण्ड बहुरि कर धरऊँ ॥
जो यह बाण गजहि संभान्यो ❀ क्षत्रिय धर्म आजु ते हान्यो ॥
तब भगदत्त कह्यो यह कारण ❀ मैं यह प्रण कीन्ह्यों अपने मन ॥
जो पह शर गजराज गिरावै ❀ मेरो अयश सकल जग गावै ॥
कृष्ण कही अर्जुन सुनि लीजै ❀ अब अपनो प्रण रक्षा कीजै ॥
पारथ ब्रह्मबाण संधान्यो ❀ श्रवण प्रयंत शरासन तान्यो ॥
कुँभस्थल ताकि मारत भयऊ ❀ भेदि शीशशरनिकसि सुगयऊ ॥
छुट्यउ प्राण गिरन गज चह्यो ❀ तब भगदत्त जंघ सों गह्यो ॥
राख्यो साधि झुकन नहिं पायो ❀ बाण वृष्टि अर्जुन पर लायो ॥
गजहि देखिजियशोच बिचान्यो ❀ पारथ धनुष हाथ ते डान्यो ॥

दो०-कहेउ कृष्ण पारथ सुनहु, प्राण तज्यो गजराज ।
राख्यो है भगदत्त गहि, अस्त्र तज्यो केहि काज ॥

सुनत बिजयनर धनुशर लीन्ह्यों ❀ क्रुद्धित ह्वै संधान सु कीन्ह्यों ॥
अर्द्ध चन्द्र शर अर्जुन पर छण्ड्यो ❀ नृपको शीश कंध ते खण्ड्यो ॥
मृतक गयंद सहित नृप परेऊ ❀ झलकत मुकुट जरायन जरेऊ ॥
अर्जुन रण कीन्ह्यों यह करणी ❀ योजन तीनिपर्‍योगजधरणी ॥
हर्षित भये देखि जगतारण ❀ धरि यह देह भक्त के कारण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पांडव सेन देखि सुख पायो ❀ फिरि कै सकलसमरमहिआयो ॥
हर्षित बचन युधिष्ठिर भाख्यो ❀ अर्जुन रण अपनो प्रण राख्यो ॥
रुण्ड मुण्ड वसुधा अब छायो ❀ रणमें रुधिर नदी बहि आयो ॥
भूत पिसाच योगिनि गावहिं ❀ विकट रूप भैरव गण धावहिं ॥
श्रीहरि कही चलो अब पारथ ❀ भीषम सों कीजे पुरुषारथ ॥
कृष्णदेव रथ हाँकि चलायो ❀ तब भीषम जय शङ्ख बजायो ॥

दो०-दश सहस्र रथ मारिकै, चले आपने धाम ।
सबलसिंह चौहान कहि, भारत के संग्राम ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
षष्ठमोऽध्यायः ॥ ६ ॥

पाँचो बन्धु कृष्ण सँग लीन्ह्यो ❀ सेन समेत गमन गृह कीन्ह्यो॥
तब कुरुराज भवन निज आयो ❀ सकल सेन विश्राम करायो ॥
आप गमन अंतःपुर कीन्ह्यो ❀ मानुमती आदर करि लीन्ह्यो ॥
चमर छत्र सब लिये सहेली ❀ मणिमय भूषण रुप गहेली ॥
नृपहिं सिंहासन लै बैठान्यो ❀ रानी तब आरती उतान्यो ॥
उत्तम नीर सुगन्ध सवाँन्यो ❀ सखिनआयतबचरणपखान्यो ॥
तेल सुगन्ध राज तनु लायो ❀ कनक कलश अस्नान करायो ॥
भूषण बसन अंग पहिरायो ❀ अमृत भोजन सरिस जेंवायो॥
कंचन मणिमय भवन सवाँरी ❀ हीरा रतन करत उजियारी ॥
ताबिच गज मणि झालरि जोरे ❀ देखत धनद कहहिं हम थोरे ॥
बहुत भाँति कै सेज सवाँरी ❀ पय फेना सम आनँद कारी ॥
शयन करन भूपति पगु धान्यो ❀ नृत्यनि मंगलगान उचान्यो ॥
आगिलि कथा कहन मन लायो ❀ यदुपति सहितसकलगृहआयो ॥

दो०-अशन करन बैठे सकल, द्रुपदसुता के जाय ॥
धर्मराज पूँछत भये, बचन सुनहु यदुराय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हनूमान रथ आपु सँभाऱ्यो ❀ तब पारथ भगदत्तहि मार्‌यो ॥
दश सहस्र रथ भीषम मारै ❀ नित क्रमसों नहिं एको बारै ॥
भीषम रहत कुशल नहिं देख्यो ❀ बंधु विरोध कठिन करि लेख्यो ॥
द्रुपदसुता कह सुनहु नरेशा ❀ केहि कारण जिय करहु अँदेशा ॥
जो हरि चरण कमल मन लावै ❀ सो जगमें कलेश नहिं पावै ॥
सदा भक्त की रक्षा कारण ❀ दीनबंधु कीन्हों तनु धारण ॥
जब प्रहलाद खंभ में कह्यो ❀ नरहरि रूप तहाँ प्रभु गह्यो ॥
असुर फारि यमलोक पठायो ❀ भक्त शीश पर छत्र धरायो ॥
ते प्रभु सदा रहत तुम संगहिं ❀ कारण कौन करहु मनभंगहिं ॥
करि भोजन शयनहिं मन लायो ❀ प्रात होत रण साज बनायो ॥

दो०-दल चतुरंग सुसंग लै, सब नृप तेज निधान ।
भीमसेन आगे भयो, किये हृदय अभिमान ॥

कौरव साजि समर महि आये ❀ हूह मारि दोऊ दल धाये ॥
शर अनेक वर्षन रण लागे ❀ धावहिं बीर क्रोध ते पागे ॥
सायक घाव करत अति चाँड़ें ❀ उछरहिं गिरहिं तर्कियुत खांड़े ॥
असवारहि असवार प्रहारहिं ❀ पकरहिं सुभटशीशअसिझारहिं ॥
रथी रथी सों कीन्ह्यों जोरहिं ❀ दन्ती सों दन्ती रण घोरहिं ॥
सन्मुख जुरे समर अति पंडित ❀ दोउदलमारुमारुध्वनि मंडित ॥
सन्मुख आइ जुरे रणधीरा ❀ घाल्यो घाव महाबल भीरा ॥
क्षत्रिय अति पौरुष निज करिकर ❀ कीन्ह्यो भारत प्रलय भयंकर ॥
बासुदव स्यन्दनहिं चलायो ❀ गंगतनय के सन्मुख आयो ॥
दोऊ सुभट मिले अति युद्धहि ❀ शरछाँड़नलाग्यो अतिक्रुद्धहि ॥
कर कोदण्ड बृकोदर लीन्ह्यो ❀ बाण बृष्टि अरि ऊपर कीन्ह्यो ॥
यहि प्रकार बहु विशीख पवाँरे ❀ सहसन बीर समर महि पारे ॥
कुरुपति कह्यो सुशर्मा धावहु ❀ पांडव सेनाहि मारि गिरावहु ॥

दो०-दश सहस्र रथ संग लै, कीन्ह्यो तुरत पयान ।
सिंहनाद किय समर महि, साधेउ शारँग बान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्रोधवन्त ह्वै लगे प्रहारन ❀ पांडव दल कृत बहु संहारन ॥
गिरा घोर तब भीम सुनायो ❀ स्यन्दन त्यागिदागहि धायो ॥
तबहिं सुशर्मा शर धनु लीन्ह्यों ❀ भीम अंग शत शर क्षत कीन्ह्यों ॥
दश सहस्र स्यन्दन रथ आयो ❀ दश दश शर तिन सबन चलायो॥
लक्ष विशिख बेधे जब तन में ❀ तबहिं वृकोदर क्रुद्धेउ मनमें ॥
गदा घाव यहि बिधिते मान्यो ❀ दुइसै रथ चूरण करि डान्यो ॥
साहित रथी सारथी न देखत ❀ मांस मृत्तिका समुझे लेखत ॥
अरु बहु स्यन्दन पदते तोन्यो ❀ करतलहतिबहुमौलिसोफोन्यो ॥
गहि बहु भीम चलायो स्यंदन ❀ याहि प्रकार किय सेन निकंदन॥
भीमसेन बहु कटक संहान्यो ❀ नृपति सुशर्मा आपु संभान्यो.॥

दो० क्रोधित भये नरेश अति, कीन्ह्यों शर संधान ।
हृदय वृकोदर के हन्यो, एक बार दशबान ॥

घायल भयो सबो सब बाणहिं ❀ क्रोद्धितगदागहिकियोपयानहिं॥
करिकै नाद सु गदा प्रहान्यो ❀ कूदि सुशर्मा आपु संभान्यो.॥
भाज्यो तुरत तज्यो रण रंगहि ❀ सारथि साहित कियो रथ भंगहि॥
कह्यो भीम भागत केहि कामहिं ❀ सन्मुख जुरौ करौ संग्रामहिं ॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धायो ❀ सिंहनाद करि हांक सुनायो ॥
भीमसेन अस्थिर ह्वै रहिये ❀ मारत हौ तीक्षण शर सहिये ॥
तब सारथि लै रथ पहुंचायों ❀ भीमसेन चढ़ि शोभा पायो ॥
भूरिश्रवा बाण दश डान्यो ❀ ते शर भीमसु काटि निवान्यो॥
दोउ बीर सन्धान्यो धनु कर ❀ क्रुद्धितलगे चलावन बहु शर ॥
धृष्टद्युम्न द्रोण गुरु संगहि ❀ दोउ भठ मच्यो महारण रंगहि ॥
शल्य नरेश सात्यकी योधहि ❀ कृतवर्म्मा बिराठ रण क्रोधहि ॥

दो० द्रोणी अरु अभिमन्युरण, कठिन बजायो मार ।
बाण बूंद वर्षत सघन, जिमि श्रावण जल धार॥

नृप जयद्रथरु नकुल कृत मारहिं ❀ कठिन अस्त्रदोउसुभट संभारहिं॥
घटउत्कच क्रोद्धित ह्वै धायो ❀ सप्ततात बहु वृक्ष चलायो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लै पषाण शिर ऊपर डारे ❀ यहि बिधि बहुत कटक संहारे॥
सकल पदाति पकरि के खायो ❀ गजहि समेटि पेट पहुंचायो॥
कुरुपति कह्यो अलम्बुष धावहु ❀ दैत्य दैत्य तुम युद्ध मचावहु॥
सप्त कोटि राक्षस लै संगहि ❀ धायो धनुकर धरि रण रंगहि॥
दनुजराज शत विशिख चलायो ❀ शर सो भीमपुत्र रथ छायो॥
मुद्गर लयो तज्यो तब स्यंदन ❀ धायो उतरि हिडंबीनंदन॥
लयो गदा कर दानव राजहिं ❀ सनमुख जुर्‌यो युद्धकेकाजहिं॥
मुद्गर गदासु दोउ प्रहारहिं ❀ एकहिं एक क्रुद्धित ह्वै मारहिं॥

दो० नृपति अलंबुष भीमसुत, भयो सुघोर बिरुद्ध।
विकट भयंकर रूप धरि, कियो युद्ध अति क्रुद्ध॥

गदा घाव जब तनुमों लागत ❀ शब्द अघात महारण छाजत॥
अस्त्र डारि दोऊ लपटाने ❀ अटके मल्लयुद्ध अरुझाने॥
दंत दंत नख नखन प्रहारहिं ❀ गहे केश मुष्टिक सों मारहिं॥
मेघ घटा सम अंग सोहाये ❀ क्रोद्धितदशन बिज्जु चमकाये॥
अरुण नयन सोहत हैं कैसे ❀ प्रातहि उदय दिवाकर जैसे॥
रथ के खंभ शीश पर मारहिं ❀ पकरि शुंड कुंभस्थल फारहिं॥
महायुद्ध अति अद्भुत करणी ❀ कियो महाभय भारत धरणी॥
भीमतनय तब तेज संभार्‌यो ❀ दनुजराज गहि केश पछार्‌यो॥
तब दनुजेश धरणि पर गिर्‌यो ❀ महा अचल मानहुं महि पर्‌यो॥
तासु हृदय पुनि चरण प्रहारा ❀ मुखते चली रुधिर की धारा॥

दो० सबलसिंह चौहान कहि, असुरन्ह कीन्हों खेत।
भैरव भुत पिशाच गण, नाचत योगिनि प्रेत॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब भीषम शारँग कर लीन्हों ❀ बाण बृष्टि अर्जुन पर कीन्हो ॥
कृष्ण शरीर विशिख दश वेध्यो ❀ हनूमान विंशति तनु सेंध्यो ॥
पारथ के शर शोणित छूट्यो ❀ कोटि सनाह भीष्म उरफूट्यो ॥
पाँच बाण मनमोहन मार्‌यो ❀ सहस पैग पाछे रथ टार्‌यो ॥
भीषम कह्यो सुनहु जगनायक ❀ अर्जुन यहि पुरुषारथ लायक ॥
अब अपनो रथ रक्षा कीजै ❀ कमल नयन जोती कर लीजै ॥
यह कहिकै तीक्षण शर मार्‌यो ❀ रथको पैग तीनि शत टार्‌यो ॥
नंदिघोष रथ श्री जगवंदन ❀ पारथ सहित पवन के नंदन ॥
लग्यो बाण रथ पाछे आयो ❀ साधु बचन यदुनाथ सुनायो ॥
जीबन सफल गंगसुत तेरो ❀ बाण घात रथ डोल्यो मेरो ॥
दो० श्रीहरि तुरँग सँभारिकै, लै आयो तेहि ठौर ।
तौ लगि भीषम बधि गये, दशसहस्त्ररथ और ॥
हर्षित ह्वै जयशंख बजायो ❀ तब सारथि रथ फेरि चलायो ॥
सकल सुभट निज धाम सिधाये ❀ किये जाय विश्राम सुहाये ॥
धर्मराज संग लिये सब भाई ❀ सहित गोबिंद भवन निज जाई ॥
अमृत भोजन सरस बनाये ❀ जेंवत भीम बहुत सचुपाये ॥
नृपति युधिष्ठिर यदुपति आगे ❀ कोमल बचन कहन कछुलागे ॥
भीषम सरस रच्यो पुरुषारथ ❀ कोहि बिधि युद्ध जीतिये भारथ ॥
धर्मराज तब भये दुखारे ❀ तब कुंती कछु बचन उचारे ॥
सब संसार कहत परतक्षक ❀ पांडु वंश के माधव रक्षक ॥
जब तुम सकल रहे यक भवनहिं ❀ खेलनको बालक सबगवनहिं ॥
भीम और दुर्योधन संगहि ❀ सदा विषाद करत मनभंगहि ॥
बुद्धिचक्षु तब हमहि बुलायो ❀ मधुरबचन कहिकै समुझायो ॥
दो० दुर्योधन अरु भीमसों, बनत नहीं इक ठौर ।
ताते बासिये अनतह्वै, राचि देहौं गृह और ॥
नृप दुर्योधन कर्ण बुलायो ❀ शकुनी सहित मंत्र ठहरायो ॥
थवइ बुलाय दयो धनदानहिं ❀ लाख भवन करिये निर्माणहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नगर वारुणा महल उठायो ❀ लाख साज मंदिर सबलायो ॥
लाख कोट सब ईंट सँवान्यो ❀ देकरि लक्ष सवन बैठान्यो ॥
बुद्धिचक्षु कह विदुर सिधावहु ❀ अपने नयन देखि तुमआवहु ॥
नृप आज्ञा माथे करि लीन्यों ❀ चढ़िबरबाजिगमनशुभ कीन्ह्यो ॥
आइ उतरि देख्यो सब धामहिं ❀ लाग्यो सकललाह को कामहिं ॥
थवइन ते सब पूँछन लागे ❀ यह बृत्तांत कहहु मम आगे ॥
यह सुनि थवइ कहत सुभयऊ ❀ दुर्योधन मोहिं आयसु दयऊ ॥
लाख भवन कोजो निर्माणहिं ❀ गुप्तरूप पांडव नहिं जानहिं ॥
विदुर बात मनमें अनुमानत ❀ पापी दुर्योधन जग जानत ॥

दो०-देख्यो सुन्यो न जगतमें, लक्ष भवन निर्मान ।
दुर्योधन रचना रची, पाण्डव मुये निदान ॥

चुप करि रहौ पांडुसुत मरेऊ ❀ हत्या करन वीर नृप चहेऊ ॥
रत्न मुद्रिका करते लीन्यो ❀ थवइ बोलि हस्तकरि दीन्हों ॥
अब इक सुरंग करहु निर्माणहिं ❀ जैस दुर्योधन नहिं जानहिं ॥
सुनिकै बढ़ई द्वार बनायो ❀ ता ऊपर इक खम्भ लगायो ॥
विदुर गयो धृतराष्ट्र के आगे ❀ उत्तम भवन कहन असलागे ॥
द्विज बुलाय शुभ दिवस धरायो ❀ गृह प्रवेश हम सब मन लायो॥
भीषम द्रोण साथ करि दीन्हें ❀ यज्ञ होम बड़ विधि ते कीन्हें ॥
संध्या जानि किये सब गवनहिं ❀ सुनत समेत रहे हम भवनहिं ॥
व्याधा एक पांडु तेहि नामहिं ❀ सदा भ्रमै मृगया के कामहिं ॥
मृगन मारि कानन ते ल्यावै ❀ बेचि मांस सो सुतन जियावै ॥
एक दिवस अहेर सिधायो ❀ देखन एक जन्तु नहिं पायो ॥
शोच बढ़ो जिय भयो निरासहि ❀ बालक सब बिधि परे उपासहि ॥

दो० मृगी एक देखी तबहिं, गर्भ सुदिन प्रमाण ।
हर्षित होइ व्याधा चल्यो, साध्यो शारँग बाण ॥

पश्चिम दिशा जाल दै आयो ❀ उत्तर दिशिसों अनल लगायो ॥
पुरब दिशा श्वान दृढ़ कीन्यों ❀ दक्षिण दिशा फोंक शरदीन्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चहुँ दिशी मगी देखिकै आयो ❀ कौनेउ दिशी निर्बाह न पायो ॥
पश्चिम गये जाल में परिये ❀ उत्तर गये अग्नि में जरिये ॥
पूरब गमने श्वान पछारै ❀ दक्षिण गये बधिक मोहिंमारै ॥
प्रसवकाल सोई निकटहिं आयो ❀ उदर मध्य सोई व्यथाजनायो ॥
करुणा करै मृगी यह भाखै ❀ दीनबन्धु बिन्नै को मोहिराखै ॥
तृण बन चरौं करौं जलपाना ❀ अपनो मांस बैर सब जाना ॥
अहो कृष्ण सन्तन सुखकारी ❀ दयासिन्धु मैं शरण तुम्हारी ॥
अब तुम दया करहु जगनायक ❀ याहि अवसर प्रभुहोहुसहायक ॥
दो०-घूमत है मन भँवर में, दुखकी नदी अथाह ।
चहुंओर संकट परयो, हरिके हाथ निबाह ॥
जब याहि भांति मृगीअकुलानी ❀ दीनबन्धु यह रचना ठानी ॥
बनमें मेघ घुमरि करि आयो ❀ बरषि नील तब अनल बुतायो॥
पवन तेज सब जाल उड़ायो ❀ श्वानहि झपटि व्याघ्र लइखायो ॥
तड़प्यो वज्र व्याध शिर पर्‍यो ❀ चहूँओर प्रभु रक्षा कर्‍यो ॥
दीनदयालु राखि तेहिं लीन्ह्यों ❀ सुखते मृगी प्रसव तब कीन्ह्यों ॥
बधिक जबै आयौ नहिं भवनहिं ❀ सुत समेत नारी किय गवनहिं ॥
द्विज भोजन तब सुनिकै धायो ❀ मोते तब याचज्ञा लायो ॥
पंच पुत्र तब देख्यो नयनहिं ❀ शबरी ते तब पुछेहु बयनहिं ॥
कहा नाम तुम मोहिं सुनावहु ❀ केहि उद्यम तुम दिवस गवाँवहु ॥
कुन्तीनाम मोहिं द्विज राख्यो ❀ स्वामी नाम पांडु तिन भाख्यो ॥
सुत को नाम युधिष्ठिर अहई ❀ दूजो भीमसेन यह कहई ॥
तीजो अर्जुन सरिस सोहायो ❀ नकुल और सहदेव कहायो ॥
दो०-तब मैं हर्षित भई बहु, बैस सखी सुनु बात ।
पति सुत एकै नामहै, हम तुम भयो सँघात ॥
उत्तम भोजन सरिस जेंवायो ❀ सुतन समेत सेज बैठायो ॥
शकुनीसुत उलका तेहि नामहि ❀ दुर्योधन पठयो यहि कामहिं ॥
मध्य द्वार में अनल लगायो ❀ दृढ़ करि वज्र कपाट दिवायो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पसरी अग्नि लक्ष मिहलाने ❀ बाढ्यो धूम सकल अकुलाने ॥
चुइकै लाख देहमों परई ❀ उधिरै त्वचा वह्नि सब जरई ॥
कृष्ण कृष्ण हम सबन पुकारी ❀ दीनबन्धु हम शरण तुम्हारी ॥
कही भीम क्रुधित सहदेवहिं ❀ तैं नीके जानत है भेवहिं ॥
हँसि सहदेव कह्यो यह बानी ❀ भले ठौर पूछेउ सज्ञानी ॥
भीम कीजिये कहो हमारो ❀ बलते यह गहि खम्भ उखारो ॥
विदुर सुरंग कीन्ह्यों निर्मानाहि ❀ धर्म शरीर नीति सब जानहिं ॥
भीमसेन गहि खम्भ उखारो ❀ देख्यो उत्तम पंथ सँवारो ॥
दो०--वहि मारग सब मिलि धसे, आतुर कीन्ह्यो गौन ।
गदा भूलि आये तहां, भीम गयो फिरि भौन ॥
लै कर गदा चलन जब ताक्यो ❀ धरिकै देह आग्नि तवहांक्यो ॥
सप्त जिह्व देखत भय पायो ❀ भीमसेन तब विनय सुनायो ॥
आपु समान तीन सौ दैहों ❀ भाषत सत्य समय जब पैहों ॥
द्वारावाती महँ रहे बनवारी ❀ सुखसय्या सँगरुक्मिणि प्यारी ॥
तातिं समीर अङ्गमें लागी ❀ भीष्मकसुता नीद सों जागी ॥
अहो नाथ यह कारण कहिये ❀ शय्या अग्नि आँचते दहिये ॥
हँसि प्रभु कह्यो मौन ह्वै रहिये ❀ गुप्त बात काहुहिनहिंकहिये ॥
लाख भवन कुरु नाथ सवान्यो ❀ पांडु तनय हम जरत उबान्यो ॥
अनल आंचअपनेतनु लीन्ह्यों ❀ उनसबको निबाहकरि दीन्ह्यों ॥
कृष्ण सहायक चितमें धरहु ❀ हे सुत शोच काज केहि करहु ॥
दो०-जरत उबान्यो बन्हि ते, सदा भक्तकी लाज ।
सबलसिंह चौहानकह, शोच करहु केहि काज ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

करि भोजन शयनहि मन दीन्ह्यों ❀ प्रात होत रणउद्यम कीन्ह्यों ॥
पहिरि सनाह खड्ग कटि बाँधे ❀ हर्षित बदन चल्यो शरसाधे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दोऊ दल रणभुमिहि आये ❀ हाँक मारि पायकगण धाये ॥
रहुरहुकहि कृपाण सब खोलहिं ❀ मारत हाँक पदातिसु डोलहिं ॥
बजे निशान भयो अघाता ❀ कोउनहि सुने केहू करि बाता ॥
पेलि गयंद महा उत आये ❀ पर्वत मनहुँ भूमि पर धाये ॥
असवारहिं असवार सभारहिं ❀ सम्मुख जुरे खड्ग शिर झारहिं ॥
रथी रथी सों युद्ध लगायो ❀ क्रुद्धित ह्वैबहु बाण चलायो ॥
क्षत्रिय सकल करहि संग्रामहिं ❀ जूझहिं स्वामिधर्मके कामहिं ॥
कुरुक्षेत्र में प्राण गवावहिं ❀ चढ़िबिमानसुरलोकसिधावहिं ॥
नान्दिघोष श्रीपाति रथ चाल्यो ❀ डोली धराणि शेष शिर हाल्यो ॥

दो० भीषम सों अर्जुन जुरे, कीन्ह्यो धनु टँकोर।
दोउ दल चक्रित भये, जनु घुमरो घनघोर।

भीषम सों अर्जुन यह भाष्यो ❀ चारि दिबस अपनोप्रणराख्यो ॥
दश सहस्र नित क्रम रथ मान्यो ❀ दैकर शंख भवन परु धान्यो ॥
यहिबिधि करौंधनुष कर धारण ❀ सकहु नआजु सेंन सँहारण ॥
भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ ❀ कीजै जो सोहैपुरुषारथ ॥
साखी आपु अहै यदुनंदन ❀ दशसहस्र रथ करौं निकंदन ॥
यह कहि धनुष हाथ दृढ़ठान्यो ❀ पंच विशिख सायक संधान्यो ॥
निशितावीशिख गंगासुत मान्यो ❀ अर्जुनते शर काटि निवान्यो ॥
सायक विंश विजयनर जोन्यो ❀ शन्तनुसुतबीचहि शर तोन्यो ॥
हुई वज्र अति विशिख प्रहारहिं ❀ जिमिजलधर वर्षतजलधारहिं ॥
बहुत युद्ध रण समता जान्यो ❀ पारथ अग्निबाण संधान्यो ॥

दो० प्रकटि अग्निबार चली, झपटत लपट कराल।
गजरथ हय पदचरजरत, कौरव कपट बिहाल।

भीषम वरुण बाण कर लीन्ह्यो ❀ तातेअग्नि निवारणकीन्ह्यो ॥
पांडव दल बूड़त सब जान्यो ❀ अर्जुन पवन बाण संधान्यो ॥
पवन तेज सब नीर सुखायो ❀ ध्वजा टूट धरणी पर आयो ॥
भीषम तज्यो सर्प के बानहिं ❀ नागन मरुत कीयो तब पानहि॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धाय डसैं सब बिषधर कारे ❀ यहि विधि बहुत सैन्य सँहारे ॥
अर्जुन बरही बाण चलाये ❀ मोरन पकरि सर्प सब खाये ॥
भीषम अन्धकार शर छाजे ❀ देखत सकल पाक्षिगण भाजे ॥
अन्धकार भो कछू न सुझै ❀ अपनो पर कोऊ नाहिं बूझै ॥
हितअरुअहित देखिनाहि पावहिं ❀ हाँक मारिकर आपु जनावहिं ॥
गज रथ हय पदाति सब धावहिं ❀ अभिरहिगिरहिंपंथनाहिंपावहिं ॥
पांडव सैन्य देखि नहिं पायो ❀ तब पारथ रविबाण चलायो ॥
भानु तेज कीन्ह्यो तुम नाशहि ❀ पांडव दल पायो परकाशहि ॥

दो०—मार्तंड मंडल उग्यो, देखत अतिहि प्रचंड ।
तब अर्जुन यहि विधि दियो, भीष्म वाहु कोदंड ॥

गंगासुत क्रोधीत भयो मनमें ❀ शर मार्‍यो पारथ उर रणमें ॥
अष्टबाण तब याहि बिधि जोरे ❀ घायल किय रथ चारिउ घोरे ॥
सप्त विशिख मार्‍यो हनुमंतहि ❀ सत्तरि शर वेध्यो भगवंन्ताहि ॥
विंशाति शर रथ ऊपर मार्‍यो ❀ चाके चारि धरणिमों डार्‍यो ॥
लै ताजन्ह प्रभु अश्वाहि मार्‍यो ❀ महाकष्ट ते रथहि निकार्‍यो ॥
अर्जुन देखि क्रोध जिय बाढ़्यो ❀ तीक्षण शर निषंग ते काढ़्यो ॥
भीषम के उर मध्य प्रहारा ❀ बहै प्रवाह रुधिर की धारा ॥
चारि बाण छूटे अति पायल ❀ ताते भये अश्व रथ घायल ॥
तीनि बाण सारथि पर लायो ❀ एक बाण ते ध्वजा गिरायो ॥
पारथ यह पुरुषारथ कीन्ह्यों ❀ भीषम कोप हाँकि रथ दीन्ह्यों ॥

दो०-अर्जन रण स्थिर रहो, रक्षा कीजै सैन ॥
आपु सुदृढ़ जोती गहो, पीतम पंकज नैन ॥

यह कहि तीक्षण बाण चलायो ❀ शर सों नंदिघोष रथ छायो ॥
पांडु तनय अस विशिख पवाँर्‍यो ❀ आवत सायक काटि निवार्‍यो ।
भीषम के शर मारि गिरायो ❀ तव अर्जुन शत बाण चलायो ॥
मारत शर शर सों शर खंडित ❀ दोऊ जुरे सरस रण पंडित ॥
भीषम पर्वत शर संधान्यो ❀ देखि देव सब शंका मान्यो ॥

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चलैं पहार सकै को भाषन ❀ शत ते सहस सहस ते लाखन ॥
लक्ष पहार गगन में धाये ❀ भादों मेघ उमाड़ि जनु आये ॥
शब्द अघात होत हैं कैसे ❀ सागर मथत कुलाहल जैसे ॥
पांडव दल त्रासित ह्वै भागे ❀ हा हा शब्द पुकारन लागे ॥
नंदिघोष राख्यो जगवंदन ❀ भीमरु रहे सुभद्रानंदन ॥
तीन महारथि रण महँ गाजैं ❀ सहित नरेश सकल भट भाजैं ॥
अन्धकार यहि बिधि ते छायो ❀ अर्जुन कृष्ण दृष्टि नहिं आयो ॥
दो०-सुरंगण हा हा शब्द कृत, भयो घोर संग्राम ।
पारथ शर शारग गहु, कहे आपु सुखधाम ॥
साधि बाग राख्यो हरि घोड़े ❀ अर्जुन वज्र बाण गुण जोड़े ॥
गिरिते भयो वज्र तब दूनो ❀ फोरि पहार कियो तब चूनो ॥
ऐसे वज्र बाण तब छूट्यो ❀ लक्ष पहार छार सम फूट्यो ॥
बिबुध लोग देखत सुख पायो ❀ सेना सकल समर महि आयो ॥
पुष्पमाल सुर कन्या डारहिं ❀ नंदिघोष रथ सरस सवाँरहिं ॥
जय जय शब्द गगन महँ बोलत ❀ चढ़े विमान अनन्दित डोलत ॥
भीषम निरखि क्रोध उर छायो ❀ पारथसों कछु बचन सुनायो ॥
अब अपनो दल रक्षा करिये ❀ सावधान को दण्डहि धरिये ॥
लघु संधान विपुल शर त्यागो ❀ सहससहस शर छूटन लाग्यो ॥
गंगातनय तेज सँभाऱ्यो ❀ अर्जुन काटि भूमि महँ पाऱ्यो ॥
भीषम चहहिं सैन्य सँहारण ❀ पारथ प्रण रक्षा के कारण ॥
नयन पलक लागन नहिं पावहिं ❀ श्रमजलबूटि नयन पर आवहिं ॥
शर संधान घात नहिं पायो ❀ धनुष खींचि पाँछन मन लायो ॥
गंगासुत तब अवसर पायो ❀ बाणन वृष्टि महा झरि लायो ॥
दश सहस्र कृत खंडित स्यंदन ❀ कियो शंखध्वनिशंतनुनन्दन ॥
पारथ कह्यो सुनहु यदुराई ❀ भीषम किमि यह शंख बजाई ॥
बध्यो सैन्य माधव यह भाख्यो ❀ गंगासुत अपनो प्रण राख्यो ॥
गज रथ हय पदाति सब जूझे ❀ रुण्ड मुण्ड कछु जात न बूझ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्जुन लखि अचरज करि मान्यो ❀ महावीर भीषम के जान्यो ॥
संध्या जानि रथहि पलटायो ❀ कौरवदल सब भवनहिं आयो ॥
दो०-नन्दिघोष रथ फेरिकै, पारथ कीन्ह्यों गौन ।
सबलसिंह चौहान कह, सहित राधिकारौन ॥

इति श्रीमहाभारते भीषमपर्बणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

सकल सैन्य विश्राम सो कन्यो ❀ खान पान कर्महि अनुसन्यो ॥
दुर्योधन भीषम पहँ आये ❀ बैठि बचन यहि भाँति सुनाये ॥
पांच दिवस कन्हिं संग्रामहिं ❀ पांडव कुशल गये निज धामहिं ॥
तब बलनाथ जगत सब जानत ❀ देव दनुज गंधर्व बखानत ॥
क्षण मों पांडव सकहु सँहारण ❀ आप दया कीजै केहि कारण ॥
तब भीषम कह बचन सही अति ❀ पूर्व कथा अब सुनहु महीपति ॥
नंदभवन जब रहे मुरारी ❀ धेनु चरावत अति हितकारी ॥
सुरपति यज्ञ गोप सब कीन्ह्यों ❀ सो हरि मेटि शैल कहँ दीन्ह्यों ॥
यह सुनि देवराज दुख पाये ❀ प्रलयकाल के मेघ बुलाये ॥
उठी घटा वारिद घहराने ❀ देखत ब्रजवासी अकुलाने ॥
कृष्ण कृष्ण कहि सबन पुकारी ❀ अहो नाथ हम शरण तुम्हारी ॥
तब हरि गोवर्द्धनहिं निहान्यो ❀ भुज बल पकरि पहार उपान्यो ॥
बायें कर पर राख्यो मन्दर ❀ यहि बिधि नाश्यो गर्व पुरन्दर ॥
दो०-सप्त दिवस झरि लाइकै, वर्षा घोर अपार ।
ग्राम गोप रक्षा कियो, कर सों धरयो पहार ॥

ते प्रभु है पारथ रथ सारथ ❀ कहो कहा कीजै पुरुषारथ ॥
बधौं काल्हि पाण्डव परतक्षक ❀ जो नहिं कोई कृष्ण रण रक्षक ॥
होत प्रभात दोउ दल सज्जित ❀ शब्द अघात दमाम सुबाज्जित ॥
भाँति भाँति बैरख फहराने ❀ राजहँस जिमि गगन उड़ाने ॥
सिंहनाद करि हाँक सुनाये ❀ क्षत्रिय सकल क्रोध करि धाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

महारथी सब बड़े धनुर्धर ❀ सन्मुख जुरे गहे कर धनुशर ॥
ऐसे विशिख वृष्टि शर कियऊ ❀ शरके छाँह भानु छिपि गयऊ ॥
कोउ भट शैल शूल परिहारहिं ❀ कोऊ खड्ग शीश पर मारहिं ॥
गदा अपर मुग्दर कर लीन्ह्यों ❀ ताते मार भयंकर कीन्ह्यों ॥
कोउ भूप गहि खञ्जर चोखे ❀ बाहत जहा रहत नहिं मोखे ॥
तब सहदेव खड्ग निज कर धरि ❀ धर्मराज हित हतत सैन्य अरि ॥
छत्र समेत वीर सुतअन्धहि ❀ भृकुटीसाहित काट गजकन्धहि ॥
दो०-यहि विधिते सहदेव रण, कीन्हेउ गीध मशान ।
धायो शकुनी नाद करि, साधे कर धनुबाण ॥
लघुसंधान विशिख त्रय मारयो ❀ ते सहदेव फेरि परतारयो ॥
तब पारथ कीन्हों असवारी ❀ लागे करन युद्ध अति भारी ॥
सप्त नराच निशित कर लीन्हेउ ❀ तेशर बिद्धि मौलि पर कीन्हेंउ ॥
जयद्रथ नृपरु नकुलते भारथ ❀ द्वौ भट करत महा पुरुषारथ ॥
भूरिश्रिबा क्रोध करि धायो ❀ तिनसों धृष्टद्युम्न रण लायो ॥
द्विभट सरस लागे शर मारन ❀ जूझे सैन्य सहस्र अपारन ॥
द्रोण आप रथ हाँकि चलायो ❀ श्याम ध्वजा रण शोभा पायो ॥
बर्षहिं बाण सकै को भाषन ❀ पाण्डव दल जूझै तब लाखन ॥
याहिविधिकृत बहु सैन्य निकंदन ❀ आगे भये सुभद्रानंदन ॥
गुरुके चरण प्रणाम जनायो ❀ एक बार शत बाण चलायो ॥
सहस विशिख औरो कर लीन्हें ❀ ताते निकर सैन्य बध कीन्हें ॥
दो०—अभिमन्युरणयहिबिधिकियो, सैनाबध्यो अनन्त ।
मारेउ तीक्षण बाण ते, मतवारे मयमन्त ॥
द्रोण सुगुरु निज तेज सँभाऱ्यो ❀ अभिमन्युउरविंशतिशर माऱ्यो ॥
अर्जुन सुत कृत शर संधानहि ❀ द्रोण ललाट हन्यो दशबानहिं ॥
याहि बिधिकरतसमरअति करणी ❀ अंग भेदि शर फूटत धरणी ॥
महारथी सब अपने घाताहि ❀ क्रोधित करन लगे शरपाताहि ॥
भीषम पर अर्जुन शर जोड़े ❀ हाँक देत हरि हाँकत घोड़े ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुन्दर श्याम शरीर सुहावा ❀ पीत वसन तनु शोभा पावा ॥
नंदिघोष रथ श्रीपति सारथ ❀ भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ ॥
वासर पंच कियो संग्रामहिं ❀ सबामिलकुशलगयेतुम धामहिं ॥
होइहै आजु महाबल भारथ ❀ पारथ समुझि करौ पुरुषारथ ॥
कृष्ण देव रण को चित दीजै ❀ पाण्डु वंशकी रक्षा कीजै ॥
दो०—यह कहि भीषम क्रुद्ध ह्वै, छाँड्यो तीक्षण बान ।
अर्जुन हरि घायल भये, सहित बाजि हनुमान ॥
चारिविशिखयाहि भाँति पँवार्यो ❀ नंदिघोष हयघोष सुकार्यो ॥
क्रुद्धि विजयनर धनु कर लीन्ह्यों ❀ बाण वृष्टि भीषम पर कीन्ह्यों ॥
अस्सी बाण उर मध्य सुवेध्यो ❀ अष्टविशिखअश्वनतनु शोध्यो ॥
दश शर सारथिके उर दयऊ ❀ सायक पंच केतुध्वज हयऊ ॥
काटि विशिख सेना पर छोड़ेऊ ❀ हय गज गिरे अमित रथ तोरेऊ ॥
गंगासुत शर वर्षत कोप्यो ❀ पांडव चमू शरन सों तोप्यो ॥
जूझे सुभट गिरे रण ओ कहि ❀ चढे विमान चले सुरलोकहि ॥
जयमाला सुर कन्या डारहिं ❀ उत्तम रूप सुवेश सवाँरहिं ॥
यहि विधि गिरे वीर सब जेते ❀ स्वर्ग भोग सुख पायो तेते ॥
भीषम कीन्ह्यों सेन निकंदन ❀ क्रुद्धित भयो पांडुको नंदन ॥
दो०-अर्जुन कर कोदण्ड गहि, रणमें यहि व्यवहार ।
कुरुसेना मरि मरि पर्‌यो, शर छायो संसार ॥
महायुद्ध करि सकै न बरणी ❀ लक्षण सुभट खसेहति धरणी ॥
उठहिं कबंध शीश बिनु धावहिं ❀ खड्ग पाणि गहि मारन आवहिं॥
यहि विधि कीन्ह्यों समर भयंकर ❀ मुडमाल बहु लीन्ह्यों शंकर ॥
भीषम कह्यो धंनजय सुनहू ❀ अब मेरो पुरुषारथ गुनहू ॥
यह कहि नारायण शर लीन्ह्यों ❀ पढ़िकै मंत्र फेंक शर दीन्ह्यो ॥
विद्युत इव शर कियो प्रकाशहि ❀ कोटितरणिजिमिउग्योअकाशहि
देवलोक सब देखि डरान्यो ❀ पांडव दल देखत भय मान्यो ॥
बाणउदोत भयो अति केहि विधि ❀ प्रलयकालबड़वानलजेहिविधि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुपित गंगसुत त्रिशिख चलायो ❀ डाटि हाँकि यहि भाँति सुनायो ॥
पांडव वंश न एकौ बारौं ❀ सेना सहित सबै भट मारौं ॥
छूटत बाण शब्द भो भारी ❀ पार्थ सों भाष्यो बनवारी ॥
दो०-सब मिलिकै अस्त्रहि तजो, तब पावहु जियदान ।
तीनि लोक नाशिय सकै, यह नारायण बान ॥
अर्जुन तुमहिं हमारी आनहिं ❀ त्याग कीजिये अब धनुबानहिं ॥
याहि विधि ते माधव जब टेन्यो ❀ अर्जुन धनुष डारि मुख फेन्यो ॥
श्रीहरि आपु कहन अस लागे ❀ पांडव दल सब सुनहु सभागे ॥
डारहु अस्त्र गहरु जनि लावहु ❀ बदन फेरि मुख पृष्ठि देखावहु ॥
आपु कृष्ण यहि भाँति पुकान्यो ❀ सहित नरेश अस्त्र सब डान्यो ॥
बिन अस्त्रन क्षत्रिय नहिं मारहि ❀ बिमुख भये शर नहिं सँहारहि ॥
रण में सबहि देखि शर आयो ❀ अस्त्र हाथ काहुहि नहिं पायो ॥
भीम अस्त्र त्यागन नहिं कीन्हें ❀ सन्मुख रह्यो गदा कर लीन्हें ॥
श्रीपति कह्यो भीम के आगे ❀ यह हठ तजो हमारे माँगे ॥
कह्यो भीम सुनिये जगतारण ❀ कादरवचनकहियेकोहि कारण ॥
भारत में इतनो यश लैहों ❀ प्राण देउँ पै पीठि न दैहों ॥
अस्त्र गहे भीमहिं ताकि पायो ❀ प्रबल बाण सँहारण आयो ॥
बाण तेज माहि मंडल छायो ❀ नंदिघोष हरि तजि कै धायो ॥
दो०-पृष्ठि न दीन्हेउ पांडुसुत, जान्यो निपट निदान ।
भीमहि राख्यो पेट तर, शर लीन्हों भगवान ॥
अपनो तेज आपु प्रभु लीन्ह्यों ❀ यहिबिधिबाणनिवारणकीन्ह्यों ॥
जेहि विधि धेनु वत्स पर धावै ❀ प्रीति पाइकै जठर लगावै ॥
तेहि बिधि ते भीमहिं प्रभु राख्यो ❀ जयजयशब्दबिबुधगणभाख्यो ॥
पांडव दल देखत सुख मान्यो ❀ तब भीषम यहिभाँतिबखान्यो॥
साधु साधु श्रीपति गिरिधारी ❀ पांडु वँश के रक्षाकारी ॥
कुंती सुदिन बालकन जायो ❀ हरि सो हितू जगत में पायो ॥
भीषम बचन सुनत सुख पाये ❀ तब हरि नंदिघोष पर आये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धनुष बाण अर्जुन कर लीन्हें ❀ बाण वृष्टि अरि ऊपर कीन्हें ॥
पंच विशिख भीषम कर लीन्हें ❀ ते शर चोट शीश पर दीन्हें ॥
कर गहि पारथ शरहि निकारे ❀ दश सहस्र रथ भीषम मारे ॥
दो०-शंख शब्द करि कै चले, सबै आपने धाम ।
सबलसिंह चौहान कह, उभय सैन विश्राम ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
दशमोऽध्यायः ॥ १०॥

धर्मराज कछु कहन सुलागे ❀ मधुर बचन मोहन के आगे ॥
भीषम कीन्हों सैन सँहारण ❀ केहि विधियुद्धकरियजगतारण॥
नारायण शर भीषम मार्‌यो ❀ मरत भीम प्रभु आपु उबार्‌यो॥
बरु बन जाय तपस्या करिये ❀ भीषम के सन्मुख नहिं लरिये ॥
अर्जुन कह्यो नृपति सुनि लीजै ❀ नितहिं शोचकेहि कारण कीजै॥
सब दिन प्रभु मेरो प्रण राख्यो ❀ कथा पुरातन पारथ भाख्यो ॥
पारिजात सतभामहिं दीन्ह्यों ❀ रुक्मिणिसुनतगहरुमनकीन्ह्यों॥
वाते सरिस पुष्प जब पावौं ❀ तब नाथहिं निज बदनदेखावौं॥
कह्यो कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै ❀ आपु गमन कदलीबन कीजै ॥
पुष्प सुगंधराज लै आवहु ❀ धावहु तुरत गहरुजनि लावहु॥
दो०-कसि निषंग कोदण्ड गहि, कीन्ह्यों तुरत पयान ।
कदलीबन पहुँचे तबै, उदित होत ही भान ॥
पुष्प सुगंध देखि जब पायो ❀ तब पारथ तोड़न मन लायो॥
बानर चारि रहे तहँ रक्षक ❀ धाय रह्यो हनुमत परतक्षक ॥
मनुज एक लीन्हें धनु बानहिं ❀ तोरत पुष्प मनै नहिं मानहिं॥
यह सुनि हनूमान चलि आयो ❀ क्रोधित तासों बचन सुनायो ॥
अरे किरात चोर अपकारी ❀ यमपुर की इच्छा तैं धारी ॥
नितक्रम हम पूजा मन लावहिं ❀ और बरके शीश चढ़ावहिं ॥
अर्जुन सुनत क्रोधजिय कीन्ह्यों ❀ यह विधिते प्रतिउत्तर दीन्ह्यों ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तरु शाखा शाखा पर डोलत ❀ मर्कट झूँठ समुझिनहिं बोलत ॥
जे रघुनाथ इष्ट करि मानत ❀ तिनको मैं नीके करि जानत ॥
किये रहे शारँग कर धारण ❀ कपि पषाण ढोये केहि कारण ॥
दो०—शरते सागर बाँधकै, जाइ सकै नहिं पार ।
करत बड़ाई रामकी, कहिये कौन बिचार ॥
हनूमान यहि भाँति बखानत ❀ अधम किरातरामनहिं जानत ॥
जिन मारेउ रावण दशकन्धर ❀ कुम्भकर्ण जिन बध्यो धनुर्द्धर ॥
बालि मारि सुग्रीव नेवाजा ❀ लंका कियो विभीषण राजा ॥
बांधेउ उदधि न बाँधन ऐसे ❀ दलको मार सहै शर कैसे ॥
अर्जुन कह निज तेज सँभारौं ❀ सब सँसारहि पार उतारौं ॥
बाँध बाँधिकै मोहिं देखावहु ❀ तोपै प्राणदान तुम पावहु ॥
पवनतनय इमि बचन सुनाये ❀ दोऊ वीर सिंधु तट आये ॥
जैसे मधुमाखी गण छाये ❀ याहे विधि पारथ बाण चलाये ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर छाँड्यो ❀ शत योजन बाणन ते पाट्यो ॥
हनूमान मन विस्मय मान्यो ❀ नहिं किरात अपने उरआन्यो ॥
है कोई यह बीर महाबल ❀ कपट रूप कीन्ह्यों मोते छल ॥
दो०—मोर भारते शर चलैं, तौ तोहिं बधौं निदान ।
भार रहै दृढ सिंधुमें, करि निज सखा प्रमान ॥
अर्जुन कहा बाँध जो टूटै ❀ तौ मेरी परतिज्ञा छूटै ॥
क्षणक रहोयहि भाँति जनायो ❀ हनूमान उत्तर दिशि धायो ॥
रोम रोम में शैल सुबाये ❀ कछुक अग्र कछु लीन्ह्यों कांधे ॥
याहि विधि रूप भयंकर कीन्ह्यों ❀ धरणिअकाश परतनहिंचीन्ह्यों ॥
रवि छपि गयो भई अँधियारी ❀ योजन सहस देह विस्तारी ॥
अर्जुन अन्धकार जब देख्यो ❀ अपने जियअचरजकरिलेख्यो ॥
धुंधि भिट्यो तनु देख न पायो ❀ रविमण्डलमें शीश लगायो ॥
रूप भयंकर देखि डरान्यो ❀ सूखे प्राणविकल अकुलान्यो ॥
कौन कुबुद्धि मोहिं विधि दीन्ह्यों ❀ हनूमान ते सरवरि कीन्ह्यों ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

परमभक्त जगमें बल भारी ❀ जाके प्रभु रघुपति धनुधारी ॥
जिमि पिपिलिकहि पर ह्वै आवै ❀ परे दीप महँ प्राण गँवावै ॥

दो०-पारथ अब आतुर भयो, देखि भयानक कीश ।
सुमिरण कीन्हेउ ज्ञान करि, तुम राखहु जगदीश ॥

दीनबन्धु संतन सुखदायक ❀ याहि अवसर प्रभु होहु सहायक ॥
श्रीहरि तब अपने मन जान्यो ❀ परम भक्त दोऊ अरुझान्यो ॥
हनू भार वसुधा नहिं सहई ❀ शरको बाँध कहौ किमि रहई ॥
जो हनुमान जीति करि पावहिं ❀ पारथको यमलोक पठावहिं ॥
कृपासिन्धु यह रच्यो उपाई ❀ जाते रहै दोउ सरसाई ॥
कमठरूप जल भीतर कीन्हयों ❀ शरके हेठ पृष्ठि प्रभु दीन्हयों ॥
अरे सबल सुनु बचन हमारो ❀ धरत चरण अब बाँध सँभारो ॥
अर्जुन तब सहसा करि भाष्यो ❀ जाहु निशंक बाँध मैं राख्यो ॥
सुनि हनुमतअतिक्रोधित भयऊ ❀ आय पाँव शर ऊपर दयऊ ॥
दबी पृष्ठि हरि कपिके भारहि ❀ मुखते चली रुधिरकी धारहि ॥

दो०-अरुण वरण सागर निरखि, कीन्हों हनू बिचार ॥
ऐसो को संसार मों, सहै मोर जो भार ॥

ज्ञान दृष्टि धरि ध्यान लगायो ❀ शरके तरे देखि प्रभु पायो ॥
क्रादि हनू तट कियो पयानो ❀ त्राहि त्राहि यह भेद न जानो ॥
मैं पशु मूढ़ अकर्महि कीन्ह्यों ❀ हरिके शीशचरणनिज दीन्ह्यों ॥
कामरूप छाँड्यो बनवारी ❀ आपु भये तब शारँगधारी ॥
हनुमत सों प्रभु कहन सुलागे ❀ दोउ भक्त तुम परम सभागे ॥
प्रीति बिचारहु छाँड़हु रोषहि ❀ क्षमा करहु पारथ के दोषहि ॥
याहिविधि हरिमिलाप करि दीन्ह्यों ❀ आपु गमन द्वारावति कीन्ह्यों ॥
हम लै आयो सुमन बनेरो ❀ सब दिन प्रभु राख्यो प्रण मेरो ॥
अर्जुन कह्यो युधिष्ठिर राजहिं ❀ आपु सोच कीजै केहिकाजहिं ॥
दृढ़ ह्वै कै रण को मन लैये ❀ मारि शत्रु यमलोक पठैये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-मन वच क्रम जो हरि भजै, तजै और की आश।
सबलसिंहचौहान कह, नाहिंन भक्त बिनाश॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकादशोऽध्यायः॥ ११॥

प्रात होत कीन्ह्यों असवारी ❀ साजे सैन्य महाबल भारी॥
दोउ कटक बहु बाजन बाजत ❀ गये अस्त्र क्षत्रिय गल गाजत॥
सिंहनाद करि हाँक सुनाये ❀ मारु मारु करि सन्मुख आये॥
चतुरंगिनि सेना रण जूटयो ❀ क्रुद्धितअमितविशिखसबछूट्यो॥
शेल त्रिशूलरु शक्तिन मारहिं ❀ मुद्गर गदा शीश पर डारहिं॥
कोतह भये कटारिन मारहिं ❀ गिरत अंत महि गिरे करारहिं॥
शर धारा गजदंतहि लागै ❀ चिनगीं उठि बहु पावक जागै॥
पायक हाथ खड्ग लै फेरत ❀ मारत मारु मारु ध्वनि टेरत॥
दोऊ कटक लागै संग्रामहिं ❀ कुरुपति धर्मराजके कामहिं॥
मुशल घाव मारि शिर फोरहिं ❀ जूझि परे मुख नेकु न मोरहिं॥
दो०-सेना सब यह विधि लरै, करै भयंकर मारि।
महारथी रण हाँकदै, भिरैं प्रचारि प्रचारि॥
महाबीर अतिबल शर शोधहिं ❀ हृदय खंडि धरणी शर वेधहिं॥
भीमसेनबहु विशिख पँवारयो ❀ छादित शर भारत महि कारयो॥
लखि कलिङ्ग क्रोधित ह्वै धायो ❀ महामत्त गज लक्षण आयो॥
सौ बांधव कलिङ्ग के साथी ❀ औ नवलाख महाबल हाथी॥
भीमहिं घेरि सकल शर मारहिं ❀ शक्ति शेल तोमरन प्रहारहिं॥
लागत क्षत अति कोप बढ़ायो ❀ रथते उतरि गदा गहि धायो॥
गदाघाव गज मस्तक फोरयो ❀ पायन ते अनेक रथ तोर्‌यो॥
नृप कलिङ्गकीन्ह्यों दृढ़ ठानहिं ❀ भीम अंग मारेउ दश बानहिं॥
अपरविशिखत्रयअतिबल कीन्ह्यों ❀ तेशर विद्धि शीश पर दीन्ह्यों॥
भीमसेन परतिज्ञा भाषत ❀ रेकलिङ्ग अबको तोहिं राखत॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गदा पवन ते सबहिं उड़ायो ❀ सेन सहित सब नभ पहुँचायो॥
हैं नव लक्ष संग तव हाथी ❀ सकल करौं तारागण साथी॥

दो०-भीमसेन है नाम मम, जग परतज्ञ प्रमान।
यह मिथ्या नहिं जानिबो, कोटि आन भगवान॥

अपनो तेज कृष्ण तब दयऊ ❀ भीमसेन अंग प्रविशत सो भयऊ॥
अरु रण माहिं पवनगण छाये ❀ गदा पैठि निज भाव जनाये॥
धाये भीम गदा कर फेरत ❀ उड़ै गयन्द महौतड़ गेरत॥
पवन तेज आकाश समाने ❀ ज्यों बबूर के पत्र उड़ाने॥
कुंजर सबै गगन मों लागे ❀ कौतुक छोड़ि देव सब भागे॥
योजन एक सेन जो लायो ❀ गदा पवन ते सबै उड़ायो॥
कौरव दल देखत दुख मान्यो ❀ काल समान भीम को जान्यो॥
पकरि शुण्ड गज मत्त चलाये ❀ ते कुंजर लंका पहुँचाये॥
अमिरे कनक कोटि शिर फूट्यो ❀ सहित भुशुंड दशन सब टूट्यो॥
बहुतक परे सिन्धु के धारहिं ❀ पकरि मत्स्य सब करहिं अहारहिं॥
रवि मण्डल में जो पहुँचायो ❀ अजहुँ फिरत गिरन नहिं पायो॥

दो०-भीम भयंकर गज घने, फेंके यहि व्यवहार।
भारत के संग्राम ते, कियो सिन्धु के पार॥

देखत द्रोण क्रोध तब कीन्ह्यों ❀ रहु रहु भीम हाँक तब दीन्ह्यों॥
सहस बाण उर मध्य सो मान्यो ❀ शरते तनु जर्जर करि डान्यो॥
सायक छुटे जात न जाने ❀ कवच भेदि शर अंग समाने॥
लघु संधान द्रोण शर मान्यो ❀ अपने रथहि भीम पगु धान्यो॥
लैकरि धनु दश साधेउ सायक ❀ द्रोण शरीर हनेउ बलनायक॥
नकुलहि और जयद्रथ भारत ❀ दोऊ रच्यो सरस पुरुषारथ॥
शकुनी अरु सहदेव लराई ❀ महा युद्ध कीन्ह्यों प्रभुताई॥
द्रोण पुत्र अभिमन्यु संग्रामहि ❀ सरसावि शिख छाँड़ तरण धामहि॥
ऐसे शर क्रोधित ह्वै जोरहिं ❀ मनुज कहा पर्वत कहँ फोरहिं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-षष्टि बाण अभिमन्यु हते, कीन्ह्यों स्यन्दन भंग ।
ध्वजा सहित वै सारथी, मारे चारि तुरंग ॥
कीन्ह्यो अपर रथहिं असवारी ❀ सहस बाण जोरे धनुधारी ॥
अर्जुनतनयविशिख अस जोन्यो ❀ द्रोणी शर निज शरतेतोन्यो ॥
भूरिश्रवा द्रुपद संग्रामहिं ❀ जुरे बीर अपने जय कामहिं ॥
वासुदेव रथ कियो पयानो ❀ भीषम के सन्मुख लै ठानो ॥
दोऊ बीर महा धनुधारी ❀ लागे करन भयानक मारी ॥
दिव्य बाण अर्जुन तब मान्यो ❀ सहस पैग पाछे रथ टान्यो ॥
भीषम कह्यो धनंजय सुनिये ❀ अब मेरो पुरुषारथ गुनिये ॥
दो०-श्रवण मूल आकर्षि धनु, हन्यो विशिख समरत्थ ।
तीनि पैग पाछे कियो, नन्दिघोष सो रत्थ ॥
तीनि पैग पाछे रथ आयो ❀ साधु बचन यदुनाथसुनायो ॥
अर्जुन कह सुनिये गिरिधारी ❀ मम उर यह संशय है भारी ॥
मैंयहिविधिनिज विशिख चलायो ❀ सहस पैग रथ को विचलायो ॥
तीनि पैग मेरो रथ आयो ❀ साधु बचनकेहिकाजसुनायो ॥
हँसि भाष्यो तब सारंग पानी ❀ पारथ तुम यहचारितनजानी ॥
जे सब विबुध गमन में अहहीं ❀ ते सब नन्दिघोष महँरहहीं ॥
मेरु समान भार हनुमानहिं ❀ जगन्नाथ करि मोहिबखानहिं ॥
ऐसो रथ सर टान्यो पारथ ❀ भीषम धन्य धन्य पुरुषारथ ॥
अर्जुन सुनत सत्य करि जान्यो ❀ महा क्रुद्ध है कार्मुक तान्यो ॥
धाये बाण तेज अति पायल ❀ ताते भे गंगासुत घायल ॥
अष्ट बाण ते हन्यो तुरङ्गहिं ❀ पुनित्रयाविशिखसारथीअंगहिं ॥
दो०-कोटि बाण अर्जुन तज्यो, कीन्ह्यो लघु संधान ।
चारि लक्ष चतुरंग दल, जूझेउ लागत बान ॥
अर्जुनयहि विधिअतिबल कन्यो ❀ भीषम कोपि धनुषकरधन्यो ॥
असी बाण अर्जुन उर मान्यो ❀ गज रथ हय पदातिसंहान्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यहिविधिकरहिं युद्धकीकरणी ❀ जूझहिं बीर परहिं रणधरणी ॥
भीषम कियो सरस प्रभुताई ❀ नर के शीश मेदिनी छाई ॥
एक बिंशिखयहिविधिते जोन्यों ❀ ताते पारथ को गुण तोन्यो ॥
तबकपिध्वजानिजधनुगुणदीन्ह्यो ❀ पारथ हर्षि धनुष कर लीन्ह्यों ॥
गंगासुत तब समय विचान्यो ❀ दससहस्र स्यन्दन सँहान्यो ॥
दो०—संख ध्वनि करिके चले, सकल आपने धाम।
सबल सिंह चौहान कह, भारतके संग्राम ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अपने भवन सबै मिलि आये ❀ दुर्योधन तब भीष्म बुलाये ॥
सुनहु पितामह बचन कहौं बर ❀ तुमतें कोउ नाहिंबड़ोधनुर्धर ॥
सप्तादिवश रण कृतजय हित यह ❀ पांडव क्षेम सहितगेनिजगृह ॥
यह कलंक नहिं मिटै तुम्हारो ❀ जो न प्रात पांडव दलमारो ॥
सुनत क्रोध भीषम तनु बाढ्यो ❀ तीक्षण शर निषंगते काढ्यो ॥
महाकाल शर नाम कहावै ❀ इन्द्र बज्र नहिं पटतर पावै ॥
याहि शरते पांडव दल मारौं ❀ तब अपने भवनहिंपगुधारौं ॥
दुर्योधन सुनिके सुख मान्यों ❀ जीत्यो युद्ध चित्त में जान्यो ॥
तम्बू एक खड़ा करि दीन्ह्यो ❀ तामहँ बास पितामह कीन्ह्यो ॥
धर्मराज बन्धुन संग लयऊ ❀ युतकमलापतिनि जगृहगयऊ ॥
दो०-सभा मध्य बैठे सकल, द्रुपद विराट नरेश।
मधुर बचन सहदेवते, कहेउ आपु हृषिकेश ॥
प्रात युद्ध होइहै केहि रूपहिं ❀ मंत्री कहहु भेद सब भूपहिं ॥
हँसि सहदेव कही सुनु स्वामी ❀ तुम जानत सब अंतरयामी ॥
महाकाल शर भीषम राख्यो ❀ पांडव बधन प्रतिज्ञा भाष्यो ॥
द्वारहिं बस्योगयोनहिं धामहिं ❀ समुझिकीजियेश्रीहरि कामहिं ॥
सुनत युधिष्ठिर विष्मय मान्यो ❀ बंधुन सहित मुयेयह जान्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कह्यो कृष्ण नृप सोच न करिये ❀ मेरो मंत्र चित्त निज धरिये ॥
अर्जुन को मेरे सँग दीजै ❀ छलकरि महाकाल शर लीजै ॥
तब नृप कह यह बड़ो अँदेशो ❀ किमि तुम वह शर पैहौ केशो॥
कमल नयन नृपको समुझायो ❀ जब तुम सब बनवास सिधायो॥
काम्यक वन तृणशाला छायो ❀ दूत आनि कुरुनाथ जनायो॥
दो०-पांडव बन में हैं निकट, बचन सुनो कुरुनाथ ।
सकल सटक सँग लैचलो, भीष्मद्रोणनिजसाथ ।
गोधन धन देखन मन लायो ❀ यहै आगमन सबहिं सुनायो॥
सुर गण सब जान्यो यह कारण ❀ कुरुपति जात पाण्डवन मारण॥
सुरपति कह्यो चित्ररथ धावहु ❀ दुर्योधनहिं बाँधि लै आवहु ॥
आज्ञा लै चढ़ि चलो बिमानहिं ❀ कटि निषंग लीन्हों धनुबानहिं॥
गंधूव राय आइ तब हाँक्यो ❀ चकृत सबहिं गगन मुख ताक्यो॥
याहि विधि बाण बुंद झरि लायो ❀ मारि सबै सेना बिचलायो ॥
अति तीक्षण गंधूर्व शर लाग्यो ❀ धनुगुण कट्यो कर्ण तब भाग्यो॥
नागफाँस शर यहि विधि साँध्यो ❀ बल ते गहि दुर्योधन बाँध्यो ॥
दो० अपने रथ करि लै चल्यो, गगन पंथ मो गौन ।
त्राहि त्राहि टेर्‌यो विकल, सुन्यो युधिष्ठिर बैन ॥
यह तो है दुर्योधन भ्राता ❀ अपकारी गंधूव लिये जाता ॥
अर्जुन कर को दंडहि धरिये ❀ बन्धन मुक्त बन्धुकों करिये ॥
भीम कही नृप चुप करि रहिये ❀ भूलि बात केहि कारणकहिये॥
गंधूव कियो हमारो कामहिं ❀ चलहु राज कीजै सुख धामहिं॥
धर्मराज कह सुनिये पारथ ❀ आज्ञा मानि करहु पुरुषारथ ॥
यह सुनि अर्जुन धनु कर लीन्ह्यो ❀ सायक वृष्टि अकाशहि कीन्ह्यो॥
शरते रथ रोक्यो दिवि धामहिं ❀ गंधूव उर मान्यो दश बानहिं ॥
मनहिं बिचार चित्ररथ कीन्ह्यो ❀ दुर्योधनहिं डारि तब दीन्ह्यो ॥
पारथ तब इमि सायक साध्यो ❀ भूमि अकाश बाणते बाँध्यो ॥
दुर्योधन शर पर चलि आयो ❀ धर्मराज को दर्शन पायो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० लज्जित ह्वै यहि बिधि कह्यो, अर्जुनराख्योप्रान ।
जो इच्छा सो माँगिये, कहत सुवचन प्रमान ॥

पारथ कही सत्य दृढ़ कीजै ❀ समर परे माँगे वर दीजै ॥
एवमस्तु कुरुपति कहि दीन्ह्यों ❀ लज्जित गमन भवनकोकीन्ह्यों॥
श्रीपति कह आजुइ बर लीजै ❀ अर्जुन को मेरे सँग दीजै ॥
हरि अर्जुन कीन्ह्योंतबगवनहिं ❀ आये दुर्योधन के भवनहिं ॥
कह्यो कृष्ण हम बाहर रहिये ❀ सुनहु किरीटी यह मत कहिये ॥
मुकुट माँगि नृपसों लै आवहु ❀ तब भीषम पहँ आपु सिधावहु॥
तब अर्जुन आयो नृप द्वारे ❀ कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे ॥
दुर्योधन सुनि तुरत बुलायो ❀ अंतःपुर महँ कपिध्वज आयो ॥
आदर करि आसन बैठारे ❀ कहहु बन्धु केहि काम सिधारे ॥
अर्जुन कह कुरुपति के आगे ❀ पावहुँ आजु पूर्व बर माँगे ॥
मुकुट दान माणि भूपति दीजै ❀ अपनो सत्य पालनो कीजै ॥
दीन्ह्यों मुकुट गहरु नहिं लायो ❀ मन गोबिन्द सुनत सुखपायो॥

दो०—मुकुट बाँधि पारथ चले, भीषम के स्थान ।
देखत उठि आदर कियो, दुर्योधन को जान ॥

भीषम कह्यो जानि कुरुराजहिं ❀ आपुगमनकीन्ह्योंकेहिकाजहिं ॥
माँगे महाकाल शर दीजै ❀ निजकर हमपांडवबध कीजै ॥
हँसि भीषम दीन्ह्यों तब बाणहिं ❀ प्रात युद्ध कीन्ह्यों संधानहिं ॥
हर्षवंत ह्वै अर्जुन लयऊ ❀ तेहिअवसर प्रकटत प्रभुभयऊ ॥
कृष्णहिंदेखि भयो छल जान्यो ❀ गंगासुत यहि भाँति बखान्यो॥
हे प्रभु तुम पांडव के स्वारथ ❀ मेरोप्रण किमि कियो अकारथ ॥
भारत में यश नेकु न पायो ❀ नितप्रति तुम पारथहि बचायो ॥
शिव सनकादि अंतनहिंजान्यो ❀ तुम पाण्डवके हाथ बिकान्यो ॥
भक्त हेतु केशव मन भायो ❀ बिनाभक्ति प्रभुके नहिंपायो ॥
कह्यो कृष्ण भीषम के आगे ❀ यश पैहो रण सरस सभागे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-अपनो प्रण मैं टारि कै, तब प्रणकरौं निदान ।
भक्ति विवशलखिप्रकटकह, सबलसिंहचौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलासिंहचौहान भाषाकृते
त्रयादशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

भीषम सुनि जियमें सुख पायो ❀ पारथ धर्मराज पहँ आयो ॥
जिमि चातकमुखस्वाती बरष्यो ❀ बाण देखि पांडव दल हरष्यो ॥
दुर्योधन सुनिकै दुख मानो ❀ प्रातहोत रण कियो पयानो ॥
हर्षित ह्वै पांडव दल साजहिं ❀ भेरि दुन्दुभि मारू बाजहिं ॥
दल चतुरंग साजि कै आयो ❀ युद्ध भूमि में शोभा पायो ॥
प्रथम पेलि दीन्हों गज मत्तहिं ❀ गजरिपु दंति भयोचौदंतहिं ॥
पदचर धाये गांसी दमकै ❀ फेरत फरी खड्ग कर चमकै ॥
चढे तुरंग शेल कर लीन्हों ❀ महा मारु असवारन कीन्हों ॥
मारुत शूल सजोवा टूटहिं ❀ बहते घाव खड्ग शिर फूटहिं ॥
मुरैं न लरैं खेत मों ठाढे ❀ महाशूर सब जिय के गाढे ॥
रथी रथी करिबै रण लागे ❀ चलत न एक एक के आगे ॥
दो०-महारथी रथ हाँकिदै, करहिं युद्ध यहि रूप ।
जोर जोर अरुझै सबै, भिरे भूप सों भूप ॥
सहस लाख कोटिन शर छूट्यो ❀ बाणन बाण बीचहि टूट्यो ॥
यहि विधि युद्ध करैं रण सरसैं ❀ बहु विधिबाण बुन्दसम बरसैं ॥
काढ़हि धनुष क्रोध के रण में ❀ चाहैं शेल हाँक दै क्षण में ॥
रथ ते उतरि गदा लै धावहिं ❀ आगे परहिं सो मारि गिरावहिं ॥
तोमर फरसा कोउ प्रहारहिं ❀ शक्ति शेल मुद्गर कोउ मारहिं ॥
जूझि गिरे भारत रण धामहिं ❀ आनंदित चढ़िचले बिमानहिं ॥
अर्जुन रथ हाँक्यो कंसारी ❀ जोती गहे पिताम्बर धारी ॥
श्याम शरीर कमल दल लोचन ❀ सदा भक्त कर शोच बिमोचन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नँदिघोष रथ आगे आयो ❀ तबभीषमयहि भाँति जनायो ॥
मुकुटबाँधि कीन्हों मोसों छल ❀ आजु जानिबो पारथको बल ॥
जो हरि के अस्त्र गहावों ❀ तो शंतनुसुत जगत कहावों ॥
दो०-धर्मराज कुरुपति सुनो, भीषम भाष्यो बैन ।
आजु गहावों अस्त्र हरि, देखत दूनों सैन ॥
गंगा गर्भ जन्म जो लीन्ह्यों ❀ तो यह प्रण भारथमें कीन्ह्यों ॥
प्रभु की प्रण टारों परतक्षक ❀ आजु करों अपनो प्रण रक्षक ॥
याह विधि बाण बुंदझरि लावों ❀ शोणित नदी अथाह बहावों ॥
कृष्ण हाथ नहिं अस्त्र गहावों ❀ तो मैं बास अधोगति पावों ॥
काठिन बाण शाँरँग गुण जोरौं ❀ शर सागर पांडव दल बोरौं ॥
भीषम यही प्रतिज्ञा ठान्यो ❀ द्वौदलअतिअचरजकरिमान्यो ॥
यह सुनि देव लोक सब आये ❀ कौतुकको बिमान सब छाये ॥
प्रथम कियो है प्रण जगतारण ❀ हम नहिंकरैं धनुष कर धारण ॥
प्रभु पारथको सारथि अहई ❀ भीषम अस्त्र गहावन कहई ॥
यह चरित्र देखत सब मुनिगण ❀ रणमो आजु रहै काको प्रण ॥
दो०-भीषम तब यहि बिधि कह्यो करिहौं युद्ध अनन्त ॥
पारथ रण स्थिर रहो, सारथि श्रीभगवन्त ॥
यह कहि लगे चलावन सायक ❀ दोऊ भटरण महँसब लायक ॥
अर्जुन बाण हाथ ते छूटहिं ❀ मानहुँ वज्र गगन ते टूटहिं ॥
लघु संधान कियो तब पारथ ❀ निज सायक छायोसब भारथ ॥
दशादिशी सब बाणनमय सूझै ❀ निज पर नाहिं न कोऊ बूझै ॥
याहि विधि शर अकाशमें छायो ❀ रविमडल दखन नहिं पायो ॥
देखि युद्ध भीषम रिस बाढ्यो ❀ तीक्षण शर निषंगते काढ्यो ॥
ऐसे सबल बाण गुण जोरे ❀ क्षण महँ अर्जुन के शर तोरे ॥
लाखन अर्ब खर्ब शर कोप्यो ❀ पांडव दल बाणनते तोप्यो ॥
बीर सकल शर छाँह समाने ❀ दृष्टि न परत जात नहिं जाने ॥
क्रुद्धित याहि विध कृत संधानहिं ❀ जलथल सूझ परत सब बानहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-महाघोर संग्राम में, अर्जुन धनु सन्धान।
सबशरकाटेनिमिषमों, तमखण्ड्यो जिमिभान॥

अर्जुन पाणि निशित शर छूटत ❀ भेदि सनाह वपुष महँ फूटत॥
सारथि उर शत सायक मारे ❀ विंशति विशिख केतुध्वज पारे॥
अश्वन तनु याहि विधि शर लागे ❀ थकित भये पग चलत न आगे॥
लक्ष नराच कटक पर डाऱ्यो ❀ तें शर चोट मौलि अनुसाऱ्यो॥
तब भीषम निज तेज सँभाऱ्यो ❀ सहस बाण अर्जुन उरमाऱ्यो॥
कोटि विशिख लाग्यो हनुमानहिं ❀ षष्टि नराच हन्यो भगवानहिं॥
गंगतनय शर अपर सुजोरे ❀ घायल नंदिघोप के घोरे॥
शर अनेक सेना पर प्रेरो ❀ पांडव कटक हत्यो बहुतेरो॥

दो०-सहस एक राजा गिऱ्यो, सेन सुबध्यो अनन्त।
अरुण वर्ण सब देखिये, खेलत मनहु बसन्त॥

भीषम अमित तेज माहि साऱ्यो ❀ रुंडमुंड माहि भारत माऱ्यो॥
महाशूर रण जूझत घायल ❀ मनहुँ नाद मोहे कर शायल॥
याहिबिधिकृत अतिरण भयकारी ❀ अर्जुन सों तब कह्यो मुरारी॥
अब अपनो दल रक्षण कीजै ❀ दृढ ह्वै शर कोदंडहि दीजै॥
सुनि पारथ लीन्हों कर धनु शर ❀ प्रात समय जनु उदयदिवाकर॥
अति क्रुद्धित ह्वै कृत संधानहिं ❀ हृदय ताकि माऱ्यो बहुबानहिं॥
भेदि सनाह अंग में लाग्यो ❀ क्रोध अनल उर अंतर जाग्यो॥
भीषमावीशिखानीशितआति छूट्यो ❀ अर्जुन वपुष भेदिकै फूट्यो॥
घायल भयो, सह्यो सब बानहिं ❀ ब्रह्म अस्त्र तब कृत संधानहिं॥
बाण उदोत तेज माहि छायो ❀ देवलोक लखिअतिभय पायो॥

दो०-पारथ अतिशय बल कियो, कृष्ण अस्त्र सन्धान।
चलत तेज अति उदित कृत, मनहुँ दूसरो भान॥

कौरवदल अति देखि सकान्यो ❀ भीषम ब्रह्म अस्त्र संधान्यो॥
अस्त्र अस्त्र सों भयो निवारण ❀ तब लाग्यो तीक्षण शर मारण॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अयुत बाण हनुमंताहि मान्यो ❀ गरुड़ध्वज तनु सहस प्रहान्यो ॥
अर्जुन अंग बाण बहु मान्यो ❀ शरते तनु झाँझर करि डान्यो ॥
साहित बाजि स्यंदन करि घायल ❀ थकितभयेपदचलत न पायल॥
भीषम बाण वृष्टि अति लायो ❀ नंदिघोष रथ शर ते छायो ॥
तीक्षण बाण श्याम उर मान्यो ❀ पीत वसन रँग अरुण सँवान्यो॥
क्रुद्धित जलज नयन रतनारे ❀ चक्रपाणि कर चक्र सँवारे ॥
रथते उतरि चले नारायन ❀ धाये आप उघारे पाँयन ॥
सजल श्याम घन अंग सुहायो ❀ मर्कतमणि पटतर नहिं पायो॥
मकराकृत कुण्डल मन मोहै ❀ डोलत झलक कपोलन सोहै ॥
दो०-गहे चक्रधर चक्र कर, चकृत चाहत खेत ।
चंचल धावनि चरण की, भीषम के प्रण हेत ॥
करमें चक्र सुदर्शन राजत ❀ कोटिभानुद्युतिसारिसबिराजत ॥
श्रम जल रुधिर चलतयकसंगहि ❀ शोभित अंग अनूपम रंगहि ॥
विश्वम्भर क्रुद्धित ह्वै धायो ❀ भूमि हली फण शेष उठायो ॥
यहिविधिप्रभुआतुरकिय गवनहिं ❀ फहरतपीतवस्त्र लगिपवनहिं ॥
गिन्यो छूटि अम्बर रण धरणी ❀ कविपैछबिकछुजातन बरणी ॥
कौरव दल देखत सब डरप्यो ❀ मानहुँ बाज विहँगपरफरक्यो ॥
तब अर्जन छाँड्यो निज स्यदंन ❀ धाइ जाइ पकन्यो जगवंदन ॥
अहो नाथ स्थिर ह्वै रहिये ❀ आपु अस्त्र केहि कारण गहिये ॥
मोते अघ कह भो जगतारण ❀ करगहि चक्र चल्यो तुममारण ॥
यहई अयश जगतमें पायो ❀ प्रभु कर भीषभ अस्त्र गहायो ॥
दो०-प्रभु अपनो प्रण टारिकै, कियो मोर अपमान ।
भीषम प्रण स्वारथ कियो, भक्तवश्यभगवान ॥
चरण कमल गहि पारथ फेन्यो ❀ देखि पृष्ट गंगासुत टेन्यो ॥
साधु साधु श्रीपाति बनवारी ❀ सदा भक्त प्रण रक्षाकारी ॥
धनुष डारि कर कियो प्रणामहिं ❀ प्रस्तुतिकरनलगे घनश्यामहिं ॥
तब भीषम यहिविधिते भाख्यो ❀ दीनबन्धु मेरो प्रण राख्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विप्र सुदामा दारिद भंजन ❀ भक्तवश्य गोपिन मनरंजन ॥
गणिकाव्याध गीधगजतारण ❀ गोरक्षक गोवर्द्धन धारण ॥
ध्रुवको अचल कियो परतक्षक ❀ द्रुपदसुता की लज्जा रक्षक ॥
महाकष्ट प्रह्लाद उबाऱ्यो ❀ निकसि खम्भ दनुजेशहि माऱ्यो॥
रावण कुल समेत बध कीन्ह्यो ❀ लंकाराज्य विभीषण दीन्ह्यो ॥
शाप शिला गौतम की नारी ❀ परसत चरण अहिल्या तारी ॥
दो० ब्रह्मा शंकर देव मुनि, करत चरण निज ध्यान ।
सबलसिंह चौहान कह, भीषम कियो बखान ॥

इति श्रीमहाभारते भीषमपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्दशोऽध्यायः ॥ ९ ॥

जय वृन्दावन विपिन बिहारी ❀ श्रीपति श्रीधर श्रीबनवारी ॥
चढ़े आई हरि पारथ स्यंदन ❀ जोती गहे आपु जगवंदन ॥
अर्जुन कोपि धनुष कर लीन्ह्यो ❀ इन्द्र अस्त्र संधानहिं कीन्ह्यो ॥
कौरवदल सन्मुख जो पायो ❀ क्षणमें अर्जुन मारि गिरायो ॥
महा युद्ध कीन्ह्यो नर रूपहि ❀ माऱ्यो समर पंचशत भूपहि ॥
सोहत मुकुट अति मणि पूरी ❀ लोटत धरणि शीश ते भूरी ॥
लागत उर अर्जुन के बानहिं ❀ कुरुदल रण मरि खसो निदानहिं ॥
गंगा सुत धनु क्रुधित लयऊ ❀ गुड़ाकेश पर शर झरि कियऊ ॥
याहि बिधि लगेहननशस्तीक्षण ❀ पांडवदल सहसन गिरे महिरण ॥
दशसहस्त्र रथ भीष्म निखंड्यो ❀ भवन चलत शंखध्वनि मंड्यो ॥
दो० कुरु पांडव फिरि कै चले, आये निज निज धाम ।
धर्मराज बन्धुन सहित, संग लिये घनश्याम ॥
भोजन को सबही मन लायो ❀ द्रुपदसुता यहि भाँति सुनायो ॥
धर्मराज दुर्योधन भूपहि ❀ आजु युद्ध कीन्ह्यो कहि रुपहि ॥
तब पारथ यहिभाँति बखानहिं ❀ हरि मेरो कीन्हयो अपमानहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रण में भीषम को प्रण रह्यो ❀ दीनबन्धु रण अस्त्रहि गह्यो ॥
द्रुपदसुता यंहि भाँति बखान्यो ❀ पारथ तुम यह भेद न जान्यो ॥
सदा भक्त की रक्षा कारण ❀ ब्रह्मरुप कीन्ह्यो प्रभु धारण ॥
शिव सनकादिक अंत न पायो ❀ शबरी के जूँठे फल खायो ॥
महिमा अगम अगोचर मोहन ❀ डोलत सदा भक्त के गोहन ॥
बालि राजा हनुमान सयाने ❀ चरणकमल मन मधुप लुभाने ॥
कह्यो द्रौपदी सुनिये पारथ ❀ भीषम जन्म भक्तिमय स्वारथ ॥

दो० धन्य धन्य ते साधु जन, भजत साँवरे रंग ।
सुख दुख सम्पति विपति में, होत नहीं चितभंग ॥

सुनि माधव अतिशय सुखपायो ❀ करि भोजन शयनहिंमनलायो॥
होत प्रभात सजैं द्वौ अनी ❀ बजत दमाम भई ध्वनि घनी ॥
वीर सकल रण धरणिहि आये ❀ बँधे अस्त्र कर धनु शर लाये ॥
सिंहनाद करि हाँक सुनाये ❀ महासूर सन्मुख ह्वै आये ॥
लैकर धनु शर कृत संधानहिं ❀ क्रुद्धित लगे पँवारन बानहिं ॥
कुंजर पेलि महावत दीन्ह्यो ❀ आगे परे ताहि यम लीन्ह्यो ॥
महावीर सब विरद सुबाँधे ❀ अरुझे ठाँव ठाँव रण काँधे ॥
दल चतुरंग करत रण घोरहि ❀ मंडे समर जोर सो जोरहि ॥
तेज तुरंग नकुल तेहि राज्यो ❀ अति भयदायकसंगर साज्यो ॥
महारथी बहु शर हत करहीं ❀ सहस सहस भटरणमाहिपरहीं ॥
भीषम पर अर्जुन रण साजी ❀ हाँक देत हरि हाँकत बाजी ॥
जोती गहे पतित के पावन ❀ वर्षत शर मानहु जल सावन ॥

दो०—पारथ कर कोदण्डगहि, छायो विशिख अपार ।
मत्तदन्ति रथ हय गिरे, पदचर विविध प्रकार ॥

तब भीषम निज कर धनु लायो ❀ अतिशय सरिस नराच चलायो॥
तीक्षण बाण प्रहारण करई ❀ पांडव दल बहु भट सँहरई ॥
भीषम उर निज तेज सुधान्यो ❀ सहस नरेश युद्ध महि मान्यो ॥
वीर सबै लागे शर मारन ❀ तब आये कोता हथियारन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शूल गदा मुद्गरन प्रहारहिं ❀ सन्मुख आय खड्ग शिर झारहिं ॥
अभिरहिं सुभट कटारिन मारहिं ❀ पकरि केश रण चपरि पछारहिं॥
द्रोण कर्ण कुरुपति के साथहिं ❀ यहि विधिलरैं अस्त्रगहिहाथहिं ॥
इतते तबहिं बृकोदर धायो ❀ गदा घाव बहु मारि गिरायो ॥
बहुतक मींजि पाँव ते टान्यो ❀ बहुतक गहि अवनी परडान्यो ॥
अरु बहु स्यदन चूरण कीन्हेउ ❀ हय गजफेंकिव्योमपथ दीन्हेउ ॥

दो०—घोर युद्ध यहि विधि कियो, भीम भयंकर रूप ।
सहित सेन रण में बधे, प्रबल तीनि शत भूप ॥

नंदिघोष हाँकत जगवन्दन ❀ अर्जुन कीन्हेउ सैन निकंदन ॥
तीक्षण बाण क्रुद्ध कै मान्यो ❀ तीनि सहस्र नृपति संहान्यो ॥
मरि भट पन्यो धरणि सब छायो ❀ रण में रुधिरनदी बहिआयो ॥
शोणित नदी जाति नहिं वरणी ❀ मन अथाह हमका बैतरणी ॥
भीमसेन गजराज सँहारे ❀ परे समर सब भये करारे ॥
धवल छत्र चमकत हैं कैसे ❀ बाढ़त नदी फेन जल जैसे ॥
शक्ती झलक मीन सम चमकैं ❀ कठिन ढाल कच्छप समदमकैं ॥
केश स्यवार सरिस अरुझाने ❀ मृतक तुरंग ग्राह सम जाने ॥
कटे भुशुण्डि सरिस छबि पाई ❀ मनहुँ भूमि जल में उतराई ॥
रुधिर नदी यहि रूप भयंकर ❀ नाचत महा मगन ह्वै शंकर ॥

दो०-भैरव भूत पिचाश गण, योगिनि मंगल चार ।
अंत्र लपेटहिं कंठमें, सरिस बिराजत हार ॥

कोऊ गजमुक्ता लै आवहिं ❀ एक एक के श्रुति पहिरावहिं ॥
नृत्यत भूत पिशाच सयाने ❀ रुधिर माँस सब खाइ अघाने ॥
जम्बुक गण आनन्दित धावहिं ❀ माँस खाइ मन में सचुपावहिं ॥
गगन उड़हिं पक्षीगण जेते ❀ रण में भये तृप्त मन तेते ॥
धायल मग्न सुभये रुधिर सरि ❀ उठे सँभरि पुनिशोकसिंधु परि ॥
शूरन शीश कुंडि लै आवहिं ❀ पीवहिं रुधिर योगिनी गावहिं ॥
उठिकबन्ध धावहिं पुनि माथहिं ❀ मारन आव खड्ग गहि हाथहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भीषम सों अर्जुन बल भारी ❀ कीन्हेउ अति भारत भयकारी॥
अरुण बदन देखत दिन भूल्यउ ❀ जिमि वसंत किंशुकतरु फूल्यउ॥
भूत पिचाश सुब्याह बिचारहिं ❀ धरहिं टोप शिर मौर सँवारहिं॥
दो०-सबलसिंह चौहान कह, अर्जुन कृत रण खेत।
गावत चौंसठि योगिनी, नाचत हैं सब प्रेत॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
पंचदशोऽध्यायः॥ १५॥

गोधन मंडल मंडप छायो ❀ जंबुक सकल बराती आयो॥
यहि विधि करतकोलाहल भारी ❀ भैरव सहित देहिं कर तारी॥
तब पारथ संधान्यउ धनु शर ❀ गंगासुत मारेउ उर शत शर॥
अरुअतिनिशितअमितशरडाट्यो ❀ रथको ध्वजा पताका काट्यो॥
तब भीषम दृढ़ कर धृत धनु शर ❀ होन लग्यो अति युद्ध परस्पर॥
दश शायक अर्जुन तनु साध्यो ❀ सप्तविशिख यदुपति अवराध्यो॥
अष्ट नराच अपर गुण नाध्यो ❀ नादिघोष हय रथ छत साध्यो॥
लाग्यउ षष्टि विशिख हनुमतहि ❀ दश सहस्र रथ तब हतवंतहि॥
दै जय शंख चल्यो गंगासुत ❀ पांडव दल सब चले भवयउत॥
दुर्योधन सब सेना लीन्हें ❀ अपने भवन गवन तब कीन्हें॥
दो०-धर्मराज फिरिकै चल्यो, आगे कमलाकंत
सबलसिंह चौहान कह, महिमा अगम अनंत॥

करि विश्राम अस्त्र सब खोले ❀ नृपति युधिष्ठिर माधव बोले॥
चले सकल भोजनके कामहिं ❀ बैठे द्रुपदसुता के धामहिं॥
धर्मराज यह बचन सुनाये ❀ कंसनिकंदन प्रभुहि जनाये॥
नव दिन भयो महाबल भारथ ❀ भीषम खेत सरिस पुरुषारथ॥
दश सहस्र रथ नितक्रम मारहिं ❀ अरु अनेक सेना सँहारहिं॥
कह्यो कृष्ण अब कीजै गवना ❀ चलि गये भीषम के भवना॥
हम तुम अरु पारथ सँग लीजै ❀ गंगासुत के दरशन कीजै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लगे असी शर कपि के अंगन ❀ सत्तरि शर मान्यो यदुनंदन ॥
श्याम अंगशोणितछबि छाजत ❀ पीतवर्ण रँग अरुण विराजत ॥
जोती गह्यो धन्य अति चापल ❀ वर्षतशरश्रावण जिमिघनजल ॥
याहि विधि ते शर वर्षा कियो ❀ शरके छाँह भानु छिप गयो ॥
नंदिघोष रथ माधव सारथ ❀ बाणवृष्टि ते छायो भारत ॥
भीषम यहि प्रकार बल कीन्ह्यों ❀ तबअर्जुन धनुकरदृढ़ लीन्ह्यों ॥
श्रीहरि कह्यो सुनहु हो पारथ ❀ सहि न जाइ भीषमको भारथ ॥

दो०-हाँके पग नहिं चलत हय, शर छाये सब अंग ।
भीषम के सँग्राम ते, रणमें अचल तुरँग ॥

अर्जुनाजिय विस्मयकरि मान्यो ❀ महा क्रुद्धह्वै निजधनु तान्यो ॥
देव अस्त्र पारथ तनु डाट्यो ❀ गंगासुत बीचहि ते काट्यो ॥
अपरविशिखतीक्षण कर धान्यो ❀ ते शर पारथ के शिर मान्यो ॥
अर्जुन सहित भये घायल हरि ❀ तुरँगनकेनचलतलघुगतिकरि ॥
बर्षत बाण वर्णि को कहई ❀ पांडव दललक्षण गति लहई ॥
श्रीपति कह्यो सुनहु हो पारथ ❀ रचहु उपाय तजो पुरुषारथ ॥
यह कहिकै हरि शंख बजायो ❀ सुनिकैनाम शिखण्डी आयो ॥
अर्जुनसों हरि कहन सु लागे ❀ रणमें करहु शिखण्डी आगे ॥
पीछे ह्वै शारँग कर धरिये ❀ याहि विधिते भीषमबध करिये ॥
अर्जुन कह्यो सुनहु यदुकेतु ❀ कपटयुद्ध कीजिये केहिहेतू ॥
जबहिं शिखण्डी आगे आयो ❀ भीषम धनुष डारि शिर नायो ॥

दो०-बिना अस्त्र लज्जित बदन, हेरत नीचे नैन ।
स्थिर ह्वै रथ पर रह्यो, कह्यो, कृष्ण सों बैन ॥

दीनबंधु पांडव हित कारण ❀ कपटयुद्ध करि चाहहुमारण ॥
अर्जुन किये शिखण्डी ओटहि ❀ भीषमउरकीन्ह्यों शर चोटहि ॥
पारथ बाण कुलिश सम छूटहिं ❀ कवच भेदि भीषम तनु फूटहिं ॥
गंगासुत याहि विधिते कह्यो ❀ पै शर नहीं शिखण्डी गह्यो ॥
शर मारत अर्जुन मम हिये ❀ यह बिचारकीन्ह्यों चित दिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

घायल भे काँपत तनु कैसे ❀ शिंशिर कालमें गोधन जैसे ॥
तब पारथ कृत पुनि सँधानहिं ❀ हृदयताकिकरिमान्यो बानहिं ॥
चरणकमल मनकीन्ह्योंध्यानहिं ❀ रसना रटन कृष्णको नामहिं ॥
रोम रोम यहि विधि शर मारा ❀ बहै प्रवाह रुधिर की धारा ॥
तीक्षण अपरविशिख कर धन्यो ❀ ते शर कठिन मौलिपर पन्ये॥
दो०-भीषमको बल थकितभो, मारत अर्जुन तीर ।
तिल भरि देह न देखिये, झाँक्षर भयो शरीर ॥
रथते गिरे गंगसुत धरणी ❀ जगमहँ रहीसदा यह करणी ॥
देखत सब कौरवगण धाये ❀ हा हा शब्दाघात सुनाये ॥
द्रोण कर्ण दुश्शासन अत्री ❀ धनुष डारि रोवहिं सब क्षत्री ॥
करुणा करत कहत यह बैनहिं ❀ अहो पितामह राखहु सैनहिं ॥
कुरुपतितबछाँड्यो निज स्यंदन ❀ आये जहँ गंगा के नंदन ॥
सेनापति ह्वै मुकुट बधायो ❀ आपु कृष्ण कर अस्त्र गहायो ॥
जीति स्वयम्बर कन्या लीन्ह्यों ❀ दोऊ बन्धु ब्याह करि दीन्ह्यों ॥
परशुराम ते युद्ध बिचान्यो ❀ उठिकै बाण धनुषकर धान्ये ॥
रोदन करि यहि भाँति बखानत ❀ विधि चरित्रकोऊनहिं जानत ॥
मोरे जिय यह बड़ो अँदेशो ❀ पांडव सहित जीतिहौं केशो ॥
तुम पायो क्षत्री के धर्महिं ❀ यह सब दोष हमारे कर्महि ॥
दो०-भीषम घेरे खेतमो, रोवत सबै नरेश ।
सबलसिंह चौहान कह, चल्यो आपु हृषिकेश ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते

सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

धर्मराज माधव सँग लीन्हों ❀ रथते उतारिगमन तब कीन्हों ॥
अर्जुन और भीम सब राजा ❀ चले पितामह देखन काजा ॥
यहि अवसर गंगासुत बो सुन्दर अधरलमेयनाहर डोले॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पुँछहिं जाइ मृत्युको कारण ❀ यहि बिधि कहत भये जगतारण॥
अर्जुन सहित चले तब केशौ ❀ निशाकाल उठि चले नरेशौ॥
आये तुरत गंगसुत द्वारहि ❀ धाय कह्यो यहिबिधिप्रतिहारहि॥
दो० गंगासुत चित दै सुनौ, कह्यो जोरि युग हाथ।
धर्मराज द्वारे खड़े, हरि अर्जुन हैं साथ॥
सुनि भीषम आतुर ह्वै धाये ❀ कृष्ण दरश आनन्दित पाये॥
धर्मराज अभिवन्दन कीन्हा ❀ हाँसि भीषम अंकम भरि लीन्हा॥
होय पांडुसुत कुशल तुम्हारो ❀ जीतहु युद्ध शत्रु संहारो॥
पुलक सहित हरिके पद परश्यो ❀ बदन चन्द्र आनन्दित दरश्यो॥
आदर करि सन्मान बैठाऱ्यो ❀ शीतल जलसों चरण पखाऱ्यो॥
भीषम कह्यो युधिष्ठिर राजहिं ❀ आपुगमन कीन्ह्यो किहिकाजहिं॥
धर्मराज यहि भाँति जनायो ❀ बन बन फिरत महादुख पायो॥
कै बसीठ यदुनाथ पठायो ❀ पाँच ग्राम मांगे नहिं पायो॥
तब हरि रच्यो युद्ध यह भारत ❀ नव दिन किये आपु पुरुषारथ॥
दशसहस्त्र रथ नितक्रम माऱ्यो ❀ सेन अनेक समर संहाऱ्यो॥
दो० आप युद्ध यहि बिधि करौ, तौ हम छाँड़ि आस।
पंचबंधु सँग द्रौपदी, फिरि जैबो बनवास॥
सुनि भीषम यहि भाँति बखान्यो ❀ धर्मराज यह बात न जान्यो॥
जाके सदा सहायक हरि हैं ❀ सो रणमों निश्चय जय करिहैं॥
जहाँ धर्म तहँ कृष्ण जु आवैं ❀ जहाँ कृष्ण तहई जय पावैं॥
यह सुनि कह पांडव दल केतू ❀ आपु युद्ध कीजै केहि हेतू॥
जो हमको जय दीन्हो चहिय ❀ अपनी मृत्यु आपुते कहिये॥
तव गंगासुत हाँसिकै कहई ❀ जब लगि अस्त्र गहे हमरहइ॥
इन्द्र आदि जो रणमों आवहिं ❀ मुहिंते जयतिपत्रनहिं पावहिं॥
तुमते कहौं सुनो यह कारण ❀ सन्मुख अर्जुन सकै न मारण॥
होत प्रात यहि बिधिते लरिये ❀ आगे आनि शिखंडी करिये॥
द्रुपदकुमार अग्र जब ऐहहिं ❀ धनुष डारि हम बदन दुरैहहिं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० कन्या ते भयो पुरुष तनु, जानत हैं सब लोग ।
ताते बदन न देखिये, प्रथम तज्यो तिय भोग ॥
सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये ❀ जब हम अस्त्र डारिकै रहिये ॥
और वीर के शर नहिं फूटहिं ❀ परसत अंग समर शर टूटहिं ॥
अर्जुन किये शिखंडी ओटहि ❀ मेरे उर करिहैं शर चोटहिं ॥
यहि बिधिते भीषम समुझायो ❀ सुनिकै धर्मराज सुख पायो ॥
कीन प्रणाम चलन जब चह्यो ❀ तब भीषम माधव सन कह्यो ॥
दीनबंधु पारथ के स्वारथ ❀ मेरो वल तुम करत अकारथ ॥
हे प्रभु तीनि लोक के स्वामी ❀ सब जीवन के अंतर्यामी ॥
अर्जुन धन्य जगत यश छायो ❀ हरिसे सखा सहजही पायो ॥
यह कहिकै तब कीन्ह्यो गवना ❀ धर्मराज आये निज भवना ॥
भीषम कह्यो मृत्युको कारण ❀ सुनिहर्षित भयोअधमउधारण ॥
दो० धर्मराज पारथ सहित, हर्षित पंकज नैन ।
अमृत भोजन सरिसकरि,सबमिलिकीन्ह्योंशैन ॥
प्रात होत कीन्हें असवारी ❀ साजे सेन महाबल भारी ॥
दोऊ दल अति क्रुद्धित साजहिं ❀ शब्द अघात दमामे बाजहिं ॥
ठाक ठोक अपनी गाति बोलहिं ❀ मारत हाँक पदाति सुडोलहिं ॥
कोटिन गज साजे मतवारे ❀ बाजत घंटा चमर सँवारे ॥
चले सुभट सब अस्त्रन धारे ❀ क्रुधित भये सैन्य ते न्यारे ॥
रणमों करहि शत्र को अंतहि ❀ मारहिं धाय बेगि गजदंतहि ॥
सारथि रथ जोते हय चोखे ❀ इन्द्र बिमान परत हैं धोखे ॥
ध्वजा तुरंग सहस फहराने ❀ चलत तेज चाके घहराने ॥
तेज तुरंग बीर सब चढ्यो ❀ मानहु बिधि अपने कर गढ्यो ॥
पाँवर लगे सरिस छबि राजत ❀ तबलअपरगजगाह बिराजत ॥
पदचर करत कोलहाल धाये ❀ खड्ग हस्त लै शोभा पाये ॥
समर भूमि केहरि सम गाजे ❀ युद्धभूमि में सरिस बिराजे ॥
दो० कुरु पांडव चतुरंग दल, जुरे आनि कुरुखेत ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्षत्रिय गण सब हाँकदै, शारँग गह्यो सचेत ॥
सेन गँभीर कहत नहिं आवै ❀ कहै जो कवि सो अपयश पावै ॥
क्रुद्धित वीर लगे शर वर्षन ❀ शतते सहस सहसते कर्षन ॥
कुंजर पेलि महावत दीन्ह्यों ❀ महा मारु मयमंतहि कीन्ह्यों ॥
यम ऐसे क्रोधित गज धावहिं ❀ आगे परहिं सो मारि गिरावहिं ॥
महारथी सब मारहिं अत्री ❀ ध्वजा पताका काटहिं क्षत्री ॥
वर्षत बाण कहत को बैनहिं ❀ लक्षण वीर समर कृत सैनहिं ॥
दोउ दल कीन्ह्यों रण घोराहि ❀ पर भीम दुश्शासन जोराहि ॥
विंशति शर दुश्शासन लीन्ह्यों ❀ भीम अंग शर भेदन कीन्ह्यों ॥
क्रुद्धित भयो पवन को नंदन ❀ धायो उतरि छाँड़ि के स्यंदन ॥
लै कर गदा कोपि करि धायो ❀ हाँक मारि दुश्शासन आयो ॥
दो०-दोऊ भट यहि विधि भिर्‌यो, भारत भूमि प्रमान ।
कौतुक देखत देव गण, हार्षित चढ़े विमान ॥
मारत गदा कोप करि तनमें ❀ लागत घाव शब्द जिमि घनमें ॥
शोभित रुधिर अंग में कैसे ❀ ऋतुवसंत किंशुक तरु जैसे ॥
भीमसेन तब तेज सँभार्‌यो ❀ हाँकि गदाउर मध्य सु मार्‌यो ॥
दुश्शासन तनु मोह जनायो ❀ अपने रथहिं वृकोदर आयो ॥
देखि द्रोण गुरु शर संधान्यो ❀ भीम अंक सायत ठहरान्यो ॥
तीक्षण बाण षष्टि गुण जोरे ❀ घायल किये सारथी घोरे ॥
पंच बाण ते तोर्‌यो स्यन्दन ❀ आगे भयो सुभद्रानन्दन ॥
अभिमन्यु हाथ तेज शर छूट्यो ❀ भेदि सनाह अंग में फूट्यो ॥
एक बार सारथि शिर खंड्यो ❀ चारिविंशिख हयहतिरण मंड्यो ॥
कीन्ह्यो विरथ द्रोण से क्षत्री ❀ अर्जुन पुत्र पहा बल अत्री ॥
दो०द्रोण अपर स्यंदन चढ़्यो, लीन्ह्यों चाप सँभारि ।
सबलसिंह चौहान कह, भई भयानक मारि ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वाणे सबलसिंहचौहानभाषाकृते
षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भीषम देव कहन यह लागे ❀ सारथि रथहि चलावहु आगे ॥
अर्जुन वीर कृष्ण से सारथ ❀ तिनते रण कीजै पुरुषारथ ॥
यह कहिकै हाँक्यो रथ जबहीं ❀ अशकुन भयेबहुतविध तबहीं ॥
बोलत काक भयंकर बानी ❀ बिना मेघ वर्षत है पानी ॥
गीद्ध निकर कर ऊपर छायो ❀ जंबुक अपनो भाव दिखायो ॥
उगिलहिं खड्ग छाँड़िकै खापहिं ❀ रथके खम्भ पवन बिनकाँपहिं ॥
यह अशकुन जब देख्यो नैनहिं ❀ कुरुदल कहन लगे सब बैनहिं ॥
नव दिन युद्ध भयानक पेख्यो ❀ याहि विधिते कबहुँ नहिंदेख्यो ॥
सारथि कहै गंगसुत आगे ❀ अशकुनहोन बहुत विधिलागे ॥
भीषम बिहँसि कही यह बानी ❀ अहो मूढ़ यह बात न जानी ॥

दो०—पारथके सारथि अहैं, निरखहु श्रीभगवन्त ।
अशकुनकछुनाहिंकरिसकैं, सन्मुख कमला कंत ॥

यह कहि भीषम रथहि चलायो ❀ डोली धरणि शेष शिर नायो ॥
सिंहनाद करि हाँक सुनायो ❀ मानहुँ जलद घटा घहरायो ॥
क्रोधित ह्वै शारँग कर गह्यो ❀ नामित बचन नरहरिते कह्यो ॥
सावधान हरि जोती गहिये ❀ पारथ को रक्षा महँ रहिये ॥
यह कहि बाण सहस्र प्रहान्यो ❀ अर्जुनके उर मध्य सु मान्यो ॥
दश शर श्याम अंग हत कीन्ह्यों ❀ विंशति शर हनुमंतहि दीन्ह्यों ॥
अपर चारि शर धनु गुण दृढ़ किय ❀ घायल नंदिघोष तुरंगन हिय ॥
तब अर्जुन लीन्ह्यों कर धनुषशर ❀ युद्ध परस्पर होत भयंकर ॥
दोऊ भट अरझे रण धरणी ❀ क्रुद्धित शरछाँड़त अतिकरणी ॥

दो०-यहि विधिते अर्जुन जुटे, गंगतनय के युद्ध ।
जल थल भारत भूमि नभ, शर पूरित कृत युद्ध ॥

बाण तजत अतिशय यहि करणी ❀ जिमिजलधरजलवृष्टि सुवरणी ॥
सहस बाण पारथ गुण मोखे ❀ तुरँगन हरि हाँकत अतिचोखे ॥
तीक्षण बाण पांडुसुत डान्यो ❀ भीषम अंतारक्षि हाति पान्यो ॥
अपर षष्टि शर कार्मुक धान्यो ❀ सो सब अश्वनके तनु मान्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शरशय्या सब अंग विराजै ❀ लटकत शीश भूमिपर राजै ॥
कुरुपति कहो हमारे कीजै ❀ उत्तम भांति शिरहनो दीजै ॥
कोमल तूल पटम्बर भऱ्यऊ ❀ आनि तुरत शिरहाने धऱ्यऊ ॥
तब भीषम भाष्यो यह बानी ❀ दुर्योधन तुम बात न जानी ॥
अर्जुन समय विचारहु मन में ❀ उचित शिरहनो दीजै रन में ॥
सुनि अर्जुन साँरगकरि लीन्ह्यों ❀ तीन बाण संधारण कीन्ह्यों ॥
सन्मुख ह्वै ललाट महँ मार्‌यो ❀ भेदिशीश शरनिकरिसुपार्‌यो ॥
दो०—फोंक बेधि शर पार ह्वै, गड्यो भूमि में बान ।
यहि बिधि शरशय्या दियो भारत के परधान ॥
धर्मराज बहु रोदन कीन्हों ❀ भीषम सों कछु कहवे लीन्हों ॥
केवल दुर्योधन के पापहि ❀ परशुराम दीन्हों रण श्रापहि ॥
ताते भयो मृत्यु को कारण ❀ सन्मुख दरश करहुजगतारण ॥
हँसि भीषम यहि भांति बखानी ❀ साधु नरेश परम सज्ञानी ॥
दक्षिणायन रवि घातक कहिये ❀ ताते शर शय्या मों रहिये ॥
उत्तरायण रवि होइहैं जबहीं ❀ करिहौं देह त्याग निजतबहीं ॥
तब लगि क्षत्रिनकोबल पेखहिं ❀ भारत युद्ध नयननिजदेखहिं ॥
दुर्योधन अरु धर्म नरेशहिं ❀ भीषम कछु भाष्यो उपदेशहिं ॥
अजहुँ कीजिये कहा हमारो ❀ कुरु पांडव मिलिप्रीतिविचारो ॥
बांटि राज्य लीजै दोउ भाई ❀ वसुधा भोग करहु सुख पाई ॥
दो०-विग्रह कुल को अन्त है, अजहुँ कीजिये प्रीति ।
जहाँ धर्म तहँ कृष्ण हैं जहाँ कृष्ण तहँ जीति ॥
जाके सखा आपु जगतारण ❀ तासों युद्ध करहु केहि कारण ॥
सुनिकै दुर्योधन यह कह्यो ❀ यह प्रण मैं अपने मनगह्यो ॥
सुई अग्र महि देव न औरहिं ❀ करौं युद्ध भारत रण ठौरहिं ॥
यह सुनिके भीषम यह कही ❀ हरि की शरण जाइये सही ॥
जो रण को कुरुपति मनलावहु ❀ कर्ण वीर शिर मुकुट बँधावहु ॥
द्रोण कर्ण सेना आधिकारी ❀ अर्जुन के समान धनुधारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पारथ नहिं जीतहिं अपने बल ❀ जोनहिंकृष्ण करहिरणमें छल ॥
जहँ भीषम शरशय्या लीन्हों ❀ तंबू एक खड़ो कर दीन्हों ॥
गंगासुत कीन्हों जब गवनहिं ❀ धर्मराज आये तब भवनहिं ॥
दो०-पांडबदल आनन्द मन, जीति चले मैदान ।
अर्जुन के रथ सारथी, सुन्दर श्रीभगवान ॥
धेनु सहस्र दिये जो दानहिं ❀ जो फलसबतीरथअस्नानहिं ॥
जो फल होई साधुके दरशे ❀ जो फल सम्भुनाथ के परशे ॥
जो फल ब्रत एकादाशी कीन्हें ❀ जो फल होई भूमि के दीन्हें ॥
जो फल रण में प्राण गवाँये ❀ जो फल होई ब्रह्म के ध्याये ॥
जो फल कोटिन विप्र जिवाये ❀ सो फल भारत सुने सुनाये ॥
व्यासदेव भारत के कर्त्ता ❀ बाढै पुण्य पाप के हर्त्ता ॥
दो०-रामकृष्ण गोविन्द हरि, कीजै सदा बखान ।
भाषा भीषमपर्व कह, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
भीष्मार्जुनयुद्धवर्णनोमाष्टाऽदशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

॥ इति भीष्मपर्व समाप्तम् ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

॥ द्रोणपर्व ॥ ७ ॥

श्री गुरु चरण दंडवत करिये ❀ जोहि प्रसाद भवसागर तरिये ॥
बन्दौं राम चरण रघुनन्दन ❀ महावीर दशकन्ध निकन्दन ॥
दीरघ बाहु कमलदल लोचन ❀ गणिका ब्याध अहल्यामोचन॥
व्यासदेव कलियुग अघ हरता ❀ चारि वेद श्रीभारत करता ॥
श्रोता जनमेजय गुणसागर ❀ महावीर कुरुवंश उजागर ॥
वैशम्पायन ऋषिवर ज्ञानी ❀ वक्ता महा सुधारस बानी ॥
सत्रह शत सत्ताइस जाने ❀ गनि संवत यहि भाँति बखाने ॥
पुनि बुधवार घरी शुभ जाने ❀ जादिन लँका राम पयाने ॥
शुक्ल पक्ष आश्विन को मासा ❀ दशमी तीथि करि ग्रंथ प्रकासा ॥
उत्तम नगर सुरचना छाजा ❀ भूपति मित्रसेन तहँ राजा ॥
दो० रघुपति चरण मनाइकै, व्यासदेव धरि ध्यान ।
द्रोणपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥
जब भीषम शरशय्या लीन्हेउ ❀ दुर्योधन मन बहु दुख कीन्हेउ ॥
अब काको सेनापति कीजै ❀ जाके बल भारत करि लीजै ॥
कही कर्ण राजा सुनि लीजै ❀ जो मो कहँ सेनापति कीजै ॥
अर्जुन भीम खेत महँ मारौं ❀ सेना सहित न एक उबारौं ॥
सो सुनि द्रोणपुत्र मन डोला ❀ नृपसों क्रोधवन्त ह्वै बोला ॥
सूर्यपुत्र सेनापति करिहौ ❀ ताके बल पांडव सों लरिहौ ॥
मोरे शिर जो मुकुट बँधैये ❀ अबहीं जयतिपत्र नृप पैये ॥
सो सुनि कर्ण क्रोधयुत भयऊ ❀ काम्पित अधर कहनकछुलयऊ॥
क्षण महँ तोकहँ सकौं सँहारण ❀ हौ गुरुपुत्र सहौं तेहि कारण ॥
यह सुनि नयन अरुणह्वै आयउ ❀ लैकर खड्ग कहन मन लायउ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-अर्ध रथी भीषम गनो, कुल हीनो जग जान ।
सेनापति तोकहं किये, क्षत्रिन को अपमान ॥

क्रोधित कर्ण खड्ग लै धाये ❀ पकरि बांह राजा समुझाये ॥
अहो मित्र अब समय विचारौ ❀ तजिकै कलह शत्रु सँहारौ ॥
सब मिलि यह मंत्र ठहरैये ❀ कहौ जाहितेहिमुकुट बँधैये ॥
कह्यो कर्ण राजा सुनि लीजै ❀ सेनापति गुरू द्रोणहि कीजै ॥
महारथी अरु अस्त्रहि जानत ❀ कुरु पाण्डव दोउ दल मानत ॥
सुनि शकुनी के मन मो भायउ ❀ साधु कर्ण हितबातसुनायउ ॥
जयद्रथ कृपरु सल्य ने भाखो ❀ दल कर भार द्रोणशिर राखो ॥
जब जानी सबके मन माने ❀ दुर्योधन सुनि आपु बखाने ॥
गुरू होहु सेना कर रक्षक ❀ भारत युद्ध करौ परतक्षक ॥
यह कहिआनि मुकुटशिरदीन्हेउ ❀ बहुविधि विप्र वेदध्वनिकीन्हेउ॥

दो०-कही द्रोण राजा सुनो, कोटि आनि प्रसुराम ।
पाँच दिवस भारत रचौं, करौं घोर संग्राम ॥

जो कोटिन पण्डव दल आवैं ❀ मारौं सबहिं जान नहिं पावैं ॥
जो अर्जुनहिं जुदा करि पावौं ❀ बांधि युधिष्ठिर नृप लै आवौं ॥
जब गुरू द्रोंण कहे असलीन्हेउ ❀ दुर्योधन प्रतिउत्तर दीन्हेउ ॥
जो आपुहि रणको मन लैये ❀ कोटिन अर्जुन मारि गिरैये ॥
तुमसों सबहिं सीखिये सायक ❀ पारथ कहा भये याहि लायक ॥
हँसिकै द्रोण कही यह बानी ❀ राजा तुम यह बात नजानी ॥
महारथी जग मों है पारथ ❀ नन्दिघोष रथ श्रीपति सारथ ॥
धनु गाण्डीव अग्नि जेहि दीन्हें ❀ अक्षय धनु बरुणा सों लीन्हे ॥
सात वर्ष सुरपुरहिं सिधाये ❀ देव अस्त्र सब सिखिकै आये ॥
पुनि विराट रण कियो भयंकर ❀ वनोवास महँ जीत्यो शंकर ॥

दो०-शरसों सागर बाँधिकै, जीति लियो हनुमान ।
सुरपुर नरपुर नागपुर, नहिं पारथहिं समान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by MKS.

ताते यह उपाय चित धरिये ❀ पारथ बिलग कटक ते करिये ॥
कही सुशर्मा गुरु सुनि लीजै ❀ यहि कामहिं आज्ञा मोहिं दीजै॥
परन करत पारथ संग्रामा ❀ लै जैहों तिनको निज धामा ॥
चौदह सहस रथी धनुधारी ❀ वंश प्रकाशन के अधिकारी ॥
जो अर्जुन कहँ पीठि दिखावैं ❀ हम सब बास अधोगति पावैं॥
यह सुनि दुर्योधन सुख मान्यो ❀ अपनो परम हितू कर जान्यो॥
उठ्यो सुशर्मा आयो तहँवाँ ❀ पांडव दल महँ पारथ जहँवाँ ॥
हरि अर्जुन बैठे इक संगा ❀ कहत कथा भीषम रण रंगा ॥
यहि अंतर इन दर्शन दीन्हों ❀ पारथ उठि सम्भाषण कीन्हों ॥
आदर कै आसन बैठायो ❀ भूप सुशमा बचन सुनायो ॥

दो०—परन करत पारथ तुम्हैं, युद्ध करन के हेत ।
करहु और जो चित्त महँ, शपथ कृष्ण की देत॥

पारथ कोपवन्त तब कह्यो ❀ हाँकत मोहिं कहासि धनु गह्यो ॥
मानो परन काल्हि रण करिहौं ❀ ह्वै पतंग दीपक महँ परिहौं ॥
यह सुनि भूप सुशर्मा आये ❀ कुरुपति सों सब बात जनाये॥
प्रात होत दोऊ दल साजे ❀ शब्द अघात दमामें बाजे ॥
गज काछे पर्वत से भारी ❀ पाँव जँजीर नयन अँधियारी ॥
रथ पर रथी सरिस छबि बनी ❀ जगमगात हीरन की कनी ॥
अरु अनेक असवार महाबल ❀ उदधि समान पियादनके दल ॥
दुर्योधन अस कहिबे लागे ❀ सेनापति द्रोणहि के आगे ॥
सब मिलि एक मतो है लरिये ❀ बल सों बाँधि युधिष्ठिर धरिये ॥
पांडवदल आये मैदाना ❀ तब पारथ यहि भाँति बखाना ॥

दो०-आयसु हमरो सुनिय सब, अब हम करहिं पयान।
सावधान क्षत्रिय सबै, लरहु द्रोण मैदान ॥

धर्मराज सुनिये कह पारथ ❀ रणमों द्रोण सरिस पुरुषारथ ॥
तीनलोक जो अस्त्रहि धरई ❀ गुरु द्रोण सबको वश करई ॥
धनुविद्या भृगुपति जेंहि दीन्ह्यों ❀ आपुसमान महारथि कीन्ह्यों ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भये द्रोण गुरु सेना रक्षक ❀ महा युद्ध होइ परतक्षक ॥
मीमादिक क्षत्रिन सन कहिये ❀ सावधान नृपके सँग रहिये ॥
शूरसेन हैं बड़े धनुर्द्धर ❀ जौलौं गहे रहे शारँग शर ॥
तौ लगि नृपरणको मन दीजै ❀ नातर गवन भवन को कीजै ॥
अब हम जाहिं युद्ध के कारण ❀ शेष प्रकागण करहिं सँहारण ॥

दो०-अस कहि कै पारथ चले, सारथि श्रीभगवान ।
दश योजन दक्षिण दिशा, समर केर मैदान ॥

नंदिघोष रथ देखन पाये ❀ सेना सहित सुशर्मा धाये ॥
चौदह सहस रथी सँग लीन्हें ❀ बाण वृष्टि पारथ पर कीन्हें ॥
तब अर्जुन मारे तीक्षण शर ❀ होन लगी अति मारु परस्पर ॥
शेष प्रकागण के शर छुटहिं ❀ मानहुँ वज्र गगन ते टूटहिं ॥
अर्जुन सों लोहा इत बाजा ❀ इतहि द्रोण गुरु सेना साजो ॥
गहिरि सनाह खड्ग कटि बाँधे ❀ युगल तुणीर बिराजत काँधे ॥
शीश टोप हाथन दस्ताने ❀ जनु बानर गणसों अनुमाने ॥
बख्तर झलकै जोसन राजैं ❀ जिरह मेषली सरिस बिराजै ॥
चौसा जारु आनि कै दीन्हें ❀ गदा लयो साजहि दृढ़ कीन्हें ॥
भूरिश्रवा कर्ण सम क्षत्री ❀ कृतवर्मा अश्वत्थामा अत्री ॥

दो०-कोऊ कंचन रथ चढ़े, कोऊ चपल तुरंग ।
दुर्योधन रथ साजिके, शत भाइन लै संग ॥

श्याम तुरंग द्रोण रथ जोरे ❀ पवन वेग ते चारउ घोरे ॥
जानत हैं सारथि के मनकी ❀ बढ़त चलत तकिछायसुतनकी ॥
पाखर करी समय छबि छाजै ❀ हंस भीष्म उल्लास बिराजै ॥
चारिउ चरण नालकी चमकनि ❀ ज्यों घनमेंदामिनिसीदमकनि ॥
आगे कुंजर शोभा पाये ❀ प्रावृत मेघ भूमि पर आये ॥
चमर ढरत चौरासी बाजत ❀ श्वेसपशनअतिसारिसिबिराजत ॥
फेरत फरी खड्ग कर चमकत ❀ पगके भार मेदिनी धमकत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ता पाछे असवारन को दल ❀ शेल साँग कर लिये महाबल ॥
कोटिन रथी महाबल भारी ❀ क्षत्रिय शूर बड़े धनुधारी ॥

दो० महारथी सब साथ लै, कीन्ह्यो द्रोण पयान ।
दुर्योधन राजा चले, गरद लोपिगे भान ॥

पांडव दल आये मैदानहिं ❀ आगे भीम गहे धनु बानहिं ॥
कुंजर सों कुंजर लै जोरहिं ❀ दशन घाव मुख नेकुनमोरहिं ॥
ठोकर अरु वृषोरसो मारहिं ❀ गहि करशुण्डरथहिं फटकारहिं ॥
पैदर सों पैदर अरुझाने ❀ महावीर सब बाँधे बाने ॥
असबारहि असवार प्रचारहिं ❀ सन्मुख जुरत खड्ग शिर झारहिं ॥
लैकर धनुष रथी रण मंडे ❀ बाणन ते अरि सैन्य विहंडे ॥
आगे द्रोण पेलि रथ आये ❀ कृपा कर्ण क्रोधित ह्वै धाये ॥
भूरिश्रवा अलंबुष क्षत्री ❀ जान्यो कृतवर्मा से अत्री ॥
भीमसेन अरु द्रोणहि भारत ❀ महायुद्ध कीन्हों पुरुषारथ ॥
भूरिश्रवा सात्यकिहि दोऊ ❀ लड़त हारि मानत नहिं कोऊ ॥

दो० कर्ण साथ अभिमन्यु भिरे, कीन्हेउ शर संधान ।
द्रुपद राउ जयदर्थ सों, महा भूरि मैदान ॥

कृपसो नकुल करहिं संग्रामा ❀ दोऊ वीर युद्ध जय कामा ॥
भूप विराट सुशर्मा क्षत्री ❀ उत्तर कुँवर अलंबुष अत्री ॥
धृष्टद्युम्न कृतवर्मा संगा ❀ शकुनी सहदेवहि रण रंगा ॥
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर ❀ जुरे शिखण्डि गहे शाँरग शर ॥
घटउत्कच कीन्हों रण ठाना ❀ शल्य नरेश संग मैदाना ॥
काशिराज जंभन को भारथ ❀ कीन्हो खेत महा पुरुषारथ ॥
पाँच कुमार द्रौपदहि जाये ❀ ते शाशिबिन्दु युद्ध अरुझाये ॥
जोर जोर अरुझै सब जबहीं ❀ धायो कोपि द्रोण गुरु तबहीं ॥
अति प्रचंड धनु शर कर लीन्हे ❀ तीक्षण बाण फोंक शर दीन्हे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-पेलि फौज आये तहाँ, जहां धर्म सो राज।
सबलसिंहचौहान कह, द्रोण कियो यह काज॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

सेना सहित द्रोण जब आये ❀ धर्मराज कह देखन पाये॥
परी मीर राजा पर जाने ❀ शूरसेन तब शारँग ताने॥
धर्मराज कह पाछे घाल्यो ❀ क्रोधवन्त आगे रथ चाल्यो॥
बहु बिधि बाण बृन्द झरिलाये ❀ तीन सहस रथ मारि गिराये॥
बहुरि अनेक चलाये साँगी ❀ कुंजर गिरे सहित चौराँगी॥
हय पैदल जो आगे पाये ❀ शूरसेन सब मारि गिराये॥
अटकी अनी देखि जब पाये ❀ तब गुरु द्रोण क्रोधकरिधाये॥
आठ बाण तीक्षण कर लीन्हे ❀ ते शर चोट शीश पर कीन्हे॥
शूरसेन शर सबहिं सँभारे ❀ बाण पचीस द्रोण उर मारे॥
महावीर दोउ बड़े धनुर्द्धर ❀ होन लागि तब मारु परस्पर॥
दो०- शूरसेन नृप, द्रोणसों भयो घोर मैदान।
जल थल भारत भूमिसब, शरछायो असमान॥
क्रोधित द्रोण सहस शर मारे ❀ रथ के चारि अश्व सँहारे॥
सारथि युद्ध खेत महँ आये ❀ रथ ते उतरि शैल लै धाये॥
तबहिं सैल नृप करते छुट्यो ❀ लाग्यो बाण बीचहिते टुट्यो॥
शूरसेन तब खड्ग प्रहारे ❀ क्रुधित द्रोण तीक्षण शर मारे॥
टूटि शीश धरणी पर पर्‍यो ❀ झलकतमुकुटजरायन जर्‍यो॥
शूरसेन जूझे मैदाना ❀ धर्मराय लीन्हों धनु बाना॥
दश शर भूप क्रोध करि छाँटे ❀ ते गुरु द्रोण बीचही काटे॥
लगे द्रोण गुरु मनहिं बिचारन ❀ धर्मराय बाधिये केहि कारन॥
रुधिर परे वसुधा सब जरई ❀ अर्जुन सुने प्रलय पुनि करई॥
ताते गहि बंधन अब कीजै ❀ दुर्योधन आगे करि दीजै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-अस गुनि धाये द्रोण गुरु, नागपाश लै हाथ ।
धर्मराय रथ तजि भजैं, रहा न काऊ साथ ॥

देखि द्रोण राजा कहँ लीन्हें ❀ डारहिं पाश चित्त महुँ कीन्हें ॥
अब यह कथा तहाँ चलि आई ❀ पारथ सों जहँ होत लराई ॥
जब तिन कीन्हों शर संधाना ❀ तब श्रीहरि यह बात बखाना ॥
अर्जुन मेरो जिय गहबन्यो ❀ धर्मराज पर संकट पन्यो ॥
मारहु बाण गहरु केहि काजा ❀ बाँधत द्रोण युधिष्ठिर राजा ॥
अर्जुन नयन अरुण ह्वै आये ❀ मन व्यापक शर तुरत चलाये ॥
धावहु बाण विलम्ब न लावहु ❀ संकटते धर्मजहि छुटावहु ॥
द्रोण गुरु कर पाश उठाये ❀ तेहि अंतर पारथ शर आये ॥
बाण उदोत होत हैं कैसे ❀ प्रलयकाल बड़वानल जैसे ॥
दोऊ कर भेदन शर कन्यो ❀ नागपाश धरणी गिरि पन्यो ॥

दो०-दश शर लाग्यो द्रोण उर, भेदन कीन्हों अंग ।
रथ सारथि चूरण किये, जूझे चारि तुरंग ॥

अर्जुन बाण द्रोण जब लेखो ❀ गरुड़ पक्ष शर माथे पेखो ॥
कनक फोंक लागे बहु दामा ❀ अंकित है पारथ को नामा ॥
देखत बाण जानि गुरु मनमों ❀ पारथ फिरि आयो यह रनमों ॥
तबहिं द्रोण फिरि कीन्हों गवना ❀ धर्मराज पहुँचे निज भवना ॥
कौरव दल जो खेतहि पाये ❀ चल्योचल्योकरिअर्जुन आये ॥
फिरे द्रोण लीन्हें सब सैना ❀ कुरुपति निरखि कह्यो तबबैना ॥
धर्मराय कहँ बांधन धाये ❀ कहौ गुरू फिरिकै तुम आये ॥
सुनि तब द्रोण कहै मन लाये ❀ ग्रसे हते अर्जुन शर आये ॥
अर्जुन शर ते चेत न धन्यो ❀ करते पाश भूमि गिरि पन्यो ॥
सन्ध्या जानि किये तब गवना ❀ कुरुपाण्डवआये फिरि भवता ॥

दो०-उभय सैन करु पाण्डव, सब आये निज धाम ।
अर्जुन सावकाश नहिं, राति दिवस संग्राम ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुरुपति तबहि द्रोण पहँ आये ❀ बैठि बात यहि भाँति जनाये॥
सबके गुरु तुम वीर महाबल ❀ पांडव नाश कहा करिये छल॥
जो आपुहि रणको मन दीजै ❀ क्षणहि पाँच पांडव वध कीजै॥
कीजै कहा कहतु यह वातन ❀ राजा सुनिये कथा पुरातन॥
जो कीन्हीं है अर्जुन करणी ❀ ऐसो बीर न दूसर धरणी॥
द्रुपद नरेश स्वयम्बर ठानो ❀ लक्ष नरेश वर्ण के आनो॥
हम सब गये हुते तव साथा ❀ हलधर हते सहित यदुनाथा॥
याहि बिधि राजा यंत्र बनाये ❀ नभ महँ कंचन मीन लगाये॥
नयन बने हीरन की कनी ❀ कोई क्षत्रिय की रही न मनी॥
द्रुपद नरेश आपु उठि भाष्यो ❀ बीरहु कहा गये बल भाष्यो॥
दो०-जों कोऊ भेदन करै, मीन नयन महँ बान।
यह कन्या सोई वरै, कहत बचन परमान॥
सब क्षत्री सुनि मौनहिं गह्यो ❀ पारथ बीर सभा महँ रह्यो॥
है द्विज रूप कोउ नहिं चीन्ह्यों ❀ शरअरु धनुषकर्णसों लीन्ह्यों॥
धरि करि पाँव खड्ग गहि बाना ❀ खैंचि धनुष तब किय संधाना॥
तुम सब मिलि मिथ्याकै भाष्यो ❀ दीनबधु पारथ प्रण राख्यो॥
कर्ण धनुष बल कोउ न पूजो ❀ सुरपति धनुष दियो तब दूजो॥
बहुरि धनुप लै शर संधाना ❀ मार्योमीन नयन ताकि बाना॥
गिरहु कराह अनत नहिं गयो ❀ तब सबके प्रतीति जिय भयो॥
भूषण बसन विचित्र सँवारे ❀ द्रुपदसुता जयमालहि डारे॥
कन्या निरखि लोभ चित आये ❀ तुम शकुनी कहँ दूत पठाये॥
दो०-धन अनेक द्विज लीजिये, विप्रवंश कुरु ब्याह।
द्रुपदसुता कन्या रतन, कुरुपति कीन्हीं चाह॥
क्रोधवन्त है पारथ भाखै ❀ शकुनी बधउँकवनतोहिंराखै॥
भानुमति रानी मोहिं दीजै ❀ सम्पति सब कुबेर की लीजै॥
सो सुनि भूप क्रोध तुम कीन्हों ❀ कर्ण आदि कहँ आज्ञा दीन्हों॥
पुनि सुनिकै क्षत्री सब धाये ❀ पारथ एक सबै बिचलाये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जरासिन्ध होते बल माहीं ❀ कोऊ छुइ न सको है छाहीं ॥
हम सब मिलिके अस्त्राहि गह्यो ❀ पै काहु सन खेत न रह्यो ॥
क्षत्री सब गये वीरज खोई ❀ बाणावरि नहिं पूज्यो कोई ॥
दुर्योधन तब कहिवे लीन्हों ❀ गुरुसन विनयजोरिकरकीन्हों ॥
आपुहि इहाँ काज चित दीजै ❀ पांडव सबहि मारि यशलीजै ॥
कह्यो द्रोण राजा सों बचना ❀ काल्हि प्रात कीजैयह रचना ॥
दो०-चक्रव्यूह निमार्ण करि, करहु युद्ध यहि रूप ।
बिन पारथ यहि जगतमों, भेद न जानहि भूप॥
निशामध्य महँ गढ निर्मावा ❀ जाको अन्त कोउ नहिं पावा ॥
सात खेल देखत मन भाय ❀ चक्रांकित बहु व्यूह वनाये ॥
सात द्वार तामहँ निर्मावा ❀ दलबलसहित भूपसुख पावा ॥
प्रथम द्रोण जयद्रथ कहँ राष्यो ❀ सेन अनेक जातनहिंभाष्यो ॥
दूजो द्वार द्रोण सम अत्री ❀ साथ अनेक महाबल क्षत्री ॥
तीजो घोर कर्ण दृढ़ कीन्हों ❀ रथी समूह साथ महँ लीन्ह्यो ॥
चौथे कृपा लिये बहु संगा ❀ पँचवे द्रोणपुत्र रण रंगा ॥
छठ्यें घोर बीर बहु अहई ❀ भूरिश्रवा आपु तहँ रहई ॥
सतयें घोर कुरुपतिहिं साजो ❀ सतबांधव नृप संग विराजो ॥
तीनि सहस राजा नृप साथा ❀ सावधान क्षत्री गहि हाथा ॥
दो०-सात द्वारको दृढ़ कियो, चक्रव्यूह करि साज ।
कुरुपति पठये दूत तब, जहाँ धर्मको राज ॥
दूत जाइ ठाढ़ो भो द्वारा ❀ जाइ जनावहु कहि प्रतिहारा ॥
द्वारपाल जब जाय जनाये ❀ धर्मराज तेहि निकट बुलाये ॥
आयदूत नावा तब माथा ❀ लाग्यो कहन जोरिकरहाथा ॥
चक्रव्यूह रचि द्रोण बनाये ❀ ता कारण नृप मोहि पठाये ॥
उठिकै व्यूह भेद नृप कीजै ❀ नातरु जयतिपत्रलीखिदीजै ॥
जो नहिं लरौ रहौ गहि भवना ❀ हारौ युद्ध करौ बन गवना ॥
यह कहि दूत तुरत चालि आये ❀ धर्मराज सब वीर बुलाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सबसें नृप यहि भाँति बखानो ❀ चक्रव्यूह रण तम कोऊ जानो ॥
जो कोई जानत हौ तो कहिये ❀ व्यूहभेद अब कीन्हों चहिये ॥
जो नहि भेद व्यूह को जानो ❀ युद्ध हारि गृह करो पयानो ॥
दो०-यह सुनिकै सब मिलि कही, धर्मरायसों बैन ॥
चक्रव्यूह रण नहिं सुनो, काहु न देख्यो नैन ॥
जब वीरन यहि भाँति जनाये ❀ सुनिकै धर्मराज दुख पाये ॥
हरि रचना यह कीन्हों भारथ ❀ सब उद्यम अब भयो अकारथ॥
चारि बन्धु सेना सब संगा ❀ पारथ बिना भयो रण भंगा ॥
भाष्यो भूप देखि सहदेवा ❀ जानत कोऊ व्यूह को भेवा ॥
सो सुनिकै सहदेव बखानी ❀ तीनि बिना चौथो नहिं जानी॥
जानत द्रोण कि अर्जुन भाई ❀ की प्रद्युम्न यह जान लराई ॥
भूप युधिष्ठिर कहिबे लीन्हें ❀ शिशुपकागण मोहिंदुख दीन्हें ॥
भूप सुशर्म्मा द्रोण पठाये ❀ छलकै अर्जुन को अटकाये ॥
जब राजा हिय शोक जनायो ❀ सभामध्य अभिमनु तबआयो ॥
दोउ कर जोरि कहा तब राजहिं ❀ आपुशोचकीजेकोहि काजहिं ॥
दो०-चक्रव्यूह रचि द्रोण गुरु, कियो चहत संग्राम ।
आजु दिवस पारथ नहीं, भयो विधाता बाम ॥
अभिमनु कही सुनो तुम राजा ❀ अबबिलम्बकीजेकोहि काजा ॥
व्यूह भेद मै जानत अहऊँ ❀ सो वृतान्त आपुतै कहऊँ ॥
छहौं द्वार भेदन कर ज्ञाना ❀ सतवाँ द्वार भेद नहिं जाना ॥
यम अरु इन्द्र वरुण जो रक्षक ❀ छहौं द्वार तोरौं परतक्षक ॥
सतवाँ द्वार भेद नहिं जाना ❀ सुनि राजा यहिभाँतिबखाना ॥
भीमादिक कोउ भेद न पाये ❀ व्यूहयुद्ध केहि तुमहिं सिखाये ॥
अभिमनु कही भूप के पासा ❀ कीन्हें जबहिं गर्भ हम बासा ॥
प्रसव काल माता दुख पाई ❀ तबहिं पिता यह व्यूह सुनाई ॥
पारथ कही सुभद्रा आगे ❀ गर्भ माँझ सुनिबे हम लागे ॥
छहौं द्वारको भेद बखाना ❀ सो हम सब अपने जिय माना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० सप्त द्वारके कहतही, हम लीन्हें अवतार ।
गीत नाद आनन्द ते, मग्न भये परिवार ॥
ताते अपर भेद नहिं पाये ❀ सत्य वचन नृप तुम्हें सुनाये ॥
सुनत युधिष्ठिर विस्मय भयो ❀ पीठि ठोंक अभिमन्यु सों कह्यो ॥
तुम्हैं कवन विधि आज्ञा दीजै ❀ व्यूह युद्ध वीरन ते कीजै ॥
पन्द्रह वर्ष वीर सुकुमारा ❀ तुम हम सब के प्राण अधारा ॥
सुनिअभिमनुयहि भाँतिबखाना ❀ नृप हम कहँ बालक करिजाना ॥
अर्जुन पुत्र सुभद्रा नंदन ❀ आजु करौं रिपु सन निकंदन ॥
द्रोण कर्ण सब वीर घनेरे ❀ आजु देखिहहुँ भुज बल मेरे ॥
मारि सबै सरदार गिरावों ❀ तौ अर्जुन को पुत्र कहावों ॥
बांधौं भुजबल बली पुरंदर ❀ सेना उदधि होई किमि मंदर ॥
याहि विधि बांणबुंद झरि लैहौं ❀ शोणित नदी अथाह बहैहौं ॥
शोच करत नृप आपु अकारथ ❀ अब देखौ मेरो पुरुषारथ ॥
दो०--भीमसेन ऐसी कही, राजा सुनहु बिचार ।
छहौं द्वार भेदन कहेउ, सतवाँ माँ शिर भार ॥
क्षत्री सबहि अस्त्र गहि हाथा ❀ पेलि जाहिं अभिमनु के साथा ॥
सतवाँ द्वार पलक महँ तोरौं ❀ गदा घात सों पर्वत फोरौं ॥
भीमसेन यहि भाँति बखाने ❀ सो सुनि धर्मराय मन माने ॥
साजेउ सेन दमामा बाजे ❀ बाँधे अस्त्र वीर गण गाजे ॥
भाँति भाँति बैरन फहराने ❀ शूर विमानन ध्वजा उड़ाने ॥
आगे कुंजर शोभा पाये ❀ सावन मघ उमै जनु आये ॥
चारौं पाद बहत मदधारा ❀ जिमि झरना जल बहै पहारा ॥
श्वेत दशन कवि किये बिचारा ❀ कजलगिरि जनु गंगाकि धारा ॥
अंकुश लगे चलत गज ठनकत ❀ ठोकर पाँव लगतहय हिनकत ॥
नयनन मों दीन्हीं अँधियारी ❀ देखत रूप शत्रु भयकारी ॥
दो० तुगस्थल अति क्रोध में, राजत ऊर्ध्व भुशुंड ।
भूमि भ्रमै पर्वत मनहुँ, भये भये झुंड के झुंड ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri: Funding by IKS.

तेहि पीछे पैदल दल राजै ❀ विविध अस्त्र कर माँह बिराजै ॥
चले अश्व असवार फँदावत ❀ नृत्य करत मानहुँ नट आवत ॥
चले सारथी सब रथ हाँकत ❀ युद्ध हेत क्षत्री रण डाँकत ॥
सेन सहित योजित रथ आये ❀ चक्रव्यूह जहँ द्रोण बनाये ॥
पेखत सबहिं अचम्भौ मानो ❀ कहाँ द्वार कछु जात न जानो ॥
व्यूह अन्त कछु जानि न पैये ❀ कैसे कै रणमों मन लैये ॥
अटकी अनी देखि जब जाने ❀ तबअभिमनु यहिभाँति बखाने ॥
हम ह्वैबै सबही के आगे ❀ तुम सब आवहु पाछे लागे ॥
यह कहिकै हाँकन रथ चह्यो ❀ तब कर जोरि सारथि कह्यो ॥
तुम बालक कैसे रण करिहो ❀ द्रोणी द्रोणा कर्ण सों लरिहौ ॥

दो० सुनत बचन अभिमनुकहो, सुनुसारथिमतिहीन ।
कपि गण सँग रघुनाथके, कुश एकै वश कीन ॥

बालक करि मोकहँ मति जानहु ❀ हाँकहु रथहि कहा मम मानहु ॥
यह सुनिकै सारथि रथ हाँक्यो ❀ डोली धरणि शेष शिर काँप्यो ॥
भीमादिक रणभुमिहि आये ❀ सिन्धुराज बहु बाण चलाये ॥
इतते सब क्षत्रिय शर मारे ❀ जय के हेतु वीर सँहार ॥
अभिमनु कोपि लगे शर मारन ❀ शतते सहस सहश्र हजारन ॥
तब जयदर्थ कीन्हि प्रभुताई ❀ जल थल सबहि रहे शर छाई ॥
अभिमनु महा मारु जब जाने ❀ तीक्षण बाण कोपि संधान ॥
विद्यत्सम शशिगण परकाशे ❀ चमकत दृष्टि नयन को नाशे ॥

दो० पलक परत सब वीरको, रथ हाँको रथवान ।
सबलसिंह चौहान कह, चक्रव्यूह मैदान ॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वितियोऽध्यायः ॥ २ ॥

अभिमन्यु व्यूह मध्य जब आये ❀ तब जयदर्थ सबहिं अटकाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रथते उतरि भीम तब धाये ❀ पै जयदर्थ मारि विचलाये ॥
द्रुपद विराट क्रोध कै धाये ❀ धर्मपुत्र सात्यकि सब आये ॥
नकुल वीर सहदेव रिसाने ❀ धृष्टद्युम्न रणको अरुझाने ॥
इत सब वीर क्रोध रण मंड्यो ❀ सिन्धुराज शर सबहिं विहंड्यो ॥
गदा हाथ गहि भीम भयंकर ❀ प्रलयकाल महँ मानहुँ शंकर ॥
दैकरि हाँक क्रोध करि धाये ❀ मनहुँ घटा घन महँ घहराये ॥
तब जयदर्थ कीन्ह संधाना ❀ भीम अंग मारे शत बाना ॥
बाण लग्यो तब मोह जनायो ❀ तब सारथि रथ फेरि चलायो ॥
दश शर धर्मराज उर मार्‌यो ❀ नकुल हृदय बहु बाण प्रहार्‌यो ॥

दो०-नृपति जयद्रथ क्रोध करि, मारे तीक्षण बान ।
सबै वीर मोहित भये, भारत के मैदान ॥

धर्मराज मुर्च्छा तजि जागे ❀ तब सहदेवहि बूझन लागे ॥
यह कछु भेद जानि नहिं पाये ❀ नृप जयदर्थ सबहिं अटकाये ॥
आदि कथा सहदेव सुनाये ❀ जेहि बिधि शंकर सो वर पाये ॥
तब दुर्योधन ताहि पठाये ❀ जब हम सब बनवास सिधाय ॥
लै द्रोपदिहि तबहिं हाँको रथ ❀ विधिवश मिलो पंथ महँ पारथ॥
क्रोधवन्त पारथ शर साँध्यो ❀ नागपाश जयदर्थहि बाँध्यो ॥
शीश मुंडि अपमानहिं कीन्हों ❀ मारत जीवदान तब दीन्हों ॥
लज्जा पाई भवन नहिं गयऊ ❀ शंकर की पूजा मन लयऊ ॥
ह्वै प्रसन्न यह कह गंगाधर ❀ जो इच्छा मन माँगहु सो वर ॥
पाँच पांडवन जीतैं रनहुँ ❀ यह इच्छा है मोरे मन में ॥

दो०-यह सुनिकै शंकर कहेउ, दीन्हेउ वर जयदर्थ ।
चारिबंधु तुम जीतिहौ, पारथ अजय समर्थ ॥

यहि विधि शंकर ते वर पायो ❀ ता कारण सबको बिचलायो ॥
दुजे द्वार अभिमनु जब गयऊ ❀ तहाँ द्रोणको दर्शय भयऊ ॥
सब क्षत्रिनसो द्रोण सुनायो ❀ अभिमनु व्यूह भेदिकै आयो ॥
क्षत्री सबहिं लगे शर मारन ❀ यह अकेल उत बीर हजारन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and Jangotri. Funding by IKS.

अभिमनु ऐसो बाण चलायो ❀ शरते भरद्वाज सुत छायो ॥
और साठि शर छाँड़े पायल ❀ ताते भये विप्र रण घायल ॥
कोपि द्रोण योतिक शर जोरे ❀ अर्जुनसुत बीचहिंधरि तोरे ॥
तब गुरु द्रोण क्रोध मन भयो ❀ तीक्षण बाण चलावन लयो ॥
दो० बहु पुरषारथ गुरु कियो, रोकि रह्यो रण रत्थ ।
सबदि पेलि भीतर गयो, अभिमनू बडे समर्थ ॥
तीजो द्वार कर्ण है रक्षक ❀ अभिमनु आइ जुरे परतक्षक ॥
सुन अभिमनु पारथनहिंआया ❀ व्यूह भेद कह तुमहिं पठायो ॥
अभिमनु सुनि प्रतिउत्तर दीन्ह्यों ❀ बालककरितुम हमकोचीन्ह्यों ॥
दृढ़कै गहहु व्यूह द्वारो थल ❀ बूझि देखिहौ बालककों बल ॥
ब्यूह द्वार जब रथ पहुँचाये ❀ कापिकण तब बाण चलायो ॥
सहस बाण अर्जुनसुत छाँट्यो ❀ सबशर अंतरिक्ष महं काट्यो ॥
ताते कीन्हों सैन निकंदन ❀ क्रोधित भये कर्ण रविनंदन ॥
तीक्षण बाण कर्ण गुण जोरे ❀ सों अभिमनु सब बीचहिं तोरे ॥
दिव्यबाण अभिमन्यु चलायो ❀ भूमिअकाशदशहुँदिशि छायो ॥
देखि अनीक सबहिं भ्रम गयऊ ❀ तौ लगि व्यूह भेदिकै गयऊ ॥
दो०-पेलि द्वार भीतर गयो, जात न लागी बार ।
पहुँचे चौथे द्वार जहँ, कृपाचार्य्य सरदार ॥
आये अभिमनु सबहिं पुकारे ❀ कृपाचार्य्य तब धनुष सँभारे ॥
महायुद्ध कीन्हों पुरुषारथ ❀ तेहिक्षण भयोभयानक भारथ ॥
पुनि अनेक सेना बध कीन्ह्यों ❀ रुण्डमुण्डकछु जातन चीन्ह्यों ॥
कृपाचार्य्य क्रोधित शर जोरे ❀ ते अभिमनु बीचहिंसब तोरे ॥
अपर पाँच शर मार्यो लै जब ❀ चेत न रह्यो भयो घायल तब ॥
पेलि द्वार अभिमनु जब आयो ❀ द्रोण पुत्र जब देखन पायो ॥
कर धनु शरगहिकै कत आवत ❀ मारुमारुकहि हाँक सुनावत ॥
अश्वत्थामा लीन्हेउ शर कर ❀ जलधरसमलागेउ वर्षन शर ॥
क्रोधित होइ सुभद्रानन्दन ❀ क्षणमहँकीन्होंसैन निकन्दन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-अर्जुन सुत अरु द्रोणसुत, परो आनि जब जोर ।
रण करकस दोऊ सरस, भयो युद्ध अति घोर ॥
तब अभिमन्यु कीन्ह संधाना ❀ हृदय ताकि मार्यो दश बाना ॥
एक बाण याहि विधि ते छूट्यो ❀ काटो धनुष सहित गुणटूट्यो ॥
औरो साठि सहस शर मारे ❀ तिन बाणन सब सैन सँहारे ॥
जब लगि द्रोणी धनुष चढ़ाये ❀ पेलि द्वार अभिमन्यु तबआये ॥
पंचवां द्वार पेलि जब गयऊ ❀ छठ्यें द्वार उपस्थित भयऊ ॥
अभिमन्यु जब आगे हाँको रथ ❀ भूरिश्रवा आइ रोकेउ पथ ॥
या बिधि बाणबुंद झरि लायो ❀ रथ समेत अभिमन्यु छिपायो ॥
इन्द्रअस्त्र अभिमन्यु तब छाँड्यो ❀ सब शर निमिष एकमहँ काट्यो ॥
बाण काटि शर कियो प्रकाशा ❀ जिमि प्रचंड रवि उग्यो अकाशा॥
दो०-सहस बाण यहि बिधि हनो, रह्यो न तनमें चेत ।
पेलि द्वार भीतर गयो, जीति नरेशन खेत ॥
सतयें द्वार आई अरुझान्यो ❀ जासु प्रवेश भेद नहिं जान्यो ॥
दुर्योधन सेना सँग भारी ❀ तीस सहस नृप छत्रके धारी ॥
ते सब बीर आनिके घेरे ❀ मारु मारु दुर्योधन टेरे ॥
रथ पर शर वर्षत हैं कैसे ❀ मन्दर शीश वृष्टि जल जैसे ॥
महारथी सब मेघ समाना ❀ वर्षत बाणबुंद अनुमाना ॥
धनु टंकोर मेघ की गर्जनि ❀ खड्ग छटा दामिनिकी तर्जनि ॥
शक्ति शूल बीरन कर छूटत ❀ मानहुँ वज्र गगनते टूटत ॥
महामारु क्षत्रिन जब कियऊ ❀ तब अभिन्यु क्रोधतनु भयऊ ॥
जो शर अर्जुन आपु सिखायो ❀ तीनि बाण सोई कुँवर चलायो ॥
दो०-सब शर काटे निमिष महँ, सेन बधेउ रिस हेत ।
जिमि दाहो पावक सघन, कानन सखा समेत ॥
सन्मुख सेन दृष्टि जो आई ❀ क्षण महँ अभिमन्यु मारिगिराई॥
फौज मध्य अभिमन्यु हैं कैसे ❀ मृगदल माहँ केशरी जैसे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हय गज रथ पैदर सँहारे ❀ भूप अनेक खेत महँ मारे ॥
सुनिकै शोर द्रोण कृप धाये ❀ कर्ण समेत बीर सब आये ॥
सब मिलि घेरि लगे शर मारन ❀ एक वीर इत उतै हजारन ॥
सारथि कही कुँवर सो बचना ❀ युद्ध अधर्म्म द्रोणकी रचना ॥
एक एक ते उचित लड़ाई ❀ यह अनीति हम देखा भाई ॥
इत अभिमन्यु है एक जुझारा ❀ उत आये लाखन सरदारा ॥
चहुँदिशि बाणबुंद झरि लावहिं ❀ कहोकत्रानिदिशिरथहिचलावहिं॥
सुनि अभिमन्यु भाष्यउयहबानी ❀ सारथि तुम यह बातनजानी ॥

दो०-चक्रव्यूह भीतर परे, शत्रुहिं कीजै नाश ।
आनि परी शिर आपने, छांडु विरानी आश ॥

सुनु सारथि अब शोच न करिये ❀ सन्मुख सब योधन सोंलरिये ॥
चाक कृत्य तुम रथहिं घुमैये ❀ चहूँओर हम बाण चलइये ॥
सारथि रथ हाँको तब बाँका ❀ जैसे चलत कुम्हार को चाको ॥
द्रोण कर्ण जेतिक हैं आगे ❀ शत शत बाणसबनके लागे ॥
सारथि तनु दश दश सर मारे ❀ द्वै द्वै शर आसन परिहारे ॥
पाँच पाँच शर हस्ति विदारे ❀ एक एक शर पैदल मारे ॥
अर्जुन सुत या विधिशर साँचो ❀ घायल सबहिं एक नहिंबांचो ॥
क्रोधवन्त ह्वै कुरुपति धाये ❀ सबबीरन सों बचन सुनाये ॥
बालक एक करत संग्रामा ❀ तुमसबको पाल्यो कोहिकामा ॥

दो०-सब मिलिमारौघेरिरथ, गहरु करहु कोहिकाज ।
शिशु होइ सेना बधतु है, आवत तुम्हैं न लाज॥

सुनिकै द्रोण कहन अस लागे ❀ दुर्योधन भूपति के आगे ॥
यह अर्जुन सुत बड़ो धनुर्धर ❀ जब लगि धनुष रहे याकेकर ॥
महारथी जो कोटिन आवैं ❀ यहिते जयतिपत्र नहिं पावैं ॥
अर्जुन सम अभिमनु धनुधारी ❀ प्रलय समय जैसे त्रिपुरारी ॥
कही द्रोण दुर्योधन राजहिं ❀ पक्षीयुद्ध जीतिकिमिबाजहिं ॥
गज अनेक जो मारन आवै ❀ एक सिंह की सरि नहिंपावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जो याको धनु काटत कोई ❀ तौ रण में अभिमनु बध होई॥
यह सुनिकै क्षत्री सब धाये ❀ कर्णादिक आगे चलि आये॥
सैन मध्य अभिमनु है कैसे ❀ क्षीर सिन्धु महँ मन्दर जैसे॥
दो०-अर्जुनसुत अति क्रोधकै, छाँडे तीक्षण बाण।
या विधि सेना बध किये, जिमि लँका हनुमान॥
सब मिलि एक मतौ ह्वै धाये ❀ रथहि घेरि चहुँदिशि ते आये॥
बहुतक कोपि बाण सों मारे ❀ शेल शूल मुद्गर परिहारे॥
जो शर कृष्णराय सों पाये ❀ तीनि बाण सोइ कुँवर चलाये॥
ताते अस्त्र भये क्षय कैसे ❀ तिमिरि जाइ देखत रवि जैसे॥
जूझि गिरे कुंजर मतवारे ❀ रथ सारथि अश्वन सँहारे॥
अभिमनु कीन्हीं है यह करणी ❀ रुण्डमुण्ड तोपी सब धरणी॥
देखत कर्ण क्रोध जिय कीन्हें ❀ देकर हाँक धनुष कर लीन्हें॥
आग्नि बाण कीन्हें परिहारा ❀ अभिमनु जोरि करेउधरिछारा॥
बरत अग्निचलिभा तब जारन ❀ प्रकटीं शिखा हजार हजारन॥
तबअभिमनु जल बाण चलाये ❀ क्षणभीतर सब अग्निबुझाये॥
दो०-आग्नि बुताये नीरसों, बाढ़ी जलकी धार।
कौरवदल बूड़न लगे, चहुदिशि परी पुकार॥
रविसुत मारुत बाण चलायो ❀ पवन तेज सब नीर सुखायो॥
अभिमनु तज्यो सर्प कर बाना ❀ नागनाकियो पवन सब पाना॥
डसि धाये तब विषधर कारे ❀ या विधि बहुत सेन सँहारे॥
बर्हि बाण तब कर्ण चलाये ❀ मोरन पकरि सर्प सब खाये॥
अभिमनु क्रोधवन्त है रनमें ❀ मारे बाण कर्ण के तनमें॥
अपर साठि शर छाँड़े पायल ❀ ताते भये द्रोणगुरु घायल॥
कृप के हृदय बाण दश मारे ❀ असी बाण द्रोणहि परिहारे॥
अपर पांच शर भालुक छूटे ❀ भूरिश्रवा हृदय महँ टूटे॥
तानें धनुष पार्थ सुत अत्री ❀ मोहित भे दुश्शासन क्षत्री॥
मोर बाण काल के आके ❀ काटे रथ के ध्वजा पताके॥

In Public Domain; Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०—सात लक्ष चतुरंग दल, जुझि गिर मैदान।
जिमिं वर्षत जलधर जलहि, इमि बर्षत तेबाण॥

अभिमनु कीन्हों सेन निकंदन ❀ क्रोधित भये आपु रविनन्दन॥
पांच बाण तीक्षण कर लीन्हें ❀ ते शर चोट शीश पर दीन्हें॥
घाव लाग अभिमनु रिस बाढ़े ❀ तीक्षण शर निषंग ते काढ़े॥
दै गुण फोंक बाण परिहारे ❀ चारिउ तुरंग सारथी मारे॥
विरथ भये कर्णाहि जब जाने ❀ तब गुरुद्रोण शरासन ताने॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धाये ❀ अश्वत्थामा कृपा सब आये॥
दुश्शासन सब बंधुन लीन्हें ❀ महामारु अभिमनुसों कीन्हें॥
रथी महारथि पैदल हाथी ❀ अभिमनु एक न दूजो साथी॥
कर्ण वीर रथ पर चढ़ि आये ❀ सबमिलिबाणवृष्टि झरिलाये॥

दो०-उत सेना सरदार सब, इत अर्जुनसुत एक।
सबै वीर घायल किये, अभिमनु राखी टेक॥

कुरुपति तबहिं क्रोध अति कीन्हें ❀ मारु मारु कै आज्ञा दीन्हें॥
सुनिकै कर्ण बाण कर लीन्हों ❀ पढ़िकै मंत्र फोंक शर दीन्हों॥
जो शर परशुराम ते पाये ❀ क्रोधित ह्वै सो बाण चलाये॥
दैके हाँक बाण तब छाँटे ❀ करते धनुष कुँवर को काटे॥
टूटो धनुष कुँवर तब डारे ❀ कर गहि शक्ति तबहिं परिहारे॥
तब अभिमनु अस कहा बुझाई ❀ देखि तुम्हारि अधर्म लराई॥
तुम हम ऊपर बाणहिं छाँटे ❀ बीचहिं कर्ण धनुष मम काटे॥
यह कहि कुँवर शक्ति परिहारे ❀ कर्णाहि हृदय ताकिकै मारे॥
मूर्च्छित किये कर्ण ते क्षत्री ❀ अर्जुन पुत्र महाबल अत्री॥
बिनु धनु पाणि कुँवर को पाये ❀ घेरि वीर सब निकटहि आये॥

दो०-अभिमनु घेरे आय सब, मारत अस्त्र अनेक।
जिमि मृगबण के यूथमहँ, डरत न केहरि एक॥

लैकै शूल कियो परिहारा ❀ वीर अनेक खेत महँ मारा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जुझी अनी मभरि के मागे ❀ हँसिके द्रोण कहन असलागे ॥
धन्य धन्य अभिमनु गुणसागर ❀ सब क्षत्रिन महं बड़ो उजागर॥
धन्य सुभद्रा जग में जाई ❀ ऐसे बीर जठर जनमाई ॥
धन्य धन्य जग में पितु पारथ ❀ अभिमनु धन्य धन्यपुरुषारथ ॥
एक बीर लाखन दल मारे ❀ अरु अनेक राजा संहारे ॥
धनु काटे शंका नहिं मन मों ❀ रुधिर प्रवाह चलतसब तनमों॥
यहि अन्तर बोले कुरु राजा ❀ धनुष नाहिंभाजतकेहिकाजा ॥
एक बीर को सबै डरत हैं ❀ घेरि क्योंन रथ धाई धरतहैं ॥
बालक देखु करी यह करणी ❀ सेना जूझी परी सब धरणी ॥
दो०-दर्योधन या विधि कह्यो, कर्ण द्रोण सों बैन।
बालक सब सेना बधी, तुम सब देखत नैन ॥
यह काहिके दुर्योधन आये ❀ सबै वीर आगे ह्वै धाये ॥
क्षत्री घेरे अभिमनु रन में ❀ मानहुँरवि आच्छा दितघनमें ॥
लैके खड्ग फरी गाहि हाथा ❀ काटो बहु क्षत्रिन को माथा ॥
अभिमनु धाइ खड्ग परिहारा ❀ सन्मुख जेहि पावै तेहि मारा ॥
भूरिश्रवा बाण दश छांटे ❀ कुवँर हाथ को खड्गहि काटे ॥
तीनि बाण सारथि उर मारे ❀ आठ बाण ते अश्व संहारे ॥
सारथि जूझि गिरे मैदाना ❀ अभिमनु वीर चित्त अनुमाना ॥
यहि अन्तर सेना सब धाये ❀ मारु मारु करि मारन आये ॥
रथ को खैंचि कुँवर कर लीन्हे ❀ ताते मारु भयानक कीन्हे ॥
अभिमनु कोपि खम्भ परिहारे ❀ यक यक घाब बीर सब मारे ॥
दो०-अर्जुनसुत इमि मारु किय, महावीर परचण्ड।
रूप भयानक देखियतु, जिमि लीन्हें यमदण्ड ॥
क्रोधित होई चहुँ दिशि धाये ❀ मारि सबै सेना विचलाये ॥
यहि विधि कियो भयानकमारथ ❀ साहस धन्य धन्य पुरुषारथ ॥
ऐसी मारु खम्भ सों कीन्हें ❀ दश सहस राजा बधि लीन्हें ॥
मारि सबै राजा विचलाये ❀ कर लै गदा कुरूपति धाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शत बान्धव नृप संगहिं आये ❀ अरु अनेक राजा मिलिधाये ॥
चहुँदिशि महारथी सब घेरे ❀ क्षत्री सबै वीर बहुतेरे ॥
नाना अस्त्र सबहिं परिहारे ❀ निकट न जाहिं दूरिते मारे ॥
दुर्योधन कहँ देखन पाये ❀ गहे खम्भ अभिमन्युतब धाये ॥
जुरे वीर क्षत्री बहुतेरे ❀ खम्भ घात ते बधेउ घनेरे ॥
जब नरेश के निकटहिं आये ❀ द्रोण गुरु दश बाण चलाये ॥
दो०-गुरु द्रोण अति क्रोध कै, मारे बाण अचूक ।
कुवँर हाथको खम्भ तब, काटि किये दुइ टूक ॥
खम्भ कटे अभिमन्यु भे कैसे ❀ मणिविनुफणिकबिकल ह्वैजैसे ॥
क्रोधित भये सुभद्रा नन्दनु ❀ चरण घात कै तोरेउ सो धनु ॥
रथते कुदि कुँवर कर लीन्हें ❀ चका उठाय रणहिं शुभकीन्हें ॥
चका कुवँर कर शोभित कैसे ❀ हरिकर चक्र सुदर्शन जैसे ॥
रुधिर प्रवाह चलत सब अंगा ❀ महाशूर मन नेकु न भंगा ॥
गहिकै चका चहुँ दिशि धावै ❀ जेहि पावै तेहि मारि गिरावै ॥
दुर्योधन पर चका चलाये ❀ गदा रोपि कुरुनाथ बचाये ॥
क्षत्री घेरि लगे शर मारन ❀ जुरे आइ कोता हथियारन ॥
दुश्शासनसुत गदा प्रहारे ❀ अभिमन्युके शिर ऊपर मारे ॥
जूझै कुँवर परे तब धरणी ❀ जग महँ रही सदा यहकरणी ॥
दो०-धन्य धन्य सब कोउ कहै, कुँवर रहो मैदान ।
पै गुरू द्रोण मलीन मुख, कहै वचन परमान ॥
गुरु द्रोण याहि भांति बखाने ❀ हर्षि नरेश सबै सुख माने ॥
अभिमन्यु मरण सुनैगो पारथ ❀ करिहै महा भयानक भारथ ॥
इन्द्र वरुण यम होइ सहायक ❀ कोइनहिंअर्जुनजीतनलायक ॥
भीमादिक यह युद्ध बिचारे ❀ पै जयदर्थ सबहिं शर मारे ॥
क्रोधित भये पांडुके नन्दन ❀ फेंको सिन्धुराज को स्यन्दन ॥
गिरे दूरि उठि निकटहिं आये ❀ भीमउपर सत बाण चलाये ॥
धर्मराज तब कीन्ह दरेरो ❀ पै जयदर्थ मारि मुख फेरो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi. eGangotri. Funding by IKS.

लै अनीक सब कुरुपति धाये ❀ जहँ जयदर्थ लरततहँ आये ॥
कौरव दल जयशंख बजाये ❀ अभिमन्यु गिरे भूप सुनि पाये ॥
धर्मराइ सुनि मौनहि गहेऊ ❀ सन्ध्या भयो युद्ध तब रहेऊ ॥
दो०—कुरुपांडव फिरिकै चल्यो, भयो युद्ध को शेश ।
भीमादिक क्षत्रिय सबै, रोवत धर्म नरेश ॥
हा हा ! अभिमनु अभिमनु भाषेउ ❀ देखे बिना प्राण किमि राखेउ ॥
सुत सपूत तोसों नहिं पावों ❀ अर्जुनकोकिमि बदन दिखावों॥
रोवत भीम नकुल अरु मंत्री ❀ सेना सबै महाबल क्षत्री ॥
रोवत सबै भवन कहँ आये ❀ ऊर्ध्व बाहु केशहि छिटकाये ॥
अभिमनु काहिकै सबै पुकारत ❀ दोऊ हाथ शीश पै मारत ॥
अन्तःपुर पहुँची यह बानी ❀ श्रवणन सुनी सुभद्रा रानी ॥
कुंती सुनत महा दुख पाई ❀ रोदन करत शूल उर छाई ॥
सुनत सुभद्रा जननी कैसे ❀ बिना जीव कठपुतरी जैसे ॥
बहत प्रवाह नयन को पानी ❀ हिमऋतुमनोकमलकुँभिलानी ॥
हाहा ! पुत्र परम सुखकारी ❀ सुंदर मुख पै मैं बलिहारी ॥
दो०-पुत्र शोच श्रवणन सुनत, धरणी परी अचेत ।
नयन नीर कज्जल सहित, मनो तिलांजलि देत ॥
जो तुम्हारे पितु होते संगा ❀ तुमसों को जीतत रण रंगा ॥
कुंती सोहत द्रौपदी रानी ❀ बहत प्रवाह नयन भरि पानी ॥
करुणा करहिं ठोंकिकै माथा ❀ रत्न गये पैये नहिं हाथा ॥
यह सुधि सुनि वैराट कुमारी ❀ बारह वर्ष वयस सुकुमारी ॥
पति जूझे रण सुनिकै मरयो ❀ मानहुँ शोक समुद्रहि पर्‍यो ॥
कहाँ गयो प्रीतम सुखदायक ❀ चक्रव्यूह के भेदन लायक ॥
जूझें खेत जगत यश लीन्हें ❀ जयमाला सुरकन्यन दीन्हें ॥
तुम सुरपुर बिलसहु सुकुमारा ❀ मोहिं अनाथको नाथ बिसारा ॥
हे स्वामी मोहिं दरशन दीजै ❀ नातरु संग आपने लीजै ॥
पाँच मास मम भये विवाही ❀ विधि यह समय बिछोहानाहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० लग्न व्यास गनि थापेऊ, दाता नृप वैराट ।
अर्जुनसूतवर कृष्णहित, विधिमुख लिखाललाट ॥

यह सुनि रोई उठीं दुख बानी ❀ कुंती सहित द्रोपदी रानी ॥
ठोंकि ललाट कर्म विधि सोये ❀ सुनि दुख पशु पक्षीसब रोये ॥
करुणा करि सब रानिन जाई ❀ उत अर्जुन ने रची लड़ाई ॥
पारथ ब्रह्म अस्त्र परिहारे ❀ रणमा शिंशुपकागण मारे ॥
जय करि कहि कीजै हरि गवना ❀ हाँको रथ जैसे निज भवना ॥
आजु चित्त कछु चँचल मेरो ❀ ताते उपजत शोच घनेरो ॥
बाम आंखि बायों भुज फरकै ❀ जिय अकुलात चहत हियदरकै ॥
श्रीहरि सुनियह बात बखानो ❀ मोरहु जिय अबहै अकुलानो ॥
सब जानत हैं अन्तर्यामी ❀ अभिमनुमरणकहोनहिंस्वामी ॥

दो० हाँक्यो रथ माधव तबहिं, धाये चपल तुरंग ।
अशकुन देख्यो पन्थ महँ, भा पारथ मन भंग ॥

आतुर ह्वै चलि आये तहँवाँ ❀ रोदन करत भूमिपति जहवाँ ॥
चलत प्रवाह अश्रुहैं नयना ❀ अर्जुन कहा कृष्णसों बयना ॥
अभिमनु मरण सुना श्रीमाधव ❀ नहिंजानताविधिकीन्होंकाधव ॥
रथते उतरि गयो पुनि तहँवाँ ❀ रोदन करत सबै है जहँवाँ ॥
अभिमनु नाहिं सभा महँ देख्यो ❀ जूझयो पुत्र सत्य करि लेख्यो ॥
तब अर्जुन भाख्यो यह बयना ❀ अभिमनु कहाँ नदेखहुँ नयना ॥
धर्मराज सब बात सुनाई ❀ अकथकथाविधिकी प्रभुताई ॥
चक्रव्यूह गुरु द्रोण बनाये ❀ दुर्योधन कहि दूत पठाये ॥
भेदहु व्यूह आनि कै लरिये ❀ नातो हारि गवन बन करिये ॥
सो सुनिकै हत बहु दुख कीन्हेउ ❀ सब क्षत्रिन को आज्ञा दीन्हेउ ॥

दो० व्यूहभेद जानहि नहीं, कहैंहिं सबहिं परमान ।
सब क्षत्री हिय हारगे, अभिमनु लीन्ह्यों पान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहुत भाँति मै कहि समुझायो ❀ आभिमन्युकैसहुमनहिंनआयो ॥
छहों द्वार तोरौं सति भावा ❀ सतवाँ को रण मोहिं नआवा ॥
यह सुनि भीमसेन तब कहेऊ ❀ सतवाँ द्वार भार मम रहेऊ ॥
सो सुनिकै साजी हम सयना ❀ चक्रव्यूह देखत तब नयना ॥
देखत सबहिं अचंभव भयऊ ❀ आभिमन्युव्यूह भेदिकै गयऊ ॥
भीमादिक क्षत्री सब धाये ❀ पै जयदर्थ सबहिं अटकाये ॥
छहों द्वार सुत पैलि कै गयऊ ❀ सतयें द्वार महारण भयऊ ॥
सो सब काहु न देखो नयना ❀ जूझेउ पुत्र सुनेउ यह बयना ॥
याहि सुनि अर्जुन मूर्छित भयऊ ❀ रोके कृष्ण अंक महँ लयऊ ॥
अर्जुन कृष्ण बिकल होइ रोये ❀ पुत्र शोक चाहत जिय खोये ॥

दो०-अर्जुन भाष्यौ भीमसों, प्राणकि कीन्हें गौन ।
सुतहिं जुझायो खेत मँह, तुम सब आयो भौन ॥

चौदह वर्ष बैस अति बारा ❀ द्रोण कर्ण कै युद्ध बिचारा ॥
याही समय होत हम साथा ❀ बधे घोर सुत मानहुँ अनाथा ॥
सुंदर रूप मनोहर आनन ❀ खण्डखण्डवीरनकिये बाणन ॥
करुणा के पारथ यह भाखै ❀ पुत्र बिना हम प्राण न राखै ॥
सुनु हो वीर महा धनुधारी ❀ तुम पर प्राण करौं बलिहारी ॥
हम जीवत तुम जीवत रनमों ❀ यहै शोच आवत है मनमों ॥
धर्मराय के कामहिं आयो ❀ हमहिंछाँड़ितुमकहाँ सिधायो ॥
क्षत्रिय सबै वीर सरदारा ❀ सबहिं कुशल जूझे तुम बारा ॥
भीमसेन बहुतै गल गाजे ❀ सुतै जुझाय खेत तजि भाजे ॥
सुनिकै भीम कहन अस लागे ❀ लज्जावंत क्रोध सों पागे ॥

दो०-सब मिलिकै भारत रच्यो, राज्यभोग के हेत ।
अब रोवत बिलखत कहा, जब सुत जूझेउखेत ॥

जो मैं होतेउँ सुतके साथा ❀ सैनसहित बधतिउँ कुरुनाथा ॥
कही कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै ❀ चलहु गवन अंतःपुर कीजै ॥
अर्जुन कहा सुनो हो माधव ❀ अबउतजायकीजिये काधव ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आपु जाहिं हरि हम नहिं जैहैं ❀ रानिन में का बदन दिखैहैं ॥
सो सुनि अंतःपुर हरि आये ❀ बहिन सुभद्रा देखन पाये ॥
धाइ सुभद्रा चरणन लागी ❀ हे माधव हम परम अभागी ॥
श्रीहरि तुम कीन्हें प्रतिपालक ❀ भारतजूझिगयो मम बालक ॥
अर्जुनसे पितु मातुल केशव ❀ रण जूझे सुत बड़ो अँदेशव ॥
करुणा करै सुभद्रा लागी ❀ विह्वल विकल शोक ते पागी ॥
दो०—बधू उतरि आई तहाँ, गहे कृष्ण के पाइ ।
आज्ञा दीजै जाहि हम, पति सँग यादवराइ ॥
तेरे गर्भ बाण भाषो गनि ❀ कुरु पांडव को वंश शिरोमनि ॥
होइहै पुत्र प्रबल बल भारी ❀ एक छत्र बसुधा अधिकारी ॥
या विधि ते श्रीपति समुझाये ❀ अंतःपुर ते बाहर आये ॥
भोजन पान कहूँ नहिं कीन्हें ❀ सेना सबहिं समर मन दीन्हें ॥
अर्जुन निकरि चले बनवासा ❀ पुत्रशोक ते जीव निसारा ॥
श्रीपति अग्र न देखो पारथ ❀ पाछे चले सखा के सारथ ॥
बनमों पारथ भेंटि मुरारी ❀ गहिकरबचन कहेउ बनवारी ॥
पारथ शोच छाँड़ि अब दीजै ❀ निर्मल ज्ञान चित्त में कीजै ॥
काको सुत बांधव पितु जगमों ❀ पथिकभित्रआहीजिहि जगमों ॥
सगरादिक ऐसो नृप भयऊ ❀ ते सब याहि धरणी महँ गयऊ॥
दो०-कोइ न कांहू को अहै, कीजै हृदय बिचार ।
सबलसिंह चौहान कह, मिथ्या हैं संसार ॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते

तृतियोऽध्यायः ॥ २ ॥

सुनिकै अर्जुन तब यह भाखो ❀ दीनबन्धु जिय जात नराखो ॥
पारथ संग हमारे ऐये ❀ अभिमन्युतुमकँहआनादिखैये ॥
यह सुनि पारथ को मन हरष्यो ❀ करि प्रणाम हरिके पग परश्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विनतासुत कहँ सुमिरण कीन्हे ❀ आये गरुड़ कहनमन दीन्हे ॥
मेर संग चलहु तुम पारथ ❀ सुरपुर जाई तुम्हारे स्वारथ ॥
उड़ेउ गरुड़ तब कीन्हेउ गवना ❀ क्षण मंह गयोदेवनिशिमवना ॥
देखो जाई महारण रंगा ❀ अभिमन्यु लरत दैत्यके संगा ॥
कृष्ण कही अभिमन्यु पंह जैये ❀ पकरि बाह सुत इत लै ऐये ॥
सुत कह देखि महा सुख पाये ❀ मिलिबे को आतुर ह्वै धाये ॥
मोहिं छाड़ि कित कीन्हे गवना ❀ हैंसुत बेगि चलो निजभवना ॥
दो० सौसुनिकै अभिमन्युकही, काह बकत बिनकाज ।
पुत्र पुत्र भाषन कहा, जीव न आवत लाज ॥
काको सुत काको रथ हाथी ❀ जैसे मिलत स्वप्न पह साथी ॥
पितुते सुत सुसते पितु करणी ❀ जैसे चलत रहट को ठरणी ॥
हम शशिपुत्र बुद्ध है नामा ❀ रोदन काह करत बेकामा ॥
यह सुन अर्जुन बहुत लजाये ❀ रहे मौन कछु बचन नआये ॥
मन मह ज्ञान कियो तब पारथ ❀ सत्य कहत जबसबै अकारथ ॥
अर्जुन गयो कृष्ण के पासा ❀ कही कहत सुनिबचनउदासा॥
शशि को पुत्र कह बुध नामा ❀ काको सुत आयो कोहि कामा ॥
सुत नातो छांड़ो कोहि कारण ❀ मोते भाषौ त्रास निवारण ॥
आहि कथा हरि भाषन लागे ❀ सुनिये पारथ परम सभागे ॥
जब हम जठर देवकी जाये ❀ देव दैत्य सब जग मंह आये॥
दो० क्षत्री होइ जगमें सब, यम लीलाके काज ।
कुरुपति कलिको अंश है, धर्म युधिष्ठिर राज ॥
सुरगण सब पांडव हितकारी ❀ कुरुपति असुरन को अधिकारी॥
ब्रह्मा कही चंद्र सुनि लीजै ❀ बुध सुत देहु जन्म जगकीजैं॥
बिधिसो विनय सुधाकर कयो ❀ इहई पुत्र मोर घर अह्यो ॥
जौं लगि सुतहि जन्म जग करिहौं ❀ काहि देखि धीरज मन धरिहौ ॥
हँसि बिधि कही निशापति आगे ❀ पंद्रह वर्ष हहु मोहि माँगे ॥
जन्म सुभद्रा जन्महि लैहै ❀ भारत मों बहुते यश पैहै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पंद्रह वर्ष लागी हम माँगे ❀ एकौ दिन नहिं रहिहै आगे ॥
जो याहि बीच आव नहिं पैहै ❀ दोउ दल मारि तोर सुत ऐहै ॥
तुमते कही सुनो हो पारथ ❀ शोचन कीजै आपु अकारथ ॥
दो०-अर्जुन को परबोध कै, लै आये प्रभु ऐन ।
शोक मिटा तनु क्रोध भा, कह्यो कृष्ण सों बैन ॥
काल्हि युद्ध जयदर्थहि मारौं ❀ नातरु देह अग्नि में जारौं ॥
यह प्रण मैं कीन्हें अपने मन ❀ बधौं शत्रु की देहु अपन तन॥
प्रण सुनि श्रीहरि काहिबे लीन्हें ❀ जयद्रथ कहँ शंकर वर दीन्हें ॥
ताते अजय भयो है पारथ ❀ केहि विधि तुम करिहौ पुरुषारथ॥
हम तुम मिलि कीजै अबगवना ❀ चलु जाई शंकर के भवना ॥
नर नारायण सब सिधाये ❀ क्षण महँ गिरि कैलासहि आये ॥
चहुँदिशि बनस्पती सब फूले ❀ मत्त मधुप गुंजत रस भूले ॥
बट तर बैठे हैं गंगाधर ❀ उमासहित हरि नाम जपत हर॥
अंग विभूति वसन मृग छाला ❀ चन्द्र लिलाट गरे शिर माला ॥
शीश जटा महँ गंग बिराजत ❀ लोचन तीनि मनोहर छाजत ॥
दो०-शंकर देख्यो कृष्ण कहँ, उपजो चित्त अनंद ।
बिहँसि बदन पूछन लगे, शरद श्याम मुखचंद॥
करि आदर आसन बैठारे ❀ कहौ आपु केहि काज सिधारे॥
हँसि हरि कही सुनहु गंगाधर ❀ तुम दीन्हों जयदर्थहि कोवर ॥
अभिमन्यु जूझि गिरे भारतरण ❀ ता कारण पारथ कीन्हों प्रण॥
काल्हि बधौं नहिं सिंधुनरेशहि ❀ तौ मैं अग्निहि करौं प्रवेशहि॥
पारथही अब यह वर दीजै ❀ काल्हि बधहि जयदर्थहि कीजै ॥
शंकर कही दीन्ह वर पारथ ❀ बधि जयदर्थ करहु पुरुषारथ ॥
जाके सखा आपु श्रीकेशव ❀ जयकरिहौ रण कौन अँदेशव ॥
लैकर धनुष बतायउ बाना ❀ याहि बिधि ते कीजै संधाना ॥
लै अर्जुन माधव गृह आये ❀ समाचार सब कुरुपति पाये॥
अर्जुन प्रण कीन्हेउ याहि कारन ❀ काल्हि चहत जयदर्थहि मारन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-जौ न बधौ जयदर्थही, करहु अग्नि परवेश ।
यह प्रण दृढ पारथ किये, सुधि सब सुनीनरेश॥
सुनि जयदर्थ महा भय मानी ❀ इतको रहब मरण निजजानी ॥
कुरुपति पहँ कीन्हौ तब गवना ❀ कही जात हम अपने भवना ॥
पारथ प्रण मिथ्या नहिं परिहै ❀ कोसन्मुख होइतिनसन लरिहै ॥
तोहि कारण भवनहिं चलिदीजै ❀ शंकर शरण जाइकै लीजै ॥
सो सुनिकैं कुरुनाथ बखाना ❀ अबनहिंकीजियममअपमाना ॥
हम सब तब रक्षा रण करिहैं ❀ कर्णादिक लै आगे लरिहैं ॥
सब मिलिकैं करिये पुरुषारथ ❀ कैसे तुमहिं बधैंगे पारथ ॥
भागि गये पुनि अमर नहोइहौ ❀ क्षत्रिनं मध्य लाज बहु पैहो ॥
दिन भरिकै रक्षा सब करिहैं ❀ सांझ समय तब अर्जुन मरिहैं ॥
पारथ मरैं युद्ध हम जीतैं ❀ तुम काहेक जिय माननभीतैं ॥
दो०-सेनापति है द्रोण गुरु, रक्षा करिहैं तोहि ।
साँझ भये अर्जुन मरहिं, विधि जयदीन्होंमोहि॥
ताते अब हम तुमसों कहिये ❀ करि सहसा स्थिर ह्वै रहिये ॥
सिंधुराज तब बोले बयना ❀ कहुँ न ऐसो देखहुँ नयना ॥
पारथ कोपि धनुष जब धरिहैं ❀ को समरथ जो सन्मुख लरिहैं ॥
जब विराटपुर गौधन हुरेऊ ❀ अर्जुन एक सबै बस करेऊ ॥
मोहिं ते कहेउ अहै त्रिपुरारी ❀ पारथ सम नहि कोउ धनुधारी॥
उठिकै कर्ण कही परतक्षक ❀ काल्हि दिवस हम ह्वैबै रक्षक ॥
तब जयदर्थ कही समुझाई ❀ सबकोबल हम जानत भाई ॥
जौ गुरु द्रोण बाँह गहि राखैं ❀ रक्षा करहिं पैज करि भाखैं ॥
तौ मैं रहौं सुनौ नृप बयना ❀ नतरु जाइहौं अपने अयना ॥
कुरुपति कही सबहिं मिलि जैये ❀ जाय द्रोण सों बात जनैये ॥
दो०-यह कहिकै सब मिलि चले, गये द्रोणके भौन ।
आदर कै आसन दिये, किमिनृपकीन्हेउ गौन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सो सुनिकै दुर्योधन कहेऊ ❀ अर्जुन प्रण कीन्हुउअसअहेऊ॥
काल्हि दिवस जयदर्धहि मारौं ❀ नाहिं तो देह अग्निमहँजारौं॥
जो गुरु द्रोण होहु तुम रक्षक ❀ दृढ़कै बाँह गहौ परतक्षक॥
काल्हि दिवस जयदर्थ बचैये ❀ पारथ मरत युद्ध जय पैये॥
यह सुनि द्रोण कहै तब लीन्हें ❀ अबमैं अपनेमन प्रण कीन्हें॥
ऐसो व्यूह करौं निर्माना ❀ जाको भेद कोउ नहिं जाना॥
सब आगे होइहैं हम रक्षक ❀ देखो को आवत परतक्षक॥
जो कोटिन अर्जुन चलि आवैं ❀ तो मोते नहिं द्वार छुड़ावैं॥
काल्हि करौं याहि बिधिपुरुषारथ ❀ कृष्ण समेत जीतिये पारथ॥
याहि विधि बाणबुन्द झरिलैहौं ❀ षाण्डव सेन मारि विचलैहौं॥

दो०-या प्रण मैं तुमते करहँ, सतह बचन परमान।
पारथ अन्त न पावहिं, करौं व्यूह निर्मान॥

कही द्रोण अब साजहु सैना ❀ रचत व्यूह तुम देखौ नैना॥
कीन्हेउ बंब दमामा बाजै ❀ सुनिकै सबहिंभूपगण गाजै॥
सारथि रथ जोते हय चोखे ❀ इन्द्र विमान परत हैं धोखे॥
चढ़े अश्व असवार महाबल ❀ उदधिसमान पियादनकोदल॥
सब जुरिकै आये मैदाना ❀ कीन्हें द्रोण व्यूह निर्माना॥
विकट व्यूह अति निकटबनाये ❀ जाको अन्त कोउ नहिं पाये॥
कमल व्यूहते मध्यहि फेरेउ ❀ शतदलको व्यूहहि तेहिघरेउ॥
आपु द्रोण राखो है चक्रहि ❀ सोमदत्त बल समता सक्रहि॥

दो०-बाह्लीक गंधार नृप, दोंउ बाजू रहि ताहि।
कर्ण मध्य स्थल रहों, सबहिं सरारत जाहि॥

अग्रभाग गुरु द्रोण बिराजत ❀ पहिरिसनाह सिंहसमगाजत॥
कमल मध्य महँ जयद्रथ राखो ❀ महा विकटचलजातन भाखो॥
पट योजन रचि व्यूह बनाई ❀ योजन तीनि बनी चौड़ाई॥
आठ क्षोहिणी दल सब राखे ❀ यह समूह दल जात नभाखे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कही क्षोहिणी दल परिमाना ❀ यहिते बुध कीरहैं अनुमाना ॥
रथ पर एक रथी छबि पावै ❀ तिहि पाछे पचास गज धावै ॥
गज पाछे शत शत असवारा ❀ बन महँ करत शत्रु सँहारा ॥
एक एक असवारन पाछे ❀ शत शत पैदल आवत आछे ॥
इतनो होय रथी त्याहि कहिये ❀ शुरवीर कोई रण लहिये ॥
ऐसे रथी पाँच शत आये ❀ ताको सेना एक कहाये ॥
दो०—ऐसो दल सेना जुरी, पृतना कहिये ताहि ।
दश पृतना जुरिकै चले यही वाहिनी आहि ॥
ऐसे दल वाहिने जुरिआई ❀ एक क्षोहिणी फौज कहाई ॥
आठ क्षोहिणी दल परिमाना ❀ कीन्हों व्यूह निकट निर्माना ॥
गाहिकै धनुष द्रोण गुरु कह्यो ❀ सब क्षत्रिय दृढ़कै थल गह्यो ॥
सब मिलि सावधान ह्वै रहिये ❀ अर्जुन सों कीन्हों रण चहिये ॥
अरुण उदय पाँडव दल साजे ❀ शब्द अघात दमामें बाजे ॥
स्वकर रथहि जीते बनवारी ❀ चढ़े आइ पारथ धनुधारी ॥
पहिरि सनाह धनुष कर लीन्हें ❀ दोउ तुणीर कासिकै दृढ़ कीन्हें ॥
शिर पर मुकुट मनोहर नीको ❀ भाल उदित हरि मंदिर टीको ॥
यज्ञोपवीत बिराजत काँधे ❀ पीताम्बर कटि कसिकै बाँधे ॥
सुन्दर श्याम शरीर बिराजत ❀ कुंडल कान मनोहर छाजत ॥
दो०-ब्रह्मा शंकर देव मुनि, नहिं पायो जेहि अन्त ।
भक्त हेत जोती गहे, महिमा अगम अनन्त ॥
धर्मराई मैदानहिं आये ❀ तब श्रीपति यह बचन सुनाये ॥
सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये ❀ लै सेना इनही अब रहिये ॥
जो सब मिलि रणको उरझैये ❀ व्यूह भेद को अंत न पैये ॥
अर्जुन रथी संग हम सारथ ❀ देखो नृप नयनन पुरुषारथ ॥
धर्मराई कछु कहिबे लीन्हें ❀ अर्जुन सौंपि कृष्णको दीन्हें ॥
तीनि लोक भाषत परतक्षक ❀ पाण्डवंश के माधव रक्षक ॥
पारथ वीर अहै हम सारथ ❀ कहा शोच करि हैं पुरुषारथ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अस कहिकै माधव रथ हाँको ❀ गर्जत नंदिघोष के चाको ॥
ध्वज ऊपर हनुमत छबि पाँये ❀ चंचल अश्व पवन गति धाये ॥
पहुँचो निकट ब्यूह जब पेख्यो ❀ अतिअगाधदलपरत न लेख्यो॥
दो०-अर्जुन देख्यो द्रोण तब, संग कोउ नहिं सैन ।
क्रोधित शर संधानिकै, कह्यो कृष्णसों बैन ॥
हे श्रीपति तुम अन्तर्यामी ❀ मेरो प्रण यह सुन्यो न स्वामी ॥
जो कोटिन अर्जुन हरि आवैं ❀ व्यूह द्वार ते जान न पावैं ॥
श्रीपति कही धरहु धनु पारथ ❀ देखत कहा करहु पुरुषारथ ॥
अर्जुन गुरुहि कीन्हें परणामा ❀ आशिष दीन्ह होय मन कामा ॥
द्रोण प्रथम कीन्ह्यों संधाना ❀ एकहि बार तजे दोउ बाना ॥
गुरु अरु शिष्य करत रण शरसे ❀ दोउ दिशिबाणबुन्द समबरसे ॥
साठि बाण अर्जुन तनु मारे ❀ कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे ॥
सहस बाण लागे हनुमानहिं ❀ लघु संधान तजत गुरु बानहिं ॥
दो०-अर्जुन वर्षत बाण इमि, जिमि सावन जल धार ।
सघन सेन भेदन करत, निकर जात शर पार ॥
तब गुरु द्रोण क्रोध जिय कीन्हों ❀ महामारु पारथ पर दीन्हों ॥
ऐसे बाण द्रोण गुरु जोरे ❀ शरत पग ठहरात न घोरे ॥
दोऊ बीर भिरे मैदाना ❀ सरस निरस कहि जात न बाना ॥
इन्द्र अस्त्र पारथ तब लीन्हेउ ❀ पढ़िकै मंत्र फोंक शर दन्हिेउ ॥
छूटत बाण शब्द घहरानेउ ❀ अचरजकै सबहीं जिय जानेउ ॥
हँसिकै द्रोण किये संधाना ❀ तजेउ स्वामिकार्तिक करबाना ॥
ताते इन्द्र अस्त्र हनि दन्हिेउ ❀ तब पारथ यम अस्त्राहि लीन्हेउ ॥
मृत्युक अस्त्र द्रोण परिहारेउ ❀ तव यम अस्त्राहि पारथ मोरेउ ॥
अस्त्र अस्त्र सों कीन्ह निवारण ❀ तब लागे तीक्षण शर मारण ॥
पारथ बाण कीन्ह संधाना ❀ इत गुरु द्रोण सरस मैदाना ॥
दो०-कही द्रोण अर्जुन सुनो, द्वार न छाँड़ौं आज ।
दीनबन्धु पारथ सहित, समुझि कीजिये काज ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

श्रीपति कही सुनहु हो पारथ ❀ गुरुसों होइ न सकै पुरुषारथ ॥
भई अबेर दिवस चढ़ि आयो ❀ व्यूह भेद अजहूँ नहिं पायो ॥
बाहर होइ रथ भीतर डारहिं ❀ भेदि व्यूह ज्यदर्थहि मारहिं ॥
अर्जुन कही उतै होइ जैये ❀ रणमों कैसे पीठि दिखैये ॥
माधव कही न जानत पारथ ❀ भूलि बात यह कही अकारथ ॥
कहा न कीजै अपने काजा ❀ द्विज गुरुते भाजे नहिं लाजा ॥
अस कहिकै हरि रथहि चलायो ❀ द्रोणहि तजि अंतरहोइआयो ॥
लै ताजन हरि अश्वन मोरेउ ❀ दै करि हांक व्यूह पर डोरेउ ॥
बहुतक पारथ मारि गिरायो ❀ कछु रथ चाककृष्णकचरायो ॥
कछु हय धक्का उलटिकै डोरेउ ❀ ताजन घाव कृष्ण कछु मारेउ ॥
दो०-नन्दिघोष रथ जाइकै, व्यूह किये परवेश ।
चहुँ ओर शर वर्षहीं, क्षत्रिय सबै नरेश ॥
सेन मध्य रथ धावत कैसे ❀ वोहितचलत सिंधुमहँ जैसे ॥
अर्जुन कीन्हेउ शर सँधाना ❀ मारन लगे क्रोध करिबाना ॥
अगणित कीन्हेउ सैन निकँदन ❀ नँदिघोष हाँकत जगवन्दन ॥
वीर अनेक आनि कै घेरहिं ❀ मारहिं मारु मारु कहि टेरहिं ॥
अर्जुन वीर कृष्ण से सारथ ❀ लागे करन सरस पुरुषारथ ॥
रथ पर लागे शूल शर वर्षैं ❀ युद्ध देखि पारथ मन हर्षैं ॥
बीर अनेक अस्त्र परिहारे ❀ खड्ग घाव रथ ऊपर मारे ॥
अर्जुन कोपि चलायो बाना ❀ योजन एक कियो मैदाना ॥
नंदिघोष हाँकत बनवारी ❀ जोती गहे पिताँबर धारी ॥
योजन एक किये रथ आगे ❀ धर्मराय तब कहिबे लागे ॥
दोह०-धनु टंकोर ध्वनि सुनि परत, कहाँ होत धौं आहि ।
हरि अर्जुन सुधि लेनको, अब पठवों मैं काहि ॥
कह्यो नरेश सात्यकी जैये ❀ सुधि लैकै मो पर फिरि ऐये ॥
नृप आज्ञा माथे धरि लीन्हेउ ❀ रणको गमन सात्यकीकीन्हेउ ॥
तब सात्याकि देखेउ परतक्षक ❀ द्वारहि व्यूह द्रोण गुरु रक्षक ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जबसात्यकिअतिनिकटहि आये ❀ हँसिकै द्रोण कहन मनलाये ॥
अरे मूढ़ मेरे ढिग आवा ❀ निश्चय भयो कालको खावा ॥
यह सुनि क्रोध भये बहु नाना ❀ एक बार मारे शत बाना ॥
ते सब शर गुरु बीचहि काटे ❀ पांच बाण तिनफिरिकै छाँटे ॥
द्रोण सात्यकी भा रण रँगा ❀ दूनो बार महाबल अङ्गा ॥
दोउ सरस रचेउ पुरुषारथ ❀ कीन्हेउ महाभायनक मारथ ॥
द्रोण गुरु या विधि शर जोरे ❀ व्यूह द्वार ठहरात न घोरे ॥

दो०-हँसि भाषेउ गुरु द्रोण तब, सुनु सात्यकिअज्ञान ।
बाहर होइ अर्जुन गयो, तुम चाहत इत जान ॥

यम अरु इन्द्र बरुण जो आवैं ❀ व्यूह द्वार होइ जान न पावैं ॥
सुनि सात्यकी किये पद बन्दन ❀ बेखटकें हाँकेउ तब स्यन्दन ॥
जौन पन्थ पारथ शुभ कीन्हेउ ❀ चक्रलीक मारग धरि लीन्हेउ ॥
जाइ व्यूह कीन्हा परवेशा ❀ रण महँ जीते बहुत नरेशा ॥
चहूँ ओर क्षत्रिय शर मारत ❀ नाना अस्त्र शस्त्र परिहारत ॥
जेहि पथ अर्जुन कीन्ह पयाना ❀ चले सात्यकी मारत बाना ॥
लरत सात्यकी आयउ तहँवाँ ❀ भूरिश्रवा भूप है जहँवा ॥
दोऊ बीर भिरे मैदाना ❀ क्रोधित लगे चलावन बाना ॥
आयो रथ अति निकटहिजाने ❀ भूरिश्रवा आनि लपटाने ॥
रथते उतरि परे दोउ धरणी ❀ मल्लयुद्ध कीन्हेउ बहु करणी ॥

दो०-भूरिश्रवा महाबल, बर दीन्हों तेहि ईश ।
गहे केश तेहि खड्ग ले, काटन चाहत शीश ॥

कोपि नरेश खड्ग कर लीन्हें ❀ शीश चलाय घात नहिंकीन्हें ॥
ताते घात नहीं बनि आई ❀ इहाँ कृष्ण अर्जुनहिं चिताई ॥
भूरिश्रवा खड्ग गहि हाथा ❀ काटत आहि सात्यकी माथा ॥
मनव्यापक शर अर्जुन छाँटे ❀ खड्ग समेत बाहु तेहि काटे ॥
उठि युयुधान खड्ग तब लीन्हें ❀ भूरिश्रवा शिर छेदन कीन्हें ॥
वधि नरेश अपने रथ आवा ❀ हाँकि तुरंग अग्र को धावा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विक्रम युद्ध करत पुरुषारथ ❀ पहुँच्यो जाइ लरतजहँपारथ ॥
श्रीहरि निरखि बहुत सुख पाये ❀ मलभये सात्यकि तुम आये ॥
अर्जुन युद्ध करत परतक्षक ❀ नंदिघोष पाछे तुम रक्षक ॥
अस काहि रथ हाँकउ बनवारी ❀ दल मारत अर्जुन धनुधारी ॥
दो०-एकै शर अर्जुन हने, गुण जोरत दश बाण ।
छूटतही शत होत हैं, बधत सहस परिमाण ॥
याहि विधिते सेना संहोर ❀ सन्मुख बीर जुरे ते मारे ॥
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर ❀ सो हैं जुरे गहे शारँग सर ॥
रहु रहु करि कीन्हों संधाना ❀ अर्जुन उर मारे दश बाना ॥
कृष्ण अंग दश बाण प्रहारे ❀ बीस बाण हनुमानहिं मारे ॥
सोमदत्त कीन्हों पुरुषारथ ❀ क्रोधित ह्वै जोरे शर पारथ ॥
पढ़ि रवि मंत्र बाण सब छाटे ❀ शोमदत्त को शीशहि काटे ॥
मुकुट समेत परो शिर धरणी ❀ अर्जुन रणकीन्ही यहकरणी ॥
बाह्लीक गंधार महारथ ❀ सेन समेत करत पुरुषारथ ॥
नृप कौमोद धनुष कर लीन्हें ❀ महामारु पारथ पर कीन्हें ॥
चहुँदिशि ते लागे शर मारन ❀ बहुतक जुरे कुन्त हथियारन ॥
दो०- शर वर्षत हैं वीर सब, शक्ति खड्ग की धार ॥
शूल गदा मुद्गर घने, चहूँओर की मार ॥
सेना सबै आनि रथ घेरे ❀ मारुमारु कहि चहुँदिशि टेरे ॥
पै पारथ मन नेकु न भंगा ❀ शर संधान करत रनरंगा ॥
अर्जुन बधत सेन याहि रूपाहि ❀ प्रलय होत जैसे जल भूपहि ॥
लाखन दल कीन्हें शर खण्डित ❀ रुंडमुंड धरणी सब मण्डित ॥
जुरे आई सब बीर महाबल ❀ पलभरिपारथनहिंपावत कल ॥
याहि विधि करत घोर संग्रामा ❀ जूझि गिरे कुरुपति के कामा ॥
पारथ बीरन करत निकन्दन ❀ नंदिघोष हांकत जगवन्दन ॥
जो दल अर्जुन मारि गिराये ❀ लोथिनपर हरिरथहिं चलाये ॥
याविधि सघन फौज अतिभारी ❀ प्रभु सारथि पारथ धनुधारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

महारथी सब बाण चलावहिं ❀ नंदिघोष रथ छांह छिपावहिं ॥
दो०-कठिन अस्त्र आवत जबहिं, जाहिनारिपुबचजाइ ॥
ऊपर श्रीहरि लेतशर, अर्जुन अंग बचाइ ॥
नृप काम्बोज कठिन शर मारे ❀ कृष्ण अंग शत बाण प्रहारे ॥
श्याम शरीर रुधिर छवि पाये ❀ पीत बसन तनुअरुणसुहाये ॥
क्रोधवंत अर्जुन शर छांटे ❀ नृप काम्बोज के शीशहिंकाटे ॥
हांकत अश्व जगत के तारन ❀ हर्षि वीर लागे शर मारन ॥
बहुतक आनि रथहिं लपटाने ❀ महाशूर सब बांधे बाने ॥
नंदिघोष रथ राजन घेरे ❀ सावधान अर्जुन हरि टेरे ॥
बाहु विशाल कृष्ण परिहारत ❀ अभिरत ताजन बासोंमारत ॥
पुनि अनेक शर अर्जुन छांटत ❀ रुंड मुंड वसुधा सब पाटत ॥
याविधि होतयुद्ध की करणी ❀ महामारु कछु जाइ न बरणी ॥
रथ पीछे सात्यकी है रक्षक ❀ वीर अनेक भये परतक्षक ॥
दो०—या विधि अर्जुन रण करत, होत घोर संग्राम ।
हाँक देत हय हाँकहीं, सारथि श्रीघनश्याम ॥
यावीधि अर्जुन करत मशाना ❀ भारत अवनि करत मैदाना ॥
जोती गह्यो पतित के पावन ❀ थके तुरँग सके नहिं धावन ॥
अश्व कियो चाहत जल पाना ❀ पारथ सों हरि आपु बखाना ॥
दोइ प्रहर दुइ उर्ध्वहि भयऊ ❀ तृषित तुरंग तेज घटि गयऊ ॥
अर्जुन कहा न करो अँदेशव ❀ जल उपाय करिहैं हम केशव ॥
अस कहि पारथ सर संधाना ❀ भूमि निरखि कै मान्योबाना ॥
भेदि पताल गयउ शर तहँवा ❀ भोगावती गंगा हैं जहाँ ॥
यावीधिते शायक परिहारा ❀ निकरी फूटि गंगा की धारा ॥
ताते भयो सरोवर ऐसो ❀ निमल नीर सुधा को जैसो ॥
पारथ कही कृष्ण सुनि लीजै ❀ रथते तुरंग खोलि जल दीजै ॥
दो० अस्त्र घाव क्षत्रिय करत, अभिरत बीर अनंत ।
केहि विधिते जल दीजिये, भाषैं श्रीभगवंत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्जुन कोपि किये सँधाना ❀ मान्यो सेन कियो मैदाना ॥
तब पारथ शर पंजर छाये ❀ अर्द्ध नीर शर ओट छिपाये ॥
ताते बरि निकट नहिं आये ❀ नँदिघोष नहिं देखन पाये ॥
तब अर्जुन भाषउ भगवानहिं ❀ खोलहुअश्वकरहिंजल पानहिं ॥
श्रीहरि सुनिकै जोती छोरे ❀ किये पान जल चारिउ घोरे ॥
स्वकर नाथ अश्वन को धोये ❀ फरकन लगे सबै श्रम खोये ॥
फेंट खोलि तब चूरण लीन्हें ❀ मिश्रितकारिमिश्रिततेहि दीन्हें ॥
और दवा प्रभु आपु खवाये ❀ होइ बलवंत भये सचुपाये ॥
दोऊ कर हरि धोवन कीन्हें ❀ गंगोदक झारी भरि लीन्हें ॥
चारिउ तुरँग आनि रथ जोरे ❀ चंचल चपल दिनन के थोरे ॥
दो०—कुरुदल सबै अनन्दसों, करन लगे जलपान ॥
धन्य धन्य पारथ जगत, अरिदल करत बखान ॥
चपल तुरंग हाँकि रथ दीन्हें ❀ पुनि पारथ बाणावलि कीन्हें ॥
शर पंजर ते भारत आगे ❀ चहुँओर शर बर्षन लागे ॥
महाशूर जो आगे आवत ❀ क्षण महँ अर्जुनमारिगिरावत ॥
अर्जुन बाण गिरत दल ऐसो ❀ प्रबल पवन कदली बन जैसो ॥
याहि विधि लरत शंक नहिं मनमों ❀ रुधिर प्रवाह चलत सब तनमों ॥
वीरन अंग देखि दृग भूले ❀ जिमि बसंत किंशुक तरु फूले ॥
अरुण वर्ण शोणित लपटाने ❀ खेलत मनहुँ अबीरन साने ॥
पेलि फौज रथ या विधि धावत ❀ जिमि मैनाकधरणीपर आवत ॥
या विधिते रथ हाँकत केशव ❀ धर्मराज इत करत अँदेशव ॥
खबरि हेतु सात्यकी पठाये ❀ सुधि लैके अजहुँ नहिं आये ॥
दो०-भीमसेन तुम जाहु अब, हरि अर्जुन के ठौर ।
उत चाहत सुधि लेनको, वीर न देखौं और ॥
साहस कै बांधव शुभ कीजै ❀ अर्जुन खबरि आनिमोहिदीजै॥
पहर अढ़ाई दिन भा आई ❀ अबलौं जिनके खबरिनपाई ॥
नृप आज्ञा माथे पर लीन्हें ❀ रणको भीमसेन शुभ कीन्हें ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

व्यूह द्वार जब रथ पहुँचाये ❀ द्रोण गुरु देखन तब पाये ॥
क्रोधवंत शारँग कर लीन्हें ❀ ते शर गुरु बीचहिं क्षयकीन्हें ॥
अपर पांच झर मारे पायल ❀ ताते किये अश्व रथ घायल ॥
हँसि गुरु द्रोण कही यह बानी ❀ सब दिन भीम परमअज्ञानी ॥
नन्दिघोष रथ हरि सम सारथ ❀ सके न द्वार जान याहिपारथ ॥
याहि मारग ह्वै जान न पैहो ❀ पारथ गये तितिहिं ह्वै जैहो ॥
दो०-भीमसेन अति क्रोध करि, कहे द्रोण सों बैन ।
द्वार पोलि अब जातहौं, तुम देखत बधिसैन ॥
अर्जुन के धोखें जनि रहिये ❀ सावधान होई सारँग गहिये ॥
धावा उतरि छाड़ि के स्यन्दन ❀ मनमें सुमिरे श्रीजगबन्वन ॥
लघु संधान द्रोण गुरु मारत ❀ बाँये अंग भीम सब टारत ॥
प्रबल तेज शोणित शर छूटत ❀ बज्र शरीर लागि सब टूटत ॥
जाइ गदा रथ हेठ लगाये ❀ लैभुजबल गुरु सहित उठाये ॥
द्रोण समेत फेंकि रथ दयउ ❀ गिरेउ न बीच कोश दुइगयउ ॥
गिन्यो भूमि टूट्यो तब स्यन्दन ❀ अश्व सारथी मथो निकन्दन ॥
उठिकै द्रोण पयादे धाये ❀ तब लगि भीम व्यूहमहँआये॥
चहुँदिशि गदा कोपि परिहारे ❀ सन्मुख जेहि पाये तेहि मारे ॥
गज मारे अनेक मय कीन्हे ❀ बहुतकफेंकि गगनमहँ दीन्हें ॥
दो०-बहुतक मारे चरणते, बहु मुष्टिका प्रहार ।
भीमसेन सेना सबै, या विधि कीन सँहार ॥
रथते रथ गज सों गज मारे ❀ पकरि अश्व पर अश्व प्रहारे ॥
सन्मुख आय बीर शर जोरत ❀ गदाघाव तिनको शिर फोरत॥
याहि विधि कीन्हेंसेनानिकन्दन ❀ हय गज मत्त तोर वहुस्यन्दन॥
लैकर गदा क्रोध करि धाये ❀ वीरन मारत वार न लाये ॥
हांक मारि कै गदा प्रहारे ❀ एक बार सहसन दल मारे ॥
याहि विधि लरत चले परतक्षक ❀ पहुँचे जाय कर्ण तहँ रक्षक ॥
देख्यो कर्ण वृकोदर आये ❀ रुकु रुकु कहि गुण धनुषचढ़ाये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आवत कहा और के धोखे ❀ अस कहिबाणचलायो चोखे ॥
भीम अंग मारे शर जबहीं ❀ हाँक मारि के धायो तबहीं ॥
दो०-रथ सारथि चूरण कियो, जूझे चारि तुरँग ।
गज अनेक मारन लगे, रचो भीम रणरँग ॥
अर्जुन कही भीम प्रभु आवत ❀ युद्ध करत हैं हाँक सुनावत ॥
श्रीहरि कही दूरि अति पारथ ❀ योजन डेढ़ बीच पुरुषारथ ॥
कर्ण अपर रथही चढ़ि आये ❀ क्रोधित ह्वै बहु बाण चलाये ॥
लाग्यो घाव भीम के तनमें ❀ अधिक क्रोधउपज्योतबमनमें ॥
लैकर गदा कोपि परिहारे ❀ चारिउ तुरँग सारथी मारे ॥
चक्र सहित टूटो तब स्यदंन ❀ आतुरभागि चलेरविनन्दन ॥
औरहि रथ कीन्हों असवारी ❀ सन्मुख जुरे वीर धनुधारी ॥
तब या विधि कीन्हों संधाना ❀ भीम अंग मारे दश बाना ॥
अपर साठि शर भल्लुक लीन्हें ❀ ते शर चोट शीश पर कीन्हें ॥
तीन सहस शर ऊपर लागे ❀ थके भीम पग चलतन आगे ॥
दो०-कर्ण धनुर्द्धर अति प्रबल, या विधि मारे बान ।
भीम अंग झाँझर सबै, मोहि गिरे मैदान ॥
श्रम जल रुधिर अंग महँ बह्यो ❀ गज लोथिन के बीचहि रह्यो ॥
मुर्च्छित भये पाण्डुके नन्दन ❀ कर्णवीरहाँक्यो तब स्यन्दन ॥
रहे दूरि अति निकटाहि आये ❀ धनुष अंग तनुखेादि जगाये ॥
उठो भीम कोजै रण करणी ❀ मोहित कहा परयो है धरणी ॥
खाहु बहुत सोवहु निज धामा ❀ रण महँ काह तुम्हारो कामा ॥
जीव दान मैं तातें दीन्हों ❀ कुन्तीमातु माँगिकै लीन्हों ॥
यह कहि कर्ण चले पुनि आगे ❀ भीमसेन मूर्च्छा तब जागे ॥
शीतल षवन परस तनु कीन्हें ❀ श्रम भा दूरि गदाकरलीन्हें ॥
अपनो बल तब भीम सँभारो ❀ सेना पेलि अग्र पगु धारो ॥
या विधि चल्यो करत पुरुषारथ ❀ कृष्णसमेतलरत जहँ पारथ ॥
दो० भीमसेन कह हाँक दै, मैं पहुँच्यो अब आय ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पारथ तुम निरखत कहा, बधौ सेन मन लाय ॥
भीम सात्यकी पाछे आवत ❀ आगे नंदिघोष रथ धावत ॥
भीमसेन राजन सँहारे ❀ पुनिसात्यकी अमितदल मारे ॥
हाँके तुरँग पतित के पावन ❀ रुधिर नदी अतिबढ़ीभयावन ॥
मत्त गयंद भिरे हैं कैसे ❀ दोऊ ओर कगारक जैसे ॥
बार सेवार सरस अरुझाने ❀ फेन समान पाग उतराने ॥
टूटे खड्ग मीन सम चमकहिं ❀ ढालमनहुँकच्छपसम दमकहिं ॥
कटे शीशधर बख्तर राजैं ❀ मनहुँग्राह जल माहिं बिराजैं ॥
याविधि कीन्ह्येउ खेत भयंकर ❀ नाचत मुण्ड लिये हैं शंकर ॥
भूत बेताल पिशाच सयाने ❀ रुधिर मांस सब खाइ अघाने ॥
दो०-योगिनि खप्पर भराति हैं, काग कंगकी भीर ।
गीध शृगाल अनन्द सों, बोसत सरिता तीर ॥
यहि विधिते कीन्ह्यों रण भारथ ❀ पारथ करत जहाँ पुरुषारथ ॥
महावीर कोटिन शर मारत ❀ बाणन ते अर्जुन सँहारत ॥
याहि विधि होत महारण शरसे ❀ अस्त्र समूह बुंद सम बरसे ॥
सबै शूर सरदार महाबल ❀ पल भरि नहिं पारथपावत कल ॥
अर्जुन हाथ बाण जो छूटत ❀ सेना बेधि धरणिं महँ फूटत ॥
धर्मराय कुरुपति के सैनहि ❀ हितअनहित रविदेखत नेनहि ॥
चक्रवाक पाण्डवदल जानत ❀ तमउलूक कुरुदलनिशिमानत ॥
बधे जयदर्थ पाण्डु दल भावत ❀ कौरवदल सब चहत बचावत ॥
दो०-व्यास देव उपमा कही, दोउ दलहि बिचारि ।
अर्जुन प्रण जयदर्थ बध, बाल अप्रौढ़ा नारि ॥
आतुर ह्वै अर्जुन शर छाँटत ❀ बीर अनेकनके शिर काटत ॥
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ ❀ हाँक देत हाँकत रथ सारथ ॥
बाह्लीक कृतबर्मा अत्री ❀ सन्मुख आनि जुरे सब क्षत्री ॥
मारु मारु के सब रण टेरे ❀ चहुँदिशिं नन्दिघोष रथ वेरे ॥
अश्वत्थामा पाषा तब आये ❀ सब मिलिबाणबुंदझरि लाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सैन अनेक अस्त्र पारिहारत ❀ साँग शूल मुद्गर सों मारत ॥
यहि विधि होत महारण भारी ❀ हरि सारथि पारथ धनुधारी ॥
श्रीहरि तब अपने मन जाने ❀ प्रहर दिवस बाकी अनुमाने ॥
जो सब दिवस बीति कै जैहे ❀ सन्ध्या पारथ प्राण गँवैहै ॥
जो अर्जुन निज प्राण गवाँवा ❀ मेरो अयश सबै जग गावा ॥
दो०—पाँडव मेरे परम धन, पारथ प्राण समान ।
अर्जुन केहि विधि राखिये, करत सोच भगवान ॥
श्रीहरि कही सुदर्शन धावहु ❀ बेंड़े होई कै सूर्य छिपावहु ॥
हरि आज्ञा माथे धरि लीन्हा ❀ तब रविओट सुदर्शन कीन्हा ॥
गगन दिवस तकि तेज निहारी ❀ भई साँझ कुरुसेन पुकारी ॥
प्रमुदित ह्वै कौमुदी प्रकाशा ❀ पांडव दल तब भयो निराशा ॥
संध्या देखि थकित भे पारथ ❀ डारेउ धनुष तजेउ पुरुषारथ ॥
पारथ धनुष डारि जब दीन्हें ❀ मिटो युद्ध सबके मन कीन्हें ॥
दुर्योधन आनँद ह्वै आये ❀ सेन समूह सबै पलटाये ॥
तब पारथ यहि भाँति बखाना ❀ कुरुपति करहु चिता निरमाना ॥
सुनिकै दुर्योधन मन हर्षेउ ❀ जिमिचातक जलस्वातविषेंउ ॥
कुरुपति की आज्ञा जब पायो ❀ शतबंधुनमिलिचिता बनायो ॥
दो०—चिता चढ़न अर्जुन चल्यउ, कहेउ कृष्ण समुझाय ।
धनुष बाण लेकर चढ़ेउ, क्षात्रिय धर्म्म न जाय ॥
हरि आज्ञा पारथ मत बढ़ेऊ ❀ लैकर धनुष चिता पर चढ़ेऊ ॥
कुरुपति तब निरखन को लागे ❀ कही शकुनि जयदर्थहि आगे ॥
तुव कारण मारेउँ सब सैना ❀ पारथ मरण देखिये नैना ॥
याते और न है सुख कोई ❀ देखत नयन शत्रु क्षय होई ॥
उठि जयदर्थ निहारे जबहीं ❀ श्रीहरि गगन तकायो तबहीं ॥
कर्षि सुदर्शन तब ढिग आये ❀ रवि प्रकाशभा दिवस लखाये ॥
चकृत सबहिं अचंभा माने ❀ तब श्रीहरि पारथहिं बखाने ॥
अर्जुन गहरु करत केहि काजा ❀ देखत तुमहिं सिंधु के राजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❀ कंठ ताकि कै मारेउ बाना ॥
जुझे शीश परन माहि चह्यउ ❀ तब अर्जुन सों माधवकह्यउ ॥

दो०-अंतरिक्ष शिरलै चलहु, सुनहु बचन परिमान ।
द्रोणपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि सबलासिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

सुनि अर्जुन कीन्हेंउ संधाना ❀ लैशरशीश चल्यउ असमाना ॥
हरि अर्जुन रथ पर चढ़ि धाये ❀ शर लागत शिर गिरननपाये ॥
पहुँचायो शिर पारथ बाणन ❀ जहाँसुरथ तप साधतकानन ॥
धन्यो ध्यान अंजलिकरसाधत ❀ पुछ हेतु शंकर अवराधत ॥
कही कृष्ण अर्जुन सो ऐसो ❀ वाके हाथ परत शिर जैसो ॥
याहि बिधिते अर्जुन शर मारे ❀ नृप के हाथ शीश लै डारे ॥
छूट ध्यान चिंता मन कीन्हेउ ❀ मृतकहिशीशडारिमाहि पीन्हेउ ॥
गिरो शीश धरणी महँ जबहीं ❀ माथो सुरथ काटिगा तबहीं ॥
छूटे प्रण गिन्यो तब धरणी ❀ कहिनजातिबिधिकीयह करणी॥
अर्जुन देखि भये भ्रम भारी ❀ यह चरित कहिये बनवारी ॥

दो०-शीश गिरो वाके करहि, भूमिसो दीन्हेउ डारि ।
प्राण तज्यो केहि कारणे, हमसों कहिय मुरारि ॥

कथा पुरातन श्रीहरि कह्यऊ ❀ सुरथ नाम राजा यह रह्यऊ ॥
सिंधुराज महा बल भारी ❀ क्षत्रिय प्रबल वीर धनुधारी ॥
राजभोगइनवहुर वीध कीन्हा ❀ पुनितपेहतु जायमन दीन्हा ॥
शंकर की पूजा अवराधे ❀ सेवा करि गौरी व्रत साधे ॥
भयो प्रसन्न कहेंउ गंगाधर ❀ जो इच्छा मागहुँ सोई बर ॥
दीजै पुत्र सुरथ यह कह्यऊ ❀ मरे न अमर सदा जगरह्यऊ ॥
सुनिकै शंकर कहा बुझाई ❀ अमर छाड़ि माँगौ बर भाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जब मैं कहहुँ मरे तब स्वामी ❀ यह बर दीजै अन्तर्य्यामी ॥
जो वाको शिर करहुँ निपाता ❀ तुरत मरौ तब ताकत ताता॥
एवमस्तु कहि शिव बर दीन्हें ❀ तब जयदर्थ जन्मजगलीन्हें ॥
दो०-दिनदिन सूत बाढन लग्यो, भयो महारथ बीर ।
शिव पूजा संतत करत, श्रीसुरसरि के तीर ॥
योधन की बहिनि दुशाला ❀ कै विवाह दीन्हेउ जयमाला ॥
जब भारत रणको पग दीन्हेउ ❀ सुरथ जाइ तपबनमेंकीन्हेउ ॥
सुतके कुशल तपस्या करई ❀ इनहिं कहेजयदर्थ सों मरई ॥
ता कारण इनको शिर ल्याये ❀ ताहि मारिकै तुम्हैं बचाये ॥
यहिविधि सबमाधवकहिदीन्हों ❀ हांको रथभवनाहिंशुभ कीन्हों ॥
धर्मराज सेना सब लीन्हें ❀ पारथ पंथ चितै चित दीन्हें ॥
याहि अन्तर रथ देखन पाये ❀ सबहिंकह्यो हरिअर्जुन आये ॥
पारथ तब नृपके मग परसे ❀ आनान्दित सबके मन हरषे ॥
धर्मराय माधव सों भेंटे ❀ त्रिविध तापतनुकी सबमेटे ॥
हरि भाष्यउ प्रण राख्यउ पारथ ❀ बाधि जयदर्थ कियो पुरुषारथ ॥
दो०-धर्मराज भाषन लग्यो, श्रीहरिसों यह बैन ।
पारथ प्रण रक्षा सदा, तूमहिं पंकज नैन ॥
जहँ जहँ गाढ़ पर्‍यो परतक्षक ❀ सब दिन तहां भये तुम रक्षय॥
लाख भवन कुलनाथ बनाय ❀ जरत तहां प्रभु तुमहिं बचाये ॥
रहौ पास सब दिन बनवारी ❀ द्रपदसुताकी लाज निवारी ॥
बन में दुर्वासा छल कीन्हेउ ❀ हे जगदीश राखि तुमलीन्हेउ ॥
युद्ध के हेतु विभीषण आये ❀ मारत प्रभु तुम हमहिं बचाये ॥
अब कौरव विष भोजन दीन्हें ❀ तहँहुँ आप रक्षा तब कीन्हें ॥
बनमों तृषित भये बनवारी ❀ कर उठाय दीन्हेउ तुम झारी ॥
दीनबन्धु मोरे हित काजा ❀ चरण धोइ बैठारेउ राजा ॥
नारायण शर भीषम मार्‍यो ❀ मरत भीमप्रभुतुमहिं उबार्‍यो ॥
हनुमत सों हठ पारथ कीन्हेंउ ❀ दीनदयालु राखि तुम लीन्हेउ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० पारथ प्रण रक्षक सदा श्रीवर दीनदयाल ।
जाके तुमसे सारथी' ताहि न जीतै काल ॥

जो जो चरण तुम्हारे ध्यावै ❀ संकट मो प्रभु सबहिं बचावै ॥
गृह गृहीत प्रभु सुमिरत कीन्हें ❀ धाये त्वरित राखि तेहि लीन्हें॥
प्रण प्रहलाद राखि विन कारण ❀ नरहरि रूप धरो जगतारण ॥
ध्रुव कहँ अटल करेउ सब ऊपर ❀ विद्यामान बिभीषण भूपर ॥
भक्त वश्य भीषम प्रणकारण ❀ रण महँ अस्त्रगह्योजगतारण॥
धर्मराय याहि भांति बखाने ❀ श्रीपाति सुनत बहुतसुखमाने ॥
दुर्योधन गुरु द्रोणहिं कह्यऊ ❀ आज युद्ध पारथ प्रण रह्यऊ ॥
तुम सब भये न कोऊ रक्षक ❀ बाधि जयदर्थ गयो परतक्षक ॥
सो सुनि द्रोण कहन असलागे ❀ सत्य बचन राजा के आगे ॥
बल ते अर्जुन सक्यउनमारण ❀ रच्यो उपाय जगतके तारण ॥

दो० रवि स्थित निशि ह्वै गई' छल कीन्ह्यो भगवान ।
भक्त परण राख्यो कहीः सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते द्रोपणर्वाणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अब राजा जिय शोच नकरिये ❀ आजयुद्ध निशिकालीहलरिये ॥
साजी सेन बिलम्ब न लाये ❀ रथप्रति सबहिं मशाल बराये ॥
रथ प्रति चारि अश्व प्रतिदोई ❀ यहि विधि साज कियेसबकोई॥
खड़े भये चढ़ि बाजन बाजे ❀ इता दिसिभिमपराडुदलसाजे ॥
बरत मशाल ज्योति उजियारी ❀ शोभा मानहुँ परब दिवारी ॥
सुवरण शीश मुकुट छवि छाजै ❀ मौर मनहुँ वर शीश विराजै ॥
सुंदरि हाथ आरती लीन्हें ❀ सुरकन्यन व्याहन मनदीन्हें ॥
सिंहनाद दोऊ दल कीन्हें ❀ बीरन धनुष फोंक मन दीन्हें ॥
गज सों गज रथ सों रथ जोरे ❀ पैदल सों पैदल रण घोरे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

याहि बिधि लरत जोरसों जोरे ❀ महाशूर मन नेकु न मोरे ॥
दो०-अर्जुन लीन्ह्यों धनुष कर, कीन्हें शर संधान ।
श्रीरवि सों कर उदित छबि, रथ हाँको भगवान ॥
पांडव दल अनेक रण मारे ❀ तब गुरु द्रोण बाण परिहारे ॥
अर्जुन कीन्हेउ लघु संधाना ❀ कुरु दल जूझि गिरे मैदाना ॥
निशाकाल महँ अति पुरुषारथ ❀ द्वउ दल कीन्हें अतिशय भारथ ॥
शकुनी ते सहदेव लराई ❀ महा युद्ध कीन्हेउ प्रभुताई ॥
जुरे भीम दुश्शासन साथा ❀ दोऊ सबल गदा लै हाथा ॥
नकुल भिरे कृतवर्मा क्षत्री ❀ कृपाचार्य अरु सात्यकि अत्री ॥
जरासंध सुत द्रोणी संगा ❀ दोऊ मचे महा रण रंगा ॥
शल्य नरेश युधिष्ठिर राजा ❀ दोऊ लरत आप जय काजा ॥
धृष्टद्युम्न अरु कर्ण महारथ ❀ बाणन सों छायो सब भारथ ॥
अंधकार भा निशि अँधियारी ❀ चमकत अस्त्र होत उजियारी ॥
दो०-सुनियत धनु टंकार अति, निरखत अस्त्र उदोत ।
हाँक देत क्षत्री सबहिं, निशा युद्ध इमि होत ॥
द्रुपद नरेश द्रोण गुरु साथा ❀ खड्ग लेइ गुरु काट्यउ माथा ॥
गिरेउ द्रुपद धरणी महँ जबहीं ❀ पाछेको गुरु जान्यउ तबहीं ॥
धोखे मित्र बध्यो हम रनमें ❀ उपज्यो शोच द्रोण के मनमें ॥
महारथी करि एक न लागे ❀ चलहिं न एक एक के आगे ॥
सूझि न परत सघन अँधियारी ❀ आगे परत जात सो मारी ॥
मुकुट अनेक धरणि महँ परेउ ❀ झलकत ज्योति जरायनजरेऊ ॥
गुरू द्रोण सबहींते कह्यो ❀ निशि को युद्ध अचेतो रह्यो ॥
दोऊ दल विश्रामहिं लीन्ह्यों ❀ गुरू द्रोण मन में दुख कीन्ह्यों ॥
याहि विधि कहतभ कुरुपति राजा ❀ गुरु शोच कीजै केहि काजा ॥
अंधकार निशि गये न चीन्हें ❀ अपने हाथ मित्र बध कीन्हें ॥
दो०-दुर्योधन भाषन लगे, कहो गुरुहि समुझाय ।
द्रुपदामित्र केहि विधि भये, सुनि संदेह नशाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

द्रोण गुरू आये यहि बातन ❀ हे नरेश सुनु कथा पुरातन ॥
तप कारण बन में हम आये ❀ यमुना मज्जन करन सिधाये ॥
द्रुपद देखि कीन्हों परणामा ❀ आशिष दीन्ह होहु मन कामा ॥
तब हम कहा कौन तुम अहहू ❀ कौन वर्ण केहि आश्रम रहहू ॥
राजा द्रुपद अहै मम नामा ❀ विधिवशतजिआये निजधामा ॥
लिये किरातन राज्य हमारे ❀ हारे युद्ध बनै पगु धारे ॥
रानी अरु मंत्री लै साथा ❀ आये बनहिं अस्त्र नहिं हाथा ॥
हम भाषो राजा सुनि लीजै ❀ मेरे साथ गमन अब कीजै ॥
बधि किरात तुम कहँ बैठावों ❀ द्रोण नाम तब जगत कहावों ॥
कही द्रुपद सोइ बड़ो धनुर्द्धर ❀ जूझी सैन्य सकल जाके बल ॥

दो०-क्षत्रिय ह्वै जुरि नहिं सके, तुम द्विज कोमल अंग ।
धनुविद्या जानत नहिं, किमि करिहौं रण रंग ॥

तब हम या बिधि बचन सुनाये ❀ जेहि प्रकार धनु विद्या पाये ॥
परशुराम तब यज्ञ बिथारे ❀ सुनि सब सुनत तुरत पगु धारे ॥
पूजे यज्ञ दाक्षिणा दीन्हा ❀ लै सब विप्र भवनशुभ कीन्हा ॥
बच्यो न कछू सबै उन दयऊ ❀ तब हम जाय उपस्थित भयऊ ॥
परशुराम यह बचन सुनाये ❀ अवसर गये विप्र तुम आये ॥
बच्यो कमंडलु और कुशासन ❀ धनुष बाण कर एक न आसन ॥
तब हम कही सुनो हे स्वामी ❀ तुम जानत सब अन्तर्यामी ॥
बहुत भाँति दारिद सताये ❀ तब हम तुम्हैं ताकि कै आये ॥
यकइस बार नक्षत्रिन कीन्हें ❀ धरती धन विप्रन कहँ दीन्हें ॥
कही नारि तुम बेगि सिधावो ❀ परशुराम ते धन लै आवो ॥

दो०-आशा करि आये हते, पै विधि कीन्ह निरास ।
कर्म्महीन जो जगत मों, भवन कुबेर उपास ॥

भृगुपति चित्त दया ह्वै आई ❀ निकटबोलि मोहिं बैन सुनाई ॥
धनु विद्या चाहहु जो लीजै ❀ दुखी विप्र तुहिं विसुखन कीजै ॥
यह कहि धनुविद्या मोहिं दीन्हें ❀ पुनि सब अस्त्र समर्पण कीन्हें ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

परशुराम दीन्हें धनु सायक ❀ तीनि लोकके जीतन लायक ॥
जब सब भेद द्रुपद सुनि लीन्हों ❀ आनँद सहित मित्रता कीन्हों ॥
जो आपुहि किरात बध कीजै ❀ आधो राज्य बाँटिकै लीजै ॥
लै द्रुपदहि प्रणशालहि आये ❀ फल अरु मूल अहार कराये ॥
प्रात होत लीन्ह धनुबाना ❀ द्रुपद द्रोण मिलि कीन्ह पयाना ॥
सुनि किरात सब आतुर धाये ❀ तीनि कोटि सेना जुरि आये ॥
भाष्यो द्रुपद मित्र सुनि लीजै ❀ आये शत्रु युद्ध अब कीजै ॥
दो०—ब्रह्म अस्त्र सँधानि कै, हम कीन्हों परिहार ।
तीनि कोटि चतुरंग दल, जारि कीन्ह सब छार ॥
द्रुपदहि सिंहासन बैठाये ❀ तिलक देइ शिर छत्र धराये ॥
भाषो द्रुपद मित्र सुनि लीजै ❀ आधो राज्य भोग अब कीजै ॥
रहै राज्य सुस्थिर तव पासा ❀ हम तप हेतु जात बनवासा ॥
अस कहि हम प्रणशालहि आये ❀ मुनि समाज सँग तप मनलाये ॥
विधिबश पुत्र जन्म जग लीन्हें ❀ अश्वत्थमा नाम तेहि कीन्हें ॥
मुनि कुँवरन सँग खेलत डोलत ❀ बातैं मधुर अमी सम बोलत ॥
सब मिलि कह्यो दूध हम पाये ❀ सुनि सो पुत्र मातु पहँ आये ॥
बालक कही दूध अब दीजै ❀ माता कही कहा अब कीजै ॥
तंदुल हेतु भवन महँ थोरे ❀ शिलते बाँटि नीरते घोरे ॥
नारि द्रोण द्रोणी को दीन्हें ❀ हर्षवन्त ह्वै पानहि कीन्हें ॥
दो०—हर्षवन्त खेलत चलो, मेरो करि अपमान ।
निरखि नारि रोवन लगी, जियमों भई गलान ॥
तेहि अँतर हम भवनहिं आये ❀ रोवत देखि महा दुख पाये ॥
तिय लागिं करसों शिर मारन ❀ हम पूँछी रोवत केहि कारन ॥
दूध स्वादु मम पुत्र न जानत ❀ उज्ज्वल नीर दूध करि मानत ॥
हम भाषो जनि होउ निरासा ❀ चलहु तुरत द्रौपद के पासा ॥
देखि नगर आनँदित भयऊ ❀ तब चलि भूप द्वारहि गयऊ ॥
प्रतिहारन कहँ जाई जनायो ❀ कहो कि जाय मित्र नृप आयो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनिकै तुरत गये प्रतिहारा ❀ राजा मित्र खड़े तब द्वारा ॥
द्विज अति दुखित बसनतनुफाटे ❀ सुनत द्रुपद प्रतिहारन डाटे ॥
द्विज सँग्रह है बड़ो अपावन ❀ दूरि करौ पावै नहिं आवन ॥
यह सुनि द्वारपाल सब धाये ❀ खेदि दिये हम जान न पाये ॥
दो०--शापदिये हम क्रोध करि, जानि परम विपरीत ।
धनमदते अपमान करि, अति उदास चित थीति ॥
पुरी हस्तिना तब हम आये ❀ तुम बालक खेलत मन लाये ॥
कुपहि परो गेंद जब जाने ❀ तुम सब शोच चित्त अनुमाने॥
सिद्धबाण सँधानहिं कीन्हें ❀ गेंद उठाय हाथ तब लीन्हें ॥
तुम सब देखि अचम्भव भयऊ ❀ लयो गेंद भीषम पहँ गयऊ ॥
सुनत चित्त भीषम अनुमाने ❀ आये द्रोण सत्य हम जाने ॥
आदर करि निज गृह लैआयो ❀ चरण धोय आसन बैठायो ॥
धेनु अनेक बहुत बिधि दीन्हें ❀ पांचक गाँव समर्पन कीन्हें ॥
मेरे सँग रहौ सुख पैहो ❀ बालक सबलै अस्त्र सिखैहो ॥
सिखये अस्त्र निपुण सब कीन्हें ❀ सब मिलिकै गुरु दक्षिण दीन्हें ॥
पारथ ते कछुवो नहिं लीन्हें ❀ यहै बात याचज्ञा कीन्हें ॥
दो०--द्रुपदमित्र मेरो रहै, तिन कीन्हों अपमान ।
बाँधि चरणतर डारिये, मांगत हौं यह दान ॥
अर्जुन जाइ किये तहँ पारथ ❀ महायुद्ध कीन्हें पुरुषारथ ॥
याहि विधिते पारथ शर साध्यो ❀ नागफाँस महँ द्रुपदहि बाँध्यो ॥
मम चरणन तर लाकै डारे ❀ गुरुदक्षिणा सों आपु उबारे ॥
तब हम छाँड़ि द्रुपद कहँ दीन्हा ❀ मित्र जानिकै भाषण कीन्हा ॥
यहि विधिमित्र द्रुपद सुनु राजा ❀ मारेउ आजु तुम्हारे काजा ॥
सब मिलिकै आये निज धामा ❀ दोऊ दल कीन्हेउ विश्रामा ॥
होत प्रात कुरु पाँडव साजे ❀ कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे ॥
बेगि अनी आये मैदाना ❀ क्षत्रिय लगे चलावन बाना ॥
दल चतुरँग चले सब आगे ❀ नँदिघोष हाँकन हरि लागे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri, Funding by IKS.

अर्जुन कीन्हें सेन निपाता ❀ कुरुपति कही द्रोण सोंबाता ॥
दो०-हम अर्जुन सन्मुख लरैं, यह इच्छा मन माह ।
सो पुनि भाष्यो द्रोण गुरु, को चलिहैं नरनाह॥
पढ़ि नारायण कबचहिं दीन्हें ❀ राम कवच तेहिं ऊपर कीन्हें ॥
भाष्यो द्रोण भूप अब लरिये ❀ सन्मुख अर्जुन ते रण करिये ॥
दृढ़ ह्वै धनुष बाण कर धरिये ❀ शत्रु निपाति राज पुनि करिये॥
सुनि अर्जुन कीन्हेंउ संधाना ❀ हृदय ताकि कै मारेउ बाना ॥
निष्फल भयै बाण सब टुटे ❀ कबच प्रताप अंग नहिं फूटे ॥
अर्जुन देखि क्रोध जिय कीन्हें ❀ तीक्षण बाणदिव्यकरलीन्हें ॥
मारेउ दुर्योधन के अँगा ❀ भेद न भये बचे सब अँगा ॥
तब पारथ यहि भांति बखाने ❀ अहो नाथ यहु भेद न जाने ॥
सुनि श्रीपति यहि भांति बुझाये ❀ कबच भेद नृप द्रोण बताये ॥
दो०-द्रोण कवच पढ़िकै दये, बाण न फूटत अँग ॥
ता कारण पारथ सुनहू, होत सकल शर भँग ॥
भेद जानि कै शर परिहारे ❀ चारिउ तुरंग सारथी मारे ॥
विरथ भयो दुर्योधन जाना ❀ तब गुरु द्रोण बाण संधाना ॥
पांच बाण पारथ उर मारे ❀ कृष्ण अंग दश बाण प्रहारे ॥
अश्वन तनु मारे दश बाना ❀ सहस बाण मारे हनुमाना ॥
पारथ कोपि गहे शाँरँग कर ❀ होन लगे अति मारु परस्पर ॥
तब अर्जुन ऐसे शर जोड़े ❀ मारेउ रथके चारिउ घोड़े ॥
द्रोण अपर रथ किये सवारी ❀ अर्जुन द्रोण युद्ध भा भारी ॥
महारथी सब हते धनुर्धर ❀ कठिन युद्ध कीन्हें तेहिअवसर॥
धर्मराय कीन्हें पुरुषारथ ❀ सन्मुख रच्योशल्य सों भारथ ॥
क्षत्रिय सकल करत सँग्रामा ❀ कुरुपति धर्मराज के कामा ॥
दो-बाण वृष्टि अति होति तब, शूल शक्ति परिहार ।
मुद्गर तोमर फरी कर, गदा खड्ग की मार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सबहिं अस्त्र क्षत्रिय परिहारहिं ❀ सन्मुखजेहिपावहितेहि मारहिं ॥
यहि विधि युद्ध करे मन लाये ❀ लै कर गदा भीम तब धाये ॥
गज अनेक मारे तरवारा ❀ रथी अश्व पैदल सँहारा ॥
देखि कर्ण कीन्हेउ संधाना ❀ भीम अंग मारे दश बाना ॥
रथ चढ़ि भीम धनुष कर लीन्हें ❀ बाण वृष्टि तेहि दल परकीन्हें॥
धृष्टम्युन दुश्शाशन क्षत्री ❀ दोऊ जुरे महा बल अत्री ॥
कृपाचार्य कीन्हें संधाना ❀ भिरे नकुल तेहि सन मैदाना॥
काशीराज द्रोण रण मंडे ❀ बाणन ते रिपु सेन बिहंडे ॥
काशीराज कीन्हेउ पुरुषारथ ❀ बाणन ते छाये सब भारथ ॥
द्रोणी अँग तीनि शर मारे ❀ चारि बाण अश्वन परिहारे ॥

दो०-क्रोधबन्त द्रोणी भये, कीन्हेउँ शर संधान ।
द्रोण पर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सन्ध्या जानि किये विश्रामा ❀ दोऊ दल आये निज धामा ॥
भूप युधिष्ठिर कहिवे लागे ❀ मन मलीन मोहन के आगे ॥
चौदह दिवस भयो रण भारथ ❀ भीषम द्रोण सारिस पुरुषारथ ॥
आपु युद्ध रचना जब कीन्हें ❀ तब भीषम शरशय्या लीन्हें ॥
गुरू कीन्ह सब सेन सँहारण ❀ अब उपाय कहिये जगतारण॥
श्रीहरि आपु कहन अस लागे ❀ राजा धर्मराज के आगे ॥
काल्हि प्रात या विधि रण कीजै ❀ आज्ञा नृपति भीम को दीजै॥
द्रोणी फेंकि दूरि करि डारहिं ❀ आपु द्रोण मरिहैं बिनमारहिं ॥
कह्यो भीम सुनिये जगवन्दन ❀ द्रोण पुत्र फेंको गहि स्यदन्न ॥
यहि विधि कहिभूपहिं समुझाई ❀ शयन किये निद्रा तब आई ॥
होत प्रात कीन्ही असवारी ❀ कुरु पांडव साज्यो दल भारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० बम्ब दमामा होत हैं, अरु बैरख फहरात ।
क्रोधवंत रिसमों भरे, बीर चले सब जात ॥
महामत्त कुंजर बहु आवत ❀ कंबु मनहुँ घन शब्दसुनावत ॥
उड़िकै गरद लागि असमानू ❀ सूझि न परत बिलोक्यउ भानू ॥
हरित अरुण बैरख फहराने ❀ उपमा इन्द्रधनुष सम जाने ॥
दोऊ दल अति शोभा पावत ❀ हींसत तुरँग जु पैदल धावत ॥
धनु टंकोर घोर ध्वनि राजै ❀ उभय फौज महँ मारु बिराजै ॥
क्षत्रिय सकल करन रण लागे ❀ अर्जुन द्रोण कर्णके आगे ॥
श्वेत वर्ण पारथ रथ साजे ❀ श्याम वर्ण रथ द्रोण बिराजे ॥
हाँक देत हाँकत जगतारण ❀ सारथ भये मक्तके कारण ॥
अर्जुन द्रोण सरिस पुरुषारथ ❀ दल चतुरंग भयानक भारथ ॥
दो०—दोउदल वीरनरण रचेउ, कहि न सकहि कविवैन ।
शर समूह छाये गगन, रवि नहिं सूझत नैन ॥
कुंजर भिरत करत रण घोरा ❀ होई चौदन्त जोर सों जोरा ॥
रथी रथी सो सरस लराई ❀ छुटत बाण बुंद की नाईं ॥
अश्व अश्व लै सन्मुख जोरहिं ❀ शूल घाव सों बख्तर फोरहिं ॥
पैदल ते पैदल रण घोरा ❀ अरुझे सबहिं जोरसें जोरा ॥
शूल साँग मुद्गर परिहारे ❀ तोमर गदा खड्ग सों मारे ॥
जूझि गिरहिं भारत मैदाना ❀ सुरपुर गवनहिं चढ़े बिमाना ॥
यहिविधिकरहिं युद्धकी करणी ❀ रुंड मुंड पाटे सब धरणी ॥
भूत वेताल योगिनी गावहिं ❀ जंबुक अपनो भाव दिखावहिं ॥
उड़हिं काक अंत्रहि लै कैसे ❀ टूटे डोरि चंग गति जैसे ॥
यहि विधि होत भयानक भारथ ❀ क्षत्रिय सबै करत पुरुषारथ ॥
दो०-गुरू द्रोण अति क्रोधकै, मोरउ तीक्ष्ण वान ।
पाडव दल जूझे घने, छाये शर असमान ॥
अर्जुन बाण वृष्टि झरि लाये ❀ कौरव दल बहु मारि गिराये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उरझे खेत जोर सों जोरा ❀ लागे करन महारण घोरा ॥
शूल साँगि मुद्गर परिहारे ❀ सन्मुख जाइ खड्ग शिर झारे ॥
कोतल भये कटारन जोरहिं ❀ जूझि जायमुख नेकुन मोरहिं ॥
जहाँ जहाँ अर्जुन मन धावत ❀ तहाँ तहाँ हरि रथ पहुँचावत ॥
सारथि भये भक्त के कारण ❀ करि ताजन हाँकत जगतारण ॥
पार्थ [illegible]हें जे शर छूटत ❀ अंग भेदि धरणि महँ फूटत ॥
[illegible] उत बाण चलावत ❀ श्वेत श्याम रथ शोभा पावत ॥
[illegible] कोपि कियो संधाना ❀ द्रोण अंग मारे शत बाना ॥
[illegible]ण शर कोपि प्रहारे ❀ सौ शर पार्थ के उर मारे ॥

दो०-तीस बाण अश्वन हने, लक्ष्य बाण हनुमान ।
पीताम्बर तनु अरुण करि, महावीर बलवान ॥

अजुन देखि क्रोध जिय सरषे ❀ गुरु पर लागि बाणबहु बरषे ॥
पार्थ द्रोण करत पुरुषारथ ❀ बल सम दोउकरत महँ भारथ ॥
दोऊ दल महँ लोहा बाजत ❀ सिंहनाद क्षत्री गण गाजत ॥
अर्जुन द्रोण सरिस शर छाँटत ❀ बाणन ते बसुधा सब पाटत ॥
शर शर भिरत होत चिग्घारा ❀ योगिनि हाँक देत करि हारा ॥
रथते उतरि भीम तब धाये ❀ गदा घाव सब वीर गिराये ॥
कृतवर्मा राजा सँग साथी ❀ अश्वत्थामा नाम तेहि हाथी ॥
भीम ऊपर कुंजर जब धावा ❀ बीचहिं अर्जुन मारि गिरावा ॥
द्रोण पुत्र कीन्हों सन्धाना ❀ क्रोधित भीम जुरे मैदाना ॥
गुरुसुत लग्यो कठिन शर मारन ❀ पांडव दल रणगिरेउ हजारन ॥

दो०-भीमसेन अति क्रोधकै, गहि उठायकै रत्थ ।
द्रोण सुतहि फेंक्यउ तबहिं, महावीर समरत्थ ॥

तीनि शताहि योजन पारिवेशा ❀ बिधिवश गयउउडेउ सोदेशा ॥
भुवनेश्वर शंकर स्थाना ❀ अमरहतेउनहिं त्यागउप्राना ॥
चूरण भये सहित रथ सारथ ❀ लाग्योधक त्याग्यो पुरुषारथ ॥
शंकर तुरत नीर लै धाये ❀ बदन सींचिकै विप्र बचाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्जुन द्रोण सरिस रण माच्यउ ❀ जूझे घने अल्प दलबाच्यउ ॥
सब सेना यहि भाँति बखाना ❀ जूझे द्रोण पुत्र मैदाना ॥
निज सेना सों द्रोण बखानत ❀ कितसुतगयो कहोतुमजानत ॥
सब मिलि कहैं गुरू सों बैना ❀ लरत भीमसों देख्यो नैना ॥
की भाजो की जूझो रनमों ❀ यहकछुजानिपरेउनाहि मनमों ॥
दो०-कही द्रोण तब भीप्र सों, जुरो हुतो तुम संग ।
कहा भंयो सुत कित गयो, कहौ साँच रणरंग ॥
भाषो भीम गदा परिहारे ❀ रथ समेत चूरण करि डारे ॥
सुनिकै द्रोण चित्त अकुलाने ❀ मिथ्या बात भीम की जाने ॥
कह्यो द्रोण सों पारथ बैना ❀ बध्यो भीम देख्यो मैं नैना ॥
अर्जुन बचन सुनत मन ऊबो ❀ करुणासिंधु बीच जी डूबो ॥
कही कृष्ण तुम त्यागहु प्राना ❀ पूर्व आपदा विधि निर्माना ॥
अर्जुन के मन भयो अँदेशव ❀ केहि विधि आपद पाईकेशव॥
श्री हरि कही सुनहु हो पारथ ❀ अकथकथाविधि कीपुरुषारथ ॥
तप साधत जब बन महँ हते ❀ मुनि सबके आश्रम यकमते ॥
दो०-मुनि कुमार क्रीडा करत, सब मिलि एकै संग ।
उद्दालक सुत कह्यउ तब, देखहु मेरो रंग ॥
बाघ समान शब्द जो कीन्हा ❀ ऋषिनारिनकहँबहुभय दीन्हा ॥
बोलत द्रोण कूदि ढिग आवा ❀ शब्द वेधि इन बाण चलावा॥
सुखलाग्योशर बिधिकी करणी ❀ छूटे प्राण परेउ तब धरणी ॥
सब बालक मिलि शोर मचायो ❀ मुनिकैसकलविप्र गण धायो ॥
द्रोण आइ देख्यो शिशु मन्यो ❀ अपने चित्त शोच बहु कन्यो॥
क्रोधवंत उद्दालक भयऊ ❀ द्रोणहि निरखि शापतबदयऊ ॥
पुत्र शोक हौं त्यागत प्राना ❀ तुम ऐसे मरिहौ रण ठाना ॥
याहि विधिशाप द्रोण कह दीन्हा ❀ तब द्विज प्राण त्यागसोदीन्हा॥
वही समय अब आयो पारथ ❀ मुये द्रोण जीते हम भारथ ॥
भाष्यो द्रोण कृष्ण सो बचना ❀ करत सदा तुम मिथ्यारचना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०—भूप युधिष्ठिर बूझिकै, तब त्यागहिं हम प्रान।
मिथ्या कहत न धर्मसुत, सदा बचन परिमान॥

जबहिं द्रोण यह बचन सुनाये ❀ तब हरि धर्मराइ ढिग आये॥
तबहिं द्रोण राजा के आगे ❀ कर उठाई कै पूँछन लागे॥
सत्यबचन तुम सबादिनभाष्यउ ❀ हम दृढ़ता तुम ऊपर राख्यउ॥
जूझे सुत तुम देखे नैना ❀ हे नृप सत्य कहौ यह बैना॥
श्रीहरि कही भूप कहि दीजै ❀ अपने काज कहा नहिं कीजै॥
कही भूप सुनिये जगतारण ❀ मिथ्याबचनकहहुँकोहि कारण॥
सात द्वीप संपति जौ दीजै ❀ तऊ कृष्ण मिथ्या न कहीजै॥
तब श्रीहरि अस कहा बखानी ❀ केहि कारण तुम भारत ठनी॥
जबहिं भूप पाँसा मन लाये ❀ तब यह धर्म बिचारनआये॥
राजा द्रुपदसुता पटरानी ❀ गहि करकेशसभामँह आनी॥

दो०-दुश्शासन अंचल गहे, हरण चीरके काल।
तब यह धर्म कहां रहे, भाष्यो दीनदयाल॥

तुम जब लाज छाँड़िकै दीन्हेउ ❀ द्रुपदसुताममसुमिरण कीन्हेउ॥
ये बातैं बिसरी केहि कारण ❀ यहिविधिकहीजगतके तारण॥
लाख भवन कुरुनाथ बनाये ❀ अर्द्धरात्रि महँ अनल लगाये॥
विदुर खम्भ को मारग लयऊ ❀ तब तुव धर्म कहां नृप गयऊ॥
जब भीमहिं विष भोजन दीन्हेउ ❀ सुरसरिबोरि गमनघरकीन्हेउ॥
पुर पताल को नागहि गह्यऊ ❀ तब यह धर्म कहाँ तुव रह्यऊ॥
कृष्ण बचन नृपके मन आये ❀ तबद्रोणहिंया विधि समुझाये॥
अश्वत्थामा हत रण भयऊ ❀ कहिनरकीकुंजर कहि दयऊ॥
आधे बचन द्रोण सुनि पाये ❀ आधे महँ हरि शँख बजाये॥
सुनिकै द्रोण सत्य करि जानो ❀ अपनोमरण हृदय महँ आनो॥

दो०-यहि अंतर महँ सप्तऋषि, गगनपंथ महँ आय।
भरद्वाज मुनि साथ ले, द्रोणहि कहा बुझाय॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुम ऋषि बंश महा अभिमानी ❀ क्षत्री धर्म करत अज्ञानी ॥
अस्त्र घाव जो प्राण गँवावहु ❀ तौ तुम स्वर्गबास नहिंपावहु ॥
सुनि सब देखि दंडवत कीन्हें ❀ तबकरजोरिकहन कछु लीन्हें ॥
तुम आज्ञा माथे पर लीजै ❀ ब्रह्मरंध्र भेदन अब कीजै ॥
धरो धनुष झारी कर लीन्हों ❀ कैआचमन देह शुचि कीन्हों ॥
अंगन्यास करि नासा गह्यऊ ❀ धरिकर ध्यान मौनह्वै रह्यऊ ॥
याहि अन्तर विराट नृप आये ❀ सिंहनाद कै हांक सुनाये ॥
द्रोण सँभारि अस्त्र कर गहहु ❀ मारत हौं तिक्षण शर सहहु ॥
सुनिकै द्रोण क्रोध जिय कीन्हा ❀ ध्यान छांड़ि शाँरगकरलीन्हा ॥

दो०—दिव्य बाण संधानिकै, किये द्रोण परिहार ।
मुकुट सहित शिर टूटिकै, पन्योधराणिविकरार ॥

भाषो ऋषिन द्रोण के आगे ❀ छाँड़ि ध्यान तुम लरिवे लागे॥
दोउ कर जोरि द्रोण तब कह्यऊ ❀ वीर हांकि सुनि ज्ञाननरह्यऊ॥
तातें मैं विराट बध कीन्हें ❀ यह काहि बहुरि नीरकरलीन्हें ॥
करि स्नान ध्यान दृढ़ साधो ❀ परमज्योति मनमों अवराधो ॥
खैंची पवन उर्ध्वगति ध्याये ❀ ब्रह्मरंध्र भेदन कहँ आये ॥
निसरो पवन उर्ध्वगति भयऊ ❀ हरि अर्जुन देखन को गयऊ ॥
भरद्वाज ऋषि सप्तक जेते ❀ ब्रह्मलोक सँग पहुँचे तेते ॥
भारत मन क्षत्री तब लाये ❀ धृष्टद्युम्न क्रोधित ह्वै धाये ॥
रथते उतरि खड्ग लै हाथा ❀ मारो जाय द्रोण को माथा ॥
शीश समेत परो तनु धरणी ❀ द्रुपद पुत्र कीन्ह्यउ यहकरणी ॥

दो०-पाडवदल जय जय करत, जीति खडे मैदान ॥
कौरवदलहिं मलीन मन, ज्यों संध्याको भान ॥

तब रथ हांकि कर्ण चलि आये ❀ आगे ह्वै सेना अटकाये ॥
सन्धा जानि कीन्ह तबगवना ❀ कुरु पांडव आये फिर भवना ॥
आगे कथा कहन मन लायउ ❀ अश्वत्थामा कछ चैतनपायउ ॥
दोउ करजोरि शम्भु के आगे ❀ याहिविधिबिनयकरनतबलागे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फेको रणते भीम भयंकर ❀ प्राणदान दीन्ह्यउ मोहिशंकर ॥
याहि विधि वर दीजैमोहिस्वामी ❀ होहुँ जगत मे मनसागामी ॥
आजु राति पहुँचो कुरुखेता ❀ कुरु पांडव जहँ सेन समेता ॥
शंकर कही विलम्ब न लैहो ❀ एक पहर महँ जाइ तुलैहो ॥
पहर एक महँ आयो तहँवाँ ❀ दल समेत कुरुपति रह जहँवाँ॥
दो०दुर्योधन भाषन लग्मे, द्रोणी सुनिये वात ।
आजु युद्ध जूझे गुरू, धृष्टद्युम्न असिघात ॥
सो सुनि द्रोणी कीन्हउ क्रोधा ❀ पांडव सहित बधौं सब योधा॥
धृष्टद्युम्न मारौं मैदाना ❀ तव पितृहिं दैहौं जल दाना ॥
यह सब कथा यहांतक रह्यो ❀ धर्मराज उत हरिसों कह्यो ॥
तुम आज्ञा मैं मिथ्या कह्यो ❀ इहै शोच मेरे मन रह्यो ॥
मिथ्या दोष रहो है माधव ❀ नहिंजानव करिहौबिधिकाधव ॥
श्रीहरि कही सुनहु नृप ज्ञानी ❀ धर्मकीगाति सूक्षम यहजानी ॥
मिथ्या काहिके स्वर्ग सिधाये ❀ सांच कही ते नरकहिं पाये ॥
समय विचारि बात जो कहिये ❀ अन्तकाल महँ तोसुखलहिये॥
धर्मराज परसंशा कीन्हा ❀ हरिसों कथा सुपुँछै लीन्हा ॥
तब श्रीहरि यह कहेउ बझाई ❀ नृप हरिचन्द राज्य जबपाई ॥
दो०-सत्य धर्म पथ नेम ब्रत, तबहिं चलत संसार ।
शाह भवन मूसन गयो, गहो चोर कोउ बार ॥
लैके नृप आगे तेहि कीन्हा ❀ बधहु तुरत यह आज्ञा दीन्हा॥
तव कोतवाल मारिवे लागो ❀ बंधन तोरि चोर तब भागो ॥
ऋषि आश्रमके निकटहिं आवा ❀ देख्यो लता सघन द्रुम छावा॥
चोर दूत नृप देखन नैना ❀ याहिविधि छिपेउइहांमनुहैना ॥
आइ गये सब पीछे लागे ❀ कह्यो जोरिकर ऋषि के आगे॥
चोर एक भागो इत आवा ❀ सत्यकहौमुनि जो लखिपावा॥
तब ऋषि कह्यो सत्य यह बैना ❀ लता ओट मैं देख्यो नैना ॥
लै कोतवाल बांधि तेहि टर्यो ❀ तब नृप चोर केरबध कर्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यह अपराध ऋषय शिर पर्‍यो ❀ अन्तकाल नरकहिं थलकर्‍यो ॥
कहा कृष्ण सुनिये नृप ज्ञानी ❀ समय जानिकै बोलिय बानी ॥
दो०-सत्य बचन सो भाषिकै, परो नरक अतिघोर ।
हत्या लाग्यो विप्र कहँ, नृप बध कीन्हें चोर ॥
मिथ्या कहत स्वर्ग गति पाई ❀ श्रीमाधव यह कथा सुनाई ॥
परशुराम त्रेता अवतारा ❀ क्षत्रिन मारि उतारउ भारा ॥
पिता बैर कारण व्रत लीन्हें ❀ इकइस बार निछत्रक कीन्हें ॥
भुप सुबाहु वधो बल भारी ❀ पुरहस्तिना केर अधिकारी ॥
भुप मारि सेन्ना सब जीते ❀ भागे युग कुमार भय भीते ॥
भृगुपति तिनके पाछे धाये ❀ विप्र भवन महँ बालक आये ॥
महात्रास तब बदन सुखाने ❀ हिमऋतुमनहुँकमल कुम्हिलाने ॥
द्विजके चरण गिरे द्वै बालक ❀ शरणागत कीजै प्रतिपालक ॥
परशुराम तेहि अंतर आये ❀ महा क्रोध करि हाँक सुनाये ॥
बालक बेगि निकरि नहिं आवत ❀ नहिं तौ याहिघरआगलगावत ॥
दो०- सभय होय तब विप्रवर, पर चरण महं आय ।
स्वामी यँहि कारण कहा, आपुहि आयो धाय ॥
क्षत्री के बालक दुइ आये ❀ तेरे भवन देखि हम पाये ॥
देहु निकरि तुरत वध करऊँ ❀ तब अपने भवनहिं अनुसरऊँ ॥
दुइ बालक मेरे घर अहई ❀ हैं द्विज जाति पढ़न इत रहई ॥
परशुराम कह बालक लावहु ❀ तुरत आनिके मोहि दिखावहु ॥
विप्र कहा चलिये अब भवना ❀ आभि अन्तर कीजै अब गवना॥
जब द्विज अभिंअतर लै आयो ❀ द्वौ बालक तवआनि दिखायो ॥
परशुराम देखत अनुमाना ❀ क्षत्रिय कारिनिश्चय जियजाना ॥
मिथ्या कहौ विप्र कोहि कारण ❀ हैं क्षात्रि दीजै मोहिं मारण ॥
कोटि शपथ कै विप्र बखाना ❀ द्विज बालकहम निश्चयजाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and Jangotri. Funding by IKS.

रंधन करि बालक के हाथा ❀ भोजन करहु विप्र इन साथा ॥
दो०--सो सुनि विप्र आनन्द ह्वै, करि रंधन शिशु हाथ ।
परिस लीन्ह बैठे तबहिं, खायो एकहि साथ ॥
परशुराम तब क्रोध निवारेउ ❀ उठिकै अपने भवन सिधारेउ ॥
मिथ्या कहिकै जाति गँवाये ❀ अंत विप्र वैकुंठ सिधाये ॥
संशय धर्म भूप के कारण ❀ यहिविधि आपकहिजगतारण ॥
श्रीमाधव यह आप बखाने ❀ भूप युधिष्ठिर सुनि सुख माने ॥
कही कृष्ण राजा सुनि लीजै ❀ प्रात होत रण उद्यम कीजै ॥
भीषम द्रोण किये पुरुषारथ ❀ पन्द्रह दिवस बीतिगा भारथ ॥
कठिन युद्ध आगे नृप करिहैं ❀ कुरुपति कर्ण मुकुट शिरधरिहैं॥
त्रय दिन कर्ण सेन के रक्षक ❀ महा मारु करिहैं परतक्षक ॥
सुरपति शक्ति लई यहि कारण ❀ कर्ण वीर अर्जुन के मारण ॥
जो अर्जुन कहँ देखन पैहै ❀ बज्र शक्ति सो कौन बचैहै ॥
दो० धर्मराय यहि विधि कही, सुनिये श्रीभगवान ।
पांडव संकट परहि जब, तुम रक्षक परधान ॥
दीनबंधु जाके रथ सारथ ❀ मारि सकै कारण महँ पारथ ॥
कुरुपति जरत सेन बल कारण ❀ मेरे बल तुमहीं जगतारण ॥
यह सुनि कृष्ण बहुत सुखमान्यो ❀ नृप कहँपरम हितूकै जान्यो ॥
दुर्योधन तब कर्ण बुलाये ❀ करि आदर आसन बैठाये ॥
तुम बल यह भारत हम ठाना ❀ मृत्यु शेष आयो नियराना ॥
मुकुट बाँधि सेनापति हूजै ❀ अर्जुन रण समता नहिं दूजै ॥
कही कर्ण राजा सुनि लीजै ❀ आप दुःख केहि कारण कीजै ॥
नृप देख्यो मेरो पुरुषारथ ❀ पांडव सैन्य बधों रण भारत ॥
तीनि दिवस मेरे शिर भारहिं ❀ निश्चय अर्जुन बंधु सँहारहिं ॥
सुनिकै दुर्योधन सुख पाये ❀ सेनापति करि मुकुट आये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-पाडव के रक्षक सदा, भक्त वश्य भगवान ॥
द्रोण पर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्रोणाऽर्जुनयुद्ध द्रोणवधवर्णनोनाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति द्रोणपर्वसमाप्त ॥ ७ ॥

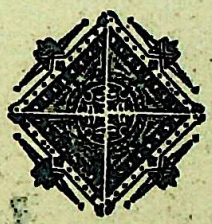

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

॥ कर्ण पर्व ॥ ८ ॥

प्रथमहिं करि गुरु चरणप्रणामा ❀ जाते होंहिं सिद्धि सब कामा ॥
बन्दौं रामचन्द्र गुणसागर ❀ सीतापति रघुवंश उजागर ॥
महिमा अगम और नहिं जाना ❀ परमभक्त जानत हनुमाना ॥
शुक्ल पक्ष आश्विन को मासा ❀ तिथि पंचमि यह कथा प्रकासा ॥
संवत सत्रह शत चौबीसा ❀ नौरंगशाह दिलीपति ईसा ॥
दो० रघुपति चरण मनाइकै, व्यास देव धरि ध्यान ।
कर्णपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥
गुरू द्रोण जूझे मैदाना ❀ दुर्योधन तब आपु बखाना ॥
द्रोणी कर्ण शल्य सम अत्री ❀ अरु अनेक बैठे हैं क्षत्री ॥
अब काके शिर मुकुट बँधैये ❀ जाते जयतिपत्र रण पैये ॥
द्रोणी कह्यो भूप सुनि लीजै ❀ आपु शोच केहि कारणकीजै ॥
की मेरे शिर दीजै भारा ❀ नातरु कर्ण करहु सरदारा ॥
रविसुत कर्ण महाबल भारी ❀ अर्जुन के समान धनुधारी ॥
तब राजा यहि भाँति बखाना ❀ गुरुसुत बचन कह्यो परमाना ॥
शकुनी शल्य दुशासन भाखो ❀ दल को भार कर्ण पर राखो ॥
कही कर्ण कुरुनाथ भुवारा ❀ जो सौंपत मोरे शिर भारा ॥
करिकै युद्ध पाण्डवन मारहु ❀ सेना सहित न एक उबारहुँ ॥
अर्जुन सहित एक गुण भारथ ❀ मनगामी श्रीपति हैं सारथ ॥
कृष्ण समान सारथी पावों ❀ कोटिन अर्जुन मारि गिरावों ॥
दो०-शकुनी कह्यो बिचारिकै, दुर्योधन सों बैन ।
शल्य सारथी कृष्ण सम, और न देखों नैन ॥
राजा शल्य रचहु पुरुषारथ ❀ कर्ण रथहि हावहु तुम सारथ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कही शल्य नृप लोग न थोरे ❀ कर्ण रथहि हम हाँकहि घोरे ॥
कुरुपति कही शल्य सुनु राजा ❀ कहा न कीजतु अपने काजा॥
सारथि होहु हमारे स्वारथ ❀ कृष्ण समेत जीतिये पारथ ॥
कर गहि नृप बहु भाँति बुझाये ❀ शल्यहि लिये कर्ण पहँ आये ॥
कृष्ण समान सारथी लीजै ❀ रण महँ सब पांडव बध कीजै॥
सुनि कै कर्ण अनन्दहि छाये ❀ धाइ शल्य कहँ कंठ लगाये ॥
शल्य नरेश सारथी मेरो ❀ अब अर्जुन सम बधौं घनेरो ॥
कृष्ण शल्य सम सारथि दोऊ ❀ इकते एक सरिस नहिं कोऊ ॥
विप्रन सकल वेदध्वनि कीन्हें ❀ मुकुट नरेश कर्ण शिर दीन्हें ॥
सब दिन मेरो मित्र मरोसव ❀ अर्जुन सहित जीतिहैं केशव ॥
दो० सेनापति कर्णहिं किये, मुकुट बाँधिकै शीश ।
धर्मराय सों इत कहत, सत्यसिंधु जगदीश ॥
अब अनर्थ उपजा अति भारी ❀ रविसुत कुरुसेना अधिकारी ॥
लिये बोलि सहदेवहि आये ❀ सब मिलि मंत्र बिचारन लाये॥
कही कृष्ण कुन्ती पहँ जैये ❀ पांचो बाण माँगि लै ऐये ॥
जे शर परशुराम तेहि दीन्हें ❀ अर्जुन बधन प्रतिज्ञा कीन्हें ॥
निज प्रति वह पूजत है बाना ❀ पारथ पर करिहैं संधाना ॥
तब हमहूँ नहिं सकैं बचावन ❀ यहि विधिकही पतितकेपावन॥
हम नीके जानत हैं भेवा ❀ कि पूँछहु मंत्री सहदेवा ॥
कि कुन्ती जानत है तनमों ❀ पाप धर्म दोऊ हैं मनमों ॥
सुनताहि कर्ण बिलम्ब न लइहै ❀ माता जानि त्वरित सोदइहै॥
सुनि कुन्ती उठि कीन्हेउ गवना ❀ आइ त्वरित कर्ण के भवना ॥
उठिकै कर्ण किये परणामा ❀ मातु गमन कीन्हें केहिकामा॥
सुनि कुन्ती यह बात जनाई ❀ अर्जुन कर्ण सहोदर भाई ॥
दो० जेठे धर्मज पुत्र तिन, लह्यो राजको भार ।
जन्मे मेरे उदर महँ, आये यहि संसार ॥
सुनिकै कर्ण कही यह बाता ❀ क्षत्री धर्म कठिन है माता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दुर्योधन कीन्हें प्रतिपालक ❀ अब तुम कही हमारे बालक ॥
अशन बसन बहु भाँति बड़ाई ❀ दुर्योधन दीन्ही प्रभुताई ॥
उन यह युद्ध रच्यो मेर बल ❀ ऐसे समय कहा कीजै छल ॥
सातद्वीप इन्द्रासन पावों ❀ तो याहि समयन चित्तडोलावों॥
तब कुंती माँग्यो सो बाना ❀ कर्ण दीन्ह मन भयनहिंआना॥
जो दिनकर दीन्ह्यो ते बाना ❀ माताको दीन्हों करि दाना ॥
कर्ण भये सेनापति भाई ❀ इन्द्रलोक महँ परी अवाई ॥
सुनिकै इन्द्र चितहि दुख मानो ❀ अब अर्जुनको भयो निदानो॥
सुत सनेह हित तुरत सिधाये ❀ चढ़ि विमान कुरुखेतहिंआये ॥
स्थते उतरि द्वार पगु धारे ❀ कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे ॥
द्रोणी तब तहँ आय जनायो ❀ देबनाथ द्वारे पर आयो ॥
आतुर चल्यो बहुत सुख माना ❀ अपनो जन्म सुफलकरिजाना॥
परदक्षिणा प्रणाम जनाये ❀ चरण रेणुलै माथ लगाये ॥
आजु सफल दिन भयो हमारा ❀ देवनाथ द्वारे पगु धारा ॥
तुम तौ तीनि लोक के स्वामी ❀ कहियजानिआपनअनुगामी॥
सहसनयन तब कहा बिचारी ❀ सुनहु कर्ण यह बात हमारी॥
दानी बड़े श्रवण सुनि पायो ❀ हमहूँ कछु माँगनको आयो ॥
कहौ सत्य जो माँगे दीजै ❀ तब तुमते याचज्ञा कीजै ॥
दो०-कही कर्ण आनन्दसों, कियो सत्य यह जान ।
नाहिन कीन्ही जन्मभरि, दीजैं तन धन प्रान ॥
मेरो कर्म सबन सों भारी ❀ जोसुरपतिभयोआयभिखारी॥
माँगौ तुरत गहरु जनि लावहु ❀ जो इच्छा करिहौ सोइ पावहु॥
दाता हौ सब लोक बखाना ❀ कुंडल कवच दीजिये दाना ॥
जन्म सयय जो दिनकर दीन्हा ❀ ते हम अब याचज्ञा कीन्हा ॥
सुनिकै हर्ष हृदय अति बाढ़्यो ❀ ताल छोरिकै कवचहि काढ़्यो ॥
हँसिकै कर्ण द्वन्द्व कर दीन्ह्यों ❀ साधु साधु सब देवनकीन्ह्यों ॥
देवराज तब बाहर आये ❀ चढ़ि विमान चलिबेमनलाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and Sangotri. Funding by IKS.

रथ अटको धरणी अति जोरे ❀ हाँकि थके मातलि सों घोरे ॥
चक्रित ह्वै तब कह्यो पुरन्दर ❀ अचलविमान भयो ज्योंमंदर ॥
तब मातलि महि भाँति बखाना ❀ पाप भार नहिं चलत विमाना ॥
सुर राज्ञा याचज्ञा लायो ❀ भरयो पाप रथ चले नपायो॥
धन्य कर्ण जग में यश पायो ❀ जिन सुरपतिको हाथ बँधायो॥

दो०-कह मातलि तब इन्द्रसों, बचन सनौ परिमान ।
कर्णहि हाथ उटाइये, जाहि अकाश विमान ॥

सुनिकै इन्द्र कर्ण पहँ आये ❀ धन्य धन्य कहि बचन सुनाये ॥
मांगहु बर जो इच्छा होई ❀ तुव समान दाता नहिंकोई ॥
सुनिकै कर्ण कहै मन लाये ❀ अक्षर चारि न गुरू पढ़ाये ॥
नाहिं न पढ़े ज्ञान मो अपने ❀ कहूँ कह्यो जागत नहिं सपने ॥
कही इन्द्र यह हठहि तुम्हारो ❀ निष्फल दर्शन होई हमारो ॥
मागहु बर तुमको कछु दीजै ❀ तब हम गमन अमरपुर कीजै ॥
कही कर्ण माँगहुँ नहिं मुखते ❀ लियो चहहु तो दैहों सुखते ॥
निकरहिं प्राण देह वरु छाँड़ै ❀ कबहु न कर्ण हाथ को बाड़ै ॥
कह्यो इन्द्र जब दानहिं दीजै ❀ विप्र मुखहिं कछु आशिष लीजै॥
परशुराम धनु विद्या दीन्हें ❀ तब तुम चरण पराशि कैलीन्हें॥
कह्यो इन्द्र यह नीति बिचारो ❀ सुनो कर्ण यह बयन हमारो॥
क्षत्री होई दान जो लेई ❀ ता कहँ दोष कोउ नहिंदेई ॥

दो०-कर्ण हस्त गहि लीजिये, विदित वेद यह बैन ।
भाष्यो व्यास बिचारिकै, जहाँ देन तहँ लेन ॥

कही कर्ण जो आमि हठ कीजै ❀ वज्र शक्ति मोहि माँगेदीजै ॥
सुनिकै इन्द्र शक्ति तब दीन्हें ❀ बहुरि बचन यहकहिबेलीन्हें ॥
वज्र शक्ति जानत संसारा ❀ यह तो है निज अस्त्रहमारा ॥
कर्ण बीर जो यहै चलैहो ❀ ताहि मारि मेरे कर ऐहो ॥
चढ़ जाई रथ कीन्हों गवना ❀ आये धर्मराय के भवना ॥
राजा देखि दण्डवत कीन्हा ❀ हृदय लगाय शक्र तबलीन्हा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुरपति कृष्णहि भेद सुनाये ❀ कुण्डल कवच माँगि हम लाये॥
कुण्डल श्रवण मृत्यु नहिं होई ❀ कवच भेद भेदहि नहिं कोई॥
ता कारण दोऊ हम लीन्हें ❀ तेहि ते वज्र शक्ति उन दीन्हें॥
अर्जुन कर्ण वैर है भारी ❀ तुम रक्षा करिहौ बनवारी॥
कहि सुरसाईं गमन तब कीन्हें ❀ धर्मराय शयनहिं मन दीन्हें॥
प्रात होत दोऊ दल साजे ❀ शब्द अघात बाजने बाजे॥

दो०—गज काछे हय पाखरहि, जोतें सारथि रत्थ।
पहिरि सजोइल अस्त्रले, चढ़े वीर समरत्थ॥

शल्य नरेश आपु रथ साजे ❀ पहिरि सनाह कर्ण दल गाजे॥
द्रोणी वीर दुशासन चढ़्यो ❀ अरु अनेक वीरन मन बढ़्यो॥
शकुनी कृतवर्मा से क्षत्री ❀ दुर्मष दुरद महाबल अत्री॥
दुर्योधन रथ सोहै कैसे ❀ इन्द्र विमान देखिये जैसे॥
यहि विधि चढ़े साजि सबसेना ❀ कही कर्ण राजा सों बैना॥
अक्षय त्रोण धनंजय बांधे ❀ घटत नाहिं कोटिन शर साँधे॥
मेरे रथ जो शर पहुँचैहो ❀ रण महँ विजयपत्र तब पैहो॥
राजा कही धरौ जनि दोखा ❀ दोऊ हाथ चलत शर चोखा॥
दशहजार हाथिन पर लादे ❀ चित्रित सबहिं एक नहिं सादे॥
दशहजार भरि ऊँट लदाये ❀ दशहजार गाड़िन भरवाये॥
बीसहजार कहारन दीन्हें ❀ चले साथ सब बहिंगिन लीन्हें॥
कनक फोंक अति तीक्षण धारा ❀ गीध पक्ष ते सबहिं सँवारा॥

दो०-कुरुपति चलेउ साजि दल, सेना सिंधु समान।
कर्ण तेज इमि देखियै, मनहुँ दूसरो भान॥

श्वेत पीत बैरख फहराने ❀ अरुणश्यामरँग सबुज सोहाने॥
यहि विधिते कीन्हेंउ दल साजा ❀ बाजन लगे युद्धके बाजा॥
धर्मराय कीन्हेउँ असवारी ❀ श्वेत गयंद महाबल भारी॥
भीमसेन अति शोभा पाये ❀ नकुल वीर सहदेव सोहाये॥
धृष्टद्युम्न लीन्हें सब साथा ❀ चढ़े तुरंग अस्त्र गहि हाथा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्जुन रथ कीन्हेउ असवारी ❀ जोती गहे पीताम्बर धारी ॥
पीत बसन तनु शोभित नीका ❀ माल उदित हरि मान्दिरटीका ॥
बाजन बाजत शब्द अघाता ❀ श्रीहरि कही भीमसों बाता ॥
धृष्टद्युम्न को साथहि लीजै ❀ सन्मुख युद्ध कर्ण चित दीजै ॥
भीमसेन यह साहस करिये ❀ कर्ण वीर के सन्मुख लरिये ॥
अर्जुन कहा सुनहु जगतारण ❀ याहिविधिआपकहेउकेहिकारण ॥
हाँको रथ आगे ह्वै लरिये ❀ सन्मुख युद्ध कर्णसों करिये ॥

दो०-अर्जुन सुनिये मंत्र यह, भाषेउ श्रीभगवान ।
कर्ण पर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि सबलासिंहचौहानभाषाकृते
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

जो लौं शक्ति कर्ण के हाथा ❀ करौ युद्ध जनि वाके साथा ॥
इतना कहो हमारो कीजै ❀ चलौ जाय द्रोणी रण लीजै ॥
दोंउ दल महँ बाजन बाजै ❀ हाँक देत क्षत्रिय गण गाजै ॥
गज सों गज रथ सों रथ जोरे ❀ मुख लागत हिंसत हैं घोरे ॥
पैदल सों पैदल अरुझाने ❀ महाबीर सब बांधे बाने ॥
बर्षैं बाण सकै को भाषन ❀ शत ते सहस सहस तेलाखन ॥
शल्य सारथी रथहि चलायउ ❀ आगे कर्ण पेलिकै आयउ ॥
गहे धनुष कर बाणहि फेरत ❀ अर्जुन कहाँ हाँक दै टेरत ॥
सुनिकै भीमसेन तब धायउ ❀ स्थिर रहौ निकट नहिं आयउ॥
यह कहि बीस बाण कर लीन्हें ❀ ते शर चोट शीश पर दीन्हें ॥
करि संधान कर्ण तब भाषेउ ❀ जुरेउआपु अर्जुनाकित राखेउ ॥
बाण पचीस भीम उर मारे ❀ सात बाण अश्वन परिहारे ॥

दो०-इतहि कर्ण उत भीमसों, युद्ध भयो अति घोर ।
महारथी सब हाँकदै, जुरे जोरसों जोर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शकुनी सहदेवहि संग्रामा ❀ जुरे वीर अपने जय कामा ॥
नकुलहि कृतवर्मा सों भारथ ❀ दोऊ सबल रच्यउ पुरुषारथ ॥
कुरुपति धर्मराइ तब सरसे ❀ छुटे बाण बुन्द सम बरसे ॥
घटउत्कचहि द्विरद सँग्रामा ❀ कुरुपति धर्मराइ के कामा ॥
शूल साँगि मुद्गर परिहारे ❀ कोऊ गदा कोपि शिर मारे ॥
खड्ग कटारन बाहहिं चोखे ❀ लागत जहाँ रहत नहिंधोखे ॥
कोऊ पाश साजि शिर मेले ❀ अरस परस करि आगे पेले ॥
भीम कर्ण ते सरस लराई ❀ महायुद्ध कीन्हें प्रभुताई ॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोड़े ❀ मारे रथ के चारि घोड़े ॥
विरथ भये भीमहिं जब जाने ❀ धृष्टद्युम्न तब शाँरग ताने ॥
यहि विधिसरिस बाण सँधाने ❀ कुरुदल के शर छाँह छिपाने ॥
विरथहु भीम घात बनि आये ❀ लैकर गदा क्रोध करि धाये ॥

दो०-कर मुष्टिका प्रहारते, मारेउ सेन अनंत ।
गदा घाव लोटत परे, मतवारे मय मंत ॥

देखि द्विरद आगे चलि आयउ ❀ भीम उपर शत बाण चलायउ॥
द्विरद सँग आये शत भाई ❀ ते सब बाण वृष्टि झरि लाई ॥
भीमहिं घेर लगे शर मारन ❀ इत अकेल उत वीर हजारन ॥
द्विरद आइ मुद्गर परिहारे ❀ भीमसेन बायें कर मारे ॥
युग रद शीश परो तब धरणी ❀ देखी सबन भीमकी करणी ॥
द्विरदहि गिरत सबैमिलि धाधउ ❀ शूल शैल सब बाण चलायउ ॥
बहुतक आनि गदा परिहारे ❀ बहुतक आनि खड्ग शिरझारे ॥
क्रोधित भीम भयो अति ताते ❀ शतबन्धहु महँ बीस निपाते ॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे ❀ धृष्टद्युम्न कर मारेउ घोरे ॥
शल्य सारथी रथ पहुँचावा ❀ रहुरे भीम कर्ण अब आवा ॥
यह कहिकै मारे तीक्षण शर ❀ घायल ह्वै कै फिरे वृकोदर ॥

दो०-पांडव दल जूझे घने, लगत कर्णके बान ।
धर्मराइ यह देखिकै, कीन्हें शर सँधान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कर गहि धनुष कीन्ह सँधाना ❀ कर्ण अँग मारे दश बाना ॥
अपर बीस शर पायल छूटे ❀ ते सब शरहु हृदय महँ फूटे ॥
हँसिकै कर्ण बाण दश लीन्हें ❀ भूप अँग शर भेदन कीन्हें ॥
अर्जुन कहा दुरायहु भाई ❀ तुम मोसे रण रची लराई ॥
तुमसे कहा करहिं पुरुषारथ ❀ मेरे बल समान हैं पारथ ॥
शल्य सारथी कर्ण चेताये ❀ बाँधौ नृपाति घात भलि पाये॥
जौ लगि धर्मराइ लै आये ❀ जयतिपत्र भारथ महँ पाये ॥
नागफाँस को उद्यम कीन्हें ❀ धर्मराइ खगपाति शर लीन्हें ॥
तब भूपाति कहँ पाछे घालेउ ❀ धृष्टद्युम्न रथ आगे चालेउ ॥
क्रोधित कोन्हेउ युद्ध भयंकर ❀ मुण्डमाल कीन्हेउ गर शंकर ॥
द्रोणी सों अर्जुन पुरुषारथ ❀ कीन्हों महा भयंकर भारथ ॥
सहस बाण द्रोणी शर छाँटे ❀ आवत बीचहि पारथ काटे ॥

दो०—अर्जुन द्रोणी रण मचो, छूटत बाण अनन्त ।
हय रथ पैदल गिरत हैं, मतवारे मयमन्त ॥

दुनों दल महँ परी लराई ❀ संध्याकाल आइ नियराई ॥
घटोत्कचहि तब कृष्णबखाना ❀ आपु युद्ध कहँ करहु पयाना ॥
माया युद्ध करिय यहि रूपा ❀ मारौ मिलि कौरवपति भूपा ॥
करत प्रणाम असुर सब धाये ❀ कुरुसेना के ऊपर आये ॥
गगन पंथ कीन्हीं अँधियारी ❀ बर्षहिं बाण मनहुँ घन झारी ॥
वृक्ष अनेक गगन ते छूटत ❀ लागत शिला सेन शिर फूटत ॥
यहि विधि मारु भयानक कीन्हें ❀ अँधकार कछु जात न चीन्हें ॥
सूझत नहीं हाथ गहि हाथा ❀ कोउ न रहेउ काहु के साथा ॥
अपने मन साँचो करि जानेउ ❀ प्रलयकाल अब आयतुलानेउ॥
दुर्योधन तब आपु पुकारे ❀ कहाँ कर्ण हैं मित्र हमारे ॥
मारहु असुर बिलंब न लावहु ❀ संकट ते अब मोंहिं छुड़ावहु ॥

दो०—कर्ण कही राजा सुनहु, बधहुँ असुर जो आज ।
बज्रशक्ति मेरे अहै, राखेउ अर्जुन काज ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आजु राति स्थिर ह्वै रहिये ❀ सब मिलिके धीरज मन गहिये॥
राजा कही कर्ण सो ऐसे ❀ अहो मित्र बोलत हौ कैसे ॥
जो सब मिलि अर्जुन कह मरिये ❀ अर्जुन मारि काल्हि का करिये॥
साँग शूल मुद्गर परिहारत ❀ बृक्ष पषाण शीश पर डारत ॥
अब जानि गहरु करो तुम भाई ❀ मारि असुर कह देहु गिराई ॥
कर्ण पुकार कही यह बानी ❀ राजा तुम तौ बात न जानी ॥
अहैं कृष्ण पारथ के रक्षक ❀ तिन उपाय कीन्हेउ परतक्षक ॥
मृत्यु विना कोऊ नहिं मरहीं ❀ भये मृत्यु को रक्षा करहीं ॥
धीरज धरहु करहु मन गाढ़ा ❀ मै अब धनुष लिये कर ठाढ़ा ॥
वज्रशक्ति ते असुर न मारहु ❀ काल्हि युद्ध अर्जुन सँहारहु ॥
अर्जुन मारि जीतिहौं भारथ ❀ कुरुपाति करहु तुम्हारो स्वारथ ॥
राजा कही मतिहि बौरानी ❀ आजुहि मरे काल्हि को जानी ॥

दो०-कर्ण कही विधिकी रचित, टारि सकै सो कौन ।
मारतहौं अब असुर कहँ, रहैं सबै हो मौन ॥

यह कहि वज्रशक्ति कर लीन्हें ❀ सहस नयन को सुमिरण कीन्हें॥
ताकि असुर को कर्ण चलायउ ❀ छिटकी ज्योति अकाशहिं आयउ
लागी शक्ति असुर उर कैसे ❀ लगत वज्र गिरिवर गिरि जैसे ॥
परयो भूमितल असुर भयङ्कर ❀ मुंडमाल लीन्हें सो शङ्कर ॥
गई शक्ति सुरपाति के हाथा ❀ बहुत अनन्द भये जगनाथा ॥
साधु कर्ण सेना सब भाषे ❀ ऐसे समय कौन केहि राखै ॥
उभय सैन्य अपने गृह आयहु ❀ सबमिलिखानपानमन लायहु॥
रोदन करै हिडम्बी कैसे ❀ बिछुरी गाय बच्छसों जैसे ॥
भीमसेन करुणा बहु कीन्हें ❀ कृष्णदेव कछु काहिबे लीन्हें ॥
करुणा करहु कछू नहिं होई ❀ जगमहँ अमर भये नहिं कोई ॥
कुरुक्षेत्र महँ प्राण गवांये ❀ आपु मरे अर्जुनहिं बचाये ॥
भीमसेन अब साहस करिये ❀ अपनो प्रण रक्षा मन धरिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-क्षत्री होय प्रणको धरै, करै सत्य परमान ।
कर्ण पर्ब भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वाण सबलसिंहचौहानभाषाकृते
दितीयोऽध्यायः ॥२॥

त्रयदश वर्ष छुट मा देशहि ❀ द्रुपदसुता नहिं बाँधे केशहि ॥
जब यह बात कही बनवारी ❀ छूटो शोक क्रोध भा भारी ॥
घायल धर्मराय दुख पावा ❀ अर्जुन सों यह बचनसुनावा ॥
धृग अर्जुन धृग धनु शर तोरे ❀ कर्ण बाण झर तनु मोरे ॥
सो सुनि अर्जुन क्रोधहि पायउ ❀ कर गाहिकै यदुनाथ बुझायउ ॥
सेना सबहिं शयन मन दीन्हें ❀ प्रात होत रण उद्यम कीन्हें ॥
कीन्हें बम्ब दमामें बाजे ❀ सावधान क्षत्री सब गाजे ॥
कर्ण तुरत स्नानहि कीन्हें ❀ विप्रन बोलि दान बहु दीन्हें ॥
पहिरि सनाह किय रण साजैं ❀ चहुँदिशी भेरि दुन्दुभी बाजैं ॥
माथे मुकुट बिराजत कैसे ❀ सूर्य्य प्रकाश आकाशहिं जैसे ॥
शल्य सारथी जोते घोरे ❀ चंचल चपल दिनन के थोरे ॥
खोदत माहि फहरत हैं ठाढ़े ❀ मानहु सिन्धु मथन के काढ़े ॥
दो०-पाखर लाल लगाइकै, पुनि बाँधे गज गाह ।
चढे कर्ण रथ कोपिकै, मन लरिबे की चाह ॥
दुर्योधन कीन्हें असवारी ❀ साजी सैन महाबल भारी ॥
भई बम्ब बैरख फहराने ❀ चले बीर सब बाँधे बाने ॥
पांडव के दल बाजन बाजे ❀ नन्दिघोष रथ श्रीपाती साजे ॥
पहिरि सनाह खड्ग कटि बाँधे ❀ अक्षय तूण विराजत काँधे ॥
कर गहि धनुष चढ़े रथ पारथ ❀ जोती गहे कृष्ण से सारथ ॥
धर्मराय कीन्हें असवारी ❀ आगे भये भीम धनु धारी ॥
दल चतुरङ्ग रङ्ग करि आवा ❀ युद्ध भूमि महँ शोभा पावा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भूर्व महाउत ते अधिकारी ❀ भिरे गयन्द युद्ध भा भारी ॥
दल चतुरङ्ग करत रण घोरा ❀ उरझे सबै जोर सों जोरा ॥
कही कर्ण अब रथहि चलावहु ❀ अर्जुन के सन्मुख पहुँचावहु ॥
मारौं आजु खेत महँ पारथ ❀ देख्यो शल्य मोर पुरुषारथ ॥
हँसि कै शल्य कही तब बानी ❀ रविनन्दन यह बात न जानी॥

दो०-हंस काग जैसी भई, तैसी भई निदान ।
अबहिं कर्ण बल देखिबो, भारत के मैदान ॥

क्रोधित ह्वै तब कर्ण बखाने ❀ हंस काग को भेद न जाने ॥
भाष्यो शल्य कर्ण सुनु बीरा ❀ एक दिवस सरवर के तीरा ॥
राजहंस सब चले उड़ाई ❀ सिंधु पार महँ बनी चराई ॥
तिनसों काग कही अस बानी ❀ हम कहँ साथ लेहु खग ज्ञानी ॥
कही हंस तुम जान न पैहौ ❀ मारहौ बूड़ि पार नहिं लहिहौ॥
कही काग गति सबहि उड़ैहौं ❀ तुम सब साथ पार मैं जैहौं ॥
यह कहि चले हंस के सङ्ग ❀ कोश चारि लै उपज्यो रङ्ग ॥
थको काग तब ढिग ह्वै आयो ❀ बूड़त हौं यह बचन सुनायो ॥
कही हंस सुधि अबहि भुलानी ❀ अब काहे बूड़त जड़ ज्ञानी ॥
सुनिकै हंस निकट तब आयो ❀ पीठि उपर तब काग चढ़ायो ॥
फेरि बहुरि लाये यहि पारा ❀ राख्यो काग नीब की डारा ।
सिंधु पार सब गयै उड़ाई ❀ यह चरित्र हम देख्यो भाई ॥

दो०-शरसों सागर बांधिकै, जिन जीते हनुमान ।
शर पञ्जररथराखिकरि, तिनसोंतुमहि समान ॥

जब विराट को गोधन गह्यऊ ❀ तादिन कर्ण कहाँ तुम रह्यऊ ॥
क्रोधित कह्यो कर्ण यह बैना ❀ देखहु आजु युद्ध तुम नैना ॥
हाँको रथहि बिलम्ब न लावो ❀ अर्जुन के सन्मुख पहुँचावो ॥
सुनिकै शल्य तेज रथ हाँको ❀ पवन लगे फहरात पताको ॥
भीमसेन आगे ह्वै लीन्हें ❀ बाण वृष्टि करिबे मन दीन्हें ॥
तब कह कर्ण भीम तुम अहहू ❀ अर्जुन कहाँ सो मोसन कहहू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यहै कहत अर्जुन तब आये ❀ नन्दिघोष रथ प्रभु पहुँचाये ॥
भाष्यो अर्जुन भीम सिधारो ❀ दुश्शासन सों युद्ध बिचारो ॥
आजु कर्ण सों हमहिं लराई ❀ पुरुषारथ देखो सब भाई ॥
यह कहिकै कीन्ह्यों सन्धाना ❀ लागे सरस चलाबन बाना ॥
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❀ आवत बाण बीचही तोरे ॥
दोऊ वीर बाण सन्धाना ❀ शर के छाँह छिपाये भाना ॥
दो०-अरस परस दोऊ प्रबल, कीन्ह्यों शर सन्धान ।
अन्धकारभा दिवसमों, सूझि परहि नहिं भान ।
चलेबाणकवि सकहिन भाषन ❀ शतसों सहस सहससोंलाखन ॥
नन्दिघोष हाँकत बनवारी ❀ शल्य सारथी उत अधिकारी ॥
अर्जुन कर्ण करतमन जितको ❀ कृष्ण शल्यहाँकत रथतितको ॥
अग्नि बाण अर्जुन कर लीन्हें ❀ पाढ़िकै मन्त्र फोंक गुण दीन्हें ॥
चले बाण कौरव दल जारन ❀ प्रकटी शिखा हजार हजारन ॥
देखि कर्ण जल बाण चलाये ❀ क्षण भीतर सब अग्निबुताये॥
जलकी धार सेन बिकलाने ❀ पवन बाण अर्जुन सन्धाने ॥
परम वेग तातें जेहि ताका ❀ टूटन लगे सब ध्वजा पताका॥
छाँड़े कर्ण सर्प के बाना ❀ नागन कीन्ह पवन सब पाना॥
तब अर्जुन खग बाण चलाये ❀ मारन पकरि सर्प सब खाये ॥
दोऊ वीर चलावत हैं शर ❀ बल समान सों बली धनुर्द्धर॥
धरणी जल अरु स्वर्ग पताला ❀ बाण मारि सूखे सरि ताला ॥
दो०-पक्षी उडते गगन नहिं, ताको दिशा अंधार ।
देवन देखत युद्ध कछु, शर छायो संसार ॥
कोटिन अब खर्ब शर छाँट्यो ❀ दोऊ दल बाणन ते पाट्यो ॥
कुरु पांडव दल सब भरमाये ❀ अर्जुन कर्ण न देखन पाये ॥
दोऊ वीर सरस पुरुषारथ ❀ कीन्हें महा भयानक गारथ ॥
चुचुक कहा कर्ण के आगे ❀ अब मोकहँ सन्धान सभागे ॥
लीलों कृष्ण सहित रथ पारथ ❀ अब देखहु मेरो पुरुषारथ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सो सुनि कर्ण वीर सन्धाना ❀ चुंचुक सहित त्याग तब बाना ॥
कही कर्ण अर्जुन सम्हारहु ❀ आजु जानिबो तेजतुम्हारहु ॥
हाँक मारिकै बाण चलाये ❀ चुंचुक प्रगट देह धरि आये ॥
देखत रूप भयंकर भावा ❀ मादौं घटा उमड़ि जनुआवा ॥
दरवि बाढ़ि लाग्यो असमाना ❀ फणके छाँह छिपाये भाना ॥
दो० रवि अक्षत निशि ह्वै गई, अर्जुन भाषे बैन ।
अँधकार कस देखिये, कहिये राजिव नैन ॥
तब श्रीहरि आये यहि बातन ❀ पारथ सुनिये कथा पुरातन ॥
जब खांडव बन दाहन कीन्हा ❀ सारथि होइ जोती हमलीन्हा ॥
शर पंजर छाये तुम कानन ❀ शत योजन घेरे तुम बानन ॥
तादिन रथ ऐसो मैं हाँका ❀ घुमरत मनहु कुम्हार को चाका ॥
खग मृग पशु जारत दव कानन ❀ बाहर होय न बचत है बानन ॥
घुर्मि नाम नागिनी जब जानी ❀ तेजवंत आकाश उड़ानी ॥
तब तुम बेगवंत शर छांडे ❀ नागिनी गई पूछ तेहि काटे ॥
ताको सुत यह चुंचुक नामा ❀ बसै पताल शेष के धामा ॥
करकोटक को पुत्र कहावा ❀ बैर लेन भारत मों आवा ॥
कर्ण तूण निवसत है तबसों ❀ कीन्हों युद्ध अरंभन जबसों ॥
तब अर्जुन यह भेदहि जाने ❀ क्रोधित बाण कीन्ह संधाने ॥
अर्जुन क्रोध लगे शर मारन ❀ शतते सहस सहस्त्र हजारन ॥
दो०-अर्जुन मारत कोपि कै, नाहिन फूटत अंग ।
चुंचुक के फण लागिकै, होत बाण सब भंग ॥
गर्जत क्रोध सर्प औ कैसा ❀ प्रलयकाल वोलत घन जैसा ॥
चुंचुक कही सुनो हो पारथ ❀ लीलत अहौं करौ पुरुषारथ ॥
यह कहि वदन कियो विस्तारा ❀ मनहु उदर नहिं अहहि पनारा ॥
जो शर अर्जुन के कर छूटत ❀ गड़ै न नेकु लागि सब टूटत ॥
पांडव दल देखत भय माने ❀ धर्मराई अचरज करि जाने ॥
नंदिघोष रथ लीलै लीन्हेउ ❀ हा हा शब्द देवतन कीन्हेउ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुरपति देखि महा भय पायो ❀ हनुमान सों ऐसे जनाये ॥
दाबहु रथ सो जाई पताला ❀ यहिबिधिवंचितकीजियब्याला ॥
ऊपर बल कीन्हेउ हनुमाना ❀ रथ गाड़ि गयो पताल समाना ॥
चुंचुक के मुख पीत पताका ❀ पवन लगे डोलत है बाँका ॥
दोउ दल कीन्हेउ अनुमाना ❀ नंदिघोष अहि उदर समाना ॥
चुंचुक फिरेउ कर्ण ढिग आवा ❀ साधु साधु कहि कर्णसुनावा ॥
दो०-शल्य कही तब कर्णसों, झूँठ कहो केहि काज ।
पारथको को ग्रासिहै, जेहि सारथि ब्रजराज ॥
यहि अंतर हरि रथहि उठायउ ❀ नंदिघोष धरणी पर आयउ ॥
पांडव दल देखत सुख मानेउ ❀ तबहिं कर्ण सोंशल्यबखानेउ ॥
रथ समेत देखहु यह पारथ ❀ हनूमान रथ पारथ सारथ ॥
कर्ण कही चुंचुक सों बानी ❀ मिथ्या तुम भाषेउ अज्ञानी ॥
चुंचुक कही भयो छल भाई ❀ मैं तो कछु यह भेद न पाई ॥
फिरि मोको कीजै संधाना ❀ करौं ग्रसन पारथ भगवाना ॥
कही कर्ण यह उचित न होई ❀ बाण वटोरि चलाव न कोई ॥
आश देइकै कीन्ह निराशा ❀ पैहौ नाग नरक महँ बासा ॥
यह कहि नाग कियेतब गवना ❀ जैहो कर्ण काल के भनवा ॥
चुंचुक जब भवनहिं शुभ कीन्हें ❀ अर्जुन कर्ण युद्ध मन दीन्हें ॥
कब आवै कब शर सन्धाने ❀ कब छूटहि कोई नहिं जाने ॥
यहि विधि करतयुद्धकी करणी ❀ अंग भेदे फूटत शर धरणी ॥
दो०-महावीर दोऊ भिरैं, करहिं अस्त्र परिहार ।
रण देखत मुनि देवगण, कठिन वजाये सार ॥
अर्जुन कर्ण भयो रण घोरा ❀ परो भीम दुश्शासन जोरा ॥
भीमसेन ऐसे शर जोरे ❀ मारे रथके चारिउ घोरे ॥
दुश्शासन शाँरँग कर लीन्हें ❀ बाणन वृष्टि भीम पर कीन्हें ॥
चारि बाण ते अश्व सँहारे ❀ एक बाण ते सारथि मारे ॥
शत शर भीमसेन उर लागे ❀ क्रोध अनल तनु अंतर जागे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कर गहि गदा भीम तब धाये ❀ हाँक मारि दुश्शासन आये ॥
दोऊ वीर खेत महँ कैसे ❀ महामत्त गज उरझे जैसे ॥
कर गहिं गदा कोपि परिहारहिं ❀ एकहिं एक कोप करि मारहिं ॥
धमकत घाव लगेउ जंबतनमें ❀ बाढ़त कोप दोउ के मनमें ॥
अस्त्र डारिकै दोउ लपटानें ❀ क्रुद्धित तरल युद्ध अरुझाने ॥
कर गहि कच मुष्टिक पारहारहिं ❀ शीशहि शीश कोपि कै मारहिं ॥
उरसों उर पेलत हैं दोऊ ❀ पारि सकत नहिं टरते कोउ ॥
दो०-भीमसेस अति क्रोध करि, अभिरतअमितअनंत ।
आनि पछारेउ धरणि पर, मानहु सिंह गयंद ॥
लरेउ भीम दुश्शान कैसे ❀ ब्याध कुरँग पछारहिं जैसे ॥
कहेउ भीम दुष्शासन वीरहि ❀ खैंचत कस न द्रोपदी चीरहि ॥
खलहु पाँसा कपट बनावहु ❀ गहौ केश द्रोपदि लै आवहु ॥
अबहिं सबहि सुधि बिसरी भाई ❀ मेरे चितहि आजु सब आई ॥
भीमसेन कह नकुलहि धावहु ❀ जाइ तुरंत द्रोपदि लै आवहु ॥
पलमहँ नकुल गयो चलिभवना ❀ द्रुपदसुता अब कीजै गवना ॥
मेलेउ भीमसेन अभिमानी ❀ हँसि कै चली आपु तहँ रानी ॥
आइ तुरत बिलम्ब न कीन्हें ❀ पौढ़े भीम दुशासन लीन्हें ॥
कही पुकारि द्रोपदी रानी ❀ सुनिये बात भीम तुम ज्ञानी ॥
ऐसे तो तुम पांच सहोदर ❀ धन्य धन्य तुम धन्य वृकोदर ॥
जब कीचक विराटपुर मारे ❀ तादिन मेरे लाज निवारे ॥
तन मनधनहिं निछावरि कीजै ❀ तोपर प्राण वारिकै दीजै ॥
दो०-भीम भयंकर रूप धरि, कहेउ सुनो दोउ सैन ।
है कोऊ रक्षा करै, मोसे कहिये बैन ॥
कुरु पांडव जेते हैं क्षत्री ❀ कृष्ण सहित यदुवंशी अत्री ॥
असुर नाग नर सुरहु पुरंदर ❀ धरणी सिंधु मेरु गिरि कंदर ॥
चंद्र सूर्य तुम दोऊ साखी ❀ तीनि लोक देखत हैं आँखी ॥
रक्षा करहु दुशासन मारत ❀ कही भीम हम भुजा उपारत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनि पारथके जिय रिसबाढ़ी ❀ तीक्षण शर निषंग ते काढ़ी ॥
मारि भीम अब करौं निपाता ❀ कैसेउ सहि न जातियह बाता॥
श्रीपति कही उचित नहिं होई ❀ आजु भीमसों जितहिन कोई॥
मैं नरसिंह रूप बल दीन्हा ❀ भीम अंग परवेशित कीन्हा ॥
हाँक मारिकै भुजा उपारे ❀ रुधिर द्रोपदीके शिर डारे ॥
शिरसों परत रुधिरकी धारा ❀ द्रुपदसुता तब बाँधेउ बारा ॥
अरुण वर्ण तनु सोहत कैसे ❀ असुर युद्ध महँ देवी जैसे ॥
द्रुपदसुता तब भवन सिधारी ❀ अर्जुन कर्ण रचेउ रण भारी ॥

दो०—शर बर्षत हर्षत दोऊ, हाँकत रथ भगवान ॥
कर्णपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
तृतियोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दोउ वीर हैं मेघ समाना ❀ वर्षत बाणबुंद अनुमाना ॥
घन घहरात घहर रथ चाके ❀ बकपाँती सम श्वेत पताके ॥
ऐसे बाण गगन मों धावहिं ❀ शर रोकत शर पंथ न पावहिं॥
कुरु पांडव दल नाहिं न सूझै ❀ अपन पराय कोई नहिं बुझै ॥
गज अरुशकट हजारन धावहिं ❀ कर्ण रथहि बानन पहुँचावहिं॥

दो०-अर्जुन कर्णहिं रण माच्यो, जलद बुन्दसमबान ।
सरस निरस कहि जात नहिं रह्यौ मंडि मैदान॥

कर्ण बांच शर भालुक लीन्हें ❀ लघु सँधान किरीटन कीन्हें ॥
दोऊ सारथि रथहि चलावत ❀ वोहित मनहुँ सिन्धुमहँधावत॥
जूझि सेन लगे तीक्षण शर ❀ होन लागि अति मारुपरस्पर॥
अर्जुन कर्ण करत रण करणी ❀ रुण्ड मुण्ड मंड्यो सब धरणी ॥
अर्जुन बाण कोपि परिहान्यो ❀ सहस पैग पाछे रथ टान्यो ॥
देखि कर्ण तब शर सँधाना ❀ मान्यो नान्दिघोष तकिबाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पैग अढ़ाई पाछे टाऱ्यो ❀ साधु कर्ण यदुनाथ पुकारो ॥
सफल जन्म जग जीवन तोरा ❀ बाण घात रथ डोलत मोरा ॥
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❀ साधु वचन भाष्योकेहिकारण॥
सहस पैग हम रथहिं चलायो ❀ पैग अढ़ाई मम रथ आयो ॥
तब श्रीपति बोले यह बानी ❀ अर्जुन तुम यह भेद नजानी॥
नन्दिघोष रथ मेघ समाना ❀ ध्वज पर परम भार हनुमाना ॥
दो०-महा विश्वंम्भर रूप धरि, हाँकत हौं यह रत्थ ।
टारो रविसुत बाणते, महाबीर समरत्थ ॥
यह सुनि बाण लगे पारिहारन ❀ जूझी सेना बीर हजारन ॥
कर्ण कोपि भालुक शर लीन्हें ❀ ते शर चोट शीश पर कीन्हें ॥
कृष्ण अंग शत बाण प्रहारे ❀ सहस बाण हनुमानहिं मारे ॥
श्याम शरीर रुधिर छवि छाये ❀ पीत बसन तनु शोभा पाये ॥
अर्जुन को तनु झांझर कीन्हें ❀ क्रोधित भये एक शर लीन्हें ॥
रविनंन्दन के उर सों माऱ्यो ❀ भेदि अंग निसरो शिर पाऱ्यो॥
बाण सहस्र शल्य उर दीन्हें ❀ घायल करि तनु झांझर कीन्हें॥
अरुण वर्ण देखत तनु भूले ❀ मधु महँ मनहुँ किंशुकी फूले ॥
यहि विधि कीन्हों बाण दरेरो ❀ दशहुँ दिशा दोऊ रथ घेरो ॥
दोऊ रथ यहि विधि छवि पाये ❀ पर्वत मनहुँ भूमि पर आये ॥
कही कर्ण अर्जुन सुनि लीजै ❀ सावधान मोते रण कीजै ॥
अब यहि विधि ते बाणचलावों ❀ काटों शीश विलम्बन लावों ॥
दो०-मारत हौं अब गहरु नहिं, कह्यो कर्ण यह बैन ।
सारथि ह्वै रक्षा करहु, प्रियतम पंकज नैन ॥
यह कहि नील वाण कर लीन्हें ❀ जो शर ऋषि दुर्वाशा दीन्हे ॥
कृष्णदेव रणको मन दीजै ❀ अब पारथ का रक्षा कीजै ॥
क्रोधित बाण किये संधाना ❀ देखि सल्य यहि भांतिबखाना॥
जाके रक्षक श्रीजगत्राता ❀ ताको कर्ण कीन चह घाता ॥
हृदय ताकि मारेउ तब बाना ❀ पलटि न करहु फेरि सँधाना॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यह कहि धनुषकर्ण लागि ताना ❀ कर्ण हाथ छूट्यो तब बाना ॥
अन्तरिक्ष शर आवत कैसे ❀ छूटै वज्र इन्द्र कर जैसे ॥
अर्जुन लगे कठिन शर मारण ❀ पै न सकै यह बाण निवारण॥
आयो बाण कंठ ताकि जबहीं ❀ नन्दिघोष दाबेउ प्रभु तबहीं ॥
जुटिकै अश्वरथहि ढिग आयो ❀ कटो मुकुट श्रीकृष्ण बचायो ॥
मुकुट काटि शर बेधेउ धरणी ❀ जगमें रही सदा यह करणी ॥
धन्य कृष्ण पांडव सब भाखा ❀ दीनदयालु पारथहि राखा ॥

दो०-जाके सारथि चक्रधर, मारि सकैं तेहि कौंन ।
अर्जुन के रक्षक सदा, श्रीपति राधा रौंन ॥

हाँक देत हाँकत हरि घोरे ❀ अर्जुन कोपि कठिन शर जोरे॥
दोउ वीर बाण परिहारे ❀ एकहिं एक क्रोध ते मारे ॥
शर अनेक वर्षत है कैसे ❀ श्रावण मेघ महा झरि जैसे ॥
पक्षी गगन उड़न नहिं पावत ❀ शर लागत धरणी परआवत॥
अरुण बर्ण आये संग आवहिं ❀ शर समूह ते पन्थ नपावहिं ॥
ऐसे लाग चलावन बाना ❀ शर पंजर छाये असमाना ॥
जूझी सेना पन्थ न पावहिं ❀ लोथिनपरथहाँकि चलावहिं ॥
गर्जत नन्दिघोष के चाके ❀ पवन वेग फहरात पताके ॥
शल्य सारथी रथहि चलावा ❀ नन्दिघोष सन्मुख पहुँचावा ॥
अर्जुन कर्ण जुरे हैं कैसे ❀ रघुपति सों रावण रण जैसे ॥
इक ते एक महाबल भारी ❀ वर्ण शूर दोऊ धनुधारी ॥
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ ❀ रण सम बली कर्ण अरुपारथ॥

दो०-अर्जुन कर्णहिं रण मच्यो, छूटत तीक्षण बान ।
कौतुक त्याग्यो सुर गणन, भाजे छाँडिविमान ॥

शल्यहि कहा कर्ण तब ऐसो ❀ चाक भूमि पर सैनहिं जैसो ॥
जेहि दिन मैं बिराटपुर घेरी ❀ बैठी गाइ अहीरन केरी ॥
तब सहदेव बुद्धि उपराजो ❀ खुर दै बाँधि आपु उठि भाजो॥
लाठी छाँड़ि बहुत विधि मारो ❀ अचल गाइ तनु टरत नटारो॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मैथुनि नाम गाय इक रहेऊ ❀ केधित ह्वै अस मोसन कहेऊ ॥
जैसे अचल भयो तनु मोरा ❀ रथ अटकै भारत में तोरा ॥
चाके चारि ग्रसै जब धरणी ❀ तब न बनै कछु तोसे करणी ॥
यह सुधि मेरे मन में आइ ❀ सावधान हाँको रथ भाइ ॥
शल्य सारथी कीन्हेउ करणी ❀ चाक छुवै नहिं पावत धरणी ॥
अर्जुन कर्ण करत संग्रामा ❀ पल भर नहिं पावत विश्रामा ॥
देव अस्त्र द्वउ दिशी परिहाररहिं ❀ एकहि एक क्रोध करिमाररहिं ॥
गज रथ पैदल जूझे लाषन ❀ महा मारु कोउ सकै नभाषन ॥
दो०—नदी भयंकर रुधिर की, गजन करारे जान ।
भरत मास जल फेन सम, लहरी चमकैं बान ॥
ढाल मनहुँ कच्छप उताराने ❀ बार सेवार सरिस अरुझाने ॥
बख्तर साहित परे धर जेते ❀ ग्राह समान देखियत तेते ॥
गज भुशुंडि टूटे कस जाने ❀ मनहुँ सूसि जल में उतराने ॥
चक्रत फेरी लसत हैं कैसे ❀ रुचिर पत्र पुरइनि के जैसे ॥
शूर शीश देखत दिग भूले ❀ जैसे कमल सहस दल फूले ॥
माँस बहुत सम सरिस सोहावा ❀ नाव चलत जिमि रथउतरावा॥
परि जँजीर जल शोभा पावहिं ❀ धीवर मनहुँ जाल छिटकावहिं॥
भूत प्रेत तहँ करत स्नाना ❀ योगिनि मनहुँ कर सो पाना॥
जम्बुक गीध काकगण आवहिं ❀ माँस खाहिं मनमोलचुकावहिं॥
नँदी चढ़ि डोलत हैं शंकर ❀ मुंडमाल गर रूप भयंकर ॥
गज शुंडाहिलै योगिनि आवहिं ❀ दै मुख बीशकरतालबजावहिं ॥
नाचि कबंध देहि करतारी ❀ कौतुक रचि रण भुमिहिं भारी॥
दो०-आँत लपेटे गज चरण, किये पखाउज साज ।
भैरवगण या विधि फिरत, खेत भयंकर लाज ॥
यहि विधि युद्ध भयंकर भारी ❀ दोऊ भिरे खेत परचारी ॥
क्रोधित अरुण नैन भये कैसे ❀ भोरहिं उदित दिवाकर जैसे ॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे ❀ घायल नंदिघोष के घोरे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तीक्षण बाण कृष्ण उर दीन्हें ❀ हनूमान तनु जर्जर कीन्हें ॥
तब अर्जुन कीन्हें सँधाना ❀ कर्ण हृदय तकि मारेउ बाना॥
घायल किये शल्य से सारथि ❀ इकते एक सरस पुरुषारथि ॥
बाणहिं त्यागत यहि व्यवहारा ❀ जिमि वर्षा बरषै जलधारा ॥
रविमण्डल महँ शब्द सुनावहिं ❀ कर्ण मारि अर्जुन यश पावहिं॥
सुरपति कही जीति है पारथ ❀ मारौ कर्ण करहु पुरुषारथ ॥
यहि विधि कहहिंदेवगण बानी ❀ सुनिकै शल्य अचंभव मानी ॥
कोऊ कहुँ लरे नहिं ऐसो ❀ अर्जुन कर्ण भयो रण जैसो ॥
रुधिर प्रवाह चले सब अंगा ❀ महाशूर मन नेकु न भंगा ॥
दो०-घोर युद्ध यहि विधि करत, दोऊ वीर समान ॥
शल्य सारथी कर्ण रथ, पारथ रथ भगवान ॥
भीमसेन कीन्हीं बहु करणी ❀ परे वीर लोटत सब धरणी ॥
गजते गज हयते हय मारे ❀ रथहिं पकरि रथ ऊपर डारे ॥
सन्मुख जुरे गिरे रण जेते ❀ गगन पन्थ कहँ फेंकत तेते ॥
जे अभिरे ते सबहिं पछारे ❀ बहुतक मींजि चरण ते डारे ॥
लागे वीर गदा सों मारण ❀ दुर्योधन के बंधु सँहारण ॥
ते सब बहुरि कठिन शर मारे ❀ मुद्गर गदा शल्य परिहारे ॥
भूमि पर परे भीम न डरपै ❀ मनहुँ बाज पक्षिन पर झरपै ॥
क्रोधित भये पांड के नन्दन ❀ यहि विधि कीन्हें सेननिकदन॥
तब अर्जुन छाँड़े शर पायल ❀ शल्य सहित रविनन्दनघायल॥
कर्ण बाण ऐसे परिहारे ❀ अर्जुन हृदय ताकि के मारे ॥
कही कृष्ण सुनिये अब पारथ ❀ प्रण कहँ सुमिरि करहुपुरुषारथ॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे ❀ हाँकत पद ठहरात न घोरे ॥
दो०-अर्जुन कर्णहि रण मचेउ, उपमा और न तासु ।
मारत शरके अग्र ते, उड़त गगन महँ मासु ॥
सखा साथ धरणी के ऊपर ❀ ग्रसो चाक आड़िगो रथभूपर ॥
होनहार सो होय निदाना ❀ विधि चरित्र कोऊ नहिं जाना॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भाषो शल्य कर्ण सों ऐसा ❀ अटको चाक चलत रथ कैसा ॥
सुनि कै कर्ण किये दृढ़ ठाना ❀ मारों नन्दिघोष तकि बाना ॥
सहस बाण अश्वन उर मारे ❀ थकित भये पग टरत न टारे ॥
असी बाण मारेहु हनुमानहिं ❀ शर अनेक घाले भगवानहिं ॥
तीनि बाण पारथ उर मारे ❀ नन्दिघोष रथ टरत न टारे ॥
कृष्णदेव हाँको रथ बाँको ❀ जैसे फिरत कुम्हार को चाको ॥
चहूँओर शर वर्षत कैसे ❀ भाद्र बृष्टि मन्दर पर जैसे ॥
जेहि दिशि अर्जुन को रथधावै ❀ तेहि दिशि कर्ण बाण झरिलावै॥
छूटत बाण कर्ण के कर सों ❀ नन्दिघोष रथ घेरेउ शर सों ॥
हांक देत हांकत रथ घोरे ❀ अर्जुन कठिन बाण गुणजोरे॥

दो०-माऱ्यो पारथ क्रोध करि, चल्यो बाण परचंड ।
कर्ण धनुर्द्धर श्री प्रबल, काटि किये शतखंड ॥

अश्वन शल्य बहुत विधि हांको ❀ छूटत नाहिं भूमि ते चाको ॥
कूदि कर्ण रथ के ढिग आये ❀ गहि चाका तेहि चहत उठाये ॥
कर्ण वीर कीन्ह्यों बल भारी ❀ अर्जुन सों भाष्यो बनवारी ॥
मारहु बाण गहरु जानि लावहु ❀ कर्ण शीश अब मारि गिरावहु ॥
पारथ कही उचित नहिं होई ❀ बिना अस्त्र नहिं मारहिं कोई ॥
यह अधर्म करिये केहि कारण ❀ यह सुनि कही जगतके तारण ॥
चक्रव्यूह महँ अभिमन्यु मारे ❀ तादिन कर्ण न धर्म विचारे ॥
आजु धर्म तुम सोचो पारथ ❀ तौ भारत रण किये अकारथ ॥
कुन्ती दिये बाण सो लीजै ❀ अर्जुन कर्ण बधन तेहिकीजै ॥
मारहु तुरत गहरु जानि लावहु ❀ बहुरि न ऐसो अवसर पावहु ॥
रथ उठाई करिहै धनु धारण ❀ तब अर्जुन तुम सकहुन मारण॥
सुनि अर्जुन कीन्हें संधाना ❀ श्रवण प्रयन्त शरासन ताना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-दीन्हें हाँक प्रचारि कै, चलो वज्र सम बान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

लाग्यो बाण कर्ण के कैसे ❀ इन्द्र वज्र पर्वत पर जैसे ॥
काटो शीश परो तब धरणी ❀ जगमें रही सदा यह करणी ॥
कृष्ण आपु जयशंख बजायो ❀ पांडव सैन देखि सुख पायो ॥
हर्षि इन्द्र तब आज्ञा दीन्हीं ❀ पुष्प वृष्टि सब देवन कीन्हीं ॥
जयजय शब्द गगनमहँ बोल्यो ❀ चढ़िविमानआनन्दित डोल्यो ॥
जूझेउ कर्ण जगत यश पायो ❀ निसरो रथ माहि ऊपर आयो ॥
छूटो चक्र धराणि ते जबहीं ❀ फेऱ्यो शल्य हाँकि रथ तबहीं॥
छूँछो रथ दुर्योधन देखा ❀ जूझेउ कर्ण सत्य करि लेखा ॥
बिचलि सेन कौरवपति जान्यो ❀ आगे ह्वै के शारँग तान्यो ॥
शरनों मारु भयंकर दीन्हें ❀ सेना सबै निवारण कीन्हें ॥
सन्ध्या जानि किये तब गवना ❀ द्वउ सेना आई तब भवना ॥
अस अहमितिअर्जुन मनकीन्हें ❀ कर्ण मारि जगमें यश लीन्हें ॥

दो०-महावीर रविसुत निरखि, कही कृष्ण यह बात ।
अर्जुन सुनिये श्रवण दै, षटजन किये निपात ॥

परशुराम जब शापहिं दीन्हें ❀ कुण्डल कवच पुरन्दर लीन्हें ॥
तुम हम धरणी कुन्ती माता ❀ छहउन ने मिलिकीन्ह निपाता॥
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❀ भृगुपतिशाप दियोकेहिकारण॥
तब श्रीहरि आये यहि बातन ❀ पारथ सुनिये कथा पुरातन ॥
रत्नवर्ष व्याकरण पढ़ायो ❀ भृगुपाति पहँ पाढ़िबे को आयो॥
कटिमें मूंज मेषला बांधे ❀ कीन्हें तिलक जनेऊ कांधे ॥
निकट जाय परणाम जनाये ❀ कौन जाति कहवां ते आये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मैं हौं विप्र श्रवण सुनि लीजै ❀ आये पढ़न अनुग्रह कीजै ॥
विद्या मो पहँ आय घनेरो ❀ पढ़िये जो मन आवे तेरो ॥
तब भाष्यो धनु विद्या दीजै ❀ बालक जानि कृपा मोहिंकीजै॥
धनुविद्या सिखइयमुनि ज्ञानी ❀ कृष्ण चतुर्दशि आय तुलानी॥
दो०-धनुष बाण लै हाथ महँ, करन चले स्नान ।
खरी तुरत लै आवहू, पाछे शिष्य सुजान ॥
आगे चलत वृक्ष इक देखा ❀ फूले फूल कदम्ब अशेखा ॥
परशुराम हँसि शाँरग साधो ❀ मार्यो फूल कटो तब आधो॥
एक शराहि याहिं भाँति चलायो ❀ कटे सबै नहिं एक बचायो ॥
परशुराम जल तीराहि गयऊ ❀ पाछे कर्ण वृक्ष तर अयऊ ॥
आधो फूल लाग है ऊपर ❀ आधो कंटो परो है भूपर ॥
मनहिं कही मैं बाण चलावों ❀ आधो है तेहि मारि गिरावों ॥
भूपर खरी धरै जो कोई ❀ बाढ़ै दोष पवित्र न होई ॥
उछलाये तब कनक कटोरा ❀ लै धनु बाण हाथ गुण जोरा॥
यहि विधि ते कीन्हों सँधाना ❀ कट्यो फूल सब एकहि बाना॥
बायें हाथ धनुष शर लीन्हें ❀ दाहिने हाथ कटोरा कीन्हें ॥
आये परशुराम के पासहिं ❀ खरी लगाय पढ़ै सों आसहि ॥
करि स्नान ध्यान तब कीन्हें ❀ चले तुरत भवनहिं मनदीन्हें ॥
दो०-आये वृक्ष कदम्ब तर, देखि रहे होइ मौन ।
आधो सब हम काटिगे, आधो काटो कौन ॥
सुनिकै कर्ण कही यह बानी ❀ आधो काटो मैं अभिमानी ॥
परशुराम मन माहिं बिचारी ❀ भयो सुपूत सिद्धि धनुधारी ॥
याहि विधिते कछु दिवस गवाँयो ❀ एक दिवस निद्रा मन लायो॥
आलस भयो शयन तब कीन्हा ❀ कर्ण जंघ ऊपर शिर दीन्हा ॥
वज्र कीट कीरा जो रह्यऊ ❀ जड़सों निकासि जंघसो गह्यऊ ॥
भेदेउ जंघ निकरि तब पारा ❀ तासों चली रुधिर की धारा ॥
तातो रुधिर अँगसों लागा ❀ उठ्यो चौंकि भृगुनायक जागा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रुधिर देखिकै मन अनुमान्यो ❀ लाग्यो वज्रकीट यह जान्यो ॥
सुधि अजहुँ नाहीं तेहि केरी ❀ कहुरे शिष्य जाति का तेरी ॥
ऐसो विप्र कहाँ ते आयो ❀ बिनु डोले निज जंघ छेदायो ॥
क्षत्रिय जाति अहो मैं जाना ❀ छल काहे कीन्हों अज्ञाना ॥
विद्या दै विनाश का कीजै ❀ वर अरु शाप एक सँग लीजै ॥
दो०-पाँच बाण मैं देत हौं, जौलौं रहिहैं हत्थ ।
अजय होहि संसार मो, जीते तू समरत्थ ॥
जब यह बाण शत्रु कर जैहै ❀ तबहीं मृत्यु कर्ण तू पैहै ॥
बर अरु शाप दोउ जब जाने ❀ सो सुनि कर्ण अनुग्रह माने ॥
अर्जुन के जिय सँशय रह्यऊ ❀ ता कारण या माधव कह्यऊ ॥
धर्मराय तब बात जनाई ❀ मेरे जिय यह सँशय आई ॥
विप्र जानिकै विद्या दीन्ह्यउ ❀ क्षत्री जानिशापाकिमिकीन्ह्यउ ॥
याविधि कही जगत के तारण ❀ धर्मराय सुनिये यह कारण ॥
भीषम गये रहे तहँ आगे ❀ परशुराम ते सिखै सो लागे ॥
विद्या अस्त्र बहुत विधि दीन्हें ❀ आपु समान धनुर्द्धर कीन्हें ॥
विद्या पाइ भवन कहँ आये ❀ तब माता यह वचन सुनाये ॥
मेरे कहो कियो तुम चाहौ ❀ जीति स्वयंबर बंधु विवाहौ ॥
दोऊ बंधु साथ लै लीन्हें ❀ वाराणसी गवन शुभ कीन्हें ॥
जानि स्वयंबर सब नृप आये ❀ रंगभूमि सब राजन छाये ॥
दो०-अम्बे अम्बा अम्बली, तीनों कन्या साथ ।
निकरी भूषण साजिकै, जयमाला लै हाथ ॥
जब कन्या इत पाँव न दीन्ह्यों ❀ भीषम देखि क्रोध जियकीन्ह्यों ॥
तीनिउँ गहि कर रथहि चढ़ायो ❀ तब भीषम चलियेमन लायो ॥
भिरे नरेश किये रण क्रोधा ❀ गंगासुत जीते सब योधा ॥
कन्या लै भवनाहि पहुँचाये ❀ माता सों तब बचन सुनाये ॥
चित्रांगदहि अंबिकहि दीन्हें ❀ अंबाहि चित्रबीज तबलीन्हें ॥
अंबालिका कोउ नहिं चाहे ❀ द्वउ कन्या द्वउ बंधु विवाहे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जो भीषम अपनो भल चाहौ ❀ तौ मोको अब आपु विवाहौ ॥
जो अपने मन इच्छा कीन्हें ❀ जाहु शल्य पर आज्ञा दीन्हें ॥
कन्या चली शल्य पहँ आई ❀ भीषम मोकहँ दीन्ह पठाई ॥
शल्य कही यह उचित न होई ❀ अब तोकहँ ब्याहै नहिं कोई ॥
अंबालिका बचन सुनि पाई ❀ तब फिरि परशुराम पहँ आई ॥
गंगासुत मोकहँ हरि लाये ❀ करै न ब्याह बीच टरकाये ॥
दो०-परशुराम सुनि क्रोध कै, कहा चलो मम साथ ।
भीषम कों मैं सौंपिहों, पकरि हाथ सों हाथ ॥
भृगुपति आय दिये तब दरशन ❀ भीषम दौरि किये पग परशन॥
इतनो कहो हमारो कीजै ❀ जयमाला कन्या सों लीजै ॥
कीन्हों कौल पिता सो अपने ❀ संगम नारि करहुँनहिं सपने ॥
की मानौ तुम कहा हमारो ❀ की अब मोते युद्ध बिचारो ॥
गंगासुत सुनि क्रोधहि पाये ❀ बाँधि अस्त्र मैदानहिं आये ॥
शिष्य गुरु रच्यऊ महारण भारथ ❀ चौबिस दिवस रच्यो पुरुषारथ॥
देवन आइ बीच कर दीन्हा ❀ तब कन्या कछु कहिबे लीन्हा॥
गंगतरि शुचि चिता बनाई ❀ देखत सबहिं जरत हौं भाई ॥
क्षत्री होइ लैहों अवतारा ❀ तब भीषम को करहुं संहारा ॥
अस कहिकै निज देहैं जारौं ❀ जन्म शिखण्डी भीषम मारौं ॥
तब सों परशुराम प्रण कीन्ह्यों ❀ क्षत्री को विद्या नहिं दीन्ह्यों ॥
मुनिकै धर्मराय सुख माना ❀ सत्य बचन भाष्यउ भगबाना॥
दो० जहाँ धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहं हरि विजय प्रमान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्बणि सबलासिंहचौहानभाषाकृते
युद्ध व कर्णबधवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

॥ इति कर्णपर्व समाप्त ॥ ८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

शल्यपर्व ॥ ९ ॥

जय जय गुरुचरणन चित दीजै ❀ रघुपति पद अभिवन्दनकीजै ॥
शारद चरण करहुं परणामा ❀ बन्दौं वाल्मीकि गणग्रामा ॥
संवत सत्रह सै जग जाना ❀ तेहि ऊपर चौबीस बखाना ॥
कार्तिक मास पक्ष उजियारा ❀ दशमी तिथि को कथा उचारा॥
नौरंगशाह दिली सुल्ताना ❀ प्रबल प्रताप जगतसबजाना ॥
दो०-व्यासदेव पद बंदिकै, जो मुख वेद पुरान ।
शल्यपर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥
जूझे कर्ण जगत यह पाये ❀ दुर्योधन यह बचन सुनाये ॥
हा हा मित्र परम सुखदायक ❀ महायुद्ध करिबे के लायक ॥
तुम पाये निज क्षत्री धर्मा ❀ यह सब दोष हमोर कर्मा ॥
बल सों अर्जुन सके न मारण ❀ छल करि बधे जगतके तारण॥
अब काको सेनापति कीजै ❀ जाके बल भारत यश लीजै ॥
कृतवर्मा तब कह्यो बिचारी ❀ राजा सुनिये विनय हमारी ॥
जब पांडव निज देशहि आये ❀ करि बसीठ यदुनाथ पठाये ॥
पांच ग्राम माँगे नहिं दीन्हेउ ❀ हठ करिकै भारत तुम कीन्हेउ ॥
अब करुणा कीजै केहि काजा ❀ साहस सदा चाहिये राजा ॥
सदा धर्म अपने मन राखउ ❀ सत्यछाँड़ि मिथ्या नहिं भाषउ ॥
ब्राह्मण गौ की रक्षा करहू ❀ परधन परनारी नहिं हरहू ॥
सुतसमप्रजा करो प्रतिपालक ❀ ज्यों जननी पालै निजबालक॥
दो०—सदा दान सन्मान करि, तजौ न शीलस्वभाव ।
शरणागत रक्षा करत, देश प्राण बरु जाव ॥
मातु पिता की सेवा करहू ❀ आज्ञा तासु शीश पर धरहु ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कृतवर्मा यहि विधिकाहि दीन्हेउ ❀ तबशकुनीकछुकहिबे लीन्हेउ ॥
शोच करत नृप काहि अकारथ ❀ अर्जुन मारि रचहु महभारथ ॥
कृपाचार्य द्रोणी सम अत्री ❀ हमहूँ हैं कृतवर्मा क्षत्री ॥
शल्य नरेश अहै बल भारी ❀ क्षत्री महावीर धनुधारी ॥
मुकुट बाँधि कीजै सरदारा ❀ दीजै भूप शल्य शिर भारा ॥
सुनिकै कुरुपति आनँद पाये ❀ मुकुट शल्य के शीश बँधाये ॥
विप्रन आइ वेदध्वनि भाख्यउ ❀ आगे कलश नीर भरिराख्यउ ॥
बहुत भाँति शकुनी शुभ कीन्हें ❀ दुर्योधन कछु कहिबे लीन्हें ॥
शल्य नरेश आपु यश लीजै ❀ रण पांचौ पांडव बध कीजै ॥
भीषम प्रथम गिरे मैदाना ❀ द्रोण गुरूको भयो निदाना ॥
दो०—सेन सहोदर सब गिरे, गिरे कर्णसे मित्र ।
शल्य पांडवन जीति है, ऐसी नृपके चित्र ॥
कही शल्य देखहु पुरुषारथ ❀ मारि पांडवन जीतहुँ भारथ ॥
महायुद्ध करिहौं परतक्षक ❀ पै अर्जुन रथ श्रीपति रक्षक ॥
कुरुपति हर्ष भये सुनि बैना ❀ रविके उदय साजि सब सेना ॥
कृपाचार्य अश्वत्थामा साज्यउ ❀ भेरि दुन्दुभी मारू बाज्यउ ॥
कृतवर्मा कीन्हेउ असवारी ❀ सेन अनेक बीर धनुधारी ॥
अस्त्र बाँधि शकुनी तब आयऊ ❀ चढ़ो जाइ रथ शोभा पायउ ॥
कुरुपति रथ साजो है कैसे ❀ इन्द्र विमान देखिये जैसे ॥
चंचल चपल आनि रथ जोरे ❀ पवन वेगसों चारिऊ घोरे ॥
ध्वजा पताका बाँधेउ बाना ❀ बहुत भाँति बैरख फहराना ॥
गज काछे पर्वत सम भारी ❀ पाँव जँजीर नैन अँधियारी ॥
चारिहु पाट बहत मद धारा ❀ ज्यों झरना झर बहै पनारा ॥
अति उतंग देखत छबि पावत ❀ मनहुँ मेघ धरणी पर आवत ॥
दो०-कुरुपति चलिभौ साजि दल, सेना सिंधु समान ।
हय रथ पैदल चलेउ बहु, गर्द लोपि गे भान ॥
धर्मराय कीन्ही असवारी ❀ पारथ रथ जोते बनवारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्जुन अंग सनाह विराजै ❀ अक्षय त्रोण गांडिव सो भ्राजै॥
चढ़े कोपि रथ भीम भयंकर ❀ प्रलयकाल महँ जैसे शंकर॥
चढ़ि तुरंग पर नकुल सुहाये ❀ धर्मराय कहँ शीश नवाये॥
कंचन रथ सहदेव विराजै ❀ कर असि फरी सरिस शर छाजै॥
धृष्टद्युम्न क्षत्रीगण राजै ❀ चढ़े तुरंग बीर सब गाजै॥
गज अरूढ़ अगणित वलभारी ❀ जिन के नयन परी अँधियारी॥
पहिरि सनाह महावत चढ़े ❀ मानहुँ विधि अपने कर गढ़े॥
क्रोधवन्त जानत रण घोरा ❀ छाया लखि देखहिं भुज ओरा॥
कोपमान पैदल रण चांड़े ❀ फेरी लइ चमकावत खांड़े॥
सांगि शूल लीन्हें कोऊ कर ❀ कोउ मुद्गर लै कोउ धनुर्द्धर॥

दो०-धर्मराय यहि बिधि चले, दल बल कीन्ह्यों साज।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्रीब्रजराज॥

सेन साजि कुरुखेतहि आये ❀ द्वउ दल बरिन शोभा पाये॥
बम्ब निशान बाजने बाजे ❀ होत शब्द मानहुँ घन गाजे॥
कोउ हांकत गज हींसत घोरे ❀ आगे होयँ शूर रण जोरे॥
अग्रहिं पेलि देहिं मयमन्ता ❀ क्रोधित जुरे फिरैं चौदन्ता॥
रथी रथी शर वर्षन लागे ❀ कोप अनल उर अन्तर जागे॥
खमसी अनी जुरे असवारा ❀ मुद्गर गदा शूल परिहारा॥
हांक मारि कै पैदल धाये ❀ महायुद्ध करिबे मन लाये॥
याहि विधि लरत करत घनघोरा ❀ मंडेउ खेत जोर सों जोरा॥
आगे शल्य हांकि रथ आये ❀ बाण वृष्टि रथ ऊपर लाये॥
शर अनेक वर्षत हैं कैसे ❀ जलद मनहुँ श्रावण महँजैसे॥
नान्दिघोष श्रीपति पहुँचायो ❀ अर्जुन बाण बुन्द झरि लायो॥
द्रोणी भीम करत संग्रामा ❀ दोऊ जुरे खेत जय कामा॥

दो०-कृतवर्मा अरु नकुल सों, भिरे खेत परिचारु।
शकुनी रण सहदेव सों, भई भयंकर मारु॥

कृपाचार्य कीन्ह्यों पुरुषारथ ❀ धृष्टद्युम्न सों मण्ड्यो भारथ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुरुपति धर्मराय रण सरसे ❀ छूटत बाण बुन्द सम वरसे ॥
दुउ दल महा वाजने बाजे ❀ करहिं युद्ध क्षत्री गण गाजे ॥
याहीविधि सरिसचलावत बाना ❀ जूझे वीर गिरे मैदाना ॥
शल्य हाथ तिक्षण शर छूटे ❀ सेन वेधि धरणी महँ फूटे ॥
अर्जुन के बाणन के मारे ❀ कुरुदल लौटे परे किनारे ॥
परे शूर महि लोटत कैसे ❀ लागत पवन पाकफल जैसे ॥
क्षत्री सदा अस्त्र परिहारहिं ❀ एकहि एक क्रोध करि मारहिं॥
शल्य कोपि ऐसे शर जोरे ❀ वायल नन्दिघोष के घोरे ॥
सहस बाण मारे हनुमानहिं ❀ असी बाण ते श्रीभगवानहिं ॥
अर्जुन अंग बाण बहु मारे ❀ शर ते तनु जर्जर कै डारे ॥
तब पारथ कीन्हेंउ संधाना ❀ शल्य अंग मारे बहु बाना ॥
दो०-आठ बाणते रथ हन्यो, तुरंग अंग शर बीस ।
एक बाण यहि विधि चल्यो, कट्योसारथीशीस॥

शल्यहि भयो क्रोध अति भारी ❀ कन्यो अपर रथ पर असवारी॥
यहि विधि बाण बुन्दझरिलाये ❀ पांडव दल बहु मारि गिराये ॥
अर्जुन त्यागी बाण यहि रूपा ❀ प्रलय काल जैसे यम भूपा ॥
कुरुदल पारथ किये निपाता ❀ जानत सबै युद्ध की बाता ॥
ऐसे बाण क्रोध करि जोरे ❀ मानुष कहा शेष शिर फोरे ॥
शल्य कोपि लागे शर मारन ❀ जूझे सेन हजार हजारन ॥
भीमसेन द्रोणी ते मारत ❀ दोऊ जुरे सरिस पुरुषारथ ॥
मारे बाण क्रोध ते पागे ❀ चल्यउ न एक एक के आगे॥
सत्तरि बाण भीम उर लागे ❀ क्रोधवान उर अन्तर जागे ॥
किये भीम तब लघु सँधाना ❀ गुरुसुत अँग हने सत बाना॥
दोऊ बीर करत घमसाना ❀ जरजर भये लगे तनु बाना ॥
क्रोधवन्त यहि बिधि शरछाँट्यो ❀ भारत भूमि बाण ते पाट्यो ॥
दो०-यहि विधि कीन्हेउ युद्ध बहु, दोऊ वीर समान ।
सात लक्ष चतुरँग दल, जूझि गिरे मैदान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्द्ध चन्द्र शर द्रोणी छाँट्यो ❀ धनु गुण भीमसेन कै काट्यो॥
करते धनुष डारि महि दीन्ह्यों ❀ रथते उतरि गदा कर लीन्ह्यों॥
दै करि हाँक वृकोदर धाये ❀ मानहुँ काल देह धरि आये॥
द्रोणी कोपि बहुत शर मारे ❀ बाँये अंग भीम सब टारे॥
क्रोधित भये गदा परिहारे ❀ बचो कूदि गुरुपुत्र सँभारे॥
हय सारथि रथ चूरण कीन्हें ❀ सेना बधन भीम मन दीन्हें॥
धर्मराय दुर्योधन दावन ❀ वर्षैं बाण मनो घन सावन॥
दोऊ भूप छत्र के धारी ❀ महाशूर क्षत्री अधिकारी॥
भालुक पाँच युधिष्ठिर लीन्हें ❀ ते शर चोट शीश पर कीन्हें॥
दुर्योधन कीन्हेंउ सँधाना ❀ धर्मराय उर मोरेउ बाना॥
क्षत्री सबै करत रण सरसे ❀ चहुँदिशि बाण बुन्दसे बरसे॥
कृतवर्मा सन नकुल लराई ❀ महायुद्ध कीन्हें प्रभुताई॥
दो०-अर्जुन शल्यहि रण मचो, रथ चाके घहरात।
हाँकत हरि रथ हाँक दै, पीताम्बर फहरात॥
श्याम शरीर जगत मन मोहै ❀ कुंडल झलक कपोलन सोहै॥
श्रमजल बुंद बदन पर कैसे ❀ मर्कत मणि मुक्ताहल जैसे॥
सारथि रूप धरो बनवारी ❀ भक्त हेतु पांडव हितकारी॥
कही कृष्ण अर्जुन सों बैना ❀ चित धरि करौ शल्यसनसैना॥
सुनि अर्जुन लागे शर मारन ❀ जूझी फौज हजार हजारन॥
शल्य नरेश पांड दल मारत ❀ जैसे अग्नि सघन बन जारत॥
बीरन हाथ तेज शर छूटत ❀ भेदि सनाह अंग महँ फूटत॥
महामत्त लागन गज धावत ❀ आगे परत सो मारि गिरावत॥
ठोकर पुनि बखोरि सों मारत ❀ बहुतक छेदि दंतसों डारत॥
बहुत लपेटि शुंड सों लीन्हें ❀ डारि चरणतर चूरण कीन्हें॥
तोरि शीश फेंकत हैं कैसे ❀ पाके ताल गिरहिं महि जैसे॥
अति उतंग देखत भयकारी ❀ याहि विधि बहुतक सेन सँहारी॥
दो०-पांडव दल जुझे घने, भई भयंकर मारि।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गदा हाथ लै हाँकदैं, धाये भीम प्रचारि ॥
गदा घाव कुंजर सँहारेउ ❀ ताते बदन फोरिकै डारेउ ॥
दशन पकरिकै जे गज हटकेउ ❀ गहि करि शुंडधरणि महँ पटकेउ॥
फेंको पैदल जात न जाने ❀ ज्यों बकुला को पंख उड़ाने ॥
यहि विधि कीन्ह्यों सैन निकंदन ❀ दौरे देखि द्रोणगुरुनंदन ॥
क्रोधित ह्वै कीन्हें संधाना ❀ भीम अंग मारे शत बाना ॥
तीक्षण तीनि बाण कर लीन्हें ❀ ते शर घाव शीश पर कीन्हें ॥
भीमसेन तब धनुष सँभारे ❀ द्रोणी अंग बाण दश मारे ॥
यहिविधि दोउ युद्ध अरुझाने ❀ अरुण वर्ण शोणित लपटाने॥
शकुनी कही भूपसों बाता ❀ कुरुपति सुनो युद्धकी घाता ॥
दोउ दल अटके अरुझाने ❀ महायुद्ध कछु जात न जाने॥

दो०—अब आज्ञा मोहिं दीजिये, लै धावों कछु सैन ।
बेडे होइ अरि पर परैं, आपु देखिये नैन ॥

कुरुपति सुनिकै आज्ञा दीन्हें ❀ अपनी अनी साथकै लीन्हें ॥
दश सहस्र कुंजर मतवारे ❀ तीनि सहस्र रथ सरस सँवारे ॥
साठि सहस्र असवार महाबल ❀ डेढ़ लाख लीन्हें सब पैदल ॥
क्रोधवंत होइ शकुनी धाये ❀ बिदरि होइ पाछे कहँ आये ॥
पैठ पेलि फौज महँ कैसे ❀ गंगा मिली सिंधु महँ जैसे ॥
शेल खड्ग मुद्गर फटकारहिं ❀ शरते वीर शेल बहु मारहिं ॥
मारे बहु पांडव दल वीरा ❀ भरकी अनी धरहिं नहिं धीरा॥
शकुनी रची युद्धकी करणी ❀ जूझी सेन परी सब धरणी ॥
भयो शोर दल बैरख डोले ❀ दगा दगा पांडव दल बोले ॥
छूटे बाण सकै को भाषन ❀ पांडव दल जूझे तब लाखन ॥
महाशूर रण पलटि सँभारे ❀ मारु मारु कै सबन पुकारे ॥
चले न एक एक के आगे ❀ उरझे सबै क्रोध ते पागे ॥

दो०-यहि विधि शकुनी सैनकी, जूझी फौज अनंत ।
पारथ अब निरखत कहा, भाष्यउ कमलाकंत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नन्दिघोष फेरो बनवारी ❀ भयो अघात शब्द अधिकारी॥
तब अर्जुन शर छाँड़त कैसे ❀ प्रलयकाल घन बरसत जैसे॥
हय गजरथ कीन्हें बहु खण्डित ❀ रुंड मुंड धरणि महँ मंडित॥
याहिविधि कीन्हेंउ सेन निकन्दन ❀ हांक देत हांकत जगबन्दन॥
तब शकुनी कीन्हें संधाना ❀ अर्जुन उर मारे शत बाना॥
कृष्ण अंग बहु बाण प्रहारे ❀ बीस बाण अश्वन उर मारे॥
तब पारथ तीक्षण शर छाँटे ❀ मारे अश्व धनुष गुण काटे॥
सेना बधि अर्जुन रण गाजे ❀ चढ़ि तुरंग पर शकुनी भाजे॥
कह्यो जाय दुर्योधन भूपहिं ❀ पारथ युद्ध किये जेहि रूपहिं॥
याहि बिधिते अर्जुन धनु खाँचे ❀ जूझे सकल एक नहिं बाँचे॥
विरथ भये आये तब तुम पै ❀ मंत्र एक नृप सुनिये हम पै॥

दो०-धनुधारी अर्जुन सरिस, जीति सकै नहिं कोय।
कोता ह्वै सब मिलि जुरहिं, होनी होई सुहोय॥

कुरुपति के मनमें तबआई ❀ कहा शल्य सों बूझौ जाई॥
उरझे शल्य युद्ध के घाता ❀ शकुनी आय कही तब बाता॥
शरते अर्जुन सकहिं न मारन ❀ अब लरिये कोता हथियारन॥
याहि विधि कीन्हें क्षत्री धर्महिं ❀ हार जीति राजा के कर्महिं॥
सेवक धर्म करहिं प्रतिपालहिं ❀ होई अंत लिखा जो भालहिं॥
शकुनी शल्य लगे याहि बाता ❀ उत पारथ दल करत निपाता॥
शल्य नरेश क्रोध कै धाये ❀ धर्मराय के सन्मुख आये॥
भाष्यो शल्य युधिष्ठिर भूपहिं ❀ धर्म युद्ध करिये केहि रूपहिं॥
छांड़ेउ धनुष बाण की करणी ❀ रथहिं छांड़ि धाये सब धरणी॥
सत्रह दिवस भयो रण भारथ ❀ भीषम द्रोण कर्ण पुरुषारथ॥
आजु युद्ध मेरे शिर भारा ❀ उतरि लरहु कोता हथियारा॥
भूप शल्य भाष्यो यह बानी ❀ धर्मराज बोले सज्ञानी॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-भूप युधिष्ठिर क्रोध करि कहेउ बचन परिमान ।
शल्य पर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते शल्यपर्वणि सवलसिंहचौहानभाषाकृते
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

लरहु शल्य जस आवहि मनमें ❀ निज कर आजु मारिहौं रनमें॥
शल्य नरेश धनुष तब राखेउ ❀ रथते उतरि बचन यह भाषेउ॥
रथहिं छाँड़ि उतरे सब धरणी ❀ धर्मयुद्ध कीन्हों यह करणी ॥
धर्मराय त्यागी असवारी ❀ उतरे भूमि क्रोध करि भारी ॥
दोऊ दल छाँड़े निज स्यन्दन ❀ नंदिघोष बैठे जगबन्दन ॥
अर्जुन उतरि खड्ग लै हाथा ❀ धृष्टद्युम्न कहँ लीन्हें साथा ॥
नृप आगे सहदेव बिराजे ❀ बांधे अस्त्र फरी कर साजे ॥
भीमसेन गहि गदा फिरावत ❀ नकुल शेल कर शोभा पावत॥
उतरे सबहिं युद्ध के शूरा ❀ क्षत्रिय धर्म महा बल पूरा ॥
कुरुपति उतरि रथहिं ते आये ❀ गहे अस्त्र कर शोभा पाय ॥
महाबीर सब बाँधे बाना ❀ अटके ठौर ठौर मैदाना ॥

दो०-दोउ दल यहि बिधिजुरे, कठिन बजाये सार ।
मुद्गर गदा गदासु शेल कर, छुट खड्गकी धार ॥

लागत खड्ग घाव शिर फूटे ❀ बहते शेल सजोइल टूटे ॥
मुद्गर परत करत चक चूरन ❀ जूझि गिरे धर केतिक शूरन ॥
फेरि खड्ग सहदेव सँभारत ❀ कौरव दल बहुतै रण मारत ॥
ऐसे हनत खड्ग कर साधे ❀ टूटि परहिं हय गय गिरिकाँधे॥
क्रोधित शकुनी खड्ग परिहारे ❀ शिर काटत सहदेव सँभारे ॥
हँसि सहदेव कही यह बानी ❀ सुनु मंत्री शकुनी अभिमानी॥
तेरेहि मंत्री भये सब नाशा ❀ करहुँ आजु तोहि यमपुर बाशा॥
दोऊ वीर भिरे रण चाँड़े ❀ उछरत तर्जि बचावत खाँड़े ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब सहदेव घात करि पाये ❀ मारि खड्ग शिर काटि गिराये ॥
कुंडल सहित परा शिर धरणी ❀ महामारु कछु जात न बरणी ॥
भीमसेन कर गदा सँभोर ❀ एकै घाव वीर सब मारे ॥
कुरुपति आय कियो पुरुषारथ ❀ मारेउ सेन कियो रण भारथ ॥
दो०-गदा हाथ मणिमय लिये, करत कोपि परिहार ।
हय गज रथ चूरण किये, सेना वीस हजार ॥
हाथन शूर कटारिन मारहिं ❀ यकरि केशगहि भूमि पछारहिं ॥
याहि विधि महायुद्ध रण होई ❀ पाछे पांव धारहिं नहिं कोई ॥
जुरे शिखंडी द्रोणी संगा ❀ महायुद्ध कीन्हें रण रंगा ॥
क्रोधित खड्ग घाव परिहारहिं ❀ दोउ वीर ढाल पर टारहिं ॥
गुरुसुत क्रोधित औझरझारो ❀ कटो शीश ह्वै परेउ नियारो ॥
अर्जुन गह्यउ खड्ग तब हाथा ❀ काटे बहु क्षत्रिन के माथा ॥
कहूँ शीश कहुँ परे अधर धर ❀ खड्ग सहित कहुँ पर कटे कर ॥
कोऊ युद्ध करत रण करणी ❀ कोऊ कटे अधर धर धरणी ॥
लगे शेल माहि परे कहारत ❀ कोऊ खड्ग कोपि शिर मारत ॥
कहुँ देखियत गज को शुण्डा ❀ कहुँ मुण्ड कहूँ लखिये रुण्डा ॥
कहूँ कबंध धरणि पर धावत ❀ शीश परे महि जय जयगावत ॥
कुंजर शीश रुधिर की धारा ❀ जनु गेरू रंग स्रवत पहारा ॥
दो०-कुन्त फरी तोमर गहे, लरत शूर परचारि ॥
मारत बीरन क्रोधके, निसरत पंजर फारि ॥
सैन सबहिं लौटत लपटाने ❀ खेलत फागु अबीरन साने ॥
मारत शेल सजोइल फूटत ❀ रुधिर धार पिचका सम छूटत ॥
याहि विधि खेलत चांचरि रनमें ❀ महाशूर शंका नहिं मन में ॥
धृष्टद्युम्न कीन्ह्यों रण करणी ❀ कौरव दल लोटत सब धरणी ॥
कृतवर्मा तब आपु सँभारे ❀ पांडव दल बहुतै सँहारे ॥
कोऊ बाहत खंजर धोपा ❀ कोउ मारत मुद्गर करि कोपा ॥
भीमसेन गज बहुत सँभारे ❀ जे अभिरे तेहि सबहिं पछारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मारु मारु कै सब मिलि भाषत ❀ महबीर सब लोहुन चाखत ॥
अभिरत भिरत लरत मैदाना ❀ क्रोधित सबै शंक नहिं माना॥
याहि विधिसों जोरत रण रंगा ❀ करत भोग सुर कन्यन संगा॥

दो०-दोउ वीर दल इमि लरत, जूझि गिरत मैदान ।
कौतुक देखत दव गण हर्षित चढ़े विमान ॥

रहत खेत महँ शूरन कैसे ❀ देखत दिन तारागण जैसे ॥
धर्म्मराय तब कहा बिचारी ❀ सुनो शल्य हित बात हमारी॥
अब हमसों तुमसों है जोरा ❀ चढ़ि रथ कीजै धनु टंकोरा ॥
बाजो भीम खेत महँ खांड़ो ❀ धर्म्मयुद्ध मोते रण चांड़ो ॥
तब रथ पर कीन्ही असवारी ❀ धनुष बाण कर गह्यो सँभारी॥
कही शल्य स्थिर अब रहिये ❀ मारतहौं तीक्षण शर सहिये ॥
यह कहि शल्य बांण दश छांटै ❀ धर्मपुत्र तेहि बीचहिं काटे ॥
सात बाण भालुक नृप लीन्हें ❀ ते शर चोट शल्य पर कीन्हें ॥
दोऊ बीर बाण परिहारहिं ❀ एकहिं एक क्रोधकै मारहिं ॥
कोपि शल्य यम अस्त्राहि लीन्हें ❀ पढ़िकै मंत्र फोंक शर दीन्हें ॥
हांक मारिकै बाण प्रहारहिं ❀ इत नृप इन्द्र बाणसों मारहिं ॥
तीसर बाण युधिष्ठिर छाँटे ❀ नृपको धनुष बाण गुणकाटे ॥

दो०-डारि धनुष कर शूलले, घालो घाव प्रचंड ॥
सात बाणते धर्म्मसुत, काटि कियो शत खण्ड ।

दोऊ वीर क्रोध ते पागे ❀ अशकुन होनबहुत विधिलागे॥
दिशा धुंधि भयकारक भारी ❀ रवि अदृश्य वहु फिकरसियारी॥
जंबुक गण बोलत रथ आगे ❀ रुधिर बुंद नभ बर्षन लागे ॥
बैठे काक भयंकर बोलत ❀ भूमिचलिअहिपतिशिरडोलत ॥
झंझार पवन बहै अति भारी ❀ उलकापात होत भयकारी ॥
गीधन आय शल्य रथ छाये ❀ ध्वजा टूटि धरणी पर छाये ॥
भये अघात शब्द घहराने ❀ अचरज करि सब काहु माने ॥
भूप युधिष्ठिर हाँकै दीन्हो ❀ क्रोधित शक्ति हाथकै लीन्हो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मारत हौं अब शल्य सँभारो ❀ आजु जानिबो तेज़ हमारो ॥
क्रोधित शल्य खड्ग कर लीन्हें ❀ शक्ति घाव राजा तब कीन्हें ॥
छूटत शक्ति शब्द भयो भारी ❀ दशों दिशा कीन्हीं उजियारी ॥
वज्र समान शक्ति जब आई ❀ कुरुपति देखि महा भय पाई ॥
दो०-धर्म प्रबल सुतधर्म को, कीन्हों शक्ति प्रहार ।
ढाल फोरि कर छेदिकै, हृदय भेदिगै पार ॥
जूझे शल्य परे तब धरणी ❀ धर्मराज कीन्हीं यह करणी ॥
धर्मतनय जब शल्यहि मारो ❀ सब देवन जयजयति पुकारो ॥
भीमसेन बल आपु सँभारो ❀ जेहि पायो तेहि सबै सँहारो ॥
द्रोणी कृपा कृतवर्मा भाजे ❀ जीति युद्ध पांडव दल गाजे ॥
अंध धुंध भा खेत भयंकर ❀ नाचत महा मगन मन शंकर ॥
भूप युद्धिष्ठिर भाष्यो बैना ❀ अंधकार नहिं सूझत नैना ॥
कृष्ण समेत कियो तब गवना ❀ चले धर्मसुत अपने भवना ॥
दुर्योधन तब शोचत मनमें ❀ कोऊ साथ रह्यो नहिं सँगमें ॥
कीजै काह कवनि दिशि जैये ❀ बाढ़ो रुधिर पंथ नहिं पैये ॥
सात तालभा रुधिर उँचाई ❀ हय गज भाषत बरणि नजाई ॥
तुरँग तरँग कहत नहिं आवै ❀ रत्नाकर की पटुतर पावै ॥
बहे जात लोहित मँझधारा ❀ कौन भाँति जैये अब पारा ॥
तब नृप मनमें कीन्ह बिचारा ❀ पैरि रुधिर जैये अब पारा ॥
दो०-पृथ्वी पति दुर्योधन, लक्ष छत्रधर साथ ।
लक्ष्मी जाके कंध पर, तेहि बिधि कीन्ह अनाथ ॥
तब नृप मन में कीन्ह विचारा ❀ पैरि रुधिर जैये अब पारा ॥
अस्त्र सनाह खोलि सब डारे ❀ लैकर गदा भूप पगु धारे ॥
यहि विधि भारत किये महारन ❀ एक लोथ पर परे हजारन ॥
वार पार ढिग आव न जाही ❀ रुधिर नदी अति भई अथाही ॥
पैरत भूप शंक नहिं मनमें ❀ जात लोथ अभिरत है तनमें ॥
कबहुँ केश चरणन अरुझावैं ❀ पैरत जात पार नहिं पावैं ॥
जहाँ द्रोण गाड़ो जय खम्भा ❀ अभिरे भूप गहो तब थम्भा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गहिकै खम्भ किये विश्रामा ❀ जीव शोच पहुँचौं किमि धामा ॥
पकरहिं लोथ बहुत मँझधारा ❀ बूड़िजात सब सहत न भारा ॥
विधिवश एक लोथ तब गह्यऊ ❀ बूड़ी नहिं भार तिन सह्यऊ ॥
चलो लोथ गहि रोहित हेलत ❀ अभिरत मृतक गदा सों ठेलत ॥
बहुत कष्ट सों उतरे पारा ❀ तब अपने मन कियो बिचारा॥

दो०—कौन बीरकी लोथ यह, किय मन माँह निदान ।
शल्यपर्व या विधि कही, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते शल्यपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
शल्यबधवर्णनंनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

इति शल्यपर्व समाप्त—९

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

गदापर्व--१०

गदापर्व अब करत बखाना ❀ दुर्योधन मनमें अनुमाना ॥
अंधकार भो गयो न चीन्हा ❀ मुकुटज्योति सुखदेखै लीन्हा ॥
लषण कुमार चीन्हि जब पाये ❀ करुणा करत भूप मन लाये ॥
जूझै पुत्र हमारे काजा ❀ कहिहौं कहा भवन अतिलाजा ॥
ऐसे सुत सुपूत संसारा ❀ सुयहु समय मोहिं पार उतारा ॥
रोय कह्यो दुर्योधन राजा ❀ विधिविरुद्ध कीन्हें यह काजा ॥
यहि बिधि लोथि डारि जो जैहैं ❀ जंबुक काक गीधगण खैहैं ॥
अग्नि देन अवसर नहिं पाये ❀ कहो मृत्तिका दै करि जाये ॥
गदाघाव धरणी पर मारो ❀ भयो गढ़ा तब लोथहि डारो ॥
ऊपर दियो मृत्तिका ऐसो ❀ जंबुक काक न पावहिं जैसो ॥
महाशोच करि कीन्हों गवना ❀ पहुँचे जाइसु कुरुपति भवना ॥
अंतःपुर कीन्हें परवेशा ❀ रानी चकित देखि यह वेशा ॥

दो०—एक बसन बूड़े रुधिर, अरुण वर्ण सब अंग ।
गदा हाथ शिर मुकुट है, और न कोउ संग ॥

रानी रोय ठोंकि कै माथा ❀ जिनविधिकीन्ह्योंहमहिंअनाथा॥
आदर करि आसन बैठाई ❀ धोइ रुधिर बस्तर पहिराई ॥
दुर्योधन भाष्यो सब बचना ❀ जेहि विधि भई युद्धकी रचना ॥
सुनि रानी बोली यह बानी ❀ मेरी बात नाथ नहिं मानी ॥
भीषम द्रोण कर्ण धनुधारी ❀ जूझेउ खेत सबहिं बलभारी ॥
गिरे शल्य सुत बंधु गिराये ❀ खेत छाँड़ि काहे तुम आये ॥
जैये तहाँ जहाँ पितु आवै ❀ जौलों खोज भीम नहिं पावै ॥
कछुक आनि मिष्टान्न जेंवाये ❀ दीन्ह पान कछु बिनय सुनाये॥
अब यह समय भूप सुनिलीजै ❀ साहस छाँड़ि शोच नहिं कीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चारिहु युग ऐसी चलि आई ❀ कर्म लिखा सो मेटि न जाइ ॥
दुर्योधन सुनि कीन्हों गवना ❀ आये तुरत पिता के भवना ॥
चरण परसि ठाढ़े भे आगे ❀ कौरव पतिसों कहिवे लागे ॥
दो०-दुर्योधन सब विधि कही, जूझि गिरे सब खेत।
अब उपाय का कीजिये, बूझत हौं सो हेत ॥
सुनत सोच धृतराष्ट्रक कीन्हों ❀ करिकरुणाकछु कहिबेलीन्हों ॥
विधि परपंच जानि नहिं जाई ❀ व्यास सरोवर रहो छिपाई ॥
गांधारी भाष्यो तब बैना ❀ देखा पुत्र खोलि तोहि नैना ॥
जबते पति देखो मैं आँधो ❀ तबते नैन पटी हम बाँधो ॥
बसन राखि सुत आगे आवो ❀ पाछे व्यास सरोवर जावो ॥
एक बसन सों जंघ छिपाये ❀ दुर्योधन तब आगे आये ॥
पटी खोलि गंधारी हेरी ❀ हे सुत बात न राख्यो मेरी ॥
वज्र शरीर भयो सुत तोरा ❀ उबरा जंघ दोष नहिं मोरा ॥
अस कही पटी नैन महँ दीन्हें ❀ करुणा सहित बिदा सुत कीन्हें॥
चलि निशंक दुर्योधन कैसा ❀ परमहंस छाँड़त गृह जैसा ॥
मातु पिता छाँड़े त्रिय भवना ❀ लैकर गदा पंथ कहँ गवना ॥
तके सरोवर नृप तहँ आये ❀ फूले कमल सुबास सुहाये ॥
दो०-चक्रवाक सारस युगल, निर्मल जल गंभीर।
मधुकर गण डोलत सदा, बहु मराल की भीर॥
पिछले पाँव धँसो जल राजा ❀ पाडव खोज मेटिबे काजा ॥
याहि विधि तृषित नीर तकिआये ❀ झलकत मुकुट देखि तेहि पाये॥
जल थंभन विद्याकर कैस ❀ बैठो जाइ भवन महँ जैसे ॥
लक्ष्मी कृपा बहुत विधि कीन्हा ❀ कनकपलँग सोवन कहँ दीन्हा ॥
दुर्योधन कीन्हें विश्रामा ❀ पाण्डु गये सब अपने धामा ॥
जयकारीविजयभवन कहँ कीन्ही ❀ कुंती हाथ आरता लीन्ही ॥
रण महँ इन मारे कुरुनाथा ❀ करै आरती तेहि निज हाथा ॥
कही भीम सब बंधु सँहारे ❀ दुर्योधन कहँ मैं नहिं मारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धर्मपुत्र कह भो रण घोरा ❀ मोसन परेउ शल्य सों जोरा ॥
अर्जुन कही मातु सों बैना ❀ कुरुपति हम नहिं देख्यो नैना ॥
नकुल कही नहिं जान्यो भेवा ❀ तब कुंती बूझा सहदेवा ॥
मंत्री मंत्र बिचारो मनमें ❀ कुरुपतिबच्यो कि जूझ्योरनमें॥
दो०-हाथ जोरि सहदेव कह, मातु सुनहु यह बैन ।
जीवत है दुर्योधन, गिरत न देख्यो नैन ॥
कुंती कही सुनहु हरि पारथ ❀ तुम भारत रण कियो अकारथ ॥
कुशल गये दुर्योधन धामा ❀ तौ सेना मारे केहि कामा ॥
पांचौ बंधु कृष्ण संग धाये ❀ दुर्योधनहिं बधे यश पाये ॥
तब कुंती यह बात जनाई ❀ कही कृष्ण मेरे मन आई ॥
पांडव तबहिं चले हरि साथा ❀ खोजत खोज फिरैं कुरुनाथा ॥
अंधकार भा जात न चीन्हा ❀ बारि मशाल हाथ कै लीन्हा ॥
जूझे वीर खेत मों परे ❀ झलकैं मुकुट जरायन जरे ॥
कहूँ मुंड कहुँ देखे रुण्डा ❀ कहूँ गयंद परे कहुँ शुण्डा ॥
कहूँ तुरंगम परे अरध खर ❀ कहूँ चरण कहुँ परे विकरकर ॥
रुधिर पान करि योगिन नाचहिं ❀ जंबुक काक लोथि बहु खाँचहिं ॥
कुरुपति खोज करत नहिं पावत ❀ देखो पंथ व्याध इक आवत ॥
भीमसेन पूँछे तब बैना ❀ दुर्योधन को देख्यो नैना ॥
दो--कही व्याध कर जोरिकै, भीमसेन सों बात ।
वीर एक देख्यो हतो, व्यास सरोवर जात ॥
गदा हाथ शिर मुकुट सुहाये ❀ वीर एक हम देखन पाये ॥
सुनी भीम मन महँ अनुमाने ❀ निश्चय कै दुर्योधन जाने ॥
पांचौ बंधु कृष्ण सब आवत ❀ आगे व्याध पंथ दिखरावत ॥
व्यास सरावर निकटहि आये ❀ चरण चिन्ह तहँ देखन पाये ॥
धरत पाँव दुर्योधन जहवां ❀ फूलत कर्ण धरणि महँ तहँवां ॥
विधि विरोध काहू नहिं होई ❀ लक्षण भयो कुलक्षण सोई ॥
यहिविधिखोज करत चालिआये ❀ व्यास सरोवर देखन पाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अगम गँभीर सरोवर कैसो ❀ उठै तरंग तरंगिनि जैसो ॥
कृष्णदेव तब आप बखानत ❀ जल थंभन नीको नृप जानत ॥
धर्मराज को भा अंदेशव ❀ जल महँ बल कछु चलै न केशव॥
अब उपाय करिये प्रभु कैसो ❀ अबहीं निकरै कुरुपति जैसो ॥
दो०-महाबीर दुर्योधन, कहँ आपु भगवान ।
अबहीं निकरत नीरसों, भीम हाँक सुनि कान ॥
भीमसेन आये तब तीरा ❀ दिये हाँक दुर्योधन वीरा ॥
निकरौ नृप बूड़ो केहि काजा ❀ कुरुवंशहि लावत हौ लाजा ॥
सुनतै हाँक क्रोध कै भारी ❀ उठि कर गदा गही सम्भारी ॥
पकरि बाँह लक्ष्मी बैठाई ❀ पुनि राजा को बहुत बुझाई ॥
जलसों निकरि युद्ध मति करिये ❀ मेरो कहो चित्त महँ धरिये ॥
दूजी हाँक भीम जब दीन्हों ❀ कटुक बचन कहिबे बहु लीन्हों ॥
सुत बांधव रण सबहिं जुझायो ❀ आपु भागिकै जीव बचायो ॥
भारत भूमि धरायो नामा ❀ जलमोंआनिछिप्योकोहिकामा ॥
भीम हाँक सुनि कुरुपति कैसी ❀ द्रुम दावा लागी पुनि जैसी ॥
गहिकरगदा उठन जब चह्यो ❀ आगे ह्वै कमला कर गह्यो ॥
अस्थिर रहौ सुनौ मम बैना ❀ काल्हि देहुँ संपति औ सैना ॥
दिवस अठारह भई लराई ❀ तीनि लोक फिरिकै हम आई ॥
दो०-तो सम लक्षणवंत नहिं, कह्यो कंध जेहि वास ।
तीनलोक महँ ढूँढि कै, फिरि आयउँ तब पास ॥
काल्हि दिवस जो तेरे मनमें ❀ जीति सकैं नहिं पांडव रनमें ॥
ता कारण सुनु तोसों कहिये ❀ आजु धरिह्वै जल महिं रहिये ॥
सुनिकैं नृप कमलाके बयना ❀ पौढ़ि पलंग पर कीन्हेंउ शयना ॥
तीजी हांक भीम जब मारो ❀ निकरु निकरु कुरुनाथ पुकारो ॥
छाँड़त हौ कत क्षत्री धर्मा ❀ होइहि सोइ लिखा जो कर्मा ॥
महागर्व तुम सब दिन कीन्ह्यों ❀ निकरत नहीं भाजिजललीन्ह्यों॥
धिक जीवन जल में है तेरो ❀ इतनी बात अंगवत मेरो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अपने बल ते गनत न आना ❀ अब काहे तुम तजत गुमाना॥
मारहुँ गदा फाटि जल जैहैं ❀ गहिकै केश अबहिं लै ऐहैं ॥
सुनत बचन दुर्योधन जरयो ❀ बरत अग्नि मानहुँ घृत पर्‍यो॥
क्रोधित उठि कौरवपति जबहीं ❀ गहि बाँह कमला पुनि तबहीं॥
बंधु बैर को सकहिं निहारी ❀ पाँयन ठेली लक्ष्मी डारी ॥

दो०—गदा पाणि दुर्योधन, ऊपर पहुँच्यो आई ।
धर्मराज तब दौरिकै, मिले हृदय महँ लाइ ॥

धर्म युधिष्ठिर के मन आई ❀ चलि सिंहासन बैठिय भाई ॥
सब मिलि हम सेवा तब करिहैं ❀ आज्ञा सदा शीश पर धरिहैं ॥
पांच गाँव अजहूँ मोहिं दीजै ❀ अपने छत्र सिंहासन लीजै ॥
यह सुनि दुर्योधन हँसि भाखे ❀ धर्मराज तुम धर्महि राखे ॥
ऐसे समय न छाँढ़ौं टेका ❀ करिहौं आजु एकको एका ॥
सुई अग्र देहौं नहिं दाना ❀ करहुँ युद्ध भारत मैदाना ॥
धर्मराज कह सुनिये भाई ❀ तेरे मन ऐसी जो आई ॥
दोउ बंधु अब हमसों लीजै ❀ तीनि तीनि समतारण कीजै ॥
हँसि दुर्योधन भाष्यो बानी ❀ भाई तुम यह बात न जानी ॥
अर्जुन भीम लेउँ जो दोऊ ❀ बांधत तुम्हैं न राखत कोऊ ॥
धर्मराज तब कहा बुझाई ❀ एक एक ते उचित लराई ॥
दुर्योधन बोले परिमाना ❀ राजा राजहिं युद्ध समाना ॥

दो०—कह्यो कृष्ण कुरुनाथसों, यह है उचित बिचार ।
लरौं भीमसों खेत महँ, जय देइहि करतार ॥

दुर्योधन क्रोधित ह्वै भाष्यो ❀ कबते भीम छत्र शिर राख्यो॥
कही कृष्ण तुम बात न पाई ❀ चारिउ युगहिं यही चलि आई॥
भुज बलते वसुधा कर भोगा ❀ झानी ह्वै सुकरहिं पुनि योगा॥
भीम महाबल जीते भारथ ❀ लई राज अपने पुरुषारथ ॥
तब भीमहिं राजा करि लेखो ❀ धर्मराज नावहिं शिर देखो ॥
पाँचहु बंधु कृष्ण मुख ताके ❀ सब दिन रहत भरोसे जाके ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धर्मराज जब शीश नवैहैं ❀ पल मों भीमसेन जरि जैहैं ॥
तब श्रीहरि रचना यह कीन्ह्यों ❀ लै हरिवंश भीम कहँ दीन्ह्यों ॥
कृष्णदेव यह रचना ठाना ❀ ताको दुर्योधन नहीं जाना ॥
श्रीपति कही बिलंब नलावहु ❀ धर्मराज अब शीश नवावहु ॥
भीम बगल हुरिवंशहि राखो ❀ सो तकि धर्म युधिष्टिर भाखो ॥
भूप भीम कहँ शीश नवाये ❀ जय ध्वनिकरिहरि शंखबजायो ॥

दो०-दुर्योधन कह भीमसों, क्रोधवंत ह्वै बैन ।
गदा युद्धहम तुमकरहिं, सब मिलि देखैं नैन ॥

गाहिकै गदा दोउ भे ठाढ़े ❀ क्रोध अनल उर अन्तर बाढ़े ॥
मंडल फिरहिंघात दोउ ताकहिं ❀ कोउ कोऊ कहँयतननपावहिं ॥
रोंकत गदा गदा सों टारत ❀ एकहि एक क्रोध के मारत ॥
गदा प्रहार शब्द भा कैसे ❀ छूटत वज्र इन्द्र कर जैसे ॥
सरस निराखि कहि जातन काहू ❀ पण्डित गदा युद्ध बल बाहु ॥
धावत गदा हाँक दै हाँकत ❀ पद के भार मेदिनी काँपतं ॥
कुरुपति भाष्यो भीम सँभारो ❀ आजु जानिबो तेज हमारो ॥
कही भीम सब जानत भाई ❀ गाल मारि जनि करहु बड़ाई ॥
मोतें आजु परयो है कामा ❀ देखो को जीते संग्रामा ॥

दो०-दुर्योधन तब क्रोधकै, घाल्यो घाव प्रचंड ।
गदारोंकि सम्भारिकै, भीम महा बलबंड ॥

कोपि भीम तब गदा प्रहारा ❀ महावीर कुरुनाथ संभारा ॥
दोउ बीर जोरते झरपत ❀ महावारि मन नेकु न डरपत ॥
याहि विधि करत युद्धकी करणी ❀ भूमिपाल डोलति है धरणी ॥
महामत्त तनु उरझ्यो दोऊ ❀ प्रलय युद्ध देखत सब कोऊ ॥
गदा गदा सो लागत जबहीं ❀ निकरत अग्निभभूका तबहीं ॥
गदा हाथ रण शोभा पावत ❀ पक्ष सहित पर्वत जनु धावत ॥
दोऊ जुरे युद्ध महँ कैसे ❀ सतयुग महँ बालि बाँध्यो जैसे ॥
चढ़े विमान देवगण देखत ❀ अपने मन अचरजकरिलेखत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गौर श्याम दोउ सोहै कैसे ❀ कुंकुम अरु कज्जलगिरि जैसे ॥
कलबल करत भीमफिरि आवत ❀ गदा पवन ते पक्षि उड़ावत ॥
जुरे भीम दुर्योधन कैसे ❀ प्रद्युम्नहिं शंबर रण जैसे ॥
दो०-अयुत नाग बल दुहुनं के, महावीर परचंड ।
मारत गदा जु कोपि कै, ज्यों टूटत ब्रमदंड ॥
लागत गदा दोउ के तनमें ❀ धमकत घाव शब्दजनु घनमें ॥
चंचल चपल फिरत दोउ बांके ❀ घूमत मनहुं कुम्हार के चाके ॥
दोऊ वीर युद्ध मन लाये ❀ तीरथ फिरि बलभद्रहि आये ॥
देखो तहां महारण घोरा ❀ परो भीम दुर्योधन जोरा ॥
हलधर बिहँसि कही यह बाता ❀ कुरुपति सहत गदाके घाता ॥
बल कछु अधिक भीमके तनमें ❀ हार जीत नहिं देखत मनमें ॥
अजहु प्रीति करहु दोउ भाई ❀ केहि कारण अब रचहु लराई ॥
करिकै गदा ऊर्ध्व परिहारन ❀ कोउन सकहिं काहुको मारन ॥
अजहूं दूनहुं प्रीति बिचारहु ❀ जो मानहु हित बचन हमारहु ॥
युद्ध घात दोऊ अरुझाने ❀ हलधर बचन हृदय नहिं आने ॥
कहि बलभद्र कियो तब गवना ❀ कुरुक्षेत्र परिक्षक कवना ॥
कृष्ण भीम कहँ जंघ बताई ❀ निरखि बृकोदर घात लगाई ॥
दो०-भीमसेन तब क्रोधकै, मारयो घाव बचाय ॥
दोउ जंघ भगन भयो, परयो धरणि पर आय ॥
गिरि कुरुपति धरणी में ऐसे ❀ काटत मुल परत द्रुम जैसे ॥
पूर्व बैर मनमह सुधि आई ❀ भीमसेन तब लात उठाई ॥
हाहा शब्द युद्धिष्ठिर कीन्हा ❀ रहहु भीम कहिबे अस लीन्हा ॥
अष्टादश क्षोहिणी मुवारा ❀ मनते गोविंद जानु सब सारा ॥
कृष्ण सहित भाष्यो सब राजा ❀ चरण प्रहार करत केहि काजा ॥
करते चरण समेटन कीन्हों ❀ बैठ सँभारि कहै तब लीन्हों ॥
क्षत्री धर्म न भीम बिचार्यो ❀ गदा घाव जंघन पर मार्यो ॥
कही भीम दुर्योधन बीरहि ❀ जा दिन हरो द्रौपदी चीरहि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and Gangotri. Funding by IKS.

ता दिन में सबसों प्रण भाख्यो ❀ तोरयो जंघ प्रतिज्ञा राख्यो ॥
श्रीपति कही कुरूपति राजहिं ❀ जब हम गये बसीठी काजहिं ॥
तादिन मेरो कहा न कीन्हा ❀ कटुक वचन मोसे कहि दीन्हा ॥
सेना संपति सकल गंवायो ❀ जेहिक्षणकरगहिमोहिं उठायो ॥
दो० दुर्योधन कह कृष्ण सों, मैंहौं जंतु समान ।
हमैं लगावत दोष अब, तुम प्रेरक भगवान ॥
जो सुम रच्यो भयो सो स्वामी ❀ मोहिं दोष नहिं अन्तर्य्यामी ॥
श्रीपति सुनत हृदय सुख माना ❀ धर्मराज तब आपु बखाना ॥
छलपति कही बचन परमाना ❀ सुनिमाधव तब कीन्ह पयाना ॥
पांचौ बन्धु कृष्ण संग लीन्हे ❀ भारत जीति भवन शुभकीन्हे ॥
कृष्णदेव सों कुन्ती भाखो ❀ दीनदयालु भक्त प्रण राखो ॥
अस कहिकै आरती सँवारी ❀ प्रथम कृष्णके शीश उतारी ॥
धर्मराज सों माधव भाखो ❀ मेरो मंत्र सदा तुम राखो ॥
मोकहँ मति ऐसी बनि आई ❀ चलो साथ तुम पांचौ भाई ॥
आजु राति बसिये नहिं भवना ❀ नन्दिघोष चढ़ि कीजै गवना ॥
अस कहि पांचौ बन्धु चढ़ाये ❀ योजन एक भवन तजि आये ॥
अर्जुन हृदय शोच भा भारी ❀ का रचना यह कीन्ह मुरारी ॥
सुमिरण शम्भुनाथ कर कीन्हा ❀ शंकर आय दरश तब दीन्हा ॥
दो०-श्रीहरि भाष्यो शम्भु सन, हम सबकीन्हो गौन ।
आजु राति द्वार रहौ, द्वारपाल ह्वै भौंन ॥
गंगाधर भाष्यो परतक्षक ❀ आजु द्वार रहिहैं हम रक्षक ॥
जो विधि रची होय पुनि सोई ❀ द्वारे जान न पावै कोई ॥
लै पाण्डव माधव पगु धारे ❀ शूलपाणि भे ठाढ़े द्वारे ॥
अश्वत्थाम मनहिं अनुमानी ❀ गिरे भूप यह हिय महँ जानी ॥
मध्य प्रहर निशि आयो तहवाँ ❀ जंघ भंग दुर्योधन जहँवाँ ॥
बैठे कर सों गदा फिरावत ❀ जंबुक गीध निकट नाहिं आवत ॥
गुरुसुत दूरिहि ते कहि कारण ❀ अमर सदा सक कोउ न मारण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अजहूँ कहा हमारो कीजै ❀ पांडव मारि जगत यश लीजै ॥
सुनि बोले तब द्रोणी ऐसा ❀ राजा बिनु रण कीजै कैसा ॥
अंग रुधिर लै टीका कीन्हा ❀ मैं राजा तुम कहँ करि दीन्हा ॥
मारि पांडवन पाँचौ भाई ❀ वसुधा भोग करहु तुम जाई ॥
दो०-गुरुसूत भाषो क्रोधकै, दुर्योधन सो बैन ।
मारि पांडवन शीश लैं, आनि देखावहुं नैन ॥
ऐसो कहि पुनि आयो तहँवाँ ❀ कृपाचार्य्य कृतवर्मा जहँवाँ ॥
तासों बचन कहे अस लीन्हों ❀ दुर्योधन राजा मोहिं कीन्हों ॥
द्वौ जन मोरि सहायक हूजै ❀ पाण्डवमारिराज्य लव कीजै ॥
बटतर तीनों मनहिं बिचारत ❀ एक उलूक काक बहु मारत ॥
द्रोणी कहै देखिये नैना ❀ बूझे शत्रुहि को बल रैना ॥
चलो तुरत जाइय याहि कारण ❀ दिवस न सकों पांडवन मारन ॥
यह कहिकै तीनों जन आये ❀ द्वार दरश शंभु के पाये ॥
गढ़ चहुँफेर शूल है रक्षक ❀ दरवाजे शङ्कर परतक्षक ॥
कृतवर्मा तब कह्यो बिचारी ❀ जात कहाँ गढ़े त्रिपुरारी ॥
द्रोणी कहा रहहु तुम रक्षक ❀ जैहौं निकट होइ परतक्षक ॥
अस कहिकै शङ्कर ढिग आये ❀ कै प्रणाम तब गाल बजाये ॥
तब कृपालु हर भाष्यउ बानी ❀ माँगौ बर द्रोणी बड़ ज्ञानी ॥
दो० द्रोणपूत्र यहि विधि कही, भीतर दीजैं जान ।
गदा पर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहान भाषाकृते
गदापर्व समाप्तः ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

सौप्तिकपर्व ॥ ११ ॥

शम्भुनाथ बोल्यो यह बचना ❀ मनमें समुझि कृष्ण की रचना ॥
द्वारे मारग जान न पैहो ❀ गढ़हि फाँदिकै भीतर जैहो ॥
द्रोणी कह शङ्कर सों ऐसो ❀ फिरत शूल त्यागहि मोहिं कैसो ॥
कादि भस्म शङ्कर तब दीन्हा ❀ जाहु शूल ते रक्षा कीन्हा ॥
कै प्रणाम तब तुरत सिधाये ❀ फाँदो गढ़ भीतर तब आये ॥
प्रथम गये द्रोणी चलि तहँवाँ ❀ धृष्टद्युम्न सोवत रह जहँवाँ ॥
बैठे चपरि हृदय पर कैसे ❀ ब्याध कुरंग धरत है जैसे ॥
लैकै खड्ग कंठ मों धरा ❀ काटो शीश बिलंब न करा ॥
कनक पलंग पर कीन्हें शैना ❀ पांच पुत्र तब देख्यो नैना ॥
पांच बंधु के पांचौं जाये ❀ रूप समान भेद नहिं पाये ॥
खड्ग घाव तब द्रोणी कीन्हें ❀ पांचौं शीश वाम कर लीन्हें ॥
यहि अन्तर दासी सब जागीं ❀ हा हा शब्द पुकारन लागीं ॥

दो०-जागि उठ्यो रनिवास सब, टेरत करुणा बैन ।
द्रोण पुत्र कर खड्ग लै, लाग निपातन सैंन ॥

चौंक उठे पुनि सब अकुलाने ❀ आपुस में बहुतै अरुझाने ॥
अन्धकार नहिं सुझै नैना ❀ मारु मारु करि भाषै बैना ॥
भागि निकरि गढ़ बाहर जेते ❀ कृतवर्मा कृप मारै तेते ॥
अन्धकार महँ कछु नहिं सूझत ❀ अपन पराय कोऊ नहिं बूझत ॥
गढ़ भीतर द्रोणी सँहारे ❀ निकरि चले कृतवर्मा मारे ॥
भारत माहिं बचे हैं जेते ❀ निशा युद्ध महँ जूझे तेते ॥
निकरि द्रोण सुत बाहर आये ❀ कृत कृतवर्मा देखन पाये ॥
मारि पाण्डवन कीन्ह्यों काजा ❀ चलिये शीश देखाइये राजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and Gangotri. Funding by IKS.

बैठे खेत कुरुपाति जहँवाँ ❀ तीनिउ बीर गये चलि तहँवाँ ॥
द्रोणी कही नृपति सों बाता ❀ पांचहु पाण्डव कीन्ह निपाता ॥
हर्षवन्त होई राजा भाष्यो ❀ मेरी टेक द्रोणसुत राख्यो ॥
धरे आनि शिर भूपति आगे ❀ मुकुठ ज्योति सों देखन लागे ॥
दो०-पाँच बंधु के पाँच सुत, भुप निहारे नैन ।
विस्मय करि भूपति कही, द्रोण पुत्र सों बैन ॥
करुणा करि भाष्यो तब राजा ❀ बालक बध कीन्ह्यों केहि काजा ॥
मूक भये दुख हृदय भुवारा ❀ वंश क्षार कीन्हों हत्यारा ॥
अस कहि प्राण तजे नृप जबहिं ❀ भय उपज्यो द्रोणी जिय तबहीं ॥
अर्जुन भीमसेन नहिं मारो ❀ द्रुपदसुता के पुत्र सँहारो ॥
कृतवर्मा जब चित्त बिचारा ❀ द्वारावती तुरत पगु धारा ॥
भे आतुर द्रोणी चले तहँवाँ ❀ उत्तर नर नारायण जहँवाँ ॥
उदय प्रभात सूर्य भे जबहीं ❀ लै पाण्डव हरि आये तबहीं ॥
देखे सब सैन्य सँहारे ❀ पाँचौ पुत्र तेउ गे मारे ॥
करुणा करहिं द्रौपदी सरसे ❀ आंसु नीर नैनन सों बरसे ॥
अर्जुन देखि अचंभव माना ❀ द्रुपदसुता यहि भाँति बखाना ॥
करुणा करि पंचाली भाखी ❀ अब घट प्राण जाहिं ना राखी ॥
पाँच पुत्र करि बंधु संहारे ❀ अनुचर सहित सेन सब मारे ॥
द्रोणिहि बाँधि तुरतही दीजै ❀ नातरु प्राण त्याग हम कीजै ॥
दो० क्रोधवंत अर्जुन भयो, हाँको रथ भगवान ।
बाँधि लै आयो द्रोणसुत, यह प्रण किये निदान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलासिंहचौहानभाषाकृते

सौप्तिकपर्व समाप्त ॥ ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

ऐषिकपर्व ॥ १२ ॥

यह सुनि रथ हाँको बनवारी ❀ क्रोध शोक पारथ धनुधारी ॥
जेहि पथ द्रोणी कियो पयाना ❀ तापथ रथ हाँको भगवाना ॥
सुनि रथ शब्द द्रोणि उत ताके ❀ जात कहाँ अर्जुन रथ हाँके ॥
सोवत पाँचौं बालक मारे ❀ माज जात सुतु किमि हत्यारे ॥
सुनि द्रोणी अपने मन जाना ❀ आयु आनि अब समय निदाना॥
जाको भेद न अर्जुन जाने ❀ सोई बाण कीन संधाने ॥
परबल भृगी अस्त्रहि लीन्हें ❀ पढ़िकै मंत्र फोंक शर दीन्हें ॥
सुरगण देखि सकल भयमाना ❀ प्रलय भयै सबहीं मन जाना॥
पांडव वंश न एक उबारौं ❀ अर्जुन सहित आजु सबमारौं ॥
हाँक मारि द्रोणी शर छाँटे ❀ भूमि अकाश अग्नि ते पाटे ॥
छूट्यो बाण तेज सों कैसे ❀ प्रलय अनल मह धावहिं जैसे॥
अर्जुन निरखि अचंभव माना ❀ श्रीपति सों यहि भाँति बखाना॥

दो०-पारथ कही बिचारिकै, सुनु देवन के देव ।
कौन नाम है बाण को, बूझि परै नहिं भेव ॥

तब श्रीहरि याहि भाँति बखाने ❀ यह शर अर्जुन तुम नहिंजाने॥
गुरू द्रोण वंचित तोहिं कीन्हें ❀ पुत्र जानि वाको शर दीन्हें ॥
त्याग किये यह भृगी बाना ❀ तीनि लोक जाको भय माना॥
श्रीपति कही सुदर्शन धावहु ❀ पांड वंश तुम जाय बचावहु ॥
सात बाण तब अर्जुन मारे ❀ महा प्रबल शर टरत न टारे ॥
बाण प्रताप सबन भय पाये ❀ नन्दिघोष तजि यदुपति धाये॥
बदन पसारि लीन्ह भगवाना ❀ महाबाण हरि उदर समाना ॥
सहित युधिष्ठिर सबहिं बचाये ❀ गर्भ परीक्षित जरै न पाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri. Funding by IKS.

नाग पास तब पारथ लीन्हें ❀ क्रोधित द्रोणहिं बन्धनकीन्हें ॥
तब श्रीपति रथ ऊपर डारे ❀ चले तुरंग भवन पगु धारे ॥
करुणा करति द्रोपदी नारी ❀ आइ गये पारथ धनुधारी ॥
अश्वत्थामहिं कीन्हें ठढ़ा ❀ छूटे केश कुबन्धन गाढ़ा ॥
दो०-तनु प्रस्वेद बिगलित बदन, चितवनि नीचे नैन ।
भीमसेन कर खड्ग लै, क्रोधित बोले बैन ॥
अरे मूढ़ काटौं अब शीशा ❀ द्रौपति सुतन बैर लै ईशा ॥
द्रौपदि देखि दया चित आई ❀ तब माधवसन भाष्यो गाई ॥
विप्र बधे कर दूषण भारी ❀ बन्धन छोड़ि देहु बनवारी ॥
जूझे पुत्र फेरि नहिं पैहौं ❀ द्विज हंत्यां परलोक नशैहौं ॥
सो सुनि हरि बहुत सुख माना ❀ धन्य द्रौपदी आपु बखाना ॥
शीश चारि श्रीहरिमाणे लीन्हें ❀ पाछे छोरि द्रोणसुत दीन्हें ॥
भारत रण महँ जूझे जेते ❀ सद्गति कीन्ह धर्मसुत तेते ॥
पाँच बन्धु श्रीपति सँग लाये ❀ देखन बुद्धिचक्षु पहँ आये ॥
बुद्धिचक्षु कछु कहिबे लागे ❀ तबै कृष्ण पांडव के आगे ॥
सब मिलि भीम सराहत तोको ❀ अंक मालिका दीजियमोको ॥
हरि रचि तुल्य वृकोदर कीन्ह्यों ❀ लोहक भीम आगु लै दीन्ह्यों॥
अन्धभूप तब भुजा पसोरे ❀ मिलत समय चूरण करिडारे ॥
भाष्यो भीम अंध बल भारी ❀ तुम रज्ञा कीन्हे बनवारी ॥
दो०-गंधारी सबहीं मिले, मधुर बैन को भाखि ।
बहुत भाँति परबोधि करि, समाधान करिराखि॥
राजहिं कहि गंधारी रानी ❀ हरि रचना कीन्हों यह जानी॥
दिवस अठारह भा महभारथ ❀ इकशत पुत्र सैन्य पुरुषारथ ॥
सो सँहार सकल हरि कीन्हा ❀ तेफल लेहिं शाप हम दीन्हा ॥
हलधर सहित सकल परिवारा ❀ एक दिवस सब हो सँहारा ॥
क्रोधित होइ शाप जो दीन्हा ❀ हँसे कृष्ण रिस नेकु नकीन्हा॥
पुरी हस्तिना कीन्ह्यउ गौना ❀ व्यास देव भाष्यो यह रौना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पुरमें बंदनवार बंधाये ❀ अति आनंन्दमय शोभा पाये ॥
नट नाचत गायन सब गावत ❀ वेद पुराणहिं विप्र सुनावत ॥
कनक कलश गंगा जल धर्यो ❀ व्यासदेव घट आगे कर्यो ॥
द्रुपद सुता अरु धर्म नरेशहि ❀ गांठि जोर कीन्ह्यो अभिषेकहि ॥
उत्तम बसन आनि पहिराये ❀ श्रीपति सिंहासन बैठाये ॥

दो०- दीन्हों मुकुट सु शीशपर, मनहु उदित भे भान।
जय जय भाष्यो देवगण, छाये स्वर्ग बिमान ॥

यदुपति तिलक आपुकर लीन्हों ❀ व्यासदेव ध्वनि बेदहि कीन्हों ॥
भीमसेन तब चामर ढारै ❀ अर्जुन छत्र शीश पर धारै ॥
भूप युधिष्ठिर हरिसों भाखो ❀ दीनबन्धु अपनो प्रण राखो ॥
भारत तुम जीत्यो जगतारण ❀ कृपा करी मोहि जगतउधारण
प्रभु तुम तीन लोक के स्वामी ❀ जीव जन्तु सब के उर गामी ॥
विप्र सुदामा दारिद भंजन ❀ केशी कंस अघासुर गंजन ॥
यह सुनिकै श्रीपति सुख मान्यो ❀ धर्मराज सों आपु बखान्यों ॥
तुम हौ धन्य धर्म अवतारा ❀ परम भगत जानत संसारा ॥
यहि अंतर पुरबासी आये ❀ दिये भेंट अरु शीश नवाये ॥
सब संसार सुखी भा भारी ❀ राजा धर्मराज अधिकारी ॥
प्रजा लोग सब करहिं आनन्दा ❀ जिमि चकोरपावहिंनिशि चंदा ॥

दो०-द्रुपद पुत्र मंत्री भये, पकरे भक्ति निदान।
सबलासिंह चौहान कह, भक्ती बस भगवान ॥

भारत कथा सुनै मन लाई ❀ ताके निकट पाप नहिं जाई ॥
जोफल सब तीरथ असनाना ❀ जोफल कोटिन कन्या दाना ॥
जो फल होई शरण के राखे ❀ जो फल सदा सत्य के भाखे ॥
जो फल हो परमारथ कीन्हें ❀ जो फल पिंड गयाके दीन्हे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जो फल रणमां प्राण गवायें ❀ सोफल है यह कथा सुनाये ॥
दो०-भरत सुने अनेक फल, मोसे कहो न जाय ।
अनायास बैकुंठ लहि, दरश देहि यदुराय ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिक—ऐषिकपर्वणि सबलसिंहचौहान
भाषाविरचिते धर्मराजअभिषेककथासमाप्ता ॥११॥१२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

स्त्रीपर्व ॥ १३ ॥

दो० जन्मजय ते करत है, वैशम्पायन ब्यान ।
नारि पर्व भाषा रची, सबलासिंह चौहान ॥

सुनु राजा अब कहौं बखानी ❀ जाते होय पाप की हानी ॥
संजय देख्यो मेरे भुवारा ❀ विस्मय मान्योमनहि मँझारा ॥
जाई तबै धृराष्ट्रक आगे ❀ पुत्र मरण विस्मय अनुरागे ॥
जब धृतराष्ट्र सुनी यह बाता ❀ मानो परी बज्र की घाता ॥
रोदन करि तब अन्ध भुवारा ❀ हा पृथ्वी पति पुत्र हमारा ॥
दुर्योधन सुत रणहि संहारा ❀ सौ पुत्र जे हते हमारा ॥
एक भीम सब रण महँ मारी ❀ का कीन्हेउ करतार खरारी ॥
हते पुत्र सेवक समुदाई ❀ कोउ न अपनो देत दिखाई ॥
निष्फल है अब जियन हमारा ❀ पुत्र पौत्र बिन जग अँधियारा।
हा हा पुत्र पुत्र करि राई ❀ रोवै कुरू भूपति दुख पाई ॥

दो०-दुइ गासन अरु कुरु नृपति, सौ बान्धव लै संग ।
जूझ रण महं सबै दल, भयो चित्त महं भंग ॥

हा हा भीषम पितृ हमारा ❀ हाय द्रोण हा कर्ण भुवारा ॥
जो जो गुण है पुत्र तुम्हारा ❀ सो सुमिरे तन जरत हमारा ॥
है सुत शोक महा संसारा ❀ कतगुण सुमिरौं भूप तुम्हारा ॥
राज पाट सब परा तुम्हारा ❀ कनक पलंग के सोवन हारा ॥
कहां पुत्र दुर्योधन राऊ ❀ परा सुदेश सकल भुँइ गांऊ ॥
बृद्धा काल सुत शोकहि पाये ❀ बाम बिधाता भा दुख दाये ॥
कर्म दोष दुख लिखा हमारा ❀ सो अक्षर को मेटन हारा ॥
परिचर्या करिबो हम काही ❀ पुत्र शोक हृदय मां आही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बृद्ध अवस्था विधि दुख दीना ❀ जैसे पक्षी पंख बिहीना ॥
सब पुरुषारथ पुत्र हमारा ❀ का रचना कीन्हों करतारा ॥
दो० बिना नयन तनु ज्यों अहै, बासर ज्यों बिनु भानु ।
चन्द्र बिना जिमि रैनि है, दीपक बिनु गृह जानु ॥
त्यों बिनु पुत्र वंश है ऐसा ❀ कुल को नाम नाश भा तैसा ॥
परशुराम नारद समुझाये ❀ सुत के मनतें बचन न भाये ॥
हमैं छाँड़ि सुत कहाँ सिधाये ❀ गर्व्ववन्त ह्वै प्रण गँवाये ॥
सुनी मृत्यु दुर्योधन केरी ❀ जीवन आश नहीं अब मेरी ॥
भीषम कर्ण और भगदन्ता ❀ द्रोणगुरू को भयो निहन्ता ॥
महा विलाप अन्ध नृप करई ❀ संजय तबै बात अनुसरई ॥
राजा शोच तजौ तुम यातें ❀ अब तुम सुनौ ज्ञानकी बाते ॥
राजा अहो परम सज्ञाना ❀ जानौ सब श्रुति शास्त्र पुराना ॥
जन्म मृत्यु दोनों सरव्याता ❀ दोनो रहैं पिण्ड महँ ताता ॥
जन्म मृत्यु माया ते धारण ❀ समुझौ मन गावत केहि कारण ॥
दो० जन्म मृत्यु माया सबै, रोवत हौ केहि काज ।
संजय तहँ समुझावहीं, अन्ध बृद्ध कुरुराज ॥
संजय नाम हते इक राजा ❀ पुत्र शोक ते भयो अकाजा ॥
सुत हित चाहत प्राण गँवाये ❀ तब नारद मुनि जाइ बुझाये ॥
जीवन मरण लोक दुख जाना ❀ कर्म्म फलित भा प्राप्त प्रमाना ॥
सब माया जानौ तुम नरपति ❀ केवल सबै कर्म्म की यह गति ॥
पुत्रहि केर समुझि मन दोषा ❀ हृदय माहिं करिये संतोषा ॥
काहू केर बचन नहिं माना ❀ साधन बचन सुन्यो नहिं काना ॥
दुश्शासन मंत्री सब जाना ❀ ताते मंत्र गने नहिं आना ॥
शकुनी कर्ण मंत्र परमाना ❀ काहू केर कहा नहिं माना ॥
भीषम केर बचन नहिं राखे ❀ बहुतै नीति धर्म उन भाखे ॥
गंधारी के बचन न माना ❀ तेहि अपराध तजे तिन प्राना ॥
दो० सदा पाप मनमें बसै, नाहिंन धर्म बिचार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सोइ पाप ते भूप सुनु, जूझे पुत्र तुम्हार ॥
व्यास केरि बाणी नहिं मानी ❀ अतिशय अहंकार मतिठानी ॥
बहुत प्रकार कृष्ण समुझाये ❀ पै विरोध वाके मन भायें ॥
क्षत्री सब कीन्हें क्षय जानी ❀ कृष्ण केरि वाचा नहिं मानी ॥
तुम नृप सुतवश कछु नाहिंकहेऊ ❀ पाप ते पुत्र नाश है गयऊ ॥
ताते शोक तजहु तुम राई ❀ बहुत प्रकार मंत्र समुझाई ॥
सुनत कछू धीरज धरि राजा ❀ महाशोक पुत्रन के काजा ॥
छांड़े भूप ऊर्ध्व कर श्वासा ❀ पुत्र शोक ते भयो उदासा ॥
रोवै धीर धरै नहिं राई ❀ तबहि विदुर राजहि समुझाई ॥
सुनि कै बचन धीर भो राजा ❀ कीन्हेऊ शोक पुत्र के काजा ॥
उठो नरेश शोच नहिं करिये ❀ मेरे बचन हृदय में धरिये ॥
काल विबश है सब संसारा ❀ तीन लोक बश मृत्यु भुवारा ॥

दो० जानै योग्य अयोग्य तब, जानै सब संसार ।
महावीर क्षत्री जितै, सबै होत संहार ॥

वृद्ध युवा अरू बालक आहीं ❀ राजा प्रजा जिते जगमाहीं ॥
सबहीं मत्यु सत्य प्रचराना ❀ जानहु राजा परम निधाना ॥
सुनि नृप बात विदुरमुख जबहीं ❀ भयोमौन धृतराष्ट्रक तबही ॥
तबहूं होत हृदय नहि धीरा ❀ मूर्च्छित भये अन्धनृपबीरा ॥
तबहि व्यास संजय इक साथा ❀ बिदुर सहित बांधे नर नाथा ॥
शीतल नीर बदन मैं दीन्हा ❀ तबहीं हृदय चेतनृप कीन्हा ॥
यहि प्रकार तब चेत जनाये ❀ रोदन करत कहत मन लाये ॥
धृग यह जीवन जगत हमारा ❀ पुत्र शोक सहि लहैं न पारा ॥
महा विलाप धीर नाहिं धरहीं ❀ पुत्र शोक पुनि पुनि उरकरहीं ॥
बार बार रोवत हैं राई ❀ हा हा पुत्र परम सुखदाई ॥

दो० धृतराष्ट्रक रोवै तहाँ, पुत्र शोक कर हेत ॥
क्षण इक होत सचेत नृप, क्षण इक होत अचेत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहुविधि व्यासकहत समुझाई ❀ तबहूँ धीर धरत नहिं राई ॥
विदुर और संजय समुझावैं ❀ काहू बचन हृदय नहिं आवैं ॥
महा शोक करि रोदन करहीं ❀ पुत्र नाम पुनि पुनि उच्चरहीं ॥
तबहिं व्यासमुनि कहसमुझाई ❀ मंत्र हमार सुनो हो राई ॥
रोदन कोहि हित करहु भुवारा ❀ यह सब देखन का संसारा ॥
मैं इक समय इन्द्रपुर गयेऊ ❀ नारद आदि मुनिसंग लयेऊ ॥
तिहि अवसर वसुधा तहँ जाई ❀ विधि सुरपतिसों कहोबुझाई ॥
कहौ देव मेरो उद्धारा ❀ मम ऊपर भवभार अपारा ॥
पूर्व विष्णु जे दैत्य सँहारा ❀ ते सब भये क्षत्रि अवतारा ॥
भारी पाप सहै नहि पारा ❀ ये है निवेदन सभा मँझारा ॥
रोदन करि धरणी तव कहई ❀ सकल देवता साखी अहई ॥

दो० तहाँ विष्णु हँसिकै कहउ, सुनु भुव बचन हमार ।
मन चिंता त्यागन करौ, करिहौं काज तुम्हार ॥

है निज बंश देवता जेते ❀ जगत माहिं जन्म लिये तेते ॥
कुरुक्षेत्र भारत सँचारा ❀ तहां होय सबको सँहारा ॥
जाहु पृथ्वि अपने स्थाना ❀ देव विचारि कहौ भगवाना ॥
वसुधा मृत्यु लोक कहँ आई ❀ तबहिं विचार करै यदुराई ॥
सो दुर्योधन पुत्र तुम्हारा ❀ कलियुग केर अहै अवतारा ॥
महाक्रोध चंचल है अंगा ❀ सोकलियुग आयसुकरि भंगा ॥
सौ बान्धव अरुकर्ण भुवारा ❀ भारत हेत भयो अवतारा ॥
हम सब कथा कही तुव पामा ❀ भयो युद्ध तेरे सुत नासा ॥
ता कारण सब भयो सँहारा ❀ शोक तजहु अब अंध भुवारा ॥
यह सब कीन्ह अंध भुवारा ❀ पृथ्वी कर उतारेउ भारा ॥

दो०-यहिप्रकार त व्यासतब, कहेउ बहुत समुझाय ।
धर्मरूप तुम अंधनृप, त्यागहु शोक उपाय ॥

धर्म स्वरुप युधिष्ठिर राजा ❀ ताते होय तुम्हारो काजा ॥
पांचौं बान्धव पाण्डु कुमारा ❀ सो जानो शत पुत्र हमारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वे पांचौ तुव सेवा करिहैं ❀ आज्ञा तोरि सदा शिर धरिहैं ॥
मोरे बचन सत्य सुनु राजा ❀ तुम्हरे कोधहि पाण्डु अकाजा ॥
राखहु नृपति आपने पासा ❀ दास भाव मन करै हुलासा ॥
पांडव केर करौ कल्याना ❀ सुनि तब राजा करै बखाना ॥
व्यास मुनीश्वर अग्र विधाना ❀ सुनो सबै तुम अब दै काना ॥
पुत्र शोक तनु जरै हमारा ❀ धीर्य धरौं सो कौन प्रकारा ॥
तौ तुव हेतु बात हम माना ❀ पुत्र शोक त्यागें हम जाना ॥
यहि प्रकार शांतनु नृप भयऊ ❀ तबहि व्यासऋषितपहितगयऊ ॥
शीतल जल राजा को दीन्हा ❀ व्यास बचनसुनि धीरजकीन्हा॥

दो० राजाको समुझाइ कै, भे पुनि अन्तर्ध्यान ।
व्यास बचनते अन्धकहँ मनमें उपजो ज्ञान ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
अंधशोकनिवरणंनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सुनु राजा तब संजय कहई ❀ दोउ करजोरि चरण गहिरहई ॥
कछुक निवेदन अहै हमारा ❀ आज्ञा यद्यपि देहु भुवारा ॥
गन्धारी कहँ बात सुनावो ❀ अन्तःपुर में खबरि जनावो ॥
राजा सुनत दीर्घ लै श्वासा ❀ मूर्च्छित गात भूमि पर गासा ॥
तबहिं विदुर उठायो राजहिं ❀ रोदन काह करो बेकाजहिं ॥
तब धृतराष्ट्र कहउ समुझाई ❀ आनु विदुर सब स्त्री जाई ॥
वधुन समेत संग गन्धारी ❀ सब लावहु यह कहा विचारी
चलौ सँग तुमहुँ हम जैहैं ❀ सबहीं को अबहीं लै ऐहैं ॥
यह कहि रथहि चढ़े सब राजा ❀ चले वंधुनके आनहि काजा ॥
गये तुरत तब महल मँझारा ❀ महाशोक ते अन्ध भुवारा ॥

दो० महादुखित रोदन करत, कीन्हेउ महल प्रवेश ।
सब जूझे कुरुक्षेत्र महँ, सबहु न सुना सँदेश ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रोदन करत भयो आछाता ❀ मानो परी वज्र की घाता ॥
घर घर रुदन नगर में ठ्यऊ ❀ नर नारी सब रोवत भयऊ ॥
देवन जे देखी नहिं नारी ❀ परी भूमि लोटै सुकुमारी ॥
विकलवन्त रोवै सब नारी ❀ छूटै केश न देह सँभारी ॥
एक एक पट पहिरे अहई ❀ राजवधू स्त्री जे रहई ॥
घरते बाहर चलीं पुकारी ❀ विकल सब कुरुक्षेत्र सिधारी ॥
गृहते चली पुकारत जाई ❀ मनहुँ सिंहनी पतिन गँवाई ॥
इक को गहे एक धरि रोवौ ❀ इक को हाथ हाथ पर जोवै ॥
कन्या पुत्र गोदते डारहिं ❀ परी भूमिते सबहिं पुकारहिं ॥
कंचन पुतरी मनहुँ सँभारी ❀ रोवत लोटत भूमि मँझारी ॥
हा पति देव प्राणके प्यारे ❀ हमहिं छाड़ि तुम कहाँ सिधारे ॥
प्यारे हमहिं सँग ले लीजै ❀ इस बिपतीं में दगा न दीजै ॥
यह रणभूमि महादुख दाई ❀ कोउ न अपने देत दिखाई ॥

दो० आर्त्त नाद भयो नगर महँ, सब त्रियभई अनाथ ।
सबै वधू तहँ रोवतीं, धरे हाथ पर हाथ ॥

सासु श्वसुर सब एकहिं साथा ❀ रोवहिं सब धुनैं महि माथा ॥
चलीं नगरके बाहर तहँवाँ ❀ भयो युद्ध कुरुखेतहिं जहँवाँ ॥
सहित अंध नृप औ गन्धारी ❀ आई सब कुरुखेत मंझारी ॥
धृतराष्ट्रके सन्मुख आये ❀ तिनहु वीरन वचन सुनाये ॥
कृपा कृतवर्मा द्रोण कुमारा ❀ महाप्रबल तीनों सरदारा ॥
राजातें रोवत यह कहई ❀ बचन न आव नयन चलबहई ॥
महायुद्ध कीन्हेउ कुरूराजन ❀ बचे न कोउ सुनिये महराजन ॥
हम तीनों भारत में रह्येऊ ❀ राजा सुनहु सत्य हम कहेऊ ॥
तीनों तब बोधत गँधारी ❀ तजौ शोच सुनि बात हमारी ॥
जाना तुम्हें क्रोध में राई ❀ तबहिं लोककर भीम बनाई ॥
क्रोध तजो राजा परमाना ❀ पाण्डवतनय पुत्रकरि जाना ॥
धर्म्मजके दुख देखु बिचारि ❀ तुम्हरे पुत्र दीन दुख भारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

व्यास विदुर भीषम समुझाये ❀ बहु प्रकार हम तोहिं बुझाये ॥
काहू केर कहा नहि माना ❀ हठ कर कीन्हेउ रण मैदाना ॥
तुम सब जानत हौ सज्ञाना ❀ कहा कहौं भाषत भगवाना ॥
तुम्हरे चित दया नहिं आई ❀ पाये बहु दुख पांचौं भाई ॥
पांच गांउ तुमहूं न दिवाये ❀ अपने पुत्राहि नहि समुझाये ॥

दो०- महादुःख सहि पांडवन, तब कीन्हों यह कर्म ।
मारन चाहो भीम को, कहा कहौं तुम धर्म ॥

कृष्णबचन सुनि अन्ध मुत्रारा ❀ कहै सुमति करि हृदय बिचारा॥
बड़े भाग्यते भीम बचाये ❀ धन्य कृष्ण अन्धहिं समुझाये ॥
क्रोध सकल अब गयो हमारा ❀ महा कृपा भई पांडकुमारा ॥
पुत्र सकल रण जुझे हमारा ❀ महाशोक भा नन्दकुमारा ॥
तब जानेउ छूटेउ मन क्रोधहि ❀ परसहि अंग पांडवन योधहि ॥
धर्मराज अरु भीम जुझारा ❀ पारथ सहदेव नकुल कुमारा ॥
सबहि अंध चरणन लपटाने ❀ तजिकै क्रोध दया बहु माने ॥
पांडव पुत्र महा अज्ञाना ❀ आपन पुत्र सत्य करि जाना ॥
ऐसे पुत्रन शोक मिटाये ❀ प्रेम हर्ष तब पांडव पाये ॥

दो०-धृतराष्ट्रको परसिकै, पुत्रन शोक मिटाय ।
तब पांचो पांडव बहुरि गंधारी पहँ जाइ ॥

गन्धारी पहँ कीन्ह पयाना ❀ आइ व्यास मुनि तहाँ तुलाना॥
पुत्रशोक गन्धारी अहई ❀ श्राप देन पांडव को चहई ॥
पट्टी बांधे हैं दोउ नयनहिं ❀ तहां व्यास भाषे यह बैनहिं ॥
बचन हमार वेद परमाना ❀ तुम आगे मैं करौं बखाना ॥
शांति होइ सब दुखन मिटाई ❀ तव सेवा करैं पाँचौ भाई ॥
जात युद्ध दुर्योधन राऊ ❀ आज्ञा लै नहिं परशेउ पाँऊ ॥
तब तुम्हरे मुख आइ न बाता ❀ धर्मज संजय पाप निपाता ॥
इतनी बात पुत्र सन भाषा ❀ पूरण भयो धर्म अभिलाषा ॥
बचन तुम्हार जक्त महँ टरई ❀ तौ रवि चन्द्र उदय नहिं करई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सोई बचन भयो परमाना ❀ बिरथै धर्म कुकर्म नशाना ॥
दो०-क्रोधक्षमा करु वेगि तुव, कहेउ व्यास समुझाय ।
धर्म वृद्ध क्षय पापकी, यहै सुनौ मन लाइ ॥
व्यास बचन सुनिके गन्धारी ❀ तज्यो क्रोध तब कहेउ बिचारी॥
ठाढ़ पांच बन्धु भगवाना ❀ कहेउ व्यास गंधारि बखाना ॥
जो कछु व्यास कहत हैं बानी ❀ वेद प्रमाण सत्य हम जानी ॥
पांचौं पुत्र परम रिस नाहीं ❀ सुतको शोक भयो मनमाही ॥
जेहि सम कुन्ती जननी तासू ❀ तैसे हमैं देखि परगासू ॥
कुरुपाते शकुनी कर्णहुँ चारी ❀ पापी सबै भूप सँहारी ॥
पांडुपुत्र पापहि मन दीन्हों ❀ जानु भंग दुर्योधन कीन्हों ॥
नाभी हेठ दाग परिहारा ❀ ताते मनभा ोध हमारा ॥
पापी भीम जानु में मारा ❀ सुनत त्राम भयो पांडुकुमारा ॥
मनमहं त्रास हाथ तब जोरै ❀ मातन कहा दोष कहं मोरे ॥
दो०-सबै बीर संहारि कै, बाच्यो एक भुवार ।
ताहि न मारैं जननि हम, निष्फल युद्ध हमार ॥
उनते जीति न सकेहु भुवारा ❀ पाप कपट करिकै हम मारा ॥
अरु भाई कर दोष विचारी ❀ ताते जानु भंग करि डारी ॥
जादिन सभा द्रौपदी आनी ❀ जानु देखायो सो अज्ञानी ॥
ता दिन हमहु प्रतिज्ञा लीन्हा ❀ जानु भंग ता कारण कीन्हा ॥
राजा बिन जीते ते माई ❀ केहि प्रकार हम पृथ्वी पाई ॥
अन्तहु पांच गांव हम मांगे ❀ दीन्हों नहीं गर्व मन पागे ॥
तबहुं न मानी बात भुवारा ❀ कहु जननी का दोष हमारा ॥
ता कारण नहिं धर्म विचारा ❀ जस करिजाना तस हम मारा ॥
अपने कर्म्म भयो संहारा ❀ नाहिन सुत कछु दोष तुम्हारा ॥
यह दुख मोहिं दीन्ह करतारा ❀ धर्म राज अस सुत रण मारा ॥
दो०-नकुल साथ दुश्शासनहि, लरे प्रथम मैदान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुमगहि भुजा उखारेहु, यहै बड़ो अपमान ॥
पाछे भीम कहउ समुझाई ❀ बिना दोष कीन्हों नहिं माई ॥
रजस्वला जो द्रौपदी रानी ❀ गहि कर केश सभा में आनी ॥
एक वस्त्र सोऊ खिचै लीन्हा ❀ तहँ माता हमहूं प्रण कीन्हा ॥
भुजा उखारों जबहि तुम्हारी ❀ पुरै प्रतिज्ञा नाहिं हमारी ॥
कहेउ पुकार सभा के माहीं ❀ बिना हेत छांड़ो तोहिं नाहीं ॥
जबलों रुधिर पियों नहिं तोरा ❀ कबहुं न मिटे शोक यह मोरा ॥
क्षत्री धर्म प्रतिज्ञा कीन्हा ❀ ताते भुजा उखारि मैं लीन्हा ॥
याते जननी दोष हमारा ❀ क्षमा करौ मैं शरण तुम्हारा ॥
तुम जननी मत जानहु आना ❀ हौं मैं जानत कुन्ति समाना ॥

दो०-द्रुपदसुता पट सभा में, खैंचे दुष्ट दुबोध ।
कहु जननी कैसे नहीं, आवै हमको क्रोध ॥
भइ उनकी ओरसे, माता सबै ऊपाध ।
क्षमाकरौ सब जानि जन, मेरो यह अपराध ॥

यह सुन कहत भई गन्धारी ❀ तू राक्षस है मांस अहारी ॥
सुत दुश्शासन को बध करिकै ❀ रुधिर पियो अतिआनंद भरिकै ॥
लरे बधे को दुख नहिं मोहीं ❀ शोणित पियो कौनबिधि द्रोही ॥
यह सुनि भीम कह्यो सुनुमाता ❀ दुश्शासन हो ममप्रिय भ्राता ॥
तासुरुधिर निजसम अनुमानो ❀ तासो कछू घृणा नहि आनो ॥
अर्जुन धर्म नृपति भय करिकै ❀ कहत भये हमि धीरज धरिकै ॥
हम तुम्हरे पुत्रन बध कारी ❀ क्षमा करो हम शरण तुम्हारी ॥
अब करजोरि खड़े हम पांचौं ❀ श्राप देहु किमि आशिष सांचौ ॥
बारम्बार हम बिनवत माता ❀ मिटतन जो कछुलिखे बिधाता ॥
मधुर बचन जब सबन सुनाये ❀ ऐसे मातहि शांत कराये ॥

दो०-सोहम कीन्हों अम्ब सुनु, मम दुख अनुमान ।
क्रोध ईर्षा दूर करि, दया हिये में आन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्रोध शान्त देवी भई, भीम बचन सुनिकान।
तब गन्धारी शान्त है, कहन लगी दुख मान॥
दया छांड़ि निर्दयी बने, शतसुत बधे सटेक।
अन्त वृद्धकी लकुटिया, समुझ न छोड़ी एक॥
कहत लोग सब जगतमें, कठिन पुत्रकी पीर।
सो पुत्रन को मरण सुन, कैसे बांधौं धीर॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि सबलसिंह चौहानभाषाकृते
गन्धारी कोपशान्तिकरणं नोनाम द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

तब गन्धारी कहेउ बुझाई ❀ कहँ धर्मेश युधिष्टिर राई॥
सुनत त्रास कांपे नरनाथा ❀ ठाढ़ भये जोरि कर हाथा॥
बोले बचन त्रास भई भारी ❀ जननी सुनियो बात हमारी॥
हम ते भा सब बंश संहारा ❀ जननी आयो शरण तुम्हारा॥
श्राप योग्य मैं माता नाहीं ❀ सहे श्राप तुव को जग माहीं॥
धिक जीवन है जगत हमारा ❀ अपने हाथ बन्धु संहारा॥
देवी सुनत भयो मन धीरा ❀ दीन बचन भाषे नृपबीरा॥
प्रति उत्तर तब कछु न दीन्हा ❀ मनको दुख प्रकाशनहिंकीन्हा॥
दो०-तब माता धीरज धरेउ, नृपति बिनय कह बैन।
तीन बन्धु देवी कहै, हम नहि देखे नैन॥
अर्जुन सहदेव नकुल कुमारा ❀ सुनत बचन तब भयो खंभारा॥
हरिके पीछ पारथ जाई ❀ भागि दूर तब दूनौ भाई॥
तीनों हरिके पाछे गयऊ ❀ श्राप त्रास ते आतुर भयऊ॥
एकघरी सबही चुप रहेऊ ❀ क्रोध शान्त गन्धारी कहेऊ॥
पुत्र आउ अब निकट हमारा ❀ काहे कीजै त्रास कुमारा॥
अपनो दुक्कुम करौ अब जाई ❀ धर्म्मपुत्र तुम पांचौं भाई॥
देवी क्रोध तज्यउ परमाना ❀ पाण्डव श्राप भयो परित्राना॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गन्धारी तब बोली बाता ❀ आनौ कुन्ती शत्रु अजाता ॥
पाँचौं बान्धव कुन्ती लाये ❀ सबही मिलि कुरुखेत सिधाये ॥

दो० गन्धारी कुन्ती सहित, पाँच बन्धु भगवान ।
युद्ध भूमि तब सबै जन, देखत ठाढ़ निदान ॥

तहँ शत बधू रूप उजियारी ❀ मानहुँ चन्द्रकला द्युति धारी ॥
अपने अपने कंत उठाये ❀ रोदन करैं सबै बिलखाये ॥
मनहुँ मृगी शिशु यूथ बिहाई ❀ रोदन करैं सबै बिलखाई ॥
युद्ध भूमि देखी भयकारा ❀ देखे वीर अनेक जुझारा ॥
कुण्डल नाना रतन अपारा ❀ महा रूप ते परे भुवारा ॥
रथन छत्र अरु दण्ड अपारा ❀ पूरि रहेउ रण भूमि मँझारा ॥
वसन अस्त्र बहुतक तहँ देखे ❀ नाना मुकुट रतनमय लखे ॥
शोणित नदी बहत है ऐसी ❀ सरिता यम वैतरणी जैसी ॥
गज रथ अश्व मनुष्य अपारा ❀ बहे जात शोणित की धारा ॥
तीन तीर शोणित गम्भीरा ❀ परे नृपति क्षत्री बलवीरा ॥

दो० रोवत है सब त्रियागण, नाना रूप अपार ।
आपन आपन कंत को, रोदन करत पुकार ॥

काहू केर शीश है नाहीं ❀ काहू केर परे कटि बाहीं ॥
काहू केर दोउ भुज नाहीं ❀ काहुहि शूल घाव तनु माहीं ॥
कोई कटे खड्ग ते आधा ❀ काहुहि परे भूमि पर काँधा ॥
काहू केर जाँघ दोउ काटे ❀ काहू केर हृदय हैं छाँटे ॥
ऐसे परे वीरे बहु तहईं ❀ भारत रणहि भूमि हैं जहईं ॥
काक गृध्र जंबुक जहँ नाना ❀ अरु दुर्गंधि बास है ग्राना ॥
बहुत रूप पक्षी गण आये ❀ माँस खाइ आनँद बढ़ाये ॥
प्रेत भूत बैताल अपारा ❀ नाचैं योगिनि ताल सँभारा ॥
नचैं कबंध हेत करतारी ❀ योगिनि डाकिनि करैं धमारी ॥

दो० क्रोधवन्त धनु बाण ले, कोइ युद्ध प्रकास ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उठे कबन्ध रण खेत महँ, प्रेत करहिं सब हास ॥
कोइ पति कहि कोइ कहै कुमारा ❀ कोउ बंधु करि करै पुकारा ॥
भयो महा रण आरत शोरा ❀ रोदन भयो महा घन घोरा ॥
रोवहिं शतहु बधू बिलखानी ❀ महा बिकल दुर्योधन रानी ॥
सो कहँ लग मैं करहुँ उबारा ❀ भयो रुदन जहँ शब्द अपारा ॥
हा हा कन्त प्राणपति राजा ❀ जाको यश सब जगत बिराजा ॥
बासुक लक्ष्मी कंध नृपाला ❀ करैं सेव लाखन भूपाला ॥
छत्रहि छत्र रहत जग छाई ❀ सेवा करन आवत बहु राई ॥
रत्न सिंहासन पाट तुम्हारा ❀ नाम तुम्हार जान सँसारा ॥
रत्न मुकुट आलंकृत नाना ❀ रूप देखिके काम लजाना ॥
अधिक सुन्दरी तुमरी रानी ❀ कर्म बिवश यह गति भै आनी ॥

दो० अपनी अपनी सुन्दरी, शत बांधव की नारि ।
बहु बिलाप कहि जात नहिं, रोवहिं शीश उघारि ॥

लखि गंधारी भई अधीरा ❀ देख्यो यह कारण यदुवीरा ॥
सकल वधू रोवतीं हहारी ❀ तुमहीं सब अनाथ करि डारी ॥
जो सुंदरि मैं तुमहिं गनाहीं ❀ भइँ अनाथ रोवत सब आहीं ॥
राजा एक करैं सुत सेवा ❀ ताकी यह गति कीन्ह्यो भेवा ॥
जा तनु अतर सुगंध सोहाई ❀ तौन शरीर गृध्र खग खाई ॥
यात्रा समय पुत्र सन भाखा ❀ बचन हमार राउ नहिं राखा ॥
तोंहि दोष नहिं नंदकुमारा ❀ सबै पराक्रम आहि तुम्हारा ॥
जूझे सो सुत रहेउ न कोई ❀ अंध नृपति की का गति होई ॥
अस कहि रोवहिं ऊंच पुकारी ❀ ताहि देखि बोले बनवारी ॥
तुम्हरे सुत मम बचन न माना ❀ मोर कहा सो तृण सम जाना ॥

दो० भीषम द्रोण बुझायऊ, और बिदुर मुनिव्यास ।
कहा न मान्यो काहु कर, कीन्ह्यो रण परकास ॥

धृतराष्ट्रक तव बहुत बखाना ❀ इन कीन्हों सब कर अपमाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पांडव वीर महा बल भारी ❀ हठिकै कुरुपति गणहिं बिचारी
अपने कर्मन भये विनाशा ❀ नारायण यह बचन प्रकाशा ॥
सुनिकै बात कहत गंधारी ❀ अपने कर्मन गो अपकारी ॥
दोष न काहू को मन धरेऊ ❀ सो बांधन तेहि संगहि मरेऊ ॥

दो०-क्षत्री धर्म उन करेऊ रण, सब बीर मैदान ।
कुरुक्षेत्र तनु त्यागिकै, सब चढि गये बिमान ॥

तब तीनउ जन कह्यौ बुझाई ❀ सुनिये माठु परम सुखदाई ॥
शोक तजौ मत करौ बिलापा ❀ गय स्वर्ग सब कहँ संतापा ॥
भीम पाप कीन्हेउ बहु संगा ❀ ताते हम कीन्हेउ रण रंगा ॥
मारे दल पांडव सँहारा ❀ बध द्रौपदी पंच कुमारा ॥
पांडव को सो पराभव दीन्हा ❀ राजा द्रुपद पुत्रबध कीन्हा ॥
अब आज्ञा दीजै नरनाहा ❀ जैये हमहूँ निज थल माहा ॥
बिदा माँगि तीनौं तब गयऊ ❀ द्रौणी व्यासा श्रम पगु धरेऊ ॥
कृपा कृतवर्म द्वारका गयऊ ❀ कुरुक्षेत्र महँ सब जन रहेऊ ॥
गये सब रण भूमि मँझारा ❀ जहँ बहु बीर परे बिकरारा ॥
रोदन करैं तहां सब कोई ❀ बाम बिधाता काहु न होई ॥
भयो शोर सह आरत भारी ❀ एक बार शत बधू पुकारी ॥

दो०-महाशोर कुरुक्षेत्र महँ, रोदन भयो अपार ।
नगर लोग की नारि सब, रोवत करत पुकार ॥

राजा धर्म सुना यह पायें ❀ कुरुक्षेत्र धृतराष्टक आये ॥
पाँचौं पाण्डव नंदकुमारा ❀ कुरुक्षेत्र तुरतहि पग धारा ॥
प्रथमै धर्मराज गये आगे ❀ अंध नृपति के चरणन लागे ॥
महा युधिष्टिर पुत्र तुम्हारा ❀ मोरे दोष न करौ विचारा ॥
आप पिता हम पुत्र तुम्हारा ❀ क्षमौ दोष जो भयो हमारा ॥
राजपाट सब अहै तुम्हारा ❀ हम सेवक समेत परिवारा ॥
बहु प्रकार तब अस्तुति कीन्हा ❀ तब धतराष्ट शांतिमन लीन्हा ॥
अन्ध नृपति तब कहेऊ विचारी ❀ भीम सबै मम पुत्र संहारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मिलन हेतु हमरी है आशा ❀ कपट बुद्धि मन में परगाशा ॥
भस्म करन चाहे मन माहीं ❀ तबकहकृष्ण भीम यहनाहीं ॥
दो०-कालिह आई कै भेंटहै, भीम तुमहि नरनाह ।
चारौं बान्धव मिलतहँ, विनय बहुत करिताह ॥
तब यह श्रीपति युक्ति उपायउ ❀ लोहे भीम तहां निर्मायउ ॥
भीमसेन कह राखि दुराई ❀ लोहे भीम अन्ध पहँ लाई ॥
ठाढ़ो भीम कहत यदुराई ❀ मिलो हेतु करि कण्ठ लगाई ॥
नृपके कपट आहि मन भाई ❀ मारौं भीमहि दुख मिटिजाई ॥
कहो बात हृदयमें चाही ❀ सुतकेशोक विकल तनु माही ॥
हर्षत क्रोध मिले तब राई ❀ मनहुपरी दुखिया निधि पाई॥
आयुत नागको बल तनुमाहीं ❀ क्रोधित भीमसेन को गाही ॥
मिलत लोह चूरण करि डारा ❀ पुहुमी माहि परा कै छारा ॥
संजय हा हा करी पुकारा ❀ भीमसेन को करै संहारा ॥
सबहीं हा हा शब्द पुकारा ❀ भयो मोह तब अन्धभुवारा ॥
तब माया करि रोवन लागे ❀ भीम शोक हृदय महं पागे ॥
राजहि बात कहत यदुनाथा ❀ रोदन कहा करो नरनाथा ॥
अहै भीम सुनियो हो राई ❀ धतराष्ट्रक को कृष्ण बुझाई ॥
राजा कहत सुनहु बनवारी ❀ है सब रचना कृष्ण तुम्हारी ॥
सर्वमयी तुमहो भगवान ❀ तुमहीं देहु ज्ञान अज्ञाना ॥
वैसी बुद्धि तासु को दयऊ ❀ जाते शत बान्धव मरिगयऊ ॥
पांडव कहँ जीते पुरुषारथ ❀ भक्त हेतु कीन्हउ तुम स्वारथ ॥
पांडव कुल के भयो उबारा ❀ कौरव बंश कीन्ह संहारा ॥
दिना अट्ठारह अस रण चढ़ऊ ❀ शत बांधव मंह एक न बचेऊ ॥
मोर बंश तुम कीन्ह संहारा ❀ कृष्ण लीजिये श्राप हमारा ॥
त्रिंशति षट सवत यदुराई ❀ तव कुल आपुस मँह कटिजाई॥
दो०-हाय दई कैसी करूं, केहि बिधि करूं पुकार ।
शोक समुन्दर में पड़ी ह पति बचन उचार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० छपन कोटि यदूवंश हैं, पुत्र प्रपौत्र तुम्हार।
लेहु कृष्ण तुम श्राप मम, एकहिं दिन संसार॥

हँसि कै कृष्ण कही यह बाता ❀ को अस है जगमें सज्ञाता॥
यदुवंशिन सों जीतन चहई ❀ कौन जगत में एसो अहई॥
आपहिं वंश होय अपकारा ❀ यद्यपि पायो श्राप तुम्हारा॥
पापी कुरूपति कियो संहारा ❀ काह दोष धौं भयो हमारा॥
हम जब गये हते दरबारा ❀ पाँच गाँव मांगे भूपारा॥
ग्राम देहि नहिं मारन चहई ❀ तब कुरूपतिसन भीषम कहई॥
मोहिंश्राप कोहि कारण दीन्हेउ ❀ यहै जगतपति कहिबे लीन्हेउ॥
सुनिकै लज्जित भइ गंधारी ❀ कृष्ण बचनसों शोक निवरी॥
पुत्र शोक छाँड़ेउ गंधारी ❀ तज्यो क्रोध तनु सुरति सँभारी॥
ऐसे सुनत शांत सब भयउ ❀ तबहीं त्याग हर्ष मन लयऊ॥

दो० क्षमा क्रोध जबहीं भयो, अंध कुरुपति राय।
पाछे तहँवाँ द्रौपदी पुत्र शोक बहु पाय॥

पाँच पुत्र गये बधे हमारा ❀ बिलपै परी भूमि मँझारा॥
गंधारी गहि हाथ उठाई ❀ लीन्ह बधू कहँ कंठ लगाई॥
बहु प्रकार समुझावहिं बानी ❀ भइ तब मौन द्रौपदी रानी॥
सबै बधू लै कंतन रोवत ❀ देवलोक सब सुरगण जोवत॥
तरुण बयस सबहीं हैं बाला ❀ प्रथम बयस अति रूप विशाला॥
छूटे केश न देह सँभाला ❀ व्याकुल सकल महा विकराला॥
यह सब देखि परिहन्यो शोका ❀ पुत्र तुम्हार गये सुर लोक॥
रोइ सुभद्रा सुतहिं पुकारी ❀ पुत्रहिं बिना धीर किमि धारी॥
चक्रव्यूह युद्ध में बीत्यो ❀ कर्ण द्रोण वीरन ते जीत्यो॥
ऐसो पुत्र जासुको मरई ❀ तासु जननि किमि धीरज धरई॥

दो० कैसे जीवै मातु वह और तासु की नारि।
उला रोवति लाज तजि, हा प्रीतम सुखकारि॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

देख्यो विस्मय श्री भगवन्ता ❀ रोवत पारथ शोच अनंता ॥
उतरहिं देखि सबै तहँ रोवत ❀ कुंती रानि बधू मुख जोवत ॥
सासु सुभद्रा कहि समुझावत ❀ उत्रा कहँ करै गहि बैठावत ॥
यहि प्रकार रोवत सब नारी ❀ कुंती मातु कर मनुहारी ॥
ऐसे एक एक भइ धीरा ❀ शोकित व्याकुल रहै शरीरा ॥
कुंती रानी औ गंधारी ❀ कीन्ह बधुन की बहु मनुहारी ॥
दो० आरत नाद मिटाई तब बहु बहु धीर धराई ।
सब मिलि त्यागहु शोक अब कह्यो युधिष्ठिरराइ॥

इति श्रीमहाभारते सचलसिंहचौहानभाषाकृते स्त्रीपर्वणि
कुरुपाण्डवस्त्रीविलापवर्णनोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

आरत नाद शान्त तब भयऊ ❀ धृतराष्ट्रक राजा सों कहेऊ ॥
सुनहु बात धर्मज सुत राजा ❀ अब नहिं शोच करनको काजा॥
हरि की माया ते संसारा ❀ आवत जात न लागै बारा ॥
मरे वीर भारत मैदाना ❀ दानव हते देव जे नाना ॥
अष्टादश क्षोहिणि दल भारी ❀ भारत भूमि परे सब झारी ॥
द्रोण कर्ण भगदत्त भुवारा ❀ और नृपति जे हते अपारा ॥
और नृपति जिनके नहिंकोई ❀ समगति करो सबनको सोई ॥
राजा कैसो करै उपाई ❀ दाह कर्म वीरन के आई ॥
सुनिके बात युधिष्ठिर राजा ❀ लागे करन दाह कर काजा ॥
धर्मज भीम धनञ्जय बीरा ❀ नकुल और सहदेव सधीरा ॥
दो० पाँचौं बान्धव मिलि तहाँ, कहैं दाह उपदेश ।
बड़े बड़े सरदार सब क्षत्री बीर नरेस ॥
चन्दन अगरसहित घृतलीन्हें ❀ दाह कर्म सबही को कीन्हे ॥
पहिले दुर्योधन शत भाई ❀ लषण कुंवर को दाह कराई ॥
भूमि खुत करि कुरुपति धारा ❀ बाहर काढ़ि कुँवरको जारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

द्रोण बीर भगदत्त भुवारा ❀ और कलिंग शूर बरियारा ॥
कर्ण बीर अँगारमति रानी ❀ क्षेत्र माँझ सती भइ आनी ॥
और त्रिया जोहि सत मनमाना ❀ भई सँग पति सती प्रमाना ॥
भूरिश्रवा जयद्रथ राजा ❀ अभिमन्यु दाह करै तबकाजा ॥
उत्रा सती होनको जाई ❀ कहैं कृष्ण तासों समुझाई ॥
तुम्हरे गर्भ पुत्र इक होई ❀ कुरु पाण्डव के सरवर सोई ॥
हैं दुइ मास गर्भ ह्याहि भाषा ❀ बहु समुझाई कृष्ण तेहि राखा ॥

दो० बहु प्रकार उत्रा कहँ, कहेउ कृष्ण समुझाइ।
दुहूँ वंश मँह एक पति, होइ गर्भ तुव आई ॥

तब बिराट अरु द्रोपद राजा ❀ सोमदत्त के दाइन काजा ॥
अंशुमानको दह्यो शरीरा ❀ चेकीतान दह्यो रणधीरा ॥
काशीराज शिखण्डी वीरा ❀ धृष्टद्युम्न को दह्यो शरीरा ॥
केकय और त्रिगर्त नरेशा ❀ दाह कर्म सब कीन्ह नरेशा ॥
जे द्रुपदी के पाँच कुमारा ❀ गति कीन्ही तब धर्म भुवारा ॥
है घटोत्कच भीम कुमारा ❀ और अलंबुष दानव बारा ॥
दाहन कर्म सबहिंको कीन्हा ❀ क्षत्री वीर जहाँ लगि चीन्हा ॥
पाछे का जितने असवारा ❀ अरु पायक जे भये सँहारा ॥
भारत महँ जूझे हैं जेते ❀ दाहकर्म धर्मज किय तेते ॥
धृतराष्ट्रक अरु सँग नरनाथा ❀ गये गंगतट ब्राह्मण साथा ॥

दो० तर्पण अरु स्नान करि, क्षत्री देव प्रमान।
यहि प्रकार राजा कर, दाह कर्म सिरान ॥

करि स्नान नगर में आये ❀ तब कुंती पुत्रन समुझाये ॥
सुत सुपुत्र भाषहिं सँसारा ❀ सोइ कर्ण सुत हते हमारा ॥
कन्या कलंक भयो अवतारा ❀ सूर्य ध्यान कीन्हेउ जेहि बारा ॥
ज्येष्ठ बन्धु सोइ कर्ण तुम्हारा ❀ प्रेत कर्म तेहि करो भुवारा ॥
यह चरित्र राजै सुनि पाये ❀ हाय कर्ण तुम कहां सिधाये ॥
भ्राता आजु बात सुनि पाये ❀ अनजाने रण तुमहि गिराये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आगे माता नाहिं जनाये ❀ भाष्यो तब जब मारि गिराये ॥
मो कह शोक सिन्ध म डारेउ ❀ पहिले माता नाहिं सँभारेउ ॥
तबहिं श्राप माता कहँ दीन्हा ❀ तब गुण मातु कर्णबध कीन्हा ॥
गुप्त कथा नारिन तनु माहीं ❀ रहे कदापि काल उर नाहीं ॥

दो०-महाशोक राजा हृदय, कर्णाहि हेतु विलाप ।
ज्येष्ट बन्धु बध कीन्हेउ, भयो महा बड पाप ॥

कर्ण बीर के कर्महिं कीन्हे ❀ वेद प्रमाण सुगति मनु दीन्हे ॥
हैं वृषकेतु जो कर्ण कुमारा ❀ कर्म पिता के करैं संभारा ॥
औरौ ज्ञाति सबै परिवारा ❀ कीन्हे कर्म वेद व्यवहारा ॥
तर्पण ज्ञान गंग महँ कीन्हा ❀ पिण्डदानतब दश दश दीन्हा ॥
यह कीरति जलमें निबाहा ❀ पुनि बाहर आये नरनाहा ॥
क्रियाकर्म सबके हित कीन्हेउ ❀ बहुत दान विप्रन कहं दीन्हेंउ ॥
विदुर और धृतराष्ट भुवारा ❀ पांचौ पांडव नन्दकुमारा ॥
गृह में गये सब इक साथा ❀ पाण्डडव संग आपु यदुनाथा ॥
रहे गेह महँ सब जन आई ❀ कुन्ती अरु गन्धारी माई ॥
सोहत द्रौपदी गृह महं जाई ❀ चिन्तावन्त धर्म सुत राई ॥

दो०-ज्ञातिबन्धु को शोक है, धर्मराज मन मांह ।
दुख पावत है हृदय महं, पाण्डपति नरनाह ॥

यहि अन्तर तहँ सब मुनि आये ❀ पराशर तब हर्षि सिधाये ॥
नारद मुनि आये पुनि तहवां ❀ सनक सनंदन हूं गये जहवां ॥
व्यासकपिलअरुऋषिगणनाना ❀ मुनि बशिष्ट तहँ कियो पयाना ॥
ऋषि जमदग्नि संगसब आये ❀ धर्मराज तब दर्शन पाये ॥
पांचो बंधुन बैठे जहवां ❀ कुरु नृप और विदुर है तहवां ॥
बंधु शोक ते धर्म शरीर ❀ नयन स्रवन जल बहु दुख पीरा ॥
राज पाट हित बाँधव मारा ❀ महा शोक महँ धर्म भुवारा ॥
रोदन कर तहँ धर्म नरेशा ❀ बन्धु शोक तनु भयो प्रवेशा ॥
तबही व्यास सिखावन लागे ❀ राज नीति धर्मज के आगे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-बहु प्रकार समुझाय कै, धीर धरायो ब्यास ।
कृष्ण सहित गुरु बन्धु सब, बुद्धिचक्षु है पास ॥

सुर अरु असुर दनुज नर दारा ❀ बन्धु बन्धु ते वैर संभारा ॥
सर्प गरुण बान्धव परमाना ❀ सदा युद्ध ते करै निदाना ॥
सदां सो यहै बात चलि आई ❀ तुम कत शोच करत हौ राई ॥
जन्म मृत्यु होतै परमाना ❀ [illegible] माया काहू नहि जाना ॥
तीनों रूप त्रिगुण अवतारा ❀ सिरजै पालैं करैं संहारा ॥
जनमत संग मृत्यु तौ आवा ❀ माया रूप गर्भ नर पावा ॥
मरिहैं सबै न बचिहैं कोई ❀ जितने देव दैत्य नर सोई ॥
मरहि देव अरु इन्द्र भुवारा ❀ मरहिं अष्ट कुल नाग पासारा॥
मरिहैं धरती और अकाशा ❀ मरिहैं मेघ नीर परकाशा ॥
मरिहैं चन्द्र सूर्यअरु तारा ❀ मरिहैं ब्रह्मऋषिंहि संसारा ॥

दो०-शोक परिहरो धर्मसुत, देखहु, ज्ञान बिचार ।
जो जन्मा सोई मरा मृत्यु लोक सँसार ॥

जेतक भये मही अवतारा ❀ कहां गये वे सबै भुवारा ॥
केते भये कहत नहि आवै ❀ अंतकाल सब मृत्युहि पावैं ॥
राजा रक मरै सब झारी ❀ मरिहैं महाबीर धनुधारी ॥
मत्युहि लोक नाम यहि अहई ❀ जो कोई जन्म आइकै गहई ॥
मरिहै सब अमर नहिं कोई ❀ केवल सुयश रहै जग सोई ॥
माता पिता बधू सुत भाई ❀ जीवत भरि माया अधिकाई ॥
अन्तकाल एकौ नहिं अहई ❀ अपनो धर्म आप संग रहई ॥
धर्म कर्म जो जाको जैसा ❀ ताको फल पावै सो तैसा ॥
व्यास कहे राजहिं समुझाई ❀ शोक करो केहि कारण राई ॥
एक ब्रह्मकी सब यह माया ❀ देव असुर मानुष्य भ्रमाया ॥

दो०-राजा शोक न करौ तुम, कहेउ व्यास समुझाय ।
एक धर्म साथीं अहै, और संग नहिं जाइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जैसे एक चन्द्र नभ माहीं ❀ कोटि कला सम प्रगटै ताही ॥
सर्व मध्य देखा सोई चन्दा ❀ एकौ अंग अहै सब बन्दा ॥
नाना घट माया विस्तारा ❀ सुत पितु बंधु मातु परिवारा ॥
यक घट नाश जबहिं ह्वै जाई ❀ ताको जल सब भूमि समाई ॥
तजिकै रूप पुरुष अस जाई ❀ चन्द्रज्योति जिमि चन्द्र समाई ॥

दो०-घट निवाशते पुरुष तब, लीन होई तह जाई ।
प्राकृत माया त्रिगुणजो, सो भरमावत आइ ॥

यहि प्रकार मुनि व्यासबुझायो ❀ धर्मराज को धीरज आयो ॥
भारत कथा पुनीत प्रतापा ❀ नाशै सकल देह कर पापा ॥
आवै मति दुर्मति मिटि जाई ❀ सत्यवन्त ते जानते राई ॥
कहैं कथा मुनि वैशम्पयन ❀ जनमेजय सुनिये सुखदायन ॥
स्त्री पर्व यहै विस्तारा ❀ शांतिपर्व अब सुनिय भुवारा ॥

दा०-क्षत्री सुनत जे शूरमा मूरख ज्ञान प्रकास ॥
श्रवण पान जे करत नर छूटत यमकी त्रास ॥

इति श्रीमहाभारत स्त्रीपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते व्यास-युधिष्ठिर सम्बादेधर्मउपदेशवणननोनाम चतुथोऽध्यायः ॥ ४ ॥

इति स्त्रीपर्व समाप्त ॥ १३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ महाभारत भाषा ।

शांतिपर्व-

दो॰सुमिर कृष्ण गोबिन्द हरि, व्यास देव भगवान ।
शान्तिपर्व वर्णन करत, सवलसिंह चौहान ॥

राजा सुनौ शांति विस्तारा ❀ करत राज श्रीधर्म भुवारा ॥
ज्ञाति शोकते धर्म भुबारा ❀ भावत नहीं राय संसारा ॥
दिन २ महाशोच तब माना ❀ चौथे पनका कीन पयाना ॥
बध शतबंधु द्रोण गुरु मारा ❀ रोबहिं धर्म दीर्घ जलधारा ॥
कर्ण बंधु सोऊ बध कीन्हा ❀ भीषम तो शरशय्या लीन्हा ॥
यहै शोच तो राजा करही ❀ दिन२तनु दुःखित दुख परही ॥
तेहि अवसर मुनि सब आये ❀ नारद और वसिष्ठ सिधाये ॥
मार्कंडेय कपिल अरु भृगुमुनि ❀ जमदग्नी औरो मुनिश गुनि॥
बृहदश्वरु लोमश सज्ञानी ❀ सब मंत्रीगण बिदुंर प्रणामी ॥

दो॰ श्री बलभद्र नारायण, पाँचौं बंधु भुवार ॥
बैठ सबै सभा विषे, सुनौ परीक्षित बार ॥

सबै करत राजासे बाता ❀ श्रीबलहरिमुनि ऋषिसख्याता ॥
परजा भाग धर्म सुतराजा ❀ पुरी हस्तिना शोभित साजा ॥
बडे भाग कुरु सब साँहरे ❀ परम सुक्ख कर राज भुवारे ॥
जस सँशय नृप शोक मगाये ❀ नारद सबको कहि समुझाये ॥
वेद व्यास ऋषी बहु ज्ञानी ❀ धर्मराज से कह्यो बखानी ॥
ज्ञान तंत्र सुनहू नृप बाता ❀ चलो वेगि भीषम पै ताता ॥
व्यास बचन सुनिके नरनाथा ❀ चले नृपती हरि बल हैं साथा ॥
औरो सबै मुनी सँग लाये ❀ कुरुक्षेत्र में पहुंचे आये ॥
जहँ शरशय्या भीषम पाये ❀ बैठ सबै तहां मन लाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शर शय्या भीषम कह देखा ❀ महाशोक बाढयो नृप पेखा ॥
दो० रोदन धर्मराज कर, देखि पितामह नैन ।
हृदय शोक प्रकाशिकै, कहैं लाग नृप बैन ॥
बालक काल पिताके हीना ❀ तब प्रतिपालन तुमहीं कीना ॥
मोसम पापी मुग्ध न आना ❀ भीषम मैं मारे अज्ञाना ॥
सत्य बचन हमको गुरू जाना ❀ मैं कर पाप असत्य बखाना ॥
जेट बंधु कर्णहि रण मारा ❀ अस्त्रहीन पारथ सँहारा ॥
मासम पापी जगत न कोई ❀ भये नहीं नहिं होवे कोई ॥
पांच पुत्र द्रुपदी के गयऊ ❀ औ अभिमनु रणमें बध भयऊ ॥
कौन सुक्ख है राज हमारा ❀ अल्प काल पातक को टारा ॥
जाऊं बनहि तजौं मैं राजा ❀ वनोबास कुमती के काजा ॥
शोक अनलते दहै शरीरा ❀ महाशोक से कह नृप वीरा ॥

दो०-शोक विकल है राजा, जक्त बन्धु दुख ताप ।
कर्म लिखा नहिं जानहिं, सहब कहा संताप ॥
कहहीं बात व्यास समुझाई ❀ समाधान व्है सुनु अब राई ॥
बाल युवा वृद्धहुं किन होई ❀ अंतकाल मरते सब कोई ॥
दुख सुख है यक सम सँसारा ❀ काल सर्व सँहारन हारा ॥
रोगी मरै वैद्य मरिजाई ❀ स्त्री पुरूष मरें सब राई ॥
राजा प्रजा गुणी सब मरैं ❀ देवरू दैत्य जन्म सब धरैं ॥
मरिहैं गँधरव यक्ष अपारा ❀ चन्द्र सूर्य्य मरिहैं अवतारा ॥
सिधि संन्यासी मरिहैं झारी ❀ मरिहैं राजा रंक भिखारी ॥
जहँवाँ जन्म मृत्यु है तहँवाँ ❀ दुख सुख सब एक सँग लहँवाँ ॥
यहै बात जब भीषम सुना ❀ सुनतहि हृदय माहिं तब गुना ॥
दो० शरशय्या महँ भीषम कह, सुनो धर्म नरनाह ।
जहँ सँयोग वियोग तहँ यही भेद जो आह ॥
पानी बिंब देख सँसारा ❀ नाश होत नहिं लागै बारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

होतब्यता जो कर करतारा ❀ कहा तुम्हार रहब संसारा ॥
जन्मे बीर रूप जग जाना ❀ होती मीच पतंग समाना ॥
रत्री दिन षडऋतु परमाना ❀ रचना रचते विविध विताना ॥
पुनि २ आय करै पैसारा ❀ आवत जात न लागहि बारा ॥
कहैं व्यास सुनहु नृप सोई ❀ आशा छोड़ि सकत नहिं कोई॥
औंषध बिद्या मंत्र अपारा ❀ अस्त्र सेज औ बलि बिस्तारा॥
घना कुटुम्ब बहुत बिस्तारा ❀ अंत काल को राखै पारा ॥
काहू केर पुत्र पितु नाहीं ❀ भार्या भगिनी मातु न आहीं ॥
जैसे पथिक चले मग माहीं ❀ तैसे जक्त माहँ सब आहीं ॥
एकहि संग रहै परिवारा ❀ अंत काल :को देखन हारा ॥

दो०-कौन पंथ कै गवन है, पाव न कोई चाह ॥
मोर मोर जो भाषता, सो माया हरि आह ॥

पुनि पुनि जन्म होत सँसारा ❀ धरी रहट जानौ सँसारा ॥
कर्मरु छल जैसे जो करई ❀ सो प्रकार जग भुगते फिरई
मायाजाल कपट मन बंदा ❀ सब घट पूरण बाल गोविन्दा ॥
यहिसे तरे नाम इक धाई ❀ यज्ञ ध्यान सनसा फल पाई ॥
विनाभक्ति विष्णुहु को देखा ❀ कोटि यज्ञ औ धर्म अलेखा ॥
पूर्बज पाप सो फल दरशावै ❀ धर्म पंथ से सो सुख पावै ॥
गंगा सुत तब कहत बखानी ❀ श्रुति इतिहास पुराण बखानी ॥
अत्री कहेऊ जनक के पाहां ❀ जनक यज्ञ शाला के माहां ॥

दो०-स्वर्ग मृत्यु पाताल सब, सृजी प्रजापति ताहि ।
देव दैत्य नर नाग है, जन्मत बाढ़त ताहि ॥

मृत्यु नहीं जानै सब कोई ❀ पृथ्वी भारन ब्याकुल होई ॥
राय कहा परजापति ताहां ❀ पिंग भये भारत रण माहां ॥
दिन दिन सब बाढी परिजाना ❀ परजापति से प्रथम बखाना ॥
क्रोध रुद्र के नैन निहारा ❀ कन्या एक भई अबतारा ॥
ब्रह्म पांह कहे सब बाता ❀ आज्ञा कहौ कवन सख्याता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सबै जक्त अब करौं संहारा ❀ तबै प्रजापति कहा बिचारा ॥
भृत्यू नाम प्रजापति भाषा ❀ अंबु वृद्ध के को गुण राषा ॥
चौंसठ रोग तुम्हारे संगा ❀ तव परिवार करौं गुण भंगा ॥
सूर्य बदन यम को परिमाना ❀ परम अधर्म बिचारहु नाना ॥

दो॰- चित्रगुप्त संग यम रहै, भृत्यु लोक सँचार ।
सुन्दर गृह स्थीरमय, करत जगत सँहार ॥

दण्ड अस्त्र तब ताको दीन्हा ❀ यही प्रकार प्रजापति कीन्हा ॥
शिव विद्याधर हैं परमाना ❀ गंधर्व किन्नर सुर तब जाना ॥
मृत्यु पाय चल उत्तर द्वारा ❀ उपमा कौन कहै को पारा ॥
उत्तम द्वार मार्ग उजियारा ❀ सो सूरज नहिं तहां पसारा ॥
योगी सिद्ध संन्यासी जेते ❀ पश्चिम द्वार जात हैं तेते ॥
पूर्व द्वार उत्तम अस्थाना ❀ तहां जांय सो सुनौ बखाना ॥
कन्या शृंगी अन्न को दाना ❀ पूर्व माहिं सो पाबहिं जाना ॥
सत्यवंत दाया परमाना ❀ अतिथिसेव परहित सम जाना॥
देवस्थल पुष्कर जो निकरैं ❀ पूर्व द्वार से सब संचरैं ॥
तीन द्वार के भेद बखाना ❀ जौनकर्मकरि जेहिदिशि जाना॥

दो॰ उत्तम कथा प्रकाश किय, सुना धर्म नर राव ।
जौन कर्म करता जबन तहां तौन सो पाव ॥

अब सुन दक्षिण मार्ग भुवारा ❀ तहं पर हैं चौरासी धारा ॥
रात्रि दिवस है तहं अँधियारा ❀ सात लाख औ तीन हजारा ॥
हैं यमदूत तहां निह धीरा ❀ देखत सबै कुरूप शरीरा ॥
लोहदंड सब के कर माहीं ❀ बहै द्वार यम रूप कुआहीं ॥
पापी जीव तहां दुख पावै ❀ राजा हम से कहत न आवै ॥
बहै नदी बैतरणी ताहां ❀ रक्त मांस औ जल औगाहा ॥
नाना कृमी विकट शरीरा ❀ जल सरिता सोहै गँभीरा ॥
तहं जो जात सुनो सो काना ❀ भीषम भाषैं शास्त्र प्रमाना ॥
परदारा परद्रव्य चोरावै ❀ मिथ्या सदा पाप लेहि भावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

श्रीब्राह्मण गोहत्या करहीं ❀ मात पिता गुरु चित्त न धरहीं ॥
दो० नगर पाप कर मज्जता, हस देवै संसार ।
गुरुजन की हिंसा करै, तहाँ करत पैसार ॥
इनको तौ यमदूत लै जाई ❀ जहाँ रहत निशिदिन यमराई ॥
चित्रगुप्त तहँ करत विचारा ❀ जाको यश गावै सँसारा ॥
पावन शमन नदी गँभीरा ❀ ताते दाहत विवश शरीरा ॥
लोहदंड मारैं यम ताही ❀ ऐसे कष्ट देत बहु आही ॥
ऐस प्रजापति सिरजैं ताही ❀ कर्म फलहिं सब भुगतैं ताही ॥
सब विष्णुः माया जो अहै ❀ नाना रूप भीष्म तौ कहै ॥
जन्मत सँग मृत्यु अवतारा ❀ यहि से सोच न करहु भुवारा ॥
कर्म के वश नर पाव कलेशा ❀ छुटै न कोटि कल्प परवेशा ॥
श्रीकृष्ण पद चिंतन करै ❀ कर्म वन्ध से सो उद्धरै ॥
दो० याहि बिचारो भूप ते, तजो शोक संताप ।
श्रीपति सबके कर्ता, नाना पुण्यरु पाप ॥
ताते सब कर्ता हरि, करन करावत सोय ।
इन्हीं चरण लव लावहीं, इनसे और न कोय ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
भीष्मईशनधर्मराजपावनंनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

पुनि भीषम भाष्यो सुनु राजा ❀ तजो शोक सत करहू काजा ॥
सो जस राजा कथा संचारा ❀ भारत नाम राजा संसारा ॥
हरि बिन और एक नहिं जाना ❀ महाराज भक्ती भगवाना ॥
राज्य कियो बहु दिन विस्तारा ❀ थंभु राज्य दे बन पगु धारा ॥
कियो प्रवेश महाबन राजा ❀ निरत भक्तिपथ हरिके काजा ॥
एक दिवस मज्जन के काजा ❀ सरवर मांह गये तब राजा ॥
गर्भवती हरिणी यक आई ❀ नीर पिये को जल में जाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पूरण गर्भ मृगी सो आहै ❀ माया विष्णु सुनौ जो चाहै ॥
पीकर नीर चली शिर नाई ❀ प्रसव समय तो आय तुलाई ॥
उदर पीर जो भई अपारा ❀ प्रसव भई सो सुनौ मुवारा ॥
बालक एक नदी के तीरा ❀ राव चरित्र देख रण धीरा ॥

दो०-बिधि कै रचना ऐसि है, मृगी तजा तहं प्रान ।
देख भरत राजा तहां, सर में करत स्नान ॥

देख नृपति शिशु परा अनाथा ❀ तबहि ताहि पाले नर नाथा ॥
तृण अरु नीर देत आहारा ❀ बहुत प्रीति कै पाल भुवारा ॥
समय विचारि मृगा बन आये ❀ सुत समान तौ पालहि राये ॥
कितने दिवस बीत तब गयऊ ❀ यकदिन मृगा भागबन लयऊ॥
पाये संग जो मृग के तहां ❀ परम सुख रहे संग में जहां ॥
राजा हृदय महा दुख आना ❀ दृढ़त नहिं पायो पछताना ॥
कौन ले गयो मोर कुरंगा ❀ ताके हेतु सदा मन भंगा ॥
कितने दिवस शोक महं गयऊ ❀ अंतकाल राजाको भयऊ ॥
तब यमदूत गये लै ताही ❀ हिरणा शोक हेतु मनमाहीं ॥

दो०-कै बिचार तब धर्म नृ, दीन मगा अवतार ।
मृग स्वरूप में जो रहे, कौंडलपुरी मझार ॥

सहस लाख मुनि नेरे जाना ❀ कारण कहा ऐस भगवाना ॥
तुम चेतौ माया अवतारा ❀ मृगा रूप यह हेतु तुम्हारा ॥
पूरब बात भयो तब ज्ञाना ❀ जलतृणतजे किया नहिपाना ॥
ऐसा शोज मृगा तज प्राना ❀ पायो तब दर्शन भगवाना ॥
आगे जन्म भये अवतारा ❀ तव सो रोजहि भयो उधारा ॥
सगरे शोक काल के फांसा ❀ ताते भूप करै बरि आसा ॥
हरता करता तारत हरि हैं ❀ तोनो लोक बखानत हरि हैं ॥
चारौं वेद प्रजा पति धारा ❀ ध्यान धरे हरि पाव न पारा ॥
शेष सहसमुख गुण जो गावैं ❀ नारद कपिल सनातन ध्यावैं ॥
मुनी करैं तप जा पद आशा ❀ करैंअनन्त ब्रह्माण्ड प्रकाशा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० सोहरि बिना सु जगत महँ, दूसर नाहीं आन।
धर्म सत्य यह कहा हम, तौ अग्रित मरमान॥
सहस्र नाम ते धर्म न आना ❀ सहस्र नाम गांगेय बखाना॥
चारि वेद में सार जो आहै ❀ सहस्र नाम ते पाप न राहै॥
राम रमहि रामे रम रामा ❀ नाम सहस्र नाम सुखधामा॥
राम स्वरूप व्याघ्र भय नाहीं ❀ छूटे व्याध धर्म पद जाहीं॥
करि संक्षेप बखाने नाना ❀ सहस्र नामके महिमा आना॥
नाम अनन्त अन्तको जाना ❀ एक नामसे पद निर्वाना॥
पंचनाम से द्वादश नामा ❀ अष्टाविंश ज्ञान है नामा॥
सत्यनाम सहसन में जाना ❀ पुनि अनन्तको नाम बखाना॥
परमतत्त्व अह नाम जो एका ❀ सुमिरहि संतजो हृदय विवेका॥
परम धर्मको सार है सोई ❀ नाम सहस्र पढ़ै जो होई॥
दोहा० राम कृष्ण रघुपति हरी, राघव राधाकन्त।
विभु गोपाल शारँगधर, गिरिधारी भगवन्त॥
रावणारि कंसारि हरि, भक्त बंधु भगवान।
ध्यानकरो मन जानि धरि, मनसा वाचा जान॥
सर्व सार जे जगतपति, इतना नाम बखान।
नाम भजे पातक हरत, भय सुनो दै कान॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंह चौहान भाषाकृते
द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

राजा सुनौ कथा तौ ऐहै ❀ पुनि गंगासुत राजहि कैहै॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सोहाई ❀ चौथे द्र वर्ण सुन राई॥
गंगासुत तब कहैं बखानी ❀ इनके धर्मनीति सज्ञानी॥
प्रथमहि ब्रह्मकर्म सो जाना ❀ विद्या वेद सहस्र प्रमाना॥
त्रयसंध्या धारण नित ध्याना ❀ वेद प्रमाणहि जौन बखाना॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust. eGangotri. Funding by IKS.

योगन जापन औ अध्यापन ❀ ब्याापन औ धर्म परायन ॥
इत्यादि ब्रह्मवर्णके धर्मा ❀ गंगासुत भाष्यो यह मर्मा ॥
ब्रह्मकर्म सब ब्रह्म सुजाना ❀ ब्रह्मज्ञान ब्रह्मा परमना ॥
सुंदर जन्म जानु सँसारा ❀ संस्कार से द्विज सँचारा ॥
वेद अभ्याससे विप्र सुजाना ❀ ब्रह्म जन्म से ब्राह्मण जाना ॥
दोहा० संध्या तर्पण विबिध विधि, वेद पाठ परमान ।
परम कर्म यह विप्रका, भाषम कहा बखान ॥
क्षत्री गौ ब्राह्मण को पारै ❀ मंत्री प्रीति शत्रु सँहारे ॥
दुर्भिक्षन को अन्न करै दाना ❀ गाढ़े शरण जाय जो प्राना ॥
रणमे शुरधर्म मन माना ❀ यह क्षत्री कर धर्म बखाना ॥
वैश्य वणिज कृषिको संचारी ❀ द्विज वैष्णव पूजा अनुसारी ॥
सदां धर्म जो यहै बखाना ❀ चौगुण वर्ण धर्म जग जाना ॥
सुंदर धर्म सुनै सब काई ❀ तीन वर्णको सेवत सोई ॥
आलस तजै भजै भगवाना ❀ चौगुण वर्णरु धर्म बखाना ॥
आपन आपन राखहिं धर्मा ❀ चार वर्ण के याही कर्मा ॥
सृष्टि होय है केहिन सेवा ❀ त्याग सत्य सुनहु नृप भेवा ॥
के विचार पर गृह के माही । ❀ तबैं तासू गृह भोजन खाहीं ॥
राजधर्म जो सुन विस्तारा ❀ मिथ्यावाद दंड नहिं सारा ॥
धन्य प्रजा जो लोभ न करहीं ❀ दारुन धर्म यज्ञ मन धरहीं ॥
जीत बांहुबल यह सँसारा ❀ पालहि प्रजा पुत्र परकारा ॥
बचन प्रतेज्ञा यह प्रमाना ❀ भूप यही नितपाल सुजाना ॥
मंत्री दिश न धरै विश्वासा ❀ प्रीति प्रतिति बचन परकाशा ॥
गऊ ब्रह्म जो विष्णु स्वरूपा ❀ पूजा करब एक मति भूपा ॥
तीन दिना कै सुनब पुराना ❀ राजधर्म सब सुनहु प्रमाना ॥
दो० देव दोष मिथ्या नहीं, रहिहो रैन सचेत ।
राजनीति का धर्म अस, रिपुसे जीतब खेत ॥
रानी धर्म पती कर सेवा ❀ यह वृत्तांत सुनहु जो भेवा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सेवक धर्म पती सेवकाई ❀ बिन बोले सब कर अधिकाई ॥
ताते धर्मज सब सुख पावै ❀ गृह द्वारा विवाह करवावै ॥
दशहू अंग गुरूका देई ❀ सेवक धर्म कहै पुनि तेई ॥
ग्रहस्थको धर्म अभ्यागत पूजा ❀ अन्नदान से आन न दूजा ॥
वैष्णव धर्म यकांतकै पाऊं ❀ लीन ज्ञान परसंग उपाऊ ॥
लै संन्यास तपस्या करै ❀ भीषम राजा यह संचरै ॥
सर्वहि धर्मसार इतनाऊ ❀ अन्नदान औ सत्य स्वभाऊ ॥

दो० पराहिंसा परकर्म तज, दयावंत हित होय ।
क्षुधार्थी अन्नदान दे, यहिसे धर्म न कोय ॥

गुरु भक्ती पर नाहीं भक्ती ❀ भक्ती बिना जात तनु अगती ॥
विष्णु परे सुर औरं जु नाहीं ❀ गुरु विष्णु सम कहिये ताहीं ॥
गंगा परे नदी नहिं कोई ❀ एकादशि समव्रत नहिं कोई ॥
वेद नाम जो साम प्रमान ❀ इन्द्रियनाम न रूप अमाना ॥
यह सब नाना शास्त्रक धर्मा ❀ ताको कहिये उत्तम कर्मा ॥
क्षत्री होय सोच का करहू ❀ ज्ञान हमार हृदय में धरहू ॥
रणमें क्षात्रि उपस्थित होई ❀ बंधु पिता पुत्रहु नहिं कोई ॥
ताते शोच तजौ परमाना ❀ राजा सुनिये करौं बखाना ॥
साहस रण क्षत्री को कामा ❀ भजौ चरण तुम श्री घनश्यामा ॥
हरिके चरण सदा मन लावो ❀ भवसागर तर निश्चय जावो ॥

दो० पितावंधु सुत क्षत्रिको, रण में कौन बिचार ।
आपन धर्म जु आप सँग, भीषम कर उपचार ॥
धर्म एक सँग होत निज, और सँग नहिं कोय ।
यहिते वह मन राखिये, धर्म न छोड़ो सोय ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वैशम्पायन कहैं बिचारा ❀ भीषम भाषे धर्म भुवारा ॥
ब्रतन शिरोमणि एकादशी ❀ तुलसी पुष्प तीर्थ बाराणशी ॥
ताको राजा सुनु विस्तारा ❀ दुर्लभ जन्म जो कह सँसारा ॥
एकादशिकी महिमा याहै ❀ भीषम धर्मराज सों काहै ॥
दैत्य सुरासुर अतिबल भारी ❀ ताते हरि माया संचारी ॥
युद्ध माहिं जीती नाहिं पारा ❀ मुरा असुर दानव सँहारा ॥
हरि को नाम मुरारी तबसे ❀ हरि वासर जु जन्म है तबसे ॥

दो० अनगिन माया विष्णुकी, योगमाया सँचार ।
एकादशि ब्रत महिमा, सो तौ सुनौ भुवार ॥

अवधपुरी इक मंगल राजा ❀ विष्णु स्वरूप करै सो साजा ॥
संझावती तासुकी रानी ❀ धर्म पुत्र गत शूर सुज्ञ नी ॥
एकादशि ब्रत सो संचारा ❀ ताको राजा सुनौ विचारा ॥
नृपके पुष्प वाटिका आहीं ❀ तोरे पुष्प उर्वशी जाही ॥
माला कार पतीका दहै ❀ धर्म प्रमाण सभा तौ गहै ॥
राजापहँ तौ बात बनाये ❀ तब राजा देखन को आयें ॥
तब उर्वाशी सब अर्थ सुनाये ❀ हमैं सुरपती यहाँ पठाये ॥
पुष्प हेतु आये तौ कामा ❀ पतिब्रत रत धर्महि के कामा ॥
एकादशिको पुण्य जो चाहिये ❀ तबहि विमान अमरपुर जइये ॥
राजा पूँछे सब व्यवहारा ❀ कहो भेद नाहीं सँसारा ॥

दो० दशमी एकहि बेर नृप, नियम करै आहार ।
एकादशी उपवास व्रत, शुचि तनु रूप सँवार ॥

एकादशि ब्रत रहै उपासा ❀ प्रात द्वादशी होत प्रकाशा ॥
करि स्नान अन्न दै दाना ❀ एकोतर सै नाम बखान ॥
याहि के माँह छूट जो होई ❀ एकादशि बिसरावा सोई ॥
बिना पीत उछरंग न करहीं ❀ ताको पुण्य सर्वको धरहीं ॥
ताको पुण्य सो पावहि तबहीं ❀ जाय विमान स्वर्ग को जबहीं ॥
तौ राजा को जग मों नाहीं ❀ याहि प्रकार को जानत आहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

खोजत एक पुरुष अस कहई ❀ रजक एक नगरी में अहई ॥
तासु नारि सो रही कोहाई ❀ एकादशि को अन्न न खाई ॥
क्रोध विवस सो रही उपासा ❀ व्रत पूरण द्वादशी प्रकाशा ॥
तिन चरणन से छुये विमाना ❀ तबहि विमानजु स्वर्ग उड़ाना॥

दो०-यह गति देखत भूपमणि, एकादशी परमान ।
पुत्र समान प्रजापती, पालत रूप सज्ञान ॥

दुखी दरिद्र कोई पुर नहीं ❀ धर्म बृद्ध सो राजा माही ॥
एकादशी बिन और न जाना ❀ और देव नहिं पूजत आना ॥
दशमी घर घर डोंडि बजाई ❀ कहै दूत सब कहं हंकराई ॥
दशमी संयम कै उपहारा ❀ हरि वासर त्यागो संचारा ॥
एकादशी जागरण करहीं ❀ प्रात स्नात द्वादशी धरहीं ॥
करै अनेक अन्न जो दाना ❀ पुर में गृहपति करै बखाना ॥
ऐसी बात नगर संचारा ❀ गज वाजी नहिं पाव अहारा॥
वृद्ध युवा पशु नर अरु नारी ❀ बालक दूध न दे महतारी ॥
चारौं वर्ण प्रजा जे रहहीं ❀ पशु अरु जीव जंतुजो अहही॥
पापको नगर नहीं लवलेशा ❀ ऐसो व्रत सब नगर प्रवेशा ॥

दो०-पशु श्वानादि गजादि तक, और जीव चंडार ।
मृत्यु समय प्राणी सबै, नहिं यमलोक संचार ॥

एक बार कौतुक अस भयऊ ❀ यक चंडाल मृत्यु सो भयऊ ॥
पापी महा रहा अपराधी ❀ यम के दूत चले लै बांधी ॥
विष्णुदूत तावण तहं धाये ❀ यम दूतन को दूर कराये ॥
बहु प्रकार से गये जु ताही ❀ जीवहि विष्णुदूत लै जाही ॥
यम के दूत भाग सब राई ❀ यम राजा सन खबरि जनाई ॥
विष्णुदूत मारे प्रभु काजा ❀ लै चंडाल गये सुन राजा ॥
बंध छोरि कै हमको मारे ❀ जीवहि लै बैकुंठ सिधारे ॥
रथ चढ़ाय लैगे पुनि सोई ❀ यम से दूत कहैं अस राई ॥
भागे हम लै आपन प्राना ❀ धर्मराज तुम सुनो बखाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धर्म राज दूतन दुख देखी ❀ अपने मन में विस्मय लेखी ॥
दो०-दूतहिं संग लै भूगमणि, ब्रह्मलोक पग धार।
ब्रह्मा पास तौ जाय तब, कहा बचन सचार ॥
मोर काज यह पद से नाही ❀ जेहि मन मानै दीजै ताही ॥
कारण तासु सुनौ परमाना ❀ अवध नगर चंडाल महाना ॥
ताको लेन दूत सब गयऊ ❀ हरि के दूत महा दुख दयऊ॥
तब ब्रह्मा लागे अनुसारन ❀ सुनौं धर्म कहिहौं सब कारन॥
एकदशी बिदित संसारा ❀ महा पातकी पावत पारा ॥
एकदशी क्षुधा जो सहई ❀ तेहि के अनल पाप सब दहई ॥
तोर दूत तहं जाय न पारा ❀ एकादशी विष्णु अधिकारा ॥
सुना बात ब्रह्मा कै जाना ❀ धर्मराज को आप बखाना ॥
मोरा यह पद नाही काजा ❀ कहै बात ऐसे यमराजा ॥
दो०-तब ब्रह्मा कह बात यह, सुनौ धर्म के रास।
करत पक्ष तव कारणे, रचिये एक उपास ॥
नारद कहा नारि औ नारा ❀ ताते मोहित भये भुवारा ॥
नयनन मो ब्रह्मा को जाना ❀ सर्व देवको अंश प्रमाना ॥
सिर्जा नाना रूप अपारा ❀ लै ब्रह्मा तामें जिब डारा ॥
सब पर एक किये परधाना ❀ मोहनी रती रूप परमाना ॥
मेरी बात अवध पुर जाई ❀ रूप भगत को धर्म नशाई ॥
लेकर पान सुकन्या जाई ❀ नगर निकट ठहरी बन आई ॥
राजा तहां अहेरहिं गयऊ ❀ तहां भेंट कन्या से भयऊ ॥
काम बिबश मोहित नृप कहई ❀ कह कत मातपिता कोअहई॥
तब कन्या कह बात विचारी यहि बन में है बास हमारी ॥
दो०-सुर कन्या देवानुग्रह, भयो मोर अवतार ।
व्यास नहीं भा भूगमणि, रहत बनै मझधार ॥
राजा काम मोह कै कहई ❀ अस स्वरूप जो बनमे रहई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ब्याह न करत सो कौने काजा ❀ कन्या कहत सुनौ हो राजा ॥
मन वाँछित बर जो मैं पाई ❀ सोई कंत सत्य समुझाई ॥
राजा कहै चहौ का सोई ❀ पचै देव जो मन में होई ॥
अवध नगर जो भूप अनूपा ❀ मैं राजा रुप माँगत भूपा ॥
अपने बल जीते सँसारा ❀ दैत्य अनेक दुष्ट सँहारा ॥
सूरज वंश कहत मैं तोहीं ❀ आवै मन तौ वरिये मोहीं ॥
कन्या कहा तेज मन जेते ❀ महाबली मैं चाहौं तेते ॥
सत्य प्रण जो राजा कहिये ❀ तब हम राजा तुमको बरिये ॥
सत्य हमार सँग नरपती ❀ तौ हम मानी ताकहँ पती ॥

दो० जब जो चाहैं हम नृपति, तब सो दीजै मोहिं ।
यही शपथ करु राजा, तब हम वरिहैं तोहिं ॥

राजा सत्य कियो परमाना ❀ कन्या तबहीं कीन्हे पयाना ॥
केतिक दिवस रहे तब राऊ ❀ मोहित भये मोहनी भाऊ ॥
दशमी राजा संयम कियऊ ❀ एकादशी व्रत तब ते भयऊ ॥
संयम हेतु भये नृप ठाढ़े ❀ तबहिं मोहनी बोलत गाढ़े ॥
खावहु पान भूपमणि राऊ ❀ तब राजा ताकहँ समझाऊ ॥
एकादशि का संयम आहै ❀ मोरे हेतु नगर सब राहै ॥
तब मोहनी कहत रिसियाई ❀ यह तौ कंत मोहिं नहिं भाई ॥
राजा भय पुरवासिन सुना ❀ सुनत बात सबहीं मन गुना ॥
दानरु यज्ञ होम कै कर्मा ❀ जानौ यज्ञराज को कर्मा ॥
संन्यासी वैरागहु जेते ❀ व्रत उपवास कर्म हैं तेते ॥

दो० पान खाइये भूपमणि, तजहू व्रत कर बान ।
परबश ते यह खाइये, दीजै हम को दान ॥

राजा तब मोहिनी से सुना ❀ सुनत बात सबही मन गुना ॥
ऐसी बात बहुरि जनि कहौ ❀ जो हमार जिव राखा चहौ ॥
तुमहूँ व्रत करिये मन लाई ❀ लहु अभयपद हरिपुर जाई ॥
सुनत मोहिनी क्रोधित भयऊ ❀ जानो भूप सत्य अब गहऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri. Funding by IKS.

पूर्व कहे जो चाह तुम्हारा ❀ देवआनि अब कहौ मुआरा ॥
एकादशी तजौ तुम राजा ❀ जो चाहत हौ सत्य सुराजा ॥
नहिं तो देवपुत्र कर माथा ❀ नहिं तो व्रत तजहू नरगाथा ॥
राजा सुनिकै चकृत भयऊ ❀ बिनती बचन कहे तब लयऊ ॥
मानत नहीं मोहनी बाता ❀ राजहि शोक भयो तब गाता ॥
निज रानी से जाय जनाई ❀ धर्मागत पुत्रहु सुनि पाई ॥

दो० पुत्र कहा सो बचन तब, सुनौ सत्य तुम तात ।
अंतकाल पै देखहु, यही सत्य संघात ॥

धर्मागत जु बचन तब भाखो ❀ मम मस्तक दैकै व्रत राखो ॥
बहुत प्रकार पुत्र समुझावा ❀ रानी राजा के मन भावा ॥
एकादशि व्रत करि स्नाना ❀ पिता पुत्र दीन्हों बहु दाना ॥
पुत्र पद्म आसन करि वैसे ❀ धरे ध्यान योगी जन जैसे ॥
तहाँ मोहनी कहै बखानी ❀ संझावती केश धरि ताना ॥
देव सबै तहँ देखन आये ❀ तब राजा कर खड्ग उठाये ॥
आसन डोले शंकर जाना ❀ द्विज स्वरूप करिगे भगवाना ॥
दिव्य एक रथ आयो ताहाँ ❀ दर्शन प्रकट दियौ नर बाहा ॥
नगरहु सहित परम पद पायै ❀ अंतरिक्ष राजा मन भाये ॥
तब मोहनि को श्रीभगवाना ❀ शौप्यो नरक ग्राम परमाना ॥

दो० मम भक्तन पर संकट, कीन तहाँ चंडार ।
ताते अगत तुम्हारी, नहीं तोर उद्धार ॥

तब मोहनी बहुत दुख पाई ❀ तब राजा पहँ बिनती लाई ॥
क्षमहु मोर दोष नरनाहा ❀ मम उद्धार करौ जगमाहा ॥
तब नृप हरि से बिनती लाई ❀ देव दयापति श्रीयदुराई ॥
शाप अनुग्रह करु नरनाथा ❀ रहिहै तौ यह मोरे साथा ॥
तब प्रसन्न भाष्यो भगवाना ❀ जपहू मंत्र होवै परित्राना ॥
द्वादशि में जो पारण करहीं ❀ और शयन जो नींद संचरही ॥
ताके व्रतहि धर्म बहु होई ❀ तुमको व्रत हवै है पुनि सोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तबहिं मुक्ति होय तेरी नारी ❀ जग बैंकुंठपुरी अधिकारी ॥
यह बरदान जो मोहनि पाई ❀ पुरी सहित नृप नगर सिधाई ॥
भीषम भाषे पद्म पुराना ❀ धर्मराज सुनतहि सुख माना ॥

दो०-एकादशि का महातम, भाषे सब गांगेय ।
वैशम्पायन कहत मैं, जन्मेजय सुनु भेव ॥
हरिबासर उत्तम जु व्रत, सर्ब पाप क्षय होय ।
नाम सदा जो गावहीं, तेहि समान ना कोय ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकादशीकथावर्णनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जन्मेजय सुनिये धर काना ❀ धर्मराज से भीष्म बखाना ॥
बनस्पती में तुलसी बखानी ❀ ताकी महिमा कहँ को जानी ॥
तुलसी रोपहि पूजहि ताही ❀ प्रात दर्श से पाप नशाहीं ॥
तुलसी रानि विष्णु है राऊ ❀ करत ध्यान हरिलोक सो पाऊ॥
एक पत्र राधे यदुराई ❀ जन्म जन्म के पाप नसाई ॥
करै प्रदक्षिण बारम्बारा ❀ कबहूं यमपुर नहि पैसारा ॥
शीश नवाय पत्र शिर धरही ❀ तनु के सब पातकसो हरहीं ॥
संध्या दीप नित्य जो दीन्हा ❀ अंध मार्ग उजियारा कीन्हा ॥
तुलसी दल पूजै भगवाना ❀ शालिग्राम शिला परमाना ॥
सदा वास बैकुंठहि पावै ❀ तुलसी महिमा कहत न आवै॥

दो०-सुमिरन तुलसी मंत्रको, लह बैकुंठ स्थान ।
धर्मराज के आग्रह, भीषम कहैं बखान ॥

शालिग्राम रूप हरि जोई ❀ तुलसी दल संतुष्टहि होई ॥
पूर्व दैत्य यक जालंधर नामा ❀ तासु त्रिया बृन्दा गुणधामा ॥
देवन संग महारण होई ❀ दैत्यहि जीति सकै नहि कोई ॥
बृन्दा पतिव्रता अवतारा ❀ आप शरीर दैत्य कर धारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब हरि माया करि विस्तारा ❀ तासु धर्म नहि दैत्य संहारा ॥
बृन्दा पहँ यह मांग्यो हरी ❀ कै छल जाय नारि सो करी ॥
रतिं दादहिं जब बृन्दा दयऊ ❀ तब रणमध्य दैत्य बध भयऊ ॥
तव बृन्दा जाना सब भेऊ ❀ पाहन श्राप हरीको दयऊ ॥
दैत्यहि गति कारण सुब नारी ❀ तब हरि पाहीं कहेब बिचारा ॥
हरि ने कही कोटि अबतारा ❀ पाहन खंडव देह हमारी ॥

दो०-पत्र तोर मम पूजा, तैं तरिहैं सँसार ।
शालिग्राम होब हम, तुम तुलसी अवतार ॥

सो तुलसीकी महिमा छिनछिन ❀ शंकर शेष बखानत निशिदिन॥
तुलसी माला जप जो करहीं ❀ ताहि फूल संचित जो धरही ॥
शालिग्राम शिला को जोई ❀ तुलसी दलसे पूजत कोई ॥
उत्तम पूजा कोई करावै ❀ अंत बास बैकुंठहि पावै ॥
तुलसी मज्जन हरि के पासा ❀ भीषम कहै बात परनाशा ॥
तुलसी गृह मज्जन जो करहीं ❀ उत्तम मारग सो पगु धरहीं ॥
तुलसी माँह अर्घ्य जो देई ❀ अंतकाल सुख पावै सोई ॥
तुलसी बास मदद परकाशै ❀ तौने बास पापसौ नाशै ॥
तुलसी गेह द्विजन जो देई ❀ उज्ज्वल मार्ग प्राप्ति सी होई ॥
तुलसी मृत्यु समय जल पावै ❀ पापी है बैकुंठ सिधावै ॥

दो०-तुलसी महिमा भाष्यऊ धर्मराज सुनु कान ।
तुलसी भक्ती करत जो, ताहि प्रीति भगवान ॥

आगे सुनौ धर्म के राऊ ❀ तीरथ वाह बनारस भाऊ ॥
जात पत्र दै पूज महेशा ❀ यम के नगर न करु परवेशा ॥
श्रीफल केर पत्र महँ सोई ❀ शिवा शंभु संतुष्टित होई ॥
शिव के लोक बास सो पावै ❀ काशी मध्य जु प्राण गँवावै ॥
जो काशी में करवट लेई ❀ मन वांछित फल पावै सोई ॥
जो काशी में करिहैं बासा ❀ यम के दूत न आवहि पासा ॥
जो काशी में नर कहुं मरई ❀ तौ कैलास गमन सों करई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जो काशी में धरहीं ध्यान ❀ हो शिवलिंग रूप परमाना ॥
जो काशी में गोधन दाना ❀ ताको फल अनन्त नहिंजाना ॥
जो काशी तीरथ नृप कहई ❀ हर त्रिशूल पै काशी अहई ॥
दो० जो काशी महँ वास कर, सहित महातम राव ॥
शिवस्वरूप तेहि अंत है, यम के नगर न जाव ॥
तरै पतित वहा गंगा पावनि ❀ देवमुनिन के शोक नशावनि ॥
कोटिन लिंग करै परकाशा ❀ सदा रहत वासहि कैलाशा ॥
महिमा ताहि कहत न आवै ❀ तीर्थ बनारस ब्रह्म बतावै ॥
यम के द्वारन परी पुकारा ❀ काशीवाश वर्ण अधिकारा ॥
हरपूजा काशी की माहिमा ❀ बहुत प्रकार बखानी ब्रह्मा ॥
धन्य धन्य लक्ष्मी जनावै ❀ संतत वृद्धि शत्रुक्षय जावै ॥
रणमें जोतिक होत प्रकाशा ❀ तनुसे व्याधि होतहै नाशा ॥
शम्भुस्वरूप लिंग परकाशा ❀ अंतकाल तेहि शिवपुर वासा ॥
हरको वास जो काशी अहई ❀ भै कैलास मृत्युपुर रहई ॥
दो० काशी केर महात्म्य यह, तुमसे कहा बुझाय ।
चेत धर्मराज धर्म नृप, सेय चरण यदुराय ॥
औरौ धर्म सुनौ नरनाहा ❀ कार्तिकमास न्यायजो जाहां ॥
औ वैशाख स्नान प्रमाणा ❀ ताकी संख्या सुनिये काना ॥
आठमास कार्तिक अस्नाना ❀ दसवैशाख स्नान प्रमाणा ॥
मासमास यहिविधि जोकरही ❀ गो सेवा औ दान सँचरही ॥
पंचरतन पट पिंड दाना ❀ करै होम जो शास्त्र विधाना ॥
प्रति व्रत मांस यही परकारा ❀ ताके फल जो सुनहु भुवारा ॥
नृप होवे सुधर्म परमाना ❀ पावै सुख जन्महि भरि नाना ॥
नृपधर्महि तहि पाप उपावै ❀ नरकवास ता कारण पावै ॥
दो० कार्तिक अरु वैशाख जो, ताको सुनो बखान ॥
भीषम भाषे नृपति से, पद्म पुराण प्रमाण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

औरो धर्म सुनो दै काना ❀ कन्या अरु कन्याको दाना ॥
ताके फल कत कहौं बुझाई ❀ विष्णुलोक संतत सुखदाइ ॥
कन्याकी ले धन्य जो कोई ❀ महापातकी जगमें हाई ॥
ताकी गती कल्पभरि नाहीं ❀ धर्म कथा सुनहू मन पाहीं ॥
गऊ दूध व्रत मधुको दाना ❀ जाय स्वर्गसा दिव्य बिमाना ॥
दानधर्मको यह व्यवहारा ❀ धर्म व्रत अब सुनौ सुआरा ॥
शक्ती रची अष्ट उपबासा ❀ ताके फलहि पाव कैलासा ॥
धर्म व्रत जो यह परमाना ❀ ताके फल को करो विधाना ॥

दो० नाना धर्म जु शास्त्रमत, भीषम कहा बखाना ।
धर्मराज सुनतै तबै, तातै पाप नशान ॥
सब पुराण परसंग तौ, भाषे तहँ गांगय ।
जो यह मत प्राणी चलै, तौ फिर जन्म न लेय ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सषलसिंहचौहानभाषाकृते
पंचमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

औरो भीषम कहा बखानी ❀ गंगा को महात्म्य सुजानी ॥
कंडु नाम मुनि एकहि रहई ❀ ताकी कथा भीष्मजी कहई ॥
सो गृहतज द्विज पहँ मन भयऊ ❀ पृथ्वी की प्रदक्षिणा दयऊ ॥
नाना तीरथ भर्मत अँहई ❀ केवल प्रीति विष्णु के दहई ॥
धर्म रूप विष्णु के भक्ती ❀ चाहै संत होन नहिं अगती ॥

दो० जेतिक तीरथ भूमि में, बन सर नदी पहार ।
भर्मत भर्मत जनत में, कीरति सब संसार ॥

चंदरभाग नदी पर गयऊ ❀ चँद्रकेतु राजा तहँ रहेऊ ॥
मंडप एक अहै अनुमाना ❀ पंच वर्ष तहँ कर विश्रामा ॥
विकट रूप देखा द्विज जाई ❀ महा शोक सो ब्राह्मण पाई ॥
पाँचा कहैं क्रोध से बाता ❀ कहो नाम सोई सख्याता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

द्विजने कहा कंदु मम नामा ❀ कौन जाति है कितको धामा ॥
सुनत बचन तव पांचौ कहई ❀ पांचौ जना प्रेत हम अहई ॥
सूचीमुख शृंगीकर अहई ❀ जो यहि के वर येशित कहई ॥
दोहा० यह चारो जन प्रेत हरि, पंचक लेखक नाम ।
जौन पापहिं प्रेत भे, ताका सुनौ बखान ॥
बर जोशात प्रेत परधाना ❀ प्रथम कहिये आप बखाना ॥
सत्य वातको झूँठ कहाये ❀ ताते महाकष्ट द्विज पाये ॥
तौंनहि पाप प्रेत अवतारा ❀ पर योषित है नाम हमारा ॥
सुखी मुखी तौ वर्त वखाना ❀ मेरी बात सुनौ यह काना ॥
ब्राह्मण इक मेरे गृह आवा ❀ कर अपमान गर्व उपजावा ॥
वहाँ जाव जहँ यज्ञ सु होई ❀ ऐसा झूँठ कहा ममसोई ॥
आशा दैके विप्र बोलावा ❀ प्रेत जन्म ताही से पावा ॥
सूचीमुख ताते भो नामा ❀ अब शृंगीकर करै बखाना ॥
अतिथि जु माँगा मोपहँ दाना ❀ क्षुधावंत हम कीन्हबखाना ॥
रहत अन्न मैं नाही दीना ❀ प्रेतजन्म ताही से लीना ॥
दो० ठाढो भिक्षुक रहो तहँ, उत्तर तुरत न दीन ।
क्षुधावंत भो बिप्रवर, प्रेत तबहि कहि लीन ॥
लेखक कहता बात बिचारी ❀ ब्राह्मण सुनु अपराध हमारी ॥
लेखक कह माया भर्माऊ ❀ क्षुधावंत तौ इक द्विजआऊ ॥
ठाढ़ विप्र आशा तब कीन्हा ❀ ताको मैं कुछ उत्तर न दीन्हा ॥
प्रहर एक ठाढ़ा ह्वै रहेऊ ❀ भा निराश भुख फिरिकै गयेऊ ॥
तौंने पाप प्रेत अवतारा ❀ ताते लेखक नाम हमारा ॥
वहिकै बात सुनौं परवेशा ❀ द्विजसे प्रेतक कहत नरेशा ॥
गुरु नारायण माना नाहीं ❀ विद्या पात्र गर्व मन माहीं ॥
गुरू विप्र माना नहिं राई ❀ प्रेत कि योनि ताहिसे पाई ॥
सुनि पाँचों जन केर उपाई ❀ विस्मय होय कहा द्विजराई ॥
काम भखनहौ जक्त तुम्हारा ❀ ताते देह धरेव संसारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० लज्जावंतहि पंचजन, कहे वचन विस्तार।
मल मूत्र उच्छिष्ट सब, यह सब करै अहार॥
अंधकार में रहन हमारा ❀ करौ गोसाँई मम उद्धारा॥
दयावन्त द्विज कहैं पुराना ❀ गंगा केर महातम ज्ञाना॥
श्रवण परत पातक क्षय होई ❀ सुनत बचन तरिगे सब कोई॥
गंगा पतितपावनी अहई ❀ मृत्युलोक को महिमा कहई॥
एक समय सब देव उपाई ❀ बैठे सभा अनूप बनाई॥
विष्णु कहा शंकर से बाता ❀ पंचबदन रागहिं सख्याता॥
शंकर कहेव देव सों बानी ❀ धरो धीर मैं कहत बखानी॥
पंचवदन जो राग गँभीरा ❀ सबैं देव धरि सके न धीरा॥
लिये कमंडलु सो जल परहीं ❀ रागनिमित्त तौ शंकर करहीं॥
दो० विष्णु शरीरहि सोय जलु, राख्यो ब्रह्मा जानि।
सुनो नृपति भीषम कहै, गंगा चरित बखानि॥
नव बलि छले त्रिपद हरि भयऊ ❀ एकजपद आकाशहि गयऊ॥
ध्यान तजो ब्रह्मा मन कीन्हा ❀ वहि जलसे चरणोदक लीन्हा॥
कन्या रुप भई अवतारा ❀ जल स्वरुप प्रकटी त्रयधारा॥
सो गंगा मृतलोकहि आई ❀ सोइ महातम सुन मनलाई॥
पतितपावनी गंगा अहई ❀ महापातकी पातक दहई॥
सूरजवंश सगर नृप भयऊ ❀ साठि सहस्र पुत्र निर्भयऊ॥
महावीर सेना बलवाना ❀ अश्वमेध यज्ञहि नृप ठाना॥
बहुत मुनी आये सब राऊ ❀ अश्वमेध यज्ञहि निर्माऊ॥
सो सब ब्रत करिकै उपकारा ❀ श्यामकर्ण पूजा संचारा॥
साठि सहस्र पुत्र दल संगा ❀ परदक्षिण करि छुटा तुरंगा॥
दो० नाना देश जु सब जिते, कहत होय विस्तार।
सुरपति मंत्र किये तब, यज्ञ खंड अनुसार॥
जाना इंद्र मोर पद लेई ❀ तासे मन शंका भे तेई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इंद्र आय तब माया धारी ❀ श्यामकर्ण को ले गये हारी ॥
पुरी पताल कपिल मुनि पाहीं ❀ बाँधे अश्व जान कोऊ नाहीं ॥
लगी समाधि मुनी नहिं जानी ❀ गये इंद्र निज स्वर्ग स्थानी ॥
तब पद चिन्ह तुरंगम जाई ❀ देखा अश्व मुनीके ठाँई ॥
तब सब खोदे पुहुमी माहा ❀ साठ सहस्र कुदारिन जाहा ॥
देखा सबहि चोर करि जाना ❀ मारा लात धरेव जो ध्याना ॥
अस्व चुराय दूरि बढ़ आये ❀ महा कठिनता से हम पाये ॥
अब मुनि बनो धूर्त अज्ञानी ❀ हमरी महिमा कुछ नहिं जानी॥

दो० छूटा ध्यान जु मुनीको क्रोधित नयन निहार ।
साठि सहस्र समेत तो, भयं पलक मो क्षार ॥

सगर भूप तब सुनि यह बाता ❀ साठि सहस्र जो पुत्रनिपाता ॥
पुत्र शोक राजा तब कियऊ ❀ महा खंखार यज्ञ नहिं भयऊ ॥
जेठ पुत्र असमंजस आया ❀ राजा ताको वेगि पठाया ॥
कपिल मुनिसे कहौ प्रणामा ❀ हे मुनि कौन कौन हो कामा ॥
तब असमंजस गये पताला ❀ जहँवाध्यानकपिलमुनिआवा ॥
जाय प्रणाम कीन तेहि क्षणमें ❀ कपिल मुनि हर्षे तब मनमें ॥
तब भाषा जो मुनी बिचारा ❀ बिना दोष मम लातहि मारा ॥
ताहि जरे सब राजकुमारा ❀ हम नहिं जानै अस्व तुम्हारा ॥
ले घोड़ा तुम जाहु कुमारा ❀ करौ जाय तुम यज्ञ संचारा ॥
करि प्रणाम अस्व तब लाये ❀ अवध नगर में तुरत सिधाये ॥

दो० करौ यज्ञ पूरण तबै, जेहि तासु विधान ।
सगरनृपति अतिहर्ष मन, दानद्विजनको दान ॥

यहि अपकार यज्ञ तब भयऊ ❀ कितने दिवस बीति कै गयऊ ॥
सगर नृपति परलोकहि गयऊ ❀ असमंजस राज्यहि मन दयऊ ॥
बन्धुवर्ग कस हो उद्धारा ❀ यह चिंता राजा अनुसारा ॥
तब वसिष्ठ से पूछा जाई ❀ तिन गंगाको नाम बताई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ब्रह्म कमंडलुमें सो अहई ❀ करिके ध्यान मुनी तब कहई ॥
करिकै तब जो आनै पारहु ❀ कुल समूह तुरतै उद्धारहु ॥
सुनिकै राय हेमंचल गयऊ ❀ तहाँ जाय तबहीं मन दयऊ ॥
देववाणि को भा सँचारा ❀ तुमसे नाहीं होव भुवारा ॥
तोर पुत्रकै सुत अवतारा ❀ पुत्र तोर तौ करे उधारा ॥
तब सुनि राजागृह फिरि गयऊ ❀ असमंजस ताको सुत भयऊ ॥

दो० असमंजस का अंतभा, अंशुमान भ राव।
कतिक दिन ये राज्यकरि, संतत नाहीं पाव ॥

सुनी बात यह जबहिं भुवारा ❀ मोरे सुतसे बंश उद्धारा ॥
मोरे पुत्र भया तौ नाहीं ❀ ताते राज्य छोड़िकै जाहीं ॥
राजा गये छोड़िकै राजा ❀ हेमांचल में तपके काजा ॥
कै तप भूष तजे तब पाना ❀ सोते धर्म रानि सब जाना ॥
पाट शिरोमणि हैं द्वै रानी ❀ तब बशिष्ठसे कहा बखानी ॥
बंश नास है गौ मुनिराऊ ❀ सुनि वशिष्ठ तब कहा उपाऊ ॥
सूर्य्यवंश हित चिंता करई ❀ तब बसिष्ठ ज्ञानहि हित घरई ॥
बाम वाम करु रति शृंगारा ❀ होई पुत्र करव उपआरा ॥
रानी गृह आई तब ताहाँ ❀ रति शृंगार कीन बिन नाहाँ ॥

दो० रहस गर्भ आशा भई, सुने जाय भव त्रास।
दशममासक अन्त मैं, पुत्र जन्म परकाश ॥

अस्थिन हीन मांसक देहा ❀ लेइ बशिष्ठ गर्भ करु येहा ॥
मुनि कह जहाँ सुमारग आहीं ❀ अष्टावक्र मुनि न्हानक जाहीं ॥
सो मारगमें राखु कुमारा ❀ हो अस्थि तौ सुनौ भुवारा ॥
बालक लैकै तहां रखाई ❀ दोनो रानी तब गृह जाई ॥
अष्टावक्र मुनी तहँ आये ❀ पथ में बालक देखन पाये ॥
जाना मुनी करै अपमाना ❀ विस्मय हर्ष वचन अनुमाना ॥
अस्थि रहत वाके जो देहा ❀ अधिक वंक हो कहा सनेहा ॥
जा बिन अस्थी देह सँवारा ❀ होइ हौ दिव्य अस्थि सुकुमारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहत तासु तनु अस्थी भयऊ ❀ दै आशिष मुनि तब गृह गयऊ॥
रानी देखि अंकमें लाई ❀ देखा बोल बशिष्ठहिठगई॥
दो० हर्षित ह्वै मुनिनाथ तब, धन्यो भगीरथ नाम।
बालदशाके अन्त तब, सुनहु सकल बखान॥
पितृलोक केरा उपकारा ❀ वह सब कैसे होय उधारा॥
तबहिं भूप जो चाहै जाना ❀ मुनि वशिष्ठ तब लोक तुलाना॥
पाद्य अर्घ्य दैकर परणामा ❀ पितृ उधारण पूजहि कामा॥
तब वशिष्ठ भाष्यो यह बानी ❀ गंगाबिनु नहिं गति अरु जानी॥
राजा कह गंगा कत अहई ❀ नारदसन वशिष्ठ तब कहई॥
सांचे राव जु नारद आये ❀ गंगा मर्म पूजि मन लाये॥
नारद कहा सुनौ हो राऊ ❀ मैं यक दिन गो इंद्रके ठांऊ॥
पूंछेव गंगा महिमा ताही ❀ इंद्र कहा मैं जानत नाहीं॥
इंद्र देश मैं आयो ताहां ❀ यमराजासों पूछे आहां॥
उनहुं कहा मैं जानत नाहीं ❀ यह तौ मर्म ब्रह्मका आहीं॥
दो० पूँछा विधिसे जायकर, कह्यो शंभु पहँ जाव।
शिव पहँ तब हम जायके, पूछौं भेद बताव॥
शिव कह तव गंगाका नामा ❀ नाशत पाप करै मनकामा॥
जाहु बिष्णु पहँ तुम मुनि राऊ ❀ गंगा भेद तहां सब पाऊ॥
तब बैकुंठ विष्णु पहँ गयऊ ❀ महाभेद मैं पूंछत भयऊ॥
विष्णु कहा सुन चितधरि नारद ❀ गये विष्णु पहला, गुणशारद॥
सुने विष्णु यह पद मनभाना ❀ बड़ आश्चर्य्य चितमहं आना॥
गंगाकी महिमा जु बखाना ❀ बिष्णुरूप भे विष्णु सुजाना॥
नारद गये जहां तौ राऊ ❀ पूंछा महिमा गंगा नांऊ॥
देखा रूप शंख कर चारी ❀ चक्र गदा अरु पद्म सवारी॥
पूंछा बात कहा तिन जानी ❀ चारौ जने सुनौ मुनि ज्ञानी॥
श्वान योनिमें भा अवतारा ❀ बिना अहार महा दुख भारा॥
दो० गंगाजल यक मुनिलै, जात रहे मग माहि।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और एक मुनि माँगऊ, भेट भई तब ताहि ॥
तेहि मारग पर परे हजारहि ❀ विप्र दोउ हर्षित करहि ॥
कुशसे जल मुनि पर डारा ❀ परा बूंद यक भाग्य हमारा ॥
बूंद एक जल तनु महँ डारा ❀ तासे रूप यह भयो हमारा ॥
तब बैकुंठ माहं हम आये ❀ नारद राजहि बात सुनाये ॥
सो गंगा आने जौ पावहु ❀ पितृ सबै यमपाश छुड़ावहु ॥
राजा सुनत बात बिस्तारा ❀ मंत्री सौंपा राज्य भंडारा ॥
माता पांह विदा सब भयऊ ❀ मंत्र एक भागीरथ दयऊ ॥
प्रथम मेरुपर गे तप कीन्हा ❀ यमअरुनियममाहिं मनदीन्हा ॥
धर्मराज हर्षित मन भयऊ ❀ मन्त्र एक भागीरथ दयऊ ॥
सिद्ध करौ यह मंत्र नरेशा ❀ पैहौ गंगाकर उपदेशा ॥
दो० यही मंत्र के सिद्ध हित, तब गै चलि कैलाश ।
कथा रूप गंगा अहै, महाशोक परकाश ॥
बारह वर्ष तपस्या कीन्हा ❀ पूरण आश शंभु वर दीन्हा ॥
गंगा अर्थ भगीरथ कहई ❀ कहा रहै मोहिं पाहन अहई ॥
बारह वर्ष रहे निरहारा ❀ गंगा नहिं पाये कर्तारा ॥
तबहिं विष्णुका तप संचारा ❀ बारह वर्ष रहे निरहारा ॥
नाना स्तुतिकै परकाशा ❀ कह प्रसन्न हरि राजा पासा ।
चार भुजा भे गरुड सवारा ❀ भागीरथ तब करै बिचारा ॥
हौ तुम भक्त हमारे राजा ❀ करौं तोर सब वांछित काजा ॥
चलहूं संग हमारे ताहां ❀ पुरवैं आशा गंगा जहां ॥
हरि आगे पाछे जु भुआरा ❀ आये तब ब्रह्माके द्वारा ॥
अर्घ्य पाद्य गंगा तब दीन्हा ❀ वहां नीर चरणोदक लीन्हा ॥
दो० शीश माह चरणोदक, ब्रह्मा डारेव ताहि ।
शिव आराधन कीन्हेऊ, ब्रह्म कमंडल माहिं ॥
कन्या हरि से कहा बिचारा ❀ तुम्हरे चरण मोर अवतारा ॥
विष्णु कहा गंगा तव नामा ❀ पाप विनाशन जग विश्रामा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जाहु मृतकपुर करौ न बारा ❀ तब गंगा वाणी सँचारा ॥
जगके पाप हमहिं निःतरैं ❀ मेरे पाप कहौ को हरैं ॥
तोरे पाप हरैं हरि कहहीं ❀ साधु स्नान करै तौ दहहीं ॥
नरको पाप जंतु तौ खाई ❀ वही जंतु नर भक्षे आई ॥
जाके पाप तासुके पाहा ❀ सत्य स्नानत तोरि गति आहा ॥
सुनि जलरुप गंग भइ तबहीं ❀ आज्ञा हरिकी पाई जबहीं ॥
भागीरथ जो स्तुति सारा ❀ माता पितृ नरक उद्धारा ॥
ब्रह्मा हरिको कर परणामा ❀ लै गंगाजल राजा आमा ॥

दो० आगे नृप भागीरथ, पाछे सुरसरि धार।
पहुंचे तौ कैलासमें, शंकर दखि विचार ॥

जाना गंगा चली भुवारा ❀ जटा तीन तौ तहां पसारा ॥
जटा मांह गंगा शिव लयऊ ❀ महाशोक भागीरथ कियऊ ॥
हर तुम बड़ दानी जु कहाये ❀ मैं सेवक नर दुख बहु पाये ॥
तव गंगा तुमतौ मोहिं दीना ❀ अब बटवारी कै तुम लीना ॥
शिव समाधि हर हर्षित भयऊ ❀ मांगु २ बर बोलन लयऊ ॥
राजा कहा कष्ट बहु लाये ❀ महाकष्ट से गंगा पाये ॥
छुटी समाधि शंभु सुख भयऊ ❀ मांगु २ बर शंकर कहेऊ ॥
जो तुम राजा दीजै दाना ❀ मोरे पितृ होंय परित्राना ॥
स्तुति बहुत भगीरथ कीना ❀ तब गंगा को शंकर दीना ॥
कै प्रणाम तब आये राऊ ❀ शंख बजावें हर्ष उपाऊ ॥

दो० हेम गिर्द दुर्गम शिखर अटकी गंगा ताह।
पर्वत लाँघि न पारहि, रोवै तब नरनाह ॥

गंगा कहा पुत्र से बाता ❀ इंद्र पास अब जाव सख्याता ॥
ऐरावत हस्ती लै आवो ❀ देहिं मार्ग करि पारहि जावो ॥
राजा गये इंद्रके पाहा ❀ स्तुति बहुत करैं नरै नर नाहा ॥
बारह वर्ष तपस्या कीन्हा ❀ तबहिं इंद्र यह आज्ञा दीन्हा ॥
मांगु मांगु बर सुन नृप बाता ❀ ऐरावत दीजै सुर त्राता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इंद्र कहा तुम गजपहं जाबो ❀ जासे मनवांछित फल पावो ॥
भागीरथ तब गज पहं आये ❀ सब बृत्तांत गजहि समुझाये ॥
षर्बत में करि दीजै द्वारा ❀ हमलै गंगा जांय सो पारा ॥
गज भाषा हमसे नहिं होई ❀ होय काज वच राखै कोई ॥
दो० जो गंगा रति देइ माहि, देब तबै करि पार ।
नातौ हमसे होय नहिं, अंतै खोजु भुवार ॥
सुनिकै राव गये पुनि ताहां ❀ गंगा जाना अन्तर भाहां ॥
रोदन भूप करो केहि हेता ❀ आनहु गज तुम आय सचेता ॥
कहहु हस्ति से बचन हमारा ❀ सहै हमारजु तीन प्रहारा ॥
तौ हम देवै रति को दाना ❀ जाहु पुत्र मम करौ बखाना ॥
तब राजा फिरि गज पहं आये ❀ यह बृत्तांत कह्यो समुझाये ॥
सुनिकै गज तब परम अनन्दा ❀ भागीरथ कह सुन शुभ दन्दा ॥
तीन तरंग हमारे सहई ❀ रति संग्राम हमारो लहई ॥
भाषे गज सौ सहब तरङ्गा ❀ तब तरङ्ग पर हारेउ गङ्गा ॥
एक लहर तब गज के साहा ❀ दुःखीत महाजीव अवगाहा ॥
दो० गये बूड़ि गज तत्क्षणहि, पहिल लेत तरंग ।
दूसरि लहर जो जल उठी, सहि नहिं सक्यो गयँद ॥
तब गज सुस्त भयो जल माहीं ❀ गंगा की स्तुति तब काहीं ॥
मैं पापी माता सुनु बाता ❀ राखु प्रहार शरण सख्याता ॥
तब महिमा जानैं सब देवा ❀ करत चरण तुम्हरे नित सेवा ॥
गङ्गा कह्यो अरे अज्ञानी ❀ गर्भहि ते तब यह गति जानी ॥
देव सबै मम राह उपाई ❀ सुनतै गज तब उठा हो राई ॥
दंतराय पर्वत गज ताहां ❀ भये रंध्र तब पर्बत माहां ॥
चलिकै पार भये गजथारा ❀ गजने इन्द्रलोक पगुधारा ॥
आगे चले भगीरथ राऊ ❀ पाछे गंगा चार सिधाऊ ॥
जनहु मुनीश करैं तप जहां ❀ पहुंचे जाय अचंभित तहां ॥
दो० जाना मुनि हैं गंग यह, आय मृत्यु स्थान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

परम हर्ष मन महा मुनि, कर गंगा कहँ पान ॥
भागीरथ विस्मय तब भयऊ ❀ तब मुनीश को सेवा कियऊ ॥
मुनिके पाँह विष्णु को धावे ❀ बारह वर्ष तु तहाँ गँवाये ॥
कोटिन विप्र गऊ दै दाना ❀ नहीं गंगा सम तीर्थ बखाना ॥
विष्णु आय हर्षित तब भयऊ ❀ मुनि कर ध्यान तुरत छुटिगयऊ ॥
विष्णु कहा तब मुनि सों बाता ❀ भागीरथ जग महँ सख्याता ॥
गंगा देहु बहुत सुख पाये ❀ पितृ लोक उद्धारन आये ॥
तब मुनि ज्ञान बिचारे तहाँ ❀ मैं गंगा देउँ केहि विधि महाँ ॥
मूत्र अशुद्ध मुख जूँठा होई ❀ कहै उच्छिष्ट जगत सब कोई ॥
जाँघ चीरिकै गंग निकारा ❀ जान्हवि नाम ताहि से धारा ॥
अन्तर्द्धान विष्णु भे जाहीं ❀ भागीरथ हर्षित मन माहीं ॥
आये देश माहिं तब राऊ ❀ माता पहँ धै गंगा लाऊ ॥
दो० गंगा पाहीं कहा यह, गंगा कहि गोहरावे ।
तबहीं माता तब तहाँ, और ध्रव बैठाव ॥
माता पांह भगीरथ गयऊ ❀ मध्ह नगर हर्षित तब भयऊ ॥
कहेउ बात माता पद गहा ❀ गंगा का वृत्तांत सब कहा ॥
तहाँ देव गंगा परवाहा ❀ जाते जाय विष्णुपुर माहा ॥
यहि प्रकार पूछत हौ राऊ ❀ अभ्यंतर अब सुनौ उपाऊ ॥
गंगा नाम गऊ एक रहै ❀ एक अहार पुकारत रहै ॥
गंगा गँगा नाम पुकारा ❀ गंगा चली सहस ह्वै धारा ॥
भागीरथ कहते तब बाता ❀ यह का कीन कहौ मोहि माता ॥
तब गंगा राजा से कहेऊ ❀ तुम्हारा संशय अब नहिं रहेऊ ॥
तब पितृन को करो उधारा ❀ पाछे हम तोरब संन्सारा ॥
भागीरथ प्रसन्न मन माना ❀ भीष्म धर्म नृप पाँह बखाना ॥
दो० कंदु नाम जो ब्राम्हण, कहै प्रेत गण जोंहि ।
चंद्रभाग नहिं प्राप्ती, परम हर्ष मन माँह ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

महा पातकी जग में अहई ❀ गंगा परसत पाप न रहई ॥
धन्य भाग जो लेत तरंगा ❀ पाप नाश अरु निर्मल अंगा ॥
कोटिन विप्र गऊ दे दाना ❀ नाहिं गंगा के नीर समाना ॥
सब तीर्थन में गंग प्रधाना ❀ श्रुति स्मृति भागवत बखाना ॥
यहि प्रकार द्विज कथा सुनाये ❀ पंच बिमान स्वर्ग से आये ॥
प्रेत रूप तज ताही वारा ❀ विद्याधर स्वरूप सँचारा ॥
स्वर्ग लोक भा तेहि कर ग्रामा ❀ गंगामाहात्म्य सुनत सुखधामा ॥
जाके चरण गंग अवतारा ❀ तो हरि सब दिन सँग तुम्हारा ॥
तजौ शोक सब धर्म नरपती ❀ हरि सहाय संतत तुम गती ॥
सत्य सत्य जानौ परमाना ❀ यही देवपति श्रीभगवाना ॥

दो० यहि प्रकार से भीष्मजी, सुनतै पाप नशाय ।
गंगा कर प्रवाह कह, धर्मराज समुझाय ॥
सर्व नदी में गंगा, देवन महं भगवान ।
छंद माँह गीता सही, धर्म न दया समान ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
गंगाजी की उत्पत्ति वर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

धर्मराज सुनहु परमाना ❀ भीषम भाषे अर्थ पुराना ॥
महादेव सेवा मन लावै ❀ सो कैलासहि बासहु पावै ॥
शिव का व्रत चतुर्दशी अहैं ❀ धन्य रू धन्य रूप हर कहैं ॥
चरत नाम व्याधा संसारा ❀ सो कैलास मोहि पगु धारा ॥
कौन रुप सुनते विस्तारा ❀ भीष्म काहासु नृपति भुआरा ॥
पशुन मारि कै वन से लावै ❀ मास बेंचि के दिन भुगतावै ॥
एक दिवस तौ उपवन जाई ❀ सांझ भई यक जंतु न पाई ॥
महा शोच बाढ़ा मन माहीं ❀ कौन रूप आज गृह जाहीं ॥
स्त्री सुत पुत्री उपवासा ❀ सब तो अहै हमारी आसा
यह चिन्ता व्याधा के भयऊ ❀ महा शोच करता तब लयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० कौन भाँति गृह जाऊँ मैं, सबहिं परे उपवास।
यह चिन्ता व्याधा मनहिं, तनु के माह प्रकास॥

महादेव को व्रत दिन सोई ❀ महा शोक व्याधा के होई॥
तब मन में यह करै बिचारा ❀ धृग धृग जग में जन्म हमारा॥
ताते यहि कानन के माहीं ❀ रहौं आज हम गहे न जाहीं॥
यह पर बाघ सिंह बहु अहई ❀ जन्म अंत अब व्याधा हई॥
श्रीफल तरु पर चढ़ि सो रहा ❀ व्याधा हृदय शोच बहु लहा॥
कर्म अँक पै सदा सहाई ❀ कर्म ते हेतु दुखः सुख पाई॥
जो विधना है लिखा लिलारा ❀ दूसर कौन पिटावन हारा॥
कर्महि से सुख होत जो राई ❀ पावै सुख अनेक सुखदाई॥
सदा चित्त से मेटत सोई ❀ लाख उपाय करै जो कोई॥

दो० व्याधा रहिगो राति तहँ, श्री फलतरु के डार।
महा भयंकर निशि तहाँ, भयो महा अँधियार॥

क्षुधावन्त अतिही दुख पाई ❀ रोदन करत हृदय दुखदाई॥
अर्द्ध रात्रि से शंकर आये ❀ वृषभ चढ़े गोरी सँग लाये॥
भूत प्रेत जो दत्य अपारा ❀ शृँगी डमरू झाँझ मँझारा॥
ताही बन में भा डाजियारा ❀ सोई तरूवर सरश भुवारा॥
तहँ बैठे हर उमा जो जाई ❀ व्याधा है कोई मर्म न पाई॥
करते नृत्य महेश्वर तहाँ ❀ रोवै व्याधा सो तरू महा॥
अँसुपात बहते हैं ताही ❀ कर्म भयो ताके फल दाई॥
एक श्रीफल पत्र प्रमाना ❀ आँसु भीजै रोवत नाना॥
पवनतेज पत्तासों झरैं ❀ महादेवके शिरपर परे॥

दो० महादेव हर्षित बदन, कहै बात तौलीन।
ले वरदान आय अब, पुष्पांजलि जो दीन॥

उतरि रूखसे व्याधा पड़ा ❀ हाथ जोरिकै सन्मुख खड़ा॥
शिव प्रसन्न होकर वर दीन्हा ❀ राजा श्री धनवंता कीन्हा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अंतकाल सो गौ कैलाशा ❀ भोलानाथ भक्त परकाशा ॥
व्याधा तव जानै नहिं पाये ❀ दैवीगति पत्ता हर पाये ॥
जगत माँह करके सुख नाना ❀ अन्तकाल कैलाश पयाना ॥
भक्तवछल तौ शिव भगवाना ❀ ब्रह्म इंद्र पद पाये प्रधाना ॥
रणमें जौ शत्र संहारा ❀ सोय भवानी वर संसारा ॥
राजधर्म भक्ती मन धरौ ❀ शोक दुःख राजा परिहरौ ॥
शोक करौ तौ गहिहै नाहीं ❀ बचन मोर राखै मन माहीं ॥
केवल करौ हरीको ध्याना ❀ पावहु राजा पद निर्वाना ॥

दो० तजौ शोक हो राजा, चितवौ राधा मौन ।
यहि प्रकार भीषम कहा, तब कीन्हों है मौन ॥

राजा सुनो यही से बानी ❀ तजा शोक तबहीं परमानी ॥
देव मुनी सब जो अस्थाना ❀ सहित पांडवन श्रीभगवाना ॥
प्रति वासर तौ राजा जाई ❀ सुनाजु ज्ञान पितामह नाई ॥
जेते कहै जो शन्तनुनंदन ❀ सुनतै पाप होतहैं खंडन ॥
सो चरित्र संक्षेपहिं कहेऊ ❀ पुनि विस्तार बहूत तोरहेऊ ॥

दो० भीषम वर्ण्यो धर्म सो, सुनो सत्य मम पाह ।
महापाप सबनाशहीं, सुनत श्रवणन माह ॥
नानाशास्त्र पुराण मत, भीषम कह्यो बखान ।
राजा हृदय राख कह, सत्य बचन परमान ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
सप्तमोऽध्याय : ॥ ७ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

दो० जरत रहत मेरो हिया निशिदिन यह सन्देह ।
बैरी सम मारो तिन्हें, जिनसों परम सनेह ॥
कहां भला कहं होय हमारो ❀ डरपो दोष देख अति भारो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

झूँठा बोल द्रोण हम मारे ❀ पिता पुत्र भ्राता सँहारे ॥
अब मैं प्राण घातकर मरिहौं ❀ इस पृथ्वी को राज्य न करिहौं॥
सत्य सत्य पितु कहौं विचारी ❀ नाथ कौनगति हाय हमारी ॥
रहत तुम्हारे निशिदिन सँगा ❀ बाणन सों बधो सो अँगा ॥
किञ्चित लाज न आवत मोहीं ❀ हाय भयो मैं कुरुकुल द्रोही ॥
फिर निर्लज्ज बन तुमपै आयो ❀ तुमकर कृपा बहुरि अपनायो ॥
मुख सन्मुख नहिं होत तुम्हार ❀ बोल न सकत लाजके मारे ॥
सबै तनु बेध तुम्हारो डारो ❀ कुछ न बड़प्पन गिनौ तुम्हारो॥
अब मैं पिता तुम्हारी शरना ❀ हरो मोर संशय दुख हरना ॥

दो० महाकुकर्मी कुटिल मैं, अन्यायी निर्बुद्ध।
सब कुटुम्ब गारत कियो, आपस में करि युद्ध ॥

भीष्म उवाच।

भीषम कहत सकल भ्रम त्यागो ❀ ममता मोह नींदसों जागो ॥
सूक्षमगति कर्म की अपारा ❀ होत जात नहिं लागहिं बारा ॥
रची जु वस्तु कर्म की जोई ❀ मन पहिलेहि तैसा होई ॥
मन बच क्रक जो कर्महि धावे ❀ तो कछु क्रम तैसा मन आवै ॥
भावी होनहार जो होई ❀ कोटि यतनसे मिटत न सोई ॥
दिनदिन चित विष तनु छीजै ❀ ताते ज्ञान अमियपय पीजै ॥
सुन इतिहास नृपति चित धारी ❀ पन्नगबधिक गोतमी नारी ॥
तप गौतमी करै बहुतेरो ❀ बालक पुत्र एक ता केरो ॥
सो बालक खेले बनमाहीं ❀ फिरत रहत वृक्षनकी छांहीं ॥
खेलत ताहिं सर्पने खायो ❀ सर्पहिबधिक बाधि लै आयो ॥

दो० बधिक गौतमा सों कहो, अब सब बिगरोकाज
तेरो सुत इस सर्पने, डसो बिपिन में आज ॥

बालघात इहि करि अभागे ❀ मारौं मोहि तुम्हारे आगे ॥
सुनताहि बचन गौतमी बोली ❀ अरे बधिक तब मतिकहँ डोली॥
सर्पहि छाँड़ी कहे हमारे ❀ पुत्र न जिये सर्पके मारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बिना मीचु तनु नहिं परिहरहीं ❀ अमनी मीचु सबै कोउ मरहीं ॥
एकै जीव अग्नि में जरहीं ❀ एक रोग व्याधि पाचि मरहि ॥
एक क्षुधा कर प्राण गमावैं ❀ एक शस्त्र जरा मृत्यु पावैं ॥
एक सिंह गज के वश परहीं ❀ एक सर्प विषष खाये मरहीं ॥
जाको जौन मनो है भाई ❀ ताने ताही बिधि मत पाई ॥

बधिक उवाच ।

बिना मीचु तनु नहि परिहरही ❀ अपने पाप आप जरि मरहीं ॥
पापी मोरे पाप न होई ❀ ऐसी बात कहत सब कोई ॥
बालघात इन कियो अकाजू ❀ याहि न जीवत छांड़ो आजू ॥

गौतमी उवाच ।

दो० अवगुणको गुण मानहीं, गुणहिं परमउपकार
ऐसे नर संसार में. कहीं हकीं दोचार ॥

अवगुण को अवगुण मन धरहीं ❀ गुणको गुण सब कोऊ करहीं ॥
अपने स्वारथ लागे रहई ❀ भली भली सब कोऊ गहई ॥
दोष परायो जो नहि गहई ❀ ताको यश जगमें थिर रहई ॥
निपट बुरो रु भलो जो होई ❀ महा साधु के सम है सोई ॥
तिन से पृथ्वी से सोहै ऐसे ❀ घर सुपुत्र से दीखै जैसे ॥
और जीव को जो दुख देही ❀ सो सब दुख आपन को लेही॥
जो कोउ दुखते डरपै भाई ❀ तौ दुख औरहि देन न जाई ॥
यद्यपि बहुत भाति कोई कहई ❀ तद्यपि कुमति साधु नाहिगहई॥
प्रभु पाप साधु नहिं करई ❀ वह अपने स्वाभाव मन धरई ॥
पापी जो समझावै कोई ❀ कोयल घिसे न उज्ज्वल होई॥

दो० प्रथम जन्म की वासना, सोंई प्रगटन आय ।
कोटि यत्न कर मेटहू, तौहू नाहि मिटाय

सर्प जान जीवन की आसा ❀ नर भाषा बोलै अब दासा ॥
अहो बधिक कछु बश नहिं मोरो ❀ हौ पुनि पराधीन मृतु केरो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहत मृत्यु कछु चलै न मेरी ❀ घर घर काल देत है फेरी ॥
थावर जंगम जो कछु आही ❀ काल विवश सब जानो ताही ॥
तीनों लोक उदरमें जाके ❀ आदि अंत कछु नाहिंन ताके ॥
धर्म धाम सुख सब फल टरहीं ❀ समय वृक्ष फल पक गिरपरहीं ॥
राख रहे न कछुक उबारा ❀ काल विवश यह सब संसारा ॥
तीनों काल पाश हैं ताता ❀ आदि मध्य की जानत बाता ॥
मेघ अकाश वायु शशि जैसे ❀ ये सब जीव बसत हैं तैसे ॥
इतनी कहत काल तहँ आयो ❀ तिन मृत्युसोंयहबचनसुनायो ॥
बोलो काल मृत्युसे हँसकर ❀ राखो कर्म सकल जग वशकर ॥

दो० मरत जियत सब कर्म से, मेरो कछु नहिं दोष।
लोग वृथा मोपर करत, मूरखपन से रोष

जन्म मरण गति मोर न मानो ❀ कर्म प्रधान सबहि पर जानो ॥
हमहूँ कर्म पाश में आवत ❀ कर्महि ते दुख सुख सब पावत ॥
आवत जीव गर्भ में जबहीं ❀ पावत कर्म लिखा सो तबहीं ॥
बल विद्या आयुः धन धर्मा ❀ पाप रु पुण्य करैं सब कर्मा ॥
प्रथम कर्म कीन्हे हैं जैसे ❀ भुगतै बनै सबन को तैसे ॥
ऐसो को समरथ जगबली ❀ रोकै चलत कर्म की गली ॥
सहस धेनु जहँ कहुँ मिलानी ❀ वच्छ मात को ले पहिचानी ॥
देश विदेश कहूँ किन जाई ❀ कर्महि कर्म लेय तहँ आई ॥
कबहुँ कर्म नहिं छोड़ै अंगा ❀ सोवै सोवत जागे संगा ॥
न्यारो नाहिं कर्म तनु माहीं ❀ जैसे संग न छांड़त छाहीं ॥

दो० हानिलाभदुखसुखसुयश, मरणजियनगुणज्ञान।
सबहिं होत हैं कर्म ते, सब में कर्म प्रधान ॥

ज्यों बनमें रक्षक नहिं कोई ❀ राखै कर्म रहै पुनि सोई ॥
उलटै कर्म सकल दुख सहई ❀ घरमें वस्तु न राखी रहई ॥
कर्म बिना न देह निर्वहई ❀ ज्यों बिन तेल न दीपक रहई ॥
पन्नग मृत्यु काल को मर्मा ❀ यह सब है बालक के मर्मा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दुख दरिद्र सब आपहि पावै ❀ जैसे काष्ठ अग्नि उपजावै ॥
इस बालकको कर्मन मारो ❀ है मृत्यु कछु नहिं दोष तुम्हारो ॥
तब गौतमी बधिक सों बोली ❀ अहिके बंध देहु तुम खोली ॥
काल भुजंग मृत्यु नाहिं कोई ❀ अपने कर्मनको फल होई ॥
मोहिं काल ऐसे समुझायो ❀ सब पै कर्म प्रधान बतायो ॥
तत्क्षण वधिक क्रोध सब गयऊ ❀ उर अन्तर आनन्दित भयऊ ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
गौतमीपन्नागकथा वर्णनंनाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

दो० मुख्य मानथर कर्म को, सर्प गयो बन माहिं।
बोले भीषम धर्म सों, वली कर्म सम नाहिं ॥
सकल कर्म करतार बश, कोउ न पावत अन्त।
मनत सब सन्देह तज, भजहु सदा भगवन्त ॥

युधिष्ठिर उवाच।

तप अरु दान दोउ विख्याता ❀ तिनमें कौन अधिक फलदाता ॥

भीष्म उवाच।

तपते श्रेष्ठ दान है भाई ❀ महिमा कहत शेष सकुचाई ॥
जो जो भये जगत में दानी ❀ तिनकी माहिमा अचलबखानी ॥
धन बिन दान बनत है नाहीं ❀ ताते धनहि मुख्य जग माहीं ॥
चिनवत चलत द्रव्य मन आगे ❀ अति प्रिय प्राण कुटुंबहित्यागे ॥
बन पर्वत समुद्र में बहई ❀ धनके काज कठिन दुख सहई ॥
धन हित नर उद्यम बहु करई ❀ ता धन लागि प्राण परिहरई ॥
निशिदिन धन आशा मन धरई ❀ मन दे धनकी रक्षा करई ॥
अकृत सुकृत कर धन उपजावै ❀ सो धन दियो कौन को भावै ॥
ऐसो धन जो देत सदाहीं ❀ सो दाता त्रिभुवन के माहीं ॥
सबते श्राद्ध अधिक बखानी ❀ श्रद्धासे जो दे से दानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० श्रद्धा ते जो करत हैं, अन्नदान सन्मान ।
ते नर सुरपुर जात हैं, चढ चढ बिमल विमान ॥
जो नर महा अधिक धन पावै ❀ निशिदिन श्रद्धा सहित लुटावै ॥
दान समान कोउ कृत नाहीं ❀ जाको सुयश होत जग माहीं ॥
श्रद्धा सहित अल्पहू करही ❀ ताको कियो कोटि गुण फरही ॥
अधिक दान श्रद्धा बिन ऐसे ❀ ऊसर बीज बये फल जैसे ॥
कथा पुरातन कहा सुनाई ❀ मुद्गल नाम ब्रह्मऋषि राई ॥
सदा वृत्ति तिय पुत्र समेता ❀ परम सुधर्म रहे कुरुखेता ॥
जोरत दिन पन्द्रह जब जाहीं ❀ तादिन अतिथि पूजकै लाहीं ॥
कुटुम सहित जाको बनवासा ❀ अतिथि देख मन होत हुलासा ॥
सब देवन मिलि ताहि पठायो ❀ अतिथि रूप दुर्वासा आयो ॥
उद्यम रूप दिगम्बर रहही ❀ बचन और के औरहि कहही ॥
पन्नगि तहँ ठाढो दुइ रहेउ ❀ मुद्गल बचन बहुरि तब कहेउ ॥
दो० मुद्गल मुनि को देखकर, बढो परम अनुराग ।
आज मनोरथ सफल भा, धन्य धन्य मम भाग ॥
नमस्कार कर पूजा करी ❀ धन धन सुफल आजकी घरी ॥
देखत सफल नयन भये मेरे ❀ अमृत रूप बचन सुन तेरे ॥

भीष्म उवाच ।

ऐसे पूज अन्न जब दीन्हों ❀ तब दुर्वासा भोजन कीन्हों ॥
जेंवत जूंठ जौन उबरियो ❀ अंग लगाय सोउ शिर धरियो ॥
ऐसे जब आवैं तब पावैं ❀ मुद्गल के मन दूनो भावैं ॥
नहीं भई निन्दा कछु जाके ❀ नहिं मन क्रोध कृपणता ताके ॥
भलो जान साधु यों कहेऊ ❀ दुर्वासा प्रसन्न तब भयऊ ॥
तुम सों दाता मिलो न कोई ❀ तुम्हरो यश त्रिभुवन में होई ॥
धीरज सहित विवेक बिचारा ❀ छांडि कृपणता भयो उदारा ॥
समदर्शी अरु ज्ञान निधाना ❀ तुम समान देखेउँ नहि आना ॥
मुद्गल सुन मुनीश की बानी ❀ बोला बचन प्रेम रस सानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुमसे साधु कृपा जो करहीं ❀ तौ हम जीव क्यों न निस्तरहीं ॥
धन्य सोई तुम शरण जु आयो ❀ साधु समागमको फल पायो ॥
जब इहि भांति साधु गुण गायो ❀ आज्ञा दई बिमान मँगायो ॥
लाये जब परषद् बिमाना ❀ दुर्वासा अनन्त सुख माना ॥
रत्न जटित प्रकाशमय सोई ❀ बाजा बजत शब्द ध्वनि होई ॥
तिहि चढ़ चलो ब्रह्मऋषिराई ❀ देवलोक सब करैं बड़ाई ॥
देवदूत सों पूँछत मुद्गल ❀ केती दूर स्वर्ग से भूतल ॥
मारग चलत भले जो कोई ❀ सबहीं प्रीतय मित्र जु होई ॥
ताते तुमसों पूँछत भेवा ❀ स्वर्ग कवन गुण कहिये देवा ॥
देवदूत बोले मुसुकाई ❀ धन्य २ तुम हो ऋषिराई ॥

दो० तुम गुणज्ञ सर्वज्ञ हो, जानत कहा न तात ।
हम बडाई देन को, पूँछत हौ यह बात ॥

स्वर्गादिक सब नन्दन बनके ❀ पुरवैं वृत्त मनोरथ मनके ॥
दिव्य विमान अप्सरा जहां ❀ सकल काम भोगादिक तहां ॥
काम मोक्ष धर्महि मन लावत ❀ स्वर्ग जाय ते सब सुख पावत ॥
ऐसे जीव स्वर्ग नहिं जाई ❀ जे परधन चुराय कर खाई ॥
चोर कृतघ्नी निन्दक पापी ❀ इष्ट भ्रष्ट क्रोधी सन्तापी ॥
कपटी क्रूर कलहमय मंसा ❀ दुख दें लेय परायो अंसा ॥
मिलत स्वर्ग इतनन को नाहीं ❀ इत उत भ्रमत रहत जग माहीं ॥
और बहुत गुण कहब बखानी ❀ सुनो ध्यान धर सकल कहानी ॥
सुनो स्वर्ग के गुण हैं जेते ❀ तुमसों बिप्र कहौं मैं तेते ॥
जय जय शब्द सदा तहं होई ❀ बिना भजन तहं रहत न कोई ॥

भीष्म उवाच ।

दो० विमल कथा सुन्दर सरस, हरहु सकल श्रम शोक ।
पशु पक्षी नर जन्तुमें, एकहि जीव विलोक ॥

मिलै कहूं बहु धन भण्डारा ❀ करिये दान धर्म उपकारा ॥
धर्म ज्ञान बल सदा सुदाना ❀ ज्ञान सिद्ध फल मिलै निदाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मुद्गल कथा सुनै फल होई ❀ पाप कलाप रहै नहि कोई ॥
राजा हरिएन चित दयऊ ❀ सँशय सकल शमन ह्वै गयऊ ॥
कहत युधिष्ठिर शीश नवाई ❀ सब बाधा प्रभु मोरि मिटाई ॥
सब सन्देह और भ्रम नाशा ❀ हिये ज्ञानको भानु प्रकाशा ॥
धन्य २ भीषम सुखदानी ❀ तुमसमान कोउ लखौ न ज्ञानी ॥
तुमने सकल वंश को तारा ❀ आपहु तरे हमैं निस्तारा ॥
ऐसी कथा और कहु कोई ❀ फिर भ्रम कबहूं कोउ न होई ॥
सतसंगत की यहै बड़ाई ❀ परमानन्द होत सुखदाई ॥

दो० मुख नाहिं सन्मुख होतहै, लखि २ देहतुम्हार ।
क्षमहुमोर अपराध अब, अपनी ओर निहार ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
मुद्गलऋषिउपाख्यानवर्णनोनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

धन्य २ कुरुपति सुखदाई ❀ सब सँशय प्रभु मोर मिटाई ॥
अहो और पूंछत हौ मर्मा ❀ शरणागत रक्षा को धर्मा ॥

भीष्म उवाच ।

सकल देवता बात चलाई ❀ उत्तम धर्म कौन है भाई ॥
धर्म समेत तुला कर धारो ❀ सब मिलकर यह बात बिचारो ॥
सबने तत्त्व कथा यह बरणी ❀ दुखित जीवकी रक्षा करणी ॥
सकल यज्ञ जप दान समेता ❀ काशी ग्रहण दान कुरुखेता ॥
नाहि न और धर्म कोउ ऐसो ❀ दुखी जीवको पालन जैसो ॥
कथा पुरातन कहौं सुनाई ❀ अग्नि इन्द्र राजा शिबिराई ॥
राजा सुकृत यज्ञ उत्थेऊ ❀ तिहि ठां कए अचम्भा भयेऊ ॥
इन्द्र शचान रूप तह किया ❀ अग्नि कपोता ह्वै भजि गयो ॥
डरो भाज राजो की शरना ❀ लगो धर्म की रक्षा करना ॥
तब शचान आगे ह्वै भाई ❀ राजा सों बोलेउ अकुलाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri. Funding by IKS.

दो० तुम सर्वज्ञ सुजान नृप, ज्ञानी परम उदार ।
करहु न धर्म विरुद्ध तुम, लहु न मांस अहार ॥
राजा बोले सुनहु खगेशा ❀ शरण न देहुं देहुं धन देशा ॥
अबलों तो यह टेक निबाही ❀ आयो शरण दियो नहि ताही ॥
डरप बिहंग भयो शरणाई ❀ सो मैं लीन्हों कंठ लगाई ॥
शरण राखि जो त्यागै कोई ❀ हत्या ब्रह्म दोष तेहि होई ॥
लोभ दोष मय जो पैं करही ❀ ताके पाप आप जर मरही ॥
शरण मिटाये हैं अति दोषा ❀ शरणागत त्यागे नहिं मोषा ॥
जैसो दुख औरै तस आपै ❀ दुख सबके शरीर में व्यापै ॥
जो भय ते आपही दुख होई ❀ तैसेहि दुख मानत सब कोई ॥
भय संकट से राखै प्राना ❀ बुद्धिमान सो परम सयाना ॥
शोक त्रास संकट ते डरही ❀ सोई साधु दया मन धरही ॥
दो० रक्षा करनी दुखी की, यही धर्म है सार ।
यातें अधिक न और कछु, नेम धर्म अचार ॥
शरणागत की रक्षा कीजै ❀ शक्त्यनुमान सबहिं सुख दीजै ॥
जैसे आप अपनपौ मानै ❀ ऐसे औरन को तनु जानै ॥
दुख सुख होत सबके तनमें ❀ यह बिचार कर अपने मनमें ॥
याहि शरण ते देहुं न तोही ❀ यह भय भीत रहेउ गहि मोही ॥
मेरे यहै धर्म है भाई ❀ प्राण जाय पर प्रण नहिं जाई ॥
कहत श्येन सुनहु नृप राई ❀ प्रण तुम्हार है अति सुखदाई ॥
यह तो बचन आपको सत है ❀ पर बिन भोजन कोउ जियतहै ॥
सब अहार ते जीवैं प्रानी ❀ बुधि अहार तब ले अरु बानी ॥
सुख अनेक अहार ते लहई ❀ बिन अहार धरो सब रहई ॥
एक जीव की रक्षा करनी ❀ जान बहुत जीवों की हरनी ॥
दो० एक जीव के कारणे, कई जीव की घात ।
सत्य कहौ नृपराज यह, कौन धर्म की बात ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मोहिं अहार देहु जो नाहीं ❀ कुटुंब सहित हमसबमरिजाहीं ॥
मेरे मरे बहुत दुख होई ❀ दारा पुत्र रहे नहिं कोई ॥
सो हत्या नृप तुमको लागे ❀ फिर कोउ यत्न बनै नहिं आगे ॥
राजा शोच ममझलो मनमें ❀ धर्म नहीं कुछ इन बातनमें ॥
जिन धर्मन ते धर्म न रहही ❀ ताको धर्म न कोऊ कहही ॥
सूक्ष्म गति धर्म की कहावै ❀ धर्म करत अधर्म हो जावै ॥
अधिक कल्पना धर्म घनेरो ❀ यहां न चलै चतुरपन तेरो ॥
वार बार बिनवौं नृप तोही ❀ कुटुंब समेत हनै मत मोही ॥
इतना सुयश होय तब राई ❀ एक जीव की जान बचाई ॥
जब मेरो कुटुँब तनु त्यागै ❀ यह हत्या तोहि कैसी लागै ॥

दो० हे शचान मत प्राण तज, पाल अपन परिवार ।
जो चहिये सो लेय तू, पर कपोत मत मार ॥

तू ज्ञानी जानत सब ब्यौरा ❀ अभय दान सम दान न औरा ॥
अभयदान उत्तम जग माहीं ❀ ऐसो और धर्म कोउ नाहीं ॥
दुखी जीव परहित जो करहीं ❀ तापर कोउ दुःख नहिं परहीं ॥
और दान फल थोरो रहई ❀ अभयदान अक्षय फल लहई ॥
दान यज्ञ फल तीरथ सेवा ❀ और अनेक धर्म सुन भेवा ॥
अभय दान को उत्तम फल है ❀ अभयदान जग माहिं अचलहै ॥
राज शरीर जाहुं किन मारा ❀ पर न देहु यह पक्षी प्यारा ॥
जन्म कनेक पुण्य मैं कीन्हों ❀ परमेश्वर अर्पण कर दीन्हों ॥
तासु पुण्य को यह फल पायो ❀ दुखी जीव मेरे घर आयो ॥
तनक मांस में कहा बिचारा ❀ लेहु अहार अनेक प्रकारा ॥

दो० मान कहा अज्ञान तज, हे शचान गुणवान ।
मन इच्छा अहार लै, तज कपोत के प्रान ॥

अहो नरेश महा बडभागी ❀ सत्यसिन्धु दाया अनुरागी ॥
मुझको भक्ष्य विधाता दीन्हा ❀ सो निर्दय बन तुमने लीन्हा ॥
अब कह खाय बचाबों प्राना ❀ ताते अपन मरन जिय ठाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अधिक कहा कहनी बहु बाता ❀ मोर भक्ष्य दीजै मोहिं ताता ॥
कह नरेश तुम सुनहु शचाना ❀ यह कपोत मोहिं प्राण समाना॥
शेष महेश गणेश बखानो ❀ अभयदान सब माहिं प्रधानो ॥
जो जन जीव दया मन धरहीं ❀ सो प्राणी काहे नहिं तरहीं ॥
शरणागत पर दया न आनी ❀ ते प्राणी मूरख अज्ञानी ॥
जहँ लौं अपनी पार बसावै ❀ शरणागत को अवशि बचाव ॥
चाहै जाय धाम धन राजू ❀ पर कपोत नहिं देहौ आजू ॥

दो० जो नहिं देहु कपोत तुम, करहु बचन निर्बाह ।
तौ तुम अपनो माँस मोहिं, देहु काटि नरनाह ॥

जो उपकार और को कीजै ❀ अपनो मांस काटि मोहि दीजै ॥
सुनत शचान बचन यह तेरो ❀ अधिक प्रसन्न भयो मन मेरो ॥
अपनो मांस काटि तोहिं देहूँ ❀ झूंठो तनु सांचो कर लेहूँ ॥
झूठे तनु में मिली बड़ाई ❀ याते और कहा अधिकाई ॥
पर उपकार जो आवै देहा ❀ तौ है बृथा सकल संदेहा ॥
यह तनु थिर न रहैं संसारा ❀ विट कृमि देह होय जरि छारा ॥
जो तनु पर उपकार न आवै ❀ बृथा जननि जनिकै दुख पावै॥
जो भय ते अप तनु दुख होई ❀ तैसहि दुख पावत सब कोई ॥
दुख संकट ते राखै प्राना ❀ सोइ भक्त जन परम सुजाना ॥
दुख सबके शरीर में व्यापै ❀ जैसो औरहि तैसो आपै ॥

दो० भोजन को छौनान के, अति विलम्ब अब होत ।
मने करा कै देहु मोहिं, मेरा भक्ष्य कपोत ॥

निकसत प्राण भूख के मारे ❀ अब मत बहुत विचार बिचारे ॥
जब यह प्राण निकस गये तनते ❀ फिर कह होय सुधा भोजनते ॥
जो अपनो जग में यश चाहो ❀ तो आपन प्रण आप निबाहो ॥
अपनो आमिष तुला चढ़ाई ❀ सम कपोत मोहिं करदे राई ॥
अधिक मांस चहिये मोहि नाहीं ❀ धीरज मोहि धारहीं माहीं ॥
राजा तुरत कटार उठायो ❀ मांस काट कर तुला चढायो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri..Funding by IKS.

दूजी ओर कपोत चढ़ाकर ❀ राजा चाह्यो करन बराबर ॥
भयो कपोत महा बल भारो ❀ नृपति शरीर चढ़ायो सारो ॥
मांस बराबर भयो न जबहीं ❀ आपुहि चढ़ो तुला नृप तबही ॥
जय जय शब्द भयो चहुँ ओरा ❀ धन्य धन्य राजा सत तोरा ॥
निरखि देव दुन्दुभी बजावैं ❀ धन धन कहि नृपको यश गावैं॥

दो० देख धीर शिविराजका, प्रगट भयो सुरभूप ।
धीर धुरंधर धन्यतुम. पूरण धर्म स्वरूप ॥

अग्नि कपोता मैं सुराई ❀ देखैं सत्य तुम्हारो राई ॥
ऐसी करी करै नहिं कोई ❀ जो मुख कही करौ तुम सोई ॥
तुमही धर्म रूप जग खम्भा ❀ तुम्हारेहि सत्य धरणि नघ थंभा॥
तदपि कर्म बश जीवरु जन्तू ❀ तुम उपकारी धीरजवन्तू ॥
ब्रह्मा प्रगट किये पर काजा ❀ मेघ बृक्ष अरू तुमसे राजा ॥
देइ अपने पौं राखौ प्राना ❀ मिलै परमगति पद निर्बाना ॥
देत अपनपौ लगी न बारा ❀ जीवन सांचों पर उपकारा ॥
अर्थ पराये जीवन सारा ❀ जैसे बृक्ष रहत संसारा ॥
जग में तुम सम को बड भागी ❀ ठाढ़े शरण इन्द्र अरू आगी ॥
जस यश सुनो तुम्हारो राऊ ❀ सो सब देख्यो प्रगट प्रभाऊ ॥

दो० ऐसे नर संसारमें प्रगट बहुत कम होत ।
अपनो तनु त्यागन चह्या, त्यागो नाहिं कपोत ॥

कहै नरेश सुनो सुरराया ❀ यह सब तव चरणनकी माया ॥
नरहू करत कहीं अस काजा ❀ यह सब तव प्रताप सुर राजा ॥
हमहिं न लज्जित कीजै भूपा ❀ धारण कियो कपट को रूपा ॥
जगमें अधिक धर्म तुम कीन्हों ❀ तीनों लोक जीत यश लीन्हों॥

भीष्म उवाच ।

अग्नि इन्द्र निज लोकहि गयऊ ❀ शिबिकीयज्ञसकल अतिभयऊ ॥
यज्ञ सिरानो सीझे काजा ❀ तब मनमें आनंद भो राजा ॥
शिविका चरित जु सुने सुनावै ❀ नाशै पाप सकल सुख पावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कैसौ धर्म किया शिविराई ❀ जिनकी महिमा त्रिभुवन गाई ॥
जबलों रहै जगत में प्राणी ❀ दे नित दान कहावे दानी ॥
मोरध्वज हरिचंद्र नरेशा ❀ दियोदान नहिं कियो कलेशा ॥
जिनकी अब लौ अचल कहानी ❀ धन्य धन्य ते आतमज्ञानी ॥
जिनके आठ प्रहर हरि ध्याना ❀ माया मोह द्रोह विलगाना ॥
तुमहूँ तजो मोह मद ममता ❀ सब प्राणिनते राखो समता ॥
को अपनो अरु कौन बिरानो ❀ सब में एक ब्रह्म तुम जानो ॥

दो० अजर अमर अद्वैत प्रभु, रहउ जगत में व्याप ।
जीव अमर नहिं मरत है, वृथा शोक सन्ताप ॥

भीषम पिता मोहिं अति भर्मा ❀ कहा शरण रक्षाको धर्मा ॥
अपने आश्रम आवै कोई ❀ ता सुख दिये कौन फल होई ॥

भीष्म उवाच ।

धर्म शरण रक्षा को जैसो ❀ त्रिभुवनमें कोउ और न ऐसो ॥
सुन इतिहास पुरातन बाता ❀ कथा कपोत बधिककी ताता ॥
नित प्रति वधिक रोपकै जाला ❀ हनै अनेक जीव तत्काला ॥
एक दिवस उठ चलो अहेरे ❀ बनमें बधिक कर्मके प्रेरे ॥
फिरत फिरत बन सकल अथायो ❀ कोऊ जीव हाथ नहिं आयो ॥
बधिकहि भटकत भई अबारा ❀ निष्फल उद्यम क्षुधा अपारा ॥
चारों ओर अंधेरी छाई ❀ कोउ जीव न देत दिखाई ॥
बर्षन लगेउ जोर से पानी ❀ तबतो बधिक अधिकभयमानी॥

दो० घन गर्जै लर्जै हिया. छिन छिन जिय अकुलाय ।
जलही जल कहुँ थल नहीं. आग चलो न जाय॥

चपला चमक चमक घन गर्जै ❀ कठिनशब्दसुनिसुनिजियलर्जै ॥
पशु पक्षी सब लगे पराने ❀ गिरि खोहनमें जाय लुकाने ॥
पंथ न सूझै चलो न जाई ❀ शीत भीत कापै अकुलाई ॥
थर थर थर सब करत शरीरा ❀ जकड़ै अंग होत अति पीरा ॥
गिरत परत आयो सो तहां ❀ रहि भय भीत कपोतनि जहां ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दूरहि ते तेहि बधिक निहारो ❀ झटपट पकर जालमें डारो ॥
भई अधीर धीर तनु नाहीं ❀ बिकल परी चिन्ता मन माहीं ॥
बारम्बार कपोतनि कहई ❀ कन्त अकेलो कैसे रहई ॥
मोहिं मरन की सँशय नाहीं ❀ पति न परे कहुँ बिपता माहीं ॥
मेरे मरे न होय अकाजा ❀ तुम्हैं न दुःख होय पति राजा ॥
दो० दैवयोग से बधिक ने, कीन्हेउ उतहि पयान ।
आश्रम जहाँ कपोत को, वहा ठौर नियरान ॥
सघन वृक्ष छाया अधिकाई ❀ मानो मन्दिर रचेउ बनाई ॥
सुनेउ चहचहा कछु न बुझाई ❀ तबहीं बधिक रहेउ मुरझाई ॥
माघ मास शरदी अति परही ❀ कँप कँपाय तनु थर थर करही ॥
भीजे ते बिह्वल तनु भयऊ ❀ क्षुधा अपार शीत दुख दयऊ ॥
मुख से बचन कहे नहिं जाई ❀ तनु गो ऐंठ काठकी नाई ॥
कपोतनी ने भी यह जाना ❀ मेरहि पति मेरहिं अस्थाना ॥
जब कपोत आयो तेहि ठाई ❀ तिया न दीख फिरो चहुँघाई ॥
लाग मनहिं मन करन बिचारा ❀ आज मोहिं सन्देह अपारा ॥
मनहिं मन कपोत अकुलाई ❀ कारण कौन नारि नहिं आई ॥
आवत मोते नित्य अगारी ❀ आज कछु न कछु संकटभारी ॥
दो० अहो प्रिया मोहिं छोड कर, कहां गई तू आज ।
तुम बिन मम जीवन कहा, लुटो मोर सब राज ।
माज मोर सुख विधना लयऊ ❀ सब सुखछीनदीनमोहिं कियऊ ॥
जब विधि रची सृष्टि यह सारी ❀ तियारूप मिथ्या विस्तारी ॥
जो दिन तिय सो परै बिछोहा ❀ ता दिन मिथ्या घर सो सोहा ॥
घर शोभा घरनी सों नेहा ❀ को दुख सहै आज यह गेहा ॥
इत उत दृष्टि कपोता करी ❀ देखी तिया जाल में परी ॥
कहा करूँ बल चलै न मेरो ❀ कहा उपाय करूं तिय तेरो ॥
बेवश जान मुष्टि गहि रहेऊ ❀ पतिसों बचन कपोतिनकहेऊ ॥
जो मेरो तनु परहित लागे ❀ दूजे मरूँ तुम्हारे आगे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

स्वामी धन्य भाग्य है येही ❀ परकारज आवै यह देही ॥
तियको बड़ो भाग्य अधिकाई ❀ पति अपने मुख करै बड़ाई
नारि धर्म है पति की सेवा ❀ और न पूजै देवी देवा ॥
दो० पति पूजन जो रातदिन, करै प्रेम से नारि ।
तिनको यश गावत सदा, देवी स्वर्ग मँझार ॥
जब जान्योपति अतिअकुलाना ❀ बोली तिय पिय कर्म प्रधाना ॥
काम न आवत सुत वित दारा ❀ छाँड़ि मोह कर धर्म बिचारा ॥
अब कह शोच करत हौ नाथा ❀ बिछुरन मिलन कर्मके हाथा ॥
धीरज धर्म सँभारो प्यारे ❀ आयो अतिथि तुम्हारे द्वारे ॥
बिपति परे पर धर्म जु करहीं ❀ ताको यश जगमें विस्तरहीं ॥
धन्य सुधर्म अतिथि घर आवै ❀ धन्य सुभोजन ताहि करावै ॥
नारि धन्य सो पुरुषहि भावै ❀ पुरुष सुधन्य धर्म मन लावै ॥
आरत दुखी शीत भय भीता ❀ आयो ऐसो गेह अतीता ॥
जो कछु बनि आवै उपकारा ❀ दीजे नाथ अतिथि आहारा ॥
अपने घर आवै जो कोई ❀ करै तासु सत्कार जु सोई ॥
दो० जो घर पर आवै अतिथि, करै तासु सन्मान ।
महायज्ञ जग में सुई, गावत वेद पुरान ॥
सुनि तिय बचन कपोता ज्ञानी ❀ धरि धीरज बोलेउ मृदुबानी ॥
हौं पक्षी उत्पति आकारा ❀ मोते कहा होय उपकारा ॥
हौं पुग उदर आपनो भरिहौं ❀ अतिथिधर्मकौनीबिधिकरिहौं ॥
उद्यम कारण चलेउ बिसूरी ❀ देखी अग्नि बरत कहुँ दूरी ॥
चोंच लकरिया जरती लीनी ❀ आनि बधिक आगे धर दीनी ॥
आनि चोंच सों लकरी पाती ❀ बारी अग्नि बिहंगम जाती ॥
अग्नि पजार बधिक पै आयो ❀ अतिथिबधिककोअधिकतपायो॥
छूटेउ शीत क्षुधा अकुलानो ❀ बहुरि कपोत देख पछितानो ॥
धिग धिग हम पक्षी कुलजाती ❀ अपनो पेट भरैं दिनराती ॥
एक सहस जनको दे खाहीं ❀ हम सों पेट पलत है नाहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बारम्बार बिसूरत आपू ❀ कैसे सहौं दुःख सन्तापू ॥
पक्षी पूर्व जन्म को ज्ञानी ❀ शोचसमक्ष मनमें यह आनी ॥
अपनी देह प्राण परिहरहूँ ❀ आदर अधिक बधिककोकरहूँ ॥
यह कह अग्नि माहिं सो परेऊ ❀ बधिक देख मन अचरज करेऊ॥
अर्थ धर्म हित छोड़े प्राना ❀ देखिबधिक मन उपजोज्ञाना ॥
मैं मानुष काहे को भयऊ ❀ सबदिन पाप करतही गयऊ ॥
मैं नर तनु धर करे कुकर्मा ❀ देखो इस पक्षी के धर्मा ॥
मैं सबको दीनो सन्तापा ❀ कियो अत्यन्त जीवको पापा ॥
मैं तो सर्व पापको भौना ❀ मोंहि नरक ते राखौ कौना ॥

दो० कबहुँ न कोउ तीरथ कियो, कबहु न न्हायो गंग ।
निशिदिन मारतही रहेउ, पक्षी और कुरंग ॥

जेहि तनु तप तीरथ नहिं कीनो ❀ जेहि तनु पर उपकारन भीनो ॥
ऐसो तनु मैं वृथा गँवायो ❀ मार मार जीवन को खायो ॥
जेहि तनु करत यज्ञ ब्रत दाना ❀ जेहि तनुमें उपजत शुभज्ञाना ॥
सो तनु पाप रूप मैं कीनो ❀ बहु प्रकार जीवन दुख दीनो ॥
यह नहिं है पक्षी को धर्मा ❀ सोई धन्य जो करै सुकर्मा ॥
जब यह पशु पक्षिन की रीती ❀ तऊ न तेरी गई अनीती ॥
फाड़ जाल लकड़ी परिहरी ❀ तुरतही बधिक दया मन धरी ॥
निकल कपोतिन कियो बिचारा ❀ पुरुष बिना सूनो सँसारा ॥
जैसे वृथा धर्म बिन गेहा ❀ जैसे वृथा प्राण बिन देहा ॥
जैसे वृथा खेत बिन बारी ❀ तैसे वृथा पुरुष बिन नारी ॥

दो० जैसे सरवर नीर बिन, ज्यों रजनी बिन चन्द ।
ऐसे नारी पुरुष बिन सहत सदा दुख द्वन्द ॥

जैसे गृही द्रव्य बिन छीना ❀ जैसे व्याकुल जलबिन मीना ॥
जैसे फल बिन उद्यम हीना ❀ ऐसे तिया पुरुष बिन दीना ॥
जैसे शशिबिननिशि अधिआरी ❀ ऐसे बिना पुरुष की नारी ॥
माता पिता भ्रात सँयोगा ❀ दारा पुत्र कुटुम्ब के लोगा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सजन सनेही अन धन धामा ❀ पति बिन और नआवतकामा॥
पति बिन पतनी पतित नमगमें ❀ पति बिनअपतिनारिकीजगमें ॥
पति बिंनसबसुखबिपतिसमाना ❀ पतिबिनगतिनहिंहितमनमाना॥
दो० बिन पति अबला की कुगति, चाहै हौं सौ सुक्ख।
परतबिपति पर बिपति नित, जितदेखेतितदुक्ख ॥
पति सब बिपति बटावन हारे ❀ सो न रहे मम प्राणपियारे ॥
पति बिन कहा करौं हौं जीके ❀ करौं न बार जरौं सँग पीके ॥
परम धरम नारी को एहा ❀ सँग पुरुष के त्यागे देहा ॥
ताते सती होहु मैं आजू ❀ बहुरिमिलै ममपति सुख साजू॥
सती धर्म मम धर्म न दुजा ❀ जप तप नियम धर्म पति पूजा ॥
तिन्हैं कर्म कुछ दुर्लभ नाहीं ❀ जोनारी पति सँग जरि जाहीं॥
यह कह अग्नि मध्य सो परी ❀ साँची सती सत्य सों जरी ॥
सती धूम जब सुरपुर गयऊ ❀ जय जय देवलोकमें भयऊ ॥
देव विमान स्वर्ग ते आयो ❀ सुर किन्नर गँधर्व यश गायो ॥
सब मिल सती सराहन लागे ❀ पति के हेतु प्राण इन त्यागे ॥
दो० धन्य धन्य यह पक्षिणी, धन धन याको धीर ॥
प्यारे पतिके प्रेम में, कीन्हो भस्म शरीर ॥
चढ़ि बिमान सुन्दर तनु धारी ❀ पुरुष सहित बैकुण्ठ सिधारी ॥
ज्यों ज्यों दरश करै सब देवा ❀ अधिक सराहैं कर कर सेवा ॥
देववधू दर्शन को आवैं ❀ करैं आरती मंगल गावैं ॥
अहि को ज्यों बायगी नचावैं ❀ मंत्र शक्ति ताको गहि लावै ॥
अस तिय पतिहि नरक ते काढ़ै ❀ देव विमान स्वर्ग सुख बाढ़ैं॥
कैसो पाप पुरुष किन करही ❀ कहैं पुराण तिया लै तरहीं ॥
रोगी रुगी दरिद्री होई ❀ दुखी सुखी जानै सब कोई ॥
क्रोधी कुटिल कुरूप कुसेवा ❀ भामिनि को भरता गति देवा ॥
भामिनि भरता बचन न टारै ❀ आप तरै अरु पति को तारै॥
निशि दिन करै पती की पूजा ❀ पतिसम और देव नहिं दुजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० देखेउ धर्म सुधर्म को, कैसा सुभग प्रभाव।
सत्संगति से बधिक को. पलटो तुरत स्वभाव॥
साधु सँग को यह फल भाई ❀ परम सुबुद्धि बधिक कौ आई॥
निर्विकार निर्मल मन भयऊ ❀ तप के हित उत्तर दिशि गयऊ॥
शीत उष्ण दुख सुख सब सहेउ ❀ स्थित चित्त गुप्त ह्वै रहेउ॥
गहि वैराग्य ज्ञान उच्चाटा ❀ चलत न जानेउ अवघट घाटा॥
गयउ पाप हरि सन्मुख भयऊ ❀ सुर पुर वास बधिक ने लयऊ॥
सत्संगति को सखेउ प्रभाऊ ❀ भयो बधिक को शील सुभाऊ॥
जो यह कथा सुनैं अरु कहई ❀ तिनके पाप दोष नहिं रहई॥
कथा कपोत बधिक को गाई ❀ सम्पूरण भय दश अध्याई॥
भली कथा मोहिं पिता सुनाई ❀ गयो शोक त्रय ताप नशाई॥
धन्य धन्य प्रभु कृपानिधाना ❀ मम अवगुण एक न माना॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सवलसिंह चौहानभाषाकृते
कपोतबधिककथावर्णनोनाम दशमोऽध्यायः॥ १०॥

—:०:—

युधिष्ठिर उवाच।

दों० कृपा करहु जन जान निज, हरहु सकल सन्देह।
मोरि दुष्टता नहि गिनी, कीन्हेउ परम सनेह॥
महा कठिन गढ़ यह संसारी ❀ जिसमें कोटि बिपति भ्रम भारी॥
कैसे हो इन तें निस्तारा ❀ पिता कहो हित जान हमारा॥
कैसे यश गावैं सब कोई ❀ केहि विधि प्राप्ति सर्वसों होई॥

भीष्म उवाच।

सत्य बचन कह भीषम राऊ ❀ हरिसों प्रीति धर्म परिभाऊ॥
परदारा परधन परिहरहीं ❀ श्रद्धा सों हरि सुमिरण करहीं॥
सब के विषय आतमा जानो ❀ सब जग को एकहि पति मानो॥
सन्तोषी इन्द्रिय जित शूरो ❀ परम उदार ज्ञान मति पूरो॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कृष्ण कृष्ण तृष्णा तजि करही ❀ सो सँसार दुर्ग ते तरही ॥
यह सँसार तरन विधि गाई ❀ बढ़ै अधिक यश ओ सुनु भाई ॥
सम दृष्टी सब को अधिकारी ❀ बोले मीठे बचन विचारी ॥
दो॰ सुधा गरलको सम गने, कछु न हि करै बिचार ।
राम रूप सब मैं लखै, जहाँ तलक सँसार ॥
महा शुद्ध मन गाँठि न रहई ❀ हृदय और मुख और न कहई ॥
पर उपकार धर्ममय होई ❀ ताको यश गावै सब कोई ॥
जैसे होय सर्व सों प्रीती ❀ सुनहु युधिष्टिर ताको रीती ॥
घर माया ते होय उदासी ❀ तजि मद मोह होय बनवासी ॥
विष्ण भक्त से मिलै सदाई ❀ तासों प्रीति कर अधिकाई ॥
करै धर्म छोड़ै नहि नीती ❀ ऐसै होय सर्व सों प्रीती ॥
जैसे हरैं बिपति भ्रम भारी ❀ सो सब सुनहु सत्यव्रतधारी ॥
त्याग द्रोह सत्संगति करही ❀ सो सब महा बिपति भ्रम हरही ॥
अब हम बहुरि कहत समुझाई ❀ जाते छुटै बिपति दुखदाई ॥
जो अनन्य ह्वै हरि मन लावै ❀ रातं दिवस गोबिंद गुण गावै ॥
सब तजि राम नाम ब्रत धरहीं ❀ सो सँसार दुर्ग ते तरहीं ॥
दो॰ राम नाम उर धारि कर, करै भक्त दिन रात ।
इससे जग के तरनकी, और अधिक नहीं बात ॥
माता पिता तीर्थ गुरु देवा ❀ तुलसी गऊ साधु की सेवा ॥
ब्रत स्नान दया मन राखे ❀ श्रीरघुपति रघुपति मुख भाखे ॥
हरि गुण यश भावगत पुराना ❀ भारत कथा सुनै दै काना ॥
हरि भक्तों की सेवा करही ❀ सो नर निपन्देह भव तरही ॥
प्रातकाल करके असनाना ❀ गीता पढ़ै धरैं हरि ध्याना ॥
संध्या तपर्ण त्रिकाल करै सो ❀ भवसागर से सहज तरैसो ॥
करै कृष्ण चरणन सो प्रीती ❀ यह भव सिन्धु तरनकी रीती ॥
नारि धर्म अब कहौं बखानी ❀ चितदेसुनहु युधिष्टिर ज्ञानी ॥
भामिनि धर्म आप पहिचानै ❀ पुरुषहि नारायण सम जानै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दिनप्राते पुरुष बचनमन धरहीं ❀ सो संसार दुर्ग ते तरही ॥
बृथा और आराधै देवा ❀ तिय को परम धर्म पति सेवा ॥

दो० पतिही इक संसार में, पुरुष परम बिज्ञान ।
औरन को नारि गिनै, सोई नारी जान ॥
भवसागर के तरन को, वर्ण्यो सकल वृत्तान्त ।
रामनाम तारन तरन, करन सदा चित शान्त ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सचलसिंहचौहानभाषाकृते
पापदोषहरणकथावर्णनं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

युधिष्टिर उवाच ।

तुमको देव करहुँ परणामा ❀ कृपानिधान सकलगुण धामा ॥
अब यह कहिय कृपानिधाना ❀ तप है बड़ो कि समता ज्ञाना ॥

भीम उवाच ।

सकल ऋषिन को यह विचार ❀ तपसे समता अधिक अपारा ॥
सब साधन मिल यह विचारा ❀ जप तपते समाता अतिभारी ॥
अब सुनु तप समता की बाता ❀ कथा पुरातन वर्णौं ताता ॥
तप फल अरु समता फल यथा ❀ जाजुलि तुलाधार की कथा ॥
आसन तट समुद्र के तीरा ❀ कीन्हउ जाजुलि तप गम्भीरा ॥
बढ़ी जटा ओढ़े मृग छाला ❀ कीन्हउ तप बहु वर्ष विशाला ॥
अति अभिमान भयोतेहिमनमे ❀ मोसम और न को द्विजगणमें ॥
अधरम में न कबहुं अनुरागो ❀ वेद मार्ग में नित प्रति पागो ॥

दो० नरायण को भक्ति में रहै सदा लवलीन ।
करत तपस्या रात दिन, द्विजबर परम प्रवीन ॥

ज्येष्ठ मास पंचागिनि तापै ❀ बर्षा माहिन जल भय व्यापै ॥
जाड़े में रहै जल में ठाढ़ो ❀ धीर धुरंधर ब्रत को गाढ़ो ॥
करत करत तप अति अधिकाना ❀ तबद्विज मनउपजा अभिमाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

एक समय सो विप्र गुसांई ❀ बन में खड़ो काठ की नाईं ॥
ताकी घनी जटा लख अच्छी ❀ धरो घोंलसा कुलंग पच्छी ॥
जब यह भेद विप्र नै जानो ❀ स्थिर रहेउ न नेक हिलानो ॥
वर्षा बीत शरद ऋतु आई ❀ तब तिन अण्ड दये नृप राई ॥
जब द्विजवर ने अण्ड निहारे ❀ हलो न कहूं अंडन के भारे ॥
फूटे जब अण्डे पक्षीके ❀ दो बच्चे प्रगटे अति नीके ॥
समय पाय ते परम सुहावन ❀ भये सपक्ष दोउ मन भावन ॥

दो०रहन लगे आनन्द सों भये महा बलवान ।
देत कुलंग कुलिंगिनी, सदा खाना औ पान ॥

प्रात होत बन को उड़ जावैं ❀ संध्या समय फेर घर आवैं ॥
एक समय जो गे बन माहीं ❀ तीन मास लौं आये नाहीं ॥
अब नाहिं आवेंगे वह पच्छी ❀ तिनको मिली ठौर कहुं अच्छी ॥
यह बिचार करके निज मन में ❀ बहुरि करन तप लागो बनमें ॥
मो सम और न सबजग हेरो ❀ सबते अधिक भयो तप मेरो ॥
आप समान और जग माहीं ❀ दूजो तपसी जानत नाहीं ॥
औरन को तप भयो अधूरो ❀ मेरा तप भा सबसे पूरो ॥
यह सुनत तुरत भई नभबानी ❀ मति करमान अरे अभिमानी ॥
तुलाधार को सम जग माहीं ❀ धर्मी अबहि भयो तू नाहीं ॥
तुलाधार गया नहि ऐसे ❀ बकत फिरत तु जाजालि जैसे ॥

दो०नभवाणी के सुनतही, उपजो क्रोध अपार ।
देखूंगो मैं जायकर, तुलाधार को द्वार ॥

चलत चलत पहुँचो सो काशी ❀ जहां विराजैं शिव अविनाशी ॥
भैरव कोतवाल जहँ गाजै ❀ अन्नपूर्णा सदा बिराजैं ॥
मुक्तिमही सब मुनिन बखानी ❀ पहुंचेउतह जाजालिअभिमानी ॥
जब द्विजने सब नगर मझायो ❀ तुलाधार घृत बेचन पायो ॥
तुलाधार जाजालि पहिचाना ❀ कियो बहुत आदर सन्माना ॥
जो आये तुम मेरे पाही ❀ मोसम आज कौन जग माही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जो मैं कहू आपसों सुनिये ❀ सो सब अपने मनमें गुनिये ॥
प्रथम सिन्धु में तप तुम कीन्हों ❀ पर सुधर्म को रूप न चीन्हों ॥
जब पूरण तप भयो तुम्हारो ❀ शीश जटनको अधिक पसारो ॥
पक्षिन नीको नीड़ बनायो ❀ सुख दायक अतिपरम सुहायो ॥
दो० पक्षिन ने अण्डा धरे, तुम जानो सो भेद ।
देह करी सब काष्ठ सम. होय न पक्षिन खेद ॥
जब वह पक्षी उड़ गये बनमें ❀ छायो गर्व तुम्हारे मनमें ॥
जब तू भयो महा अभिमानी ❀ तुरतहि तोहिं भई नभ बानी ॥
सो सुनिकठिनक्रोधतोहि आयो ❀ दूँढ़ दाँढ तैं मुझको पायो ॥
हे द्विजवर पूँछत हौं तोसों ❀ अब मैं करौं कहौ जो मोसों ॥
यह सुनजाजलि अतिअकुलानो ❀ कैसे भेद वणिक ने जानो ॥
एक ब्रह्म सबही सँसारा ❀ जानो बहुत ज्ञान व्यवहारा ॥
बेंचत बस्तु जगत की सारी ❀ ऊँची हाट ठाट अति भारी ॥
मोहिं अचंभा यह आवत है ❀ धर्म कहां जब रस वेचत है ॥
कहो मित्र सब भेद बुझाई ❀ कैसे धर्म रहत है भाई ॥
मेटहु सब सन्देह हमारा ❀ धर्म कहां जब यह व्यवहारा ॥
दो० जाजलि क यह बचन सुन, तुलाधार गुणखानि ।
रस बेचन में धर्म की, कहा होत है हानि ॥
धर्म तत्व सूक्षम है जगमें ❀ सदा चलत हौं मैं तेहि मगमें ॥
लवणादिक रस उत्तम लैकै ❀ बेंचत सदा निष्कपट ह्वैकै ॥
धर्म सोई सब जगमें जानो ❀ जो कुछ महज्जनन में मानो ॥
काहू में न कामना राखौं ❀ मिथा कबहुं न मुखसे भाषौं ॥
जो जन मोहि बचन कटुभाषत ❀ तासु द्रोह मनमें नहिं राखत ॥
कंचन माटी को सम मानो ❀ सबमें एक भाव निज जानो ॥
चहिये सदा अहिंसा करणी ❀ जाकी कथा मुनिवरन वरणी ॥
अभय देत सब प्राणिन जो है ❀ आपहि अभय लहत जन सोहै ॥
यह विचार सब प्राणिन माहीं ❀ देत रहतहौं अभय सदाहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बेंचत धेनु वत्स अरु धरणी ❀ कबहुं न सुधरत उनकी करणी ॥
यह मैं सुनी मुनिनके मुखते ❀ कबहु न करत रहतहौं सुखते ॥

दो० कीजै सकल बिचार कै ज्ञानदृष्टि सों जोंय ।
बिना बिचारे जो करै, कार्य सिद्ध नहिं होय ॥

जौ नर समता जानत अहहीं ❀ समता समझ सर्व सुख लहहीं॥
पूरब संस्कार मति सारा ❀ ताते उपजो ब्रह्म विचारा ॥
ना मैं पढ़ो न अति तप कीन्हों ❀ ना उपासना में मन दीन्हों ॥
जो कछु देखो ज्ञान प्रकासू ❀ सो मेरो पूरन अभ्यासू ॥
काहू को न दोष हौं कहूँ ❀ राखौं धर्म सत्य उच्चरहूं ॥
बिष्णु विष्णु निशिवासर भाखूं ❀ समता भाव सबन सों राखूं ॥
विप्र धेनु गुरु को सन्मानों ❀ सबही में नारायण जानों ।
वाराणसी बसौं जहं गंगा ❀ करौं सदा संतन सत्संगा ॥
तुला पकर कर घाट न देहूँ ❀ अंश परायो कबहुँ न लेहूँ ॥
करत गउ गुरु जानकी सेवा ❀ याते जानत हूं सब भेवा ॥

दो० गोपदरज ऊपर परत, कलिमल सकल नशात ।
गुरु जन के सत्संग सों, हियो शुद्ध हो जात ॥

दुखी दरिद्री मूरख मानी ❀ नहिं जो कोइ दहै अज्ञानी ॥
सो नर अन्ध नरक में परहीं ❀ बहुरि दरिद्री है अवतरहीं ॥
मद बिन सब रस बिक्री करहूँ ❀ हानि लाभ कछु मन नहिं धरहूं ॥
भये गये को नहिं सन्देहा ❀ समता ज्ञान हमरो एहा ॥
दुख उद्वेग न काहू देहूं ❀ अवगुण तजि सबको गुणलेहूं ॥
नहिं अस्तुति नहिंनिन्दा करहूं ❀ सबको एक भाव मन धरहूं ॥
अन्ध कुबुद्धि बधिर जो होई ❀ इन्द्रिन बिषय भ्रष्ट हैं सोई ॥
शुद्ध भाव सब सों सम रहौं ❀ काको शत्रु मित्र मैं कहौं ॥
भलो बुरो शुभ अशुभ न मानों ❀ निज आत्मा सबही में जानों ॥
सरवर नदी समुद्र समानों ❀ तीरथ मठ पर्वत सम जानों ॥
आश्रम वरण बराबर मेरे ❀ सबहीं में नारायण हरे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० जल थल अग जग सकलमें,रहेउविश्वपतिभास ।
सूर्य चन्द्रमा मे सदा, उसही का परकास ॥
सब में व्याप रहेउ नारायण ❀ निशि दिन करत रहतपारायण ॥
इस प्रकार तप करौं सुधर्मा ❀ ममता त्याग अचारौं कर्मा ॥
लोभ मोह सब मैं परिहरहूं ❀ कबहू क्रोध न मनमें धरहूं ॥
मैं सब दशा कही कुशलाता ❀ जाजलि समुझ लेहुयह बाता ॥
जिन पच्छिन को तब शिर बासा ❀ चलेगये बन तजि सब आसा ॥
कैसे तज कर जटा तुम्हारी ❀ फिरत रात दिन बिपिन मंझारी ॥
दिजवर उनको वेग बुलाये ❀ कुछ उनसेसमुझो समझाओ ॥
सुन दिज तुलाधारकी बानी ❀ शीघ्र बुलाये दोउ दिज ज्ञानी ॥
जाजलि तुलाधार रहे जहां ❀ तबपक्षी उड़ि आये तहां ॥
पक्षी शीश नाय पग लागे ❀ हे दिज अबहिं माह में पागे ॥
दो० सुजन कुजन के मार्ग जे, तिनको द्विज तूदेखा ।
देखेगो तब परैगो, भलो बुरो आलेख ॥
समतासमकोउसमनहि दिजवर ❀ समता परम धर्म धरणी पर ॥
दुस्कर तप कीजै अधिकाई ❀ सो तप गर्व करत मिट जाई ॥
छांड़ो मोह दम्भ मद हानी ❀ ध्यनी सों समता पहिचानी ॥
भस्म रमाय जटा शिर धरहू ❀ है मुण्डित त्रिदण्ड लैकरहू ॥
फिरो सदा दण्डकवन माहीं ❀ बिना भक्ति किञ्चतफल नहीं ॥
बृथा कलेश मरो पचि कोई ❀ समता बिना मुक्ति नहिं आनो ॥
मुखसे ज्ञान ध्यान कौ गानो ❀ समत ज्ञान हृदय नहिं आनो॥
मन वच कर्म ध्यान नहिं धरहीं ❀ मिथ्याचार सबै सो करहीं ॥
इन्द्रिय हाथ अपने नाहीं ❀ तौ कत बृथा बसो बन माहीं ॥
इन्द्रियजीत धरहि किन रहई ❀ सो नर परमधाम पद लहई ॥
बिना ज्ञान जप तप आचारा ❀ तन मन का दुख देने हारा ॥
दो० ज्ञान बिना नहिं भक्ति है, भक्ति बिना नहिंध्यान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ध्यान बिना समता कहाँ, अहो विप्र बिज्ञान ॥
काहे देह वृथा श्रम सहई ❀ जो समता चितमें नहिं रहई ॥
अज्ञानी करैं कोटि उपाई ❀ ज्ञान बिना संशय नहिं जाई ॥

भीष्म उवाच ।

पक्षी बचन सुनत सुख भयऊ ❀ तब ऋषिपरम ज्ञानपद लयऊ ॥
सत्संगति को यह फल भाई ❀ जाजलि के समता मति आई ॥
अहंकार ममता मिट गई ❀ परम स्वरूप ज्ञान मति भई ॥
समता भई ज्ञान पहिचानो ❀ सर्वरूप परमेश्वर जानो ॥
तुलाधार से मांग बिदाई ❀ जाजलि गयो बनहिं नृपराई ॥
पक्षिन शाप तुरत मिट गयऊ ❀ नरतनु धर अति आनंद भयऊ ॥
समताने सब को निस्तारो ❀ सो समता तुमहूं उर धारो ॥
समताको देखउ फल राजा ❀ सिद्ध भये सबहिन के काजा ॥
तुलाधार द्विजराज कहानी ❀ वर्णन करी सकल नृप ज्ञानी ॥
जो यह कथा पढ़ै अरु कहइ ❀ तांको ज्ञान धर्म नित रहइ ॥

दो०ऐसे सुखद अनेक हैं, भारत में इतिहास ।
हरत सकल कलिमल कलह, देत स्वर्ग को बास॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंह चौहानभाषाकृते
जाजलितुलाधारकथावर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥

अर्थ धर्म दोऊ फलदायक ❀ इनमें कौन महा अघदायक ॥
मोहि समुझाय कहो सब बाता ❀ दुहुमें अधिक भलो को ताता॥

भीष्म उवाच ।

धन इच्छा मनमें सब लहइ ❀ धनते धर्म भला ऋषि कहई ॥
कहूं पुरातन इक इतिहासा ❀ विप्र एक धन काज उदासा ॥
धनके हित आराधै देवा ❀ कर देखो सबही की सेवा ॥
सेवा करी तबै धन भयऊ ❀ बहुत भांति उद्यम मन ठयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सब तति उद्यम कीजै सोई ❀ जाते क म धाम भन होई ॥
कुण्डाधाई की सेवा ठानी ❀ धन पावन को यह मत आनी
द्विजवर तपको उद्यम कियौं ❀ देवा कुण्ड शरण मन दियो ॥
धन धन धन धन रटनालागी ❀ धन दे मोहि करो बड़ भागी ॥
कुण्डधार द्विजबर को देखी ❀ मनमें भयो प्रसन्न विशेषो ॥
काहे देत विप्र दुख तनको ❀ अबहिं जात तेरे हित धनको ॥

दो० कुण्डधार यह कह गयउ, परम धाम तत्काल ।
ब्रह्मा विष्णु महेश जहँ, राजत रूप विशाल ॥

लागो करन चरन करे सेवा ❀ होहु प्रसन्न दास कर देवा ॥
देव दया अब मोपर कीजै ❀ जो कछु वौं चाहों वो दीजै ॥
कुण्डधार तुम चाहो जोई ❀ हम प्रसन्न है देहैं सोई ॥
विप्र एक मम शरणै आयो ❀ ताको धन दीजै मन भायो ॥
कही त्रिदेव सुनो द्विजराई ❀ बिना धर्म धन है दुखदाई ॥
चाहे धन मनुष्य जो कोई ❀ धर्म बिना धन कबहु न होई ॥
जिनके धर्म बसे मन माहीं ❀ सदा लक्ष्मी रहत तहाहीं ॥
धर्महि धन विद्या धन रूपा ❀ धर्महि ते सुखराज अनुपा ॥
धर्महि ते मन सुख सन्तोषा ❀ धर्महि ते नर पावैं मोक्षा ॥
धर्म अकुलनी कुलीन जहाव ❀ धर्महि ते सुरपुर नर पावैं ॥

दो० धर्महि ते कीरति बढत, धर्महि ते यश होय ।
धर्महि ते आनँद बढत. धर्म देत दुख खोय ॥

लोभ मोह समता को हरक ❀ हरि हरि भजै धर्म चित धरिकै ॥
धर्म अनेक धर्म तज करहीं ❀ धूरि समेट वृथा पछि मरहीं ॥
धर्म वासना जो मन लावैं ❀ दारिद्रहू स्वर्ग सिधावैं ॥
जो धनपाय धर्म नहिं करही ❀ देखत घोर नर्क में परहीं ॥
कुण्डधार सुन शिव अजबानी ❀ अधिक धर्म की महिमा जानी ।
चहिये और यत्न नहिं करनो ❀ सबसे अधिक धर्म फलबरनो ॥
दे इक वस्त्र बिदा तेहि कीन्हों ❀ कुण्डधार शिर पर धर लीनो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शोश नाय बोलों द्विजराई ❀ धर्मकथा मोहिं भली सुनाई ॥
मैं अज्ञान न जानत भेवा ❀ अब भई कृपा तुम्हारी देवा ॥
आशा सहित लोभ मन धरऊ ❀ तृष्णा जान बहुत किन जरेऊ ॥
दो० यह तृष्णा पापिनि मेरे, राम रोम रहि व्याप ।
धर्म कथा सुन कर प्रभू, मिटे मोर त्रयपाप ॥
कुण्ड वस्त्र जो हरि सों लायो ❀ सो द्विज को दै धर्म पढ़ायो ॥
सब सुख छांड़ि करो बनवासा ❀ करो धर्म तजिकें सब आसा ॥
धर्म छाड़ि जो उद्यम करही ❀ ते जग माहिं बृथा पचिमरहीं ॥
धर्मसमुद्र निकट विसरायी ❀ मृग तृष्णा जल अन्त पायो ॥
सकल पुराण वेद यहू कहई ❀ पूरब कियो सो अब फल लहई॥
होप्रत्यक्ष कर्म जो करही ❀ वृथा परिश्रम कर कर मरही ॥
ताते चित कलेश न करिये ❀ पूरब कियो सफल मन धरिये ॥
पौष वृथा भाग के आगे ❀ कछु नहिं फलै कर्मके त्यागे ॥
सुनके बिप्र गुरूकी बानी ❀ धन्य धन्य प्रभु आतम ज्ञानी ॥
धर्म मार्ग तुम मोहिं दिखायौ ❀ सकलकलहकलिकलुष नशायो॥
दो० धर्म रूप धर्मात्मा, की-हेउ धर्म प्रकाश ।
धर्मके हैं बल खड्यो, पृथ्वी अरु आकश ॥
जा धन ते मेरो मन मानो ❀ सो धन नरक रूप मैं जानो ॥
दृष्टिचक्र मेर अति भगऊ ❀ तुम्हारी कृपा सकल दुख गयऊ ॥
साधु कृपाते उपजो ज्ञाना ❀ सबते अधिक धर्मको जाना ॥
लोभ मोह मेटो भ्रमजाला ❀ धन्यधन्य प्रभु दीनदयाला ॥

भीष्म उवाच ।

गुरूको नमस्कार तित कीनो ❀ केवल ज्ञान धर्म मन दीनो ॥

ब्राह्मण उवाच ।

मैं तो अर्थ लोभ मन दयऊ ❀ तुह्मारा कृपा कृतारथ भययऊ ॥
ज्यों निशि नाशे प्रगटे भानू ❀ तुम ते प्रगट भयो अस ज्ञानू ॥
तुम्हरी कृपा भयो वैरागा ❀ ब्रह्मभाव समता मन लागा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गुण अवगुण दुविधा मन गई ❀ दुख सुख मिटो शान्त मतिभई ॥
अब में धर्महि नाहि बिगारौ ❀ धर्म धर्म दिन राति पुकारौ ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
ब्रह्मगकथा वर्णनानाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

जबतृष्णा कर अति अकुलाई ❀ ताकी जरन कौन बिधि जाई ॥
कौन कर्म नाशो सब दोषा ❀ किहिबिधि उपजे मन संतोषा ॥

भीष्म उवाच ।

भावी होनहार जो होई ❀ ताको मेट सकैं नहिं कोई ॥
यहैं जान धर्महि मन धरहू ❀ तृष्णा जरन करत मति जरहू ॥
जाते तृष्णा सत्य बुझाई ❀ मंकी कथा जहौ समुझाई ॥
मनकी यत्न बहुत बिधि करही ❀ ताहि अर्थ उद्यम नहि सरही ॥
उद्यम करै बहुत चितलाई ❀ बढ़ी न कछु धनकी प्रभुताई ।
रह न जब कछु ताके पासा ❀ लागो करन पराई आशा ॥
इत उतसे उधार धन आनी ❀ तब तिन लिये बृषभद्वै जानी ॥
बृषभहि फेरन लागो जबही ❀ आगे कर्म आयगो तबही ॥

दो० उतते आयो ऊट ईक, इतते दोऊ वृष जात ।
फस गये ताके कण्ठ में, दिन बिगरे की बात ॥

खैच लै चलो दोऊ वृषनको ❀ भाज गयो लै बृष सो बनको
वृषको जब नहि लगो ठिकानो ❀ तबतो मंकी अति घबरानो ॥
जो जो मैंने कार्य बनायो ❀ निष्फल भयोअर्थ नहि पायो ॥
सब उद्यम मै करकर हारो ❀ चलत न बिधना से कुच चारो ॥
बिधिकी गति कुछ लखी नजाई ❀ कहा भई औं कहा बदाई ॥
वृथा दुःख सुख सो क्यों टरही ❀ यह मन मूर्ख वृथा श्रम करही ॥
औरहि चितवत औरहि भयऊ ❀ मोती चाहत मणि गिरगयऊ ॥
जब बिधना उलटे दिन करही ❀ कैधन जाय कि धनपति मरही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जो कोउ अधिक उपाय बनावै ❀ भाग्य बिना सों कबहुँ न पाव ॥
बुधि ब मंत्र नही धन होई ❀ कोटि ऊपाय करौ किन कोई ॥
जों धनकों शोचत दिन जाही ❀ लाभ अलाभ होंत क्षण माही॥

दो० पूर्वजन्म के हैं काऊ, कर्जदार वृष ऊंट ।
अबलौं कहुँ पाये नहीं, गये कौनसी खूंट ॥

अबसब खोंय समझ मोहि आई ❀ है यह द्रव्य महा दुखदाई ॥
धर्म सहित जो उद्यम करही ❀ दुखी न होंय क्षमा मन धरही ॥
काम क्रोध मद जब मीटजाई ❀ ब्रह्मज्ञान प्रगटै उर आइ ॥
ब्रह्मज्ञान स्थिर जब होइ ❀ आनंद रूप लखै नर सोइ ॥
ऐसे मंकी समझो जबहीं ❀ पूरण ब्रह्म रूप भयो तबहीं ॥
सबको त्याग भयो बैरागी ❀ धन्य धन्य मंकी बड़ भागी ॥
पाय उदार ज्ञान मतिधारी ❀ धिगधिगधिगधिगधिगसंसारी ॥

भीष्म उवाच ।

राजा तृष्णा ऐसे जाइ ❀ मंकी ने ज्यों तुरत बुझाइ ॥
जो यह कथा सुनै चितलाई ❀ ताकी सब संशय मिट जाई ॥
परवै पद निर्वाण अनूपा ❀ चित्त दे सुनहु युधिष्ठिर भूपा ॥

दो० कीजै ज्ञान कुठार सो, इच्छा बस्तु निर्मूला ।
ब्रह्मज्ञान उपजै हृदय. मिटे मोह भ्रम शूला ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
सन्तोषप्रकाश वर्णनोनाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

—:०:—

युधिष्ठिर उवाच ।

धर्माध्यक्ष धर्म तम ज्ञाना ❀ गुरु आज्ञा सेवा बड़ जाना ॥
बौद्ध नहुष सों जो कछु कहेऊ ❀ सो सबकथा सुनन चित भयऊ॥

भीष्म उवाच ।

सप्तऋषिन जो ज्ञान उपदेशा ❀ कहेउ बौद्ध सो सुनहु नरेशा ॥
यह इतिहास पुरातन कथा ❀ बौद्ध जु कहौ नहुषसों यथा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सो सब तुम सों पाण्डव कहहूं ❀ सब सन्देह तुम्हारे दहहूं ॥

नहुष उवाच ।

मुक्तिरु ज्ञान पाइये जैसे ❀ अरु निश्चल मति होवै तैसे ॥
जैसे हौ पाऊं यह सारा ❀ सो स्वामी तुम कहो विचारा ॥

बौद्ध उवाच ।

करत न हम उपदेश भुवाला ❀ अरु नहिं शिक्षा देत विशाला ॥
जो उपदेश मोक्ष के नीके ❀ जानत हो तुम यत्न सभीके ॥
जिनसे मैं गुरु दीक्षा पाई ❀ तिनके नाम सुनो नृपराई ॥

दो० चील्ह, पिंगला, तीरगर, सर्प, कुमारि विहंग ।
यह मेरे छः गुरु भये, लगो इनहिं का रंग ॥

चील आदि षट् गुरू हमारे ❀ अवगुण तज सबके गुण धारे ॥
चील्ह मांस ले उड़ी अकासा ❀ पक्षिन घेर लियो चहुं पासा ॥
घेरत मांस छांड़ि तिन दीनो ❀ निस्सन्देह हो मारग लीनो ॥
इस प्रकार संगत गृह त्यागै ❀ फिर नहिं कोई आपदा लागै ॥
यह सब गति मेरे मन भाई ❀ तब अपनी गुरु चील्ह बनाई ॥
वेश्या एक पिंगला बाला ❀ शुद्ध बुद्धि अतिरूप विशाला ॥
व्यसनी की नित इच्छा करही ❀ धनको ध्यान न चितसे टरही ॥
धनी आश जबलों मन लागी ❀ तबलों रति न भाग्य की जागी ॥
तजी आश जाते दुख होई ❀ तब पिंगला चैन सों सोई ॥
आश छोड़ जब अति सुखपायो ❀ तब वेश्याको गुरू बनायो ॥

दो० बिरचि रहेउ इक तीर गर, तीरहिं ध्यान लगाय ।
देखो कछु निकट ह्वै, गई सैन्य समुदाय ॥

चहिये ऐसो चित्त लगानो ❀ सैन्य नरेश जात नहि जानो ॥
ऐसे मन ईश्वर सों धरहीं ❀ और सकल चिन्ता परिहरहीं ॥
सन्मुख कटक जात नहिं दीखी ❀ यह गुण मैंने तासों सीखो ॥
संग्रहरम्भ बहुत दुखदाई ❀ पर घर रहे सर्प ज्यों राई ॥
इहि प्रकार छांड़ो गृह कूपा ❀ मिलै परम आनन्द अनूपा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

घर करने में कोटि बुराई ❀ यह शिक्षा संतन सों पाई ॥
इक कुमारि के घर संन्यासी ❀ आये कहुं ते तीरथबसी ॥
तिन हित लगी बनापन पूरी ❀ खट खट खटकन लागी चूरी ॥
इक इक कर कर चूड़ी फोडी ❀ एक एक कर में रख छोड़ी ॥
हो बेखटक बनायो भोजन ❀ लगे प्रेम से जीमन सोजन ॥

दो० रहै सकल घरबार तज, ऐसे आपुहि एक।
निशि बासर हरि हरि रटै, प्रगटे परम बिबेक ॥

भिक्षाबृत आश्रित जे आहीं ❀ सुख से रहत सदा बन माहीं ॥
इकलो बसनो अति सुखदाई ❀ यह सखी मोहिं कुमारि सिखाई।
छाड़ि द्रोह सब जीवन करो ❀ लहत विहंगम मोद घनेरो ॥
बन को बास सदा मन भायो ❀ यह मति मोहिं बिहंग सिखायो ॥
ताते यह तजिये सब संगा ❀ धारण करो ज्ञान को अंगा ॥
जब इन सबकी शिक्षा मानी ❀ आतम रुप भयो विज्ञानी ॥

भीष्म उवाच।

यह कह बौद्ध भवन निज गयऊ ❀ नहुषानंद बहुत मन भयऊ ॥
सर्वातमा लखें जन जोई ❀ समता ज्ञान ब्रह्म मति होई ॥
हे राजन यह षट् गुरु ज्ञाना ❀ नहुष नृपतिसों बौद्ध बखाना ॥
यह प्रसंग जो सुनैं सुकावै ❀ निश्चय वास स्वर्ग सो पावै ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
समताज्ञानवर्णननंमि पंचदशमोऽध्यायः ॥ १५ ॥

—:०:—

युधिष्ठिर उवाच।

दो० दयादृष्टि करके प्रभु, वर्णो प्रज्ञा ज्ञान।
लोभ मोह छूटै सकल, लगै हरि चरण ध्यान ॥

प्रज्ञा ज्ञान जासु बिधि होई ❀ ऐसी रीति बतावहु कोई ॥
जब संसार सकल सुख जाहीं ❀ तब वैराग होय मनमाही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भीष्म उवाच ।

पूरब भाग्य उदय हो तबही ❀ प्रज्ञा ज्ञान होय सब तबही ॥
प्रज्ञा ज्ञान जबहिं मन लागे ❀ तब संसार सुखन सों भागे ॥
है प्रह्लादहि नाम प्रमाना ❀ मंकी को भो जैसे ज्ञाना ॥
कहौं पुरातन कथा बखानी ❀ वैश्य एक धनमद अभिमानी ॥
रथ चढ़ि चलेउ गर्ब मय भरेऊ ❀ ताके धक्के द्विज गिर परेऊ ॥
वैश्य भजाय रथहि लै गऊ ❀ पश्चाताप विप्र मन भयऊ ॥
है सब दोष कर्मके मेरे ❀ ह्वैहै कहा वैश्य के घेरे ॥

दो० दूनो धन हो वश्य घर, यहै हमारे शाप ।
भुक्त गो सो समय पर, अपनी करनी आप ॥

धनी भये संतत दुखदाई ❀ यह अनीति अब सही न जाई ॥
हौं बहु दुखी कहा जी करहूं ❀ अबही प्राण त्याग कर माहूं ॥
कश्यप ने जब शस्त्र उठायो ❀ इन्द्र शृगाल रुप धरि आयो ॥

शृगाल उवाच ।

तुम जनि बिप्र शोक मन आनो ❀ पूर्वजन्म को दुख सुख जानो ॥
सम्पति विपति सबै सहि लीजै ❀ ओर हि काहू दोष न दीजै ॥
हम पशु जाति करैं कह कर्मा ❀ तुम मानुष जानो सब धर्मा ॥
सत्य बात समझाऊं तोहीं ❀ तू निज मोह मगन मति होही ॥
निज संतोष ज्ञान मन नहीं ❀ देखो सबै दरिद्री आही ॥
विषयी धन इच्छा मन करही ❀ ज्ञान पाय धन को परिहरही ॥
जो संसार सुखन ते रहई ❀ आनंद सहित परम पद लहई ॥
जरन अधिक तृष्णा जहं छाई ❀ तहां न सुख देखो द्विजराई ॥
जो पृथ्वी को पावै राजू ❀ तृप्त न होत सजै सुख साजू ॥
सदा मूर्खता में मन रहई ❀ मेरो मेरो सब कोउ कहई ॥

दो० यह मेरो घर बार है, यह मेरो परिवार ।
यह मेरो है सम्पदा, निशि दिन यही बिचार ॥

त्रिया पुत्र मित्रादिक भाई ❀ इनहि छोड़ यम के घर जाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धन सम्पदा सबै परिहरहीं ❀ धनते धनिक सबहिं मन डरही ॥
प्रथम धनिक राजा ते डरहीं ❀ कुल कुटुम्ब डर मनमें करहीं ॥
चोर दण्ड ते डरपै भाई ❀ पानी अग्नि देख अकुलाई ॥
जैसे आमिष पृथ्वी माहीं ❀ श्वान शृगाल सबै मिल खाहीं ॥
जो आमिष अकाशै जाई ❀ पक्षी बहुत लगै तेहिघाई ॥
मच्छ कच्छ पानी में खाही ❀ त्यों सुख कहूं धनी को नाहीं ॥
ताते धन तृष्णा तज दीजै ❀ निज संतोष हृदम में कीजै ॥
ज्यों तरंग उपजै जल माहीं ❀ ज्यों थिर नहीं वृक्ष की छा हीं ॥
ऐसे धन थिर कबहुं न रहही ❀ साद मूर्ख धन हित दुख सहही॥

दो० मुरख जन नित करत हैं, धन को सदा गुमान ।
काहू सँग नहिं जात धन, जात अकेले प्रान ॥

नहिं सूधो चितवत धनराई ❀ यह उन्माद करै बरियाई ॥
इतनो मद नहिं व्यापै ताही ❀ बुद्धिमान जो ज्ञानी आही ॥
ब्राह्मण जन्म श्रेष्ठ तनु पाई ❀ सो केहि हेतु तजब द्विजराई ॥
हमते धर्म न कोऊ सरई ❀ तौ यह देह न तनु परिहरई ॥
होकर गुणी प्रवीन सुजाना ❀ तुम क्यों विप्र तजत हौ प्राना ॥
मूंसे मेंडक सर्प अपारा ❀ योनि त्रियुगी श्वान मंजारा ॥
बहिरे पंगु अंध अरु रोगी ❀ गूंगे जीवन मन्द बियोगी ॥
अपने धर्म रहैं थिर जोई ❀ ता सम और न पंडित कोई ॥
तुम तो ब्रह्म वंश उजियारे ❀ प्राण तजत पापी हत्यारे ॥
तजहु शोक धीरज उर धारो ❀ राम राम मुखते उच्चारो ॥
भजन समान और तप नाहीं ❀ मिलत परम पद घरहीं माही ॥
शिबि दधीचि हरिचन्द नरेशा ❀ लियो परम पद तजो न देशा ॥
जनकादिक राजा जे भयऊ ❀ राज करत निर्भय पद लयऊ ॥
इन्द्रिय वश घरही वैरागी ❀ विषय तजै सो अति बड़ भागी ॥
सब तज विष्णु शरण किन जाई ❀ कत संसार दुःख अकुलाई ॥
सर्व रूप नारायण जानो ❀ निर्भय विष्णु चरण चित आनो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ब्राह्मण उवाच ।

हे पशु इक अचरज मोहि भारी ❀ को हो तुम शृगालतनु धारी ॥
अज हरि हर रवि चन्द्र सुरेशा ❀ हौ कोउ देव धरे मुनि वेशा ॥
रूप प्रकाश करौ तुम स्वामी ❀ जान परत मोहिं अन्तर्यामी ॥
धर्म रूप प्रिय बचन उचारे ❀ सुनत सकल दुख गये हमारे ॥

इंद्र उवाच ।

हम हैं इंद्र सुनहु द्विजराई ❀ तव दुख देखि दया मोहिं आई॥
सत्य रूप नारायण कानो ❀ सब संसार स्वप्नवत् जानो ॥
सकल साधु गुरु को परणामा ❀ प्रज्ञा ज्ञान सदा निष्कामा ॥

दो० पूर्व जन्म को भक्त जो, ताहि होय बैराग ।
हरि हरि हरि हरि नित रटै, सर्व बिषय को त्याग ॥

इति श्रीमहाभारते शान्तिपर्वाणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
उत्तमलाभकथावर्णनोनाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

यह संसार महा दुखदाई ❀ दुखही दुख नित देत दिखाई ॥
है सुख कौन जगत में ताता ❀ मोहि समुझाय कहौ सबबाता ॥
सबते कहा सर्व कल्याना ❀ भीषम पिता कहा निजज्ञाना ॥

भीष्म उवाच ।

निशिदिन क्षमा दयामन धरही ❀ अरुसब इंद्रिय निग्रह करही ॥
सब संसार मृतक कर मानै ❀ परमेश्वरहि सत्य कर जानै ॥
कहौं पुरातन इक इतिहासा ❀ सुनहु ध्यान धरतजि सबआसा॥
जो कुछ पुत्र पिता सों कहेऊ ❀ सुनहु तात मेरे मन रहेऊ ॥
ब्रह्मपुत्र मेधावी भयऊ ❀ पूंछन ज्ञान पिता पै गयऊ ॥
मोको कहा कर्म अब करनो ❀ कैसे रहौ पिता सो बरनों ॥
कहा सुदिन दिन करौ बिचारा ❀ सो सब कहौं सहित विस्तारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पिता उवाच

प्रथम वेद पढ़ करहु सुकर्मा ❀ पीछे ब्रह्मतत्त्व को मर्मा ॥

पुत्र उवाच ।

काल भुजंग रहेउ मुंह बाई ❀ दिन दिन बढ़ै रोग अधिकाई ॥
क्षण क्षण भंग होत तनु ताता ❀ तुम क्यों कहौ स्वार्थकी बाता ॥
ऐसे आयु क्षणहि क्षण क्षीना ❀ जैसे विकल थोर जल मीना ॥
यह तनु जात न लागे बारा ❀ कोऊ थिर न रहै संसारा ॥
जब लग नाही होत गिलानी ❀ तब लग रोग ग्रसे तहिं आनी ॥
जब लग नहीं काल सों दापा ❀ तब लग वेग संभारो आपा ॥
जब लग अति आपदा न आई ❀ तब लग दूर करो भय भाइ ॥
जब लफ देह देह नवराता ❀ तव लग बिष्णु संभारो ताता ॥

दो० जैसे जल में बुद बुदे, उठ उठ के गल जात।
ऐसेही गल जाय गो, एक दिना यह गात ॥

दारुण काल मृत्यु को भर्मा ❀ बालकपन ते कीजै धर्मा ॥
ज्यो तरुफल पकपक गिर परहीं ❀ त्यौंही काल सबन संहरही ॥
बालक ते तरुणापन भयऊ ❀ तरुणापन से बृद्ध ह्वै गयऊ ॥
जैसे घर जीरण गिर परही ❀ तैसे तनु धर सब सुख टरही ॥
ममता कर अपनो सब मानैं ❀ आप समेत जात नहिं जानैं ॥
जो मैं कही सेा मानेा बाता ❀ शिर पर काल न सूझै ताता ॥
जब आयुर्बल जात बिलाई ❀ आवत काल न जानेा जाई ॥
यह बिचार कर बिलम न कीजै ❀ बिष्णु चरण धर्महि मन दीजै ॥
जब ते भूल अपनपौ गयऊ ❀ तबते जन्म मृत्यु वस भयऊ ॥
सबहो जात मतक छिटकाई ❀ एक धर्म अपने संग जाई ॥

दो० होत न काहू का कोऊ, तात मात गुरु भ्रात ।
दो दिन के साथी सबै, अन्त धर्म सँग जात ॥

जानेा कालसिंह बलवाना ❀ तुरत निकार लेत हैं प्राना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ताते डर हरि सों कर नेहा ❀ सदा न रहै खेद को देहा ॥
दारा पुत्र मित्र अधिकाई ❀ अपनी अपनी कहत बनाई ॥
जिन जिनकोतुम सगो बिचारत ❀ ठोंक ठोंक कै सोइ पैजारत ॥
पानी अग्नि जरत सब जहां ❀ जठरागिनि में राखो तहां ॥
खान पान पूरत सब साजा ❀ सोकृतघ्न क्योंबिसरत आजा ॥
ऐसो रूप कहां ते आयो ❀ बनो बनायो कहां समायो ॥
कौन भन्धु अरू को परिवारा ❀ सब झूठों जग को व्यवहारा ॥
मारग में पंथी दिन चारी ❀ ऐसे सब कुटुम्ब नरनारी ॥
धरमें हितू जानिये जोई ❀ मरती समय संग जो होई ॥
होत कोउ काहूको नाही ❀ माया मोह झूंउ जग माहीं ॥

दो० कोऊ काहूको नहीं, झूठो माया मोह ।
धन्य वही जो त्याग सब, बसत गिरनको खोह ॥

हा हा तात तात कर रोव ❀ सर्प खाय मेंढ़क जिमि जोवै ॥
ऐसे मृत्यु ग्रसे सब कोई ❀ पंडित मुग्ध न छूटै सोई ॥
देह अनित्य जान अस लीजै ❀ हरि हैं नित्य ताहि मन दीजै ॥

भीष्म उवाच ।

पुत्र बचन सुन उपजो ज्ञाना ❀ परमातमा सत्यकर माना ॥
सर्व त्याय निस्प्रेही भयऊ ❀ श्री गोविन्द चरण मन दमऊ ।
लागे हरि हरि हरि हरि करनै ❀ निसिदिन प्रभुकीमहिमापरनै ॥
कभी कहैं तुम त्रिभुवन स्वामी ❀ कभी कहैं तुम अन्तर्यामी॥
कभी कहैं तुम शिव अजदेवा ❀ सुरनर मुनि नहि पावत भेवा॥
कभी कहैं तुत जगनिस्तारो ❀ कभी कहैं तुम मोहि उबारो ॥
कभी कहैं तुम हे गिरधारी ❀ पूजो मनकी आश हमारी ॥

दो० यही प्रकार करिकै बिनय, लगउ करन पुनि ध्यान ।
यह छबि मोहि दिखावहु, कृपासिन्धु भगवान ॥

सुन्दर श्याम पीत पट भ्राजै ❀ शंख चक्र कर गदा विराजै ॥
परम मुदित नयन अधिरामा ❀ वदन प्रसन्न भक्त सुखधामा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शीश मुकुट कटि पर पट भ्राजै ❀ पीताम्बर तनु अधिक बिराजै ॥
कम्बुकण्ठ सुन्दर भुज चारी ❀ हृदय भृगुलता सोहै प्यारी ॥
कर धनु सायक कटि तट माथा ❀ जन सुखदायक श्रीरघुनाथा ॥
चरण कमल कोमल अरुणारे ❀ कलिमल सकल निवारण हारे ॥
हृदय धारि द्विज ऐसो ध्याना ❀ परम उदार प्रगट भो ज्ञाना ॥
यहि छवि सो प्रभु शारंगपानी ❀ दीजै दरश मोहिं प्रभु आनी ॥
पुत्र पिता को ज्ञान बतायो ❀ सोसव क्रमक्रम तुमहिसुनायो ॥
प्रज्ञा ज्ञान होत हैं ऐसे ❀ पुत्र पिता उपदेशे जैसे ॥

दो० प्रज्ञा ज्ञान बिधान सब, कहेउ तुम्हिं समुझाय ।
चित्त न भटकवहु कहूँ, भजहु कृष्ण यदुराय ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सचलीमिह चौदानभाषाकृते
हरिदर्शनकथावर्णनोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

योगेश्वर जानै सब भेवा ❀ मुनिगण मध्य श्रेष्ठ शुकदेवा ॥
ब्रह्म भाव माया को त्यागू ❀ केहि सुख से उपजै वैरागू ॥

भीष्म उवाच ।

प्रथम गर्भ योगेश्वर जानो ❀ ताको व्यास आपनपौ मानो ॥
ज्ञानवान श्रद्धा सों रहेऊ ❀ ताते व्यास बचन सो कहेऊ ॥
क्षुधा पिपास दुख सुख रागा ❀ यह सब जीत करहु वैरागा ॥
मद षट कर्म क्रोध परिहरहू ❀ सब तज सत्य धर्म आचरहू ॥
बन्धु मित्र पुत्रादिक जेते ❀ कोऊ संग न लागहिं तेते ॥
धर्म बिना नर सदा अनाथा ❀ जीवन कर्म धर्म है साथा ॥
काम क्रोध मद लोभ अपारा ❀ दम्भ द्रोह निन्दा संसारा ॥
सांचो शुद्ध भाव मन धारो ❀ ऐसे ब्रह्मवर्य्य आचारो ॥

दो० आदि ब्रह्म अद्वैत अज, अविनाशी अविकार ।
ताहि भजो सब तजा भ्रम, जो चाहो निस्तार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हिंसा त्याग क्षमा मन आनो ❀ निर्मल स्वर्ग पन्थ पहिचानो ॥
हिंसादिक कुकर्म बेढंगा ❀ त्यागो परधन परत्रिय संगा ॥
सदा कुमति अवगुण सों प्रीती ❀ यह सब हैं अधर्म की रीती ॥
जहां न सुफल वृक्ष विश्रामा ❀ जहां न परमेश्वर को नामा ॥
धर्मातमा जहां नहिं कहिये ❀ ऐसे ग्राम देश नहिं रहिये ॥
मोह नींद में सोवत रैहो ❀ आंख खुलै तब फिरि पछितैहो॥
नीच मीच का भय अति भारा ❀ सावधान हो करो बिचारा ॥
जिनसों रीति प्रीति अति चाऊ ❀ ते सब क्षणमें होत बटाऊ ॥
जाति बन्धु मरघट लौं संगी ❀ संग न जात सगी अरधंगी ॥
आगे आप अकेलो जाई ❀ कोऊ संग न लागत धाई ॥

दो० तब रो रो पछितात है, मल मल दाउ हाथ ।
उस कुसमय में होत है, दान धर्मही साथ ॥

मिलत नहीं तेहि पथ विश्रामा ❀ नहिं अवलम्ब एक क्षणयामा ॥
कठिन पंथ अति कंटक जहां ❀ अन्धकार नहिं सूझे तहां ॥
वहां न कोउ होत सहाई ❀ मारत यम तब अति अकुलाई ॥
मात पिता सुत वित अरधंगी ❀ उस दुख में कोउ होत न संगी॥
और न काहू की तहं आशा ❀ ज्ञान दीप तहं करै प्रकाशा ॥
सत्संग दीप हृदय में धरहीं ❀ धर्म अनेक तेल तप करहीं ॥
दया रुई को बाती करिकै ❀ क्षमा दान दीपक में धरिकै ॥
भक्ति अग्नि सों ताकि पजारै ❀ बड़े यत्न सों उर में धारै ॥
यों दीपक बारिय चितलाई ❀ जासों नीच काल मिटजाई ॥
निसन्देह फिर कीजै भक्ती ❀ होय अधिक तब निश्चल शक्ती॥

दो० काल व्याल इस जीवको, डसत रहत दिन रात ।
भजन सार संसार में, और न दूजी बात ॥

क्षण में क्षणभंगुर तनु जाई ❀ ताते बेगि समझिये भाई ॥
कौन पिता को काको सुत है ❀ इस जग की माया अद्भुतत है॥
हिम ग्रीषम वर्षा ऋतु आई ❀ ऐसे दिन दिन आयु सिराई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इन्द्रिन वश सुत वित सत मानै ❀ हरिसों प्रीति रीति नहिं जानै ॥
जो निष्काम उग्र तप करहीं ❀ शोक मोह दारुण दुख हरहीं ॥
जरा आन जब तनु को गहई ❀ देह शिथिल सुधिबुधि नहिरहई॥
सुनत ज्ञान मनमें नहिं धरहीं ❀ ज्यों कर दीप कूप में परहीं ॥
पन्द्रह ते पचिस को भयऊ ❀ तऊ न ज्ञान रत्न मन दयऊ ॥
ज्ञानहि करै पाप को नाशा ❀ ज्ञान हृदय में करै प्रकाशा ॥
जब उपजै मनमें सन्तोषा ❀ ज्ञानहिं ते पावै नर मोषा ॥

दो० ज्ञान भानु जाके हृदय, कहै प्रकाश अपार ।
ताकी भव बाधा हरे, देय अक्षर फल चार ॥

ऐसे ज्ञान धर्म जे करहीं ❀ मनमें ताको फल नहिं धरहीं ॥
ताहि धर्म ते उपजै ज्ञाना ❀ सत्य बचन यह व्यास बखाना ॥

शुकदेव उवाच ।

तुम स्वामी सब धर्म सुनायो ❀ मिथ्या कर संसार दिखायो ॥
उपजायो मन ब्रह्म विचारू ❀ ब्रह्म विद्या कर परचारू ॥

व्यास उवाच ।

इन्द्रिय निग्रह अरु बनवासा ❀ बिन विद्या नहिं होत प्रकासा ॥
होय न ज्ञान बिना सन्तोषा ❀ तब लग जीव न पावै मोषा ॥
तपते पूर्व पाप सब टरहीं ❀ ब्रह्मज्ञान जीवहि नीस्तरहीं ॥
जो मधु अन्न मेलकर खाई ❀ बढ़ै क्षुधा सब रोग नशाई ॥
जीवन धर्म अर्थ परिमाना ❀ धर्महि को है केवल ज्ञाना ॥
ज्ञान बिचार धरे सो ध्याना ❀ लहै मुक्ति सों पद निर्वाना ॥

दो० रहत विष्णु के निकट नित, सदा उन्हींको ध्यान ।
और न चित भटकत कहूँ, येही पद निर्वान ॥

नित प्रति ब्रह्मज्ञान की गाथा ❀ पद्मासन कीजै मन हाथा ॥
मन वच क्रम हरि ध्यान लगावै ❀ सो नर अचल मुक्तिपद पावै ॥
प्रकृति पुरुष को पावै भेवा ❀ व्यास बचन समझो शुकदेवा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भीष्म उवाच ।

ब्यास कहा शुक समझो यथा ❀ तुम्हैं सुनाई नृप सो कथा ॥
धर्म समेत सुनै जो कोई ❀ निज मुक्तीहु पावै नर सोई ॥
जब यह ज्ञान चित्त में लागा ❀ तव शुक को उपजो बैरागा ॥
इस प्रकार भये शुक वैरागी ❀ भवसागर की माया त्यागी ॥
सब मुनि जनमें आदर पायो ❀ ब्रह्मज्ञानसे ध्यान लगायो ॥
जो जो प्रश्न किये तुम राई ❀ सो सब गाथा कह समझाई ॥
धन्य धन्य तू नृप बड़ भागी ❀ मिले तोहिं ऋषि मुनि बैरागी ॥

दो० श्रेष्ठ कथा शुकदेव की सुने सुनावै जोय ।
चला जाय बैकुण्ठ को रोक सकै नहिं कोय ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
श्रीशुकदेवकथावर्णनोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

भई अधिक श्रद्धा मम ताता ❀ कहो पितामह अब यह बाता ॥
जाते पाप दोष सब जाई ❀ भूमि दान कहिये समझाई ॥

भीष्म उवाच ।

भूमि दई तिन दीनो सर्व ❀ कनक आदि द्रव्यादि सर्व ॥
मन्दिर वापी कूप तड़ागा ❀ ताल ग्राम उपवन बन बागा ॥
अग्नि होम यज्ञादक जेते ❀ भूमि दानते सब फल तेते ॥
पृथ्वी कश्यप सों अस कहई ❀ मोहिं देय सो सब फल लहई ॥
प्रभु वराह ह्वै लाये मोही ❀ गुरू जान कर दीनी तोही ॥
मही दानदे कियो महीशा ❀ धन्य धन्य प्रभु हरि जगदीशा ॥
इद कही सुरगुरु सों बाता ❀ पृथ्वी दान बड़ो है ताता ॥
मोसों यह ब्रह्माने गाई ❀ सो मैं कहूँ तुमहि समुझाई ॥
जब गेहूं खेती बहु फरही ❀ हरी भूमिको दान जो करही ॥
ईख समेत खेत को दाना ❀ जाय स्वर्गचढ़ सुभग विमाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi. eGangotri. Funding by IKS.

शय्या सिंहासन शिर छत्रा ❀ हय गज रत्न अमूल्य बिचित्रा ॥
सूरज चन्द्र पर्व जब बीतै ❀ भूमि दानदै सब जग जीतै ॥
पृथ्वी दै अन्हाय जो कोई ❀ यज्ञ समान ताहि फल होई ॥
इन्द्र भूमि सुरगुरु को दीनी ❀ कीरति सकल लोक में लीनी ॥
वेदाध्ययन विप्रको दीजै ❀ अक्षय स्वर्गामृत फल पीजै ॥
ऐसे राजा तुमहूं देहू ❀ सुकृत धर्म करो अब एहू ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

पृथ्वी हरै पाप कह होई ❀ मोसों पिता कहो सब सोई ॥
जो काहू दूलेइ छिनाइ ❀ ताको दोष कहो समझाइ ॥

दो० पहिले पृथ्वी दान कर, पीछे लेय छिनाय ॥
तिन की गति कह होत है, कहा तात समझाय ॥

भीष्म उवाच ।

जो छीने कोउ भूमि पराइ ❀ साठसहस सो नरकहि जाइ ॥
पृथ्वी हरै पाप यह होइ ❀ कोटि जन्म रहै नरकहि सोइ ॥
अरु जे भूमि विप्रकी हरइ ❀ बनमें सिंह होय अवतरइ ॥
दई भूमि जो लेय छिनाइ ❀ नीच भवन जन्मे सो जाइ ॥
सगरादिक दीनी भू जानो ❀ राजा त्योंही तुम परमानो ॥
विवाद में गिरगट तनु धारो ❀ भलो बुरो कछु नहिं बिचारो ॥
जो जानै तो सांची कहइ ❀ नातरु मौन साध चुप रहइ ॥
श्रद्धा सहित कथा नित पढ़ई ❀ श्रोता फल पावै यश बढ़इ ॥
भूमि दान की कथा बखानी ❀ सुनि आपने नृप विज्ञानी ॥
भूमि दान से सब फल होइ ❀ समान दान नहिं कोइ ॥

दो० सर्वोपरि अनान्द मय भक्ति मुक्ति की खान ।
ताते सब तज कीजिय, हे नरेश भूदान ॥

इति श्रीमहाभारते शान्तिपर्वाणिसबलासिंहचौहानभाषाकृते
भूमिदानकथावर्णनोनाम एकोनविंशतितमोऽध्यायः ॥ १९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

युधिष्ठिर उवाच ।

भूमिदान को सुनेउ विधाना ❀ का फल होय कीये गो दाना ॥
मान्य पितामह आनन्द रहिये ❀ धेनुदान की महिमा कहिये ॥

भीष्म उवाच ।

अति पपित्र सब ते गोदाना ❀ भिन्न भिन्न कर वेद बखाना ॥
विधि सों गऊदान जो करहीं ❀ कुल समेत भवसागर तरहीं ॥
गऊ दूध है सुधा समाना ❀ देय सुपावत अमृत पाना ॥
बच्छा सहित जु कपिलागाई ❀ कनक शृंग पाटम्बर जाई ॥
अर्द्धप्रसूता गउ निरमेई ❀ मानो सकल भूमि सो देई ॥
तरुणी सूधी नम्र दुधारा ❀ वच्छा सहितसुकृत व्यवहारा ॥
दीजै तहां सुखी जहं होई ❀ उत्तम द्विज कुलीन हो जोई ॥
अशुचि अधर्म मूर्ख अकुलीना ❀ दुखी कुचाली कपटी दीना ॥

दो० लोभी लम्पट लालची, कपटी अरु अज्ञान ।
ऐसे द्विज को भूल के कभी न दे गोदान ॥

विधि सों नृप कीजै गोदाना ❀ पावो विष्णुलोक सुख नाना ॥
तेहि गुण पुत्र मित्र अधिकाई ❀ विष्णुलोक लौं होय बड़ाई ॥
राजा सुनहु पुरातन कथा ❀ शापो पुत्र ऋषीश्वर यथा ॥
उद्दालक तप करै घनेरो ❀ बेटा नाहकेतु ता केरो ॥
सेवत बहुत धर्म मन धरही ❀ निशिदिनटहलपिता कीकरही ॥
कहेउ ऋषीश्वर बचन सुभावा ❀ कुश फलफूल समिधलै आवा ॥
तब लौं उद्दालक उठि गयऊ ❀ पुत्रहि कछु बिलम्ब बन भयऊ ॥
नासकेतु खाली फिर आयो ❀ कुशफलफूल समिध नहिलायो ॥
रीतो देख भयउ मन दापा ❀ तबहिं पुत्र को दीनो शापा ॥
ताते उपजो क्षोभ आकाजू ❀ निश्चय यमहि देख तू आजू ॥

दो० शाप देत ऋषिराज के, आय गये यमदूत ।
पकर ले चले ताहि जब, तब बोलो ऋषिपूत ॥

मैं नहिं जैहौं संग तुम्हारे ❀ दुखी होयंगे पिता हमारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनकर नासकेतु की बानी ❀ बोले उद्दलक मुनि ज्ञानी ॥
तात तात कर रोये सोई ❀ मैं जो कियो करै नहिं कोई ॥
हे यमेश मेरो यह शापू ❀ यम दिखाय लौटावहु आपू ॥
जबमुनिशोकबहुतविध कियऊ ❀ भोर होतही पुनि सो जियऊ ॥
उठिके पितुके पांयन लागो ❀ मानो निशि सोवत ते जागो ॥
नासकेतु बोले करजोरी ❀ सुनहु ध्यान धर बिनती मोरी ॥
सुनिये पिता स्वर्गकी बाता ❀ मोहिं देख यय बिहंसो गाता ॥
जो जो मैं देखो सो सुनहूं ❀ भिन्न भिन्न सबके गुण गुनहूं॥
जहां तहां विचरहिं सुर देवा ❀ निशिदिनकरहिं बिष्णुकीसेवा ॥
दो० कहीं तपहिं आनन्द से, ऋषी मुनी अरु साध ।
कहीं लगावैं प्रेम से, योगी योग समाध ॥
बहुतक तपैं गंग के तीरा ❀ बहुत तपैं गिरि खोह गंभीरा ॥

उद्दालक उवाच ।

कहो प्रथम अपनी कुशलाता ❀ कहिये बहुरि स्वर्ग की बाता ॥

नासकेतु उवाच ।

धर्मराय यह बचन सुनाये ❀ तुम ऋषिराजा भले यह आये॥
स्वर्ग देख फिर आयो आपू ❀ ऋषिको बृथा जाय नहिं शापू॥

यम उवाच ।

हम सो कछुक मांग वर लेहू ❀ जाय पिताको उत्तर देहू ॥

नासकेतु उवाच ।

हे प्रभु मेरे पाप नशाओ ❀ धेनु दान फल मोहिं सुनाओ॥
गऊ दान को फल है जेतो ❀ हौं सो देखन चाहौं तेतो ॥
तब मोहिं लियो विमान चढ़ाई ❀ दिव्य लोक मैं देखेउं जाई ॥
दिव्य स्वरूप अप्सरा जहां ❀ मधु अरु क्षीर सुधा जल तहां॥
बहु दधि की तहं नदी बहाई ❀ मिश्री के पहाड़ तेहि ठांई ॥
दो० जहां तहां सुन्दर भवन, स्वर्ण कलश रहे राज ।
ध्वजा पताका मनहरण, द्वार द्वार रहि साज ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जिन दीना गोरस को दाना ❀ तिनहिं परमसुख सुन्दर नाना॥

भीष्म उवाच।

दान करै जो सहित विधाना ❀ सोंवोपरि उत्तम गोदाना ॥
जितने रोम गायके आहीं ❀ इतने दिवस रहै सुख माहीं ॥
बैतरणी की तारन हारी ❀ गो सम और कौन हितकारी ॥
जीते जी नित दूध पियावै ❀ अन्त समय सुरपुर पहुंचावै ॥
ताको धर्म होय अधिकाई ❀ जो कोउ देय प्रीति सों गाई ॥
धेनु महातम कहे बखानी ❀ सुनतेहि मिलै मुक्ति मन मानी॥
ऐसी गोदान की बड़ाई ❀ प्रीति सहित जो अर्पै गाई ॥
वर्ष इकोत्तर वर्ग बसाई ❀ आवागमन रहित हो जाई ॥
दिव्य लोक फल पावै सोई ❀ दान करै गायन को जोई ॥

दो० महिमा सब गोदान की, वरणी सहज उपाय।
भक्ति मुक्ति दायक सदा, सन्तन करै सहाय ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सवलसिंह चौहानभाषाकृते
गोदानमाहात्म्यकथावर्णनेनाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

युधिष्ठिर उवाच।

दान महात्म्य कहो अब ताता ❀ उपजी श्रद्धा मेरे गाता ॥
पिता बिचार कहो अनुमाना ❀ दानन मध्म बड़ो को दाना ॥

भीष्म उवाच।

पहिली कथा याद मोहि आई ❀ ऋषि नारद जो मोहि सुनाई॥

नारद उवाच।

कहत शास्त्र सब वेद पुराना ❀ सबते बड़ो अन्न को दाना ॥
अन्नहि धर्म कर्म उपजावै ❀ अन्नहि बुधि बल ज्ञान बढ़ावै ॥
अन्न देह में राखत प्राना ❀ अन्न दान सम और न दाना ॥
अन्न प्राण एकहि कर जाना ❀ अन्न दिया तिन दीने प्राना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अन्न दान ते शुद्ध शरीरा ❀ अन्न दान धारै मन धीरा ॥
अन्न दानते आवै ज्ञाना ❀ अन्न दानते लागै ध्याना ॥
अन्न दान सम दान न औरा ❀ जिमि केशव देवन शिर मौरा ॥
दो० अन्न दान आनन्द निधि, अन्न प्राण अधार ।
अन्नहि को सब जगत में, छाय रहेउ व्यौहार ॥
श्रद्धा सहित अन्न जो कोई ❀ देय प्रीति सों अति फल होई ॥
जाति परिक्षा कछु नहि कीजै ❀ क्षुधावन्त को भोजन दीजै ॥
भोजन समय आवै जो कोई ❀ भूखो अतिथि जानिये सोई ॥
जो जन भोजन ताहि जिमावै ❀ जग यश अन्त परम सुख पावै॥
दधि घृत अन्न सहित मिष्टाना ❀ श्रद्धा सहित कर जो दाना ॥
मिलै ताहि सुरपुर को बासा ❀ पूरण होय सकल मन आसा ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

कनक दान मोती मणि अंगा ❀ और अनेक द्रव्य बहु संगा ॥
सब दानन को जानो भेवा ❀ सबके बड़ो दान यह देवा ॥

भीष्म उवाच ।

अन्न दान की कथन कहानी ❀ कथा पुरातन कहौं बखानी ॥
बन महं वांछ तपहि नाचरहीं ❀ शिष्य सुभट सेवा नित करहीं ॥
दो० करत करत तप बांछका, भई अधिक कृश देह ॥
सुभट चरण पूजत रहत, गुरुसों परम सनेह ॥
कही शिष्य गुरुसों यह बाता ❀ जीवक्षुधाते अति अकुलाता ॥
मेरो बचन सत्य तुम मानो ❀ क्षुधादुःख प्रभुसकल बखानो ॥

गुरु उवाच ।

खड्ग त्रिशूल और सब धारा ❀ इन घायन ते क्षुधा अपारा ॥
मुद्गर चक्र शस्त्रक धाई ❀ इतने क्षुधा अधिक अकुलाई॥
तोमर शक्ति गदा कृपाना ❀ इनते कठिन क्षुधा के बाना ॥
अति क्रम होय क्षधा के सोगा ❀ मानो अनल ग्रसे सब रोगा ॥
लागै क्षधा सबै गुण खवारा ❀ सोहै नहीं रूप शृंगारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लागै क्षुधा बुद्धि नहिं रहई ❀ धीरज ज्ञान ध्यान सब दहई ॥
जो नहिं शीघ्रहि मिलै अहारा ❀ भूलै सबहो दम्भ अचारा ॥

सुभट उवाच ।

तुम जो क्षुधा वृत्तान्त बखाना ❀ सत्य सत्य स्वामी मैं जाना ॥
दो० होत क्षुधा बाधा जबहिं, बिसर जात सब ज्ञान ।
और कष्ट नहिं जगत में, दूजो क्षुधा समान ॥

क्षुधारोग जब तनु अकुलाई ❀ दीजे औषधि अन्न मंगाई ॥
दान क्षुधा महिमा जो गाई ❀ सबते अन्न दान अधिकाई ॥
बड़ो अन्न ते और न दाना ❀ देव मनुज सबही को प्राना ॥
बहुत बात कहि कहौं बनाई ❀ आतुर प्राण अन्न बिन जाई ॥
अश्वमेध यज्ञादिक जेते ❀ अन्नदान सों लहिये तेते ॥
अन्नदान सों पावै मोषा ❀ मानस पितृदेव सन्तोषा ॥
अन्नदान दायक कल्याना ❀ सब धर्मनमें धर्म प्रधाना ॥
और दानको पलटो होई ❀ याते उऋण होत नहिं कोई ॥
ताते बड़ो अन्न को दाना ❀ कहत शास्त्र सब बेद पुराना ॥

भीष्म उवाच ।

अरु इक कथा याद मोहि आई ❀ चित दे सुनहुँ युधिष्ठिर राई ॥
पी० आखौं देखी कहत हौं, गुप्त बात काउ नाहिं ।
अति अद्भुत लीला भई, पुरी द्वारिका माहि ॥

एक समय यदुपति सुखदानी ❀ भये प्रीतिवश सुरति भुलानी ॥
द्विज के तन्दुल लिये चबाई ❀ पीछे अन्नदान सुधि आई ॥
इक इक मुटी दियो इक लोका ❀ तबहुँ न गयो चितको शोका ॥
निजसे दूनों ताहि बतायो ❀ तबहुँ रहेउ मनमें पछितायो ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

हरितौ अवगति अखिलअरूपा ❀ कैसे भये प्रीतिवश भूपा ॥
सो मोहिं पिता कहो समुझाई ❀ जाते मम सन्देह नसाई ॥
तिल सबते पवित्र तुम कहेऊ ❀ सो चिन्ता मेरे मन रहेऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सो समुझाय कहो तिलदाना ❀ किहि बिधि करै होय कल्याना ॥

भीष्म उवाच ।

तिलको दान भलो है यथा ❀ सुन इक नृपति पुरातन कथा ॥
सुनत श्रवण उपजहि अल्हादा ❀ धर्मराज द्विजवर सँवादा ॥
दो० सो सब वर्णन करत हूँ, सुनहु पुत्र धरि ध्यान ।
त्रिभुवन में दूजो नहीं, तिलके दान समान ॥
अन्तखेद गांव इक रहेऊ ❀ तहां सुविप्र गेह कर लहेऊ ॥
एकहि रांति भांति गुण जहां ❀ एकहि नाम विप्र द्वय तहां ॥
अंगस्तिकर्मा तिनको नामा ❀ गोत्र अगस्त्य वेद विश्रामा ॥
ताको यम किंकर जु पठाये ❀ वा धोखे वाको ले आये ॥
वाके धोखे वह जब आयो ❀ धर्मराय यह बचन सुनायो ॥
विप्र आप मोहिं अधिक पियारे ❀ मेटो यह सन्देह हमारे ॥
जाके दिये बढै अतिधर्मा ❀ मोसों देव कहो सो कर्मा ॥
सुख कामना कवन बिधि होई ❀ कवन पुण्य पावै मिति सोई ॥
जो उत्तम दूतन सों डरहीं ❀ संयम नियम व्रतहु सो करहीं ॥
तिल पवित्र जानो अतिधर्मा ❀ तिलकर होम यज्ञ सब कर्मा ॥
दो० तिलहै परम पवित्र अति, देय जो तिलको दान ।
यमको भय आवै नहीं, होय परम कल्यान ॥
माघमास के पहिले पक्षा ❀ गोबर में मल कीजै वक्षा ॥
चारकोण विधि सों विस्तरहीं ❀ अष्ठकमलदल तापर धरहीं ॥
वस्त्र उढ़ाय पद्म विधि कीजै ❀ तनक तहां सोना धर दीजै ॥
मणि मोती फल गन्ध सुवासा ❀ करिके प्रीति धरै दधि आसा ॥
सोलह पात्र अन्न भर धरही ❀ व्रतकर दान तिलनको करही ॥
तादिन तिलहि करै अहारा ❀ सुमिरै वासुदेव करतारा ॥
माधव प्रीति मान मन लीजै ❀ जो तिलपद्म विप्रको दीजै ॥
देय जो विष्णुभक्त को कोई ❀ जो चाहे फल पावै सोई ॥
पावै अर्थ धर्म अरु मोषा ❀ मिटै ब्रह्महत्या द्विज दोषा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS.

जो तिलगुड घृत द्विजन जिमावै ❀ निश्चय परमधाम सो पावै ॥
दो० पितृ देव द्विज पाय तिल, मनमें होत प्रसन्न ।
करत प्रशंसा रात दिन, तिल समान नहिं अन्न ॥
छाया छत्र छांह सुख ठौरा ❀ वस्त्रदान पाटम्बर औरा ॥
दधि घृत सहित अन्नसुख हेता ❀ कूप बावडी ताल समेता ॥
स्रक चन्दन तांबूल फलदाना ❀ मिष्ठवचन सादर सन्माना ॥

भीष्म उवाच ।

राजा सकल धर्म आचरहू ❀ धीरज ज्ञान हृदय में धरहू ॥
सकल ज्ञान दाता तिल दाना ❀ तिलमाहात्म्य मुनिबरन बखाना॥
तिल समान कोइ दान न औरा ❀ तिलको दान सकल शिरमौरा ॥
यम संतुष्ठ होत तिल पाई ❀ सब नरकन में करत सहाई ॥
तिलको दान देत जो कोई ❀ यमपुर ताहि कष्ट नहिं होई ॥
तिलकी महिमा तुम्हैं सुनाई ❀ धीर धरहु चितमें नृपराई ॥
अन्नदान सर्वोपरि बरनो ❀ ताते अन्नदान नितकरनो ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
दानमें श्रेष्ठदानमहिमावर्णनं नाम एकविंशोऽध्याय ॥ २१ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

मोसों पिता कहो समुझाई ❀ सत्संगति में कवन बाई ॥
सत्संगति कबने फल होई ❀ मोहिं समुझाय कहौ पितुसोई ॥

भीष्म उवाच ।

सुनहु एक उत्तम इतिहासा ❀ जाते होय श्वर्गको वासा ॥
धीमर मच्छ सहित प्रतिवादू ❀ च्यवन संग उधार निषादू
मूनिको मार्ग जान नहिं परही ❀ गंगामध्य सु तप नित करही ।
करै निषाद वृत्ति व्यौहारा ❀ गंगामें डारो तिन जारा ॥
ताजार में च्यवन जब परेऊ ❀ देखि निषाद अधिक मन डरेऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मछुन महामुनि देखेउ जबहीं ❀ सब निषाद तहं आये तबहीं ॥
सब मछुवन मिल बिनती ठानी ❀ क्षमहु मोर दोष मुनि ज्ञानी ॥
हमरो तो यह उद्य पानी ❀ तुम क्यों फंसे जालमें आनी ॥
तुमहिं देख विह्वल तनु बानी ❀ अब हम कहाकरहिं मुनि ज्ञायी॥

च्यवन उवाच।

दो० होहु न अतिभय भीत तुम, धीर धरहु मनमाहि।
हमहुं सदा जलमें रहैं, तुमहिं तनक डर नाहिं ॥

धबराओ मत धीरज धारो ❀ सिद्ध करूं मैं काम तुम्हारो ॥
राजा नहुषहि सार जनाऊ ❀ तुमको अपनो मूल्य दिवाऊँ ॥

भीष्म उवाच।

समाचार जब नहुष जनाये ❀ सुनतहि गंग निकट सो आये ॥

नहूष उवाच।

नमस्कार कर बोले गाथा ❀ आज्ञा कहा देहु मुनिनाथा ॥

च्यवन उवाच।

मेरो मूल्य निषादहि देहू ❀ इनको जीवन उद्यम एहू ॥
सांचो धर्म बिचारो गाता ❀ राजा समझ हमारी बाता ॥ ॥

राजोवाच।

लाख करोरि और सब राजू ❀ मूल्य तुम्हार देहुं मैं आजू ॥

च्यवन उवाच।

राजा मिथ्या बोल न बोलो ❀ दे अब समझ हमारो मोलो ॥
जानो नहीं बोल को मर्म ❀ ऋषि सों कहो रहे ज्यों धर्म ॥

भीष्म उवाच।

राजा भय शंकित भो जहां ❀ गर्विजातु ऋषि आये तहां ॥
दो० कोटि भानु सम तेज जेहि, दशादिशिहोतप्रकश।
इत उत चितवत धरणी को, कबहु तकतआकाश ॥

गविजातु उच।

राजा निर्मोलक मुनि जानहु ❀ इतनो मूल्य और नहिं मानहु ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पूजे धर्म न और अनेरो ❀ है निज मूल्यगाय मुनि केरो ॥

च्यवन उवाच ।

मोर मूल्य कहौं गर्वी जाता ❀ राजा समझ आपने गाता ॥
मंगल रूप गायकी रेनू ❀ सबते अति पवित्र है धेनू ॥
गाय समान नहीं कोइ औरा ❀ जा गोबर पवित्र सब ठौरा ॥
तिहूँ काल गो सुमिरन करहीं ❀ ताको पाप दोष सब हरहीं ॥
अरु जो देय गऊ को ग्रासा ❀ ताको विष्णुलोक निज बासा ॥
सब देवन की स्वरूप गाई ❀ वेद धर्म ता चारो पाई ॥

निषाद उवाच ।

सर्व आपदा कुमति हमारी ❀ तुम्हरे दर्शन करत सिधारी ॥
परम दुःख काटन उपकारी ❀ कुटुँब सहित हम शरन तुम्हारी ॥

च्यवन उवाच ।

सत्संगति की महिमा गावै ❀ मच्छन सहित सर्व सुख पावै ॥
वेद पुराणन महिमा गाई ❀ तीरथ रूप साधु हैं भाई ॥

भीष्म उवाच ।

नहुषहि संबोधन जस भयऊ ❀ धर्म सहित अपने घर गयऊ ॥
जो यह कथा सुनै चितलाई ❀ ताको सकल पाप मिटजाई ॥

इति श्रीमहाभारते शान्तिपर्वणि सबलासिंहचौहानभाषाकृते
सत्संगतिमहिमा वर्णनो नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

केहि विधि सब तीरथ फल पावै ❀ घरमें रहै धर्म क्यों आवै ॥
तुम मुनि सब तीरथ फल लहौ ❀ मनसा तीरथ मोसों कहौ ॥

भीष्म उवाच ।

राजा सुनो पुरातन कथा ❀ लोमश कही जनक सों यथा ॥
लोमश सब तीरथ जब न्हाये ❀ बिचरत जनकराय गृह आये ॥
पूजा करयो बहुत मनुहारी ❀ बोले मीठे बचन बिचारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जब यह जनक चलाई वाता ❀ तुम कछु मोहिं पूछो अब ताता ॥

जनक उवाच ।

तुम स्वामी जानत सब भेवा ❀ मनसा तीरथ कहिये देवा ॥
सुनै चहौं प्रभु तीरथ धर्मा ❀ मोसों कहौ महा मुनि मर्मा ॥

लोमश उवाच ।

तीरथ ज्ञान क्षमा मन घरही ❀ निज तीरथ इन्द्रिय बस करही ॥
ब्रह्मचर्य कोमल मन माया ❀ तीरथ सब भूतों में दाया ॥

दो० तीरथ माता पिता गुरु, तीरथ जेठो भ्रात ।
तीरथ पितु के मित्र जे, उत्तम तीरथ जात ॥

तीरथ दोष रहित बैरागू ❀ निज तीरथ हिंसा को त्यागू ॥
बड़ तीरथ इन्द्रिन सों युद्ध ❀ निश्चय तीर्थ ज्ञान मन शुद्ध ॥
जल अस्नान शुद्ध नहिं होई ❀ जबलौं मन बश करै न कोई ॥
क्रूर नास्तिक चञ्चल सोई ❀ तीरथ गये शुद्ध नहिं होई ॥
जबलग मन प्रसन्न नहिं भयऊ ❀ तीरथ माहिं गयउ अन गयऊ॥
जलके जीव जलहिं में रहई ❀ ते तीरथ को फल नहिं लहई ॥
ताते निर्विकार मन रहई ❀ सोई सब तीरथ को फल लहई ॥
जो नर सत्य ध्यान ब्रत धारी ❀ सो सब तीरथ को अधिकारी ॥
ज्यों मद बासन शुद्ध न होई ❀ सहस बार किन डारो धोई ॥
बृथा सकल तीरथ नृपराई ❀ काम द्वन्द पाखण्ड न जाई ॥

दो० गंगा यमुना नर्मदा, काशी और केदार ।
चित्त शुद्ध तो शुद्ध सब, जगन्नाथ हरिद्वार ॥

जाय जो आदि गया कुरुखेतू ❀ पावै सब तीथनकर हेतू ॥
इन्द्रिय वश निर्मल मन जहां ❀ सब तीरथ घटही में तहां ॥
तीरथ ज्ञान ध्यान जल होई ❀ राग द्वेष मल डारो धोई ॥
ज्ञान क्षमा तीरथ मन लावै ❀ तब यह जीव परमपद पावै ॥
जहां साधु संगति को वासा ❀ जहां परम भागवत निवासा ॥
जहं हरि कथा नाम अवगाही ❀ तेहि आश्रम सब तीरथ आही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वासुदेव नारायण जेते ❀ तीरथ रूप जानिये तेते ॥
जहां विष्णु श्रीवैष्णव तहां ❀ तहां विष्णु सब तीरथ जहां ॥
जहं हरिभक्त तहां भगवन्ता ❀ जिनकोआदिमध्य नहिं अन्ता॥
ऊंच नीच हरिशरण जु आवै ❀ सोई धन्य जु जग यश पावै ॥
दो० जे नर हरि हरि करत हैं सब छल छिद्र विहाय ।
भक्ति मुक्ति भागी तेई, पाप कलाप नशाय ॥
हरि की शरण शुद्ध सब होई ❀ तीरथ हरि सम और न कोई
स्वपच नीच हरिशरण जु आवै ❀ होकर शुद्ध परम गति पावै ॥
ताकी जाति जु उधटै कोई ❀ जाय नरक निश्चय नर सोई ॥
जाति पांति बूझै नहि काई ❀ हरि को भजै सु हरिको होई ॥
सन्तोषी वैष्णव जो होई ❀ विष्णु रूपकर पूजै सोई ॥
तीरथ और भूमि पर जेते ❀ धर्म सहित सो कीजै तेते ॥
जबलौ शुद्ध चित नहिं होई ❀ तीरथवर तस फल नहिं कोई ॥
निर्मल मन प्रसन्न नहिं जबलौं ❀ कोई कार्य शुद्ध नहिं तबलौं
सुन वह कथा शुद्ध मन होई ❀ ज्ञान ध्यान पावै सब कोई ॥
मनसा तीरथ कहेउ बखानी ❀ सुनहु नरेश महा विज्ञानी ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सवलसिंहचौहानभाषाकृते
तीर्थमहिमावर्णनोनाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

अब यह कथा बखानहु ताता ❀ ब्रह्म दोष क्यों लागै गाता ॥
चतुर पुरुष जानैं सब कोई ❀ बात न ब्रह्म दोष क्यों होई ॥

भीष्म उवाच ।

यह विचार मेरे मन रहेऊ ❀ तब मैं व्यास देव सों कहेऊ ॥
ब्रह्म दोष मुनि वर्णो यथा ❀ तुम सों कहौं सकल सों कथा॥
द्विजहि दानदे फिर जो लूटै ❀ ब्रह्म दोष ते ते नहिं छूटै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जो नर द्रव्य विप्रकों हरही ❀ अरु बिन काज साधुसोंलरही ॥
मानै साधु सन्त नहि कोई ❀ ताहि ब्रह्म हत्या फल होई ॥
विप्र साधु की करै बुराई ❀ पानी पियत बिडार गाई ॥
स्वारथ मात पिता परि हरही ❀ हत्या ब्रह्म दोष सों करही ॥
अन्ध पंगु रोगी अन्याई ❀ इनको सरवस लेय छिनाई ॥
दुख में दुख उबजावै कोइ ❀ हत्या ब्रह्म दोष तेहि होइ ॥
त्रिधा ब्रह्म जानौ यह भेवा ❀ ब्रह्मा विष्णु रुद्र त्रय देवा ॥
इनकी करै अवज्ञा कोइ ❀ ब्रह्म हत्या निश्चय तेहि होइ ॥
भूखो बिप्र जासु घर आवैं ❀ दुष्ट बचन सो ताहि सुनावै ॥
तासु निरादर करै जु कोइ ❀ हत्या ब्रह्म दोष तेहि होइ ॥
हृदय क्रूर गुरुसों अभिमाना ❀ वनके जीव वृन्द सन्धाना ॥
ब्रह्म दोष ता नरको होइ ❀ ऐसे काम करै जो कोइ ॥
अति क्रोधी हिंसा मन धरहीं ❀ जानत बुरो परायो करहीं ॥
हरि गुण कथा न भावै जाही ❀ हत्या ब्रह्म दोष हो ताही ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

आश लगाय विप्र घर आवै ❀ विमुख जाय कैसो फल पावै ॥
देने कहैं अरु दियो न जाइ ❀ ताको कहो कहा फल पाइ ॥

भीष्म उवाच ।

दो० भलो प्रश्न तैंने कियो, अहो युधिष्टिर राय ।
भिन्न भिन्न मैं सब कथा, तोहि कहौं समुझाय ॥
कहिके देय नाहि जो ताही ❀ ताको सुकृतसफल नहि आही ॥
भूखो विप्र क्रोध जब करही ❀ ताके दोष आप जर मरही ॥
जैसे अग्नि घास जर जाइ ❀ ब्रह्मदोष ते सुकृत नशाइ ॥
कथा पुरातन वर्णहु ताता ❀ सुन शृगाल वानरकी बाता ॥
पहिले जन्म विप्र हो कोइ ❀ अब पशु भयउ पाप ते सोइ ॥
इक सृगाल इक बानर जाती ❀ एकहि बन तिनकी उतपाती ॥
बन में मृतक परो इक जहां ❀ खान गयो गीदड़ तेहि तहां ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बनर बैठो वृक्ष संधाता ❀ लागेउ कहन जन्म की बाता ॥
पहिले जन्म पाप तुम करेऊ ❀ जबहिं शृगाल रूप तुम धरेऊ ॥
मृतक भक्ष बुधि भई बिहाला ❀ कौन पाप तुम भये शृगाला ॥

शृगाल उवाच ।

पहिले देन बिप्र को कहेऊ ❀ बहुरो भवन आय दुरि रहेऊ ॥
तब मैं कछु बिचार नहिं कीन्हों ❀ अवमोहिं बिधिशृगालतनुदीन्हों॥
तेरो प्रथम पुण्य सब गयऊ ❀ कौन पाप तू वानर भयऊ ॥
यह सन्देह अधिक मोहिं ताता ❀ बानर कहो आपनी बाता ॥

वानर उवाच ।

धर्म करत चंचल मन करेऊ ❀ गुरु सों कपट क्रोध सन धरेऊ ॥
फल फूलन की चोरी कियऊ ❀ ताते मोहिं बानर तनु दियऊ ॥

भीष्म उवाच ।

ऐसे बचन परस्पर भयऊ ❀ अपने अपने मारग गयऊ ॥
ताते मन अभिमान न कीजै ❀ अरु काहू को अंश न लीजै ॥
आपन सुकृत धर्म मन रहई ❀ हरिहर सुमिर परमपद लहई ॥
जो यह कथा सुनै हर्षाई ❀ ताहि नाहिं यम देय दिखाई ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
ब्रह्मदोषकथावर्णनंनाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

बिन आमिष नाहिंन संतोषा ❀ वेद साखिदे मेटहिं दोषा ॥
जिनको आमिष सदा अहारा ❀ तिनको पिता कौंन व्योहारा ॥

भीष्म उवाच ।

व्यास समान कौन समर्था ❀ जानै गुप्त वेदको अर्था ॥
वेद सबै निर्वृत जो कहई ❀ मूरख समझ जान नहिं गहई ॥
वेद न आमिष खान बतावैं ❀ झुँठी झुंठी बात बनावैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हिंसा आमिष चित से तजिये ❀ नारायण नारायण भजिये ॥
पढ़ गुन मूरख मर्म न जानै ❀ इन्द्रिन को स्वारथ पहिचानै ॥
शब्द भिन्न प्रति काई जैसे ❀ आमिष अर्थ सुभृति में ऐसे ॥
चलत कुपथ विषयी न बिचारा ❀ समझ न सकै अर्थ व्योहारा ॥
कैसे ताहि खात नर कोई ❀ निरखत जासु महाधिन होई ॥
दो० रक्त मुल मल बसाका, पूर्ण पात्र सो जान ।
धिग धिग उनको सदा, खात जेनरअज्ञान ॥
जिनको तनु आमिष सो पोषो ❀ तिनको धर्म कर्म सब शोषो ॥
जिह्वा अग्र स्वाद सब आही ❀ विष्ठा होत बार नहिं ताही ॥
निकट बधिक की सुधि नहिं लहैं ❀ मीन दौर बनसी को गहैं ॥
गहत स्वाद पीछे अकुलाई ❀ जब सम पकर पछारैं आई ॥
यह बिचार मन डर उपजाहीं ❀ आयु बढै नहिं आमिष खाई ॥
आमिष खात सबै गुण जाहीं ❀ आमिष सम निषिद्ध कोनाहीं ॥
जिहि कुल मांस खाय नहिं कोई ❀ अति बलवान जानिये सोई ॥
जो आहार आमिष को करहीं ❀ सो बहु रोग व्याधि पचि मरहीं ॥
जाको मांस खाय है कोई ❀ सो ताको फिर खैहैं सोई ॥
आमिष खेत माहिं नहिं होई ❀ घास समान न उपजै सोई ॥
दो० मांस होत हिंसा किये, हिंसा कों बड पाप ।
दाप बंश को क्षय करत, सहत नरक सन्ताप ॥
प्राण घात कर उपजै मासा ❀ खाये होत धर्म को तासा ॥
कांटा चुभत पीर तनु मानै ❀ ऐसे कष्ठ और को जाने ॥
काहू डर उपजावै कोई ❀ ताको डर सबही ठां होई ॥
जितने रोग पशुहिं सँहरहीं ❀ उतनी बार नरक नर परहीं ॥
हाथ दीप ले परिये कूपा ❀ यह आगे हिंसादि स्वरूपा ॥
मारे एक दूसरो कहई ❀ एक विश्वासघात पर रहई ॥
अरु इक हाथ संवारे धरई ❀ अरु जो आमिष विक्री करई ॥
छठो रसोई राधे आनी ❀ अरु सातवों पसावै पानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बठ आठवों रुचिसों खाई ❀ यमपुर संग आठ सो जाई ॥
आठ प्रकार जु मारै कोई ❀ आठो को एकहिं फल होई ॥
दो० हिंसा सम संसार में, दूजो पाप न और ।
अन्धा गूँगा हाय सो, जन्म लेय जेहि ठौर ॥
जो ले मोल हते घर आनी ❀ ताहि उधार देय जो जानी ॥
ताहि उधार दिये अति दोषा ❀ धन की हानि न पावै मोषा ॥
जिनके आमिष कुल चलि आयो ❀ धूरि खाय कर जन्म गवायो ॥
मांस स्वाद सों खायं जु जितने ❀ श्वान शृगाल बने ते तितने ॥
सुख सों आमिष भषै जु कोई ❀ वृक्ष रूप तामस तनु होई ॥
बहुरो होय अधमगति सही ❀ मोसों व्यासदेव अस कही ॥

हे राजन् ! यही बात वृहस्पतिजी ने भी कही है—

हिंसा पाप दोष ते डरही ❀ मद अरु मांस दोउ परिहरही ॥
निरखत ज्ञान मेरे मन रहेऊ ❀ यह बिचार वृस्पति कहेऊ ॥

हे राजा ! यही बात वसिष्ठजी ने कही है—

जे जन छांडे मद अरु मांसू ❀ तिनहि मिलै बैकुण्ठ निवासू ॥
स्वर्ग मनोरथ पावै सही ❀ राजा सुन वसिष्ठ अस कही ॥
दो० कैसी पीडा होति है, जब तनु लागत फाँस ।
फिर नर कैसे खात हैं, मार पशुन का नांस ॥

हे राजन् ! यही बात साधु ऋषि स्मृति कहती हैं—

साधु सभा ऋषि स्मृतियें सही ❀ येही कथा नीति मिल कही ॥
येही धर्म सनातन ताता ❀ सतकर माहुन मेरी बाता ॥

और यही बात पराशर ने कही है—

जीव दया सब धर्म समाना ❀ सुवरण भूमि गाय को दाना ॥
दया जीव पर सबसे सारा ❀ पाराशर को यहो बीचारा ॥
मुख्य जगत में भोजन पाना ❀ तजहु परंतु मांसको खाना ॥
सबसों हेत करै जो कोई ❀ हरि के मन भावै नर सोई ॥
आमिष को त्यागै नर जबहीं ❀ अश्वमेध शत पावै तबहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करै सदैव सनात रीती ❀ धर्महि कथा सुनै कर प्रीती ॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै ❀ धर्म सहित चारो फल पावै ॥
आमिष को सम्पूर्ण विधाना ❀ तुम सों वेदनुसार बखाना ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलासिंहचौहान भाषाकृते
आमिषाहारकथावर्णनंनाम पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

सुनवे की श्रद्धा कर ताता ❀ जनमेजय बूझी यह बाता ॥
कैसे भीम अचम्भे रहेऊ ❀ कैसे बचन युधिष्ठिर कहेऊ ॥

बैशम्पायन उवाच ।

मृगया भीम गयो हो जहां ❀ देखेउ सर्प इक सोवत तहां ॥
देखत भीम अचम्भे रहेऊ ❀ अहि साहसकर ताको गहेऊ ॥
बलकर भीम रहेऊ पचिहारी ❀ छूटै नहीं सर्प अति भारी ॥
ताको पौरुष अन्त न लहेऊ ❀ तबहिं भीम स्थिर ह्वै रहेऊ ॥
राजा बैठे आसन जहां ❀ अशकुन देखन ला तहां ॥
तबतो अति विस्मय मन भयऊ ❀ भीम अकेलो बनमें गयऊ ॥
तरुण वैस अति दारुण क्रोधा ❀ ऊंच नीच को ताहि न बोधा ॥
भीम कहूँ निश्चय भय खाई ❀ जाते अशकुन देत दिखाई ॥

दो० कहा करौं कासे कहौं, कासों बुझुँ भेद ॥
मन अधिर उर परिअति, होंत चित्तमें खेद ॥

यह कह आप चले अकुलाई ❀ पीछे संग पुरोहित जाई ॥
अर्जुन नकुल और सहदेवा ❀ देखत चिह्न बिचारत भेवा ॥
टुटे टाटे वृक्ष जु पाये ❀ जाना भीम इतै ह्वै धाये ॥
ऐसे चलते खोजै लयऊ ❀ सबके मनमें धीरज भयऊ ॥
तीनों भ्रातन कहेऊ बिचारा ❀ भीम कुशल है सकल प्रकाशा ॥
भीम सर्प पकरे हैं जहां ❀ ढुंढत ढुंढत पहूंचे तहां ॥
धौम्य पुरोहित संग जु भयऊ ❀ अपने राजा आगे भयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पर्वत की कन्दर विकराला ❀ तामहिं देखो भीम कुमार ॥

राजोवाच ।

तुम पण्डित जानत सब बाता ❀ सबते भीम बली अति ताता ॥
तुम क्यों भये सर्प वश ताता ❀ मोसे कहौ सत्य सब बाता ॥

दो० तुम समान संसार में, और कौन बलवान ।
यहाँ आन कैसे फँसे, होकर बुद्धि निधान ॥

भीम उवाच ।

दैत्य अपर बल गिनिये जितने ❀ मोसों युद्ध जुरहि नहिं तितने ॥
सर्प दर्प मारेउ मम चाही ❀ जानो नहीं कौन यह आही ॥
यह सुन अर्जुन उठो रिसाई ❀ तीर धनुष कर लीनेउ धाई ॥
लावहु वेग हमारे बाना ❀ मारौं सर्प करौं खरियारा ॥
नकुल और सहदेव रिसाना ❀ भयो क्रोध नहिं अंग समाना ॥
सर्प हमारे भ्रातहि गहई ❀ फिर भी वह जड़ जीवत रहई ॥

राजोवाच ।

परै आपदा सहिये बीरा ❀ कोप न कीजै अर्जुन धीरा ॥
जासों भीम रहे पचिहारी ❀ सो नहिं मानै दाब तुम्हारी ॥
छांडो क्रोध धरो मन धीरा ❀ यह कुछ औरहि कारण वीरा ॥
तुम कत बन्धु देख अकुलाता ❀ बूझन देहु सर्प सों बाता ॥

दो० सर्प नहीं यह देव कोउ, राखो रूप छिपाय ।
भीमसेन से बली को, दीनेउ मान घटाय ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

कौन रूप का कियो उपाई ❀ को तुम अहो कहो सत भाई ॥
कै दिज शाप मलिन तव गाता ❀ कारण कौन गहेउ मम भ्राता ॥

सर्प उचाव ।

हौं तुम्हार पुरुषा निज आही ❀ अति प्रचण्ड जानत सब ताही ॥
नहुष नाम राजा गम्भीरा ❀ जोहैं सकल धर्म गुण धीरा ॥
अति ऐश्वर्य राज मम भयऊ ❀ तबहिं अगस्त्य शाप मोहिं दमऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

युधिष्ठिर उवाच ।

तुम राजा अपने व्योहारा ❀ यद्यपि अति प्रचंड संसारा ॥
तुमने कहा कियो अस पापा ❀ जो प्रभु तुमहिं दयउ मुनिशापा॥

नहुष उवाच ।

गौतम पाप इंद्र दुरि गयऊ ❀ इंद्रलोक तब सूनो भयऊ ॥
चलेउ पलानि भेद यह जानी ❀ हौं इन्द्राशन बैठेउ आनी ॥
इन्द्राणी सुर दुरि रहे जहां ❀ कोप बचन हौ बोलेउ तहां ॥

दो० जीतेउ सब संसार हम, मिलेउ इन्द्र पद आज ।
रहेउ हमारे करन का, और कौन सो काज ॥

निन्यानवे यज्ञ कर लयऊ ❀ अब हमत्रिभुवनपतिप्रभुभयऊ ॥
पायों तीन लोक को साजा ❀ इन्द्र समान भयो मम राजा ॥
शची हमार भेद जब पायो ❀ गुरुसों मिल कछुमतो उपायो ॥

इंद्राणी बृहस्पतिजी से बोलीः-

जब लौं काल न पहुंचे आइ ❀ तबलौं इंद्र न देय दिखाइ ॥
जबलौं गौतम शाप न देही ❀ तबलग छल कर राखो एही ॥

बृहस्पति उवाच ।

तुम अवाह वाहन मंगवाओ ❀ ता चढ़ नृप हमको लेजाओ ॥
अवाह वाहन है नहिं कोई ❀ तेरे किये तुरंतहि होई ॥
यह सुन शची तहां छल कियो ❀ मधुर बचन हमसों बोलियो ॥

इंद्राणी उवाच ।

होहु प्रसन्न बचन इक पाऊं ❀ तव मैं निकट तुम्हारें आऊं ॥
इन्द्र समान तुम्हैं जब मानू ❀ लायो एक अनूपम यानू ॥

दो० जाहि देख इकवारही, मोह जाय संसार ।
शीघ्र मँगावहु प्राणपति, मानहु बचन हमार ॥

जब ऐसी पालकी मंगाओ ❀ तापर कर गहि मोहि चढ़ाओ ॥
लेकर चलहिं विप्र मुनि ज्ञानी ❀ तब मैं बनू तुह्मारी रानी ॥
मैं मूरख यह भेद न जाना ❀ नारि बचन अति प्रियकर माना॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

द्विजन सहित पालकी मंगाई ❀ आप चढ़ो अरु प्रिया चढ़ाई ॥
विप्र अगस्त्य आदि मुनि जेते ❀ ले पालकी चले सब तेते ॥
क्रोधित हो बोले मुनि ज्ञानी ❀ अजगर होहु नृपति अभिमानी ॥
जबहिं अगस्त शाप मोहिं कहेऊ ❀ मुनिको शाप शीश पर लयऊ ॥
उतर तुरन्त चरण मुनि गहेऊ ❀ दीन बचन मुनिबर सो कहेऊ ॥
ब्रह्म तेज को लखो न भेवा ❀ छुटो शाप ते कब मैं देवा ॥
जब पग शिर धर बिनतो ठानी ❀ तब कर कृपा कहेउ मुनि ज्ञानी ॥

मुनिरुवाच ।

दो० नगर हस्तिनापुर विषे, लेय धर्म अवतार ।
ताहि युधिष्ठिर कहै सब, ज्ञानी परम उदार ॥

सो राजा तब कुल में होइ ❀ ताहि धर्म जानै सब कोइ ॥
धर्म नीति को जानन हारा ❀ तेज पुञ्ज बलवान अपारा ॥
तेरे वंश होयगो सोइ ❀ ताको यश वर्णै सब कोइ ॥
ताके बचन सुनत गति होइ ❀ ऐसो बचन कह्यो ऋषि सोइ ॥
ताते भीमसेन मैं गहेऊ ❀ इस मिस आवैं मुनि जो कहेऊ ॥
कहो बचन छूटै अहि देहू ❀ जो बूझों सो उत्तर देहू ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

सो सब बूझौ जो जी चाहै ❀ जो तुह्मरे मनमें चिंता है ॥
बुद्धि समान कहो जो बाता ❀ ताको उत्तर दैहौं ताता ॥

नहुष उवाच ।

तुमहिं देख उपजो अति नेहू ❀ धर्म बचन को उत्तर देहू ॥
तुम राजा जानौ सब मर्मा ❀ कहो कोइ उत्तर सो धर्मा ॥
दो० तात आप के सामन, कह न सकौं कछु सार ।
परन्तु कछु वर्णन करौं, आपनी मति अनुसार ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

सत्य शौच जप तप आचारो ❀ शम दम अरु धीरज मनधारो ॥
क्षमा दया कोमलता ज्ञाना ❀ संयम सहित विचारो ध्याना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जानो परमेश्वर को मर्मा ❀ सब धर्मन में उत्तम धर्मा ॥

नहुष उवाच ।

को तप मोहि सुनावो देवा ❀ कहा सत्य समुझावहु भेवा ॥
दम्भ कहा सो कहिये ताता ❀ कस जानिये शौचको बाता ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

सत्यरु शौच परमतप अहहीं ❀ दम्भ सदा मन बशकर गहहीं ॥

नहुष उवाच ।

कहा लाज कहिये नृपराइ ❀ का संतोष कहो समुझाइ ॥
कहा क्षमा कहिये यह बाता ❀ कोमलता समुझावहु ताता ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

लज्जा चितमें करत गिलानी ❀ विषय त्याग संतोष जु जानी ॥
दुख सुख सहै जु क्षमा पवित्रा ❀ कोमलता कहिये समचित्रा ॥

नहुष उवाच ।

दो० कहा ज्ञान कहिये नृपति, कहा वस्तु है शान्त ।
दया ध्यान काको कहत, कहिये सकल वृतान्त ॥

नहुष उवाच ।

तत्त्व विचारै कहिये ज्ञाना ❀ मनको प्रश्न शांतकर माना ॥
दया सोई सबको सुख दीजै ❀ ध्यान बिषय नितरतिसन कीजै ॥

नहुष उवाच ।

सदा शत्रु वैरी निज कौना ❀ को सब रोग व्याधिको भौना ॥
कौन लाभु कहिये नृपराई ❀ यह सब मोहिं कहो समुझाई ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

वैरी सदा क्रोध यह जानी ❀ लोभ अनंत व्याधिकी खानी ॥
सबसों हेतु करै सो साधू ❀ हिंसा मान निर्दयी अगाधू ॥

नहुष उवाच ।

जाकी संगत उपजै तापू ❀ जाको नाम लेत संतापू ॥
यह मोसों कहिये समुझाई ❀ अक्षय नरक कौन विधिजाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

युधिष्ठिर उवाच ।

बोले विप्र घर करै निवासा ❀ ताको सदा नरक में बासा ॥
रूप अधर्म मूढ़ मति रहई ❀ झूंठ बचन सबहीं सों कहई ॥
दो० बेदन की निन्दा करै, हरै विप्र धन धाम ।
डरै न हत्यासों कबहुँ, सरै न कोउ शुभकाम ॥
उघटै धर्म परायो पापी ❀ नित प्रति रहै शोक सन्तापी ॥
ऐसे कर्म जु प्राणी करई ❀ अक्षय नरक मध्य सो परई ॥
झूंठी साखि लोभ ते भरई ❀ गुरुसों क्रोध कपट मन धरई ॥
वेद पुराण प्रीति नहिं करई ❀ अक्षय नरक मध्य सो परई ॥
अक्षत धरो प्रतिग्रह लेई ❀ मांगे बुद्ध न औरहि देई ॥
नारायण की भक्ति न करई ❀ अक्षय नरक मध्य सो परई ॥
छिद्र पराये देखत रहई ❀ निशिदिन दोष और के कहई ॥
करै सुगुरु सों कपट सयाना ❀ तिनहिं देखि किजै मनमाना ॥
दासी नीच गमन जो करई ❀ तासों पितृ वैर मन धरई ॥
मीठी वस्तु अकेलो खाई ❀ अक्षय नरक मध्य सो जाई ॥

नहुष उवाच ।

धर्म रूप नृप तेरी बाता ❀ सुनत बहुत सुख मेरे गाता ॥
राजा समझ बचन इक कहिये ❀ देवलोक कौंन विधि रहिये ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

जाकेअतिथि विमुख नहि जाई ❀ अरु हरि कथा सुनै चित लाई ।
नित बोलै आगे ह्वै लेई ❀ मीठो बचन बोल सुख देई ॥
ईश जान पूजै नर सोई ❀ निश्चय देव लोक तेहि होई ॥
सोवत जागत यहै विचारा ❀ होय सदा संतन उपकारा ॥
पर उपकार परायण रहई ❀ देवलोक सो प्राणी लहई ॥
वेद धर्म को मारग गहई ❀ नित आनंद सों सुरपुर रहई ॥
कमिनि कर पुरुष की सेवा ❀ पतिको लखै कृष्ण सम देवा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० निशिदिन पति के पद कमल, पूजै सहित सनेह ॥
कोऊ रोक सकै नहीं, सुर पुर जाय संदेह ॥
रूपवंत यौवन गुण सादा ❀ अरु घर होय सकल सम्पदा ॥
पर नारी माता सम जानै ❀ द्रव्य परायो रज कर मानै ॥
जो ऐसो इंद्रियजित रहई ❀ कोमल बचन सबन सों कहई ॥
कछु अभिमान न मनमें लावै ❀ सो प्राणी वैकुण्ठ सिधावै

नहुष उवाच

राजा सुनत तुम्हारी बाता ❀ श्रद्धा प्रगट भई मम गाता ॥
श्राद्धा सों कीजै सब बाता ❀ कीजै सो श्रद्धा विख्याता ॥
अकुलीनौ इंद्रियजित होई ❀ ताको हितसों पूजै कोई ॥
सकल धर्म निज उपजै जहां ❀ तीरथ फल पावै सो तहां ॥
ज्ञान धर्म तप तेज बढ़ावै ❀ जाते बेग परम पद पावै ॥
आगे इतने करै यु कर्मा ❀ श्रद्धा बिना सकल सब भर्मा ॥
दो० योगासन धारण करै, बांचै वेद पुरान ॥
क्षमा दया श्रद्धा बिना, सब नटकला समान ॥

वैशम्पातन उवाच

छूटो नहुष शाप ते जबहीं ❀ भीमसेन छुट आये तबही ॥
भीमसेन राजा ढिग आये ❀ परम प्रीति कर कण्ठ लगाये ॥
अभृत बचन सुने जब काना ❀ देवरूप भये नहुष सुजाना ॥
साधु बचन सबको उपकारा ❀ साधु समागम तारन हारा ॥
साधुन की महिमा अधिकाई ❀ साधु बचन सबको सुखदाई ॥
धन्य सुदेश धन्य वे लोगा ❀ धन्य धन्य संतन संयोगा ॥
तुम सम नृपति भयो नहि होई ❀ यश प्रसिद्ध जानै सब कोई ॥

युधिष्टिर उवाच ।

अब हौ धन्य धन्य महराजू ❀ जो मोपर प्रसन्न तुम आजू ॥
तुम पण्डित जानत सब बाता ❀ कस मद भयउ तुम्हारे गाता ॥
अबहूं मम संशय नहि गयऊ ❀ तुमको पिता गर्व क्यों भयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यह सब भेद मोहिं समझावो ❀ मेरो सब संदेह नशावो ॥
दो० तुम ज्ञानी दानी परम, सन्तत शील सुभाव ।
को नहिं जानत जगत में, तुमरो पूर्ण प्रभाव ॥

नहुष उवाच ।

जैसी प्रकृति होत गति सोई ❀ जैसे जल शीतल अति होई ॥
अपनी प्रकृति देह सों अंता ❀ रहेउ राजमें नित मह मंता ॥
ज्यों पानी विन चलै न नाऊ ❀ त्यों राजा को गर्व सुभाऊ ॥
मदिरा पिये उतर मद जाई ❀ राज गर्व दिन दिन अधिकाई ॥
दीजै राजते जबै गिराई ❀ ताते स्वर्ग तिमिर फटजाई ॥
लोभ अपार कामहू बढ़ाई ❀ तबते स्वर्ग राज्ज मद चढ़ाई ॥
मुनि अगस्त्य दीनेउ मोहिं डारी ❀ तुमहूं कीजो राज संभारा ॥
सदा द्विजन की पूजा करिये ❀ सब दिन ब्रह्म तेज सों डरिये ॥
जिन समुद्र चुल्लू भर पियो ❀ तिनसों गर्व जाय नहिं कियो ॥
द्विज सेवा कीजै चितलाई ❀ यहै कृष्ण गीता में गाई ॥
दो० प्रलय अग्निहूँ सों प्रबल, है साधुन को क्रोध ।
जारि छार छिनमें करत, इनको कठिन विरोध ॥
सहिये सदा साधु को क्रोधा ❀ यह न कहै मैं हूं अति योधा ॥
सहै न साधु क्रोध नर जोई ❀ तासु सहाय करै नहिं कोई ॥
साधु क्रोध है अति दुखदाई ❀ ताते बचो यहै चतुराई ॥
साधु सदा इश्वर के प्यारे ❀ सब सुख द्वंद मिटावन हारे ॥

वैशम्पायन उवाच ।

यह कह नहुष स्वर्ग को गयऊ ❀ राजा के मन आनंद भयऊ ॥
मैं सब पिछली कथा बखानी ❀ कही नहुषसों जो नृप ज्ञानी ॥
जो यह कथा सुनै चित लाई ❀ ताको सकल पाप जरि जाई ॥
जनमेजय बूझि तैं जोइ ❀ भीम सर्प गति जैसी होइ ॥
सो इतिहास सकल मैं बरनो ❀ द्विजसे द्रोह कभी नहिं करनो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आदि जगतपति हैं ब्दिजदेवा ❀ ताते करहु ब्दिजन की सेवा ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सचलासिंहचौहानभाषाकृते भीम और सर्परूपनहुषकथावर्णनोनाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

सत्य बचन कवने फल होई ❀ मोको कथा सुनावहु सोई ॥

भीष्म उवाच ।

बोले सत्य तजै नहिं कर्मा ❀ अब यह मोहिं सुनावहु धर्मा ॥
तुमहि सुनावहु बहुला कथा ❀ बोलेहुं सिंघ धेनु सों यथा ॥
मथुरा देश मध्य इक गाऊ ❀ चक्रावति नगर इक ठाऊँ ॥
सुफल वृक्ष शीतल जल औरा ❀ मन बांछिता मनोहर ठौरा ॥
अति रमणीक भूमि सुख देनी ❀ जहाँ सिंघ तहँ बहुला धेनी ॥
गायें सिमिट चरन तह गई ❀ बहुला सबते आगे भई ॥
सुन्दर बन गहवर तह छाहां ❀ बहुला धेनु गई पुनि ताहां ॥
जब तिन जाय गहेउ निज कौरा ❀ सिंघ आय घेरो तेहि ठौरा ॥

सिंह उवाच ।

आजु छुधाकर अति रिस मोहीं ❀ बिन खाये नहि छाड़ों तोहिं ॥

दो० भूख मोहि लागी अधिक मिलै न जबलों माँस ॥
तबलों हृदयेकी अग्नि लेन देत नहिं श्वास ॥

भीष्म उवाच ।

बहुला रुदन मनहि मन कीनो ❀ मोहि देव कुसमय दुख दीनो ॥

बहुला उवाच ।

कहा करौं अब कछु न बसाई ❀ मो बिन वत्स जिये कह खाइ ॥
मृत्यु हमारी पहुची आइ ❀ पुत्रहिं कैसें देखौं जाई ॥
कहत सिंघ सो हे बनचारी ❀ मानो तुम कछु बचन हमारी ॥
जो तुम्हारि आज्ञा मैं पाऊ ❀ वत्सहिं देख बहुरि मैं आऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वत्सहि देख वहा नहि रहौं ❀ तोसों सत्य बचन हौं कहौं ॥

सिंह उवाच ।

जो तू मोते छूटन पावै ❀ तो घर जाय बहुरि नहिं आवै ॥
सत्य बचन बोले निर्वाही ❀ ऐसो ज्ञान कहां तोहिं आही ॥

बहुला उवाच ।

हौ प्रसिद्ध जाने सब गाऊँ ❀ बहुला धेनु है मेरो नाऊ ॥
बनमें ग्वाल चरावैं मोही ❀ मिथ्या बचन न बोलौं तोही ॥
दो० जानत सब मथुरा नगर मधुवन गोकुल ग्राम ।
झूठ न बोली आजलौं सदासत्य सो काम ॥
जो कछु है कहि हैं अब यथा ❀ सिंघ सुनो मेरी सब कथा ॥
मोसौ सौंह लेहु जो जानो ❀ जो तुम मेरे बचन न मानो ॥
सब प्रकार तब सौंच मिटाऊँ ❀ जब मैं वत्सा के ढिग जाऊँ ॥
तोसों छल कर रहूं न गेहू ❀ सिंह सौंह मोते तुम लेहू ॥
दुखी पिता माता पर हरही ❀ सेवा तिनकी कबहु न करही ॥
हत्या ब्रह्मदोष तेहि होई ❀ जो फिर यहांन आवै सोई ॥
दोय भार जो इक दुख सहई ❀ एकै तज एकै संग्रहइ ॥
ताको पाप दोष हौं पाऊं ❀ जो नहिं सिंह वेग यह आऊं ॥
जीवन हते अहेर दंगा ❀ अरु म्लेच्छ के रहै जु संगा ॥
ताको सकल पाप मै पाऊं ❀ जौ हौ सिंह वेग नहि आऊं ॥
दो० छल बल कर लूटे पथिक बहुरि देय तेहि मार।
सो हत्या मुझको लगै जो मैं लाऊ बार ॥
गुरु सों कपट मस खरी खेला ❀ ताड़ैं गोपायन सों ठेला ॥
तुरग शस्त्र सुत बेचैं गाइ ❀ चारों दुखी होय तह जाइ ॥
इनको पाप दोष हौं पाऊँ ❀ जो हौ सिंह बेग नहि आऊँ ॥
वेद पुराण प्रीति नहीं करहीं ❀ झूंठी साख सभा में भरहीं ॥
ताको पाप दोष हौं पाऊं ❀ जो हौं सिंह बेग नहिं आऊं ॥
और दोष वरणौ सिंघ यथा ❀ चित दे सुनहु हमारी कथा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

प्रथम पिता कन्या दे काहू ❀ पुनि दूसर सँग करे विवाहू ॥
सो सब पाप दोष हौ पाऊ ❀ जो हौ सिह बेग नहिआऊ ॥
थाती लोप जु करहि पराई ❀ मित्रन की नित करै बुराई ॥
अपनो इष्ट जानकर तजही ❀ वासुदेब गोविन्द न भजही ॥
दो० लागैं मोहि अपराध सो, होय नरक में बास ।
अहो सिंह जो मैं नहीं, आऊ तेरे पास ॥
माता पिता सों वैर जु ठानैं ❀ बिद्या पढ़ तेहि गुरु नहिं मानैं ॥
तीरथ जाय जु पाप कमावैं ❀ संग साथिन को द्रव्य चुरावैं ॥
तिनको मोप दोष हौं पाऊं ❀ जो नहिं सिंह वेग हौं आऊं ॥

भीष्म उवाच ।

ऐसी सौंह गऊ जब खाई ❀ तब तेहि दीनी सिंह बिदाई ॥

सिह उबाच ।

तुम सब धर्म सधानी गाता ❀ चलत सिंह समुझाई बाता ॥
धर्म समान सिद्धि नहि कोई ❀ अन्न भूमि दानादिक सोई ॥
सत्य बचन सम धर्म न जापू ❀ झूंठ समान और नहिं पापू ॥
अपनो सत्य बचन उर धरिकै ❀ सुत सों मिलहुशांत चितकरिकै ॥

भीष्म उपाच ।

बहुला तब धरही को धाइ ❀ करत विचित्र चरित्र उपाइ ॥
मन धर धीर पीर अधिकाइ ❀ थन पय स्रवत तहां सों आई ॥
दो० बत्स देखि उमड़ो हियो, बहत नयन जलधार ।
चाट चाट कर वत्स को, लागी करन पियार ॥

बहुला उवाच ।

रांभ रांभ गो बोली एहू ❀ अस्तन पान वत्स कर लेहू ॥
बहुरि नयन भर आयो नीरा ❀ दुर्लभ भयो पुत्र यह क्षीरा ॥
बिन सुपुत्र धनजन नहिंवढ़ई ❀ विनसुपुत्र कुल शोभ न चढ़ई ॥
जो सुपुत्र उपजै कुल कोइ ❀ ताते पुत्र प्रीति पर होइ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वत्स उवाच ।

तुम्हरे संग अबहिं मैं जैहौं ❀ माता सेवन यश मैं पैहौं ॥
तुम्हरे संग न चलिहौं तवहीं ❀ तुमते उऋण होहु मै जबहीं ॥
भइया बन्धु कुटुम्ब सब सुखी ❀ माता बिना पुत्र घर दुखी ॥
मात बिना छिन छिन दुख दूना ❀ मा बिना सकल घर सूना ॥
मात बिना को लाड़ लड़ावै ❀ द्वन्द मेट आनन्द दिखावै ॥
मात सदा सुत पोषण हारी ❀ पुत्र हेतु रह आप दुखारी ॥

दो० मात समान न प्रिय कोऊ, माताहिं जीवन मूल ।
माताहिं के तप तेज ते, मिटत ताप त्रय शूल ॥

मात समान न कोऊ सुख देवा ❀ निशि दिन करै पुत्र की सेवा ॥
कहत वत्स अस बारम्बारा ❀ तुम बिन जीवन वृथा हमारा ॥
जब बिधि करै कठिन अति कोहा ❀ तब माता सों होय बिछोहा ॥
सो बिधि आज वाम भा मोहो ❀ मोर सर्व सुख लीन्हो द्रोहो ॥

बहुला उवाच ।

हे सुत वृथा शोक किमि करही ❀ मेरी आई तू क्यों मरही ॥
जैसे कर्म करै जो कोई ❀ तैसे दुख सुख भोगै सोई ॥
जल थल पुत्र प्रामाद न करिये ❀ नदी ताल जल सम परिहरिये ॥
मूरख अरु मलेच्छ तै डरिये ❀ इनसे पुत्र प्रीति नहिं करिये ॥
धीरज धर्म ज्ञान मन धारो ❀ अब तुल सकल शोक निवारो ॥
तब बहुला माता पै गई ❀ पुत्रहि ले ढिग ठाढ़ी भाई ॥

बहुला उवाच ।

दो० बिदा देहु मोहिं मातु अब, क्षमा करहु मम दोष ।
वत्सन को सौंपत तुझे, करेहु न इन पर रोष ॥

मेरो सुत यह दुख नहिं पावै ❀ कोउ दुष्ट नहिं इनहिं सतावै ॥
प्रतिपालन इनको नित कीजै ❀ माता इनहि दगा मति दीजै ॥
दूध पियाय इनहि तुम दीजो ❀ दिन में चार बार सुधि लीजो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गोमात उवाच ।

बार बार सौपत मोहि याही ❀ छोड़ पुत्रको तू कहं जाई ॥
बहुला सत्य सुनाहू मोंही ❀ ऐसी कहां विपति है तोही ॥
करै जो तु बिछुरन की बतिया ❀ सुनत बचन दरकत है छतिया ॥

बहुला उबाच ।

नयन नीर भर बोलत गइया ❀ कहा कहौ तुम सो हम मइया ॥
मैं बन चरन गई है जहां ❀ सिंह आय मोहि घेरी तहां ॥
ताको बचन देय मै आई ❀ सत्य तजे नहि होत भलाई ॥
ताते हौं जऊं तेहिं पासा ❀ बन में सिंह न होय निरासा ॥
दो० जो निराश ह्वै सिंह कहु, त्यागै अपनी देह ।
वृथा नरक रहनो परै, जाय गह कों गेह ॥

गोमात उवाच ।

खाया गाय तो कबहुं न कहिये ❀ संकट परे प्राण नहिं रहिये ॥
काज बिबाह त्रिया सों बाता ❀ सर्वस हरत विप्र अकुलाता ॥
इतनी ठौर झूंठ जो बोलै ❀ ताहि न पाप कहत हौं खोलै ॥

बहुला उवाच ।

झूठो बच बोलिये वहां ❀ प्रण पराये उबरैं जहां
अपने काज सत्य नित बोलै ❀ धर्म मर्यादा में नहि डोलै ॥
जानो ते जीवत ही मरहीं ❀ जिनके सत्य बचन सब टरहीं ॥
सत्य बचन गुण ज्ञान विचारा ❀ सत्य बचन जीवत संसारा ॥
जब बहुला अस उत्तर दीन्हों ❀ नमस्कार सबहिन को कीन्हों ॥
असकहिं निकट गई जब गाइ ❀ सिंहहि भली बुद्धि तब आई ॥
बहुला के दर्श गो पोपा ❀ जानो प्रथम जन्म को शापा ॥

बहुला उवाच ।

दो० पायो पिछले पापते, मैन सिंह शरीर ।
धन्य धन्य माता तुम्है, मेटी मेरी पीर ॥
दर्श करत पाप मम गयऊ ❀ बचन सुनत अचरजसो भयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धन्य सुनर भवसागर तरही ❀ जो तुम्हार दर्शन नित करही ॥
धन्य सुठौर जहाँ गोरेनू ❀ सब बिधि धन्य धन्य तुम धेनू ॥
बहुला तोहि भयो संतापू ❀ अबलौं बहुत कियो मैं पापू ॥
बहुत जीव मैं मारे खाये ❀ कौन नरक हौं परिहौं जाये ॥
कै हौं पर्वत सों गिर परहूं ❀ कै हौं अग्निमाहिं जल मरहूं ॥
कै जल प्राण त्याग हौं करहूं ❀ बहुला कौन भाँति निस्तहूं ॥
कठिन पाप कीन्हेउ हौं भारी ❀ जैहौं कौन नरक मँझारी ॥
ऐसो कौन पाप मैं कियऊ ❀ जाते सिंह देह बिधि दियऊ ॥
कोटिन जीवन को मैं मारो ❀ कैसे ह्वै है मोर उधारो ॥

दो० तुम्हरे दर्शन करतही, दूर भये सब पाप ।
अब मुझको निश्चय भयो, मिटा हमारो शाप ॥

बहुला उवाच ।

सतयुग तप त्रेता मख सारा ❀ द्वापर पूजा बिधि व्यवहारा ॥
कलियुग जीव दया हरि नामा ❀ जाते जीव ब्रम्हलोक बिश्रामा ॥

सिंह उवाच ।

हौं पशु देह शापते भयऊ ❀ तेरे दर्श सकल श्रम गयऊ ॥
कीन्हेउ प्रथम योग अभ्यासा ❀ अब कोको फिरे भयो प्रकासा ॥
बहुला सत्संगति की रीती ❀ मेरे मन अब भई प्रतीती ॥
तब फिर योग ज्ञान मति भई ❀ छुटो शाप परमगति दई ॥
बहुला बहुरि भवन निज आई ❀ गोप गाय सब करै बधाई ॥
वह निस्तरी पुत्र सुख भयऊ ❀ बहुला सत्य वचन फल लयऊ ॥

भीष्म उवाच ।

राजा तेरे श्रद्धा प्रीती ❀ उत्तम सत्य बचन की रीती ॥
कहै सुनै श्रद्धा सों जोई ❀ सुख सम्पति यश पावै सोई ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिसबलसिंहचौहान भाषाकृते
सत्यवचनफलमाहात्म्यवर्णनोनाम सप्तविंशोऽध्यायः

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi. eGangotri. Funding by IKS.

युधिष्ठिर उवाच ।

परहित बचन जो बोले आई ❀ जीव दयाते लेय छड़ाई ॥
रक्षा करै साधु की जोई ❀ ताको पिता कहा फल होई ।

भीष्म उवाच ।

ब्राम्हण एक गृहस्थ आश्रमा ❀ तिया सहित पालै निज धर्मा ॥
करै यत्न संतत को जोई ❀ वृद्ध भयो कोउ पुत्र न होई ॥
बहुरि एक कन्या तेहि भाई ❀ वानप्रस्थ ह्वै यह मति ठई ॥
वानप्रस्थ ह्वै सो बन गयऊ ❀ स्त्री सहित जाय तप कियऊ ॥
माता पिता प्रीति अधिकाई ❀ कन्या बड़ी होत जब आई ॥
देख पिता के यह मन आई ❀ कन्या बरको दीजै जाई ॥
कछुक दिवस सोचत भये तबहीं ❀ मरो पिता कन्या को जबहीं ॥
कन्यां तहां सयानो भाई ❀ मातहू ताको मर गई ॥
कन्या शोक करै अरु रोवै ❀ मेरा दुःख कौन अब खोवै ॥

दो० परीबिपतिपरबिपतिमोहिं, आनोकोउनदिखाय ।
कहां जाउँ कासों कहौं, इकलो रहो न जाय ॥

बार बार सो करै पुकारा ❀ हौं अनाथ भई बिपिन मंझारा ॥
कीन्हेउ कौंन पाप अधिकाई ❀ मात पिता दोऊ न रहाई ॥
छिन रोवे छिन गिर गिर जाई ❀ बनमें परी अधिक अकुलाई ॥
कन्यां तहां अधिक दुख पायो ❀ यम तब विप्र रूप धरि आयो ॥

बिप्र उवाच ।

अपने दुःख अपनपौ छीजै ❀ पुत्री बृथा शोक नहिं कीजै ॥
दुख सुख और न काहू दीना ❀ सब कोउ पावै अपनो कीनो ॥
अपनो पाप आप भर लेहू ❀ पाते औरहि दोष न देहू ॥
तेरे प्रथम जन्म की कथा ❀ सुनहु सुवृता कहौ मैं यथा ॥
गणिका रूप परम सुख देनी ❀ हती प्रथम तू नगर उजैनी ॥
तेरी सोभा जाय न बरणी ❀ सुन्दर रूप जगत वश करणी ॥

दो० शशि सम मुख चम्पकबरन, हरतसबनके चित्त ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धनी सेठ आवत सदा, वर्षत निशि दिन वित्त ॥
ब्रह्मा पुर द्विज इक अनुगामी ❀ ताको पुत्र एक सो कामी ॥
सो द्विजसुत तेरे घर आयो ❀ अपनो काम धाम बिसरायो ॥
तोसों मोहिं प्रीति अधिकाई ❀ मात पिता मोहिं कोउ न सुहाई ॥
तव घर विप्रपुत्र जब गयऊ ❀ तासों कलह परस्पर भयऊ ॥
उपजो क्रोध न सकी सँभारी ❀ बिप्र तनय ते डारो मारी ॥
ताके मात पिता त्रिय नेहा ❀ रोवत आये तेरे गेहा ॥
तिन सब शोककियो अतिदापा ❀ तब ताको दीनो तिन शापा ॥
हौं जो मात पिता बिन दीना ❀ अरु हौं ज्यों भारत बिन हीना ॥
ऐसो कठिन शाप तिन दीनो ❀ मनमें नेक तरस नहिं कीनो ॥
सो अब पाप आय नियरायो ❀ ताही ने यह दुख दिखरायो ॥
जैसो करै सु तैसो पावै ❀ ताते दोष कौन को लावै ॥
दो० जो कुछ लिखा लिलारमें, मेंट सकै नाहिं कोय ।
कोटि यत्न करते फिरो, अनहोनीनाहिं होय ॥

सुवृत्ता वाच ।

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुरराऊ ❀ तुम को हो कहिये सतभाऊ ॥
मेरो शोक मोह सब गयऊ ❀ तुम्हरे बचन सुनत सुख भयऊ ॥

ब्रह्माड़ो बाच ।

धर्मराज निज जानो मोहीं ❀ मैं समझावन आयो तोहीं ॥
तेर प्रथम धर्म मन भायो ❀ ताते बिप्र रूप ह्वै आयो ॥

सुवृत्तोवाच ।

धर्मराज तुम जानो एहा ❀ मेरे मन उपजेउ सन्देहा ॥
गणिका पाप दोष की खानी ❀ क्यों अवतरी ब्रह्मकुल आनी ॥
अस मैं कहा धर्म तप कीनो ❀ पुरुष अनेक तहां मन दीनो ॥
धर्मराज सो कहो बखानी ❀ मेरे मनकी जाय गिलानी ॥
अर्थ धर्म करता पहिचानो ❀ तुमते दुरो नहीं सब जानो ॥
सकल धर्म तुमते नहिं छानी ❀ मोसो कहिये सकल बखानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धर्म उवाच।

जाते ज्ञान भयो तव गाता ❀ सुनो सुवृत्ता कहौं सो बाता ॥
दो० तेरे पिछले जन्मको, कहौं सर्व इतिहास।
जातें तेरे हृदय में, भयो ज्ञान को बास ॥
काहू के उपजेउ निज ज्ञाना ❀ तेहि साधु हरि अर्पेउ प्राना ॥
निज हरि चरण कमल मन लयऊ ❀ सकल सुखन ते निग्रह भयऊ ॥
सुख स्वरूप जानो संसारा ❀ तब मैं कीन्हेउ दर्श तुह्मारा ॥
तबहीं उपजेउ सन अपारा ❀ निकस कियोतिन ब्रह्मबिचारा ॥
तीरथ रूप बिष्णु आगाधू ❀ तेहिं पुरमें आयो सेा साधू ॥
भाग उजैन उदै सेा आयो ❀ परमेश्वर संयेाग बनायो ॥
तहां स्वभाव बैठ सेा रहेउ ❀ काहू सों कछु बचन न कहेउ ॥
आधी रात गई जब जहां ❀ कोतवाल फिर आयेा तहां ॥
दुष्टन मार तहां दुख दयऊ ❀ तब साधू छुड़ाय जेा लयऊ ॥
मधुर बचन तिन तासों कहेउ ❀ तुम स्वामी कत दुष्टन गहेउ ॥
आयो स्वामी आदर कीना ❀ झारि अंग अपने कर लीनेा ॥
दो० तुम प्रयंक बैठ रहो, सबहुँ चरण तुम्हार।
मन इच्छापूरण करौं, पूजौं विविध प्रकार ॥
चुप कत रहे लेाय की नाहीं ❀ कछु आज्ञा मेा देहु गुसाईं ॥

साधुरु उवाच।

मेरे मन इच्छा कछु नाहीं ❀ सुख अरु भेाग बृथा सब आहीं ॥
उत्तम अन्न जेा भावै जेाई ❀ इन्द्रिन को सुख ऐसो होई ॥
शेाभा सुख दुख मान गुमाना ❀ मेरे सात्विक सदा समाना ॥
ऊंच नीच घट बढ़ नहिं लेखौं ❀ बासुदेव सबहीं में देखौं ॥
संशय भय छांड़ो सब दोषा ❀ तांते मान लियो संतेाषा ॥
जानत ज्ञान मान ह्वै रहेउ ❀ श्रद्धावान जान तेाहिं कहेउ ॥
धर्म रूप तेरी मति सारा ❀ तेरे मन पर कार्य उदारा ॥
रक्षा आज साधु की करी ❀ निज संसार दोष ते तरी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

देखी यती मै तेरा भली ❀ तू मारग सरधुन के चली ॥
दो० पर सुखदाता परम हित, संतन के पद माहिं ।
तिनकी महिमा कहन को, योगी जिह्वा नाहिं ॥

सुवृत्तोवाच ।

चरण पकर पूछौं सन्देहा ❀ जो तुम स्वामी करहूं सनेहा ॥
तुमहो साधु कृपाल उदारा ❀ भव समुद्र नवका आधारा ॥
कैसे परमेश्वर मन धरिये ❀ क्यों संसार दोष ते तरये ॥
वैसे जरै पाप अरू दोषा ❀ कैसे रहे सदा संतोषा ॥

साधु रुवाच ।

दम्भ छाँड़ि धर्म हि आचारो ❀ गुरु पद नारायण चित धारो ॥
समता दया क्षमा सन्तोषा ❀ इनते प्राण पाय है मोषा ॥
समेन की संगति मन दीजै ❀ बिष्णु जान सबसों हित कीजै ॥
निश्चल मन कर हरिहरि करही ❀ सो संसार दोष ते तरही ॥
काम क्रोध तृष्णा को खोई ❀ पूरो इन्द्रिय जित जो होई ॥
जीव विकार कृष्ण मन धरही ❀ सो संसार समुद्र न परही ॥
दो० तुलसी दल फल फुल जल, चन्दन धुप चढाय ।
पूजै शालाग्रम नित, भवसागर तर जाय ॥
अती गम्भीर हृदय जो होइ ❀ सूम दियो नही पावे कोइ ॥
लोम मोह क्रोधादिक जहां ❀ यह रिपु सब जानो तहां ॥
ऐसो की संगति नहिं करिये ❀ सो संसार दोषते तरिये ॥

धर्म उवाच ।

यह कह महापुरुष चल गयऊ ❀ तों पर अती प्रसन्न सो भयऊ ॥
सज्जन मिलत मलिनता गइ ❀ ताही पुण्य ब्रह्म कुल भइ ॥
सुनत सुवृत अपन सब बाता ❀ अब यह तुहिं सम झाऊँ बाता ॥
साधुसमागम अति फल भयऊ ❀ ताही पुन्य दर्श मैं दयऊ ॥
मेरो बचन सत्य करे माना ❀ तब तेरे मन उपजेउ ज्ञाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भी म उवाच ।

वरदे भर्म गयो नीज लोका ❀ तब सुवृत्ता भई अती निशोका ॥
ऊपजेउ हृदय ज्ञान बैरागा ❀ अति तप तेज बुद्धि बड भागा ॥
दों ० मिटा मोह ममता सकल, प्रगट भयो उर ज्ञान ।
एसो सन्त प्रभाव शुभ, गावत वेद पुरान ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि भवलसिंहचौहानभाषाकृते
श्रीवदानसाधुरक्षामहिमाहमावर्णनोनाम अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

कोऊ यज्ञ व्रत संयम करइ ❀ काऊ धर्भ अर्थ मन धरई ॥
कठीन ज्ञान बुद्धि बैरागा ❀ कोऊ कहै मोक्ष को भागा ॥
कोऊ आराधै बहु देवा ❀ कोऊ करै विष्णु की सेबा ॥
कोऊ गुण ब्रह्मा के साधै ❀ कोऊ यंत्र मंत्र आराधै ॥
कोऊ शंकर शंकर करहीं ❀ कोऊ ध्याय गण पती को धरही ॥
कोऊ शालग्राम मनावै ❀ तुलसी दल फल फूल चढावै ॥
इनमें कौन परम सुख दाइ ❀ भीषम पिता कहो समझाई ॥
मोसों पिता कहो निरधारा ❀ काको पूजन इनमें सारा ॥

भीष्म उवाच ।

भली बात बूझा नृप आदू ❀ नारद पुण्डरीक समबादू ॥
जो जो प्रश्न किये तुम सही ❀ पुण्डरीक नारदसों कही ॥
कथा पुरातन वर्णौं ताता ❀ नारद पुण्डरीक की बाता ॥
अन्तर वेद मध्य इक गाऊँ ❀ पुण्डरिक इक द्विज तेहि ठाऊँ ॥
दो ० विष्णु चरणका शरण में, रहै सदा लवलीन ।
अन्त न चित डुलावही, ज्ञानी परम प्रवीन ॥
ताके भक्ति ज्ञान बैरागा ❀ सबही लसत सेष्ठ बड़ भागा ॥
शस्त्र सस्कार मती सारा ❀ शालवान चित परम उदा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पृथ्वी दक्षिनाव्रत कर आयो ❀ सब तीरथ देखे फल पायो ॥
समझ विचार देख तिन लीनो ❀ सबही ते निराश मन कीनो ॥
ह्वै विरक्त मन कियो बिचारा ❀ दुख समुद्र समुझेउ संसारा ॥
गण्डक क्षेत्र तबहिं सो गयऊ ❀ तहाँ जाय थिर मन भयऊ ॥
पूजा विष्णु ध्यान मन लायो ❀ सब तज श्रीकृष्ण यश गायो ॥
पुलकित राम प्रेम अनुसरीया ❀ प्रेम लच्छ नामनमै धरीया ॥
कबहुँ नृत्य करै उठि धाई ❀ कबहुँ अनहद रहै समाई ॥
कबहुँ प्रेम हृदय गहि भरहीं ❀ कबहुँ नयन उमँग जल ढरहीं ॥

दो० कबहु हँसत गावत कबहुँ, कबहुँ मगन मन होय।
कबहुँ रटत गोविन्द हरि, कबहूँ देत सो रोय ॥

ऐसे हरि चरणन मन लायो ❀ प्रेम मगन आपा बिसरायो ॥
जेहि औसर आरति को आवै ❀ तहँ तुलसीदल पुष्प चढ़ावै ॥
बारम्बार हृदय भरि आवै ❀ परमेश्वरहि शुद्धता भावै ॥
ताके चरण रेणु शुभ नोका ❀ होय पवित्र चौदहौं लोका ॥
सब बिधि निर्मल जानो जहाँ ❀ सुनकर नारद आये तहाँ ॥
नारद ब्रह्मा विष्णु उछंगा ❀ अतिशुभजटाकनक दुति अंगा ॥
कमल नयन प्रसन्न मुख नामा ❀ परम स्वरूप कृपानिधि रामा ॥
फिरत सदा हरिके गुण गावत ❀ भाग्य उदय भो दर्शन पावत ॥
देखत पुण्डरीक छकि रहऊ ❀ सूरज अग्नि जाय नहिं कहेउ ॥
तव युग चरण गहे तेहि आई ❀ नारद लीनो कण्ठ लगाई ॥

दो० अहो विप्र आनन्द निधि, ऋधिसिधके दातार।
भली करी दीनेउ दरश, आये समय बिचार ॥

तुमहिं देख विहँसो मैं गाता ❀ तुमहो ब्रह्मरुप गुण ज्ञाता ॥
तुम्हरो भेद जो अबहुँ पाऊँ ❀ बार बार पूरण गुण गाऊँ ॥

नारद उवाच।

ब्रह्मपुत्र हौं नारद आही ❀ हरिको प्रिय हरि भावै ताही ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri. Funding by IKS.

अबहौं पूर्ण गुसा भयऊ ❀ जब तुम मोको दर्शन दयऊ ॥

पुण्डरीक उवाच ।

तुम हरि के प्रिय आये जहां ❀ हरिहू कबहूं आवे यहा ॥
अब तुमसों पूंछौं इक बाता ❀ कृपा दृष्टि कर कहीये ताता ॥
व्रत संयम सबही में सारा ❀ यह मोसों कहिये निर्धारा ॥
कौन बिचार कहा व्रत गहौं ❀ सुन पुनि भिन्न भिन्नकर लहौं ॥
को पंडित ऋषि बचन प्रमाना ❀ साधन को मारग जो जाना॥

नारद उवाच ।

जौ जो प्रन्श्र किये तुम ताता ❀ मैं अजसो बूझी यह बाता ॥
दो० ब्रह्माने मोसों कही, भिन्न भिन्न समुझाय ।
सो मैं तुमसों कहतहूँ जगत हेत सुख दाय ॥

ब्रह्मोवांच

शास्त्र पुराण गर्व निरधारा ❀ नारयण सबही में सारा ॥
सब तज भज श्रीपति यदुराई ❀ वृथा और कत करत उपाई ॥
वोही अदि मध्य अरु अंता ❀ नारायण के रूप अनंता ॥
सब स्मृति प्रतिपादत जाहीं ❀ नारायण सबही में आहीं ॥
मेरोमंत्र पुत्र यह आही ❀ नारायण भजिये चित लाही ॥
यहै मंत्र अति उत्तम जानी ❀ जपत सुरेश महेस भवानी ॥
नमो नमो नारायण स्वामी ❀ सत्य सनातन अन्तर्यामी ॥
धन धन नारायण सुराई ❀ ब्रह्म जीव माया उपजाई ॥
सब कामना मध्य निष्कामी ❀ तुमही मात पिता गुरु स्वामी ॥
रंग कर वस्त्र जटा शिर धरही ❀ काहेको वहु वेष जु करही ॥
दो० झोली खप्पड़ धार कर घर घर मांगत अन्न
इन बातनते होत नहिं नारायण परसन्न ॥
नारायण सों कीजै प्रीती ❀ यहै सर्व सांधन की रीती ॥
नारायण परायण होई ❀ सबते उत्तम जानो सोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भीष्म उवाच ।

यह सुन अति आनँद मन भयऊ ❀ नारायण चरणन चित दयऊ ॥
पुण्डरीक सों कहि सब भेवा ❀ अंतर्ध्यान भये ऋषि देवा ॥
तब गोविन्द प्रगट भे आनी ❀ गरुड़ासन निर्भय सुखदानी ॥
श्याम रूप अति उत्तम अंगा ❀ पीत बसन थिर दामिनि रंगा ॥
रुचिर विलास कमलदल नैना ❀ मन्द हँसन सुन्दर मुख बैना ॥
चलत श्रवण कुण्डल गलगंडा ❀ शोभित भुजा भोग भुवदंडा ॥
बनमाला कटि पट बहु रंगा ❀ देखत लाजत कोटि अनंगा ॥
चरण कमल नखचन्द्र निवासा ❀ फैलो दशहूँ दिशा प्रकाशा ॥

दो० कीट मुकुटकी झलक लखि, होत अधिक आनंद।
मनमनलज्जितहोतशशि, निरखविमलमुखचंद ॥

आवत कमल फिरावत हाथा ❀ सिद्धसाधु सब सुर मुनि साथा ॥
श्रुति प्रकाश कछु जात न कहेऊ ❀ अंजलि जोरि थकित है रहेऊ ॥
राम पुलक अति आनँद भरेऊ ❀ दंड प्रणाम भूमि पर परेऊ ॥
तब हरि बचन कहेउ गम्भीरा ❀ हौं सन्तुष्ट भयो तव वीरा ॥
पुण्डरीक तू अति बड़भागा ❀ जो तव चित मम चरणनलाग ॥
मोसों मित्र और नहिं भ्राता ❀ हौं वर काम दाम सुखदाता ॥
तुम्हरे दर्श कर्म सब गयऊ ❀ आनँद सहित ज्ञान मन भयऊ ॥
हौं नहिं जानत अंतर्यामी ❀ तुमही कहो प्राणपति स्वामी ॥

पुण्डरीक उवाच ।

सुकवि बचन प्रभु तुमसों कहेऊ ❀ तुम तो मिले मांगवो रहेऊ ॥
तव माया ते अजहूँ डरहौं ❀ तुमते बिछुर बहुरि नहिं परहौं ॥

दो० अज शृंगीऋषि देवऋषि, इन्द्र मारकण्डेय ।
तव माया को भेद कछु, यह जन जानत हेय ॥

श्रीभगवानुवाच ।

निज सनेह कर हौं जो कहेऊ ❀ तब निज रूप हमारो लहेऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भीष्म उवाच ।

यह कह गरुड़ासन बैठारी ❀ सत्य धाम ले गये मुरारी ॥
देख इन्द्र दुन्दुभी बजावै ❀ हर्ष पुष्प माला पहिरावैं ॥
जय जय शब्द स्वर्ग सुर गावैं ❀ पुण्डरीक को दर्शन पावैं ॥
जो यह सुनै और जो कहई ❀ ताके प्रेम भक्ति मन रहई ॥
शुद्ध चित्त कर गावै जोई ❀ सकल धर्म फल ताको होई ॥
तैं बूझउ नृप बहुत बिचारा ❀ सब धर्मन में है को सारा ॥
पुण्डरीक की कथा सुनाई ❀ सब में सार क्रिया यह राई ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
सर्वधर्ममध्यउत्तमधर्मवर्णनो नाम नवविंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

साबधान हो सुनिये ताता ❀ अब हौं तनु त्यागौंगो भ्राता ॥
परम रहस्य भ्रात उपकारा ❀ सात्विक पर्वत मध्य जु सारा ॥
धर्म सहित मन बुधि सन्देहू ❀ सब इतिहास सार सुन लेहू ॥
साबधान ह्वै समझो बीरा ❀ तुम सों कहा कहौं गम्भीरा ॥
पुरुष एक हस्ती रपटायो ❀ भुज मैमंत जु बनमें आयो ॥
बनमें उठो सिंह ललकारी ❀ और दिशा तब भजो पुकारी ॥
तब यह दिशा उठी अगलाई ❀ तहां शोच कीन्हेउ अधिकाई ॥
कन्या एक खड्ग लिये तहां ❀ काटै शीश जाउं भज कहां ॥
इत उत चहुं दिशा भय भरेऊ ❀ तब अकुलाय कूप में परेऊ ॥
परत बेलि मकरी इक धाई ❀ तासों अरुझि रहेउ लपटाई ॥

दो० महा अँधेरो कूपमें, सूझ परै कछु नाहिं ॥
बहुत ध्यान धरलख्यउँ जब, ह्वै मूषक तेहिमाहिं ॥

श्वेत श्याम मूसे द्वै जानी ❀ ता बेलीको काटै आनी ॥
नीचे सर्प रहेउ मुंह बाई ❀ टूटै बेलि गिरत सो खाई ॥
तामहिं काटहि मच्छर डांसा ❀ जाला पूरि रहेउ चहुंपासा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

देह रिपुनसों अति अकुलानी ❀ क्रीड़ा दुग्ध कलहकी खानी ॥
तहं इक सरस सुहाल सुहाई ❀ तामें मधु टपकत सुखदाई ॥
सो मधु बूंद आन मुख परी ❀ चाटत जीभ बहुत रुचि करी ॥
भूलेउ सब दुख कठिन करोला ❀ परम प्रसन्न भयऊ वहि काला ॥
ऐसे दुःख न मनमें आनै ❀ मधुकी बूंद परमहित मानै ॥
निशिदिन यह अभिलाषा करही ❀ और बूंद मुख में कब परही ॥
महा कलेश रात दिन सहही ❀ तौ मधु बूंद मध्य मन रहही ॥

दो० चलत फिरत सोवत जगत, उसी बूँदमें ध्यान ।
कब मेरे मुखमें परै, त्रिभुवन की सुख खान ॥

देखो यहै अचरज अधिकाई ❀ अस दुखमें सुख चाहत भाई ॥
यह नहिं कथा समझिये ताता ❀ विद्यमान सब जानहु भ्राता ॥
तुम कछु मनमें और न आनो ❀ सब जीवनकी यह गतिजानो ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

कौन पुरूष को हस्ती भयऊ ❀ कहं बन कहां सिंह निर्मयऊ ॥
कहा अग्नि धौ कन्या रूपा ❀ कहा बेलि कहा मूषक कूपा ॥
कहा काम जारन को दाप ❀ माछर डास कहो सन्तापा ॥
कह मधु बूंद जहां मन रहही ❀ जाके काज कठिन दुख सहही ॥
बार बार मैं परसों पाई ❀ भीषम पिता कहो समुझाई ॥

भीषम उवाच ।

पुरुष रूप यह जीव जु आही ❀ संशय गज रपटायो ताही ॥
सिंह रोग तह बन संसारा ❀ इन्द्रिय बिषय भोग आहारा ॥

दो० वात पित्त कफ ताप त्रय, जाको तेज अपार ।
खात रात दिन निडर व्है, कबहु न मानत हार ॥

चिन्ता शोक अग्नि तह जरई ❀ जरत रात दिन कल नहि परई ॥
कन्या खड्ग लिये जो धावै ❀ सो यह जरा सबन को आव ॥
इत उत फिरत जु हारा जीता ❀ लोभ मोह कर अति भय भीता ॥
तृष्णा काम क्रोध भय डरई ❀ अन्ध कूप सरिता में परई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बेलि आयु अवलम्बन जंहा ❀ राति दिबस मूसे द्वै तहां ॥
श्याम श्वेत दोउ दिन राती ❀ क्षण क्षण आयु निबरती जाती ॥
दोष जराकर विक्रम रहेऊ ❀ कालसु सर्प बाय मुख रहेऊ ॥
कन्या सुत कबत्र चहुंपासा ❀ यह तहं काटै मच्छर डांसा ॥
तृषा क्षुधाते उर जब जरही ❀ चित्त माहिं ब्याकुलताकरही ॥
तहं आमिष हिंसा दुरगन्धा ❀ चारों फूट गई भो अन्धा ॥
काम बूंद मनमानो एहा ❀ यामें नाहिन कछु सन्देहा ॥

दो० काम सहत की बूंद है सबहि नचावत नाच ।
सुर नर मुनि मोहे सकल, मानहुँ फिरत पिसाच ॥

मैंथुन ग्रसो सकल संसार ❀ ता लग सहत कलेस अपारा ॥
सुख किंचित दुख पर्वत आही ❀ तऊ मूढ फिर चाहइ ताही ॥
बूंद सुख दुख अचल समाना ❀ तामें भूल रहेउ अज्ञाना ॥
थिर नहि पुत्र पौत्र जग माही ❀ यौवन रुप सदा थिर नाही ॥
थिर न रहै इन्द्रिय सुख भोगा ❀ नहि थिर सुजन मित्र संयोगा ॥
थिर यश धर्म क्षमा सन्तोषा ❀ थिर हरिनाम होय जिहि मोषा ॥
धृग धृग काम रहेउ मन लाई ❀ धृग आपदा न छोड़ी जाई ॥
धृग अपनी कर सानै देहा ❀ सो थिर नहि क्षणमें हो खेहा ॥
बिष्णु बिना धृग सबहै कर्मा ❀ पर उपकार बिना सो धर्मा ॥
यस कीरति बिन धृग संसारा ❀ ज्ञान बिना धृग नर अवतारा ॥

दो० धृग धृग सो कर्तव्य सब जहाँ न हरिको नाम ।
धृग धृग सो नर प्रेत सम कहै न मुखसों राम ॥

बिन हरि कथा सुनै नहि कान ❀ धृग विद्या जह बुद्धि न ज्ञाना ॥
धृग सुज्ञान नहि जह वैरगा ❀ धृग हरिनाम बिना जप जागा ॥
येही सब साधन की राती ❀ राम नाम सो कीजै प्रीती ॥
स्थिर चित हरि सों हित करही ❀ सो संसार समुद्र न परही ॥
धन्य धन्य ते नर अनुरागी ❀ सब तज भये परम वैरागी ॥
धन्य धन्य ते भक्त अनूपम ❀ गावत हरिगुण लखत सकल सम ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

निशि दिन वेद पुराण निहारैं ❀ श्रीगोबिन्द छबि उर में धारैं ॥
रटत सदा गोपाल कृपाला ❀ जय जयजस प्रभुदीन दयाला ॥
पावत स्वर्गबास ते प्रानी ❀ जहां सुरेश अमर विज्ञानी ॥
मन में कुछ इच्छा नहिं राखत ❀ नारायण नारायण भाखत ॥

दो० भक्त सदा हरिके प्रिय, भक्तन सम कोउ नाहिं ।
भक्तन हित हैंरि तनु धरत, मत्यु लोक के माहिं ॥

यह इतिहाश सुनै अरु कहई ❀ ताके ज्ञान धर्म मन रहई ॥
धर्म ज्ञान हरि यश सुन लेहू ❀ श्रद्धा सुकृत दान सो देहू ॥
इके चित है जो सुनहिं संभारी ❀ अर्थ धर्म फल पावहि चारी ॥
भीषम पिता ब्यास ऋषि राई ❀ भारत कथा ब्यास मुनि गाई ॥
प्रभु की महिमा कौन बखानै ❀ शिब अज इन्द्र भेद नहि जानै ॥
मूक होय बाचाल प्रवीना ❀ दीनन के कुबेर आधीना ॥
पंगु चढै पर्वत पर जाई ❀ पापिन के कलि कलुष नशाई ॥
क्षण में रचै चतुर्द लोका ❀ हरै करै नित शोक बिशोका ॥
कोटिन ब्रह्मा इन्द्र बनावै ❀ कबहु प्रलय कर सकल नशावै ॥
महिमा अमित अपार अनादी ❀ पार न पावत अज शन कादी ॥

दो० वर्णत वर्णत हरि सुयश, उतरायण भयो सूर ।
नृपति युधिष्ठिरका तबहिं, भयो शोच सब दूरि ॥

बैशंपायन गावन लागे ❀ जन्मेजय श्रोता के आगे ॥
यहि बिधि बहुत दिवस जब गयऊ ❀ उत्तर रवी प्रवेशत भयऊ ॥
भीषम तबहीं चेतेउ ज्ञाना ❀ अबतजि तनु कीजिये पयाना ॥
धर्मराज के पाहिं बखाना ❀ राजा सुनो बात परमाना ॥
शरशय्या बहुतै दुख सहेऊ ❀ उतरायन सूरज अब भयऊ ॥
अब शरीर तजिहौं परमाना ❀ धर्मराज से करत बखाना ॥
अबतो कली होवै परमाना ❀ संतत भूप बिचारो ज्ञाना ॥
येहि कृष्णदेव परमाना ❀ अंतकाल गति श्रीभगवाना ॥
हरि को छोड़ रहहु जनि राजा ❀ कहों बात तोरे भल काजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अब तुम्हार जो होय उधारा ❀ भीषम भासे याही भुवारा ॥
दो० अब बैकुंठ आव हरि, शून्य देव अस्थान ।
कोतिक दिनक अन्तमें, गमनब श्रीभगवान ॥
नृपति युधिष्ठिर से यदुराई ❀ बहुत प्रकार भीषम समुझाई ॥
हरिते भीषम कहेउ बखाना ❀ सर्व लोकपति हो भगवाना ॥
कृपा करो हम तजैं शरीरा ❀ विश्वरूप तुमहिं यदुबीरा ॥
बहु प्रकारते अस्तुति कीह्ना ❀ तुरत शरण तव कृष्णहिं दीह्ना ॥
माघ सुदी अष्टमि शुभ जाना ❀ तादिन भीषम करब बखाना ॥
फाल्गुन मास पक्ष उजियारा ❀ सातों तीरथ कहै बिचारा ॥
श्रीपति अरु जो पांचो भाई ❀ सबै पितामह लिये बुलाई ॥
बिदा भये सब ते प्रभु गाये ❀ तजे शरीर परम सुख पाये ॥
मातुलि रथ तो इंद्र पठाये ❀ विष्णु दूत संग लेने आये ॥
रथ ऊपर भीषम बैठाये ❀ स्वर्ग लोक की राह सिधाये ॥
दो० परमहर्ष नारायण, भीषभ तजो शरीर ।
गये बैकुंठ बिष्णुपुर, परम अनंदित धीर ॥
धर्मराज तब रोदन कीन्हा ❀ क्रिया कर्म सब कर मन दीह्ना ॥
कीन्हों कर्म वेद व्यव हारा ❀ शास्त्र शांति कर संचारा ॥
श्रीपति कहै राब सन बानी ❀ पुरा हस्तिनापुर महं आनी ॥
श्रीपति संग करहु सब काजा ❀ करहु राज्य हर्षित मन राजा ॥
मोरी भक्ती करो मन लाई ❀ पुहुमी राज्य करो सुखदाई ॥
हमको बिदा दीजीये राई ❀ हमहु द्वारका देख जाई ॥
हर्षित राजा करै बखाना ❀ गति हमारि तुमहीं भगवाना ॥
मैं अनाथ तुम जनके साथा ❀ स्तुति करत बहुत नरनाथा ॥
पायो बंधु संग द्रौपदि रानी ❀ मिलेव सबै संग शारंगपानी ॥
बहिनि सुभद्रा भेटेउ जाई ❀ होकर बिदा चले यदुराई ॥
दो० सात्यकि रथको साजेउ, श्रीपति भे असवार ।
सब ते बिदा होय हरि, द्वारावती पगुधार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGahgotri. Funding by IKS.

हर्षित गये देव भगवाना ❀ द्वारावती नगर परमाना ॥
आये द्वारावती यदुराई ❀ यदुबंशी हर्षित सब आई ॥
धर्मराज राजा सुख करही ❀ सदा धर्म धर्महि हितधरही ॥
नगर लोग सब तहं के सुखी ❀ स्वप्नहु तहं सुनिये नहि दुखी ॥
पुत्र समान प्रजा प्रति पाला ❀ धर्म रूप श्रीधर्म भुवाला ॥
एहि भांति राज्य नृप करहीं ❀ धर्मराज शोकित मन रहहीं ॥
सजन सखा बन्धू जन जेते ❀ गुरु गोत्र कुल भीषम तेते ॥
तिन सबको मारे निज हाथा ❀ यही सोच सोचै नरनाथा ॥
प्रजा लोग सब करैं अनंदा ❀ जनु चकोर पाये निशिचंदा ॥
भारथ कथा पाप क्षय जाई ❀ पढ़त सुनत हो हर्ष बधाई ॥

दो० वैशम्पायन कथा करि पुर हस्तिना प्रकाश ।
जाते पावहिं परमपद, होत पाप को नाश ॥
भारत कथा पुण्य फल, करैं नारि नर गान ।
शान्ति पर्व भाषा रचि, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि सबलसिंह चौहानभाषाकृते
त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

॥ इति शांतिपर्व समाप्त ॥ १४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

॥ अश्वमेध पर्व ॥ १५ ॥

दो० गौरीनन्दन के चरण, बिनवौं बारम्बार ।
जिनके चिंतन करतही, बिघ्न होय जरि छार ॥
पाराशर ऋषि के तनय, ब्यासदेव भगवान ।
आचार्य्य हौ भार्त के, करौ नाथ कल्यान ॥
महारानी वानी सुमिरि, करौं नाथ सुखदान ।
यज्ञपर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

बैशम्पायन कह्यो बुझाई ❀ यज्ञ कथा सुनु कुरुकुलराई ॥
कियो युधिष्ठिर नृप तब शोका ❀ भीषम गये जबहिं परलोका ॥
कह्यो ब्यास सनु धर्म्म कुमारा ❀ मारा गोत्र पाप बहु भारा ॥
यज्ञरु योग जाप का कर्म्मा ❀ कैसे पाप छुटै हो धर्म्मा ॥
सुनी बात तब कहं ऋषेशा ❀ पातक खण्डब तोर नरेशा ॥
परशुराम कहँ सब जग जाना ❀ हने मातु आज्ञा पितु माना ॥
माता द्विज बध हत्या पाये ❀ अश्व मेध तब यज्ञ बनाये ॥
यज्ञ कियो तब पातक हरै ❀ तुमहूं करौ यज्ञ अनु सरै ॥
रामचंद्र दशरथ कुमारा ❀ रावण बंश कियो संहारा ॥
विश्वश्रवस् को सो सुत अहई ❀ ब्रह्म बधन तो रामहिं गहई ॥
वाजी यज्ञकियो प्रभु रामा ❀ द्विज बध छूठी भये निष्कामा ॥

दो० अश्वमेध तुमहूं करौ, गोत्रहि बध दुख हेत ।
धर्मराज यह सुना जब, भाष्यो बात सचेत ॥

यज्ञ समर्थ जु धन मम नाहीं ❀ कैसे यज्ञ होम जग माहीं ॥
फल विहीन तरु पक्षि न जाई ❀ धन बिहीन तस पुरुष कहाई ॥
बिन धन धर्म कहौ कस होई ❀ धन से हीन पुरुष जग जोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहै व्यास सुन धर्मकुमारा ❀ अर्थ चहौ सुनु बात हमारा ॥
पूर्व मरुत नृप यज्ञ बनाये ❀ सुर नर मुनि जन हर्ष बढ़ाये ॥
दिये दान बहु बिधि परकारा ❀ किये अयाचक मग्न अपारा ॥
लै न सके तो तजि नृप गयऊ ❀ गिरि हिमालय के बीचहि रहेऊ ॥
सो धन लेय यज्ञ प्रण ठानौ ❀ धर्म राज सब भेद बखानौ ॥
द्विज धन लै कै यज्ञ बनाओं ❀ यज्ञ करत तौ अपयश पाओं ॥
व्यास कह्यो सुन धर्म कुमारा ❀ सो सब द्विजन नहीं अधिकारा ॥
पूर्व दैत्य बन राजा गयऊ ❀ ताहि मारि देव धन लयऊ ॥

दो० सोई धन हरिचंद्र नृप, दीन्हों मुनि को दान ।
पाछे बलि राजा भये, सब धन ताको जान ॥

जो बलि राजा दीन्हों दाना ❀ पाछे परशुराम जग जाना ॥
कश्यप मुनि को दीन्हों दाना ❀ ऐसे धन राजा को जाना ॥
दान देय खाही विलसाही ❀ ताको धन्य मुनि जसगाही ॥
सो धन लै करु यज्ञ भुवारा ❀ कछू दोष नहिं लागु तुम्हारा ॥
राजा धर्म व्यास सम कहही ❀ यज्ञ अश्व मोरे नहि अहही ॥
सुना व्यास तब कह असबाता ❀ आनउ अश्व आह सरव्याता ॥
भद्रावती पुर हय है राई ❀ यौवनाश्व राजा के ठांई ॥
दश करोड़ दल हय को रक्षक ❀ यज्ञ नहीं सो करै प्रत्यक्षक ॥
ताही जीति अश्व लै आओ ❀ धर्म राज ते बात जनाओ ॥
भीम आदि बांधव हैं जेते ❀ करि संग्राम थके नर तेते ॥

दो० मेघ वर्ण वृषकेतु हैं, बालक औ पितु शोक ।
ता सन कछु न भाषिये, दोष देय सब लोक ॥

सुनि कै भीम कहत अस बानी ❀ करबे यज्ञ अश्व धन आनी ॥
होय प्रसन्न यज्ञ करु राजा ❀ आनब धन अश्वहु जग काजा ॥
हैं सहाय जगत के तारण ❀ किहि ते डरिये कौन सो कारण ॥
राजा कह्यो सुनहु सब भाई ❀ तुक अकेल बाजी बहुताई ॥
दश करोड़ दल राख तुरङ्गा ❀ कैसे भीम करब रण रङ्गा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनिकै वृषकेतू तव कहई ❀ आज्ञा देहु संग हम रहई ॥
आनों भीमहिं साज तुरंगा ❀ यौवनाश्व को करिये भंगा ॥
सुनतै राजा कहै बखानी ❀ कैसेहु कह न सकौं यह बानी ॥
तोरे पितहिं धनंजय मारा ❀ देखे मुख मन दुःख हमारा ॥
तब वृषकेतु कहेउ सुन राजा ❀ कीन्हेउ भला कर्ण को काजा ॥

दो० सभा मांझ द्रौपदी कहँ, पराभाव सो दीन्ह ।
यही पाप ते तजेउ तनु, उनकै गति तुम कीन्ह ॥

पार्थ बाण से गंगा बहाये ❀ ताते पिता धर्म पद पाये ॥
सुने भीम राजा सुख पाये ❀ मेघवरण तब बात सुनाये ॥
भीम संग हम जैहैं तहां ❀ भद्रावती नगर है जहां ॥
कै प्रण तेज अश्व लै जाऊं ❀ धर्मराज को यज्ञ कराऊं ॥
भीम पितामह कर्ण को नन्दन ❀ करि रण उत्कट हेतु तुरंगन ॥
सुनि हर्षित भये धर्म कुमारा ❀ यज्ञ भेद बहु पुण्य प्रकारा ॥
केते विप्र कौन मति दाना ❀ केते धृक साकल्य प्रमाना ॥
व्यास कहे मुनि वीसहजारा ❀ लाख कलश है घृत विस्तारा ॥
तीन लाख साकल्यहि लाई ❀ इन्दु कुंदन के अश्व बनाई ॥
पीत पूंछ अरु वपु है श्यामा ❀ चैत पूर्णातिथि कीजै कामा ॥
कंचन पत्र बांध शिर ताही ❀ अपने नाम यज्ञ पति चाही ॥

दो० हम छोडाहै अश्व यह,जगत बीर कोउ और ।
घड़ी एक जो गहि रखै, जीत बसो प्रण ठौर ॥

करै अश्व लघु शंका जहां ❀ सहस्र गऊदान दे तहां ॥
एकहिं सेज द्रौपदी साथा ❀ साधन योग करो नरनाथा ॥
यावत अश्व गेह नहिं आवै ❀ तावत भोजन विप्र करावै ॥
बीचहि खड्ग राखिकै राजा ❀ वर्ष दिवस खोवत यह साजा ॥
नारी पासे मन जव जाई ❀ वही खड्ग चितवो तब राई ॥
अश्वमेघ इन्द्रहि मन धारा ❀ स्त्री व्रत पाली नहिं पारा ॥
सत्यकेतु नाम सुनु राऊ ❀ अश्वमेघ के सबै नसाऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

व्यास गये कहि अपने थाना ❀ राजा करहिं हरी को ध्याना ॥
सुनत राउ तब चिन्ता करई ❀ कठिन बरत आसा हरि धरई ॥
अभ्यंतर आये भगवाना ❀ द्वार पाल ते कहो बखाना ॥

दो० कहो जाय राजा पहँ, आये श्री भगवान ।
सबै जानिकै आनाहीं, कीजै जाय बखान ॥

प्रतीहार तब कह हरि पाहीं ❀ तुव अटकाव कि आज्ञा नाहीं ॥
कहे कृष्ण रात्री परमाना ❀ कौने मत हम करैं पयाना ॥
सुनि प्रतिहार तहाँ तब गयऊ ❀ जहां धर्म नृप स्थिर रहेऊ ॥
सुनि सब बचन बन्धु हरषाये ❀ सहित द्रौपदी बाहर आये ॥
राजा हरिहिं कियो परणामा ❀ चारों बंधु मिले घन श्यामा ॥
बिहंसि बचन तब राजा कहेऊ ❀ चिन्ता मम तव यनमहँ अहेऊ ॥
तेहि पीछे रानी मिलि आई ❀ भै अचिन्त तब पांचों भाई ॥
पंचाली भाषेउ परतच्छक ❀ सदाभक्त के हौ तुम रच्छक ॥
सभा माहं तौ लज्जा तारा ❀ दुर्वासा छल मन विस्तारा ॥
सदा भक्त के रच्छा कारण ❀ जगत मांह कीन्हे तनु धारण ॥

दो० सावधान बैठे सबै, परम हर्ष मन कीन्ह ।
धर्म राज नृप समझिकै, हरिसन भाष लीन्ह ॥

यज्ञ हेतु हम चिंता कीन्हा ❀ नाथ आय के दर्शन दीन्हा ॥
अश्वमेघ हम कियो बिचारा ❀ जो आज्ञा कर नंद कुमारा ॥
कृष्ण कहे राजा के पाहीं ❀ जगत मांह ऐसा को आहीं ॥
जाना मंत्र भीम यह दी हा ❀ उदर भरे कर उद्यम कीन्हा ॥
दैत्यनि संग भयो मन भंगा ❀ कामी विवश सचा सुख रंगा ॥
जगत मांहि जो धर्म न जाना ❀ महावीर हैं भक्त प्रमाना ॥
जानत नांहि आप बलवाहीं ❀ भक्त बीर सब देखा नाहीं ॥
रामचंद्र यज्ञ निरमाये ❀ चतुरंगिणि को संग पठाये ॥
शुक्रमती ग्राम ईक अहई ❀ श्रुत देव राजा तहं रहई ॥
तहं भा युद्ध महा भय कारी ❀ पुनि बालक दोउ शरनन मारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० चारो बन्धु बधे रण, कुश लव दोऊ बीर।
तुम कत यज्ञ करे चहो, अस भाषे यदुवीर॥
को तुम को कब रक्षा करिहै ❀ को रण रचै अश्वको हरिहै॥
सुनिके भीम कहे तब बानी ❀ अस कस भाषहु शारँगपानी॥
तार ध्यान प्रथमै मैं गहेउ ❀ पीछे मंत्र राज पहँ कहेउ॥
लम्बोदर तुमहीं जग माहीं ❀ जगत मांह कोउ दूसर नाही॥
तुम तो स्त्री के बश अहौ ❀ कहते कहत मौन ह्वै रहौ॥
धर्म राज को भ्रम उप जायो ❀ का हित काज नाश करवायो॥
अश्व मेध हम तो अब करिहौं ❀ ऐसे गोत्र पाप से तरि हौं॥
जेते बीर जगत में आहीं ❀ मारों सबहिं महारण माही॥
तुम हमार सर्बस हो स्वामी ❀ तुम सबही के अतर्यामी॥
सुनिकै कृष्ण हर्ष अति पाये ❀ तब राजा ते बचन सुनाये॥
दो० धर्मराज ते श्रीपती, भाषे बात बिचार।
पातक जो है गोत्र बध, हम कहँ देहु सुवार॥
मैं तो पाप करों सब भारी ❀ सुखते कीजै राज्य अघारी॥
भीम तबहिं इक उत्तर दीन्हा ❀ पातक कौन आपु हरलीन्हा॥
पाप देहिं जो तुम कहं राजा ❀ पाप बढ़ै अरु धर्म अकाजा॥
महा पुण्य मख में जित होई ❀ तुम कहं राजा दैहैं सोई॥
हम तो यज्ञ करै प्रण ठानी ❀ करिहौं यज्ञ अश्व धन आनी॥
वृषकेतू जो कर्ण कुमारा ❀ मेघ वर्ण सुत प्राण अधारा॥
मोरे संग दोय जन जैहैं ❀ श्यामकर्ण अश्वनि लै ऐहैं॥
करौं युद्ध घोड़ा लै आवौं ❀ तबहीं वृकोदर नाम धरावौं॥
धन जन सब जो है नृप पाहीं ❀ लाओ शीघ्र हस्तिपुर माहीं॥
तुम सहाय जो हौ जगतारण ❀ तौ हम भरमहिं कौने कारण॥
दो० सुनिकै हर्षे जगतपति, हर्षित आज्ञा दीन्ह।
अश्वमेध परवेश यह, सूक्षम भाषा कीन्ह॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जाको सुन जनमेजय, नाशै पाप पहार।
सोई यज्ञ किये ते, नर उतरै सब पार॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
अश्वमेधयज्ञकथनंनाम प्रथमोऽध्याय॥ १॥

सुनि राजा सो कथा प्रमाना ❀ यामिनि गत तो भये विहाना॥
मेघवर्ण अरु भीम सयाना ❀ वृषकेतू सँग कीन्ह पयाना॥
कुंती नृप औ श्री भगवाना ❀ इन सब कहँ कीन्हों परणामा॥
माता कछु सम्भर लै दीन्हों ❀ भीम सेन तब भोजन कीन्हों॥
पुनि माता कछु औरौ लाई ❀ मेघ वर्ण कह दीन्ह बनाई॥
भीम कहै तब श्रीपति पाहीं ❀ यौवनाश्व नगरी हम जाहीं।
तुम रक्षा परजाके करहू ❀ सत्य बात यह हिय मह धरहू॥
यह कहिकै तीनो जन जाई ❀ यौवनाश्व पुर चले पराई॥
तीनों जना एक सग भयऊ ❀ यौवनाश्व के नफरहि गयऊ॥
ग्राम रंध्र पुष्करणी अहई ❀ बनउपवन चहु दिक लहलहई॥
पुष्पवाटिका देखेउ जाई ❀ अनुदित पुष्प रहे तंह छाई॥

दो० पर्वत एक विराजही, यज्ञ वेद पुर मांह
तेहि ऊपर तीनों जने, बैठे हयके चाँह॥

जब दो पहर दिवस भयो भारी ❀ जलके हेतु अश्व पगु धारी॥
श्यामकर्ण हय चालत आवै ❀ चमर छत्र तापर छवि पावै॥
बहुतक दल हय गज संग आये ❀ देखत मेघवर्ण मन लाये॥
भीमसेन सन कह तब बाता ❀ अनौ जाइ अश्व सख्याता॥
यह कहिकै तुरंत चलि भयऊ ❀ गिरिते कूदि भूमि पर गयऊ॥
राक्षस माया तब संचारा ❀ दश दिक करै लागु अधियारा॥
पाहन वर्षा अधिक चलावै ❀ देखत लोगन दिशा गभावै॥
देवन दूत स्वर्ग मह गयऊ ❀ इन्द्र पाह जाकर सो कहेऊ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दैत्य एक माया परकाशा ❀ जगत चहत हैं करै विनाशा ॥
दूसर दूत सुरेश पठाये ❀ मेघवर्ण ताकहं समुझाये ॥
दो० मेघवर्ण पुनि कहेउ तब, तुम शंकित केहि काज।
लै जैहैं हम अश्व तहँ यज्ञ धर्मक काज ॥
सुनत दूत गवने सचुपाये ❀ सुनासीर कहं जाय जनाये ॥
तब सुरेश मन माहिं थिराना ❀ अश्वमेध सुनि बहु हर्षाना ॥
मेघवर्ण माया संचारा ❀ सबै वीर भये शिथल अपारा ॥
पीछे अश्व हरण तौ करेउ ❀ पर्वत मांह तबै पगु धरेउ ॥
देखे भीम हर्ष तब मानैं ❀ राजा दल सब शंका आनैं ॥
राजा दल देखे तब धाये ❀ रण हित तब वृषकेतु सिधाये ॥
वीरन कांह हांक जब दीन्हा ❀ सबै बीर यह भाषण कीन्हा ॥
काह नाम औ जात तुम्हारा ❀ भाषो सो तो पाह हमारा ॥
तब वृषकेतू कहौ रिसाई ❀ युद्ध समय का जाति जनाई ॥
युद्ध करो या भागो भाई ❀ नाम गोत्र का करौं सगाई ॥
तब बीरन सब रण दिय ठाना ❀ महामार नहि जाच बखाना ॥
दो० महाबली सब सैन्यके जल सम वर्षत बान ॥
कोटि वीर शर वर्षते कर्णकुँवर पर आन ॥
कर्ण पुत्र तब बाण चलायो ❀ अगणित वीरहिं मारिगिरायो ॥
भगे बीर पुरुषारथ देखे ❀ जुझे वीर रणमांह अलेखे ॥
राजा आगे परी पुकारा ❀ हरे अश्व सबदल कँह मारा ॥
राजा कह केता दल अहई ❀ हमते रण करने को चहई ॥
धावन कहै देवता अहेउ ❀ तीन वीर हैं सब तब कहेउ ॥
यौबनाश्व नृप तह पगु धारा ❀ और चले सब राज कुमारा ॥
कर्णपुत्र को राजा देखा ❀ बालक देखत अचरज पेखा ॥
राजा पूंछा कहो कुमारा ❀ नाम गोत्र का अहै तुम्हारा ॥
सुने कुबर तब कहै बिचारा ❀ कयश्प गोत्ररु कर्ण कुमारा ॥
धर्मराज यज्ञहि मन लाये ❀ ताते अश्व लेन कह आये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० यौबनाश्व तब अस कहेउ तुम्हरे तो रथ नाहिं।
रथ लीजै मम पाससे करौ युद्ध रण माहिं॥

कर्णपुत्र तब कियो बखाना ❀ मैं तो रथको युद्ध न जाना॥
राजा पुनि कह बाण चलैये ❀ कर्णपुत्र जब यह सुनि पैये॥
तुम तो वृद्ध अहो मैं ज्वना ❀ तुम्हरे दरश करैं भगवाना॥
राजा तब दश बाण चलाये ❀ कर्णपुत्र निज शरन उड़ाये॥
तीन बाण राजा को मारा ❀ निष्फल कीन्हें सबै भुवारा॥
अर्धचन्द्र कुवँराहि तब छाँटे ❀ चमर छत्र गुण शारँग काटे॥
तब राजा धनु पै गुण धरा ❀ साठबाण बृषकेतुहि मारा॥
रक्तबाण कुँवराहि तब लीन्हा ❀ तीन बाण रिस करि ताजि दीन्हा॥
सारथि अश्व तजे तब प्राना ❀ जूझे राजा सब दल जाना॥
अग्नि पवन के बाण चलाये ❀ उड़िकै सैन्य अग्नि जरि जाये॥

दो० तब राजा दुसर रथहि क्रोधित भये सवार।
वारिबाण तब भूपमणि तहँ जो कीन्ह प्रहार॥

ताते सब जो अग्नि बुताये ❀ बाणन्ह कर्णकुमार छिपाये॥
भीम सेन तब देखन पाये ❀ राजा महामार मन लाये॥
कर्णपुत्र तब चक्र चलाये ❀ काटे बाण विलम्ब न लाये॥
पुनि इक बाण नृपति कह मारा ❀ क्रोधित भो मद्रेश भुआरा॥
मारेउ बाण कर्णसुत राई ❀ कर्णपुत्रको मूर्च्छा आई॥
देखत भीम क्रोध तब पाये ❀ गहिकर गदा क्रोध करि धाये॥
काह कहब राजासे जाई ❀ यह कहि भीम चले रिसिआई॥
धावत अधते पवन चलाये ❀ हयगज रथ पैदल उड़ि आये॥
बहुते गज तहँ भये सँहारा ❀ जैसे पुण्य पाप करु छारा॥
यौवनाश्व राजा को मारा ❀ ताको नाम सुवेश उदारा॥

दो० कुँवर हाँक तब भूपमणि क्रोधित दीन्हे आय॥
गदा घाव तब धायक मारे भीम घुमाय॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्रोधित भीमसेन फिर आये ❀ सौ वैरी फिरि भूमि गिराये ॥
तब सुवेश आपुहि संभारा ❀ भीमसेन को भूमि पछारा ॥
भीम उठाये गजते भारे ❀ राजपुत्र के ऊपर डारे ॥
मारेउ गदा घाव भूवारा ❀ पड़े दौउ रणभूमि मंझारा ॥
राजा सुनो कथा अब आगे ❀ कर्णपुत्र मूर्च्छा ते जागे ॥
यौबनाश्व को मारेउ बाना ❀ पांचशरन नृप मोहन जाना ॥
राजा मूर्च्छि परे मैदाना ❀ कर्ण पुत्र धर्मी करि ज्ञाना ॥
फेंट छोड़ि अंबर तब लीन्हा ❀ कुंवरपवन तब राजहिं किन्हा ॥
भाषे जो भक्की भगबाना ❀ तब राजा पाये जिबदाना ॥
यहि अंतर राजा तब जागे ❀ रहु रहु कह तब बोलन लागे ॥

दो० चेत पाय देखा तबै, कुँवर डोलावै पौन ।
देखत लज्जा भै नृपहिं, तब कीन्हा है मौन ॥

गले लगाय तब भेंटा राउ ❀ तुमही हमरे प्राण बचाऊ ॥
सदा धर्मरत तब पितु रहेउ ❀ ताके पुत्र कुंवर तुम अहेउ ॥
देख राज धन प्राण तुम्हारा ❀ धन्य वीर हौ धर्म भुआरा ॥
अबरन केर नही है कामा ❀ चले तहा जह भीम सुठामा ॥
यौबनाश्व औ कर्णकुमारा ❀ भीम पांह हर्षित पगु धारा ॥
कहे जाय तब युद्ध न काजु ❀ कर्णपुत्र मोहिं रच्चेउ आजू ॥
प्रथम किये मूर्च्छित मैदाना ❀ तेहि पीछे दीन्हों जी दाना ॥
अब है युद्धकाज कुछ नाहीं ❀ चलो भीम मेरे पुर माहीं ॥
अब मेर मन उपनो ज्ञाना ❀ दर्शन जाय करब भगवाना ॥
दशसहस्त्र गज श्वेत जु अहई ❀ लै चल मखको राजा कहई ॥

दो० राजा यज्ञ अरंभेऊ, रक्षक हमको जान ।
यहि प्रकार ते प्रीतिकरि, पुर कहँ कीन्ह पयान ॥

प्रीति भये तब देखन पाये ❀ मेघबर्ण हय लेकर आये ॥
नगर मांह कीन्हा परवेशा ❀ अंतःपुर पठयउ संदेशा ॥
आरति लै रानी करू साजा ❀ अंतःपुर आये तब राजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

राजा कहेउ सुना तुम रानी ❀ वीरन्ह कैआरति करु आनी ॥
कंठ शत्रु जो अहै हमारा ❀ सो तुम राखौ कर्ण कुमारा ॥
पीछे भोजन पान कराये ❀ हर्ष होय तब भोजन पाये ॥
शयन किये रैनी संख्याता ❀ गत भइ रैन भयउ परभाता ॥
राजा उठि सेवकहि हंकारा ❀ सबते बात कहे संचारा ॥
दल साजन को कर मनलाई ❀ हर्षित सब हस्तिनपुर जाई ॥

दो० नगर लोग सब जेते, दल बल हय गज साथ ।
नगर हस्तिनापुर चले, जहँ दर्शन यदुनाथ ॥

यौवनाश्व माताके पासा ❀ जाय तहां ये बचन प्रकासा ॥
माता चलो हस्तिपुर माहीं ❀ कृष्ण चरण जेहि पुरमें आहीं ॥
धर्मराज यज्ञहि मन लाये ❀ देश देशके नृप सब आये ॥
सदा धर्मरुपहि भगवाना ❀ जाके चरण गंग परमाना ॥
माता चलो ताहि पुर माहीं ❀ जहबस नृपति युधिष्ठिर आहीं ॥
तब माता कहि बचन सुनाई ❀ कारण कौन तहां को जाई ॥
देव धर्म नाहीं हम जाना ❀ वहां गये मम देश नशाना ॥
गोरस अन्न दासि अरु दासा ❀ गये हमारे होहिं बिनासा ॥
कृष्ण युधिष्ठिर का दोउ करई ❀ आपन पुर मिथ्या परिहरई ॥
जैसे गृह वे हैं मन दीन्हा ❀ तैसे गृह आपन मन कीन्हा ॥

दो० बहु प्रकार राजा कह, माता मानति नाहिं ॥
बांधि मातु कह राव तब, डारा डोली माहिं ॥

यहि प्रकार माता कह लीन्हा ❀ तब राजा चलबे मन दीन्हा ॥
पुरके लोग चले सब संगा ❀ नृपति सदल हिय भरे उमंगा ॥
नाना धन जेते गज श्वेता ❀ चले हर्ष नृप सबै सचेता ॥
दिवस पांच तो पंथ सिराना ❀ देश हस्तिना आय तुलाना ॥
योजन एक हस्तिपुर रहेऊ ❀ राजा पांह भीम तब कहेऊ ॥
इहां रहो राजा तुम भाई ❀ मैं यह बात जनावों जाई ॥
यह कहि पुनः बृकोदर गयऊ ❀ हस्तिनपुर प्रवेश तब भयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चारौं बंधु और भगवन्ता ❀ इन कहँ मिलेउ सप्रेम तुरंता ॥
भाषेउ तब यह बात बुझाई ❀ अश्व सहित लै आयउं राई ॥
राजा सब परिवार समेता ❀ आयउ तब दर्शनके हेता ॥
दरश चहैं प्रभु तव चरणनकी ❀ जो तारन सुर नर मुनि जनकी ॥
तब नृप धर्मराज अस कहई ❀ जाहु भीम द्रौपदि जहं अहई ॥
जाय कहहु अस बयन हमारा ❀ तुम द्रुत नवसत करहु शृंगारा ॥
भूषण अलंकार सजु अंगा ❀ वेगि चलहु कुंतीके संगा ॥
भीमसेन द्रौपदि पहं गयऊ ❀ पूंछा कुशल कहन तब लयऊ ॥
कहेउ भीम सब कुशल हमारा ❀ यौवनाश्व मम पुर पगुधारा ॥
परभावति अति नैन विशाला ❀ सखी सहसदश संग रसाला ॥

दो० तुरै सहित सब आयऊ, भूषण करहु बनाव ।
दरश तुम्हारा चहत है, भेटहु आगे जाव ॥

भीम कहा तब सुनु मम प्यारी ❀ बिनु शोभा नहिं देव मुरारी ॥
यहि अवसर नहिं यादवराई ❀ बिनु गोबिन्द नहिं शोभा पाई ॥
तब द्रौपदी भीम से कहीं ❀ हैं हरि निकट गये नहिं अहीं ॥
इतना कहत भीम संचारा ❀ नृपके पास देखि हरि खारा ॥
चले नृपति संग चारौं भाई ❀ कृष्ण सहित शोभा बनिआई ॥

दो० रथ चढ़ि चले युधिष्ठिर, गज चढ़ि चारौं भाइ ।
चले नकुल सहदेव सह, पार्थ भीम ससुहाई ॥

यौवनाश्व दल साज बनाई ❀ हय बनाय कर अग्र चलाई ॥
धर्मराज पै अमरहुं जाई ❀ हनि निसान जनु घन घहराई ॥
यौवनाश्व दल गरुअ भुआरा ❀ महि डगमगै सैन्यके भारा ॥
आय दोऊ दल सन्मुख भयऊ ❀ धर्मराज तब देखन लयऊ ॥
देखि नृपति मन कीन्ह बिचारा ❀ बड़े नृपति हैं गरुअ भुआरा ॥

दो० यौवनाश्व कहँ देखा, सुत पत्नी परिवार ।
तब रथसे उतरे नृपति, दोऊ मिले भुआर ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
यौवनाश्वधर्मराज सम्मिलनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बैशम्पायन ऋषि तब आगे ❀ जन्मेजय सन भाषन लागे ॥
यौवनाश्व तब लागे पाऊ ❀ आशिष दीन्ह युधिष्टिर राऊ ॥
तुम मोरे जस चारो भाई ❀ मिलेउ कृष्ण नृप दीन्ह दीखाई ॥
धरहु चरण उर करु सेव काई ❀ जेहिते अहै हमार बड़ाई ॥
यौवनाश्व प्रणयउ यदु वीरा ❀ भो निर्मल बहु सुद्ध शरीरा ॥
नमस्कार कुन्ती कहँ कीन्हा ❀ नृप द्रौपदि सह आशिष दीन्हा ॥
धन्य तुरंग सब कहबे लयऊ ❀ जेहि हित तीन वीरचलगयऊ ॥
धनि बृषकेतु कर्ण के वीरा ❀ जेहिते भयऊ सुषी परिवारा ॥

दो० भाबी धन्य हमार यह, पूर्ब पुण्य बहु कीन्ह ।
दर्शन नयन जुड़ानेउ, नृप ये कहब लीन्ह ॥

पुनि अर्जुन माद्री सुत आये ❀ भे अनंद तब अंकम लाये ॥
अर्जुन नमस्कार तब कियऊ ❀ अस्तुति कीर तब कहबेलयऊ ॥
हमरे तुम जस धर्म नरेशा ❀ अति गरिष्ठ जस देव महेशा ॥
धन्य देश जहँ बशहु नरेशा ❀ हमरे भाग्यन यहां प्रवेशा ॥
पुनि सुवेश पारथ ढिग गयऊ ❀ करि प्रणाम तब कहबे लयऊ ॥
वृषकेतू का कीन्ह बखाना ❀ जिनके मिलत मिले भगवाना ॥
धन्य तहां जहँ बस भगवाना ❀ बिनु गोबिंद नर प्रेतसमाना ॥
हरि सम दुर्लभ और न आना ❀ कृष्णनाम नित करौ बखाना ॥

दो० धर्मराय यदुपति सहित, आनंद भये अपार ।
मिल कर सब आवत भये, नगर कीन्ह पैसार ॥

पहर एक जब निशि गत भयऊ ❀ दामोदर तब कहबे लयऊ ॥
सुनहु बात इक धर्म कुमारा ❀ यज्ञकाज सब करहु संभारा ॥
चैत पूर्णिमा गत भो राजा ❀ अबवैशाख शुभकरिये काजा ॥
मास वैशाख नौमि तिथि धरिया ❀ तेहि दिन यज्ञ अरंभन करिया ॥
तबही कृष्ण किये अनुसारा ❀ यज्ञ करे कह यह व्यवहारा ॥
कञ्चा सुवरण सागर पारा ❀ तहां विभीषण रहै भुआरा ॥
तहवां से कंचन जो आवै ❀ सोइ यज्ञ के यतन करावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब राजा मन विस्मय कीन्हा ❀ कौन पुरुष कह यश गहदीन्हा ॥
तब अर्जुन अस कहवे लागे ❀ राजा कहहु हमारे आगे ॥
जेहि कारण तुम विस्मय करहू ❀ सो आयुस मेरे शिर धरहू ॥
दो० तब राजामन हर्षेउ हँसिकै बीरा दीन्ह ।
अर्जुन लीन्हों बिहँसि कै, चरण जु बन्दै कीन्ह ॥
कृष्णहिं किय प्रणाम कर जोरी ❀ होहु सहाय जगत पति मोरी ॥
तबहिंकृष्ण किये अनुसांरा ❀ वेगि जाति फिरु पांडुकुमारा ॥
तब अर्जुन दक्षिण दिशि गयऊ ❀ तहँ एक राक्षस भेंटत भयऊ ॥
भाष्यो दैत्य भाजि कह जासी ❀ मारों तोहिं मेलिकै फांसी ॥
तब अर्जुन तिष्ठित ह्वै कहई ❀ कौन वीर तैं डाटत अहई ॥
तब दानव अस कहै प्रचारी ❀ राय बिभिषण के रख वारी ॥
तब अर्जुन किय मन अनुमाना ❀ मारों दैत्य करों यश माना ॥
दैत्य शैल शिर ऊपर धावा ❀ सन्मुख अर्जुन सपदि चलावा ॥
अर्जुन सपदि बाण कर लीन्हा ❀ शैल काटि तो दुइ टुक कीन्हा ॥
दैत्य भाजि लंका कहँ गयऊ ❀ हनुमत सों भेंटत तब भयऊ ॥
कह दानव सुनु पवन कुमारा ❀ इक क्षत्रिय बड़ आउ जुझारा ।
तहवां सों भागत मैं आवा ❀ तुम्हरे शरणहि जीव बचावा ॥
दो० मैं जानत हौं रामहैं, की तौ लक्ष्मण आहि ।
भागि आये हम तुम पहँ, जाहु खोजलेहु ताहि ॥
यह सुनि पवनतनय मन हर्षा ❀ चलहु साथ नहिं कीजै अर्सा ॥
कह दानव सुन पवन कुमारा ❀ हम नहिं आउब साथ तुम्हारा ॥
शैल एक मै उन्ह पर डारा ❀ धनुष टंकोर कीन्ह वे छारा ॥
तिनके डरसे भागि मैं आवा ❀ कैस मुख मैं उन्हहिं दिखावा ॥
बंदि चरण दानव गो तहां ❀ नृपति बिभीषण बैठत जहां ॥
तब कहि बचन ताहि समुझावा ❀ सुनत बिभीषण आनंद पावा ॥
तब हनुमत निज मन अनुमाना ❀ पवन तनय तौ पवन समाना ॥
दो० पवन तनय तब उछला, उदधि पार चलि आय ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सेतु बांध जहँ बांधेउ, खडे हुए पुनि जाय ॥
हनुमत कोपि कहे अस बाता ❀ कौन वीर यह आहि बिधाता ॥
पूंछेउ आये तुम केहि कारन ❀ तब कह पारथ लाउ न बारन ॥
कह अर्जुन सुनिये कपि बीरा ❀ हम अर्जुन आहहिं रणधीरा ॥
ब्रह्म सहोदर बध हम कीन्हा ❀ चिन्ता सोइ युधिष्ठिर लीन्हा ॥
बोलेउ राज्य छोड़ बन जाहीं ❀ भारी पाप भये हम पाहीं ॥
अगुनत भये रात सब बीती ❀ चिन्ता नृपहि भयउनहिं रीती ॥
व्यास ऋषै तब पूंछै लीन्हा ❀ कारण ताहि यज्ञ उन्ह कीन्हा ॥
तब राजा दोऊ कर जोरी ❀ सुनहुव्यास मुनिबिनती मोरी ॥
गुरू सहोदर बध हम कीन्हा ❀ भारी पाप हमै बिधि दीन्हा ॥
कहा व्यास सुनु धर्म सुराजा ❀ त्रेता कियउ राम मख साजा ॥
रामचन्द्र त्रेता महं भयऊ ❀ पूर्विल कथा कहन तब लयऊ ॥
रामचन्द्र रावण बध कीन्हा ❀ ता कारण यज्ञहिं चित दीन्हा ॥
ऐसन यज्ञ तुमहु जो करहू ❀ तब यहि पापन से उद्धरहू ॥
व्यास ऋषय अस कहिके गयऊ ❀ तेहिके सेवक बनचर रहेऊ ॥
रामचन्द्र तब किय अनुमाना ❀ केहिबिधिउतरजलधिमहाना ॥
तीन दिवस सागर तट रहेउ ❀ तऊ न पथ सागर सन लहेऊ ॥
तब कोपेउ लक्ष्मण बल बीरा ❀ खैंच श्रवणलागि धनुषै तीरा ॥
कर धरि जांमवंत समुझावा ❀ स्वामीउदधिआपुचलि आवा ॥
सुनि लक्ष्मण मन धीरज भयऊ ❀ ब्राह्मण रूप सिंधु चलि गयऊ ॥
हे स्वामी का अवगुण मोरा ❀ केहिहित बाण शरासन जोरा ॥
हौं सेवक तुव आदि गुसांई ❀ तुम मारहु मम काह बसाई ॥
तुम जो मोकहं दीन्ह बड़ाई ❀ उतरहिं कपि तो का प्रभुताई ॥
नल अरु नील जो कपि कर वीरा ❀ औ सुग्रीव आहि रण धीरा ॥
नल अरु नील खेल लरिकाई ❀ वाही समय ब्रम्ह ऋषि आई ॥
तिन्ह आशिष दीन्हा मन लाई ❀ सिन्धु शिला तोहिं छुये तराई ॥
सो नल नील आहिं तुव साथा ❀ आज्ञा देहु सुनहु रघुनाथा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० सो अशीश तिन्ह पाये, काज कापर रोष ।
सो आज्ञा इन्ह दीजिये, बाँधहिं सागर चोख ॥

तब हनुमत सुग्रीव बुलावा ❀ तुरतआय तिन्हप्रभुशिरनावा ॥
तब कपि कहा सबहिं समुझाई ❀ गिरि पहाड़ तुम आनहु जाई ॥
तब सब मिल पहाड़ लै आये ❀ सेतु बांध तब तुरति बंधाये
रामचन्द्र तब आज्ञा दीन्हा ❀ चले वीर निर्भय मन कीन्हा ॥
यहि मिसु सागर बधेउ वीरा ❀ तब तुअ लंक जरे रणधीरा ॥
सेतुबंध चढ़ि जाय न देउं ❀ मैं हनुमत परतिज्ञा लेऊं ॥

दो० रामचन्द्र कर सेवक, पवन पुत्र हनुमान ।
रण जीतेउ कौरव दल, देखो तुअ अनुमान ॥

अर्जुन बाण हाथ कै लीन्हा ❀ तब हनुमतहि उत्तर दीन्हा ॥
मोहिं राम अतुलीत बल दीन्हा ❀ तौ समर्थ मैं खोजे लीन्हा ॥
तुम हनुमंत पवनसुत जाये ❀ बल अनुमान न मोसन आये ॥
कहु सागरहिं करौं जरि छारा ❀ कहु बाणन ते बाँधौं सारा ॥
कहहु मारि पौरुष तुब चूरों ❀ की तोहिं मारि सिन्धु महं बूरों ॥
कोपि बचन जब अर्जुन कहेउ ❀ हनुमंत तब संमुख ह्वै रहेउ ॥

दो० कोपि पूँछ तब फेरा, हनुमंत वीर रिसान ।
दोऊ वीर बिचक्षण, दोऊ चतुर सयान ॥

तब अर्जुन धनु शर संधाना ❀ हनुमंत सन भाषेउ परमाना ॥
एकहिं बाण समुद्रहिं पाटौं ❀ तब निज नाम धनंजय राखौं ॥
तब हनुमंत कोपि कह बैना ❀ देखब बाण तोर भरि नैना ॥
मारे बांध तैं चढि कै देखा ❀ तोर बाण मोरे केहि लेखा ॥
तोरों बाण तौं हनुमंत वीरा ❀ नातरु सेवक हौं रणधीरा ॥
जो तोरे जिय अस मन देऊ ❀ तब अर्जुनहु प्रतिज्ञा लेऊ ॥
दोनों बीर पैज जब किये ❀ डोलेउ नारायण तब हिये ॥
धरे ध्यान तब श्रीभगवन्ता ❀ जहां हुते अर्जुन हनुमंता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० यज्ञ विषय जहँ थे हुते, आसन टरु भगवान ।
तबहिं कृष्ण तहँ ते उठे, भक्ति वश्य भगवान ॥

उठे कृष्ण द्वारका वासी ❀ सबै कृष्ण घट आहिं निवासी ॥
एक रुप राखे मुख पाहां ❀ दूसर देह सिंधु तट माहां ॥
खैंचेउ बाण शरासन ताना ❀ मारेउ शर पारथ संधाना ॥
दोउ वीर प्रतिज्ञा कीन्हा ❀ कृष्ण चरण तब सुमिरें लीन्हां ॥
उदधि पाटि गो आरहिं पारा ❀ कह अर्जुन सुन पवनकुमारा ॥
जो यह पांव तोरु हनुमाना ❀ तौं न छुवों मै धनु गुन बाना ॥
कृष्ण चरित तबै यह कीन्हा ❀ बांधके तरे पीठ प्रभु दीन्हा ॥
तब हनुमंत कोपि कह बाता ❀ — बांध तोर मैं भ्राता ॥

दो० हनूमान बहु कोपि करि, उछल बाँध बलबीर ।
जहवाँ हनुमत पग धरैं, हरि तहँ देहि शरीर ॥

तब हनुमत लज्जित व्है गयऊ ❀ दौरि चरण अर्जुन कहं नयऊ ॥
यहां बहुत जो कंचन पावों ❀ तब मैं हस्ती नगर सिधावों ॥
कह हनुमंत ये केतिक बाता ❀ सुवरण आनी देहुं मैं भ्राता ॥
तब अर्जुन कह धीरज दयऊ ❀ कहि यह बचन पवन सुतलयऊ ॥
बही ठाम अर्जुनहि बिठावा ❀ आज्ञालै हनुमंत लंकहि आवा ॥
तत्क्षण खोजे कंचन मेरु ❀ कंचन खोज लेत चहुं फेरु ॥

दो० खोजत बीतेउ तीन दीन, हनुमत मन अनुमान ।
क्रोधित भे तब हनुमंत बली, लंका सबै ढ़ाहान ॥

यह जब भेद बिभीषण पावा ❀ जहां पवनसुत तहंवां आवा ॥
अंजलि जोरि बीनती कीन्ही ❀ कौन काज प्रभु आयसु दीन्ही ॥
तब हनुमंत कहैं सुनु वीरा ❀ कच्चा सोना देहु रणधीरा ॥
कहा बिभीषण अंजनिपूता ❀ तुम आपुही कीन्ह अज गूता ॥
सगरी लंका खोरि जराये ❀ तहं सो कंचन रहे न पाये ॥
एक बात सुनहू हनुमाना ❀ रामचन्द्र सुमिरहु बलबाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० हम तुम्हार सेवक अहैं, मोपर वृथा कोहाहु ॥
जिउ हमार तुव आगे. जैसे शशिको राहु ॥
यह तो बात पवनसुत सुनेउ ❀ परमज्योतिको सुमिरण कियेउ॥
वाणी यह तब भई तुरंता ❀ काहे कोपेउ तुव हनुमंता ॥
प्रथम लात कंगूरन मारा ❀ सो खसि परेउ समुद्र मँझारा ॥
सो कंचन समुद्र मह अहई ❀ माँगि लेहु यह वाणी कहई ॥
तबहिं बिभीषण विदा करावा ❀ तबहीं चला पवनसुत आवा ॥
डाँटि दर्प जो कह हनुमंता ❀ देहु रत्न नहि बाँधु तुरंता ॥
ब्रह्मण रूप उदधि प्रगट[illegible] ❀ हनुमतसे छल कियउ महान॥
हम नहिं जानहिं कंचन [illegible] ❀ काहे कोपि कहत चहुँ फेरू ॥
दो०हम नहिं जानहि हनुमत. कंचन मेरु सुमेरु।
जो घटे मोरे होहि तौ. खोजि लेहू चहुँ फेरु ॥
काह यह सिंधु हँसो मदमाता ❀ तब हनुमत कोपि कह बाता ॥
जैसे लंका मैं जो डाहा ❀ तैसे आज समुद्र उछाहा ॥
पवनपुत्र तब मैं हनुमंता ❀ नातो कंचन देहु तुरंता ॥
नातो रारि होइ यहि ठाँई ❀ देखि हौं आजु मोरि मनुसाई ॥
तब हनुमंत लंगूर उठावा ❀ अवलोकत मीनहुँ डर खावा ॥
तब कीन्हेउ अजगुत हनुमंता ❀ विधि विष्णु तब काँप तुरंता ॥
दो० देहु मोहि कंचन नहीं, कह अस पवनकुमार।
ब्रह्मा विष्णु जु रक्षही, तो मारा परचार ॥
इतना बात पवनसुत करिया ❀ सिंधु डरे मत्सहु खरभरिया ॥
कह राघव सुनु सिंधू गुसाँई ❀ यहां मृत्यु हम सब कर आई ॥
देहु सोन सबके जी रहई ❀ राघव अस समुद्र से कहई ॥
कह समुद्र जो है घट तोरे ❀ आनि देहु कस लावहु भोरे ॥
उगलि मीन तब कंचन दीन्हा ❀ करन उठाय सिंधु तब लीन्हा॥
पवनपुत्र के आगे आवा ❀ करि विनती हनुमत समुझावा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मैं नहिं जानो धर्म दोहाई ❀ क्षमा करहु अपराध गोसाईं ॥
राघव मत्स्य कहाँ तो पावा ❀ सोमोहिं आपुहि आनि मिलावा॥
दो॰ तबहि पवनसुत हर्षे, कंचन लिये सुमेरु ॥
आनि दीन्ह अर्जुन कहँ, अंकमाल किय फेरु ॥
तब हनुमत अर्जुन सन कहेउ ❀ हम सेवक अब राउर अहेउ ॥
जहँ सुमिरहु आवें तोहिं पासा ❀ अरु हनुमत यह वचन प्रकासा॥
जैसे रामचन्द्र के काजा ❀ विमुख होहिं तो मातुहिं लाजा॥
दो॰ तब अर्जुन सम्बोधेउ, सुनहु वीर हनुमान ।
हमहुँ तुरत अब जाहिंगे, जहँवाँ श्रीभगवान ॥
अंकमालिका अर्जुन कियऊ ❀ पुर हस्तिन कहँ मारग लियऊ ॥
हनूमंत तब उहवां गयऊ ❀ तब अर्जुन हस्तिनपुर अयऊ ॥
कीन्ह प्रणाम पार्थ तब जाई ❀ कृष्ण लीन्ह तब अंकमिलाई ॥
सुनि कुन्ती तब हर्ष कराई ❀ द्रौपदी सँगलै आरति लाई ॥
राय युधिष्ठिर अंकम कीन्हा ❀ सहदेव नकुल चरण शिरदीन्हा॥
दो॰ पांचौ पांडव मुदित मन, कृष्ण युधिष्ठिर राय ।
धन्य धन्य तुम अर्जुन, यज्ञ सम्बोधे आय ॥
सुन राजा अब कथा प्रमानौं ❀ पतिव्रता पर पुरष न जाना ॥
धर्मराज नृपती सख्याता ❀ पूछे व्यास ऋषी ते बाता ॥
धर्म अधर्म पुण्य अरु पापा ❀ लमी गृह कैसे स्थापा ॥
चारि वर्ण के धर्म प्रमाणा ❀ अपने धर्म केरि निर्माणा ॥
ब्राह्मण क्षत्री शूद्र वईसा ❀ चारो वर्ण धर्म पर दीसा ॥
जा जन जापन होम प्रमाणा ❀ अपने धर्म करै निर्माणा ॥
षट कर्मन विप्रन परमाणा ❀ इह सब विना विप्रकत जाना॥
दान शौर्य अरु सत्य जुझारा ❀ क्षत्री धर्म बाहि परकारा ॥
कृषी वाणिज वैश्यहु कर जाना ❀ सेवक धर्म शूद्र परमाना ॥
दो॰ यहि प्रकार सुनु राजा, धर्म कथा परभाव ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रानी धर्म जो राजा, सोहिं कहौं अब राव ॥
पति आज्ञा सनद्ध रह जोई ❀ पर पुरुषनसे रहे अगोई ॥
सास ससुर की सेवा करे ❀ वीथिन मांहि शोचि पगु धरे ॥
स्त्री धर्म इहै परकारा ❀ अब अधर्म जो सुनो भुआरा ॥
कर्मन छहो हीन द्विज जोई ❀ क्षत्री वंश और जो कोई ॥
आपन धर्म जो वैश्य न जाना ❀ दूसर कर्म करै परमाना ॥
शूद्र गर्भ उत्तम ते करै ❀ इहै अधर्म रूप सँचर ॥
ये गृह कह नारी जो जाई ❀ बिना काज सूनो हो राई ॥
पतिकी आज्ञा नहिं जो माना ❀ अपर पुरुष ते बात बखाना ॥
विधवा होके करै शृंगारा ❀ जानहु सब अधर्म के सारा ॥
मात पिता पुत्र नहिं सेवा ❀ चंचल पुरुष नरि जो भेवा ॥
दो० इहै सकल सुन राजा, कहौं अधर्म उपाय ।
पुण्य पाप औ राजा, सुनौ सत्य मन लाय ॥
गुरुको शिष्य जान सम हरी ❀ छेद वेद मनमांह न करी ॥
है गुरु ब्रह्मा रूप समाना ❀ भिन्न भाव वाको नहिं जाना ॥
सदा पवित्र सुकीरति रहै ❀ मातासम परनारिहि कहै ॥
भिक्षुक नाहीं होत निराशा ❀ कूप तड़ाग बाग परकाशा ॥
येही पुण्य जगत महँ सारा ❀ व्यास कहे सुनु पांडुकुमारा ॥
पाप कर्म के सुनो विचारा ❀ गुरुको आनहिं भाव निहारा ॥
हृदय नाहिं सत सुकृत प्रकासा ❀ परनारी ते सदा विलासा ॥
भिक्षुक जन निराश फिरजाई ❀ ज्ञान धर्म हृदये नहिं राई ॥
तनु अपवित्र सदा जो रहै ❀ मिथ्या बचन संत से कहै ॥
गुरु द्रोह पावे न प्रसादा ❀ यह सबते है परम विषादा ॥
दो० यह सब पातक लगत है, परधन हर जो कोय ।
सदा पाप मन बसत है, राजा सुनिये सोय ॥
लक्ष्मी को भाषों स्थाना ❀ सदा पवित्र जौन नर जाना ॥
सात वर्ष कन्या जु कहावै ❀ ताके दान धर्म फल पावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पतिव्रता नारी जो होई ❀ सदा पवित्र रहति है सोई ॥
द्विज वैष्णव अरु गुरुजन माना ❀ देवालय बहु कर निर्माना ॥
काहू की निंदा नहिं करही ❀ ताके गृह लक्ष्मी संचरही ॥
अब सुन राजा कथा विछेदा ❀ जहां लक्ष्मी तहां न भेदा ॥
जाके सदा जुआ मन भावै ❀ सुरापान में चित्त रमावै ॥
परदारन रति सबै सुहावे ❀ धातु नाम जो सबै चुरावे ॥
पुस्तक तेल घीव अरु धाना ❀ मूल पुष्प फल काठ समाना ॥
अमावास्य सँक्राति सुहावे ❀ एकादशी नारि मन लावे ॥

दो० ग्रहण समय अरुश्राद्ध दिन, तियसँगभोग सुहाय ।
देव गुरू नहिं मानहीं, तहाँ न लक्ष्मी जाय ॥

व्यास कहै राजा के पाहा ❀ यज्ञ अश्व आनहु नरनाहा ॥
धर्मराज भीमहि हँकरावे ❀ जाहु द्वारका हरि हित भाये ॥
आनहु कृष्ण सहित परिवारा ❀ द्वारावति मधुपुरी मँझारा ॥
सबहिं संग लै आवो जाई ❀ राजा भीमहिं कहा बुझाई ॥
भीमसेन तब हर्ष प्रमाना ❀ तब द्वारावति कियो पयाना ॥
पहुंचे जाय कृष्ण के द्वारा ❀ जेंवत थे तहं नंदकुमारा ॥
बहु विधि भोजन परसे आनी ❀ पवन करत चारों पटरानी ॥
जाम्बवती अरु रुक्मिणि बाला ❀ सतभामा लक्ष्मणा रसाला ॥
जाम्बवती तब हास्य बखाना ❀ नंद गृह भोजन भूलेउ खाना ॥
खीर पियत बन महं यदुराई ❀ सो सब चित से दीन्ह भुलाई ॥

दो० कौतुक नारी कहत तहँ, सो नहिं कीन्ह बखान ।
तेहिं अवसर तहँ पहुँचेऊ, भीमसेन बलवान ॥

तब सतभामा हरि ते कहेऊ ❀ आये भीमसेन तौ अहेऊ ॥
इहां न आवन दीजै नाथा ❀ बूझे भीम कहत तब गाथा ॥
कौतुक भीम करन तब लागे ❀ ठाढ़ होय आंगन महं आगे ॥
कैधौं अशुचि होउँ भगवाना ❀ कैधौं मैं पापी अज्ञाना ॥
कहा सोदाइ हरी के आहे ❀ ऐसा काम कीन्ह जो चाहे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जो वाकहँ हम देखन पावें ❀ नाशा श्रवण हीन करवावें ॥
जो कछु अटकै कंठ तुम्हार ❀ देउँ गदा ते वेगिहि टार ॥
कौतुक सुने हर्ष भगवंता ❀ हँसिके भीमहिं कहे तुरंता ॥
आवो भीमजु भोजन करहू ❀ मन में कछू रोष नहिं धरहू ॥

दो० भीमसेन तब भाषउ, जो तुम भये भुआर ।
जानो हरि हम जेंयँभे, आपुन करो अहार ॥

सुनिकै कृष्ण हर्ष मन लाये ❀ बाँह गही भीमहिं बैठाये ॥
भोजन पान तुरत करवाये ❀ किये आचमन परम सुख पाये ॥
बैठे भीम निमंत्रण दीन्हें ❀ बाँचेउ कृष्ण हर्ष तब कीन्हें ॥
तब श्रीपति अक्रूर बुलाये ❀ पुनि अनिरुद्ध प्रद्युम्न मँगाये ॥
कृतवर्मा तुरंत हँकराये ❀ सुनि सात्यकी सारथी धाये ॥
सबते कहा कृष्ण यदुराई ❀ साजहु दल हस्तिनपुर जाई ॥
वाजि मेध यज्ञादि बखाना ❀ देखहु जाय ताहिं स्थाना ॥
सुनिकै सबहिं हर्ष अति पाये ❀ आगे पुर के लोग सिधाये ॥
वर्ण वर्ण हय चढ़ि सब धाये ❀ श्वेत वाजि पर श्रीहरि आये ॥

दो० वर्ण वर्ण सब हय चले, कौतुक होत अपार ।
बल बसुदेव बुझाय के, भाषे नँद कुमार ॥

रक्षा करो नगर के माहाँ ❀ रहो द्वारका कह यदुनाहाँ ॥
तब वासुदेवजु बोलन लागे ❀ प्रेम अर्थ श्रीपति के आगे ॥
साधू लोग धर्म जो जाना ❀ तव तो सँग लीजै भगवाना ॥
नारी वश कामी जन होई ❀ दुष्ट लोग जेतिक हैं सोई ॥
इन्हके सँग गमन जानि करहू ❀ वचन मोर तुम हिय में धरहू ॥
यह कहिके तव विदा कराये ❀ कृष्ण चलेउ वहु हर्ष वढ़ाये ॥
रानी सबै कृष्ण के सँगा ❀ हर्षित गात चले श्रीरँगा ॥
भीम करत हाँसी मन माहीं ❀ देखत वहुत नारि के पाहीं ॥
वर्ण वर्ण सब चालि भे तहाँ ❀ आये एक सरोवर जहाँ ॥
कुंज अनेक हंस वहुताई ❀ नाना भवर तहा गुँजराई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० कौतुक प्रेम कथा हरी, कहै रुकमणी पाँह
भानु अस्त जब लीन्ह है, सदा भँवर रस चाह ॥
निशिकै माँह हर्ष तब पावे ❀ प्रात विकसिके पतिहि दिखावे ॥
स्त्रीके मन धिर ना रहै ❀ सुनि प्रत्युत्तर रुक्मिणि कहै ॥
यहां न पक्षपात कछु राखों ❀ सत्यबचन प्रभु तुमसन भाखों ॥
भोरा तो बालक सम अहई ❀ माताके हिय भीतर रहई ॥
बालक सम रोदन सो करई ❀ माता हिय अंतर संचरई ॥
प्रेम सहित सुत गोद लगावै ❀ प्रीतिहेतु मन चंचल धावे ॥
जब रुक्मिणि यह बात जनाई ❀ सुनतहिं कृष्ण परमसुखपाई ॥
रहे रातभरि हरि पुनि तहां ❀ अनुपम पाथ सरोवर जहाँ ॥
तबहिं चले आये यहि भाँती ❀ मिले हरिके बाला संघाती ॥

दो० नाना कौतुक सभा सब, करत श्यामको देख ।
परम अनंदित हर्ष हिय, आदि सखा सब पेख ॥
पाछे सब गोपी तब आई ❀ हर्षित दर्श कृष्णको पाई ॥
नाना कौतक भाव बनाई ❀ चले अनेक संग मन लाई ॥
सबैं संग मिल चल भगवाना ❀ तब यमुना तट आय तुलाना ॥
तहं उतरे प्रभु श्रीयदुराई ❀ नगर लोग सब भेटेउ आई ॥
ब्राह्मण अरु वंदीजन नाना ❀ पावन गुण गावत सविधाना ॥
पुर नारी देखहिं धनश्यामा ❀ सन्यासी को करैं प्रणामा ॥
हांके सावधान इत रहो ❀ धर्मराज को पुर महं कहो ॥
निशिभो विमत प्रात जब भयऊ ❀ सबै राखि हरि अंकृत लयऊ ॥
अश्व चढे सब जन ले साथा ❀ पुर हस्तिन गौने यदुनाथा ॥

दो० नाना कौतुक स्तुति, पंथ माँह विस्तार ।
बहुतहोत भये नाटक, सुक्षम किया बिचार ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंह चौहानभाषाकृते ।
यज्ञकृत कृष्णराजासम्मिलनो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वैशंपायन कथा सुनाये ❀ राजा गृह तो श्रीपति आये ॥
तब अंतःपुर गे यदुराई ❀ राजा देखि परम सुख पाई ॥
धृतराष्ट्र अरु विदुर बंधुगन ❀ कृष्ण मिलेउ पारथ सहसब जन॥
भेंट कृपाचार्य्यहिं से कीन्हा ❀ धर्म्मराज तब पूंछन लीन्हा ॥
आए संग वंश परिवारा ❀ कहे कृष्ण सब आउ भुवारा ॥
पिता और हलधर को ताहीं ❀ रक्षाको राखो पुरमाहीं ॥
सुने धर्म राजा सुख पाये ❀ अंतःपुर तौ श्रीपति आये ॥
कुन्ती और सुभद्रा भेंटी ❀ पंचाली भेंटी दुख मेटी ॥
पीछे धर्मराज पहं आये ❀ धर्मराज अर्जुनहिं बुलाये ॥
कुन्ती आदिक जेती नारी ❀ निपुण काज करकर शृंगारी ॥

दो० सब संगलै चलिये, जेहि थल सब यदुवंश ।
धर्मराजके बचनका, सब नर करहिं प्रशंस ॥

चले सबै संगहि हरि लीन्हें ❀ आगे सबन अश्व करि दीन्हे ॥
राजा चले सबै दल संगा ❀ नारी सब तौ परम अनंगा ॥
आय सबैं यमुना तट जहां ❀ सब यदुबंशी उतरे तहां ॥
देवकी और रोहिणी आई ❀ कुन्ती चरण परी सो जाई ॥
रुक्मिणि अरु सतिभामा नारा ❀ कुन्ती चरण परी व्यवहारी ॥
पांचाली हरिजन तिहि परशी ❀ यहि परकार त्रिया सब दरशी ॥
सतिभामा परिहास कर तहां ❀ परम कथा सतिभामा कहा ॥
पंच पुरुष बश तुम कस कीन्हा ❀ तब पंचाली यह बर दीन्हा ॥
तुम कछु बोल हरी ते कहो ❀ कैसे पुरुष कीन्ह बश चहो ॥
आपन तन मन दीजै बारी ❀ तबहिं कंत बश करै सोनारी ॥

दो० एक पुष्प के अर्थ तू, सखिकै दीन्हेउ कन्त ॥
कैसे प्रीतम होत बश, मुँह की प्रीति अनन्त ॥

यह प्रकार ते कौतुक नाना ❀ सखिन सबै आपन हठ ठाना ॥
सतिभामा देवन सन कहा ❀ करन अस्व पूजन सब चहा ॥
देवन कहा कृष्ण के पाहा ❀ श्रीहरि कहा धर्म नरनाहा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मातु अश्व को पूजन चहई ❀ आज्ञा कहा नारायण कहई ॥
धर्म्मराज सब बीर बुलाये ❀ समाधान के सब समुझाये ॥
त्रिया अश्व पूजी घर आवै ❀ तब तुव कार्य पूर मन भावै ॥
तब वीरन सब साज बनाये ❀ स्यामकरनके संग सिधाये ॥
सब जब अस्वहिं पूजन लागी ❀ कौतुक प्रेम हर्ष शुभ भागी ॥
गो अनुशल्य तहां विकराला ❀ जहां अश्वका पूजैं बाला ॥
कृष्णहि बधौ शाल महं आई ❀ लेउं बैर मारों यदुराई ॥

दो० यह बिचारिकै राक्षस, घेरउ जाय तुरँग ।
शोर भयो त्रिय यूथ महँ, बीर भये सब भँग ॥

अश्व बांधि वह हमहीं राखा ❀ समाधान असने बल भाखा ॥
कृष्ण कहे पारथ ते बाता ❀ हरे अश्व सबके सख्याता ॥
महा गर्व करि यह ले गयऊ ❀ आजु काल दैत्यन यह भयऊ ॥
धर्मराज से कह ब्रजराजा ❀ अश्वहरन से मै मोहिं लाजा ॥
मरहि बीर तुव हारहिं क्षत्री ❀ यौवानाश्व क्षत्री पति अत्री ॥
अश्व लीन्ह अब का बरु चहिये ❀ ताकारण सबही ते कहिये ॥
तब श्रीपति बीरा कर लीन्हें ❀ क्षत्री शीश नीच तब कीन्हें ॥
काहूके साहस नहीं चीन्हें ❀ कामदेव तव बीरा लीन्हें ॥
मैं गहि अश्व क्षणक महं लाओं ❀ कामदेव तब नाम कहाओं ॥
कामदेव चढ़ि रथ पर धाये ❀ नाना अस्त्र शस्त्र सजवाये ॥

दो० प्रद्युमन केरे हाथ तब, बीरा श्रीपति दीन्ह ।
वीर सबै चुपभवन गे, वृषकेतुहि संग लीन्ह ॥

कर्णपुत्र रथ चढ़िकै धाये ❀ कादेव के साथहि आये ॥
हांक दीन अरु शंख बजाये ❀ दैत्यराज सुनि क्रोधित धाये ॥
रहु रहु काम कहे सब बाता ❀ कर्ण पुत्र देखेउ सख्याता ॥
तव अनुशल्य काम परचारा ❀ बहु प्रकार ताही तुतकारा ॥
पतिव्रत नारि पुत्र के पाँहीं ❀ चले तेज तोरत धृक नाहीं ॥
महा क्रोधकरि दैत्य भुवारा ❀ पांच बाण कामहिं के मारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लगत बाण तब भयो अचेता ❀ उड़ि हरि पहँ छाँड़े तब खेता ॥
देख क्रोध किये नन्दकुमारा ❀ तुरत काम को चरण प्रहारा ॥
तिनके बहु अवगुण प्रभु कहा ❀ कर्म कमीन जन्म लिये चहा ॥
गर्भपात काहे नहिं भयऊ ❀ हारे समर प्राण नहिं गयऊ ॥
दो०—गर्भपात जो होते, कै मरते रण देश ।
काहे होत कुनाम मम, भाषे श्री हृषिकेश ॥
सुनत भीम अस गुण मन लाई ❀ अय प्रभु काम मागि नहिं आई ॥
बाण तेजते तुर उड़ि आये ❀ बरबस काम आप पहँ धाये ॥
सब दोष क्षमिये अब कामा ❀ हम लै सँग जात हैं धामा ॥
कामहिं सँग भीम लै धाये ❀ गदा घात बहु वीर उड़ाये ॥
भीम ने गदा घात दल मारा ❀ हाथ पाँय चूरण करि डारा ॥
रथ गज दल पैदल असवारा ❀ कोटिन गदा रथिन को मारा ॥
कर्णपुत्र तब भीम ते कहई ❀ आप समान जगत को अहई ॥
तुम लायक दल है यह नाहीं ❀ इत क्यों अस्त्र गहे रण माहीं ॥
सुन भीम हर्षित ह्वै कहई ❀ काम परा भय सँगर रहई ॥
तुम मारौ रिपुको दल झारी ❀ हम राजहिं माखब परचारी ॥
दो०—यह कहि भीम क्रोधित भयो, तब राजा शिर धाय ।
काल सरिस शर मारेउ, भीम मुरछि गिर जाय ॥
मुर्छित भीम देखि जगतारन ❀ आये इत रणको पगुधारन ॥
क्रोधित दारुक रथ लै आये ❀ हाँक मारि राजा पहँ आये ॥
तब अनुशल्य हाँक कर दीन्हा ❀ मैं ही इनको बध है कीन्हा ॥
भीम काम रण महँ मैं मारा ❀ अब बल देखौं नन्दकुमारा ॥
तबहीं दैत्यराज परचारा ❀ भारी बाण कीन्ह परिहारा ॥
चारौं बाण तुरँगहि लागे ❀ रथके अश्व तुरंतहि भागे ॥
भो अदेख रथ श्री भगवाना ❀ तब हरिको आगमन बखाना ॥
मैं तो पापी हौं भगवाना ❀ आप गये मैं भेद न जाना ॥
पुण्यवंत कन्या जो होई ❀ रजस्वला असनान करोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

तादिन पुरुष जो तजिकै भागे ❀ गर्भपात की हत्या लागे ॥
दो०—मारे देश के सबनहीं, अरु मम पावन कीन्ह ।
दीजै दर्शन नाथ मोहिं, सुनि हरि दर्शन दीन्ह ॥
जब श्रीहरि तो आगे आये ❀ तब अनुशल्य हर्षि पहुँचाये ॥
तीनि बाण तब प्रभुहिं चलाये ❀ एकहि शरते कोटि गिराये ॥
हरिके बाण क्रोधते काटे ❀ औरहु एक बाण तब डाटे ॥
प्रभु के तनमें लागो बाना ❀ मुर्च्छित भये तहाँ भगवाना ॥
रथ चढ़ाय सारथि लै आयो ❀ भागे सैन्य चेत तब पायो ॥
धर्मराज जब देखे नैना ❀ हा हा शब्द करै तब बैना ॥
हरि प्रिया अरु रुक्मिणि रानी ❀ मूर्च्छित देखा शाँरग पानी ॥
रादन करती हरिकी रानी ❀ हा हा शब्द भये घन बानी ॥
कछु चेते जागे यदुराई ❀ सबहिं समोधे परम सुख पाई ॥
तब सतिभामा कहेउ रिसाई ❀ कछुक चेत जानेउ यदुराई ॥
जब प्रद्युम्न मूर्च्छित भयऊ ❀ बलि अनुशल्य मलेक्षन कियउ ॥
दो०—तुम भागे केहि हेतु प्रभु, कह सतिभामा बात ।
चंडि रूप अब धरब मैं, दैत्य बधब सरव्यात ॥
यहि अन्तर श्रीपति तब जागे ❀ महा क्रोध हृदय महँ लागे ॥
गहे अस्त्र रथही चढ़ि धाये ❀ युद्ध भूमि रण भीमहि आये ॥
वृषकेतुहि कर शाँरग धारा ❀ सप्त बाण अनुशल्यहि मारा ॥
तब अनुशल्य चारि शर मारा ❀ वृष्यकेतु रण काटि प्रचारा ॥
चारों बाण बहुरि कर जोड़े ❀ मारेउ रथके चारिउ घोड़े ॥
एक बाणते सारथि मारा ❀ रथ सारथि पैदल सँहारा ॥
तेहि क्षण सूरज देखन पाये ❀ हय रथ तब बेगही पठाये ॥
चढ़ि रथ कर्णपुत्र सँधाना ❀ शरन छाँह अनुशल्य छिपाना ॥
सारथि अश्व तुरत सँहारा ❀ क्रोधित भा अनुशल्य भुवारा ॥
क्रोधवन्त दैत्यन पति धावा ❀ तब कर गहि वृषकेतु फिरावा ॥
दो०—कर्णपुत्र क्रोधित भये, अनुशल्यहि गहि लाय ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सन्मुख देखत कृष्ण के, पंद्रह बार फिराय ॥
फिर अस कहा सुनो जगनायक ❀ यह तुरँग हरने के लायक ॥
श्रीपति भाषे धन्य कुमारा ❀ जो अनुशल्य वीर कहँ मारा ॥
ऐसी बात कहन हरि लागे ❀ यहि अन्तर अनुशल्यहु जागे ॥
जब देखा तहँ श्री भगवाना ❀ नाना स्तुति हर्ष बखाना ॥
कर्णपुत्र कहँ धनि कर लेखे ❀ तव प्रताप मैं श्रीपति देखे ॥
जो जगदीश्वर भगत उधोरे ❀ ध्रुवहि अचल पद कर सँचारे ॥
स्तुति करत बहुत तहँ राऊ ❀ सुनि श्रीकृष्ण बहुत हर्षाऊ ॥
अनुशल्या किरपा हरि कीन्हा ❀ हर्षगात आलिंगन दीन्हा ॥
दाक्षिण कर गहि कर हरि लाये ❀ धर्मराज के दर्श दिसाये ॥
सन्मुख हाथ जोरि मे ठाढ़े ❀ धर्म बचन कह अति सुख बाढ़े ॥
दो० भीम आदि मम बन्धु जे, तुमहो निनहि समान ।
यज्ञ अश्व प्रतिपालहु, राजा कहेउ बखान ॥
तब अनुशल्य कही अस बाता ❀ देहौं शीश भुजा सख्याता ॥
भाषे प्रभु अरु धर्म मुवारा ❀ धन्य धन्य हो कर्ण कुमारा ॥
तव प्रताय अनुशल्यहि पाये ❀ परमहर्ष तब राजा आये ॥
पाछे राजा धर्म नरेशा ❀ सहित अश्व पुरको परवेशा ॥
रथ तुरंग गज पैदल सारा ❀ नृप हस्तिनपुर का पगुधारा ॥
पहुँचे जाय नगर के माहीं ❀ वीर आदि जेते सब आहीं ॥
अरु क्षत्री गण जेते आये ❀ अर्घ्य देय आसन बैठाये ॥
भोजन पान सबन करवाये ❀ ऐसे दिन तहँ बीस गँवाये ॥
चैत्र पूर्णिमा पुख्य प्रमाणा ❀ तबहीं यज्ञ होय निर्माणा ॥
सबै विप्र तहँ यज्ञ बनाये ❀ द्रुपदसुता नृप तबहिं नहाये ॥
दो०-गाँठि जोरि राजा तबै, बैठि यज्ञ महँ जाय ।
मणि सुवर्ण बहु दान दै, उठीं युवतिजन गाय ॥
यज्ञ दान जो कछु विविधाना ❀ तेहि प्रकार तहँ दीन्हों दाना ॥
वाद्य शब्द घन मानो गाजे ❀ पूजा अश्व वेद तब साजे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उत्तम घरी वेद जो वरना ❀ बाँधि अश्वके माथ अमरना ॥
तामहँ लिखे युधिष्ठिर राजा ❀ अश्वमेध यज्ञहि तिन साजा ॥
ऐसो क्षत्री को जग आही ❀ गहे अश्व को निज बलवाही ॥
यह लिखिकै पारथहि बोलाये ❀ अश्व संग तब भूप पठाये ॥
यौवनाश्व अनुशल्य भुआरा ❀ प्रदुमन है अरु कामकुमारा ॥
अपनी अनी सँग कै लीजै ❀ तबहि गमन अश्वहि सँग कीजै ॥
पारथ सुनत हर्ष तहँ पाये ❀ धर्मराज को शीश नवाये ॥
माथे मुकुट गांडिव हाथा ❀ और सेन शत्री सख्याता ॥

दो० दल साजे सेनापती, जहँ लगि सब सरदार ।
भेंटे सबै सुपार्थ कहँ, अरु धृतराष्ट्र भुआर ।

सब तौ बिदा भये सुख पाये ❀ पाछे शीश मातु कहँ नाये ॥
अश्व सँग नृप आज्ञा दीन्हा ❀ पारथ कह माता सों लीन्हा ॥
कुँती कह केतक दल सँगा ❀ निज बलते गमनहु रणरँगा ॥
पारथ कहेउ सबै सरदाय ❀ श्रीपति अरु हैं कामकुमारा ॥
यदुवंशी ये सोहहि सँगा ❀ यदुनंदन दीन्हों मम सँगा ॥
कुन्ती कहा सुनो मन दीन्हें ❀ कर्ण पुत्र की रक्षा कीन्हें ॥
तासों यज्ञ सफल नहिं पैहौ ❀ जो पुत्रन कहँ कहूँ जुझैहौ ॥
यह कहिकै तब आज्ञा दीन्हा ❀ पारथ चरण वन्दना कीन्हा ॥
चले पार्थ तब हर्षित गाता ❀ कर्ण पुत्र पुनि चले सख्याता ॥
भद्रावती कुँवर की रानी ❀ सुनि पति बिदाहोत बिलखानी ॥

दो० पिय अनुरागिनि नारि तव, कहत पार्थ सों बात ॥
जहँ इच्छा तहँ जाइये, जिव हमार लै साथ ॥

रण महँ कादरता नहिं करहू ❀ मम लज्जा माथे पै धरहू ॥
कर्ण पत्र वामा सों कहई ❀ सो सब तीर्थपुण्य पै अहई ॥
गया पिण्ड तिरिया गति पावै ❀ हरी नाम यमदूत बरावै ॥
यह सब तो जो झूँठ बखानहिं ❀ तो हम भागहिरण सँग्रामहिं ॥
ऐसे चलत कहत रह सोई ❀ आपन सेना सँग लगोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

श्रीपति और भीम उठि धाये ❀ पारथ को पहुँचावन आये ॥
मध्य देश गे तजा तुरँगा ❀ नाना दल पारथ के सँगा ॥
चला तुरँग तेज पगु जाई ❀ तौ पारथ परसे यदुराई ॥
धर्मराज माथे कर दीन्हा ❀ श्रीपति काम बुलाइहि लीन्हा ॥
पारथ मेरो सब धन प्राना ❀ तुम रक्षा कीजो सज्ञाना ॥
दो० यह कहि सौंपा काम को, पारथ ही यदुराय ।
भीमसेन ते पारथ, बिदा भये सुख पाय ॥
सेन सँग पारथ चलि आये ❀ श्रीपति पुनि हस्तिनपुरआये ॥
भीम कृष्ण हस्तिनपर आये ❀ पारथ अश्व सँग तब धाये ॥
बाणै बाणन होत अघाता ❀ चलै वीर पारथ के साथा ॥
अरु अनुशल्य कर्ण सुत चाला ❀ मेघवर्ण यौवन भूपाला ॥
औ सुवेग जो प्रदुमन वीरा ❀ अनिरुध वीर जो है रणधीरा ॥
सेन समूह चले जो साजा ❀ महा घोर तब बाजन बाजा ॥
चले वीर हैं हर्षित नाना ❀ सबही वीर भगत भगवाना ॥
महाबली सब दल है राऊ ❀ चले वीर आनँद उपजाउ ॥
दल चतुरँग पंथ नहिं पावै ❀ आगे अश्व तेज पग धावै ॥
पाछे सेना वीर अपारा ❀ हय सँग चले वीर विस्तारा ॥
हय गज रथ जो पैदल नाना ❀ क्षत्री महावीर जग जाना ॥
दिशि दक्षिण प्रथमहिं सो धाये ❀ छल बल महाबीर सँग लाये ॥
दो०-पवन वेग दिशि दक्षिण, चला तुरंग तुरंग ।
हर्षित सब सेनाधिपति करत कुतूहल रंग ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
अश्ववदक्षिण दिग्गमनानाम चतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥

राजा सुनो ऋषी तब कहई ❀ माहि सरस्वती नगरइक अहई ॥
नालपुंज तहँका नरनाहा ❀ प्रथमहिं अश्व गयो चलि ताहाँ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

राजनि नाम प्रदीप कुमारा ❀ कुंज महा त्रिय रूप अपारा ॥
नदी नर्मदा तट सो अहई ❀ तहाँ अश्व गा मुनि अस कहई॥
कुंज माहिं स्त्री जब पाये ❀ तहँ वीर देखि मन लाये ॥
पढ़ि पत्रहिं तिरियन समुझाये ❀ धर्मराज के हय यहँ आये ॥
है रक्षक पारथ धनुधारी ❀ सुनि नारी सब गृह परु धारी॥
तबहिं कुँवर रण कर मन धरेउ ❀ दल लै पारथ सन्मुख खरेउ ॥
तब सब क्षत्री देखन धाये ❀ कर्ण पुत्र तहँ आगे आये ॥
भाषे रण महँ काह बिचारो ❀ पाछे पारथ पास सिधारो ॥
दो०-पाँच बाण हनि कर्णसुत, मारे चारि तुरँग ।
पुनि सारथी रथ काटि कै, कियो वीरपन भँग ॥
त्रयगासी शर राजकुमारा ❀ क्रोधित कर्ण पुत्र कहँ मारा ॥
कर्णपुत्र मूर्च्छित मैदाना ❀ तब अनुशल्य चलाये बाना ॥
शरन छाँह छपि राजकुमारा ❀ जुरे वीर दूनो सरदारा ॥
नीलध्वज सुनि दल लै आये ❀ बाणा वारि कर पुत्र छँडाये ॥
सब दल कहँ तब मारे बाना ❀ पार्थ हाँक करि क्रोध बखाना॥
क्रोधयुक्त सुनि पारथ पायो ❀ पाँच बाण लैक्रोधि चलायो ॥
एक बाण ते राजा काटे ❀ तब पारथ क्रोधित शर छाँटे ॥
नीलध्वज तब मूर्च्छा पाये ❀ जागे महा युद्ध मन लाये ॥
आग्नि बाण तब राजा मारा ❀ पारथ दलमें भयो सँहारा ॥
रथ गज दल पैदल असवारा ❀ जरे लगे सब करैं पुकारा ॥
दो० मारि पार्थ तब वरुणशर, पावक स्तुति ठानि ।
हाथ जोरिके पार्थ तँह, बहु प्रशँस उर आनि ॥
सदा कृपा तव हमरे पाहीं ❀ रथ धनु बाण दिये तुम आहीं॥
अब कहँ दुख यह हमको दीन्हा ❀ बारेक महँ सेना बध कीन्हा ॥
तब कह पावक ऐसी बानी ❀ पारथ तुमतो भये अज्ञानी ॥
सदा रहत सँग जगके तारण ❀ अश्वमेध कीजै केहि कारण ॥
हम राखे राजा कर माना ❀ ससुर हमार माहिप जगजाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri, Funding by IKS.

जन्मेजय पुँछत मन लाई ❀ नीलध्वज कत ससुर कहाई ॥
कैसे नृप कन्या तेहिं दीन्हा ❀ वैशम्पायन कह मन लीन्हा ॥
नीलपुंजकै ज्वाला रानी ❀ श्याम नाम कन्या भै आनी ॥
भई तरुणी तब पूछहिं राऊ ❀ चाहो वर सो हमैं सुनाऊ ॥
कन्या कहे मनुष नहिं काजा ❀ देव श्रेष्ठ वर देहु जु राजा ॥
दो०--बोले नृप इच्छा कहा, अरु सँयम परवान ।
जो मन आवत पुत्रि तव, हमते कहो बखान ॥
कन्या कहेउ चारकै करनी ❀ कीन्ह पाप छलै ऋषि घरनी ॥
सर्ब काम वश हुई अज्ञाना ❀ ऐसे सँग ते शुभ धमखाना ॥
दूजो पति जो नारी करै ❀ कुँभीपाक नरक महँ परै ॥
अग्नी माँह मरे ते जरही ❀ ताते दुइ पति नहिं अनुसरही ॥
यहि कारण तनु अग्निहि दीजै ❀ बचन मोर पितु यह सुन लीजै ॥
पुरजन राजा अचरज माना ❀ कन्या करै अग्नि को ध्याना ॥
राजा कहा सर्ब जो खाहीं ❀ सात जीभ ताके मुख आहीं ॥
मुख अरु चर्म त्यागि मुख कैसे ❀ नदी नार नीचे बह जैसे ॥
हरका शीश तेज यश गंगा ❀ पृथ्वी महँ तिन कीन्ह प्रसंगा ॥
काहू बात न कन्या मानी ❀ समाधान कै तबही आनी ॥
दो०—चन्दन घृत अरु चिनी लै, तिल जो मधुको राव ।
लौंग जायफल सोम की, आहुति होम कराव ॥
बेद वाक्य मन्तर अहिवाना ❀ विप्र रूप तब अग्नि तुलाना ॥
राजा पाहिं हर्षि पगु धारा ❀ देखि विप्र तब पूँछ मुआरा ॥
कोहौ देव कहाँते आये ❀ तब ब्राह्मण अस बचन सुनाये ॥
कन्या स्वाहा हमको दीजै ❀ ताते आये नृप सुनि लीजै ॥
नृपति कहै सो पावक चहई ❀ विप्र कहे हम पावक अहई ॥
राजा कह प्रतीत मोहि कीजै ❀ अग्नी रूप आपनो लीजै ॥
मंत्री कहा यही बिधि जबहीं ❀ पावक रूप प्रगट कियौ तबहीं ॥
भई प्रतीत तब स्तुति लाई ❀ कन्या की तब मौसी आई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

सो कहि द्विज चेटक यह करै ❀ प्रगट रूप अग्निको धरै ॥
राजा कहै आप गृह माहाँ ❀ परखाये कैसी जै ताहाँ ॥
दो०-ताके गृह पावक गये, रूप धरा बसु मारे ।
चीर कंचुकिहि जारत, और शीश कौ बार ॥
राजा पहँ वह रोवत गई ❀ राखि लेहु यह पातक अहई ॥
स्तुति करि नृप आगि बुझाई ❀ तबहिं ब्याह की बात चलाई ॥
मेरे गृह मैं संतत रहौ ❀ आवै रिपु तेहिं जारत रहौ ॥
ऐसे बचन करौ परमाना ❀ तब राजा दिये कन्या दाना ॥
राजा गृह में पावक रहई ❀ वैशम्पायन राजहि कहई ॥
सो वाचा सों सैन जराई ❀ ताते पारथ स्तुति लाई ॥
पारथ सों पावक तब कहई ❀ पयनिधि बहुत कछू अब अहई ॥
अब देखो दल तुमही नैना ❀ उठि है सबै तुम्हारी सैना ॥
सबै उठे जब पार्थ निहारा ❀ राजा पहँ पावक पगु धारा ॥
दो०-कहे जाय तब नृपति सन, पारथ मित्र हमार ।
मिलौ जाय नहिं जीतिहौ, जेहि सहाय कर्तार ॥
पारथ मित्र कहे वैसाई ❀ मोहिं खवायो अन्न पुराई ॥
बचन सुनत राज खुश भये ❀ तब रानी को पूँछन गये ॥
मिलन मंत्रते कोपी रानी ❀ जब राजा को बोली बानी ॥
सेना रण न जुझाये काहू ❀ कायर ह्वै मिलिबे को जाहू ॥
राजा सुनत क्रोध कर भारी ❀ गो पारथ पहँ रण विस्तारी ॥
राजा क्रोधित धनु संधाना ❀ तेहि क्षणबहुत चलायो बाना ॥
ऐसे बाण पार्थ तब मारा ❀ बाण छाँह ते भयो अँधारा ॥
बाण पार्थ के राजहि लागे ❀ रथ चढ़ाय सारथि ले भागे ॥
है अचेत तिरिया से कहेउ ❀ सुताहि गवाँय मंत्र तव गयऊ ॥
दो०-अस कहि हय धन राजा, संगहि चले लेवाय ।
श्यामकरन करि आगे, पारथ भेटेय जाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भेंटे जाय द्रव्य बहु दीन्हें ❀ हर्षित पारथ सो लै लीन्हें ॥
सेनापति तुम राउ हमारा ❀ परम मित्र पारथ संचारा ॥
अश्व पाय चलिबे मन दये ❀ सँग नीलध्वज राजा भये ॥
ज्वाला क्रोध शोक ते भारी ❀ तुरत बन्धौ गृहमें पगु धारी ॥
बन्धौ पहँ सो रोदन कीन्हा ❀ मोर पुत्र पारथ बध कीन्हा ॥
बैर लेहु पारथ ते जाई ❀ सुनतहि बात कहै सो माई ॥
अपने गृह महँ बैठहु जाई ❀ आयो हम कहँ खोवन धाई ॥
सो सुनि ज्वाला क्रोधित भई ❀ रोवत गंगा तट चालि गई ॥
तरणी चढ़े कहे सो नारी ❀ भयो पाप लखु गंगा हत्यारी ॥
गंगा तीर के मानुष जेते ❀ ज्वाला पाहिं कहैं सब तेते ॥

दो०-पतित पावनी गंग जू, जगको पाप विनाश ।
सिध मुनि तट तेहि जायकै, पावत सुरपुर बास ॥

धर्म रूप तब कहै भवानी ❀ गंग दोष का कहौं बखानी ॥
ज्वाला कहा अपुत्री मारी ❀ सात पुत्र दीन्हें जल डारी ॥
एक पुत्र तब तात बचाये ❀ ताको पारथ मारि गिराये ॥
सुनतहिं गंगा क्रोध अपारा ❀ पारथ कहँ शापौ विस्तारा ॥
मेरो पुत्र पार्थ सँहारा ❀ छठे मास सो जैहै मारा ॥
ज्वाला कहा कृपा करु माई ❀ बाण जन्म लै मारब जाई ॥
तब गंगा दीन्हों वरदाना ❀ ज्वाला तजे गंग महँ प्राना ॥
प्राण तजे भो शर अवतारा ❀ अर्ध चन्द्र पर्वत तनु धारा ॥
जन्म बाण पाये परसँगहि ❀ पारथ सुत के रहे निखंगहि ॥
बभ्रूवाहन नाम भुआरा ❀ वही पुत्र ते करब सँहारा ॥

दो०-यह चरित्र इतही भये, उत तब चलत तुरँग ।
नीलध्वज अर्जुन सहित, यौवनाश्व नृप संग ॥

जो न धर्म इक कानन रहा ❀ अश्व गयो वाही बन महा ॥
योजन एक शिला है जाहाँ ❀ अश्व जात भयो ताही माहीं ॥
पाहन लागि अश्व रहे कैसे ❀ चुंबक लोहे लागत जैसे ॥

व्या० का० प्रेस,
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कोटि यत्न करि अश्व छुड़ावत ❀ शिला छोड़ि तबअश्वनआवत ॥
तब सब शोच करन तहँ लागे ❀ कहो जाय पारथ के आगे ॥
पारथ देखि शोच भो भारी ❀ तब सेवक से कहा हँकारी ॥
देखो ऋषि कोई इत अहई ❀ पारथ बात सबन ते कहई ॥
दूरि गये हेरन बन माहीं ❀ शँभरि नाम मुनी तहँ आहीं ॥
नाहर गऊ सर्प शिय समेता ❀ मूस मंजारी सँग अनेता ॥
सदा प्रीति उन में जहँ रहै ❀ ऐसो तेज मुनि को रहै ॥
दो०-द्युतिहि देखि कै मुनि कहा, बोलि धनंजय चाह ।
पारथ प्रद्युमन सात्यकी, यौवनाश्व नरनाह ॥
कर्णपुत्र सँग ले गये तहाँ ❀ ऋषि आश्रम है बन में जहाँ ॥
पार्थ जाय तहँ बात जनाये ❀ धर्मराज यज्ञहिं मन लाये ॥
रक्षा हित हम सब इत आये ❀ बनमें अश्व शिला अटकाये ॥
कौन उपाय अश्व अब छूटै ❀ गोत्र बन्धु को पातक टूटै ॥
तब ऋषि कहै पार्थ सज्ञानी ❀ गीता सुनिकै भये अज्ञानी ॥
जों तुम काज करन को चाहौ ❀ अस जानि कहौ नारिते चाहौ॥
कहो कि गोत्र बन्धु सँहारा ❀ जो पालै सो मारन हारा ॥
सर्व शरीर पुरुष रह मही ❀ गेह लिलार मुनी अस कही ॥
ज्ञान पाय भूलो जो पारथ ❀ अश्वमेध तौ करत अकारथ ॥
पारथ कहा विष्णु की माया ❀ कोई जग महँ अन्त न पाया ॥
दो०-पारथ सुनि बचन अस, तब ऋषि कह प्रकाश ।
शिला चरित्र जो कौतुक, हर्ष धनंजय पास ॥
संज्ञा पपीचंड इक रहई ❀ ताकी कन्या चंडी अहई ॥
उद्दालक को दीन्हेउ ब्याहीं ❀ लै नारी आयो गृह माहीं ॥
पति सेवा सिखवै सेवकाई ❀ चंडी सुनत क्रोध तब पाई ॥
पति सेवा को मोहिं जो कहा ❀ मोसों नाहिं प्रयोजन अहा ॥
पुनि भाषे पूजा मन लाओ ❀ चंडि कहै का हेतु सुनाओ ॥
पती पुत्र ते मोर न कामा ❀ तोरा वचन करौं परमानी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

एक बार मज्जन लागि जाई ❀ कहे कमंडलु दीजै लाई ॥
सुनतहि नारि क्रोध भयो भारी ❀ डारेउ फोरि भूमि दै मारी ॥
पतिके संग शयन नहिं करई ❀ पतिको हँसी करत सो फिरई ॥
दुष्ट त्रिया ते मुनि दुख पाये ❀ सुनत कमंडलु मुनिपद आये ॥
दो० दुर्बल देखि उद्दालक, पूंछेउ मुनि मन लाय ।
कौन हेतु दुर्बल भयो, कहो मुनी मन लाय ॥
तब उद्दालक बोलत भयऊ ❀ तिरिया दुष्ट विधातै दयऊ ॥
मोर कहा मनमें नहिं धरई ❀ अपने मनका कारज करई ॥
पितृजु श्राद्ध समय दुख पावें ❀ केहि विधि पितृ श्राद्ध महँआवें ॥
तब हँसि कह्यो कमंडलु बानी ❀ उलटी बात कहौ नहिं ज्ञानी ॥
जो कछु कार्य्य करण तुम चहौ ❀ उलटे बचन नारि ते कहौ ॥
हमतो गौतम तीरथ जैब ❀ फिरत समय यहि मारग ऐबे ॥
अस कहि मुनी कमंडलु गयऊ ❀ तिरियहि आपु हीन मत दयऊ ॥
काल्ही श्राद्ध पिता की अहई ❀ प्रात कमंण्डलु आवन चहई ॥
मोते श्राद्ध कर्म्म नहिं होई ❀ केहि विधि आव कमंण्डलु सोई ॥
सुनतहि नारी क्रोधित भई ❀ बोली बात कन्त मति गई ॥
दो० द्विजहिं बुलाओ प्रेम करि, देव पिण्ड को दान ।
उत्तम होवे श्राद्ध विधि, मैं करिहौं निरमान ॥
बात उलटि कै श्राद्ध प्रचारा ❀ श्राद्ध कर्म्म यहिविधिअनुसारा ॥
जो कछु बचन कहै मुनि ताहीं ❀ तौन बात तिय मानति नाहीं ॥
ऐसे श्राद्ध सिद्धि करवाये ❀ इतना कहि मुनि नाम नशाये ॥
मुनि कछु कार्य्य करन को कहई ❀ प्राण जायँबरु तिय नहिं करई ॥
बात भूलि कै मुनि सँचारो ❀ लै पिण्डा गङ्गा में डारो ॥
सुनत बात क्रोधित है नारी ❀ लै पिण्डा घूरे महँ डारी ॥
देखि क्रोध मुनि शापेउ भारी ❀ पाहन होउ जन्म हत्यारी ॥
जब पारथ के दर्शन पैहौ ❀ शीघ्र शाप ते तब तरि जैहौ ॥
शिला भई तब मुनि की नारी ❀ फेरो कर सुन बात हमारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करि प्रणाम पारथ शुभ कीन्हा ❀ जातहिं पंथ शिला महँ दीन्हा ॥

दो०—छूटा अश्व चला तब, पाहन ते भइ तीय ।
उद्दालक तिय लै चले, परम हर्ष है जीय ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
बभ्रुकृतचुंबकअश्वछूटनोनाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

वैशंपायन कथा सुनाये ❀ पारथ अश्व चले मन लाये ॥
छूट शिला ते अश्व सिधाये ❀ पंचज पुरी अश्व तो आये ॥
हंसध्वज राजा पुर माहीं ❀ पांच पुत्र राजा के आहीं ॥
सुंदर सेरन सबल कुमारा ❀ तीजे नाम सुरथ संचारा ॥
चौथा पुत्र सुरथ परवाना ❀ सबते छोटा सुधन्वा माना ॥
दूत जाय राजहिं समझाये ❀ अश्व संग पारथ है आये ॥
सुनि राजा मन चिन्ता आई ❀ तब सब सेनापतिहि बुलाई ॥
सबते कहन लाग अस बैना ❀ अब लौं देखि न पंकज नैना ॥
लखौं आज हरि आनंदकंदा ❀ पारथ पास सदा यदुनंदा ॥
नगर माहिं कोऊ जनि रहहू ❀ लाओ सबहिं दरश हरि करहू ॥

दो० हर्षित है सब आयकै, कह्यो सुनौ नरनाह ।
जो नहिं आवैं युद्ध हित, भुंजव कराहे माह ॥

राजा चले सबै दल साजा ❀ बाजन लगे अनेकन बाजा ॥
विद्रथ चन्द्रकेतु तब आना ❀ चन्द्रसेन सँग दल परमाना ॥
चन्द्रदेव औ वरत सिधाये ❀ यह पांचो राजा सँग भाये ॥
सत्रह सेनापति लै साथा ❀ रण को चलत भये नरनाथा ॥
पांच सहस इकसौ रथ आये ❀ सहस निदान तोप लदवाये ॥
गजके ठाट पचास हजारा ❀ लक्ष सहस्र रहैं असवारा ॥
सब दल चढ़ि मैदानहि आयउ ❀ पाछे कुवंर सुधन्वा गयऊ ॥
दल मधि तैल कराहन भरी ❀ पावक लाय तप्त तब करी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जो नहिं आवे दल महँ कोई ❀ माँझ कराह मृत्यु तोहि होई ॥
शङ्ख लिखित मोहित दुइ भाई ❀ वाचा हेतु सर्वसो जाई ॥
दो०-चले सुधन्वा हर्ष हिय, माता को शिरनाय ॥
कृष्ण दरश गति पाइ हौं, माता कहोसि बुझाय ॥
तहँ ते गये कुँवर परमाना ❀ पीछे गये बहिनि के धामा ॥
बहिनी कर लै आरति कीन्हा ❀ तब वीरन ते बोलन लीन्हा ॥
बहिनि भेंटिकै बाहर आई ❀ त्रिया प्रभावति देखन पाई ॥
प्रिया कंत सन कहँ वरि नारी ❀ ताहि छोड़ि कहँ चले सिधारी ॥
नारी एक सदा व्रत आही ❀ चलिये भवन देहु रति चाही ॥
कुँवर कह्यो दिवस न होहि रति ❀ तब नारी व्याकुल ह्वै विनवति॥
ऋतु स्नान कीन्ह मैं नाथा ❀ रतीदान दे करौ सनाथा ॥
बिन अपराध पुरुष तिय त्यागा ❀ गर्भ बधे कर हत्या लागा ॥
बहु प्रकार नारिहि समुझाये ❀ मिलना कठिन बहुरि सुरझाये ॥
दो०-विवशहि रसभे कुँवर तव, बिलमें तत्क्षण धाम ।
सुचित भये रतिदान दै, चले पार्थ संग्राम ॥
कुँवर कह्यो सुनु बचन हमारो ❀ को पीछे रह प्रश्न बिचारो ॥
ताको भुँजहु कराहन माहीं ❀ याही प्रण कीन्ह्यों मन मांही ॥
तब नारी कह रति दै जैये ❀ पीछे दरश तिहारो पैये ॥
विवश कुँवर नारी के परे ❀ टोप सनाह उतारी धरे ॥
रति रस हेतु तबहिं तौ साजा ❀ इत दल मोहिं हंसध्वज राजा ॥
पूँछन लाग सबन के पाहीं ❀ देखियत कुँवर सुधन्वा नाहीं ॥
सुधि कराह भूला मैं जाना ❀ वेगि दूत तहँ करौ पयाना ॥
गहि कर केश कुँवर लै आओ ❀ ताहि कराहे माहिं जराओ ॥
राजा दूत चलन मन दीन्हा ❀ करि रति कुँवर शीघ्रशुचि कीन्हा ॥
बांधि अस्त्र रथ मे असवारा ❀ हर्षित चलिभा राजकुमारा ॥
दो०-यहि अवसर में दूत सब, देख्यों कुँवरहि जाय ।
राजा आज्ञा जो दियो, कुँवरहि कहा बुझाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनतहिं शीश गाज जनु परेउ ❀ दूतन पाहि बचन अनुसरेऊ ॥
आज्ञा तात अहैं परमाना ❀ यह कहि कुँवरहि कीन पयाना॥
जातहि गये पिता के आगे ❀ क्रोधित ह्वै नृप बोलन लागे ॥
पारथ हरिके दर्शन कारण ❀ आये नहीं मूढ़ मति धारण ॥
मेरी आनि कुँवर नहिं माने ❀ सुनत कुँवर कर जोरि बखाने ॥
पुत्र पतोहू तुम्हरे अहई ❀ रतीदान जल्दी यक चहई ॥
तेहि ते मोहि ह्वै गई अबारा ❀ कीजै जो कछु होय बिचारा ॥
राजा दूताहि कह्यो बुझाई ❀ तेलहि तप्त करो अब जाई ॥
अब तो नात पुत्र का नाहीं ❀ पूछो जाय पुरोहित पाहीं ॥
सुनतहिं तेल तप्त तब कीन्हा ❀ प्रोहित पाहिं पूँछ सब लीन्हा ॥
दो०-तबहि पुरोहित अस कह्यो, अब पुछत का जानि ।
पुत्र हेतु माया विवश, तातें पूँछत आनि ॥
बचन हीन राजा तब भयऊ ❀ अब हम यहाँ रहब नहिं कहेऊ॥
जाय दूत राजा पहँ कहेऊ ❀ राजा के मन चिन्ता भयऊ ॥
राजा गे प्रोहित के पासा ❀ बिनती करिके बचन प्रकासा॥
करि बिनती प्रोहित दोउ भाई ❀ अपने सँग लै गयो लेवाई ॥
तेल तप्त है पावक जैसो ❀ मंत्री पाहिं कहै नृप ऐसो ॥
मध्य कराह सुधन्वाहि डारो ❀ तेलके मध्य जराय के मारो ॥
मंत्री गयो कुँवर के पासा ❀ करुवो बचन जाय परकासा ॥
हमते कछु नहिं बनत बिचारा ❀ आज्ञा तात जो कीन्ह तुम्हारा ॥
माथि कराह डालो किम आना ❀ सुना कुँवर तव कीन्ह बखाना ॥
बचन तात का करो प्रमाना ❀ मंत्र मोहिं भावै नहिं आना ॥
दो०-शोच किये का होत अब, परवश जानि कोइ होय ॥
अब का की शंका करो, कुँवर कह्यो अस रोय॥
तेल कराह अग्नि सम ताता ❀ कुँवर कह्यो धीरज धरि बाता ॥
मोसन घाटि भई जगतारन ❀ आयेते हरि दर्शन कारन ॥
ध्रुव प्रह्लाद और पंचारी ❀ तुहीं विभीषण लिये उबारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दीनदयालु राखि अब लीजै ❀ महिमा प्रगट आपनी कीजै ॥
जैसे ग्रह ते गजहिं छुड़ाओ ❀ ताहीविधिअबमोहिंबचाओ ॥
ऐसो सुयश रहै संसारा ❀ कुदा कराहे राजकुमारा ॥
करि स्नान स्तुती कीन्हा ❀ तुलसी पत्र शीश पर दीन्हा ॥
बहु प्रकार हरि स्तुति ठानी ❀ कह्यो अल्पमहिं बहुतबखानी ॥
नृप आज्ञा मंत्री प्रतिपाली ❀ दीन्ह कराह कुँवर को डारी ॥
दो० पावक उठा कराहि सों, देखहिं सब दलवीर ।
त्राहि त्राहि सबहिन कही, राखि लिये रघुबीर ॥
रोवहिं दल के सब सरदारा ❀ कुँवरहिं राखि हमैं किन मारा ॥
शीतल तेल भयो सरयाता ❀ कुँवर बदन भयो कंज प्रभाता ॥
केशव कृष्ण जपत यहि नामा ❀ प्रोहित संग करै नृप ग्रामा ॥
कुँवरहिं देखि पुरोहित कहै ❀ जाते अग्नि बरायनि रहै ॥
कीधौं तेल तप्त नहिं आही ❀ की कछुजरी कुँवर मुखमाहीं ॥
दूतन कह्यो झूंठ सब अहई ❀ केवल नाम कृष्ण को कहई ॥
प्रोहित तबहिं प्रतिज्ञा धारी ❀ नरियर एक कराहे डारी ॥
परत कराह फूटि छितराई ❀ प्रोहित के माथे लग जाई ॥
ताक्षण प्रोहित बहुत लजाना ❀ भक्त द्रोह मैं कियो निदाना ॥
दो० धनि धनि कुँवर सुधन्वा, तोर हृदय हरि वास ।
परो कराहे मों कहा, मिले कुँवर के पास ॥
विप्र आय अंकहि भरि लीन्हा ❀ अस्तुति आइ कुँवर की कीन्हा ॥
कुँवर प्रताप विप्र सुख परेऊ ❀ भक्ति प्रवाह बदन नहिं जरेऊ ॥
ऐसी महिमा प्रभु की बाढ़ी ❀ प्रोहित कुँवर दुहुँन कहँ काढ़ी ॥
कुँवर साथ लै गये नृप आगे ❀ प्रोहित तबहिं कहन असलागे ॥
नृप तुव पुत्र भक्त मैं जाना ❀ इनके हृदय वास भगवाना ॥
सुनि राजा तब सुतहिं बुलायो ❀ उठि नृप दौरि अंक लपटायो ॥
राजा कुँवर दुहुँन सुख पायो ❀ बहुत प्रशंसा करि बैठ्यो ॥
पितु के दोष धरहु नहिं मनमें ❀ मैं दल गमन करौ अब रणमें ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हर्षित कुँवर तात पग परशे ❀ करि प्रणाम प्रोहित के दरशे ॥
दो०-रणको चले कुँवर तब, रथ पर ह्वै असवार ।
गहौ तुरँग तुम जाय अब, सबते कहा भुआर ॥
बीरन जाय अश्व हरि लायै ❀ युद्ध करन को राव सिधाये ॥
कुँवर सुधन्वा सब के आगे ❀ वाद्य जुझाउ बाजन लागे ॥
सब दल समाधान करि रहेऊ ❀ तब पारथ प्रदुमन से कहेऊ ॥
हमरो हय जो हरि लै गयऊ ❀ अस बलधारी नृप सब भयऊ ॥
यौवनाश्व अनुशल्य भुवारा ❀ नीलध्वज क्रतवर सरदारा ॥
काम कहे अब उचितक अहई ❀ औरौ सबहिं अस्त्र कर गहई ॥
मेरी तात संमती अहौ ❀ आप युद्ध कत कीन्हों चहौ ॥
कर्णपुत्र तब कह यह बाता ❀ तुम दुइ बीर प्रलय के घाता ॥
इतहि रहौ तुम हम रण जाहीं ❀ इतना कहि आये रण माहीं ॥
दो०-कर्णपुत्र अरु नृपसुवन, दोउ भये इक ठाँव ।
राजपुत्र तब पूँछता, कर्णपुत्र के नाँव ॥
कह वृषकेतु कर्ण मम ताता ❀ कश्यपकुल जो कह सख्याता ॥
वृषवर नाम हमारो अहई ❀ सुनिकै बात सुधन्वा कहई ॥
बन्धु छंद सुनि गोत्र हमारा ❀ नाम सुधन्वा वीर अपारा ॥
दोउ वीरन तो रण प्रण ठाना ❀ क्रोधवन्त ये गहि धनुबाना ॥
नृपाति पुत्र के मारे बाना ❀ सारथि रथ सब किये भंगाना ॥
मूर्च्छा पाय क्षणक महँ जागे ❀ बाणन वृष्टि करन तब लागे ॥
दो०-दूसर रथ सारथि लिये, पुनि आये वहि ठाम ।
कर्णपुत्र तब चढ्यो रथ, सुमिरि कृष्णको नाम॥
कर्णपुत्र बहु जय रण लीन्हा ❀ विपुलवीर क्षणमहबध कीन्हा ॥
हना सुधन्वा बाण रिसाई ❀ कर्णपुत्र को मुर्च्छा आई ॥
कर्णपुत्र रण मुर्च्छित जाना ❀ तब प्रदुमन हाँकै मैदाना ॥
तुर्तहिं काम पंच शर मारे ❀ सारथि हय पैदल संहारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विशिख लग्यो तब खसे तुरंगा ❀ जोती ध्वज छत्रहु मे भंगा ॥
यह देखतहिं सुधन्व रिसाना ❀ क्रोधवन्त ह्वै गहि धनुबाना ॥
तीनि बाण सारथि सँहारा ❀ सिंहनाद करि राजकुमारा ॥
नष्ट भयो रथ खण्ड तुरंगा ❀ दण्ड छत्र तो भै रदभंगा ॥
दोनों वीर भिरे रण करणी ❀ कबहूँ गगन कबहुँकै धरणी ॥
गदा गदा ते छत बहु लागे ❀ मूर्छे दोउ कुँवर तब जागे ॥
दो०-कामदेव मूर्च्छित रहे, कुँवर रथहि चढ़ि जाय ।
सहस क्षोहिणि सैन्यदल, मारत कुँवर रिसाय ॥
देख तबै कृतवर्मा धाये ❀ तुरत कुँवर पर बाण चलाये ॥
राजपुत्र बाणन ते मारा ❀ और बाण अश्वहि सँहारा ॥
एक बाण ते सारथि मारा ❀ रण महँ गर्जे राजकुमारा ॥
तब कृतवर्मा साजि सिधाये ❀ देखतही अनुशल्यहु धाये ॥
तीक्षणं राज बाण विस्तारा ❀ सो अनुशल्य कुँवर पर डारा ॥
मूर्च्छित कुँवर परे रण माहीं ❀ बहुतै दल मारे गे ताहीं ॥
हाहाकार करत सब भागे ❀ राजपुत्र याहि अन्तर जागे ॥
क्रोधित कुँवर बाण तब मारा ❀ मुर्छा भइ अनुशल्य भुवारा ॥
दो०-क्रोधवन्त ह्वै राजसुत, मारे बाण अपार ।
हय गज रथ पैदल कटे, पारथ दल सँहार ॥
पारथ दल तब भागन लागा ❀ ताक्षण वीर सात्यकि जागा ॥
विपरित बाण क्रोध करि छाटे ❀ पंच बाण धनु गुण काटे ॥
दोनों वीर लड़त मैदाना ❀ दोनों मानहु देव समाना ॥
रक्त भिजे जनु टेसू फूले ❀ देखत रूप वीर सब भूले ॥
शैल चक्र कुँवरहिं दै मारा ❀ मूर्च्छे सात्यकि रणहिं मँझारा ॥
मूर्च्छे सात्यकि सब दल भागे ❀ तब अर्जुन रथ हाँक्यो आगे ॥
कहा टेरि सुनु राजकुमारा ❀ मोर नाम अर्जुन धनुधारा ॥
भीषम द्रोण कर्ण सँहारा ❀ बड़े बड़े वीर और सरदारा ॥
कुँवर कहा पारथ जगतारण ❀ सब रथ जिते वीरता कारण ॥

न्या० का० प्रेस,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

दो०-हरि से सारथि साजिकै, आये हौं रण माहिं ।
ताते भाषत पार्थ यह, जीति तुम्हारी आहिं ॥
तुमहिं जीतिहौं लैकरि काजा ❀ करिहैं यज्ञ हँसध्वज राजा ॥
सुनि पारथ तब बाण चलाये ❀ दश बाणते कुँवर बिचलाये ॥
काढ्यो बाण कुँवर भयो क्रोधा ❀ राजकुमार महाबल योधा ॥
वरषै बाण सकैका भाषन ❀ सौते सहस सहसते लाषन ॥
पारथ पावक बाण चलाये ❀ कुँवर के दलको बहुत जराये ॥
वरुण बाण कुँवर तब मारा ❀ अग्नि बुझी बाढ़ी जल धारा ॥
वर्षाकी जनु उपमा पाये ❀ पवन बाण तब पार्थ चलाये ॥
जलगयो सूखि उड़न दल लागा ❀ रजहिं दीख पुत्र रिस पागा ॥
तीस बाण क्रोधित ह्वै छाटे ❀ ध्वज पताक पारथ के काटे ॥
कह्यो कुँवर अब पारथ कहिये ❀ सारथि गिरे सारथी चहिये ॥
दो०-हरि सारथि को सुमिरही, जो चाहै कल्याण ।
नातरु वाम विधाता, अन्तकाल तव प्राण ॥
पारथ सुनिकै जोती गहेउ ❀ रण दल माँझ जान अब चहेउ॥
महाकष्ट आयो परमाना ❀ पारथ तब सुमिरयो भगवाना ॥
सुमिरतही तुर्तहि हरि आये ❀ जोती गहे पार्थ सुख पाये ॥
तब पारथ ने कीन्ह प्रमाना ❀ राजकुँवर तब करै बखाना ॥
आपन भाग्य बड़ा मैं जाना ❀ तुम्ह दर्शन दीन्हा भगवाना ॥
स्तुति करिकै शारँग गहेउ ❀ बचन एक पारथ तब कहेउ ॥
कृष्ण समान पाय हौं सारथ ❀ आज देखिहौं तुव पुरुषारथ ॥
पार्थ कहो शर तीन हमारा ❀ ताते करब तेहि सँहारा ॥
कुँवर कह्यो तीनहु शर कटिहौं ❀ खंड खंड करि मस्तक बटिहौं ॥
कह्यो पार्थ जो तोहिं न मारौं ❀ अपने पितृ नरक महँ डारौं ॥
इतना सुनि ह्वै वीर रिसाने ❀ क्रोधवन्त ह्वै शारँग ताने ॥
दो०-कुँवर कह्यो शर तोर मैं, जो न हतौं सुनु बात ।
तो मम बास अधोगति, कुँवर कहै सख्यात ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

राजपुत्र तब बाण चलाये ❀ हरि समेत रथ माहिं बचाये ॥
हाथ मारि सो पाछे गयऊ ❀ पारथ ते हरि बोलत भयऊ ॥
तव पुरुषारथ देखौं पारथ ❀ बध परतिज्ञा कीन्ह अकारथ ॥
एक नारि कुँवर व्रत आहै ❀ ऐसी बात कौन निर्बाहै ॥
हम तुमसे यह व्रत नहिं होई ❀ कौन पुरातते मारब सोई ॥
राजकुमार बाण तब छाटे ❀ हय गज रथ पैदल तब काटे ॥
कह्यो कुँवर गोवर्द्धन धरेउ ❀ गाय गोप की रक्षा करेउ ॥
पारथ को अब राखौ हरी ❀ सुनत क्रोध पारथ तनु जरी ॥
एक बाण पारथ कर लीन्हा ❀ तामहँ पुण्य जगतपति दीन्हा ॥
गोवर्द्धन धरि जोफल भयउ ❀ सोइ पुण्य हरि शरको दयउ ॥

दो०-धाये देखन देव सब, रहत काहि प्रण आज ।
दोउ वीर हैं भक्त हरि, काह करी व्रजराज ॥

मारे पारथ बाण तुरन्ताहिं ❀ कुवँर बात यह कह भगवंताहि ॥
जो नाहिं शर काटिहै ह्वै पापू ❀ यह कहि बाण चलाये आपू ॥
अर्द्ध चन्द्र तब बाणन मरा ❀ पारथ को शर काटि पवारा ॥
अचरज सबै देवतन माना ❀ तब मारथ लिय दूसर बाना ॥
रामऽवतार पुण्य जो कीन्हा ❀ सोसब पुण्यबाण को दीन्हा ॥
पारथ बाण करै सधाना ❀ कुँवर कहै सुनिये भगवाना ॥
पुण्य तोहारे पारथ बाना ❀ मैं प्रण काटे तृणहि समाना ॥
परनारी ते जो रति भाओ ❀ बिन काटे सो पातकपाओ ॥
पारथ बाण तजे जो भारी ❀ करु संधान कुँवर धनुधारी ॥
ऐसे बाण क्रोध करि छाटे ❀ पारथ काहि वोहु शर काटे ॥

दो०-शंखध्वनि तब कुँवर कर, देवन अचरज पाय ।
पारथ शर हरि सैन्य सब, काटे तृण सम भाय ॥

कह श्रीकृष्ण पार्थ सुनि लीजै ❀ रहौ युद्ध शंखध्वनि कीजै ॥
हरि पारथ तब शंख बजाये ❀ पाछे श्रीपति कह मन लाये ॥
लेहु बाण सुनु बात हमारा ❀ येही बाण बध होय कुमारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पारथ बाण हाथ लै लीन्हें ❀ मध्यकाल बाधि पश्चिम दीन्हें ॥
श्रीपति शर मंत्रावलि कीन्हें ❀ सोइ बाण श्रीपति कर दीन्हें ॥
फर पर आप चले भगवाना ❀ पारथ सो शर करु संधाना ॥
कुँवर कहै जाने जगतारन ❀ फर पर बैठिकै आवत मारन ॥
मेरो प्रण सुनिये प्रभु सोई ❀ हरिहर नाम भेद कछु होई ॥
जो नहिं यह शर काटि गिरायो ❀ तौ हय पाप जगत महँ पायो ॥
पारथ मारे क्रोधित बाना ❀ तीन लोक शर देखि सकाना ॥
दो०-कुवर तेज तब बाणा को, मारि माझ शर माहिं ।
काट्यो बाण सुपार्थ को, रक्ष काल जेहि आहि ॥
सबै देवतन अचरज माना ❀ पंख सहित आधा उड़िआना ॥
आधा बाण लग्यो तब जाई ❀ राजपुत्र शिर कोटि बिराई ॥
जूझे कुँवर जगत यश पायो ❀ हरिके चरण शीशउड़ि आयो ॥
कृष्णहि कृष्ण जपत शिर रहई ❀ धाय कबंध अस्त्र कर गहई ॥
शीशहि गहे हँसत भगवाना ❀ पारथ शर कीन्हा संधाना ॥
श्रीपति शीश हाथ में लीन्हा ❀ राजाके रथ डारि सो दीन्हा ॥
तब हंसध्वज शिर लै हाथा ❀ रोदन करत ठोंकि के माथा ॥
बहु विलाप तो करै भुवारा ❀ ताको नहिं कीन्हा विस्तारा ॥
तब राजा शिर चुम्बन कीन्हा ❀ प्रभुके रथहिं डारि सो दीन्हा ॥
दो०-हर्षित ह्वै हरि शीश गहि, दीन्हों गगन चलाय ।
तहँ शिवशंकर पाय शिर, माला मुण्ड बनाय ॥
दूसर पुत्र सुरथ है नामा ❀ पितुके सन्मुख कीन्ह प्रणामा ॥
तात शोक वारन अब कीजै ❀ हमें युद्ध की आज्ञा दीजै ॥
पितु की आज्ञा हर्षित पाये ❀ रथ पर चढ़ि रण हेतु सिधाये ॥
शंखध्वनि करि धनुष टँकोरा ❀ मानहु प्रलय गाज घनघोरा ॥
अब कत जैहो पारथ वीरा ❀ मेरो बन्धु मारि रण धीरा ॥
हरी पुण्य दुइ जन्म को दीन्हा ❀ मेरो बन्धु तबहिं बध कीन्हा ॥
जाहि भाकर सब कहा सुनाई ❀ पारथ पाहिं कह्यो यदुराई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बन्धु शोकते व्याकुल आओ ❀ अब यासों नहिं जीतन पाओ॥
पारथ कह्यो कौन रणधीरा ❀ सहसन बधे एक दिन वीरा॥
आप सहाय जगत के नायक ❀ सुरथ कहा मम जीतन लायक॥
दो०-कृष्ण कहा पारथ सुनो, सुरथ सूर सतवंत॥
ताते प्रदुमन आदि लै, लड़हु कहा भगवंत॥
सब वीरन मिलि कुँवरहि घेरा ❀ मारु मारु कहिं सबहिन टेरा॥
पारथ के पाछे यदुराई ❀ आगे वीर घनेरे जाई॥
योजन त्रय पाछे हरि आये ❀ आगे वीरन गे अटकाये॥
सुरथ कह्यो पारथ है काहा ❀ सुने वीर हाँके रणमाहा॥
हम सन रण जो करिये आछो ❀ हरि पारथ को पूँछो पाछो॥
सुनतहिं सुरथ क्रोध तब पाये ❀ वीरन ऊपर बाण चलाये॥
ऐसे बाण क्रोध करि मारे ❀ पैदल रथ अरु अश्व सँहारे॥
बाणमई जूझे रण माहा ❀ सबको मोहित कीन्ह्यो ताहा॥
सबै जीति गयो पारथ पहा ❀ रुह रुह हाँक मारिकै कहा॥
क्रोधित मारे बाण हजारा ❀ ध्वज अरु छत्र कोटि महि डारा॥
दो०-पारथ मारे बाण सौ, काटे राजकुमार।
लागे वर्षन बाण तब, मानहु सावन धार॥
पारथ शर अवसर नहिं पावै ❀ ऐसो सुरथ बाण झरिलावै॥
तब पारथ सों कह्यो यदुपती ❀ देखौ रथी सुरथ की गती॥
बंधु शोक तेहि मारन चहई ❀ इतना सुनि तब पारथ कहई॥
मार्‌यो पार्थ सुरथ रथ बाना ❀ धसि गयो रथ पाताल समाना॥
मार्‌यो सुरथ पार्थ रथ बाना ❀ लगत बाण रथ स्वर्ग उड़ाना॥
तब श्रीपति औरो हनुमाना ❀ राखे रथ सम्भारि प्रमाना॥
पारथ बाण क्रोध करि छोड़े ❀ मारे रथ के चारहु घोड़े॥
काटे सारथि छत्र निदाना ❀ कुँवरहि कह्यो पाय मैदाना॥
मैं मार्‌यो पारथ रथ बाना ❀ राख्यो हरिहि और हनुमाना॥
दो०-कुँवर बाण फिरि मारेऊ, रथ पारथ के माह।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

औ भाष्यौ कहु पारथ, अब रथ डारौं काह ॥
सुनताहि पार्थ पंच शर मारा ❀ मूर्च्छित भो तब राजकुमारा ॥
क्षणक एक महँ चेतन पाये ❀ चढ़ि रथ शर शोणित लपटाये ॥
अर्द्धचन्द्र औ कर्ण वराहा ❀ तब प्रणाम करि पारथ काहा ॥
जो नहिं रथ ते तोहिं गिराओं ❀ तो मैं बास अधोगति पाओं ॥
यह काहि पार्थ क्रोध शर छाटे ❀ ध्वजा पताक सुरथ के काटे ॥
मारेउ सुरथ जु बाण तुरन्ता ❀ काटे ध्वजा दंड बलवन्ता ॥
क्रोधवन्त पारथ शर छाटे ❀ रथ रथवान पताका काटे ॥
तबहिं सुरथ क्रोधानल जरेउ ❀ लेकर गदा पार्थसे लरेउ ॥
दुइ सहस्र तबही रथ मारा ❀ एक लक्ष मारे असवारा ॥
गज अरु हय बहु पैदर मारा ❀ पारथ दूसर बाण प्रहारा ॥
दो०-गदा साहित कर काटिहौं, सुरथहिं कहा रिसाय ।
महा मारु मैं करि अहौं, सुन पारथ मन लाय ॥
युगल बाण पारथ तब मारा ❀ दूनहुँ जाँघ काटि कै डारा ॥
काटे जाँघ कर शंका नाहीं ❀ युद्ध करे लुढ़कत महि माहीं ॥
पारथ एक बाण तब लीन्हा ❀ तामहँ शक्ति देवतन दीन्हा ॥
मारे बाण काट शिर जाई ❀ पारथके शिर लाग्यो आई ॥
पारथ तहाँ रहे मुरझाई ❀ शीश परयो चरणन यदुराई ॥
पारथ को श्रीहरिहि उठायो ❀ तासों बचन कहन मनलायो ॥
पारथ कह्यो धन्य मैं जाना ❀ मोको मूर्च्छित किय मैदाना ॥
याहि शिर को परशै जो कोई ❀ महाशूर क्षत्री सो होई ॥
दो०-यहि प्रकार ते सुरथ को, मारेउ पारथ वीर ।
ऋषी कहत राजा सुनै, जन्मेजय रणधीर ॥
अश्वमेध फल पावई, मन वाञ्छित फल सोय ।
भाव भक्ति जिय लावई, श्रद्धा सुन रण कोय ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
सुधन्वासुरथबधोनाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब श्रीपति नें गरुड़ हँकारा ❀ आये गरुड़ तुरन्त सँचारा ॥
हरि कह शिर प्रयाग लै जैहौ ❀ राखि शीश प्रयाग महँ अइहौ ॥
गरुड़ कह्यो प्रभु तीर्थ अपारा ❀ गङ्गा यमुना चरण तुम्हारा ॥
उत शिर लै जाऊँ केहि काजा ❀ तबहीं बचन कहे ब्रजराजा ॥
सुनी बात किय विनय कुमारा ❀ मम भण्डार प्राग निज मारा ॥
सुनत गरुड़ शिर को लै चलेउ ❀ भये मार्ग में कौतुक भलेउ ॥
हर गौरी तू गगन महँ आये ❀ जात गरुड़ को देखन पाये ॥
भृँगी दूतहिं शंकर कहा ❀ वह शिर लै आयो मम पहा ॥
तब हँसि पूँछहिं सती भवानी ❀ कहौ भेद सब हमहिं बखानी ॥

दो०-शंकर तब हँसि कै कह्यो, सुरथहि राजकुमार ॥
पारथ मारे रण विषय, सो शिर लिये सिधार ।

हरि आज्ञा प्रयाग के माहीं ❀ शीश धरे को खगपति जाहीं ॥
सोई शिर जो हम पहँ आवै ❀ मुण्डमाल के मध्य लगावै ॥
याको अनुज सुधन्वा अहई ❀ ताको शीश प्रथम मैं गहई ॥
अब जो शीश सुरथ को पाऊँ ❀ मुँडमाल ग्रिव सुघर बनाऊँ ॥
भृँगी चले गरुड़ पहँ आये ❀ जाके वचन कहन तब लाये ॥
देहु शीश नत लिहौं छिनाई ❀ सुनतहिं गरुड़ क्रोध अति पाई ॥
पवन पच्छ हर दूत उड़ाई ❀ हर को दूत हरै पहँ आई ॥
श्वास पवन ते गरुड़ उड़ाये ❀ उड़तहिं उड़त प्रयागहिं आये ॥

दो०-गरुड़ शीश को डारि कै, लौटि कृष्ण ढ़िग आय ।
नन्दी ताहि उठाय कै, दीन्ह शम्भु को लाय ॥

महादेव मुंडमाल बनाये ❀ सुरथ जूझ नृप देखन पाये ॥
तब रण को नृप कियो पयाना ❀ देखत उतरे श्री भगवाना ॥
हाथ उठाय कहा भगवाना ❀ राजा राखो शारँग बाना ॥
सुतको शोच छाँड़ि अब दीजै ❀ मेल मिलाप पार्थ से कीजै ॥
राजा सुनत हर्ष तब पाये ❀ धाय कृष्ण के पद लपटाये ॥
जो मैं रूप कृष्ण कर देखो ❀ पुत्र शोक मेरे केहि लेखो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

तब पारथ से बाँह मिलाये ❀ पारथ मिले हर्ष अति पाये ॥
पाँच दिवस में अश्व छुड़ाये ❀ श्रीपति हस्तिनपुरहिं सिधाये॥
धर्मराज सों श्रीहरि कहेउ ❀ सबही राज धर्म्म केहि दयउ ॥
अश्व छूट तब पार्थ सिधाये ❀ हंसध्वज को सँग लगाये ॥

दो०-उत्तर दिशि अब अश्व चलु, महा भयानक देश ।
महाकुंज कानन विषे, अश्वहिं कीन्ह प्रवेश ॥

सरवर एक अश्व तब गयउ ❀ प्रविशतजलअश्विनिसोभयऊ ॥
कोतिक दूर गयो दुख पागे ❀ सरवर एक और है आगे ॥
ताको जल हय कीन्हों पाना ❀ अश्विनि ते भयो बाघ प्रमाना॥
सभय अचम्भौ पूछहिं राऊ ❀ याहि अर्थ मुनि हमैं बताऊ ॥
अश्व अश्विनि भो केहि काजा ❀ व्याघ्र भयो कत पूँछे राजा ॥
फेरि अश्व हैहै की नाहीं ❀ सुनि सुनि वैशम्पायन काही ॥
सतयुग माहिं देवि सत साधे ❀ वहि सर तट शंकर अवराधे ॥
शंकर हेतु तबहिं मन लावा ❀ असुर एक पापी मति भावा ॥
कहे तबै कत करु अज्ञानी ❀ चलो सँग करिबे हम रानी ॥
सुनत शाप तब देवी दीन्हा ❀ भस्म तुरन्त दत्यको कीन्हा ॥

दो०-सर परशे जो पुरुष कोऊ, त्रिया होत परमान ।
यही शापते राज सुनु, अश्विनि भये निदान ॥

रक्त वर्ण मुनि सतयुग रहेऊ ❀ दूजे सर स्नानहि गहेऊ ॥
करि स्नान ध्यान मन लाये ❀ सरवरको शापित मै पाये ॥
यहि सरको जल प्रविशै जोई ❀ निश्चय वाघसो प्राणी होई ॥
वहि सर माहिं अश्व जब गयऊ ❀ बाघ रुप ता कारण भयऊ ॥
पारथ मही शोध तो पाये ❀ तब सो हरिको चरण नवाये ॥
तारो पाप सिंधु भगवाना ❀ अश्विनि प्रभु करहू निरमाना ॥
तबहीं दलहि ध्यान मन लयऊ ❀ राजा सुनु प्रसन्न मन भयऊ ॥
सगरौ दोष अश्व को गयऊ ❀ श्यामकर्ण आलंकृत भयऊ ॥
हर्षित भे तब चले चलाये ❀ स्त्रीराज्य सो पहुँचे आये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-त्रियाराजको त्रिया सब, पुरुष नहीं है ताहँ।
गन्धर्वराज शाप दिय, पुरुष न जन्मे चाँह॥
कीन्ह भोग तब गँधरव देखा ❀ महा क्रोध दैत्यन बध लेखा॥
दैत्य को मारि देश कहँ शापा ❀ पुरुष जन्म पुर होय न पापा॥
औरो पुरुष भोग मन धरई ❀ गये तीस दिन निश्चय मरई॥
यहि प्रकार ते शाप रिसाई ❀ तब गन्धर्व स्वर्गपुर जाई॥
तब ते देश रूप यह भयऊ ❀ श्यामकर्ण हय तहँ पर गयऊ॥
देखत एक त्रिया तहँ आई ❀ श्यामकर्ण सो हरि लै जाई॥
धर्म्मराजको हय यह अहई ❀ पारथ रक्षक नृप ते कहई॥
परिमल नाम रजा इक अली ❀ हँसिकै कहेसि कीन्ह तो भली॥
लै हयशाला बाँधेउ जाई ❀ साजि त्रिया दल युद्धहि जाई॥
दो०-हय गज पैदल रथन चढ़ि, चलीं सबै जो तीय।
चन्द्राननी कठोर कुच, रूप बिधातै दीय॥
पारथ पाहँ परीमल कहई ❀ अबहूँ आश अश्वके अहई॥
आशा तजहु भोग करु आई ❀ युद्ध करै तो कालहि खाई॥
तबहिं सबै दल मोहित भयेऊ ❀ कर्णपुत्र तो सुधि महँ रहेऊ॥
पारथ कह्यो सुनहु हो त्रिया ❀ तुम्हरे पहँ गये पुरुष न जिया॥
परिमल कहै काल तब आये ❀ युद्ध माहिं जय कैधौं पाये॥
सतते भोग करौ मन लाई ❀ सुखमें करौ परम सुख पाई॥
युद्ध करी जय पैहौ नहीं ❀ सुनिकै अस्त्र पार्थ तब गही॥
मोहन बाण हने तब पारथ ❀ हँसी त्रिया कह भये अकारथ॥
सुर नर मुनि शंभु उर धरें ❀ देखत हमहि तासु मन हरें॥
मोहन बाण करहि का मेरो ❀ पारथ आज काल है तेरो॥
दो०-मोहन बाण हमार है, देखत मोहत शंभु।
मोहन बाण तुम्हार जो, हमको करत अनंभु॥
नई बैस नवयौवन बारी ❀ मृगनयनी सरोज रतनारी॥

९५ न्या० का० प्रेस,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

जब पारथ क्रोधित शर गहेऊ ❀ तब देवन नभ दुंदुभि दयेऊ ॥
यह कहि पंचबाण तब मारे ❀ और सहस्रन बाण प्रहारे ॥
तिरिया बधे पाप हो पारथ ❀ प्रीति करौ तो होवे स्वारथ ॥
पारथ सन तो प्रीति बिचारो ❀ परिमल ते जो बचन सँचारो ॥
यज्ञहि होत योग मन लइये ❀ लैकै दल जो मम इत अइये ॥
नातो पुरी हस्तिना चलिये ❀ फिरब तुरन्त मोहिं प्रतिपलिये ॥
लै धन द्रव्य सैन्य परमाना ❀ पुरी हस्तिना करिय पयाना ॥
छूटा अश्व पार्थ तब चलेऊ ❀ क्षत्री वीर संग सब भलेऊ ॥
दो०-ऐसे तरु देखे सबै, फूले सुरभि प्रमान ।
औ मनुष्य सम फल लगे, अचरज भयो महान॥
देखत सबहिन अचरज माना ❀ देखत चले अश्व परधाना ॥
एक नैन देखा बंग देशा ❀ देश विदेश और प्रतिदेशा ॥
गजके श्रवणन सम है काना ❀ एक देश देखा परमाना ॥
तीनि नैन अरु तीनै नाशा ❀ एक देश ऐसा परकाशा ॥
एक देश नरसिंह स्वरूपा ❀ भोग गंधरव सुख अनुरूपा ॥
याहि सब देश अश्व तो गयऊ ❀ जीते सबै अश्व तब भयऊ ॥
चलत अश्व आये पुनि तहाँ ❀ भीषम नाम दैत्य रह जहाँ ॥
एक चक्रवर्ती पुर आना ❀ तहँको अश्वहि कीन्ह पयाना ॥
मेदु हाथ दो प्रोहित अहई ❀ सुनी बात यह नृपते कहई ॥
अर्ज्जुनादि सब लाय तुरंगा ❀ जासु बन्धु तोरा पितु भंगा ॥
दो०-पिता शत्रु तुव आवत, बधौ ताहि महराज ।
रणमें धाओ बाण लै, यज्ञ करो जग साज ॥
चारि मास के व्रत हम अहई ❀ निराहार है तुमते कहई ॥
मदिरा रक्तासव नहिं खाये ❀ बालक यती भाइ जे पाये ॥
जटाधारि स्नान अहारा ❀ कार्तिक कन्या भक्ष अपारा ॥
अब तौ वीर न कीन्हें चहौं ❀ बधौं पार्थही ताते कहौं ॥
भीषम सुनिकै क्रोधित भयऊ ❀ युद्धहिं हेतु चलन मन दयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कोटिन दल लै दैत्य सिधायो ❀ लँका की निशिचरि बहु आयो॥
दैत्यनि एक दीख हनुमाना ❀ भागु भागु सो करै बखाना॥
वह बँदर कै जाना भाई ❀ पल महँ लँकापुरी जराई॥
सुने एक अरु कहे बुझाई ❀ नर के मारे कौन बड़ाई॥
मानुष मोरे रावण राऊ ❀ मैं कुच ते सब सैन्य गिराऊ॥
दो०—औरौ भाषो एक तो, तोरौं कुच सम बेल।
कुच को अग्रह मारहू, योजन इक का मेल॥
यह कहि स्वर्ग माँह सो जाई ❀ पारथ को दल गो महराई॥
बहुते दल तो मारो जाई ❀ दल पर जाय प्रगट तो भाई॥
लेकर दल तो आगे आये ❀ पारथ पाँह कहे समुझाये॥
तोको हतिकै भीम सँहारौं ❀ पिता बैर लै यज्ञ सँवारौं॥
यह कहि बाण वृष्टि कर लाये ❀ वृक्ष पहाड़ अनेक चलाये॥
लक्ष बाण तब पारथ मारा ❀ पर्वत वृक्ष अस्त्र भो छारा॥
वह दैत्यनी बड़ो दुख दीन्हा ❀ पारथ वीर बाण तब लीन्हा॥
मारे रथ पैदल असवारा ❀ दैत्यन दल तो बहु सँहारा॥
प्राणहिं अन्त भयउ जब जाना ❀ तब राक्षस माया निर्माना॥
दो०-बाघ सिंह औ गऊ सम, सेना भयो प्रमान।
भीषम वह अचरज भयो, तपा रूप परवान॥
माया ते पारथ तब कहेऊ ❀ यहै दैत्य दुखदाई अहेऊ॥
पारथ तो माया सब जाना ❀ तुर्तहिं बधे ताहि परमाना॥
छूटे प्राण दैत्य तब गयऊ ❀ महा हर्ष पारथ को भयऊ॥
सब सेना को पल महँ मारा ❀ जीते रण महँ पाण्डुकुमारा॥
मार दैत्य जब सब हर्षाना ❀ पारथ रथ बैठे हनुमाना॥
चले अश्व तौ किये पयाना ❀ पारथ के सँग दल बहु नाना॥
यौवनाश्व नीलध्वज राऊ ❀ हँसध्वज वृषकेतु सिधाऊ॥
मेघवर्ण आहै अनुशाला ❀ कामदेव अरु सुत गोपाला॥
चले अश्व के पाछे जाये ❀ अश्व चला तौ तेज पराये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चले अश्व तब आये तहाँ ❀ माणिपुर नाम ग्राम इक जहाँ ॥
दो०-सत्यवन्त सब क्षत्रिगण, एक नारि व्रत वेश ।
सब राजा कर देत हैं, अर्जुन पुत्र नरेश ॥
पुर उपमा नहिं जात कहि, जनु कैलास समान ।
ऐसी शोभा देखि तहँ, पुर इन्द्रासन जान ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषा कृते
अश्वमेधयज्ञकथनंनाम सप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

वैशम्पायन करै बयाना ❀ पुर उपमा नहिं जात बखाना ॥
पारथ सँग वीर जो रहई ❀ बड़े बली हैं सब मिलि कहई ॥
अश्व छुड़ावत कष्ट प्रमाना ❀ तत्क्षण देखे मृत्यु निशाना ॥
गीध उड़ैं पारथ शिर लागे ❀ सबहिं देखि तौ सँशय पागे ॥
नगर लोग अश्वहिं तब देखा ❀ गे राजा ते कहैं विशेखा ॥
सुनतहिं राजा वीर पठाये ❀ श्यामकर्ण को तुर्त मँगाये ॥
कञ्चन पत्र शीश पर रहेऊ ❀ पठ्ये राव जान सब अहेऊ ॥
तब राजा मँत्री सन कहेउ ❀ धर्म्मराज को हय यह अहेउ ॥
पारथ ताको रक्षक आही ❀ मेरे पितु अस राजा काही ॥
ताते मन्त्री कहै बिचारी ❀ कौनी बुद्धि करौं अब भारी ॥
दो०-तात भङ्ग मम तात करु, शापे तोकह तात ।
ग्राह भई ता कारणे, पारथ अति सकुचात ॥
पारथ को स्पर्श जब लीन्हा ❀ ऐसे त्रिया ब्याह तो कीन्हा ॥
छाँड़ि गये होते जो ताता ❀ अब हम भेंट करब सख्याता ॥
करि मन प्रेम सुबुद्धि बिचारा ❀ आने अश्व कौन परकारा ॥
मंत्री कहै अश्व लै मिलो ❀ राजा कहै मंत्र यह भलो ॥
तब राजा बहु साज बनाये ❀ नाना द्रव्य अनेक मँगाये ॥
नाना राग रँग तब ठना ❀ श्यामकर्ण लै किये पयाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गज ते उतरि राव तब गयऊ ❀ पारथ चरण माथ तब दयऊ ॥
मैं अब पुत्र तोहार प्रमाना ❀ चित्रांगदा गर्भ निर्माना ॥
सम्पति राज्य लेहु अब ताता ❀ कीजै कृपा जन्म कर दाता ॥
पारथ के दलका सरदारा ❀ सब पारथ सों कहैसु सारा ॥
दो०-पारथ मिलो न पुत्रते, देखो सुतकर देश ।
शीश चरण दै सुनि रहै, मणिपुर मती नरेश ॥
पारथ उपजो क्रोध अपारा ❀ नृप के हृदय लात इक मारा ॥
भाषत तोहिं लाज नहिं आवे ❀ वैश्य गती मम पुत्र कहावे ॥
मोसे जन्म तोर नहिं अहई ❀ मेरो सुत ऐसे नहिं कहई ॥
सुत अभिमन्युहि जानु हमारा ❀ चक्रव्यूह इकला सँहारा ॥
नाच गान गन्धर्व को काजा ❀ राजा मै तुहिं नेकु न लाजा ॥
अश्वहि गहे सर्व मन लाये ❀ भय आतुर तब देखन पाये ॥
युद्धन भौ तोहिं शरणन लागे ❀ देखत भय आतुर ते पागे ॥
बभ्रूबाहन सुनत रिसाना ❀ क्रोधवंत ह्वै बचन बखाना ॥
और सही सब जो तुम कही ❀ एक बात तो जात न सही ॥
कहेउ वैश्य सुत मो कहँ मारी ❀ तो मम मातु भई व्यभिचारी ॥
दो०-अब तो अश्व न देब हम, सुनु पारथ यह बैन ।
वैश्यन ते हय लेउ अब, देखों क्षत्री नैन ॥
यह कहि अश्व बाँधि लै गयऊ ❀ तब रण हेतु युद्ध मन दयऊ ॥
नृप को दल निकरो अति भारी ❀ आगे भये वीर धनुधारी ॥
अश्वहि राखि गेह नृप आये ❀ महाक्रोध युद्धहि मन लाये ॥
तात जानि अश्वहि मैं दयऊ ❀ महा गर्व ते गारी दयऊ ॥
अब आवत हौं युद्धहि करेऊ ❀ सुनत क्रोध अनुशल्वा जरेऊ ॥
नऊ बाण अनुशल्वा मारे ❀ क्रोध बभ्रूवाहन उर धारे ॥
धनुष सँभारा सौ शर छाँटे ❀ तीनि बाण ते इन्ह दल काटे ॥
तब राजहिं भौ क्रोध अपारा ❀ लगे बाण वर्षन जलधारा ॥
भीजे रक्त दोऊ सरदारा ❀ ऋतु वसंत टेसू परकारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

चारि बाण राजा तब मारे ❀ रुण्ड मुण्ड माहि परे विकारे ॥
दो०-पांच बाण ते सारथी, काटे ध्वजा निसान ।
हाथ धनुष तब कटपरो, अनुशल्व लागे बान ॥
भयो क्रुद्ध अनुशल्व भुआरा ❀ औरे रथहिं भये असवारा ॥
क्रोधित ऐसे बाण चलाये ❀ रथ समेत ते काम बहाये ॥
शर शाँरग करै संधाना ❀ मारे राव सहस इक बाना ॥
तबहिं गदा लै राजा धाये ❀ जाय धाय अनुशल्वहु लाये ॥
ता पाछे नौ बाणहि मारा ❀ मूर्च्छा भो अनुशल्व भुआरा ॥
सारथि लैके तुरताहि आये ❀ पाछे कामदेव तब धाये ॥
रुह रुह करि कै शर दश छाटे ❀ अयुत शरन ते राजहि काटे ॥
दोनहुँ बीर लगे शर मारन ❀ सौ ते सहस हजार हजारन ॥
अश्वरु गज रथ पैदल जूझे ❀ बाणन बिना और नहिं सूझे ॥
रुण्ड मुण्ड तब मे बहुताई ❀ रक्त नदी तहँ बहु बढ़ि आई ॥
नदी तरङ्ग बहत है भारी ❀ योगिनी सब तो करैं धमारी ॥
दो०-कामदवने रण कियो, रक्त बहायो खेत ।
रुण्ड मुण्ड मय मेदनी, नाचहिं योगिनि प्रेते ॥
जबहिं काम ऐसे शर ठाना ❀ तौ माणिपुरपाति क्रोध रिसाना ॥
क्रोधित ऐसे बाण चलाये ❀ रथ समेत तौ काम छुपाये ॥
कामहि तनु सब झंझर भयऊ ❀ ऐसी मार काम को दयऊ ॥
दोनों वीर तजे क्रोधित शर ❀ होन लगी अति मार परस्पर ॥
राजा मारेउ बाण रिसाई ❀ मोहित कामदेव मे आई ॥
साँग गदा तब लेकर छाटे ❀ तीन बाण ते गद नृप काटे ॥
दोनों शर मारहिं रिसिआई ❀ तब दोनों मूर्च्छित मे जाई ॥
क्रोधित राजा मोरेउ बाना ❀ मूर्च्छित भयो काम मैदाना ॥
मूर्च्छित काम बहुत दल मारे ❀ रुंड मुंड माहि परे बिकारे ॥
विकट कबंध रूप तब धावैं ❀ योगिन गण तो मंगल गावैं ॥
दो०-हाथ चरण शिर कहुँ परे, कहूँ रुंड कहुँ मुण्ड ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नाना अस्त्र सुहाथ महँ, मारत धावत रुण्ड ॥
वीर अनेकन पारथ नन्दन ❀ पारथ को दल कियो निकन्दन ॥
तब अनुशल्व चेत भो धाये ❀ प्रद्युमन चेतत आगे आये ॥
हंसध्वज नीलध्वज राई ❀ यौवनाश्व की सेन सिधाई ॥
मेघवर्ण आदिक सरदारा ❀ वह अकेल मणिपुरी भुआरा ॥
सबै वीर मिलि शर तो छाटे ❀ पारथ पुत्र सबै शर काटे ॥
जूझे वीर खेत मो लाखन ❀ महा मारु भै सकि को भाषन ॥
शूर तुरंग जूझि नहिं परेऊ ❀ कायर प्राण प्रथम तो हरेऊ ॥
लड़ि लड़ि शूर तजे तब प्राना ❀ गये अमरपुर बैठि बिमाना ॥
सुरकन्या सँग रम सुख पाये ❀ अपनी देह अवनि दिखराये ॥
कुंजर अश्व पदादिक नाना ❀ जूझे बहुत न जाय बखाना ॥
दो०—जैसे लव कुश राम ते, मारु भए बिपरीति ।
पारथ सुत अरु पार्थ ते, युद्ध होत यहि रीति ॥
राम कथा सब सुनि तब कहेऊ ❀ जैसे रण तहँ होत भयेऊ ॥
पारथ नन्दन बाण प्रहारा ❀ मूर्च्छित भा अनुशल्व भुआरा ॥
औरौ बाण काम को लागे ❀ मूर्च्छित भये नेकु नहिं जागे ॥
नीलध्वज मूर्च्छित मैदाना ❀ यौवनाश्व लीन्हें तब बाना ॥
क्रोधवन्त तब बाणन छाटे ❀ पारथ पुत्र मांझ तौ काटे ॥
पारथ सुत तब मारे बाना ❀ यौवनाश्व मूर्च्छित मैदाना ॥
तब सुबेग अमरष भरि धाये ❀ मणिपुर पति पर बाण चलाये ॥
मध्य बाण तब राजा काटे ❀ बाण सुवेग और तब छाटे ॥
मूर्च्छित भये मणीपुर राऊ ❀ पलक माँह चेतन तब पाऊ ॥
चेत भये तब मारेउ बाना ❀ तब सुवेग मूर्च्छित मैदाना ॥
दो०—मेघवर्ण तब धायऊ, कर लै शाँरग बान ।
महा युद्ध तब लागेऊ, राजा सुनहु बखान ॥
मेघवर्ण पुरुषारथ करेऊ ❀ दल अनेक खेतन महँ परेऊ ॥
जबहिं मणीपति मारेउ बाना ❀ मेघवर्ण मूर्च्छित मैदाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

मेघवर्ण मूर्च्छा जब पाये ❀ तब हंसध्वज राजा धाये ॥
रुद्र रुद्र करि मारे तब बाना ❀ माणिपति को छाये मैदाना ॥
ऐसे शर तब राजा मारे ❀ रथ सारथि पैदल सँहारे ॥
हंसध्वज कीन्ही प्रभुताई ❀ पांच क्षोहिणी मारि गिराई ॥
क्रोधित भये मणीपूर राऊ ❀ हंसध्वज पर बाण चलाऊ ॥
रथ सारथी सुकीन्ह निदाना ❀ हंसध्वज मूर्च्छित मैदाना ॥
जेते वीर सबै बध भयऊ ❀ वृषकेतु सों पारथ कहेऊ ॥
जैये पुत्र हस्तिना देशहि ❀ कहो जाय सुधि धर्म्म नरेशहि ॥
दो०—कहो जाय वृत्तान्त सब, अग्र राधिका रौन ।
जो तुम जूझे रण विषे, कहै जाय सुधिं कौन ॥
तुम जूझे कुन्ती दुख पैहैं ❀ हमहिं शाप दै प्राण गँवैहैं ॥
जब पारथ यह कहे बखानी ❀ तब देखा है मृत्यु निशानी ॥
पारथ उपर गृद्ध उड़ि आये ❀ रुण्ड छाँह लखि पारथ पाये ॥
कर्णपुत्र तुम शीघ्र सिधाओ ❀ यह सब कष्ट जाय समझाओ ॥
मोरे बल नृप यज्ञ कराई ❀ मोपर काल आय नियराई ॥
देखन यज्ञ नयन नहिं पाये ❀ यह बड़ शोच मोर मन आये ॥
दण्ड सहस्र छत्र जेहिं लागे ❀ सोइ चला राजाके आगे ॥
यज्ञ माँह दीन्हा नहिं दाना ❀ नृप ने कीन्ह शेष अस्थाना ॥
गंगा जल नहिं रानी भरेऊ ❀ यही शोच मोरे जिय धरेऊ ॥
जाहु तुरन्त कर्णके नन्दन ❀ कहौ जायके जहँ जगवंदन ॥
दो०-कर्णपुत्र तब अस कह्यो, जो रण तजि हम जाहिं ।
मम प्रपितामह स्वर्ग ते, टूटि परैं भुवि माहिं ॥
रहै सुयश सब यहि सँसारा ❀ याहि ते मल जो मृत्यु विचारा ॥
ताको जन्म सफल है पारथ ❀ जो तन धन देवाहि परस्वारथ ॥
तन धन निष्फल ताको गयऊ ❀ पर उपकार विमुख जो भयऊ ॥
जीतैं यज्ञ बड़ाई पावैं ❀ जूझ स्वर्ग लोक को जावैं ॥
उत्तम देह पार्थ परमाना ❀ माणिपुर नृप है तृणहि समाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहू प्रकार पारथ समझायो ❀ कर्णपुत्र के हृदय न आयो ॥
शारँग बाण हाथ करि लीन्हा ❀ रथ चढ़ि तबहि हाँक तो दीन्हा ॥
और वीर सम हमैं न जानो ❀ अब हमते रण तुमहीं ठानो ॥
यह कहि तीन बाण फटकारा ❀ लगे मणिपती गात मुआरा ॥
दो०-तब सँभारि मणिपुर पती, मारे बाण प्रचंड ।
साहित अश्वके सारथी, काटि किये नौ खण्ड ॥
कर्णपुत्र क्रोधहि तब पाये ❀ एक लक्ष तब बाण चलाये ॥
रथ सारथि काटे पल माहा ❀ दोनों वीर बड़े बलबाहा ॥
पारथपुत्र कहै तब बैना ❀ तो सम वीर न देख्यो नैना ॥
कर्णपुत्र शर ऐसे मारा ❀ पर्वत पवन छाय अँधियारा ॥
रवि कुबेर औ यमके बाना ❀ ते सब कुँवर करै संधाना ॥
लैकर शंभु बाण तब अत्रहि ❀ ताते हते पताका छत्रहि ॥
मणिपुर नृपति हने अस बाना ❀ कर्णपुत्र नभ कियो पयाना ॥
रविमण्डल में पल इक रहेऊ ❀ पितु प्रपिता के दर्शन भयऊ ॥
तबहिं वीर वसुधा पर आवा ❀ पारथसुत तब बचन सुनावा ॥
दो०-विनतासुत जिमि इंद्र बध, तैसे हति तुव प्रान ।
सुनत क्रोध भो कर्णसुत, मारे राजहिं बान ॥
तब मणिपुरपति स्वर्गहि गयऊ ❀ सूर्य्य तेजमहँ छिपिसो रहेऊ ॥
वहँ ते जबहीं कीन्ह पयाना ❀ तो सम वीर न देख्यो आना ॥
तब फिरि गये सूर्य्य के पाहा ❀ अङ्ग अङ्ग तनु जर नरनाहा ॥
पुत्र सुपुत्र कहै रिसिआई ❀ हँसध्वज को बधि प्रभुताई ॥
ताते स्वर्ग दिखायो तोहीं ❀ अजहूँ वीर न चीन्ह्यो मोहीं ॥
मणिपुरपति तब वसुधा आये ❀ वृषकेतू पर बाण चलाये ॥
कर्णपुत्र स्वर्गहि महँ गयऊ ❀ पाछे प्रगट भूमि महँ भयऊ ॥
कबहुँ अकाश कबहुँ धरधरणी ❀ पार्थ ठाढ़ देखत रण करणी ॥
बाण लगे तनु मास उड़ाये ❀ अन्तरिक्ष महँ पक्षी खाये ॥
पाँच दिवस लौं तब रण कीन्हा ❀ रैनीदिवससाँसहु नहिं लीन्हा ॥

९६ न्या० का० प्रेस,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-मारे बाण जु क्रोध कर, मणिपुर पती नरेश ।
काटि शीश वृषकेतु कर, भये युद्ध कर शेश ॥
उठी कबन्ध अस्त्र तो धरेऊ ❀ शिर पारथ के रथ पर परेऊ ॥
हय रथ पैदल रुण्ड सँभारे ❀ देखा पार्थ रुदन सँचारे ॥
हा हा कर्णपुत्र धनुधारी ❀ सुंदर सुख बालि जाँउ तुम्हारी ॥
कुंती नृप भाई यदुराई ❀ इन सब ते का कहिहौं जाई ॥
बहु प्रकार ते रोदन करही ❀ विविध भाँति विलाप सँचरही ॥
हा हरि सारथि कीन्ह हमारा ❀ आवत को नहिं दोष तुम्हारा ॥
कर्णपुत्र का बदन निहारी ❀ मोहित भये पार्थ धनुधारी ॥
शशि गोद लै मुर्च्छे पारथ ❀ रसना रटै श्रीपती सारथ ॥
पारथ मूर्च्छित राजै देखा ❀ आय निकट तौ कही विशेषा ॥
देखे मूर्च्छित पारथ आई ❀ बभ्रुवाहन परम सुख पाई ॥
दो०-मूर्च्छित जाने तात कहूँ, धनुषहि अग्र उठाय।
कछू बचन कहि मणिपती, भाषत कटुक सुभाय ॥
सुनिये राजा श्रवण दे, ताको करौ बखान ।
शोच किये को काम है, गहौ धनुष कर बान ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंह चौहानभाषाकृते
बभ्रुवाहनयुद्धकर्णपुत्रबधो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

वैशम्पायन करैं बखाना ❀ पारथ पुत्र कहेउ परमाना ॥
सुत वैश्यनको तब तुम कहेऊ ❀ ता कारण ते प्रण हम गहेऊ ॥
सूझि परत नहिं क्षत्रिय कोई ❀ वैशम्पायन हय ले सोई ॥
एते दल में वीर न ऐसे ❀ कर्णपुत्र कहँ देख्यो जैसे ॥
तुम क्षत्री हम वैश्य सख्याता ❀ करौ युद्ध ऐसी कहि बाता ॥
यह सुनि कर तब पारथ जागे ❀ महा खँभार क्रोध में पागे ॥
बाण धनुष तब करमें लीन्हा ❀ क्रोधित ह्वै रथचढ़िशुभकीन्हा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करिकै क्रोध कहा यह पाहाँ ❀ रे माणिपुरपाति जैहै काहाँ ॥
मेरो दल तुमने सब मारा ❀ तोहिं बधौं अब पाँडुकुमारा ॥
और बहुत बात कहि आये ❀ बाण वृष्टि तो पारथ लाये ॥
दो०-क्रोधित पारथ वीर तव, बाण वृष्टि झरि लाय ।
रथ गज हय पैदल घने, त्रासित सब भहराय ॥
कृतवर्मा को उत्तम साथी ❀ अश्वत्थामा नामा हाथी ॥
भीम उपर कुंजर जब धायो ❀ बीचहि अर्जुन मारि गिरायो ॥
प्रलयकाल महँ शंकर जैसे ❀ पारथ अस्त्र प्रहारत तैसे ॥
पारथ बाण करै सँधानहि ❀ देखे कोई न मर्महिं जानहि ॥
छूटत बाण न देखे पायो ❀ तब देख्यो जब मारि गिरायो ॥
माणिपुरपाति तब बिवले जाई ❀ पारथ लगे कोट महँ आई ॥
बाण घाव ते गढ़ तब तोरे ❀ शर के घाव कँगूरा फोरे ॥
नगर नारि नर रानी भागी ❀ शर ते पावक पुर में लागी ॥
जबहीं पारथ किय प्रभुताई ❀ क्रोध भये माणिपुर के राई ॥
मारे बाण मणीपुर राऊ ❀ चारों हय के लागो घाऊ ॥
तीनि बाण पारथ के मारे ❀ एक बाण ते छत्र सँहारे ॥
सात बाण मुर्च्छे तब वीरा ❀ बेरथ भये पार्थ रणधीरा ॥
दो०-तब दोऊ जन भूमि महँ, युद्ध करत विपरीत ।
महा मारु को कहि सकै, देखत सब भयभीत ॥
पारथ ने जेते शर छोटे ❀ माणिपुर पति तुर्तहिं सब काटे ॥
तब बभ्रूवाहन रण कीन्हा ❀ अस्त्र अनेक जु देवन दीन्हा ॥
द्रोण आदि जो अस्त्र सिखाये ❀ सारथि भे हरि सदा बचाये ॥
से सब अस्त्र होंत हैं कैसे ❀ कृपणी के घर भिक्षुक जैसे ॥
मम माता है सती प्रमाना ❀ ताको दोष दीन्ह अज्ञाना ॥
साधुहिं दोष दीन्ह अज्ञाना ❀ निष्फल होत ताहि को बाना ॥
यह अपराध बूझ दै गारी ❀ अजहूँ सुधि नहिं लीन्ह तुम्हारी ॥
सुमिरि बोलावहु श्रीभगवाना ❀ तब लगि हम नहिं मारहिं बाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनि पारथ क्रोधित शर मारा ❀ मणिपति घायल भये अपारा ॥
तब बभ्रूबाहन शर मारा ❀ बाणन ते है गो अँधियारा ॥
दो०—प्रबल बाण तब मारेऊ, मणिपुरपती भुआर ।
पारथ तब मोहित भयो, भूले घात प्रहार ॥
कोपि पार्थ तब बाण चलाये ❀ पै नहिं सकहिं पुत्र बिचलाये ॥
गंगा शाप तुलानेउ आई ❀ बिसरा बल औ बुद्धि नशाई ॥
क्रोधवन्त मणिपुर के नाथा ❀ लीन्हें अर्द्धचन्द्र शर हाथा ॥
गंग बैर लै ज्वाला रानी ❀ अर्द्धचन्द्र शर आप समानी ॥
उहै बाण लै धनु सँधाना ❀ तेज मनो द्वादशहू भाना ॥
देखत शर पारथ अकुलाना ❀ लक्ष बाल बहु किय सँधाना ॥
पावक बाण लगे तब झारन ❀ पै वह बाण लगै नहिं टारन ॥
लाग्यो बाण कण्ठ महँ आई ❀ तजे कबंध शीश उड़ि जाई ॥
दो०—कार्तिक शुदि एकदशी, उत्तरा मंगलवार ।
साँझ समय जूझे तहाँ, पारथ पाण्डुकुमार ॥
पारथ बध राजा तब धाये ❀ शंखध्वनि करि हर्ष मनाये ॥
हर्षवन्त बहु बाजन बाजैं ❀ बन्दीजन तब स्तुति साजैं ॥
नगर माहिं तब भूपति चलेऊ ❀ नाना शकुन होत सब भलेऊ ॥
तब अंतःपुर को शुभ कीन्हा ❀ रानी उतरि आरती लीन्हा ॥
राजा सुनि तब आनँद मानो ❀ जीते सुत बहु हर्ष बखानो ॥
दासी एक जाय कहि तहाँ ❀ चित्राङ्गदा उलूपी जहाँ ॥
महावीर है पुत्र तुम्हारा ❀ पारथ को कीन्हा सँहारा ॥
सुनत दोउ मूर्च्छित भुवि परी ❀ दासी सब तब विस्मय करी ॥
राजा पाहिं कहा तब जाई ❀ माता दोउ मूर्च्छा खाई ॥
सुनतहिं राजा अचरज पाये ❀ देखन मातुहिं तुर्त सिधाये ॥
दो०—कोइ चन्दन कोइ पवन करि, हाहा करत पुकार ।
अस देखा दोउ मातु कहँ, मणिपुरपती भुआर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अलङ्कार बिन विधवा जैसे ❀ मातुहिं जाय देखि नृप तैसे ॥
माता कहँ तब भूप उठाये ❀ औरो बचन कहे मन लाये ॥
हर्ष माहिं दुख भो का जाना ❀ माता हम सों कहौ बखाना ॥
मेरो सुयश सुनौ अस माता ❀ पारथ कहँ मारे सख्याता ॥
हंसध्वज नीलध्वज राजा ❀ यौवनाश्व प्रद्युमन रण गाजा ॥
अनुशल्वा रणधीर जुझारा ❀ और महाबल कर्णकुमारा ॥
अलङ्कार पहिरौ हे माता ❀ देखत हैं अब मंगल दाता ॥
सुनत बचन माता तब कहई ❀ हे सुत तू पापी बड़ अहई ॥
पारथ कंत हमारो अहई ❀ मेरो सुत है पापहि कहई ॥
दो०-मेरो भुषण सकल तुव, ताहि उतारेउ आज ।
अब भूषण पहिरावतो, नेक न आवै लाज ॥
यज्ञ नाशि धर्म्महिं दुख दीन्हें ❀ कुंती कहँ पारथ बिन कीन्हें ॥
युद्ध समय पूँछेउ नहिं मोहीं ❀ पापी पाप बुद्धि भइ तोहीं ॥
हम अब कंताहि संग सिधावैं ❀ रे पापी मोहिं कन्त देखावैं ॥
यह कहि दोउ तिय बाहर गई ❀ विस्मय राय बहुत विधि भई ॥
तब उलुपी भाषण अस कहई ❀ एक परीक्षा पियकै अहई ॥
आप विलोकत हैं अब रोई ❀ है उपाय करि सकै जो कोई ॥
मणी सजीवन अहै पताला ❀ प्राण सजीव होय तत्काला ॥
जीवाहि पारथ जो मणि आवै ❀ सुनत बभ्रुवाहन सचुपावै ॥
हमरे पितु सन शंकर हारे ❀ बलसम भो को सर्प बिचारे ॥
मैं पाताल चलि मणि लै आओं ❀ जीति नाग अब तात जिआओं॥
सुनत मातु कह हेतु बुझाई ❀ पुत्र न करु यह बाड़ि लरिकाई॥
विषम विषल तेज प्रत्यक्षक ❀ पंद्रह कोटि नाग जहँ रक्षक ॥
दो०-सौ मुख कोई दुइसै बदन, कोई बदन सौ तीन ।
चार पांच छः सात सौ, बदन आठ सौ कीन ॥
नागन केर मणि है माना ❀ परस्वारथ जिय देत को दाना ॥
रहो पुत्र मैं मंत्र उपावों ❀ अपनो भूषण पिताहि पठावों ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तबहीं मंत्रि बोलिकै लीन्हा ❀ सब आभरण साथही दीन्हा ॥
कहियो जाय पिता के पाहीं ❀ तुव दुहिता विधवा भइ आहीं ॥
मणी देहु तौ तात बचायो ❀ कह्यो तबहिं इकलौ जब पायो ॥
ताता को जो सहोदर कहेऊ ❀ खलु के रहो रहा नहिं चहेऊ ॥
पुण्डरीक मंत्री कह बाता ❀ नाश होय तनु पार्थ सख्याता ॥
पिंड लगै तौ मणि का करही ❀ कैसे प्राण फेरि संचरही ॥
मैं डसि जाउँ पिंड तो रहई ❀ सुनत बभ्रुवाहन तब कहई ॥

दो०—बड़े बड़े सरदार सब, कर्णपुत्र औ तात ।
जाहु डसी यह कहैं सब, मणिपति कह सख्यात ॥

तब मंत्री सब कह जो डसेऊ ❀ हर्षित होय पतालहिं धसेऊ ॥
पंच पेड़ दाडिम को अहहीं ❀ ताहिं देखि अब मोते कहहीं ॥
यज्ञ माहिं जो पार्थ मरहीं ❀ पाँचौ पेड़ आपुते जरहीं ॥
जौनि परीक्षा मृत कै पाओ ❀ तौ हम तुम मिलि प्राणगँवाओ ॥
देखहु जाय जरै तरु आहैं ❀ तब रोदन करि चलि पिय पाहैं ॥
हाहा कन्त पुकारत चली ❀ सँगहि उलुपी रोवत भली ॥

दो०—देखा जाय शीश भुइँ, दोउ त्रिया लगि पावँ ।
शीश लगाय हृदय महँ, देह परी केहि ठावँ ॥

रोदन करत कन्त को देखी ❀ बहुत विलाप न जाय विशेषी ॥
हाहा कन्त किरति सँहरेहू ❀ राहु बेधकै द्रुपदी हरेहू ॥
द्रोणहि हेतु द्रुपद लै धायो ❀ नृप विराट के गऊ छोड़ायो ॥
पावक शरण होत नरनाथा ❀ बन अखंड जोरेऊ हरि साथा ॥
रुदन करै अरु बात सँचारी ❀ सुत मम शीश काट तोहि डारी ॥
माता कह सुनिये अब राई ❀ दीजै काठिन चिता बनवाई ॥
तजिहौं कन्त संग मैं प्राना ❀ सुनि रोदन करि पुत्र बखाना ॥
पितु को जान अश्व लै गयऊ ❀ मिलत तात गारी मोहिं दयऊ ॥
सो माता अब कहा न जाई ❀ यहि ते क्रोध हृदय मम आई ॥
जन्मत हमैं मातु बध करती ❀ शोक सिंधु केहि कारण परती ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०—विभव विलास हुलास रस, बिन पारथ केहि काज।
निश्चय अब पावक जरौं, स्वामी सँग लै साज॥
सेवक बोलि नृपति अस कहई ❀ रचौ चिता जारन हम चहई॥
चित्रांगदा सुनत तब कहेऊ ❀ आपुहि जरौ हेतु का अहेऊ॥
लै भूषण तौ चली प्रवेशा ❀ प्रथम गये व्यालन के देशा॥
सुतल तलातल सब परमाना ❀ देखे जाय लोक तहँ नाना॥
नागसुता सब धर्म सुशाला ❀ देखत पहुँचै सप्त पताला॥
गंगधार देखन जब पाये ❀ तब गंगा पहँ शीश नवाये॥
बहुरि अन्हाय देव कुल पूजा ❀ पूजत हरहि और नहिं दूजा॥
नागसुता सब देखहिं नाना ❀ मदन रूप लखि चित्त लोभाना॥
पूजि देवता तुर्त सिधाये ❀ सुधाकुण्ड तब देखन पाये॥
नागयूथ तहँ रक्षा करहीं ❀ हरित बदन जे उपमा धरहीं॥
ताहि देखि कै अग्र सिधारा ❀ पहुँचे शेषनाग दरबारा॥
कर्कोटक जहँ मंत्री अहई ❀ हरित वर्ण ते शोभित रहई॥
दो०—भरी सभा महँ मंत्री, दीन्ह आभरण डारि।
तुव दुहिता विधवा भई, भाषै वात बिचारि॥
सो कन्या मणि हेतु पठाई ❀ जाते पार्थ जिये सुखदाई॥
सुनिकै शेष अचम्भो माना ❀ सबै कथा जो पूछि प्रमाना॥
कैसे पार्थ तज्यो है प्राना ❀ पुण्डरीक सुन कियो बखाना॥
धर्मराज यज्ञहिं निर्माये ❀ हय रक्षक अर्ज्जुनहिं पठाये॥
बहुत देश जीतत जब आये ❀ तब माणिपुर जो अश्व सिधाये॥
बभ्रूवाहन पार्थ कुमारा ❀ गह्यो अश्व जब सुनें भुआरा॥
पिता जानि मिलने जब गये ❀ तब पारथ बहु गारी दये॥
तात क्रुध ह्वै रण अनुसारा ❀ सब दल सहित पार्थ को मारा॥
तुव कन्या सब विनय प्रमाना ❀ है सरवर संजीवन जाना॥
मणी देहु तौ बचिहै पारथ ❀ तातौ सब जो भये अकारथ॥
दो०—शेष कहे विस्मय बदन, धृतराष्ट्रक की बात।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुन मंत्री आश्चर्य्य है, पार्थ मृत्यु उत्पात ॥
मणी देहु औ अमृत भाई ❀ जाते पार्थ प्राण बाचि जाई ॥
सुनतै सबै नाग रिस ताता ❀ एकहि बदन कहै सब बाता ॥
धृतराष्ट्रक राजा ते कहेउ ❀ पृथ्वीनाथ एक मणि अहेऊ ॥
पुरी पताल नाग जहँ मरई ❀ कहौ बात तब कत संचरई ॥
यह मणि मृत्युलोक कहँ जाई ❀ औषधि मंत्र होब कत राई ॥
तेज हमार हीन विष होई ❀ भय हमार मानिहै नहिं कोई ॥
ताते मणी दीन्ह नहिं चाही ❀ सुनतै शेषनाग तब कही ॥
मणि दीजै ह्वैहै यश मेंरो ❀ और काम तो होय घनेरी ॥
मंत्री कहै देब नहिं राजा ❀ मणी गये नाशै सब काजा ॥
धनुष बांधिकै नागन खैहै ❀ गरुड़ दुष्ट आवत दुख पैहै ॥
दो०-शेष कहै मणि दीजिये, पारथ हरिको दास ।
आय दूतसु आश करि, कैसे करहुँ निराश ॥
ग्वाल वत्स जब ब्रह्मा हरेउ ❀ माया रूप कृष्ण सब करेउ ॥
वर्ष एक विधि रहे भुलाये ❀ सो पारथ के आय सहाये ॥
मैं मणि देहौं जग यश रहई ❀ सुनत बात मंत्री अस कहई ॥
जो विनाश नागन कुल कीजै ❀ मृत्युलोक तौ मणि यह दीजै ॥
मंत्री हेतु कहा सब यही ❀ राजा के मन विस्मय रही ॥
अब हम कछू कहै नहिं बाता ❀ अहिके भवन गये सख्याता ॥
पुंडरीक के शेष बुझायो ❀ हमते कछू नहीं बनि आयो ॥
वह है कृष्ण जगत के तारण ❀ तुम पालत आये केहि कारण ॥
शेषनाग तौ कह मन दयऊ ❀ आशा भंग दूत तब भयऊ ॥
भये निराश चले पुनि तहां ❀ नर नारी मग जोहत जहाँ ॥
दो०-रोदन करती त्रिया सब, विस्मय मन बहु राय ।
मग जोहत अभ्यन्तर, दूत पहुँचे आय ॥
बातैं कह्यो सबैं समुझाई ❀ पुरी पताल मणी नहिं पाई ॥
शेष दीन्ह मन्त्री नहिं दीन्हा ❀ सुनत बभ्रूवाहन रिस कीन्हा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धृतराष्ट्रक राजा ते कहई ❀ मृत्यु भुवन को मणी न अहई ॥
मणि अमृत हति सर्प्पहि लाऊँ ❀ बभ्रुवाहन तब नाम कहाऊँ ॥
इन्द्र वरुण यम शंकर होई ❀ जीतों सबहिं जो आवै कोई ॥
इतना कहि किय रणके साजा ❀ लै दल चले युद्ध के काजा ॥
पहुँचे जबहिं शेष सुनि पाये ❀ तब मंत्री सन कहा बुलाये ॥
आये रणहिं मंत्र का अहई ❀ सुनत बात मंत्री तब कहई ॥
हम तो जाब करन रण साजा ❀ मारहु सबहि शोच का राजा ॥
इतना काहि धृतराष्ट्र सिधाये ❀ नाग सैन्य तब अद्भुत आये ॥
हय गज रथ पर भै असवारा ❀ विषम विषैल चलै मणि आरा ॥

दो०-दोय तीन सौ चार मुख, विषधर वीर अपार ।
गहे अस्त्र आये सबै, अगणित पार्थ कुमार ॥

देखत पारथ कुवँर रिसाना ❀ वर्षन लागे अद्भुत बाना ॥
नागहिं अस्त्र विषम फुफकारा ❀ मानुष जूझैं होत सँहारा ॥
सेल्ह सांग मारेउ असि बाना ❀ मारौं सर्प वीर बलवाना ॥
विषके तेजहिं दल अकुलाना ❀ जूझा दल तब बहुत रिसाना ॥
सहस एकइस दल बध भयऊ ❀ बभ्रुवाहन नाम तब लयऊ ॥
धृतराष्ट्रक सौ मारे बाना ❀ क्रोधवंत ह्वै काल समाना ॥
न्यूर मोर को अस्त्र चलायो ❀ ऐसे बहुत नाग बिचलायो ॥
महामारु तब प्रकटो भारी ❀ मारे गये बहुत विषधारी ॥
पुनि तब नागन कीन्ह दरेरा ❀ दशो दिशामें नर दल घेरा ॥
बभ्रुवाहन तब बहुत रिसाना ❀ क्रोधित मारे मधुको बाना ॥

दो०-मधू प्रश्न करिकै तबै, मारत पिलके बान ।
चाम मास और हाड़ जे, छेदे उभय प्रमान ॥

ऐसी मारु मई घमसाना ❀ तबहिं नागदल सब भहराना ॥
मारन गये क्रोध करि बाना ❀ भागे हेतु कहा सो माना ॥
अबहूँ मणी तुरंताहि दीजै ❀ शेष कहा मंत्री अस कीजै ॥
शेषनाग उर हर्षजु कीन्हा ❀ मणि अमृत दोऊ लै दीन्हा ॥

९७ व्या० का० प्रेस,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

मिलन हेतु सो सब पग धरेउ ❀ गृह में मंत्री रोदन करेउ ॥
बैरी पाण्डव दुष्ट हमारा ❀ मणि अमृत गै करै बिचारा ॥
दुष्ट दुर्बधी दो सुत अहई ❀ तबते बात तात सन कहई ॥
हम हैं ऐसे पुत्र तुम्हारा ❀ जिये पार्थ कैसे संसारा ॥
आजु जाहु राजा सँग धाई ❀ हम कछु तबही रचब उपाई ॥
दो०-शिर आनब मैं पार्थका, रुंड रहे मैदान ।
देखौं कैसे सुधामणि, करि देही जिवदान ॥
यह काहि तात तुरन्त सिधाये ❀ दूनौ बन्धु मणीपुर आये ॥
भेद कोउ जानै नहिं पाये ❀ पारथ को लै शीश सिधाये ॥
कुंज विपिन महँ मालिकै डारा ❀ शीश नहीं तब त्रिया निहारा॥
रोदन करै त्रिया बहु रूपा ❀ मणिपति मिले धायके भूपा ॥
मणि अमृत दीजै तौ हाथा ❀ हर्षित चले मणीपुर साथा ॥
शेष आदि सबही तब आये ❀ रणभूमी जहँ पार्थ गिराये ॥
देखा तहाँ राव दुइ नारी ❀ काहु हरौ शिर करो गोहारी ॥
राजा सुनतै मूर्च्छित भयऊ ❀ हे विधि कौन कर्म तैं कियऊ ॥
जबही राजा मुर्च्छित भयो ❀ पुरी हस्तिना की सुधि कियो ॥
पारथ सपना मातुहि दयऊ ❀ कुंती हरिते बोलन लयऊ ॥
दो०-तेलकुण्ड महँ पार्थ अरु, सबन करे स्नान ।
चढ़ि गर्दभ पर दक्षिण दिशि, कीना रेनि पयान ॥
सो वर्तन सुलाल है फूला ❀ पारथ स्वप्न देखि भय शूला ॥
रोदन करि कुन्ती संचारे ❀ श्रीपति कीन्हा पारथ मारे ॥
चले भीम तब क्रान्ति डेरानी ❀ हरी गरुड़ पर आसन ठानी ॥
पार्थ हेतु चले शारँगपानी ❀ मणिपुर चले पहूँचे आनी ॥
देखा रण स्मसान समाना ❀ तम्बू एक देख भगवाना ॥
अगणित रानी रोदन करहीं ❀ कृष्णरु भीम तहाँ पगु धरहीं ॥
देखा हरि पारथ के रुण्डा ❀ रोदन करै त्रिया बिन मुण्डा ॥
कह तब हरिहिं कौन रण राना ❀ को पारथ को कीन्ह निदाना॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हा पारथ करि कही बखानी ❀ रोये भीम क्रांति पटरानी ॥
तबहीं भीम कहा अस बानी ❀ ऐसो कौन वीर जग जानी ॥
दो०-मेरे देखत अश्व हरि, बधे पार्थ रणधीर ।
जाहि कुशल सो प्राण लै, ऐसो को यदुवीर ॥
बभ्रुवाहन रोदन करि कहई ❀ हम तो पुत्र पार्थ कर अहई ॥
कर्म्म दोष हत्या हम पाये ❀ तातहिं अपने हाथ गिराये ॥
अमृत हरि पताल से लाये ❀ अभ्यन्तर शिर कोउ दुराये ॥
ताते भीम गदा परिहारो ❀ मेरो शीश चूर्ण करि डारो ॥
मैं दर्शन श्रीहरिके पाये ❀ जगके भय मो मन नहिं आये ॥
श्रीपति हमैं मृत्यु अब दीजै ❀ मेरो पाप उऋण अब कीजै ॥
चित्रांगद तब रोदन करहीं ❀ कुन्ती के चरणन महँ परहीं ॥
शोकित कुन्ती परि मुर्च्छाई ❀ शेष कहा सुनिये यदुराई ॥
पांडुवंश बूड़त अब कैसे ❀ तुमहि कियो रक्षा उपजैसे ॥
सुनिकै हरि चिन्ता उर पागे ❀ सबै लोग तब बोलन लागे ॥
दो०-ब्रह्मचर्य्य जो पुण्य हम, कीन्हें जगत मों झार ।
तौ आवै शिर पार्थको, चोर होउ सँहार ॥
कहतै तुर्त शीश तब आये ❀ मन्त्री दुष्ट नाश तब पाये ॥
पाय शीश कन्धा पर धारे ❀ हरि मणि हाथ कहै संचारे ॥
उरमें पारथ मणि तब राखे ❀ उठत पार्थही श्रीपति भाखे ॥
लागे शीश उठो तब कैसे ❀ चुम्बक माहिं लोह लग जैसे ॥
प्रद्युमन वह मणि करि जगवंदन ❀ रहु रहु करि तब उठे अनन्दन ॥
कर्णपुत्र रणधीर कुमारा ❀ यौवनाश्व अनुशल्व भुआरा ॥
हंसध्वज नीलध्वज राऊ ❀ जागे सबै चेत तब पाऊ ॥
पारथ आदि सबै जब जागे ❀ धाय कृष्ण के चरणन लागे ॥
सेवक शेषनाग तौ भयऊ ❀ शेष अनंद बहुत विधि लयऊ ॥
दो०-नाना कौतुक वाद्य तब, होत अनन्द अपार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पैदल सेना पार्थले, सुनत नगर पगु धार ॥
बभ्रूवाहन लज्जा पाये ❀ सभा माहिं नहिं मुख देखराये ॥
कहै पाप पितुको बध ऐसो ❀ पाप याहि छुटे धौं कैसो ॥
करवट लेउँ दहौं तनु काशी ❀ हिम प्रयाग जाइहौं प्रकाशी ॥
तबहुँ पाप का छूटत अहई ❀ सुनिकै भीम बोधि तब कहई ॥
सुनहू पुत्र शोच नहिं कीजै ❀ हम जो कीन्ह श्रवण सुनिलीजै॥
भीष्म पितामह मैं सँहारा ❀ द्रोण गुरू अपने कर मारा ॥
हरि दर्शन सों पाप नशाना ❀ तुव दर्शन पाये भगवाना ॥
पारथ गहे तबहिं सुत हाथा ❀ गाहि बैठारे अपने साथा ॥
पुर महँ भई अनन्द बधाई ❀ परम हर्ष माने यदुराई ॥
दो०—पांच दिवस आनन्द बहु, बीते मणिपुर देश ।
प्रात समय सब आयहू, बोलत भये ऋषेश ॥
कह्यो भीमते श्रीयदुराई ❀ चित्रांगदहि लीन्ह सँग लाई ॥
शेषसुता तौ संग सुजाना ❀ कुन्ती औ मम मातु प्रमाना ॥
अब तौ जाहुँ हस्तिना देशहि ❀ हम हस्तिनके संग विशेषहि ॥
सुनतै सबको सँग करि लयऊ ❀ भीम बिदा तब हस्तिन भयऊ॥
शेषनागको पूजा दीन्हें ❀ शेषागमन पतालहि कीन्हें ॥
भीमसेन हस्तिनपुर गयऊ ❀ सबै बात तो कहबै लयऊ ॥
विस्मय हर्ष तु धर्म्मकुमारा ❀ वैशम्पायन कथा सँचारा ॥
पांडु विजय यह पुण्य कहानी ❀ बाढ़ै धर्म्म पापकी हानी ॥
तब जन्मेजय पूछन लागे ❀ कौने कौन देश नृप आगे ॥
कहा भयो कैसो रण भारी ❀ वैशम्पायन कहौ बिचारी ॥
दो०—वैशम्पायन भाषेऊ, रहस कथा सुनु राय।
मणिपुरते हय छूटेऊ, चले वीर सँग धाय ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषा कृते
मणिपुरतेहयछूटनोनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

In Public Domain. Digitized by eGangotri. Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बभ्रूवाहन संग है पारथ ❀ वैशम्पायन कहै यथारथ ॥
चलत पंथ महँ कौतुक भायो ❀ ताम्रध्वज हय देखन पायो ॥
मोरध्वजको पुत्र जुझारा ❀ अपनो अश्व करै रखवारा ॥
मोरध्वजहि यज्ञ निर्माये ❀ पारथ को हय देखन पाये ॥
पारथ को हय गहि सो पाये ❀ पठै सचिव तौं अर्थ सुनाये ॥
बहुत शुद्ध मंत्री की बाता ❀ ताम्रध्वज हर्षित सुनि गाता ॥
हरे अश्व दलको सँहारा ❀ कहै कुँवर तौ काज हमारा ॥
संवत मध्य यज्ञ तो करै ❀ अष्टम यज्ञ अश्व तब हरै ॥
हरै अश्व तौ हर्ष अपारा ❀ तब पारथ दल परी पुकारा ॥
हरेउ अश्व तब खरख भारी ❀ तब पारथ ते कह बनवारी ॥

दो०—महाबली तो मोरध्वज, सब राजा कर देत ।
बभ्रुवाहन कह सत्य है, हम कर देत सचेत ॥

कहेउ कृष्ण नर्मद के तीरा ❀ इनकें तात यज्ञ करि धीरा ॥
इनते जीति सकै नहिं कोई ❀ यद्यापि सेना साजे जोई ॥
गीध पुष्प दल करी प्रमाना ❀ अनुशल्वा रह कंधस्थाना ॥
हंसध्वज नयनन महँ राखो ❀ और काम अनिरुधहि भाषो ॥
सात्यकि पुत्र पच्छ के माहाँ ❀ मेघवर्ण दल रक्षक ताहाँ ॥
पारथ सुत औ कर्णकुमारा ❀ दोनों चोंचनके रखवारा ॥
ऐसे दल संयुत करवाये ❀ मोरध्वज पहँ कृष्ण सिधाये ॥
करि प्रणाम ताम्रध्वज कहै ❀ आपै युद्ध हेतु मन गहै ॥
आपुहि युद्ध करिय मनलाई ❀ मोको नाहीं भ्रम यदुराई ॥
अर्धचन्द्र शर सेना करई ❀ अगणित ताम्रध्वज संचरई ॥

दो०-सत्रह बाणन हाथ लै, माऱ्यो विरह अनङ्ग ।
तीनि बाण तब श्याम के, मारे ताकि अभंग ॥

पांच बाण दारुक को मारे ❀ घायल भयउ न ज्योति सम्हारे॥
रण महँ गर्जा सिंह समाना ❀ मारा सात्यकि के तब बाना ॥
कृतवर्महिं मारे नौ बाना ❀ सहस बाण प्रद्युम्न समाना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बाण सहस्र काम सुन ताना ❀ अनिरुध क्रोधे काल समाना ॥
रह रह अब सह बाण हमारा ❀ यह काहि बहुत बाण संचारा ॥
करिकै क्रोध बाण तब छाटे ❀ मोरध्वज ता बीचहिं काटे ॥
पांचबाण ताम्रध्वज मारा ❀ मारे चारौ तुरँग तोषारा ॥
व्याकुल भये क्रोध रण ठयऊ ❀ पारथ दल सब घायल भयऊ ॥
प्रद्युमन के रथ को तब तोरा ❀ तब अनिरुद्ध क्रोध शर जोरा॥

दो०-तब दोनों वसुधा लरे, महामारु तौ ठान ।
मल्लयुद्ध तब ठानेऊ, अनिरुध गिर मैदान ॥

औरे रथ ताम्रध्वज चढ़ेऊ ❀ महामार युद्धहि मन बढ़ेऊ ॥
हरि ते भाषै अनिरुध गिरेऊ ❀ तब देखत वृषकेतू फिरेऊ ॥
मारि हाँक तब बाण प्रहारा ❀ ताम्रध्वज को रथ संचारा ॥
जौने रथ ताम्रध्वज आवै ❀ कर्णपुत्र सो मारि गिरावै ॥
तबहीं क्रोध ताम्रध्वज भयऊ ❀ काल समान बाण तब लयऊ॥
तेहि शर मूर्च्छित कर्णकुमारा ❀ पांचबाण तब तेहि संचारा ॥
ताते मूर्च्छित भो अनुशला ❀ देखत बभ्रुवाहन तब चला ॥
पांचबाण रहु २ करि मारा ❀ ताम्रध्वज रथ काटि पँवारा ॥
यौवनाश्व पारथ सुत मारे ❀ ताम्रध्वज सो काटि पँवारे ॥
क्रोधित बाण छाँड़ि तब दीन्हा ❀ बभ्रुवाहन मूर्च्छित कीन्हा ॥

दो०-रहो कृष्ण रण माहिं अब, सहो हमारो बान ।
क्षत्री भागेऊ देखतै, पारथ दल भहरान ॥

सबै वीर देखत हैं ताहाँ ❀ ताम्रकेतु डारत रण माहाँ ॥
देखत पारथ वीर रिसाना ❀ ताम्रध्वज कहँ मारेउ बाना ॥
नवो बाण पग अश्वन मारे ❀ औरे बाण ते रथ सँहारे ॥
और रथहिं भये असवारा ❀ नवो बाण पारथ कहँ मारा ॥
औरे बाण ते रथ सँहारा ❀ औरे रथहिं भयो असवारा ॥
तबहीं क्रोध करै बहु लीन्हा ❀ बाण वृष्टि पारथपर कीन्हा॥
ते असदेखि सुचित तहँ भयऊ ❀ शंखध्वनि पारथ तहँ कियऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ताम्रध्वज को रथ सँहारा ❀ और रथ चढ़ि श्यामकुमारा ॥
क्रोधवन्त बाणन तब मारा ❀ पारथ के सारथि सँहारा ॥
और बाण पारथ के लागे ❀ मूर्च्छित भे पुनि पारथ जागे ॥
महा मारु पारथ पर दीन्हें ❀ एक सहस्र मारि रथ लीन्हें ॥
दो०-ताम्रध्वज को सबै दल, पारथ शर भहरान ।
तबहूँ ताम्रध्वज बली, छाँड़ा गहि मैदान ॥
पारथ मारा बाण रिसाई ❀ ताम्रध्वज रथ मारि गिराई ॥
औरहि रथ पर भो असवारा ❀ पारथ ऊपर बाण प्रहारा ॥
पारथ के शर प्रबल समाना ❀ क्षोहिणि दुल दइ गिरे प्रमाना ॥
अयुत बाण ताम्रध्वज मारा ❀ पारथ क्रोधित बाण सँचारा ॥
धनुषै गुन काटे तब पारथ ❀ दोय सहस मारे रथ सारथ ॥
सातदिवस लग दिन अरु राती ❀ ऐसी मारु भई बहु भाँती ॥
ताम्रध्वज शर हते रिसाई ❀ पारथ को रथ चला उड़ाई ॥
ऊपर ते रथ भुवि करि श्यामा ❀ हस्तकमल पर लान्हे श्यामा ॥
भुवि पर जब राखे जदुराई ❀ तब ताम्रध्वज कह बिलखाई ॥
भूमें मैं उड़ाय रथ डारा ❀ राखे कर धरि नन्दकुमारा ॥
दो-०श्रीपति सदा घाव करि, औ करि चरण प्रहार ।
मूर्च्छा रहि पल एकलौं, जागे राजकुमार ॥
तीन बाण हरिको तब मारा ❀ कह हरि पार्थ करौ सँहारा ॥
हम तुम आजहि इन को मारै ❀ तेहि अंतर श्रीकृष्ण बिचारै ॥
मारे रिस करि पारथ बाना ❀ बहुरि क्रोध मे पार्थ रिसाना ॥
क्रोधवन्त ह्वै बाण चलाये ❀ ताम्रध्वज गुन काटि गिराये ॥
तब ताम्रध्वज कहै रिसाई ❀ अब पारथ राखो जदुराई ॥
जौनहि रथ पर सारथ आये ❀ सारथि मे तब रथहि बचाये ॥
ताम्रध्वज हरि को हनुमाना ❀ पारथ दल तब सब महराना ॥
हय गज रथ पैदल है जेते ❀ बहि रण में बिचले सब तेते ॥
दो०-ताम्रध्वज को सबै दल, क्रोधित है भगवान ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गहे चक्र तब चक्रधर, महा मारु तब ठान ॥
रथ ते वेगि उतरि कै धाये ❀ तीनि लोक तब शंका पाये ॥
डगमगानि भुवि सब सँसारा ❀ एक क्षोहणी दल सँहारा ॥
तब सुचित्र बहु घातैं करै ❀ आय धाय श्रीकृष्णहि धरै ॥
दहिने हाथ गहे तब धाये ❀ वामकर पादहि शिर चढ़ाये ॥
पारथ जारना मिले प्रमाना ❀ ताम्रध्वजहि क्रोध तब माना ॥
वाम चरण पारथ कहँ मारा ❀ हरि पर गिरे सुचित्र कुमारा ॥
हरि अर्जुन तब मुर्छित भयऊ ❀ लेकर अश्व चलन मन दयऊ ॥
हर्ष गात अपने पुर चलेउ ❀ दूनो अश्व संग है भलेउ ॥
मोरध्वज तब देखन पाये ❀ दूजो अश्व कहां ते लाये ॥
दो०—ताम्रध्वज औ मंत्रि ने, भाषेउ सब वृत्तान्त ।
धर्मराज कर अश्व है, रक्षक कमलाकान्त ॥
रक्षक पारथ श्री भगवाना ❀ सब दल मोहित किय मैदाना ॥
सुनहु ताम्रध्वज राजा कहई ❀ धिक धिक सुत तू मेरो अहई ॥
हरि को तजे अश्व लै आये ❀ धिक जीवन तोहिं गुरु पढ़ाये ॥
बहु प्रकार ते डाटन लागे ❀ इत पारथ हरि मूर्च्छा जागे ॥
बभ्रुवाहनादि सरदारा ❀ चेतन भये सबै विस्तारा ॥
पारथ कहै कहाँ यदुराई ❀ अश्वहिं लये कहाँ सो जाई ॥
हमहूँ को चलियो लै तहाँ ❀ सुनि बात तब श्रीपति कहा ॥
रत्नपुरी मोरध्वज राऊ ❀ वह लै अश्व गयो परभाऊ ॥
परम बली है भक्त हमारा ❀ माया कै कीजै सँचारा ॥
वृद्ध द्विज हम तुम हो बालक ❀ यहि विधि चलौ कहै गोपालक ॥
दो०-नृपको सत्त देखाइहौं, तुम को पारथ वीर ।
बाल वृद्ध माया करी, चलो नृपति के तीर ॥
सेन राखि कै दोऊ जन आये ❀ रत्नपुरी निशि माहिं सिधाये ॥
नर नारी कौतुक लख नाना ❀ प्रात होत नृप पहँलो आना ॥
यज्ञशाल मो राजा अहई ❀ दूनो अश्वहि देखत रहई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जाय विप्र जब आशिष दयेऊ ❀ दूनो अश्वहि देखत रहेऊ ॥
बिन प्रणाम तुम आशिष दयऊ ❀ मोको महापाप द्विज भयऊ ॥
द्विज कह कछू पाप नहिं राजा ❀ याचक द्विज की है यह काजा ॥
करि प्रणाम तब राजा कहई ❀ कहौ विप्र मन का मन अहई ॥
विप्रन कहा मध्यपुर ग्रामहि ❀ कृष्णशर्म्मा है मेरो नामहि ॥
अपने सुत को ब्याह बनाये ❀ पुत्र बधू लै तुम पहँ आये ॥
मार्ग माहिं घन कानन अहई ❀ तहाँ सिंह मेरो सुत गहई ॥
दो० मैं विलाप बहु बिधि किये, सिंह नेकु नहिं आन ।
मोहिं न पकरो शिशु गहेउ, ताहिं चहत अब खान ॥
सिंह कहै आयू जेहि अहई ❀ ताको हम नाहीं द्विज गहई ॥
जो चाहत हौ पुत्र बचावा ❀ तौ दीजै जो मम मन भावा ॥
एक वस्तु माँगा हम पासा ❀ जाते हम आये करि आसा ॥
मोरध्वज राजा तब कहई ❀ मेरे देश सिंह नहिं अहई ॥
तब राजा पूँछन यह लागे ❀ तुमसे सिंह कहौ का माँगै ॥
जो माँगै सो हमैं सुनाओ ❀ जामें तुम अपने सुत पाओ ॥
मिथ्या होय न बात हमारी ❀ तब द्विज यह वाणी सँचारी ॥
मोरध्वज को अर्द्ध शरीरा ❀ मोहिं दै सुत कहँलै द्विजवीरा ॥
तब हम कहा सिंह सुनु वीरा ❀ मोहित नृप कत देत शरीरा ॥
तबहिं सिंह कह सत जो ह्वै है ❀ देहै देह कछू ना कहिहै ॥
दो० ताते नृप मैं आयऊँ, अपने सुत की आस ।
धर्म्मराज साहस सुनो, सो तो तुमरे पास ॥
मोरध्वज हर्षित ह्वै कहेऊ ❀ लेहु शरीर विप्र जो चहेऊ ॥
कछु नहिं दुःख करौ सँचारा ❀ यह ब्राह्मण है इष्ट हमारा ॥
सुनतहिं जग मों द्विज है जेते ❀ हा हा शब्द पुकारत तेते ॥
काल स्वरूप विप्र इक आवा ❀ नगर निवासिन बहु दुख पावा ॥
खम्भ दोय तहँ तबहीं गाड़ो ❀ राजा तहाँ जाय मो ठाड़ो ॥
करि स्नान तुलसि दल लयऊ ❀ कृष्ण ध्यान मन अतिमन दयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तबहिं म्लेक्ष राजा ते कहेऊ ❀ करवत शिर देखौ जो गयऊ ॥
पशु पक्षी रोवत पुर भारी ❀ तब रानी गई कहै बिचारी ॥
कुमुदावती तु रानी कहई ❀ अर्द्ध अङ्ग स्त्री द्विज अहई ॥
दो० हर्ष गात द्विजभाषेउ, सिंह कहा समुझाय ।
वाम अङ्ग जानि लायऊ, दाहिना लाओ जाय ॥

वाम अङ्ग पतिवर्त्ता आहै ❀ ताते सिंह तुम्हैं नहिं चाहै ॥
याहि अन्तर ताम्रध्वज आये ❀ करि प्रणामतौ द्विजहिं सुताये ॥
पितुको अङ्ग पुत्र सो अहई ❀ मेरो तनु लीजै यह कहई ॥
सुन्दर तनु जो पुष्ट सोहाई ❀ तबहिं विप्र यह बचन सुनाई ॥
सिंहहि कहा और नहिं काजा ❀ लाओ तनु मोरध्वज राजा ॥
स्त्री पुरुष चीरि हैं देहा ❀ विस्मय नहिं आनन्द सनेहा ॥
मंगल करिकै देह चिराओ ❀ दहिने अंग विप्रलै आओ ॥
स्त्री पुरुष हर्ष तब करी ❀ करवत लै राजहिं शिरधरी ॥
इन्द्र आदि देवन गण जेते ❀ नृप सत देखन आये तेते ॥
नगर लोग सब देखहि नाना ❀ स्त्री पुरुष तु हर्ष निदाना ॥
दो० उलटे आरा नयन कर, अर्द्ध शीश गयो चीर ॥
बाम नैन मोरध्वजहि, तुर्त चलो तब नीर ॥

देखतही द्विज कह नृप पाहीं ❀ कादर दान लेत द्विज नाहीं ॥
देत शरीर तु रोदन करैं ❀ यहि दान हम कैसे धरैं ॥
वरु पुत्रहि सिंह लै खाऊ ❀ यह कहि चले तुर्त द्विजराऊ ॥
संगहि पारथ करिकै चलेऊ ❀ लोग सबै तहँ देखत भयेऊ ॥
तब रानी करवती उतारा ❀ गहे दाबि शिर हाथ भुवारा ॥
कहहीं बात नाथ सुनि लीजै ❀ विप्र काहि संतुष्ट करीजै ॥
तेज शरीर विमुख द्विज जाई ❀ अहो कन्त द्विज लेहु मनाई ॥
तब राजा कर शिर धरि लहई ❀ पाछे बात विप्र सों कहई ॥
अहो विप्र विनती सुनि लीजै ❀ पाछे आप गमन जो कीजै ॥
करवत तें नहिं दुःख हमारे ❀ बहुत दुःख जो विमुख सिधारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-वाम अङ्ग रोदन करै, हम निष्फल संसार ।
दक्षिण अङ्गहि हर्ष बहु, मैं द्विज काज सँवार ॥
सुनतहि बात हर्ष द्विज आये ❀ हर्षित राजहिं रूप देखाये ॥
चतुर्भुजा ह्वै दर्शन दीन्हा ❀ माँग माँग बर बोलै लीन्हा ॥
दै शरीर संतोषा मोहीं ❀ जगमें भक्त देखियत तोहीं ॥
धन्य पुत्र ताम्रध्वज तेरो ❀ सब दल जीति लियो जिन मेरो॥
तब राजा स्तुति बहु करई ❀ पाछे विप्र चरण में परई ॥
माथे हाथ मृतक के दीन्हा ❀ सर्व कलेश नाश तब कीन्हा ॥
राजा कह विश्वम्भर देवा ❀ माँगहु बर सुनौ हरि भेवा ॥
जैसि परीक्षा हमरी लयऊ ❀ स्त्री सुत चिन्ता नहिं भयऊ ॥
कलिमहँ होय जु भक्त तुम्हारा ❀ ऐस न याचहु तेहि जगतारा ॥
यह कहि धन अरु सम्पति दयऊ ❀ दूनहु अश्व आप सँग लयऊ ॥
दो०-यह भाषे जग हेतु कहँ, पाय दर्श भगवान ।
करै यज्ञ हरि दर्श लहि, होय सदा कल्यान ॥
अश्वहि दल नृप सँगलै, चले मोरध्वज राव ।
भक्त परीक्षा लेन को, तब हरि कीन्ह उपाव ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंह चौहानभाषाकृते
मोरध्वजराजादर्शनपावनो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

दूनो हय लै पारथ चले ❀ वैशम्पायन बोलत भले ॥
दल समग्र चालि आयो तहाँ ❀ सरस्वाति पुरी नगर है जहाँ ॥
बीरभानु तहँ नाम नरेशा ❀ दोनों अश्व करैं परवेशा ॥
पुर के लोग धर्म्म अनुरूपा ❀ आये अश्व सुनो तब भूपा ॥
पंचवीर को आज्ञा दयऊ ❀ तबहीं अश्व नृपति पहँ गयऊ ॥
सुरभ सुलभ अरु नील प्रमाना ❀ कुबलै बल पाँचौ बलवाना ॥
पाँच वीर रण मो गह गहई ❀ तब माणिपुर पति रुह रुह कहई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शंख नाद तब वीरन कीन्हा ❀ धनुषबाण हाथै सब लीन्हा ॥
वर्षन लगी बाण की धारा ❀ दोउ दल जूझे वीर अपारा ॥
रथ गज अस्वरु पैदल लाखन ❀ जूझन लगे सकै को भाषन ॥
दो०-यहि अन्तर यम आयकै, सेना बधे हजार ।
यह नृप यह जामाता, भाषे नन्दकुमार ॥
ताते सेना यह बध कीन्हा ❀ तब पारथ पूछै कह लीन्हा ॥
यम को कत नृप कन्या दीन्हा ❀ सुनतै कृष्ण कहै तब लीन्हा ॥
राजाके मालिन भौ बारी ❀ योग स्वयम्बर भूप बिचारि ॥
राजा पूछहि कन्या कहौ ❀ माँगहु बर जो मनमे चहौ ॥
देवनाग अरु मनुज सुरारी ❀ जो बर चाहो कहौ कुँवारि ॥
कन्या कहै तात ते बाता ❀ यमराजा को चाहत ताता ॥
कालहि पाय त्रिया जो मारे ❀ अन्त जन्म तो गृह पगु धारे ॥
तबै कन्त दूसर तो होई ❀ महापाप ताते है सोई ॥
ताते प्रथमहि यमको बरो ❀ एक पुरुष दूसर परिहरो ॥
नृप कन्या नृप पर मन साधे ❀ निशि वासर यमको आराधे ॥
दो०-नारद यह तौ जानिकै, यमपुर गो हरषाय ।
कन्याका वृत्तान्त सब, कहा धर्मसन जाय ॥
पाँच पुण्य जानौ सम राजा ❀ मालिन सुधिबि सरे केहि काजा ॥
धर्म्मवंत कन्या सो अहई ❀ सारस्वतपुर नृपको रहई ॥
एक व्रत सो मन महँ धरई ❀ यम राजा को चाहत बरई ॥
जाय करो अब ताको ब्याहा ❀ तब यम भाष्यो नारद पाहा ॥
आपु जाहु हम पाछे ऐहैं ❀ वैशाख मासमों हमहूं जैहैं ॥
शुक्ल पक्षमों ऐहौं सही ❀ नारद सुना चले तब जही ॥
सारस्वत नगरै तब गयऊ ❀ सबै बात राजा सो कहेऊ ॥
कहिकै नारद सुरपुर गयऊ ❀ शुक्लपक्ष वैशाख तु भयऊ ॥
धर्म्मराज सब वीर बोलाये ❀ सबै लोग तब तुरतहि आये ॥
दुइ आहैं सबके सरदारा ❀ शुक्र प्रमेह विकार अपारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-सबन रोग सों यम कहै, चलो सँग बरिआत।
ब्याह हमारा होत है, सारस्वत पुर जात॥
तब सब रोग कहै यह बाता ❀ पुण्य धर्म्म है ह्वाँ बहु ताता॥
वहाँ हमार नहीं सँचारा ❀ तुरत तेज बल जाब हमारा॥
यमहि कहा पापी नर जेते ❀ रूप कुरूप देखिहैं तेते॥
धर्म्मवान जेते नर अहई ❀ रूप अनूप देखिहैं कहई॥
जाको पीड़ा कर बहु भाई ❀ ताको भेद कहौ समुझाई॥
ब्रह्म बधे कर पातक जाही ❀ ब्रह्म अंशते क्षय भय ताही॥
गोदावरि गौतम इक माशा ❀ परशे क्षयी रोगको नाशा॥
देव द्रव्य हर वरी सतावे ❀ तासु शरीर विषूचिक आवे॥
ताको नाम खंड है भाई ❀ अजया कंचन सुख नहिं जाई॥
दो०-कंचन भूषण श्रद्धया, दान दिये ते जाय।
गर्भपात के पाप ते, गहत जलंधर आय॥
एकोत्तर सौ तुला जु करई ❀ लक्ष छत्र दीन्हें सो हरई॥
रस अरु द्रव्य जु चोरी करई ❀ ताको व्याधि अरूचित धरई॥
कंचन दान करै ते जाई ❀ गौवें देहि कहै समुझाई॥
वेश्या संग हरै गुरु नारी ❀ सन्निपात पीड़ा के धारी॥
पंक उधारन को धन हरई ❀ यमराजा को चाहत बरई॥
श्रुति दै भूषण भेंटत दाना ❀ दोनहु व्याधि तुरन्त पराना॥
भूमिदान दीन्हें सो जाई ❀ पुनि द्विज भोजन जाय छोड़ाई॥
अरुकच तौ याही गै धरई ❀ लाखन द्विज भोजन परिहरई॥
आशा भङ्ग पंथ बटपारी ❀ शूल व्याधि तेहि होती भारी॥
दो०-पक्षी कोटिन नाश कर, बेंचत है जो कोय।
हेमयज्ञ वैष्णव द्विजहिं, दान दिये क्षय होय॥
वरदानि कादर हुचकी होय ❀ लक्ष होम महँ नाशै सोय॥
साजु योग जो दारे होई ❀ चुगुल रोग पावत है सोई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तेल कुण्ड दाना इक मासा ❀ तब सो व्याधि होति है नासा॥
निन्दा सन्त रोग सुख पावै ❀ लक्ष दान दै ताहि भगावै ॥
पर नारी देखत जो धावहिं ❀ नैन रोग ते बहु दुख पावहिं ॥
गुरु हतने को ध्यान जु धरही ❀ नैन रोग तुर्तहि परिहरही ॥
अंश छोड़ावै घेघा होई ❀ पंच रतन दान दे सोई ॥
देखत दान सूम मुरझाही ❀ मृगी रोग होता है ताही ॥
कृष्ण धेनु कंचन कर दाना ❀ मृगी रोग जाता क्षय माना ॥
दो०-यज्ञ स्थित जो ढाह तनु, डारत बन्दी माहिं ।
शिव पूजै अतिहेतु सों, तब सो व्याधि नशाहि॥
यही प्रकार और बहुतेरे ❀ नाना व्याधि पुरुष तनु घेरे ॥
याहि प्रकार ते सबाहि बुझाये ❀ तब सब सारस्वत पुर आये ॥
राजा हर्ष गात ह्वै कहई ❀ कन्यादान देन तो चहई ॥
मेरे रिपु सों करो लराई ❀ यह वाचा तौ कीन्ह्यों राई ॥
तब कन्या दीन्हा यह दाना ❀ पारथ पहँ कहै भगवाना ॥
ते वाचा ते रण हरि लाये ❀ ताते युद्ध हेतुको धाये ॥
आप सबै रण को मन दीजै ❀ युद्ध जीति अश्वहि को लीजै ॥
पारथ के रथ पर हरि आये ❀ युद्ध हेतु सबही मन लाये ॥
वीरवर्म्म राजा तब आये ❀ पारथ सों तब बात सुनाये ॥
करो युद्ध पारथ मन लाई ❀ महा मारु ह्वैहै प्रभुताई ॥
दो०-जो सेना सरदार सब, मैं जानत बल तासु ।
सुनी बात क्रोधित बदन, पारथ बचन प्रकासु ॥
छाँड़ो अश्व कहैं हम राजा ❀ ना तौ महामार अब साजा ॥
वर्म्मवीर कहन अस लागे ❀ अश्व कहाँ अब पैहौ माँगे ॥
दुऔ अश्व लै मख मैं करहूँ ❀ तुम्हैं समेत कृष्ण कहँ धरहूँ ॥
मोरे रण लायक नहिं पारथ ❀ पारथ सुनो क्रोध पुरुषारथ ॥
मारे पारथ बाण अपारा ❀ वर्म्मावीर काटि शर डारा ॥
तब सौ बाण पार्थ कहँ मारा ❀ साठि बाण तब नन्दकुमारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पांच बाण मारे ध्वजराई ❀ लग्यो बाण तब मूर्च्छा आई ॥
जब राजा के सारथि आये ❀ तब पारथ बहु बाण चलाये ॥
पारथ शर तब बर्षत नाना ❀ वीरवर्म्म मारे बहु बाना ॥
पारथ कृष्ण दृष्टि नहिं आये ❀ बाण बुन्द ते वर्षा लाये ॥
दो० पारथ मारा बाण तब, कोटि बाण संजाय ।
सात बाण तब राजहीं, मारे पार्थ रिसाय ॥
नृप करि क्रोध साठि शर मारा ❀ सौ शर लागे नन्दकुमारा ॥
चारि बाण अश्वहि पर दयऊ ❀ तबै अश्व आतुर ह्वै गयऊ ॥
वीरवर्म्म तब कह यह बाता ❀ मोरे जयकर पाव सख्याता ॥
भीषम द्रोण कर्ण सँहारा ❀ ये शर काम न आव तुम्हारा ॥
सुनिकै हरि भाष्यो हनुमानहिं ❀ नृप रथ तुम लै जाहु अकाशहि ॥
घोर सिन्धु रथ डारौ जाई ❀ सुना हनू तब चले रिसाई ॥
लै रथ अन्तरिक्ष कपि गयऊ ❀ वीरवर्म्म बहु बल तब कियऊ ॥
कूदि पार्थ रथ ध्वजको गहेऊ ❀ लै रथ अन्तरिक्ष पुनि कहेऊ ॥
जहाँ स्वर्ग माहीं हनुमंता ❀ पारथ रथ लै गयौ तुरंता ॥
दो० हनूमान सन भाषऊ, लीजै रथहि हमार ।
हम लै आये पार्थ कहँ, सहितै नन्दकुमार ॥
कहिये रथ लै डारौं कहाँ ❀ क्षीरसिन्धु लक्ष्मी है जहाँ ॥
हनुमत कह्यो धन्य तुम राजा ❀ सुयश तुम्हार जगत मों बाजा ॥
साधु भक्त औ बली कहाये ❀ वीरवर्म्म तब बाण चलाये ॥
मैं तौ नाम सुना है तोरा ❀ लै रथ जान सकै नहिं मोरा ॥
यह कह एक मुष्टिका दई ❀ हनूमान के पीरा भई ॥
हरि राजा पारथ हनुमाना ❀ तब सब वसुधा आय प्रमाना ॥
देखत श्रीपति हाथ प्रहारे ❀ वीर वर्म्म मूर्च्छित विकरारे ॥
जागत भक्ति हृदय महँ भयऊ ❀ तुर्त कृष्ण के आगे गयऊ ॥
प्रभु कृपालु भक्तन भयहारी ❀ आयो शरणै कृष्ण तिहारी ॥
तुम दर्शन करि पातक भागे ❀ प्रेम भक्ति हृदय महँ जागे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो० तब राजा स्तुति करी, धनुष बाण दिय डार ।
करिं प्रणाम घोड़ा लिये, आगे किये भुआर ॥

पारथ सन भाष्यो यदुराई ❀ इनते जय काहू नहिं पाई ॥
वीरवर्म्म को जीतन पायो ❀ मोरि भक्ति है प्रीति बढ़ायो ॥
पारथ कह जो तुम्हैं मनायो ❀ तासों जग में जय को पायो ॥
मिले पार्थ श्रीकृष्णहि राजा ❀ भाँति २ के बाजन बाजा ॥
सब दल लैके नगरहि गयऊ ❀ दिन इक छै बीतत जब भयऊ ॥
देश भूमि तब आगे कीन्हा ❀ अष्ट भार मुक्ताहल दीन्हा ॥
शत सहस्र हाथी तो दयऊ ❀ औरहु अश्व अनेकन लयऊ ॥
छूट अश्व तो सँग नरेशा ❀ भरमत फिरा अनेकन देशा ॥
नदी एक महँ पैठ तुरंगा ❀ तटही तट पारथ दल संगा ॥
पारथ भये अश्व तौ जाई ❀ तबै सर्व दल पार सिधाई ॥

दो० परमानन्दित सर्व दल, पारथ हय के संग ।
वैशम्पायन यह कहत, पारथ परम अनंद ॥
चले अश्व के संग सब, नाना बीर नरेश ।
आय देश सब जीति कै, चन्द्रहास के देश ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषा कृते
वीरवर्म्माजीतनोनाम एकादशोऽध्यायः ॥ ९ ॥

वैशम्पायन राजहि कहा ❀ चलो अश्व तब आगे रहा ॥
चन्द्रहास राजा जहँ रहई ❀ तहाँ अश्व चालि मोसुनि कहई ॥
कित गो अश्व शोच सब पाये ❀ यहि अन्तर नारद मुनि आये ॥
पारथ पाँह कह्यो समुझाई ❀ कुंतलपुरहि अश्व तब जाई ॥
चन्द्रहास जो भक्त कहाये ❀ बड़े कष्ट राजा तब पाये ॥
दुष्टबुद्धि बरी तेहि अहे ❀ रक्षक सदा श्रीपति रहे ॥
बहुत कष्ट महँ कृष्ण बचाये ❀ मही प्रसाद राजपद पाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब पारथ कह बिनती लाई ❀ चन्द्रहास गुण कह्यो गुसाई ॥
नारद कह भल समय सुहाये ❀ कथा सुनै का हेतु सुनाये ॥
अश्व कहाँ खोये मन लाई ❀ तब पारथ बोले बिहँसाई ॥
दो०-कुरु पाण्डव के युद्ध महँ, एक पलक के माहि ।
गीता कृष्ण बखानेऊ, सुना ज्ञान हम ताहि ॥
सुनत कथा नारद तब कहहीं ❀ कदिदल देश धर्म नृप रहहीं ॥
ताके गेह जन्म इन लयऊ ❀ जन्मत तात मातु मरि गयऊ ॥
लैकै धाइ कुँडलपुर आई ❀ वर्ष तीनि पर सोउ मरि जाई ॥
तीनि वर्ष का बालक अहई ❀ षट अँगुलि बायां पद रहई ॥
ताको लोग दया करि राखैं ❀ लक्षण राज सबै तो भाखैं ॥
दुष्टबुद्धि मंत्री गृह माही ❀ एक दिना सो बालक जाही ॥
जा दिन द्विज उन भोजन दयऊ ❀ सो दिन बालक तहवाँ गयऊ ॥
रूप देखि मंत्री सुख पायो ❀ करि बहु प्रीति अग्र बैठायो ॥
द्विज मुनि तो कहते यह बाता ❀ बालक नृप होवो सख्याता ॥
राजा ह्वैहै आशिष दयऊ ❀ दुष्टबुद्धि तब चिंतत भयऊ ॥
दो०-सब विप्रन को बिदा करि, मनमों करै बिचार ॥
मदन अमल दो पुत्र मम, पै यह होत भुआर ॥
यह बालक राजा मुनि कहई ❀ ताते मन बहु चिन्ता गहई ॥
सुनिकै वाक्य झूठ नहिं सहेऊ ❀ बोलि चण्डालहिं मंत्री कहेऊ ॥
बालक हाति चिह्नहि लै आवो ❀ धन सम्पति मोते बहु पावो ॥
लै चण्डाल बाल बन गयऊ ❀ दाधि पावन शिशु मुखमोंलयऊ ॥
गोली खेलै मुख मो रहै ❀ तब चण्डाल हतन को चहै ॥
हरि माया मोह्यो चँडारा ❀ पूर्व पाप कहँ जनु अवतारा ॥
बाल बधे अघ का गति होई ❀ बालक कहँ मारौ जान कोई ॥
वाम पाद षट् अँगुलि देखी ❀ काटि लीन तौ देखि विशेखी ॥
दुष्टबुद्धि को दीन्ह्यों जाई ❀ धन सम्पति चँडालहिं पाई ॥
भई झूठ विप्रन मुख बानी ❀ बालक हते होति रजधानी ॥

व्या० का० प्रेस,
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-दुष्टबुद्धि आनँदित, बालक बन महँ रोय।
पशु पक्षी बन जन्तु सब, करि मनुहार सुजोय॥
सो बन गयो शिकारहिं राजा ❀ नाम कुलिंद भक्त रघुराजा॥
ते बालक देखन को पाये ❀ हर्ष गात लै गोद चढ़ाये॥
दुष्टबुद्धि के सेवक सोई ❀ पाछे शिशु हर्ष मन होई॥
सत्रावती तासु त्रिय आही ❀ बालक लै करदीन्ह्यों ताही॥
पुत्र सरिस प्रति पालन कीन्ह्यों ❀ गुरु को सौंपि पढ़ै कहँ दीन्ह्यों॥
जैसे हरि प्रह्लाद पुकारे ❀ कृष्ण ध्यान इन तैसे धारे॥
गुरु तब जाय कुलिंदहि कहई ❀ तुव सुत बाउर हरि हरि कहई॥
औरु कछु बात नहिं अहई ❀ तब कुलिंद गुरसों अस कहई॥
सात वर्ष महँ विद्या दैहौं ❀ यज्ञरु जाप पवित्र सिखैहौं॥
दो०-जादिन ते सुख पायऊ, राजा शिशु धन वृद्धि।
कृष्ण सदाहीं जपत शिशु, सर्व तासुकर सिद्धि॥
सात वर्ष मो यज्ञ कराये ❀ पुत्रहिं तब पढ़न बैठाये॥
वेद पुराण शास्त्र तौ पाये ❀ क्षत्री वृत सब अस्त्र सिखाये॥
पारथ मनहिं हर्ष उपराजू ❀ ऐसे भक्तहिं देखब आजू॥
पन्द्रह वर्ष के भये कुमारा ❀ दुर्ग विजय कीन्हा सँचारा॥
बहुतक देश जीति धन लाये ❀ अपने देश अनेक बसाये॥
द्विज वैष्णव तौ अगणित राखे ❀ ग्राम भूमि दै प्रीतिहि माखे॥
ग्राम ग्राम महँ देवल दीन्हा ❀ कूप तड़ाग बाग बहु कीन्हा॥
घर घर सबै जपैं भगवाना ❀ श्रवण करैं सब वेद पुराना॥
सबहीं वृत एकादशि अहहीं ❀ परमानन्द प्रजा सब रहहीं॥
दुर्ग विजय करि गृह पग धारे ❀ आरति हर्षित मातु उतारे॥
दो०-रूप देखि तब मोहित, गृह में गयो कुमार।
कह कुलिंद कुँतलपुरी, आहै भूप हमार॥
तिन्ह कहँ वस्तु पठये कँचन ❀ बारह सेर सीप गृह रंचन॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सैर षष्ट रानी सचिवन ते ❀ सो सुत जाहु सेवकहि गनते ॥
पत्री लिखि दीनी ता हाथा ❀ औ कंचन दीन्हा है हाथा ॥
गयो पंथ में पहुँचे ताहा ❀ जा दिन व्रत एकादशि आहा ॥
करि स्नान ध्यान मन दयऊ ❀ तब मंत्री के गृह को गयऊ ॥
भीगे वस्त्र देखि सँचारा ❀ मंत्री कुशल पूँछि विस्तारा ॥
कहै कुशल तौ सबै सँदेशा ❀ और वस्तु तब दीन्ह प्रवेशा ॥
पत्री पढ़ी सुनी यह बाता ❀ दुर्ग विजय देवस सख्याता ॥
तब भोजन कहँ मंत्री कहई ❀ सर्व प्रकार भवन मम अहई ॥
चन्द्रहास भाष्यो द्विज पाहीं ❀ एकादशी अन्न ना खाहीं ॥
दो०-प्रातकाल है द्वादशी, पारण कीन्हों जानि ।
बिदा होन जब लागेऊ, मंत्री कहा बखानि ॥
चन्दनपुर हम देखन जाई ❀ बिदा माँगि नृप ते चलि आई ॥
राजकार्य्य मदनहिं जो दीन्हा ❀ चन्दनपुर मंत्री शुभ कीन्हा ॥
जाय दीख चन्दनपुर थाना ❀ वही ग्राम क्रीधौं है आना ॥
देखत मन महँ चिन्ता भयऊ ❀ तब कुलिंद के गृह को गयऊ ॥
बहु आनन्द कुलिंदहि करही ❀ तब मंत्री पूछन मन धरही ॥
जब तुम्हरे गृह बालक भयऊ ❀ मोहिं खबरि काहू नहिं दयऊ ॥
कहै कुलिंद नहीं त्रिय जाये ❀ कानन बिचरत बालक पाये ॥
छठई अँगुरी काटी कोई ❀ बालक व्याकुल बनमहँ रोई ॥
हम लै आये पाले आनी ❀ मंत्री सुनत बुद्धि हैरानी ॥
जाना निश्चय बालक जो है ❀ चाण्डाल नहिं मारा सो है ॥
दो०-अस्त्र शैल सम लागई, मन आनन्द न पाव ।
केहि बिधि बालक मारिय, काधौं मंत्रहि आव ॥
करिहौं झूठ मुनिनकी बानी ❀ चन्द्रहास ते कहा बखानी ॥
कागज मसी कलम लै आओ ❀ लै पुत्री तुम मम गृह जाओ ॥
चन्द्रहास आनीकै दयऊ ❀ मन में मंत्री शोचत भयऊ ॥
प्रगटहि बधे द्वंद बहु होई ❀ गरलहि देकै मारै सोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पत्री लिखे मदन को ताहा ❀ सोसाति मदनपुत्र तौ आहा ॥
यही हेतु लिखि पत्री दयऊ ❀ चन्द्रहास गति दर्शन भयऊ ॥
शील पराक्रम पण्डित सोई ❀ हम संपाति को ठाकुर होई ॥
कछू बिचार हृदय नहिं कीजै ❀ तुर्तै विष या कहँ सुत दीजै ॥
सबही काम सिद्ध तब होई ❀ कागज माहि छाप करु सोई ॥
चन्द्रहास को पाती दीन्हा ❀ मम गृहजाहु बोल असलीन्हा॥

दो०-पत्री कर में लै तबै, कहै पितहि बिरतन्त ।
पाछे माता पहँ गये, बिदा होन सुत संत ॥

माता तबहीं आरति कीन्हा ❀ रक्षक देव कहै तब लीन्हा ॥
पद्मनाभ उदर है मांधो ❀ दोषहरण नरसिंहहि साधो ॥
कटि मधुसूदन मखपति जानू ❀ मुख नारायण रक्ष प्रमानू ॥
वक्षस्थल माहीं ऋषिकेशो ❀ सब तनु रक्षक पवन नरेशो ॥
स्त्री लेकर गृह को ऐहैं ❀ मनोकाम तुरतै सिधि पेहैं ॥
करि प्रणाम माता को चले ❀ ह्वै सवार हय मोदित भले ॥
पत्री पाग मोहिं तब कीन्हें ❀ उत्तमहार शीश सों लीन्हें ॥
चन्द्रहास तब उपमा पाये ❀ मानहु दूलह ब्याहन आये ॥

दो०—कुंतलपुर पहुँचे तबै, बाहर ग्राम सुरेष ।
मध्य दिवस आये तबै, जहँवाँ बाग विशेष ॥

शीतल छाँह जु देखन पाये ❀ चन्द्रहास विश्राम कराये ॥
गज अरु अश्व अम्ब तरु बाँधे ❀ तृण अरु जल दै हर्षित साधे ॥
पांचौ जने शयन मन दये ❀ यहि अन्तर यह कौतुक भये ॥
नृपकन्या तौ अनुपम बामा ❀ पंचक मालिन ताके नामा ॥
मंत्री की कन्या तौ अहै ❀ संगहि सखी अनेकन रहै ॥
वहि सर माहिं सबै तो गईं ❀ तूरि पुष्प न्हाती फिर भईं ॥
कौतुक न्हान सब तो कियऊ ❀ पाछे पग गृह को तब दयऊ ॥
पाछे विषया चली विशेखी ❀ तहँवाँ चन्द्रहास को देखी ॥
रूप देखि मोहित भई भारी ❀ वही ठांव बिलमी घरि चारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अश्वहि किये प्रणाम बनाई ❀ हे प्रिय़ जनु बिधि देहु जगाई॥
दो०—पुरुष निकट गई नारि तब, देखति रूप अवाय।
पिता हाथकी पत्रिका, तासु पाग महँ पाय॥
छाप खोलिकै पाती पढ़े ❀ महाशोच तौ मन महँ बढ़े॥
विष दै यहिको तुरतहिं मारैं ❀ तब का बन जब सबै बिगारैं॥
रूप देखि भई मोहित नारी ❀ मन मा तब इक युक्ति बिचारी॥
नख कनिष्ठ ते कज्जल लीन्हा ❀ जहँ विष तहँ विषया कै दीन्हा॥
पूरब विधि तौ छाप बनाई ❀ बांधे पत्र प्रथम जहँ पाई॥
चलि सखिन महँ मिलि सो जाई ❀ नाना कौतुक सखिन बनाई॥
पूर्ब देखि तब रही लोभाई ❀ लागी कौतुक करै सोहाई॥
तब कन्या अपने गृह गई ❀ सांझ पहर की बेरा भई॥
चन्द्रहास उठिकै मुँह धोवै ❀ खाये पान मगन मन होवै॥
गजारूढ़ है चलते भये ❀ मंत्री गृह अभ्यन्तर गये॥
दो०—द्वार द्वार प्रतिहार तौ, छठे द्वार महँ जात।
सप्तम द्वारे शूर हैं, अष्ट द्वार सख्यात॥
तिन तो जाय मदन सों कहा ❀ चन्द्रहास द्वारे महँ रहा॥
वेद पुराण सुनै तो आहा ❀ सुनत तुरंत चले उठि ताहा॥
बाहर आय भेंट हिय लाई ❀ भीतर को सो गयो लिवाई॥
कुशल प्रश्न पूछे मन दीन्हा ❀ सबै कुशल कहबे तव लीन्हा॥
गूढ़ पत्र तब तात पठाये ❀ यह पत्री पढ़ि बूझहु जाये॥
पढ़ने मदन सभा महँ लागे ❀ सो सति मदन लिखाहै आगे॥
यही हेतु पत्री लिखि दये ❀ चन्द्रहास गति सुन्दर लये॥
शील पराक्रम पण्डित सोई ❀ हम संपति कर ठाकुर होई॥
कछु बिचार हृदय नहिं कीजै ❀ तुरतहि विषया ब्याह सो दीजै॥
पूरण कार्य्य सिद्धि तब होई ❀ मदन पढ़ैं चिट्ठी महँ सोई॥
दो०—हर्षित मदन हृदय महँ, तुर्त ज्योतिषी लाय।
सर्व सुयोग सुमंगल, लग्न बिवाह धराय॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषया तहाँ मनाव भवानी ❀ चन्द्रहास वरदे कल्यानी ॥
तृतिया व्रत करिहौं मैं तोरी ❀ तुम जो आश पुजावहु मोरी ॥
अन्तःपुरै मदन तब गये ❀ सब वृत्तान्त मातु पहँ कहे ॥
गोधन समय ब्याह परमाना ❀ चन्द्रहास वर विषया वामा ॥
विषया ते सब सखिन सुनाई ❀ सुनते विषया लज्जा पाई ॥
लग्न भये तब बाजन बाजे ❀ मंगलचार सखी गण साजे ॥
चन्द्रहास को तब अन्हवाये ❀ विषया को शृङ्गार बनाये ॥
विविध प्रकार लग्न धरवाये ❀ ब्राह्मण प्रोहित तहाँ बुलाये ॥
गोत्र पूँछि कह तब मन लाई ❀ चन्द्रहास तब बात सुनाई ॥
माता पिता गोत्र हरि अहई ❀ लै कुलिंद पारावति कहई ॥
दो० शाखोच्चार उचारि कै, वेद जो विविध प्रमान ।
शास्त्रधर्म्म कुलधर्म्म मत, मदन देत है दान ॥
कन्यादान मदन तब कीन्हा ❀ गज तुरंग मणि मुक्ता दीन्हा ॥
रजत सुवर्ण बहुत तेहि दीन्हा ❀ सब भण्डार शून्य तौ कीन्हा ॥
होम करी गँठिबंधन भयऊ ❀ भाँवरि सात अग्नि पर दयऊ ॥
दक्षिणा ब्राह्मण सबहिन पाये ❀ यहि प्रकार ते ब्याह कराये ॥
सब द्विज और पुरोहित आये ❀ दान देय सब विदा कराये ॥
मँगलाचार युवति जन गाये ❀ बहुत गुणीं जन मँगता आये ॥
विष देवाय कै मारन चहई ❀ हरि सहाय तो नारद कहई ॥
केवल हरिहि सदा मन लाये ❀ विष देते विषया सो पाये ॥
परमभक्त प्रभु कपट न करई ❀ एक पिता भक्ती मन धरई ॥
ताहि सदा हरि रक्षक अहई ❀ काह करै विष नारद कहई ॥
दो० मंकलदायक वही प्रभु, नारद कहा बखानि ।
वैशम्पायन भाषेऊ, सुनत दुखःकी हानि ॥
दुष्टबुद्धि चन्दनपुर माहाँ ❀ तब कुलिंद को पाय ताहाँ ॥
प्रजा लोग को दण्डै ताहीं ❀ महाकष्ट चन्दनपुर माहा ॥
बहु प्रकार ते कष्ट दिखावे ❀ यहि बिधि सबसों धन मँगवावे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मठ देवालय देखत जरई ❀ महाकष्ट कालिंदहि करई ॥
लूटि मारि लीन्हों जब देशा ❀ तब कुलिंदको भई अँदेशा ॥
मंत्री महा हर्ष मन भयऊ ❀ जाना शत्रु नाशि अब गयऊ ॥
इक दिन बसे दुजे दिन गयऊ ❀ तीजे अंत भोर जब भयऊ ॥
हर्षित ह्वै चंडोल सवारा ❀ तुरत आपने पुर पगुधारा ॥
सौ तीनसौ कहार सो आये ❀ तेहि चंडोल सम पवन चलाये ॥
मारग माहिं सर्प्प यक रहई ❀ विषया खाकी बातैं कहई ॥
दो० मूँह कलश मो हम हते, देखा विषया ब्याह ।
बूझा नाहें सो मंत्रिने, चला हर्ष मनमाँह ॥
वाद्य शब्द सुनिभो मन भंगा ❀ विधना कीन्ह छत्रको भंगा ॥
गृहके निकट पियादे भयऊ ❀ जहँ मगन जन तहँवाँ गयऊ ॥
ब्याह अर्थ सबहीं तहँ कहेऊ ❀ मंत्री सुनत क्रोध उर दहेऊ ॥
भाषे चन्द्रहास है जाना ❀ मंगत जन भाषे परमाना ॥
आगे जात द्विजन को देखा ❀ आशीर्बाद देत द्विज पेखा ॥
चन्द्रहास वर भाग्यन पाये ❀ सुनतहि मंत्री मारन धाये ॥
गांठि गहे बहु क्रोधित पागे ❀ देखत सबै विप्र तब भागे ॥
काहू यज्ञ में सूत उतारी ❀ काहू कुश पैंती अंडारी ॥
भागे द्विज गृह मंत्री आये ❀ चित्र विचित्रहि देखन पाये ॥
स्त्री धूप दीप लै आई ❀ तब मंत्री पूँछा मन लाई ॥
दो० कहा दये कह पायऊ, मँगल कौन उपाय ।
चन्द्रहास कहँ पायऊँ, स्त्री कहै बुझाय ॥
पूछे काह तासु कह दीन्हा ❀ स्त्री सबै निवेदन कीन्हा ॥
धन रतनन दे कन्या दीन्हा ❀ सुनत क्रोध मंत्री तब कीन्हा ॥
क्रोधवंत मंत्री चलि आगे ❀ वर कन्या तौ चरणन लागे ॥
क्रोधित नयन सो देखत अहई ❀ सत्य असत्य न एको कहई ॥
अग्र बैठिकै मदन बुलाये ❀ धिक २ करि तब बात सुनाये ॥
पत्री पढ़िकै काम न कीन्हा ❀ मदन जोरि कर बोलै लीन्हा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धन अरु रत्न अश्व गज दयऊ ❀ सब भण्डार सून तब भयऊ ॥
सुनतै अधिक क्रोध उर भयऊ ❀ जा बनवास तु आज्ञा दयऊ ॥
मदन कहा मम दोष न दीजै ❀ का अपराध प्रगट तेहि कीजै ॥
एक घाटि भइ है मैं जाना ❀ नहीं कुलिंद बुलायो माना ॥
दो० आज्ञा दीन्हीं जाहि हम, लाओ चरण मनाय ।
तुमने लिखा सु सत्य है, जरहु काहि मन लाय ॥
सुनतै मंत्री बहुतै जरई ❀ कर मींजै औ हा हा करई ॥
मंत्री कह वह पत्री लाओ ❀ बांचि अर्थ तौ हमैं सुनाओ ॥
मदन तुरंत पत्री लै आये ❀ बिषया नाम तु तुर्त बताये ॥
देखत पत्री विस्मय भयऊ ❀ बहुत बोध तो पुत्रहि दयऊ ॥
विधिका लिखा मिटै नहिं भाई ❀ आन करत आनै हो जाई ॥
करि संतोष तु पोथी लीन्हा ❀ चन्द्रहास तब बिनती कीन्हा ॥
जनि कछु संशय करि मनमाहीं ❀ तुमतौ हमरे पितु सम आहीं ॥
कपट रूप भाष्यो तब बाता ❀ मनहिं बिचारै बध सख्याता ॥
येहि हतिकै कन्या विधवाओं ❀ करि छल येहि तुर्त मरवाओं ॥
बोलि चंडाल कहै यह बानी ❀ प्रथमहिं कपट करेहु अज्ञानी ॥
दो० अब तो मानहु बात मम, लैकर बान कृपान ।
पुर बाहर है चण्डि गृह, छिपि रहिओ सज्ञान ॥
संध्या जाय मारियो ताहीं ❀ बहुतै धन पैहौ मम पाहीं ॥
तब चण्डाल जाय छिपि रहेऊ ❀ चन्द्रहास सों मंत्री कहेऊ ॥
हमरे कुलकी चण्डी आहा ❀ पूजहु जाय कियो है ब्याहा ॥
सन्ध्या समय अकेले जैयो ❀ चण्डी कह पूजा दै ऐयो ॥
सुनत बात तौ पूजन चलेऊ ❀ मदन गये राजा गृह भलेऊ ॥
कुंतल राजै सपना पाई ❀ गालव पोहित को समुझाई ॥
बिना शीश देखा परछाहीं ❀ कहौ बुझाय कौन फलआहीं ॥
गालव कहै अमंगल अहई ❀ अंत निकट आये मुनि कहई ॥
और परीक्षा बहुत बताई ❀ जाते मृत्यु जान सब राई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहुत अरिष्ट तु सुनै मुआरा ❀ ताको नहीं करै विस्तारा ॥
दो०—कुन्तल नृपती मदन ते, कही बात समुझाय ।
चन्द्रहास को राज्य दै, हम तप कानन जांय ॥
कन्यादान राज पद पाये ❀ तुरतहि चन्द्रहास को लाये ॥
गोधूली बेरा अब चलि आहीं ❀ आगे और लग्न है नाहीं ॥
सुनतहिं मदन तुरंत सिधाये ❀ मग महँ चन्द्रहास को पाये ॥
धूप दीप नैवेद्य सुहाये ❀ कहँ लै चल्यो पूँछिमन लाये ॥
चन्द्रहास कह मंत्रि पठाये ❀ अकसर चण्डी पूजन आये ॥
मदन कह्यो हम पूजैं जाई ❀ तुमहिं तुरन्त हँकारत राई ॥
चन्दन पुष्प जो हमको दीजै ❀ आप विजय राजा पँह कीजै ॥
लै नैवेद्य मदन तब चलेऊ ❀ चन्द्रहास नृप गृह को भलेऊ ॥
मदन कहै अंब अशकुन भयऊ ❀ मन महँ अतिशयचिन्ता कियऊ॥
दो०-तब नरेश अभिषेक करि, दीन्हा कन्यादान ।
राज्य देश भँडार सब, दीन्हें हर्ष प्रमान ॥
राज्य देश सँकल्पहिं दीन्हा ❀ राजा बनहिं गमन तब कीन्हा॥
मदन गये चंडी गृह माहीं ❀ मृत्यु भवन ह्वै गो तब ताहीं॥
चाण्डालन तब कीन्हें घाऊ ❀ भूल खड्ग लै घाव लगाऊ ॥
मदन तबहिं चंडी ते कहा ❀ हमको बलि दीन्हें तुव आहा॥
परस्वारथ किय मैं गो मारा ❀ माता पूजत तुम्हने मारा ॥
मैं नहिं महिषासुर हौं माता ❀ रक्तबीज नहिं शमन सख्याता ॥
और निशुम्भ नहीं हौं माई ❀ परम ज्योति तुम सुन मन लाई॥
यह कहि प्राण अंत तब भयऊ ❀ सो चण्डाल सबै गृह गयऊ ॥
चन्द्रहास राज्यासन पाये ❀ मंत्री गृह लै त्रिया सिधाये ॥
दूत जाय मंत्रिहि समुझाये ❀ कहे जाय सब बात बुझाये ॥
दो०-राजा कन्यादान दिय, करि नृप बनै पयान ।
मंत्रि बात तब सुनतही, लागे शैल समान ॥

व्या० का० प्रेस,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चन्द्रहास जब आये आगे ❀ कन्या साहित चरण तब लागे ॥
मंत्री पूंछा चण्डि गृह माहीं ❀ गये हेत कीधौं पुनि नाहीं ॥
चन्द्रहास कह मदन सिधाये ❀ हमहिं नृपाति के भवन पठाये ॥
चन्द्रहास काहि गृह को गयऊ ❀ पुत्र शोक मंत्री कहँ भयऊ ॥
रोवत चलि भो चंडी पाहाँ ❀ अंधकार रजनी भई ताहाँ ॥
पुनि स्मशान महँ आये जबहीं ❀ भूत प्रेत सब भागे तबहीं ॥
बरते चिता काठ यक लाये ❀ तेहि उजियारे चंडि गृह आये ॥
डारि काठ तब पुत्र उठाये ❀ ग्रीव लगाय रुदन मन लाये ॥
मंडप माँह खम्भ इक आहा ❀ मारे शीश खम्भ के माहा ॥
मृतक भयो मंत्री परमाना ❀ याहि अन्तर तब भयो बिहाना ॥

दो०-द्विज पूजन कहँ गयो जब, देखा गृह मों जाय ।
मंत्री मदन परे हते, चंडी मंडप आय ॥

विप्र जाय राजा ते कहेऊ ❀ चन्द्रहास तहँ पर तब गयऊ ॥
बहु स्तुति चण्डीकी करई ❀ कुण्ड खनाय यज्ञ सँचरई ॥
घृत चीनी यव तिल तब लीन्हा ❀ वेद मंत्र आवाहन कीन्हा ॥
चंडी पहँ राजा अस कहई ❀ तू तौ शक्ति मातु जग अहई ॥
मोरे हेतु पूजने आये ❀ मोते रिस करि बलि यह खाये ॥
यह कहिकै तब होम शरीरा ❀ सर्व शरीर होमि नृप वीरा ॥
पाछे माथ उतारन चहई ❀ काढि खड्ग हाथै महँ गहई ॥
गह्यो हाथ तब हर्षि भवानी ❀ चन्द्रहास यह बचन बखानी ॥

दो०-पाछे माँग्यो भूपने, ये दोउ देहु जिआय ।
चन्द्रहास यह भाषेऊ, सुनहु चंडिका माय ॥

तब हँसि चंडी कह मृदु बानी ❀ अचल भक्ति होइहि सज्ञानी ॥
बालापनका चरित तुम्हारा ❀ सो कलि में गावत सँसारा ॥
मुँदौ नयन मैं देउँ जिआई ❀ सुनत नयन मूँद्यो तब राई ॥
मंत्री मदनहि दिये जगाई ❀ अन्तर्द्धान चण्डी ह्वै जाई ॥
नयन खोलिकै राजा देख्यो ❀ उठ दोउ तब हर्ष विशेख्यो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तीनहुँ जन तब मग्नहि भयऊ ❀ चन्द्रहास अस राजा भयऊ ॥
तब पारथ पूछै मन लाई ❀ फेरि कुलिंद मिले किमि आई ॥
पारथ सों नारद मुनि कहई ❀ चन्दनपुर कुलिन्द दुख सहई ॥
जो कछु धन हतो प्रमाना ❀ सब दे दियो द्विजन को दाना ॥
दो०-करि बिचार पावक दहन, मरै पाय दुख पाय ।
संशय यह तब मंत्रि सन, कहा दूत कोइ जाय ।
तब मंत्री चन्दनपुर गयऊ ❀ बहु प्रकार अनुहारी कियऊ ॥
चन्द्रहास चन्दनपुर गयऊ ❀ देखि कुलिंद हर्ष मन भयऊ ॥
सब समेत कुन्तलपुर आये ❀ परमहर्ष ते राज रजाये ॥
वर्ष तीनि राजा तप कियऊ ❀ चन्द्रहास को सुत तब भयऊ ॥
विषया सुत मकरध्वज नामा ❀ पद्म नेत्र सुंदर परमाना ॥
पंचक औ मालिन विद्वानी ❀ दोनों गर्भ दोउ सुत जानी ॥
बाल दशा बीते जब ताही ❀ शालिग्राम साध व्रत आही ॥
शिला महातम उत्तम अहई ❀ शालिग्राम निरांजन लहई ॥
मृत्यु समय चरणोदक पावै ❀ पापी तरि बैकुंठ सिधावै ॥
निरमायल जो भक्षत कोई ❀ देव पितृ सन्तुष्ठित होई ॥
दानी दाता द्वीपन राऊ ❀ चन्दन लेपन मुक्ति उपाऊ ॥
दो०-शालिग्राम जहां रहैं, देव पितृ सब ताहिं ।
सर्व तीर्थ जल पुण्यतौ, चरणामृत के माहिं ॥
तुलसी सम तौ तरु नहिं आहीं ❀ विष्णु समान देवता नहिं ॥
तुलसी मंजरि हरिको पाशा ❀ देखत पाप होत है नाशा ॥
ऐसे चन्द्रहास नृप भयऊ ❀ सबै कथा तुमते कहि दयऊ ॥
नारद देवलोक कहँ गयऊ ❀ सुनत पार्थ आनान्दित भयऊ॥
दल लेकर कुन्तलपुर आये ❀ राजा अश्वहि देखन पाये ॥
पत्र पढ़े राजा सुख पाये ❀ धर्म्मराजको अश्व जु आये ॥
आज देखिबे श्रीपति नैना ❀ चन्द्रहास हर्षित कह बैना ॥
मकरध्वज ते बात जनाई ❀ पूरब दिसा निकट भो आई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

युद्ध रचे जग होहै नाशा ❀ लैकै अश्व मिलो हरि पासा ॥
दो० पन्द्रह दिन पर्य्यन्त हय, रक्षा कीन्ह्यों राव ।
पाछे मिलन हेतु तब, चन्द्रहास नृप आव ॥
तिलक सु तुलसी माल बिराजै ❀ मोरपंख रथ ऊपर छाजै ॥
तब श्रीपति देखै कहँ पाये ❀ होय चतुर्भुज तुरत सिधाये ॥
गरुड़ चढ़े दर्शन वहि दीन्हें ❀ चारों भुजते अंकमें लीन्हें ॥
चन्द्रहास चरणन में परेऊ ❀ बहु प्रकार ते स्तुति करेऊ ॥
तब राजा से कह भगवाना ❀ इनके हृदय मोर स्थाना ॥
आकर मिलो भक्त यह अहई ❀ तब पारथ श्रीपति ते कहई ॥
भारत माहँ कहा यदुराई ❀ प्रणको गुण आये दुखदाई ॥
ताको मिलो कहा का राजा ❀ क्षत्री धर्म होत है लाजा ॥
तब हरि भाषे यह तनु मेरा ❀ मिलै आयकै हर्ष घनेरा ॥
दो० प्रभु प्रताप ते नृपति सों, भाषे श्री यदुराय ।
सुनत विहँसि कै पारथ, मिले तुरंतहि जाय ॥
प्रेम हर्ष भे अंकमें गहेऊ ❀ चन्द्रहास राजाते कहेऊ ॥
मो मन करनी हती लराई ❀ पै इक वर्ष आय नियराई ॥
युद्धहि रचे यज्ञ कर भंगा ❀ ताकारण मिलाप तुव संगा ॥
जहँ श्रीपती तहाँ रण कैसो ❀ यह अचरज मनमाहँ अँदेशो ॥
अश्वरु धन राजा तब जाना ❀ राजा दीन्ह चरण भगवाना ॥
श्रीपति राजा तासुत किये ❀ प्रेम हर्ष आनंदित भये ॥
तीन दिवस रह तेहि पुर माहाँ ❀ छूटो अश्व चलो पुनि ताहाँ ॥
चन्द्रहास कहँ तब संग लीन्हा ❀ बालक ते जिन रक्षा कीन्हा ॥
ते पुर छाँड़ि रहब घर माहीं ❀ कृष्ण संग सैना करि जाहीं ॥
लै दल चन्द्रहास तब चलेऊ ❀ पारथ संग चले सुख भलेऊ ॥
दो० प्रेम हर्ष नारायण, पारथ परमानंद ।
चन्द्रहास संगहि चले, विष्णु भक्त सानंद ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चला अश्व भ्रमत फिरे, नाना देश विदेश।
अस न कोई नर जगत महं, पकरै अश्व नरेश॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषा कृते
चन्द्रहासमिलनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

वैशंपायन कहै बखानी ❀ चला अश्व विधिवत परमानी ॥
जौने जौन देश हय गयऊ ❀ सबै नृपति पारथ वश भयऊ ॥
पाछै अश्व चले जग माहाँ ❀ सिन्धु माहँ परवेश्यो ताहाँ ॥
पारथ तब शोचन मन लागे ❀ दीन बचन भाषे हरि आगे ॥
कहो कृष्ण का करौं उपाई ❀ तब पारथ सों कह यदुराई ॥
तुम हँसध्वज पुत्र तुम्हारा ❀ मोरध्वज हम पांच भुवारा ॥
ये सब रथी उदधि मह चलहीं ❀ दरशन मात्र रिपूदल मलहीं ॥
पांचौं रथ सागर महँ गयऊ ❀ जल में रथ चलते तब भयऊ ॥
छाये मकरा देवल छाये ❀ पशु पक्षी तहँ पर बहु आये ॥
देखे पुनि तहँ दालभ्य मुनिवर ❀ वट को पत्र धरे शिर ऊपर ॥
दो०-जंघा भेदी लाल भू, औ बहु अहै भुअंग ॥
नमस्कार जा कीन्ह तब, पांचौं रथ इक संग ॥
पारथ कहै गेह किन करहू ❀ ऐसा कष्ट हेतु केहि धरहू ॥
मुनी कहै दुख गृह में अहई ❀ स्त्री ग्रहण पाप बहु रहई ॥
क्षण क्षण माहि कष्ट है नाना ❀ पैहैं पाप झूठ परवाना ॥
पातक नहीं धर्म पुनि नाना ❀ पाप पुण्यकर बहुत विधाना ॥
सुत नारी कब देखब नैना ❀ माया विष्णु सबै सुख चैना ॥
याते थोरे जीवन काजा ❀ ताते गृह कीजै नहिं राजा ॥
मार्कण्डेय वशिष्ठ सभागे ❀ लोमश आदि कहन असलागे ॥
प्रलय समय हम देखा जेते ❀ पारथ बात कहत हैं तेते ॥
दो०-एक वट तरे आरहे, तासु एकसौ डार।
एक पत्र के ऊपरै, बाल रूप कर्तार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बालक रूप वट पत्रहि अहई ❀ पग अंगुष्ठ सो चाटत रहई ॥
ते प्रभु जाना मैं मन माहा ❀ एही कृष्ण संत जग आहा ॥
अब मोको आलिंगन दीजै ❀ धर्मराजको यज्ञ सुकीजै ॥
श्रीपति कहें मुनी सों बाता ❀ महामुनी तुम हौ सख्याता ॥
एक बार करि गर्व जु नाना ❀ हरि माया इक पवन उड़ाना ॥
मोहिं समेत गयो लै तहाँ ❀ अष्टमुखी ब्रह्मा है जहाँ ॥
उन्ह पूँछा तुमको यह अहौ ❀ इन कहँ ब्रह्मा जानत रहौ ॥
उन्ह कहँ अष्ट बदन है मोहीं ❀ कह ब्रह्मा मुख कह को तोहीं ॥
दो०-अष्ट बदन ब्रह्मा हम, तुमहौ कौन प्रकार ।
यहै रूपतो बोलतो, भयो पवन संचार ॥
दूनो ब्रह्मा गे तब तहाँ ❀ सोल्हा मुख ब्रह्मा हैं जहाँ ॥
उनहु एक परकार सुनाये ❀ तीनों ब्रह्मा पवन उड़ाये ॥
बात्तिस बदन पाहँ तब गयऊ ❀ उनहु सारि तौ यहि विधि कियऊ॥
चारों ब्रह्मा पवन उड़ाये ❀ चौंसठ मुख पाहीं पहुँचाये ॥
उनहू सारि करे मन लाई ❀ पांचों ब्रह्मा पवन उड़ाई ॥
इक सौ अट्ठाइस मुख जहाँ ❀ उनहू गर्व बात तो कहा ॥
छाहौं ब्रह्मा उडि गे तहाँ ❀ शत मुख ब्रह्मा रहते जहाँ ॥
तिनने सब को ज्ञान सिखायो ❀ यह दालभ्य मुनि कथा सुनायो ॥
ऐसो ब्रह्मा मान गमाए ❀ बकदालभ्य मुनि सबै बताए ॥
मुनि को लै चंडोल चढ़ाई ❀ अश्व दोउ लाये यदुराई ॥
दो०-चले अश्व तब लेके, बकदालभ्य मुनि साथ ।
वैशंपायन कहत हैं, सुन जन्मेजय नाथ ॥
चले अश्व तब आये तहाँ ❀ जयद्रथ को बालक है जहाँ ॥
दूतन कहा हमारे देशा ❀ अर्जुन कृष्ण कीन्ह परवेशा ॥
जो पारथ जयद्रथहि मारो ❀ सुनत मृत्यु तेहि भये मुवारो॥
सभा माहिं मृत्यु तौ भयऊ ❀ ताकी माता रोदन ठयऊ ॥
रोदन करत हरी पहँ आई ❀ पारथ हमैं महा दुखदाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पती पुत्र मान्यो दुइ सही ❀ देखत दयावन्त हरि कही ॥
चलो पुत्र तव देखौं जाई ❀ सभा माँह पहुँचे यदुराई ॥
देखो नृपाति अचेतन परेऊ ❀ श्रीहरि हाथ शीश पर धरेऊ ॥
उठे पुत्र कहते भय त्यागे ❀ सुनतहि वात तुरत सो जागे ॥
जागे हर्षित भै महतारी ❀ पुत्राहि लै पारथ पग ढारी ॥
दो०-पारथ विनय कीन्ह बहु, नेवता दीना शाल ।
पुत्र सहित हर्षित मन, चले यज्ञके काल ॥
श्रीपाति कहत पार्थ के पाहीं ❀ वर्ष तुलान चलो गृह माहीं ॥
दूनो अश्व गये बनवारी ❀ सबै नृपन सो कहा मुरारी ॥
नीलध्वज हँसध्वज राऊ ❀ वीर ब्रह्म मोरध्वज नाऊ ॥
चन्द्रहास अनुशल्वा अहई ❀ यौवनाश्व बेगाहि तब कहई ॥
वृषकेतु औ काम कुमारा ❀ सबसों भाषो श्रीभर्तारा ॥
हम तौ जात अग्र गृह आछे ❀ तुम सब मिलिकै आवहु पाछे॥
यह कहि हरि हस्तिनपुर गयऊ ❀ आनँदित तब अर्जुन भयऊ ॥
राजा सुनत हर्ष मन माना ❀ हरिको दै आलिंगन दाना ॥
जहाँ जहाँ पर भै रण करणी ❀ करि विस्तार सबै हरि वरणी ॥
दो०-भीम आदि पांडव सबै, परशे सबै मुरारि ।
रुक्मिणि आदि नारी जहाँ, तहाँ गये बनवारि॥
भीम सँग हरि गे जहँ नारी ❀ सतभामा परिहास बिचारी ॥
नाना कौतुक भये अपारा ❀ ताको नहीं करैं विस्तारा ॥
तब हरि भीम नृपाति पहँ आये ❀ चले अग्र राजा समुझाये ॥
धृतराष्ट्रक आगे तब कीजै ❀ आगे हो पारथ कहँ लीजै ॥
कुंती आदि सहित गँधारी ❀ औ जेती श्रीपतिकी नारी ॥
वेदध्वनि कर ब्राह्मण चलेऊ ❀ कीन्हा गवन लोग सब भलेऊ ॥
दधी दूर्बा अक्षत औ माला ❀ यह सब लेइ चले द्विजपाला ॥
आरती बहुतै भाँति सँवारी ❀ चली साजि क्षत्रिनकी नारी ॥
शंखध्वनि तहँ होत अपारा ❀ नाना भ्रमर करत गुंजारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

उतते अश्व अग्र हैं दोऊ ❀ बकदालभ्य सँग हैं सोऊ ॥
दो०-भूप भूप सब भेंटत, मिलत सबै सरदार ।
स्त्री से स्त्री सब, लेत अहैं अँकवार ॥
मिलिकै सबै नगर महँ गयऊ ❀ धर्मराज आनँदित भायऊ ॥
राजा सब तब करैं जोहारा ❀ पुण्य प्रतापी धर्मकुमारा ॥
सब राजा को करि सन्माना ❀ यज्ञ रचा तब वेद विधाना ॥
अश्वमेध को मंडप साजै ❀ अष्टद्वार तहँ सरस विराजै ॥
बेलि पर्ण औ पुष्प बनाये ❀ यज्ञ साज सबहीं निर्माय ॥
बकदालभ्य जो वर्णैं धर्मा ❀ लागे मुनी यज्ञ के कर्मा ॥
वामदेव वशिष्ठहि आये ❀ पाराशर मुनि अत्रि सिधाये ॥
भरद्वाज ऋषि गौतम आये ❀ मुनि अँगिरा आइ मन भाये ॥
आठौं मुनी दया के पाला ❀ वरन कीन्ह है धर्म भुआला ॥
छीछन भै नृप द्रौपदी रानी ❀ हरिणा सिंह गहे कर जानी ॥
दो०-धौम्य पुरोहित यह कह्यो, जइये गंगा तीर ।
निज तिरिया लै जाइये, भरने गंगा नीर ॥
तिरियन सँग चले सब भलेउ ❀ अरुंधती वसिष्ठहुँ चलेउ ॥
कृष्ण संग श्रीरुक्मिणि रानी ❀ प्रभावती प्रद्युम्न प्रमानी ॥
ऊषा अरु अनिरुधकै जोरी ❀ भीम सुसंग हिडंबी तोरी ॥
वृषकेतू भद्रावति रानी ❀ मोरध्वज कुमोदनी दानी ॥
यौवनाश्व चन्द्रावति चली ❀ नीलध्वजहिं नंदनी भली ॥
वेद पढ़ैं द्विज सबै सिखाये ❀ नारद सत्यभाषा गृह आये ॥
कहे बात रुक्मिणि हरि प्यारी ❀ गांठ जोरि जल हेतु पधारी ॥
तब सतभामा सुनिते कहई ❀ सदा कृष्ण मेरे ढिग रहई ॥
तहाँ हरी मुनि देखन पाये ❀ ऐसे अष्ट नारि पहँ आये ॥
गोपिन गृह कह देख न जाई ❀ तहवाँ देखा श्री यदुराई ॥
दो०-सतभामा श्रीजाम्बवति, रुक्मिणि नारी संग ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गांठि जोरि चले हरि, भरन हेतु जल गंग ॥
जलके हेतु तु सबै सिधाये ❀ तब राजा नारद पहँ आये ॥
हरी सहित जेते हैं राजा ❀ गंगा माहँ करैं जल काजा ॥
प्रथम शीश पर रुक्मिणि धरेउ ❀ पाछे और सबन संचरेउ ॥
ब्यास आदि जल पूजन करेउ ❀ कंचन कलश नीरसों भरेउ ॥
चलीं नीर ले सब नृप रानी ❀ अरुंधती रुक्मिणी बखानी ॥
कलश भार दुखदायक अहई ❀ सुनिये बात जाम्बवति कहई ॥
कर पर धर तौ कृष्ण पहारा ❀ शीशन धरे कलश को मारा ॥
बहुतै कौतुक स्त्रिन कीन्हें ❀ आये सर्व गंग जल लीन्हें ॥
वेदध्वनि कै कलश उतारा ❀ युवती गावहिं मंगलचारा ॥

दो०—श्याम कर्ण जल पान करि, रानी नृप स्नान ।
द्रौपदि रानी धर्मसुत, जैसो यज्ञ विधान ॥

धोती पहिरि मुनी सब आये ❀ उत्तम चंदन अंग लगाये ॥
पारथ भीम देत हरि दाना ❀ राजा सबै किये स्नाना ॥
दाक्षिणा भये यज्ञके हेता ❀ सब कहँ पूजन कियो सचेता ॥
वेद उचार मंत्र तब कीन्हें ❀ धौम्य भीमते बोलै लीन्हें ॥
बायें श्रवण अश्व को मारा ❀ ताते चलै क्षीर लै धारा ॥
तब सबहीं विस्मय कै माना ❀ धौम्य कह्यो भीमहि सुन काना ॥
मारौ अश्व होइ द्वै खंडा ❀ तबहीं भीम गहे कर खंडा ॥
तबहीं भीम क्रोध करि छाँटा ❀ दोय टूक कै अश्वहि काटा ॥
शिर उड़ि रविमंडल महँ रहेउ ❀ सुघर अश्व जग जीवन कहेउ ॥
हयके हृदय आप हरि मारा ❀ चली हृदय रक्तकै धारा ॥

दो०—अश्व ज्योति हरि अंगमों, प्रविशत भै तब जाय ।
परा अश्व वसुधा विषे, भो कपूर तनु आय ॥

सो कर्पूर धरा है आगे ❀ व्यास होम करने को लागे ॥
कुंड माहिं तब आहुति दीन्हें ❀ तबहीं व्यास कहन कहँ लीन्हें ॥

ब्या० का० प्रेस,
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इंद्र आगमन परिश्रम करो ❀ तबहीं इन्द्र बचन अनुसरो ॥
इन्द्र कह्यो पावक मुख मेरो ❀ आहुति दें सब देव घनेरो ॥
अश्व लिखा आहै गुरु पारा ❀ होम करो द्विज वेद उचारा ॥
सो कपूर ते आहुति दयऊ ❀ तब सब जग संतुष्ठित भयऊ ॥
यज्ञ धर्म आगम में लागे ❀ धर्मराज के पातक भागे ॥
कृष्ण कह्यो सब राजा ठांय ❀ यज्ञ धर्म लीजै तन आय ॥
अब आगे कलियुग जो ऐहै ❀ कोइ न ऐसो यज्ञ करैहै ॥
नृपति देव संतुष्ठित भयऊ ❀ सबैं यज्ञक पातक गयऊ ॥

दो०—शेषस्नान भुवाल तब, कीन्हा रानी संग ।
सहस दण्ड धरि छत्र तब, ताने नृप शिर रंग ॥
भयो यज्ञ सब पूरण, भागे पाप अनंत ।
जहां आप ठाकुर रहे, तहां सबै हर्षत ॥

वैशंपायन कथा सुनाये ❀ तौ सब राजा तहाँ न आये ॥
धर्मराज हर्षित मन भयऊ ❀ श्रीहरिको आलिंगन कियऊ ॥
पाछे देन लगे सब दाना ❀ जो कछु होवे यज्ञ विधाना ॥
व्यासहि भूमि दान तौ दयऊ ❀ साठ एक बकदालभ भयऊ ॥
एक हस्ति अरु एक तुरंगा ❀ कंचन माल एक ता संगा ॥
मुक्ता अंजलि गऊ हजारा ❀ सेवक चारि तु दिये भुआरा ॥
एकक द्विज तो एतिक पाये ❀ करि मख सबै दरिद्र भगाये ॥
गज सौ चार तुरंग हजारा ❀ प्रतिदिन दीन्हो भूप उदारा ॥
स्त्रिन को भूषण पहिराये ❀ वैष्णव ब्राह्मण खुशी कराये ॥
प्रेम हर्ष धर्म नृप जाना ❀ सिंहासन बैठे भगवाना ॥

दो०—अश्वमेध मख पूरण, हरि करि दीन्ह्यों राउ ।
तीन लोक संतुष्ठित, देवन आँनद पाउ ॥

पाछे नृपति सुनाजिन आये ❀ षट्रस भोजन अमृत जिमाये ॥
करि भोजन तब अचमन कीन्हा ❀ खरिका शोधन केशव दीन्हा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तेहि अंतर ब्राह्मण दो आये ❀ झगरत धर्मराज पहँ धाये ॥
एक कहै भूमि मोहिं दीन्हा ❀ इनने खेत जु बल करि लीन्हा ॥
कहै धान्य बाटी कर लीजै ❀ लेउँ मैं कैसे सो कहि दीजै ॥
दूसर कहै भूमि है तेरी ❀ सबै धान्य ह्वै है केत मेरी ॥
कृष्ण कह्यो धर्मजके पाहीं ❀ है अन्याय छुटो है नाहीं ॥
तीन मास बीते कलि ऐहै ❀ आपन न्याय आप करि लैहै ॥
तुम जो दीन बाँटिकै आधा ❀ ऐसी कली कपट दुख दाधा ॥
यह कह घरको दीन्ह पठाये ❀ पाछे राजन बिदा कराये ॥

दो०-जहा देशहै जाहि कर, तहँ तहँ गये नरेश ।
अश्वमेध भारत कथा, काटै पाप कलेश ॥

विधि संयोग आय बन आवा ❀ वैशंपायन कथा सुनावा ॥
राय युधिष्ठिर कहबै लहेउ ❀ मम अस मख काहू नहिं कहेउ ॥
एही बीच नकुल इक आवा ❀ मध्यउच्छिष्टहि बुड़की खावा ॥
तन मन देखि बुड़ै पै सोई ❀ क्षण बूड़ै क्षण ऊपर होई ॥
यह अचरज तहँ देखत भयऊ ❀ याहि विधि पहर एक सो गयऊ ॥
कृष्ण देव सो राजा कहई ❀ यह सचित्र देखो कस अहई ॥
जूँठ माहिं बूड़ै उतराई ❀ तन मन देखि बहुत पछताई ॥
ऐसा नकुल कबहूँ ना देखा ❀ कंचन मुख कबहूँ ना लेखा ॥
तबहीं कृष्ण कहा समुझाई ❀ यह वृत्तांत कहौं मैं गाई ॥
पूरब कथा सुनौ नरनाहा ❀ जाते याहि मुख कंचन आहा ।
सो वृत्तांत कहौं मैं तोहीं ❀ जो नृपती तुम पूछेहु मोहीं ॥
पूर्व जन्म इक ब्रह्मण रहेऊ ❀ बहुत दुःख तनुव्यापित भयऊ ॥
सुत पत्नी द्विजके संग आहा ❀ चारों प्राणी रह संग माहा ॥
परम दरिद्र दुखित सो रहई ❀ तीरथ व्रत सो फिरि फिरि करई ॥
नेम धर्म बहुतै सो करई ❀ अस ब्राह्मण शुचिवन्ता रहई ॥
चारों प्राणी बहु शुचिवंता ❀ निशिवासर ध्यावत भगवंता ॥
भिक्ष माँगि विप्र लै आवै ❀ अर्द्ध अन्न संकल्प करावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यही विधि बहु दिवस गँवावा ❀ व्यासदेव तब नृपहि सुनावा ॥
चारों प्राणि विप्रसो रहेउ ❀ इकते एक धर्म बहु कहेउ ॥
दो०-एक दिवस चालि यात्रा, पत्नी सहद्विजराज ॥
ऋषि अगन तहँ भूपति, सबही कृष्ण सुनाव ॥
चला यात्रा विप्र नहाई ❀ चारि दिवस सो अन्न न पाई ॥
क्षुधावन्त ब्राह्मण तब भयऊ ❀ पंच दिवस याही विधि गयऊ॥
छठयें दिवस नगर इक आयो ❀ विधि संयोग तहाँ कस पायो ॥
यव कर खेत तहाँ इक अहई ❀ मारग बीच तहाँ सो रहई ॥
जब काटी किसान लै गयऊ ❀ यव इक परा तहाँ पर रहऊ ॥
तब द्विज सुत ब्राह्मणि सों कहेउ ❀ चुनहु आय बुद्धी यह रहेउ ॥
पुत्रसहित द्विज बीनै लीन्हेउ ❀ एककजवचुनिराशिजो कीन्हेउ ॥
जब सब चुनी बनावन गयऊ ❀ तबहीं विप्र कहत अस भयऊ॥
आधो आधा द्विज तब कियेऊ ❀ आधा अंश हाकिमहि दिहेउ ॥
आधा अंश गृहस्थ विचारी ❀ जोउ भरा सो लिह्यो संभारी ॥
सो ब्राह्मणि लैगे जतसारा ❀ यवको चूरण कीन सुसारा ॥
सत्तु पीसि ब्राह्मणी लै आई ❀ दोना पांच ब्राह्मणी बनाई ॥
पांचो पत्र कीन्ह द्विज जबहीं ❀ एकक पत्र चार लिय तबहीं ॥
इकसो अभ्यागत कहँ राखा ❀ अस धर्मिष्ठ कृष्ण तौ भाषा ॥
जबहीं भोजन चाहै लीन्हा ❀ स्तुति आय विप्र इक कीन्हा ॥
तब द्विज चरण पखारा जाई ❀ बहु आदर आन्यो बैठाई ॥
हर्ष साहित द्विज पत्र जु दीन्हा ❀ तबहीं द्विज कृष्णार्पण कीन्हा ॥
कह्यो विप्र संतुष्ट न भयऊ ❀ आपन पत्र जो ब्राह्मण दयऊ॥
उनहु पत्र द्विज याचन कीन्हा ❀ चारों पत्तर जेवै लीन्हा ॥
करि प्रसाद अँचवा पुनि सोई ❀ नीर प्रवाह पहुमिमे होई ॥
एक नकुल तहँ आव पियासा ❀ ठौर कुँवाके नीर प्रकासा ॥
नीर उच्छिष्ट मुखै जब पियऊ ❀ कंचन मुखहि तहाँ तक भयऊ॥
दो०-अस कौतुक तह होतभा, सुनौ राव चितलाय ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पुनि उच्छिष्ट पानी पियत, सब सुवर्ण हो जाय ॥
नकुल मनहिं मन करै हुलासा ❀ अब विधि मोर जो पुरवै आसा ॥
सुना नकुल ने यह सदभाऊ ❀ राय युधिष्ठिर यज्ञ कराऊ ॥
बहुत ऋषै आये मखशाला ❀ औरौ बहु आये महिमाला ॥
बड़ बड़ ऋषी तहाँ चलि आये ❀ प्रेम पुनीत देख मन भाये ॥
औरौ देवमुनी जन झारी ❀ तिनके सँग आये बनवारी ॥
उनकर जूंठ परा तहँ होई ❀ तनु मोरा कंचन हो सोई ॥
यह गुण जानि नकुल तहँ आवा ❀ जूँठ माहिं तनु आप बुड़ावा ॥
सो जु देह सुवर्ण नहिं होई ❀ तब तब बुड़की मारै सोई ॥
यह गाथा जब कृष्ण सुनाई ❀ सुनतहि मान भँग भो राई ॥
राय युधिष्ठिर गर्व गँमावा ❀ लज्जावश ह्वै शीश नमावा ॥
सबै ऋषै कहँ लज्जा आवा ❀ मान महातम सुनत गँमावा ॥

दो०-यह चरित्र सुन राजा, कृष्ण कहा समुझाय ।
सबके मान जु भँगभे, रहै ऋषी शिर नाय ॥

कृष्ण साथ लिय सब परिवारा ❀ द्वारावती नगर पगु धारा ॥
प्रेम हर्ष आनँद उपाये ❀ कृष्ण द्वारका पहुँचे जाये ॥
वैशम्पायन कहैं बखानी ❀ अश्वमेध है पुण्य कहानी ॥
दुखी सुनै दारिद्र्य पराई ❀ रोगी रोग तुरत क्षय जाई ॥
निःपुत्री सुनत सुत पावै ❀ पुरुषन सुनत ज्ञान उपजावै ॥
सहसन धेनु देइ जो दाना ❀ सर्व तीर्थ करते अस्नाना ॥
पर्व अठारह सुन फल होई ❀ अश्वमेध जानौ फल सोई ॥
यह चरित्र सुनिये मन लाई ❀ यमके दूत निकट नहिं आई ॥
कथा सुनत देते जो दाना ❀ प्रापति देवे होय भगवाना ॥
पांडव विजय होय अनुसारा ❀ यह संक्षेप करै विस्तारा ॥

दो०-पांडव विजय कथा यह, पुण्यश्लोक बखान ॥
अश्वमेध संपूरण, सुनु राजा सज्ञान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अश्वमेध मख पातक हरता ❀ राजा सुनो श्रीपती करता ॥
कर श्रद्धा नर सुनै पुराना ❀ तापर रह प्रसन्न भगवाना ॥
श्रद्धा जाके मनमहँ नाहीं ❀ सुन अनसुनी एक सम ताहीं ॥
मनसा फल प्रापति तब होई ❀ यही सत्यकै जानौ सोई ॥
मनमों धरैं ज्ञान गुरुदेवा ❀ मनमें पा रहाते नर सेवा ॥
श्रद्धा मन जानौं परवाना ❀ ताते परब्रह्म पहिचाना ॥
काम क्रोध मद अक्षय चाहा ❀ मावै ज्ञान कहा को ताहा ॥
का कामी के आगे ज्ञाना ❀ काह क्रोध ते भक्ति बखाना ॥
का लंपट के आगे धर्मा ❀ कामी काह पुण्य का कर्मा ॥
जैसे ऊपर बीज बोवाये ❀ तैसे यह सब भेद बताये ॥

दो०-भारत गाथा हिये धरि, होत पुण्य परवेश ।
मम में भक्ति न जासु के सो नहिं फल उपदेश ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेधपर्वाणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते
अश्वमेधयज्ञ राजाबिदाकरनोनाम त्रयोदशोऽध्याय ॥ १३ ॥

इति अश्वमेधपर्वसमाप्तः ॥ १५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

आश्रमवासिकपर्व ॥ १६ ॥

जयति जयति रघुवर श्रीरामा ❀ भक्त जननको पूरण कामा ॥
बन्दौं गुरु गोविन्द सब ताता ❀ बन्दौं पुनिश्रीपितु अरु माता ॥
बन्दौं अज इन्द्रादिक देवा ❀ बारबार शिवजी करि सेवा ॥
श्रीशक्तिहि प्रभु शारद देवी ❀ सविधि काव्यजनकी जो सेवी ॥
बन्दौं व्यासादिक मुनि नारद ❀ हनूमान जो ज्ञान विशारद ॥
सबलसिंह यह भारत भाषा ❀ श्रीप्रभु जब अरके दै राखा ॥
औरँगशाह दिलीपाति राजत ❀ मित्रसेनि भूपाति तहँ गाजत ॥
ये नृपकै पुरुषन महँ गाये ❀ सबलसिंह चौहान बनाये ॥
सम्वत सत्रह सै इक्यावन ❀ शुक्लपक्ष दशमी बुध सावन ॥
तब मैं कथा आरम्भन कीन्हा ❀ व्यासदेवको सुमिरण कीन्हा ॥

दो०-लक्ष्मी के पति जौन हैं, हैं लक्ष्मी वश जाहि ।
सल्लक्षण जामें मिलैं, बन्दत हौं मैं ताहि ॥
श्रीहरि व्यापक जक्त सब, तेहि ते बदिय सर्व ॥
सबलसिंह चौहान कह, आश्रमवासिक पर्व ॥

नृप वर यज्ञ सरावत भयऊ ❀ कछुदिनअधमशम्भुबलिगयऊ ॥
नृपवर यज्ञ सुभग श्रम भवा ❀ ता दिन सभा अनूपम हुवा ॥
द्विजन पूजि सह भाइन बैठे ❀ गैरहि गैर भूप जन ऐठे ॥
कथा वार्ता विविध प्रकारा ❀ सुरन पूजि नृप कीन्ह जुहारा ॥

दो०-प्रथमहिं पूजिय गणपतिहि, जाकी सेवा सर्व ।
सबलसिंह चौहान कह, भाषा आश्रमपर्व ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सब जन नृप बैठे आसन प्रति ❀ होइनि यज्ञ ठौर होके अति ॥
ताहि समय द्वैपायन आये ❀ नृप सब बंदि भ्रात मुद पाये ॥
सिंहासन पर नृप वर राजत ❀ नृत्य होत बाजन बहु बाजत ॥
बैठे भूप सकल पृथिवी के ❀ अर्जुन भीम युधिष्ठिर नीके ॥
बभ्रूवाहन नृप अनुशाला ❀ नीलाम्बुज आदिक माहिपाला ॥
औरो बहु बैठे तहँ राजा ❀ विविध तँबूर तबल जहँ बाजा ॥
तब नृपवर जन्मेजय बोले ❀ पाणि जोरि मुख अमृत खोले ॥
सकल भूप तहँ रहे बखानी ❀ कहा हुते बोले शारंगपानी ॥
कह मुनि सुनु बचन सोहाये ❀ तुव हित हेतु कहत हम गाये ॥

सो०-रहे दूरि के राय, जे आये नृप यज्ञ महँ ।
जे नगीचे के आय, निज निज नगरन को गये ॥
षष्ट मास की बात, यज्ञांतर नृप ह्वै गये ।
रहे दूरि नृप तात, द्वैपायन सह भूप मणि ॥

नाच होइ तहँ विविध प्रकारा ❀ मुख मारहिं जोरहिं सब तारा ॥
उछरहिं और केश छिटकावहिं ❀ कुच देखाइ कै भूप रिझावहिं ॥
द्वादश षोडस वर्ष की नारी ❀ करहिं नृत्य नटनी सुकुमारी ॥
तासु आभरण कौन बखानै ❀ पहिरे कर्ण मोतिया सानै ॥
त्रिवली तरल तरँग सोहाई ❀ अभिगण नाभि मनोहरताई ॥
कटि कर किंकिणि तहँ छबि छाई ❀ पग नूपुर झनकार सोहाई ॥
कुच युग चक्रवाक जनु साजै ❀ मधुर मधुर ध्वनि पायल बाजै ॥

दो०-नाचैं नारी मनहुँ रति, अलक झलक छबि होत ।
चन्द्रवदनिमृगनैनिशिशु, भ्रकुटी कुटिलउदोत ॥

सो०-कुंद कली सम दाँत, अधर अनूपम चिबुक तिल ।
कुच सुचक्र की भाँत, तिल प्रसून नासा सुभग ॥

यहि विधि नृत्य होत दिन राती ❀ नृप समाज देखत मुनि पाँती ॥
द्वैपायन नृप गे आश्रम को ❀ रैनि व्यतीत मिलन कोकी को ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यहि बिधि होत रात दिन उत्सव ❀ आवत देशन केर वकीलव ॥
जीतत हारत सकल वकीला ❀ करतशुभगहितनृपगण मीला ॥
बभ्रूवाहन नृप दुःशाला ❀ जीवनाथ आदिक महिपाला ॥
करिकरि सैन साजि सब राजा ❀ बिदा माँगिगे सहित समाजा ॥
लै जनवास बिदा रानिन ह्वै ❀ चलेनृपतिसबश्री शिवसुतह्वै ॥
करत बड़ाई धर्मज केरी ❀ निज निज धाम गये नृप फेरी॥
इहाँ हस्तिपुर धर्मज राजा ❀ नितनव मंगल मोद समाजा ॥
बहुत वर्ष बीते सुखदाई ❀ आगे नृप सुनु कथा चलाई ॥
यक दिन कृष्णचन्द्र बलरामा ❀ पुत्र पौत्र आदिक वर वामा ॥
आये धर्मराज के धामहिं ❀ यथाउचितसबकीन्ह प्रणामहिं ॥
वास कीन्ह श्रीप्रभु बलनागर ❀ कुंतीभगिनिद्रुपादिमिलिआगर ॥
याहिबिधि बीति गये कछुकाला ❀ रहे कृष्ण गे हलधर बाला ॥

दो०-कृष्णचन्द्र नारिन सकल, बल सँग दीन्ह पठाइ ॥
आपु रहे हस्तिननगर, भ्रातादिक सुखपाइ ॥

यहिविधि कृष्णचन्द्र सुखदाई ❀ रहे हस्तिना मास गँवाई ॥
यकदिन द्वै ब्राह्मण तहँ आये ❀ तिन्हबोलाय तिन्हनबातजनाये ॥
इनकी भूमि लीन्ह जोतन हित ❀ जोतत रहत सुनो हे नृप नित ॥
तामें मिलो सधन भंडारा ❀ हमरो हक नहिं ताहि पुकारा ॥
सो हम धनहिं कृष्ण नहिं लीजै ❀ यादव पांडु न्याय करिदीजै ॥
हमसों अन्नदेव ते कामा ❀ गड़ो मिलो सो याकर जामा ॥
यह सुनि बोलेउ द्विजवर दूसर ❀ नहिं हमार धन उपजो ऊपर ॥
हमसो वर्ष दंड सो रहई ❀ और मिलै सो याकर अहई ॥
नाहीं होत अन्न जब याके ❀ तबहूं लेत दंड हम साके ॥
उपजै जो करोरि धन भाई ❀ तबहूँ वहै मिलत है राई ॥
उपजौ जौन अवनि धन राजा ❀ हमसों नहीं कछु है काजा ॥

दो०-नृपवर सुनि द्विजवर बचन, कृष्ण पाहिं दै ताहि॥
कृष्णचन्द्र भाष्यो तिन्हैं, षष्ठमास निरवाहि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

षष्ठ मास महँ तुम द्विज आयो ❀ धर्मराय सुख न्याय करायो ॥
यहसुनिगोद्विजनिजनिज धामहिं ❀ सभावन्दिनितप्रतियह कामहिं ॥
सुनु आगे नृपसुत अब कथा ❀ मैं गुणगाइ कहत भइ यथा ॥
एकदिन आज्ञा नृपसों लीन्हा ❀ द्विजन बुलाइ दान बहुदीन्हा॥
व्हैकै बिदा सुभद्रा पासहि ❀ द्रुपादिहि मिलीबहुरिकै सादहि ॥
मिलि नृप भीम पार्थसों भेंटत ❀ मंत्रिहिनकुल मिलिहिसम्भेंटत ॥
कर्णपूत गांधारी मातहिं ❀ तौपितुअंध और बहु जातहिं ॥
मिलत सबनसों चालन कीन्हा ❀ रथ ह्वै वेगि द्वारकहि लीन्हा ॥
मिलत सबन यदुवंशिन आछे ❀ गये प्रथम मंदिर कहँ पाछे ॥
इत नृप धर्मराज शुभकरई ❀ चलै न मारग सत्य न टरई ॥
बीते कछुक दिवस इमि इछे ❀ आये व्यास शिष्यसह पीछे ॥
देखि नृपति बंधुनसह वन्दे ❀ अश्वासन लखिव्यास अनन्दे ॥
कहा व्यास सुनु धर्म महीसो ❀ कहेउ दास कारण सबहीसो ॥
मम आगम तोहि लागत फीको ❀ जाते होउ दास नृपही को ॥
धर्मज सुनत बन्दि हँसि दीन्हों ❀ कहेउ कृपातव सब सुखकीन्हों ॥
शत्रुन मारि राज्य हम पावा ❀ तव प्रसाद घोड़ा फिरि आवा॥
दो०-अब कछु दिनसों महा मुनि, लखत अन्यअपकार॥
मिथ्या बाक्य प्रसाद अति, औरसकल आकार॥
सो०-ताहि समय सुनुतात, करत बतकही व्यासमों ॥
आयो द्विज बतरात, बोलि न्याय लागे करन ॥
भाष्यो द्विज है भूमि हमारी ❀ अन्न छाँड़ि सब लेब करारी ॥
याके हाथ भूमि क्रय नाहीं ❀ करि किरिया लेबै हम आहीं ॥
सुनि बोलेउ द्विज दूजो बानी ❀ लेबै छीन कहत शिव आनी ॥
याको भूमि वित्त सों चाहिये ❀ और मिलै मोको नृप अहिये ॥
यहसुनिसबहिन धिकधिक बोले ❀ वृक्ष हले धरणी नभ डोले ॥
डरके मारे पुर तिहुँ कांपै ❀ जल समुद्र उछले अरु तापै ॥
धर्मज सुनत अंगुरी चांपी ❀ पवन चली वसुधा सब कांपी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०—सुनि धर्मज कंपन लागो, भे प्रमुदित भूपाल ॥
रामकृष्ण कहिकै गिरे, सचेत पुनि हाल ॥
आधो अद्ध दीन्ह कै राजन ❀ तब लागो पूछन महराजन ॥
अहो व्यासमुनि कारण कहिये ❀ नहिं तोंचित्तअनलसोंदहिये ॥
कहो व्यास यह कलियुग लागो ❀ धर्म कर्म नृप धर्महिं त्यागो ॥
ताते आपु बदि पहँ जैये ❀ गालि हेवार हरि आश्रम रहिये ॥
कलिमें सकल गोत्र बाधि करिहैं ❀ पाप तिहारे ऊपर धरिहैं ॥
कलियुग नगर हेतु हम भाखा ❀ दोष झूठ तव ऊपर राखा ॥
ऐसे व्यास कहेउ बहु ज्ञाना ❀ धर्म व्यास बिनजानको आना ॥
ब्यासगये निज आश्रम काहीं ❀ कहेउ धर्म अब रहिबे नाहीं ॥
चलो कृष्ण पहँ मांगि रजाई ❀ जो उत्तरदिशि चाहों जाई ॥
सुनि अर्जुन अतिशय सुखमाना ❀ भीम नकुल मंत्री हर्षाना ॥
वेगवंत अर्जुन रथ साजा ❀ तापर चढ़े युधिष्ठिर राजा ॥
चारि बंधु भूपति सँग लीन्हें ❀ हरिपुर ओर गमन नृपकीन्हे ॥
चले अलौकिक देखत शोभा ❀ जितहिंजाततितहींमन लोभा ॥
कतहूं शिक्षित पंडित बालक ❀ कतहूं जात सैन रिपुशालक ॥
कहूं लरत जग अतिहित तारे ❀ उज्वल गिरि समान भैभारे ॥
माल महिष उष्ट्रादिक नाना ❀ लड़त शब्दते फाटत काना ॥
कहत धनुर्बिद सूरति छीजत ❀ पुरबाहर ह्वै कोउ कोउ ईछत ॥
कोउ नृत नाटक करत रिझावत ❀ वारमुखी नाचैं गुणगावत ॥
मालीगण सींचत कहुँ बागन ❀ मधुकर कामअंध सहरागन ॥
कहुँ कहुँ होत युद्धके साजा ❀ आवतनृपन पत्र जहँ राजा ॥
सो०—को कवि करै बखान, जहाँ रहैं श्रीब्रह्मप्रभु ।
असकोत्रिभुवनआन, जो न भजत असश्रीप्रभु ॥
कहुँ विवाह चूड़ा कर नाँदी ❀ गावत मंगलचार सदादी ॥
सर अरु बाग नदीतट पावन ❀ भ्रमती नारी काम लजावन ॥
दो०-कोकिलपिकअरु मोरगण, सुमनसहितऋतुराज ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रहतसदा हरिकी कृपा, हो नितप्रति यह काज।
यहि विधि लखतसबंधुनृप, करत मिलनसबपास॥
रामकृष्णकहिमिलतसब, कुशल कहत हम दास॥

कहेउ कृष्ण नृप कहु केहि काजा ❀ आय सकल बन्धु महाराजा॥
व्यास बचन अरु न्याय बतायो ❀ कलियुग घोर पापमय आयो॥
जान चहत उत्तरदिशि प्रभु हम ❀ कीन्ह गोत्रबध हम नाहीं कम॥
जो आज्ञा आगे प्रभु करी ❀ हम तो पलककोर प्रभु हेरी॥
भाष्यो कृष्ण सुनो हे राजन ❀ कलियुगअहैघोर याहि काजन॥
तुम्हैं गोत्रबध पाप न ह्वैहैं ❀ पुनि कलियुग वासी नहिंछैहै॥
कहि है धर्मराज जो कीन्हा ❀ पाप पुण्य उनहूं नहिं चीन्हा॥

सो०-व्यासकहेउ यहि हेत, कलिवासी जो जनकरत।
दोष तुम्हैं जो देत, पाप लहै तुव सोइ सुनौ॥

कलियुग ऐहैं घोर अपारा ❀ तामे चले न कछु आचारा॥
वृद्ध स्यान मम भूलि हराई ❀ मानहिं मातुपिता नहिं गाई॥
यौवनमदवश करहिं कुकर्मा ❀ तजिहैं देश लोक कुलशर्मा॥
ब्राह्मण जोतहिं हल तजिपूजा ❀ जोतजिदिवसकरहिनिशिपूजा॥
वीर्य्यहीन क्षत्री ह्वै जैहैं ❀ तबहिं म्लेच्छ नृपतिह्वै ऐहैं॥
वैश्य देव द्विज सेवा हीना ❀ कहिहैं शूद्र ब्रह्म हम चीन्हा॥
क्षत्री भूमि हीन ह्वै जैहैं ❀ बूझो नृप कब कलियुग ऐहैं॥

दो०-भद्रमास शुभपक्षतम, त्रयोदशी रविवार।
अबते वाकी मास षट, कलियुगकर अवतार॥

जब कलियुग गंगाकह जाना ❀ तबह्वैहैं अति अवगुण नाना॥
नारि धर्म जो विधवा करिहैं ❀ कन्या गर्भ कुमारहिं धरिहैं॥
कहँलों कहौं प्रभाव भुवाला ❀ संकर वर्ण होई कलिकाला॥
कछुदिन करहु राज्य नृप आछे ❀ हम सहचलबकछुकदिनपाछे॥
अब तुम नगर जाइयो राजन ❀ प्रथम कहेउकियेउजब साजन॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-सुनि नृप प्रभु के वचन वर; मिले सबहिं भूपाल।
अर्जुन रहिगे द्वराकहिं, आये सब जन हाल॥
नगर आइ भूपाल सुहाये ❀ पौत्रहि बोलि सुकंठ लगाये॥
माताको सब बात जनाई ❀ कृपाचार्य सुनतै दुख पाई॥
धीरज धरि कुन्ती यह भाखा ❀ पतिसँग गमनमोंहिंविधिराखा॥
पुत्र बिना कस रहिहौं राई ❀ जावो चहत सुतहिं तुमहाई॥
कलियुग केर प्रभाव बतावा ❀ तबकछु हृदय ज्ञान भरि आवा॥
कलियुग पुत्र जो पिय अब आयो ❀ ताते मान मोहिं नहिं भायो॥
हम सबको तिल अंजुलि दीजै ❀ उत्तर पंथ गमन तब कीजै॥
दो०—चलत कृष्ण आपद्ध कहे, तब लग माता जाय।
आये अर्जुन तेहि समय, गये मातु लग धाय॥
कुशल प्रश्न सब यदुकुल केरी ❀ अर्जुन कही कथा जस हेरी॥
कहेउ कृष्ण नृप रही कछुकदिन ❀ सुनि नृपभयेप्रशंसतछिनछिन॥
ह्वै कारज अब ह्वैहैं पारथ ❀ मातुजाब यहसबबिधिस्वारथ॥
सन्ध्या भई सबन शुभ कीन्हा ❀ भोर अन्हाई दान सब दीन्हा॥
क्रिया कराई सुबिर सुहाये ❀ गेहहुते बहु दिन अब आये॥
ताही समय आगमन कीन्हा ❀ पुरजन सहित नृपति वर चीन्हा॥
बन्दि चरण सब जन तब ईछे ❀ चरण धोई आसन पर पीछे॥
दो०-कुन्ती द्रुपदी भगिनि प्रभु, तुव पितु मातु सबंदि॥
आशिषदीन्हों मुदितमन, श्रीवर विदुर अनंदि॥
सन्ध्या देखि क्रिया नित कीन्हें ❀ भोजन कीन्ह सबन मुद लीन्हें॥
ताहि समय नृप बंधु सयाना ❀ विदुरहि कहेउ पौढ़िये आना॥
करहु तात अब तुम विश्रामा ❀ यह सुनि कहेउविदुरनिजकामा॥
विदुर बचन भूपति सों बोले ❀ चाहत मिलन भ्रात मन डोले॥
आज्ञा दियो धर्म को राजन ❀ विदुर चले मिलिबे के काजन॥
दो०—किंकर जन लैगे विदुर, चरण गहे कहि नाम।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सुनत नाम नृप उठि मिले, सह संजय अभिराम।
सो०—बिदुर मिले सह नारि, बार बार धीरज कहत।
दीन्हेउ जो मुख चारि, ताकी प्रभुता है महत॥
हा हा विदुर कहत भूपाला ❀ अस कहि दम्पति ठोंकत भाला॥
हाय विदुर मम सुत सब जूझे ❀ अजहुँ क्षुद्र तनु प्राण असूझे॥
नात गोत्रजन सो भयो हीना ❀ पुत्रहीन हम अबहूँ दीना॥
मरत न फट्यत हियो है भाई ❀ मम सम भयो न होनेउ आई॥
अस कहि दंम्पति रोवन लागे ❀ अस सुनि जनमेजय नृप आगे॥
धीरज दियो विविध परकारा ❀ दियो ज्ञान भूँ एक अकारा॥
तब बोले नृप अधं सुजाना ❀ कहँ कहँ गये बंधु इत आना॥
इतते गये सुनहु नरपाला ❀ रहेउ उजैनि जहाँ महकाला॥
चर्मवती अरु तीर्थ अनेका ❀ सोमनाथ बसि भयो अशोका॥
गंगाद्वार वास तब कीन्हा ❀ आये नैमिषारण्यहिं लीन्हा॥
दो०—बैजनाथ को परस पुनि, कियो जनकपुर बास।
जगन्नाथ में जायकर, पूजी मनकी आस॥
वाराणसी तहाँ ते आये ❀ विश्वेश्वर के दर्शन पाये॥
गये हिमालय कहँ भूपाला ❀ अलका पुरी लख्यो सुख शाला॥
व्यासाश्रम दश वर्ष बिताये ❀ तहँ ते चित्रकोट कहँ आये॥
तहँ सत्संग ऋषिन कर लीन्हा ❀ ब्रह्मघाट आये कर चीन्हा॥
तहँ ते गये बड़े सो देशाहि ❀ भुवनेश्वर किय दर्श विशेषहि॥
रामनाथ कर दर्श सुहाये ❀ तात तहाँ ते इत को आये॥
लहि मैत्रेय पास कछु शुभगति ❀ तुमहि देखिबे आय गये साति॥
तबसुधि बिसरतिहुती न नेको ❀ देखत तुमहिं सुखी नहिंएको॥
चलो भ्रात तप हेतु महा बन ❀ जहँ थल अहै व्यासकरपावन॥
दो०—सुन नृप दुःख न मानिये, देखे तीर्थ अनेक।
हरि बिन जग सूनो सबै, तेजवान तब एक॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सोई जल सोई थल जानो ❀ निर्गुण सगुण तैसेही मानो ॥
सोइ पृथ्वी सोई आकासा ❀ आपुइ स्वामी आपुई दासा ॥
आपहि राजा आपुहि रानी ❀ सोई अग्नि सोई है पानी ॥
सोइ धन सोइ चोर कराला ❀ सोई मरत सोई है काला ॥
सोइ है हीन सोई है पावन ❀ सोई है राम सोई है रावन ॥
हरि आपुइ नर आपुइ नारी ❀ आपु गृहस्थ आपु ब्रह्मचारी ॥
आपुहि पिता आपुही माता ❀ आपुहि पुत्र आपुही भ्राता ॥
दो०-आपुहि गुरु कवि आपही, आपुहि शिष्यसुजान ।
आपुहि विद्या चतुर्दश, आपुहि गुणगण ज्ञान ॥
आपुहि पंडित आपुहि ज्ञानी ❀ आपुहि महिष आपुही सानी ॥
आपुहि ग्वाल आपुही गाई ❀ आपुहि आपु चरावन जाई ॥
आपुहि भँवर आपुही फूला ❀ आपुहिज्ञान बिना जल मूला॥
राज रंक दूजो नहिं कोई ❀ आपुइ आपु निरंजन होई ॥
ज्यों बहु दीप ज्योति है एका ❀ तैसे जानै ब्रह्म विवेका ॥
याहि प्रकार जाको मन लागे ❀ जरा मरण नाशै भ्रम भागै ॥
योग समाधि ब्रह्म चित लावै ❀ ब्रह्मानंद सुनहि तब पावै ॥
सोइ बैंकुंठ सोई है नरका ❀ सोइ है शोक सोई है हरषा ॥
दो०-मातु सोई पितु सुत सोइ, सोइ नृपति सोइ रंक ।
एक रूप जानो सुखद, नृप मति करिये शंक ॥
बोले विदुर सुनहु हे राजा ❀ दुखवशदेखिपरत केहिकाजा ॥
कहा अंध नृप सुनि हे भाई ❀ भीम बचन मोहि सहा न जाई॥
बारबार गुहिंदे दुदकोर ❀ कहै न आओ निकट हमोर ॥
तैनेही सब काम बिगारा ❀ घरमें प्रगटो शत्रु हमारा ॥
खाय हमारी जूंठ जुठाई ❀ अब हमहीं सो करत खुटाई ॥
दासी सुतसों लाभ न होई ❀ कोटि उपाय करौ किन कोई ॥
सुनि असबचन फटत ममछाती ❀ यहै शोच मोको दिनराती ॥
मौन साध चुपको ह्वै रहिहौं ❀ अपने मनकी कासों कहिहौं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

दो०-औरसकलसुखदेत, भीमकहतमोहिंकटुबचन ।
सो न सहब मन लेत, को भाषै हरिकी रचन ॥

विदुरजाहि जिमिनृपकटुभाषत ❀ श्वानसमान नृपातिहुवभाषत ॥
जैसे लकुट हनत नरनायक ❀ भीम कहत नृपसे तुवलायक ॥
खात शूद्र गृह लाज न आवत ❀ हीन वंश अजहूँ होरावत ॥
ताते करौ चलो तप जाई ❀ नातरु लहौ अधिक दुखभाई ॥
सुनि कटु बैन तपहिं कहँ ईछे ❀ विदुर सुनाय ज्ञान कह पीछे ॥
सुनो बंधु जगकर व्यवहारा ❀ जामें बँधो सकल संसारा ॥
सुखदुख स्वप्न जानियो राजा ❀ यह सब देह नेह के काजा॥

दो०-इंद्री हय अरु मन घांहुक, देहं सुरथ रथवान ।
याके वश भ्रमत फिरत जीव कछूहै आन ॥

सो०-कह संजय मतिमान, रूपहि देखा साधुको ।
तादिनकछुनहिं आन, जड़ चेतन उत्पत्तिसत ॥

दो०-भई व्यतीत सुरैनि तब, भयो ज्ञानको भोर ।
धर्मनृपति आवत भयो, बंदन पितु हित ओर ॥

नृपाति भीम अर्जुन तब वंदे ❀ नकुल देव सहदेव अनंदे ॥
नाम कहेउ तब पांडव चीन्हों ❀ गद्गद ह्वै दम्पाति आशिषदीन्हां ॥
कृपाचार्य मिलि विदुरहि भेंटत ❀ संजय मिलो तापत्रैय मेटत ॥
मिलि युयुत्सव आदिक बहुतेरे ❀ औरौ सकल बसैया नेरे ॥
कर्णपुत्र नृप हृदय लगायो ❀ मेघवर्ण मिलि दुसह नशायो ॥
बैठे निजनिज आसनपर सब ❀ अंध नृपाति गद्गद बोले तब ॥
अहो पुत्र धर्म सुखदाता ❀ किय प्रतिपाल मोर अरुमाता॥
दुर्योधन आदिक सब जूझे ❀ तबसों तुम मोको अति बूझे ॥
बिसरो दुख पुत्रन बध मोहीं ❀ रोमहि रोम अशीशत तोहीं ॥
मम सुत तुमहिं दुःख बहुदीन्हों ❀ फल पायो ते आपन कीन्हों॥
अब ममदेहं सकल जरजरसै ❀ भइ बलहीन दीनगति दरसै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सरिता निकट वृक्ष मोहिं जानो ❀ त्वक्ष उखरिबो शंक न मानो ॥
दो०-आज्ञा दीजै जाइँ हम, दम्पति भ्राता साथ ।
कर्म मुक्ति हित बनै कछु, उताहित धनजोहाथ ॥
नृप सुनि यह बंधुनसह दुखअति ❀ बोलत भै तब ज्ञानचक्षुपति ॥
हमरे तुम सबके सुखदाता ❀ केहिविधिकहौंजाहु असबाता ॥
पुनि पितु जाहु नीक कत हेतू ❀ होय सुभग सह मंगलसेतू ॥
तब कुंती बोली बिलखाई ❀ हमहूँ चलब संग तुव राई ॥
सुनतै सब काहुन समुझावा ❀ कुंतीके मन नेकु न आवा ॥
तब धृतराष्ट्र कहन अस लागे ❀ धर्मराज राजा के आगे ॥
पुत्र मात सम्बंधी जोई ❀ जाना है औरौ सुन सोई ॥
पिण्डा श्राद्ध सबन की करिकै ❀ मोरजाब पुनि सब व्रत धरिकै ॥
सो०-सुनि धर्मज गण ऐन, बन्दि सबनि पितुपदपदुम ।
आये निज निज ऐन, नित्यक्रियाभोजन कियो ॥
नृप ह्वै शुचि सहदेव बुलाये ❀ तिननृपआयसु सुखद सुनाये ॥
लै बन सबन वस्त्र पट नाना ❀ गज रथ बाजी उष्ट्र बिताना ॥
अरु भोजन के साज अथोरा ❀ लै मातिद्दग पहँ जाहु करोरा ॥
यह सुनि किंकर सकल बुलाये ❀ जो जेहिलायकताहि सुनाये ॥
निकरत सुखबानी किंकरजन ❀ लैसबगये मिलो अतिअरुबन ॥
लादि साज नृप मंदिरमों सब ❀ होनलागतबसाजसकल तब ॥
दो०-निशा भयो पुनि विक्तमों, गये धर्म के राज ।
पितहिं बंदि लागे करन, सबजनसबबिधिसाज ॥
होम भयो पिण्डा नृप दीन्हा ❀ जसविधिवेद कहेउ तसकीन्हा ॥
भोजन श्राद्ध यथा विधि कीन्हों ❀ दान अथोर विप्र नृप दीन्हों ॥
याचक सकल अयाचक भयऊ ❀ इकदिन एकनिशा इमिगयऊ ॥
अरुणोदय लखि चालन कीन्हा ❀ दान दयासों ब्राह्मण दीन्हा ॥
आशिषदै निज धामन आयो ❀ जन्मेजय सुनि मुनिसब गायो ॥

न्या० का० प्रेस,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-कुन्ती मिलिगंधारिता, विदुरसहित मिलि धर्म ।
सबन मिलत आगे चले, पुरजन सह जिमि सर्म ॥
पुरजन महँ सुरराज सम, नृप धर्मज सहभाय ।
नारी नर सब विकल ह्वै, हा हा हा काहिराय ॥

नृप धृतराष्ट्र सबन समुझावा ❀ मिलिसबाहिनयोजनइकआवा ॥
धर्मराज कहँ आशिष दीन्हा ❀ संजयकहँ प्रबोध तब कीन्हा ॥
सब काहुन पलटायो राजा ❀ गागेय मिले अर्द्ध महराजा ॥
माया मोह तोरि तृण इव सब ❀ आगे चले सुनहु नृपवर अब ॥
बिदुर कंध धरि कर नरपाला ❀ पाती कंधा गंधारी बाला ॥
तापाछे कुंती धरि हाथा ❀ चले नवाय गंग कहँ माथा ॥
करि मज्जन अरु बहु कर दाना ❀ चले बनाहिं चारिउजन माना ॥
याहि विधि करत बास मगमाहीं ❀ चले जात नित भये दुख नाहीं ॥
व्यासाश्रम मिलि सब मुनिजूहन ❀ भे प्रसन्न भोजत फलमूहन ॥
व्यासहिंमिलत अधिक सुखपावा ❀ कहमुनिभलीकीन्ह जोआवा ॥
जैमिनि शुक अरु बकदालंभी ❀ औरो मिले मुदित मुनि तंभी ॥
कह नृप लहेउ दुःख मैं ताता ❀ सुतजूझन आदिक बहु बाता ॥
कहमुनि प्रथम तुम्हैं समुझावा ❀ नेकु हृदयमँह ज्ञान न आवा ॥

दो०-निज तनु तूल भराइकै, निजकर अग्नि लगाय ।
दोष देय तब ईशको, कह्यो ऋषै समुझाय ॥

सो०-ताते करु तप भूप, हृदय राखि अव्यक्त प्रभु ।
देखि चराचर रूप, जो त्रिभुवन महँ एक प्रभ ॥

करन लगे तप नृप औ रानी ❀ विदुरआनिकरि ज्ञान सुहानी ॥
मै अद्भुत सदृश यमराजा ❀ मग्न फिरत बनऔरन काजा ॥
उत नृप धर्मराज दुख पावत ❀ लख्यौतबै ऋषिनारद आवत ॥
उठे सभासद मुनि कहँ वंदे ❀ लख्यो धर्म्मनृप बहुत अनंदे ॥
अर्घ्य देइ आसन बैठारयो ❀ मुनिसमीपअसबचनउचारयो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ मुनीशा ❀ फिरत रहत तुम सदा अहीशा ॥
दो०-तुम मुनीष सर्वज्ञ प्रभु, जानत मन भगवान ।
कहो खबरि कछु विदुरकी, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आश्रमवासिकपर्वणि
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

विदुर विरक्त फिरत बनमाहीं ❀ त्यागो तनु गे हरिपुर काहीं ॥
तब पितु और दोऊ पटरानी ❀ गई अग्निजारिसुनुगुणखानी ॥
भये विकल सुनि बन्धु नृपाला ❀ जोगतिहोतबिकलजिमिकाला ॥
रोवत बार बार हा हा कहि ❀ मूर्च्छित ह्वैकै गिरत अहैंमहि ॥
यह देखत बोले मुनि नारद ❀ सुनु नृपवर विज्ञान विशारद ॥
मरण भयो न कछू यह जाना ❀ समुझन हेतु कहेउ अस राना ॥
है पितुभक्ति सदृश कोई नाहीं ❀ परपितु मानत सम पितुआहीं ॥
अब चलि दरश करौ पितु केरा ❀ नातरु कालु आयगो नेरा ॥
दो०-यह कहिकै नारदऋषै, चले ब्रह्मपुर ओर ।
अब आगे सुनु नृप कथा, वरणों सकल बहोर ॥
तुरत तयार नृपतिवर भयऊ ❀ बंधुसहितनृपमिलिअब गयऊ ॥
नर नारी औ सकल समाजा ❀ नगर महाजन अरु द्विजराजा ॥
चले सकल जेहि राजत पुरमों ❀ बाण सदृश यह लागत उरमों ॥
सो०-चले नृपाल भुआल, साहित बंधु पुरजन सकल ।
ठौर ठौर रखपाल, राखि चले हस्तीनगर ॥
नृप तब नगर राखि रक्षकगन ❀ चलेसबनसहदुखितनृपतिबन ॥
तीरथ करत वास भगवाना ❀ चले बनहिंजहँ कुरुपतिराना ॥
गये व्यासआश्रमके पासा ❀ मै पदत्रान बिहीन सदासा ॥
मिलतऋषिनकहँविविध बिधाना ❀ गयेजहाँ हैं व्यास सुजाना ॥
मिले व्यासकहँ बंदन करि करि ❀ बारबार शिरपद महँ धरि धरि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दै आशीश नृप कहँ मुनिराया ❀ कृपा कटाक्ष सबन पर दाया॥
मिले पिता दै मातन काहीं ❀ नाम सुनाइ कहेउ कछुनाहीं॥
सकल मोहवश जल नैनन महँ ❀ को अस कहै दशा नृपमै तहँ॥
दो०-दै अशीश सब कहँ सबन, बैठे सब जनराय।
बैशम्पायन कहत हैं, जन्मेजय पहँ गाय॥
दुर्लभ देखि राय कहँ राजा ❀ सहमतुनहिं दुर्बल तपकाजा॥
बोले नृपवर गद्गद बानी ❀ कहँ हैं विदुर कहेउ तब रानी॥
कुंती कह मै परमहंस सो ❀ ढूँढ़न चले अंकल बनै सो॥
देख्यो मागिजात बनमाहीं ❀ गोहरायो ठिठुके तेहि नाहीं॥
तदपि वृक्ष आश्रित चीन्हों जब ❀ नयननीर भरिरहेउ ठाढ़ि तब॥
चरण गहेउ धर्मजके राजा ❀ ताहि समय दुंदुभि बरबाजा॥
विदुर त्याग तनु ताही औसर ❀ गे यमराज विदुर ह्वैकैबर॥
देखि धर्म नृप बंधु बोलाये ❀ कहि सबकथानयनजलछाये॥
दाहन चहेउ तबै वाणी भय ❀ जीवन्मुक्ति विदुरयमकहहय॥
दो०—यमराजाको अँग है, विदुर भक्त भगवान।
धर्मराज हिय सुमतिभो, परबोधिक सुनिकान॥
सो०-आयो राजा धर्म, कहेउ कथा सब विदुरकी।
कीन्हों विधिवत कर्म, निज कर राजा अंधवर।
रहे बनहिं कछु दिन शुभ बीतत ❀ महादुःखलखिमुनिवर चीतत॥
पूँछेउ सबसों को केहि चाहत ❀ जासों होत उऋणमों दाहत॥
कुंती कहेउ कर्ण मैं देख्यो ❀ गंधारी यामात्राहि लेख्यो॥
सुभद्राआदिक सुतकहँ मागत ❀ पितुसुतबंधु पतिहिशरणागत॥
सबहि कौशिकी तट लै गयऊ ❀ तप प्रभाव सब आवतभयऊ॥
दिव्यदृष्टि अंधाहि नारासह ❀ सुनत लगायो कह हाहा तह॥
कोउ पति मिलत महासुद छाये ❀ कोउकोउपुत्रन हृदयलगाये॥
कोऊ भाई बापहि लावत ❀ दुखमिटिगैकोउ मंगल गावत॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रैनि एक सुखसे सब बीतत ❀ अरुणोदयलखिसबजनचीतत॥
फाँदे सब बन नृप छन माहीं ❀ रहे न एकौ धौं कोउ नाहीं॥
सकल मोह बस नारि अपारा ❀ धंसी जलै करि घोर चिकारा॥
कोउ कोउ बनमहँ ढूंढत भागत ❀ कोउकोउप्राणतजतभैलागत॥
काउ कोउ व्याघ्रादिक धरिखायो ❀ जलमहँधसिसबप्राण गँवायो॥
कोउकोउ शून्यहोम मखशाला ❀ जरीं अग्निमहँ जे वरबाला॥
दो०-सब काह्न तनु त्यागि करि, गई पतिन के पास।
व्यासकहह्नु यहधर्मसों, अबभल तबहिं अनाथ॥
सो०-आये सुनि नरपाल, जहां होमशाला नृपति।
सुनु अब कछु सुत हाल, वैशम्पायन कहतभे॥
धर्मनृपति मख करत रहे तहँ ❀ मखशाला रह व्यासेकर जहँ॥
अग्नि प्रचंड शिखा अतिबाढ़ी ❀ अर्द्ध नृपति अंगहि तहँडाढ़ी॥
कुंती चलन चहेउ उठि तहँते ❀ अक्षविहीन नृपार्तिवर जहँते॥
धर्म बिचारि जरी संग तिनके ❀ रामकृष्ण कहिकाहि वैजिनके॥
कोऊ ऋषि अरु पांडकुमारा ❀ रहे न तब कोउ उठवन हारा॥
आय नृपति यह दशा निरेखी ❀ कीन्हों रुदन सुनत जिनदेखी॥
रोय उठे सह नृप बंधुन जन ❀ और नगर बासी आये बन॥
रोवहि कुंतिहि गंधारी कह ❀ हायहाय कहि अंधनृपतिसह॥
लेकर अस्थि सुंदपाति केरी ❀ लीन्हें अस्थि ढूंढ़ि मा केरी॥
कीन्हें कर्म सविधि गंगातट ❀ जहँपवित्र बन मोहिं एकवट॥
कीन्ह तिलांजलिदेय सविधिविधि ❀ चलेधीर धरिनगरनृपतिसिधि॥
करिवंदन ऋषिव्यास सबनको ❀ चलेमगहिंमहँश्रमनहिं मनको॥
दो०-बास चलनकरि मंगनसब, नृपराजनसह भाय।
नारी संग सुभद्र सह, द्रुपदीसह दुखपाय॥
सो०-आयेनगरनृपाल, दिये तिलांजलि दिवस निशि।
एकादश सुखपाल, दिये बाजि नारी सबन॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

दो०-द्वादशवें दिन भूपमणि, दीन्हों दान अथोर ।
बासलसो दम्पति सबै, सहकुन्ती सब ओर ॥
पायो बास सुखद सब काहू ❀ मिटेउ दुःख प्रबालित जो राहू ॥
धर्मराज जो विदुर कहायो ❀ निजपुर वास न्याय मनलायो ॥
जन्मेजय सुनि भाषन लागे ❀ सम्पुट जोरि मुनीशन आगे ॥
नाथ कहौ यम केहि अपराधू ❀ भये मनुज गुणवर अरु साधू ॥
बोले मुनि राजा के आगे ❀ गद्गद बचन प्रीति रस पागे ॥
एक मण्डपी ऋषी सुहावन ❀ करतहु तप पवन माधि पावन ॥
बहु तसकर चोरी कर लाये ❀ तहँ बन मध्य मोर करि पाये ॥
तहँ बन डारि सकल तब भागे ❀ उन नृप आपुउदय लखिजागे ॥
धन विहीन लखि रक्षके डाटे ❀ तिनके चोप रह्यो नहिं काटे ॥
चरण चिह्न देखत ते दौरे ❀ धन देख्यो देख्यो मुनि बौरे ॥
धन लदाइ मुनि बूझन लागे ❀ अर चोर क्रोधहि अति पागे ॥
धरे मौनव्रत मुनि नहिं बोले ❀ धनसहायकरि गयो नृपतौले ॥
नृप देखत अति क्रोधहि पागे ❀ कहिकटुबचनकहनअस लागे ॥
शूली देहु चढ़ाय सुचोरहि ❀ दियचढ़ाइ तब मुनिवरऔरहि ॥
दो०-शूली पर बैठे ऋषय, धरे तत्व को ध्यान ।
कष्ट पाय सबै ऋषि तबै, आये ऋषि के धान ॥
सो०-खगमृग रूपनधारि, आये मुनि बूझन लग्यो ।
पाप कौन असचारि, जो ऋषिवर अतिकष्टहौ ॥
दो०-हरि इच्छा असकहिदयो, सबसों मुनिवरगौन ।
राय सुनत दीन्हों छुटै, आयो यम के भौन ॥
हे यमराज कहौ केहि पापन ❀ लह्यौ घोरदुख सुनुसोइदापन ॥
कह यमराज सुनौ मुनि राजा ❀ लह्यो कष्टअतिसुनुसोइकाजा ॥
है पतङ्ग गद वाली कीन्हों ❀ तेहिकारण इतनो दुखलीन्हों ॥
यह सुनि क्रोधित है ऋषि बोले ❀ अग्निशिखामुखअग्निहि बोले॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शूद्रसदृश तुव प्रकृति जनावत ❀ शूद्रयोनि जन्मज तुम पावत ॥
सुनि यमराजचरणगहि लीन्हों ❀ ह्वै प्रसन्न तब आशिष दीन्हों ॥
ह्वै है शूद्र मुख भाषन कीन्हों ❀ हरिके भक्त और सिखदीन्हों ॥
पुनि यमराज होई हो आई ❀ आयसुनिकहि अतिसुखपाई ॥
विदुर व्यास तप बल ते राई ❀ मै हैं शूद्र प्रथम मैं गाई ॥
बोले जन्मेजय भूपाला ❀ व्यास रच्यो नरबश सबबाला ॥
बनमहँ देहत्यागि तिन्हकीन्हों ❀ मायातप यह चाहत चीन्हों ॥
बोलेसुनि तपबल ऋषिव्यासा ❀ कीन्ह देखु अमरावति वासा ॥
मैं जानी नृप तुव मन ईक्षित ❀ ताते आवत पिता परीक्षित ॥
ताहि समय नभ गहगह बाजत ❀ आवतदेखि विमानहिगाजत ॥
किन्नर देव नृपाति सँग आवत ❀ बाजत बेणु अप्सरा गावत ॥
नवल नारि नलनी कच राजत ❀ कुचयुगझरत फूलमकुबाजत ॥

दो०-चमकत मोतिन जोतिमुख, हँसत फँसत चितदून ।
लाजत देखत जाहिराति, मति न रहत शुभजून ॥

सो०-यहि विधि सुभग सुजान, आयो रथ बगमेलमें ।
मिले पतिहि दै यान, बार बार वन्दत उदित ॥

मिले देव किन्नर सब राजा ❀ बाजे हरि तन आनँद बाजा ॥
मिले परीक्षित कहँसब नृपगण ❀ नातगोत्रसुत सहपुरजनजन ॥
तब जन्मेजय द्विजन बोलायो ❀ आशिष पाय प्रसन्न जनायो ॥
देव सकल पितु सह उठि ईछे ❀ मज्जन करवायो सब के पीछे ॥
द्विजन बोलि बहु दान दिवायो ❀ ब्रह्मदेव सब रसन जेबायो ॥
सिंहासन पर पूजा कीन्हों ❀ चरणधोय चरणामृत लीन्हों ॥
सुभग सुगंधित माला दीन्हों ❀ शय्यादै आश्वासन कीन्हों ॥
तब पश्चिमलखि अस्तदिवाकर ❀ द्विजभूपन मिलिमिलेपुत्रवर ॥
दै अशीष निज पुत्र अनन्दे ❀ चढ़े प्रथम पुनि मुनिकहबन्दे ॥

दो०-बाजैं किंकिणि चारु ध्वनि, नाचन लागीं नार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जाइ पहूँच्चो इन्द्रपुर; तनक न लागी बार ॥
तब जन्मेजय भूपवर, मुनि अस्तुति अनुरागि ।
सूत शौनकादिक कहत, निशा बीति सब जागि॥
अरुण चूण अरुणोदय लागत ❀ श्रोता वक्ता सब जन जागत॥
मज्जन करि आसन प्रति आये ❀ जन्मेजय इमि अर्ज सुनाये ॥
कहो तात सब कथा सुहावन ❀ पापनशावनिसमपुण्यबढ़ावन॥
शत्रु नाशनि मित्रनि सुखदानी ❀ कलिनाशनिमुनिमहजिमिबानी
कल्पलता कल्पाय सुतासी ❀ कुंदकली उचलित कुंदासी ॥
जीवनसी जीवात्मा ईशी ❀ परमतत्त्व परतत्त्व तमीशी ॥
दो०—जीवन धनसो ईशसी, पास सदृश गुणदाय ।
सो अब भाष्यो महामुनि, कलिजन पापनाशाय॥
सो०—मुनिवर भाष्यो बैन, राजा सुनु धरि ध्यान यह ।
सव सुखको जो ऐन, पढ़तसुनतमुखनवलनित ॥
यक दिन राजा धर्म, भोर उठे श्रीकृष्ण कहि ।
कीन्हों नितकृत कर्म, बन्धुनसह राजत सभा ॥
ताहि समय कलियुग सुधिआई ❀ देह दशा धर्मज दुखपाई ॥
कह पारथ हरिपुर अब जैये ❀ उत्तर चलौ कृष्ण पहँ लैये ॥
मात पिता के हित इत रहेऊ ❀ ते सब गाय सविधिते कहेऊ॥
अब रहिबो नहिं उचित सुभाई ❀ ताते लावहु श्रीहरि जाई ॥
अर्जुन सुनत सुभग रथसाजा ❀ भीमाहिमिले सबहिंपुनिराजा ॥
दो०—वेगवन्त अर्जुन चले, जहाँ बसत भगवान ।
आश्रमवासिक पर्व्व कहि, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते आश्रमवासिकपर्वणि
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

इति आश्रमवासिकपर्व समाप्त ॥ १६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ महाभारत भाषा।

मुशलपव १७.

दो०-श्रीगिरजा गणपति सुमिरि, वरणि भक्ति हनुमान।
मुशल पर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान॥
जन्मेजय मुनिसों जवन, भाष्यो सुनि शुभगाथ।
ताहि सूभग भाषा करौं, धरिशिर निज प्रभुपाथ॥

बन्दौं गुरु गोविन्द के पायन ❀ जिन प्रसाद दूजै सुखदायन॥
सुमिरौं अवधनाथ सीतापति ❀ नारद शारद सुमिरि महापति॥
सुमिरौं आदिकाव्यघटव्यासहि ❀ जाकीसाविधिभाँतिमोंहिआशाहि॥
ईश्वर रूप जानि जगतीको ❀ सुमिरौं राम आदि शिवनीको॥
संवत् सत्रहसै शुभ तीसा ❀ भाद्रमास सप्तमि रजनीसा॥
औरंगशाह दिलीपति नायक ❀ सबलसिंह तव हरिगुण गायक॥
वैशम्पायन कहत सुनाई ❀ सुनहु सार्थ कुलवर नृपराई॥

दो०-इत अर्जुन गे द्वारकहि, कुशल हेत सुख पाय।
माग मिले नारद सु मुनि, रथमों लिये चढ़ाय॥

जब धृतराष्ट्रादिक सज्ञानी ❀ गे हरिपुर सह कुन्ती रानी॥
विविध भाँति भाषत शुभ गाथा ❀ जात चले अर्जुन मुनि साथा॥
पहुँच निकट द्वारिका ग्रामा ❀ मिले प्रथमही श्रीबलरामा॥
अनिरुध साम्ब प्रद्युम्न सुआदी ❀ औरौ चले देखि मिलनादी॥
देखि पार्थ नारद मुनिराई ❀ उतरे रथ सुमिलन हित धाई॥
यदुवंशिन प्रणाम तब कीन्हों ❀ नारदमुनिआशिष तबदीन्हों॥
पग बंदे पारथ हलधर के ❀ हिये लगाय कहतहौं नीके॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah
रघु० का० प्रेस.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जेते कृष्ण पुत्र अरु नाती ❀ बंदे चरण मिले सब जाती ॥
कुशल प्रश्न इत उत सब पूछे ❀ मिले सात्यकादिक छलछूछे ॥
यहिविधिमिलत पार्थसुनिराम ❀ राजहिंमिलिगेजहँ सुखधाम ॥
सम बंदे तहँ मुनिवर ईछे ❀ अर्जुन कृष्ण मिले तहँ पीछे ॥
अर्घ्य पाद्य मुनिवर कहँ दीन्हा ❀ विधिवतपूजिसुआशिषलीन्हा ॥
लै अंतःपुर गे मुनि पारथ ❀ मिले पार्थ सबत्रियनयथारथ ॥
मुनिको सबन दण्डवत कीन्हा ❀ मनभावतआशिषशुभ लीन्हा ॥
षटशनिन सेवा मन दीन्हों ❀ पार्थकृष्णमुनिभोजन कीन्हों ॥
दो०-भोजन करि बीरा लयो, सुभग सुगंधित लेपि ॥
तब सोये बर पार्थ भट, बूझेउ नारद सोपि ॥

सो०-आगम कहौ मुनीश, कोहिकारण आवन भयो ।
कहेउ नारद सुनि ईश, ब्रह्मा पठयो आपु पहँ ॥

मानुष उमिरि अधिक ह्वै गयऊ ❀ अजहुँनआवन हरिकरभयऊ ॥
प्रभु डर काल डरत नहिं आवत ❀ यदुकुलकतहुँजीवनहिं जावत ॥
तव प्रसाद पितु मातु तुम्हारे ❀ उग्रसेन आदिक जे ठारे ॥
तेऊ मरत न सुनहु कृपाला ❀ ब्रह्मा है याहि हेत बिहाला ॥
कहाति सृष्टि नइ नीति चलाई ❀ कोहिकारण मोहिं ईश बनाई ॥
चर्तुमुखा केहि कारण भाषत ❀ देवन में सारिता करि राखत ॥
हौं पुनि उनहीं केर बनावा ❀ अंतखोज प्रभु हमहुँ न पावा ॥
तौ निजकर क्यों नाहिं बनावत ❀ हमरे ऊपर दोष धरावत ॥
ब्रजमों गाय गोप उन कीन्हों ❀ तब प्रथमैं हम परचो लीन्हों ॥
तात अब यह उचित न तुमको ❀ हँसवन उचित प्रभू है हमको ॥
ताते कृपा करहु बनवारी ❀ पाहि पाहि मैं शरण तुम्हारी ॥
औरों कही बात करजोरी ❀ कहँ लौ कहों अनुग्रह तोरी ॥
हँसि कह प्रभु मो घोर नेवारा ❀ तुम सर्वज्ञ मुनीश उदारा ॥
कह मुनि भार अथोर अपारा ❀ यदुकुल मरिहिनकाहुहि मारा ॥
करिय नाथ अब कछुक उपाई ❀ जाते नाथ लोक निज आई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कह हरि गन्धारी सुत जूझे ❀ तब अस पुनि संजयसों बूझे ॥

दो०-श्री हरि पक्षी पाण्डु के, जयकी आशा छूटि !
अंध दीन्ह मेरे लिये, शत सुत विधनै लूटि ॥
कहा कृष्ण सिरजै तबै, सुनु माता अस कौन ।
हारि यहाँ मेटन चहै, मनमानी किय जौन ॥
यह सुनि क्रोधालुब्ध है, शाप गन्धारी दीन्ह ;
अबते छत्तिस वष में, जो मो कहँ तुम कीन्ह ॥

करि अस मत गन्धारी शापा ❀ निजकुलहते सु निजकरपापा॥
कह मुनि द्विज सुशापते नाशा ❀ गुणगावत मुनि चले अकाशा ॥
ब्रह्मा पास कही जो हेरी ❀ यदुकुल नाश आइहै फेरी ॥
यहि विधि बीतिगये कछु काला ❀ आगे सुनहु नृपति भौ हाला ॥
यकदिन ब्रह्मा अति दुख पायो ❀ अजहुँ न काशी श्रीप्रभुआयो ॥
अस मन समुझि देव ले साथा ❀ गै द्वारकहि जहाँ ब्रजनाथा ॥
करि पारक्रिमा नाय करि शीशा ❀ अस्तुति करत देव दिगईशा ॥
पाहि पाहि शरणागत वत्सल ❀ हे कृपालु पालन श्री वत्सल ॥
दीनानाथ देवकीनन्दन ❀ मैं तुम शरण भक्त पालनजन ॥
जय गोविन्द वासी वृन्दाबन ❀ जयति देव जयजगजन बंदन॥
जय जय जय माधव असुरारी ❀ तारण तरण गौतमी नारी ॥
दशरथसुत जय जय जगपालक ❀ जनकसुता वारन हरिबालक ॥
परशुराम निज रूप मानहर ❀ बनहिबासकियनाशत्रिशिखर॥
मग मारीच बधन सीता छल ❀ वानरसंग सहित हनुमतबल ॥
सेतु बाँधि रावण को मारो ❀ अवधपुरी प्रभु भक्त उधारो ॥
कंसादिक सब दुष्ट सँहारण ❀ चलिये निजपुर श्रीजगतारण ॥
हे प्रभु भक्त वत्सल बनवारी ❀ हाँसि तब मधुर गिरा उच्चारी ॥
चलब कछुक दिन में हे देवा ❀ यह सुनि लगे जनावन सेवा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-सुनि ब्रह्मा सह सुर सकल, गे प्रसन्न तब सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषा मूशल पर्व ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते मुशलपर्वाणि
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

गे निजधाम देव समुदाई ❀ अब नृप कथा सुनहु जोगाई ॥
इत सुपाण्डु सुत पारथ जागे ❀ कृष्णचन्द्र सन बूझन लागे ॥
पठयो मोहिं युधिष्ठिर भूपा ❀ जो प्रथमहिं प्रभु मंत्र अरूपा ॥
इतसों जाइ चलन जब चहे ❀ तब कुंती माता बश रहे ॥
अब पौत्रहिं दे राज्य सोहाई ❀ जान चहत उत्तर नृपराइ ॥
चलन हेतु प्रभु तुमहूँ भाखा ❀ चलहु नाथ अब काहे राखा ॥
यह सुनि धर्मबन्धु की बानी ❀ सुनु नृप बोले शारँगपानी ॥
दो०-चलब कछुक दिन में सुनहु, रहौ इतै कछु काल ।
सुनु आस कहि राखत भये, श्रीप्रभु करि कैजाल ॥
रहे बहुत दिन आदर लहिके ❀ अति मुदसाहितवारताकहिके ॥
इकदिन हरि अस कह्यो बिचारी ❀ नाश होइ कहि विधि परिवारी ॥
ताहि समय नारद सुनि आये ❀ हरि गुण गावत आदर पाये ॥
तिनसों बूझेउ यदुकुलनायक ❀ नाशयत्न भाषो जेहि लायक ॥
नारद कह बिन शाप दिवाये ❀ देखि न परत कि युद्ध मचाये ॥
यह भाषत नारद सुनु राई ❀ ताहिसमयऋषिमुनिगणआई ॥
आये व्यास शिष्य सब साथा ❀ हमहुँ हते सुनिये नरनाथा ॥
शृंगीऋषि भृंगी मुनिनायक ❀ देवलकपिल आदिसुखदायक ॥
सनतकुमार सप्तऋषि राजा ❀ दुर्वासा ऋषि सहित समाज ॥
विश्वामित्र वशिष्ठादिक मुनि ❀ अरुकौंडिन्यसुनो भाषतगुनि ॥
दो०-अरु भृगुनायक अंगिरा, पाराशर ऋषिराय ॥
देखि कृष्ण आदिक, सकल परे पार्थ सहपाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सो०—उग्रसेन सह कृष्ण, पाँय धोय भोजन दयो ॥
हलधर कीन्ह्योप्रश्न, केहिकारण आगम सबन ॥
बोले मुनिवर व्यास सुहावन ❀ अशनदेहुइतै कछु दिन पावन ॥
चतुर्मास वर्षाऋतु पावन ❀ देहु अशनयहि हितसब आवन॥
रहब इतै सब मुनि सुखदायक ❀ करब सुतप जो आज्ञा पायक ॥
कह हलधर मम भाग्य अपारा ❀ महा महामुनि जो पगुधारा ॥
रहो देव हम अशन सोहावन ❀ टिकयो मुनिन्हअपावनपावन ॥
नित प्रति भोजन सुभग बनाई ❀ बिलग मुनिन्हप्रतिदेत पठाई ॥
यहि बिधिकछुक दिवस नृपबीते ❀ यकदिन सबशिकार हितरीते ॥
प्रद्युम्नादि साम्ब सुत नाती ❀ लै आज्ञा हय चढ़ि सब भाँती॥
खेलि शिकार मारि मृग रूरे ❀ पुरहि पठाय चले मुद पूरे ॥
आये मुनिवर जेहि बनावासा ❀ बैठे हैं जहँ ऋषि दुर्वासा ॥
कोउ कहमुनि भोजन हितआये ❀ माँगत भीख कतहुँ नहिंपाये ॥
मिलो पेट भरि इतै अहारा ❀ परे ताहिते ये शठ द्वारा ॥
कछु नहिं जानत है मुनि कोई ❀ जो बिधि लिखा होतहै सोई ॥
दो०—कोउ कह हैं सर्वज्ञ निधि, कृपा यत्न मुनिराज ।
नृपन चाहियो दानशुभ, मुनिवर भोजनकाज ॥
सो०—निन्दो मति सब कोय, इनको मानत कृष्णबलि ।
जो विश्वास न होय, कत न परीक्षा लेहु तुम ॥
तुरत ग्राम को दूत पठायो ❀ मूशल काढ़ि एक लै आयो ॥
पियो सुरा सब यादव बालक ❀ भये मस्त हरि इच्छा सालक ॥
बांधि साम्ब हिय काढ़ि सुहावन ❀ मूशल राखि मध्य हियरावन ॥
सुभग नारि गर्भिणी बनाई ❀ केश मूल गहना पहिराई ॥
गेंदन के तहँवा कुच कीन्हे ❀ सेंदुर दै शिर बेंदी दीन्हे ॥
बिछुवा आदि अभूषण जेते ❀ कहँ लौं कहौं किये सब तेते ॥
जाय बन्दि मुनिवर दुर्वासा ❀ बैठि बचन असकीन्हप्रकासा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हे मुनिवर सर्वज्ञ निधाना ❀ पुत्री पुत्र जात नहिं जाना ॥
जो कृपालु ह्वै तुरत बतावो ❀ अतिशुभसुयशजगतमहँपावो ॥
ध्यान धरी मुनिवर तहँ देखे ❀ छल समुझे कछु और न देखे ॥
क्रोधित मुनिवर बोले बैना ❀ सुत मुख देख्यो यहकुलनैना ॥
दो०--बोले मुनिवर क्रोध करि, होय सत्य यह बैन ।
याही सुत के होतही, मरै कृष्ण सह सैन ॥
सो०--संकुल संहारि हैं सर्व, जिन टिकाय अपमान किय ।
अस सुनिये नृपपर्व, मरै रुक्मिणी जवन सिय ॥
यह सुनि सकल भभरि तब भागे ❀ मनहु सिंह कोउ सोवतजागे ॥
मुनिहि सकोप बकत बहु बैना ❀ इतआये सब निज निज ऐना ॥
सकल बात सब काहुन पावा ❀ जुरिसमाजसब नृपपहँ आवा ॥
सुनत कृष्ण अति भय प्रसन्ना ❀ उग्रसेन सह शोचत अन्ना ॥
शोचत बसुदेव अरु बलरामा ❀ बारबार कहि शिव हरि नामा ॥
तब नृप मंत्री ज्ञात बोलाये ❀ उद्धव सात्यकादि सब आये ॥
शोच सुमत करि यह ठहराये ❀ बोलि लोहार सहस्रन आये ॥
मूशल काढ़ि छोरि तब लयऊ ❀ चुरण करि समुद्र महँ बयऊ ॥
ताते भयो सुखर उत्पन्ना ❀ औरौ सुनौ कछुक नृप अन्या ॥
एक चूर जो लोह बहायो ❀ शापसत्य हित मीन सो खायो ॥
मीनहि ताहि पकरि कै लावा ❀ बालि नाम धीमर जो आवा ॥
चीरेउ हृदय निकारेउ लोहा ❀ तीक्षण धार थोथ महँ सोहा ॥
दो०--सुनु नृप भावी मिटै कस, अरु श्रीकृष्ण प्रताप ।
जो न चहत श्रीकृष्णप्रभु, करत कोटि कह शाप ॥
कछु दिन बीति गये यहि माँती ❀ आनँदजात दिवस अरु राती ॥
श्रीप्रभु कृष्ण वृति अस जागी ❀ द्वारावती शाप नहिं लागी ॥
अस मन समुझि कृत्तिभगवाना ❀ चहहुँ प्रभासकरिय असनाना ॥
यह सुनि सकल बुलाय सुबासी ❀ मोर चलन कहँ आनँदरासी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यह सुनि ऊद्धव हरिपहँ आये ❀ नमस्कार करि अस्तुति गाये ॥
पुनि रोवन लागे हा हा कहि ❀ कब मैं रहौं नाथ दुख यहसहि॥
तव मनमें हों निजपुर जैहौ ❀ नाथ लौटि नहिं द्वारहि ऐहौ ॥
ताते रहौ जहाँ हम पैये ❀ जो मन चहौ नाथ सो ह्वैये ॥
दो०-कहौ नाथ का करिय हम, जाते होहिं सनाथ ॥
अस कहि लागे रुदन तब, धरेउ चरणपर माथ॥
सो०भाष्यो श्रीप्रभु बैन, करत शोच तुमहौं कहा ।
धरिपद निजहिय ऐन, करो जाय तप बद्रिका ॥
यह देखत हौ जौन सकल जग ❀ सो जानहु सब जाहि एकमग॥
हय गय द्रव्य पुत्र अरु दारा ❀ सो सब जानु झूठव्यवहारा ॥
मरणकाल कोउ काम न आवत ❀ कवि कोविद मैसज्जन गावत ॥
मम नाभी ते कमल भयो जब ❀ ताते ब्रह्मा भयो सुनहु तब ॥
ताते भई सृष्टि विस्तारा ❀ मै हूं धरेउ बहुत अवतारा ॥
चारि वेद श्वासन ते गाये ❀ मुखतोद्विज भुजक्षत्रिय जाये ॥
वैश्य जानु पद शूद्र बनावा ❀ याहीमें सब जग बिलमावा ॥
तब श्रीकृष्ण कृपा अति कीन्हे ❀ ब्रह्म देखाय दुःख हरि लीन्हे ॥
औ यह कह्यो सुनौ उद्धव तुम ❀ अब तुम जाउ बाद्रिकाको गुम॥
नाश होन चाहत अब द्वारा ❀ किहेउदिवसप्रतिभजन हमारा ॥
वृक्ष योनिते मनुज होत जब ❀ सुमिरणमेरो उचितसुनहु तब ॥
सुनि उद्धव तब शीश नवाये ❀ परिक्रमा करि तुरत सिधाये ॥
इत यदुवंशी भोर भये जब ❀ चले प्रभास काल प्रेरित तब ॥
साजि साजि साज चले सबकोई ❀ पुरजन कृष्ण साहित बलिजोई॥
दो०-कहँ लगि कहिये सुनहुनृप, चले सहित यदुनाथ.।
सात्याकि कृतवर्मा सहित, यदुजन पुरजन साथ॥
उग्रसेन वसुदेव बिन, रह्यो न कोइ पुरमाहिं ।
अर्जुन राख्यो कृष्ण प्रभु, सुखद सुगहिकै बाहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सो०-उद्धव ज्ञान बुझाय, बद्री दिशि भेजउ तिन्हे ।
उद्धव दुःख नशाय, ब्रह्म मिले करि नेह बर ॥
पारथ रखि नगर रखवारी ❀ आपु चलन हित कीन्ह तयारी ।
दारुक अरु पारथसों कहेऊ ❀ आयो काल्हि नारि सह रहेऊ ॥
गे सब प्रभाक्षेत्र सुख पाई ❀ तहँ नारद मुनि बीण बजाई ॥
नारद आयसु दीन कृपाला ❀ जाहु नगर द्वारकाहि विशाला ॥
सिखवो तात मातु नृप जाई ❀ मोह मूलको शूल नशाई ॥
तहँ नारद अस ज्ञान सिखावत ❀ भूमिअकाशहिनिजदरशावत ॥
दो०-वृक्ष योनिते मनुज तनु, पायो पुनि हरि पूत ।
ताते अजहुँ न सुमिरियो, होन चहतहो भूत ॥
पारब्रह्म हरि सुत लयो, पुर्व भाग्य मुनिराज ।
भक्ति मुक्ति माँगी नहीं, अब आवति है लाज ॥
सो०-मुनिबोलेइमि बैन, तुव हित होतहि कहत हम ।
यक इतिहास सुनैन, नौयोगीश्वर जनकको ॥
नौयोगीश ऋषभ सुत आये ❀ जनक देखिकै शीश नवाये ॥
आश्वासन कीन्हेउ बहु भाँती ❀ सिंहासन दीन्हो मन माती ॥
कृपा कीन्ह मम भाग्य अपारा ❀ ऋषभ देव सुत जो पगुधारा ॥
जैसे कियो पवित्र मोंहिं चरणन ❀ तैसे पूछत करिये वरणन ॥
तब बोले योगी बर बैना ❀ निज इच्छित तुम पूछत हैना॥
कहा जनक कर सम्पुट करिकै ❀ कौन वस्तु स्थित बिनभारिकै ॥
जो कह धन स्त्री अरु बालक ❀ आज्ञा करिकै अरु कुलपालक ॥
ताते मुनि कछु स्थिर नाहीं ❀ धनदकुशासन सब मरि जाहीं॥
ताते शोक होत है भारी ❀ हे स्थिरको कहौ बिचारी ॥
जामें घट न बढ़ै कछु ऐसी ❀ स्थिर नाश न कहिये तैसी ॥
बोले कश्यप नामक योगी ❀ प्रथमभयो हरिहर बश योगी ॥
बहु सुख प्राप्त उन्हें मिथिलेशा ❀ जे हरिभक्ति ते त्यागी अहेशा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पुत्र दार धन सब परिवारा ❀ भाग्यमान जिमि अलबकरारा ॥
जे लपटे पुत्रादिक नेहा ❀ ते जब मरे बिकल संदेहा ॥
ताते नाश वस्तु है जोई ❀ अलग रहै सुख पैहै सोई ॥
हरि नरतनु यहि हेतु धरतहैं ❀ गाय जाहि नर नारि तरतहैं ॥
जो मन लाग एकधा नाहीं ❀ थोरा थोरा कीजिय ताहीं ॥
जिमि भूखा अन ज्यों ज्यों खैहै ❀ त्यों त्यों भूख तासुके ऐहै ॥
जोकोउमगनितप्रातिचलिहै नर ❀ एक दिवस वो जाहि पहुँचिवर ॥
जो न चलै वह पहुँची कैसे ❀ हे मिथिलेश भक्तिहै तैसे ॥
माया थोरी थोरी छूटै ❀ भक्ति थोरही थोरी लूटै ॥

दो०—पारब्रह्म जो एक है, आद्यो ब्रह्म स्वरूप ।
सोई तौं थिरता सुनो, और झूठ है भूप ॥

सो०-योगीकहि भे मौन, करजोरे कह जनकतब ।
कहियेतपमितभौन, भक्तिरूप किमि होत है ॥

तब हरि नाम दूसरो भाई ❀ सुनु नृप कहत सुलक्षण गाई ॥
कबहुँ हँसत जब होई प्रसन्नित ❀ कबहुँ रोष लक्षण उनके इत ॥
हँसन हेतु यह सुनहु विदेहा ❀ करत भक्ति पर तुम हरि नेहा ॥
धरते सगुण गाय जाते जन ❀ भवसागरतरिजाहि जौनबन ॥
गाय ध्यान धरि तरियतु जातें ❀ ये लक्षण हँसन मन माते ॥
रोषन कर लक्षण याहि काजन ❀ सो अब सुनहु कहतमैं राजन ॥
आयु हमारी बीती भारी ❀ फँसो रहो ममता अवतारी ॥
बिनु हरि भक्ति बीतिगै सोई ❀ हे जनकेश देत बय रोई ॥
भक्ति और सुनु तीन प्रकारा ❀ उत्तम मध्यम और नकारा ॥
सकल चराचर देखिय जौने ❀ चौरासी लक्षित नृप तौने ॥
यक सो लखत ब्रह्म सब माहीं ❀ हैं लक्षण ये उत्तम आहीं ॥
साधू संगति सत पथ चलिये ❀ हैं ये लक्षण मध्यम पलिये ॥
पुनि ये तेज बराबर सबमें ❀ नहिं समुझत विदेह वे जगमें ॥
अब निकृष्ट लक्षण ये सुनिये ❀ माया मोह फँसे हैं दुनिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

काहू पहर असमरण पूजा ❀ ते करि लेहिं निकृष्टित मूजा ॥
दो०-जब लगि तृष्णा नहिं छुटत, तबलगि नाहिंनविरक्त ।
दूसरे योगीश्वर कहै, तब लगि विषयासक्त ॥
तीनि प्रकारित भक्तिकै, सुनु लक्षण मिथिलेश ।
हाथ जोरि पूछन लगे, मेटहु नाथ कलेश ॥
सो०-माया जाको नाम, नारायण मे लीन है ।
की है बिलग अकाम, तौन नाथ बर्णन करौ ॥
अंतरिक्ष जो तीसर योगी ❀ सुनिये नृपाति राम यश भोगी॥
माया हरिकी ईहा जानो ❀ ताको त्रिगुण रूपहै मानो ॥
सात्विक राजस तामस जोई ❀ मारण उत्पति पालन सोई ॥
बिनु हरि मायाकर भ्रमजाला ❀ काम क्रोध मद लोभ कराला॥
नाहिंन छूटि सकत कोउ राजा ❀ चहिये करिबो उत्तम काजा ॥
महाप्रलय ऊपर हरि रचना ❀ चाहतजबहिंसुनहुनृप बचना ॥
तब मायाकी ओरहि देखत ❀ माया महातत्त्व को पेखत ॥
महातत्त्व सब उत्पति करिकै ❀ सब जग देत बराबरि भरिकै ॥
दो०-नाश करन चाहित जबहि, मूशलधारा वर्षि ।
सुनो करत माया सहित, परब्रह्म तहँ हर्षि ॥
तेहिते हरि ईहा सुनो, मायाकर व्यवहार ।
समुझब हरिको उचितहैं, सुनु जनकेश उदार ।
जो माया हरि ईहा कहिये ❀ संसारी किमि उतरन चहिये ॥
माया ते छूटै किमि योगिनि ❀ तुमहौ वैद्य बताइ अरोगिनि ॥
पर बुधि नाम चौथहै जोने ❀ जब जान्यो हरि ईहा तौने ॥
माया हरि इच्छा जब जानी ❀ तब हरि ईहा एकै मानी ॥
हरि परिक्रमा करै नर जोई ❀ पावै सफल अफल नहिं होई ॥
दो०-ब्राह्मण लक्षण सहितहै, ब्राह्मणकी मतिहीन ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS.

नहिं सो ब्राह्मण शूद्रसम, ताहिकहतमतिपीन ॥
ऐसो जानौं जनक नृप, चारि वर्ण की चाल ।
पारब्रह्म को जानिवो, नातरु सोई काल ॥
पारब्रह्म जानौ जिन्हें, सो पायो मों लीन्ह ।
नातरु है सब अन्यथा, जन्म बिधाता कीन्ह ॥
बोले जनकराय कर जोरी ❀ को अस बिना हृदय जो होरी॥
कौन जीव सोवत हैं नाहीं ❀ जलथल नभ अकाश के माहीं ॥
बोले पंचम योगी बैना ❀ हृदय तात पत्थर के हैना ॥
सोवत मीन सुनो नृप नाहीं ❀ और सकल श्रमवश ह्वै जाहीं ॥
दो०—जगमें गरुआ कौन अति, अति ऊंचो है कौन ।
बोले षष्टम योगिवर; अतिवर बुधिको भौन ॥
मेरो गिरिते गरूहै, मात सुनो नृप बात ।
आसमान ते ऊँच अति, जानो हैं निज तात ॥
सो०—कैसे मन नहिं लाग, विषया में मन सबन कर ।
बोलेउ मुनि अनुराग, सप्तम सुखद सोहावनो ॥
ऐसे कृपा कृष्ण की होई ❀ मन लागै हरि यह सुनु सोई ॥
जेते रोवां जानो तनु में ❀ तेते रोकन हारे जन में ॥
पाप पुण्य कछु जग मे नाहीं ❀ कर्म भोगवत हैं सब याहीं ॥
बोले तब जनकेश उदारा ❀ काके बीज जगत विस्तारा ॥
कह मुनि पारब्रह्म को जानौ ❀ बीज कौन काको को मानौं ॥
परदादा के दादा जाये ❀ दादा के पितु निज तब भाये ॥
ताके सुत यह देह भई सुनु ❀ को ताको अस सकै भूप गुनु ॥
दो०-कहेउ जनक यह बात, कहौ कर्म व्यवहार अब ।
कह मुनि सुनु नृप तात, कर्म आदि व्यवहार सब ॥
दो०—कही पूर्व निष्ठाद्विधा, ज्ञान योग संचार ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

साखिन कह योगिन कह, कर्म योग व्यवहार ॥
अनारभ्य के कर्म ते, होत न नर निष्कर्म ।
सर्व त्याग संकल्प ते मिलत न सिद्ध सुधर्म ॥
मनसा इन्द्रिन रोकिजे, करत न तत्व विचार ।
रहत लगाये विषय में मनसा मिथ्याचार ॥
अस कहिकै योगी सकल, गये ब्रह्मपुर ओर ।
पीछे नारद मुनि गये, सकल मुनिन शिरमौर ॥
अब नृप सुनहु कथा मन लाई ❀ वहां टिके यदु यदुकुलराई ॥
गड़े बितान अमौलिक लखन ❀ चाखन लगे सूरप्रभु माखन ॥
वस्तु अमौलिक भाँतिन केरी ❀ बाजहिं ठौर ठौर प्रति भेरी ॥
सेना देखि लगत भय हिय में ❀ तबहिं बिचारैं श्रीप्रभु जियमें ॥
सबते कहेउ चलिये स्नाना ❀ करि स्नान कीन्ह सब दाना ॥
दो०-प्रभाक्षेत्र स्नान करि, निशिहि टिकेउ यदुवंश ।
उतसुदेबमिलिसुनुनृपति, खैंच्योनिजनिजअंश ॥
हलधर सहपुनि होत बिहाना ❀ सुरापान करि गे स्नाना ॥
भे मदमत्त उछाड़ैं कूदैं ❀ और हनैं पुनि आँखी मूंदैं ॥
देहिं परस्पर गारि प्रचारी ❀ नाहीं हँसाहि देहिं करतारी ॥
पितु सुत नहिं घरनी हो बारा ❀ लाजहीन लपटहिं जनुदारा ॥
लटपटाहिं धरणी पर गिरहीं ❀ भाजतलड़हिं दौरितेहि धरहीं ॥
करहिं जलहिं स्नान सोहावन ❀ आपु वीरदल लागो आवन ॥
पुनिपुनि जलउछाल सब करहीं ❀ डंडौंकि पितु सुतसों भिरहीं ॥
एक पकरि बोरहिं जल माहीं ❀ बूड़हिं रोवहिं छाड़हिं नाहीं ॥
एकहिं डारि सुजल के माहीं ❀ चढ़हिं सहस्र सहस्रन ताहीं ॥
उत सात्यकि कृतवर्मा जूटे ❀ भिरहिं प्रचारि केश शिर छूटे ॥
दो०-लरहिं भिरहिं यहिविधि सुनहु, रहो न काहू ध्यान ।
शापवश्य राजा सुनो, को सुत को पितु आन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सो०—जलउछाल करिवीर, आयेनिजानिज पक्षलखि ।
जहँ सात्यकि कृतधीर, ह्वै समाज उमहतदोऊ ॥
तब सात्यकि कृतवर्म बखाना ❀ भागेसि शठनत काल निराना॥
मम सहाय पाण्डव रण जीते ❀ मारे दुर्योधन भट रीते ॥
सो मैं शत्रु आउँ कृत तेरे ❀ भागि बचो नहिं हनत सबेरे ॥
ताते अजहुँ मानु शठ बानी ❀ नत अब होन चहत कुलहानी॥
कह कृत होत अधम केहि धोखे ❀ निज कर बधब हनब शरचोखे॥
मानि कृष्ण प्रभु केरि रजाई ❀ नत मारत बहु पांडव राई ॥
अजहूँ सात्यकि जीह सँभारो ❀ नत अब शरण देत शिर मारो ॥
सुनिसात्यकिकोपित ह्वै मनमों ❀ मानहुँ जीति चले रणघरसों ॥
दो०-अरे अधम सात्यकि कहेउ, सोवतते बहुमारि ।
सत्राजितपाण्डवसुवन, अजहुँ बकत बश हारि ॥
सो०-तब सात्यकि भटयुद्ध, पारथ गुरुको ध्यान धरि ।
लै हथ्यार हित युद्ध, तदपि मध्य आवत भयो॥
तब कृत कह अति कोपित बैना ❀ शठ धर्मातम देख्यों नैना ॥
भूरिश्रवा हनि डारन चहेऊ ❀ ताहि समय बर पारथ रहेऊ ॥
भुजा काटि तब हत तुम कीन्हा ❀ यह धर्मातम तब हम चीन्हा ॥
अस कहि सहपक्षी बर बीरा ❀ लै हथ्यार आयो तेहि तीरा ॥
सात्यकि पक्ष सहित लै हाथा ❀ वज्रनाभि भजिगो ताजिसाथा ॥
जाय बचो अनिरुद्ध सुत भागी ❀ शापवश्य लागी तब आगी ॥
तब सात्यकि प्रचार निज पक्षी ❀ कृतलेकरि सेनानिज अच्छी ॥
वाक्य वादि करि करि उतकर्षा ❀ लागे करन मूल शर वर्षा ॥
चहुँदिशि बाण गदाअसिधारा ❀ भिरे बीर करि क्रोध अपारा ॥
तदपि न जूझो कोउ बर वीरा ❀ टूटि गिरे हथियार व तीरा ॥
तब सब समुद्र फेन स्वर लीन्हा ❀ ताते मारु भयानक कीन्हा ॥
सुरामस्त भट जूझैं गिरि गिरि ❀ उलटिपलटिलपटैंपुनिभिरिभिरि॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भाजत लखहिं प्रचारहिं फेरी ❀ मारहिं सुभट फेनु तोहि घेरी ॥
दो०-शापकृष्ण मनशा नबल, अबला मनुष्य उपाउ ।
जे गदादि जूझे नहीं, ते जूझे खर घाउ
सो०-जूझि गिरे बहुबीर, जे रहिगे प्रभुपह चले ।
योगाभ्यास गंभीर, तनु त्याग्यो जे सहसबर ॥
कृष्णचंद्र तब भागि पवाँरे ❀ रहे जौनते युद्ध बिचारे ॥
मरे जूझि एको नहिं बांचे ❀ मन क्रम रहे शूर सब सांचे ॥
इत तहँ श्रीप्रभु कृपानिधाना ❀ बैठे पीपल वृक्ष सुजाना ॥
तातरु बैठि कीन्ह शुभआसन ❀ लीलाकीन्हसुभगाहित दासन ॥
धरे जानु पर चरण कृपाला ❀ ताहि समय आयो वह काला॥
जान्यो नयन मृगा कर सोहत ❀ लैकै धनुष बाण मन मोहत ॥
बालि नाम बानर त्रेता कर ❀ धीमर रूप छाँड़ि दीन्हों शर ॥
चरण मध्य चमकत तहँ जानी ❀ आयो लेन शिकार गिल्यानी ॥
देखि कृपालु कृष्ण भगवाना ❀ बान्दि चरण तब ऐच्यो बाना॥
कह कृपाल बदला तुम लीन्हो ❀ रथहि चढ़ाय परमपद दीन्हों ॥
उत अर्जुन सब रथहिं चढ़ाई ❀ रानिन सबहिन लीन्ह चढ़ाई ॥
दारुक पास कही अस बाता ❀ लै रथ जाहु अगू तुम ताता ॥
पाछे हम आवत सह नारिन ❀ जाते होई न श्रम कंसारिन ॥
दारुक हाँकि सुभग रथ गयऊ ❀ उतरि रथहिहरिचरणन नयऊ॥
उतरत दारुक के नरपाला ❀ हय समेत रथ उड़िगो हाला ॥
यह लखि दारुक विस्मय पावा ❀ सब चरित्र तब कृष्ण बतावा॥
यह सुनि सूत परेउ गिरि धरणी ❀ तब हरि कहा दुःखको हरणी ॥
तुम धरि ध्यान त्याग तनु जाई ❀ अर्जुन पास कहेउ अस जाई॥
कछुक दिवस में बुड़िहै ग्रामा ❀ कहेउजाइलै निजनिजसामा ॥
दो०-गीता ज्ञातहि राखि हिय, जाय बद्रिकाधाम ।
अब आयो कलियुग प्रबल, इतै न रहिबो काम॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ऐसे कहते कहत हरि गह गह हने निशान ॥
चले ब्रह्मपुर आपु प्रभु, किंकिणि नाद बिमान ॥
दो०-यहि विधि कृष्णकृपाल, गये धामनिजनिजसुनहु ।
दारुक गयो उताल, अर्जुनसों सब यों कहेउ ॥
सुनि अर्जुन यह यदुकुल नारी ❀ रोवहिं गिरहिं मुर्च्छि सुकुमारी ॥
दारुक जाय कतहुँ तनु त्यागा ❀ तब सबहिंन कर मुर्च्छाजागा ॥
सह नारिनि गे जहँ रण पावन ❀ देखिभूलिगो को कत आवन ॥
पटरानी अरु यदुकुल नारी ❀ अति दुख बूड़िमरीं कछु बारी ॥
कछुक चिता रचि धरि सुत नारी ❀ पतिसह जरत भई सब नारी ॥
गईसकलमिलि निजनिज अंशन ❀ अनिरुधसुतबिनरहेउनवंशन ॥
इत अर्जुन पुनि धरिज धारा ❀ वज्रनाभ सह गे नृप द्वारा ॥
पढ़ै सुनै जो कथा सुहावन ❀ वंश वृद्धि होवै अति पावन ॥
दो०-पाप नशै कीरति बढ़ै, व्यास गिरा परमान ।
भणित पर्व मूशल कथा, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते मुशलपर्वणि
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

इति मुशलपर्व समाप्तं १७.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ अथ महाभारत भाषा ॥

स्वर्गारोहणपर्व १८.

दो०-प्रथमहिं गुरुके चरण शुभ, सुमिरौं शीश नवाइ ।
जाकी कृपा कटाक्षते, सकल विघ्न मिटि जाइ॥
महादेव पदकंज पुान, सुमिरों दोऊ कर जोरि ।
जो अभिलाषा बढ़ी मन, सो पुरवो प्रभु मोरि ॥
श्रीशक्ति मैं बिनवा तोही ❀ माता पार लगायो मोहीं ॥
हरि लीला वरणौ मन लाई ❀ सो तुम अक्षर देहु मिलाई ॥
महाबीर सुमिरौं सब लायक ❀ भयभंजन मनवांछित दायक॥
अगणित विघ्न हरण हनुमाना ❀ सो भरोस मैं मन अनुमाना॥
दिहिनि मोहिं मन प्रभु उपदेशू ❀ सो कहिहौं हियसुमिरिगणेशू ॥
कहौं हृदय गुरुको धरि ध्याना ❀ तेहि ते पावों निर्मल ज्ञाना ॥
अगहन मास पुनीत सुहावा ❀ बुधवासर हरितिथिं शुभपावा ॥
संवत सत्रह सै इक्यासी ❀ ताहि समय हरिकथा प्रकासी॥
हरिको रूप सकल जग जाना ❀ करिसबाहिंनकँहदंड प्रणामा ॥
ईश्वर द्रुम स्वरूप बखानी ❀ तीनि लोक सो शाखा जानी॥
चारिहु युग सो पत्र समाना ❀ शुभअरुअशुभयुगलफलनाना॥
दो०-सबलसिंह कर जोरि युग, सब संतन शिरनाइ।
स्तुति करत गणेशकी, अक्षर देहु मिलाइ ॥
सोमवंश हस्तिनपुर राजा ❀ नृपति युधिष्ठिर तहाँ विराजा॥
कीन्हेउ महभारत अति भारी ❀ गुरु औ बंधु सखा सब मारी॥
दुर्योधन को जीति भुवारा ❀ पाछे कीन्हेउ यज्ञ पसारा ॥
श्रीकृष्ण की आज्ञा पाई ❀ कीन्ह यज्ञ कछु बरणि न जाई॥
राज कीन्ह बहु काल सोहाई ❀ पाछे नृपके मन अस आई ॥

न्या० का० प्रेस,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गोत्र घात कीन्हें बहुतेरा ❀ कैसे होइ भवसिंधु निबेरा ॥
व्यासदेव सों दै कर जोरी ❀ सुनौ नाथ अब बिनती मोरी ॥
जेहि प्रकार हरिलोकहि जाई ❀ सो प्रसंग प्रभु कहौ बुझाई ॥
दो०--तब ऋषि व्यास बिचार करि, बोले वचन बिनीत ।
जाय हिमालय गलौ तम, तब तनु होय पुनीत ॥
जो हिवार तनु त्यागे कोई ❀ मन बांछित फल पावै सोई ॥
कोटि जन्मके पाप कमाये ❀ गलतहिवार पार तिन पाये ॥
व्यास कहा नृप सुनु इतिहासा ❀ जोसुनिहोय सकलभ्रम नासा ॥
एक ग्राम इक पाण्डित रहई ❀ नितउठि एक नपाति के जहई ॥
श्रीभागवत सो जाय सुनावै ❀ दक्षिणा ले अपने घर आवै ॥
एक दिवस तेहि मारग माहीं ❀ मिला नाग तेहि पंडित काहीं ॥
नर बानी बोल्यो शिरनाई ❀ पण्डित दीनदयाल गोसाँई ॥
हमहिं भागवत आजु सुनाबो ❀ हरिलीला अमृतरस गावो ॥
दो०--नागबचन सुनि पंडित, मन महँ कीन्ह बिचार ।
हरिलीला पर प्रीति लखि, तब कीन्हों उच्चार ॥
अध्याय एक तब पण्डित बाँचा ❀ मनक्रमबचनताहिलखिसाँचा ॥
कथा सुनाय बिदा जब भयऊ ❀ एक मोहर तेहि दाक्षिणादयऊ ॥
विप्रहि बहुरि कहेउ शिरनाई ❀ एकअध्यायमोहिं नित्तसुनाई ॥
गयो विप्र तब अपने ग्रामा ❀ रहेउ नाग सो अपने धामा ॥
नित उठि विप्र भूप घर जाई ❀ श्रीमत कह नृपहिं समुझाई ॥
फिरती बार नाग गृह आवै ❀ एकअध्यायनितताहि सुनावै ॥
एव अशरफी सो नित देई ❀ पण्डित महा मगन ह्वै लेई ॥
कछुकदिवस याहिविधि गेबीती ❀ पण्डितनागकेरि शुभ रीती ॥
सुनत कथा भा ज्ञान अपारा ❀ नाग सुमिरि मिथ्या सँसारा ॥
दो०--पण्डितसों शिरनाय के, नाग कहेउ मृदु बैन ।
बचन एक मैं माँगहूँ, मोहि देहु गुण ऐन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

एवमस्तु तब पण्डित कहेऊ ❀ जो तुम कही तौन मैं दयेऊ ॥
नाग कहेउ विप्रहिं समुझाई ❀ बद्रिकआश्रम चलौ गोसाँई ॥
विपुल अशरफी मोरे धामा ❀ सो लै जाहुनाथ निज ग्रामा ॥
सकल अशरफी तब द्विजलीन्हा ❀ लैकै नाग गमन तब कीन्हा ॥
कछुक दिवस महँतहँ चलिआये ❀ बद्रीपति जहँ धाम सुहाये ॥
जाय शंभुके दरशन कीन्हा ❀ तब सो नाग उतरिफिरदीन्हा ॥
निकट हेवारे कहँ अब चलहू ❀ जो मैं कहौं तौन तुम करहू ॥
विप्र निकट तब गयो तुरंता ❀ नाग सुमिरि तब लक्ष्मीकंता ॥
कह्यो विप्रसन सुनहु गोसाँई ❀ मोहिं शीत महँ देहु चलाई ॥

दो०—विप्र चलायो नाग कहँ, गिरो हिवारे जाइ ।
विप्र चल्यो घर आपने, हँस्यो नाग ठट्टाइ ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते स्वर्गारोहणपर्वणि
नागबद्रिकाश्रमगमनोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

तब फिरि विप्र उतर अस दीन्हा ❀ जो तुम हँस्यो चहहु सो कीन्हा ॥
तिन तब कह्यो सुनहु द्विजराई ❀ हँसेक भेद मिलै इक ठाँई ॥
काशीपुरी शंभु अस्थाना ❀ तहँके राजा परम सुजाना ॥
तोहिते जाई पूछि तुम लेहू ❀ अनते जाइ कह्यो जनि केहू ॥
तबहिं तुरत द्विज गमनत भयऊ ❀ कछुकदिवसमहँकाशिहि गयऊ ॥
पुरी मनोहर देख्यो जहई ❀ दरशन करत सकल अघ दहई ॥
तुरतहिं चल्यो शंभु दरबारा ❀ प्रदाक्षिणा दै विप्र उदारा ॥
उठि तब चलेउ भूप दरबारा ❀ करि प्रणाम राजा बैठारा ॥
प्रथम कथा द्विज कह्यो बुझाई ❀ सुनौ नृपति यह चरित सुहाई ॥
नाग हिवारे जेहि विधि गयऊ ❀ हँसेक भेद जौन कछु रहेऊ ॥

दो०—सो वहु भेद बतावहु, सुनौ भूप रणधीर ।
तव मैं निजगृह जाइहौं, मिटै हृदय की पीर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तब नृप कह्यो सुनहु द्विजराई ❀ वैष्णव तीन रहें इक ठाँई ॥
महि प्रदक्षिणा करत सोहाये ❀ फिरत फिरत आश्रमइक आये ॥
करत प्रसाद रहैं इक तीरा ❀ तीनउ जने ज्ञान मति धीरा ॥
तहँवाँ एक श्वान चलि आवा ❀ तेहिका दै तिन भोजन पावा ॥
भोजन करि वै चलिभे आछे ❀ श्वान चला तब तिनके पाछे ॥
तब तिन कह्यो ताहि समुझाई ❀ हम नितयाह सुनोरे भाई ॥
जन्मभूमि यह होय तुम्हारी ❀ रहो श्वान अस हृदय बिचारी ॥
तब वह कहै लाग अस बूझी ❀ मोकहँ परत यहै अब सूझी ॥
जहाँ मिलै मम उदर अहारा ❀ सोई है निजधाम हमारा ॥
यह कह चलेउ तासु संग सोई ❀ नित तिनके संग भोजन होई ॥
याहि बिधि माहि प्रदक्षिणा दयऊ ❀ तीनिउ जने हिवारे गयऊ ॥
पाछे श्वान लागि तहँ गयऊ ❀ तीनिउ जने अमरपद लयऊ ॥

दो०—कुत्ताकेरे श्रवण महँ, रहे किलना दुइ लाग ।
कुत्ता गलेउ हेवार महँ, तिनहु कीन्ह तनुत्याग ॥

सुनहु हिवारे के प्रभुताई ❀ किलना दोउ भूप भे आई ॥
जगन्नाथपुर एक बिराजा ❀ एक मकसुदाबाद के राजा ॥
महीं हों वह श्वान सुहावा ❀ काशीपुरी रुचिर मैं पावा ॥
सो वहु नाग हँसा अस जानी ❀ ब्राह्मण रहे बड़े विज्ञानी ॥
दैके द्रव्य आई तनु त्यागा ❀ लौट्यो विप्र कौन सुख लागा ॥
सो वह हँसा सुनो द्विजराई ❀ मैं अपनी निज करणी गाई ॥
यह इतिहास व्यास अस कहेऊ ❀ सबलासिंह संक्षेपहिं लहेऊ ॥
सुनौ युधिष्ठिर अस मन जानी ❀ गलौ हिवारे मन क्रम बानी ॥
यह सुनि तब सहदेव बिचारा ❀ कह्यो भूप सुनु कहा हमारा ॥
जो गुरु कह्यो सत्य सो बानी ❀ चलौ जहाँ हैं सारंगपानी ॥
यदुनायक सों आज्ञा माँगी ❀ चलौ हिवारे महँ तन त्यागी ॥
तुरत व्यास सों आज्ञा लीन्हा ❀ द्वारावती गमन नृप कीन्हा ॥
अर्जुन जाय तुरत रथ साजा ❀ तेहिपर चढ़्यो युधिष्ठिर राजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अति शोभित रथ बरणि न जाई ❀ किंकिणि ध्वनि सुनि देव सिहाई ॥
दो०-पांचौ भाई चढ़े तब, श्रीगुरुचरण मनाय ।
सिंधु तीर द्वारावती, तहां पहुँचे जाय ॥
द्वारावती निकट नृप गयऊ ❀ तब रथ त्यागि पियादें भयऊ ॥
जहँ श्रीकृष्ण बिराजहिं धामा ❀ तहँ नृप कीन्ह्यो दंड प्रणामा ॥
धर्मतनय संपुट करि हाथा ❀ स्तुति करत नमाइहि माथा ॥
छं० नमामि शैलधारणं । अनेक गोपतारणं ॥
सुरेश मान मर्दनं । नमामि श्रीजनार्दनं ॥
नमामि कंस मर्दनं । चाणूर गर्व गंजनं ॥
गयंद प्राण रंजनं । गिरहा गर्व भंजनं ॥
प्रह्लाद प्राणरक्षकं । सुरारि दुष्ट भक्षकं ॥
समुद्र पुत्रिनायकं । गजेन्द्र सुखदायकं ॥
मही कष्ट टारणं । फणीश मान मारणं ॥
सुमच्छकच्छवपुधरो । सबंस शंखप्रभुहरो ॥
वराह रूप धारि कर । मही लई उबार कर ॥
स्वरूप धारि नरहरी । मनुज प्रह्लाद जयकरी ॥
नमामि रूप वामनं । ब्रह्माण्ड कीन्ह पावनं ॥
नमामि गरुड़वाहनं । भजंत कामदाहनं ॥
नमामि चक्रधारणं । सुर धेनु दुःख हारणं ॥
सुरेन्द्र मान भंजनं । अपार दुष्ट गंजनं ॥
सदैव भक्त कारणं । अनंत रूप धारणं ॥
मुकुंद जक्त पालकं । गोविंददनुजघालकं ॥
सुक्षीर सिन्धुसायनं । सुसर्व यश गुणायनं ॥
नमामि शरणआयहौं । ब्रजेन्द्र दरश पायहौं ॥
सो०-यहि विधि अस्तुति कीन्ह, पाणिजोरिकै धर्मसुत।
कृष्ण अंकभरि लीन्ह, करिदायाबहुविधिमिलेउ॥
सबलसिंह तजि मोह, जोसुमिरै हरिनाम दृढ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सोई नर अति सोह, जन्म जन्म सुखपावहीं ॥
बैठे तुरत नृपहि बैठारी ❀ बोले बचन संत भयहारी ॥
कहौ कुशल नृप हमहिं सुनाई ❀ हस्तिनपुर कै सब कुशलाई ॥
आयो सकल भाई किमि आजू ❀ सो महिपाल बतावहु काजू ॥
तब बोले नृप दोउ करजोरी ❀ सुनहु मुरारी बिनती मोरी ॥
हमसे व्यास कह्यो अस बाता ❀ तुमनृपअगाणितगोत्रानिपाता ॥
दो०-कोटिन यज्ञ करहु जो, तीर्थ करहु समुदाय ।
दान अनेकन देहु नृप, यह हत्या नहिं जाय ॥
सो यदुनाथ कहौं समुझाई ❀ जेहि विधि हम भवपारै जाईं ॥
तब बोले श्रीयदुकुल नाथा ❀ कर्म अकर्म सबै विधि हाथा ॥
एक बात समुझावहुँ तोही ❀ जस नृप समुझि परत है मोहीं ॥
आयो कलियुग महा अनीती ❀ अब न कोय निज इंद्रिय जीती ॥
ब्राह्मण नहिं करिहैं शुभ काजा ❀ सजिहैं शुद्र तपस्या साजा ॥
दया धर्म्म रहित ह्वै जाई ❀ साधु निरादर जहँ चलि जाई ॥
कलियुग तीरथ रहै छपाई ❀ बिरला कोउ तीर्थ को जाई ॥
कलियुग गौवें दूध न दैहैं ❀ कन्या बेचि सकल धन लैहैं ॥
दाया रहित सकल संसारा ❀ कोउ न आतम करहि बिचारा ॥
मेघ वृष्टि करिहैं अति थोरी ❀ मंडल खंड वृष्टि चहुँओरी ॥
राजा प्रजा त्रासि धन लैहैं ❀ बोइकिसान अंश नहिं दैहैं ॥
दो०-करिहैं राज्य मालिच्छ सब, क्षत्री सब विधि हीन ॥
धर्महीन ह्वै जाइहैं, तेहिते ह्वैहैं क्षीन ॥
कन्या द्वादश वर्ष प्रसूता ❀ षोड़श वर्ष जाइहैं पूता ॥
अर्थ लागि नर धर्महि करहीं ❀ बिना अर्थ नहिं दाया धरहीं ॥
कलियुग कर्म विविध परकारा ❀ बरणत होई ग्रंथ अपारा ॥
सो संक्षेप कह्यो समुझाई ❀ अगिलचरित सुनहु मनलाई ॥
श्रीकृष्णहि जब कह्यो बुझाई ❀ तब राजाके विस्मय आई ॥
विविध भाँति मन कीन्ह बिचारा ❀ अब नाहीं होई निस्तारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुरत कृष्ण कहँ करि पर्णामा ❀ चढ़िरथ चलतभयो निजधामा ॥
आये तहँवाँ पाँचौ भ्राता ❀ जहँवाँ रहै कुन्तिमा माता ॥
पुत्रन देखि कुन्तिमा कहई ❀ काहे बदन सूख तव अहई ॥

दो०-कहा नृपति माता सुनहु, कलियुग भा बिस्तार ।
सबलसिंह श्रीकृष्ण प्रभु, भाष्यो सबै बिचार ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते स्वर्गारोहणपर्वणि
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

कहा नृपति माताहि समुझाई ❀ उत्तर पंथ जाब सब भाई ॥
सुनत कुन्तिमा नृप के बयना ❀ हृदय शोच भरि आये नयना ॥
कोहि कारण मम पुत्र बिछोहू ❀ यहमन समुझिभयो अतिमोहू ॥
फिरि धीरज धरि कह्यो बिचारी ❀ सुनहु पुत्र यह बात हमारी ॥
भूमि हेतु तुम भारत कीन्हा ❀ रणमहँ लोह गुरुन सन लीन्हा ॥
दुर्योधन कै सैन सँहारी ❀ गुरु औ बंधु गोत्र सब मारी ॥
मारेउ कर्ण दुशासन बीरा ❀ विष्वक्सेन हत्यो रणधीरा ॥
भीष्माचार्य धर्मध्वज मारेउ ❀ अश्वत्थामा बन्धु सँहारेउ ॥
बीर कलिंग जौन धनुधारी ❀ कुँवर लक्ष्मणा हत्यो प्रचारी ॥

दो०-विविध भाँति संग्राम करि, जीतेउ बीर अनेक ॥
पाइ एककृत राज्य अब, तजौ भीम की टेक ॥

सुनि माता के बचन बिनीता ❀ तब नृप बोल्यो गिरा पुनीता ॥
सुनु माता अब कलियुग माहीं ❀ राज्य करै कर पौरुष नाहीं ॥
श्रीकृष्णहिं आज्ञा शिर धरिहौं ❀ उत्तरपंथ गमन अब करिहौं ॥
राज्य परीक्षित देहुँ सुहाई ❀ करिहै मातु तोरि सेवकाई ॥
यह सुनि शीश परीक्षित नाये ❀ बोले नृपसन बचन सोहाये ॥
तुम बिन नाथ मोहिं सुखनाहीं ❀ बंधुहीन नहिं राज्य सोहाहीं ॥
तब नृप पुत्रहिं हृदय लगावा ❀ धीरज दीन बहुत समुझावा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सत्य बचन सुत कह्यो बिचारी ❀ क्षत्री धर्म सदा अनसारी ॥
दाया राख्यो मन करि धीरा ❀ पाल्यो प्रजा सदा तुम बीरा ॥
दो०-दाया राख्यो हृदयमहँ, कहेउ सो किहेउ प्रमान ।
राजधर्म लक्षण कहे, ऐसे बेद बखान ॥
भीमसेन सों कह्यो भुवारा ❀ वेगि करो अभिषेक बिचारा ॥
अगणित स्यन्दन तुरत सजाये ❀ औषधि मूल फूल सब लाये ॥
दूतन बोलि तुरत जल माँगा ❀ साजे बेगि अनेकन नागा ॥
विविध भाँति बाजन वजवाये ❀ ब्यास आदि सबऋषै बोलाये ॥
बिप्रन कीन्ह वेद उच्चारा ❀ जयजयशब्द भयोअनुसारा ॥
महादिव्य सिंहासन आवा ❀ मणिनजटितबहुभाँतिसोहावा ॥
व्यासदेव की आज्ञा पाई ❀ राज्य परीक्षित को बैठाई ॥
व्यासदेव तब तिलक करावा ❀ सब भूपन आ माथ नवावा ॥
पौत्रहिं राज्य भूप तब दीन्हा ❀ सबहिनाविविधिनिछावरिकीन्हा॥
तबहिं नृपाति माता शिरनाई ❀ पाँचौं भाई चले हर्षाई ॥
गंगा तीर तुरत नृप आये ❀ मणि मुक्ता बहुभाँति लुटाये ॥
दो०-बोले विप्र अनेक विधि, दीन्ह दान बहुभाँति ।
स्यन्दनहयगजबसनमणि, बर्णतबरणि न जाति ॥
बायु वेग साज्यो रथ पावन ❀ ऊंचध्वजा अतिपरम सुहावन ॥
सहित द्रौपदी पाँचौं भाई ❀ तिहिपर नृपाति चढ्यो हर्षाई ॥
उत्तर मुख तुरताहि रथ महऊ ❀ नगरलोग व्याकुल ह्वै गयऊ ॥
रोवहिं पशु पक्षी सब नाना ❀ महा वियोग न जाइ बखाना ॥
अब केहिके शरणागत रहिहैं ❀ होइहिं त्रास भागिकहँ जहिहैं ॥
तब सबाहिन समुझाय नरेशा ❀ कहिसबकलियुगको उपदेशा ॥
धर्मराय सब कहँ समुझावा ❀ उत्तरदिशाहि बिमान चलावा ॥
ब्रह्मचर्य ब्रत युक्त सुहाये ❀ हरिद्वार के ढिग नृप आये ॥
को छबि हरिद्वार की कहई ❀ दर्शन करत महाअघ दहई ॥
घाट सोहावन रत्न जड़ाये ❀ जहँ बहु देव रहे नित छाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दो०-हरि चरणन दर्शन करी, ब्रह्मकुण्ड स्नान ।
श्रीकृष्णपद सुमिरि तब, नृप फिरि कीन्ह पयान ॥
हरिद्वार उत्तर चलि आये ❀ वीरभद्र के दर्शन पाये ॥
करि दर्शन नृप आगे गयऊ ❀ तप कानन प्रमुदितमनभयऊ ॥
विविध मुनिन के धाम सुहाये ❀ भूपति देख महासुख पाये ॥
भरत दरश कीन्हो हरषाई ❀ लक्ष्मण चरण विलोक्यो जाई ॥
करि परदक्षिण सुमिरि मुरारी ❀ सुरप्रयाग देख्यो भयहारी ॥
फेरि नृपति तहँवां चलि आये ❀ शिव आश्रम जहँ वेदन गाये ॥
शंकर दरश हेतु मन ठाना ❀ सो गिरिनाथ हेतु सब जाना ॥
छिपे शंभु महिषा उर माहीं ❀ ढूँढन लगे मिलहि हर नाहीं ॥
कह नृप सुनहु बचनअबताता ❀ कहँ गे शंभु कहौ सो बाता ॥
दो० कह सहदेव बिचार करि, सुनहु भूमिपति बात ।
यह जानि छपिरहे शिव, हम कीन्हे कुलघात ॥
सुन्यो भीम महिषासुर जबहीं ❀ क्रोध कीन्ह वायूसुत तबहीं ॥
जो महिषा उर छिपै महेशू ❀ तौ तुम सुनहु मोर उपदेशू ॥
मम चरणनके बीच निकारी ❀ तब दर्शन देहैं कामारी ॥
भूप कह्यो सुनु भीमकुमारा ❀ क्रोध किये नहिं काज हमारा ॥
शंकर दीनबंधु जगदीशा ❀ सुरनर मुनि सब नावहि शीशा ॥
धर्मराय तब अस्तुति ठाना ❀ पाँचौं भाइन यह मत माना ॥
जय २ शंकर जन भय हारी ❀ दीनबंधु भयहरण पुरारी ॥

छन्द त्रिभंगी ।

जय शिवशंकर शरण भयहरण व्यापक रूप अनूपा ।
पाणि त्रिशूल दरिद्रवन प्रभु कृपासिंधु सुररूपा ॥
सुरमुनि पालक खलकुलघालक जय कृपालु बृषकेतू ।
जय त्रिपुरारी प्रभु कामरी जासु नाम भवसेतू ॥
अंग विभूति अभूषण सोहैं लख सुरनर मुनि मोहैं ।
कंठ शेष गरलकृत भक्षण गंग जटा शिर सोहैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah
न्य० का० प्रेस,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हमहिं कृतारथ करन हेतु अब दरशन देहु कृपाला ।
सबलसिंह पुनि पुनि नृप बिनवैं जय जय दीनदयाला ॥
जय शिव सब लायक सब जगनायक गंजन विपति समूहा ।
गुण अवगाह थाह नहिं पावत गावत सब सुर जूहा ॥

सो० यहि बिधि बिनती कीन्ह, धर्मराज करजोरितहँ ।
तब हर दरशन दीन्ह, तब केदारपति परशिनृप ॥
पराशि केदार भुवाल, विनय करत मँहि भालधरि।
जय जय शंभु कृपाल, प्रभु मोहि पार लगाइये ॥

छन्द-नमामि ईश ईश्वरं । पाहि मे परमेश्वरं ॥
नमामि आशुतोषणं । समस्त लोक पोषणं ॥
अनेक रूप धारणं । बिभंजलोक कारणं ॥
गिरीश रूप आगरं । त्रिलोक में उजागरं ॥
कपालमाल शोभितं । पाहि शरण मैं नितं ॥
नमामि गंग धारणं । अनेक भय निवारणं ॥
सव्यापकं विभु प्रभो । गुणाकरं कृपाल भो ॥
दयालु दीन नायकं । सुसन्त सुःख दायकं ॥
कराल काल भक्षकं । स्वभक्त दीन रक्षकं ॥

पुनःछंद--निरंकार रूपनाथ । अर्थ चारि प्रभो हाथ ॥
शैलनाथ शिवनाथ । नागेश्वर रामनाथ ॥
शीशगंग चन्द्रमाल । कंठमाहि नागमाल ॥
दरशदियोजानिदीन । मैं तो सर्वज्ञ हीन ॥
बार बार हाथ जोरि । राखो अभिलाष मोरि ॥

दो० बार बार बिनती करी, भूप दण्डवत कीन्ह ।
मन वांछित बर पायो, शंभू आशिषहि दीन्ह ॥
पांचौं भाई बहुरि शिर नाई ❀ आगे कहँ रथ दीन चलाई ॥
चलेउ बद्रिकाश्रम को ताके ❀ अगणित पर्वत नाघत बांके ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शैलावत पर्वत पर आयो ❀ महा ऊँच नहिं मारग पायो ॥
ताहि तोरि तहँ पवनकुमारा ❀ रजकर शृंग तोरि महि डारा ॥
निर्मल पंथ कीन्ह बलवाना ❀ आगे चलत भजत भगवाना ॥
विश्ववती गिरि देख्यो जाई ❀ मारग तहाँ भीम नहिं पाई ॥
बायें हाथ तोरि तिहिं दयऊ ❀ तहाँ पंथ अति निर्मल भयऊ ॥
तिहिपर चढ़ि गे पाँचौं भाई ❀ शिषर विमानवती नियराई ॥
तहाँ एक अति दैत्य प्रचण्डा ❀ आगे आई मिला बरबण्डा ॥
देखि नृपहिं अति हर्षित भयऊ ❀ बचनक्रोध अतिशीतलकयऊ ॥
सुफल जन्म मम भयो भुआरा ❀ शत्रु दरश मोहिं मिलेउतुम्हारा ॥
सज्जन शत्रु आजु गृह आवा ❀ मिटा कोटि दुख दारुण दावा ॥
दो०-आजु जन्म मम सफल भा, सज्जन रिपु गृह पाय ।
देहु युद्ध धर्मराज मोहिं, कहै लाग गोहराय ॥
कहा भूप सुनु निशिचर राजा ❀ मैं छाँड़यो सब लौकिक काजा॥
ब्रह्मचर्य्य हम पाँचौं भाई ❀ व्रतसुयुक्त नहिं युद्ध सोहाई ॥
अस्त्र सकल अर्जुन धरि दीन्हें ❀ अगमपंथकहँ काहु न लीन्हें ॥
शंकर दरश कीन्ह हम जबहीं ❀ भीमहु गदा दन्हि धरि तबहीं ॥
पण्डित है भाई सहदेऊ ❀ नकुल न जान युद्ध कर भेऊ ॥
यहि मा लरनहार नहिं कोई ❀ हमसों युद्ध कबहुँ नहिं होई ॥
यह सुनि मेघनाद अस कहई ❀ बिना युद्ध नहिं देबै जाई ॥
देहु युद्ध मोहिं नृप रणधीरा ❀ पुनि पुनि कहै निशाचर वीरा ॥
सुनिकै भीम क्रोध भरि आयो ❀ धर्मराजसों बचन सुनायो ॥
दो०-आज्ञा देहु नृपाल मोहिं, निशिचर हतों प्रचार ।
भूपति कहेउ भीमसन, राखहु क्रोध सँभारि ॥
कहा पंथ कहँ जो कोउ जहई ❀ क्रोध तजै शास्त्र अस कहई ॥
हरिजन कहँ रिस कबहुँ न आवै ❀ द्वादश षष्ट पुराणहि गावै ॥
दैत्य नृपति कहँ बहुत प्रचारा ❀ नहिं आवा कछु हृदय सँभारा ॥
मेघनाद तब गर्जत भयऊ ❀ जनु घनघोर महाध्वनि भयऊ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

प्रलय समान ठोंकि भुजदण्डा ❀ कीन्होसि नाद महा परचण्डा ॥
झपटि द्रौपदी को लै गयऊ ❀ भीम हृदय अतिविस्मयभयऊ॥
कहा भूपसन पवनकुमारा ❀ नाथ भयो अपमान हमारा ॥
दो०-पांचाली को दैत्य अब, लैगा अपने धाम ।
धृक धृक जीवन जन्म मम, जो न कीनसंग्राम ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते स्वर्गारोहणपर्वणि
द्रौपदीहरणनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अस कहिभीम क्रोधभरिआयो ❀ मानहुँ सोवत सिंह जगायो ॥
ताल ठोंकि पर्वत लै धायो ❀ जहँवा असुरधाम तहँ आयो ॥
कोटिन दैत्य महा बरियारा ❀ धाये गर्जत विविध प्रकारा ॥
शिखर प्रहार भीम तब कीन्हा ❀ मानहु बज्रघात करि दीन्हा ॥
पवनतनय अति भुजबलजोरा ❀ सहस निशाचर गहि शिरफोरा॥
मेघनाद कहँ भूमि पछारी ❀ हाहाकार भयो अति भारी ॥
मारि निशाचर तर्पिन लीन्हा ❀ तबहिं द्रौपदी आशिष दीन्हा ॥
धन्य पवननन्दन बलवाना ❀ अपनि प्रतिज्ञाकियो प्रमाना ॥
धन्य महाबल अतिभुज जोरा ❀ राख्यो भीम सत्य तुम मोरा ॥
दो० धन्य धन्य पांडव सुवन, द्रोपदी कीन बखान ।
पांचौभाई सुमिरिहरि, पुनिफिरं कीनपयान ॥
वैशम्पायन कहि समुझाई ❀ सुनुजन्मेजय नृप मन लाई ॥
कथा पुनीत सुनत दुख भागे ❀ पांचौ भाई चले पुनि आगे ॥
यूप कूप आगे शत बीरा ❀ देखत कूप भीम रणधीरा ॥
कहा कूप सुनु पांडु कुमारा ❀ सुनहु नाथ अब कहा हमारा ॥
क्रोध ढील अरु पंथ सुहाये ❀ हमहूँ दरश तुम्हारे पाये ॥
असशुभ बचन कूप जबकहेऊ ❀ सुनत भीमतब शीतलभयऊ ॥
आगे चले युधिष्ठिर राजा ❀ बेनवती देखिन नृप साजा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

देवसुता तब आगे आई ❀ दोउ कर जोरि कहा शिरनाई ॥
धन्य धर्मध्वज राजकुमारा ❀ अब कछु सिखवन सुनहुहमारा ॥
उत्तर पंथ नाथ दुख भारी ❀ महा शिखर आगे भयकारी ॥
दो० इहवाँ रहेहुनरेशतुम, करहु बिविध बिधि भोग ।
सुरपुर ते अति सरिस सुख, छूटै जक्त वियोग ॥
कहेउ भूप सुनु कन्या बानी ❀ वेद चारि अस कहैं बखानी ॥
राज पसार लोक तिन त्यागा ❀ हरिचरणन तिनकर मन लागा ॥
तिन सम धन्य और नहिं कोई ❀ हरिहि पियार सदा वै सोई ॥
अन्त समय केवल पद पावैं ❀ फिरियहि जक्त बहुरि नहिं आवैं ॥
मैं निज पुरत्यागो अस जानी ❀ कहत भयो नृप अति मृदुबानी ॥
बैनवती समुझाय भुवाला ❀ बहुरि सुमिरि निज इष्ट गोपाला ॥
धरा शिखर ऊपर चढ़ि आये ❀ महागहन नहि मारग पाये ॥
भीम हृदय तब कीन्ह बिचारा ❀ धरा शिखर अति ऊँच अपारा ॥
सब पर्वत ते अति विस्तारा ❀ ताके शृंग तोरि महि डारा ॥
दो० धरा पर्बतन तोरिकै, कीन्हो पंथ पुनीत ।
हरि हर सुमिरत बंधु सब, आगे चले विनीत ॥
भद्रकालि कन्या तहँ रहेऊ ❀ देखि पाण्डवन मोहित भयऊ ॥
आगे आई नृपति शिर नाई ❀ मृदुल बचन अति कह्यो सोहाई॥
धन्य देव राजन शार्दूला ❀ सत्यवादि तुम सुकृती मूला ॥
विविध विलास महा स्थाना ❀ करहु भोग नृप परम सुजाना ॥
देवन कन्या परम सुहाई ❀ सो तुह्मारि करिहैं सेवकाई ॥
इन्द्रपुरी सुख सरिस सुहाये ❀ सो पैहौ नृप नित मन भाये ॥
करहु विलास त्याग निज हेतू ❀ रहौ नाथ सब बंधु समेतू ॥
उत्तर पंथ गहन बहुतेरे ❀ तहवां पंथ न पैहौ हेरे ॥
देवभुवानि तब रूप देखावा ❀ देखि भूपके नहिं मन भावा ॥
दो० भद्रकालिसो धर्मसुत, बहु बिधि कहेउ बुझाई ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इन्द्रपुरीसों सरस सुख, सो मैं चलेउँ बिहाइ ॥
हम जाइब श्रीपति के धामा ❀ हमको नहीं भोगसे कामा ॥
भद्रकालि समुझाई नरेशा ❀ आगे चलेउ अगम जहँदेशा ॥
शिखर अनंत महा विस्तारा ❀ शतयोजन सो ऊँच अपारा ॥
चढ़ेउ युधिष्ठिर पांचौ भाई ❀ संग द्रौपदी पंथ न पाई ॥
आगे भीम पंथ तहँ कीन्हा ❀ गिरिके शृंग तोरि तब दीन्हा ॥
नाँधि अनन्त शिला पर गयऊ ❀ बद्रीपति कहँ देखत भयऊ ॥
दूरिहि ते प्रदक्षिणा कीन्हा ❀ ठाकुर के दर्शन मन दीन्हा ॥
अस्तुति कीन्ह नृपति हर्षाई ❀ जय कृपालु संतन सुखदाई ॥

त्रिभंगीछंन्द ।

जय जय भवतारण असुरसँहारण जयातिचक्रधरस्वामी ।
महिभार विभंजन सुरमुनिरंजन जयकृपालुअन्तर्यामी ॥
जय गदापद्मधर आनँदनिधीहर जासुचरणश्रीगंगा ।
प्रगटी संसारा जगविस्तारा कीन्हें पाप सकल भंगा ॥
जय दुष्टनिकंदन जय जगबन्दन तुमभस्मासुरभस्मकरी ।
प्रल्हाद उबारे असुर विदारे रूपधार नरसिंहहरी ॥
प्रभु तुमसबलायक रिधिसिधिदायक जिनकरमनरतपदकंजा ।
सुमिरैंनिशिबासर हरि हरि हर मदमायाकोदलभंजा ॥
मधुकैटभमारेउ महिविस्तारेउ खरदूषणकोबलभंजा ।
बनमच्छकच्छनर वामनवपुधरकर सुरसन्तनकोदुखगंजा ॥

छंद ।

सकलचराचररूपतुम्हारा तुमहींप्रभुयहजगविस्तारा कोइनपावैपारा ।
निगमागम निशिवासरगावैं शेषशारदाशंकरध्यावैं बीतेकल्पहजारा ॥
गुणओगाहथाहनहिंपावैंअपनीमतिभारसिहिनहिंगावैकोकबिकरैबखाना
जोहिपरनाथदयाकरिहेरेउतोहिकीमतिमदमोहनघेरेउसोचरणनालिपटाना
बारबारकरजोरिधर्मसुतसाहितद्रौपदीऔरअनुजयुतअस्तुतिकरतसुजाना
मनबांछितफलसोदीन्हेउमोहिंजयकृपालुप्रभुमैंयाँचेतोहियहवरमनअनुमा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नाफिरनृपबंधुसहितगयेतहँवाऋषयसमूहविराजेजहँवाँकोन्हउदंडप्रणामा
लोमशादिमुनिसकलविराजौंनिजनिजवेदिनऊपरराजैंतेजज्ञानकेधामा॥

दो० गौतम औ जमदग्नि मुनि, भरद्वाज सुखधाम॥
अंगीऋषी शृंगीऋषी, जिन जाने हरिनाम॥

पारस उद्दालक मुनि ज्ञानी ❀ औ कौण्डिन्य महा सज्ञानी॥
शोभा ऋषै गर्ग ऋषि तहँवाँ ❀ मार्कण्डेय सहित हैं जहवां॥
सुरगुरु कपिल देव तहँ भ्राजा ❀ विश्वामित्र करहिं तपसाजा॥
सूर्य्यवंश के गुरु तहँ देखे ❀ राजै धर्म धन्य करि लेखे॥
वामादिक अरु ऋषय बाशिष्ठा ❀ ये सब बैठे सकल सरिष्ठा॥
वाल्मीकि सम ऋषि अनेका ❀ ऋषिदल मधजे परम विवेका॥
भृगुनायक अरु भारंगादी ❀ और सकल परमारथवादी॥
अत्री मुनि तहँ ज्ञान निधाना ❀ कुंभज आदि सकल सज्ञाना॥
परम हंस देखत मन मोहै ❀ मानहुँ वेद धरे तनु सोहै॥
सनकँ सनन्दन सनत कुमारा ❀ शौनकादि नारदहिं निहारा॥
जान्यो सफस जन्म मम होई ❀ ऋषि समूह जब देख्यो सोई॥

दो० सबकहकीन्ह्योदण्डवत, धन्य जन्म निजजानि।
सबलसिंह नृप बंधुयुत, चरण परेउ तब आनि॥

तब ऋषि बोले गिरा सुहाई ❀ आशिष दीन्ह नृपहिं बैठाई॥
नारद ऋषि बोले तब बानी ❀ सुनहु धर्मनन्दन विज्ञानी॥
करतेउ राज सकल सुख नाना ❀ अबहीं काहेक कियो पयाना॥
वैतरणी अति दूरि भुवाला ❀ मारग अगम बसै बहु काला॥
तहँको पहुँचब काठिन नरेशा ❀ काहेक तज्यो रुचिरअतिदेशा॥
हस्तिनपुरी महा सुख सोहै ❀ जेहिके देखत सुरगण मोहै॥
सुनि नारद के बचन सुहाये ❀ भूप जोरिकर बचन सुनाये॥
मोरि भाग्य अति बल ऋषिराई ❀ जो तव चरण विलोक्योआई॥
नृप कर जोरि मुनिनके आगे ❀ स्तुति करन लगे अनुरागे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

छन्द नाराच ।

नमामि सिद्धि दायकं । मुनीश सन्त नायकं ॥
त्रिवेद रूप आगरं । सुब्रह्म पुत्र नागरं ॥
सर्वज्ञ नाथ ब्रह्ममयं । नमोनमः कृपालुजयं ॥
जय ब्रह्म विष्णु शंभुरूप । अग्नि सूर्य चन्द्र रूप ॥
सनाथ नाथ वेद रूप । हरो कलह कलाप कूप ॥
नमामि विश्व लोचनं । नमामि पाप मोचनं ॥
दियो सदर्श आयकै । लियो हृदय लगायकै ॥
कृपा करो कृपा करो । दया निधान भय हरो ॥

सो०-अहो भाग्य अवगाह, देख्यो चरण मुनीश तव ।
छुटिगै कोटिनंदाह सवलासिंह नृप कहेउ अस ॥

सुनहु ऋषिय कह बहुरि नरेशू ❀ जेहि कारण मैं छोड़ेउँ देशू ॥
आयो कालियुग महा प्रचण्डा ❀ अब सबके उर बस पाखण्डा ॥
नीति विचार करी नहीं कोई ❀ विविध अनीति जगतमें होई ॥
नारद ऋषि तब बोले बयना ❀ सुनहुमहीप सकलगुणअयना ॥
भल कीन्हेउ तुम यहमत ठाना ❀ जो उत्तर पथ किया पयाना ॥
नारद कहन लगे विज्ञाना ❀ सुनहु महीप हृदय धरिध्याना ॥
याहितनुअमितअनीतिहि रहहीं ❀ अपनी वृद्धि सकल वेचहहीं ॥
अस्थि मांस नारी त्वच जोरा ❀ काम क्रोध तिंहिमा बरजोरा ॥
माया मोह साज भय संगा ❀ इनके विविध प्रकार तरंगा ॥
रजो तमो औ सतगुण आवै ❀ इनसबजीव विविधविधि भावै॥

दो०-ये सबकरहिं कर्मबश, जीव कहै हम कीन्ह ।
नारद भाषत ज्ञान यह, तेहिते इन मनलीन्ह ॥

चिन्ता हर्ष बसै तनु माहीं ❀ बहुविधि नींद बश्य व्है जाहीं॥
प्राकृत कर्म जीव कहँ लागै ❀ होइ सुखी जो इनकह त्यागै ॥
कर्म अकर्म उभय जग करई ❀ तेहिते देह अनेकन धरई ॥
इन्द्रिय स्वाद भूलि जग माहीं ❀ हरिशरणागत आवत नाहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दश इन्द्रिन के दशौ विचारा ❀ वे निशि बासर चलैं अपारा ॥
नेत्रन रूप रूप बश करई ❀ देखै की इच्छा बहु धरई ॥
श्रवण शून्य सुनै कछु जबहीं ❀ जीवहि आइ करै बश तबहीं ॥
जिव्हा पर रस रस को चाहै ❀ नाशा गंध गंध बश राहै ॥
त्वचा बसत अस्पर्स सोहाई ❀ शीततपनि दुखसुखहि बताई ॥
औरो इन्द्रिन के अति स्वादा ❀ सो वे चहैं गयरि मर्य्यादा ॥
औरो चारि अवस्था गाढी ❀ तिन बहुभांति जीवकहँदाढी ॥
बालक होइ युवा ह्वै जाई ❀ वृद्ध होय तनु जाय पराई ॥
योनि लक्ष चौरासी जोई ❀ कर्म निबन्ध करै जिय सोई ॥
यहि प्रकार जिय हरिकहँभजई ❀ रहत अधीन संग कस तजई ॥
तीनि अवस्था वेद बखानी ❀ जाग्रत स्वप्न सुषप्ती जानी ॥
पाँच पचीस तत्व बलवाना ❀ इन संग जीव भयो अज्ञाना ॥
शोधि मनै नहिं धावै पावै ❀ इतने गाँसि नादपर लावै ॥
त्रिकुटी संयम चढै गगनमा ❀ सुरति बांधि देखोनिजतनमा ॥
पांचौ शब्द होय झनकारा ❀ सोई साहब त्रिभुवनते न्यारा ॥

सो०-प्राकृत संग छोडाइ, मनकहँ गाँसिविचारकरि ।
हरिपद सुरति लगाइ, फिरिनपरै भ्रमजालनर ॥
शमदरशी ह्वै जाइ, एकरूप सब जगत लखि ।
कहुनारद समुझाइ सबलसिंह भव तरै सोई ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते स्वर्गारोहणपर्वणि
विज्ञानवर्णनो नामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जब नारद राजहिं समुझावा ❀ तत्वज्ञान को भेद बतावा ॥
तब नृप बहुरि हर्षि शिर नाये ❀ सहित द्रोपदी पंथ सिधाये ॥
आबू शिखर गये सब भाई ❀ तहवां दैत्य मिले समुदाई ॥
कोटिन निशिचर यूथ घनेरे ❀ राजहिं आइ पंथ महँ घेरे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मागहिं युद्ध गाज घनघोरा ❀ प्रलयकाल रव मो चहुँओरा ॥
ह्वै गयंद हय रूप देखावैं ❀ ह्वै केहरि कढ गर्जत आवैं ॥
अगणित रूप भयंकर देखी ❀ नृपति भीमसो कहेउविशेखी ॥
क्रोध न कीन्हेउ पवन कुमारा ❀ अब मन सुमिरहु जक्तकउदारा ॥

दो०-वासुदेव भगवान प्रभु, हरे कृष्ण गोपाल ।
गोपीपति गोवन्दकहि, आगे चलेउ भुआल ॥

तहँवाँशीत प्रबल अति भयऊ ❀ तुरत द्रौपदी तनु गलि गयऊ ॥
यज्ञाली तनु तजि अनयासा ❀ जाइ कीन्ह बैकुण्ठ निवासा ॥
देखि भीम अति शोच बढ़ावा ❀ दोना नयन नारि भरिआवा ॥
हा देवी तुम तनु तजि दीन्हा ❀ तुम सम वर्त्त न काहू कीन्हा ॥
जस रोहिणी चन्द्रमहि जाना ❀ जसरुक्मिणी कृष्णकहँमाना ॥
तस अर्जुन के मानेहु देवीं ❀ निशिदिनचरणतृपाति के सेवी ॥
तव व्रत राखी कृष्ण मुरारी ❀ उभय सभा महँ होत उघारी ॥
भीमहिं बाढ़ो शोच अपारा ❀ तब समुझायो धर्मकुमारा ॥
भीमसेन तुम तजहु कलेशू ❀ निगमागम कर अस उपदेशू ॥
भारत भयो द्रौपदी हेतू ❀ जुझि गये सब गुरून समेतू ॥
तोहि कारण तनु गत ह्वै गयऊ ❀ धरहु धरि राजा अस कहेऊ ॥
ज्ञान मिटै उर करत अँदेशा ❀ धर्मसुवन वहुबिधि उपदेशा ॥

दो०-जनार्दन यदुनाथ कहि, श्रीकृष्ण कुलकेतु ।
आगे बढ़उे नरेश तब, पांचौं भाई समेतु ॥

कछुक दूरि आगे जब गयऊ ❀ कंचनपुरी विलोकत भयऊ ॥
रत्न खम्भ सब जड़ित सोहाये ❀ कंचनके कपाट बहु लाये ॥
देवन कला विविध परकारा ❀ जिनके रूप न कोउ संसारा ॥
रति रंभा उर्वशी लजाहीं ❀ और त्रिया को लेखे माहीं ॥
शिव हरि शक्ति गनै को भाई ❀ जक्तमातु उपमा किमि लाई ॥
रूप राशी कन्या सब धाई ❀ धर्मतनय सों कह्यो बुझाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अहहु भूप तुम शीलनिधाना ❀ राज्य करौ हमरे अस्थाना ॥
विविध भाँति सुख करहु नरेशा ❀ देव सुतन कर अस उपदेशा ॥
पाँचौं भाई रहौ सब जानी ❀ बोली सकल बचन रसखानी ॥
तब राजै सब बचन सुनाये ❀ हम तौ राजभोग तजि आये ॥
श्रीपति पुरुषहि इच्छा जागी ❀ तब हम चले सकल सुख त्यागी ॥

दो०-राज विषय रस भोग है, मैं त्यागेउँ अस जानि ।
श्रीकृष्ण पदपंकज, मति लागि भयहानि ॥

अस कहि भूप चलत पुनि भयऊ ❀ नाम अनंग शिला पर गयऊ ॥
शीत प्रबल कछु बरणि न जाई ❀ सहदेव तनु तहँ गयो बिलाई ॥
कीन्ह भीम तहँ अति अपघाता ❀ बुद्धिमन्त नहिं देखिय ताना ॥
कह्यो भीम भा बंधु बिछोहू ❀ यहसुनिनृपहिं भयो अतिछोहू ॥
ज्योतिष सकल विशारद भाई ❀ सकलशास्त्रमतिबरणिन जाई ॥
वेद निधान सकल गुण पूरे ❀ क्षत्री धर्म अस्त्र के पूरे ॥
अहह बंधु गत भे केहि पापा ❀ सुमिरिभीमअतिकीन्हाबिलापा ॥
राय युधिष्ठिर तब समुझाये ❀ कूर्माशिला ऊपर चढ़ि आये ॥
अति घनघोर शिला तब कीन्हा ❀ नकुलहिआयतोपितेहिलीन्हा ॥
कीन्ह कोलाहल तेहिं भयकारी ❀ अति प्रज्वलित शीत त्योंडारी ॥
तहँवाँ नकुल देह गलिगयऊ ❀ पवनतनयके अति दुखभयऊ ॥

दो०-रूपराशि मम बंधु दोउ, सकल गुणनकी खानि ।
रोवहिं अर्जुन भीम सब, बल औ शील बखानि ॥

नृपति समेत क्षणक करि शोचू ❀ आगे चल्यो छाँड़ि सब शोचू ॥
नाम गोमती शिला पुनीता ❀ तेहिपरम्बलअमितअतिशीता॥
गार्जि धनंजय कहँ लै लीन्हा ❀ गजपुरनाथ शोच तब कीन्हा ॥
अहह बंधु तुम यज्ञ कराई ❀ घोड़ा लायहु भूमि फिराई ॥
तुम्हरे बल विप्रन कहँ दाना ❀ दीन्हों मैं जो मो मनमाना ॥
महा धनंजय कृष्ण पियारे ❀ तुम राजन के गर्व प्रहारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तुव भुजबल सुरनाथ गयंदा ❀ पूजिकूजि मैं कीन्ह अनन्दा ॥
तुम बिनु दिशाशून्य सब भयऊ ❀ अहह बंधु कहँवाँ तुम गयऊ ॥
धिक मम जन्म युधिष्ठिर कहेऊ ❀ जो मम बंधु नाशह्वै गयऊ ॥
क्षणक शोच फिरि शोच बिहाई ❀ आगे चलत भये द्वौ भाई ॥
वैतरणी जहँ नदी सोहाई ❀ तिहि स्थान गये द्वौ भाई ॥

दो०—वैतवती जहँ शिला बड़, गर्जा प्रलय समान ।
तिहि तर तोपि गयो पुनि, वायूसुत बलावान ॥

नृपति युधिष्ठिर शोच बढ़ावा ❀ श्वातस्वरूप तहाँ इक आवा ॥
ताहि देखि नृप कहेऊ बिचारी ❀ अहोश्वान कहँ वास तुम्हारी ॥
उत्तर पंथ स्वर्ग भयकारा ❀ तुम कहु देखहु भीम कुमारा ॥
अर्जुन भीम नकुल सहदेवा ❀ कहौ श्वान कछु इनकर भेवा ॥
यह सुनि श्वान कह्यौ मृदुबानी ❀ सुनहु युधिष्ठिर नृप विज्ञानी ॥
वैतरणी यह नदी पुनीता ❀ कृष्णस्वरूप कहत अस गीता॥
मज्जन करहु पाप मिटि जाई ❀ फिरि नहिं जक्त जन्म नियराई॥
नर तनु मोह लोभ संग लाये ❀ माया खगुण तीनि अभागे ॥
यह नर देह मूत्र मल झोरी ❀ याहि मा पांच तत्व है जोरी ॥
कामादिक विष्ठा लपटानी ❀ करु स्नान नृपति अस जानी ॥
यामें मज्जन करै जो कोई ❀ पलटै देह देवतनु होई ॥

दो०—श्वान कहेउ समुझाई के, करहु नृपति अस्नान ।
सकल पाप तब छूटहीं, आवै स्वर्ग विमान ॥

तुरत नृपति मज्जन तब कियऊ ❀ छुटि गा मोह ज्ञानवर भयऊ ॥
भूप श्वान की अस्तुति कीन्हा ❀ तुममम पिता ज्ञान मोंहि दीन्हा ॥
माता बंधु सखा तुम मोरे ❀ यहि बिधि नृपति कहतकरजोरे॥
तिहि क्षण आवा विष्णु विमाना ❀ तेज पुंज रवि किरिण समाना ॥
को शोभा तेहि यान कि कहई ❀ शेष शारदा तेउ ठगि रहई ॥
मुक्तन के गुच्छा चहुँ ओरा ❀ मणिन सिंहासन तिहि परजोरा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

महा पुनीत रत्नमय सोहा ❀ जानै धर्मसुवन जिन जोहा ॥
विविध सुगंध लपेटि सोहावा ❀ लैके विष्णु दूत तहँ आवा ॥
धर्मतनय सन कहेसि बुझाई ❀ चढ़हु विमान नाथ अब आई ॥
चढ़ि बैकुण्ठहि चलो भुवाला ❀ तहँभोगहुसुखविविधविशाला ॥
सकल देव जहँ श्री भगवाना ❀ मुनिजन तहाँ वसतहैं नाना ॥
विविध तपस्या जिन महि कीन्हा ❀ तिनहिनिवासतहाँविधिदीन्हा ॥

दो०—बिष्णुदूतके बचन सुनि, कहा नृपति कर जोरि ।
श्वान चाढ़ावो यान पर, प्रभु बिनती सुनि मोरि ॥

बिना श्वान नहिं चढ़ौं विमाना ❀ नहिं बैकुण्ठ करौ प्रस्थाना ॥
नृपवाणी सुनि सूर्य कुमारा ❀ कह्यो धन्य सुत ज्ञान तुम्हारा ॥
चढ़हु तात हरि रुचिर विमाना ❀ मैं तव पिता नहीं मैं श्वाना ॥
धन्य युधिष्ठिर देवन कहेऊ ❀ सुरतरु सुमनवृष्टि नभ करेऊ ॥
धर्मराज सुररुप देखावा ❀ राय युधिष्ठिर पद शिर नावा ॥
धन्य जन्म मम भयो सोहावा ❀ पिता तुम्हार दरश मै पावा ॥
नेमक्रिया सव सफल हमारे ❀ तात चरण अब देखि तुम्हारे ॥
नमोस्तुते कहि बारहि बारा ❀ हरि विमानपर चढ्यो भुआरा ॥
बिष्णु विमान बैठि जब राजा ❀ तब हरिगणन अभूषण साजा ॥
मुकुट मनोहर शीश बँधावा ❀ पीताम्बर पट आनि ओढ़ावा ॥
नवभूषण भुज बाँधि बहूटा ❀ कंकण आनि हाथ महँ जूटा ॥
हरिस्वरूप जस वेदन गाये ❀ विष्णुगणनतसनृपहि बनाये ॥
रुचिर छत्र शिर ऊपर ताना ❀ ढोरत चमर उड़ान विमाना ॥

दो०—यहिबिधि नृपहि बिष्णुगण, क्षणमहँ लैगे धाम ।
जे छलछाँडि भजहिं हर, तिनहि देत गतिराम ॥

हरिगण नृपहि धामले आये ❀ श्री निवास के दर्शन पाये ॥
देखि भुप दोनों कर जोरी ❀ जय दयालु राख्यहु रुचि मोरी ॥
जय सच्चिदानन्द घन श्यामा ❀ यह सुनि आपु उठे श्रीरामा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्षीर निवास हृदय महँ लाये ❀ गहि भुज अपने ढिग बैठाये ॥
नृप बैकुण्ठ विराज्यो जाई ❀ वैशम्पायन कथा सुनाई ॥
जनमेजय सुनि अतिसुख पावा ❀ मुनिकहँ बहुरि हाथ शिरनावा ॥
कथा पुनीत सुनत दुख भागा ❀ आगे बहुरि करहु अनुरागा ॥
मुनि अभिलाष नृपति करजाना ❀ फिरिआगेतब कीन्ह बखाना ॥
हरिपुर नृपति जाई सुख पाई ❀ तहाँ विलोक्यो चारिहु भाई ॥
सहित द्रौपदी रूप अनूपा ❀ द्रोणाचार्य सहित सब भूपा ॥
देवरूप तहँ भीष्मपितामा ❀ कर्णसहित राजहि हरिधामा ॥
दुर्योधन आदिक बलवाना ❀ जिनजिन मरत युद्ध रणठाना॥
नृप वैराट सहति सुत देखा ❀ औरहु बहुत करैको लेखा ॥
गांधारी माता तहँ देखा ❀ माद्री सहिता धरे शुभवेखा ॥
जयद्रथ नृप अहिबरण कुमारा ❀ सबहिन कहँ तहँ देखि भुवारा ॥

दो०—भारत महं जे जूझे, स्वर्ग निवासहि झारि ।
विविध भाति सुख पायो, धर्मज सहित निहारि ॥

पुर बैकुण्ठ पाँडवा गयऊ ❀ सुनिजन्मेजय कहँ सुखभयऊ ॥
बारम्बार जोरि युग पानी ❀ ऋषिते कह्यो भूप मृदुबानी ॥
आनन शशि तव नाथ पुनीता ❀ अमृतमय यह गिरा बिनाता ॥
तृषितहृदय सुनिअति सुखभयऊ ❀ नानाभाँति लाभ मैं लह्यऊ ॥
यह तन कल्प पांडवन केरा ❀ सुनि छूटै चौरासी फेरा ॥
व्यासदेव भारत महँ भाषी ❀ याहिके चारि निगमहैं साखी ॥
जो कोउ सुनै कपट करि दूरी ❀ पाइहि सिद्धि सकलसुखभूरी ॥
जो नर या कहँ झूठ बिचारी ❀ होइहि अधम नरक अधिकारी ॥
क्षत्री सुनत समर जय पावैं ❀ जो विश्वास मानि यह गावैं ॥
ब्राह्मण पढ़ै सुनै छल त्यागी ❀ वेद निधान होय बड़ भागी ॥
जो नर नारि सुन मन लाई ❀ तेहिकर पाप सकल मिटिजाई ॥
अन्तकाल निर्भय हरिलोका ❀ जाइ बसै तजिके भ्रम शोका ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

काशी प्राग गया स्नाना ❀ तसफल यह सुनिव्यासबखाना॥
दान अनेक देइ जो कोई ❀ तस फल होय सुनै यह सोई ॥

सो०-शंकर शारद शेष, चारिहु वेद सहस्र षट ।
सबकर अस उपदेश, भजु हरिचरण विहाय छल ॥
सबलसिंह मतिहीन, व्यास कहत तस कहेउ हम ।
प्रभु तारत जनदीन, सोई मनकर्म भरोस करि ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते स्वर्गारोहणपर्वणि
श्रीपांडवस्वर्गवासवैशम्पायनराजजन्मेजयसम्वादोनाम
पंचमोऽध्यायः ॥ १ ॥

इति श्रीस्वर्गारोहणपर्व समाप्तः १८

इति श्रीमहाभारत सबलसिंहचौहानकृत अठारहो पर्व ससाप्तः ।

Printed by Babu Thakur Prasad Khttri Byapari aur Karigar
Press, Benares.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ सूचीपत्र ॥

किस्सा महबूबयार पहिला	-)	सूर्य्यपुराण	)॥
दो नवो इकट्ठा गुटका	॥-)	यजुर्वेदीयसन्ध्या भा० टी० गुटका	-)
रामायण किष्किन्धाकाण्डम्	-)	अक्किल बहार	=)
स्वप्नविचार	)॥	हनुमानबाहुक गुटका	)॥
शिवमहिम्न स्तोत्र मूल गु०	-)	बड़ा गोपालगारी	)॥
होड़ाचक्र गुटका	-)	रामायण सुन्दरकांड बड़ा	=)
गोपालसहस्रनाम गुटका	-)	भक्ति शिरोमणि मीराबाई	-)
हनुमानचालीसाहनुमनाष्टक	)॥	अमरकोष	।-)
दुर्गा गुटका	।=)	भरथरी चरित्र	)
गोपीचन्द भरथरी	-)॥	भजन रत्नाकर	-
अर्जुन गीता	-)॥	झगड़ा पंचरतन	-
भगवद्गीता गुटका रेशमी	।=)	केसर गुलाब ४ भाग	।=)
संकष्ट चतुर्थी	)॥	बीरसिंह	-)॥
मूलरामायण	=)	लैलामजनू	=)
राम जन्म	-)	रंगीली मालिन २ भाग	।=)
गंगाष्टक	)।	चार दोस्त की हँसी दिल्लगी	)॥
बिन्ध्येश्वरी स्तोत्र	)।	सोने का फूल	)॥
हरितालिका व्रतकथा	-)	संकरदास की लंगोटी में डाढा	=)
बद्रीनाथ स्तोत्र	)।	गोविन्दलहरी १ भाग	।)
चाणक्यनीति दर्पण	=)	गोविन्दलहरी २ भाग	।-)
दुर्गाकवच	)॥	सदा बहार १ भाग	-)
भजन प्रभाती	-)	,, २ भाग	-)
भजन रामायण	-)॥	राशिमाला स्त्री पुरुष	-)
महाबीर प्रश्नावली	)॥	छबीली भटियारी	=)
इन्द्रसभा	=)	गणेशपुराण	-)॥
दानलीला नागलीला	)॥	सामुद्रीक सटीक	=)॥

पुस्तक मिलने का पता:—

बाबू बैजनाथप्रसाद बुकसेलर

कचौड़ीगली बनारस सिटी।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri, funding by IKS

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

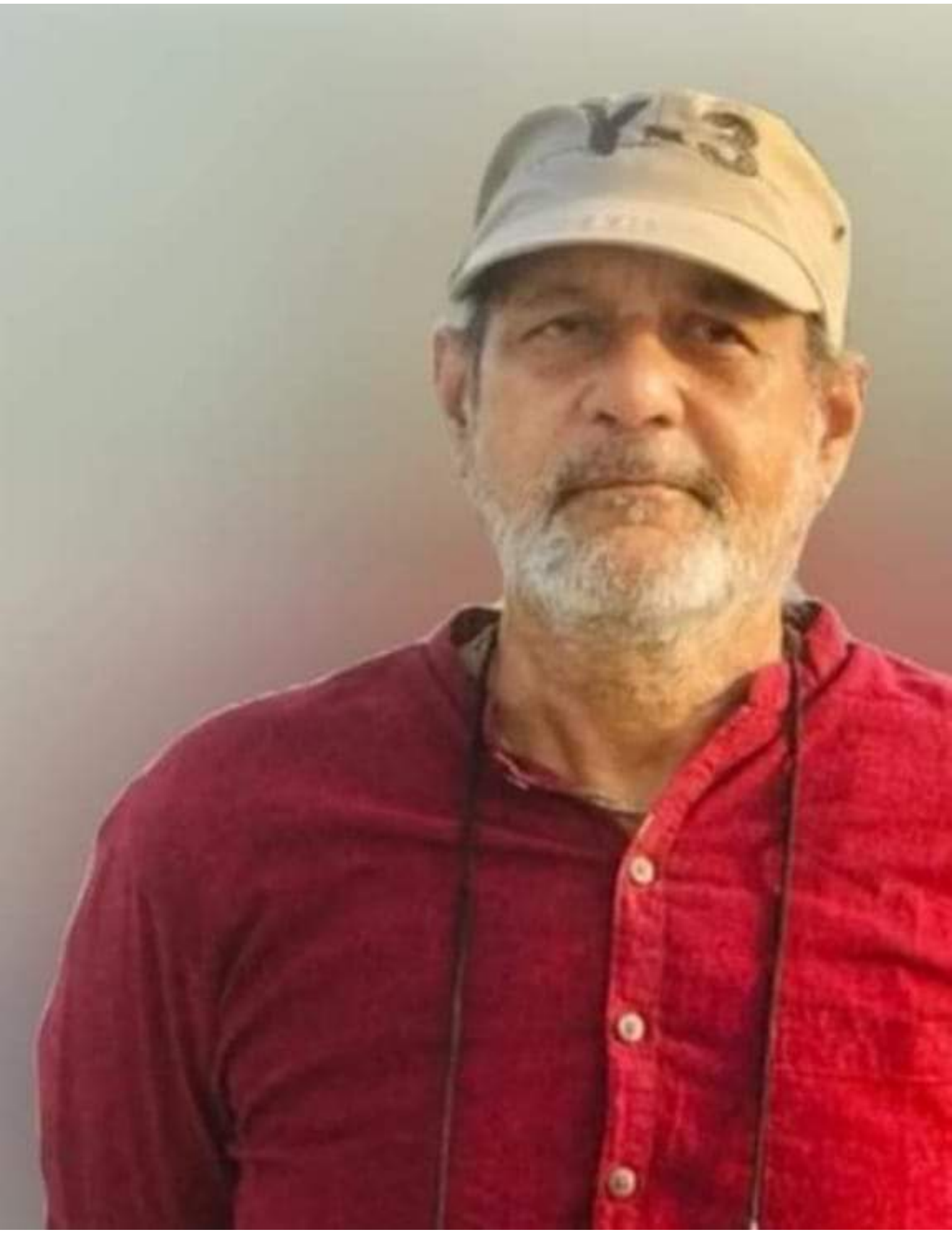

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript.Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernelia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital Preservation Trust and Sarayu Trust Foundation.